अलिफ लैला
की कहानियां
Sajeev

अलिफ लैला
की कहानियां
Sajeev

ALIF LAILA

1001 ARABIAN NIGHTS STORIES

SAJEEV

CONTENTS

शहरयार और शाहज़माँ की कहानी

फारस देश भी हिंदुस्तान और चीन के समान था और कई नरेश उसके अधीन थे। वहाँ का राजा महाप्रतापी और बड़ा तेजस्वी था और न्यायप्रिय होने के कारण प्रजा को प्रिय था। उस बादशाह के दो बेटे थे जिनमें बड़े लड़के का नाम शहरयार और छोटे लड़के का नाम शाहज़माँ था। दोनों राजकुमार गुणवान, वीर धीर और शीलवान थे। जब बादशाह का देहांत हुआ तो शहजादा शहरयार गद्दी पर बैठा और उसने अपने छोटे भाई को जो उसे बहुत मानता था तातार देश का राज्य, सेना और खजाना दिया। शाहज़माँ अपने बड़े भाई की आज्ञा में तत्पर हुआ और देश के प्रबंध के लिए समरकंद को जो संसार के सभी शहरों से उत्तम और बड़ा था अपनी राजधानी बनाकर आराम से रहने लगा। जब उन दोनों को अलग हुए दस वर्ष हो गए तो बड़े ने चाहा कि किसी को भेजकर उसे अपने पास बुलाए। उसने अपने मंत्री को उसे बुलाने की आज्ञा दी और मंत्री यह आज्ञा पाकर बड़ी धूमधाम से विदा हुआ। जब वह समरकंद शहर के समीप पहुँचा तो शाहज़माँ यह समाचार सुनकर उसकी अगवानी को सेना लेकर अपनी राजधानी से रवाना हुआ और शहर के बाहर पहुँचकर मंत्री से मिला। वह उसे देखकर प्रसन्न हुआ। शाहज़माँ अपने भाई शहरयार का कुशलक्षेम पूछने लगा। मंत्री ने शाहज़माँ को दंडवत कर उसके भाई का हाल कहा।

वह मंत्री बादशाह शहरयार का परम आज्ञा पालक था और उससे प्रेम करता था। शाहज़माँ ने उससे कहा कि भाई! मेरे अग्रज ने तुम्हें मुझे लेने को भेजा इस बात से मुझको अत्यंत हर्ष हुआ। उनकी आज्ञा मेरे शिरोधार्य है। अगर भगवान ने चाहा तो दस दिन में यात्रा की तैयारी कर के और शासन में अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम्हारे और तुम्हारी सेना के लिए खाने-पीने का प्रबंध सब यहीं हो जाएगा। अतएव तुम इसी स्थान पर ठहरो। अतएव उसी स्थान पर खाने-पीने आदि की व्यवस्था कर दी गई और वे वहाँ रहे।

इस अवसर पर बादशाह ने यात्रा की तैयारियाँ की और अपनी जगह अपने विश्वास पात्र मंत्री को नियुक्त किया। एक दिन सायं अपनी बेगम से जो उसे अति प्रिय थी विदा ली और अपने सेवकों और मुसाहिबों को लेकर समरकंद से चला और अपने खेमे में पहुँचकर मंत्री के साथ बातचीत करने लगा। आधी रात होने पर उसकी इच्छा हुई कि एक बार बेगम से फिर मिल आऊँ। वह सबसे छुपकर अकेला ही महल में पहुँचा। बेगम को उसके आने का संदेह तक न था; वह अपने एक तुच्छ और कुरूप सेवक के साथ सो रही थी।

शाहज़माँ सोचकर आया था कि बेगम उसे देखकर अति प्रसन्न होगी। उसे दूसरे मर्द के साथ सोते देखकर एक क्षण के लिए उसे काठ मार गया। कुछ सँभलने पर सोचने लगा कि कहीं मुझे दृष्टि-भ्रम तो नहीं हो गया। लेकिन भलीभाँति देखने पर भी जब वही बात पाई तो सोचने लगा यह कैसा अनर्थ है कि मैं अभी समरकंद नगर की रक्षा भित्ति से बाहर भी नहीं निकला और ऐसा कर्म होने लगा। वह क्रोधाग्नि में जलने लगा और उसने तलवार

निकालकर ऐसे हाथ मारे कि दोनो के सिर कट कर पलँग के नीचे आ गए। इसके बाद दोनों शवों को पिछवाड़े की खिड़की से नीचे गड्ढे में फेंककर वह अपने खेमे में वापस आ गया। उसने किसी से रात की बात न बताई।

दूसरे दिन प्रातः ही सेना चल पड़ी। उसके साथ के और सब लोग तो हँसी-खुशी रास्ता काट रहे थे किंतु शाहजमाँ अपनी बेगम के पाप कर्म को याद कर के दुखी रहता था और दिनों दिन उसका मुँह पीला पड़ता जाता था। उसकी सारी यात्रा इसी कष्ट में बीती।

जब वह हिंदुस्तान की राजधानी के समीप पहुँचा और शहरयार ने यह सुना तो वह अपने सारे दरबारियों को लेकर शाहजमाँ की अभ्यर्थना के लिए आया। जब दोनों एक-दूसरे के पास पहुँचे तो अपने-अपने घोड़े से उतर कर गले मिले और कुछ देर तक एक-दूसरे की कुशलक्षेम पूछ कर बड़े समारोहपूर्वक रवाना हुए। शहरयार ने शाहजमाँ को उस महल में ठहराया जो उसके लिए पहले से सजाया गया था और जहाँ से उद्यान दिखाई देता था। वह महल बड़ा और राजाओं के स्वागतयोग्य था। फिर शहरयार ने अपने भाई से स्नान करने को कहा। शाहजमाँ ने स्नान कर के नए कपड़े पहने और दोनों भाई महल के मंच पर बैठकर देर तक वार्तालाप करते रहे। सारे दरबारी दोनों बादशाहों के सामने अपने-अपने उपयुक्त स्थान पर खड़े रहे। भोजनोपरांत भी दोनों बादशाह देर तक बातें करते रहे।

जब रात बहुत बीत गई तो शहरयार अपने भाई को आतिथ्य गृह में छोड़कर अपने महल को चला गया। शाहजमाँ फिर शोकाकुल होकर अपने पलँग पर आँसू बहाता हुआ लोटता रहा। भाई के सामने वह अपना दुख छुपाए रहा लेकिन अकेला होते ही उस पर वही दुख सवार हो गया और उसकी पीड़ा ऐसी बढ़ गई जैसे उसकी जान लेकर ही छोड़ेगी। वह एक क्षण के लिए भी अपनी बेगम का दुष्कर्म भुला नहीं पाता था। वह अक्सर हाय हाय कर उठता और हमेशा ठंडी साँसें भरा करता। उसे रातों को नींद नहीं आती थी। इसी दुख और चिंता में उसका शरीर धीरे-धीरे घुलने लगा।

शहरयार ने उसकी यह दशा देखी तो विचार किया कि मैं शाहजमाँ से इतना प्रेम करता हूँ और उसकी सुख-सुविधा का इतना खयाल रखता हूँ फिर भी सदैव ही इसे शोक सागर में निमग्न देखता हूँ। मालूम नहीं इसे अपने राज्य की चिंता खाए जाती है या अपनी बेगम का विछोह सताता है। मैंने इसे यहाँ बुलाकर बेकार ही इसे शोक संताप में डाल दिया। अब उचित होगा कि इसे समझा-बुझा कर और उत्तमोत्तम भेंट वस्तुएँ देकर समरकंद वापस भेज दूँ ताकि इसका दुख दूर हो सके। यह सोचकर उसने हिंदुस्तान देश की बहुमूल्य वस्तुएँ थालों में लगाकर शाहजमाँ के पास भेजीं और उसका जी बहलाने के लिए तरह-तरह के खेल-तमाशे करवाए लेकिन शाहजमाँ की उदासी कम नहीं हुई बल्कि बढ़ती ही गई। फिर शहरयार ने अपने दरबारियों से कहा कि सुना है यहाँ से दो दिनों की राह के बाद एक घना जंगल है और वहाँ अच्छा शिकार मिलता है इसलिए मैं वहाँ शिकार खेलने जाना चाहता हूँ; तुम लोग भी तैयार होकर मेरे साथ चलो और शाहजमाँ से भी चलने को कहो क्योंकि शिकार में उसका जी लगेगा और उसका चित्त प्रसन्न होगा। शाहजमाँ ने निवेदन किया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, इस कारण मुझे शिकार पर जाने से माफ करें।

शहरयार ने कहा - अच्छी बात है, अगर तुम्हारा यहीं रहने को जी चाहता है तो रहो लेकिन मैं तैयारी कर चुका हूँ, मेरे अपने भृत्यों के साथ शिकार के लिए जाता हूँ।

शहरयार के जाने के बाद शाहजमाँ ने अपने निवास स्थान के द्वार अंदर से बंद कर लिए और एक खिड़की पर जा बैठा। वहाँ से शाही महल का उद्यान दिखाई देता था। शाहजमाँ सुवासित पुष्पों और पक्षियों के कलरव से अपना जी बहलाने लगा। लेकिन मकान और बाग की शोभा से जी बहलाने पर भी उसे अपनी पत्नी के दुराचार की कचोट बनी रहती।

जब संध्या हुई तो शाहजमाँ ने देखा कि राजमहल का एक चोर दरवाजा खुला और उसमें से शहरयार की बेगम बीस अन्य स्त्रियों के साथ निकली। वे सब उत्तम वस्त्रों और अलंकारों से शोभित थीं और इस विश्वास के साथ कि सब लोग शिकार पर चले गए हैं, बाग में आ गईं। शाहजमाँ खिड़की में छुप कर बैठ गया और देखने लगा कि वे क्या करती हैं।

दासियों ने उन लबादों को उतार डाला जो पहन कर वे महल से निकली थीं। अब उनकी सूरत स्पष्ट दिखाई देने लगी। शाहजमाँ को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिन बीसों को उसने स्त्री समझा था उनमें से दस हब्शी मर्द थे। उन दसों ने अपनी-अपनी पसंद की दासी का हाथ पकड़ लिया। सिर्फ बेगम बगैर मर्द की रह गई। फिर बेगम ने आवाज दी, 'मसऊद, मसऊद'। इस पर एक हृष्ट-पुष्ट हब्शी युवक जो उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में था एक वृक्ष से उतर कर बेगम की ओर दौड़ा और उसका हाथ पकड़ लिया। उन ग्यारह हब्शियों ने दस दासियों और बेगम के साथ क्या किया उसका वर्णन मैं लज्जावश नहीं कर सकूँगा। इसी भाँति वे आधी रात तक बाग में विहार करते रहे। फिर बाग के हौज में नहा कर बेगम और उसके साथ आए बीस मर्द औरतों ने अपने कपड़े पहने और जिस चोर दरवाजे से आए थे उसी से महल में चले गए और मसऊद भी बाग की दीवार फाँद कर बाहर चला गया।

यह कांड देखकर शाहजमाँ को घोर आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि मैं तो दुखी हूँ ही, मेरा बड़ा भाई मुझ से भी अधिक दुखी है। यद्यपि वह अत्यंत शक्तिशाली और वैभवशाली है तथापि इस दुष्कर्म को रोकने में असमर्थ है, फिर मैं इतना शोक क्यों करूँ। जब मुझे मालूम हो गया कि यह नीच कर्म संसार में अक्सर ही होता है तो मैं बेकार ही स्वयं को शोक सागर में डुबोए दे रहा हूँ। यह सोचकर उसने सारी चिंता छोड़ दी और साधारण रूप से रहने लगा। पहले उसकी भूख मिट गई थी, अब वह जाग गई और वह नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन मँगाकर खाने लगा और संगीत-नृत्य आदि का आनंद लेने लगा।

जब शहरयार शिकार से लौटा तो शाहजमाँ ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत किया। शहरयार ने उसे शिकार किए हुए बहुत से जानवर दिखाए और कहा कि बड़े खेद की बात है कि तुम शिकार पर नहीं गए, वहाँ बड़े आनंद की जगह है। शाहजमाँ बादशाह की हर बात का हँसी-खुशी उत्तर देता था। शहरयार ने सोचा था कि वापसी पर भी शाहजमाँ को

दुख और शोक में डूबा पाएगा लेकिन इसके विपरीत उसे प्रसन्न और संतुष्ट देखकर बोला 'ऐ भाई, भगवान को बड़ा धन्यवाद है कि मैंने थोड़ी ही अवधि में तुम्हें प्रसन्न और व्याधिमुक्त देखा। अब मैं तुम्हें सौगंध देकर एक बात पूछता हूँ, तुम वह बात जरूर बताना।

शाहजमाँ ने कहा, 'जो बात भी आप पूछेंगे मैं अवश्य बताऊँगा।'

शहरयार ने कहा, 'जब तुम अपनी राजधानी से यहाँ आए थे तो मैंने तुम्हें शोक सागर में डूबा देखा था। मैंने तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिए अनेक उपाय किए, भाँति-भाँति के खेल-तमाशे करवाए किंतु तुम्हारी दशा जैसी की तैसी रही। मैंने बहुत सोचा कि इस दुख का कारण क्या हो सकता है किंतु इसके सिवा कोई कारण समझ में नहीं आया कि तुम्हें अपनी बेगम के विछोह का दुख है और राज्य प्रबंध की चिंता है। किंतु अब क्या बात हुई जिससे तुम्हारा दुख और चिंता दूर हो गई?

शाहजमाँ यह सुनकर मौन रहा किंतु जब शहरयार ने बार-बार यही प्रश्न पूछा तो वह बोला, 'आप मेरे मालिक हैं मुझ से बड़े हैं; मैं इस प्रश्न का उत्तर न दूँगा क्योंकि इसमें बड़ी निर्लज्जता की बात है।' शहरयार ने कहा कि जब तक तुम मुझे यह न बताओगे तब तक मुझे चैन न आएगा। शाहजमाँ ने विवश होकर अपनी बेगम के कुकर्म का सविस्तार वर्णन किया और कहा कि मैं इसी कारण दुखी रहता था।

शहरयार ने कहा, 'भैय्या, यह तो तुमने बड़े आश्चर्य की, असंभव-सी बात बताई। यह तो तुमने बड़ा अच्छा किया कि ऐसी व्यभिचारिणी को उसके प्रेमी सहित मार डाला। इस मामले में कोई तुम्हें अन्यायी नहीं कह सकता। मैं तुम्हारी जगह होता तो मुझे एक स्त्री को मारने से संतोष न होता, हजार स्त्रियों को मार डालता। बताओ कि मेरे बाहर जाने पर यह शोक किस प्रकार दूर हुआ?'

शाहजमाँ ने कहा, 'मुझे यह बात कहते डर लगता है कि ऐसा न हो कि यह सुनकर आपको मुझसे भी अधिक दुख हो।' शहरयार ने कहा कि भाई, तुमने यह कह कर मेरी उत्कंठा और बढ़ा दी है; मुझे अब इसे सुने बगैर चैन न आएगा इसलिए यह बात जरूर बताओ। विवश होकर शाहजमाँ ने मसऊद, दसों दासियों और बेगम का सारा हाल बताया और बोला, यह घटना मैंने अपनी आँखों से देखी है और समझ लिया है कि सारी स्त्रियों के स्वभाव में दुष्टता और पाप होता है। और आदमी को चाहिए कि उनका भरोसा न करे। मुझे यह सारा कांड देखकर अपना दुख भूल गया है और इसीलिए मैं नीरोग और प्रसन्नचित्त दिखाई देता हूँ।'

यह हाल सुनकर भी शहरयार को अपने भाई के कथन पर विश्वास न हुआ। वह क्रुद्ध स्वर में बोला, 'क्या हमारे देश की सारी बेगमें व्यभिचारिणी हैं? मुझे तुम्हारे कहने का विश्वास नहीं होगा जब तक मैं खुद अपनी आँखों से यह न देख लूँ। संभव है तुम्हें भ्रम हुआ हो।' शाहजमाँ ने कहा, 'भाई साहब, आप खुद देखना चाहते हैं तो ऐसा कीजिए कि

दुबारा शिकार के लिए आज्ञा दीजिए। हम आप दोनों फौज के साथ शहर से कूच कर के बाहर चलें। दिन भर अपने खेमों में रहें और रात को चुपचाप इसी मकान में आ बैठें। फिर निश्चय ही आप वह सारा व्यापार अपनी आँखों देख लेंगे जो मैंने आपको बताया है।'

शहरयार ने यह बात स्वीकार कर के दरबारियों को आज्ञा दी कि कल मैं फिर शिकार को जाऊँगा। अतः दूसरे दिन प्रातःकाल ही दोनों भाई शिकार को चले और शहर के बाहर जाकर अपने खेमों में ठहरे। जब रात हुई तो शहरयार ने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि मैं एक जरूरी काम से जा रहा हूँ, तुम फौज के किसी आदमी को यहाँ से जाने न देना। तत्पश्चात दोनों भाई घोड़ों पर सवार होकर गुप्त रूप से शहर में आए और सवेरा होने के पहले ही शाहजमाँ के महल की उसी खिड़की में आ बैठे जिससे शाहजमाँ ने सारा कांड देखा था। सूर्योदय के पूर्व ही महल का चोर दरवाजा खुला और कुछ देर में बेगम अपने उन्हीं स्त्री वेशधारी हब्शियों के साथ वहाँ से निकल कर बाग में आई और मसऊद को पुकारा।

यह सारा हाल - जो न कहने के योग्य है न सुनने के - देखकर शहरयार अपने मन में कहने लगा कि हे! भगवान, यह कैसा अनर्थ है कि मुझ जैसे महान नृपति की पत्नी ऐसी व्यभिचारणी हो। फिर वह शाहजमाँ से बोला कि यह अच्छा रहेगा कि हम इस क्षणभंगुर संसार को जिसमें एक क्षण आनंद का होता है दूसरा दुख का, छोड़ दें और अपने देशों और सेनाओं का परित्याग कर के अन्य देशों में शेष जीवन काटें और इस घृणित व्यापार के बारे में किसी से कुछ न कहें।

शाहजमाँ को यह बात पसंद नहीं आई किंतु अपने भाई की अत्यंत दुखी दशा देखकर उसने इनकार करना ठीक न समझा और बोला, 'भाई साहब, मैं आपका अनुचर हूँ और आपकी आज्ञा को पूर्ण रूप से मानूँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है। जब आप किसी व्यक्ति को अपने से अधिक इस दुर्भाग्य से पीड़ित देखें तो अपने देश को लौट आएँ।'

शहरयार ने कहा, 'मुझे तुम्हारी यह शर्त स्वीकार है लेकिन मेरा विचार है कि संसार में किसी मनुष्य को हमारे जैसा दुख नहीं होगा।' शाहजमाँ ने कहा, 'थोड़ी-सी ही यात्रा करने पर आपको इस बात का पता अच्छी तरह से चल जाएगा।'

अतएव वे दोनों छुप कर एक सुनसान रास्ते से नगर के बाहर एक ओर को चले। दिन भर चलने के बाद रात को एक पेड़ के नीचे लेट कर सो रहे। दूसरे दिन प्रातःकाल वे वहाँ से भी आगे चले और चलते-चलते एक मनोरम वाटिका में पहुँचे जो एक नदी के तट पर बनी हुई थी। इस वाटिका में दूर-दूर तक घने और बड़े-बड़े वृक्ष लगे थे। वहाँ एक वृक्ष के नीचे बैठकर वे सुस्ताने लगे और बातचीत करने लगे।

थोड़ी ही देर हुई थी कि एक भयानक शब्द सुनकर दोनों अत्यंत भयभीत हुए और काँपने लगे। कुछ देर में देखा कि नदी के जल में दरार हुई और उसमें से एक काला खंभा निकलने लगा। वह इतना ऊँचा हो गया कि उसका ऊपरी भाग आकाश के बादलों में लुप्त हो गया। यह कांड देखकर दोनों भाई और भी भयभीत हुए और एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़ कर

उसकी डालियों और पत्तों में छुपकर बैठ गए। उन्होंने देखा कि काला खंभा नदी के तट की ओर बढ़ने लगा और तट पर आकर एक महा भयानक दैत्य के रूप में परिवर्तित हो गया। अब वे दोनों और भी घबराए और एक और ऊँची डाल पर जा बैठे। दैत्य नदी तट पर आया तो उन्होंने देखा कि उसके सिर पर एक सीसे का बड़ा और मजबूत संदूक है जिसमें पीतल के चार ताले लगे हैं।

दैत्य ने नदी तट पर आकर सिर से संदूक उतारा और उसी वृक्ष के नीचे रख दिया जहाँ दोनों भाई छुपे थे। फिर उसने कमर से लटकती हुई चार चाभियों से संदूक के चारों ताले एक-एक कर के खोले। संदूक खोला तो उसमें से एक अति सुंदर स्त्री निकली जो उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत थी। दैत्य ने स्त्री को प्रेम दृष्टि से देखा और कहा, 'प्रिये, तू सुंदरता में अनुपम है। बहुत दिन हो गए जब मैं तुझे तेरे विवाह की रात को उड़ा लाया था। इस सारे काल में तू बड़ी निष्कलंक और मेरे प्रति वफादार रही है। मुझे इस समय बड़ी नींद आ रही है इसलिए तेरे निकट सोना चाहता हूँ।' यह कहकर वह महा भयानक आकृति वाला दैत्य उस स्त्री की जंघा पर सिर रख कर सो रहा। उसका शरीर इतना विशाल था कि उसके पाँव नदी के जल को छू रहे थे। सोते समय उसकी साँस का स्वर ऐसा हो रहा था जैसे बादल गरज रहे हों। सारा वातावरण उस ध्वनि से कंपायमान हो रहा था।

एक बार संयोग से जब स्त्री ने ऊपर की ओर देखा तो उसे पत्तियों में छुपे हुए दोनों भाई दिखाई दिए। उसने दोनों को नीचे उतरने का संकेत किया। उसके उद्देश्य को समझकर दोनों का भय और बढ़ा। दोनों ने इशारे ही से उससे विनती की कि हमें पेड़ ही पर छुपा रहने दो। स्त्री ने धीरे से दैत्य का सिर अपनी गोद से उतारकर पृथ्वी पर रख दिया और उठकर उनको धैर्य देते हुए बोली कि कोई भय की बात नहीं है, तुम नीचे उतर आओ और मेरे समीप बैठो। उसने यह भी धमकी दी कि अगर न आओगे तो मैं दैत्य को जगा दूँगी और वह तुम दोनों को समाप्त कर देगा। यह सुनकर वे बहुत डरे और चुपचाप नीचे उतर आए। वह स्त्री मुस्कारती हुई दोनों का हाथ पकड़ कर एक वृक्ष के नीचे ले गई और उनसे अपने साथ संभोग करने को कहा। पहले तो उन दोनों ने इनकार किया किंतु फिर उसकी धमकी से डर कर वह जैसा चाहती थी उसके साथ कर दिया। इसके बाद स्त्री ने उनसे उनकी एक-एक अँगूठी माँग ली। फिर उसने एक छोटी-सी संदूकची निकाली और उनसे पूछा कि जानते हो इसमें क्या है और किसलिए है? उन्होंने कहा, हमें नहीं मालूम, तुम बताओ इसमें क्या है। उस सुंदरी ने कहा, इसमें उन लोगों की निशानियाँ हैं जो तुम्हारी तरह मुझसे संबंध कर चुके हैं। ये अट्ठानबे अँगूठियाँ थीं और तुम्हारी दो मिलने से सौ हो गईं। इस दैत्य की इतनी कड़ी निगरानी के बाद भी मैंने सौ बार ऐसी मनमानी की है। यह दुराचारी दैत्य मुझ पर इतना आसक्त है कि क्षण भर के लिए भी मुझे अपने से अलग नहीं करता और बड़ी देखभाल के साथ मुझे इस सीसे के संदूक में छुपाकर समुद्र की तलहटी में रखता है। लेकिन उसकी सारी चालाकी और रक्षा प्रबंध पर भी मैं जो चाहती हूँ वह करती हूँ और इस बेचारे का सारा प्रबंध बेकार हो जाता है। अब मेरे हाल से तुम समझ लो कि स्त्री जब कामासक्त होती है तो कोई भी उसे दुष्कर्म से रोक नहीं सकता।

इसके पश्चात वह उनकी अँगूठियाँ लेकर अपनी जगह आई। उसने दैत्य का सिर फिर अपनी गोद में रख लिया और इन दोनों को संकेत किया कि चले जाओ। दोनों वहाँ से चल दिए और जब बहुत दूर निकल गए तो शाहजमाँ ने अपने बड़े भाई शहरयार से कहा, 'देखिए, इतनी सुरक्षा और कड़े प्रबंध पर भी यह स्त्री अपने मन की अभिलाषा पूरी कर रही है। यह भी देखिए कि दैत्य को उस पर कितना विश्वास है और वह उसकी निष्कलंकता की कैसी प्रशंसा कर रहा था। अब आप ही न्यायपूर्वक बताएँ कि इस बेचारे पर हम लोगों से अधिक दुर्भाग्य है या नहीं। हम जो बात ढूँढ़ने निकले थे वह हमें मिल गई। अब हमें चाहिए कि अपने-अपने देशों को चलें और किसी स्त्री से विवाह न करें क्योंकि शायद ही कोई स्त्री निष्पाप हो।

चुनांचे शहरयार ने अपने छोटे भाई के कहने के अनुसार ही काम किया और वहाँ से दोनों शहरयार की राजधानी को चले। तीन रातों बाद वे अपनी सेनाओं में पहुँचे। शहरयार ने आगे शिकार पर न जाना चाहा और राजधानी को वापस आ गया। महल में जाकर उसने मंत्री को आज्ञा दी कि वह बेगम को ले जाकर मृत्युदंड दे। मंत्री ने बादशाह की आज्ञानुसार ऐसा ही किया। फिर शहरयार ने दसों व्याभिचारिणी दासियों को अपने हाथ से मार डाला। इसके बाद शहरयार ने सोचा कि कोई ऐसा उपाय करूँ कि विवाह के बाद मेरी बेगम कुकर्म का अवसर ही ना पा सके। अतएव उसने निश्चय किया कि रात को विवाह करूँ और सबेरे ही बेगम को मरवा दूँ। तत्पश्चात उसने अपने भाई शाहजमाँ को विदा किया। वह शहरयार की दी हुई अमूल्य भेंटों को लेकर अपनी सेना के साथ समरकंद चला गया। शाहजमाँ के जाने के बाद अपने प्रधान मंत्री को आज्ञा दी कि वह विवाह हेतु किसी सामंत की बेटी को लाए। प्रधान मंत्री ने एक अमीर की बेटी ला खड़ी की। शहरयार ने उससे विवाह किया और रात भर उसके साथ बिता कर सुबह मंत्री को आज्ञा दी कि इसे ले जाकर मार डालो और रात के लिए फिर किसी सरदार की सुंदरी बेटी मेरे विवाहार्थ ले आना। मंत्री ने उस बेगम को मार डाला और शाम को एक और अमीर की बेटी ले आया और दूसरे दिन उसे भी ले जाकर मार डाला। इसी प्रकार शहरयार ने सैकड़ों अमीरों सरदारों की बेटियों से विवाह किया और दूसरी सुबह उन्हें मरवा डाला। अब सामान्य नागरिकों की बारी आई। साथ ही इस जघन्य अन्याय की बात सब जगह फैल गई। सारे नगर में शोक, संताप और रोदन की आवाजें उठने लगीं। कहीं पिता अपनी पुत्री को मृत्यु पर आठ-आठ आँसू रोता था, कहीं लड़की की माता पछाड़ें खाती थी। जो कन्याएँ अभी तक बच रही थीं उनके माता-पिता और सगे-संबंधी अत्यंत दुखी रहते थे। कई लोग अपनी बेटियों को लेकर देश छोड़ गए और अन्य देशों में जा बसे।

वहाँ के मंत्री की दो कुँआरी बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम शहरजाद और छोटी का नाम दुनियाजाद था। शहरजाद अपनी बहन और सहेलियों से अधिक तीक्ष्ण बुद्धि थी। वह जो बात भी सुनती या किसी पुस्तक में देखती उसे कभी नहीं भूलती थी। वार्तालाप के गुण में भी प्रवीण थी। उसे बहुत प्राचीन मनीषियों की आख्यायिकाएँ और कविताएँ जुबानी याद थीं और स्वयं गद्य-पद्य रचना में निपुण थी। इन सारे गुणों के अतिरिक्त उसमें अद्वितीय सौंदर्य भी था। एक दिन उसने पिता से कहा कि मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ लेकिन आप को मेरी बात माननी होगी। मंत्री ने कहा, यदि तेरी बात मानने योग्य

होगी तो मैं अवश्य मानूँगा। शहरजाद ने कहा कि मेरा निश्चय है कि मैं बादशाह को इस अन्याय से रोकूँ जो वह कर रहा है और जो कन्याएँ अभी बची हैं उनके माता-पिता को चिंतामुक्त कर दूँ।

मंत्री ने कहा, 'बेटी, तुम यह हत्याकांड किस प्रकार रोक सकती हो। तुम्हारे पास कौन-सा उपाय ऐसा हो सकता है जिससे यह अन्याय बंद हो?' शहरजाद बोली, 'यह आपके हाथ में है। मैं आप को अपनी सौगंध देकर कहती हूँ कि मेरा विवाह बादशाह के साथ कर दीजिए।' मंत्री यह सुनकर काँपने लगा और बोला, 'बेटी, तू पागल हो गई है क्या जो ऐसी वाहियात बातें कर रही है। क्या तुझे बादशाह के प्रण का पता नहीं है? तू सोच-समझ कर बात किया कर। तू किस तरह बादशाह को इस अन्याय से रोक सकेगी? बेकार ही अपनी जान गँवाएगी।

शहरजाद ने कहा, 'मैं बादशाह के प्रण को भली भाँति जानती हूँ, परंतु अपने इस विचार को किसी प्रकार न छोड़ूँगी। यदि मैं अन्य कन्याओं की भाँति मारी गई तो इस असार संसार से मुक्ति पा जाऊँगी और अगर मैंने बादशाह को इस अत्याचार से विमुख कर दिया तो अपने नगर निवासियों का बड़ा हित कर सकूँगी।'

मंत्री ने कहा, 'मैं किसी प्रकार तेरी यह इच्छा स्वीकार नहीं कर सकता। मैं तुझे जानते-बूझते ऐसी विकट परिस्थिति में कैसे डाल सकता हूँ? अजीब-सी बात है कि तू मुझ से कहती है कि मेरी मौत का सामान कर दो। कौन-सा पिता ऐसा होगा जो अपनी प्यारी संतान के लिए ऐसा करने का सोच भी सकेगा। तुझे चाहे अपने प्राण प्यारे न हों लेकिन मुझ से यह नहीं हो सकता कि तेरे खून से हाथ रँगूँ।' शहरजाद फिर भी अपनी जिद पर अड़ी रही और विवाह की प्रार्थी रही।

मंत्री ने कहा, तू बेकार ही मुझे गुस्सा दिला रही है। आखिर क्यों तू मरना चाहती है? क्यों अपने प्राणों से इतनी रुष्ट है? सुन ले, जो भी व्यक्ति किसी काम को बगैर सोच-विचार के करता है उसे बाद में पछताना पड़ता है। मुझे भय है कि तेरी दशा उस गधे की तरह न हो जाए जो सुख से रहता था किंतु मूर्खता के कारण दुख में पड़ा। शहरजाद ने कहा, यह कहानी मुझे बताइए। मंत्री ने कहानी सुनाई।

किस्सा व्यापारी और दैत्य का

शहरजाद ने कहा :

प्राचीन काल में एक अत्यंत धनी व्यापारी बहुत-सी वस्तुओं का कारोबार किया करता था। यद्यपि प्रत्येक स्थान पर उसकी कोठियाँ, गुमाश्ते और नौकर-चाकर रहते थे तथापि वह स्वयं भी व्यापार के लिए देश-विदेश की यात्रा किया करता था। एक बार उसे किसी विशेष कार्य के लिए अन्य स्थान पर जाना पड़ा। वह अकेला घोड़े पर बैठ कर चल दिया। गंतव्य स्थान पर खाने-पीने को कुछ नहीं मिलता था, इसलिए उसने एक खुर्जी में कुलचे और खजूर भर लिए। काम पूरा होने पर वह वापस लौटा। चौथे दिन सवेरे अपने मार्ग से कुछ दूर सघन वृक्षों के समीप एक निर्मल तड़ाग देखकर उस की विश्राम करने की इच्छा हुई। वह घोड़े से उतरा और तालाब के किनारे बैठ कर कुलचे और खजूर खाने लगा। जब पेट भर गया तो उसने जगह साफ करने के लिए खजूरों की गुठलियाँ इधर-उधर फेंक दीं और आराम करने लगा।

इतने में उसे एक महा भयंकर दैत्य अपनी ओर बड़ी-सी तलवार खींचे आता दिखाई दिया। पास आकर दैत्य क्रोध से गरज कर बोला, 'इधर आ। तुझे मारूँगा।' व्यापारी उसका भयानक रूप देखकर और गर्जन सुनकर काँपने लगा और बोला, 'स्वामी, मैंने क्या अपराध किया है कि आप मेरी हत्या कर रहे हैं?' दैत्य ने कहा, 'तूने मेरे पुत्र की हत्या की है, मैं तेरी हत्या करूँगा।'

व्यापारी ने कहा, 'मैंने तो आपके पुत्र को देखा भी नहीं, मैंने उसे मारा किस तरह?'

दैत्य बोला, 'क्या तू अपना रास्ता छोड़कर इधर नहीं आया? क्या तूने अपनी झोली से निकाल कर खजूर नहीं खाए और उनकी गुठलियाँ इधर-उधर नहीं फेंकीं?' व्यापारी ने कहा, 'आपकी बातें ठीक हैं। मैंने ऐसा ही किया है।' दैत्य ने कहा, 'जब तू गुठलियाँ फेंक रहा था तो इतनी जोर से फेंक रहा था कि एक गुठली मेरे बेटे की आँख में लगी और बेचारे का उसी समय प्राणांत हो गया। अब मैं तुझे मारूँगा।'

व्यापारी बोला, 'स्वामी मैंने आप के पुत्र को जान-बूझकर तो मारा नहीं है। फिर मुझ से जो भूल हो गई है उसके लिए मैं आप के पैरों पर गिर कर क्षमा माँगता हूँ।' दैत्य ने कहा, 'मैं न दया करना जानता हूँ न क्षमा करना। और क्या खुद तुम्हारी शरीयत में नरवध के बदले नरवध की आज्ञा नहीं दी गई है? मैं तुझे मारे बगैर नहीं रहूँगा।'

यह कह कर दैत्य ने व्यापारी की बाँह पकड़कर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया और उसे मारने के लिए तलवार उठाई। व्यापारी अपने स्त्री-पुत्रों की याद कर-कर के विलाप करने लगा, साथ ही ईश्वर और पवित्रात्माओं की सौगंध दिला-दिला कर दैत्य से अपने प्राणों की भिक्षा माँगने लगा। दैत्य ने यह सोच कर हाथ रोक लिया कि जब यह थक कर हाथ-पाँव पटकना बंद कर देगा तो इसे मारूँगा। लेकिन व्यापारी ने रोना-पीटना बंद ही नहीं किया। अंत में दैत्य ने उससे कहा, 'तू बेकार ही अपने को और मुझे तंग कर रहा है। तू अगर आँसू

की जगह आँखों से खून बहाए तो भी मैं तुझे मार डालूँगा।'

व्यापारी ने कहा, 'कितने दुख की बात है कि आपको किसी भाँति मुझ पर दया नहीं आती। आप एक दीन, निष्पाप मनुष्य को अन्यायपूर्वक मारे डाल रहे हैं और मेरे रोने- गिड़गिड़ाने का आप पर कोई प्रभाव नहीं होता। मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता कि आप मुझे मार डालेंगे।' दैत्य ने कहा, 'नहीं। निश्चय ही मैं तुम्हें मार डालूँगा।'

इतने में सवेरा हो गया। शहरजाद इतनी कहानी कह कर चुप हो गई। उसने सोचा, बादशाह के नमाज पढ़ने का समय हो गया है और उसके बाद वह दरबार को जाएगा। दुनियाजाद ने कहा, 'बहन, यह कितनी अच्छी कहानी थी।' शहरजाद बोली, 'तुम्हें यह कहानी पसंद है? अभी तो कुछ नहीं, आगे तो और भी आश्चर्यप्रद है। तुम सुनोगी तो और भी खुश होगी। अगर बादशाह सलामत ने आज मुझे जीवित रहने दिया और फिर कहानी कहने की अनुमति दी तो कल रात मैं तुम्हें शेष कथा सुनाऊँगी, वरना भगवान के पास चली जाऊँगी।'

शहरयार को भी यह कहानी बेहद पसंद आई थी। उसने विचार किया कि जब तक कहानी पूरी न हो जाए शहरजाद को नहीं मरवाना चाहिए इसलिए उसने उस दिन उसे प्राणदंड देने का इरादा छोड़ दिया। पलँग से उठकर वह नमाज पढ़ने गया और फिर दरबार में जा बैठा। शोक-कातर मंत्री भी उपस्थित था। वह अपनी बेटी का भाग्य सोच कर सारी रात न सोया था। वह प्रतीक्षा में था कि शाही हुक्म हो तो मैं अपनी बेटी को ले जाकर जल्लाद के सुपुर्द करूँ। किंतु उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बादशाह ने यह अत्याचारी आदेश नहीं दिया। शहरयार दिन भर राजकाज में व्यस्त रहा और रात को शहरजाद के साथ सो रहा।

एक घड़ी रात रहे दुनियाजाद फिर जागी और उसने बड़ी बहन से कहा कि यदि तुम सोई नहीं तो वह कहानी आगे कहो। शहरयार भी जाग गया और बोला, 'यह ठीक कहती है। मैं भी व्यापारी और दैत्य की कहानी सुनना चाहता हूँ। तुम कहानी को आगे बढ़ाओ।'

शहरजाद ने फिर कहना शुरू किया :

जब व्यापारी ने देखा कि दैत्य मुझे किसी प्रकार जीवित न छोड़ेगा तो उसने कहा, 'स्वामी, यदि आपने मुझे वध्य समझ ही लिया है और किसी भाँति भी मुझे प्राण दान देने को तैयार नहीं हैं तो मुझे इतना अवसर तो दीजिए कि मैं घर जाकर अपने स्त्री-पुत्रों से विदा ले लूँ और अपनी संपत्ति अपने उत्तराधिकारियों में बाँट आऊँ ताकि मेरे पीछे उनमें संपत्ति को लेकर लड़ाई-झगड़ा न हो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यह सब करने के बाद मैं इसी स्थान पर पहुँच जाऊँगा। उस समय आप जो ठीक समझें वह मेरे साथ करें।' दैत्य ने कहा, 'यदि मैं तुम्हें घर जाने दूँ और तुम वापस न आओ फिर क्या होगा? ' व्यापारी बोला, 'मैं जो कहता हूँ उससे फिरता नहीं। फिर भी यदि आपको विश्वास न हो तो मैं उस भगवान की, जिसने पृथ्वी-आकाश आदि सब कुछ रचा है, सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैं

घर से इस स्थान पर अवश्य वापस आऊँगा।' दैत्य ने कहा, 'तुम्हें कितना समय चाहिए?' व्यापारी ने कहा, 'मुझे केवल एक वर्ष की मुहलत चाहिए जिसमें मैं अपनी सारी जाएदाद का प्रबंध कर के आऊँ और मरते समय मुझे कोई चिंता न रहे। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वर्षोपरांत मैं इसी स्थान पर आकर स्वयं को आप के सुपुर्द कर दूँगा।' दैत्य ने कहा, 'अच्छा, मैं तुम्हें एक वर्ष के लिए जाने दूँगा किंतु तुम यह प्रतिज्ञा ईश्वर को साक्षी देकर करो।' व्यापारी ने ईश्वर की सौगंध खाकर प्रतिज्ञा दुहराई और दैत्य व्यापारी को उसी तालाब पर छोड़ कर अंतर्ध्यान हो गया। व्यापारी अपने घोड़े पर सवार होकर घर को चल दिया।

रास्ते में व्यापारी की अजीब हालत रही। कभी तो वह इस बात से प्रसन्न होता कि वह अभी तक जीवित है और कभी एक वर्ष बाद की निश्चित मृत्यु पर शोकातुर हो उठता था। जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी और बंधु-बांधव उसे देखकर प्रसन्न हुए किंतु वह उन लोगों को देख कर रोने लगा। वे लोग उसके विलाप से समझे कि उसे व्यापार में कोई भारी घाटा हुआ है या कोई और प्रिय वस्तु उसके हाथ से निकल गई है जिससे उसका धैर्य जाता रहा है।

जब व्यापारी का चित्त सँभला और उसके आँसू थमे तो उसकी पत्नी ने कहा, 'हम लोग तो तुम्हें देखकर प्रसन्न हुए हैं; तुम क्यों इस तरह रो-धो रहे हो?'व्यापारी ने कहा, 'रोऊँ-धोऊँ नहीं तो और क्या करूँ। मेरी जिंदगी एक ही वर्ष की और है।' फिर उसने सारा हाल बताया और दैत्य के सामने ईश्वर को साक्षी देकर की गई अपनी प्रतिज्ञा का वर्णन किया। यह सारा हाल सुन कर वे सब भी रोने-पीटने लगे। विशेषतः उसकी पत्नी सिर पीटने और बाल नोचने लगी और उसके लड़के-बच्चे ऊँचे स्वर में विलाप करने लगे। वह दिन रोने-पीटने ही में बीता।

दूसरे दिन से व्यापारी ने अपना सांसारिक कार्य आरंभ कर दिया। उस ने सब से पहले अपने ॠणदाताओं का धन वापस किया। उसने अपने मित्रों को बहुमूल्य भेंटें दीं, फकीरों-साधुओं को जी भर कर दान किया, बहुत-से दास-दासियों को मुक्त किया। उसने अपनी पत्नी को यथेष्ट धन दिया, अवयस्क बेटे-बेटियों के लिए अभिभावक नियुक्त किए और संतानों में संपत्ति को बाँट दिया।

इन सारे प्रबंधों में एक वर्ष बीत गया और वह अपनी प्रतिज्ञा निभाने के लिए दुखी मन से चल दिया। अपने कफन-दफन के खर्च के लिए उसने कुछ रुपया अपने साथ रख लिया। उसके चलते समय सारे घर वाले उससे लिपट कर रोने लगे और कहने लगे कि हमें भी अपने साथ ले चलो ताकि हम भी तुम्हारे साथ प्राण दे दें। व्यापारी ने अपने चित्त को स्थिर किया और उन सब को धैर्य दिलाने के लिए कहने लगा, 'मैं भगवान की इच्छा के आगे सिर झुका रहा हूँ। तुम लोग भी धैर्य रखो। यह समझ लो कि एक दिन सभी की मृत्यु होनी है। मृत्यु से कोई भी नहीं बच सकता। इसलिए तुम लोग धैर्यपूर्वक अपना काम करो।'

अपने सगे-संबंधियों से विदा लेकर व्यापारी चल दिया और कुछ समय के बाद उस स्थान

पर पहुँच गया जहाँ उसने दैत्य से मिलने को कहा था। वह घोड़े से उतरा और तालाब के किनारे बैठ कर दुखी मन से अपने हत्यारे दैत्य की राह देखने लगा। इतने में एक वृद्ध पुरुष एक हिरनी लिए हुए आया और व्यापारी से बोला, 'तुम इस निर्जन स्थान में कैसे आ गए? क्या तुम नहीं हानते कि बहुत-से मनुष्य धोखे से इसे अच्छा विश्राम स्थल समझते हैं और यहाँ आकर दैत्यों के हाथों भाँति-भाँति के दुख पाते हैं?' व्यापारी ने कहा, 'आप ठीक कहते हैं। मैं भी इसी धोखे में पड़ कर एक दैत्य का शिकार होने वाला हूँ।' यह कह कर उसने बूढ़े को अपना सारा वृत्तांत बता दिया।

बूढ़े ने आश्चर्य से कहा, 'यह तुमने ऐसी बात बताई जैसी संसार में अब तक किसी ने नहीं सुनी होगी। तुमने ईश्वर की जो सौगंध खाई थी उसे पूरा करने में प्राणों की भी चिंता नहीं की। तुम बड़े सत्यवान हो और तुम्हारी सत्यनिष्ठा की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। अब में यहाँ ठहर कर देखूँगा कि दैत्य तुम्हारे साथ क्या करता है।'

वे आपस में वार्तालाप करने लगे। इतने ही में एक और वृद्ध पुरुष आया जिसके हाथ में रस्सी थी और दो काले कुत्ते उस रस्सी से बँधे हुए थे। वह उन दोनों से उनका हालचाल पूछने लगा। पहले बूढ़े ने व्यापारी का संपूर्ण वृतांत कहा और यह भी कहा कि मैं आगे का हाल-चाल देखने यहाँ बैठा हूँ। दूसरा बूढ़ा भी यह सब सुनकर आश्चर्यचकित हुआ और वहीं बैठकर दोनों से बातें करने लगा।

कुछ समय के उपरांत एक और बूढ़ा एक खच्चर लिए हुए आया और पहले दो बूढ़ों से पूछने लगा कि यह व्यापारी इतना दुखी होकर यहाँ क्यों बैठा है। दोनों ने उस व्यापारी का पूरा हाल कहा। तीसरे वृद्ध पुरुष ने वहाँ ठहरकर इस व्यापार का अंत देखने की इच्छा प्रकट की। अतएव वह भी वहाँ बैठ गया।

अभी तीसरा बूढ़ा अच्छी तरह साँस भी नहीं ले पाया था कि उन चारों व्यक्तियों ने देखा कि सामने के जंगल में एक बड़ा गहन धूम्रपुंज उठ रहा है। वह धुएँ का बादल उनके समीप आकर गायब हो गया। वे लोग आश्चर्य से आँखें मल ही रहे थे कि एक अत्यंत भयानक दैत्य उपस्थित हो गया। उसके हाथ में तलवार थी और उसने व्यापारी से कहा, 'उठकर इधर आ। मैं तुझे मारूँगा, तून मेरे बेटे को मारा है।' यह सुन कर व्यापारी और तीनों बूढ़े काँपने लगे और उच्च स्वर में विलाप करने लगे। उन सब के रोने- चिल्लाने से जंगल गूँज उठा। किंतु दैत्य व्यापारी को पकड़कर एक ओर ले ही गया।

हिरनी वाले बूढ़े ने यह देखा और वह दौड़कर दैत्य के पास पहुँचा और बोला, 'दैत्य महाराज, मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। आप अपने क्रोध पर कुछ देर के लिए संयम रखें। मेरी इच्छा है कि मैं अपनी और इस हिरनी की कहानी आपको सुनाऊँ। किंतु कहानी के लिए एक शर्त है। यदि आप को यह कहानी विचित्र लगे और पसंद आए तो आप इस व्यापारी का एक तिहाई अपराध क्षमा कर दें।' दैत्य ने कुछ देर तक सोचकर कहा, 'अच्छा, मुझे तुम्हारी शर्त स्वीकार है। कहानी कहो।'

किस्सा गधे, बैल और उनके मालिक का

एक बड़ा व्यापारी था जिसके गाँव में बहुत-से घर और कारखाने थे जिनमें तरह-तरह के पशु रहते थे। एक दिन वह अपने परिवार सहित कारखानों को देखने के लिए गाँव गया। उसने अपनी पशुशाला भी देखी जहाँ एक गधा और एक बैल बँधे हुए थे। उसने देखा कि वे दोनों आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। वह व्यापारी पशु-पक्षियों की बोली समझता था। वह चुपचाप खड़ा होकर दोनों की बातें सुनने लगा।

बैल ने गधे से कहा, 'तू बड़ा ही भाग्यशाली है, सदैव सुखपूर्वक रहता है। मालिक हमेशा तेरा खयाल रखता है। तेरी रोज मलाई-दलाई होती है, खाने को दोनों समय जौ और पीने के लिए साफ पानी मिलता है। इतने आदर-सत्कार के बाद भी तुझसे केवल यह काम लिया जाता है कि कभी काम पड़ने पर मालिक तेरी पीठ पर बैठ कर कुछ दूर चला जाता है। तुझे दाने-घास की कभी कमी नहीं होती।

'और तू जितना भाग्यवान है मैं उतना ही अभागा हूँ। मैं सवेरा होते ही पीठ पर हल लादकर जाता हूँ। वहाँ दिन भर मुझे हल में जोतकर चलाते हैं। हलवाहा मुझ पर बराबर चाबुक चलाता रहता है। उसके चाबुकों की मार से पीठ और जुए से मेरे कंधे छिल गए हैं। सुबह से शाम तक ऐसा कठिन काम लेने के बाद भी ये लोग मेरे आगे सूखा और सड़ा भूसा डालते हैं जो मुझसे खाया नहीं जाता। रात भर मैं भूखा-प्यासा अपने गोबर और मूत्र में पड़ा रहता हूँ और तेरी सुख-सुविधा पर ईर्ष्या किया करता हूँ।'

गधे ने यह सुनकर कहा, 'ऐ भाई, जो कुछ तू कहता है सब सच है, सचमुच तुझे बड़ा कष्ट है। किंतु जान पड़ता है तू इसी में प्रसन्न है, तू स्वयं ही सुख से रहना नहीं चाहता। तू यदि मेहनत करते-करते मर जाए तो भी ये लोग तेरी दशा पर तरस नहीं खाएँगे। अतएव तू एक काम कर, फिर वे तुझ से इतनी मेहनत नहीं लिया करेंगे और तू सूख से रहेगा।'

बैल ने पूछा कि ऐसा कौन-सा उपाय हो सकता है। गधे ने कहा, 'तू अपने को रोगी दिखा। एक शाम का दाना-भूसा न खा और अपने स्थान पर चुपचाप लेट जा।' बैल को यह सुझाव बड़ा अच्छा लगा। उसने गधे की बात सुनकर कहा, 'मैं ऐसा ही करूँगा। तूने मुझे बड़ा अच्छा उपाय बताया है। भगवान तुझे प्रसन्न रखें।'

दूसरे दिन प्रातःकाल हलवाहा जब पशुशाला में यह सोचकर गया कि रोज की तरह बैल को खेत जोतने के लिए ले जाए तो उसने देखा कि रात की लगाई सानी ज्यों की त्यों रखी है और बैल धरती पर पड़ा हाँफ रहा है, उसकी आँखें बंद हैं और उसका पेट फूला हुआ है। हलवाहे ने समझा कि बैल बीमार हो गया है और यह सोचकर उसे हल में न जोता। उसने व्यापारी को बैल के बीमारी की सूचना दी।

व्यापारी यह सुनकर जान गया कि बैल ने गधे की शिक्षा पर कार्य कर के स्वयं को रोगी दिखाया है अतएव उसने हलवाहे से कहा कि आज गधे को हल में जोत दो। इसलिए

हलवाहे ने गधे को हल में जोत कर उससे सारे दिन काम लिया। गधे को खेत जोतने का अभ्यास नहीं था। वह बहुत थक गया और उसके हाथ-पाँव ठंडे होने लगे। शारीरिक श्रम के अतिरिक्त सारे दिन उस पर इतनी मार पड़ी थी कि संध्या को घर लौटते समय उसके पाँव भी ठीक से नहीं पड़ रहे थे।

इधर बैल दिन भर बड़े आराम से रहा। वह नाँद की सारी सानी खा गया और गधे को दुआएँ देता रहा। जब गधा गिरता-पड़ता खेत से आया तो बैल ने कहा कि भाई, तुम्हारे उपदेश के कारण मुझे बड़ा सुख मिला। गधा थकान के कारण उत्तर न दे सका और आकर अपने स्थान पर गिर पड़ा। यह मन ही मन अपने को धिक्कारने लगा कि अभागे, तूने बैल को आराम पहुँचाने के लिए अपनी सुख-सुविधा का विनाश कर दिया।

मंत्री ने इतनी कथा कर कहा, 'बेटी, तू इस समय बड़ी सुख-सुविधा में रहती है। तू क्यों चाहती है कि गधे के समान स्वयं को कष्ट में डाले?' शहरजाद अपने पिता की बात सुनकर बोली, 'इस कहानी से मैं अपनी जिद नहीं छोड़ती। जब तक आप बादशाह से मेरा विवाह नहीं करेंगे मैं इसी तरह आपके पीछे पड़ी रहूँगी।' मंत्री बोला, 'अगर तू जिद पर अड़ी रही तो मैं तुझे वैसा ही दंड दूँगा जो व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था।' शहरजाद ने पूछा, 'व्यापारी ने क्यों स्त्री को दंड दिया और गधे और बैल का क्या हुआ?'

मंत्री ने कहा, 'दूसरे दिन व्यापारी रात्रि भोजन के पश्चात अपनी पत्नी के साथ पशुशाला में जा बैठा और पशुओं की बातें सुनने लगा। गधे ने बैल से पूछा, 'सुबह हलवाहा तुम्हारे लिए दाना-घास लाएगा तो तुम क्या करोगे?' 'जैसा तुमने कहा है वैसा ही करूँगा,' बैल ने कहा। गधे ने कहा, 'नहीं, ऐसा न करना, वरना जान से जाओगे। शाम को लौटते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोइए से कह रहा था कि कल कसाई और चमार को बुला लाना और बैल, जो बीमार हो गया है, का मांस और खाल बेच डालना। मैंने जो सुना था वह मित्रता के नाते तुझे बता दिया। अब तेरी इसी में भलाई है कि सुबह जब तेरे आगे चारा डाला जाए तो तू उसे जल्दी से उठकर खा ले और स्वस्थ बन जा। फिर हमारा स्वामी तुझे स्वस्थ देखकर तुझे मारने का इरादा छोड़ देगा।' यह बात सुन कर बैल भयभीत होकर बोला, 'भाई, ईश्वर तुझे सदा सुखी रखे। तेरे कारण मेरे प्राण बच गए। अब मैं वही करूँगा जैसा तूने कहा है।

व्यापारी यह बात सुनकर ठहाका लगा कर हँस पड़ा। उसकी स्त्री को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पूछने लगी, 'तुम अकारण ही क्यों हँस पड़े?' व्यापारी ने कहा कि यह बात बताने की नहीं है, मैं सिर्फ यह कह सकता हूँ कि मैं बैल और गधे की बातें सुन कर हँसा हूँ। स्त्री ने कहा, 'मुझे भी वह विद्या सिखाओ जिससे पशुओं की बोली समझ लेते हैं।' व्यापारी ने इससे इनकार कर दिया। स्त्री बोली, 'आखिर तुम मुझे यह क्यों नहीं सिखाते?' व्यापारी बोला, 'अगर मैंने तुझे यह विद्या सिखाई तो मैं जीवित नहीं रहूँगा।' स्त्री ने कहा, 'तुम मुझे धोखा दे रहे हो। क्या वह आदमी जिसने तुझे यह सिखाया था, सिखाने के बाद मर गया? तुम कैसे मर जाओगे? तुम झूठ बोलते हो। कुछ भी हो मैं तुम से यह विद्या सीख कर ही रहूँगी। अगर तुम मुझे नहीं सिखाओगे तो मैं प्राण तज दूँगी।'

यह कह कर वह स्त्री घर में आ गई और अपनी कोठरी का दरवाजा बंद कर के रात भर चिल्लाती और गाली-गलौज करती रही। व्यापारी रात को तो सो गया लेकिन दूसरे दिन भी वही हाल देखा तो स्त्री को समझाने लगा कि तू बेकार जिद करती है, यह विद्या तेरे सीखने योग्य नहीं है। स्त्री ने कहा कि जब तक तुम मुझे यह भेद नहीं बताओगे, मैं खाना-पीना छोड़े रहूँगी और इसी प्रकार चिल्लाती रहूँगी। व्यापारी ने कहा कि अगर मैं तेरी मूर्खता की बात मान लूँ तो मैं अपनी जान से हाथ धो बैठूँगा। स्त्री ने कहा, 'मेरी बला से तुम जियो या मरो, लेकिन मैं तुमसे यह सीख कर ही रहूँगी कि पशुओं की बोली कैसे समझी जाती है।'

व्यापारी ने जब देखा कि यह महामूर्ख अपना हठ छोड़ ही नहीं रही है तो उसने अपने और ससुराल के रिश्तेदारों को बुलाया कि वे उस स्त्री को अनुचित हठ छोड़ने के लिए समझाएँ। उन लोगों ने भी उस मूर्ख को हर प्रकार समझाया लेकिन वह अपनी जिद से न हटी। उसे इस बात की बिल्कुल चिंता न थी कि उसका पति मर जाएगा। छोटे बच्चे माँ की यह दशा देखकर हाहाकार करने लगे।

व्यापारी की समझ ही में नहीं आ रहा था कि वह स्त्री को कैसे समझाए कि इस विद्या को सीखने का हठ ठीक नहीं है। वह अजीब दुविधा में था - अगर मैं बताता हूँ तो मेरी जान जाती है और नहीं बताता तो स्त्री रो रो कर मर जाएगी। इसी उधेड़बुन में वह अपने घर के बाहर जा बैठा।

उसने देखा कि उसका कुत्ता उसके मुर्गे को मुर्गियों से भोग करते देख कर गुर्राने लगा। उसने मुर्गे से कहा, 'तुझे लज्जा नहीं आती कि आज के जैसे दुखदायी दिन भी तू यह काम कर रहा है?'

मुर्गे ने कहा, 'आज ऐसी क्या बात हो गई है कि मैं आनंद न करूँ?' कुत्ता बोला, 'आज हमारा स्वामी अति चिंताकुल है। उसकी स्त्री की मति मारी गई है और वह उससे ऐसे भेद को पूछ रही है जिसे बताने से वह तुरंत ही मर जाएगा। नहीं बताएगा तो स्त्री रो-रो कर मर जाएगी। इसी से सारे लोग दुखी हैं और तेरे अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो स्त्री संभोग की भी बात भी सोचे।'

मुर्गा बोला, 'हमारा स्वामी मूर्ख है जो एक स्त्री का पति है और वह भी उसके अधीन नहीं है। मेरी तो पचास मुर्गियाँ हैं और सब मेरे अधीन हैं। अगर हमारा स्वामी एक काम करे तो उसका दुख अभी दूर हो जाएगा।'

कुत्ते ने पूछा कि स्वामी क्या करे कि उसकी मूर्ख स्त्री की समझ वापस आ जाए। मुर्गे ने कहा, 'हमारे स्वामी को चाहिए कि एक मजबूत डंडा लेकर उस कोठरी में जाए जहाँ उसकी स्त्री चीख-चिल्ला रही है। दरवाजा अंदर से बंद कर ले और स्त्री की जम कर पिटाई करे। कुछ देर में स्त्री अपना हठ छोड़ देगी।'

मुर्गे की बात सुनकर व्यापारी ने उठकर एक मोटा डंडा लिया और उस कोठरी में गया जहाँ उसकी पत्नी चीख-चिल्ला रही थी। दरवाजा अंदर से बंद कर के व्यापारी ने स्त्री पर डंडे बरसाने शुरू कर दिए। कुछ देर चीख-पुकार बढ़ाने पर भी जब स्त्री ने देखा कि डंडे पड़ते ही जा रहे हैं तो वह घबरा उठी। वह पति के पैरों पर गिर कर कहने लगी कि अब हाथ रोक ले, अब मैं कभी ऐसी जिद नही करूँगी। इस पर व्यापारी ने हाथ रोक लिया।

यह कहानी सुनाकर मंत्री ने शहरजाद से कहा कि अगर तुमने अपना हठ न छोड़ा तो मैं तुम्हें ऐसा ही दंड दूँगा जैसा व्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था। शहरजाद ने कहा 'आप की बातें अपनी जगह ठीक हैं किंतु मैं किसी भी प्रकार अपना मंतव्य बदलना नहीं चाहती। अपनी इच्छा का औचित्य सिद्ध करने के लिए मुझे भी कई ऐतिहासिक घटनाएँ और कथाएँ मालूम हैं लेकिन उन्हें कहना बेकार है। यदि आप मेरी कामना पूरी न करेंगे तो मैं आप से पूछे बगैर स्वयं ही बादशाह की सेवा में पहुँच जाऊँगी।'

अब मंत्री विवश हो गया। उसे शहरजाद की बात माननी पड़ी। वह बादशाह के पास पहुँचा और अत्यंत शोक-संतप्त स्वर में निवेदन करने लगा, 'मेरी पुत्री आपके साथ विवाह सूत्र में बँधना चाहती है।' बादशाह को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, 'तुम सब कुछ जानते हो फिर भी तुमने अपनी पुत्री के लिए ऐसा भयानक निर्णय क्यों लिया?' मंत्री ने कहा, 'लड़की ने खुद ही मुझ पर इस बात के लिए जोर दिया है। उसकी खुशी इसी बात में हैं कि वह एक रात के लिए आप की दुल्हन बने और सुबह मृत्यु के मुख में चली जाए।' बादशाह का आश्चर्य इस बात से और बढ़ा। वह बोला, 'तुम इस धोखे में न रहना कि तुम्हारा खयाल कर के मैं अपनी प्रतिज्ञा छोड़ दूँगा। सवेरा होते ही मैं तुम्हारे ही हाथों तुम्हारी बेटी को सौंपूँगा कि उसका वध करवाओ। यह भी याद रखना कि यदि तुमने संतान प्रेम के कारण उसके वध में विलंब किया तो मैं उसके वध के साथ तेरे वध की भी आज्ञा दूँगा।'

मंत्री ने निवेदन किया, 'मैं आपका चरण सेवक हूँ। यह सही है कि वह मेरी बेटी है और उसकी मृत्यु से मुझे बहुत ही दुख होगा। लेकिन मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।' बादशाह ने मंत्री की बात सुनकर कहा, 'यह बात है तो इस कार्य में विलंब क्यों किया जाए। तुम आज ही रात को अपनी बेटी को लाकर उसका विवाह मुझ से कर दो।'

मंत्री बादशाह से विदा लेकर अपने घर आया और शहरजाद को सारी बात बताई। शहरजाद यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और अपने शोकाकुल पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर के कहने लगी, 'आप मेरा विवाह कर के कोई पश्चात्ताप न करें। भगवान चाहेगा तो इस मंगल कार्य से आप जीवन पर्यंत हर्षित रहेंगे।'

फिर शहरजाद ने अपनी छोटी बहन दुनियाजाद को एकांत में ले जाकर उससे कहा, 'मैं तुमसे एक बात में सहायता चाहती हूँ। आशा है तुम इससे इनकार न करोगी। मुझे बादशाह से ब्याहने के लिए ले जाएँगे। तुम इस बात से शोक-विह्वल न होना बल्कि मैं जैसा कहूँ वैसा करना। मैं तुम्हें विवाह की रात पास में सुलाऊँगी और बादशाह से कहूँगी

कि तुम्हें मेरे पास आने दे ताकि मैं मरने के पहले तुम्हें धैर्य बँधा सकूँ। मैं कहानी कहने लगूँगी। मुझे विश्वास है कि इस उपाय से मेरी जान बच जाएगी।' दुनियाजाद ने कहा, 'तुम जैसा कहती हो वैसा ही करूँगी।'

शाम को मंत्री शहरजाद को लेकर राजमहल में गया। उसने धर्मानुसार पुत्री का विवाह बादशाह के साथ करवाया और पुत्री को महल में छोड़कर घर आ गया। एकांत में बादशाह ने शहरजाद से कहा, 'अपने मुँह का नकाब हटाओ।' नकाब उठने पर उसके अप्रतिम सौंदर्य से बादशाह स्तंभित-सा रह गया। लेकिन उसकी आँखों मे आँसू देख कर पूछने लगा कि तू रो क्यों रही है। शहरजाद बोली, 'मेरी एक छोटी बहन है जो मुझे बहुत प्यार करती है और मैं भी उसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आज वह भी यहाँ रहे ताकि सूर्योदय होने पर हम दोनों बहनें अंतिम बार गले मिल लें। यदि आप अनुमति दें तो वह भी पास के कमरे में सो रहे।' बादशाह ने कहा, 'क्या हर्ज है, उसे बुलवा लो और पास के कमरे में क्यों, इसी कमरे में दूसरी तरफ सुला लो।'

चुनांचे दुनियाजाद को भी महल में बुला लिया गया। शहरयार शहरजाद के साथ ऊँचे शाही पलँग पर सोया और दुनियाजाद पास ही दूसरे छोटे पलँग पर लेट रही। जब एक घड़ी रात रह गई तो दुनियाजाद ने शहरजाद को जगाया और बोली, 'बहन, मैं तो तुम्हारे जीवन की चिंता से रात भर न सो सकी। मेरा चित्त बड़ा व्याकुल है। तुम्हें बहुत नींद न आ रही हो और कोई अच्छी-सी कहानी इस समय तुम्हें याद हो तो सुनाओ ताकि मेरा जी बहले।' शहरजाद ने बादशाह से कहा कि यदि आपकी अनुमति हो तो मैं जीवन के अंतिम क्षणों में अपनी प्रिय बहन की इच्छा पूरी कर लूँ। बादशाह ने अनुमति दे दी।

किस्सा बूढ़े और उसकी हिरनी का

वृद्ध बोला, 'हे दैत्यराज, अब ध्यान देकर मेरा वृत्तांत सुनें। यह हिरनी मेरे चचा की बेटी और मेरी पत्नी है। जब यह बारह वर्ष की थी तो इसके साथ मेरा विवाह हुआ। यह अत्यंत पतिव्रता थी और मेरे प्रत्येक आदेश का पालन करती थी। किंतु जब विवाह को तीस वर्ष हो गए और इससे कोई संतान नहीं हुई तो मैंने एक दासी मोल ले ली क्योंकि मुझे संतान की अति तीव्र अभिलाषा थी। कुछ समय बाद दासी से एक पुत्र का जन्म हुआ। बच्चा पैदा होने पर मेरी पत्नी उस बच्चे और उसकी माता से अत्यंत द्वेष रखने लगी। मुझे इस बात का अति खेद है कि मुझे अपनी पत्नी के विद्वेष का हाल बहुत दिन बाद मालूम हुआ।

'संयोगवश मुझे एक अन्य देश को जाना पड़ा। मैंने अपनी पत्नी से जोर देकर कहा कि मेरे पीछे इन दोनों की अच्छी तरह देखभाल करना और इनके आराम-तकलीफ का खयाल करना। भगवान चाहेगा तो मैं एक वर्ष में लौट आऊँगा।

'मेरी स्त्री ने मेरे जाने के बाद उन दोनों से दुश्मनी रखना शुरू कर दिया। वह जादू-टोना भी सीखने लगी थी। मेरे जाने के बाद उस दुष्ट ने अपने जादू से मेरे बच्चे को बछड़ा बना दिया और उसे मेरे नौकर ग्वाले के सुपुर्द कर दिया कि अपने घर ले जाकर इसे खिला-पिला कर मोटा-ताजा कर दे। इसी प्रकार उसने मेरी दासी को जादू के जोर से गाय बना दिया और उसे भी ग्वाले के घर भेज दिया।

'विदेश से वापस आकर मैंने अपनी पत्नी से अपने पुत्र और उसकी माँ के बारे में पूछा। उसने कहा कि तुम्हारी दासी तो मर गई है और तुम्हारे पुत्र को मैंने दो महीने से नहीं देखा, मालूम नहीं वह कहाँ चला गया। मुझे अपनी दासी के मरने का बड़ा दुख हुआ किंतु सब्र कर के बैठ गया। किंतु मुझे आशा थी कि कभी न कभी पुत्र से मेरी भेंट हो जाएगी।

'आठ महीने बाद ईद का त्योहार आया। मेरी इच्छा हुई कि इस त्योहार पर मैं किसी पशु का बलिदान करूँ। मैंने अपने ग्वाले को बुला कर कहा कि कुरबानी के लिए एक स्वस्थ गाय ले आ। संयोग से वह मेरी दासी ही को ले आया जो जादू के जोर से गाय बन गई थी। मैंने उसे बलिदान करने के लिए उसके पैरों को बाँधा तो वह बड़े करुणापूर्ण स्वर में डकारने लगी और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। उसका यह हाल देखकर मुझे उस पर दया आ गई और मुझसे उसके गले पर छुरी न चल सकी। मैंने ग्वाले से कहा कि इसे ले जा और कुरबानी के लिए दूसरी गाय ले आ। यह सुनकर मेरी पत्नी बहुत क्रुद्ध हुई और कहने लगी कि इसी गाय की बलि दी जाएगी, ग्वाले के पास इससे अधिक हृष्ट-पुष्ट और कोई गौ नहीं है।

'उसके भला-बुरा करने से मैंने फिर छुरी हाथ में ली और गाय को मारने के लिए उद्यत हुआ। इस पर गाय और भी चीख-पुकार करने लगी। मैं अजीब दुविधा में पड़ा। अंत में मैंने छुरी ग्वाले को दे दी और कहा, मुझ से इस गाय पर छुरी नहीं चलती, तू ही इसका

बलिदान कर दे। ग्वाले को गाय के रोने-चिल्लाने पर दया न आई और उसने छुरी फेर दी।

'जब गाय की खाल उतारी गई तो सब ने देखा कि उसके अंदर अस्थिपंजर मात्र है, मांस का कहीं पता नहीं। कारण यह था कि गाय की हृष्टतापुष्टता तो केवल मायाजाल के कारण थी। मैं उस ग्वाले पर नाराज हुआ कि गाय को ऐसी दशा में क्यों रखा कि वह ऐसी दुबली-पतली हो गई। मैंने गाय ग्वाले ही को दे दी और कहा, तू इसे अपने ही काम में ला, मेरे कुरबानी करने के लिए कोई बछड़ा ही ले आ, किंतु वह मोटा-ताजा होना चाहिए, इस गाय की तरह नहीं।

'ग्वाला शीघ्र ही एक मोटा-ताजा बछड़ा ले आया। बछड़ा देखने में भी बड़ा सुंदर था। यद्यपि उस बछड़े के बारे में मुझे मालूम न था कि यह मेरा ही पुत्र है तथापि उसे देखकर मेरे हृदय में प्रेम उमड़ने लगा और वह बछड़ा भी मुझे देखते ही रस्सी तुड़ाकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। इस बात से मेरे हृदय में प्रेम का स्रोत और जोर से उबलने लगा और मैं सोचने लगा कि ऐसे प्यारे बछड़े को कैसे मारूँ। इन भावनाओं ने मुझे अत्यंत विह्वल कर दिया। उस बछड़े की आँखों से आँसू बहने लगे। इससे उसके प्रति मेरा प्यार और उमड़ा और मैंने ग्वाले से कहा कि इस बछड़े को वापस ले जा और इसकी जगह कोई दूसरा बछड़ा ले आ।

'इस पर मेरी पत्नी ने कहा कि तुम इतने मोटे-ताजे बछड़े की कुर्बानी क्यों नहीं करते। मैंने कहा कि यह बछड़ा मुझे बड़ा प्यारा लगता है और मेरा जी नहीं करता है कि इसका वध करूँ, तुम इसके लिए कुछ जोर मत दो। लेकिन उस निष्ठुर दुष्ट ने तकरार जारी रखी और विद्वेषवश उसके वध पर जोर देती रही। मैं उसकी बहस से तंग आकर छुरी लेकर पुत्र की गर्दन काटने चला। उसने फिर मेरी ओर देखकर आँसू बहाए। मेरे हृदय में ऐसी दया और प्रीति उमड़ी कि छुरी हाथ से गिर गई।

'फिर मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मेरे पास एक और बछड़ा है, मैं उसे कुरबान कर दूँगा। वह दुष्टमना फिर भी उसी बछड़े को मारने पर जोर देती रही। किंतु इस बार मैंने उसके बकने-झकने की परवाह नहीं की और बछड़े को वापस कर दिया। हाँ, पत्नी के हृदय को सांत्वना देने के लिए कह दिया कि बकरीद के दिन इसी बछड़े की बलि दूँगा।

'ग्वाला बछड़े को अपने घर ले गया। लेकिन दूसरे दिन तड़के ही मुझ से एकांत में कहा कि मैं आप से कुछ कहना चाहता हूँ और मुझे आशा है कि आप मेरी बात सुन कर प्रसन्न होंगे। मेरी बेटी जादू-टोने में प्रवीण है। कल जब मैं उस बछड़े को वापस लेकर गया तो वह उसे देख कर हँसी भी और रोई भी। मैंने इस विचित्र बात का कारण पूछा तो बोली कि अब्बा, जिस बछड़े को तुम लौटा कर जिंदा लाए हो वह हमारे मालिक का बेटा है, इसलिए मैं इसे जीता-जागता देखकर प्रसन्न हुई। रोई इसलिए कि इसके पहले इसकी माँ की कुरबानी दे दी गई थी। हमारे स्वामी की पत्नी ने सौतिया डाह के कारण इन माता-पुत्र को जादू के जोर से गाय और बछड़ा बना दिया था। मैंने जो अपनी बेटी के मुँह से सुना, जैसा का तैसा आपको बता दिया।

'हे दैत्यराज, अब आप सोचिए कि यह वृत्तांत सुनकर मेरे हृदय में कितना शोक और संताप उठा होगा। मैं कुछ देर मर्माहत होकर चुप रहा फिर ग्वाले के साथ उसके घर पर चला गया ताकि इस वृत्तांत को उसकी बेटी के मुँह से सुनूँ। सबसे पहले मैं उसकी पशुशाला में गया ताकि अपने बछड़ा बने हुए पुत्र को देखूँ। मैं उस पर हाथ फेरूँ इसके पहले ही वह मेरे पास आकर इतना लाड़ करने लगा कि मुझे विश्वास हो गया कि यह मेरा पुत्र ही है।

'मैंने लड़की के पास जाकर ग्वाले के मुँह से सुना हुआ हाल दुबारा सुना और लड़की से कहा कि क्या तुम इस बछड़े को फिर से मनुष्य का रूप दे सकती हो। उसने कहा, निश्चय ही मैं उसे दुबारा मनुष्य बना सकती हूँ। मैंने कहा, अगर तुम ऐसा कर दो तो मैं तुम्हें अपनी सारी धन-संपदा दे दूँगा। लड़की ने मुस्करा कर कहा कि हम लोग आप के सेवक हैं, आप हमारे मालिक हैं, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है; किंतु बछड़े को मनुष्य रूप मैं दो शर्तों पर दूँगी - एक तो यह कि उसके मनुष्य बन जाने पर आप उसका विवाह मेरे साथ कर दें और दूसरा यह कि जिसने इसे मनुष्य से पशु बनाया है उसे भी थोड़ा दंड दिया जाए।

'मैंने उत्तर दिया, मुझे तुम्हारी पहली शर्त बिल्कुल मंजूर है, मैं तुम्हारा विवाह उसके साथ कर दूँगा और तुम दोनों को इतना धन-धान्य दूँगा कि जीवन पर्यंत तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। दूसरी शर्त में निर्णय मैं तुम्हारे ही हाथ छोड़ता हूँ, तुम जो भी दंड उसके लिए उचित समझोगी वही दंड मेरी पत्नी को दिया जाएगा, हाँ यह जरूर कहूँगा कि यद्यपि वह दुष्ट दंडनीय है किंतु उसे प्राणदंड न दे देना।

'लड़की ने कहा कि जैसा उस ने आप के पुत्र के साथ किया है वैसा ही मैं उस के साथ करूँगी। यह कहकर उसने एक प्याले में पानी लिया और उसे अभिमंत्रित कर के बछड़े को सामने लाकर कहा कि ऐ खुदा के बंदे, अगर तू आदमी है और केवल जादू के कारण बछड़ा बना है तो भगवान की दया से अपना पूर्व रूप प्राप्त कर ले। यह कहकर उसने अभिमंत्रित जल उस पर छिड़का और वह तुरंत ही मनुष्य रूप में आ गया। मैंने प्रीतिपूर्वक उसे छाती से लगाया और गदगद स्वर में उससे कहा कि इस लड़की के कारण ही तुमने फिर से मानव देह पाई है, तुम इसका एहसान चुकाओ और इसके साथ विवाह कर लो। पुत्र ने सहर्ष मेरी बात मानी। लड़की ने इसी प्रकार जल को अभिमंत्रित कर के मेरी पत्नी को हिरनी का रूप दे दिया।

'मेरे पुत्र ने उस कन्या के साथ विवाह किया किंतु दुर्भाग्यवश वह थोड़े ही समय के बाद मर गई। मेरे पुत्र को इतना दुख हुआ कि वह देश छोड़कर कहीं चला गया। बहुत दिनों तक मुझे उसका कोई समाचार नहीं मिला। अतएव मैं उसे ढूँढ़ने निकला हूँ। मुझे किसी पर इतना भरोसा नहीं था कि अपनी हिरनी बनी हुई पत्नी को उसके पास छोड़ता, इसलिए मैं उसे अपने साथ लिए हुए देश-देश अपने पुत्र की खोज में घूमता हूँ। यही मेरी और इस हिरनी की कहानी है। अब आप स्वयं निर्णय कर लें कि यह घटना विचित्र है या नहीं।'
दैत्य ने कहा, 'निःसंदेह विचित्र है। मैंने व्यापारी के अपराध का एक तिहाई हिस्सा माफ कर दिया।'

फिर शहरजाद ने शहरयार से निवेदन किया कि जब पहला वृद्ध मनुष्य अपनी कहानी कह चुका तो दूसरे बूढ़े ने, जो अपने साथ दो काले कुत्ते लिए था, दैत्य से कहा कि मैं भी अपना और इन दोनों कुत्तों का इतिहास आपके सम्मुख रखता हूँ। यदि यह पहली कहानी से भी अच्छा हो तो आशा करता हूँ कि उसे सुनने के बाद व्यापारी के अपराध का एक तिहाई भाग और क्षमा कर दिया जाएगा। दैत्य ने कहा कि अगर तुम्हारी कहानी पहली कहानी से अधिक विचित्र हुई तो मैं तुम्हारी बात जरूर मानूँगा।

किस्सा दूसरे बूढ़े का जिसके पास दो काले कुत्ते थे

दूसरे बूढ़े ने कहा, 'हे दैत्यराज, ये दोनों काले कुत्ते मेरे सगे भाई हैं। हमारे पिता ने मरते समय हम तीनों भाइयों को तीन हजार अशर्फियाँ दी थीं। हम लोग उन मुद्राओं से व्यापार चलाने लगे। मेरे बड़े भाई को विदेशों में जाकर व्यापार करने की इच्छा हुई सो उसने अपना सारा माल बेच डाला और जो वस्तुएँ विदेशों में महँगी बिकती थीं उन्हें यहाँ से खरीद कर व्यापार को चल दिया। इसके लगभग एक वर्ष बाद मेरी दुकान पर एक भिखमंगा आकर बोला, भगवान तुम्हारा भला करे। मैंने उस पर ध्यान दिए बगैर जवाब दिया, भगवान तुम्हारा भी भला करे। उसने कहा कि क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैंने उसे ध्यानपूर्वक देखा और फिर उसे गले लगाकर फूट-फूट कर रोया। मैंने कहा, भैया, मैं तुम्हें ऐसी दशा में कैसे पहचानता। फिर मैं ने उसके परदेश के व्यापार का हाल पूछा तो उसने कहा कि मुझे इस हाल में भी देख कर क्या पूछ रहे हो।

'फिर मेरे जोर देने पर उसने वे सारी विपदाएँ बताईं जो उस पर पड़ी थीं और बोला कि मैंने संक्षेप ही में तुम्हें सब बताया है, इससे अधिक विस्तार से बताऊँगा तो मेरा भी दुख बढ़ेगा और तुम्हारा भी। उसकी बातें सुनकर मैं अपने सभी काम भूल गया। मैंने उसे स्नान कराया और अच्छे वस्त्र मँगाकर उसे पहनाए। फिर मैंने अपना हिसाब देखा तो मालूम हुआ कि मेरे पास छह हजार रुपए हैं।

'मैंने तीन हजार रुपए अपने भाई को देकर कहा कि तुम पिछली हानि भूल जाओ और इस तीन हजार से नए सिरे से व्यापार करो। उसने रुपयों को सहर्ष ले लिया और नए सिरे से व्यापार करने लगा और हम सब लोग पहले की तरह रहने लगे।

'कुछ दिनों बाद मेरे छोटे भाई की इच्छा हुई कि विदेश जाकर व्यापार करे। मैंने उसे बहुत मना किया लेकिन उसने मेरी बात न मानी और अपना सारा माल बेच-बाच कर के वस्तुएँ खरीद लीं जो विदेशों में महँगी मिलती हैं। फिर उस ने मुझ से विदा ली और एक कारवाँ के साथ जो विदेश जा रहा था, रवाना हो गया। एक वर्ष के बाद मेरे बड़े भाई की तरह वह भी अपनी सारी जमा-पूँजी गँवाकर फकीर बनकर मेरे पास वापस आया। मैंने बड़े भाई की तरह छोटे भाई की भी सहायता की और उस वर्ष जो तीन हजार रुपए मुझे व्यापार में लाभ के रूप में मिले थे उसे दिए। वह भी नगर में एक दुकान लेकर पहले की तरह व्यापार करने लगा और सब कुछ पहले की तरह ठीक-ठाक चलने लगा।

'कुछ समय बीता था कि मेरे दोनों भाइयों ने मुझसे कहा, हम सभी लोग विदेश जाकर व्यापार करें। पहले मैंने इनकार किया और कहा कि तुम लोगों ही को विदेशी व्यापार से क्या लाभ हुआ है जो मुझे भी इस बार चलने को कह रह हो। तब दोनों मेरे साथ बहस करने लगे और कहने लगे कि कौन जाने इस बार तुम्हारे भाग्य और तुम्हारी व्यापार बुद्धि ही से हम दोनों की तकदीर जाग जाए और हमारे सारे सपने पूरे हो जाएँ। मैंने फिर इनकार कर दिया लेकिन ये मेरे पीछे पड़े रहे। यहाँ तक कि इसी बहस में पाँच वर्ष बीत

गए और इस अवधि में उन्होंने मेरी जान खा डाली। तंग आकर मैंने उसकी बात मान ली।'

'मैंने व्यापार के लिए आवश्यक वस्तुएँ मोल ले लीं। उसी समय मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे भाइयों ने मेरा दिया हुआ धन खर्च कर डाला है और उनके पास कुछ नहीं बचा। मैंने इस पर भी उनसे कुछ नहीं कहा। उस समय मेरे पास बारह हजार रुपए थे। उसमें से आधा धन मैंने दोनों को दे दिया और कहा कि भाइयो, बुद्धिमानी और दूरदर्शिता इसी में है कि हम अपना आधा धन व्यापार में लगाएँ और आधा अपने घर में छोड़ जाएँ। अगर तुम दोनों की तरह इस बार भी हम सब को व्यापार में घाटा हो तो उस समय घर में रखा हुआ धन काम आएगा और हम लोग उसे व्यापार में लगा कर अपना काम चलाएँगे।

'चुनांचे मैंने उन्हें तीन-तीन हजार रुपए दिए और इतनी ही राशि अपने लिए रखी और बाकी तीन हजार रुपए अपने घर में एक गहरा गढ़ा खोदकर उसमें दबा दिया। फिर हमने व्यापार की वस्तुएँ खरीदीं और जहाज पर सवार होकर एक अन्य देश को निकल गए। एक महीने बाद हम कुशलतापूर्वक एक नगर में पहुँचे और व्यापार आरंभ किया। हमें व्यापार में बहुत लाभ हुआ। फिर हमने उस देश की बहुत-सी अच्छी वस्तुएँ अपने देश में बेचने के मंतव्य से मोल लीं।

'जब हम उस स्थान पर लेन-देन कर चुके और जहाज पर वापस आने के लिए तैयार हुए तो एक अत्यंत सुंदर स्त्री फटे-पुराने कपड़े पहने हुए मेरे सामने आई। उसने जमीन पर गिरकर मुझे सलाम किया, मेरा हाथ चूमा और मुझसे निवेदन किया कि मेरे साथ विवाह कर लो। मैंने इस बात को उचित न समझा और इनकार कर दिया। लेकिन वह गिड़गिड़ाती और मिन्नतें करती रही। अंत में मुझे उसकी निर्धनता पर दया आ गई और मैंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर के उसके साथ विधिवत विवाह कर लिया और उसे अपने साथ जहाज पर चढ़ा लिया। मैंने रास्ते में देखा कि वह केवल सुंदरी ही नहीं, अत्यंत बुद्धिमती भी है। इस कारण मैं उससे बहुत प्रेम करने लगा।

'किंतु मेरे इस सौभाग्य को देखकर मेरे दोनों भाई जल मरे और मेरी जान के दुश्मन हो गए। उनका विद्वेष यहाँ तक बढ़ा कि एक रात जब हम दोनों सो रहे थे उन्होंने हमें समुद्र में फेंक दिया। मेरी पत्नी में जैसे कोई अलौलिक शक्ति थी। ज्यों ही हम दोनों समुद्र में गिरे वह मुझे एक द्वीप पर ले गई। जब प्रभात हुआ तो उसने मुझे बताया कि मेरे कारण ही तुम्हारी जान बची है, मैं वास्तव में परी हूँ, जब तुम जहाज पर चढ़ने के लिए तैयार हो रहे थे तो मैं तुम्हारे यौवन और सौंदर्य को देखकर तुम पर मोहित हो गई थी और तुम्हारे साथ प्रणय सूत्र में बँधना चाहती थी; मैं तुम्हारी सहृदयता की परीक्षा भी लेना चाहती थी इसलिए मैं फटे-पुराने कपड़े पहन कर भिखारिणियों की भाँति तुम्हारे सामने आई; मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम ने मेरी इच्छा पूरी की; तुम ने मेरे साथ जो उपकार किया है उस से मैं उऋण होना चाहती हूँ किंतु मैं तुम्हारे भाइयों पर अत्यंत कुपित हूँ और उन्हें जीता न छोड़ूँगी।

'उसकी बातें सुनकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ। मैंने उसका बड़ा एहसान माना और अत्यंत दीनतापूर्वक कहा कि तुम मेरे भाइयों की जान से न मारो; यद्यपि उन्होंने मुझे बड़ा कष्ट पहुँचाया है तथापि मैं यह नहीं चाहता कि उन्हें ऐसा कठोर दंड दिया जाए। मैं जितना ही अपने भाइयों की सिफारिश करता था उतना ही परी का क्रोध उन पर बढ़ता जाता था। वह कहने लगी कि मैं यहाँ से उड़कर जाऊँगी और उन दुष्टों समेत उनके जहाज को डुबो दूँगी। मैंने फिर उसकी खुशामद की और उसे परमेश्वर की सौगंध देकर कहा कि तुम उन्हें इतना कड़ा दंड न देना, सज्जनों का काम यही है कि वे बुराई के बदले भलाई करें; तुम अपने क्रोध को ठंडा करो और यदि तुम उन्हें दंड ही देना चाहो तो मृत्यु दंड के अतिरिक्त जो दंड चाहो दे दो।

'मैं उसे इस तरह समझा-बुझा और मना रहा था कि उसने एक क्षण में मुझे उड़ाकर मेरे मकान की छत पर पहुँचा दिया और स्वयं अंतर्ध्यान हो गई। मैं छत से उतरकर घर के अंदर आया। फिर मैंने गढ़े से अपने दबाए हुए तीन हजार रुपए निकाले और दुकान में जाकर फिर कारोबार करने लगा। जब मैं दुकान से घर को वापस आया तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मकान के अंदर दो काले कुत्ते मौजूद हैं। मुझे देखकर वे दुम हिलाते हुए मेरे पास आए और मेरे पाँवों पर सर रख कर लोटने लगे।

'उसी समय वह परी मेरे घर में आई और मुझसे बोली कि इन कुत्तों को देख कर घबराना नहीं, ये तुम्हारे दोनों भाई हैं। यह सुनकर मेरा तो खून ही सूख गया। मैंने दुखी होकर परी से पूछा कि ये कुत्ते कैसे बन गए। उसने कहा, मेरी एक बहन है जिसने मेरे कहने पर तुम्हारे जहाज को माल-असबाब समेत डुबो दिया और तुम्हारे भाइयों को दस वर्ष के लिए कुत्ता बना दिया। यह कहकर परी अंतर्ध्यान हो गई। जब दस वर्ष व्यतीत हो गए तो मैं अपने भाइयों को साथ लेकर इधर आ निकला और इस व्यापारी तथा इस हिरनी वाले वृद्ध को देखकर यहाँ रुक गया। यही मेरी कहानी है। हे दैत्यराज, आप को यह कहानी अद्भुत लगी या नहीं?'

दैत्य ने कहा, 'वास्तव में तेरी आपबीती बड़ी अदभुत है; मैंने व्यापारी के अपराध का दूसरा तिहाई भाग भी माफ कर दिया।' इस पर तीसरे बूढ़े ने इन दोनों की तरह दैत्य से कहा कि अब मैं भी अपना वृत्तांत आप से कह रहा हूँ। यदि आप इसे भी अद्भुत पाएँ तो कृपया व्यापारी के अपराध का बाकी तिहाई भाग भी क्षमा कर दें। दैत्य ने यह बात स्वीकार की।

किस्सा तीसरे बूढ़े का जिसके साथ एक खच्चर था

तीसरे बूढ़े ने कहना शुरू किया : 'हे दैत्य सम्राट, यह खच्चर मेरी पत्नी है। मैं व्यापारी था। एक बार मैं व्यापार के लिए परदेश गया। जब मैं एक वर्ष बाद घर लौटकर आया तो मैंने देखा कि मेरी पत्नी एक हब्शी गुलाम के पास बैठी हास-विलास और प्रेमालाप कर रही है। यह देखकर मुझे अत्यंत आश्चर्य और क्रोध हुआ और मैंने चाहा कि उन दोनों को दंड दूँ। तभी मेरी पत्नी एक पात्र में जल ले आई और उस पर एक मंत्र फूँक कर उसने मुझ पर अभिमंत्रित जल छिड़क दिया जिससे मैं कुत्ता बन गया। पत्नी ने मुझे घर से भगा दिया और फिर अपने हास-विलास में लग गई।

'मैं इधर-उधर घूमता रहा फिर भूख से व्याकुल होकर एक कसाई की दुकान पर पहुँचा और उसकी फेंकी हुई हड्डियाँ उठाकर खाने लगा। कुछ दिन तक मैं ऐसा ही करता रहा। फिर एक दिन कसाई के साथ उसके घर जा पहुँचा। कसाई की पुत्री मुझे देखकर अंदर चली गई और बहुत देर तक बाहर नहीं निकली। कसाई ने कहा, तू अंदर क्या कर रही है, बाहर क्यों नहीं आती? लड़की बोली, मैं अपरिचित पुरुष के सामने कैसे जाऊँ? कसाई ने इधर-उधर देखकर कहा कि यहाँ तो कोई अपरिचित पुरुष नहीं दिखाई देता, तू किस पुरुष की बात कर रही है?

'लड़की ने कहा, यह कुत्ता जो तुम्हारे साथ घर में आया है तुम्हें इसकी कहानी मालूम नहीं है। यह आदमी है। इसकी पत्नी जादू करने में पारंगत है। उसी ने मंत्र शक्ति से इसे कुत्ता बना दिया है। अगर तुम्हें इस बात पर विश्वास न हो मैं तुरंत ही इसे मनुष्य बना कर दिखा सकती हूँ। कसाई बोला, भगवान के लिए सो ही कर। तू इसे मनुष्य बना दे ताकि यह लोक-परलोक दोनों का धर्म संचित करे।

'यह सुन कर वह लड़की एक पात्र में जल लेकर अंदर से आई और जल को अभिमंत्रित करके मुझ पर छिड़का और बोली, तू इस देह को छोड़ दे और अपने पूर्व रूप में आ जा। उसके इतना कहते ही मैं दुबारा मनुष्य के रूप में आ गया और लड़की फिर परदे के अंदर चली गई। मैंने उसके उपकार से अभिभूl होकर कहा, हे भाग्यवती, तूने मेरा जो उपकार किया है उससे तुझे लोक-परलोक का सतत सुख प्राप्त हो। अब मैं चाहता हूँ कि मेरी पत्नी को भी कुछ ऐसा ही दंड मिले।

'यह सुनकर लड़की ने अपने पिता को अंदर बुलाया और उसके हाथ थोड़ा अभिमंत्रित जल बाहर भिजवाकर बोली, तू इस जल को अपनी पत्नी पर छिड़क देना। फिर तू उसे जो भी देह देना चाहे उस पशु का नाम लेकर स्त्री से कहना कि तू यह हो जा। वह उसी पशु की देह धारण कर लेगी। मैं उस जल को अपने घर ले गया। उस समय मेरी पत्नी सो रही थी। इससे मुझे काम करने का अच्छा मौका मिल गया। मैंने अभिमंत्रित जल के कई छींटे उसके मुँह पर मारे और कहा, तू स्त्री की देह छोड़कर खच्चर बन जा। वह खच्चर बन गई और तब से मैं इसी रूप में अपने साथ लिए घूमता हूँ।'

शहरजाद ने कहा - बादशाह सलामत, जब तीसरा वृद्ध अपनी कहानी कह चुका तो दैत्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने खच्चर से पूछा कि क्या यह बात सच है जो यह बूढ़ा कहता है? खच्चर ने सिर हिला कर संकेत दिया कि बात सच्ची है। तत्पश्चात दैत्य ने व्यापारी के अपराध का बचा हुआ तिहाई भाग भी क्षमा कर दिया और उसे बंधनमुक्त कर दिया। उसने व्यापारी से कहा, तुम्हारी जान आज इन्हीं तीन वृद्ध जनों के कारण बची है। यदि ये लोग तुम्हारी सहायता न करते तो तुम आज मारे ही गए थे। अब तुम इन तीनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। यह कहने के बाद दैत्य अंतर्ध्यान हो गया। व्यापारी उन तीनों के चरणों में गिर पड़ा। वे लोग उसे आशीर्वाद देकर अपनी-अपनी राह चले गए और व्यापारी भी घर लौट गया और हँसी-खुशी अपने प्रियजनों के साथ रहकर उसने पूरी आयु भोगी।

शहरजाद ने इतना कहने के बाद कहा, 'मैंने जो यह कहानी कही है इससे भी अच्छी एक कहानी जानती हूँ जो एक मछुवारे की है।' बादशाह ने इस पर कुछ नहीं कहा लेकिन दुनियाजाद बोली, 'बहन, अभी तो कुछ रात बाकी है। तुम मछुवारे की कहानी भी शुरू कर दो। मुझे आशा है कि बादशाह सलामत उस कहानी को सुनकर भी प्रसन्न होंगे।' शहरयार ने वह कहानी सुनने की स्वीकृति भी दे दी। शहरजाद ने मछुवारे की कहानी इस प्रकार आरंभ की।

किस्सा मछुवारे का

शहरजाद ने कहा कि हे स्वामी, एक वृद्ध और धार्मिक प्रवृत्ति का मुसलमान मछुवारा मेहनत करके अपने स्त्री-बच्चों का पेट पालता था। वह नियमित रूप से प्रतिदिन सवेरे ही उठकर नदी के किनारे जाता और चार बार नदी में जाल फेंकता था। एक दिन सवेरे उठकर उसने नदी में जाल डाला। उसे निकालने लगा तो जाल बहुत भारी लगा। उसने समझा कि आज कोई बड़ी भारी मछली हाथ आई है लेकिन मेहनत से जाल दबोच कर निकाला तो उसमें एक गधे की लाश फँसी थी। वह उसे देखकर जल-भुन गया, उसका जाल भी गधे के बोझ से जगह जगह फट गया था।

उसने सँभाल कर फिर नदी में फेंका। इस बार जो खींचा तो उसमे सिर्फ मिट्टी और कीचड़ भरा मिला। वह रो कर कहने लगा कि मेरा दुर्भाग्य तो देखो, दो-दो बार मैंने नदी में जाल डाला और मेरे हाथ कुछ नहीं आया। मैं तो इस पेशे के अलावा और कोई व्यवसाय जानता भी नहीं, मैं गुजर-बसर के लिए क्या करूँ।

उसने जाल को धो-धा कर फिर पानी में फेंका। इस बार भी उसके हाथ दुर्भाग्य ही लगा,

जाल में कंकड़, पत्थर और फलों की गुठलियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। यह देखकर वह और भी रोने-पीटने लगा। इतने में सवेरे का उजाला भी फैल गया था। उसने भगवान का ध्यान धरा और विनय की, 'हे सर्व शक्तिमान दीनदयाल प्रभु, तुम जानते हो कि मैं हर रोज सिर्फ चार बार नदी में जाल फेंकता हूँ। आज तीन बार फेंक चुका हूँ और कुछ हाथ नहीं आया और मेरी सारी मेहनत बेकार गई। अब एक बार जाल फेंकना रह गया है। अब तू कृपा कर और नदी से मुझे कुछ दिलवा दे और मुझ पर इस प्रकार दया कर जैसी किसी समय हजरत मूसा पर की थी।'

यह कहकर उसने चौथी बार जाल फेंका और खींचा तो भारी लगा। उसने सोचा इस बार तो जरूर मछलियाँ फँसी होंगी। बड़ा जोर लगा कर उसे बाहर निकालकर देखा कि उसमें सिवाय एक पीतल की गागर के और कुछ नहीं है। गागर के भार से वह समझा कि उसमें कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ होंगी क्योंकि उसका मुँह सीसे के ढक्कन से अच्छी तरह बंद था और ढक्कन पर कोई मुहर लगी थी। मछुवारे ने मन में कहा कि यह अंदर से खाली हुआ तो भी इसे बेच कर पैसे मिल जाएँगे जिससे आज का काम किसी तरह चलेगा।

उसने गागर को उलट-पलट कर और हिला-डुला कर देखा लेकिन उसमें से कोई शब्द नहीं निकला। फिर वह कहीं से एक चाकू लाया और बहुत देर तक मेहनत करके उसका मुँह खोला। अब वह झाँक कर गागर के अंदर देखने लगा लेकिन उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसी समय उसने देखा कि गागर से धुआँ निकल रहा है। वह आश्चर्य से देखने लगा कि क्या होता है। गागर में से बहुत सा धुआँ निकल कर नदी के ऊपर आकाश में फैल गया। कुछ ही देर में वह धुआँ सिमट कर एक जगह आ गया और उसने एक भी भीषण दैत्य का आकार ले लिया। मछुवारा घबराकर भागने को हुआ लेकिन उसने सुना कि दैत्य हाथ उठाकर कह रहा है कि ऐ सुलेमान, मेरा अपराध क्षमा कीजिए, मैं कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा। मछुवारा यह सुनकर अपना डर भूल गया और बोला, 'अरे भूत, तू क्या बक रहा है? सुलेमान को मरे अठारह सौ वर्षों से अधिक हो गए हैं। तू कौन है, मुझे बता कि तू इस गागर में किस प्रकार बंद हो गया।'

दैत्य ने उसे घृणापूर्वक देखकर कहा, 'तू बड़ा बदतमीज है, मुझे भूत कहता है।' मछुवारा बिगड़ कर बोला, 'और कौन है तू? तुझे भूत न कहूँ तो गधा कहूँ?'

दैत्य ने कहा, 'तेरे मरने में अब अधिक समय नहीं है। मैं तुझे शीघ्र ही मार डालूँगा। तू अपनी बकबक बंद कर और मुझसे बात ही करनी है तो जुबान सँभाल कर के कर।'

मछुवारा घबराकर बोला, 'तू मेरी हत्या क्यों करना चाहता है? क्या तू इस बात को भूल गया कि मैंने ही तुझे गागर के बंधन से छुड़ाया है।'

दैत्य बोला, 'मुझे भली प्रकार ज्ञात है कि तूने ही गागर खोली है लेकिन इस बात से तेरी जान नहीं बच सकती। हाँ, मैं तेरे साथ एक रियायत करूँगा। मैं तुझे यह निर्णय करने का

अधिकार दूँगा कि मैं किस प्रकार तुझे मारूँ।'

मछुवारे ने कहा, 'तेरे हृदय में जरा भी न्यायप्रियता नहीं है। मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है कि तू मुझे मारना चाहता है? क्या मेरे इस अहसान का बदला तू इसी प्रकार देना चाहता है कि अकारण मुझे मार डाले।'

दैत्य बोला, 'अकारण नहीं मार रहा। मैं तुझे बताता हूँ कि तुझे मारने का क्या कारण है, तू ध्यान देकर सुन। मैं उन जिन्नों (दैत्यों) में से हूँ जो नास्तिक थे। अन्य दैत्य मानते थे कि हजरत सुलेमान ईश्वर के दूत (पैगंबर) हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे। सिर्फ मैं और एक दूसरा दैत्य, जिसका नाम साकर था, सुलेमान की आज्ञा से विमुख हुए। बादशाह सुलेमान ने क्रुद्ध होकर अपने प्रमुख मंत्री आसिफ बिन वरहिया को आदेश दिया कि मुझे पकड़कर उसके (सुलेमान के) सामने पेश करे। मंत्री ने मुझे पकड़ कर उसके सामने खड़ा कर दिया। सुलेमान ने मुझसे कहा कि तू मुसलमान होकर मुझे पैगंबर मान और मेरी आज्ञाओं का पालन कर। मैंने इससे इनकार कर दिया। सुलेमान ने इसकी मुझे यह सजा दी कि मुझे इस गागर में बंद किया और अभिमंत्रित करके सीसे का ढक्कन इसके मुँह पर जड़ दिया और उस पर अपनी मुहर लगा दी और एक दैत्य को आज्ञा दी कि गागर को नदी में डाल दे। अतएव वह मुझे नदी में डाल गया। उस समय मैंने प्रण किया कि सौ वर्षों के अंदर जो आदमी मुझे निकालेगा उसे मैं इतना धन दे दूँगा कि वह आजीवन सुख से रहे और उसके मरणोपरांत भी बहुत-सा धन उसके उत्तराधिकारियों के लिए रह जाए। इस अवधि में मुझे किसी ने न निकाला। फिर मैंने प्रतिज्ञा की कि अब सौ वर्ष के अंदर जो मुझे मुक्त करेगा उसे मैं सारे संसार के खजाने दिलवा दूँगा। फिर भी किसी ने मुझे न निकाला। फिर मैंने प्रतिज्ञा की कि सौ वर्षों की तीसरी अवधि में जो मुझे मुक्त करेगा उसे मैं बहुत बड़ा बादशाह बना दूँगा और हर रोज उसके पास जाकर उस की तीन इच्छाएं पूरी करूँगा। जब इस तीसरी अवधि में भी किसी ने मुझे न निकाला तो मुझे बड़ा क्रोध आया और उसी अवस्था में मैंने प्रण किया कि जो मुझे अब बाहर निकालेगा मैं अत्यंत क्रूरतापूर्वक उसके प्राण लूँगा। हाँ, उसके साथ इतनी रियायत करूँगा कि वह जिस प्रकार से मरना चाहेगा मैं उसे उसी प्रकार से मारूँगा। अब चूँकि तूने मेरी इस प्रतिज्ञा के बाद मुझे निकाला है इसीलिए अब तू बता कि तुझे किस प्रकार मारूँ।'

मछुवारा यह सुन कर आश्चर्यचकित और भयभीत हुआ और सोचने लगा कि दुर्भाग्य ही मेरे पीछे पड़ गया है जो मैं भलाई करके उसके बदले मृत्युदंड पा रहा हूँ। वह गिड़गिड़ाकर दैत्य से बोला, 'भाई, तुम अपनी प्रतिज्ञा भूल जाओ, मेरे छोटे-छोटे बच्चों पर दया करो। यदि तुम्हारी समझ में मैंने कोई अपराध किया है तो भी मुझे क्षमा कर दो। क्या तुमने सुना नहीं कि जो दूसरों के अपराध क्षमा करता है ईश्वर उसके अपराध क्षमा करता है?'

दैत्य ने कहा, 'यह बातें रहने दे। मैं तुझे मारे बगैर नहीं रहूँगा; तू सिर्फ बता कि किस प्रकार मरना चाहता है।'

मछुवारा अब बहुत ही भयभीत हुआ क्योंकि उसने देखा कि दैत्य उसे मारने का हठ नहीं

छोड़ रहा है। अपने स्त्री-पुत्रों की याद करके वह अत्यंत दुखी हुआ। उसने एक बार फिर दैत्य का क्रोध शांत करने का प्रयत्न किया और उससे अनुनयपूर्वक कहा, 'हे दैत्यराज, मैंने तो तुम्हारे साथ इतनी भलाई की है, तुम इसके बदले मुझ पर दया भी नहीं कर सकते?' दैत्य बोला, 'इसी भलाई करने के कारण तो तेरी जान जा रही है।' मछुवारे ने फिर कहा, 'कितने आश्चर्य की बात है कि तुम अपने उपकारकर्ता के प्राण लेने पर तुले हो। यह मसल मशहूर है कि अगर कोई बुरों के साथ भलाई करता है तो उसका कुपरिणाम ही उठाता है। यह कहावत तुम्हारे ऊपर पूरी तरह लागू होती है।' दैत्य ने कहा, 'तुम चाहे जितने सवाल-जवाब करो और चाहे जितनी कहावतें कहो, मैं तो तुम्हारी जान लेने के प्रण से हटता नहीं।'

मछुवारे ने अंत में अपनी रक्षा का एक उपाय सोचा। वह दैत्य से बोला, 'अच्छा, अब मैं समझ गया कि तुम्हारे हाथ से मेरी जान नहीं बच सकती। यदि भगवान की यही इच्छा है तो मैं उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ। लेकिन मैं तुझे उसी पवित्र नाम की - जिसे सुलेमान ने अपनी मुहर में खुदवाया था - सौगंध देकर कहता हूँ कि जब तक मैं अपने मरने का तरीका सोच कर तय करूँ तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो।' दैत्य इतनी बड़ी सौगंध से निरुपाय हो गया और काँपने-सा लगा। उसने कहा, 'पूछ, क्या पूछना चाहता है। मैं तेरे प्रश्न का उत्तर दूँगा।'

मछुवारे ने कहा, 'मुझे तेरी किसी बात पर विश्वास नहीं होता। तू इतना विशालकाय प्राणी है, इतनी छोटी-सी गागर में कैसे समा गया। तू झूठ बोलता है।' दैत्य बोला, 'जिस पवित्र नाम की सौगंध तूने मुझे दिलाई है मैं उस की साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं उसी गागर में था।' मछुवारे ने कहा, 'मुझे अब भी विश्वास नहीं है कि तू सच कहता है। इस गागर में तो तेरा एक पाँव भी नहीं आएगा, तू पूरा का पूरा किस प्रकार इसमें समा गया?' दैत्य ने कहा, 'क्या मेरे इतनी बड़ी सौगंध खाने से भी तुझे विश्वास नहीं आता?' मछुवारा बोला, 'तेरे कसम खाने से क्या होता है? मैं तो तभी मानूँगा जब तुझे अपनी आँखों से गागर के अंदर देखूँ और उसमें से आती हुई तेरी आवाज न सुनूँ।'

यह सुन कर दैत्य फिर धुएँ के रूप में परिवर्तित हो गया और सारी नदी पर फैल गया। फिर वह धुआँ रूपी दैत्य एक स्थान पर इकट्ठा हो गया और धीरे-धीरे गागर में जाने लगा। जब बाहर धुएँ का नाम-निशान न रहा तो गागर के अंदर से दैत्य की आवाज आई, 'अब तो तुझे मालूम हुआ कि मैं झूठ नहीं कहता था, इसी गागर में बंद था?' मछुवारे ने इस बात का उत्तर न दिया। उसने गागर का ढकना, जिस पर सुलेमान की मुहर लगी हुई थी, गागर के मुँह पर रखा और उसे मजबूती से बंद कर दिया। फिर वह बोला, 'ओ दैत्य, अब तेरी बारी है कि तू गिड़गिड़ा कर मुझसे अपना अपराध क्षमा करने को कहे। या फिर मुझे यह बता कि तू स्वयं मेरे हाथ से किस प्रकार मरना चाहता है। नहीं, मेरे लिए तो यही उचित होगा कि मैं तुझे फिर इसी नदी में डाल दूँ और नदी के तट पर घर बनाकर रहूँ और जो भी मछुवारा यहाँ जाल डालने आए उसे चेतावनी दे दिया करूँ कि यहाँ एक गागर में एक महाभयंकर दैत्य बंद है, उसे कभी बाहर न निकालना क्योंकि उसने प्रण किया है कि जो भी उसे बाहर निकालेगा उसके हाथ से मारा जाएगा।'

यह सुन कर दैत्य बहुत घबराया। उसने बहुत हाथ-पाँव मारे कि गागर से निकल आए किंतु यह बात असंभव थी क्योंकि गागर के मुँह पर सुलेमान की मुहर लगा हुआ ढकना था और उस मुहर के कारण यह विवश था। उसे क्रोध तो बहुत आया किंतु उसने क्रोध पर नियंत्रण किया और अनुनयपूर्वक बोला, 'मछुवारे भाई, तुम कहीं मुझे फिर नदी में न डाल देना। तुम क्या मेरी बात सच समझते थे? मैं तो केवल परिहासस्वरूप ही तुम्हें मारने की बात कर रहा था। खेद है कि तुमने मेरी बात को सच समझ लिया। अब मुझे निकाल लो।'

मछुवारे ने हँसकर कहा, 'क्यों भाई, जब तुम गागर के बाहर थे तब तो अपने को बड़ा शक्तिशाली दैत्य राज समझते थे और अकड़ते थे, अब क्या हुआ कि गागर के अंदर जाते ही अपने को बड़ा दीन-हीन समझ रहे हो। मैं तो अब तुम्हें नदी में जरूर डालूँगा और प्रलयकाल तक तुम इसी गागर में बंदी बने रहोगे।' दैत्य ने कहा, 'भगवान के लिए मुझे नदी में वापस फेंकने का इरादा छोड़ दे।' इस प्रकार दैत्य ने बड़ी दीनता से छुटकारे की भीख माँगी, बहुत अनुनय-विनय की लेकिन मछुवारा टस से मस न हुआ। फिर दैत्य बोला, 'यदि तुम मुझे इस बार छोड़ दो तो मैं तुम्हारे साथ बड़ा उपकार करूँगा।' मछुवारा बोला, 'तू महाधूर्त है। मैं तेरी बात पर कैसे विश्वास करूँ? अगर मैंने तुझे छोड़ दिया तो तू फिर मुझे मारने पर उद्यत हो जाएगा। तू इस उपकार का भी मुझे ऐसा ही कुफल देगा जैसा गरीक नामी बादशाह ने हकीम दूबाँ के साथ किया था।' दैत्य ने यह पूछने पर कि यह कहानी क्या है, मछुवारे ने कहना शुरू किया।

ईर्ष्यालु बहनों की कहानी

पुराने जमाने में फारस में खुसरो शाह नामी शहजादा था। वह रातों को अक्सर भेस बदल कर सिर्फ एक सेवक को अपने साथ रख कर नगर की सैर किया करता था और संसार की विचित्र बातें देख कर अपना ज्ञान बढ़ाया करता था। जब अपने वृद्ध पिता की मृत्यु होने पर वह राजगद्दी का मालिक हुआ तो उसने अपना नाम कैखुसरो रखा। किंतु उसने भेस बदल कर नगर का घूमना तब भी जारी रखा। हाँ, उसके साथ सेवक के बजाय मंत्री होता था।

एक दिन इसी तरह नगर भ्रमण करते हुए वह एक गली में जा पड़ा। वहाँ एक मकान के अंदर से स्त्रियों की कुछ ऐसी बातचीत सुनाई दी कि वह कान लगा कर उस दरवाजे पर खड़ा हो गया। दरवाजे की दरारों से झाँक कर देखा तो उसे एक दालान में तीन नवयुवतियाँ बातें करती दिखाई दीं। यह तीनों बहनें थीं। बड़ी बहन ने कहा, मुझे अच्छी रोटियाँ खाने का शौक है। अगर मेरा विवाह शाही नानबाई से हो तो मजा आ जाए। मँझली बहन बोली, मैं तो तरह-तरह के खानों की शौकीन हूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरा विवाह बादशाह के बावर्ची से हो। छोटी बहन चुप रही। उसकी बहनों ने बहुत पूछा तो उसने कहा, मेरा काम नौकर-चाकरों से नहीं चलेगा, मैं तो स्वयं बादशाह से शादी करना चाहती हूँ। इतना ही नहीं, मैं चाहती हूँ कि बादशाह से मेरे एक बेटा पैदा हो जिसके एक ओर के बाल सोने के हो, दूसरी ओर के चाँदी के। वह बालक जब रोए तो उसकी आँखों से आँसुओं की जगह मोती गिरें और जब वह हँसे तो उसके होंठों में कलियाँ खिली हुई मालूम हों। उसकी बड़ी बहन यह सुन कर हँसने लगी और बोली कि तू हमेशा पागलों जैसी बात करती है।

बादशाह को इस वार्तालाप से बड़ा कौतूहल हुआ। उसने मंत्री को आज्ञा दी कि इस घर को अच्छी तरह पहचान रखो और कल सुबह इन तीनों बहनों को मेरे सामने हाजिर करो। मंत्री ने दूसरे दिन उसकी आज्ञा का पालन किया और तीनों बहनों को बादशाह के समक्ष ला कर पेश कर दिया। बादशाह ने देखा कि छोटी बहन अपनी अन्य बहनों से कहीं अधिक सुंदर है। वह निगाहों से बुद्धिमान भी लगी। बादशाह उसे देख कर मुग्ध हो गया।

फिर बादशाह ने कहा, तुम लोग कल रात को अपने दालान में बैठी क्या बातें कर रही थीं। ठीक-ठीक वही बताना जो तुमने कहा था। खबरदार, एक शब्द का भी अंतर न पड़े। याद रखो कि तुम्हारी बातें कल रात को मैंने खुद अपने कानों से सुनी हैं। गलत बात कहोगी तो मुझे मालूम हो जाएगा। यह सुन कर तीनों बहनें सिर झुकाए बैठी रहीं, लज्जा और भय के कारण उनकी जबान बंद हो गई। पूछने पर उन्होंने कहा कि हमें कुछ याद नहीं कि हमने क्या कहा था।

बादशाह ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा, तुम लोग भूली कुछ भी नहीं हो। निडर हो कर

बताओ कि कल रात आपस में क्या बातें कर रही थीं। तुम कोई बुरी बात नहीं कर रही थीं। मैं केवल अपने सामने एक बार फिर तुम्हारी बातें सुनना चाहता हूँ। बादशाह का काम प्रजा की आवश्यकताएँ पूरी करना होता है। मैं भी जहाँ तक हो सकेगा तुम्हारी इच्छाएँ पूरी करूँगा। हाँ, यह ख्याल रहे कि तुम लोग वही कहो जो तुमने कल रात को कहा था। बयान बदला न जाए।

मजबूर हो कर तीनों ने एक-एक करके बताया कि पिछली रात क्या कह रही थीं। बादशाह सुन कर मुस्कुरा उठा। उसने अपने नानबाई और बावर्ची को बुलाया और नानबाई को बड़ी तथा बावर्ची को मँझली का हाथ पकड़ा दिया और कहा कि इन लोगों को बढ़िया रोटियाँ और सालन खिलाते रहना। उसने मंत्री को आदेश दिया कि इसी समय काजी और गवाहों को बुला कर इनका निकाह पढ़वा दिया जाए। छोटी के लिए कहा, जैसी इसकी इच्छा थी, इसके साथ मैं विवाह करूँगा। यह विवाह पूरी शाही शान-शौकत से होगा, उसी तरह जैसे मैं किसी राजकुमारी को ब्याह रहा हूँ। मेरी शादी की इसी समय से तैयारियाँ शुरू कर दी जाएँ। यह कहने के बाद वह उठ कर दरबार को चला गया।

बड़ी और मँझली बहन की शादी उसी दिन क्रमशः नानबाई और बावर्ची के साथ हो गई। छोटी का विवाह पूरी धूमधाम से बादशाह के साथ कुछ दिन बाद हुआ और उसे शाही जनानखाने में पहुँचा दिया गया। दोनों बहनों को छोटी के भाग्य से बड़ी ईर्ष्या हुई। वे सोचतीं और आपस में कहा करतीं कि छोटी को तो एक बात मुँह से निकालने पर ही राजपाट मिल गया और हम लोग उसकी एक तरह से नौकरानियाँ हो गईं। एक दिन बड़ी ने मँझली से कहा, यह छोटी ऐसी कौन-सी हूर परी है कि इसे बादशाह ने ब्याह लिया। मुझे तो इस बात से बड़ा बुरा लग रहा है। मँझली बोली, मुझे भी बड़ा बुरा लग रहा है। आखिर बादशाह ने उसमें क्या देखा कि उसे मलिका बना लिया। कही हुई बातों का क्या है, आदमी हर तरह की बातें करता है। मेरी समझ में तो छोटी नहीं बल्कि तुम बादशाह के योग्य थीं। बड़ी ने कहा, मुझे भी यह देख कर आश्चर्य है कि बादशाह की क्या आँखें फूट गई थीं जो उसने उस चुहिया को पसंद किया, उससे तो तुम हजार दरजे अच्छी थीं।

फिर दोनों ने सलाह की कि इस तरह कुढ़ने और एक-दूसरे को तसल्ली देने से काम नहीं चलेगा। किसी तरह उसे खत्म किया जाए या बादशाह की निगाहों से गिराया जाए तभी मन को शांति मिलेगी। फिर भी उनकी समझ में न आता कि इसके लिए क्या उपाय किया जा सकता है। यद्यपि यह ठीक बात थी कि जब वे दोनों छोटी बहन से मिलने जातीं तो वह उनकी हैसियत का ख्याल न करती बल्कि बहनों की तरह ही अपनेपन से उनकी अभ्यर्थना किया करती थी। फिर भी उनकी हैसियत उससे नीची थी ही। सभी लोग जानते थे कि वे दोनों नौकरों की स्त्रियाँ हैं और उनकी बहन रानी है। बादशाह भी अपने सेवकों की पत्नियों को क्यों खातिर में लाता।

कुछ महीनों बाद रानी को गर्भ रहा। यह सुन कर बादशाह को बड़ी खुशी हुई। अब उन दोनों ने अपनी छोटी बहन से कहा, हमें इस बात से इतनी प्रसन्नता है कि बयान नहीं कर सकते। हम दोनों की इच्छा है कि तुम्हारी प्रसूति और उसके चालीस दिन बाद तक

तुम्हारी देखभाल पूरी तरह हमारे ही सुपुर्द हो। मलिका ने कहा, इससे अच्छा क्या हो सकता है। तुम दोनों मेरी माँ जाई हो, तुम से बढ़ कर कौन देखभाल करेगा। तुम अपने पतियों के द्वारा यह आवेदन बादशाह के सामने करो। आशा है वे इसे स्वीकार कर लेंगे। उन्होंने अपने-अपने पतियों के द्वारा बादशाह से यह आवेदन किया तो उसने कहा कि मलिका से पूछ कर ही यह अनुमति दूँगा। उसने अपनी मलिका से पूछा तो वह खुशी से तैयार हो गई क्योंकि उसने तो पहले ही बहनों की बात मान ली थी। बादशाह ने कहा, मेरी समझ में भी यही बात ठीक रहेगी। वे कुछ भी हों, हैं तो तुम्हारी बहनें ही। गैर आदमियों से तो अधिक अच्छी तरह तुम्हारी देखभाल करेंगी। इस बातचीत के बाद बादशाह ने दोनों बहनों को प्रसूति के समय मलिका की देखभाल करने की अनुमति दे दी। वे दोनों महल के अंदर रहने लगीं।

अब उन्हें अपनी दुष्टता को कार्यान्वित करने का अवसर मिल गया। जब मलिका की प्रसूति का समय आया तो उन्होंने समस्त दासियों को वहाँ से हटा दिया। मलिका ने एक अत्यंत सुंदर पुत्र को जन्म दिया। इससे उन दोनों की डाह और बढ़ी। उन्होंने चुपचाप उस बच्चे को महल के बाहर पहुँचा दिया और एक मरा हुआ पिल्ला ला कर रख दिया। बच्चे को उन्होंने एक कंबल में लपेट कर एक पिटारी में रखा और एक नहर में बहा दिया और महल में आ कर दासियों को दिखाया कि मलिका ने मरा पिल्ला जना है। सब लोगों को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ किंतु बादशाह को जब यह मालूम हुआ तो उसका क्रोध से बुरा हाल हो गया। वह कहने लगा, ऐसा मरा पिल्ला जननेवाली रानी का मैं क्या करूँगा, मैं उसे मरवा दूँगा। संयोग से मंत्री भी वहाँ मौजूद था। उसने समझा-बुझा कर बादशाह का क्रोध शांत कर दिया।

जिस नहर में ईर्ष्यालु बहनों ने बच्चेवाली टोकरी बहाई थी वह शाही बागों के अंदर से जाती थी। सारे शाही बागों के व्यवस्थापक यानी बागों के दारोगा का स्थान उसी नहर के किनारे था। उसने नहर में टोकरी बहते देखा तो एक माली से कह कर उसे निकलवाया क्योंकि नहर में इधर-उधर की चीजें नहीं आनी चाहिए। देखा तो उसमें एक अत्यंत सुंदर बालक था। दारोगा को देख कर आश्चर्य हुआ कि टोकरी में रखा बच्चा नहर में कैसे आ गया। लेकिन उसने अधिक सोच-विचार नहीं किया। वह निपूता था। बच्चे को उठा कर वह पत्नी के पास ले गया और कहा, भगवान ने यह बच्चा हमें दिया है। उसकी पत्नी भी बड़ी प्रसन्न हुई और बच्चे का पुत्रवत लालन-पालन करने लगी।

दूसरे वर्ष मलिका के फिर एक पुत्र पैदा हुआ। इस बार भी उसकी बहनों ने वैसी ही दुष्टता की। बच्चे को बाहर जा कर नहर में बहा दिया और मलिका के नीचे एक मरा बिल्ली का बच्चा ला कर रख दिया। महल में फिर मातम सा छा गया और बादशाह का क्रोध फिर आसमान छूने लगा और उसने मलिका का वध कराने की बात फिर कही। इस बार भी दयालु मंत्री ने समझा-बुझा कर उसे मलिका को मरवाने से रोका। मलिका पहले से अधिक अपमान की स्थिति में रहने लगी। इधर जिस टोकरी में बच्चा रखा था वह फिर बागों के दरोगा के हाथ लगी। वह इस बच्चे को भी पहले की भाँति पालने लगा।

कुछ दिनों बाद मलिका को फिर गर्भ रहा। बादशाह को आशा थी कि इस बार की संतान ठीक-ठीक होगी। लेकिन दोनों दुष्ट बहनें अब भी वहाँ मौजूद थीं और उनके मुँह खून लग चुका था। इस बार मलिका के बेटी हुई। मलिका की बहनों ने उसे भी नहर में बहा दिया। उस टोकरी को भी बागों के दारोगा ने निकलवा लिया और ईश्वरीय देन समझ कर इसका पालन-पोषण करने लगा। उधर दुष्ट बहनों ने मशहूर किया कि मलिका ने छछुंदर जना है।

इस बार बादशाह अपना क्रोध बिल्कुल नहीं सँभाल पाया। उसने कहा कि ऐसी जीव-जंतु पैदा करनेवाली रानी से बदनामी ही होगी, इसे जरूर मरवा देना होगा। दयालु मंत्री ने उसके पैरों पर गिर कर कहा, पृथ्वीपाल, आप कुछ न्याय-अन्याय का विचार करें। इसमें रानी का क्या अपराध है? आप की बदनामीवाली बात ठीक है। तो इसके लिए यह करें कि मलिका के पास जाना छोड़ दें।

बादशाह ने कहा, तुम इतना कहते हो तो उसे जान से नहीं मरवाऊँगा। लेकिन मैं सजा जरूर दूँगा और सजा भी ऐसी दूँगा जो मृत्युदंड से भी बढ़ कर कष्टकारक हो। और इस सजा के बारे में मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूँगा।

यह कह कर उसने शाही इमारतों के निर्माता को बुला कर कहा, जामा मसजिद के ठीक सामने एक कैदखाना बनाओ। उसका द्वार खुला रहे और मलिका को एक लकड़ी के पिंजरे में वहाँ बंद कर दिया जाय। वहाँ एक शाही फरमान लगाया जाए कि जो भी नमाज पढ़ने आए मसजिद में जाने के पहले मलिका के मुँह पर थूक कर जाए। जो आदमी ऐसा न करे उसे भी वही सजा दी जाए जो मलिका को दी जा रही है। मंत्री यह सुन कर चुप हो रहा लेकिन सोचने लगा कि मलिका को जो सजा दी जा रही है उसके योग्य तो उसकी बहनें हैं। खैर, बादशाह ने जिस तरह कहा था उसी तरह का कैदखाना और पिंजड़ा तैयार किया गया और मलिका को उसमें रखा गया। दिन भर सैकड़ों नगर निवासी मसजिद में नमाज के लिए जाते और नमाज से पहले मलिका के मुख पर थूका करते। उन्हें इस बात का बड़ा दुख होता कि वे निर्दोष मलिका को दंडित कर रहे हैं लेकिन क्या करते, बादशाही आदेश था और दंड का भय भी। बेचारी मलिका भी ईश्वरीय इच्छा समझ कर सब कुछ सह लेती।

उसके पुत्रों और पुत्री को, जिनके जन्म से भी वह अनभिज्ञ थी, बागों का दारोगा और उसकी पत्नी बड़े प्यार और सावधानी से पाल-पोस रहे थे। तीनों बच्चों को खेलता देख कर उन दोनों को अपार हर्ष होता था। वे कुछ बड़े हुए तो दारोगा ने बड़े लड़के का नाम बहमन, छोटे लड़के का परवेज और लड़की का परीजाद रखा। जब वे लोग कुछ और बड़े हुए तो बागों के दारोगा ने उनकी शिक्षा-दीक्षा के लिए विद्वानों और विभिन्न कलाओं के विशेषज्ञों को नियुक्त किया। तीनों की शिक्षा एक साथ होती और परीजाद भी जो बुद्धि में अपने भाइयों से कम नहीं थी, विभिन्न विषयों में उन्हीं की भाँति पारंगत हो गई। तीनों ने काव्य, इतिहास, गणित आदि सभी प्रचलित विद्याएँ सीखीं।

तीनों की बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी कि उनके अध्यापक कहने लगे कि यह लोग तो कुछ दिनों में हम से भी बढ़ कर विद्वान हो जाएँगे, इन्हें तो कोई बात सीखने में देर ही नहीं लगती।

लिखने-पढ़ने के अलावा तीनों ने घुड़सवारी, धनुर्विद्या, शस्त्र-संचालन आदि की शिक्षा भी ली और जल्द ही इनमें भी प्रवीण हो गए। इसके अलावा परीजाद ने गाना और वाद्य वादन भी सीखा। दारोगा को ख्याल तो पहले भी था कि यह लोग शाही महल के जन्मे होंगे, अब विश्वास भी हो गया। उसे अपना छोटा-सा घर उनके निवास के उपयुक्त न लगा। उसने शहर के बाहर जंगल के समीप उनके लिए विशाल भवन बनवाना शुरू किया।

दारोगा ने अपनी देखरेख में वह भवन बनवाया। वह तैयार हो गया तो उसकी दीवारों पर प्रख्यात कलाकारों द्वारा बड़े सुंदर चित्र बनवाए और महल को हर प्रकार की सुंदर और मूल्यवान सामग्री से सजाया। उसके पास ही उसने बड़ी मनोरम पुष्प वाटिका बनवाई जहाँ वे लोग मन बहलाया करें। इसके अतिरिक्त एक बड़ा भूमिक्षेत्र घिरवा कर उसमें बहुत-से जंगली जानवर रखवाए ताकि वे लोग घर के समीप ही शिकार खेल सकें क्योंकि स्वस्थ रहने के लिए शिकार अच्छी कसरत है।

महल के बन जाने पर दारोगा ने बादशाह से निवेदन किया कि मैंने जंगल के पास एक नया मकान बनवाया है, आपकी अनुमति हो तो मैं बाग के छोटे मकान को छोड़ कर नए मकान में रहूँ। बादशाह उससे खुश था इसलिए उसे तुरंत अनुमति मिल गई। इससे कुछ वर्ष पूर्व दारोगा की पत्नी का देहांत हो गया था। महल बनवाने में उसका कुछ उद्देश्य पत्नी की मृत्यु का दुख भुलाना भी था। किंतु महल बनने के कुछ महीनों बाद ही वह अचानक बीमार हो कर मर गया। उसने काफी धन-दौलत छोड़ी थी और उन तीनों को जीविका की कोई चिंता न थी किंतु उसकी अचानक मौत से उन्हें बड़ा दुख हुआ। अंत समय में वह इन तीनों से इससे अधिक कुछ न कह सका कि आपस में मिल-जुल कर रहना।

उसके मरने पर उसका विधिपूर्वक अंतिम संस्कार करके तीनों बहन-भाई मिल-जुल कर रहने लगे। दोनों भाइयों को एक प्रतिष्ठित राज पद भी मिल गया यद्यपि उनकी बादशाह से भेंट न होती थी। एक दिन दोनों शहजादे शिकार खेलने को गए। परीजाद घर में अकेली थी, सिर्फ उसकी दो-एक दासियाँ उसके साथ थीं। उसी समय एक धर्मनिष्ठ वृद्धा वहाँ आ कर कहने लगी, बेटी, नमाज का समय है, अनुमति दो तो अंदर आ कर नमाज पढ़ लूँ। परीजाद ने तुरंत अनुमति दे दी। जब वह नमाज पढ़ चुकी तो परीजाद के इशारे पर दासियों ने उस बुढ़िया को सारा महल इत्यादि दिखाया। उसने खुश हो कर कहा कि निःसंदेह जिसने यह महल बनवाया है वह अपने कार्य का विशेषज्ञ है।

मकान दिखाने के बाद दासियाँ, बुढ़िया को परीजाद के पास ले आईं। परीजाद ने कहा, बैठिए, आप जैसी धर्मनिष्ठ महिला का साथ करके मैं स्वयं को भाग्यशाली मानती हूँ।

बुढ़िया ने नीचे फर्श पर बैठना चाहा लेकिन परीजाद ने उसे खींच कर अपने तख्त पर अपने बगल में बिठाया। बुढ़िया ने कहा, मालकिन, मेरी आपके साथ बैठने की हैसियत बिल्कुल नहीं है, लेकिन आपका अनुरोध टाल भी नहीं सकती, इसलिए बैठ रही हैं।

परीजाद बुढ़िया से उसके ग्राम, परिवार आदि के बारे में बातें करने लगी। कुछ देर बार परीजाद की दासियों ने जलपान उपस्थित किया जिसमें भाँति-भाँति की रोटियाँ, नान, कुलचे तथा हरे फल और सूखे मेवे थे। कई प्रकार की मिठाइयाँ भी थीं। परीजाद ने कई चीजें अपने हाथ से उठा कर वृद्धा को दीं और कहा, अम्मा, अच्छी तरह पेट भर कर खाओ, तुम देर की अपने घर से निकली हो। थक भी गई होगी और रास्ते में कुछ खाया भी नहीं होगा। बुढ़िया ने कहा, बेटी, तुम जुग-जुग जियो। इतनी सुशील कोई अमीरजादी हो सकती है। यह बात मैं सोच भी नहीं सकती थी। मैं निर्धन हूँ, ऐसी स्वादिष्ट वस्तुएँ खाने की मेरी आदत नहीं है, लेकिन तुम इतने प्यार और आदर से कह रही हो तो खुशी से खाऊँगी। मैं इसे भगवान की दया समझती हूँ कि उसने मुझे तुम्हारा घर दिखाया।

नाश्ता करने के बाद परीजाद ने बुढ़िया से और भी बातें कीं क्योंकि वह कई विषयों की जानकार मालूम होती थी। उसे बुढ़िया से धर्म और ईश्वर भक्ति के बारे में कई प्रश्न पूछे जिनका उसने बहुत अच्छी तरह उत्तर दिया। फिर परीजाद ने बुढ़िया से पूछा, अम्मा, मेरे महल और बाग वगैरह के बारे में तुम्हारी क्या राय है? क्या और भी कोई वस्तु है जो तुम्हारी राय में यहाँ होनी चाहिए? बुढ़िया हँस कर बोली, बेटी, यह प्रश्न मुझ से न करो तो अच्छा हो। मैं कुछ कहूँगी तो तुम कहोगी कि यह दो टके की बुढ़िया मेरे महल और बाग में नुक्स निकालती है। परीजाद ने जोर दे कर कहा, मैं ऐसा कुछ नहीं कहूँगी। तुम जो कुछ कमी इसमें समझती हो वह मुझे जरूर बताओ, मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूँगी।

बुढ़िया ने कहा, यहाँ सब कुछ है। किंतु मेरी समझ में यहाँ पर तीन चीजें और आ जाएँ तो संसार में तुम्हारा बाग अद्वितीय हो जाए। लेकिन उनका मिलना कठिन है। एक तो बुलबुल हजार दास्ताँ है। जब वह बोलता है तो हजारों चिड़ियाँ जमा हो जाती हैं ओर उसके स्वर में स्वर मिलाने लगती हैं। दूसरा एक गानेवाला पेड़ है। उसके पत्ते मोटे और चिकने हैं। जब हवा चलने पर पत्ते एक दूसरे से रगड़ खाते हैं तो उनसे मधुर संगीत निकलता है। इस संगीत से हर एक सुननेवाला मुग्ध हो जाता है। तीसरी वस्तु है सुनहरा पानी। उसकी एक बूँद किसी बर्तन में रख दी जाए तो वह बर्तन अपने आप भर जाता है और फिर उसमें से एक फव्वारा निकलता है जो कभी नहीं रुकता, क्योंकि वह पानी लौट कर उसी बर्तन में गिरता है।

परीजाद बोली, अम्मा, तुम्हें इन चीजों के बारे में इतने विस्तार से पता है तो यह भी जानती होगी कि यह वस्तुएँ कहाँ मिलती हैं। मुझे बताओ तो मैं उनकी प्राप्ति का प्रयत्न करूँ। वृद्धा ने कहा, पूरा हाल तो मैं नहीं बता सकती लेकिन इतना बता सकती हूँ कि इस देश में कहीं भी यह चीजें नहीं मिल सकतीं। यहाँ से कोई व्यक्ति अमुक दिशा में जाए और सीधा चलता ही चला जाए तो बीस दिन की यात्रा के बाद जो पहला व्यक्ति

उसे मिले उससे पूछे कि यह तीनों वस्तुएँ कहाँ मिलेंगी। वही आगे की राह बताएगा। अच्छा बेटी, अब मुझे काफी देर हो गई है, मैं चलूँगी।

बुढ़िया को यह क्या मालूम था कि परीजाद इतनी साहसी लड़की है कि खुद इन चीजों की तलाश में निकल पड़ेगी। इसलिए इसने विस्तार से वह सब कुछ बता दिया जो उसे मालूम था। परीजाद ने उसकी बताई एक-एक बात याद रखी। वह इस चिंता में पड़ गई कि उपर्युक्त तीनों चीजें कैसे प्राप्त की जाएँ। कुछ देर बाद दोनों शहजादे शिकार से वापस आए तो देखा कि बहन गहरी चिंता में डूबी है। उन्होंने कहा, क्या बात है, परीजाद? तुम्हारी कुछ तबीयत खराब है या कोई बात तुम्हारी मरजी के खिलाफ हो गई। परीजाद ने सिर झुका कर कहा, नहीं, कोई बात नहीं है।

बहमन ने कहा, यह तुम झूठ कह रही हो। कुछ ऐसा है जरूर जो तुम्हें दुख दे रहा है। अगर तुम नहीं बताओगी तो हम तुम्हारे पास से उठ कर नहीं जाएँगे। जब परीजाद ने देखा कि दोनों भाई बात के जानने पर अड़े हुए हैं तो उसने कहा, मैं तुम्हें इसलिए नहीं बताती थी कि जो मैं कहूँगी उससे तुम चिंता और कष्ट में पड़ जाओगे। अब तुम जिद कर रहे हो तो बताए देती हूँ। हमारे पिता ने यह महल हमारे लिए बनवाया था और अपनी समझ में उन्होंने सुंदरता और सजावट की कोई चीज यहाँ लाने से न छोड़ी। मैं भी अभी तक यही समझती थी कि इसमें कोई कमी नहीं है किंतु आज मुझे तीन चीजों के बारे में मालूम हुआ कि अगर यहाँ आ जाएँ तो हमारा महल अद्वितीय हो जाए।

शहजादों ने कहा, कौन-सी चीजें हैं वे? परीजाद बोली, एक तो आदमियों जैसा बोलनेवाला बुलबुल हजार दास्ताँ है जिसका संगीत सुनने और जिसके स्वर में स्वर मिला कर गाने के लिए हजारों पक्षी आ जाते हैं। दूसरा गानेवाला पेड़ जिसके पत्तों के रगड़ खाने से संगीत निकलता है। तीसरे सुनहरा पानी है जिसकी एक बूँद ही से कभी न खत्म होनेवाला फव्वारा बन जाता है। मैं इसी चिंता में हूँ कि इन्हें कैसे प्राप्त करूँ। बहमन ने कहा, अगर तुम यह बता दो कि कहाँ या किस ओर जाने से यह चीजें मिलेगी तो मैं कल सुबह ही रवाना हो जाऊँ। परवेज ने उसे उद्यत देख कर कहा, भैया, तुम्हारी बुद्धि और बल में संदेह नहीं किंतु अच्छा हो अगर तुम यहाँ रह कर यहाँ का कामकाज सँभालो। बहमन बोला, साहस और बुद्धि तुम में भी कम नहीं है। लेकिन मैं बड़ा हूँ, इसलिए इस मामले में आगे मुझी को होना चाहिए।

दूसरे दिन बहमन ने अपनी बहन से पूरी जानकारी ली और अस्त्र-शस्त्र ले कर घोड़े पर बैठ गया। अब परीजाद उसे देख कर रोने लगी और बोली, भैया, मैं भी बड़ी दुष्ट हूँ जो अपने जरा-से शौक के लिए तुम्हें मुसीबत में फँसा रही हूँ। मैं अपनी माँग वापस लेती हूँ। अब कभी तीनों चीजों में एक का भी उल्लेख नहीं करूँगी। तुम न जाओ। बहमन ने कहा, एक बार कमर कस कर मैं पीछे नहीं हटता। अगर अब मैं सफर नहीं करता तो हमेशा मेरे दिल में यह खटक रहेगी कि मैं कायर हूँ।

परीजाद ने कहा, यहाँ हम लोग भी तो परेशान रहेंगे। हमें नहीं मालूम हो सकेगा कि तुम किस हाल में हो। बहमन ने कहा, इसका प्रबंध मैं कर रहा हूँ। यह खंजर लो। यह जादू की चीज है। रोज इसे म्यान से निकाल कर देखना। अगर यह साफ और चमकता हुआ दिखाई दे तो समझना कि मैं जहाँ भी हूँ सकुशल हूँ। लेकिन अगर इसमें से खून की बूँदें टपकने लगें तो समझ लेना कि मैं जीवित नहीं रहा। यह सुन कर परवेज और परीजाद और अधीर हुए और बहमन से कहने लगे कि ऐसी खतरनाक यात्रा न करो। लेकिन बहमन ने उनकी बात न सुनी और घोड़ा दौड़ा दिया।

बहमन सीधी राह पर लग लिया। उसने ध्यान रखा कि कहीं दाएँ-बाएँ न मुड़ जाए। फारस की राजधानी से बीस दिन की राह पूरी करने पर वह सोच रहा था कि आगे जाऊँ या न जाऊँ। तभी उसे एक अजीब-सा दृश्य दिखाई दिया। एक घने पेड़ के नीचे एक झोपड़ा पड़ा हुआ था और उसके बाहर एक बूढ़ा बैठा था जिसे बहुत ध्यान से देखने पर ही मालूम होता था कि कोई आदमी बैठा है। उसके बाल बर्फ की तरह सफेद थे। उसके सर, दाढ़ी, मूँछों और भौंहों के बाल इतने बढ़ गए थे कि उसका सारा शरीर बालों से ढक गया था। उसके हाथों और पैरों के नाखून बहुत बढ़ गए थे और कीलों की तरह मालूम होते थे और उसके सिर पर एक लंबी टोपी रखी हुई थी। उसने अपना शरीर एक चटाई से ढक रखा था। जिसके ऊपर उनके बाल पड़े हुए थे। बहमन उसे देख कर समझ गया कि वह कोई तपस्वी सिद्ध है जो ऐसे दुर्गम और निर्जन स्थान में अकेला बगैर खाए-पिए तपस्यारत रहता है।

बहमन को तो तलाश थी ही कि कोई आदमी मिले क्योंकि पहला मिलनेवाला ही उसे गंतव्य स्थान का पता दे सकता था। वह यह भी समझ गया कि पहला और आखिरी आदमी यहाँ यह ही मिल सकता है और यह भी स्वाभाविक ही है कि ऐसी अलभ्य वस्तुओं का पता किसी सिद्ध तपस्वी से लगे। बहमन घोड़े से उतरा और उसने वृद्ध तपस्वी के पास जा कर प्रणाम किया। बहमन को उस जगह से जहाँ वृद्ध का मुख हो सकता था कोई ध्वनि तो सुनाई दी किंतु उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

कुछ देर बाद बहमन ने समझ लिया कि मूँछों और दाढ़ी के घने बालों ने बूढ़े सिद्ध का मुख इस रह बंद कर रखा है कि इसकी आवाज घुट कर रह जाती है। उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँधा और तपस्वी के पास आ कर अपनी जेब से एक छोटी-सी कैंची निकाली। फिर वह बोला, हे तपस्वी पिता, तुम्हारी बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आई। अगर अनुमति दो तो मैं तुम्हारी भौंहें और मूँछें छाट दूँ। इनके कारण तुम्हारी सूरत आदमी के बजाय रीछ जैसी मालूम होती है। तपस्वी ने इशारे से उसे अनुमति दे दी।

बहमन ने उसकी भौंहों और मूँछों को छाँट डाला तो तपस्वी का चेहरा बिल्कुल बदल गया। शहजादा बहमन बोला, तपस्वी पिता, अगर मेरे पास दर्पण होता तो मैं तुम्हें दिखाता कि हजामत के बाद यही नहीं हुआ कि तुम रीछ के बजाय आदमी लगो बल्कि तुम बूढ़े के बजाय जवान भी लगने लगे हो। तपस्वी इस प्रकार की मनोरंजक वार्ता सुन कर मुस्कुराया और बोला, बेटे, मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हुआ। अब बताओ कि इतनी

दूर किस लिए आए हो ताकि तुम्हारे उद्देश्य की सिद्धि के लिए मैं जो कुछ मदद कर सकता हूँ वह करूँ।

बहमन बोला, तपस्वी पिता, मैं बहुत दूर से बुलबुल हजार दास्ताँ, गानेवाला पेड़ और सुनहरा पानी लेने के लिए आया हूँ। आप कृपा कर के मुझे बताएँ कि यह वस्तुएँ मुझे कहाँ और कैसे मिलेंगी। बूढ़े ने यह सुन कर सिर झुका लिया और बहुत देर तक चुपचाप बैठा रहा। बहमन ने फिर कहा, तपस्वी पिता, तुमने मौन क्यों साध लिया है। अगर तुम्हें नहीं मालूम तो कह दो कि नहीं जानता। मैं किसी और से पूछूँ।

तपस्वी ने कहा, मुझे मालूम तो है लेकिन मैं तुम्हें इसलिए नहीं बताना चाहता कि तुम्हारी सेवा के बदले तुम्हें मुसीबत में नहीं डालना चाहता। बहमन ने कहा, यह क्या बात हुई? सिद्ध ने कहा, जहाँ यह चीजें हैं वहाँ का मार्ग बड़ा भयावह है, तुम्हारी तरह बीसियों आदमियों ने वहाँ जाने की राह मुझसे पूछी है और कोई वापस नहीं लौटा। इसलिए तुमसे कहता हूँ कि जहाँ से आए हो वापस चले जाओ।

बहमन ने कहा, मैं वापस जाने के लिए यहाँ तक नहीं आया हूँ। मुझे अपना कार्य पूरा करना ही है चाहे इसमें मेरी जान चली जाए। अपने उद्देश्य में असफल हो कर मैं कायर की तरह जीना नहीं चाहता। अभी तक कोई शत्रु मुझे हरा नहीं सका है। जिसकी मौत आई होगी वही मेरी राह में रोड़ा अटकाने आएगा। तुम केवल इतनी कृपा करो कि मुझे राह बता दो, आगे की पूरी जिम्मेदारी मेरी। तुम मेरे युद्ध कौशल पर विश्वास तो करो।

तपस्वी ने कहा, बेटे, यही तो मुश्किल है कि तुम्हें युद्ध कौशल दिखाने का अवसर नहीं मिलेगा। तुम्हें जो शत्रु मिलेंगे वे सामने से मुकाबला नहीं करते बल्कि छुपे तौर पर वार करते हैं। शहजादे ने कहा, मैं छुपे तौर पर वार करनेवालों से भी निबटना जानता हूँ, आप मुझे वहाँ जानेवाली राह तो बताएँ।

तपस्वी ने उसे बहुत समझाया लेकिन जब यह देखा कि बहमन किसी तरह अपनी जिद छोड़ता ही नहीं और जब तक राह न मालूम कर लेगा हरगिज नहीं टलेगा, तो उसने अपने झोले से एक गेंद निकाली और कहा, मुझे तुम्हारी जवानी पर अफसोस हो रहा है। लेकिन तुमने जिद पकड़ रखी है तो अपना भला-बुरा तुम्हीं जानो। तुम सवार हो कर उधर को जाओ और उस गेंद को भूमि पर गिरा दो। यह गेंद खुद ही लुढ़कने लगेगी और तुम इसी के पीछे-पीछे चले जाना जब तक यह लुढ़कती रहे, तब तक तुम भी चलते रहना। एक पहाड़ के नीचे जा कर यह गेंद रुक जाएगी। वहाँ तुम रुक कर घोड़े से उतर जाना और घोड़े की लगाम उसकी गर्दन पर डाल देना ताकि वह ठहरा रहे। तुम फिर पहाड़ पर चढ़ना। तुम अपने दोनों ओर काले पत्थर काफी अधिक संख्या में देखोगे। उन पर तुम ध्यान न देना। इसके अलावा अपने पीछे से आते हुए बहुत-से अपशब्द और धमकियाँ सुनोगे। यह बहुत जरूरी है कि तुम इन गालियों की पूर्ण उपेक्षा कर दो। अगर तुमने एक बार भी डर कर पीछे की ओर देखा तो तुम और तुम्हारा घोड़ा दोनों काले पत्थर बन

जाएँगे। तुम्हें राह में मिलनेवाले काले पत्थर भी तुम्हारी तरह उन तीन चीजों की खोज में जानेवाले आदमी थे। पीछे देखने के कारण वे पत्थर बन गए हैं।

अगर तुम कुशलतापूर्वक पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए तो वहाँ एक वृक्ष पर टँगा हुआ पिंजड़ा मिलेगा जिसमें गानेवाली चिड़िया मौजूद है। उस चिड़िया की बातों से भी न डरना और उससे गानेवाले पेड़ और सुनहरे पानी का पता पूछना। वह तुम्हें बताएगी कि यह चीजें कहाँ मिलेंगी। इन सब चीजों को पाने के बाद तुम्हारी राह में कोई खतरा नहीं रहेगा। मैंने यह सब तुम्हें बता जरूर दिया है लेकिन मेरा अब भी यही कहना है कि तुम वापस लौट जाओ। मैं साफ देख रहा हूँ कि तुम वहाँ गए तो काला पत्थर बन कर रह जाओगे।

बहमन ने कहा, अब जो होना है वह हो ही कर रहेगा, मैं पीछे तो लौटता नहीं। यह कह कर शहजादे ने घोड़ा खोला और उस पर सवार हो कर तपस्वी की दी गई गेंद गिरा दी। गेंद लुढ़कती हुई आगे को चली। काफी दूर जाने पर गेंद एक पहाड़ की तलहटी पर रुक गई जहाँ ऊपर जाने के लिए एक तंग रास्ता था। शहजादे ने घोड़े से उतर कर उसकी गर्दन पर लगाम डाली और पहाड़ पर चढ़ने लगा। कुछ दूर जाने पर उसे बड़े-बड़े काले पत्थर दिखाई दिए। इसके आगे चार-पाँच कदम ही चला था कि पीछे से बड़ी अप्रिय आवाजें आने लगीं। कोई आवाज होती, यह कौन बेवकूफ आगे चला जा रहा है, पकड़ो इसे। कभी आवाज आती, यह बड़ा दुष्ट है, इसे पकड़ कर मार डालो। कभी चीखती और गरजती आवाजें आतीं, वह जा रहा है चोर, खूनी, बदमाश। घेर लो इसे। कभी हलकी-सी आवाज आती, इसे पकड़ कर बाँधे रखना, यह बोलती चिड़िया को चुराने के लिए आया है। कभी कोई यह कहता जान पड़ता, यह वहाँ पहुँच कहाँ पाएगा, रास्ते में छुपे गढ़े में गिर कर मर जाएगा।

पहले बहमन ने इन आवाजों की उपेक्षा की और अपनी राह पर बढ़ता चला गया। किंतु यह आवाजें कम होने के बजाय कदम-कदम पर तेज ही होती गईं और उसके कानों के परदे फटने लगे और दिमाग सुन्न हो गया। तपस्वी ने उसे जो बताया था वह भी उसके दिमाग से निकल गया और एक बार डर कर पीछे देखने लगा। तुरंत ही वह और घोड़ा दोनों काले पत्थरों के रूप में बदल गए।

अपनी कुशलता की सूचना देने के लिए जो खंजर बहमन ने परीजाद को दिया था वह उसे रोजाना म्यान से निकल कर देखती। जिस दिन बहमन काला पत्थर बना उस दिन परवेज ने कहा, परीजाद, आज मुझे खंजर दो। आज भैया का हाल मैं मालूम करना चाहता हूँ। परीजाद ने उसे खंजर दे दिया। उसने म्यान से उसे निकाला तो उसकी नोक से उसे खून की बूँद निकलती दिखाई दी। परवेज ने हाथ से खंजर फेंक दिया और हाय-हाय करने लगा।

परीजाद को भी जब खून टपकाता हुआ खंजर दिखाई दिया तो वह चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी और सिर पटक-पटक कर कहने लगी, हाय भैया, मेरी नादानी से तुम्हारी जान

गई। न जाने किस मनहूस घड़ी में वह कमबख्त बुढ़िया आई थी। न वह आती न यह झंझट होता। मक्कार ने मुझे बेकार के लालच में डाल दिया। मैंने उसके साथ ऐसा सद्व्यवहार किया और उसने मुझे इसका ऐसा बदला दिया। अब मिले तो उस कलमुँही की बोटियाँ नोच लूँ। मेरे प्यारे भाई की जान उसी के दिलाए लालच के कारण गई। हे भगवान, तू भैया को जिंदा घर लौटा, चाहे मेरी मौत भेज दे। भैया न रहे तो चिड़िया, पेड़ और पानी को पा कर भी मैं क्या करूँगी। मुझे यह चीजें नहीं चाहिए, मुझे और भी कुछ नहीं चाहिए। मुझे सिर्फ मेरा भाई चाहिए।

परीजाद बहमन की बातों को याद करके देर तक रोती रही। परवेज भी आँसू बहाता रहा। फिर उसने कहा, परीजाद, अब रोने-धोने से कुछ नहीं होगा। अब मैं जाता हूँ। मैं पता लगाऊँगा कि भैया किसी प्राकृतिक कारण से मरे हैं या किसी शत्रु ने उन्हें मारा है। किसी ने उन्हें मारा होगा तो मैं उसे जीता नहीं छोड़ूँगा, भैया की मौत का बदला जरूर लूँगा। परीजाद ने बहुत समझा कर उसे रोकना चाहा। वह बोली, मैंने एक भाई तो खोया ही है, दूसरे को मौत के मुँह में नहीं जाने दूँगी। बड़े भैया तुम से कुछ कम बहादुर नहीं थे। लेकिन परवेज ने उसकी एक भी बात न सुनी। उसने दूसरे दिन सुबह अपनी साहस यात्रा पर जाने की तैयारी शुरू कर दी।

दूसरे दिन उसके रवाना होने के समय परीजाद रो कर बोली, बड़े भैया ने तो अपनी कुशल जानने को एक राह भी बताई थी, तुम्हारा हाल मुझे कैसे मालूम होगा? परवेज ने उसे मोतियों की एक माला दी। उसने कहा, देखो, इसके सारे मोती अलग-अलग हैं। इसे उँगलियों पर चलाने से एक-एक मोती उँगलियों में आता है। जब तक यह मोती ऐसे ही रहें तो समझ लेना कि मैं ठीक-ठाक हूँ। जिस दिन यह एक-दूसरे से चिपक जाएँ और माला न फेरी जा सके तो समझ लेना कि मैं भी दुनिया में नहीं रहा। यह कह कर परवेज निकल पड़ा।

बीस दिन की यात्रा के बाद वह वहीं पहुँचा जहाँ वह सिद्ध तपस्वी बैठा था। उसने आदरपूर्वक सिद्ध को प्रणाम किया और पूछा, क्या आप बता सकेंगे कि मुझे बोलनेवाली चिड़िया, गानेवाला पेड़ और सोने का पानी कहाँ से मिल सकते हैं? तपस्वी ने कहा, बेटे, वह राह बहुत खतरनाक है। तुम वहाँ जाने का इरादा न करो और यहीं से लौट जाओ। वहाँ से अभी तक कोई वापस नहीं आया है। एक महीने से भी कम हुआ तुम्हारी ही शक्ल-सूरत का एक नौजवान मेरे लाख रोकने पर भी उधर को गया था। वह भी नहीं लौटा है।

परवेज ने कहा, वह मेरा बड़ा भाई था। यह तो मुझे मालूम है कि वह जीवित नहीं है, लेकिन मैं यह नहीं जानता कि वह कैसे मरा, किसी प्राकृतिक कारण से मरा या किसी दुश्मन ने उसे मारा। सिद्ध ने कहा, मैं तुम्हें बताता हूँ। बहुत-से आदमी मेरी चेतावनी के बावजूद उस राह पर गए और काले पत्थर बन कर वहीं पर रह गए। तुम्हारे भाई के साथ भी यही हुआ है। तुम मेरी बात मानो और लौट जाओ वरना तुम भी काला पत्थर बन कर यहाँ हमेशा पड़े रहोगे।

परवेज ने कहा, मैं आपका आभारी हूँ कि आप मेरे हितचिंतक हैं लेकिन मैं आगे पाँव बढ़ा चुका हूँ, पीछे नहीं हट सकता। आप मुझे वह रास्ता अवश्य बताएँ। सिद्ध ने कहा, मैं तुम्हारे साथ चल सकता तो कोई बात नहीं थी किंतु बुढ़ापे के कारण मैं नहीं जा सकूँगा। तुम जिद करते हो तो जाओ। यह गेंद ले लो। इसे जमीन पर रखोगे तो यह खुद लुढ़कने लगेगी और तुम इसके पीछे लग जाना। पहाड़ के नीचे जा कर यह रुकेगा और तुम उसी पहाड़ पर चढ़ जाना। तुम्हारे पीछे से किसी तरह की आवाजें आएँ तुम पीछे मुड़ कर न देखना वरना तुम भी पत्थर बन जाओगे। ऊपर जा कर तुम्हें बोलनेवाली चिड़िया मिलेगी और वही तुम्हें अन्य दो चीजों का पता बताएगी।

परवेज सिद्ध को माथा नवा कर सवार हो कर चला। गेंद उसे रास्ता दिखाती जा रही थी। कुछ देर बाद एक पहाड़ की तलहटी में जा कर गेंद रुक गई। परवेज घोड़े को वहीं खड़ा करके पहाड़ पर चढ़ने लगा। दो-चार ही कदम गया होगा कि उसने सुना कि पीछे से कोई डाँट कर कह रहा है, अबे ओ बदमाश, बदतमीज, कहाँ बढ़ा जा रहा है। रुक जा कमबख्त, तुझे सजा दूँ। परवेज को जल्दी क्रोध आ जाता था। उसने गालियाँ सुनीं तो उसका खून खौल गया और वह तपस्वी द्वारा दी हुई चेतावनी को भूल गया। उसने म्यान से तलवार खींच ली और पलट कर देखा कि गाली देनेवाले के टुकड़े-टुकड़े कर दूँ। किंतु पीछे देखते ही वह काले पत्थर का ढोंका बन गया और उसके घोड़े का भी यही हाल हुआ।

परवेज के जाने के बाद परीजाद को बहमन की यात्रा के समय से भी अधिक शंका बनी रहती थी। वह बहमन के दिए खंजर को तो कभी-कभी ही देखती थी किंतु परवेज की दी हुई माला को अपने गले में डाले रहती और हमेशा उसके मोतियों पर हाथ फेर कर उनकी दशा को देखती रहती थी। चुनांचे ज्यों ही परवेज काले पत्थर की शिला के रूप में परिवर्तित हुआ उसके कुछ ही देर बार परीजाद को उसकी मृत्यु का हाल मालूम हो गया क्योंकि माला के मोती एक-दूसरे से ऐसे चिपक गए थे कि माला फेरना असंभव था।

परीजाद उस समय तो दुख के कारण अचेत हो गई किंतु बाद में होश आने पर उसने फैसला किया कि दोनों भाइयों को मौत के मुँह में भेजने के बाद अब मेरे जीवन का भी कोई अर्थ नहीं है। उसने भी घुड़सवारी और शस्त्र संचालन की शिक्षा ली थी और उसमें साहस की कमी न थी। उसने मर्दाने कपड़े पहने, हथियार लगाए और घोड़े पर सवार हो गई। उसने गृह-प्रबंधक को आदेश दिया कि जब तक वह वापस न आए वह खुद महल की देखभाल करे, किसी प्रबंध में कमी न होने पाए।

बीस दिन तक घोड़े पर चलने के बाद वह भी उसी तपस्वी सिद्ध पुरुष के पास पहुँची। उसने प्रणाम करके बोली, सिद्ध पिता, कृपया मुझे बताएँ कि बोलनेवाली चिड़िया, गानेवाला पेड़ और सुनहरा पानी कहाँ मिलेगा। वृद्ध ने कहा, तुमने कपड़े तो आदमियों जैसे पहने हैं किंतु स्पष्टतः तुम स्त्री हो जैसा तुम्हारा स्वर बता रहा है। मुझे मालूम है कि वे चीजें कहाँ हैं, लेकिन तुम उन्हें क्यों पूछ रही हो? परीजाद बोली, जब से मैंने उनके बारे में सुना है तभी से उन्हें पाने की इच्छा है। तपस्वी ने कहा, हैं तो वे चीजें संग्रहणीय लेकिन उन्हें

प्राप्त करने के मार्ग में बड़े खतरे हैं। तुम लड़की हो, तुम्हारे लिए अच्छा यही है कि अपनी इच्छा पर संयम रखो और उन्हें प्राप्त करने का विचार छोड़ दो। बड़े-बड़े बहादुर उस राह पर जा कर वापस नहीं लौटे हैं। घर लौट जाओ।

परीजाद बोली, तपस्वी पिता, बीस दिन चल कर तो मैं यहाँ पहुँची हूँ। अब तो यहाँ से यूँ ही वापस नहीं जा सकती। आप कृपया मुझे विस्तार से बताएँ कि उस मार्ग में क्या क्या खतरे हैं ताकि मैं उनसे निबटने का उपाय ढूँढ़ सकूँ। मेरा विचार है कि अगर मैं सोच-समझ कर आगे बढ़ूँगी तो हर तरह के खतरों का सामना कर सकूँगी। आप कृपया मेरा मार्गदर्शन करें।

वृद्ध तपस्वी ने परीजाद को वे सारी बातें बताईं जो उसने बहमन और परवेज को बताई थीं। उसने कहा, खतरे सिर्फ तब तक हैं जब तक कोई पहाड़ की चोटी पर न पहुँच जाए। फिर तुम्हें बातें करनेवाली चिड़िया मिलेगी और वह तुम्हें गानेवाले पेड़ और सुनहरे पानी के स्थानों को भी बताएगी। लेकिन पहाड़ चढ़ने के समय अप्रिय और कटु शब्द सुनाई देंगे। रास्ते के सारे काले पत्थर आदमी ही हैं जो उन तीनों चीजों की खोज में गए थे किंतु गालियों या धमकियों से डर कर या क्रुद्ध हो कर पीछे देखते ही काले पत्थर की शिला बन गए। परीजाद ने कहा, मतलब यह है कि वे केवल शब्द हैं और किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते अगर कोई पीछे मुड़ कर न देखे। सिद्ध पिता, आप विश्वास करें कि यद्यपि मैं स्त्री हूँ तथापि सुने हुए किसी शब्द से विचलित नहीं हूँगी। मैं न तो इन आवाजों से भयभीत हूँगी न उन पर क्रोध करूँगी। मैं पूरा आत्मसंयम रखूँगी। इसके अलावा मैं अपने दोनों कानों में कस कर रूई ठूँस लूँगी ताकि मुझे वे आवाजें सुनाई ही न दें।

सिद्ध ने मुस्कुरा कर कहा, बेटी, मालूम होता है कि तुम्हारे ही भाग्य में है। इतने लोग वहाँ गए हैं किंतु यह उपाय किसी को अभी तक नहीं सूझा। बस, सब कुछ इस पर निर्भर है कि चाहे जो कुछ सुनाई दे आदमी उसका असर अपने मन पर न पड़ने दे। परीजाद ने कहा, विश्वास रखिए कि मैं आपकी दी हुई सलाह पूरी तरह मानूँगी। अब आप यह बता दीजिए कि पहाड़ को कौन-सा रास्ता जाता है। बूढ़े तपस्वी ने कहा, बेटी, तुम होशियार तो बहुत मालूम होती हो लेकिन मैं एक बार फिर तुम्हें सलाह दूँगा कि घर लौट जाओ।

परीजाद आगे जाने की जिद पर अड़ी रही तो वृद्ध ने मजबूर हो कर अन्य लोगों की भाँति उसे भी मार्ग प्रदर्शन करनेवाली गेंद दी और कहा, इसे भूमि पर डाल दो। यह अपने आप लुढ़कती हुई पहाड़ के नीचे जा कर रुक जाएगी। तुम वहीं घोड़े से उतरना और पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर देना। परीजाद ने ऐसा ही किया और तेजी से लुढ़कती हुई गेंद के पीछे घोड़ा दौड़ाने लगी। गेंद पर्वत के नीचे जा कर रुक गई तो वह घोड़े से उतर पड़ी और उसकी गर्दन पर लगाम डालने के बाद उसने अपने कानों में ठूँस-ठूँस कर रूई भर ली और धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ने लगी। उसके पीछे आवाजें होने लगीं किंतु वे कानों में रूई ठुँसी होने के कारण उसे सुनाई न दीं और वह बढ़ती गई। फिर पीछे से आनेवाली आवाजें और तेज हुईं। यह आवाजें भी उसे धीमी सुनाई दीं और उन्होंने उसके मस्तिष्क को बिल्कुल विचलित नहीं किया। फिर उसे ऐसी गालियाँ सुनने को मिलीं जो स्त्रियों के लिए होती

हैं और बड़ी अपमानजनक होती हैं। परीजाद को एक क्षण तो बुरा लगा किंतु फिर वह उन गालियों पर हँस पड़ी।

इसी तरह उस भयानक चढ़ाई को दृढ़ता और संयम से पूर्ण करने के बाद वह शिखर पर पहुँची तो देखा कि एक पिंजड़े में एक सुंदर चिड़िया मधुर स्वर में गा रही है। परीजाद को देखते ही वह सिंह की तरह गरज कर बोली, ए लड़की, खबरदार मेरे पास न आना। परीजाद इस पर हँसने लगी और दौड़ कर चोटी पर पहुँच गई। वहाँ भूमि समतल थी। उसने दौड़ कर चिड़िया के पिंजड़े पर हाथ रखा और बोली, चिड़िया रानी, आज से मैं तुम्हारी मालकिन हूँ और तुम मेरे कब्जे में रहोगी। फिर उसने कानों की रूई निकाल दी। चिड़िया बोली, तुम ठीक कह रही हो। अब मैं सदैव तुम्हारी सेवा और हित साधना करती रहूँगी। मैं पिंजड़े में बंद रहती हूँ किंतु संसार की कोई बात नहीं जो मुझे मालूम नहीं है। तुम्हारा हाल इतना जानती हूँ जितना तुम भी नहीं जानतीं और मेरे कारण तुम्हें अयाचित लाभ मिलेगा। अब तुम मेरी स्वामिनी हुई और तुम्हारी सेवा करना मेरा धर्म है। इस समय तुम बताओ कि मुझ से क्या चाहती हो। मैं बगैर ना-नुकुर के उसे करूँगी।

चिड़िया की बातों से परीजाद को प्रसन्नता हुई यद्यपि उसे अपने भाइयों के विनाश का बड़ा दुख भी था। उसने चिड़िया से कहा, मुझे तुमसे बहुत-सी बातें पूछनी हैं। सबसे पहले यह बात बताओ कि मुझे सुनहरा पानी कहाँ मिलेगा। चिड़िया ने जो मार्ग बताया उस पर चल कर परीजाद सुनहरे पानी के कुंड पर पहुँची और एक चाँदी की सुराही में, जो वह अपने साथ ले गई थी, अच्छी तरह पानी भर कर ले आई। फिर उसने चिड़िया से गानेवाले पेड़ के बारे में पूछा। चिड़िया ने कहा, तुम्हारे पीछे की ओर एक बड़ा जंगल है। यह जंगल बहुत दूर नहीं है। उसी में गानेवाला पेड़ मिलेगा। तुम्हें आसानी से मालूम हो जाएगा कि कौन-सा पेड़ है क्योंकि संगीत सिर्फ उसी से निकल रहा होगा। परीजाद ने कहा, यह तो ठीक है, लेकिन मैं उस पेड़ को उखाड़ कर लाऊँगी कैसे। चिड़िया बोली, पेड़ नहीं उखड़ेगा, तुम सिर्फ एक टहनी तोड़ कर ले आओ। जब तुम अपनी वाटिका की भूमि में उसे लगाओगी तो वह कुछ ही समय में पूरे वृक्ष के रुप में परिवर्तित हो जाएगी। देखनेवाले ताज्जुब करेंगे कि एक ही दिन में यह पूरा पेड़ कैसे आ गया।

परीजाद चिड़िया के बताए रास्ते पर चल कर जंगल में गई और वहाँ से गानेवाले पेड़ की टहनी तोड़ लाई। वह बहुत प्रसन्न थी कि तीनों चीजें मिल गई हैं। फिर भी उसे अपने भाइयों का ख्याल बना हुआ था। उसने चिड़िया से पूछा, यहाँ आने की राह में मेरे दोनों बड़े भाई काले पत्थर बने पड़े हैं। क्या यह संभव है कि मैं उन्हें फिर से जीवित करूँ? मैं तो यह नहीं पहचानती कि उन पत्थरों में कौन-से मेरे भाई हैं। चिड़िया ने कहा, तुम यह करो कि सुराही में जो सुनहरा पानी लाई हो उसकी एक-एक बूँद सारे शिला खंडों पर डाल दो। वे सभी लोग अपने पूर्व रूप में आ जाएँगे और उनके घोड़े भी। उन्हीं में तुम्हारे भाई भी होंगे जिनके पुनर्जीवित होने पर उन्हें पहचान लोगी।

शहजादी चिड़िया की बातें सुन कर प्रसन्न हुई और पिंजड़ा, सुराही और टहनी ले कर पहाड़ से उतरने लगी। जहाँ भी काले पत्थर दिखाई दिए उसने उन पर एक-एक बूँद

सुनहरा जल छिड़क दिया। सारे पत्थर आदमी बन गए और उनके घोड़े भी असली रूप में आ गए। इन लोगों में बहमन और परवेज भी थे जो अपने-अपने घोड़ों के साथ जी उठे। परीजाद दोनों भाइयों को पहचान कर उनके गले लग कर रोने लगी। फिर उसने कहा, तुम्हें मालूम है, तुम्हारा क्या हाल था? उन्होंने कहा कि हमें तो ऐसा लग रहा है जैसे अभी तक हम लोग सो रहे थे ओर अभी-अभी सो कर उठे हैं।

परीजाद ने कहा, कुछ याद है तुम्हें? तुम लोग मेरे लिए बोलनेवाली चिड़िया, गानेवाला पेड़ और सुनहरा पानी लेने आए थे और यहाँ अपने काम को और मेरी याद को भूल कर सोने लगे। दोनों भाई अचकचा कर उसे देखने लगे तो उसने कहा, महानुभावो, तुम लोग सो नहीं रहे थे, तुम काले पत्थर की चट्टान बन कर यहाँ पड़े हुए थे। तुमने आते समय बहुत-सी काली चट्टानें देखी होंगी। अब देखो, उनमें से कोई मौजूद है या नहीं। यह सब लोग जो यहाँ दिखाई दे रहे हैं यही वे चट्टानें बने हुए थे।

तुम्हें ताज्जुब हो रहा होगा कि तुम सबके सब जी कैसे उठे। जब मुझे चिड़िया, पानी और पेड़ की टहनी मिल गई तो इनके मिलने से भी तुम्हारे बगैर मुझे बुरा लग रहा था। मैंने इसी चिड़िया से पूछा कि क्या करूँ तो उसने कहा कि सुनहरे पानी की एक- एक बूँद सभी चट्टानों पर डाल कर उन्हें फिर से जीवित कर लो। मैंने इस समय यही किया है।

यह सुन कर बहमन और परवेज तो धन्य-धन्य कर ही उठे, अन्य लोग भी कहने लगे कि तुमने हमें जीवन दान दिया है, हम आजीवन तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे और तुम्हारी आज्ञा का पालन करेंगे।

परीजाद बोली, मैंने तुम लोगों पर कोई अहसान नहीं किया। मैं अपने भाइयों को जिलाना चाहती थी। इसमें अगर तुम्हारा लाभ भी हो गया तो मेरे लिए खुशी की बात है। अब तुम लोग अपने-अपने निवास स्थानों के लिए प्रस्थान करो।

जब वह घोड़े पर चढ़ी तो बहमन ने चाहा कि पिंजड़ा आदि सारी चीजें अपने घोड़े पर लादे ताकि परीजाद का बोझ हलका हो। परीजाद ने कहा, चिड़िया की मालिक तो मैं हूँ, वह मेरे पास रहेगी। तुम लोग चाहो तो एक टहनी और दूसरा पानी की सुराही ले लो। अतएव बहमन ने टहनी और परवेज ने सुनहरे पानी की सुराही ले ली। फिर अन्य पुनर्जीवित लोग भी अपने-अपने घोड़ों पर बैठे और सभी चलने को तैयार हुए क्योंकि काफी दूर तक सभी का एक ही रास्ता था।

परीजाद ने कहा, तुम लोगों में जो सर्वश्रेष्ठ हो वह इस समूह का नायक बन कर आगे चले। सभी लोगों ने एक स्वर में कहा, सुंदरी, तुम से श्रेष्ठ कौन होगा? तुम हमारी जीवनदात्री हो। तुम्हीं सबके आगे चलो। परीजाद शालीनता से बोली, मैं अवस्था में सब से छोटी हूँ और किसी प्रकार भी दल की नेत्री बनने के योग्य नहीं हूँ। किंतु तुम लोग विवश कर रहे हो तो तुम्हारे प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं भी दल के आगे चलती हूँ।

यह दल आगे बढ़ा। सभी लोग उस सिद्ध के दर्शन करना चाहते थे जिसने सभी को राह बताई थी। किंतु जब यह दल उसकी कुटिया पर आया तो उसका कुछ पता न पाया। मालूम नहीं वह काल-कवलित हो गया था या वहाँ पर तीन अद्भुत वस्तुओं की राह बताने के लिए ही मौजूद था और उन चीजों के न रहने पर वहाँ से गायब हो गया। सब लोगों को इस बात का बड़ा खेद रहा कि अंतिम बार उसे धन्यवाद न दे सके। यह दल आगे बढ़ा। हर आदमी जहाँ-जहाँ से मार्ग अलग होता था वहाँ-वहाँ से परीजाद के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन करके चला गया।

यह तीनों भाई बहन खुशी-खुशी अपने घर में आए। मकान की बारहदरी के सामने जो बाग का हिस्सा था उसमें परीजाद ने बोलनेवाली चिड़िया का पिंजड़ा लटका दिया। कुछ ही देर में उसके आसपास बीसियों तरह के पक्षी जमा हो गए और उसके स्वर में स्वर मिला कर बोलने की कोशिश करने लगे। उसी जगह थोड़ी दूर पर परीजाद ने गानेवाले वृक्ष की टहनी जमीन में रोप दी। कुछ ही देर में बढ़ते-बढ़ते वह पूरा पेड़ हो गई और हवा चलने पर पत्तों की रगड़ से उसमें से ऐसा ही संगीत उठने लगा जैसे मूल वृक्ष से उठ रहा था। परीजाद ने कारीगरों को बुलवा कर एक संगमरमर का हौज बनवाया। उसके बन जाने पर उसमें एक स्वर्ण पात्र रखा और उस पात्र में चाँदी की सुराही से निकाल कर सुनहरे पानी की कुछ बूँदें डालीं। तुरंत ही पानी बढ़ने लगा और बरतन उससे भर गया और फिर उसमें से एक बीस हाथ ऊँचा फव्वारा उठने लगा। फव्वारे का पानी फिर आ कर बरतन ही में गिरता था और इस तरह बरतन में पानी की कमी नहीं होती थी और पानी बाहर भी नहीं बहता था। दो-चार दिन ही में बागों के दारोगा के महल की इन चीजों की चर्चा सारे शहर में होने लगी। सारे शहर के लोग तमाशा देखने के लिए परीजाद के बाग में आने लगे। परीजाद ने सैर के लिए आनेवाले नागरिकों के प्रवेश पर कोई रोक नहीं लगाई और इस प्रकार यह तीनों भाई-बहन नगर में सर्वप्रिय हो गए।

कुछ दिनों तक आराम करने के बाद बहमन और परवेज ने पहले की तरह मृगया का मनोरंजन शुरू किया। वे अपने घिरे हुए जंगल के बाहर भी शिकार खेलने के लिए जाने लगे। एक रोज वे शहर से लगभग एक कोस की दूरी पर स्थित एक जंगल में शिकार खेल रहे थे। संयोग से उसी समय बादशाह भी वहाँ शिकार खेलने आया हुआ था। इन दोनों ने यह देख कर चाहा कि शाही फौजियों की निगाह बचा कर निकल जाएँ क्योंकि वह जंगल शाही शिकारगाह था। लेकिन बच निकलने के चक्कर में वे ऐसे रास्ते पर पड़ गए जहाँ से हो कर बादशाह की सवारी आ रही थी। यह देख कर उन्होंने चाहा कि बगल के किसी रास्ते से निकल जाएँ। यह संभव न हुआ और वे बादशाह के सामने पड़ गए।

मजबूरी में वे घोड़ों से उतरे और बादशाह को झुक कर सलाम करने लगे। पहले बादशाह ने समझा कि वे उसके सामंतों में से हैं और देखने को ठहर गया कि कौन हैं। उसने उन्हें उठने की आज्ञा दी। वे उठे और सिर झुका कर खड़े हो गए। बादशाह उनकी सूरतें देख कर ठगा-सा रह गया। फिर उसने उनका नाम और निवास स्थान पूछा। बहमन ने हाथ जोड़ कर कहा, हुजूर, हम लोग आपके भूतपूर्व बागों के दारोगा के पुत्र हैं। हमारे पिता नहीं रहे। हम जंगल के किनारे उस महल में रहते हैं जो उन्होंने आपसे अनुमति ले कर बनवाया

था। हमें वे इसीलिए अच्छे वातवरण में रखते थे कि बड़े हो कर हम आपकी सेवा करें।

बादशाह ने कहा, यह तो ठीक है। लेकिन लगता है कि तुम यहाँ शिकार खेल रहे थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह शाही शिकारगाह है जहाँ और कोई शिकार नहीं खेल सकता? बहमन ने निवेदन किया, सरकार, हमारे पिता असमय ही जाते रहे और हमारा निर्देशक कोई नहीं रहा, इसीलिए हम लोगों का ज्ञान अधूरा है और अन्य नौजवानों की तरह हमसे भी भूल हो जाती है। बादशाह उनकी इस चतुराई पर मुस्कुरा उठा। फिर उसने पूछा, शिकार खेलना आता भी है? दोनों ने कहा, आप अवसर दें तो हम भी देखें हमें कितना शिकार खेलना आता है। बादशाह ने कहा, शिकार खेल कर दिखाओ। जंगल में पहुँचे तो बहमन ने एक शेर और परवेज ने एक रीछ को बरछियों से मार कर बादशाह के आगे रखा। दोबारा घने जंगल में जा कर बहमन ने एक रीछ और परवेज ने एक शेर मारा। बादशाह ने कहा, बस करो, क्या सारे जंगली जानवर आज ही मार डालोगे? मैं तो सिर्फ यह देखना चाहता था कि तुम लोगों में कितना शौर्य है।

बादशाह उनके शिष्टाचार, शारीरिक सौंदर्य और वीरता से अत्यधिक प्रभावित हुआ। वह उन्हें अपने से अलग करना ही नहीं चाहता था। उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम लोग यहाँ से मेरे साथ महल में चलो और मेरे साथ भोजन करो। बहमन ने कहा, हुजूर, इस समय आपका साथ न कर सकेंगे। इस उद्दंडता के लिए क्षमा चाहते हैं। बादशाह ने आश्चर्य से पूछा, क्यों? बहमन बोला, हमारी एक बहन है। हम तीनों जो भी करते हैं तीनों की सलाह से करते हैं। हम बहन की सलाह ले कर ही आपके यहाँ आ सकेंगे।

बादशाह ने कहा, मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि तुम भाई-बहन एक-दूसरे की सलाह ही से काम करते हो। आज तुम अपने घर जाओ। अपनी बहन से सलाह करके कल यहीं शिकार खेलने आना और मुझे बताना कि तुम लोगों में क्या सलाह हुई है। बहमन और परवेज बादशाह से विदा हो कर अपने घर आए किंतु उन्हें बादशाह की कही हुई बात याद न रही और उन्होंने बहन से कोई सलाह नहीं ली। दूसरे रोज वे शिकार खेलने गए तो वापसी में बादशाह ने पूछा कि तुमने अपनी बहन से सलाह ली या नहीं। अब यह दोनों घबराए। अस्लियत यह थी कि दोनों का मन शिकार में ऐसा रमा था कि उन्हें शिकार के अलावा हर बात भूल जाती थी। बादशाह ने पूछा तो वे दोनों घबरा कर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। आखिर में बहमन ने कहा, हमसे बड़ी भूल हुई, हम अपनी बहन से सलाह लेना बिल्कुल भूल गए। बादशाह ने कहा कि कोई बात नहीं, आज पूछ लेना और कल आ कर मुझे बताना।

लेकिन वे उस दिन भी भूल गए और तीसरे दिन फिर बादशाह के सामने लज्जित हो कर कहा कि हम लोग आज भी आपकी आज्ञा का पालन करना भूल गए। बादशाह इस पर भी नाराज न हुआ कि मैं इन लोगों के साथ भोजन कर इनका सम्मान बढ़ाना चाहता हूँ और इन्हें इतनी भी परवा नहीं कि बहन से याद करके मेरे निमंत्रण की बात करें। लेकिन उसने बहमन को सोने की तीन गेंदे दीं और कहा कि इन्हें कमर में बँधे पटके में रख लो, जब कमर खोलोगे तो पटके से यह गेंदें जमीन पर गिरेंगी और उस समय तुम्हें याद आ जाएगा कि

मेरे निमंत्रण के बारे में तुम्हें अपनी बहन से सलाह लेनी है।

इतनी बातचीत होने पर भी दोनों घर जा कर इस बात को भूल गए। लेकिन रात को सोने के लिए जाते समय बहमन ने कमरबंद खोला तो गेंदें जमीन पर गिरीं। वह फौरन अपनी बहन के पास गया और परवेज को भी ले गया। परीजाद अभी तक अपने शयनकक्ष में नहीं गई थी। दोनों भाइयों ने उसे बताया कि बादशाह ने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया है और यह भी कहा कि दो दिन तक तुमने सलाह लेना भूलते रहे। उसने कहा कि यह तो तुम्हारा सौभाग्य है कि बादशाह ने तुम्हें खाने पर बुलाया है किंतु तुमने यह बड़ा बुरा किया कि दो दिन तक बादशाह तक की कही हुई बात को भूले रहे। भला बताओ, जब मुझे इस बात से इतना बुरा लग रहा है तो बादशाह को रंज न हुआ होगा? वैसे तो तुम्हें बादशाह का निमंत्रण मिलते ही उसे सधन्यवाद स्वीकार कर लेना चाहिए था। लेकिन अब जब इतनी बात हो गई तो मैं बोलती चिड़िया से भी सलाह ले लूँ। फिर वह चिड़िया का पिंजड़ा अपने कक्ष में ले गई और बोली, चिड़िया रानी, तुम्हें तो सारी छुपी हुई बातों का पता है और तुम्हारी सलाह हमेशा सही होती है। मुझे तुमसे एक सलाह लेनी है। मेरे भाइयों को बादशाह ने अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण दिया है। वे दो-तीन दिन तक यह बात भूल-भूल जाते रहे हैं और आज ही उन्होंने मुझे बताया है। क्या तुम्हारी राय में अब उनका जाना मुनासिब है, बादशाह कहीं नाराज न हों।

चिड़िया ने कहा, मालकिन, तुम्हारे भाइयों को बादशाह की आज्ञा जरूर माननी चाहिए। वह अपने राज्य काल में सभी का मालिक है। उसका मेहमान बनने में इन दोनों को किसी प्रकार हानि नहीं होगी। वे शौक से जाएँ। लेकिन इसके बाद यह भी जरूरी है कि बादशाह को अपने घर आ कर भोजन करने का निमंत्रण दें। परीजाद ने कहा, मैं अब अपने भाई को उनके साधारण कामों के अलावा कहीं जाने देना नहीं चाहती। मैं उनकी सुरक्षा के लिए डरती रहती हूँ। चिड़िया ने कहा, उन्हें बेखटके भेजो, उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। परीजाद ने कहा, अच्छा, जब बादशाह यहाँ आएँ तो मैं उनके सामने निकलूँ या नहीं। चिड़िया ने कहा, इसमें कोई हर्ज नहीं है। हर बादशाह अपनी सारी प्रजा के लिए पिता के समान होता है और पिता के सामने जाने में किसी को झिझक नहीं होनी चाहिए। परीजाद ने इसके बाद भाइयों से कहा कि तुम बादशाह का निमंत्रण स्वीकार कर लो लेकिन इसके बाद उससे एक बार यहाँ भोजन करने को भी कहो।

दूसरे दिन शिकारगाह में बादशाह ने उनसे पूछा कि आज तुमने अपनी बहन से पूछा या आज भी भूल गए। बहमन ने कहा, हम आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हो सकते। हमने उससे पूछा तो उसने हमें आपका निमंत्रण स्वीकार करने की सलाह दी। इसके अलावा उसने हमें बुरा-भला भी कहा कि हम दो दिन तक यह क्यों भूले रहे।

बादशाह ने कहा, इसकी कोई बात नहीं है। तुम दो दिनों तक मेरी बात भूले रहे इसकी मुझे कोई नाराजगी नहीं है। दोनों भाई यह सुन कर बड़े लज्जित हुए कि बादशाह हम पर इतना कृपालु है और हम उसके प्रति इतने लापरवाह हैं। वे लज्जा के मारे बादशाह से दूर-दूर ही रहे। बादशाह ने यह देखा तो उन्हें पास बुला कर उन्हें आश्वासन दिया कि ऐसी

छोटी-मोटी भूलों का मैं खयाल नहीं किया करता और मैं तुम लोगों से बिल्कुल नाराज नहीं हूँ। फिर उसने शिकार खत्म किया और महल को वापस हुआ। उसके साथ बहमन और परवेज भी थे। बादशाह ने इन दोनों की ऐसी अभ्यर्थना की कि उससे कई दरबारियों और सरदारों को ईर्ष्या होने लगी कि इन अजनबियों के प्रति बादशाह इतना कृपालु क्यों है।

किंतु महल के कर्मचारी और सेवक तथा अन्य उपस्थित प्रजाजन, यद्यपि उन्हें भी इस बात का आश्चर्य था कि इन नव परिचितों का इतना सम्मान हो रहा है, दोनों राजकुमारों के रंग-रूप और आचार-व्यवहार से प्रभावित थे। उनमें आपस में बातें होतीं कि बादशाह ने जिस मलिका को पिंजड़े में कैद कर रखा है उसके पेट से बच्चे पैदा होते तो वे इतने ही बड़े होते। खैर, जब बादशाह महल में आया तो भोजन का समय हो गया था। दासों ने स्वर्ण पात्रों में भोजन परोसा। बादशाह ने बहमन और परवेज को बैठने का इशारा किया। वे दोनों यह जानते ही न थे कि बादशाह के साथ कैसे भोजन किया जाता है। शाही रीति-आदाब बजा कर भोजन के आसन पर बैठने के बजाय वे सीधे अपने आसनों पर डट गए।

बादशाह इस पर भी मुस्कुरा उठा। उसने भोजन के दौरान इन दोनों से बातें करके उनकी शिष्टता और ज्ञान की परीक्षा ली जिसमें यह दोनों अच्छी शिक्षा पाने के कारण पूरे उतरे। बादशाह सोचने लगा कि अगर ऐसे कुशाग्र-बुद्धि और वीर शहजादे उसके होते तो कितना अच्छा होता। उनके प्रति बादशाह का आकर्षण उनकी भली बातों से बढ़ता जाता था किंतु वे जो भूलें करते थे उससे यह आकर्षण कम नहीं होता था। भोजन के बाद बादशाह उन्हें अपने मनोरंजन कक्ष में ले गया और देर तक उनसे बातें करता रहा। लगता था कि उनकी बातें सुनने से उसका जी भरता ही नहीं।

फिर बादशाह ने गायन-वादन आरंभ करने का आदेश दिया। अपने काल के सर्वश्रेष्ठ गायक और वादक आ कर उपस्थित हुए और उन्होंने अपनी श्रेष्ठ कला का प्रदर्शन किया। फिर नाच का इंतजाम किया गया और रूपसी कलाकार नृत्यांगनाओं ने मनमोहक नृत्य दिखा कर सभी का चित्त प्रसन्न किया। फिर नाटचकारों और विदूषकों ने बादशाह और दूसरे मेहमानों का मनोरंजन किया। यह कार्यक्रम कई घंटों तक चलते रहे और जब वे समाप्त हुए तो संध्या होने लगी थी।

अब बहमन और परवेज ने अपने घर जाने की अनुमति ली। बादशाह ने कहा, कल तुम फिर शिकारगाह में मेरे साथ शिकार खेलने आना। शिकार के बाद कल भी मेरे साथ यहाँ भोजन करना। उन दोनों ने कहा, हुजूर की हमारे ऊपर बड़ी कृपा है। हम शिकारगाह में जरूर आएँगे किंतु हमारा निवेदन है कि जब आप शिकार खत्म करें तो हमारी कुटी में आ कर और हमारा रूखा-सूखा भोजन ग्रहण करके हमारा मान बढ़ाएँ। बादशाह तो उन से अति प्रसन्न था ही, उसने तुरंत ही उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। उसने कहा, मुझे तुम्हारे यहाँ आ कर प्रसन्नता होगी। मैं तुम्हारी बहन से मिल कर भी बहुत प्रसन्न हूँगा क्योंकि तुम्हारी बातों से पता चला है कि वह बहुत बुद्धिमती और व्यवहारकुशल है। उसका मेहमान बन कर मुझे बड़ी खुशी होगी।

बहमन और परवेज घर पहुँचे तो उन्होंने परीजाद को बताया कि बादशाह ने सभी के समक्ष हमारा बड़ा सत्कार किया और यह भी वादा किया है कि कल शिकार से लौट कर वह हमारे घर आएगा और यहाँ भोजन करेगा। उन्होंने कहा, हम ने बादशाह को दावत तो दे दी है लेकिन अब यह भी जरूरी है कि उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल साज-सामान और भोजन का प्रबंध किया जाए। परीजाद ने भाइयों के हौसले की प्रशंसा की और कहा, तुम लोग चिंता न करो। मैं बोलनेवाली चिड़िया से सलाह ले कर सब प्रबंध कर रखूँगी। फिर वह चिड़िया का पिंजड़ा अपने कमरे में ले गई। उसने चिड़िया को पूरा हाल बताया तो उसने कहा, मालकिन, यह बड़े सौभाग्य की बात है कि बादशाह आ रहे हैं। तुम उनके स्वागत-सत्कार का जो भी प्रबंध कर सको वह यथेष्ट होगा। किंतु मेरे कहने से एक विशेष भोजन बनवाओ। तुम खीरे का गाढ़ा शोरबा बनवाओ और वह जिस प्याले में बादशाह के सामने लाया जाए उसमें शोरबे की सतह पर अनबिंधे मोती इस तरह बिछे हों जैसे पाक क्रिया के दौरान उसी सतह पर आ गए हों। परीजाद ने हैरान हो कर कहा, यह किस प्रकार का व्यंजन होगा? मेरी तो कल्पना में भी नहीं आता कि कोई व्यक्ति शोरबे के साथ मोती खा सकता है। बादशाह क्या कहेंगे? फिर अनबिंधे मोती मिलेंगे भी कहाँ से?

चिड़िया ने कहा, मालकिन, यह बात मैंने सोच-समझ कर कही है। तुम इस बारे में बहस मत करो, मेरी यह बात जरूर मान लो। मोती कहाँ मिलेंगे यह मैं तुम्हें बताती हूँ। तुम अपने कृत्रिम जंगल में जा कर दाहिनी ओर के सब से बड़े पेड़ की जड़ के पास की जमीन खुदवाना। वहाँ से तुम्हें अपनी आवश्यकता से कहीं अधिक मोती मिल जाएँगे। परीजाद को चिड़िया पर इतना भरोसा था कि उसने उसकी बात मान ली। दूसरे दिन सुबह दो मजदूरों को ले कर गई और वर्णित वृक्ष के नीचे जमीन खुदवाने लगी। खोदते-खोदते एक बार फावड़ा एक कड़ी चीज से टकराया। होशियारी से खोदा तो मजदूरों को एक सोने का संदूकचा मिला। उसे बाहर ला कर खोला गया तो उसके अंदर ढकने तक अनबिंधे मोती भरे हुए थे।

परीजाद उन्हें पा कर बहुत खुश हुई। चिड़िया के ज्ञान पर उसका विश्वास और बढ़ गया। वह सोने का संदूकचा उठा कर अपने मकान की ओर चली। बहमन और परवेज को सुबह ही यह देख कर आश्चर्य हो रहा था कि वह इस समय मजदूरों के साथ कहाँ जा रही है। इस समय सोने का संदूकचा लिए वापस आते देख कर और भी आश्चर्य में पड़े। उन्होंने कहा कि तुम सुबह-सुबह कहाँ गई थीं और यह संदूकचा कहाँ से लाई हो, सुबह जाते समय तो यह संदूकचा तुम्हारे हाथ में नहीं था। परीजाद ने कहा, यह लंबी बात है। खड़े-खड़े नहीं बताई जा सकती। अंदर चलो तो बताऊँगी। वे लोग उसके साथ घर के अंदर आए तो उसने कहा, कल शाम को मैंने बोलनेवाली चिड़िया से सलाह ली थी कि बादशाह की खातिरदारी के लिए क्या करना चाहिए। उसने सलाह दी कि और साज-सामान और व्यंजन तो ऐसे हों जैसे बादशाहों-अमीरों के खाने में होते हैं। लेकिन उसे एक प्याले में खीरे का गाढ़ा शोरबा भी दिया जाए जिसकी सतह पर अनबिंधे मोती पटे पड़े हों। मैंने बहुत विरोध करना चाहा कि बादशाह इसे मजाक समझेंगे और क्रुद्ध भी हो सकते हैं। लेकिन वह नहीं मानी, अपने सुझाव पर अड़ी रही। वह कहने लगी कि यह अजीब बात करने के लिए मैं बहुत सोच-समझ कर तुमसे कह रही हूँ और आश्वासन देती हूँ कि बादशाह

नाराज नहीं होंगे और इस सब का नतीजा अच्छा ही निकलेगा। तुम जानते हो कि मुझे उसकी बात पर विश्वास है। उसी ने मुझे गानेवाला पेड़ और सुनहरा पानी दिलवाया है और उसी की सलाह से तुम दोनों और तुम्हारे साथ बीसियों और आदमी दोबारा जिंदगी पा सके हैं। इसीलिए मैं उसकी किसी बात को नहीं टालती। उसी की सलाह पर मैं अपने जंगल के उस पेड़ के पास खुदाई करा कर मोतियों का डिब्बा लाई हूँ।

बहमन और परवेज यह सुन कर चक्कर में पड़े और काफी देर तक सोचते रहे। अंत में उन्होंने यही ठीक समझा कि जो कुछ हो रहा है होने दिया जाए। वे कहने लगे, बहन परीजाद, तुम हम दोनों से अधिक बुद्धिमान हो। इसमें भी संदेह नहीं कि वह चिड़िया बहुत-सी ऐसी बातें जानती है जो संसार में कोई अन्य व्यक्ति नहीं जानता। इसलिए चिड़िया की बात मान लेनी चाहिए। बादशाह नाराज होगा तो देखा जाएगा।

परीजाद ने बावर्चियों को आदेश दिया कि दोपहर तक राजाओं, बादशाहों के लायक पूरा भोजन बनाओ। क्या बने यह तुम्हीं तय करो। सिर्फ एक चीज मेरे कहने से बनाना। वह है खीरे का गाढ़ा शोरबा जिसकी सतह अनबिंधे मोतियों से पटी पड़ी हो। बावर्चियों ने यह सुन कर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि खाने की चीजों में साबुत मोती डालने का क्या मतलब है। उन्होंने कहा, सरकार, हमने ऐसा खाना कभी देखा क्या सुना तक नहीं। हंसों के मोती चुगने की बात जरूर सुनी हैं, आदमियों को मोती खाते कभी नहीं सुना। परीजाद ने कहा, मैंने तुम्हें बहस करने के लिए नहीं बुलाया। जो कहती हूँ वह करो। और जितने मोती बचें वह मेरे पास वापस भेज देना। वे बेचारे चुपचाप चले गए। इधर परीजाद ने मकान की ऐसी सफाई कराई कि वह शीशे की तरह चमकने लगा।

उसी समय शहजादे बढ़िया कपड़े पहन कर घोड़ों पर सवार हुए और शाही शिकारगाह में पहुँचे। शिकारगाह में कुछ देर तक उन्होंने बादशाह के साथ रह कर शिकार खेला। किंतु उस रोज गर्मी अधिक थी और धूप तेज थी, इसलिए उसने और दिनों से कुछ जल्दी ही शिकार खेलना खत्म कर दिया और अपने सैनिकों को वापस भेज कर दो-एक आदमियों को ले कर बहमन और परवेज के साथ उनके भवन की ओर चला। बहमन ने आगे बढ़ कर पहले से परीजाद को बताया कि बादशाह आ रहे हैं। वह ठीक कपड़े पहन कर भवन के मुख्य द्वार पर आ खड़ी हुई। बादशाह द्वार के सामने घोड़े से उतरा और भवन की ओर चला तो परीजाद आगे बढ़ी और उसने अपना सिर बादशाह के चरणों पर रख दिया।

बहमन और परवेज ने परिचय दिया कि यही हमारी बहन परीजाद है। बादशाह ने उसे उठा कर उसके सिर पर हाथ फेरा ओर उसके सुंदर रूप को वात्सल्यपूर्ण दृष्टि से देखता रहा। उसे यह देख कर ताज्जुब-सा हो रहा था कि परीजाद की जैसी सूरत उसकी स्मृति में धुँधली-सी उभर रही थी।

किंतु वह समझ न पाया कि किसकी सूरत है। इसके बाद परीजाद बादशाह को भवन के अंदर ले गई। उसने बादशाह को अपने सुंदर और विशाल आवास के हर भाग को

दिखाया। बादशाह ने पूरा भवन देख कर कहा, बेटी, तुमने अपने महल की सजावट और रखरखाव खूब कर रक्खा है। अब मुझे अपना बाग भी दिखाओ। कोई आदमी मुझसे तुम्हारे बाग की बड़ी तारीफ कर रहा था।

परीजाद ने उस कक्ष का, जिसमें यह सभी लोग मौजूद थे, एक ओर का दरवाजा खोला तो हरा-भरा बाग दिखाई दिया। बाग में वैसे तो सब कुछ सुंदर था किंतु बादशाह की नजर फव्वारे पर अटक गई। सुनहरा पानी काफी ऊँचाई तक उछल रहा था। बादशाह ने उसे पास से देखना चाहा। परीजाद उसे फव्वारे के पास ले गई। बादशाह ने कहा, इसके सुनहरे पानी का हौज कहाँ है और किस चीज के जोर से यह फव्वारा इतना ऊँचा उछलता है। यहाँ तो मुझे कोई चीज दिखाई नहीं देती न कोई हौज...।

वह अपनी बात पूरी करने के पहले ही चौंक कर एक ओर देखने लगा जहाँ से सुमधुर संगीत का ध्वनि आ रही थी। उसने कहा, क्या तुम लोगों ने बाग के अंदर भी गाने-बजाने का प्रबंध कर रखा है और यह कौन गायक है जिसकी आवाज शाही गवैयों से भी अच्छी है? परीजाद हँस कर बोली, नहीं हुजूर, कोई गवैया नहीं है। यह आदमी नहीं, पेड़ गा रहे हैं। बादशाह की भौंहें चढ़ गईं, उसने सोचा परीजाद हँसी कर रही है। लेकिन परीजाद ने कहा, आइए, आपको दिखाऊँ। यह कह कर वह बादशाह को गानेवाले पेड़ के पास ले गई। बादशाह हक्का-बक्का रह गया। मधुर संगीत वास्तव में पेड़ ही से निकल रहा था। कुछ देर तक बादशाह के मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। कभी फटी-फटी आँखों से गानेवाले पेड़ को देखता कभी सुनहरे फव्वारे को।

कुछ देर बाद उसने कहा, यह दोनों चीजें कल्पना के बाहर हैं। यह पेड़ तुमने कहाँ पाया? और हाँ, मैं पूछ रहा था कि फव्वारे का हौज कहा है और इतना ऊँचा किस चीज के जोर से उछलता है? परीजाद ने कहा, सरकार, इस पानी का कहीं हौज नहीं है, न किसी कल द्वारा इसे जोर की उछाल दी जाती है। संगमरमर के हौज के अंदर रखा हुआ जो बर्तन आप देख रहे हैं, उसी में कुल पानी है। यह उसी में से उछलता है और वहीं पर लौट कर गिरता है। यह सूखता भी नहीं इसीलिए कम नहीं होता। जो गानेवाला पेड़ अभी आपने देखा है उसकी अपनी विशेषता संगीत देने की है। इसके पत्ते ऐसे हैं कि जब हवा चलने पर आपस में रगड़ खाते हैं तो उनसे अपने आप मनोहर संगीत पैदा होता है। जब हवा बिल्कुल नहीं चलती तो यह वृक्ष मूक रहता है।

बादशाह ने कहा, यह तो बड़ी अजीब चीजें हैं। इनके जैसी किसी चीज की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। तुमने इन्हें कहाँ पाया? परीजाद ने कहा, यह चीजें किसी देश में नहीं पाई जातीं। मैं इन्हें एक रहस्यमय स्थान से लाई हूँ लेकिन मेरे वहाँ से आने के बाद वहाँ का रास्ता भी बंद हो गया।

फिर परीजाद ने कहा, सरकार, मेरे पास एक और अजीब चीज है जिसे आप देखें। यह एक चिड़िया है जो आदमियों की तरह बोलती है। और जब यह गाती है तो सारे पक्षी जमा हो

जाते हैं और इसके सुर में सुर मिला कर गाने गाते हैं। बादशाह ने कहा, उस चिड़िया को भी दिखाओ। परीजाद बादशाह को उस बारहदरी के पास लाई जिसमें उस चिड़िया का पिंजड़ा रखा गया था। बादशाह ने देखा कि आसपास के चार-छह पेड़ों पर सैकड़ों और विभिन्न प्रकार के पक्षी एक सुर में गा रहे हैं। उसने पूछा, क्या यह सब पक्षी तुमने पाले हैं? परीजाद बोली, नहीं। यह बारहदरी में रखे पिंजड़े में जो चिड़िया है उसके गाने से खिंच कर आए हैं और उसके साथ-साथ गा रहे हैं। बादशाह बारहदरी में गया तो देखा कि पिंजड़े में बंद एक चिड़िया मस्त हो कर गा रही है।

परीजाद ने कहा, बोलनेवाली चिड़िया, देखती नहीं कि बादशाह सलामत खुद आए हुए हैं? तेरा इधर ध्यान नहीं है। यह सुन कर चिड़िया चुप हो गई और उसके साथ ही आसपास के पेड़ों पर बैठे हुए सारे पक्षी चुप हो गए। चिड़िया ने बादशाह को प्रणाम किया और पूछा कि आपको यहाँ तक आने में किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हुआ। बादशाह को यह देख कर ताज्जुब हुआ कि यह चिड़िया बिल्कुल मनुष्य जैसी आवाज में बोलती है। उसने चिड़िया के अभिवादन का यथोचित उत्तर दिया और कुछ देर उससे बातें कीं। चिड़िया ने हर बात का शिष्टाचारपूर्वक उत्तर दिया। बादशाह उससे ऐसा प्रभावित हुआ कि खाने के समय भी उसका पिंजड़ा पास में रखवा लिया ताकि उससे बातें करता रहे।

बादशाह खाने पर बैठा तो संयोग से सबसे पहले खीरे के शोरबेवाला कटोरा ही उठाया। जब उसमें देखा कि उसकी सतह पर अनबिंधे मोती बिछे पड़े हैं, उसने खाने पर बढ़ा हुआ हाथ खींच लिया और नाराजगी से बोला, यह क्या मजाक है? यह क्या पेश किया गया है? तीनों भाई-बहन चुप रहे किंतु चिड़िया ने तपाक से कहा, सरकार, ईश्वर की माया अपरंपार है। मलिका के पेट से कुत्ते-बिल्ली निकल सकते हैं तो बादशाह के पेट में मोतियों के ढेर भी जा सकते हैं।

बादशाह पहले तो आँखें तरेर कर चिड़िया को देखने लगा। फिर उसे बीती बातें याद आईं तो उसने सिर नीचा कर लिया। कुछ देर मौन रहने के बाद बोला, चिड़िया, तेरी बात ठीक है। मैं भी सोचता हूँ जिन बातों पर मैंने विश्वास किया वे बुद्धि से कोसों दूर हैं। फिर भी मैंने उन पर इसलिए विश्वास किया कि स्वयं मलिका की बहनों ने यह कहा था और मैंने सोचा कि वे झूठ न कहेंगी क्योंकि वे उसकी सगी बहनें थीं, उसकी हितचिंतक थीं।

चिड़िया ने कहा, सरकार से यही तो भूल हुई कि आप ने उन्हें हितचिंतक समझा। जब से उन्होंने देखा कि वे नौकरों से ब्याही गईं और छोटी बहन राजरानी बन गई तो वे जल मरीं। उन दुष्टों ने इस बात का भी ख्याल न किया कि मलिका ने शादी के बाद भी उनसे बहनों जैसा प्रेम रखा था। मलिका को मृत्यु-दंड दिलाने के लिए ही उन्होंने तीन- तीन बार सफेद झूठ बोला। वह तो भला हो उस नेक मंत्री का जिसके कारण मलिका की जान बच गई।

मलिका के प्रति अपने दुर्व्यवहार को याद करके बादशाह की आँखों में आँसू आने लगे। चिड़िया फिर बोली, सरकार, अपने सामने बैठे इन तीन बच्चों को देखिए। यह वह पिल्ला, बिलौटा और छछूंदर हैं जिन्हें आपकी मलिका ने जन्म दिया था। मलिका की दुष्ट बहनों ने इनके जन्म पर इनकी जगह मरे जानवर रख दिए और इन्हें कंबल में लपेट कर टोकरियों में डाल-डाल कर बहा दिया था ताकि दूर जा कर डूब जाएँ और किसी को पता न चले। किंतु भगवान को इन्हें जीवित रखना था। आपके दिवंगत बागों के दारोगा ने इन तीनों को ही नहर से निकलवा लिया। उसके कोई संतान नहीं थी इसलिए उसने इनका लालन-पालन अपनी संतान की तरह किया और इन्हें भली प्रकार शिक्षा दिलाई और इनके लिए यह महल बनवाया। सरकार, यह तीनों और कोई नहीं हैं, आप ही की संतानें हैं।

बादशाह ने कहा, चिड़िया, तुझे मैं किस तरह धन्यवाद दूँ कि दुष्टों की दुष्टता और मलिका की दोषहीनता मेरे सामने स्पष्ट की और मेरे बच्चों को पहचनवाया। मैं भी बराबर सोचता था कि इन लड़कों के प्रति मन में अकारण ममता क्यों उपजती है और इनकी बातों पर नाराज क्यों नहीं हो पाता।

चिड़िया ने जो सूचना दी थी वह बादशाह ही के लिए नहीं, बहमन, परवेज और परीजाद के लिए भी नई थी। वे तीनों अपनी जगह से उठे और बादशाह के पैरों पर गिर पड़े। बादशाह ने सभी को उठा कर सीने से लगाया। चारों की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। कुछ देर बाद जब सहज स्थिति में आए तो सबने मिल कर रुचिपूर्वक भोजन किया। कुछ देर तक बातें करने के बाद बादशाह ने उनसे कहा, अब मैं महल को जाता हूँ। कल फिर आऊँगा। कल तुम लोग मेरे ही नहीं, अपनी माता के स्वागत के लिए भी तैयार रहना और इसके बाद महल में रहने के लिए भी।

महल में पहुँच कर बादशाह ने मंत्री को बुलाया। उसने उसकी सुमति की प्रशंसा की जिसके कारण मलिका की जान बची थी। फिर उसने मलिका की बहनों की दुष्टता का वर्णन किया जिन्होंने अपनी शिष्ट और सदाचारी सगी बहन के विरुद्ध ऐसा घृणित षडचंत्र रचा था और दो राजपुत्रों और एक राजपुत्री की लगभग जान ही ले ली थी। उसने आदेश दिया कि उन दोनों को अभी वधस्थल में ले जाओ और उनके सिर उड़वा दो। वे किसी प्रकार दया की पात्र नहीं। मंत्री ने अविलंब शाही हुक्म पर कार्य किया और दोनों दुष्टों को वह दंड मिल गया जिसकी भागी वे बहुत दिनों से थीं।

फिर बादशाह जामा मसजिद के सामने उस कैदखाने में गया जहाँ उसने मलिका को सतत अप्रतिष्ठा का दंड दे कर रखा था। उसकी दुर्बलता और फटे-पुराने वस्त्र देख कर बादशाह से बर्दाश्त न हुआ और वह उसे गले लगा कर फूट-फूट कर रोने लगा। उसने मलिका को बताया कि मैंने तुम्हें जो दंड दिया उसका कारण तुम्हारी वे बहनें ही थीं जिन्हें तुमने और मैंने तुम्हारा हितचिंतक समझा था। उसने बताया कि दोनों मरवा दी गई हैं। उसने यह भी कहा कि यह सब मुझे एक अलौकिक बोलनेवाली चिड़िया से मालूम हुआ।

मलिका यह सुन कर खुशी के मारे रोने लगी। बादशाह उसे महल में लाया। उसने हम्माम किया और शाही पोशाक पहनी। रात भर महल में हँसी-खुशी होती रही। सुबह बादशाह ने मलिका को बताया कि भगवान की दया से तुम्हारे दोनों बेटे और बेटी जिंदा हैं और बड़े आराम से हैं, तुम चल कर उनसे मिलो। यह खबर सारे राज्य में फैल गई और सभी लोग उत्सव-सा मनाने लगे।

हर जगह नाच-रंग होने लगे। मलिका बादशाह के साथ इन लोगों के महल में गई। तीनों बच्चे अपनी माँ से देर तक चिपटे रहे। फिर सब ने मिल कर भोजन किया। इसके बाद बादशाह और तीनों संतानों ने मलिका को गानेवाला पेड़, सुनहरे जल का स्वयंचालित फव्वारा और मनुष्यों की भाँति बोलनेवाली चिड़िया दिखाई। मलिका को मालूम हो रहा था कि वह स्वप्न देख रही है।

उन लोगों के निवास स्थान से शाही महल तक आनेवाली सवारी को देखने के लिए सड़कों पर जबर्दस्त भीड़ हो गई। बादशाह ने सार्वजनिक समारोह का आदेश दिया और कई दिनों तक खेल-तमाशे होते रहे। बादशाह ने इतना दान दिया कि शहर में कोई व्यक्ति निर्धन नहीं रहा। बादशाह ने इसी अवसर पर बहमन को युवराज घोषित करके क्रियात्मक रूप से उसके हाथ में सारा राज्य-प्रबंध दे दिया। परवेज को उसने सेना का अधिपति बना दिया। परीजाद को अपने एक मित्र बड़े बादशाह के एकमात्र पुत्र से ब्याह दिया।

शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने कहा, बड़ी सुंदर कहानी सुनाई। अब कौन-सी कहानी सुनाओगी? शहरजाद ठंडी साँस भर कर बोली, कोई नहीं। मुझे जो भी कहानियाँ आती थीं सब खत्म हो गईं और आज जल्लाद के हाथों मेरी कहानी भी खत्म हो जाएगी।

शहरयार ने मुस्कुरा कर कहा, नहीं बेगम, तुम्हारी कही हुई कहानियाँ अमर रहेंगी और तुम्हारी उम्र लंबी होगी। तुमने कहानियाँ सुना कर मेरा ज्ञानवर्धन भी किया है और मन का मैल भी धो दिया है। मैं आज घोषणा करूँगा कि आज से मैं अपना शादी करके पत्नी को मरवाने का नियम समाप्त कर रहा हूँ।

शहरजाद उसके पैरों पर गिर पड़ी। दुनियाजाद के आँसू बहने लगे।

किस्सा गरीक बादशाह और हकीम दूबाँ का

फारस देश में एक रूमा नामक नगर था। उस नगर के बादशाह का नाम गरीक था। उस बादशाह को कुष्ठ रोग हो गया। इससे वह बड़े कष्ट में रहता था। राज्य के वैद्य-हकीमों ने भाँति-भाँति से उसका रोग दूर करने के उपाय किए किंतु उसे स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ। संयोगवश उस नगर में दूबाँ नामक एक हकीम का आगमन हुआ। वह चिकित्सा शास्त्र में अद्वितीय था, जड़ी-बूटियों की पहचान उससे अधिक किसी को भी नहीं थी। इसके अतिरिक्त वह प्रत्येक देश की भाषा तथा यूनानी, अरबी, फारसी इत्यादि अच्छी तरह जानता था।

जब उसे मालूम हुआ कि वहाँ के बादशाह को ऐसा भयंकर कुष्ठ रोग है जो किसी हकीम के इलाज से ठीक नहीं हुआ है, तो उसने नगर में अपने आगमन की सूचना उसके पास भिजवाई और उससे भेंट करने के लिए स्वयं ही प्रार्थना की। बादशाह ने अनुमति दे दी तो वह उसके सामने पहुँचा और विधिपूर्वक दंडवत प्रणाम करके कहा, 'मैने सुना है कि नगर के सभी हकीम आप का इलाज कर चुके और कोई लाभ न हुआ। यदि आप आज्ञा करें तो मैं खाने या लगाने की दवा दिए बगैर ही आपका रोग दूर कर दूँ।' बादशाह ने कहा, 'मैं दवाओं से ऊब चुका हूँ। अगर तुम बगैर दवा के मुझे अच्छा करोगे तो मैं तुम्हें बहुत पारितोषिक दूँगा।' दूबाँ ने कहा, 'भगवान की दया से मैं आप को बगैर दवा के ठीक कर दूँगा। मैं कल ही से चिकित्सा आरंभ कर दूँगा।'

हकीम दूबाँ बादशाह से विदा होकर अपने निवास स्थान पर आया। उसी दिन उसने कोढ़ की दवाओं से निर्मित एक गेंद और उसी प्रकार एक लंबा बल्ला बनवाया और दूसरे दिन बादशाह को यह चीजें देकर कहा कि आप घुड़सवारी की गेंदबाजी (पोलो) खेलें और इस गेंद-बल्ले का प्रयोग करें। बादशाह उसके कहने के अनुसार खेल के मैदान में गया। हकीम ने कहा, 'यह औषधियों का बना गेंद-बल्ला है। आप को जब पसीना आएगा तो येऔषधियाँ आप के शरीर में प्रवेश करने लगेंगी। जब आपको काफी पसीना आ जाए और औषधियाँ भली प्रकार आप के शरीर में प्रविष्ट हो जाएँ तो आप गर्म पानी से स्नान करें। फिर आपके शरीर में मेरे दिए हुए कई गुणकारी औषधियों के तेलों की मालिश होगी। मालिश के बाद आप सो जाएँ। मुझे विश्वास है कि दूसरे दिन उठकर आप स्वयं को नीरोग पाएँगे।'

बादशाह यह सुनकर घोड़े पर बैठा और अपने दरबारियों के साथ चौगान (पोलो) खेलने लगा वह एक तरफ से उनकी ओर बल्ले से गेंद फेंकता था और वे दूसरी ओर से उसकी तरफ गेंद फेंकते थे। कई घंटे तक इसी प्रकार खेल होता रहा। गर्मी के कारण बादशाह के सारे शरीर से पसीना टपकने लगा और हकीम की दी हुई गेंद और बल्ले की औषधियाँ उसके शरीर में प्रविष्ट हो गईं। इसके बाद बादशाह ने गर्म पानी से अच्छी तरह मल-मल कर स्नान किया। इसके बाद तेलों की मालिश और दूसरी सारी बातें जो वैद्य ने बताई थीं की गईं। सोने के बाद दूसरे दिन बादशाह उठा तो उसने अपने शरीर को ऐसा नीरोग पाया

जैसे उसे कभी कुष्ठ हुआ ही नहीं था।

बादशाह को इस चामत्कारिक चिकित्सा से बड़ा आश्चर्य हुआ। वह हँसी-खुशी उत्तमोत्तम वस्त्रालंकार पहन कर दरबार में आ बैठा। दरबारी लोग मौजूद थे ही। कुछ ही देर में हकीम दूबाँ भी आया। उसने देखा कि बादशाह का अंग-अंग कुंदन की तरह दमक रहा है। अपनी चिकित्सा की सफलता पर उसने प्रभु को धन्यवाद दिया और समीप आकर दरबार की रीति के अनुसार सिंहासन को चुंबन दिया। बादशाह ने हकीम को बुलाकर अपने बगल में बिठाया और दरबार के लोगों के सन्मुख हकीम की अत्यधिक प्रशंसा की।

बादशाह ने अपनी कृपा की उस पर और भी वृष्टि की। उसे अपने ही साथ भोजन कराया। संध्याकालीन दरबार समाप्त होने पर जब मुसाहिब और दरबारी विदा हो गए तो उसने एक बहुत ही कीमती खिलअत (पारितोषक राजवस्त्र) और साठ हजार रुपए इनाम में दिए। इसके बाद भी वह दिन-प्रतिदिन हकीम की प्रतिष्ठा बढ़ाता जाता था। वह सोचता था कि हकीम ने जितना उपकार मुझ पर किया है उसे देखते हुए मैंने इसके साथ कुछ भी नहीं किया। इसीलिए वह प्रतिदिन कुछ न कुछ इनाम-इकराम उसे देने लगा।

बादशाह का मंत्री हकीम की इस प्रतिष्ठा और उस पर बादशाह की ऐसी अनुकंपा देखकर जल उठा। वह कई दिन तक सोचता रहा कि हकीम को बादशाह की निगाहों से कैसे गिराऊँ। एक दिन एकांत में उसने बादशाह से निवेदन किया कि मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ, अगर आप अप्रसन्न न हों। बादशाह ने अनुमति दे दी तो मंत्री ने कहा, 'आप उस हकीम को इतनी मान-प्रतिष्ठा दे रहे हैं यह बात ठीक नहीं है। दरबार के लोग और मुसाहिब भी इस बात को गलत समझते हैं कि एक विदेशी को, जिसके बारे में यहाँ किसी को कुछ पता नहीं है, इतना मान-सम्मान देना और विश्वासपात्र बनाना अनुचित है। वास्तविकता यह है कि हकीम दूबाँ महाधूर्त है। वह आपके शत्रुओं का भेजा हुआ है जो चाहते हैं वह छल क द्वारा आपको मार डाले।'

बादशाह ने जवाब दिया, 'मंत्री, तुम्हें हो क्या गया है जो ऐसी निर्मूल बातें कर रहे हो और हकीम को दोषी ठहरा रहे हो?' मंत्री ने कहा, 'सरकार मैं बगैर सोचे-समझे यह बात नहीं कह रहा हूँ। मैंने अच्छी तरह पता लगा लिया है कि यह मनुष्य विश्वसनीय नहीं है। आपको उचित है कि आप हकीम की ओर से सावधान हो जाएँ। मैं फिर जोर देकर निवेदन करता हूँ कि दूबाँ अपने देश से वही इरादा ले कर आया है अर्थात वह छल से आप की हत्या करना चाहता है।'

बादशाह ने कहा, 'मंत्री, हकीम दूबाँ हरगिज ऐसा आदमी नहीं है जैसा तुम कहते हो। तुमने स्वयं ही देखा है कि मेरा रोग किसी और हकीम से ठीक न हो सका और दूबाँ ने उसे एक दिन में ही ठीक कर दिया। ऐसी चिकित्सा को चमत्कार के अलावा क्या कहा जा सकता है? अगर वह मुझे मारना चाहता तो ऐसे कठिन रोग से मुझे छुटकारा क्यों दिलाता? उसके बारे में ऐसे विचार रखना बड़ी नीचता है। मैं अब उसका वेतन तीन हजार

रुपए मासिक कर रहा हूँ। विद्वानों का कहना है कि सत्पुरुष वही होते हैं जो अपने साथ किए गए किंचित्मात्र उपकार को आजीवन न भूलें। उसने तो मेरा इतना उपकार किया है कि अगर मैं उसे थोड़ा इनाम और मान-सम्मान दे दिया तो तुम उससे जलने क्यों लगे। तुम यह न समझो कि तुम्हारी निंदा के कारण मैं उसका उपकार करना छोड़ दूँगा। इस समय मुझे वह कहानी याद आ रही है जिसमें बादशाह सिंदबाद के वजीर ने शहजादे को प्राणदंड देने से रोका था।' मंत्री ने कहा, 'वह कहानी क्या है? मैं भी उसे सुनना चाहता हूँ।'

बादशाह गरीक ने कहा, 'बादशाह सिंदबाद की सास किसी कारण सिंदबाद के बेटे से नाराज थी। उसने छलपूर्वक शहजादे पर ऐसा भयंकर अभियोग लगाया कि बादशाह ने शहजादे को प्राण-दंड देने का आदेश दे दिया। सिंदबाद के वजीर ने उससे निवेदन किया कि महाराज, इस आदेश को जल्दी में न दें। जल्दी का काम शैतान का होता है। सभी धर्मशास्त्रों ने अच्छी तरह समझे बूझे-बगैर किसी काम को करने से मना किया है। कहीं ऐसा न हो कि आप का उस भले आदमी जैसा हाल हो जिसने जल्दबाजी में अपने विश्वासपात्र तोते को मार दिया और बाद में हमेशा पछताता रहा। बादशाह के कहने से वजीर ने भद्र पुरुष और उसके तोते की कहानी इस तरह सुनाई।'

किस्सा भद्र पुरुष और उसके तोते का

पूर्वकाल में किसी गाँव में एक बड़ा भला मानस रहता था। उसकी पत्नी अतीव सुंदरी थी और भला मानस उससे बहुत प्रेम करता था। अगर कभी घड़ी भर के लिए भी वह उसकी आँखों से ओझल होती थीं तो वह बेचैन हो जाता था। एक बार वह आदमी किसी आवश्यक कार्य से एक अन्य नगर को गया। वहाँ के बाजार में भाँति-भाँति के और चित्र-विचित्र पक्षी बिक रहे थे। वहाँ एक बोलता हुआ तोता भी था। तोते की विशेषता यह थी कि उस से जो भी पूछा जाए उसका उत्तर बिल्कुल मनुष्य की भाँति देता था। इसके अलावा उसमें यह भी विशेषता थी कि किसी मनुष्य की अनुपस्थिति में उसके घर पर जो-जो घटनाएँ घटी होती थीं उन्हें भी वह उस मनुष्य के पूछने पर बता देता था।

कुछ दिनों बाद उस भद्र पुरुष का विदेश जाना हुआ। जाते समय उसने तोते को अपनी पत्नी के सुपुर्द कर दिया कि इसकी अच्छी तरह देख-रेख करना। वह परदेश चला गया और काफी समय बाद लौटा। लौटने पर उसने अकेले में तोते से पूछा कि यहाँ मेरी अनुपस्थिति में क्या-क्या हुआ। उसकी अनुपस्थिति में उसकी पत्नी ने खूब मनमानी की थी और शील के बंधन तोड़ दिए थे। तोते ने अपने स्वामी से सारा हाल कह सुनाया। स्वामी ने अपनी पत्नी को खूब डाँटा-फटकारा कि तू मेरे पीठ पीछे क्या-क्या हरकतें करती है और कैसे-कैसे गुल खिलाती है।

पत्नी-पति से तो कुछ न बोली क्योंकि बातें सच्ची थीं। लेकिन यह सोचने लगी कि यह बातें उसके पति को किसने बताई। पहले उसने सोचा कि शायद किसी सेविका ने यह काम किया है। उसने एक एक सेविका को बुलाकर डाँट फटकार कर पूछा किंतु सभी ने कसमें खा-खाकर कहा कि हमने तुम्हारे पति से कुछ नहीं कहा है। स्त्री को उनकी बातों का विश्वास हो गया और उसने समझ लिया कि यह कार्रवाई तोते ने की है। उसने तोते से कुछ न कहा क्योंकि तोता इस बात को भी अपने स्वामी को बता देता। किंतु वह इस फिक्र में रहने लगी कि किसी प्रकार तोते को अपने स्वामी के सन्मुख झूठा सिद्ध करें और अपने प्रति उसके अविश्वास और संदेह को दूर करें।

कुछ दिन बाद उसका पति एक दिन के लिए फिर गाँव से बाहर गया। स्त्री ने अपनी सेविकाओं को आज्ञा दी कि रात में एक सेविका सारी रात तोते के पिंजरे के नीचे चक्की पीसे, दूसरी उस पर इस तरह पानी डालती रहे जैसे वर्षा हो रही है और तीसरी सेविका पिंजरे के पीछे की ओर दिया जला कर खुद दर्पण लेकर तोते के सामने खड़ी हो जाए और दर्पण पर पड़ने वाले प्रकाश को तोते की आँखों के सामने रह-रह कर डालती रहे। सेविकाएँ रात भर ऐसा करती रहीं और भोर होने के पहले ही उन्होंने पिंजरा ढक दिया।

दूसरे दिन वह भद्र पुरुष लौटा तो उसने एकांत में तोते से पूछा कि कल रात को क्या-क्या हुआ था। तोते ने कहा, 'हे स्वामी, रात को मुझे बड़ा कष्ट रहा; रात भर बादल गरजते रहे, बिजली चमकती रही और वर्षा होती रही।' चूँकि विगत रात को बादल और वर्षा का

नाम भी नहीं था इसलिए आदमी ने सोचा कि यह तोता बगैर सिर-पैर की बातें करता है और मेरी पत्नी के बारे में भी इसने जो कुछ कहा वह भी बिल्कुल बकवास थी। उसे तोते पर अत्यंत क्रोध आया और उसने तोते को पिंजरे से निकाला और धरती पर पटक कर मार डाला। वह अपनी पत्नी पर फिर विश्वास करने लगा लेकिन यह विश्वास अधिक दिनों तक नहीं रहा। कुछ महीनों के अंदर ही उसके पड़ोसियों ने उसके उसकी पत्नी के दुष्कृत्यों के बारे में ऐसी-ऐसी बातें कहीं जो उस तोते की बातों जैसी थीं। इससे उस भद्र पुरुष को बहुत पछतावा हुआ कि बेकार में ही ऐसे विश्वासपात्र तोते को जल्दी में मार डाला।

मछुवारे ने इतनी कहानी कहकर गागर में बंद दैत्य से कहा कि बादशाह गरीक ने तोते की कथा कहने के बाद अपने मंत्री कहा, 'तुम दुश्मनी के कारण चाहते हो कि मैं दूबाँ हकीम को जिसने मेरा इतना उपकार किया है और तुम्हारे साथ भी कोई बुराई नहीं की है निरपराध ही मरवा डालूँ। मैं तोते के स्वामी जैसा मूर्ख नहीं हूँ जो बगैर सोचे-समझे ऐसी बात जल्दबाजी में करूँ।'

मंत्री ने निवेदन किया, 'महाराज, तोता अगर निर्दोष मारा भी गया तो कौन सी बड़ी बात हो गई। न स्त्री का दुष्कृत्य कोई बड़ी बात है। किंतु जो बात मैं आप से कह रहा हूँ वह बड़ी बात है और इस पर ध्यान देना जरूरी है। फिर आप के बहुमूल्य जीवन के लिए एक निरपराध व्यक्ति मारा भी जाय तो इस में खेद की क्या बात है। उसका इतना अपराध है ही कि सभी लोग उसे शत्रु का भेदिया कहते हैं। मुझे उससे न ईर्ष्या है न शत्रुता। मैं जो कुछ कहता हूँ आप ही के भले के लिए कहता हूँ। मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं कि वह अच्छा है या बुरा, मैं तो केवल आप की दीर्घायु चाहता हूँ। अगर मेरी बात असत्य निकले तो आप मुझे वैसा ही दंड दें जैसा एक राजा ने अपने अमात्य को दिया था। उस अमात्य को अंततः राजाज्ञा से मरना ही पड़ा था।' बादशाह ने पूछा किस राजा ने अमात्य को प्राण-दंड दिया और किस बात पर दिया। मंत्री ने यह कहानी कही।

किस्सा वजीर का

अमात्य की कहानी

प्राचीन समय में एक राजा था उसके राजकुमार को मृगया का बड़ा शौक था। राजा उसे बहुत चाहता था, राजकुमार की किसी इच्छा को अस्वीकार नहीं करता था। एक दिन राजकुमार ने शिकार पर जाना चाहा। राजा ने अपने एक अमात्य को बुलाकर कहा कि राजकुमार के साथ चले जाओ; तुम्हें सब रास्ते मालूम हैं, राजकुमार को नहीं मालूम, इसलिए एक क्षण के लिए भी राजकुमार का साथ न छोड़ना।

राजकुमार अमात्य और कई अन्य लोगों को लेकर आखेट के लिए वन में गया। कुछ देर में एक बारहसिंघा सामने से निकला। राजकुमार ने घोड़ा उसके पीछे डाल दिया। अमात्य ने सोचा कि राजकुमार का घोड़ा तेज है और शीघ्र ही बारहसिंघे को मार लिया जाएगा। इसलिए उसने कुछ ढील डाल दी। लेकिन बारहसिंघा दौड़ता ही रहा। राजकुमार कई कोस तक उसके पीछे गया लेकिन उसे पा न सका। वह रास्ता भी भूल गया। उसने चाहा कि वापस अपने अमात्य और अन्य शिकारी साथियों से जा मिले लेकिन वह बिल्कुल भटक गया।

भटकते-भटकते उसने एक स्थान पर देखा कि एक अति सुंदर स्त्री विलाप कर रही है। राजकुमार ने अपने घोड़े को रोका और स्त्री से पूछा कि तू क्यों रो रही है। स्त्री ने बताया कि मैं एक देश की राजकुमारी हूँ, मैं विशेष परिस्थिति वश अकेली अपने घोड़े पर सवार होकर इधर से जा रही थी कि मुझे नींद आ गई और मैं घोड़े से गिर पड़ी और मेरा घोड़ा भी जंगल में भाग गया, मुझे यह भी नहीं मालूम वह किधर को गया है। राजकुमार को उस पर दया आई। उसने अपने आगे अपने घोड़े पर बिठा लिया और जिस ओर स्त्री ने अपनी राजधानी बताई थी उधर चल दिया।

कुछ समय पश्चात स्त्री ने कहा मैं घोड़े पर थक गई हूँ, पैदल चलना चाहती हूँ। राजकुमार ने उसे उतार दिया और उसके साथ पैदल चलने लगा। लेकिन उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक परकोटे के पास पहुँच कर उसने पुकार कर कहा, 'बच्चों प्रसन्न हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए बड़ा मोटा ताजा आदमी शिकार के लिए लाई हूँ।' जवाब में आवाज आई, अम्मा कहाँ है वह आदमी। हमें जल्दी से दे। हम बहुत भूखे हैं। राजकुमार यह सुन कर बड़ा भयभीत हुआ। वह समझ गया कि यह स्त्री नरभक्षी वनवासियों की जाति की है और मुझे मार कर खा जाने के लिए यहाँ धोखे से लाई है। वह घोड़े पर बैठ कर मुड़ने लगा। स्त्री ने देखा कि शिकार हाथ से निकला जाता है तो पलट कर कहने लगी, 'तुम परेशान क्यों हो, यह तो तुम्हारे साथ मजाक हो रहा था। राजकुमार ने कहा, 'खैर, तुम अपने घर आ गई हो और अब मैं जा रहा हूँ।' स्त्री बोली तुम कौन हो, कहाँ जाओगे। राजकुमार ने अपना हाल बताया कि शिकार खेलने में राह भूल गया हूँ। स्त्री ने कहा, 'फिर मेरे साथ क्यों नहीं आते? थोड़ी देर आराम करो।'

राजकुमार की समझ में नहीं आया कि स्त्री पर विश्वास करे या न करे। उसने अंततः दोनों हाथ उठाकर कहा, 'हे भगवान, यदि तू सर्वशक्तिमान है तो मुझे इस विपत्ति से बचा और मुझे मेरा मार्ग दिखा।' उसके यह कहते ही नरभक्षिणी स्त्री एक घने जंगल में गायब हो गई और कुछ देर में राजकुमार को अपना मार्ग भी मिल गया। अपने महल में पहुँच कर उसने अपने पिता से अपना संपूर्ण वृत्तांत कहा कि किस प्रकार वह अमात्य से बिछुड़ गया और नरभक्षिणी के पंजे में फँसते-फँसते बचा। राजा इस बात से इतना क्रुद्ध हुआ कि उसे अमात्य का वध करवा डाला।

शहरजाद इतनी कहानी कह कर फिर आगे बोली कि बादशाह सलामत, मंत्री गरीक बादशाह को यह किस्सा सुनाकर कहने लगा, 'मैंने विश्वस्त सूत्रों से मालूम किया है कि हकीम दूबाँ आपके किसी वैरी का जासूस है और उसने इसे यहाँ पर इसलिए भेजा है कि आपको धीरे-धीरे मार दे। यह ठीक ही है कि आप का रोग अभी दूर हो गया है किंतु औषधियों का बाद में ऐसा प्रभाव होगा कि आप को अत्यंत कष्ट होगा और संभव है कि जान पर भी बन आए।

मंत्री ने बादशाह को इतना बहकाया कि वह हकीम पर संदेह करने लगा। वह बोला, 'शायद तुम ठीक ही कहते हो। हो सकता है कि यह मेरी हत्या के उद्देश्य से आया हो और किसी समय मुझे कोई ऐसी औषधि सुँघाए जिससे मेरी जान जाती रहे। मुझे वास्तव में अपने लिए खतरा मालूम होता है।' मंत्री ने सोचा कि अपने षडयंत्र को शीघ्र ही पूरा करना चाहिए, ऐसा न हो कि बादशाह का विचार बाद में पलट जाय। वह बोला, 'महाराज, फिर देर किस बात की है। उसे अभी बुलवा कर क्यों नहीं मरवा देते?' बादशाह ने कहा, 'अच्छा, मैं ऐसा ही करता हूँ।'

बादशाह ने एक सरदार को भेजा कि इसी समय दूबाँ को यहाँ ले आओ। दूत उसे थोड़ी ही देर में ले आया। दूबाँ के आने पर बादशाह ने पूछा, 'तुम्हें मालूम है मैंने तुम्हें इस समय क्यों बुलाया है' उसने निवेदन किया कि मुझे नहीं मालूम। बादशाह ने कहा, 'मैंने तुम्हें प्राणदंड देने के लिए बुलाया है ताकि तुम्हारे षडयंत्र से बचाव कर सकूँ।' हकीम को इससे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने पूछा कि मेरा अपराध क्या है कि आप मुझे मरवाए डाल रहे है। बादशाह ने कहा, 'तुम मेरे किसी शत्रु के जासूस हो और यहाँ मुझे मारने के लिए आए हो। मेरे लिए यही उचित है कि तुम्हें प्राणदंड देने में एक क्षण का भी विलंब न करूँ। यह कह कर बादशाह ने उसी सरदार से कहा कि हकीम का वध कर दे।

हकीम समझ गया कि मेरे शत्रुओं ने ईर्ष्या के कारण बादशाह का मन मुझ से फेर दिया है। वह इस बात पर पछताने लगा कि मैंने क्यों यहाँ आकर बादशाह को रोगमुक्त किया और अपनी जान जाने का सामान किया। वह बहुत देर तक बादशाह के सामने निर्दोषिता सिद्ध करता रहा लेकिन बादशाह ने उसे मारने की जिद पकड़ ली। उसने दूसरी बार सरदार को आज्ञा दी कि हकीम को मार दो। हकीम कहने लगा आप मुझे निरपराध ही मरवाए डाल रहे हैं, भगवान मेरी हत्या का बदला आप से लेगा।

इतना कह कर मछुवारे ने गागर के दैत्य से कहा कि जो बात दूबाँ और बादशाह गरीक के बीच थी वही मेरे तुम्हारे बीच है, खैर आगे की कहानी सुनो, जब जल्लाद दूबाँ को मारने के लिए उसकी आँखों की पट्टी बाँधने लगा तो बादशाह के दरबारियों ने हकीम को निरपराध समझ कर एक बार फिर बादशाह से उसकी जान न लेने की प्रार्थना की किंतु बादशाह ने उन सब को ऐसी डाँट बताई कि उन्हें कुछ कहने की हिम्मत न रही। हकीम को निश्चय हो गया कि किसी तरह मेरी जान नहीं बच सकती। उसने बादशाह से कहा, 'स्वामी, मुझे इतनी मुहलत तो दें कि मैं घर जाकर वसीयत लिख आऊँ। मैं अपनी पुस्तकें किसी सुपात्र को देना चाहता हूँ। लेकिन उनमें से एक पुस्तक आपके अपने पुस्तकालय में रखने योग्य है।'

बादशाह ने कहा, 'ऐसी कौन सी पुस्तक तेरे पास है जो मेरे लायक हो? क्या है उस पुस्तक में? दूबाँ ने कहा, 'उसमें बड़ी अद्भुत और काम की बातें हैं। उनमें से एक बात यह है कि मेरे सिर के काटे जाने के बाद आप पुस्तक के छठे पन्ने के बाएँ पृष्ठ की तीसरी पंक्ति को पढ़कर आप जो भी प्रश्न करेंगे उसका उत्तर मेरा कटा हुआ सिर देगा।' बादशाह को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोच विचार कर आज्ञा दी कि हकीम को पहरे में उसके घर ले जाओ। बादशाह की आज्ञा के अनुसार सिपाही हकीम को उसके घर ले गए। हकीम ने एक दिन में अपना काम काज समेट लिया। दूसरे दिन जब उसे बादशाह के सामने ले जाया गया तो उसके हाथों में एक मोटी सी पुस्तक थी जो एक कपड़े मे लिपटी थी।

हकीम ने बादशाह से कहा, 'मेरे कटे हुए सर को एक सोने के थाल में उस पुस्तक में ऊपर लिपटे कपड़े पर रखना तो खून बहना बंद हो जाएगा। इस के बाद मेरी बताई हुई पंक्ति पढ़कर जो भी आप पूछेंगे वह मेरा कटा हुआ सिर बता देगा। लेकिन मैं फिर आपसे निवेदन करता हूँ कि मैं निरपराध हूँ। आप मुझ पर दया करें और मेरे वध का आदेश वापस ले लें। बादशाह ने कहा, नहीं, अब मैं जो कुछ सुनना होगा तेरे कटे हुए सिर ही से सुनूँगा। तेरे रोने पीटने का कोई लाभ नहीं है।'

यह कहकर बादशाह ने पुस्तक अपने हाथ में ले ली और जल्लाद को हकीम के मारने की आज्ञा दी। फिर उसने सोने के थाल पर पुस्तक का आवरण वस्त्र रखवाया और जब सिर से खून बहना बंद हो गया तो उसे और दरबारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब उस कटे सिर ने आँखें खोलकर बादशाह से कहा, 'पुस्तक का छठा पन्ना खोल।' बादशाह ने ऐसा करना चाहा लेकिन पुस्तक के पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुए थे। इसलिए उसने उँगली में थूक लगा कर पन्नों को अलग करना शुरू किया। जब छठा पन्ना खुला तो बादशाह ने बाएँ पृष्ठ की तीसरी पंक्ति पढ़नी चाही किंतु उसने देखा कि उस पृष्ठ पर कुछ नहीं लिखा है। उसने यह बात बताई तो कटे सिर ने कहा, 'आगे के पृष्ठ देख, शायद उनमें लिखा हो।' बादशाह उँगली में थूक लगा-लगाकर पृष्ठों को अलग करने लगा।

वास्तव में हकीम ने पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर विष लगा रखा था। थूक लगी उँगली के बार बार पृष्ठों पर रगड़े जाने और फिर मुँह में जाने पर उन पृष्ठों में लगा विष बादशाह के शरीर में प्रवेश कर गया। बादशाह की हालत खराब होने लगी किंतु उसने कटे सिर से प्रश्नों के उत्तर पाने के शौक में इस पर कुछ ध्यान न दिया। अंततः उसकी दृष्टि भी मंद

पड़ गई और वह राजसिंहासन से नीचे गिर गया। हकीम के सिर ने जब देखा कि विष पूरी तरह चढ़ गया और बादशाह क्षण दो क्षण का मेहमान है तो हँस कर बोला, हे क्रूर अन्यायी तूने देखा कि निर्दोष की हत्या का क्या परिणाम होता है।' यह सुनते ही बादशाह के प्राण निकल गए। इस प्रकार उसे अपने किए का फल मिल गया।

रानी शहरजाद ने शहरयार से कहा कि मछुवारे ने दैत्य को हकीम दूबाँ और बादशाह गरीक की जो कहानी सुनाई थी वह तो खत्म हो गई, अब मैं मछुवारे और दैत्य की कहानी आगे बढ़ाती हूँ।

मछुवारा यह कहानी सुनाकर दैत्य से कहने लगा, 'यदि गरीक बादशाह हकीम दूबाँ की हत्या न करता तो भगवान उसे ऐसा दंड न देता। दैत्य तेरा हाल भी उस बादशाह की तरह है। तू अगर बंधन से छूटकर मेरे मारने की इच्छा न करता तो दुबारा बंधन में न पड़ता। अब मैं तुझ पर दया करके तुझे फिर से स्वतंत्र क्यों करूँ? मैं तो गागर समेत तुझे फिर नदी में डाल रहा हूँ जहाँ तू अनंतकाल तक पड़ा रहेगा।

दैत्य बोला, 'मेरे मित्र, तू ऐसा न कर मैं अब तुझे मारने का इरादा कभी न करूँगा। बुराई के बदले में भी भलाई करनी चाहिए। तू भी मेरे साथ ऐसी ही भलाई कर जैसी इम्मा ने अतीका के साथ की थी।' मछुवारे ने कहा, 'मुझे वह कहानी नहीं मालूम है, तू बता तो मैं सुनूँ।' दैत्य बोला, 'यदि तू यह कहानी सुनना चाहे तो मुझे बंधन मुक्त कर क्योंकि मैं गागर में अच्छी तरह नहीं बोल पाऊँगा। मुझे मुक्त कर दो तो यही नहीं, और भी बहुत सी अच्छी कथाएँ सुनाऊँगा।' मछुवारा बोला, 'मुझे नहीं सुननी तेरी कहानी' दैत्य ने कहा, 'तू मुझे छोड़ दे तो मैं तुझे अति धनी होने का उपाय बताऊँगा।' मछुवारे को कुछ लालच आ गया। वह बोला, 'मुझे तेरी बात का विश्वास तो नहीं है, किंतु अगर तू इस्मे-आजम (महामंत्र) की सौगंध खाकर कहे कि तू मेरे साथ धोखा नहीं करेगा और अपने वचन पर दृढ़ रहेगा तो मैं तुझे छोड़ दूँ।' दैत्य ने ऐसा ही किया।

ज्यों ही मछुवारे ने गागर का ढकना खोला उसमें से धुँआ निकला और फैल गया। कुछ देर में उसने दैत्य का रूप धारण कर लिया। दैत्य ने ठोकर मार कर गागर को नदी में डुबो दिया। मछुवारा यह देखकर बहुत डरा और बोला, 'हे दैत्य तूने यह क्या किया। क्या तू अपने वचन पर स्थिर नहीं रहना चाहता? मैंने तो तेरे साथ वही किया है जो हकीम दूबाँ ने बादशाह गरीक के साथ किया था।' मछुवारे के भयभीत होने पर दैत्य हँस कर बोला, 'तू डर मत मैं अपने वचन पर दृढ़ हूँ। अब तू अपना जाल उठा और मेरे पीछे-पीछे चला आ।

नितांत वे दोनों चले और एक नगर के अंदर से निकल कर एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। फिर वहाँ से उतर कर एक लंबे चौड़े महल में गए। उस महल में एक तालाब दिखाई दिया जिसके चारों ओर चार टीले थे। तालाब के पास पहुँच कर मछुवारे से दैत्य ने कहा, 'तू इस तालाब में जाल डाल और मछलियाँ पकड़।' मछुवारा खुश हो गया क्योंकि तालाब में बहुत सी मछलियाँ थीं। उसने तालाब में जाल डाल कर खींचा तो उसमें चार मछलियाँ आईं जो चार रंग की थीं - सफेद, लाल, पीली और काली।

दैत्य ने कहा, 'तू इन मछलियों को लेकर यहाँ के बादशाह के पास जा। वह तुझे इतना धन देगा जो तूने कभी देखा भी नहीं होगा। किंतु एक बात का ध्यान रखना। तालाब में एक दिन में एक ही बार जाल डालना।' यह कहकर दैत्य ने जमीन में जोर से ठोकर मारी। जमीन फट गई और दैत्य उसमें समा गया। दैत्य के उस गढ़े में समाने के बाद धरती फिर बराबर हो गई जैसे उसमें कभी गढ़ा हुआ ही न हो। मछुवारा उन चारों मछलियों को बादशाह के महल में ले गया।

शहरजाद ने शहरयार से कहा कि उस बादशाह को उन मछलियों को देखकर जितनी प्रसन्नता हुई उसे वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है। उसने अपने मंत्री से कहा कि ये मछलियाँ उस बावर्चिन के पास ले जाओ जो यूनान के राजा ने मुझे भेंट स्वरूप दी है। सिर्फ वही ऐसी होशियार है जो इन सुंदर मछलियों को भली भाँति पका सकती है। मंत्री मछलियाँ बावर्चिन के पास ले गया। बादशाह ने मछुवारे को चार सौ मोहर इनाम में दे डालीं।

शहरजाद शहरयार से बोली कि अब उस बावर्चिन का हाल सुनिए कि उस पर क्या बीती। बावर्चिन ने मछलियों के टुकड़े करके उन्हें धो-धाकर गर्म तेल में भुनने के लिए डाला। जब टुकड़े एक ओर भुनकर लाल हो गए तो उसने दूसरी ओर भुनने के लिए उन्हें पलटा। उस समय उसने जो कुछ देखा उससे उसकी आँखें फट गईं। उसने देखा कि रसोई घर की दीवार फट गई। उसमें से एक अति सुंदर स्त्री बड़े ठाट-बाट से भड़कीले कपड़े पहने बाहर निकली। उसके शरीर पर भाँति-भाँति के रत्न आभूषण सज रहे थे जैसे मिश्र देश की रानियों के होते हैं। उसके कानों में मूल्यवान बाले, गले में बड़े-बड़े मोतियों की माला और बाँहों में सोने के बाजूबंद थे जिनमें लाल जड़े हुए थे। इनके अलावा भी वह बहुत से मूल्यवान गहने पहने हुए थी।

स्त्री बाहर आकर अपने हाथ में पकड़ी हुई एक मूल्यवान छड़ी उठाकर उस कड़ाही के पास आ खड़ी हुई जिसमें मछलियाँ भुन रही थीं। उसने एक मछली पर छड़ी मारी और बोली, 'ओ मछली, ओ मछली, क्या तू अपनी प्रतिज्ञा पर कायम है।' मछली में कोई हरकत न हुई स्त्री ने फिर छड़ी और अपना प्रश्न दोहराया। इस पर चारों मछलियाँ उठ खड़ी हो गईं और बोलीं, 'यह सच्ची बात है कि तुम हमें मानोगी तो हम तुम्हें मानेंगे और अगर तुम हमारा ॠण वापस करोगी तो हम तुम्हारा ॠण वापस कर देंगे।' यह सुनते ही उस स्त्री ने कड़ाही को जिसमें मछलियाँ भुन नही थीं। जमीन पर उलट दिया और स्वयं दीवार में समा गई और दीवार जुड़ कर पहले की तरह हो गई।

बावर्चिन इस कांड को देखकर सुधबुध खो बैठी। कुछ देर बाद होश में आई तो देखा मछलियाँ चूल्हे के अंदर गिर कर कोयला हो चुकी हैं। वह अत्यंत दुखी होकर रोने लगी। वह सोच रही थी कि मैंने तो यह सारा व्यापार अपनी आँखों से देखा है लेकिन इस पर बादशाह को कैसे विश्वास आएगा। वह इसी चिंता में बैठी थी कि मंत्री ने आकर पूछा कि मछलियाँ पक चुकीं या नहीं। बावर्चिन ने मंत्री को सारा हाल बताया मंत्री को इस कहानी पर विश्वास तो न हुआ लेकिन उसने बावर्चिन की शिकायत करना ठीक न

समझा। उसने मछलियों के खराब होने का कोई बहाना बादशाह से बना दिया और मछुवारे को बुला कर कहा कि वैसी ही चार मछलियाँ और ले आओ। मछुवारे ने दैत्य से किया हुआ वादा तो उसे न बताया लेकिन कोई और मजबूरी बता दी कि आज मछलियाँ क्यों नहीं ला सकता।

दूसरे दिन मछुवारा फिर उस तालाब पर गया और उसी प्रकार की चार रंगों वाली मछलियाँ उसके जाल में फँसीं। मछलियाँ लेकर वह मंत्री के पास पहुँचा। मंत्री ने उसे कुछ इनाम दिया और बावर्चिन के पास मछलियाँ लाकर कहा कि इन्हें मेरे सामने पकाओ। बावर्चिन ने पहले दिन की तरह मछलियाँ काट और धो कर गर्म तेल में डालीं और जब उसने उन्हें कड़ाही में पलटा तो दीवार फट गई और वही स्त्री हाथ में छड़ी लेकर दीवार के अंदर से निकली और छड़ी से एक मछली को छूकर पहले दिन वाली बात पूछी। उन चारों मछलियों ने जुड़कर सिर उठाकर और पूँछ पर खड़े होकर वही उत्तर दिया। स्त्री ने फिर कड़ाही उलट दी और स्वयं दीवार में समा गई और दीवार फिर जुड़कर पहले जैसी हो गई।

मंत्री यह सब बातें देख कर स्तंभित हो गया। अब उसने यह बात बादशाह को बता देना ही ठीक समझा। जब उसने बादशाह को यह कांड बताया तो उसे भी घोर आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि मैं स्वयं अपनी आँखों यह सब देखना चाहता हूँ। उसने फिर मछुवारे से कहा कि ऐसी ही चार मछलियाँ और ले आओ। मछुवारा बोला अब मैं तीन दिन से पहले मछलियाँ लाने में असमर्थ हूँ। चूँकि सारा व्यापार अद्भुत था इसलिए बादशाह ने मछुवारे पर कुछ जोर नहीं डाला। तीन दिन बाद उसने फिर वैसी ही चार मछलियाँ लाकर बादशाह को दीं। बादशाह ने खुश हो कर उसे चार सौ अशर्फियाँ और दीं।

अब बादशाह ने मंत्री से कहा कि बावर्चिन को हटा दो और तुम खुद मेरे सामने इन मछलियों को पकाओ। मंत्री ने बावर्ची खाना अंदर से बंद करके मछलियाँ पकाना शुरू किया। जब एक ओर लाल होने पर मछलियों को पलटा गया तो एक बार फिर दीवार फट गई। किंतु इस बार उसमें से सुंदरी नहीं निकली बल्कि गुलामों जैसा कपड़ा पहने हाथ में एक हरी-भरी छड़ी लिए एक हब्शी निकला। हब्शी ने बड़े कठोर और भयावह स्वर में पूछा, 'मछलियों, मछलियों क्या तुम अपने वचन पर अब भी स्थिर हो? मछलियाँ अपने सरों को उठा कर बोली, 'हम उसी बात पर स्थिर हैं।' हब्शी ने कड़ाही उलट दी और स्वयं दीवार के छेद में घुस गया और दीवार पहले की तरह जुड़ गई।

बादशाह ने मंत्री से कहा, 'यह अद्भुत घटना मैंने स्वयं देखी है वरना मैं इस पर विश्वास न करता। यह मछलियाँ भी साधारण नहीं है। मैं इस रहस्य को जानने के लिए बड़ा उत्सुक हूँ।' यह कहकर उसने मछुवारे को फिर बुलवाया और उससे पूछा कि तू यह रंगीन मछलियाँ कहाँ से लाया था। मछुवारे ने बताया कि मैंने उसे उस तालाब से पकड़ा है जिसके चारों ओर चार टीले हैं। बादशाह ने मंत्री से पूछा तुम्हें मालूम है कि वह तालाब कहाँ है? मंत्री ने कहा मैं साठ वर्ष से उस ओर शिकार खेलने जाता रहा हूँ लेकिन मैंने ऐसा तालाब न देखा न सुना। अब बादशाह ने मछुवारे से पूछा कि वह तालाब कितनी दूर

है और क्या तू मुझे वहाँ ले जा सकता है? मछुवारे ने कहा वह तालाब यहाँ से तीन घड़ी के रास्ते पर है और मैं आपको जरूर वहाँ ले जाऊँगा।

उस समय दिन कम ही रह गया था किंतु बादशाह को ऐसी उत्सुकता थी कि उसने अपने दरबारियों और रक्षकों को शीघ्र तैयार होने की आज्ञा दी। फिर वह मछुवारे के पीछे-पीछे हो लिया और उसके बताए हुए पहाड़ पर चढ़ गया। जब पहाड़ के दूसरी ओर उतरा तो वहाँ बड़ा विशाल वन दिखाई दिया। यह वन पहले किसी ने नहीं देखा था। फिर बादशाह और उसके साथियों ने वह वन भी पार किया और सब लोग उस तालाब के किनारे पहुँच गए जिसके चारों ओर चार टीले थे। उस तालाब का पानी अत्यंत निर्मल था और जिन चार रंगों की मछलियाँ उसे मछुवारे से मिलती थीं वैसी अनगिनत मछलियाँ उस तालाब में तैर रही थीं। बादशाह का आश्चर्य और बढ़ा। उसने अपने दरबारियों और सरदारों से पूछा कि तुम लोगों ने पहले भी इस तालाब को देखा है या नहीं। उन सब ने निवेदन किया कि हम लोगों ने इस तालाब को देखना कैसा, इसके बारे में सुना तक नहीं।

बादशाह ने कहा कि जब तक मैं इस तालाब और इस की रंगीन मछलियों का रहस्य अच्छी तरह समझ नहीं लूँगा यहाँ से नहीं जाऊँगा, तुम सब लोग भी यहाँ डेरा डालो। उसकी आज्ञानुसार दरबारियों और रक्षकों के डेरे तालाब के चारों ओर पड़ गए।

रात होने पर उसने मंत्री को अपने डेरे में बुलाया और कहा, 'मैं इस भेद को जानने के लिए अति उत्सुक हूँ कि उस बावर्चीखाने में हब्शी कैसे आया और उसने मछलियों से कैसे बात की, और यह भी जानना चाहता हूँ कि यह तालाब जिसे किसी ने नहीं देखा था अचानक कहाँ से आ गया। मैं अपने कौतूहल को दबा नहीं पा रहा हूँ, अतएव मैंने सोचा कि मैं अकेले ही इस रहस्य का उद्घाटन करूँ। मैं अकेला जा रहा हूँ। तुम यहीं रहो। प्रातःकाल जब दरबारी यहाँ पर दरबार के लिए आएँ तो उनसे कह दो कि बादशाह कुछ बीमार हो गए हैं और कुछ दिन यहीं पर शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं। यह कह कर सारे दरबारियों और रक्षकों को राजधानी वापस भेज देना और तुम इस डेरे में अकेले ही उस समय तक प्रतीक्षा करना जब तक मैं लौट न आऊँ।'

मंत्री ने बादशाह को बहुत समझाया 'महाराज आप यह न करें। इस काम में बड़ा खतरा है। यह भी संभव है कि इतना सब करने के बाद भी आपको कोई रहस्य ज्ञान न हो पाए। फिर बेकार में क्यों इतना कष्ट उठा रहे हैं और इतना खतरा मोल ले रहे हैं।' बादशाह पर उसके समझाने-बुझाने का कोई असर नहीं हुआ। उसने बादशाही पोशाक उतारी और एक साधारण सैनिक के वस्त्र पहन लिए। जब सब लोग गहरी नींद सोए हुए थे तब वह तलवार लेकर अपने खेमे से निकला और एक ओर चलता हुआ एक पहाड़ पर चढ़ गया। कुछ ही देर में वह उसकी चोटी पर पहुँच कर दूसरी ओर उतर गया। आगे उसे एक गहन वन दिखाई दिया। वह उसी के अंदर चलने लगा। कुछ दूर जाने पर पूरा सवेरा हो गया और उसे दूर जाने पर एक सुंदर प्रासाद दिखाई दिया। वह यह भवन देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे आशा बँधी कि उसे इस जगह तालाब के रहस्य का पता चलेगा।

भवन के निकट पहुँच कर उसने देखा कि वह बड़ा विशाल है और काले पत्थरों का बना है। उसकी दीवारों पर साफ किए हुए इस्पाती पत्तर जड़े थे जो दर्पण की भाँति चमकते थे। बादशाह को विश्वास हो गया कि यहाँ उसे मनोवांछित सूचना मिलेगी। वह बहुत देर तक खड़ा हुआ भवन की शोभा निहारता रहा फिर उसके पास चला गया। वह देख रहा था कि भवन का द्वार खुला है, फिर भी शिष्टता के नाते उसने ताली बजाई कि उसकी आवाज सुनकर कोई अंदर से आ जाए। जब कोई न आया तो उसने साँकल को खड़खड़ाया, यह सोच कर कि शायद उसकी ताली की आवाज अंदर तक नहीं पहुँची होगी।

साँकल खड़खड़ाने पर भी जब कोई नहीं निकला तो बादशाह को क्रोध आया कि अजीब घर है जहाँ बुलाने पर भी कोई आकर नहीं पूछता। वह अंदर चला गया और ड्योढ़ी में पहुँच कर जोर से पुकारा कि क्या इस भवन के अंदर कोई मनुष्य है जो एक अतिथि के रहने के लिए थोड़ा स्थान दे। फिर भी उसे कोई उत्तर न मिला तो उसका आश्चर्य और बढ़ा। ड्योढ़ी से आगे बढ़ कर वह घर में घुसा तो देखा कि अंदर से और भी लंबा चौड़ा मकान है किंतु उसके अंदर कोई नहीं है। अब वह एक लंबे चौड़े आँगन को पार करके एक दालान में पहुँचा। उसमें रेशमी कालीन बिछा हुआ था। अंदर का मकान और भी सजा हुआ था। दरवाजों पर जड़ाऊ मखमल के परदे पड़े थे जिनमें सुनहरे और रुपहले फूल बूटे कढ़े थे। अंदर एक बारहदरी थी जिसमें एक हौज था जिसके चारों ओर सोने से चार शेर बने हुए थे। शेरों के मुँह से पानी के फव्वारे छूटते थे और जब उनका पानी नीचे संगमरमर के फर्श पर गिरता था तो मालूम होता था लाखों हीरे-जवाहरात उछल रहे हैं। हौज के बीच में एक फव्वारा था जिस पर अरबी अक्षरों में कुछ खुदा हुआ था और उसका पानी उछल कर बारहदरी की छत को छूता था।

इसके अलावा उस विशाल भवन में तीन बाग थे जिनमें बड़े सुघड़पन के साथ भाँति-भाँति के सुगंधित फूलों और उत्तम फलों के पेड़ लगे थे। बागों में हर चीज ऐसी तरतीब से लगी थी कि उन्हें देख कर दुखी मनुष्य भी आनंद में डूब जाए। वृक्षों पर नाना प्रकार के सुंदर पक्षी कलरव कर रहे थे।

वे पक्षी उन्हीं वृक्षों पर रहते थे, उड़कर नहीं जा सकते थे क्योंकि वृक्षों के ऊपर जाल पड़े हुए थे। बादशाह एक कमरे से दूसरे कमरे और एक बाग से दूसरे बाग में घूम-घूमकर हर वस्तु से आनंदित होता रहा। घूमते-घूमते वह थक गया और एक मकान में बैठ कर आराम करने लगा और सामने वाले बाग की शोभा देखने लगा।

इतने में उसे एक कातर वाणी सुनाई दी जैसे कोई बड़े दुख में कराह रहा हो। उसने कान धर कर सुना तो मालूम हुआ कि कोई मनुष्य रो-रो कर अपनी करुण कथा कह रहा है और अपने दुर्भाग्य को कोस रहा है। बादशाह ने उस कमरे का परदा उठाया जिसमें से यह आवाज आ रही थी। उसने देखा कि एक नवयुवक सिंहासन जैसी किसी ऊँची चीज पर राजसी वस्त्र पहने बैठा है और करुण स्वर में विलाप कर रहा है। बादशाह ने उसके निकट जाकर सलाम किया तो युवक बोला, 'मुझे क्षमा कीजिए मैं उठकर आपका स्वागत करने में असमर्थ हूँ इसीलिए मैं आपके पास न आ सका। बादशाह ने कहा, 'मैं आपके शीलवान

व्यवहार से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। वास्तव में कोई ऐसा अपरिहार्य कारण होगा कि आप उठ न सके। किंतु आपके दुख को देख कर मुझे अति क्लेश हुआ है।

आप मुझे बताएँ कि मैं आपका कष्ट किस प्रकार दूर कर सकता हूँ। कृपया मुझे अपनी कठिनाई बताने में तनिक भी न हिचकें। कृपया यह बताएँ कि आप यहाँ इस मजबूरी की हालत में कैसे पड़े हैं। यह भी बताएँ कि यह भव्य प्रासाद किसका है और ऐसा निर्जन क्यों है। साथ ही यह भी बताएँ - क्योंकि मैं यही जानने के लिए निकला हूँ - कि पास के तालाब का रहस्य क्या है और उसकी मछलियाँ कौन हैं।'

जवान आदमी यह सुनकर फिर रोने लगा और बोला, 'मेरा हाल सुनने के पहले देख लीजिए। यह कह कर उसने अपना कपड़ा उठाया तो बादशाह ने देखा कि वह नाभि के ऊपर तो जीवित मनुष्य है और नीचे काले पत्थर का बना हुआ है। उसकी आँखें फटी रह गई और वह बोला, 'मुझे तो वैसे यहाँ की प्रत्येक वस्तु देख कर आश्चर्य हो रहा था किंतु आपका यह हाल देख कर मेरा आश्चर्य और उत्सुकता बहुत बढ़ गई है। भगवान के लिए अपना ब्योरेवार हाल कहिए। मुझे विश्वास हो रहा है कि तालाब की रंग-बिरंगी मछलियों के रहस्य का भी आपसे संबंध है। आप मुझे अपनी व्यथा-कथा शीघ्र कहिए क्योंकि दूसरे को सुनाने से आदमी का कुछ दुख तो दूर होता ही है।' जवान आदमी ने कहा कि मुझे अपनी दशा के वर्णन से भी कष्ट होता है किंतु आपका आदेश है इसलिए कहता हूँ।

किस्सा काले द्वीपों के बादशाह का

उस जवान ने अपना वृत्तांत कहना आरंभ किया। उसने कहा 'मेरे पिता का नाम महमूद शाह था। वह काले द्वीपों का अधिपति था, वे काले द्वीप चार विख्यात पर्वत हैं। उसकी राजधानी उसी स्थान पर थी जहाँ वह रंगीन मछलियों वाला तालाब है। मैं आपको ब्योरेवार सारी कहानी बता रहा हूँ जिससे आपको सारा हाल मालूम हो जाएगा। जब मेरा पिता सत्तर वर्ष का हुआ तो उसका देहांत हो गया और उसकी जगह मैं राजसिंहासन पर बैठा। मैंने अपने चाचा की बेटी के साथ विवाह किया। मैं उसे बहुत चाहता था और वह भी मुझे बहुत चाहती थी।

'पाँच वर्ष तक हम लोग सुखपूर्वक रहे फिर मुझे आभास हुआ कि उसका मेरे प्रति पहले जैसा प्रेम नहीं है। एक दिन दोपहर के भोजन के पश्चात वह स्नानगृह को गई और मैं अपने शयन कक्ष में लेटा रहा। दो दासियाँ जो रानी को पंखा झला करती थीं मेरे सिरहाने-पैंतानें बैठ गईं और मुझे आराम देने के लिए पंखा झलने लगीं। वे मुझे सोता जान कर धीमे-धीमे बातचीत करने लगीं। मैं सोया नहीं था किंतु उनकी बातें सुनने के लिए सोने का बहाना करने लगा। एक दासी बोली कि हमारी रानी बड़ी दुष्ट है कि ऐसे सुंदर और सुशील पति को प्यार नहीं करती। दूसरी बोली तू ठीक कहती है; रात में बादशाह को अकेला सोता छोड़ कर रानी न जाने कहाँ जाती हैं और बेचारे बादशाह को कुछ पता नहीं चलता। पहली ने कहा यह बेचारा जाने भी कैसे, रानी रोज रात को उसके शर्बत में कोई नशा मिलाकर उसे दे देती है, यह नशे से बिल्कुल बेहोश हो जाता है और रानी जहाँ चाहती है चली जाती है और प्रातः काल के कुछ पहले आकर इसे होश में लाने की सुगंधि सुँघा देती है।

'मेरे बुजुर्ग दोस्त, मुझे यह सुनकर इतना दुख हुआ कि उसे वर्णन करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। उस समय मैंने अपने क्रोध को सँभालना उचित समझा और, कुछ देर में इस तरह अँगड़ाइयाँ लेता हुआ उठा जैसे सचमुच सो रहा था। कुछ देर में रानी भी स्नान करके वापस आ गई। उस रात को भोजन के उपरांत मैं शयन करने के लिए लेटा तो रानी हमेशा की तरह मेरे लिए शर्बत का प्याला लाई। मैंने प्याला ले लिया और उसकी आँख बचा कर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खाली प्याला उसके हाथ में ऐसे दे दिया जैसे कि मैंने पूरा शर्बत पी लिया है। फिर हम दोनों पलँग पर लेट गए। रानी ने मुझे सोता समझ कर पलँग से उठकर एक मंत्र जोर से पढ़ा और मेरी तरफ मुँह फेर कर कहा कि तू ऐसा सो कि कभी न जागे।

'फिर वह भड़कीले वस्त्र पहन कर कमरे से निकल गई। मैं भी पलँग से उठा और तलवार लेकर उसका पीछा करने लगा। वह मेरे केवल थोड़ा ही आगे थी और उसकी पग ध्वनि मुझे सुनाई दे रही थी। लेकिन मैं ऐसे धीरे-धीरे पाँव रख कर उसके पीछे-पीछे चल रहा था कि उसे मेरे आने का कोई आभास न मिले। वह कई द्वारों से होकर निकली। उन सभी में ताला लगे थे किंतु उसकी मंत्र-शक्ति से सभी ताले खुलते जा रहे थे। आखिरी दरवाजे से

निकलकर जब वह बाग में गई तो मैं दरवाजे के पीछे छुप कर देखने लगा कि क्या करती है। वह बाग से आगे बढ़कर एक छोटे से वन के अंदर चली गई जो चारों ओर झाड़ियों से घिरा हुआ था। मैं भी एक अन्य मार्ग से होकर उस वन के अंदर चला गया और इधर-उधर आँखें घुमाकर उसे ढूँढ़ने लगा।

'कुछ देर में मैंने देखा कि वह एक पुरुष के साथ, जो हब्शी गुलाम लग रहा था, हाथ में हाथ दिए टहल रही है और शिकायत कर रही है कि मैं तो तुम्हें प्राणप्रण से प्रेम करती हूँ और रात-दिन तुम्हारे ही ध्यान में मग्न रहती हूँ और तुम्हारा यह हाल है कि मुझसे सीधे मुँह बात नहीं करते, हमेशा मुझे बुरा-भला कहा करते हो। आखिर तुम क्या चाहते हो? क्या तुम मेरे प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हो? तुम मेरी शक्ति जानते हो। मेरे अंदर इतनी शक्ति है कि कहो तो सूर्योदय के पहले ही इन सारे महलों को भूमिगत कर दूँ और यह सारा ठाट-बाट बिल्कुल वीरान कर दूँ और यहाँ भेड़िये और उल्लुओं के अलावा कोई नहीं दिखाई दे और जो पत्थर यहाँ महलों में लगे हैं वह काफ पर्वत पर वापस उड़कर चले जाएँ। इतनी शक्ति रखते हुए भी मैं प्रेम के कारण तुम्हारे पैरों पर गिरी रहती हूँ और तुम्हें मेरी परवा ही नहीं।

'रानी यह बातें करती हुई अपने हब्शी प्रेमी के हाथ में हाथ दिए टहलती आ रही थी। जब वे लोग उस झाड़ी के पास पहुँचे जहाँ मैं छुपा हुआ था तो मैंने बाहर निकल कर हब्शी की गर्दन पर पूरे जोर से तलवार का वार किया। वह लड़खड़ा कर गिर गया। मैंने समझा कि वह मर गया और मैं अँधेरे में वहाँ से खिसक गया। मैंने रानी को छोड़ दिया क्योंकि वह मुझे प्यारी भी थी और मेरे चचा की बेटी भी। रानी अपने प्रेमी को गिरता देख कर विह्वल हो गई। उसने मंत्र बल से अपने प्रेमी को स्वस्थ करना चाहा किंतु वह केवल उसे मरने से बचा सकी। उस हब्शी की हालत ऐसी हो गई थी कि उसे न जीवित कहा जा सकता था न मृत। मैं धीरे-धीरे महल को लौटा। लौटते समय भी मैंने सुना कि रानी अपने प्रेमी के घायल होने पर करुण क्रंदन कर रही है। मैं उसे उसी तरह रोता-पीटता छोड़कर अपने शयन कक्ष में आया और पलँग पर लेट कर सो रहा।

'प्रातःकाल जागने पर मैंने रानी को फिर अपनी बगल में सोता पाया। यह स्पष्ट था कि वह वास्तव में सो नहीं रही थी केवल सोने का बहाना कर रही थी। मैं उसे यूँ ही छोड़ कर उठ खड़ा हुआ मैं अपने नित्य कर्मों को पूरा करके राजसी वस्त्र पहन कर अपने दरबार को चला गया। जब दिन भर राजकाज निबटाने के बाद मैं अपने महल में आया कि रानी ने शोक संताप सूचक काले वस्त्र पहन रखे हैं और बाल बिखराए हुए हैं और उन्हें नोच रही है। मैंने उससे पूछा कि यह तुम कैसा व्यवहार कर रही हो, यह संताप प्रदर्शन किस कारण है। वह बोली बादशाह सलामत, मुझे क्षमा करें मैंने आज तीन शोक समाचार पाए हैं इसीलिए काले कपड़े पहन मातम कर रही हूँ। मैंने पूछा कि वे कौन से समाचार हैं तो उसने बताया कि मेरी माता का देहांत हो गया, मेरे पिताजी एक युद्ध में मारे गए और मेरा भाई ऊँचाई से गिर कर मर गया। मैंने कहा समाचार बुरे हैं लेकिन तुम्हारे इस प्रकार मातम करने के लायक नहीं हैं, फिर भी वे तुम्हारे संबंधी थे और तुम्हें उनकी मृत्यु का शोक होना ही चाहिए।

'इसके बाद वह अपने कमरे में चली गई और मुझसे अलग होकर उसी प्रकार रोती-पीटती रही मैं उसके दुख का कारण जानता था इसलिए मैंने उसे समझाने बुझाने की चेष्ट भी न की। एक वर्ष तक यही हाल रहा। फिर उसने कहा कि मुझसे दुख नहीं सँभलता, मैं एक मकबरा बनवाकर उसमें रात दिन रहना चाहती हूँ। मैंने उसे ऐसा करने की भी अनुमति दे दी। उसने एक बड़ा भारी गुंबद वाली मकबरे जैसी इमारत बनवाई जो यहाँ से दिखाई देती है और उसका नाम शोकागार रखा। जब वह गृह बन चुका तो उसने अपने घायल प्रेमी हब्शी को वहाँ लाकर रखा और स्वयं भी वहाँ रहने लगी। वह दिन में उसे एक बार कोई औषधि खिलाती थी और जादू-मंत्र भी करती थी। फिर भी उसे ऐसा प्राणघातक घाव लगा था कि औषधि और मंत्रों के बल पर उसके केवल प्राण अटके हुए थे। वह न चल पाता था, न बोल पाता था, सिर्फ रानी की ओर टुक-टुक देखा करता था।

'रानी के प्रेम को जीवित रखने के लिए इतना ही यथेष्ट था। वह उससे घंटों प्रेम की बातें करके अपने चित्त को सांत्वना दिया करती थी। दिन में दो बार उसके समीप जाती थी और देर तक उसके पास बैठी रहती थी। मैं जानता था कि वह क्या करती है फिर भी सारे कार्य कलाप ऐसे साधारण रूप से करता रहा जैसे मुझे कोई बात विदित नहीं है। किंतु एक दिन मैं अपनी उत्सुकता नहीं रोक सका और मैंने जानना चाहा कि वह अपने प्रेमी के साथ क्या करती है। मैं उस मकबरे में ऐसी जगह छुप कर बैठ गया जहाँ से रानी और उसके प्रेमी की सारी बातें दिखाई-सुनाई दें लेकिन उनमें से कोई मुझे न देख सके।

'रानी अपने प्रेमी से कहने लगी कि इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि मैं तुम्हें ऐसी विवशता की अवस्था में देखती हूँ। तुम सच मानो, तुम्हारी दशा देखकर मुझे इतना कष्ट होता है कि जितना स्वयं तुम्हें भी नहीं होता होगा। मेरे प्राण, मेरे जीवनधार, मैं तुम्हारे सामने घंटों बैठी बातें करती हूँ और तुम मेरी एक बात का भी उत्तर नहीं देते। अगर तुम मुझसे एक बात भी करो तो मेरे चित्त को बड़ा धैर्य मिले बल्कि मुझे बड़ी प्रसन्नता हो। खैर, मैं तो तुम्हें देखकर ही धैर्य धारण किए रहती हूँ।

'रानी इसी प्रकार अपने प्रेमी के सम्मुख बैठ कर प्रलाप करती रही। मुझ मूर्ख से अपने रानी की यह दशा न देखी गई और उसका प्रेम मेरे हृदय में फिर उमड़ आया। मैं चुपचाप अपने महल में आ गया। कुछ देर में वह किसी काम से महल में आई तो मैंने कहा कि अब तुम ने अपने सगे संबंधियों के प्रति बहुत शोक व्यक्त कर लिया, अब साधारण रूप से रानी जैसा जीवन बिताओ। वह रोकर कहने लगी कि बादशाह सलामत मुझसे यह करने के लिए न कहें। मैं उसे जितना समझाता-बुझाता था उतना ही उसका रोना-पीटना बढ़ता जाता था। मैंने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया।

'वह इसी अवस्था में दो वर्ष और रही। मैं एक बार फिर शोकागार में गया कि रानी और हब्शी का हाल देखूँ। मैं फिर छुप कर बैठ गया और सुनने लगा। रानी कह रही थी कि प्यारे, अब तो दो वर्ष बीत गए हैं और तीसरा वर्ष लग गया है तुमने मुझसे एक बात भी नहीं की। मेरे रोने-चिल्लाने और विलाप करने का तुम्हारे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं होता। जान पड़ता है कि तुम मुझे बात करने के योग्य नहीं समझते। इसीलिए तुम अब

मुझे देखकर आँखें भी बंद कर लेते हो। मेरे प्राणप्रिय, एक बार आँखें खोल कर मुझे देखो तो। मैं तुम्हारे प्रेम में कितनी विह्वल हो रही हूँ।

'रानी की यह बातें सुनकर मेरे तन बदन में आग लग गई। मैं उस मकबरे से बाहर निकल आया और गुंबद की तरफ मुँह करके कहा ओ गुंबद तू इस स्त्री और उसे प्रेमी को जो मनुष्य रूपी राक्षस है निगल क्यों नहीं जाता। मेरी आवाज सुनकर मेरी रानी जो अपने हब्शी प्रेमी के पास बैठी थी क्रोधांध हो कर निकल आई और मेरे समीप आकर बोली अभागे दुष्ट तेरे कारण ही मुझे वर्षों से शोक ने जकड़ रखा है, तेरे ही कारण मेरे प्रिय की ऐसी दयनीय दशा हो गई है और वह इतनी लंबी अवधि से घायल पड़ा है। मैंने कहा हाँ मैंने ही इस कुकर्मी राक्षस को मारा है, यह इसी योग्य था और तू भी इस योग्य नहीं कि जीवित रहे क्योंकि तूने मेरी सारी इज्जत मिट्टी में मिला दी है।

'यह कहकर मैंने तलवार खींच ली और चाहा कि रानी की हत्या कर दूँ किंतु उसने कुछ ऐसा जादू किया कि मेरा हाथ उठ ही न सका। फिर उसने धीरे-धीरे कोई मंत्र पढ़ना आरंभ किया जिसे मैं बिल्कुल न समझ पाया। मंत्र पढ़ने के बाद वह बोली अब मेरे मंत्र की शक्ति देख, मैं आज्ञा देती हूँ कि तू कमर से ऊपर जीवित मनुष्य रह और कमर से नीचे पत्थर बन जा। उसके यह कहते ही मैं वैसा ही बन गया जैसा उसने कहा था अर्थात मैं न जीवित लोगों में रहा न मृतकों में। फिर उसने शोकागार से उठवाकर मुझे इस जगह लाकर रख दिया। उसने मेरे नगर को तालाब बना दिया और वहाँ एक भी मनुष्य नहीं रहने दिया। मेरे सभी दरबारी, प्रजाजन मेरे प्रति निष्ठा रखते थे अतएव उसने उन सबको अपने जादू से मछलियों में बदल दिया। इन में जो सफेद रंग की मछलियाँ हैं वे मुसलमान हैं, लाल रंग वाली अग्निपूजक, काली मछलियाँ ईसाई और पीले रंग वाली यहूदी हैं।

'मैं जिन चार काले द्वीपों का नरेश था उन्हें उस स्त्री ने चार पहाड़ियाँ बनाकर तालाब के चारों ओर स्थापित कर दिया। मेरे देश को उजाड़ और मुझे आधा पत्थर का बनाकर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ। वह यहाँ रोज आती है और मेरे कंधों और पीठ पर सौ कोड़े इतने जोर से मारती है कि हर चोट पर मेरे खून छलछला आता है। फिर वह बकरी के बालों की बनी एक खुरदरी काली कमली मेरे कंधों की ओर पीठ पर डालती है और उसके ऊपर सोने की तारकशी वाला भारी लबादा डालती है। यह वस्त्र वह मेरे सम्मान के लिए नहीं बल्कि मुझे पीड़ा पहुँचाने के लिए करती है और मेरा मजाक उड़ाकर कहती है कि दुष्ट तू तो चार-चार द्वीपों का बादशाह है फिर अपने को इस अपमान और दुर्दशा से क्यों नहीं बचाता।'

शहरजाद ने कहानी जारी रखते हुए कहा कि इतना वृत्तांत बताने के बाद काले द्वीपों के बादशाह ने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाए और बोला, 'हे सर्वशक्तिमान परमात्मा, हे समस्त विश्व के सिरजन हार, यदि तेरी प्रसन्नता इसी में है कि मुझ पर इसी प्रकार अन्याय और अत्याचार हुआ करे तो मैं इस बात को भी प्रसन्नता से सहूँगा। मैं हर हालत में तुझे धन्यवाद दूँगा। मुझे तेरी दयालुता और न्याय प्रियता से पूर्ण आशा है कि

तू एक न एक दिन मुझे इस दारुण दुख से अवश्य छुड़ाएगा।

वहाँ आने वाले खोजकर्ता बादशाह ने जब यह सारी कहानी सुनी तो उसे बड़ा दुख हुआ और वह विचार करने लगा कि इस निर्दोष जवाब बादशाह का दुख कैसे दूर किया जाए और उसकी कुलटा रानी को कैसे दंड दिया जाए। उसने उससे पूछा कि तुम्हारी निर्लज्ज रानी कहाँ रहती है और उसका अभागा प्रेमी जिसके पास वह रोज जाती है किस स्थान पर पड़ा हुआ है। जवान बादशाह ने उससे कहा कि मैंने आपको पहले ही बताया था कि वह उस शोकागार में रखा गया है जिस पर एक गुंबद बना हुआ है। उस शोकागार को एक रास्ता इस कमरे से नीचे होकर भी है जहाँ इस समय हम लोग हैं। वह जादूगरनी कहाँ रहती है यह बात मुझे ज्ञात नहीं है, किंतु प्रति दिवस प्रातः काल वह मेरे पास मुझे दंड देने के लिए आती है और मेरी मारपीट करने के बाद फिर अपने प्रेमी के पास जाकर उसे कोई अरक पिलाती है जिससे वह जीवित बना रहता है।

आगंतुक बादशाह ने कहा कि वास्तव में तुमसे अधिक दया योग्य व्यक्ति नहीं होगा, तुम्हारा जीवन वृत्त तो ऐसा है कि इसे इतिहास में लिख कर अमिट कर दिया जाए। तुम अधिक चिंता न करो। मैं तुम्हारे दुख के निवारण का भरसक प्रयत्न करूँगा। इसके बाद आगंतुक बादशाह उसी कक्ष में सो रहा। क्योंकि रात का समय हो गया था। बेचारा काले द्वीपों का बादशाह उसी प्रकार बैठा रहा और जागता रहा। स्त्री के जादू ने उसे लेटने और सोने के योग्य ही नहीं रखा था।

दूसरे दिन तड़के ही आगंतुक बादशाह गुप्त मार्ग से शोकागार में प्रविष्ट हो गया। शोकागार में सैकड़ों स्वर्ण दीपक जल रहे थे और वह ऐसा सजा हुआ था कि बादशाह को अत्यंत आश्चर्य हुआ। फिर वह उस स्थान पर गया जहाँ घायल अवस्था में रानी का हब्शी प्रेमी पड़ा हुआ था। वहाँ जाकर उसने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि वह अधमरा आदमी तुरंत मर गया। बादशाह ने उसका शव घसीट कर पिछवाड़े बने हुए एक कुएँ में डाल दिया और शोकागार में वापस आकर नंगी तलवार अपने पास छुपाकर उस हब्शी की जगह खुद लेटा रहा ताकि रानी के आने पर उसे मार सके।

थोड़ी देर में जादूगरनी उसी भवन में पहुँची जहाँ काले द्वीपों का बादशाह पड़ा हुआ था। उसने उसे इस बेदर्दी से मारना शुरू किया कि सारी इमारतें उसकी चीख पुकार और आर्तनाद से गूँजने लगीं। वह चिल्ला-चिल्ला कर हाथ रोकने और दया करने की प्रार्थना करता रहा किंतु वह दुष्ट उसे बगैर सौ कोड़े मारे न रही। इसके बाद सदा की भाँति उस पर खुरदरी कमली और उसके उपर जरी का भारी लबादा डाल कर शोकागार में आई और बादशाह के सन्मुख, जिसे वह अपना प्रेमी समझी थी, बैठकर विरह व्यथा कहने लगी।

वह बोली, 'प्रियतम मैं कितनी अभागी हूँ कि तुझे प्राणप्रण से चाहती हूँ और तू है मुझ से तनिक भी प्रेम नहीं करता। मेरा दिन रात चैन हराम है। तू अपने कष्टों का कारण मुझे ही समझा करता है।

यद्यपि मैंने तेरे लिए अपने पति पर कैसा अत्याचार और अन्याय किया है। फिर भी मेरा क्रोध शांत नहीं हुआ है और मैं चाहती हूँ कि उसे और कठोर दंड दूँ क्योंकि उसी अभागे ने तेरी ऐसी दशा की है। लेकिन तू तो मुझसे कुछ कहता ही नहीं, हमेशा होठ सिए रहता है। शायद तू चाहता है कि अपनी चुप्पी से ही मुझे इतना व्यथित कर दे कि मैं तड़प कर मर जाऊँ। भगवान के लिए अधिक नहीं तो एक बात तो मुझसे कर ले कि मेरे दुखी मन को सांत्वना मिले।'

बादशाह ने उनींदे स्वर में कहा, 'लाहौल बला कुव्वत इला बिल्ला वहेल वि अली वल अजीम (सर्वोच्च और महान परमात्मा के अलावा कोई न शक्तिमान है न डरने योग्य) बादशाह ने घृणा पूर्वक यह आयत पढ़ी थी क्योंकि इस्लामी विश्वास के अनुसार इस आयत को पढ़ने से शैतान भाग जाता है; किंतु रानी के लिए कुछ भी सुनना सुखद आश्चर्य था। वह बोली कि प्यारे यह सचमुच तू बोला था कि मुझे कुछ धोखा हुआ है। बादशाह ने हब्शियों के से स्वर में घृणा पूर्वक कहा, 'तुम इस योग्य नहीं हो कि तुम से बात करूँ या तुम्हारे किसी प्रश्न का उत्तर दूँ।' रानी बोली 'प्राण प्रिय, मुझसे ऐसा क्या अपराध हुआ है जो तुम ऐसा कह रहे हो।' बादशाह ने कहा, 'तुम बहुत जिद्दी हो, किसी की नहीं सुनती इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा। अब पूछती हो तो कहता हूँ। तुम्हारे पति के रात दिन चिल्लाने से मेरी नींद हराम हो गई है। अगर उसकी चीख पुकार न होती तो मैं कब का अच्छा हो गया होता और खूब बातचीत कर पाता। लेकिन तूने एक तो उसे आधा पत्थर का बना दिया है और फिर उसे रोज इतना मारा भी करती है। वह कभी सो नहीं पाता और रात दिन रोया और कराहा करता है और मेरी नींद भी नहीं लगने देता। अब तू खुद ही बता क्या तुझसे बोलूँ और क्या बात करूँ।

जादूगरनी ने कहा कि तुम क्या यह चाहते हो कि मैं उसे मारना बंद कर दूँ और उसे पहले जैसी स्थिति में ले आऊँ। अगर तुम्हारी खुशी इसी में है तो मैं अभी ऐसा कर सकती हूँ। हब्शी बने हुए बादशाह ने कहा कि मैं सचमुच यही चाहता हूँ कि तू इसी समय जाकर उसे दुख से पूरी तरह छुड़ा दे ताकि उसकी चीख पुकार से मेरे आराम में विघ्न न पड़े। रानी ने शोकागार के एक कक्ष में जाकर एक प्याले में पानी लेकर उस पर कुछ मंत्र फूँका कि वह उबलने लगा। फिर वह उस कक्ष में गई जहाँ उसका पति था और उस पर वह पानी छिड़क कर बोली, 'यदि परमेश्वर तुझसे अत्यंत अप्रसन्न है और उसने तुझे ऐसा ही पैदा किया है तो इसी सूरत में रह किंतु यदि तेरा स्वाभाविक रूप यह नहीं है तो मेरे जादू से अपना पूर्व रूप प्राप्त कर ले।' रानी के यह कहते ही वह बादशाह अपने असली रूप में आ गया और प्रसन्न होकर उठ खड़ा हुआ। रानी ने कहा कि तू खैरियत चाहता है तो फौरन यहाँ से भाग जा, फिर कभी यहाँ आया तो जान से मार दूँगी। वह बेचारा चुपचाप निकल गया और एक और इमारत में छुप कर देखने लगा कि क्या होता है।

रानी वहाँ से फिर शोकागार में आई और हब्शी बने हुए बादशाह से बोली कि जो तुम चाहते थे वह मैंने कर दिया अब तुम उठ बैठो जिससे मुझे चैन मिले। बादशाह हब्शियों जैसे स्वर में बोला, 'तुमने जो कुछ किया है उससे मुझे आराम तो मिला है लेकिन पूरा आराम नहीं। तुम्हारा अत्याचार अभी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ है और मेरा चैन अभी

पूरा नहीं लौटा है। तुमने सारे नगर को उजाड़ रखा है और उसके निवासियों को मछली बना दिया है। हर रोज आधी रात को सारी मछलियाँ पानी से सिर निकाल निकाल कर हम दोनों को कोसा करती हैं इसी कारण मैं निरोग नहीं हो पाता। तुम पहले शहर और उसके निवासियों को पहले जैसा बना दो फिर मुझसे बात करो। यह करने के बाद तुम अपनी बाँह का सहारा देकर मुझे उठाना।'

रानी इस बात पर भी तुरंत राजी हो गई। वह तालाब के किनारे गई और थोड़ा सा अभिमंत्रित जल उस तालाब पर छिड़क दिया। इससे वे सारी मछलियाँ नर नारी बन गई और तालाब की जगह सड़कों, मकानों और दुकानों से भरा नगर बन गया। बादशाह के साथ आए दरबारी और अंग रक्षक जो उस समय तक वापस अपने नगर नहीं गए थे इस प्रकार अपने को अपने देश से बहुत दूर एक बिल्कुल नए शहर में देखकर अत्यंत आश्चर्यन्वित हुए।

सब कुछ पहले जैसा बना कर वह जादूगरनी फिर शोकागार में गई और हँसी खुशी से चहकते हुए कहने लगी कि प्यारे तुम्हारी इच्छानुसार मैंने सब कुछ पहले जैसा ही कर दिया है ताकि तुम पूर्णतः स्वस्थ और निरोग हो जाओ। अब तुम उठो और मेरे हाथ में हाथ देकर चलो। बादशाह ने हब्शियों के स्वर में कहा कि मेरे पास आओ। वह पास गई। बादशाह बोला और पास आओ। वह उसके बिल्कुल पास आ गई। बादशाह ने उछल कर जादूगरनी की बाँहें जकड़ ली और उसे एक क्षण भी सँभलने के लिए न दिया और उस पर इतने जोर से तलवार चलाई कि उसके दो टुकड़े हो गए। बादशाह ने उसकी लाश भी उसी कुएँ में डाल दी जिसमें हब्शी की लाश फेंकी थी। फिर बाहर निकल कर काले द्वीपों के बादशाह को खोजने लगा। वह भी पास के एक भवन में छुपा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। आगंतुक बादशाह ने उससे कहा अब किसी का डर न करो, मैंने रानी को ठिकाने लगा दिया है।

काले द्वीपों के बादशाह ने सविनय उसका आभार प्रकट किया और पूछा अब आप का इरादा क्या अपने नगर को जाने का है। उसने जवाब दिया कि नगर ही जाऊँगा लेकिन तुम अभी हमारे साथ चलो, हमारे महल में कुछ दिन भोजन और आराम करो, फिर अपने काले द्वीपों को चले जाना।

जवान बादशाह ने कहा क्या आप अपने नगर को यहाँ से निकट समझे हुए हैं। उसने कहा इसमें क्या संदेह है? मैं तो चार पाँच घड़ी के अंदर ही तुम्हारे महल में आ गया था। काले द्वीपों के बादशाह ने कहा, 'आपका देश यहाँ से पूरे एक वर्ष की राह पर है, उस जादूगरनी ने अपने मंत्र बल से मेरे देश को आपके देश के निकट पहुँचा दिया था। अब मेरा देश फिर अपनी जगह पर वापस आ गया है।'

आगंतुक बादशाह को कुछ चिंता हुई। काले द्वीपों के बादशाह ने कहा, 'यह दूरी और निकटता कुछ बात नहीं है। मैं आपके उपकार से जीवन भर उऋण नहीं हो सकता। आगंतुक बादशाह अब भी चकराया हुआ था कि अपने देश से इतनी दूर कैसे पहुँच गया।

काले द्वीपों के बादशाह ने कहा कि आप को इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है, आप तो उस स्त्री की जादू की शक्ति स्वयं ही देख चुके हैं। आगंतुक बादशाह ने कहा कि खैर अगर दोनों देशों में इतनी दूरी है तो तुम मेरे देश न जाना चाहो तो न चलो; लेकिन मेरे कोई पुत्र नहीं है इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हें अपने देश का युवराज भी बना दूँ ताकि मेरे मरणोपरांत मेरे राज को भी तुम सँभालो।

काले द्वीपों के बादशाह ने यह स्वीकार कर लिया और तीन सप्ताह की तैय्यारी के बाद सेना और कोष का प्रबंध करके आगंतुक बादशाह के साथ उसकी राजधानी के लिए उसके साथ रवाना हुआ। उसने सौ ऊँटों पर भेंट की बहुमूल्य वस्तुएँ लदवाई और अपने पचास विश्वस्त सामंतों और भेंट का सामान लेकर वह आगंतुक बादशाह के साथ उसकी राजधानी की ओर रवाना हुआ। जब उस बादशाह की राजधानी कुछ दिन की राह पर रह गई तो हरकारे भेज दिए गए कि बादशाह के पुनरागमन का निवास उसके भृत्यों और नगर निवासियों को दे दें।

जब वह अपने नगर के निकट पहुँचा तो उसके सारे सरदार और दरबारी उसके स्वागत को नगर के बाहर आए और बादशाह की वापसी पर भगवान को धन्यवाद देने के बाद बताया कि राज्य में सब कुशल है। नगर में पहुँचने पर बादशाह का नगर निवासियों ने हार्दिक स्वागत किया।

बादशाह ने पूरा हाल कह कर काले द्वीपों के बादशाह को अपना युवराज बनाने की घोषणा की और दो दिन बाद उसे समारोह पूर्वक युवराज बना दिया और सामंतों, दरबारियों ने युवराज को भेंट दी। कुछ दिन बाद बादशाह और युवराज में मछुवारे को बुलाकर उसे अपार धन दिया क्योंकि उसी के कारण युवराज का कष्ट कटा था।

किस्सा तीन राजकुमारों और पाँच सुंदरियों का

शहरजाद की कहानी रात रहे समाप्त हो गई तो दुनियाजाद ने कहा - बहन, यह कहानी तो बहुत अच्छी थी, कोई और भी कहानी तुम्हें आती है? शहरजाद ने कहा कि आती तो है किंतु बादशाह की अनुमति हो तो कहूँ। बादशाह ने अनुमति दे दी और शहरजाद ने कहना शुरू किया।

खलीफा हारूँ रशीद के राज्य में बगदाद में एक मजदूर रहता था। वह स्वभाव का बड़ा हँसमुख और बातूनी था। एक दिन प्रातःकाल वह बाजार में एक बड़ा टोकरा लिए मजदूरी की आशा में खड़ा था। कुछ देर बाद एक परम सुंदरी स्त्री, जिसके मुँह पर जाली का नकाब पड़ा हुआ था, वहाँ आई और मुस्करा कर मजदूर से कहने लगी कि अपना टोकरा उठा और मेरे साथ चल। मजदूर अच्छी मजदूरी मिलने की आशा और स्त्री के मधुर व्यवहार से प्रसन्न होकर उसके साथ चल दिया। वह इस बात से बहुत ही प्रसन्न हुआ कि सुबह-सुबह ही अच्छा काम मिल गया था। कुछ दूर जाकर स्त्री ने एक मकान के सामने खड़े होकर ताली बजाई। कुछ देर में एक सफेद लंबी दाढ़ी वाले ईसाई ने द्वार खोला। स्त्री ने उसे कुछ रुपए दिए और ईसाई बूढ़े ने उसका आशय समझ कर घर के अंदर से उत्तम मदिरा का एक घड़ा उसे दे दिया। स्त्री ने घड़ा मजदूर के टोकरे में रखवाया और बाजार में आ गई।

बाजार में उसने बहुत-सी वस्तुएँ खरीदीं। इनमें स्वादिष्ट फल यथा सेब, नाशपाती आदि तथा भाँति-भाँति के सुंदर सुगंध वाले फूल, इत्र, स्वादिष्ट अचार, चटनियाँ और मुरब्बे, माँस, सूखे मसाले आदि घूम-घूम कर कई दुकानों से खरीदे। इतनी चीजें उसने लीं कि टोकरे में बिल्कुल जगह न रही। मजदूर कहने लगा, अगर मुझे मालूम होता कि आप इतना सामान खरीदेंगी तो मैं अपने साथ एक घोड़ा बल्कि ऊँट रख लेता।

खैर, मजदूर टोकरा उठाकर स्त्री के साथ चला। काफी दूर जाने के बाद वे दोनों एक विशाल भवन के पास पहुँचे जिसके शिखर बड़े सुंदर बने थे और दरवाजे हाथी दाँत से निर्मित थे। स्त्री ने दरवाजे के आगे खड़े हो कर ताली बजाई। दरवाजा जब तक खुले तब तक मजदूर सोचता रहा कि न मालूम यह स्त्री घर की नौकरानी है या मालकिन, इसके साज-सिंगार से तो यह नहीं मालूम होता कि यह नौकरानी होगी। कुछ ही देर में एक स्त्री ने दरवाजा खोला। मजदूर उसका अनुपम सौंदर्य और मनोहारी भाव देख कर बेसुध-सा होने लगा और सामान से लदा टोकरा उसके सिर से गिरने-गिरने को होने लगा। जो स्त्री उसे बाजार से लाई थी वह कौतुकपूर्वक उसकी बदहवासी का तमाशा देखने लगी लेकिन घर के अंदर से आई हुई स्त्री ने उससे कहा, 'तू खड़ी-खड़ी क्या देख रही है, यह बेचारा सामान के भार से दबा जा रहा है। तू जल्दी से इसे अंदर ले जा और इसका सामान उतरवा।'

मजदूर अंदर गया तो दोनों स्त्रियों ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया और उसे ले कर एक बड़े मकान में आई। इसके खंभे कीमती लकड़ी के बने थे और एक बड़ा कक्ष था जिसके

चारों ओर दालान थे। दालान में एक और बैठने का स्थान था जहाँ पर बहुत-से मूल्यवान नर्म आसन बिछे थे और सुविधा के भाँति-भाँति के मूल्यवान पात्र रखे हुए थे। सब के बीच में चंदन और अगर की लकड़ी का बना एक बड़ा सिंहासन था। उस पर एक बहुत ही मूल्यवान आसन पड़ा था जिसमें चारों ओर मोतियों और माणिकों की झालर लटक रही थी। इसके अलावा उस विशाल कक्ष में एक संगमरमर का बना हौज था जिसमें फव्वारे छूट रहे थे।

मजदूर यद्यपि दूर तक भारी बोझ लेकर चलने के कारण बहुत थक गया तथापि उस कमरे की सामग्री और सजावट देख कर अपना श्रम भूल गया और वह प्रसन्न चित से इस शोभा को देखने लगा। विशेषतः उसे सिंहासन पर बैठी हुई अतीव सुंदर स्त्री ने बहुत आकृष्ट किया। उसे बाद में मालूम हुआ कि सिंहासन पर बैठी स्त्री का नाम जुबैदा है, वह उस घर की मालकिन है। जिस स्त्री ने दरवाजा खोला था उसका नाम साफी था और जो स्त्री बाजार से उस पर सामान लदवाकर लाई थी उसका नाम अमीना था।

जुबैदा ने कहा, 'बीबियो, इस बेचारे मजदूर के सर से सामान तो उतारो। यह बोझ के मारे मरा जा रहा है।' साफी और अमीना ने मिलकर उसके सिर से टोकरा उतरवाया और उसमें से सामान निकालने लगीं। जुबैदा ने उसे इतना पैसा दिया जो उसकी साधारण मजदूरी से कहीं अधिक था। वह आशा से अधिक मजदूरी पाकर खुश तो बहुत हुआ लेकिन उसका मन वहाँ की वस्तुओं में इतना लगा था कि वह वापस न हुआ। इतने में ही अमीना ने अपने चेहरे से नकाब उतार दिया। मजदूर ने अब तक तो झलक भर देखी थी, अब तो उसे पूरी नजर भर देखा तो ठगा-सा खड़ा रह गया। उसे यह देखकर भी आश्चर्य हुआ कि यद्यपि घर में तीन स्त्रियाँ ही थीं तथापि खाने-पीने की सामग्री इतनी थी जो तीस व्यक्तियों को काफी होती।

मजदूर वहाँ से न हटा तो जुबैदा ने पहले तो सोचा कि वह कुछ देर और सुस्ताना चाहता है, लेकिन जब उसे बहुत देर हो गई तो उसने कहा कि 'क्या बात है, तू जाता क्यों नहीं? क्या तुझे मजदूरी कम मिली है? अमीना, इसे कुछ और पैसे देकर विदा करो।' मजदूर ने कहा, 'मालकिन, मैंने मजदूरी आशा से अधिक पाई है किंतु आपके सम्मुख कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि जो मैं कहना चाहता हूँ वह मेरी उद्दंडता है किंतु मुझे आशा है आप मुझे क्षमा करेंगी और मेरी बातों पर नाराज नहीं होंगी। मुझे यहाँ बहुत-सी बातें आश्चर्यजनक लग रही हैं। मैंने आप जैसी रूपवती कोई भी महिला नहीं देखी। मुझे यह देख कर भी बड़ा आश्चर्य हुआ है कि यहाँ कोई पुरुष नहीं है। बगैर पुरुष के स्त्रियों का रहना और बगैर स्त्रियों के पुरुषों का रहना दोनों ही बहुत अजीब बातें हैं।'

मजदूर बातूनी तो था ही इसलिए बोलता चला गया। उसने बगदाद नगर में प्रचलित तरह-तरह की कहावतें सुनाईं। इनमें से एक यह थी कि जब तक चार व्यक्ति एक साथ भोजन न करें भोजन में स्वाद नहीं आता और खाने वाले तृप्त नहीं होते। उसका आशय यह था कि उन स्त्रियों के बीच में वही पुरुष और दूसरे उन तीन के अलावा चौथा व्यक्ति भी वही है, इसलिए भोजन के समय उसे भी खाने के लिए बिठा लिया जाय। जुबैदा

उसकी बातें सुन कर हँसने लगी और बोली, 'तू अपनी बेकार की बातें और सलाहें अपने पास रख, हम तीनों स्त्रियाँ बहिनें हैं और अपने सारे काम खुद ही अच्छी तरह चलाती हैं और इस तरह चलाती हैं कि किसी को पता नहीं चलता। हम लोग नहीं चाहते कि कोई हमारे भेद को जाने।'

मजदूर ने कहा, 'मेरी मालकिन, आप तो अत्यंत चतुर और बुद्धिमती हैं लेकिन आप मुझे भी निरक्षर और गँवार न समझें। यह तो भाग्य की बात है कि मुझे पेट पालने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है वरना मैंने बहुत-सी इतिहास और ज्ञान की पुस्तकें पढ़ी हैं। आप कहें तो आपको एक कहावत आपकी सेवा में उपस्थित करूँ। यह कहावत है कि बुद्धिमान को चाहिए कि चतुर व्यक्ति से अपना भेद न छुपाए क्योंकि चतुर व्यक्ति को किसी का भेद छुपाए रखना आता है। अगर आप मुझ पर अपना कोई भेद प्रकट करेंगी तो वह ऐसा ही होगा जैसे कोई चीज किसी कमरे में बंद करके ताला लगा दिया जाए और ताले की चाबी खो जाए।

जुबैदा समझ गई कि यह मजदूर बुद्धिमान और पढ़ा-लिखा है और इसका साथ करने में कोई बुराई नहीं और इसे अपने साथ बिठा कर खाना भी खिलाया जा सकता है। फिर भी उसने उसकी बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए मजाक में कहा, 'देखो भाई, हमने तो पैसा और मेहनत लगा कर इस भोजन को तैयार किया है, तुमने तो इस पर कुछ खर्च नहीं किया। फिर तुम्हें अपने खाने में क्यों सम्मिलित करें?' साफी ने भी उससे कहा, 'तुमने यह कहावत तो सुनी होगी कि छूछा किन पूछा।'

इन बातों का बेचारे मजदूर के पास कोई उत्तर न था और उसने कहा कि आप लोग ठीक कहती हैं, मैं जा रहा हूँ। लेकिन अमीना ने अपनी बहनों से उसकी वकालत की और कहा, 'इसे यहीं रहने दो। यह अपनी बातों से हमारा मनोरंजन करेगा और अपने विनोदी स्वभाव के कारण हमें हँसाता रहेगा। तुम्हें नहीं मालूम यह जबर्दस्त किस्म का मसखरा है। बाजार में यहाँ तक सारे रास्ते यह हँसी-मजाक की बातों से मुझे हँसाता आया है।' मजदूर को अमीना की बातें सुनकर बड़ा संतोष हुआ। उसने कहा, 'आप लोगों की बड़ी कृपा होगी अगर मुझे अपने साथ रहने दें। मैं गरीब हूँ किंतु किसी का उपकार मुफ्त में नहीं लेना चाहता। और तो मेरे पास कुछ नहीं लेकिन अपनी कृपा के बदले यह मजदूरी जो आपने मुझे दी है वह स्वीकार कर लीजिए।' यह कहकर मजदूर ने जुबैदा के सामने मजदूरी के पैसे बढ़ा दिए।

जुबैदा ने मुस्कराकर कहा, 'हम दी हुई चीज वापस नहीं लेते। तुम हमारे साथ रह कर हमारे खान-पान में सम्मिलित हो सकते हो। लेकिन शर्त यह है कि हम लोग चाहे जो कुछ करें उसके बारे मे तुम हमसे कुछ नहीं पूछोगे।' मजदूर ने यह स्वीकार कर लिया।

इतने में अमीना ने अपनी बाहर जाने वाली पोशाक उतार दी और तंग कपड़ों में कमर कसे हुए उसने नाना प्रकार के व्यंजन - कलिया, कीमा, कोफ्ता, कोरमा, कबाब और अन्य कई प्रकार के सामिष व्यंजन और उनके अलावा अन्य स्वादिष्ट वस्तुएँ और मदिरा की

सुराही और प्याले लाकर उचित स्थानों पर रख दिए। फिर तीनों बहिनें वहाँ आकर बैठ गई और चौथी ओर मजदूर को भी बिठा लिया। मजदूर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। उसने थोड़ा-सा भोजन किया। फिर अमीना ने मदिरा की सुराही उठाकर प्याला भरा और अपने देश की रीति के अनुसार पहले स्वयं पिया, फिर अपनी बहनों को दे दिया और चौथा प्याला मजदूर को दिया।

मजदूर ने अमीना का आदरपूर्वक हाथ चूमकर प्याला ले लिया और उसे पीने के पहले इस आशय का एक गीत गाया कि जिस प्रकार इत्र से वायु सुगंधित हो जाती है उसी प्रकार अगर पिलाने वाला मनोरम हो तो मदिरा में नई सुगंध आ जाती है। यह गीत सुनकर तीनों स्त्रियाँ बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने एक दूसरे के बाद कई गीत शराब के नशे में गाए। इस राग-रंग में बहुत देर हो गई और रात हो गई। साफी ने अपनी बहनों से कहा कि अब तो इस मजदूर को हमने खिला-पिला दिया है, अब इसका कोई काम नहीं, इससे कहो अपने घर जाए। मजदूर को ऐसा सुखद संग छोड़ने में बड़ा दुख हुआ। उसने कहा कि यह मेरे लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है कि ऐसी हालत में मुझे घर से निकाला जा रहा है, मैं इस नशे की दशा में किस प्रकार अपने घर पहुँच सकूँगा। कृपया रात भर मुझे यहाँ रहने की अनुमति दें, यहीं किसी कोने में पड़ा रहूँगा।

अमीना ने फिर उसकी वकालत की और कहा, यह बेचारा ठीक कहता है, कहाँ अँधेरे में ठोकरें खाता फिरेगा, हम लोगों ने पहले तो इसे अपने साथ खाने-पीने की अनुमति दे ही रखी है, अब इसे निराश न करो, यहीं पड़ा रहने दो। जुबैदा ने अमीना के कहने पर उसे रहने की अनुमति दे दी लेकिन फिर कहा कि शर्त यही है कि हम भला- बुरा जो भी करें तुम उसके बारे में कुछ पूछताछ नहीं करोगे। मजदूर ने कहा, आप मुझ पर जो भी शर्त लगाएँगी मैं मानूँगा। जुबैदा ने कहा कि हम तुम पर कोई नई शर्त नहीं लगा रहे हैं, उधर देखो क्या लिखा है। मजदूर ने एक दरवाजे के अंदर जाकर देखा तो मोटे-मोटे सुनहरे अक्षरों में लिखा था, 'इस भवन के अंदर जाने वाला कोई व्यक्ति यदि ऐसी बातों के बारे में पूछेगा जिनसे उसका कोई संबंध नहीं है तो उसे बड़ी क्लेशकारक बातें सुनने को मिलेंगी, उसे बड़ा कष्ट होगा और वह बहुत पछताएगा।' मजदूर ने कहा, आप चिंता न करें, मैं अपना मुँह बंद रखूँगा।

फिर अमीना रात का भोजन लाई और चारों ओर दीपक और सुगंधियाँ जलाईं। इससे सारा भवन आलोकित और सुवासित हो गया। इसके बाद तीनों स्त्रियाँ और मजदूर भोजन करने लगे और मदिरा पीकर अपने-अपने क्षेत्र की भाषाओं के गीत गाने लगे और राग-रागिनियाँ छेड़ने लगे। थोड़ी ही देर में ज्ञात हुआ जैसे कोई दरवाजा खोलने को कह रहा है। यह शब्द सुन कर साफी खड़ी हो गई क्योंकि दरवाजा खोलने वही जाती थी। उसने जाकर दरवाजा खोला और कुछ देर में वापस आकर कहा, 'दरवाजे पर एक ही जैसे लगने वाले तीन फकीर खड़े है जुबैदा, तुम उन्हें देख कर बहुत हँसोगी। वे तीनों ही दाहिनी आँख से काने हैं और सभी के सिर, दाढ़ी, मूछें यहाँ तक कि भवें भी मुड़ी हुई हैं। वे इसी समय बगदाद में प्रविष्ट हुए हैं और चाहते हैं कि उन्हें एक रात ठहरने के लिए जगह दे दी जाए, सुबह वे चले जाएँगे। बहन, मेरी प्रार्थना है कि उन्हें यहाँ रहने की अनुमति दे

दो। वे रात को यहाँ रह कर हम लोगों का कुछ भला ही करेंगे, हमें किसी प्रकार कष्ट न पहुँचाएँगे।'

जुबैदा ने साफी से कहा, अगर तुम यही चाहती हो तो उन्हें ले आओ लेकिन उन्हें भी हमारे घर पर मेहमानी की शर्त बता देना और कह देना कि अंदर दीवार पर जो कुछ लिखा है उसे पढ़ लें। साफी बहन की अनुमति पाकर प्रसन्नतापूर्वक दौड़ी गई और तीनों फकीरों को लेकर अंदर आ गई। फकीरों ने जुबैदा और अमीना को झुककर सलाम किया। दोनों ने सलाम का जवाब देकर उनकी कुशल-क्षेम पूछी। इसके बाद उन्होंने फकीरों से भोजन करने को कहा।

फकीरों ने मजदूर को देखकर कहा कि यह तो अरब का मुसलमान मालूम होता है। अरब के लोग धर्म के बड़े पक्के होते हैं किंतु यह तो धर्म-विरुद्ध मदिरा पान कर रहा है। मजदूर यह सुनकर बड़ा क्रुद्ध हुआ और बोला, 'तुम लोग कौन बड़े धर्माचारी हो। तुम लोगों ने दाढ़ी-मूँछें मुड़ाकर इस्लाम के नियमों का उल्लंघन नहीं किया? तुम्हें मेरे व्यवहार पर आपत्ति करने और मुझे नसीहत देने का क्या अधिकार है?' स्त्रियों ने कहा कि तुम लोग यह बेकार की बहस छोड़ो और रंग में भंग न करो; लो खाओ-पिओ। फकीर लोग नशे में आए तो बोले, यहाँ कोई बाजा हो तो हम लोग कुछ गाएँ-बजाएँ। साफी ने उन्हें वाद्य ला कर दिए और वे बजाने लगे और वाद्यों के सुरों से सुर मिलाकर गाना शुरू किया। वे लोग इस गाने-बजाने के दरम्यान हँसी-ठट्ठा भी करते और ऊँचे स्वर में वाह- वाह भी करते। इस सबसे बड़ा शोर होने लगा और सारा भवन गूँजने लगा। इसी बीच उन्होंने सुना कि दरवाजे पर फिर कोई ताली बजा रहा है। साफी सदा की भाँति दौड़कर गई कि देखें, अब कौन दरवाजे पर आया है।

शहरजाद ने शहरयार से कहा कि इस जगह कहानी रोक कर मैं आप को यह बताना चाहती हूँ कि इस बार ताली बजाने वाला स्वयं खलीफा हारूँ रशीद था। खलीफा का यह नियम था कि अक्सर रात को वेष बदलकर शहर में निकलता था कि प्रजा का हाल खुद अपनी आँखों से देखे। उस रात को वह अपने महामंत्री जाफर और जासूसों के सरदार मसरूर के साथ बगदाद की गलियों में घूम रहा था। वे तीनों व्यापारियों जैसे वस्त्र पहने हुए थे। जब वे लोग उन स्त्रियों के मकान के पास से गुजरे तो उन्होंने हँसी की ध्वनि और गाने-बजाने का स्वर सुना। खलीफा ने कहा कि घर का दरवाजा खुलवाओ, मैं देखूँ तो कि यहाँ क्या हो रहा है। जाफर ने कहा कि यहाँ कुछ स्त्रियाँ शराब पीकर हँसी- दिल्लगी कर रही हैं, गा-बजा रही हैं, आपका अंदर जाना शोभनीय नहीं है। यह भी हो सकता है कि वे अपने राग-रंग में विघ्न पड़ते देखकर नशे की हालत में आप का कुछ अपमान कर बैठें। किंतु खलीफा ने उसकी सलाह न मानी और आदेश दिया कि तुम जाकर दरवाजा खुलवाओ।

अतएव जाफर ने दरवाजा खुलवाया। साफी ने दरवाजा खोला तो जाफर उसके रूप को देखता रह गया, फिर उसने जल्दी से एक कहानी गढी। उसने कहा, 'सुंदरी, हम तीनों व्यापारी मोसिल नगर के निवासी हैं। हम व्यापार की वस्तुएँ लेकर यहाँ आए हैं और एक

सराय में ठहरे हैं। आज की रात को यहाँ के एक व्यापारी ने हमें दावत दी थी। हम उसके घर गए। उसने हमें बड़ा स्वादिष्ट भोजन कराया और उत्तम मदिरा पीने को दी। हम लोग नशे में आ गए तो उसने नृत्यांगनाओं को बुलाकर नाचने की आज्ञा दी। इस राग-रंग में काफी समय हो गया और नशे की हँसी और नाच-गाने से बाहर काफी आवाज जाने लगी। उसी समय संयोगवश शहर का कोतवाल गश्त लेकर उधर से निकला और उसने उस घर पर छापा मार दिया। दरवाजा खुलवा कर उसने सब उलट-पलटकर दिया और कई आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। हम लोग जान बचाकर एक दीवार से बाहर कूद गए।'

यह कहकर जाफर ने कहा, 'हम लोग इस शहर में किसी को नहीं जानते, न यहाँ के मार्ग पहचानते हैं। हमें डर लग रहा है कि हम इधर-उधर भटकते हुए सराय पर कैसे पहुँचेंगे। फिर संभव है सराय का दरवाजा बंद हो गया हो और हम रात भर गलियों में भटकते रहें। यह भी संभव है कि वही कोतवाल गश्त लगाता हुआ आ निकले और हम लोगों को बंद कर दे। हमारी दशा बड़ी दयनीय है। सुंदरी, तुम दया करके अनुमति दो तो हम रात भर के लिए तुम्हारे मकान में किसी जगह पड़े रहें। अगर तुम हमें अपनी संगति के योग्य समझो तो हमें अपने गाने-बजाने में शामिल कर लो। हम लोग यह तो समझ गए हैं कि तुम लोग गाने-बजाने में अति निपुण हो। हमें भी संगीत में रुचि है और हम भी अपनी कला से तुम्हारे आमोद-प्रमोद में योग दे सकते हैं।'

साफी ने कहा, मैं इस घर की मालकिन नहीं हूँ; तुम लोग जरा देर यहीं ठहरो, मैं मालकिन से तुम्हारी बात करती हूँ; अगर उसने अनुमति दे दी तो फिर कोई दिक्कत नहीं रहेगी और तुम लोग आराम से यहाँ रात बिता सकोगे। यह कह कर साफी अंदर गई और अपनी बहनों से नए व्यापारियों की दशा और उनकी प्रार्थना की बात की। उन दोनों ने आपस में और साफी के साथ मंत्रणा की और साफी से कहा कि उन्हें भी अंदर ले आओ।

अतएव साफी वहाँ जाकर खलीफा, जाफर और मसरूर को अंदर ले आई। तीनों ने बड़ी शिष्टता और सम्मान से स्त्रियों और फकीरों को प्रणाम किया। उन सब ने उन्हें व्यापारी समझ कर उनके अभिवादन का यथायोग्य उत्तर दिया। जुबैदा ने, जो तीनों बहनों में सब से बड़ी और सब से बुद्धिमान थी, उनसे उनकी कुशल-क्षेम पूछी और कहा कि हम लोग जो कुछ कहें उसका तुम लोग बुरा न मानना। जाफर ने कहा, तुम सुंदरियों के मुँह से ऐसी कौन-सी बात निकल सकती है जिसका किसी को भी बुरा लगे? जुबैदा ने कहा, 'मुझे यह कहना है कि तुम जहाँ तक हो सके चुप रहना और जिस बात का तुम से सीधा संबंध न हो उसके बारे में कोई प्रश्न न करना। अगर तुमने ऐसा न किया तो हम तुमसे क्रुद्ध हो जाएँगे और इसका फल तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।' मंत्री ने कहा कि अगर तुम्हारा यही आदेश है तो हम ऐसा ही करेंगे और किसी बात के बारे में प्रश्न नहीं करेंगे। यह वादा लेकर जुबैदा ने उन सब के आगे खाद्य सामग्री रखी और मदिरा पिलाई।

जब मंत्री जुबैदा से बातें कर रहा था उस समय खलीफा आश्चर्यचकित होकर उन स्त्रियों के सौंदर्य और तीक्ष्ण बुद्धि को देख रहा था। उसे इस बात से भी बहुत आश्चर्य हो रहा था कि तीनों फकीर दाहिनी आँख से क्यों काने हैं। उसकी उत्कट इच्छा थी कि वह

फकीरों से इस बात का रहस्य पूछे किंतु उसके दोनों साथियों ने इशारों ही में उसे ऐसा न करने के लिए कहा। मकान के अंदर की सारी रुपहली और सुनहरी सजावट को देखकर वह मन ही मन कह रहा था कि यह चीजें जादू ही की हो सकती हैं, वास्तविक नहीं हो सकतीं। इतने में एक फकीर ने उठकर अपने देश के ढंग पर नाचना शुरू कर दिया। स्त्रियों को वह नाच पसंद आया और सबने उसकी नृत्य कला की प्रशंसा की।

जब फकीरों का नाच हो चुका तो जुबैदा अपने स्थान से उठी और अमीना का हाथ पकड़ कर बोली, 'बहन, यह तो तुम जानती ही हो कि यहाँ पर उपस्थित सब लोग हमारे अधीन हैं और इनकी उपस्थिति हमें हमारे रोज के काम से नहीं रोक सकती।' अमीना ने उसका अभिप्राय समझ कर उस जगह की सफाई शुरू कर दी। उसने भोजन के पात्र और मदिरा की सुराहियाँ और प्याले उठाकर बावर्चीखाने में रख दिए और गाने बजाने का सामान हटाकर फर्श पर झाड़ू लगाई। इसके बाद उसने सारे दियों की बत्तियों के गुल काटे और कुछ और भी सुगंधित तेल के दिए जलाए और कमरे को नए ढंग से सजा दिया।

अमीना ने अब फकीरों और खलीफा तथा उसके साथियों को दालान में बिठाया। फिर मजदूर से कहा कि तुझ जैसे हट्टे-कट्टे आदमी को इन लोगों की तरह बैठना नहीं चाहिए, तू उठ कर हमारे काम में हाथ बँटा। मजदूर अभी तक ऊँघ-सा रहा था। वह अपनी हैसियत का खयाल करके रास-रंग में शामिल नहीं हुआ था। वह फौरन उठ खड़ा हुआ और अपने चोगे को कस कर कमर से बाँधने के बाद बोला कि बताओ क्या काम है, जो तुम कहोगी मैं करूँगा। साफी ने कहा, तुम कुर्ते की आस्तीन भी चढ़ा लो क्योंकि हाथों से काम करना है।

कुछ देर बाद अमीना ने दालान में एक चौकी बिछाई और मजदूर को अपने साथ ले जाकर एक कोठरी से दो काली कुतियाँ खींचती हुई लाई। दोनों कुतियों के गले में पट्टे बँधे थे और पट्टों में जंजीरें बँधी थीं। मजदूर उसकी आज्ञा के अनुसार दोनों कुतियों को दालान में ले गया। अब जुबैदा गुस्से में झटके के साथ उठ खड़ी हुई। उसने एक ठंडी साँस भरी और आस्तीन ऊपर चढ़ाई। फिर उसने साफी के हाथ से एक चाबुक लिया और मजदूर से कहा कि एक कुतिया की जंजीर अमीना के हाथ में दे और दूसरी को मेरे पास ले आ।

मजदूर उसकी आज्ञानुसार एक कुतिया को खींच कर जुबैदा के पास लाया तो कुतिया बड़े आर्त स्वर में चिल्लाने लगी। वह दयनीय दृष्टि से जुबैदा की तरफ देखती जाती थी और उसके पैरों पर अपना सिर भी रगड़ती जाती थी। जुबैदा ने उसके इस अनुनय पर कुछ ध्यान न दिया और सड़ासड़ उसे चाबुक मारना शुरू किया। मारते-मारते जब जुबैदा का दम फूल गया तो उसने मारना बंद कर दिया। फिर मजदूर के हाथ से कुतिया की जंजीर लेकर उसके अगले पंजे पकड़ कर पिछले पैरों पर खड़ा किया। कुतिया और जुबैदा एक-दूसरे को देखकर बड़े दुख के साथ आँसू बहाने लगीं। फिर जुबैदा ने रूमाल से कुतिया के आँसू पोंछे और उसे प्यार करके उसका मुँह चूमा। फिर मजदूर को उसकी जंजीर थमाकर कहा कि इस कुतिया को दालान में ले जा और दूसरी को यहाँ ला। मजदूर ने इस कुतिया को ले जाकर दालान में बाँधा और अमीना के हाथ से दूसरी कुतिया लेकर जुबैदा के पास

लाया। जुबैदा ने इस कुतिया को भी पहली कुतिया की भाँति खूब मारा, फिर उसकी आँखों में आँखें डाल कर रोई और उसके आँसू पोंछ कर और मुँह चूम कर प्यार किया। इसके बाद मजदूर ने इस कुतिया को भी दालान में ले जाकर बाँध दिया।

तीन फकीरों, खलीफा और उसके साथियों को यह सब देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि पहले तो जुबैदा ने अत्यंत निर्दयता से कुतियों को पीटा फिर उनके साथ मिल कर रोई भी। इसके अलावा मुसलमानों के धर्म में कुत्ते अपवित्र जंतु माने जाते हैं। जुबैदा जैसी सुसंस्कृत महिला का कुतियों के आँसू पोंछकर उनका मुँह चूमना किसी की समझ में नहीं आ रहा था। विशेषतः खलीफा अपनी उत्सुकता नहीं रोक पा रहा था। उसने इशारे से मंत्री से कहा कि इस रहस्य को पूछना चाहिए। मंत्री ने पहले तो टाल-मटोल की और दूसरी ओर देखने लगा। लेकिन जब खलीफा संकेत से प्रश्न करता ही रहा तो उसने संकेत ही से विनय की कि इस समय इस बात को यहीं समाप्त कर दीजिए, कुछ पूछिए नहीं।

जुबैदा कुतियों को पीटने के बाद कुछ देर तक सुस्ताती रही। फिर साफी ने उससे कहा, बहन तुम अपने स्थान पर आ बैठो तो हम अगला काम करें। जुबैदा ने कहा, 'अच्छा।' फिर वह दालान में आकर एक पहले से बिछी हुई चौकी पर बैठ गई। उसने खलीफा और उसके साथियों को अपने दाईं ओर और फकीरों और मजदूरों को बाईं ओर बिठा लिया। चौकी पर बैठ कर वह कुछ देर और सुस्ताती रही। इसके बाद उसने अमीना से कहा कि बहन, उठो, तुम्हें मालूम है कि तुम्हें अब क्या करना है।

अमीना यह सुन कर उठी और बगल वाली कोठरी में जाकर वहाँ से एक संदूक उठा लाई जो पीले साटन में मढ़ा था और इसके ऊपर भी उस पर हरी कारचोबी का एक गिलाफ चढ़ा था। उसमें से एक बाँसुरी निकाल कर अमीना ने साफी को दी। साफी ने उस बाँसुरी से एक करुण वियोगात्मक राग निकाला और देर तक बजाती रही। खलीफा और अन्य उपस्थित लोग उस का कौशल देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। फिर साफी ने अमीना से कहा कि अब तुम बाँसुरी बजाओ, मैं बजाते-बजाते थक गई हूँ। अमीना ने बाँसुरी लेकर कुछ देर तक सुर मिलाया फिर एक बड़ा मधुर राग बजाना शुरू किया और बजाते-बजाते उसमें मग्न हो गई। जुबैदा ने उसके वादन की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि अब बस करो, तुम्हारे दुख के कारण बड़ी दुखद दशा हो रही है। अमीना इतनी भाव-विह्वल हो गई कि जुबैदा की बात का कोई उत्तर न दे सकी बल्कि जान पड़ता था कि वह अपने होश-हवास खो बैठी थी क्योंकि उसने अपने ऊर्ध्व वस्त्र को उतार फेंका। अब सब लोगों ने देखा कि उस सुंदरी के दोनों कंधों पर काले-काले दाग पड़े हैं जैसे किसी ने उसे निर्दयता से मारा है।

दाग उसके कंधों ही पर नहीं, बाँहों पर भी पड़े थे। सब लोग इस कांड को देखकर और भी हैरान हुए। अमीना की हालत इतनी खराब हो गई थी कि वह डगमगाने लगी और गिरने-गिरने को हुई और जुबैदा और साफी ने दौड़कर उसे सँभाला।

एक फकीर ने धीमे से कहा, कितने दुख की बात है कि हम इतनी अद्‌भुत घटनाएँ देख रहे हैं और उनके बारे में किसी से पूछ भी नहीं सकते। खलीफा ने यह बात सुन ली और उन फकीरों के पास आकर उनसे पूछा कि क्या तुम लोगों में किसी को इन स्त्रियों का और

कुतियों को पीटने का रहस्य ज्ञात है? फकीरों ने कहा, हम में से कोई भी इन बातों को नहीं जानता, हम लोग आज ही रात को तुम्हारे यहाँ आने से कुछ ही पहले यहाँ पहुँचे हैं। खलीफा की उत्सुकता और बढ़ी। उसने कहा, हो सकता है कि यह आदमी जो तुम्हारे पास बैठा है इसे कुछ ज्ञात हो। फकीर ने इशारे से मजदूर को अपने और निकट बुलाया और पूछा कि क्या तुम्हें मालूम है कि जुबैदा ने दोनों कुतियों को क्यों पीटा और अमीना के कंधों और बाँह पर काले दाग कैसे हैं।

मजदूर ने कहा कि मैं भगवान की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम। मैं तो इस घर में आज ही आया हूँ और इस घर में यही तीन स्त्रियाँ रहती हैं। खलीफा और फकीरों ने सोचा था कि वह आदमी उन स्त्रियों का सेवक होगा। अब सबको विश्वास हो गया कि भेद खुलने की कोई संभावना नहीं है।

लेकिन खलीफा हार मानने को तैयार नहीं हुआ। उसने कहा, हम लोग सात मर्द हैं और यह सिर्फ तीन औरतें। हम सब मिलकर इनसे इस भेद को पूछें। अगर यह लोग खुशी-खुशी बता दें तो ठीक है नहीं तो हम जोर-जबर्दस्ती करके भी इनसे बात उगलवा लेंगें।

मंत्री की राय इसके विपरीत थी। उसने खलीफा के कान में कहा, 'हम सबका यहाँ पर बड़ा स्वागत-सत्कार किया गया है और गाने-बजाने से भी हमारा मनोरंजन हुआ है। ऐसी दशा में जोर-जबर्दस्ती ठीक नहीं है। फिर आप यह भी देखें कि इन स्त्रियों ने किस शर्त पर हमें अपना अतिथि बनाया है; हमने भी उनकी यह शर्त मानी है कि हम कुछ पूछताछ नहीं करेंगे। अगर हम अपना यह वादा तोड़ेंगे तो यह लोग क्या हमें बेईमान नहीं कहेंगी? और उन्होंने हमारे लिए ऐसा कहा तो हमारे लिए डूब मरने की बात होगी।'

मंत्री ने आगे समझाया, 'आप यह भी विचार कर लें कि जब इन स्त्रियों ने हमारे सामने इतने आत्मविश्वास से चुप रहने की शर्त रखी है तो मालूम होता है कि इनके पास कोई ऐसी शक्ति है जिससे यह लोग शर्त तोड़ने वाले को दंड भी दे सकती हैं। ऐसा हुआ तो हमारे लिए और भी लज्जा की बात हो जाएगी चाहे हम बाद में इन्हें कितना भी दंड दे दें। ...मुझे यह भी कहना है कि अब रात बीता ही चाहती है। इस समय आप कुछ न कहें। सवेरा होने पर मैं इन सारी स्त्रियों को पकड़कर आपके दरबार में ले आऊँगा और आप जो चाहे इनसे पूछ लीजिएगा।'

खलीफा को ऐसी जिद सवार हुई कि उसने ऐसे सत्परामर्श पर कान न दिया और मंत्री को झिड़क दिया कि तुम चुप रहो, मैं सुबह तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। उसने फकीरों से कहा कि तुम इस बात को जुबैदा से पूछो। उन्होंने इनकार कर दिया कि हमारा साहस नहीं है। फिर उन सबने जोर देकर मजदूर को यह पूछने पर राजी कर लिया।

जुबैदा ने इन लोगों को खुसर-पुसर करते देखा तो उनसे पूछा कि तुम लोग आपस में क्या बात कर रहे हो। मजदूर ने कहा, 'सुंदरी, मेरे साथी जानना चाहते हैं कि आप दोनों कुतियों

को निर्दयतापूर्वक पीटकर क्यों रोई और जो स्त्री अपनी सुध-बुध खो बैठी उसके कंधों और बाँहों पर काले दाग कैसे हैं।' जुबैदा यह सुनकर आग-बबूला हो गई। उसने सब लोगों से पूछा कि क्या तुम सब ने मजदूर से कहा था कि यह बातें मुझसे पूछे। सबने एकमत होकर कहा कि जाफर को छोड़कर हम सभी यह बातें जानना चाहते थे और हमने मजदूर से कहा था कि आपसे यह बातें पूछे। जुबैदा ने कहा, 'तुम सभी लोग बेईमान हो। तुम सब ने प्रतिज्ञा की थी कि यहाँ की किसी बात के बारे में कुछ न पूछोगे और तुम अपनी उत्सुकता पर बिल्कुल संयम न कर सके। हमने दया करके तुम सबको रात का ठिकाना दिया और तुम एक साधारण-सी प्रतिज्ञा न निभा सके। अब तुम्हारा सत्कार मेरे लिए बिल्कुल आवश्यक नहीं है और तुम लोगों को अपने किए का फल भुगतना चाहिए।'

यह कह कर जुबैदा ने धरती पर पाँव पटक कर तीन बार ताली बजाई और जोर से कहा, 'तुरंत आओ।' उसके यह कहते ही एक द्वार खुल गया और उसमें से सात बलवान हब्शी नंगी तलवारें लिए निकले और एक-एक हब्शी ने एक-एक आदमी को जमीन पर पटक दिया और उनके सीने पर चढ़ बैठे और सब की तलवारें म्यान से बाहर निकल आईं। खलीफा क्षोभ और लज्जा के मारे मरा जा रहा था, उसे ऐसे व्यवहार की क्या आशा हो सकती थी।

हब्शियों के मुखिया ने जुबैदा से पूछा, 'श्रेष्ठ सुंदरी, आपकी क्या आज्ञा है? क्या हम इन लोगों को यहीं खत्म कर दें?' जुबैदा ने कहा, 'नहीं, कुछ देर ठहर जाओ। पहले इन लोगों से यह तो पूछ लें कि यह कौन हैं और क्यों आए थे।' यह कहकर उसने सातों मेहमानों से कहा कि तुम लोग अपना-अपना हाल बताओ।

मजदूर ने रो कर कहा, 'भगवान के लिए मुझे छोड़ दो। मेरा कोई दोष नहीं है। मैं तो इन लोगों के बहकावे में आ गया। काने फकीर जहाँ जाएँगे वहीं दुर्भाग्य लाएँगे।' जुबैदा को यह सुनकर हँसी आ गई। वह बोली, 'ऐसे कोई नहीं छूटेगा। पहले हर आदमी अपना हाल बताए कि वह वास्तव में कौन है, कहाँ से आया है, उसमें क्या-क्या गुण हैं और यहाँ आने का क्या कारण है। इन बातों में जरा-सा भी झूठ हुआ तो फौरन उसकी गर्दन मारी जाएगी।'

परेशान तो सभी थे लेकिन खलीफा हारूँ की व्याकुलता स्वभावतः ही सबसे अधिक बढ़ी-चढ़ी थी। उसने एक बार सोचा कि वैसे तो इस स्त्री के पंजे से निकला नहीं जा सकता किंतु यदि वह अपना ठीक-ठीक परिचय तुरंत दे दे तो जरूर मेरा सम्मान करेगी। उसने धीमे से मंत्री से सलाह ली। उसने कहा कि आपके सम्मान की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि अभी हम लोग चुप रहें। जुबैदा ने तीनों फकीरों से पूछा कि क्या तुम तीनों भाई हो? एक ने उत्तर दिया कि हम भाई नहीं हैं; एक-से कपड़े जरूर पहनते हैं और साथ रहते हैं। जुबैदा ने फिर पूछा कि क्या तुम लोग जन्मतः ही एकाक्ष हो। उनमें से एक ने कहा कि ऐसा नहीं है; हम पर ऐसी विपत्तियाँ पड़ीं जो न केवल जानने बल्कि इतिहास में लिखे जाने योग्य हैं, उन्हीं से हमारी आँखें जाती रहीं और उन्हीं के कारण हमने अपनी

दाढ़ी-मूँछ और भवें मुँडवा डाली और फकीर बन गए।

जुबैदा ने एक-एक करके शेष दो फकीरों से भी यही प्रश्न किए और दोनों ने वही उत्तर दिए जो पहले फकीर ने दिए थे। तीसरे ने यह भी कहा, 'आप अनुमति दें तो हम लोग अपना वृत्तांत विस्तृत रूप से कहें। हम तीनों की भेंट आज ही शाम को इस नगर में हुई है क्योंकि हम तीनों बाहर से आए हैं। विश्वास मानिए कि हम तीनों ही राजकुमार हैं और हमारे पिता बड़े और प्रख्यात बादशाह हैं। हम सब चाहते हैं कि अपना वृत्तांत विस्तृत रूप से कहें।'

उन लोगों की बातों से जुबैदा का क्रोध कम हुआ। उसने हब्शियों से कहा, 'तुम लोग इनके सीने से उतर आओ। यह लोग बैठकर अपना-अपना हाल कहेंगे। जो-जो अपना पूरा हाल और इस घर में आने का कारण बताता जाए उसे छोड़ते जाओ ताकि वह जहाँ चाहे चला जाए। जो ऐसा न करे तुम उसका सिर उड़ा दो। अभी तुम इन लोगों के पीछे नंगी तलवारें लिए खड़े रहो।' चुनांचे उसी दालान में खलीफा और अन्य 6 लोगों को एक कालीन पर बिठा दिया गया। हर आदमी के पीछे एक हब्शी नंगी तलवार लेकर खड़ा हो गया ताकि जुबैदा का इशारा होते ही उसका वध कर दे। सबसे पहले मजदूर ने अपनी बात कही।

मजदूर का संक्षिप्त वृत्तांत

मजदूर बोला, 'हे सुंदरी, मैं तुम्हारी आज्ञानुसार ही अपना हाल कहूँगा और यह बताऊँगा कि मैं यहाँ क्यों आया। आज सवेरे मैं अपना टोकरा लिए काम की तलाश में बाजार में खड़ा था। तभी तुम्हारी बहन ने मुझे बुलाया। मुझे लेकर पहले वह शराब बेचने वाले के यहाँ गई। फिर कुँजड़े की दुकान पर उसने ढेर-सी तरकारियाँ खरीदीं और फल वाले के यहाँ से बहुत-से फल लिए। गोश्त वाले के यहाँ से उसने तरह-तरह का मांस खरीदा और अन्य दुकानों से भी बहुत कुछ लिया। फिर सारा सामान मेरे सर पर लदवाकर आपके घर में लाई। आपने कृपा कर के मुझे अब तक ठहरने दिया और खानपान दिया जिसके लिए मैं आपका आजीवन आभारी रहूँगा। यही मेरी राम कहानी है।'

मजदूर की बातें सुनकर जुबैदा ने कहा, 'तेरी बातें ठीक मालूम होती हैं। अब तू तुरंत यहाँ से चला जा और खबरदार आगे कभी मेरे सामने न आना।' मजदूर यद्यपि बड़ी मुसीबत से छूटा था किंतु उसकी चपलता न गई। उसने कहा कि यदि अनुमति दें तो मैं इन शेष लोगों की कहानियाँ भी सुन लूँ, फिर घर चला जाऊँगा। जुबैदा ने अनुमति दे दी और कहा, दालान के एक कोने में खड़े होकर चुपचाप सुन ले, कुछ बोलना-चालना नहीं। मजदूर ने ऐसा ही किया। फिर जुबैदा ने फकीरों को आत्मकथाएँ सुनाने का इशारा किया।

किस्सा पहले फकीर का

पहले फकीर ने अदब से घुटनों के बल खड़े होकर कहा 'सुंदरी, अब ध्यान लगाकर सुनो कि मेरी आँख किस प्रकार गई और मैं क्यों फकीर बना। मैं एक बड़े बादशाह का बेटा था। बादशाह का भाई यानी मेरा चचा भी एक समीपवर्ती राज्य का स्वामी था। मेरे चचा का एक बेटा मेरी उम्र का था और दूसरी संतान एक पुत्री थी। मैं अपने पिता के आदेशानुसार प्रति वर्ष अपने चचा के यहाँ जाया करता था और महीने-दो महीने वहाँ रहा करता था। कई बार इस प्रकार आने-जाने से मेरी अपने चचेरे भाई से मैत्री और प्रीति बहुत बढ़ गई।

'एक दिन मैंने देखा कि मेरा चचेरा भाई असाधारण रूप से प्रसन्न है। उसने सदा से अधिक मेरा सत्कार किया, स्वादिष्ट भोजन कराया और भाँति-भाँति के खेल-तमाशों से मेरा मनोरंजन किया। फिर मुझसे कहने लगा, 'पिछली बार तुम्हारे जाने के बाद मैने बड़ी जल्दी और बहुत ही सुंदर ढंग से एक महल बनवाया है। अब रात हो गई है, मैं सोना चाहता हूँ फिर तुम्हे नया महल दिखाऊँगा। लेकिन शर्त यह है कि तुम कसम खाओ कि यह भेद किसी से नही कहोगे।'

'मैने ऐसा करने से सौंगध खाई। वह उठकर गया और कुछ ही देर में एक सुंदरी स्त्री को साथ लेकर आ गया। न उसने बताया कि यह स्त्री कौन है न मैंने उसके बारे में पूछा। हम तीनों बैठ कर इधर-उधर की बातें करने लगे और पात्रों में भर-भर कर मदिरा पीने लगे। कुछ देर बाद मेरे चचेरे भाई ने कहा कि चलो यहाँ से चलें। उसने मुझसे कहा कि तुम इस स्त्री को लेकर कब्रिस्तान जाओ और कब्रिस्तान में जहाँ कहीं भी गुंबद वाली नई कब्र देखो तो समझ लो कि यह उसी महल का प्रवेश मार्ग है। तुम दोनों गुंबद के अंदर जाकर मेरी राह देखना।

'मैं उसी स्त्री के हाथ में हाथ देकर बाहर निकला और कब्रिस्तान की ओर चल दिया। चाँदनी रात थी इसलिए हम लोगों को गुंबद वाली नई कब्र ढूँढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। हम गुंबद के अंदर गए तो देखा कि राजकुमार अकेला ही एक चूने की टोकरी, पानी की गागर और जरूरी औजार लिए खड़ा है। हमारे पहुँचने पर उसने फावड़े से जमीन खोदी। मिट्टी के नीचे पत्थरों की सिलें थीं जिन्हें निकाल कर उसने एक ओर रखा। पत्थरों के नीचे एक दरवाजा दिखाई दिया। दरवाजे का किवाड़ ऊपर उठाया तो नीचे जाने के लिए एक लकड़ी की सीढ़ी दिखाई दी।

'मेरे चचेरे भाई ने अब उस स्त्री से कहा कि इसी रास्ते पर चलकर वह द्वार मिलेगा जिसका मैंने तुमसे उल्लेख किया था। वह स्त्री यह सुनकर सीढ़ी से नीचे उतर गई। राजकुमार भी उसके पीछे चला गया। जाने के पहले मुझसे बोला कि तुमने हम लोगों के लिए जो परिश्रम किया है उसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ, लेकिन अब मैं तुमसे विदा

लेता हूँ। हाँ, भगवान के लिए इस बात को गुप्त रखना। मैंने बहुत पूछा कि तुम कहाँ जा रहे और यह सब क्या हो रहा है किंतु उसने कुछ न बताया, केवल इतना कहा कि दरवाजे पर मिट्टी डालकर भूमि समतल कर देना और जिस रास्ते से आए हो उसी से वापस चले जाना।

'विवशत: मैं दरवाजे पर मिट्टी डालकर अपने चचा के महल को वापस हुआ। मुझे नशा उतरने के बाद खुमार की दशा थी और मेरे सिर में पीड़ा हो रही थी इसलिए मैं अपने कमरे में जाकर सो रहा। सुबह उठने पर रात के वृत्तांत का स्मरण कर के मैं बड़ा चिंतित था और यह भी सोचता था कि मैंने रात को जो देखा वह स्वप्न था या सत्य था। मैंने एक सेवक से कहा कि तू जाकर देख कि मेरे भाई ने उठकर कपड़े बदले हैं या सो ही रहा है। उसने लौट कर बताया कि वे तो रात को अपने शयन कक्ष में थे ही नहीं और किसी को यह भी नहीं मालूम है कि वे कहाँ गए हैं इसलिए उनके सेवक और संबंधी सब को बड़ी चिंता है और किसी की समझ में नही आ रहा है कि क्या करें।

'मुझे भी इस बात पर बड़ी चिंता हुई और मैं फिर कब्रिस्तान को गया। मैंने सारा दिन गुंबद वाली कब्र के खोजने में लगाया किंतु वह कब्र नहीं मिली। इसी प्रकार चार दिन तक मैं कब्रिस्तान जा कर अपने भाई की तलाश करता रहा लेकिन उसका या उसके मकान का कुछ पता न चला।

'सुंदरियो, यहाँ यह बता देना भी आवश्यक है कि उन दिनों मेरा चचा यानी वहाँ का बादशाह कई दिन से राजधानी में नहीं था क्योंकि वह शिकार पर गया था। उसकी वापसी में भी देर थी इसलिए मैं अत्यंत व्याकुल हुआ। मेरी इच्छा हुई कि अपने पिता के राज्य में वापस जाऊँ। मैंने मंत्री से कहा कि अब की बार मैं साधारण समय से अधिक यहाँ पर रहा और मेरे पिता को मेरी चिंता होगी इसलिए मैं जा रहा हूँ, आप बादशाह के आने पर उनसे यही कह दें। मंत्री स्वयं बड़ी चिंता में था क्योंकि शहजादे की कोई खोज- खबर नहीं मिल रही थी। मैं स्वयं उसे कुछ न बता सकता था क्योंकि शहजादे ने मुझे कुछ न कहने की कसम दिला रखी थी।

'जब मैं अपने पिता की राजधानी में आया तो महल के चारों ओर सेना की बड़ी जमात देखी। सैनिकों ने मुझे देखते ही बंदी बना लिया। मैंने बिगड़कर पूछा कि यह क्या करते हो, तो एक सरदार ने कहा, 'शहजादे, यह सेना तुम्हारी नहीं, तुम्हारे शत्रु की है। तुम्हारे पिता के मरने के बाद मंत्री ने तुम्हारे राज्य पर अधिकार कर लिया है। उसने तुम्हें गिरफ्तार करने की आज्ञा दी है और कहा है कि तुम जहाँ भी मिलो तुम्हें पकड़ लिया जाए। अब तुम हमारे भाग्य से स्वयं ही हमारे पास आ गए।

'यह कह कर वह सरदार मुझे अत्याचारी मंत्री के पास ले गया जो अब राज सिंहासन पर बैठा हुआ था। मुझे कितना दुख और कितनी ग्लानि हुई होगी यह आसानी से समझा जा सकता है। वह दुरात्मा आरंभ ही से मेरा शत्रु था। इसका कारण यह था कि बचपन में

मुझे गुलेल चलाने का बड़ा शौक था। एक दिन मैं महल की छत पर गुलेल लिए खड़ा था कि एक चिड़िया सामने से उड़ती हुई निकली। मैंने गुलेल से उस पर पत्थर मारा। संयोगवश वह पत्थर का टुकड़ा उसी मंत्री की आँख पर लगा क्योंकि वह भी अपने निकटवर्ती भवन की छत पर टहल रहा था। उसकी आँख फूट गई। मुझे मालूम हुआ तो मैं स्वयं ही उसके पास गया और अनजाने में हुए अपराध के लिए उससे क्षमा माँगी। वह कुछ बोला नहीं किंतु उसने मुझे कभी क्षमा नहीं किया और बराबर इस ताक में रहता था कि कब अवसर पाए और मुझ से बदला ले। इसलिए जब मुझे असहाय और अशक्त देखा तो पुरानी बात याद करके क्रोध में भर कर सिंहासन से उतरा और झपट कर मेरे पास आया और मेरी दाहिनी आँख में उँगली घुसेड़ दी।

'उसने इतने ही पर बस नहीं की। उसने मुझे एक पिंजरे में बंद कर दिया और जल्लाद को आज्ञा दी कि इसे नगर के बाहर ले जा कर इसका वध कर दे और इसके शरीर के टुकड़े करके पशु-पक्षियों को खिला दे। जल्लाद घोड़े पर बैठकर शहर के बाहर आया और दूसरे घोड़े पर वह पिंजरा रखकर ले गया जिसमें मैं बंद था। उसकी सहायता को अन्य सेवक भी थे। जंगल में जाकर मेरे हाथ-पाँव बाँध कर मुझे मारने के लिए तलवार निकाली। मैं अत्यंत दीनता से रोने और प्राण भिक्षा माँगने लगा और जल्लाद को याद दिलाया कि उसने बरसों मेरे पिता का नमक खाया है। अंत में जल्लाद को मुझ पर दया आ गई। उसने मुझे छोड़ दिया और कहा, 'तुम तुरंत ही यह देश छोड़कर चले जाओ। इधर की तरफ भूलकर भी मुँह न करना। अगर तुम यहाँ आए तो तुम तो मारे ही जाओगे, मुझे भी प्राणदंड मिलेगा।'

'मैंने जल्लाद का बड़ा एहसान माना और भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया कि भले ही आँख गई; लेकिन जान तो बच गई, काना होना मुर्दा होने से तो अच्छा है। मेरी भूख-प्यास और आँख की तकलीफ से बुरी हालत थी। मैं चलने-फिरने के लायक न था। दिन में जंगल की झाड़ियों में छुपा रहा। रात को धीरे-धीरे छुपता-छुपाता अनजाने रास्तों पर धीरे-धीरे चलता हुआ कई दिनों में अपने चाचा की राजधानी में पहुँचा। जब मैंने चाचा को अपने दुर्भाग्य का पूरा हाल बताया तो वह जैसे पछाड़ें खाने लगा और बोला, 'मुझ से अधिक अभागा कौन होगा। मैं अपने पुत्र के लापता होने से क्या कम दुखी था कि मुझे अपने भाई के, जिसे मैं प्राणों से भी अधिक चाहता था, प्राणांत की सूचना मिली। अब मैं अपने पुत्र को कहाँ खोजूँ।' और वह बहुत देर तक अपने पुत्र को याद करके घंटों रोता रहा।

'उसके निरंतर रोदन से मेरे धैर्य का बाँध टूट गया। मुझ में इतनी क्षमता न रही कि मैं अपने चचेरे भाई को दिए हुए वचन को निभाए रखता। अतएव मैंने वह सारा वृत्तांत अपने चाचा को कह सुनाया जो मैंने उस रात को देखा था। चाचा को यह सुन कर ढाँढ़स हुआ और उसने कहा, 'बेटे, तुम ठीक कहते हो। मुझे भी मालूम हुआ था कि उसने यहाँ से समीप ही एक गुंबददार कब्र यानी मजार बनवाया है। वह वहीं हो सकता है।' लेकिन उसने यह भेद किसी को नहीं बताया। रात को वेष बदलकर मैं और चचा महल के बाग के दरवाजे से निकल कर कब्रिस्तान में पहुँचे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि हम लोगों

को थोड़ी ही देर में कब्र मिल गई। शायद अकेले आने पर मैं ठीक स्थान पर नहीं पहुँच सका था।

'मैंने कब्र को फौरन पहचान लिया। हम लोग गुंबद के अंदर गए। वह लोहे का दरवाजा, जिसके नीचे सीढ़ी गई थी, बड़ी कठिनाई से खुला क्योंकि शहजादे ने उसे अंदर से चूना आदि लगाकर मजबूती से बंद कर दिया था। दरवाजा खुलने पर पहले चाचा नीचे उतरा फिर मैं गया। कुछ दूर जाकर देखा कि डयोढ़ी में बदबूदार धुआँ भरा है। आगे बढ़े तो देखा कि सुंदर बैठने का स्थान है और वहाँ कई दीपक यथेष्ट प्रकाश दे रहे थे। बीच में एक हौज बना हुआ था जिसके चारों ओर खाने-पीने की वस्तुएँ रखी थीं। किंतु वह स्थान बिल्कुल निर्जन था। फिर हमने देखा कि एक ओर चबूतरा-सा बना है और उसके बाद एक कक्ष है जिसके द्वार पर परदा पड़ा है।

'चचा सीढ़ी से चबूतरे पर चढ़ गए और परदा उठा कर अंदर गए। मैं भी पीछे- पीछे चला गया। हम लोगों ने देखा कि शहजादा उसी स्त्री के साथ, जिसे पहले मैंने देखा था, एक पलंग पर लेटा है। किंतु उस पर भगवान का ऐसा कोप हुआ था कि दोनों कोयले की तरह काले हो गए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने उन्हें जीवित ही धधकती आग में डाल दिया है और उनके राख हो जाने के पहले उन्हें निकाल कर पलंग पर लिटा दिया है।

'मेरे तो यह देख कर रोंगटे खड़े हो गए लेकिन मेरा चचा यह देख कर बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। उसके चेहरे पर न दुख का कोई चिह्न था न आश्चर्य का। हाँ, उसका क्रोध बढ़ता जा रहा था।

'उसने शहजादे के मुँह पर थूक दिया और कहा, 'अभागे, तूने यहाँ तो दुख पाया ही है, परलोक में इससे अधिक पाएगा।' इस पर भी उस का क्रोध शांत न हुआ तो उसने पाँव से जूती निकाल कर कई बार शहजादे के मुँह पर मारी। मैंने क्रोध में आकर कहा, एक तो मुझे वैसे ही भाई के मरने का दुख है, फिर आप मरने पर उसका अपमान कर रहे हैं। ऐसा क्या अपराध उसने किया है जिससे आपकी क्रोधाग्नि इतनी भड़की है?

'बादशाह बोला, 'बेटे, तुम नहीं जानते कि क्या किस्सा है। यह आदमी इससे कहीं अधिक भर्त्सना और दंड का भागी है। यह शहजादा बचपन ही से अपनी सगी बहन पर आसक्त था। जब दोनों छोटे थे तो मैंने बच्चा समझ कर उनकी बातों पर कुछ ध्यान नहीं दिया। किंतु जब दोनों बड़े हो गए तब भी दोनों में घनिष्टता रही बल्कि बढ़ गई। अब मैंने उनके संबंध को रोकना चाहा। मैंने कड़े पहरे बिठाए कि भाई-बहन एक दूसरे के सामने न आएँ। शहजादा अकेला ही कुमार्गगामी होता तो बात आगे न बढ़ती लेकिन यह अभागी लड़की उससे भी अधिक नीच निकली। यह अपने भाई से मिलने के लिए तड़पती रहती थी। यद्यपि मेरी सख्ती के कारण खुलकर एक दूसरे के सामने न आते थे किंतु उनके हृदयों में एक दूसरे के प्रति आकर्षण कम नहीं होता था।

'अतएव बहन से सलाह करके शहजादे ने अपने लिए खास तौर से यह गुप्त आवास बनवाया ताकि अवसर मिलते ही दोनों विहार करें। जब मैं शिकार पर गया तो शहजादे को अवसर मिला और वह किसी तरह अपनी बहन को महल से निकाल कर यहाँ ले आया ताकि उसके साथ हमेशा यहाँ रहे। इसीलिए उसने बहुत अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री भी यहाँ ला रखी। कुछ दिनों यह लोग एक-दूसरे के साथ आनंद से रहे होंगे, फिर उन पर ईश्वरीय प्रकोप हुआ और दोनों ने अपने पाप का समुचित फल पाया।'

'यह कहकर बादशाह का क्रोध दुख में बदल गया और वह अपने बेटे-बेटी की मृत्यु पर विलाप करके रोने लगा। मैं भी उसके साथ रोने लगा। हम लोग बहुत देर तक रोते रहे। फिर उसने मुझे अपने सीने से लगाकर कहा, 'अच्छा हुआ कि ये पापी मर गए। अब तुम ही मेरे पुत्र और मेरे उत्तराधिकारी हो।'

'फिर मैं और मेरा चाचा मृतक शहजादे की याद करके रोने लगे। कुछ देर बाद हम लोग सीढ़ी से ऊपर चढ़ आए और दरवाजा बंद करके उस पर मिट्टी डालकर बाहर आ गए। जब हम लोग राजमहल के पास पहुँचे तो हमने देखा कि फौजियों के घोड़ों के दौड़ने से उड़ी हुई धूल से आकाश अटा जा रहा है और युद्ध के बाजों की ध्वनि से कान फटे जा रहे हैं। मालूम हुआ कि मेरे पिता का वही मंत्री जिसने मेरा राज्य हड़प लिया था एक बड़ी सेना लेकर मेरे चाचा के राज्य पर भी चढ़ आया है। मेरे चाचा की सेना उसकी सेना से कम थी। उसकी सेना ने बगैर किसी कठिनाई के राजधानी और महल पर अधिकार कर लिया। मेरे चाचा ने अपने अधिकार की रक्षा का भरसक प्रयत्न किया और युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ा। फिर भी वह सफल न हुआ और युद्ध में मारा गया। उसके मरने के बाद भी मैं शत्रु का सामना करता रहा और कुछ समय तक युद्ध भूमि में डटा रहा किंतु जब देखा कि बिल्कुल घिर गया हूँ तो निकल भागने की सोची। मंत्री की सेना के एक सरदार ने मुझे पहचाना और पुराने बादशाह की नमकहलाली के खयाल से मुझे बच निकलने का अवसर दे दिया।

'मैंने युद्धभूमि से निकलकर पहला काम तो यह किया कि दाढ़ी-मूँछें और भवें सफाचट करवा दीं ताकि दुश्मन मुझे पहचान न सके और फकीर के कपड़े पहन लिए। फिर बड़े कष्ट उठाता हुआ अनजाने रास्तों से होकर अपने चाचा के राज्य के बाहर निकला। फिर कई नगरों में फकीर बन कर घूमता रहा। घूमता-घामता मैं अति प्रतापी, दयावान, दीनवत्सल, न्यायप्रिय खलीफा हारूँ रशीद की राजधानी में आ पहुँचा। मेरा इरादा था कि मैं उदारमना खलीफा की सेवा में पहुँच कर अपनी व्यथा कथा सुनाऊँ। किंतु जब इस नगर में पहुँचा तो शाम ढल चुकी थी। मैं इस चिंता में आगे बढ़ा कि कहीं ठिकाना मिले तो रात व्यतीत करने का प्रबंध करूँ।

'कुछ दूर जाने पर मुझे यह दूसरा फकीर मिला। उसने मेरा अभिवादन किया। मैंने उसके अभिवादन का उत्तर देकर कहा कि तुम भी मेरी तरह परदेसी लगते हो। उसने कहा कि हाँ, मैं भी अभी-अभी इस नगर में आया हूँ। हम लोग बातें कर ही रहे थे कि यह तीसरा फकीर भी आ गया और हम दोनों का अभिवादन करके पास बैठ गया। उसने भी कहा कि मैं

परदेसी हूँ और इस नगर में अभी आया हूँ। हम लोग चूँकि एक ही वेश में थे और तीनों की एक-सी दशा थी इसलिए हमने तय किया कि भाइयों की तरह मिल कर रहें और जहाँ जाएँ एक साथ ही जाएँ।

'हम लोग इस चिंता में निमग्न हो गए कि रात कहाँ बिताएँ क्योंकि हम तीनों में कोई भी यहाँ के किसी निवासी को नहीं जानता था न कभी पहले यहाँ आया था। अपने सौभाग्य से हम लोग घूमते-फिरते तुम्हारे दरवाजे पर आ निकले। तुमने भोजन और मनोरंजन से हमारा चित्त प्रसन्न किया इसके लिए हम सदा के लिए तुम्हारे आभारी रहेंगे। यही मेरा वृत्तांत है जिसे मैंने पूरी तरह बता दिया है।'

जुबैदा ने कहा कि हमने तुम्हें क्षमा किया और तुम जा सकते हो। किंतु फकीर ने कहा कि अगर तुम अनुमति दो तो मैं भी एक ओर बैठकर अपने दोनों साथियों की राम कहानी सुन लूँ, और इन तीन व्यापारियों की आप बीती भी सुन लूँ। इसके बाद मैं आपके घर से चला जाऊँगा। जुबैदा ने उसे एक ओर बैठकर दूसरों का वृत्तांत सुनने की अनुमति दे दी। वह मजदूर के पास जा बैठा।

किस्सा दूसरे फकीर का

अभी पहले फकीर की अद्‌भुत आप बीती सुनकर पैदा होने वाले आश्चर्य से लोग उबरे नहीं थे कि जुबैदा ने दूसरे फकीर से कहा कि तुम बताओ कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। उसने कहा कि आपकी आज्ञानुसार मैं आप को बताऊँगा कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मेरी आँख कैसे फूटी। मैं एक बड़े राजा का पुत्र था। बाल्यकाल ही से मेरी विद्यार्जन में गहरी रुचि थी। अतएव मेरे पिता ने दूर-दूर से प्रख्यात शिक्षक बुलाकर मेरी शिक्षा के लिए रखे। थोड़े ही समय में मैंने न केवल लिखना-पढ़ना सीख लिया बल्कि कुरान शरीफ भी कंठस्थ कर लिया। इसके अतिरिक्त नबी के कथनों यानी हदीसों और धर्म और दर्शनशास्त्र की शिक्षा भी प्राप्त कर ली। इसके अतिरिक्त भाँति-भाँति के कला- कौशल भी सीख लिए और इतिहास, पहेली और मनोरंजन वार्ता में भी पारंगत हो गया। मैंने काव्यशास्त्र और गणित में भी अच्छा अभ्यास कर लिया जैसा एक राजकुमार होने के नाते मुझसे आशा की जाती थी। इन सबके साथ ही मैंने सुलेखन में भी दक्षता प्राप्त कर ली और अरबी लिपि की सातों लेखन पद्धतियों का मुझे ऐसा अभ्यास हो गया कि मेरे जैसा सुलेखक दूर-दूर तक नहीं पाया जाता था।

इतने गुणों और कौशलों को प्राप्त करने पर भी मैं अपने दुर्भाग्य के लेख को न मिटा सका और इस दुरवस्था में पहुँच गया जो तुम लोग देख रही हो। हुआ यह कि मेरे विद्यार्जन और कला-कौशल में पारंगत होने की ख्याति जब दूर-दूर पहुँची तो हिंदोस्तान के बादशाह ने मुझे देखने की इच्छा प्रकट की। उसने मुझे भेंट करने के लिए एक दूत के हाथ बहुत-सी बहुमूल्य वस्तुएँ भेजीं और संदेशा भिजवाया कि मैं जाकर उससे मिलूँ। मेरे पिता इस बात से बड़े प्रसन्न हुए क्योंकि एक तो एक महान सम्राट से उनके संबंध बन रहे थे, फिर राजकुमार होने के नाते मुझे देश-देश की जानकारी और राजाओं-महाराजाओं से मेल-जोल बढ़ाना ही चाहिए था।

अतएव मैं अपने पिता की आज्ञानुसार थोड़ी-सी यात्रा की सामग्री और कुछ चुने हुए सेवक लेकर हिंदोस्तान की ओर रवाना हुआ क्योंकि बड़ी सेना ले आने की न तो आवश्यकता ही थी न यह बात उचित ही होती। कुछ दिन तक चलने के बाद हम लोगों को पचास के लगभग घुड़सवार डाकुओं ने घेर लिया और सबसे पहले वे दस घोड़े पकड़ लिए जिन पर मेरे पिता की ओर से हिंदोस्तान के बादशाह को भेंट में दी जाने वाली बहुमूल्य वस्तुएँ लदी थीं। मेरे सेवकों ने कुछ देर तक डाकुओं का सामना किया किंतु हार गए। मैंने यह सोचकर कि डाकुओं पर रोब पड़ेगा, उनसे कहा कि मैं हिंदोस्तान के बादशाह का दूत हूँ। उसने घृणापूर्वक कहा, हमें हिंदोस्तान के बादशाह की क्या परवा है; हम न तो उसके शासित देश में रहते हैं न उसके नौकर हैं। फिर उन डाकुओं ने हम लोगों पर आक्रमण किया। हम भी कुछ देर तक लड़े लेकिन उनका क्या सामना करते। मेरे कई साथी मारे गए और मैं भी घायल हो गया और मेरा घोड़ा भी। नितांत मैं जान बचाकर अपने घोड़े पर भाग निकला और डाकुओं की पहुँच से दूर हो गया। कुछ दूर तक दौड़ने के बाद मेरा घोड़ा भी थकन और घावों के कारण गिर कर मर गया। मैंने भगवान को धन्यवाद

दिया कि माल-असबाब जाता रहा लेकिन जान तो बच गई।

किंतु मैं नितांत अकेला और द्रव्यहीन था। यह डर भी था कि कहीं डाकुओं ने देख लिया तो बगैर जान से मारे न रहेंगे। इसलिए किसी तरह कपड़ों की पट्टी फाड़कर अपने घाव बाँधे और एक ओर को चल दिया। शाम को एक पहाड़ की गुफा के पास पहुँचा और रात उसी गुफा में बिताई। सुबह को उठा, जंगली फल खाकर भूख मिटाई और चल पड़ा। कई दिन तक इसी तरह भटकता रहा। फिर एक बड़े नगर में पहुँच गया जो बड़ा सुशोभित लग रहा था। वहाँ एक नदी भी बहती थी जिससे वह प्रदेश हरा-भरा और धन- धान्य से पूर्ण था। मैं नंगे और बिवाइयों से फटे पाँव, बढ़े बालों और दाढ़ी तथा गंदे फटे वस्त्रों के साथ उस नगर में गया कि मालूम करूँ यह कौन-सा देश है और यहाँ से मेरा देश कितना दूर है।

यह सोचकर मैं एक आदमी के पास, जो सरकारी लिपिक था और शहर में आने-जाने वालों का हिसाब रखता था गया। उसने मेरा वृत्तांत पूछा और मैंने सब कुछ जो मुझ पर बीता था उसे बताया। उसने धैर्यपूर्वक मेरी बातें सुनीं किंतु फिर उसने जो कुछ कहा उससे मेरे हृदय में शांति आने की जगह भय भर गया। उसने कहा कि तुमने मुझे अपना पूरा हाल बता दिया है सो तो ठीक है लेकिन यहाँ के किसी और व्यक्ति को कुछ न बताना क्योंकि यहाँ का बादशाह तुम्हारे पिता का शत्रु है और उसे तुम्हारा पता चला तो तुम्हारे साथ बुरी बीतेगी।

मैंने उस बूढ़े लिपिक को बहुत धन्यवाद दिया कि उसने मुझ पर दया दिखाई और मुझे खतरे से चेतावनी दे दी। मैंने उससे वादा किया, अब मैं यहाँ के किसी आदमी को अपनी सच्ची कहानी नहीं बताऊँगा। वह लिपिक यह सुनकर प्रसन्न हुआ। मेरा भूख से बुरा हाल हो रहा था इसलिए उसने अपने घर से खाना लाकर मुझे खिलाया और वहीं एक कोने में लेटकर थकावट दूर करने को कहा। मैंने ऐसा ही किया। जब मेरे शरीर में शक्ति और स्फूर्ति आ गई तो मैं फिर उसके पास गया। उसने पूछा कि तुम्हें कोई हुनर ऐसा आता है जिससे तुम अपनी जीविका चला सको। मैंने साहित्य, काव्य, कला, व्याकरण, सुलेखन आदि की निपुणता की बात कही तो उसने कहा, यह सब यहाँ बेकार है, यहाँ विद्या की कोई पूछ नहीं, तुम्हें इस विद्या से एक पैसा भी यहाँ नहीं मिलेगा।

उसने कहा कि तुम शरीर से तगड़े हो, तुम्हें चाहिए कि एक जाँघिया पहन कर जंगल में चले जाओ और लकड़ियाँ काट कर शहर में लाकर बेचा करो। उससे तुम्हें इतनी आय तो हो ही जाएगी कि किसी का आश्रय लिए बगैर अपना खर्च चला लो। कुछ दिन इसी प्रकार दुख उठाकर मेहनत करके समय बिताओ। आशा है कि इसके बाद भगवान तुम पर कृपा करेगा और तुम फिर सुख-समृद्धि प्राप्त करोगे। मैं तुम्हारी इतनी सहायता कर दूँगा कि तुम्हें एक कुल्हाड़ी और एक रस्सी दे दूँ।

मरता क्या न करता। यद्यपि यह कार्य मेरे योग्य किसी प्रकार नहीं था फिर भी मैंने यह करना स्वीकार कर लिया क्योंकि कोई और रास्ता नही था। दूसरे दिन लिपिक ने मुझे एक जाँघिया, एक कुल्हाड़ी और एक रस्सा लाकर दे दिया और मेरा परिचय थोड़े- से

लकड़हारों से करा दिया और कहा कि इस आदमी को भी लकड़ी काटने के लिए साथ ले जाया करो। मैं लकड़हारों के साथ जंगल में जाता और लकड़ियाँ काटकर उनका गट्ठा बना कर शहर में ला बेचने लगा। मुझे एक गट्ठे का मूल्य एक स्वर्ण मुद्रा मिलती थी। यद्यपि जंगल उस शहर से दूर था तथापि नगर निवासी बड़े आलसी थे और श्रम करने के अभ्यस्त न थे इसलिए लकड़ी शहर में बहुत महँगी मिलती थी। कुछ ही दिनों में मेरे पास काफी स्वर्ण मुद्राएँ हो गईं जिनमें से कुछ अपने उपकारी लिपिक को मैंने दे दीं।

इसी प्रकार मेरा एक वर्ष व्यतीत हो गया। एक दिन लकड़ी काटते-काटते अपने साधारण स्थान से आगे बढ़ गया। आगे का जंगल मुझे और अच्छा लगा। मैंने एक वृक्ष काटा। जब उसकी डालें और तना काट चुका तो मैंने उसकी जड़ भी काट कर ले जानी चाही। कुल्हाड़ी चलाते-चलाते मुझे एक लोहे का कड़ा दिखाई दिया। और मिट्टी हटाई तो देखा कि कड़ा लोहे के दरवाजे में लगा है।

मैंने जोर लगा कर उसे ऊपर उठाया तो नीचे जाती हुई सीढ़ियाँ दिखाई दीं। मैं रस्सा और कुल्हाड़ी सहित नीचे उतर गया। नीचे एक बड़ा मकान था जिसमें ऐसा प्रकाश हो रहा था जैसे वह धरती के ऊपर बना हो। मैं आगे बढ़ता गया तो देखा कि सामने एक बारादरी है जिसके पाए संगे-मूसा के बने हुए हैं और खंभे नीचे से ऊपर तक खालिस सोने के बने हैं। बारादरी में एक अत्यंत रूपवती स्त्री बैठी थी। मैंने उसे देखा तो ठगा-सा रह गया। मैंने उसके निकट जाकर अभिवादन किया।

स्त्री ने मुझ से पूछा, 'तुम कौन हो, मनुष्य या जिन्न?' मैंने सिर उठा कर कहा, 'हे सुंदरी, मैं मनुष्य हूँ, जिन्न नहीं हूँ।' वह स्त्री शोकयुक्त स्वर में बोली, 'तुम मनुष्य हो तो यहाँ मरने के लिए क्यों आए हो; मैं यहाँ पच्चीस वर्षों से रह रही हूँ और इस काल में तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य नहीं देख सकी हूँ।' उस स्त्री के अनुपम रूप के साथ ही उसके स्वर की मधुरता का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ देर तक मेरे मुँह से कोई बात नहीं निकली।

कुछ देर में स्वस्थ हो कर मैंने उस स्त्री से कहा, 'सुंदरी, मुझे तुम्हारा कुछ हाल नहीं मालूम किंतु तुम्हारे दर्शन मात्र से मुझे अतीव सुख मिला है और मैं अपना सारा दुख-दर्द भूल गया हूँ। मेरी अतीव इच्छा है कि तुम्हें यहाँ से छुड़ा दूँ क्योंकि यह स्पष्ट है कि तुम यहाँ सुखी नहीं हो।' और मैंने अपना सारा जीवन वृत्त उस स्त्री के समक्ष वर्णन किया। मेरा पूरा हाल सुनने के बाद वह स्त्री ठंडी साँस भर कर बोली, 'शहजादे, तुम ठीक कहते हो। यह मकान जादू का है और यहाँ प्रचुर धन और समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं फिर भी मुझे यहाँ रहना तनिक भी पसंद नही। तुमने आबनूस के द्वीपों के बादशाह अबू तैमुरस का नाम सुना होगा। मैं उसकी बेटी हूँ। मेरे पिता ने मेरा विवाह अपने भतीजे के साथ कर दिया। जब मैं शादी के बाद अपने पति के घर जाने लगी तो रास्ते में मुझे एक दुष्ट जिन्न ने उड़ा लिया। मैं भय के कारण लगभग तीन पहर तक अचेत रही। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को इस मकान में पाया। अब केवल उसी जिन्न के साथ मेरा उठना-बैठना है। यह सारा धन और सुख-सामग्री जो यहाँ दिखाई देती है मुझे कुछ भी संतोष नहीं दे

पाती। हर दसवें दिन जिन्न यहाँ आता है और मेरे साथ रात बिताता है। उसका विवाह पहले तो उसी की जाति की एक स्त्री से हो चुका है और वह अपनी स्त्री के भय से मेरे पास इससे अधिक नहीं रह पाता। दस दिन के अंदर यदि किसी दिन मैं उसे बुलाना चाहूँ तो उसका भी प्रबंध उसने कर दिया है। यदि मैं यह इधर रखा हुआ जादू का यंत्र छू दूँ तो उसे खबर हो जाती है और वह आ जाता है।'

स्त्री ने आगे कहा, 'उस जिन्न को यहाँ से गए चार दिन हो गए है। वह छह दिन बाद फिर यहाँ आएगा। यदि तुम्हें यहाँ की सुख-सुविधाएँ और मेरा साथ पसंद है तो पाँच दिनों तक यहाँ आराम से रह सकते हो, मैं तुम्हारा हर प्रकार से आदर-सत्कार करूँगी और तुम्हे सुख पहुँचाऊँगी।'

मैं उसकी बातें सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी कि ऐसी सुंदरी के साथ रहूँ। मैंने बड़ी प्रसन्नता से यह बात स्वीकार कर ली। वह मुझे एक स्नानागार तक ले गई। मैंने अंदर जाकर अच्छी तरह स्नान किया और बाहर निकला। वह मेरे पहनने के लिए जरी के वस्त्र ले आई। मैंने वह शाही पोशाक पहनी तो वह मुझे देखकर मुझ पर और भी कृपालु हो गई। फिर एक सजे हुए दालान में उसने मुझे एक सुनहरे कमख्वाब की मसनद पर बिठाया। फिर वह नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लाई और हम दोनों ने साथ बैठकर भोजन किया। दिन भर हम लोग इधर-उधर की बातें करते रहे। रात के भोजन के बाद उसने अपने साथ मुझे सुलाया। सुबह होने पर उसने और भी स्वादिष्ट व्यंजन बनाए और मेरे विशेष सत्कार के लिए पुरानी शराब की बोतलें ले आई। मैं बहुत-सी शराब पीकर मदमस्त हो गया।

मैंने उससे कहा, 'प्रिये, तुम पच्चीस वर्षों से इस मकान में जिसे कब्र कहना चाहिए बंद हो। यह बात ठीक नहीं है। तुम मेरे साथ यहाँ से निकल चलो और बाहर की ताजा हवा खाओ। इस दिखावे के ऐश-आराम को छोड़ो क्योंकि यह जादू से अधिक कुछ नहीं है। तुम मेरे साथ चलो।'

वह सुंदरी बोली, 'ऐसी बातें जिह्वा पर भी न लाना। तुम जिसे सूर्य का प्रकाश कहते हो वह मैं भूल चुकी हूँ। मुझे यहीं रहने की आदत पड़ गई है, मुझे यहीं रहने दो। एक दिन छोड़कर जबकि वह जिन्न यहाँ आता है, तुम बाकी नौ दिन यहाँ आराम से रह सकते हो।'

मुझे नशा चढ़ गया था। मैंने कहा, 'तुम उस जिन्न से इतना क्यों डरती हो। मैं तुम्हारे लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ। मैं इस जादू के यंत्र को मय उसकी जादुई लिखावट के तोड़-फोड़ कर बराबर कर दूँगा। अपने जिन्न को आने दो। मैं भी तो देखूँ उसमें कितनी ताकत हैं। मैंने निश्चय कर लिया है कि संसार के सारे जिन्नों का अंत कर दूँगा और सबसे पहले इसी जिन्न को मारूँगा जिसने तुम्हें कैद कर रखा है।'

वह स्त्री भली भाँति जानती थी कि मेरी मूर्खता का क्या फल होगा। उसने मुझे बहुत समझाया, हर तरह रोका, कसमें दीं कि यंत्र को छुआ तो हम दोनों मारे जाएँगे क्योंकि

उस जिन्न की शक्ति को मैं जानती हूँ, तुम नहीं जानते।

मैं नशे में धुत था इसलिए मैंने उसकी चेतावनी को अनसुना कर दिया और ठोकर मार कर जादू के यंत्र को तोड़ डाला। यकायक ही सारा मकान काँपने लगा और एक महाभयानक शब्द हुआ। सारी रोशनियाँ बुझ गईं और अंधकार छा गया जिसमें रह-रह कर बिजली चमकने लगती थी। यह हाल देखकर मेरा नशा हिरन हो गया। मैंने सोचा कि वास्तव में मुझसे भयानक भूल हो गई। मैंने अब उस सुंदरी से पूछा कि क्या करना चाहिए। उसने कहा कि मुझे अपने प्राण जाने का भय नहीं, मैं तो वैसे ही दुखी थी। तुम्हारी जान को जरूर खतरा है और इसी से मैं अत्यंत व्याकुल हूँ। तुमने खुद ही अपनी जान के लिए यह आफत मोल ली। अब यहाँ से तुरंत भाग कर जान बचाओ।

यह सुनकर मैं ऐसा बेतहाशा भागा कि अपनी कुल्हाड़ी और रस्सा भी वहीं भूल गया और गिरते-पड़ते उस सीढ़ी तक आया जिससे उतर कर उस मकान में गया था। इतने में वह जिन्न भी अत्यंत क्रुद्ध होकर वहाँ आ पहुँचा और गरज कर स्त्री से पूछने लगा कि तूने मुझे क्यों बुलाया है। वह डर के मारे पत्ते की तरह काँपने लगी और बोली, मैंने तुम्हें बुलाया नहीं है। मैंने इस बोतल से थोड़ी-सी मदिरा पी ली थी। मुझ पर ऐसा नशा चढ़ा कि हाथ-पाँव काबू में न रहे। नशे की हालत में मैंने इस यंत्र पर पाँव रख दिया जिससे यह टूट गया। जिन्न यह सुनकर और भी कुपित हुआ और बोला, तू झूठी, मक्कार और दुराचारिणी है। इस कुल्हाड़ी और रस्से को यहाँ कौन लाया है? स्त्री बोली, मैंने तो इन्हें अभी-अभी देखा है। तुम भागते-दौड़ते आए हो, इसीलिए तुम्हारे साथ लगी हुई यह चीजें आ गई होंगी। तुमने अपनी जल्दी में ध्यान न रखा होगा कि तुम्हारे पास कुल्हाड़ी और रस्सा भी है।

इस पर जिन्न का क्रोध और भी बढ़ा। उसने स्त्री को भूमि पर पटक दिया और उसे निर्दयता से पीटने लगा और साथ में गालियाँ भी देने लगा। स्त्री तड़पने और रोने-चिल्लाने लगी। उसका करुण क्रंदन मुझसे नहीं सुना जाता था। लेकिन मैं कुछ कर भी नहीं सकता था। मैंने स्त्री के दिए वस्त्र उतारे और वही फटे-पुराने लकड़हारों के वस्त्र पहन लिए जिन्हें पहन कर मैं पिछले दिन आया था। फिर मैं सीढ़ी से चढ़कर ऊपर आ गया। मैं अपने का बराबर कोसता जा रहा था कि मेरी मूर्खता और जिद्दीपन के कारण उसे बेचारी स्त्री पर ऐसा अत्याचार हो रहा है। बाहर आकर मैंने फिर सीढ़ी के मुँह पर लोहे का दरवाजा रखा और उस पर मिट्टी डाल कर उसे छुपा दिया।

फिर मैंने पिछले दिन की जमा की हुई लकड़ियाँ किसी तरह बाँधीं और नगर में आकर लकड़ी का गट्ठा बेच दिया। फिर भी मैं बराबर सोच रहा था कि न जाने उस सुंदर स्त्री पर क्या बीत रही होगी। लकड़ी बेचकर जब मैं अपने निवास स्थान पर आया तो लिपिक मुझे देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि तुम कल नहीं आए तो मुझे बड़ी चिंता हो गई थी, मैंने सोचा कि कहीं ऐसा तो नही है कि यहाँ के बादशाह को तुम्हारे यहाँ पर रहने की बात मालूम हो गई हो और उसने तुम्हें पकड़वा मँगाया हो, भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि तुम सकुशल वापस गए हो।

मैंने उसकी बातों पर उसे हृदय से धन्यवाद दिया किंतु यह न बताया कि कल मेरे साथ क्या बीती थी। मैं अपने कमरे में चला गया और फिर उसी शोक में निमग्न हो गया कि मैंने अपने दुराग्रह से अपनी उपकारिणी स्त्री को कैसा दुख पहुँचाया और अगर मैं वह यंत्र न तोड़ डालता तो उस राजकुमारी पर भी दुख न पड़ता और मैं पाँच दिन बड़े सुख से रहता। मैं यह सोच ही रहा था कि लिपिक मेरे पास आकर कहने लगा कि एक बूढ़ा एक कुल्हाड़ी और रस्सा लेकर आया है और कहता है कि तुम शायद इन्हें जंगल में भूल आए थे। लेकिन वह इन चीजों को तभी वापस करेगा जब तुम बाहर चलकर उसे इनकी पहचान बताओगे।

यह सुनकर मेरा चेहरा पीला पड़ गया और मैं भय के कारण सिर से पाँव तक थर-थर काँपने लगा। लिपिक ने मुझ से पूछा, यह तुम्हें क्या हो रहा है। मैं अभी उसे उत्तर भी नहीं दे सका था कि कमरे की धरती फट गई और बूढ़ा जिन्न मेरे बाहर आने की राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सी लिए वहीं आ गया। उसने मुझ से कहा, 'तू जानता है मैं कौन हूँ? मैं ऐसा-वैसा जिन्न नहीं हूँ, स्वयं इबलीस (शैतान) का दौहित्र हूँ। तू जानता है कि इबलीस सारे जिन्नों और दैत्यों का सरताज है। बोल, यह कुल्हाड़ी और यह रस्सा तेरे है या नहीं?

मैं उसे देखकर ऐसा भयभीत हुआ कि मेरी वाक शक्ति ही समाप्त-सी हो गई और मैं अचेत होकर गिरने लगा। जिन्न ने मेरे होश में आने की प्रतीक्षा नहीं की। वह मुझे कमर से पकड़ कर ले उड़ा और दो क्षण में ही मैं इतने ऊँचे पर्वत पर ले जा कर रख दिया जिस पर चढ़ने में महीनों लगते। फिर उसने पहाड़ की चोटी पर पाँव पटका। इससे धरती फट गई। जिन्न मुझे लेकर उस गड्ढे में उतर गया और पलक झपकते ही मुझे उठाए हुए उस मकान में आ गया जहाँ मैंने राजकुमारी के साथ पिछला दिन बिताया था।

यह देख कर मेरे दुख का पाराबार न रहा कि राजकुमारी अब भी जमीन पर पड़ी तड़प रही थी और अधमरी-सी अवस्था में चीख-पुकार कर रही थी। उस जिन्न ने कहा, देख, यह कुलटा तुझ पर मोहित है। स्त्री ने मुझ पर सरसरी निगाह डालकर कहा कि मैं इसे बिल्कुल नहीं जानती, इससे पहले मैंने कभी इसे देखा ही नहीं। जिन्न बोला, तू झूठी है जो कहती है इसे कभी नहीं देखा, इसी आदमी के कारण तेरी जान जाएगी। स्त्री ने कहा कि तुम किसी न किसी बहाने से इसे मार डालना चाहते हो, इसी से मुझ से झूठ कहलवा रहे हो।

जिन्न ने कहा कि अगर तू वास्तव में इससे अपरिचित है तो तलवार उठा और इसका सिर काट दे। राजकुमारी ने कहा, मुझ से तलवार कहाँ उठेगी, इसक अतिरिक्त यह कैसे हो सकता है कि मैं किसी निर्दोष व्यक्ति के प्राण लूँ। जिन्न ने कहा कि ऐसी हालत में भी तू इसे मारने से इनकार करती है, इसी बात से तेरा पापाचार सिद्ध हो जाता है। फिर जिन्न ने मुझ से पूछा कि तू इस स्त्री को जानता है या नहीं। मैंने जी में सोचा कि राजकुमारी स्त्री होकर भी इतना साहस दिखा रही है, मैं मर्द होकर यदि इसका भेद खोलूँ तो इससे अधिक अशोभनीय क्या होगा। इसलिए मैंने भी कहा कि मैंने इससे पहले इस स्त्री को

कभी नहीं देखा है। जिन्न बोला, अगर तू सच कहता है तो उठा तलवार और काट दे इसका सिर।

मैं मन में सोचने लगा कि यह तो अत्यंत अनुचित बात होगी कि उस स्त्री को जो मेरे कारण इस दुख में पड़ी थी अपने हाथ से मारूँ। स्त्री ने मुझ से संकेत से कहा कि तुम सोच-विचार न करो, मेरी जान बचने ही की नहीं है, तुम अपने हाथ से मुझे मार डालो, और इस प्रकार अपनी जान बचाओ, मुझे इसी में संतोष मिलेगा। किंतु मैं ऐसा न कर सका। मैं दो पग पीछे हट गया और तलवार हाथ से फेंक कर जिन्न से बोला, तुमने मुझे बिल्कुल कायर पुरुष समझ लिया है कि तुम्हारे कहने भर से किसी अपरिचिता को मार डालूँ। फिर इस सुंदरी की तो तुमने वैसे ही दुर्दशा कर रखी है, मैं इस पर क्या हाथ उठाऊँ। तुम्हें अधिकार है कि जो चाहो वह करो किंतु इस प्रकार का काम मुझसे न होगा।

जिन्न ने कहा, तुम दोनों ही मेरे क्रोध को निरंतर बढ़ा रहे हो। तुम शायद यह नहीं जानते कि मुझ में कितनी शक्ति है।' यह कहकर उस अत्याचारी ने स्त्री के दोनों हाथ काट डाले। वह अधमरी तो पहले ही से हो रही थी, यह चोट खाकर तुरंत मर गई। मैं यह देखकर मूर्छित हो गया। कुछ होश आया तो मैंने जिन्न से कहा कि अब तुम मुझे भी मार डालो और अपना क्रोध शांत करो।

जिन्न ने कहा, हम लोगों का नियम है कि जब किसी को व्यभिचार का दोषी पाते हैं तो उसका वध कर देते हैं। तुम पर मुझे व्यभिचार का संदेह भर है। इसलिए तुझे मारूँगा नहीं, किंतु मानव नहीं रहने दूँगा। अब तू कुत्ता, गधा, सूअर या जो भी पशु-पक्षी बनना चाहे बता दे, मैं तुझे वही बना दूँगा। मैंने उसका क्रोध कुछ कम देखा तो बोला, 'जिन्नों के सरताज, मेरी प्रार्थना है कि एक भले आदमी ने अपने बुरा करने वाले के साथ जैसे उपकार किया था वैसे ही तू मुझे क्षमा कर दे और मुझे आदमी ही रहने दे।' जिन्न ने कहा, यह भले आदमी का क्या किस्सा है। मैंने बताना शुरू किया।

किस्सा भले आदमी और ईर्ष्यालु पुरुष का

किसी नगर में दो आदमियों का घर एक दूसरे से लगा हुआ था। उनमें से एक पड़ोसी दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष रखता था। भले मानस ने सोचा कि मकान छोड़कर कहीं जा बसूँ क्योंकि मैं इस आदमी के प्रति उपकार करता हूँ और यह मुझ से वैर ही रखे जाता है। अतएव वह वहाँ से कुछ दूर पर बसे दूसरे नगर में एक अच्छा मकान खरीद कर जिसमें एक अंधा कुआँ भी था, रहने लगा। उसने फकीरों का बाना भी ओढ़ लिया और रात-दिन भगवान के भजन में समय बिताने लगा। उसने अपने मकान में कई कक्ष बनवाए जिनमें वह साधु-संतों को ठहराता और भोजन दिया करता था। इससे वह नगर में बहुत प्रसिद्ध हो गया और लोग उससे मिलने को आने लगे।

उसकी प्रसिद्धि शीघ्र ही बढ़ गई। दूर-दूर से लोग आते और अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करने के लिए उससे निवेदन करते। उसके चमत्कारों की ख्याति उस नगर में भी पहुँची जहाँ वह पहले रहा करता था। उसके पुराने पड़ोसी को यह सुनकर और भी ईर्ष्या हुई। उसने निश्चय किया कि उसी के मकान में जाकर उसे मार डालूँ। वह जाकर उसके घर पर मिला। संत पुरुष ने अपने पुराने पड़ोसी की बड़ी अभ्यर्थना की। ईर्ष्यालु व्यक्ति ने यह झूठ कहा कि मुझ पर एक विपत्ति पड़ी है जिसके निवारण के लिए मैं तुम से प्रार्थना करने आया हूँ, किंतु मैं इस कठिनाई को गुप्त रखना चाहता हूँ और तुम अपने चेलों तथा अन्य साधुओं से कह देना कि जिस समय मैं और तुम बातें कर रहे हो कोई अन्य व्यक्ति पास में भी न आए। संत पुरुष ने ऐसा ही आदेश दे दिया।

अब उस दुष्ट आदमी ने एक झूठ-मूठ का लंबा किस्सा बनाया और संत पुरुष से कहने लगा। फिर उसने कहा कि हम लोग टहलते हुए ही इस किस्से का कहना-सुनना पूरा करें। संत ने वह भी मान लिया। बात करते-करते जब वे कुएँ के पास आए तो दुष्ट मनुष्य ने संत को अचानक धक्का देकर कुएँ में गिरा दिया और स्वयं चुपके से मकान से चलकर भाग खड़ा हुआ। वह अपने जी में बड़ा प्रसन्न था कि यह आदमी जिसकी प्रसिद्धि ने मुझे जला रखा है खत्म हो गया।

किंतु उस संत पुरुष का भाग्य अच्छा था। उस कुएँ में परियाँ रहती थीं जिन्होंने उसके गिरने पर उसे हाथों-हाथ उठा लिया और सुविधापूर्वक एक जगह बिठा दिया। उसे चोट नहीं आई लेकिन परियाँ उसकी दृष्टि से ओझल ही रहीं। वह संत पुरुष सोचने लगा कि इस दशा में मुझे लाने में भगवान की कुछ कृपा ही होगी। थोड़ी देर में उसे ऐसी आवाजें सुनाई देने लगीं जैसे दो आदमी आपस में बातें करते हो। एक ने कहा, 'तुम्हें मालूम है कि यह आदमी कौन है?' दूसरे ने कहा, 'मुझे नहीं मालूम।' पहले ने कहा, 'मैं तुम्हें इसका हाल बताता हूँ। यह अत्यंत सच्चरित्र और शीलवान व्यक्ति है। इसने अपना नगर छोड़कर यहाँ रहना इसलिए शुरू किया कि इसे वहाँ अपने पड़ोसी से जो इससे जलता था उलझना न पड़े। इस नगर में ईश्वर की दया से इसकी ख्याति बहुत बढ़ गई। इस

ख्याति के कारण इसका पुराना पड़ोसी और भी जला और उसने इसे मार डालने का इरादा कर लिया। वह इसके घर आया और इसे बहाने से यहाँ लाकर कुएँ में गिरा दिया। यदि हम लोग इसकी सहायता न करते तो यह मर ही जाता।

पहले ने कहा, 'अब इसका क्या होगा?' दूसरा बोला, 'सब अच्छा होगा। कल इस नगर का बादशाह इसके पास आकर इससे निवेदन करेगा कि यह उस बादशाह की पुत्री के स्वास्थ्य के लिए भगवान से प्रार्थना करे।' पहले ने कहा, 'राजकुमारी को क्या रोग है?' दूसरे ने कहा, 'राजकुमारी पर मैमून नामक जिन्न का पुत्र दिमदिम आसक्त है और वही उसके सिर पर चढ़ा रहता है जिससे राजकुमारी हमेशा बीमार और बदहवास रहती है। उसके हटाने का उपाय बड़ा सरल है। इस संत के घर में एक काली बिल्ली है जिसकी पूँछ की जड़ के पास एक श्वेत हिस्सा है। इस संत को चाहिए कि उस श्वेत भाग से सात बाल उखाड़ कर अपने पास रखे। जब शहजादी इसके पास लाई जाए तो इसे चाहिए कि वे बाल आग में जलाकर उनका धुआँ शहजादी की नाक में पहुँचा दे। इससे वह नीरोग हो जाएगी और आगे भी दिमदिम कभी उनके पास नहीं फटकेगा।'

संत पुरुष ने परियों और उनके साथियों को यह बातचीत सुन कर भली प्रकार याद रखी। रात भर वह कुएँ में रहा। सवेरे जब उजाला हुआ तो उसने देखा कि कुएँ की दीवार में ऊपर से नीचे तक मोखे बने हुए हैं। वह उनके सहारे थोड़ी ही देर में ऊपर आ गया। उसके शिष्य और भक्त जो रात भर उसे खोजते रहे थे उसे देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। उसने उनसे कहा कि मैं संयोगवश कुएँ में गिर गया था लेकिन मुझे चोट नहीं आई।

फिर वह अपने घर में आकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में काली बिल्ली घूमती-फिरती उसके पास से निकली। संत पुरुष को कुएँ में सुनी बातें याद थीं। इसलिए उसने बिल्ली को पकड़ कर उसकी खाल के श्वेत भाग से सात बाल उखाड़ लिए और अपने पास रखे। कुछ काल के पश्चात नगर का बादशाह वहाँ आया। उसने अपनी सैनिक टुकड़ी बाहर छोड़ी और कुछ सरदारों के साथ मकान के अंदर आ गया। संत पुरुष ने आदरपूर्वक उसका स्वागत किया।

बादशाह ने कहा, 'हे योगीराज, आप तो सबके दिलों का हाल जानते हैं। आप तो समझ ही गए होंगे कि मैं क्यों यहाँ आया हूँ।' संत पुरुष ने कहा, 'शायद आपकी बेटी अस्वस्थ है और उसके स्वास्थ्य लाभ की आशा ही से आपने मुझ अकिंचन की कुटिया को पवित्र किया है।' बादशाह ने कहा, 'आपने बिल्कुल ठीक कहा, मैं इसी कारण यहाँ आया हूँ। अगर आपके आशीर्वाद से मेरी बेटी स्वस्थ हो जाए तो मेरी सबसे बड़ी चिंता दूर हो जाए।'

संत पुरुष ने उत्तर दिया, 'आप अपनी बेटी को यहीं बुलवा लें। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि वह स्वस्थ हो जाए और आशा है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार होगी।' बादशाह यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसके आदेश पर राजकुमारी को उसकी सेविकाओं के

साथ वहाँ ले आया गया। शहजादी का चेहरा चादर से अच्छी तरह ढँका हुआ था ताकि उसे कोई देख न सकें। संत पुरुष ने नीचे से चादर का इतना भाग उठाया कि नीचे रखी हुई अँगीठी से उठने वाला धुआँ बाहर न जाए। फिर उसने सात बाल अँगीठी में डाले। धुएँ का राजकुमारी की नाक में पहुँचना था कि मैमून जिन्न का बेटा दिमदिम बड़े जोर से चिल्लाया और तुरंत भाग गया।

जिन्न के जाते ही शहजादी होश में आ गई। वहाँ सँभल कर बैठ गई और अपने को भली-भाँति छिपा कर पूछने लगी कि मैं कहाँ हूँ और यहाँ मुझे कौन लाया है। बादशाह खुशी से फूला न समाया। उसने अपनी बेटी को छाती से लगा लिया और उसकी आँखें चूमने लगा। फिर उसने सम्मानस्वरूप संत पुरुष के हाथ चूमे और अपने सभासदों से राय ली कि इस संत पुरुष के उपकार का बदला किस प्रकार चुकाऊँ। सभासदों ने एकमत होकर कहा कि राजकुमारी का विवाह इसी संतपुरुष के साथ कर देना चाहिए। बादशाह को सभासदों की सलाह पसंद आई और उसने शहजादी का विवाह उसके उपकार कर्ता के साथ कर दिया।

कुछ दिनों बाद बादशाह का प्रमुख अंग मंत्री मर गया और बादशाह ने उसकी जगह अपने दामाद को नियुक्त कर दिया। इसके कुछ समय बाद बादशाह मर गया और चूँकि उस राजकुमारी के अतिरिक्त बादशाह के और कोई संतान नहीं थी अतएव सभी सभासदों और सामंतों की सहमति से उसका दामाद ही राज्य का अधिकारी और नया बादशाह बन गया।

एक दिन वह अपने सरदारों के साथ कहीं जा रहा था कि कुछ दूरी पर उसे अपना पुराना शत्रु दिखाई दिया। नए बादशाह ने अपने मंत्री से चुपके से कहा कि उस आदमी को सहजतापूर्वक मेरे पास ले आओ ताकि वह भयभीत न हो। बादशाह ने उससे कहा, 'मेरे मित्र, तुम्हें इतने दिनों बाद देखकर प्रसन्न हुआ हूँ, तुमने मुझे पहचाना?' वह दुष्ट उसे पहचान कर थर-थर काँपने लगा किंतु बादशाह तो संत पुरुष ही था, उसने उसे एक हजार अशर्फियाँ और कीमती कपड़ों की बीस गाँठें भेंट में देकर उसे सुरक्षापूर्वक उसके घर पहुँचा दिया।

मैंने अपनी कहानी पूरी करके जिन्न से कहा कि उस नेक बादशाह ने तो अपने जानी दुश्मन के साथ यह सलूक किया और तुम मुझ पर तनिक भी दया नहीं करते। किंतु मेरी अनुनय का उस पर कोई प्रभाव न हुआ। उसने कहा मैं तुझे जान से नहीं मार रहा हूँ लेकिन दंड दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा, अब मेरा जादू का खेल देख। यह कहकर उसने मुझे पकड़ा और मुझे लेकर आकाश में इतना ऊँचा उड़ गया कि वहाँ से पृथ्वी एक बादल के टुकड़े जैसी लगती थी। फिर एक क्षण ही में मुझे एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर ले गया। वहाँ उसने एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर उस पर कोई मंत्र पढ़ा और 'बंदर हो जा' कह कर वह मिट्टी मेरे ऊपर छिड़क दी और गायब हो गया।

मैं अपने को बंदर के रूप में पाकर अत्यंत दुखित हुआ। मुझे यह भी मालूम न था कि मैं

कहाँ हूँ और वहाँ से मेरा देश किस दिशा में और कितनी दूर है। खैर मैं धीरे-धीरे पहाड़ से उतर कर मैदान में आया और वहाँ भी मैंने सारा प्रदेश निर्जन देखा। अटकल से एक ओर को चलने लगा। एक मास के अंत में मैं समुद्र तट पर पहुँच गया। समुद्र बिल्कुल शांत था और तट से कुछ दूरी पर एक जहाज लंगर डाले खड़ा था।

मैंने जहाज पर जाना ही उचित समझा। किनारे के एक पेड़ से दो टहनियाँ तोड़ीं और उन्हीं के सहारे तैरता हुआ जहाज पर पहुँच गया। जहाज की रस्सी के सहारे मैं जहाज के अंदर पहुँच गया।

जहाज में सवार लोग मुझे देखकर बड़े आश्चर्य में पड़े कि जहाज में बंदर कैसे आ गया। वे लोग मेरे आगमन को अपशकुन समझे और मेरा वध करने की बात करने लगे। एक ने कहा, अभी लट्ठ ला कर इसका सर फोड़ देता हूँ। दूसरे ने कहा, नहीं, यह ऐसे नहीं मरेगा, मैं अभी तीर छोड़कर इनका अंत किए देता हूँ। तीसरे ने मुझे समुद्र में डुबो देने की सलाह दी। मैं उन्हें कैसे बताता कि मैं कौन हूँ, जान बचा कर इधर-उधर भागने लगा।

अंत में सब ओर से निराश होकर जहाज के कप्तान के पास गया और उसके पाँवों पर लौटने लगा। मैंने उसका दामन पकड़ लिया और आँखों में आँसू भर कर चिंचियाने लगा जैसे उससे प्राण रक्षा की भीख माँग रहा हूँ। उसे मुझ पर दया आई और उसने मेरे त्रासदाताओं को डाँट कर भगा दिया और कठोर चेतावनी दी कि इस बंदर को न तो कोई दुख दे और न कोई इसके साथ छेड़छाड़ करे। उसने मुझे ऐसी सुरक्षा प्रदान की कि मुझे जहाज पर कोई दुख न हुआ। मैं यद्यपि बोल नहीं पाता था तथापि समझता तो सब कुछ था और उसकी बातें समझ कर ऐसे संकेत करता था कि उसका बड़ा मनोरंजन होता था। धीरे-धीरे जहाज पर सवार सभी लोग मुझ पर कृपालु हो गए और मुझे प्यार करने लगे।

पचास दिन की यात्रा के बाद जहाज एक बड़े व्यापार केंद्र में पहुँचा। यह बहुत बड़ा नगर था। उसमें बड़े-बड़े मकान थे। जहाज ने मल्लाहों ने जहाज को बंदरगाह में ठहराया। कुछ समय में ही नगर के बड़े-बड़े व्यापारी जहाज को देखकर व्यापार की आशा में उस पर पहुँच गए। जहाज पर उनके कई मित्र व्यापारी थे। यह मित्र आपस की बातें करने लगे और यात्रा का हाल कहने-सुनने लगे क्योंकि जहाज बहुत से देशों से घूमता हुआ आया था।

नगर के व्यापारियों में कई ऐसे भी थे जो वहाँ के ऐश्वर्यवान बादशाह के दरबार में आते-जाते थे। उन्होंने कहा कि हमारा बादशाह तुम्हारे जहाज के यहाँ आने से बड़ा प्रसन्न हुआ है। इसका कारण यह है कि उसे आशा है कि तुम लोगों में कोई सुलेखक भी होगा। बात यह है कि हमारा मंत्री हाल ही में मर गया है। वह अत्यंत निपुण सुलेखकर्ता था। बादशाह गुणियों का बड़ा सम्मान करता है और चाहता है कि उस मंत्री जैसा सुलेखक उसे मिले, इसी चिंता में वह हमेशा रहता है। इसलिए उसने यह कागज भेजा है जिस पर सुलेखन के लिए रेखाएँ खिंची हैं। बादशाह चाहता है कि अगर कोई आदमी तुममें से काफी पढ़ा-लिखा हो तो वह इस पर कुछ इबारत लिखे। उसने कसम खाई है कि वह उसी

व्यक्ति को दिवंगत मंत्री का पद देगा जो उसकी भाँति सुलेखन कर सकेगा। और अभी तक बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे अपने देश में कोई ऐसा गुणी व्यक्ति नहीं मिल पाया है।

यह सुनकर मैंने बादशाह के सरदार के हाथ से झपटकर वह कागज ले लिया। इस पर जहाज के सभी लोग, विशेषतः पढ़े-लिखे व्यापारी चीख-पुकार करने लगे कि यह बंदर अभी इस कागज को चीर-फाड़ कर समुद्र में फेंक देगा। किंतु जब उन्होंने देखा कि मैंने कागज बड़े ढंग से पकड़ा है तो सब चुप होकर देखने लगे। मैंने संकेत से कहा कि मैं इस पर लेखन कर सकता हूँ। उन लोगों को मेरी बात पर क्या विश्वास होता और सब प्रयत्न करने लगे कि मुझे पकड़ कर मेरे हाथ से कागज ले लें।

किंतु जहाज के कप्तान ने उन्हें रोका और कहा, 'हमें इसकी परीक्षा लेनी चाहिए। अगर इसने कागज को खराब किया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसे कड़ा दंड दूँगा। अगर उसने लिख लिया तो मैं अपने पुत्र की भाँति इसे रखूँगा। मुझे मालूम है कि यह कागज को खराब नहीं करेगा। मैंने बराबर देखा कि यह दूसरे बंदरों जैसा नहीं है अपितु अत्यंत बुद्धिमान है।' कप्तान की इस बात पर सब लोग रुक गए और मैंने कलम लेकर चार कविता पंक्तियाँ इतने सुंदर ढंग से लिखीं जैसे कोई व्यापारी या अन्य नागरिक न लिख पाता।

सरदार मेरा लिखा कागज बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने मेरे सुलेख को भी पसंद किया और मेरी कविता को भी। उसने सरदारों से कहा कि एक भारी खिलअत (सम्मान परिधान) ले जाओ और उस आदमी को पहनाओ जिसने यह लिखा है और एक बढ़िया घोड़ा भी घुड़साल से ले जाओ और उसे सम्मानपूर्वक सवार कराकर यहाँ ले आओ। सरदार यह आज्ञा सुन कर हँस पड़ा। बादशाह को बड़ा क्रोध आया। उसने कड़क कर कहा, 'यह क्या बदतमीजी है, तुम्हें दंड का भय नहीं है?' सरदार हाथ जोड़कर बोला, 'महाराज, क्षमा करें। यह लेख किसी मनुष्य ने नहीं लिखा। एक बंदर ने इसे लिखा है।'

बादशाह ने कहा, 'क्या बक रहे हो? बंदर भी कहीं लिखता है?' सरदार ने अपने साथियों की ओर देखा। उन्होंने भी हाथ जोड़ कर कहा, 'जहाँपनाह, हम सबने अपनी आँखों से देखा है कि इस कागज पर एक बंदर ही ने लिखा है।' बादशाह का आश्चर्य और बढ़ा और उसने आज्ञा दी, 'मैंने ऐसा बंदर देखा क्या, सुना भी नहीं था। तुम लोग फौरन जाओ और उस बंदर को सम्मानपूर्वक सवार कराकर ले आओ।' चुनांचे सरदार और राज सेवक फिर जहाज पर गए और कप्तान को उन्होंने राजा की आज्ञा सुनाई। कप्तान मुझे भेजने को सहर्ष तैयार हो गया। उसने मुझे जरी के वस्त्र पहनाए और किनारे पर ले आया। वहाँ से घोड़े पर बैठकर राज महल को चल दिया। महल में न केवल बादशाह ही मेरी प्रतीक्षा कर रहा था अपितु नागरिकों की बड़ी भीड़ भी सुलेखन करने वाले बंदर को देखने आई हुई थी।

रास्ते में भी बड़ी भीड़ जमा थी और लोग कोठों और छतों से झाँक-झाँक कर भी मेरी

सवारी देख रहे थे। सब लोग आश्चर्य कर रहे थे कि बादशाह ने एक बंदर को मंत्रिपद सँभालने को बुलाया है। कुछ लोग इस बात पर हँस रहे थे और बादशाह का मजाक भी उड़ा रहे थे।

मैं दरबार में पहुँचा तो देखा कि बादशाह सिंहासन पर बैठा है और सभासद और सरदार अपनी-अपनी जगह खड़े हैं। मैंने दरबार के शिष्टाचार के अनुसार तीन बार कोरनिश (भूमि तक हाथ ले जाकर प्रणाम करना) की और एक ओर अदब से खड़ा हो गया। सभी उपस्थित जन मेरे इस व्यवहार को देखकर आश्चर्य में पड़ गए कि बंदर ऐसा शिष्टाचार कैसे कर रहा है। खुद बादशाह को भी मेरी चाल-ढाल देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

कुछ देर में दरबार बर्खास्त हुआ। बादशाह के पास केवल मैं और उसका एक वृद्ध अधिकारी रह गए। हम दोनों बादशाह के आदेश पर उसके साथ महल के अंदर गए। बादशाह ने शाही भोजन मँगवाया और मुझे खाने का इशारा किया। मैं बड़ी तमीज के साथ खाना खाने लगा। जब भोजन समाप्त हुआ और बर्तन उठा लिए गए तो मैंने कलमदान की ओर संकेत किया। कलमदान मेरे पास लाया गया तो मैंने कुछ काव्य पंक्तियाँ बादशाह को धन्यवाद देते हुए रचीं और उन्हें सुंदर ढंग से कागज पर लिख दिया। बादशाह को यह देखकर आश्चर्य और प्रसन्नता और अधिक हुई। उसने मुझे एक पात्र मदिरा से भरकर दिलवाया। उसे पीकर मैंने एक और कविता अपने दुर्भाग्य के बाद मिलने वाले सौभाग्य के संबंध में लिख दी।

अब बादशाह ने शतरंज मँगाई और इशारे से पूछा कि क्या इसे खेल सकते हो। मैंने स्वीकारात्मक रूप से अपने सिर पर हाथ रखा। पहली बाजी बादशाह ने जीती और दूसरी और तीसरी मैंने जीत ली। बादशाह को इस पर झुँझलाहट होने लगी कि वह एक बंदर से हार गया। मैंने फिर एक काव्य रचकर कागज पर लिख दिया जिसका आशय था कि दो योद्धा दिन भर आपस में युद्ध करके शाम को मित्र बन जाते हैं और रात को युद्ध भूमि में सोते रहते हैं।

इस बात से बादशाह का आश्चर्य अत्यधिक बढ़ गया। उसने सोचा कि ऐसा बंदर जो मनुष्य से बढ़कर बुद्धिमत्ता और हाजिरजवाबी प्रदर्शित करे कभी देखा-सुना नहीं गया। उसने यह बात अपने सभासदों से कही तो उन्होंने उसका समर्थन किया। अब बादशाह ने चाहा कि मुझे अपनी रानी और अपनी पुत्री को भी दिखा दे। उसने खोजों के सरदार को आज्ञा दी कि आदमियों को हटाकर बेगम साहबा और शहजादी को यहाँ ले आओ। बेगम तो साधारण रूप से आई लेकिन शहजादी ने जो मुँह खोले आई थी, मुझे देखकर नकाब डाल लिया और बाप से बिगड़ कर बोली कि आपको क्या हो गया है कि अपरिचित पुरुष के सामने मुझे मुँह खोले हुए बुला लिया।

बादशाह ने कहा, 'तुम्हारे होश-हवास तो ठिकाने हैं? यहाँ कौन मर्द है सिवाय मेरे? और मैं तुम्हारा बाप हूँ, मेरे सामने तो तुम्हें मुँह खोल कर आना चाहिए। और तुम हो कि खुद

गलती पर हो और मुझे दोष देती हो।' शहजादी ने हाथ जोड़ कर कहा, 'अब्बा हुजूर, मेरी कोई गलती नहीं है। यह एक बड़े बादशाह का पुत्र है और जादू के कारण इस दशा को पहुँचा है। इबलीस के धेवते ने, जो एक शक्तिशाली जिन्न है, पहले आबनूस के द्वीप के बादशाह अबू तैमुरस की बेटी की हत्या कर दी फिर इस शहजादे को अपने जादू से बंदर बना दिया।'

बादशाह को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मुझ से पूछा कि क्या यह बात ठीक है। मैंने सर पर हाथ रख कर इशारे से कहा कि शहजादी ने जो कुछ कहा है बिल्कुल ठीक कहा है। अब बादशाह ने शहजादी से पूछा कि तुम्हें यह सब किस्सा कैसे मालूम हुआ। उसने कहा, 'आपको याद होगा कि जब मेरा दूध छुड़ाया गया था तो मेरी देख-रेख और पालन-पोषण के लिए एक बुढ़िया रखी गई थी। वह जादू-टोनों में पारंगत थी। उसने मुझे इस विद्या के सत्तर अंग सिखा दिए। अब मुझ में इतनी शक्ति है कि चाहूँ तो आपका सारा देश उठाकर समुद्र में फेंक दूँ। जो व्यक्ति जादू के जोर से मनुष्य के बजाय किसी अन्य जीव को देह धारण कर लेते हैं मैं उन्हें तुरंत पहचान लेती हूँ और मुझे यह भी मालूम हो जाता है कि किसके जादू से यह हुआ है। इसीलिए मैंने इसे पहली ही नजर में पहचान लिया कि यह बंदर नहीं है बल्कि राजकुमार है।'

बादशाह ने कहा, 'बेटी, तुम इतनी गुणी हो, यह मुझे मालूम ही नहीं था। लेकिन क्या तुम में इतनी शक्ति भी है कि इसे अपनी पहली देह में दोबारा पहुँचा दो?' राजकुमारी ने, जिसका नाम मलिका हसन था, कहा, 'निःसंदेह मुझ में ऐसी शक्ति है।' बादशाह ने कहा, 'अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हारा बड़ा आभार मानूँगा और इस राजकुमार को अपना मंत्री बनाकर तुम्हारे साथ इसका विवाह कर दूँगा।'

शहजादी ने पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर अपने सामान में से एक छड़ी मँगवाई जिस पर हिब्रू और मिस्री भाषा में कुछ अक्षर खुदे थे। फिर उसने अपने पिता से कहा कि आप लोग कुछ दूरी पर सुरक्षापूर्वक बैठें। हम लोगों ने ऐसा किया तो शहजादी ने कक्ष की भूमि पर छड़ी से एक बड़ा गोला खींचा और हिब्रू और मिस्री भाषाओं के कुछ मंत्र पढ़ने लगी। इसके पश्चात वह घेरे के अंदर चली गई और कुरान शरीफ की कुछ आयतों का पाठ आरंभ कर दिया।

कुछ ही देर में घटाटोप अँधेरा छा गया। हमें मालूम हो रहा था जैसे प्रलय काल ही आ गया है। हम लोग क्षण-प्रतिक्षण भयभीत होते जा रहे थे। इतने में हमने देखा कि इब्लीस का धेवता जिन्न एक शेर के रूप में गरजता हुआ आ गया। शहजादी ने कहा, 'दुष्ट, तुझे चाहिए था कि मेरे बुलाने पर मेरे पास विनयपूर्वक आता। तेरी यह हिम्मत कि मुझे डराने को यह रूप रख कर आया है।' शेर बोला, 'मनुष्यों और जिन्नों में समझौता हुआ था कि एक दूसरे के मामलों में दखल न देंगे, तूने उस समझौते को तोड़ा है।' शहजादी बोली, 'तूने पहले वह समझौता तोड़ा है।' शेर ने गरज के कहा कि तेरी इस गुस्ताखी का मजा चखाता हूँ जो तूने मुझे यहाँ आने की तकलीफ देकर की है।

यह कहकर वह मुँह फाड़ कर शहजादी की ओर झपटा। वह होशियार थी, उछल कर पीछे हट गई और अपने सिर से एक बाल उखाड़ा और उसे मंत्र करके फेंक दिया। वह बाल तलवार बन गया और उसने शेर के धड़ के दो टुकड़े कर दिए। लेकिन यह टुकड़े गायब हो गए और सिर्फ सिर रह गया जो बिच्छू बन गया। अब शहजादी ने साँप का रूप धारण किया और उस पर टूट पड़ी।

बिच्छू थोड़ी ही देर में घबरा कर पक्षी बन गया और आसमान में उड़ गया। शहजादी भी उकाब बन कर उसके पीछे पड़ गई। उड़ते-उड़ते दोनों हमारी दृष्टि से छुप गए।

कुछ ही देर में हमारे सामने की भूमि फट गई और उसमें से दो बिल्लियाँ लड़ती हुई निकलीं, एक काली थी दूसरी सफेद। कुछ देर तक वे दुम खड़ी करके चीखती रहीं फिर काली बिल्ली भेड़िया बन कर सफेद बिल्ली पर झपटी। सफेद बिल्ली कोई उपाय न देखकर कीड़ा बन गई। और तुरंत एक पेड़ पर चढ़कर उसमें लटके अनार के अंदर घुस गई। वह अनार बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते एक घड़े का आकार का हो गया। फिर वह पेड़ से अलग हो गया और हवा में इधर-उधर लहराने लगा।

कुछ देर में वह अनार जमीन पर गिरकर फट गया और उसके टुकड़े इधर-उधर बिखर गए। उसमें से सैकड़ों दाने पृथ्वी पर गिर कर फैल गए। अब वह भेड़िया तुरंत एक मुर्गा बन गया और उसने अनार के बिखरे हुए दानों को जल्दी-जल्दी चुनना शुरू कर दिया। जब वह सारे दाने खा चुका तो हम लोगों के पास आया और जोर से बाँग देने लगा जैसे पूछता हो कि कोई दाना रह तो नहीं गया। वह स्वयं भी इधर-उधर दौड़कर देखने लगा। एक दाना नहर के किनारे पड़ा था। मुर्गा दौड़ा कि उसे भी खा ले लेकिन वह दाना लुढ़कता हुआ नहर में गिर गया।

नहर में गिर कर वह दाना मछली बन गया। मुर्गा भी उसके पीछे नहर में कूद गया। कुछ देर तक दोनों आँखों से ओझल रहे फिर बड़े जोर की चीख-पुकार हुई जिससे हम लोग बहुत डर गए। फिर देखा कि जिन्न और शहजादी दोनों अग्निपुंज हो गए हैं और एक दूसरे की ओर लपटें फेंक रहे हैं जैसे कि आपस में लड़ाई कर रहे हों। ऐसा मालूम होता था कि हर तरफ आग ही आग फैली है। हम इस डर से काँपने लगे कि यह आग हमें तो क्या सारे देश को भूनकर रख देगी। इससे भी भयानक एक समय आया जब जिन्न शहजादी से लड़ना छोड़कर हमारी ओर झपटा और हमारी ओर लपटें फेंकने लगा। लेकिन शहजादी भी झपट कर आई। उसने जिन्न को दूर हटा दिया और हमें और सुरक्षित स्थान पर कर दिया। फिर भी इतनी देर में खोजा जल कर भस्म हो गया, बादशाह का मुँह झुलस गया और मेरी दाईं आँख में एक चिनगारी पड़ गई जिससे मेरी वह आँख फूट गई।

इतने में हम लोगों ने बड़ी जोर का जयघोष सुना। शहजारी मलिका हसन अपने साधारण शरीर में आ गई और जिन्न राख का ढेर होकर दिखाई देने लगा। फिर शहजादी ने एक गुलाम से पानी मँगवाया और उसे अभिमंत्रित कर मुझ पर छिड़का और बोली, 'अगर तू जादू के जोर से बंदर बना है तो फिर से अपनी पहली काया में आ जा ओर पहले की तरह

मनुष्य बन जा।' उसके इतना कहते ही मैं पहले जैसा बन गया। सिवाय दाईं आँख फूटने के मुझे और कोई हानि नहीं हुई। मैंने चाहा कि शहजादी को इस उपकार पर धन्यवाद दूँ किंतु शहजादी ने इसका अवसर नहीं दिया। वह बादशाह की तरफ मुँह करके बोली, 'यद्यपि मैंने जिन्न को भस्म कर दिया है लेकिन मैं भी बच नहीं सकूँगी।'

हमारी समझ में कुछ नहीं आया तो उसने बताया, यह अग्नि युद्ध बड़ा भयानक होता है। इसकी आग कुछ क्षणों में मुझे भस्म कर देगी। जब मैं मुर्गा बनी थी उस समय अगर अनार का आखिरी दाना, जिसमें जिन्न ने स्वयं को छुपा रखा था, मेरे अंदर पहुँच जाता तो जिन्न उसी समय खत्म हो जाता और मुझे कोई हानि न पहुँचती। किंतु वह बचकर फिर मुझसे युद्ध करने के योग्य हो गया। अब विवश होकर मुझे अग्नि युद्ध पर उतरना पड़ा। जिन्न ने यह तो समझ लिया कि मैं जादू में निपुण हूँ और उस पर भारी पड़ती हूँ, फिर भी वह अंत समय तक प्राणपण से युद्ध करता रहा। मैंने उसे जलाकर भस्म तो कर दिया लेकिन इस आग से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाऊँगी।'

बादशाह ने रोकर कहा, 'बेटी, तुम कैसी बातें करती हो। तुम्हारे बगैर हम लोग क्या करेंगे। देखती नहीं कि खोजा मर गया है, मेरा मुँह झुलस गया है और यह शहजादा जिसका तुमने इतना उपकार किया है दाईं आँख से काना हो गया है?' बादशाह इस तरह सिर धुन रहा था और मैं भी रो-पीट रहा था कि शहजादी ने चिल्लाना शुरू किया, 'हाय जली, हाय मरी।' और देखते ही देखते वह भी जल कर जिन्न की तरह राख का ढेर हो गई।

दूसरे फकीर ने आँसू बहाते हुए जुबैदा से कहा कि हे सुंदरी, उस समय मुझे जितना दुख हुआ वह वर्णन के बाहर है। मैं सोच रहा था कि अगर मैं बंदर तो क्या कुत्ता भी हो जाता और आजीवन वैसा ही रहता तो भी इस बात से अच्छी बात होती कि ऐसी गुणवती राजकुमारी, जिसने मुझ पर इतना एहसान किया, इस तरह जान से हाथ धोए। बादशाह भी अपनी बेटी के दुख में इतना रोया-पीटा कि बेहोश हो गया। मुझे भय लगने लगा कि ऐसा न हो कि इस दारुण दुख से उसकी जान चली जाए। चारों ओर हाहाकार होने लगा और राजमहल में प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित हो गया।

राजमहल के सारे सेवक और बादशाह के सरदार दौड़े आए और भाँति-भाँति के यत्न करके उसे होश में लाए। मैंने सभी लोगों के आगे पूरा वृत्तांत रखा। फिर राज सेवक बादशाह को उठाकर उसके शयन कक्ष में ले गए। सारे नगर में यह समाचार फैल गया और हर जगह रोना-पीटना मच गया और हाहाकार के सिवाय कुछ नहीं सुनाई दिया। उन लोगों ने सात दिन तक शहजादी के लिए शोक किया और उनके देश में मातम की जो जो रस्में होती थीं सभी पूरी कीं। अंत में जिन्न की राख के ढेर को हवा में उड़ा दिया गया। शहजादी की भस्म को एक बहुमूल्य रेशमी थैले में भर कर दफन कर दिया गया और उस पर समाधि बना दी गई।

बादशाह शहजादी के दुख में बीमार पड़ गया। एक महीने में वह स्वस्थ हुआ। फिर उसने

मुझे बुलाया और कहा, 'शहजादे, तेरे कारण मुझ पर असहनीय दुख पड़े हैं। मेरी प्यारी बेटी तेरे ही कारण भस्म हो गई, मेरा विश्वासी खोजों का सरदार जल कर मर गया और मैं भी मरते-मरते बचा। तेरा स्वयं इसमें कोई दोष नहीं है इसलिए मैं तुझे दंड नहीं देता। किंतु तेरा आगमन दुर्भाग्यपूर्ण रहा है और तू जहाँ रहेगा मुसीबत आएगी। इसलिए मैं तुझे यहाँ रहने की अनुमति नहीं दे सकता। तू तुरंत यहाँ से मुँह काला कर। अगर तू यहाँ थोड़ी देर तक भी दिखाई दिया तो मैं स्वयं को न सँभाल सकूँगा और तुझे कठोर दंड दूँगा।' इसी प्रकार वह बहुत देर तक बकता-झकता रहा।

मैं सिर झुका कर सब कुछ सुनता रहा। मैं कह भी क्या सकता था? बादशाह के चुप होते ही मैं उसके सामने से हट आया और महल से बाहर निकल गया। नगर में भी मुझे चैन न मिला। नगर निवासी शहजादी के शोक में विह्वल थे और मुझे ही उसकी मृत्यु का कारण समझ कर जहाँ मुझे पहचानते मुझे मारने के लिए झपटते थे। मैंने विवश होकर अपनी जान बचाने के लिए दाढ़ी, मूँछें और भवें मुँड़वा डालीं और फकीरों के- से वस्त्र पहन लिए और वहाँ से चल दिया। नगर से बाहर आकर भी मैं पश्चात्ताप की आग में बराबर जलता रहा और अपने जीवन को धिक्कारता रहा जिसके कारण दो-दो रूपसी राजकुमारियाँ काल कवलित हुईं। इसी दशा में मैं बहुत समय तक देश-देश फिरता रहा लेकिन मेरा ठिकाना कहीं न लगा।

अंत में मैंने सोचा कि बगदाद नगर में जाऊँ और अति दयाशील खलीफा हारूँ रशीद से अपनी व्यथा गाथा का वर्णन करूँ, संभव है वे मुझ पर दया करके मेरे लिए कोई उचित प्रबंध कर दें। मैं आज शाम ही को इस नगर में पहुँचा। सबसे पहले इस फकीर से, जिसने अभी-अभी अपना हाल कहा है, मेरी भेंट हुई। आपके यहाँ हम कैसे आए यह बताना मुझे जरूरी नहीं है क्योंकि वह पहला फकीर बता ही चुका है।

जब दूसरे फकीर ने अपना वृत्तांत पूरा कर लिया तो जुबैदा ने उससे कहा कि हमने तुझे भी क्षमा किया, तू जहाँ चाहे वहाँ जाने के लिए स्वतंत्र है। अब दूसरे फकीर ने भी इच्छा प्रकट की कि अपने तीसरे साथी को जीवन गाथा भी सुनना चाहता हूँ। इस पर जुबैदा ने कहा, अच्छा, तुम भी मजदूर और पहले फकीर के पास जाकर चुपचाप बैठ जाओ। उसने ऐसा ही किया। जुबैदा ने अब तीसरे फकीर से अपनी कहानी सुनाने को कहा और उसने जुबैदा के सामने बैठ कर कहना आरंभ किया।

किस्सा तीसरे फकीर का

हे दयालु सुंदरी, मेरी कहानी बहुत ही आश्चर्यकारी है। इन दोनों शहजादों की दाहिनी आँखें परिस्थितिवश गईं किंतु मेरी आँख मेरी ही मूर्खता और मेरे ही अपराध के कारण फूटी। मैं इसका विस्तृत वर्णन करता हूँ। मेरा नाम अजब है और मैं महा ऐश्वर्यशाली बादशाह किसब का बेटा हूँ। पिता के स्वर्गवास के बाद मैं सिंहासनारूढ़ हुआ और उसी नगर में रहने लगा जिसे मेरे पिता ने अपनी राजधानी बनाया था। मेरी राजधानी समुद्र के किनारे बसी थी। उसकी रक्षा के लिए डेढ़ सौ युद्ध पोत तैयार रहते थे। इसके अलावा दूरस्थ व्यापार के लिए पचास जहाज थे और बहुत-से दूसरे जहाज भी लंगर डाले रहते थे कि लोग उन पर बैठकर समुद्र में सैर-सपाटा किया करें। मेरे राज्य में कई अन्य नगर और द्वीप भी थे।

एक बार मेरी इच्छा हुई कि मैं अपने राज्य के नगरों और द्वीपों को जाकर देखूँ, वहाँ के निवासियों को, जो मेरे पिता की मृत्यु से शोकाकुल थे, सांत्वना दूँ और उन्हें आदेश दूँ कि वे नागरिक कार्यों और व्यापार में तत्परता से लगे रहें। साथ ही मुझे यह शौक हुआ कि मैं जहाज चलाना सीखूँ। इस उद्देश्य से मैं एक बड़े जहाज पर सवार होकर चला। मेरे जहाज के साथ दस जहाज और चल रहे थे। चालीस दिन तक वायु हमारे अनुकूल रही किंतु फिर ऐसा तूफान आया कि हम जीवन की आशा खो बैठे। दूसरे दिन आकाश साफ हो गया। हम लोग एक द्वीप पर उतर पड़े। दो दिन आराम करने और जहाज के भंडार भरने के बाद हम फिर चले। आशा थी कि दस दिन में हम अपने देश को वापस पहुँच जाएँगे। किंतु ऐसा न हुआ। कारण यह था कि जहाज एक अन्य तूफान में रास्ते से भटक गए थे। हमारे कप्तान ने एक आदमी को मस्तूल पर चढ़ाया कि शायद कहीं जमीन दिखाई दे। उसने बताया कि दाईं तरफ कोई काली-सी वस्तु दिखाई दे रही है, शायद भूमि हो।

लेकिन यह सुनकर कप्तान सिर पीटने और बाल नोचने लगा और बोला, 'हे स्वामी, अब हम सब खत्म हो जाएँगे। हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।' यह कहकर वह और बुरी तरह रोने-पीटने लगा। उसकी यह दशा देखकर अन्य माँझी भी घबरा गए।

मैंने हैरान होकर कप्तान से पूछा कि हम क्यों समाप्त हो जाएँगे। उसने बताया कि 'तूफान के कारण हमें दिशा ज्ञान नहीं रहा और हम मार्ग से भटक गए और अब हवा के कारण हमारा जहाज उस काली वस्तु के पास जा पहुँचेगा। वह एक चुंबक का पहाड़ है। जहाज वहाँ पहुँचेगा तो उसकी सारी कीलें और लौह पट्टिकाएँ लकड़ी से अलग होकर उससे जा चिपकेंगी और जहाज टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। चुंबक पत्थर में यह गुण होता है कि वह लोहे को आकृष्ट करता है और जैसे-जैसे लोहा उसके समीप आता है कि चुंबक की आकर्षण शक्ति बढ़ जाती है। सैकड़ों जहाजों के लोहे के टुकड़े इस पर्वत में जा चिपके हैं जिनके कारण वह ऊपर से नीचे तक लोहे के टुकड़ों से ढँक गया है और रंग में काला दिखाई देता है। कहते हैं यह पहाड़ बहुत ऊँचा है। उसके सभी किनारे ढलवाँ हैं। उसकी चोटी पर एक बहुत बड़ी पीतल की गोल और मोटी चादर है जो पीतल के खंभों पर टिकी

हुई है। उस चादर पर एक घुड़सवार की मूर्ति पीतल की बनी हुई है। सवार की छाती पर एक सीसे की तख्ती लगी है जिस पर कुछ जादू के अक्षर खुदे हैं। कहते हैं कि पहाड़ की आकर्षण शक्ति का कारण वही मूर्ति है।'

यह कहकर कप्तान फिर रोने-पीटने लगा और उसके साथ जहाज के दूसरे माँझी भी रोने-चिल्लाने लगे। मुझे भी लगने लगा कि मेरी उम्र अब खत्म होने को है और मेरी मौत मुझे खींच कर यहाँ लाई है। सभी लोग इस चिंता में पड़े कि कैसे अपने प्राणों की रक्षा करें। वह लोग यह भी कहने लगे कि जो कोई हमारे प्राण बचाए हम सदा के लिए उसके गुलाम हो जाएँगे। सब ने कोई न कोई उपाय सोच लिया। सुबह को हमारा जहाज उस काले पहाड़ के सामने जा पहुँचा। उसे देखकर सबके छक्के छूट गए और जो उपाय लोगों ने बचाव के लिए सोचे थे सब भूल गए और जहाज में ऐसा करुण क्रंदन होने लगा जिसका ठिकाना न था।

दोपहर को वही हुआ जो अनुभवी कप्तान ने कहा था यानी पहाड़ ने जहाजों को इतनी जोर से खींचा कि उनकी कीलें और लोहे की दूसरी चीजें उड़-उड़ कर पहाड़ से चिपकने लगीं। जहाजों के टूटने से महा भयानक शब्द होने लगा और कुछ ही क्षणों में ग्यारहों जहाज सागर तल में समा गए। उन जहाजों की किसी वस्तु और किसी मनुष्य का पता न लगा। एक मैं ही भगवान की दया से जीता रहा। संयोग से एक जहाज का टुकड़ा मेरे हाथ आ गया और मैं उसी के सहारे तैरने लगा। कुछ ही देर में मैं किनारे पर पहाड़ के नीचे पहुँचा। मैं पहाड़ पर चढ़कर सुरक्षित होना चाहता था लेकिन वह ऐसी खड़ी ढलान का पहाड़ था कि कहीं ऊपर जाने की गुंजाइश ही नहीं मालूम होती थी।

अचानक मुझे एक ओर नीचे से ऊपर जाते हुए मानव पदचिह्न गहरे खुदे हुए दिखाई दिए जिनसे ऊपर तक सीढ़ियाँ-सी बन गई थीं। मैंने भगवान का नाम लेकर चढ़ना शुरू किया। चढ़ने की जगह बड़ी तंग थी और कहीं भी दूसरा मार्ग नहीं दिखाई देता था। साथ ही हवा इतने वेग से चल रही थी कि प्रतिक्षण गिरने का भय था। लेकिन भगवान की कृपा से मैं धीरे-धीरे ऊपर तक जा पहुँचा और पीतल के गोले के अंदर जाकर भगवान को धन्यवाद देने लगा कि उसने इतनी कठिन परिस्थितियों में भी मुझे जीवित रखा। रात हो गई थी इसलिए उसी वृत्त के अंदर लेट कर सो गया।

स्वप्न में देखा, मुझ से एक बूढ़ा कह रहा है, 'ऐ अजब, जागने पर अपने पाँवों के नीचे की भूमि खोदना। तुम्हें एक पीतल का धनुष और सीसे के तीन बाण मिलेंगे। वे तीनों तीर घोड़े पर सवार मूर्ति को मारना, इससे मूर्ति समुद्र में जा गिरेगी और घोड़ा तेरे पैरों के पास आ गिरेगा। तुम घोड़े को वहीं भूमि में गाड़ देना। इसके बाद समुद्र में तूफान आएगा और वह चढ़ने लगेगा - यहाँ तक कि तुम्हारे पास आ जाएगा और एक छोटी नाव से तुम एक अन्य समुद्र में पहुँच जाओगे और फिर अपने नगर को पहुँच जाओगे। लेकिन खबरदार, इस सारे समय में भगवान का नाम बिल्कुल नहीं लेना।'

इसके बाद मेरी आँख खुल गई। मैं अपने छुटकारे का उपाय जान कर अति प्रसन्न हुआ। बूढ़े के कहने के अनुसार धरती को खोदा तो उसमें से तीन बाण और धनुष निकले। मैंने कमान से तीनों तीर पीतल के घुड़सवार पर छोड़े। तीसरे तीर के लगते ही सवार की मूर्ति समुद्र में गिर गई और घोड़े की मूर्ति मेरे पाँवों के पास आ गिरी। मैंने उसे उसी जमीन में गाड़ दिया जहाँ से धनुष और बाण निकाले थे। अब समुद्र चढ़ने लगा और चढ़ते-चढ़ते पीतल के घेरे के पास आ गया। जहाँ मैं था वहाँ एक नाव भी आ लगी जिसमें पीतल का माँझी बैठा था। मैं नाव पर बैठ गया।

वृद्ध पुरुष की हिदायत को ध्यान में रखकर मैंने भगवान का नाम न लिया, बल्कि अपना मुँह बंद ही रखा। पीतल का माँझी नौ दिन तक नाव चलाता रहा और ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ आसपास कई द्वीप दिखाई दे रहे थे। मैं बहुत खुश हुआ कि अब कठिनाइयों से उबर जाऊँगा और इसी दशा में भगवान को धन्यवाद दे बैठा। तुरंत ही माँझी समेत वह नाव समुद्र में डूब गई।

अब मैं फिर तैरने लगा और एक द्वीप की ओर जाने लगा। कई घंटे तक तैरता रहा। यहाँ तक कि शाम होने लगी और मेरे हाथ-पाँव भी थकन से ऐसे भारी हो गए कि तैरा ही नहीं जाता था। ऐसे ही में एक बड़ी भारी लहर आई और उसने मुझे तट पर ला फेंका। मैं दौड़कर आगे चला गया कि कहीं दूसरी लहर आकर मुझे वापस समुद्र में न खींच ले जाए। मैंने अपने कपड़े उतार कर निचोड़ा और हवा में हिलाकर सुखाए। फिर मैं इधर-उधर घूमकर देखने लगा। कई फल वाले पेड़ दिखाई दिए लेकिन वहाँ आदमी कोई नहीं दिखाई दिया। मैंने कई फल खाए और इस तरह अपनी भूख और थकान दूर की। इसके बाद मैंने अपनी चिंता छोड़ दी और सोचा कि जो भगवान करेगा ठीक ही होगा।

थोड़ी देर बाद देखा कि एक छोटा-सा जहाज पाल उड़ाता हुआ उस द्वीप की ओर आ रहा है। पहले मैंने सोचा कि वह तट पर आए तो मैं उसके पास जाऊँ। फिर सोचा कि अच्छी तरह देख लेना चाहिए, ऐसा तो नहीं कि उसमे लुटेरे हों या मेरे शत्रु हों। इसलिए मैं एक घने और ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और छुपकर बैठ गया और ध्यानपूर्वक देखने लगा कि जहाज के लोग क्या करते हैं।

कुछ ही देर में जहाज किनारे पर रुका और उसमें से बहुत-से आदमी फावड़े और दूसरे औजार लेकर निकले। फिर वे कुछ दूर जाकर भूमि खोदने लगे। खोदते-खोदते वे एक दरवाजे तक पहुँच गए। फिर वे जहाज में वापस गए और उसमें से बहुत-सी खाद्य वस्तुएँ और बिस्तर, फर्श आदि के बोझों को लादे हुए उसी दरवाजे को उठाकर नीचे चले गए। फिर वे लोग जो नौकर-चाकर ज्ञात होते थे जहाज में जाकर एक वृद्ध पुरुष और चौदह पंद्रह वर्ष के अति सुंदर बालक को लाए और सब के सब दरवाजे से नीचे उतर गए जहाँ स्पष्टतः ही कोई मकान बना हुआ था। वहाँ से लौटकर उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया और उस पर मिट्टी डाल कर बराबर कर दी। लेकिन वे वापस हुए तो वह सुंदर बालक उनके साथ नहीं था।

मुझे यह सब बातें देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ। मैं कुछ देर और देखता रहा। वह जहाज फिर चल पड़ा और जब मैंने देखा कि वहाँ कोई नहीं है तो पेड़ से उतर कर उस स्थान पर गया जहाँ पर उन्होंने भूमि खोदी थी। मैंने वहाँ की मिट्टी हटाई तो देखा कि एक बड़ा चौकोर पत्थर रखा है। उसे उठाया तो दिखाई दिया कि नीचे तक सीढ़ियाँ गई हैं। मैं उतरकर नीचे गया तो देखा कि बहुत बड़ा मकान है जहाँ हर तरफ कालीन बिछे हैं। दालान में कालीन पर सुंदर गद्दे पड़े हैं जिन पर सुनहरे गिलाफ चढ़े हैं। वहाँ पर बालक बैठा था। वह एक हलका-सा पंखा झल रहा था, उसके पास दो बड़ी मोमबत्तियाँ जल रही थीं, कई गुलदस्ते और खाने-पीने की बहुत-सी चीजें उसके पास रखी थीं।

मुझे वहाँ देखकर वह बालक घबरा गया। मैंने उसे तसल्ली देते हुए कहा कि 'तुम मुझसे डरो नहीं। तुम तो राजकुमारों जैसे लगते हो। मैं तुम्हारे जैसे बच्चों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाना चाहता। मुझे यह देखकर दुख हुआ कि तुम्हारे साथी तुम्हें जीते जी ही इस कब्र में गाड़ गए हैं। खैर, अब तुम चिंता न करो, मैं तुम्हें इस कब्र से निकाल दूँगा। लेकिन पहले तुम अपना किस्सा तो बताओ कि वे लोग तुम्हें यहाँ क्यों गाड़ गए हैं। देखो, सब कुछ निडर होकर सच-सच बताना। कुछ छुपाना नहीं। यह तो मैं देख चुका हूँ कि उन सब लोगों ने मिलकर तुम्हें यहाँ दफन किया है और शायद तुम यहाँ पर जबर्दस्ती लाए गए हो। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि उन लोगों ने ऐसा क्यों किया।'

मेरी बातों से लड़के को तसल्ली हुई। उसने मुझे अपने पास बैठने को कहा और जब मैं बैठ गया तो उसे अपना वृत्तांत आरंभ किया, 'हे महानुभाव, मेरी कहानी बड़ी आश्चर्यजनक है, आप उसे सुनकर स्तंभित रह जाएँगे। मेरा पिता एक जौहरी है। उसने अपनी लगन और बुद्धिमानी से बहुत साधन एकत्रित किया है। उसके सैकड़ों नौकर-चाकर और बहुत-सी कोठियाँ हैं। वह अपने जहाजों पर सवार होकर देश-देश घूमता है। हर स्थान पर उसके गुमाश्ते हैं जो उसकी ओर से रत्नों का क्रय-विक्रय करते हैं।

'इतना प्रचुर धन होने पर भी मेरे पिता के यहाँ बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई। एक रात उसने स्वप्न में देखा, कोई कह रहा है कि तुम्हारे यहाँ एक पुत्र होगा किंतु उसकी आयु बहुत कम होगी। यह स्वप्न देख कर मेरे पिता को बड़ा दुख और चिंता व्याप्त हुई। उसके कुछ दिनों बाद मेरी माता ने मेरे पिता को बताया कि मुझे गर्भ रह गया है। उसके नौ महीने बाद मैं पैदा हुआ। मेरे जन्म पर सारे परिवार वालों और नातेदारों को अतीव प्रसन्नता हुई किंतु मेरे पिता को अपना स्वप्न याद करके दुख ही बना रहता था। अतएव उसने ज्योतिषी लोगों से सलाह ली। उन्होंने कहा, इस बालक को चौदहवें वर्ष में मृत्यु का भय है। अगर उस समय बच गया तो फिर यह बहुत दिन जिएगा और इसकी आयु काफी लंबी होगी।

'उन्होंने कहा कि हमें ग्रहों से यह भी ज्ञात हुआ है कि अजब नाम का बादशाह एक पीतल के घुड़सवार को, जो एक चुंबक के पर्वत की चोटी पर मौजूद हैं, समुद्र में गिरा देगा, उसके पचास दिन के बाद अजब बादशाह इस लड़के को मार डालेगा। मेरा पिता तो पहले ही से स्वप्न देखकर दुखी था, अब ज्योतिषियों से यह सुनकर और भी चिंता में पड़

गया और रात-दिन यह सोचता रहता कि इस लड़के की जान कैसे बचाई जाए। इसीलिए उसने यह तहखाने का मकान बनवाया। मुझे चौदहवाँ वर्ष लगा तो दूसरे ही दिन ज्योतिषियों ने आकर कहा कि दस दिन हुए बादशाह अजब ने पीतल के घुड़सवार को समुद्र में गिरा दिया है। यह सोचकर मेरे पिता की चिंता और बढ़ी और वह घंटों तक सोचता रहा कि मेरे सर से ग्रह कैसे टले। अंततः उसने इस निर्जन द्वीप में पहले से बनाए हुए भूमिगत आवास में मुझे बंद करने का निश्चय किया। उसने सोचा कि बादशाह अजब जैसा शक्तिशाली इस निर्जन द्वीप में क्यों आएगा और आएगा भी तो यह तहखाना कैसे पाएगा। इसलिए चालीस दिन तक मुझे इस मकान में बंद कर दिया जाए जिससे न मैं किसी को देखूँ न कोई मुझे देखे। यही कारण है मेरे इस स्थान पर लाए जाने का।'

जब वह बालक अपनी बात कह चुका तो मैं मन ही मन ज्योतिषियों को त्रिकालदर्शी होने के दावे पर हँसने लगा। मैं सोचने लगा ऐसे प्यारे निर्दोष बालक की मैं क्यों हत्या करने लगा। उसे दिलासा देने के खयाल से मैंने उसे अपना नाम तो न बताया किंतु उससे कहा, 'तुम्हें अब डरने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, मैं तुम्हारी रक्षा के लिए यहाँ आ गया हूँ। यह संयोग ही है कि तुम्हारा रक्षक मैं बना क्योंकि आज ही तट के निकट मेरा जहाज डूबा और मैं अकेला उसमें से बचा और तैरता हुआ इस द्वीप पर आया जहाँ पर मैंने तुम्हारा हाल देखा। तुम भगवान पर भरोसा रखो, किसी प्रकार की चिंता अपने मन में न लाओ। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी कभी सच्ची नहीं होगी। मैं यहाँ रह कर चालीस दिन तक तुम्हारी सेवा और रक्षा करूँगा और भगवान की दया से यह चालीस दिन की अवधि भी कुशलतापूर्वक बीत जाएगी। जब तुम्हारा पिता तुम्हें लेने के लिए आएगा तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे देश चला जाऊँगा। और वहाँ से किसी जहाज पर अपने देश के लिए रवाना हो जाऊँगा। मैं आजीवन तुम्हारा उपकार न भूलूँगा।'

मैंने इस प्रकार उससे धैर्य देने वाली बहुत-सी बातें कीं। मैंने ध्यान रखा कि भूल से भी मेरी जिह्वा पर मेरा या मेरे पिता का नाम न आए क्योंकि इससे उस बालक के मन में अकारण भय उत्पन्न हो जाता। उसका जी बहलाने के लिए मैं तरह-तरह की कहानियाँ और अन्य प्रकार के वृत्तांत सुनाता रहा। वह बालक अत्यंत कुशाग्र-बुद्धि जान पड़ता था और इतने दिनों तक चुपचाप रहने के बाद मुझे उससे वार्तालाप कर के बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। रात हुई तो हम दोनों ने मिलकर भोजन किया। उसका पिता इतनी खाद्य सामग्री रख गया था कि दो क्या तीन आदमियों तक को चालीस-इकतालीस दिन तक काफी होती।

रात होने पर हम लोग भोजन करने के उपरांत सो गए। दूसरे दिन सुबह जागने पर मैं उसके हाथ-मुँह धोने के लिए उसके पास जल ले गया, फिर हम लोगों ने स्वादिष्ट व्यंजनों का नाश्ता किया। दिन भर उसके साथ शतरंज और चौपड़ खेलकर उसका जी बहलाता रहा। रात को भोजन करके हम लोग फिर सो रहे। हम लोग इसी प्रकार दिन व्यतीत करने लगे और इसके कारण हम दोनों में एक-दूसरे के प्रति स्नेह बहुत बढ़ गया। विशेषतः मुझे तो वह बालक प्राणों से भी प्यारा लगने लगा।

मुझे विश्वास हो गया कि ज्योतिषियों का यह कथन सिर्फ बकवास था कि बालक अजब बादशाह के हाथ से मारा जाएगा क्योंकि अजब बादशाह को - यानी मुझे - तो यह जान से प्यारा है। मैं इसकी हत्या क्यों करूँगा।

इसी प्रकार उनतालीस दिन तक हम दोनों हँसी-खुशी उस घर में रहे। चालीसवें दिन वह सवेरे जागा तो बड़ा खुश था। कहने लगा, 'देखिए महोदय, आज चालीसवाँ दिन है। भगवान की दया से और आपके अनुग्रह से मैं सही-सलामत हूँ। मेरा पिता जब सुनेगा कि आपने इस अवधि में मेरी कितनी सेवा की है और मेरा कितना उपकार किया है तो वह आपका अत्यंत कृतज्ञ होगा और आपको सुरक्षापूर्वक आपके देश में पहुँचा देगा।'

फिर उस लड़के ने मुझसे कहा कि मेरे लिए कुछ जल गर्म कर दीजिए ताकि मैं अच्छी तरह नहाकर नए कपड़े पहनूँ क्योंकि मेरा पिता आज मुझे लेने के लिए आएगा। मैंने पानी गर्म करके उसके नहाने-धोने का प्रबंध कर दिया। नहाने के बाद वह बिस्तर में आ लेटा। मैंने उसे लिहाफ उढ़ा दिया और वह कुछ देर के लिए सो गया। सोकर उठने पर उसने कहा कि महोदय, मेरा जी करता है कि खरबूजा खाऊँ, आप एक खरबूजा और थोड़ी-सी मिश्री मेरे लिए ले आइए। मैंने जाकर खरबूजों के ढेर में से एक अच्छा खरबूजा छाँटा और उसे चीनी की तश्तरी में रखकर उसके पास लाया। फिर मैंने उससे पूछा कि इसे काटने के लिए छुरी चाहिए, छुरी कहाँ है। उसने कहा, मेरे सिरहाने की तरफ जो आला है उसमें छुरी रखी है।

ताक ऊँचा था, मैं उस तक नहीं पहुँच सका। इसलिए मैंने उछलकर छुरी उठाना चाहा। फिर भी यह न हो सका। इसलिए मैं एक मोखे का सहारा लेकर ऊँचा हुआ और छुरी मेरे हाथ में आ गई। मैं चाहता था कि धीरे से उतर जाऊँ लेकिन संयोग से मेरा पाँव फिसल गया और मैं सँभल ही न सका। मैं उस जौहरी के बेटे के ऊपर ही गिरा और मेरे हाथ की छुरी उसके हृदय में घुस गई और वह तड़प कर वहीं ठंडा हो गया।

मुझे अत्यंत शोक हुआ। मैंने अपने कपड़े फाड़ डाले और सिर और छाती पीटने लगा और पछाड़ें खाकर जमीन पर गिरने लगा। मैं बराबर रो-रोकर कहता था कि इस अभागे दिन में कुछ घड़ियाँ रह गई थीं। यह समय भी टल जाता तो लड़के की जान बच जाती। ज्योतिषियों का कहना ठीक ही निकला और मैं अभागा ही इस प्यारे बच्चे की मृत्यु का कारण बना। मैंने आकाश की ओर मुख किया और दोनों हाथ उठाकर कहने लगा कि हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तू सब कुछ देख रहा हे और तू सब कुछ जानता है। तुझे ज्ञात है कि इस बालक को मैंने जानबूझकर नहीं मारा है, यदि इसकी मृत्यु में मेरा तनिक भी दोष हो तो तू इसी समय मेरे प्राण ले ले। इसी प्रकार मैं बहुत देर तक जौहरी के पुत्र की लाश के पास बैठकर रोता-कलपता रहा।

जब दिन थोड़ा-सा ही बाकी रहा तो मैंने सोचा कि अब इसका बाप इसे लेने को आता होगा। मेरी इतने दिनों की सेवा व्यर्थ गई। अब मैं क्या मुँह लेकर उससे मिलूँ। अब मेरा यहाँ ठहरना ठीक नहीं। यह सोचकर मैं मकान से निकला और जीने पर पत्थर रखकर उस

पर मिट्टी डालकर बराबर कर दी। बाहर निकल कर देखा तो जौहरी का जहाज पाल उड़ाए चला आता है। मैंने सोचा जौहरी मुझे देखेगा तो अपने बेटे का हत्यारा समझ कर मुझे अपने नौकरों से मरवा डालेगा। कारण यह है कि मैं झूठ नहीं बोलता। इसलिए मैं एक ऊँचे और घने पेड़ पर चढ़ गया और देखने लगा।

जहाज ने किनारे पर लंगर डाला और उसमें से बूढ़ा जौहरी अपने नौकरों के साथ निकल कर हँसी-खुशी किनारे पर आया। तहखाने के पास जाकर उन लोगों ने पत्थर हटा कर जीने का रास्ता खोला लेकिन अब बूढ़े की प्रसन्नता गायब हो गई और उसके मुँह पर झाईं-सी फिर गई। कारण यह था कि उसने अपने पुत्र का नाम लेकर पुकारा तो अंदर से कोई उत्तर न आया। जब वे लोग अंदर गए तो देखा कि लड़का मरा पड़ा है और उसके हृदय में छुरी घुसी है, क्योंकि मुझे छुरी निकालने का ध्यान नहीं रहा। लाश को देखकर उन लोगों में अचानक रोना-चिल्लाना शुरू हो गया।

उन लोगों का विलाप और मृत बालक का उनके मुँह से गुणानुवाद सुनकर मुझे भी रोना आ रहा था। बूढ़ा जौहरी तो बेचारा अपने पुत्र का शव देखकर अचेत ही हो गया। उसके सेवकों ने उसे तहखाने से बाहर निकाल कर उसी पेड़ के नीचे बिठाया जिसके ऊपर मैं छुपा बैठा था। फिर वे लड़के की लाश को बाहर लाए, उसे नहलाया और सफेद कफन पहनाया और कब्र खोदकर उसमें लाश उतार दी। लड़के के पिता ने जो इस बीच बराबर रोता रहा था तीन बार कब्र में मिट्टी डाली और फिर उसके सेवकों ने कब्र को मिट्टी से ऊपर तक भर के बराबर कर दिया।

इसके बाद वे लोग तहखाने में गए और वहाँ से बची हुई खाद्य वस्तुएँ और वस्त्र बाहर लाकर जहाज पर ले गए। कुछ ही देर में उनका जहाज उन सबको लेकर देश को चल दिया। उसके बाद देर बाद मैं पेड़ से उतरा और उसी तहखाने में चला गया। अब मेरा नियम यह हो गया था कि रात मैं उसी घर में रहता और दिन में इधर-उधर घूमकर वहाँ से निकलने के लिए रास्ते की खोज करता रहता। भूख लगने पर जंगली फलों आदि से पेट भरता रहता। इसी प्रकार लगभग एक महीना और बीत गया।

फिर मैंने देखा कि समुद्र का जल धीरे-धीरे घट रहा है। समुद्र के घटने से द्वीप का विस्तार बहुत बढ़ गया। समुद्र इतना घटा कि जहाँ सब से गहरा था वहाँ भी कमर के बराबर पानी रह गया और किनारे से दूसरी ओर की भूमि दिखाई देने लगी। कुछ समय के बाद पानी और घटा और पिंडलियों के बराबर हो गया। अब मैंने उसे पार करने की सोची। समुद्र सूखने से मीलों तक बालू निकल आई थी। बड़ी कठिनाई से वह बालू भूमि पार करके समुद्र तट पर पहुँचा और पानी लाँघ करके दूसरी भूमि पर पहुँचा। वहाँ दूर पर आग जलती दिखाई दी। मैंने सोचा यहाँ पर मनुष्य रहते होंगे क्योंकि बगैर मनुष्यों के आग कैसे जलेगी। पास जाने पर पता चला कि वह आग नहीं है बल्कि ताँबे का बना एक घर है जिस पर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। मैं सोच ही रहा था कि यह मकान किसका हो सकता है कि उसमें से दस नौजवान बाहर निकले और उनके साथ लंबे कद का एक वृद्ध मनुष्य भी था। सारे जवान दाहिनी आँख से काने थे। मैं सोच ही रहा था कि ये लोग कौन हैं, इतने में

उन्होंने स्वयं ही आकर मुझ से नम्रतापूर्वक पूछा कि आप कौन हैं और कहाँ से आए हैं।

मैंने कहा कि मेरी कहानी बड़ी विचित्र और बड़ी लंबी है। यदि आप धैर्यपूर्वक सुन सकें तो मैं सुनाऊँ। वे सब सुनने को बैठ गए और मैंने अपना वृत्तांत आद्योपांत सुना दिया। उन्हें यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर वे लोग मुझे उस मकान के अंदर ले गए। उस मकान में कई बड़ी-बड़ी दालानें और बारह दरियाँ पार करके फिर एक बड़ा-सा नीला घर दिखाई दिया। उसके चारों ओर दस कमरे नीले रंग के बने हुए थे जिनमें एक- एक मनुष्य आराम से रह सकता था। कमरों के घेरे के बीच में एक दालान था जो उससे कुछ ऊँचा था। वृद्ध मनुष्य दालान में जा बैठा और चारों ओर के कमरों में दसों जवान कालीनों पर बैठ गए। एक जवान ने मुझ से कहा, 'हे मित्र, तुम भी घर के बीच में बिछे हुए कालीन पर बैठ जाओ लेकिन हम कुछ भी करें उसका कारण न पूछना, न यह पूछना कि तुम लोग दाहिनी आँख से काने क्यों हो।'

कुछ देर में वह बूढ़ा उठा और दसों काने जवानों के लिए खाना लाया। उसने हर एक को खाने में से उसका भाग दिया और एक भाग मुझे भी दिया जिसे मैंने खा लिया। भोजनोपरांत वृद्ध पुरुष ने हम लोगों को एक-एक प्याला सुगंधित मदिरा का दिया। फिर उन लोगों ने मेरे वृत्तांत को जो उन्हें अद्भुत और रोचक लगा था दुबारा सुना। इसके बाद हम इधर-उधर की बहुत-सी बातें करते रहे।

जब काफी रात बीत गई तो एक जवान ने बूढ़े से कहा कि हमारे सोने का समय हो गया है, अभी तुम हमारे दैनिक नियम की चीजें नहीं लाए। बूढ़ा एक कोठरी के अंदर जाकर वहाँ से दस थाल नीले ढक्कनों से ढके हुए लाया और हर जवान के सामने उसने एक-एक थाल रख दिया। ढक्कन खोलने पर हर थाल में राख और काली स्याही थी। उन्होंने राख और स्याही को मिलाकर अपने-अपने चेहरे पर मल लिया जिससे वे सब कुरूप ही नहीं भयानक भी दिखाई देने लगें। फिर वे सब चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे और मुँह और सीना पीट-पीट कर कहने लगे कि हाय, हमने कैसी भयानक मूर्खता की है और उसका हमें कैसा कुफल मिला है। बहुत देर तक वे जवान इसी प्रकार रोते-पीटते रहे। जब उन्होंने विलाप बंद किया तो वही बूढ़ा एक-एक करके सभी के पास पानी और चिलमची ले गया। सभी ने अपना मुँह धोया और जो कपड़े फाड़ डाले थे उन्हें उतार कर बदला और अपने-अपने कक्ष में जाकर सो रहे।

उन लोगों की यह दशा देखकर मैं अत्यंत उत्कंठित हुआ। मैंने वचन दिया था कि उनसे कुछ न पूछूँगा किंतु मुझे उत्सुकता के कारण रात भर नींद न आई। दूसरे दिन सुबह हम सभी लोग सैर के लिए बाहर निकले तो मैंने उनसे कहा, 'सज्जनो, आप लोग हर तरह ज्ञानवान और बुद्धिमान हैं किंतु कल रात आप लोगों ने जो कुछ किया वह उन्मत्तों के अलावा कोई भी नहीं करेगा। मैं बड़ा परेशान हूँ। मैंने आपको वचन दिया है कि मैं आपके कार्य कलाप के बारे में या आपके काने होने का कारण न पूछूँगा किंतु यह भी सत्य है कि अब यह बातें पूछे बगैर मुझसे रहा नहीं जाता है। इसलिए मैं आप से पूछता हूँ कि आप लोगों ने अपना मुँह क्यों काला किया और क्यों मातम किया और यह भी कि आप सभी

दाहिनी आँख से काने क्यों हैं। किंतु उन्होंने कहा कि हम तुम्हें यह सब बातें नहीं बता सकते, अगर तुम्हें हमारे साथ रहना हो तो इन प्रश्नों को भूल जाओ।

वह दिन भी बीता। रात को हम लोगों ने फिर अलग-अलग भोजन किया। उसके बाद बूढ़े ने फिर उन लोगों के सामने स्याही और राख से भरे थाल रखे और उन्होंने रोज की रस्म के तौर पर अपने मुँह काले किए और वही रोना-पीटना शुरू किया। दूसरी बार यह सब देखकर मेरी उत्सुकता और बढ़ गई। अगले दिन मैंने उनसे कहा, 'हे मित्रो, अब मुझे आप लोगों की यह दशा चुपचाप बैठकर नहीं देखी जाती। आप कृपया अपनी बातें मुझे बताएँ और कोई ऐसा भी उपाय बताएँ जिससे मैं अपने देश में पहुँच जाऊँ।'

उनमें से एक जवान ने मुझ से कहा, 'तुम हमारी दशा देखकर दुखी न हो। हम लोग तुम्हारे मित्र और हितचिंतक हैं इसीलिए हम तुम्हें यह बातें नहीं बताते, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी दशा भी हम लोगों जैसी हो जाए। वैसे तुम बहुत जोर देते हो तो हम बता भी सकते हैं किंतु उसका फल अच्छा नहीं होगा।' मैंने कहा, मैं यह सब जानना चाहता हूँ, फल चाहे जो कुछ हो। वह जवान बोला, 'देखो, हम तुम्हें एक बार फिर समझाते हैं कि इन बातों को जानने की जिद छोड़ दो। हमारा कहना मानो और इस बारे में कुछ न पूछो वरना हमारी तरह तुम भी काने हो जाओगे।' मैंने कहा, इस बात के फलस्वरूप मुझे जो भी दुख पहुँचे मैं उसे सहने के लिए तैयार हूँ, मैं इसे अपना ही दुर्भाग्य समझूँगा और आप लोगों में से किसी को इसके लिए दोष नहीं दूँगा। उस जवान ने कहा, 'देखो, अगर किसी कारणवश तुम्हारी दाहिनी आँख फूटी और तुम हमारे पास वापस आए तो तुम हमारे साथ नहीं रह पाओगे। तुम देख रहे हो कि यहाँ दस ही कक्ष हैं और दसों भरे हुए हैं। यहाँ अब ग्यारहवें आदमी के रहने की गुंजाइश नहीं है।' मैंने कहा, मुझे यह भी स्वीकार है कि आप मुझे यहाँ न रहने दें, लेकिन अपना भेद जरूर बताएँ।

जब उन दस जवानों ने देखा कि मैं अपनी बात पर अड़ा हुआ हूँ तो उन्होंने एक भेड़ का वध किया और उसकी खाल उतारी। फिर छुरी मुझे दे दी और कहा, 'इसे होशियारी से रखो, यह तुम्हारे बहुत काम आएगी। हम लोग तुम्हें इस भेड़ की खाल में सी देंगे और यहाँ से हट जाएँगे। फिर यहाँ एक अति विशालकाय पक्षी जिसे रुख कहते हैं आएगा और तुम्हें भेड़ समझ कर झपट्टा मार कर उठा लेगा और एक बहुत ऊँचे पहाड़ की चोटी पर रखकर तुम्हें खाना चाहेगा। हम पहले से होशियार किए देते हैं। ज्यों ही तुम्हें मालूम हो कि जमीन पर रखे गए हो, इसी छुरी से खाल को चीरकर बाहर निकल आना और जोर से चीखना। रुख पक्षी इससे डरकर भाग जाएगा।

'इसके बाद तुम निर्भय होकर आगे बढ़ जाना। कुछ दूर चल कर तुम्हें आलीशान महल मिलेगा। उस महल पर ऊपर से नीचे तक हर जगह सोने के पत्तर मढ़े हैं और जगह-जगह पर बड़े सुंदर ढंग से हीरे और दूसरे रत्न जड़े हुए हैं। तुम निर्द्वंद्व रूप से मकान के दरवाजे से, जो हमेशा खुला रहता है, अंदर चले जाना। हम सभी एक-एक करके उस मकान में रहे हैं किंतु उसमें क्या होगा यह बताने की जरूरत हम नहीं समझते और जो कुछ हमारे साथ हुआ वह भी नहीं बताएँगे क्योंकि हमारी दशा ऐसी नहीं है कि उसके कहने-सुनने से खुशी

हो। तुम स्वयं ही वह सब देख-सुन लोगे। यह जरूर कहते हैं कि हमारी तरह तुम भी दाहिनी आँख से काने हो जाओगे। वैसे तो तुम पर जो अभी तक बीता है और जो आगे बीतेगा वह सब लिखो तो पूरी पुस्तक तैयार हो जाएगी किंतु हम इससे अधिक कुछ न कहेंगे।'

जब जवान अपनी बात समाप्त कर चुका तो मैंने भेड़ की खाल को अपने चारों ओर लपेट लिया उन लोगों ने कुशलतापूर्वक मुझे इस तरह से सी दिया कि मेरे साँस लेने के लिए जगह रहे। मुझे इस प्रकार सीकर और जंगल में रख कर वे घर के अंदर चले गए। थोड़ी ही देर में रुख नामक विशाल पक्षी आया और भेड़ समझ कर मुझे झपट्टा मारकर पंजों में दबाकर ले उड़ा और एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर ले जाकर रख दिया। नीचे जमीन लगते ही मैं छुरी से खाल फाड़ कर बाहर आ गया और चीख मारी। पक्षी यह देखकर डरकर उड़ गया।

मैं वहाँ से बताए हुए मार्ग पर चल दिया और तीसरे पहर के लगभग महल तक पहुँच गया। जैसा सुना था उससे भी अधिक अच्छा उसे पाया। खुले दरवाजे से अंदर पहुँचा तो अंदर एक और शानदार चौकोर मकान देखा जिसके चारों ओर सौ द्वार थे, एक द्वार स्वर्ण का था और निन्यानबे चंदन की लकड़ी के थे। अंदर कई सुसज्जित वाटिकाएँ और गृह थे। सामने एक बड़ी बारहदरी थी जिसमें चालीस सुंदरी नवयौवनाएँ उत्तमोत्तम वस्त्रालंकारों से सुसज्जित बैठी थीं। मुझे देखकर वे उठ खड़ी हुईं। उन्होंने हँस कर मेरा स्वागत किया और कहने लगीं कि हम बहुत देर से आप की प्रतीक्षा में थे। फिर मुझे उन्होंने कुछ ऊँचे स्थान पर बिठाया। मैंने बहुत कहा कि मैं आप लोगों से ऊँचे पर बैठने का अधिकारी नहीं हूँ किंतु वे नहीं मानीं। वे बोलीं, 'आप हम सभी के पति और स्वामी हैं और हम सब आपकी पत्नियाँ और दासियाँ हैं।'
उन्हें देखकर और उनकी बातें सुनकर जो प्रसन्नता मुझे हुई उसका वर्णन संभव नहीं है। कोई सुंदरी मेरे पाँव धोने को गरम पानी लाई, किसी ने सुगंधित जल से मेरे हाथ धुलाए, किसी ने बहुमूल्य वस्त्र लाकर मुझे पहनाए, कोई नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन मेरे सामने ले आई और उन्हें मेरे सामने सजा दिया। कोई नवयौवना सुगंधित मदिरा की सुराही और प्याला लेकर मुझे पिलाने के लिए आ गई। इसी प्रकार वे देर तक हँसी-खुशी तरह-तरह से मेरी सेवा करती रहीं। मैं यह सब देखकर इतना अभिभूत हुआ कि अब तक के अपने सारे दुख-दर्द भूल गया और स्वयं को सारे संसार का अधिपति समझने लगा।

मैंने उन सभी सुंदरियों के साथ बैठकर भोजन और मदिरा पान किया। भोजन के बाद वे मेरे चारों ओर बैठ गईं और उन्होंने मुझ से मेरी यात्रा का वृत्तांत पूछना आरंभ किया और मैंने बताना। इतने में रात हो गई। उन स्त्रियों ने मकान में बड़ी सुंदर रोशनी की और कुछ स्त्रियों ने मुझसे मनोहर ढंग से बातचीत करनी शुरू कर दी ।

फिर उन्होंने भोजन के पात्र हटाकर फल, मिठाई, शर्बत आदि शीशे के सुंदर पात्रों में लेकर सामने रख दिए और मुझे ऊँचे आसान पर बिठाकर मेरे चारों तरफ बैठ कर गाने-

बजाने लगीं और उनमें जो नृत्य में प्रवीण थीं वे नृत्य भी करने लगीं। इसी में आधी रात बीत गई। फिर उनमें से एक ने कहा कि आज आप बहुत दूर से आए हैं, अब आराम करें। उसने कहा कि शयन कक्ष तैयार हैं, और सोने से पहले आप हममें से एक को चुन लें तो वह आपके साथ सो रहे। मैंने कहा, 'यह काम तो बड़ा कठिन और अनुचित होगा क्योंकि सौंदर्य में तुम लोग एक से एक बढ़कर हो, मैं किसे चुनूँ। फिर जिसे चुनूँगा उसके अलावा क्या दूसरों को बुरा नहीं लगेगा और क्या वे मेरी धृष्टता पर क्रुद्ध नहीं होंगी?' उस सुंदरी ने कहा, 'यह बात नहीं है। हम सब की हार्दिक इच्छा है कि आप को प्रसन्न करें। हममें परस्पर ईर्ष्या नहीं है। आप हम में से जिसका चाहे हाथ पकड़ कर ले जाएँ, कोई दूसरा बुरा नहीं मानेगा क्योंकि हम सभी चाहते हैं कि आप एक-एक करके हम सभी का भोग करें। आप हमसे प्रत्येक का आनंद उड़ाएँगे ही, किसी का आज तो किसी का कल। इसलिए हमें बुरा लगने का प्रश्न ही नहीं है। अब आप बगैर झिझक हम में से जिसे चाहें उसे अपने साथ ले जाएँ। हम सब शहजादियाँ हैं किंतु आपकी सेवा के लिए हैं।'

यह सुनकर मैंने उसी सुंदरी की ओर हाथ बढ़ाया जिसने मुझसे ऐसी बुद्धिमानी की बातें की थीं। उसने तुरंत अपना हाथ मेरे हाथ में दे दिया। मैं उसके साथ अपने शयन कक्ष में आ गया और अन्य उनतालिस स्त्रियाँ अपने-अपने शयनगार में चली गईं। दूसरे दिन सवेरे मैं अच्छी तरह उठ भी नहीं पाया था कि शेष उनतालिस स्त्रियों ने मेरे पास आकर अभिवादन किया और पूछा कि रात को आराम से तो सोए। हाँ, उनके आने के पहले मैंने वे सुंदर वस्त्र और रत्न पहन लिए थे जो मेरे सिरहाने रख दिए गए थे। कुछ देर बातचीत करने के बाद वे स्त्रियाँ मुझे स्नानागार में ले गईं और तरह-तरह की मालिश करके मुझे स्नान कराया। मेरे नहा चुकने के बाद उन्होंने दूसरे वस्त्राभूषण जो पहले वस्त्र आदि से भी उत्तम थे मुझे पहनाया। इसके बाद सारे दिन, बल्कि आधी रात तक पहले दिन की तरह हास-परिहास, किस्सा-कहानी, खाना-पीना और राग-रंग चलता रहा। आधी रात हुई तो उन्होंने कहा कि आप हममें से जिसे चाहें चुन लें कि वह आपके साथ जाकर सो जाए। मैंने एक और सुंदरी का हाथ पकड़ा और उसे लेकर अपने शयन कक्ष में चला गया। सुबह उठकर फिर उन लोगों के साथ स्नानागार में चला गया।

फकीर ने जुबैदा से कहा कि हे सुंदरी, मैं तुमसे किस प्रकार और कहाँ तक बताऊँ कि कैसे आनंद और संतोष में मेरा समय बीतता रहा। दिन भर नाना प्रकार की खाने- पीने और अन्य विलास सामग्री का उपभोग करता और रात को उन चालीस में से किसी एक सुंदरी को अपने शयन कक्ष में ले जाता। इसी प्रकार लगभग एक वर्ष आनंदपूर्वक उस राजमहल में बीत गया। जब वर्ष पूरा होने में एक दिन रह गया तो सुबह को वे सुंदरियाँ जो हमेशा प्रसन्नवदन होकर मुझसे मेरा रात का हाल पूछने आया करती थीं, आँखों में आँसू भरे हुए आईं और कहने लगीं कि ऐ शहजादे, हम सब आपसे विदा होने के लिए आए हैं, आपको हम भगवान को सौंपते हैं, वही आपकी रक्षा करेगा।

मुझे उनकी इस बात से बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ। मैंने उनसे पूछा, 'ऐसा क्या हो गया कि तुम लोग इतनी दुखी हो और यहाँ से विदा होने की बात क्यों कर रही हो? तुम्हें कहाँ जाना है और क्यों जाना है? भगवान के लिए मुझ से सारी बातें कहो। अगर तुम किसी

संकट में हो और तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो मुझ से जो भी सहायता बन पड़ेगी वह मैं करूँगा।' उन्होंने कहा, 'कुछ नहीं हो सकता। भगवान की यही इच्छा है कि हम लोग हमेशा के लिए अलग हो जाएँ और आज के बाद न आप कभी हमें देखें न हम आपको देखें। आपकी तरह पहले भी यहाँ कई लोग आए और फिर ऐसे अलग हुए कि हमें आज तक उनका कोई हाल मालूम नहीं हुआ। वही बात आपके साथ होने वाली है।'

यह कहने के बाद उन सभी ने विलाप करना आरंभ कर दिया। मैं और घबरा उठा और मैंने उनसे कहा कि तुम लोग साफ-साफ बताती क्यों नहीं कि तुम्हारे दुख-संताप का कारण क्या है। उन्होंने कहा कि हम आप को क्या बताएँ क्यों दुखी हैं। यह समय हमारे आप से सदा के लिए बिछुड़ने का है, हाँ एक बात है कि अगर आपको हमसे मिलने की उत्कट इच्छा हो और उसके लिए जो प्रतिज्ञा करें उस पर दृढ़ रहें तो हम लोगों का आपसे फिर मिलन हो भी सकता है।

मैंने कहा, 'मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया कि तुम्हारी बातों का क्या अर्थ है। मैं तुम्हें ईश्वर की सौगंध दिलाता हूँ कि सारी बात को साफ समझा कर कहो।' अब उनमें से एक ने कहा, 'सबसे पहले तो आप यह समझ लीजिए कि हम चालीसों शहजादियाँ हैं। हम लोग इस स्थान पर एक वर्ष तक आमोद-प्रमोद के लिए आया करते हैं। इसके बाद चालीस दिन के लिए अपने आवश्यक कार्यों के लिए अपने-अपने देश चले जाते हैं। चालीस दिन बाद फिर एक वर्ष के लिए इस महल में आ जाते हैं। कल हमारा यह वर्ष पूरा हो गया इसलिए आज हम लोग आपसे विदा ले रहे हैं। यही कारण है हमारे शोक और विलाप का। हम यहाँ से जाने के पहले आपको यहाँ के सौ कोठों की कुंजियाँ सौंप जाएँगे। हमारे पीछे आप सभी में घूम-फिर कर अपना जी बहलाएँ। लेकिन हम आपको अपनी सौगंध देते हैं कि इस स्वर्णद्वार को न खोलना। अगर आपने इसे खोला तो हमारा-आपका मिलन फिर कभी न हो सकेगा। लेकिन हमें मालूम है कि आप में इतना आत्मसंयम नहीं है कि उस द्वार को न खोलें। आप उसे जरूर खोलेंगे और हमेशा के लिए हमसे बिछुड़ जाएँगे।

यही कारण है कि हम सारी शहजादियाँ दुखी हैं। अगर भगवान ने आपको सद्बुद्धि दी और आपने उस स्वर्णद्वार को न खोला तो आपको कभी कोई दुख न होगा, आप संपूर्ण आयु चैन से बिताएँगे और हमारे साथ हमेशा आनंद करेंगे। लेकिन अगर आपने हमारे कहने के विपरीत किया तो आपको बहुत अधिक शोक और कष्ट होगा और आपके कष्ट से हमें भी दुख और कष्ट होगा। हम फिर आप से सौगंध देकर कहते हैं कि इस स्वर्णद्वार को न खोलना। हमसे वादा कीजिए कि आप ऐसा नहीं करेंगे कि आप हमसे हमेशा के लिए बिछुड़ जाएँ।

'हम वैसे इस स्वर्णद्वार की चाबी अपने साथ भी ले जा सकते हैं किंतु यह अच्छा नहीं मालूम होता कि आप जैसे जिम्मेदार और बड़े आदमी पर अविश्वास करें और चाबी आपके हाथ में न दें। हाँ एक बार फिर यह कहते हैं कि अगर आपने यह स्वर्णद्वार खोला तो हमें और आपको अतीव कष्ट होगा।'

उनकी बातें सुनकर मैं भी दुखी हुआ। मैंने उनसे कहा, 'मुझे तुम लोगों से अलग होने का अत्यंत दुख है। खैर, किसी प्रकार यह चालीस दिन काटूँगा।तुम्हारी इस नसीहत को हमेशा याद रखूँगा कि यह स्वर्णद्वार न खोलूँ। मुझे तो नहीं मालूम होता कि मुझ में इतना अधैर्य है कि तुम से किया हुआ वादा तोड़ दूँ। इससे अधिक साधारण बात क्या होगी कि मैं सौ दरवाजों को खोल कर घूमूँ-फिरूँ और एक को खोलने से बाज रहूँ। अगर तुम लोग इससे कठिन काम करने को कहती हो उसे भी मैं स्वीकार कर लेता। तुम्हारी बात मानने में तो मेरा ही लाभ है। मैं भला ऐसी बात क्यों करूँगा जिससे मेरी गहरी हानि हो और तुम लोगों से भी हमेशा के लिए अलग होना पड़ जाए। मैं ऐसी बात कभी नहीं करूँगा।'

यह कहकर मैंने उन सभी को एक-एक करके गले लगाया। इसके बाद वे सब चली गईं और मैं उस लंबे-चौड़े राजमहल में अकेला ही रह गया। मुझे अत्यंत शोक हो रहा था। यद्यपि वे केवल चालीस दिन बाद आने वाली थीं तथापि उनके वियोग में मुझे एक-एक घड़ी भारी पड़ रही थी। फिर मैंने अपना जी बहलाने को सोचा कि जिन दरवाजों की चाबियाँ मेरे पास हैं उन्हें खोल कर देखूँ। मैंने सोचा कि निषेध तो केवल एक द्वार के खोलने का है, सो उसे नहीं खोलूँगा।

इसलिए मैंने पहला दरवाजा खोला। अंदर गया तो देखा कि एक बड़ा भारी फलों का बाग है। ऐसा शानदार फलों का बाग संसार में शायद ही कोई और हो। उसमें सहस्रों सघन और सुंदर वृक्ष उचित दूरियों पर लगे थे। उनमें नाना प्रकार के सुस्वादु और आकर्षक रंगों के फल लगे हुए थे। उनमें से बहुत-से फल ऐसे थे जिनका मैं नाम भी नहीं जानता था। उन वृक्षों में सिंचाई का प्रबंध इस प्रकार किया गया था कि एक बड़ी और पक्की नहर से काट काटकर छोटी-छोटी नहरें इस कारीगरी से निकाली गई थीं कि प्रत्येक वृक्ष की जड़ में पानी पहुँचता था। उसके लिए किसी आदमी की जरूरत न थी कि पेड़ों की जड़ों में पानी पहुँचाए। इससे हर पेड़ हरा-भरा रहता था। कई वृक्ष तो इतने अधिक फलों से लदे थे कि उनकी डालियाँ झुक गई थीं। कुछ वृक्षों में केवल इतना पानी पहुँचा था कि उनमें फल पकी हुई हालत ही में रहें। बाग को ऐसे बुद्धिमानों ने लगाया था कि प्रत्येक वृक्ष को केवल उतना पानी पहुँचने का प्रबंध था जिससे वे सदैव हरे-भरे रहें और ऐसा न हो कि सड़ गल जाएँ।

मैं बहुत देर तक उस बाग में घूमता-फिरता रहा। वहाँ बहुत-सी वस्तुएँ थीं जिन्हें देख कर मुझे आश्चर्य होता और मैं प्रत्येक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखता। फिर मैं उस बाग में वापस आया और उसके दरवाजे में ताला लगा दिया। फिर मैंने दूसरा दरवाजा खोला। इसके अंदर एक फूलों का बाग था। पहले बाग की जैसी कारीगरी ही से इस बाग के हर पौधे में उचित मात्रा में पानी पहुँचाने का प्रबंध किया गया था। संसार में कोई ऐसा फूल नहीं होगा जो उस वाटिका में न हो। गुलाब, चमेली, नरगिस, बनफ्शा, सौसन, चंपा, बेला, मोतिया आदि नाना प्रकार के फूल वहाँ पर खिले हुए थे। उनकी सुगंध हवा में भरी हुई थी और उसके कारण मस्तिष्क को बड़ा सुख मिल रहा था। मैं सुध-बुध खोकर घंटो वहाँ घूमता रहा।

फिर मैंने उस बाग का दरवाजा भी बंद किया और तीसरा दरवाजा खोला। उसके अंदर एक पक्षीगृह था। उसमें सारा फर्श संगमरमर का था और ऊँचाई से चंदन आबनूस की लकड़ियों से बने पिंजरे लटक रहे थे जिनमें तोता, मैना, बुलबुल, लाल इत्यादि भाँति-भाँति के पक्षी थे। वे अपनी मीठी बोलियों से चित्त प्रसन्न कर रहे थे। उन पिंजरों में दाने और पानी की कुल्हियाँ बहुमूल्य पत्थरों की बनी थीं। इतना बड़ा पक्षी गृह था कि कम से कम आदमी उसकी सँभाल के लिए जरूरी थे लेकिन वहाँ एक भी आदमी दिखाई नहीं देता था। साथ ही इतनी सफाई भी थी कि एक तिनका इधर-उधर पड़ा दिखाई नहीं देता था।

शाम हुई तो सारे पक्षी अपने-अपने पंखों में चोंच डाल कर सो गए और मैं भी पक्षीगृह का ताला लगा कर अपने शयन कक्ष में आ गया और सो रहा। दूसरे दिन सुबह एक और द्वार खोला तो उसमें एक बड़ा महल देखा। उसमें चालीस प्रकोष्ठ बने थे किंतु सभी के दरवाजे खुले थे। एक कोठे में सिर्फ मोती भरे थे। मोतियों के विभिन्न आकारों के हिसाब से ढेर लगे थे। एक ढेर में कबूतर के अंडे जितने बड़े मोती थे। फिर उनसे छोटे मोतियों के कई ढेर थे। दूसरे कोठे में नीलम भरे थे, चौथे में सोने की ईंटें, पाँचवें में अशर्फियाँ, छठे में चाँदी की ईंटें, सातवें में मुद्रा की ढेरियाँ थीं। इसी प्रकार अन्य कोठों में किसी में पुखराज, किसी में पन्ना, किसी में मूँगा आदि रत्न भरे हुए थे। मैं इस असीम रत्नागार को देखकर आश्चर्यान्वित हुआ और सोचने लगा कि मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि इतने खजाने और चालीस सुंदर शहजादियों का स्वामी हूँ।

फकीर ने जुबैदा से कहा कि हे सुंदरी, मैं उस ऐश्वर्य का उल्लेख करने में असमर्थ हूँ जो मैंने वहाँ देखा। उनतालीस दिनों तक मैं विभिन्न द्वारों में जाकर वहाँ की आश्चर्यप्रद वस्तुएँ देखता रहा। चालीसवें दिन मेरे देखने के लिए सिर्फ एक दरवाजा रह गया। यह वही दरवाजा था जिसे खोलने को मुझ से मना किया गया था। मुझे शैतान ने बहका दिया और मैंने अपनी कसमें और वादे तोड़कर उस दरवाजे को भी खोल डाला। दरवाजा खोलते ही उससे बड़ी तेज सुगंध आई जिससे मैं सुध-बुध खो बैठा। होश में आया तो अंदर गया और ठहर कर उस गंध के कम होने की प्रतीक्षा करने लगा। फिर अंदर जाकर देखा तो बहुत बड़ा महल है जिसके फर्श पर केसर बिछी है और सोने की तिपाइयों पर चाँदी के दीपक जल रहे हैं जिनमें इत्र के जैसे सुगंधित तेल भरे थे। इसी से वहाँ तेज सुगंध हो रही थी। और भी कई आश्चर्य की चीजें मैंने वहाँ पर देखीं।

मैंने देखा कि एक ओर बहुत उम्दा मुश्की घोड़ा बँधा है। उसके सामने जो जल पात्र था उसमें गुलाब जल भरा हुआ था और खाने की नाँद में तिल और जौर भरे थे। उस घोड़े की लगाम में सोने के पत्तर लगे थे। मैंने उस घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे बाहर निकाला कि बाहर के प्रकाश में उसे भली प्रकार देख लूँ। बाहर लाकर मैं उस पर सवार हो गया और उसे चलने का इशारा दिया। लेकिन वह न चला। फिर मैंने उसे एक चाबुक मारा। चाबुक लगते ही घोड़ा भयानक रूप से हिनहिनाया और अपने पंखों से -जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा था - उड़ चला। मैं घबराकर उसकी अयाल पकड़ कर लटक गया। घोड़ा मुझे लेकर इतना ऊँचा उड़ा कि वहाँ से पृथ्वी बहुत छोटी दिखाई देती थी। फिर वह उतर कर उसी

ताँबे के मकान की छत पर पहुँच गया जहाँ पर मैं पहले पहुँचा था। वहाँ उसने अपने शरीर को इतने जोर का झटका दिया कि मैं पीठ के बल जमीन पर गिरा। घोड़े ने अपनी पूँछ मेरी दाहिनी आँख में मारी जिससे वह फूट गई। फिर घोड़ा उड़ गया।

मैं किसी तरह गिरता-पड़ता नीचे आया। नीचे बारहदरी और उसके इर्दगिर्द बने हुए दस कमरों को देखकर मुझे विश्वास हो गया कि यह वही महल है जहाँ मैं पहले आया था। उस समय वे दस जवान वहाँ नहीं थे। मैं उनकी प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर में वे लोग बूढ़े आदमी के साथ वहाँ आए। उन्होंने न मेरी ओर कुछ ध्यान दिया न मेरी आँख फूटने पर सहानुभूति प्रकट की। उन्होंने कहा, 'देखो भाई, हम लोग तो तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण नहीं सिद्ध हुए।' मैंने कहा, 'आप लोग ठीक कहते हैं। मुझ पर जो मुसीबत पड़ी वह अपनी ही मूर्खता के कारण पड़ी किंतु मैं जानना चाहता हूँ कि इस मुसीबत को दूर करने का भी उपाय है या नहीं।'

उन्होंने कहा, 'अगर हम ऐसा उपाय जानते तो अपनी मुसीबत को दूर न कर लेते? तुम्हारी तरह हम लोग भी एक-एक वर्ष तक उन शहजादियों के साथ आनंदपूर्वक रहे। अगर हम वह स्वर्णद्वार न खोलते तो हम उनके साथ आनंदपूर्वक रहते। तुम हम लोगो से अधिक बुद्धिमान दिखाई देते थे फिर भी तुम वह सोने का दरवाजा खोलने से बाज न आ सके और अपने को ऐसी मुसीबत में डाल बैठे। अच्छा; यह तो हम तुम्हें पहले ही बता चुके हैं कि अब यहाँ ग्यारहवें आदमी के रहने के लिए स्थान नहीं है। तुम्हारे लिए यही उचित होगा कि तुम यहाँ से बगदाद जाओ जहाँ का रास्ता हम बता देंगे। वहाँ तुम्हें ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो तुम्हारे दुख दूर करेगा।' उनकी सलाह मानकर मैं बगदाद पहुँचा। रास्ते में दाढ़ी-मूँछ और भवें मुँडवा दीं और फकीरों के वस्त्र पहन लिए। चलते-चलते बहुत दिन बाद आज शाम को बगदाद पहुँचा। परकोटे पर इन दोनों साथियों से भेंट हुई। फिर तुम्हारे घर आए जहाँ तुमने हमारा बड़ा सत्कार किया।

जब तीसरा फकीर अपना हाल कह चुका तो जुबैदा ने उससे और उसके दोनों साथियों से कहा कि मैंने तुम तीनों का अपराध क्षमा किया, अब तुम लोग यहाँ से चले जाओ। एक फकीर ने कहा कि आप कृपा करके हमे इतनी अनुमति दें कि हम यहाँ रुक कर इन बाकी तीन आदमियों की कहानी भी सुन लें। जुबैदा ने खलीफा, जाफर और मसरूर की ओर देखकर अपना-अपना हाल कहने का इशारा किया। वह यह तो जानती ही न थी कि यह लोग कितने उच्च पद के हैं, इसीलिए उसने उन्हें अपना-अपना हाल सुनाने की आज्ञा दी।

खलीफा के मंत्री जाफर ने निवेदन किया, 'हे सुंदरी, हम लोग इस महल में प्रवेश करने के समय ही अपना-अपना हाल कह चुके हैं। अब तुमने फिर पूछा है तो कहते हैं कि हम लोग मोसिल से आए हुए व्यापारी हैं। हम अपनी व्यापार की वस्तुएँ बेचने यहाँ आए थे और एक सराय में उतरे थे। आज रात के लिए एक व्यापारी ने हमें खाने का निमंत्रण दिया। जब हम उसके घर पहुँचे तो उसने हम लोगों को अत्यंत स्वादिष्ट भोजन कराया और बढ़िया शराब पिलाई। फिर देर तक उसके यहाँ संगीत और नृत्य का कार्यक्रम चला। वहाँ का शोर इतना बढ़ा कि गश्त पर निकले सिपाही आ गए। उन्होंने कई लोगों को

गिरफ्तार कर लिया। हम लोग भाग्यशाली थे कि किसी प्रकार बचकर निकल आए। लेकिन रात अधिक बीत जाने के कारण हमारी सराय का द्वार बंद हो गया था। हम लोग परेशान थे कि रात कहाँ बिताएँ। इधर-उधर भटकते हुए तुम्हारी गली में आ गए। तुम्हारे घर में हँसने-बोलने और गाने-बजाने की आवाजें आ रही थीं। इसीलिए हमने दरवाजा खुलवाया। तुमने कृपा कर हम लोगों का आदर-सत्कार किया। यही हमारी कहानी है।

मंत्री ने यह बात इतने आत्मविश्वास और इतनी कुशलता से कही कि जुबैदा को उसकी सत्यता में विश्वास हो गया। उसने कहा, 'अच्छा, हमने तुम्हारा भी अपराध क्षमा किया और अब तुम सब यहाँ से चले जाओ।' वे लोग उठने में झिझके तो जुबैदा ने क्रोध में भर कर कहा, 'जाते हो या जान देना चाहते हो?' उसकी डाँट सुनकर वे सातों व्यक्ति मजदूर, तीनों फकीर, खलीफा और उसके दोनों साथी - चुपचाप उठकर बाहर आ गए क्योंकि सात हब्शी नंगी तलवारें लिए उनके सर पर खड़े थे। सातों व्यक्तियों के घर से निकलते ही स्त्रियों ने घर का दरवाजा बंद कर लिया।

बाहर आकर खलीफा ने इन फकीरों से कहा कि इतनी रात बीत गई है, अब तुम लोग कहाँ जाओगे क्योंकि तुम इस नगर से परिचित भी नहीं हो। उन तीनों ने कहा कि हम लोग भी इसी चिंता में हैं। खलीफा ने कहा, तुम लोग हमारे साथ आओ, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। यह कह कर खलीफा ने मंत्री के कान में कहा कि इन तीनों को अपने घर ले जाकर ठहराओ और कल मेरे दरबार में हाजिर करो। अतएव मंत्री जाफर उन तीनों फकीरों को अपने घर ले गया और इधर मसरूर सहित खलीफा भी अपने महल में आ गया।

खलीफा शयन कक्ष में जाकर अपनी शय्या पर लेट गया किंतु उसे सारी रात नींद नहीं आई। उसने जो कुछ देखा-सुना था उस का वैचित्र्य उसके चित्त से उतरता ही नहीं था। वह इसी चिंता में था कि यह बात जान ले कि जुबैदा कौन है और उसने दोनों कुतियों को क्यों मारा और फिर क्यों प्यार किया, साथ ही उसे यह जानने की भी बड़ी इच्छा थी कि अमीना के शरीर पर जो काले निशान पड़े हैं उनका क्या भेद है।

सुबह वह नित्य कर्म, नाश्ता आदि से निश्चिंत होकर दरबार में गया और सिंहासन पर बैठ गया। कुछ देर में मंत्री ने आकर उसे प्रणाम किया। खलीफा ने मंत्री से कहा, 'जब तक मैं उन तीनों स्त्रियों और दोनों काली कुतियों का पूरा हाल न जान लूँगा मुझे चैन न मिलेगा। इसी कारण मुझे रात भर नींद नहीं आई है। तुम तुरंत जाओ और उन तीनों फकीरों और तीनों स्त्रियों को मेरे सन्मुख उपस्थित करो।' मंत्री ने उस मकान में जाकर पिछली रात की बातों का उल्लेख किए बगैर उन तीनों स्त्रियों से कहा कि खलीफा तुम लोगों से कुछ बात करना चाहते हैं, तुम दरबार में चलो। अतएव वे तीनों अपने ऊपर बुरका डाल कर मंत्री के साथ चल दीं। रास्ते में मंत्री ने अपने घर होते हुए तीनों फकीरों को भी बगैर उन्हें कुछ बताए अपने साथ ले लिया।

खलीफा उन स्त्रियों और फकीरों को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने तीनों स्त्रियों को

अपने पीछे की ओर परदे के पीछे बिठाया ताकि दरबारियों और सेवकों पर प्रकट हो जाए कि ये सम्मानीय महिलाएँ हैं। फिर उसने उन तीनों फकीरों को जो दरअसल राजा और राजकुमार थे, उनकी प्रतिष्ठा के अनुसार अपने समीप आसन दिए। स्त्रियों के आसन ग्रहण करने के बाद खलीफा ने उनकी ओर मुँह करके कहा, 'कल रात मैंने मोसिल के व्यापारी के रूप में तुमसे भेंट की थी। हमारी बातों से तुम लोगों को कुछ दुख हुआ था और इसीलिए तुम हम लोगों से नाराज हुई थीं। मैंने आज जो तुम्हें बुलाया है वह इसलिए नहीं कि मैं तुम लोगों को कोई दंड देना चाहता हूँ। मैंने वह बात तो भुला दी है। मैं तुम्हारे आने से बड़ा प्रसन्न हूँ। तुममें जो सद्बुद्धि है वह यदि बगदाद की सारी स्त्रियों में आ जाए तो कितना अच्छा हो। यद्यपि हमने अपना वादा तोड़ कर तुम्हें दुख पहुँचाया किंतु फिर भी तुमने हम लोगों पर कृपा करके हमें छोड़ दिया।'

खलीफा ने आगे कहा, 'कल रात में मोसिल का व्यापारी था और तुम्हारे आदेश में था। इस समय मैं हारूँ रशीद, अब्बास वंश का सातवाँ खलीफा और हजरत मुहम्मद का वंशज हूँ। मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि मैं जानूँ कि तुम कौन हो और तुम तीनों में से एक स्त्री के कंधों पर काले निशान किसलिए हैं।' यद्यपि खलीफा ने यह सब स्पष्ट शब्दों में उनसे कहा था तथापि मंत्री ने एक बार फिर इन बातों को दुहरा दिया। यह सुनकर जुबैदा ने आप बीती आरंभ कर दी।

किस्सा जुबैदा का

जुबैदा ने खलीफा के सामने सर झुका कर निवेदन किया है राजाधिराज, मेरी कहानी बड़ी ही विचित्र है, आपने इस प्रकार की कोई कहानी नहीं सुनी होगी। मैं और वे दोनों काली कुतियाँ तीनों सगी बहिनें हैं और यह दो स्त्रियाँ जो मेरे साथ बैठी हैं मेरी सौतेली बहनें हैं। जिस स्त्री के कंधों पर काले निशान हैं उसका नाम अमीना है, जो अन्य स्त्री मेरे साथ है उसका नाम साफी है और मेरा नाम जुबैदा है। अब मैं आपको बताती हूँ कि मेरी सगी बहनें कुतिया किस तरह से बन गईं।

जुबैदा ने कहा कि पिता के मरने के बाद हम पाँचों बहनों ने उनकी संपत्ति को आपस में बाँट लिया। मेरी सौतेली बहनें अपना-अपना भाग लेकर अपनी माता के साथ रहने लगीं और हम तीनों अपनी माता के पास रहने लगीं, क्योंकि उस समय हमारी माता जीवित थी। मेरी दोनों बहनें मुझ से बड़ी थीं। उन्होंने विवाह कर लिए और अपने-अपने पतियों के घर जाकर रहने लगीं और मैं अकेली रहने लगी।

कुछ समय के पश्चात मेरी बड़ी बहन के पति ने अपना सारा माल बेच डाला और मेरी बहन का रुपया भी उस रुपए में मिलाकर व्यापार के इरादे से वह अफ्रीका को चला गया और मेरी बहन को भी ले गया। किंतु वहाँ जाकर उसने व्यापार के बजाय भोग- विलास आरंभ किया और कुछ ही दिनों में अपना और मेरी बहन का सारा धन उड़ा डाला बल्कि उसके वस्त्राभूषण आदि भी बेच खाए। फिर उसने किसी बहाने से मेरी बहन को तलाक दे दिया और घर से भी निकाल दिया। वह अत्यंत दीन-हीन अवस्था में हजार दुख उठाती हुई बगदाद पहुँची और चूँकि उसके लिए और कोई स्थान नहीं था अतएव मेरे घर आई।

मैंने उसका बड़ा स्वागत-सत्कार किया और उससे पूछा कि तुम्हारी यह दुर्दशा कैसे हुई। उसने अपनी करुण कथा सुनाई जिसे सुनकर मैं बहुत रोई। फिर मैंने उसे स्नान कराया और अपने वस्त्रों के भंडार से अच्छे कपड़े निकाल कर उसे पहनाए। मैंने उससे कहा, 'अब तुम आराम से यहाँ रहो। तुम मेरी माँ की जगह हो। भगवान ने मुझ पर बड़ी दया की है कि तुम्हारे जाने के बाद मैंने रेशमी वस्त्रों का व्यापार किया जिससे मुझे बहुत लाभ हुआ है। अब जो कुछ मेरे पास है वह भी अपना समझो और तुम भी मेरे साथ मिलकर यही व्यापार करो।'

नितांत उसके बाद से हम दोनों बहनें संतोष और सुख के साथ रहने लगीं। अकसर ही हम लोग अपनी तीसरी बहन को याद करते कि वह न जाने कहाँ होगी। बहुत दिनों तक हमें उसका कोई समाचार नहीं मिला कि वह कहाँ है और किस दिशा में है किंतु अचानक एक दिन वह मँझली बहन भी बड़ी बहन के समान दीन-हीन अवस्था में मेरे पास आई क्योंकि उसके पति ने भी उसकी संपूर्ण संपत्ति को उड़ा डाला था और फिर उसे तलाक देकर अपने घर से निकाल दिया था ओर वह भी गिरती-पड़ती बगदाद पहुँच कर मेरे घर में शरण लेने के लिए आई थी।

मैंने उसका भी बड़ी बहन की भाँति स्वागत-सत्कार किया और उसे बड़ा दिलासा दिया। वह भी आराम से रहने लगी। लेकिन कुछ दिनों बाद इन दोनों ने मुझसे कहा कि हमारे रहने से तुम्हें कष्ट भी होता है और हम पर तुम्हारा पैसा भी खर्च होता है इसलिए हम लोग फिर से विवाह करेंगे। मैंने कहा, 'यदि मेरी असुविधा भर से तुम्हें यह खयाल पैदा हुआ कि विवाह कर लेना चाहिए तो यह बेकार बात है क्योंकि भगवान की दया से व्यापार में मुझे इतना लाभ हो रहा है कि हम तीनों बहनें जीवनपर्यंत आनंद और सुख-सुविधा से रह सकती हैं। तुम्हें मेरे पास कोई कष्ट न होगा। तुम्हारे विवाह करने की इच्छा को सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य है। तुम लोगों ने अपने-अपने पतियों के हाथों इतने कष्ट उठाए हैं। फिर भी मुसीबत में पड़ना चाहती हो। अच्छे पतियों का मिलना अत्यंत दुष्कर है। इसलिए तुम विवाह का विचार छोड़ दो।'

इस प्रकार मैंने उन्हें बहुत समझाया। लेकिन वे दोनों अपनी बात पर दृढ़ रहीं। वे मुझसे कहने लगीं, 'तू हमसे अवस्था में कम है किंतु बुद्धि में अधिक है। किंतु जितने दिन रह लिया उससे अधिक हम तेरे घर में न रहेंगे क्योंकि आखिर तू हमें अपनी आश्रिता ही समझती होगी और अपने हृदय में हमारा सम्मान दासियों से अधिक नहीं करती होगी।' मैंने कहा, 'यह तुम लोग क्या कह रही हो? मैं तो तुम्हें वैसा ही अपने से ज्येष्ठ और सम्मानीय समझती हूँ जैसा पहले जमाने में समझती थी। मेरे पास जो भी धन-संपत्ति है वह तुम्हारी ही है।' यह कह कर मैंने उनको गले लगाया और बहुत दिलासा दिया। और हम तीनों मिल कर पहले की तरह रहने लगे।

एक वर्ष के पश्चात भगवान की दया से मेरा व्यापार ऐसा चमका कि मेरी इच्छा हुई कि उसे अन्य नगरों तक बढ़ाऊँ। अतएव मैंने जहाज पर सामान लाद कर किसी अन्य देश में भी व्यापार जमाने की सोची। मैं व्यापार की वस्तुओं और अपनी दोनों बहनों को लेकर बगदाद से बूशहर में आई और एक छोटा-सा जहाज खरीद कर मैंने अपनी व्यापार की वस्तुओं को उस पर लाद दिया और चल पड़ी। वायु हमारे अनुकूल थी इसीलिए हम लोग फारस की खाड़ी में पहुँच गए और वहाँ से हमारा जहाज हिंदोस्तान के लिए चल पड़ा। बीस दिन बाद हम लोग एक टापू पर पहुँचे जिसके पिछले भाग में एक बहुत ऊँचा पर्वत था। द्वीप में समुद्र के किनारे ही एक बड़ा और सुंदर नगर बसा था।

मैं जहाज पर बैठे-बैठे बहुत ऊब गई थी इसलिए अपनी बहनों को जहाज ही पर छोड़कर एक डोंगी पर बैठ कर तट पर गई। नगर के द्वार पर काफी संख्या में सेना रक्षा के लिए नियुक्त थी और कई सिपाही चुस्ती से अपनी जगहों पर खड़े थे। उनका रूप बड़ा भयोत्पादक था। मैं कुछ डरी किंतु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनके हाथ-पाँव में कोई हरकत नहीं होती थी बल्कि उनकी पलकें भी नहीं झपकती थीं। मैं पास पहुँची तो देखा कि सारे सैनिक पत्थर के बने हैं। मैं नगर के भीतर चली गई। वहाँ भी देखा कि हर चीज पत्थर की है। बाजार की दुकानें बंद थीं। भाड़ों में से भी धुआँ नहीं निकल रहा था और न घरों से। चुनांचे मैं समझ गई कि यहाँ भी सब लोग पत्थर के हो गए होंगे।

मैंने नगर के एक ओर एक बड़ा मैदान देखा जिसके एक ओर एक बड़ा फाटक था और उसमें

सोने के पत्तर लगे थे। खुले फाटक के अंदर गई तो एक बड़ा दरवाजा देखा जिस पर रेशमी परदा लटक रहा था। स्पष्टता ही वह राजमहल लगता था। मैं परदा उठाकर अंदर गई तो देखा कि कई चोबदार वहाँ मौजूद हैं - कुछ खड़े हैं कुछ बैठे हैं - किंतु वे सबके सब पत्थर के बने हुए थे। मैं और अंदर गई फिर वहाँ से तीसरे भवन में प्रविष्ट हुई। सभी जगह देखा कि जीता-जागता कोई मनुष्य नहीं है, जो भी है वह पत्थर का बना हुआ है। चौथा मकान अत्यंत सुंदर बना था, उसके द्वार और जंजीरें सभी सोने के बने हुए थे। मैंने समझ लिया कि यह कक्ष रानी का निवास स्थान होगा। अंदर जाकर देखा कि एक दालान में बहुत-से हब्शी काले संगमरमर के बने हुए हैं। दालान के अंदर एक सजा हुआ कमरा था जिसमें एक पत्थर की स्त्री सिर पर रत्नजड़ित मुकुट पहने बैठी है। मैंने समझ लिया कि यह रानी होगी। उसके गले में एक नीलम का हार पड़ा था जिसका हर एक दाना सुपारी के बराबर था। मैंने पास जाकर देखा कि इतने बड़े होने पर भी वे रत्न बिल्कुल गोल और चिकने थे। वहाँ के बहुमूल्य रत्नों और वस्त्रों को देखकर मुसे आश्चर्य हुआ। वहाँ फर्श पर गलीचे बिछे हुए थे और मसनद और गद्दे आदि अलस कमरव्वाब आदि बहुमूल्य वस्त्रों के बने हुए थे।

मैं वहाँ से और अंदर गई। कई मकान बड़े सुंदर दिखाई दिए। उन सब से होती हुई एक विशाल भवन में गई जहाँ एक सोने का सिंहासन पृथ्वी से काफी ऊँचा रखा था और उसके चारों ओर मोतियों की झालरें लटक रही थीं। एक अजीब बात यह थी कि उस सिंहासन के ऊपर से प्रकाश की लपटें जैसी निकल रही थीं। मुझे कौतूहल हुआ और मैंने ऊपर चढ़कर देखा कि एक छोटी तिपाई पर एक हीरा रखा है जिसका आकार शतुरमुर्ग के अंडे जैसा है और उसमें ऐसी चमक थी कि निगाहें उस पर नहीं ठहरती थीं। प्रकाश की लपटें उसी विशालकाय हीरे से निकल रही थीं। फर्श पर चारों ओर तकिए रखे थे और एक मोम का दीया जल रहा था। उसे देखकर मैंने जाना कि वहाँ कोई जीवित मनुष्य होगा क्योंकि दिया बगैर जलाए नहीं जलता।

मैं घूमते-घामते दफ्तरखानों और गोदामों में गई जिनमें बड़ी मूल्यवान वस्तुएँ रखी थीं। इस सब को देखकर मुझे ऐसा आश्चर्य हुआ कि मैं जहाज और अपनी बहनों को भूल गई और इस रहस्य को जानने के लिए उत्सुक हुई कि इस जगह के सारे लोग पत्थर के क्यों बन गए।

इसी तरह घूमने-फिरने में मुझे समय का खयाल न रहा और रात हो गई। मैं परेशान हुई कि अँधेरे में कहाँ जाऊँगी। अतएव जिस कक्ष में हीरा रखा था मैं उसी में चली गई। वहाँ जाकर लेटी रही और सोचा कि सुबह होने पर अपने जहाज पर चली जाऊँगी। किंतु वह अद्भुत और निर्जन स्थान था इसलिए मुझे नींद न आई। आधी रात को मुझे कुछ ऐसी आवाज आई जैसे कोई मधुर स्वर से कुरान का पाठ कर रहा हो। मैं यह जानने को उत्सुक हुई कि यह जीवित मनुष्य कौन है। मोम का एक दीपक उठाकर चल दी और कई कमरों को लाँघने के बाद उस कमरे में पहुँची जहाँ से कुरान पाठ की ध्वनि आ रही थी।

वहाँ जाकर देखा कि एक छोटी-सी मसजिद बनी है। इससे मुझे याद आया कि परमेश्वर के

धन्यवाद के स्वरूप मुझे नमाज पढ़नी जरूरी है। वहाँ मैंने देखा कि दो बड़े-बड़े मोम के दीए जल रहे हैं और वहाँ एक अत्यंत रूपवान नवयुवक बैठा हुआ कुरान पाठ कर रहा है और पूरा ध्यान उसमें लगाए है। मुझे उस युवक को देखकर अतीव प्रसन्नता हुई क्योंकि पत्थर के मनुष्यों की भीड़ देखने के बाद वह अकेला आदमी देखा था जो जीता-जागता था। मैंने मसजिद में जाकर नमाज पढ़ी फिर स्पष्ट ध्वनि में वजीफा पढ़ने लगी और भगवान को धन्यवाद देने लगी कि हमारी समुद्र यात्रा कुशलपूर्वक बीती और इसी प्रकार आशा है कि दैवी कृपा से मैं कुशलपूर्वक अपने देश वापस पहुँच जाऊँगी।

उस नवयुवक ने मेरी आवाज सुनकर मेरी ओर देखा और कहा, 'हे सुंदरी, मुझे बताओ कि तुम कौन हो और इस सुनसान नगर और महल में कैसे आ गई हो। इसके बाद में तुम्हें अपनी बात बताऊँगा कि मैं कौन हूँ और यह भी बताऊँगा कि इस नगर के निवासी पत्थर के क्यों हो गए।'

मैंने उसे अपना हाल बताया कि किस तरह मेरा जहाज बीस दिन की यात्रा के बाद यहाँ के तट पर पहुँचा और वहाँ से अकेली उतर कर मैं किस तरह इस महल में आई और यहाँ क्या-क्या देखा। मैंने उससे कहा कि आप, जैसा आपने अभी वादा किया है, मुझे अपना हाल बताएँ और यहाँ की अद्भुत बातों का भी रहस्योद्घाटन करें।

उस युवक ने मुझे कुछ देर प्रतीक्षा करने को कहा। फिर उसने कुरान का निर्धारित पाठ भाग पढ़ना खत्म करके कुरान को एक जरी के वस्त्र में लपेटा और उसे एक आले में रख दिया। इस बीच मैं उस जवान को देखती रही और उसका सुंदर रूप देखकर उस पर मोहित हो गई। उसने मुझे अपने पास बिठाया और कहा, 'तुम्हारी नमाज से ज्ञात होता है कि तुम हमारे सच्चे धर्म पर पूर्णतः विश्वास करती हो। अब मैं तुम्हें अपना पूरा हाल सुनाता हूँ।'

'इस नगर का बादशाह मेरा पिता था। उसका राज्य बड़ा विस्तृत था। किंतु बादशाह और उसके सभी अधीनस्थ लोग अग्निपूजक थे। यही नहीं, वे नारदीन की उपासना भी किया करते थे जो प्राचीन काल में जिन्नों का सरदार था। यद्यपि मेरा पिता और उसके साथी अग्निपूजक थे किंतु मैं बचपन से ही मुसलमान था। कारण यह था कि मेरे लालन-पालन के लिए जो दाई रखी गई थी वह मुसलमान थी। उसने मुझे सारा कुरान कंठाग्र करा दिया। उसने मुझे शिक्षा दी कि केवल एक ईश्वर ही पूज्य है, तुम उसे छोड़कर किसी और को न पूजना। उसने मुझे अरबी भी पढ़ाई और तफ्सीर (कुरान की व्याख्या) की भी शिक्षा दी। यह सारा काम उसने दूसरों से छुपाकर किया।

'कुछ दिन बाद दाई तो मर गई किंतु मैं उसके बताए हुए धर्म पर दृढ़ रहा। मुझे इस बात का बड़ा दुख होता है कि मेरे सारे देशवासी अग्निपूजक और जिन्न के उपासक हैं। दाई की मृत्यु के कई मास बीत जाने पर आकाशवाणी हुई कि हे नगरवासियो, तुम लोग नारदीन और आग की पूजा छोड़ दो और एकमात्र सर्व शक्तिमान परमेश्वर की पूजा करो। यह आकाशवाणी तीन वर्षों तक निरंतर होती रही किंतु न बादशाह ने न किसी अन्य नगर

निवासी ने उस पर ध्यान दिया। वे अपने झूठे धर्म पर दृढ़ रहे। तीन वर्षों बाद इस नगर पर ईश्वरीय प्रकोप हुआ और जो व्यक्ति जिस स्थान और जिस दशा में था, वैसे ही पत्थर बन गया। मेरा पिता ही काले संगमरमर का बन गया और मेरी माँ सिंहासन पर बैठी-बैठी ही पत्थर बन गई जैसा तुमने देखा है। एक मैं ही मुसलमान होने के कारण इस दंड से बचा रहा। उस समय से और भी निष्ठापूर्वक मैं इस्लाम को मानने लगा। हे सुंदरी, मैं जानता हूँ कि भगवान ने तुम्हें मुझ पर कृपा करके यहाँ भेजा है क्योंकि मैं यहाँ अकेलेपन से बहुत ऊबा करता था।'

मुझे उसकी बातें सुनकर उससे और प्रेम बढ़ गया। मैंने कहा, 'मैं बगदाद की निवासिनी हूँ। यहाँ किनारे पर बहुत-से माल-असबाब से लदा मेरा जहाज खड़ा है। जितना माल इसमें है उतना ही बगदाद में अपने घर छोड़ आई हूँ। मैं आपको यहाँ से ले चलूँगी और अपने घर में आराम से रखूँगी।

'बगदाद में खलीफा बड़े न्यायप्रिय हैं। वे आपके सम्मान योग्य कोई पदवी आपको जरूर देंगे। मेरा जहाज आपकी सेवा में है। आप इस स्थान को छोड़िए और मेरे साथ चलिए।'

नौजवान ने मेरा प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैं सारी रात उस आकर्षक युवक से बातें करती रही। दूसरे दिन सुबह उसे लेकर अपने जहाज पर पहुँची। मेरी बहिनें मेरी चिंता में दुखी थीं। मैंने अपने पिछले दिन के अनुभव सुनाए और उस नौजवान की कहानी भी बताई। फिर मेरी आज्ञा से जहाज के माँझियों ने जहाज से व्यापार वस्तुएँ उतार लीं और उनकी जहाज वे अमूल्य रत्न आदि भर लिए जो मुझे महल में मिले थे। महल का सारा सामान तो एक जहाज में आ नहीं सकता था इसलिए मैंने चुनी-चुनी बहुमूल्य वस्तुएँ ही भरीं और खाने-पीने का सामान भी महल से लेकर जहाज पर लाद लिया। साथ ही शहजादे को भी जहाज पर चढ़ा लिया। इसके बाद, असंख्य धन की स्वामिनी होने के साथ अपने प्रिय शहजादे के सान्निध्य का सुख पाते हुए मैंने स्वदेश की ओर यात्रा आरंभ कर दी।

किंतु मेरी बहनों को प्रसन्नता न हुई। शहजादा अत्यंत रूपवान और मिष्टभाषी था। वे मुझसे ईर्ष्या करने लगीं। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम इस शहजादे को ले जाकर कहाँ रखोगी और इसके साथ क्या करोगी। मुझे उनकी दशा देखकर हँसी आई और मैंने उन्हें चिढ़ाने के लिए कहा कि मैं बगदाद में इसके साथ विवाह करूँगी। मैंने शहजादे से कहा कि मैं चाहती हूँ कि आपकी दासियों में हो जाऊँ और जी-जान से आपकी सेवा करूँ। शहजादा भी मेरे परिहास को समझ गया और हँसकर बोला, 'तुम्हारी जो इच्छा हो वह करो। मैं तुम्हारी बहनों के समक्ष प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा। दासी होने की बात न करो, मैं तो स्वयं तुम्हारा दास बन जाऊँगा।'

यह सुनकर मेरी बहनों के चेहरे का रंग उड़ गया और उनके हृदय में मेरे लिए घोर शत्रुता जागृत हो गई। सारी यात्रा उनकी यही दशा रही बल्कि उनका वैर भाव बढ़ता ही गया।

जब हमारा जहाज बूशहर के इतना समीप आ गया कि अनुकूल वायु होने पर वहाँ एक दिन में पहुँच जाता तो रात को जब मैं गहरी नींद सो रही थी, मुझे और शहजादे को उठाकर समुद्र में फेंक दिया।

शहजादा बेचारा तो उसी समय डूब गया क्योंकि तैरना नहीं जानता था लेकिन मैंने पानी में गिरते ही उछाल मारी और तैरने लगी। मेरी आयु पूरी नहीं हुई थी इसलिए मैं अँधेरे में भी संयोग से ठीक दिशा में बढ़ने लगी और कुछ घंटों में एक उजाड़ द्वीप के तट पर जा लगी। बूशहर का बंदरगाह उस स्थान से दस कोस दूर था।

मैंने अपने कपड़े उतारकर सुखाए और फिर उन्हें पहन लिया। इधर-उधर घूमकर देखा तो कुछ फलों के वृक्ष दिखाई दिए। मैंने पेट भर फल खाए फिर एक मीठे पानी के स्रोत से जल पीकर अपनी थकान दूर की थी। फिर एक पेड़ के साए में जाकर लेट गई। कुछ देर बाद मुझे एक लंबा साँप दिखाई दिया जिसके शरीर में दोनों ओर पंख भी लगे हुए थे। वह साँप पहले मेरी दाहिनी ओर आया और फिर बाईं ओर और इस सारे समय अपनी जीभ लपलपाता रहा। मैंने इससे जाना कि इसे कुछ कष्ट है और यह मेरी सहायता चाहता है। मैंने उठकर चारों ओर दृष्टिपात किया। मुझे दिखाई दिया कि एक दूसरा साँप उसके पीछे पड़ा है और उसे खाना चाहता है। मैंने पहले साँप को बचाने के लिए एक बड़ा पत्थर उठाकर बड़े साँप के सिर पर मारा जिससे उसका सिर फट गया और वह वहीं मर गया।

पहला साँप अब पंख खोलकर आसमान में उड़ गया। मुझे यह सब देखकर आश्चर्य हुआ किंतु मैं बहुत थकी थी इसलिए वहाँ से कुछ दूर एक सुरक्षित स्थान पर जाकर सो रही। जागने पर देखा कि एक हरितवसना सुंदरी मेरे सिरहाने दो काली कुतियाँ लिए बैठी है। मैं उसे देखकर खड़ी हो गई और उससे पूछा कि तुम कौन हो। उसने कहा, मैं वही साँप हूँ जिसकी जान उसके दुश्मन से तुमने बचाई थी, अब मैं चाहती हूँ कि जो उपकार तुमने मेरे साथ किया है उसका बदला तुम्हें दूँ। उसने कहा कि मैं वास्तव में एक परी हूँ, यहाँ से जाने के बाद मैं अपनी जाति बहनों यानी परियों को साथ में लेकर तुम्हारे जहाज पर गई जहाँ हम लोगों ने तुम्हारी बहनों को - जिन्होंने तुम्हारे उपकार का बदला तुम्हारी जान लेने का प्रयत्न करके दिया था - कुतियाँ बना डाला, तुम्हारे जहाज का सारा माल उठा कर बगदाद में तुम्हारे घर पहुँचा दिया और जहाज को वहीं डुबो दिया। यह कहने के बाद उस परी ने एक हाथ से मुझे उठाया और दूसरे से दोनों कुतियों को और उड़कर हम सब को बगदाद में मेरे मकान के अंदर पहुँचा दिया।

वहाँ पर परी ने मुझ से कहा कि मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूँ कि तुम्हारी बहनों की सजा पूरी नहीं हुई है, मेरी आज्ञा है कि तुम हर रात उन्हें सौ कोड़े लगाना और तुमने यह बात न मानी तो तुम्हारा सब कुछ बरबाद हो जाएगा। वैसे हम परियाँ तुम्हारी मित्र हो गई हैं और तुम जब भी हमें बुलाओगी हम आ जाएँगे। जुबैदा ने कहा कि मैं उस परी की आज्ञानुसार हर रात को अपनी बहनों को, जो कुतियाँ बनी हुई हैं, सौ-सौ कोड़े मारती हूँ लेकिन खून का जोश भी काम करता है इसलिए रोती हूँ और उनके आँसू पोंछती हूँ। अब अमीना की कहानी उसके मुँह से सुनिए।

खलीफा को यह वृत्तांत सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अमीना से पूछा कि तुम्हारे कंधों और सीनों पर काले निशान क्यों है। उसने यह बताया।

किस्सा अमीना का

अमीना ने कहा, 'जुबैदा की कहानी आप उसके मुँह से सुन चुके, अब मैं अपनी कहानी आपके सम्मुख प्रस्तुत करती हूँ। मेरी माँ मुझे लेकर अपने घर में आई कि रँड़ापे का अकेलापन उसे न खले। फिर उसने मेरा विवाह इसी नगर के बड़े आदमी के पुत्र के साथ कर दिया। दुर्भाग्यवश एक ही वर्ष बीता था कि मेरा पति मर गया। किंतु उसकी सारी संपत्ति जिसका मूल्य लगभग नब्बे हजार रियाल था मेरे हाथ आ गई। इतना धन मेरी सारी जिंदगी के लिए काफी था। जब पति को मरे छह महीने हो गए तो मैंने दस बहुत मूल्यवान पोशाकें बनवाईं जिनमें से हर एक का मूल्य एक-एक हजार रियाल था। जब पति को मरे एक वर्ष पूरा हो गया तो मैंने उन पोशाकों को पहनना आरंभ किया।

एक दिन मैं अपने घर में अकेली बैठी थी कि मेरे सेवक ने मुझ से कहा कि एक बुढ़िया आपसे कुछ कहना चाहती है, आज्ञा हो तो उसे अंदर ले आऊँ। मैंने अनुमति दे दी। बुढ़िया अंदर आई और उसने भूमि चूमकर मुझे प्रणाम किया फिर खड़े होकर कहने लगी, 'मैंने आपकी दयालुता की बड़ी प्रशंसा सुनी है इसीलिए आपके सन्मुख कुछ निवेदन करना चाहती हूँ। मेरे पास एक कन्या है जिसके माता-पिता नहीं हैं। आज रात को उसका विवाह है। हम दोनों इस नगर में अपरिचित हैं। जिस लड़के के साथ उसका विवाह होना है वह धनी परिवार का है और उसके संबंधी भी काफी हैं। सुना है कि दूल्हे के साथ बहुत-सी स्त्रियाँ बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहन कर आएँगी। यदि आप उस विवाह में शामिल हों तो मेरी प्रतिष्ठा रह जाएगी। हमारी ओर से आप होंगी तो समधियाने वाले हमें अपरिचित और निर्धन न समझेंगे। तुम्हारे जैसी शान-शौकत तो किसी में नहीं होगी और सब लोग यही कहेंगे कि जब इस बुढ़िया की ओर से ऐसी धनाढ्य महिला आई है तो वह भी प्रतिष्ठावान होगी। अगर आप मेरी निर्धनता और दीनता का ख्याल करके मेरे यहाँ चलने से इनकार करेंगी तो मेरी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी। इस नगर में न तो मेरा कोई अपना सगा-संबंधी है जिससे मैं मदद माँगूँ न आपके समान परोपकारी कोई महिला है जो दीन अनाथों पर दया करें।'

यह कहकर बुढ़िया रोने लगी। मैं उसके रोने से द्रवित हो गई। मैंने उसे दिलासा देकर कहा, 'अम्मा, तुम फिक्र न करो, मैं तुम्हारी बेटी के विवाह में अवश्य सम्मिलित होऊँगी। तुम्हें खुद अब यहाँ आने की जरूरत नहीं है, तुम विवाह का प्रबंध करो। मुझे अपने मकान का पता बता दो, मैं स्वयं वहाँ पहुँच जाऊँगी।'

बुढ़िया यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने कहा, जैसे इस समय आपने मुझे प्रसन्नता दी है वैसे ही भगवान सदैव आपको प्रसन्न रखे, लेकिन आप मेरा मकान कहाँ ढूँढ़ती फिरेंगी, मैं स्वयं शाम को यहाँ आकर आप को अपने घर ले जाऊँगी। यह कहकर बुढ़िया चली गई।

मैंने तीसरे पहर से तैयारी की। एक बहुमूल्य जोड़ा कपड़ों का निकालकर पहना। बड़े-बड़े

मोतियों की माला पहनी तथा और भी बहुत-से रत्नजटित आभूषण यथा बाजूबंद, करनफूल, अँगूठियाँ आदि पहने। इतने ही में शाम हो गई। बुढ़िया मुझे लेने को आ गई और मेरा हाथ चूम कर बोली कि दूल्हे के माता-पिता तथा अन्य संबंधी मेरे घर आए हुए हैं, यहाँ के कई धनी-मानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति और उनकी स्त्रियाँ भी वर पक्ष की ओर से आए हैं; अब आप चल कर मेरे पक्ष की लाज रखिए। मैं बुढ़िया के साथ उसके घर की ओर चल दी और साथ में अपनी कई दासियों को भी अच्छे वस्त्राभूषण पहनाकर अपने साथ ले लिया।

हम लोग चलते-चलते एक चौड़ी और साफ गली में पहुँचे। वृद्धा ने हम लोगों को ले जाकर एक बड़े द्वार के सामने खड़ा कर दिया। दरवाजे के ऊपर एक तख्ती पर लकड़ी से तराशे हुए अक्षरों में लिखा था कि इस घर में सदैव प्रसन्नता का निवास है। वहाँ दीए भी जल रहे थे जिनके प्रकाश में मैंने यह इबारत पढ़ी। बुढ़िया ने ताली बजा कर दरवाजा खुलवाया और मुझे अंदर एक बड़े दालान में ले गई।

अंदर एक अत्यंत रूपवती स्त्री ने मेरा स्वागत किया, मुझे गले लगाया और सम्मानपूर्वक एक कमरे में ले जाकर बिठाया। फिर मैं ने देखा कि वहाँ पर एक रत्न-जटित सिंहासन रखा है। उस सुंदरी ने मुझ से कहा कि तुम सोचती हो कि तुम किसी और का विवाह कराने आई हो, वास्तविकता यह है कि तुम्हें यहाँ तुम्हारे ही विवाह के लिए लाया गया है। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ किंतु उस स्त्री ने मुझे और कुछ पूछने न दिया बल्कि इधर-उधर की बड़ी अच्छी बातें करने लगी और बात-बात में मेरे प्रति सम्मान प्रकट करने लगी।

कुछ देर में उसने कहा, 'बीबी, शादी की बात तो यह है कि मेरा एक जवान भाई है जो अत्यंत रूपवान है। उस ने तुम्हारे रूप और गुणों की बड़ी प्रशंसा सुनी है और तुम पर मोहित हो गया है। वह तुमसे विवाह करने को अत्यंत लालयित है। यदि तुम उसके साथ विवाह करने से इनकार करोगी तो उसे अति क्लेश होगा और उसका दिल टूट जाएगा। मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूँ कि वह नौजवान हर प्रकार तुम्हारी संगति के योग्य है। तुम उस पर पूरा भरोसा रख सकती हो। वह बड़ा प्रसन्नचित्त आदमी है और तुम्हें हर तरह खुश रखेगा।'

वह स्त्री बहुत देर तक इसी प्रकार अपने भाई की बात करती रही और उसकी प्रशंसा के पुल बाँधती रही। अंत में उसने मुझसे कहा कि तुम्हारी ओर से जरा-सा भी इशारा हो तो मैं उस आदमी से तुम्हारे आने के बारे में कहूँ।

यद्यपि पहले पति के मरने के बाद मेरी विवाह करने की तनिक भी इच्छा नहीं थी तथापि उस स्त्री ने उस आदमी की इतनी प्रशंसा की थी कि इनकार करने की भी इच्छा बिल्कुल न हुई। मैं उसकी बात पर मुस्कराकर चुप हो रही। स्त्री मेरी मुस्कराहट और मौन से समझ गई कि मैं राजी हूँ। उसने ताली बजाई। इसके साथ ही पास के एक कमरे से एक

अति रूपवान युवक बड़े तड़क-भड़क कपड़े पहने हुए निकला। उसे देखकर मुझे अपने भाग्य पर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ऐसा रूपवान पुरुष मेरा पति बनेगा। वह मेरे पास बैठा और मुझ से अत्यंत शिष्टता और बुद्धिमत्तापूर्वक बातें करने लगा। उसकी जितनी प्रशंसा उसकी बहन ने की थी मैं ने उसे उससे अधिक पाया। उस सुंदरी ने जब मुझे भी राजी देखा तो दूसरी बार ताली बजाई जिससे एक अन्य कमरे से एक काजी निकले और उनके साथ चार अन्य मनुष्य। काजी ने शरीयत के अनुसार हम दोनों का विवाह करा दिया और चार आदमियों की गवाही भी हो गई। मेरे पति ने मुझ से वचन लिया कि मैं किसी अन्य पुरुष से बात न करूँगी बल्कि देखूँगी भी नहीं, सदैव पातिव्रत्य का पालन करूँगी और उसकी आज्ञाओं का प्रसन्नतापूर्वक पालन करूँगी। उस ने यह भी कहा कि अगर तुम ने अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी कीं तो मैं तुम्हारा त्याग कभी नहीं करूँगा।

मैं धनवान वर्ग की महिलाओं की भाँति बल्कि रानियों की भाँति अपने पति के घर में रहने लगी। एक महीने बाद मैंने अपने पति से शहर के बाजार को जाने की अनुमति माँगी। मैंने कहा कि जैसे कई अमीर घरानों की स्त्रियाँ बाजार से रेशमी थान खरीद कर बेचा करती हैं वैसे ही मैं करना चाहती हूँ। मेरे पति ने इसके लिए अनुमति दे दी। मैं दो दासियों तथा उस बुढ़िया के साथ जो मुझे विवाह के लिए बहाना करके लाई थी नगर के सबसे बड़े बाजार गई जहाँ बड़े-बड़े व्यापारियों की दुकानें थीं। बुढ़िया ने कहा, यहाँ एक नौजवान व्यापारी है जिसे मैं अच्छी तरह जानती हूँ, उसकी दुकान जैसे बहुमूल्य थान कहीं और न मिलेंगे। मैंने भी सोचा था कि एक ही जगह अच्छा माल मिल जाए तो जगह-जगह क्यों भटकें, इसीलिए उस व्यापारी की दुकान पर चली गई।

व्यापारी जवान ही नहीं अत्यंत रूपवान था। बुढ़िया ने मुझ से कहा कि यहाँ बहुत माल है, तुम व्यापारी से जो भी चाहो माँग लो। मैंने उससे कहा कि मैंने पति को वचन दिया है कि मैं परपुरुष से बात न करूँगी, इसलिए मैं तो इससे बात न करूँगी, तुम्हीं बात करो। अतएव उस व्यापारी ने बुढ़िया से पूछताछ कर कि मुझे क्या पसंद है कई अच्छे-अच्छे थान दिखाए। मैं ने उन में से एक थान पसंद किया और उसका दाम पुछवाया। व्यापारी बोला, 'यह थान अमूल्य है। मैं इसे असंख्य अशर्फियों में भी नहीं बेचूँगा। किंतु यह सुंदरी अगर अपने कपोल का एक चुंबन मुझे दे दे तो यह थान उसका हो जाएगा।'

मैंने बुढ़िया से नाराज होते हुए कहा कि यह व्यापारी बड़ा लंपट और धृष्ट जान पड़ता है, इसकी हिम्मत ऐसी गंदी बात करने की कैसे हुई। किंतु बुढ़िया ने व्यापारी ही का पक्ष लिया और कहा, 'सुंदरी, इसमें कोई विशेष बात तो नहीं है। तुम्हारे पति ने तुम्हें परपुरुष को देखने और उससे बात करने ही को तो मना किया है। वह तुम न करो। तुम केवल एक चुंबन इसे चुपचाप दे दो। इसमें तो कोई कठिनाई तुम्हें नहीं होनी चाहिए।' मैं ऐसी मूर्ख थी और थान मेरी नजर में ऐसा खुप गया था कि मैं इस बुरी बात के लिए तैयार हो गई। अब वह वृद्धा और दोनों दासियाँ सड़क की ओर मेरी आड़ करके खड़ी हो गईं। मैंने अपने मुख पर से वस्त्र हटा कर उस व्यापारी के सामने गाल कर दिया।

दुष्ट व्यापारी ने चुंबन लेने के बजाय मेरे गाल में दाँत गड़ा दिए जिससे गाल लहूलुहान हो

गया और मैं तड़प कर अचेत हो गई। इस अरसे में अवसर पाकर व्यापारी ने अपना माल जल्दी से लपेटा और दुकान बंद करके गायब हो गया। कुछ देर बार जब मुझे होश आया तो मैंने अपने गाल को लहूलुहान पाया। बुढ़िया और दासियों ने मेरे गाल को कपड़े से ढँक दिया था और उन लोगों की परेशानी और हाय-हाय को सुन कर जो भीड़ वहाँ जमा हो गई थी उसने समझा कि मैं किसी बीमारी से या कमजोरी के कारण बेहोश हो गई। मेरे होश में आने पर बुढ़िया और दासियों को संतोष हुआ और वे मुझे धैर्य देने लगीं। विशेषत: बुढ़िया को बहुत दुख हुआ। उसने कहा, 'सुंदरी, मैं तुम्हारी अपराधिनी हूँ, मुझे क्षमा करो। तुम्हारे ऊपर यह सारी मुसीबत मेरे कारण ही आई। इस कमीने व्यापारी की दुकान पर तुम मेरे कहने से आई। अब घर चलो। जो हुआ सो हुआ अब तुम और चिंता न करो। मैं तुम्हारे घाव पर ऐसी दवा लगा दूँगी कि तीन दिन के अंदर न केवल घाव भर जाएगा बल्कि उसका कोई चिह्न भी नहीं रहेगा।'

मैं किसी तरह गिरती-पड़ती उन लोगों के साथ अपने घर पहुँची और अपने कमरे में जाकर पीड़ा, निर्बलता और थकन से फिर अचेत हो गई। बुढ़िया मुझे होश में लाई। फिर मैं अपने पलंग पर लेट गई। रात में जब मेरा पति आया, मुझे लेटे देखा तो बोला कि तुम्हें क्या हो गया, क्यों लेटी हो। मैंने बहाना किया कि मेरे सिर में बड़ा दर्द हो रहा है। मैंने सोचा था कि इसके बाद वह मुझसे अपना ध्यान हटा लेगा। किंतु उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और नाड़ी आदि देखने के बाद सर पर हाथ फेरने के लिए मेरे मुँह से कपड़ा हटाया। गाल के घाव को देखकर वह भड़क गया और मुझ से पूछने लगा कि तुम्हारे गाल पर यह खरोंच कैसे लगी।

वैसे मेरा कोई कसूर न था और मैं उसकी अनुमति लेकर ही बाजार गई थी किंतु उससे सच्ची बात कहने का मुझे साहस नहीं हुआ। मैंने बहाना बनाया कि जब मैं बाजार जा रही थी तो एक लकड़हारा लकड़ी का गट्ठा लेकर मेरे पास से निकला और गट्ठे से बाहर निकली एक लकड़ी गाल में चुभ गई।

मेरे पति ने क्रोध में भरकर कहा कि अगर यह बात सच है तो मैं कल सारे लकड़हारों को फाँसी पर चढ़वा दूँगा। मैं घबराई कि मेरे इस झूठ से सारे लकड़हारे बेकसूर ही मारे जाएँगे। मैंने अपने पति से कहा कि आप ऐसा अन्याय हरगिज न करें, बेकसूर लकड़हारों को क्यों मरवाएँगे, अगर मेरा अपराध पाएँ तो उसका दंड मुझे दें, औरों को नहीं।

मेरे पति ने कहा, तुम सच-सच क्यों नहीं बताती गाल में घाव कैसे लगा। मेरी हिम्मत सच्ची बात कहने की अब भी नहीं हुई और मैंने दूसरा बहाना बनाया कि जब मैं जा रही थी तो एक कुम्हार गधे पर बर्तन ले जाता हुआ निकला और गधे का मुझे ऐसा धक्का लगा कि मैं पृथ्वी पर गिर पड़ी और वहाँ पड़ा हुआ एक काँच का टुकड़ा मेरे गाल में चुभ गया। मेरे पति ने कहा, अगर तुम्हारी बात सच है तो मैं सुबह ही राजा के मंत्री जाफर से कह कर सारे कुम्हारों को नगर से निकलवा दूँगा। मैं फिर घबराई और मैंने कहा कि मेरे कारण निर्दोष कुम्हारों को सजा क्यों दी जाए।

पति ने फिर कहा, जब तक तुम सच्ची बात न कहोगी मेरा रोष कम नहीं हो सकता। मैं बोली कि चलते-चलते मुझे चक्कर आ गया जिससे मैं गिर पड़ी और मेरा गाल छिल गया। इसमें किसी का कसूर नहीं है। मेरा पति अब आपे से बाहर हो गया और बोला, 'तू झूठ पर झूठ बोले चली जा रही है, अब मैं तेरी बहानेबाजी नहीं सुन सकता। यह कह कर उसने ताली बजाई जिससे तीन हब्शी गुलाम अंदर आ गए। मेरे पति ने कहा, एक-एक आदमी इसका सिर और पाँव पकड़े और तीसरा तलवार निकाल ले। फिर तलवार निकालने वाले से कहा कि इस कुलटा के दो टुकड़े करके इस की लाश मछलियों के खाने के लिए नदी में फेंक दें। जल्लाद कुछ झिझका तो मेरे पति ने डाँट कर कहा, तू मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करता। जल्लाद ने मुझ से कहा, 'तुम्हारा अंत आ गया है। तुम अंत समय में भगवान का स्मरण कर लो। इसके अलावा और भी कुछ कहना-सुनना हो तो कह सुन लो। मैंने कहा कि मुझे थोड़ी देर के लिए जीवन दान मिले तो कुछ कहना चाहती हूँ। मैंने अपना सिर उठाया और सारी बात कहनी चाही किंतु हिचकियों और रुलाई के कारण कुछ कह न सकी।

मेरे पति का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। उसने मुझे बहुत गालियाँ दीं और बुरा-भला कहा। मैं उसकी बातों का कोई उत्तर न दे सकी। मैंने सिर्फ यह कहा कि कुछ अवसर और दिया जाए ताकि मैं अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँग सकूँ। किंतु मेरे पति ने इतनी दया न भी की और गुलाम को शीघ्र ही मेरा वध करने की आज्ञा दी।

गुलाम मुझे मारने को तैयार हो गया। इतने में बुढ़िया दौड़ती हुई आई। उस ने मेरे पति को बचपन में दूध पिलाया था। वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और कहा कि तुम मेरे दूध का बदला देने के लिए इसे प्राणदान दे दो। उसने कहा कि उसका कोई दोष नहीं है, तुम इसे निरपराध मार कर ईश्वर को क्या जवाब दोगे। उसके समझाने-बुझाने से मेरे पति ने मेरा वध तो नहीं कराया किंतु कहा कि इसे कुछ दंड मिलना जरूरी है। उसकी आज्ञा से गुलाम ने मुझे कोड़ों से इतना मारा कि मैं बेहोश हो गई और मेरे कंधों और छाती पर से कई जगह मांस उधड़ गया। मैं एक महल में बंद कर दी गई जहाँ चार महीने तक पड़ी रही। बुढ़िया ने मेरी देख-रेख और मरहम-पट्टी की। इससे मैं वैसे तो स्वस्थ हो गई किंतु वे काले चिह्न बाकी रह गए जिन्हें आपने देखा था।

जब मैं चलने-फिरने के योग्य हुई तो सोचा कि अपने पहले पति के मकान में, जो अभी तक मेरी संपत्ति था, चल कर रहूँ। किंतु उस गली में गई तो मकान का चिह्न भी न पाया क्योंकि मेरे दूसरे पति ने उसे खुदवाकर जमीन के बराबर कर दिया था। मैं उसके इस अन्याय की फरियाद भी इस डर से न कर सकी कि कहीं ऐसा न हो कि दुबारा क्रोध में आकर मुझे मरवा दें।

मैं अपनी जान बचने पर ईश्वर को धन्यवाद देती हुई जुबैदा के पास गई और अपनी संपूर्ण कष्ट कथा कही। उसने मुझे तसल्ली दी। उसने कहा कि तुम मेरे साथ रहो, यह जमाना अच्छा नहीं है, हमें किसी से भी दयालुता की आशा नहीं करनी चाहिए, न उनसे जो हमारी मित्रता का दावा करते हैं न उनसे जो हमारे रूप पर मोहित हो जाते हैं। उसने

कहा कि मेरे पास इतना पैसा है कि हमें कोई कठिनाई नहीं होगी। जुबैदा ने मुझे यह भी बताया कि किस तरह उसकी सगी बहनों की जलन और दुश्मनी की वजह से उसका मँगेतर शहजादा समुद्र में डूब गया और किस तरह उसकी उपकृत परी ने उसकी दुष्ट सगी बहनों को कुतिया बना दिया।

मैं उस समय से जुबैदा के पास रहने लगी। मेरी माता का देहांत हुआ तो जुबैदा ने मेरी बहन साफी को भी अपने पास बुलाकर रख लिया तब से हम तीनों बहनें आनंदपूर्वक रहती हैं। हम लोग भगवान के प्रति आभारी हैं कि हमें कोई कष्ट नहीं है। हम लोग मिलजुल कर घर चलाते हैं। कभी बाजार से सौदा-सुलुफ लाने के लिए मैं जाती हूँ कभी साफी। कल मैं बाजार गई थी और सामान एक मजदूर के सर पर लदवा कर आई। वह बड़ा हँसोड़ था और शिष्ट भी था, इसलिए हमने उसे दिन भर अपने साथ रहने दिया ताकि अपनी बातों से हमारा मनोरंजन करे। फिर रात को तीन फकीरों ने हम से रात भर आश्रय देने के लिए प्रार्थना की। हमने उन्हें भोजन कराया और शराब पिलाई। वे रात को देर तक गाते-बजाते रहे और हम लोग भी गाते-बजाते रहे। फिर मोसिल के तीन व्यापारी जो बड़े संभ्रात जान पड़ते थे रात भर रहने की प्रार्थना करते हुए आए। हमने उनकी भी अभ्यर्थना की।

अमीना ने कहा कि यद्यपि हमारे सातों मेहमानों ने वचन दिया था कि वे सब कुछ चुपचाप देखेंगे और किसी बात के बारे में पूछताछ नहीं करेंगे तथापि उन्होंने यह वचन न निभाया और कुतियों के पिटने और मेरे शरीर के दागों के बारे में पूछताछ करने लगे। हमें इस पर बहुत क्रोध आया यद्यपि हम उन सभी के प्राण ले सकते थे। तथापि ऐसा न किया और उन लोगों से उनका व्यक्तिगत वृत्तांत सुनकर उन्हें छोड़ दिया।

खलीफ हारूँ रशीद को दोनों स्त्रियों की कहानियाँ सुनकर अत्यंत विस्मय हुआ। उसने मन में सोचा कि उन फकीरों का, जो वास्तव में राजा और राजकुमार थे, और उन बुद्धिमती स्त्रियों का कुछ उपकार करें। उसने जुबैदा से पूछा कि तुम्हें तुम्हारी उपकारकर्ता परी ने कुछ यह भी बताया था कि तुम्हारी बहनें कब तक कुतियाँ बनी रहेंगी। जुबैदा ने कहा कि मैंने जो वृत्तांत आप से कहा था उसमें यह बताना भूल गई कि परी ने चलते समय मुझे अपने कुछ बाल दिए थे और कहा था अगर तुम इनमें से कोई बाल आग में डालोगी तो मैं संसार के चाहे जिस भाग में हूँ तुम्हारे पास आ जाऊँगी।

खलीफा ने पूछा, वे बाल कहाँ हैं। जुबैदा बोली, मैं वे बाल हर समय अपने पास रखती हूँ। यह कहकर उसने एक डिबिया निकाली। उसमें एक पुड़िया में कुछ बाल बँधे थे। उसने उन्हें खलीफा को दिखाया।

खलीफा ने कहा कि मैं भी उस परी को देखना चाहता हूँ। जुबैदा ने पूरी पुड़िया आग में डाल दी। धुआँ उठते ही भूकंप-सा आ गया और कुछ क्षणों में चकाचौंध कर देने वाले वस्त्राभूषण पहने परी सम्मुख आ खड़ी हुई। वह खलीफा से बोली, 'आप पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, आपकी जो भी आज्ञा होगी मैं उसका पालन करूँगी। इस जुबैदा ने मेरी प्राण रक्षा की थी इसीलिए मैं इसकी बड़ी आभारी हूँ। मैंने इसकी बहनों को, जिन्होंने

इसके उपकारों के बदले में इससे अत्यंत नीचता का व्यवहार किया था, कुतिया बना डाला। अब मुझे क्या आज्ञा है?'

खलीफा ने कहा, 'एक तो यह कि चूँकि यह दोनों अपने किए का काफी दंड पा चुकी हैं इसलिए तुम उन्हें फिर इनके पुराने शरीरों में ले आओ। दूसरी बात यह है कि एक आदमी ने अपनी पत्नी को इतना पिटवाया है कि उसके कंधे और सीना काले दागों से भर गए हैं। उस अन्यायी ने इसका पुराना घर भी खुदवाकर जमीन के बराबर कर दिया, उसको अपने पहले पति से जो संपत्ति मिली थी उस पर भी अधिकार कर लिया। मुझे इस बात पर बड़ा खेद है कि मेरे शासन में कोई ऐसा अन्यायी रहता है। तुम तो जानती होगी कि वह कौन है। उसका पता मुझे बताओ और इन कुतियों को फिर से स्त्री बनाने और उस प्रताड़िता स्त्री का शरीर ठीक करने के लिए जो भी कर सकती हो करो।'

परी ने आश्वासन दिया कि मैं सब ठीक कर दूँगी। खलीफा ने जुबैदा को आज्ञा देकर उसके घर से कुतियों को मँगाया। परी ने एक पात्र में जल लेकर उस पर कुछ मंत्र पढ़ा। फिर उसने वह पानी दोनों कुतियों और अमीना पर छिड़क दिया। तुरंत ही कुतियाँ अपने पुराने शरीरों में आकर सुंदर स्त्रियाँ बन गईं ओर अमीना के सारे काले दाग चले गए और उसका शरीर कुंदन की तरह दमकने लगा। अब परी ने कहा कि मैं जानती हूँ कि अमीना का पति कौन है लेकिन वह आप से बहुत निकट संबंध रखता है; अगर आप चाहें तो उसका नाम भी बता दूँ। खलीफा ने कहा कि जरूर बताओ।

परी बोली, वह आप का छोटा बेटा अमीन है जो अमीना के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर इसको पाने का इच्छुक हो गया और इसे धोखे से अपने कमरे में बुलवा कर इससे विवाह कर लिया। फिर परी ने बाजार की घटना का वर्णन करके कहा कि यद्यपि अमीना निर्दोष थी किंतु सच्ची बात कहने का साहस न कर सकी और कई कई बयान दिए जिससे इसके पति ने इसे दंड दिया।

यह कहकर परी अंतर्धान हो गई। खलीफा ने अपने पुत्र को बुलवाया किंतु भय और लज्जा के कारण उसे आने का साहस न हुआ। खलीफा ने उसे सामने बुलाने पर जोर न दिया किंतु अमीना को उसके पास भेजा और आदेश दिया कि चूँकि यह निर्दोष है इसलिए तुम इसे पत्नी के रूप में सम्मानपूर्वक रखो। चुनांचे शहजादा अमीन ने ऐसा ही किया। खलीफा ने जुबैदा से स्वयं विवाह कर लिया और साफी तथा अन्य दो बहनों का तीन फकीर बने राजकुमारों से विवाह कर दिया और इन राजकुमारों को उच्च पदों पर आसीन कर दिया।

एक स्त्री और तीन नौकरों का वृत्तांत

शहरयार को सिंदबाद की यात्राओं की कहानी सुन कर बड़ा आनंद हुआ। उसने शहरजाद से और कहानी सुनाने को कहा। शहरजाद ने कहा कि खलीफा हारूँ रशीद का नियम था कि वह समय-समय पर वेश बदल कर बगदाद की सड़कों पर प्रजा का हाल जानने के लिए घूमा करता था। एक रोज उसने अपने मंत्री जाफर से कहा कि आज रात मैं वेश बदल कर घूमँगा, अगर देखूँगा कि कोई पहरेवाला अपने कार्य को छोड़ कर सो रहा है तो उसे नौकरी से निकाल दूँगा और मुस्तैद आदमियों को पारितोषिक दूँगा। मंत्री नियत समय पर जासूसों के सरदार मसरूर के साथ खलीफा के पास आया और वे तीनों साधारण नागरिकों के वेश में बगदाद में निकल पड़े।

एक तंग गली में पहुँचे तो चंद्रमा के शुभ्र प्रकाश में उन्हें दिखाई दिया कि एक लंबे कद और सफेद दाढ़ीवाला आदमी सिर पर जाल और कंधे पर नारियल के पत्तों का बना टोकरा लिए चला आता है। खलीफा ने कहा कि यह बड़ा गरीब मालूम होता है, इससे इसका हाल पूछो। तद्नुसार मंत्री ने उससे पूछा कि तू कौन है और कहाँ जा रहा है। उसने कहा, 'मैं अभागा एक निर्धन मछुवारा हूँ। आज दोपहर को मछली पकड़ने गया था किंतु शाम तक मेरे हाथ एक भी मछली न लगी। मैं अब खाली हाथ घर जा रहा हूँ। घर पर मेरी स्त्री और कई बच्चे हैं। मैं चक्कर में हूँ कि उन्हें आज खाने को क्या दूँगा।'

खलीफा को उस पर दया आई। उसने कहा, 'तू एक बार फिर नदी पर चल और जाल डाल। तेरे जाल में कुछ आए या न आए मैं तुझे चार सौ सिक्के दूँगा और जो कुछ तेरे जाल में आएगा ले लूँगा।' मछुवारा तुरंत इसके लिए तैयार हो गया। उसने सोचा कि मेरा सौभाग्य ही है कि ऐसे भले आदमी मिले, यह मेरे साथ धोखा करनेवाले तो मालूम नहीं होते। नदी पर जा कर उसने जाल फेंका और थोड़ी देर में उसे खींचा तो उसमें एक भारी संदूक फँसा हुआ आ गया। खलीफा ने मंत्री से मछुवारे को चार सौ सिक्के दिलाए और विदा कर दिया।

खलीफा को बड़ा कौतूहल था कि संदूक में क्या है। मसरूर और जाफर ने उसके आदेशानुसार संदूक खलीफा के महल में रख दिया। उसे खोल कर देखा तो उसमें कोई चीज नारियल की चटाई में लाल डोरे से सिली हुई थी। खलीफा की उत्सुकता और बढ़ी। उसने छुरी से सीवन काट डाली और देखा कि एक सुंदर स्त्री का शव टुकड़े-टुकड़े करके चटाई के अंदर सी दिया गया था।

खलीफा यह देख कर अत्यंत क्रुद्ध हुआ। उसने मंत्री से कहा, 'क्या यही तुम्हारा प्रबंध है? मेरे राज्य में ऐसा अन्याय हो कि किसी बेचारी स्त्री को कोई काट कर संदूक में बंद करके नदी में डाले, यह मैं सहन नहीं कर सकता। या तो तुम इसके हत्यारे का पता लगाओ या फिर तुम्हें और तुम्हारे चालीस कुटुंबियों को फाँसी पर चढ़ा दूँगा' मंत्री काँप गया और उसने कहा, 'सरकार मुझे कुछ समय तो दिया जाए कि मैं हत्यारे का पता

लगाऊँ।' खलीफा ने कहा कि तुम्हें तीन दिन का समय दिया जाता है।

मंत्री जाफर अत्यंत शोकाकुल हो कर अपने भवन में आया और सोचने लगा कि तीन दिन में हत्यारे का पता कैसे लग सकता है और पता लगा भी तो इस का प्रमाण कहाँ मिलेगा कि यही हत्यारा है। हत्यारा तो कब का नगर छोड़ भी चुका होगा। क्या करूँ? क्या किसी आदमी पर जो पहले ही कारागार में है इस हत्या का अभियोग लगा दूँ। ? किंतु यह बड़ा अन्याय बल्कि मेरा अपराध होगा कि मैं जान-बूझ कर किसी निरपराध को दंड दिलवाऊँ, कयामत में भगवान को क्या मुँह दिखाऊँगा।

मंत्री ने सारे सिपाहियों, हवलदारों को आज्ञा दी कि स्त्री के हत्यारे की तीन दिन में खोज करो वरना मैं मारा जाऊँगा और मेरे साथ मेरे कुटुंब के चालीस व्यक्ति भी फाँसी पाएँगे। वे बेचारे तीन दिन तक घर-घर जा कर हत्यारे की खोज करते रहे किंतु हत्यारे का कहीं पता न चला। तीन दिन बीत जाने पर खलीफा के आदेश पर जल्लाद जाफर और उसके चालीस कुटुंबियों को पकड़ कर ले आया और खलीफा के सामने हाजिर कर दिया। खलीफा का क्रोध अभी शांत नहीं हुआ था। उसने आज्ञा दी कि सब को फाँसी दे दो।

जल्लाद के निर्देशन में फाँसी की इकतालीस टिकटियाँ खड़ी कर दी गईं। नगर में मुनादी करवाई गई कि खलीफा के आदेश से मंत्री जाफर और उसके चालीस कुटुंबियों को फाँसी दी जाएगी। जो आ कर देखना चाहता है देख ले। सारे नगर में यह मालूम हो गया कि किस अपराध पर मंत्री और उसके कुटुंबी फाँसी पर चढ़ाए जा रहे हैं।

कुछ समय के बाद मंत्री और उसके चालीसों कुटुंबियों को टिकटियों के नीचे लाया गया और उनकी गर्दनों में रस्सी के फंदे डाल दिए गए। वहाँ पर बड़ी भारी भीड़ जमा हो गई। बगदाद के निवासी मंत्री को उसके शील और न्यायप्रियता के कारण बहुत चाहते थे। उन्हें उसकी मृत्यु पर बहुत शोक हो रहा था। सैकड़ों लोग उसकी गर्दन में फंदा पड़ा देख कर रोने लगे। इस पर भी खलीफा का इतना रोब था कि किसी का साहस मंत्री के मृत्यु दंड का विरोध करने का नहीं पड़ रहा था।

जब जल्लाद और उसके अधीनस्थ लोग फाँसियों की रस्सियाँ खींचने को तैयार हुए तो भीड़ में से एक अत्यंत रूपवान युवक बाहर आया और बोला, 'मंत्री और उसके परिवारवालों को छोड़ दिया जाए। स्त्री का हत्यारा मैं हूँ। मुझे पकड़ लिया जाए।' मंत्री को अपनी प्राण रक्षा की खुशी भी थी किंतु युवक की तरुणाई देख कर उसकी भावी मृत्यु से दुख भी हो रहा था। इतने में एक लंबे-चौड़े डील-डौलवाला बूढ़ा आदमी भी निकल कर बोला, 'यह जवान झूठ बोलता है। इसने स्त्री को नहीं मारा। उसे मैंने मारा है। मुझे दंड दो।'

फिर उस बूढ़े ने जवान अदमी से कहा कि बेटे, तू क्यों इस हत्या की जिम्मेदारी ले रहा है, मैं तो बहुत दिन संसार में रह लिया हूँ मुझे फाँसी चढ़ने दे। लेकिन जवान आदमी बात पर डटा रहा कि यह बुजुर्गवार झूठी बातें कहते हैं, उस स्त्री को मैंने ही मारा है।

खलीफा के सेवकों ने उससे जा कर कहा कि अजीब स्थिति है, एक बूढ़ा और जवान दोनों अपनी-अपनी जगह कह रहे हैं कि मैंने स्त्री को मारा है। खलीफा ने कहा कि मंत्री के कुटुंबियों को छोड़ दो और मंत्री को सम्मानपूर्वक यहाँ लाओ। जब ऐसा किया गया तो खलीफा ने कहा कि हमें बहुत झंझट में पड़ने की जरूरत नहीं है, अगर दोनों ही हत्या की जिम्मेदारी ले रहे हैं तो दोनों को फाँसी पर चढ़ा दो। किंतु मंत्री ने कहा कि निश्चय ही उनमें से एक झूठ बोलता है, बगैर खोज-बीन किए किसी निरपराध को मृत्यु दंड देना ठीक नहीं है।

अतएव उन दोनों को भी खलीफा के सामने लाया गया। जवान ने भगवान की सौगंध खा कर कहा कि 'मैंने चार दिन हुए उस स्त्री का वध किया था और उसकी लाश टुकड़े-टुकड़े करके संदूक में बंद नदी में डाल दी थी, अगर मैं झूठ कहता हूँ तो कयामत के दिन मुझे अपमानित होना पड़े और बाद में सदा के लिए नरक की अग्नि में जलूँ।' इस बार बूढ़ा कुछ न बोला। खलीफा को विश्वास हो गया कि जवान ही हत्याकारी है। उसने कहा, 'तूने उस स्त्री को मारते समय न मेरा भय किया न भगवान का। और फिर जब तूने यह कर ही लिया है तो अब अपराध स्वीकार क्यों करता है?' जवान बोला, 'अनुमति मिले तो सारी कहानी सुनाऊँ। यह भी चाहता हूँ कि यह कहानी लिखी जाए ताकि सबको सीख मिले।' खलीफा ने कहा 'ऐसा ही हो।'

जवान और मृत स्त्री की कहानी

उस जवान ने कहा कि 'मृत स्त्री मेरी पत्नी और इन वृद्ध सज्जन की बेटी थी और यह मेरे चचा हैं। ग्यारह वर्ष पूर्व उससे मेरा विवाह हुआ था। हमारे तीन बेटे हैं जो जीवित हैं। मेरी पत्नी अत्यंत सुशील और पतिव्रता थी। हर काम मेरी प्रसन्नता का करती थी और मैं भी उससे बहुत प्रेम करता था। एक महीने पहले वह बीमार हुई। दो-चार दिन की दवा से वह अच्छी हो गई और स्वास्थ्यसूचक स्नान के लिए तैयार हुई। लेकिन उसने कहा मैं बहुत अशक्त हो गई हूँ, अगर तुम कहीं से मुझे एक सेब ला दो तो मैं ठीक हो जाऊँगी वरना फिर बीमार पड़ जाऊँगी। मैं उसके लिए सेब लाने को बाजार गया किंतु वहाँ एक भी सेब दिखाई न दिया। फिर मैं बागों में घूमा किंतु वहाँ भी किसी भी मूल्य पर सेब न मिला। फिर मैंने घर आ कर कहा कि बगदाद में तो कहीं सेब मिले नहीं, मैं बसरा बंदरगाह जा रहा हूँ शायद वहाँ सेब मिल जाएँ।

'मैं बसरा जा कर शाही बागों से चार-चार दीनारों के तीन सेब लाया और उन्हें ला कर अपनी पत्नी को दिया। वह बहुत खुश हुई। उसने उन्हें सूँघ कर अपनी चारपाई के नीचे खिसका दिया और फिर आँख बंद करके लेट रही। मैं बाजार गया और अपनी कपड़े की दुकान पर जा बैठा। कुछ देर में मैंने देखा कि एक हब्शी गुलाम एक सेब उछालता जा रहा है। मुझे आश्चर्य हुआ कि इसे सेब कहाँ से मिला, मैं तो बड़ी मुश्किल से बसरा से तीन सेब लाया हूँ। मैंने हब्शी को बुला कर पूछा कि तुझे यह सेब कहाँ मिला। वह हँस कर बोला कि यह मुझे मेरी प्रेमिका ने दिया है, उसका पति दो सप्ताह की यात्रा करके बसरा के शाही बाग से तीन सेब लाया था जिनमें से एक उसने मुझे दे दिया।

'हब्शी ने यह भी कहा कि मैंने और सुंदरी ने मिल कर भोजन आदि भी किया। हब्शी तो यह कह कर चला गया। यहाँ क्रोध से मेरी बुरी हालत हो गई। मैं दुकान बंद करके घर गया और अपनी पत्नी के पास पहुँचा। वहाँ देखा कि चारपाई के नीचे दो ही सेब हैं। मैंने उससे पूछा कि तीसरा सेब क्या हुआ। उसने झुक कर सेबों को देखा और उपेक्षा से बोली कि मुझे नहीं मालूम कि तीसरा सेब कहाँ गया। यह कह कर वह आँखें बंद करके लेट रही। मुझे विश्वास हो गया कि हब्शी सच कहता था, इसका उससे अनुचित संबंध है और यह अचानक मुझे यहाँ देख कर बहाना भी नहीं बना पा रही है। मैं क्रोध और अपमान भावना से अंधा हो गया और मैंने तलवार निकाल कर अपनी पत्नी को टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

'मैंने इस डर से कि कोई मुझे हत्या के अभियोग में पकड़ न ले उसके शव को एक नारियल के पत्तों की बनी चटाई में लपेट दिया और लाल डोरे से उस चटाई को बाँध दिया। फिर एक संदूक में उसे रख कर पीछे के दरवाजे से संदूक ले कर निकला और उसे नदी में डाल दिया क्योंकि तब तक अँधेरा हो गया था। लौट कर घर आया तो देखा कि बड़ा लड़का दरवाजे पर बैठा रो रहा है और दो लड़के एक कोठरी में सो रहे हैं। मैंने लड़के से पूछा कि तू क्यों रो रहा है तो उसने कहा कि आज दिन के समय आपके लाए हुए तीन सेबों में से एक को मैं चुपके से उठा लाया था और दरवाजे पर आ कर उसे खाना ही चाहता

था कि उधर से निकलते हुए एक हब्शी गुलाम ने मेरे हाथ से सेब छीन लिया। मैंने उससे बहुत कहा कि यह सेब मेरी बीमार माँ के लिए है, मेरा पिता दो सप्ताह की यात्रा कर बसरा के शाही बागों से उसके लिए तीन सेब लाया है। उन्हीं में से यह है। गुलाम ने मेरी बात अनसुनी कर दी और चल दिया। मैंने दौड़ कर उसे रोकने का प्रयत्न किया लेकिन उसने मुझे मारपीट कर भगा दिया और स्वयं एक ओर भाग गया। मैं फिर उसके पीछे लगा लेकिन इस बार उसे न पा सका। घंटों उसे ढूँढ़ने के बाद अभी वापस आया हूँ। आपको आते देखा तो इस डर से रोने लगा कि सेब न मिलने पर आप मेरी माँ से नाराज होंगे। मैं आपसे हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि माँ से कुछ न कहिएगा, वह कुछ नहीं जानती। यह कह कर लड़का फूट-फूट कर रोने लगा।

'यह सुन कर मेरे तो जैसे प्राण ही निकल गए। मैंने अपनी सती-साध्वी पत्नी को झूठे संदेह पर मार डाला था। मैं दुख और पश्चात्ताप के कारण अचेत हो गया। जब सचेत हुआ तो मैंने लड़के से कोठरी में जा कर सो जाने को कहा और स्वयं एक एकांत स्थान पर बैठ कर दुख में निमग्न हो गया। मैं कभी सिर पीटता कभी आँसू बहाता। मैं अपने को लाख बार धिक्कारता कि मूर्ख, तेरी बुद्धि क्या बिल्कुल भ्रष्ट हो गई थी कि तूने अपनी सुशीला और पतिव्रता पत्नी को एक अनजान हब्शी गुलाम की बात पर विश्वास करके मार डाला और इतना भी धैर्य न दिखाया कि इस बारे में पूछताछ कर लेता।

'मैं इसी शोक और पश्चात्ताप की दशा में बैठा था कि उसी समय मेरा चचा अपनी पुत्री के स्वास्थ्य का हाल जानने के लिए आया। मैंने उसे पूरा हाल बताया। उसने अपनी पुत्री की हत्या के बारे में मुझ से कहा-सुनी या लानत-मलामत नहीं की बल्कि इसे विधि का विधान समझ कर केवल शोकाकुल हो गया और रोने पीटने लगा। मैं भी इसके साथ रोने-पीटने लगा। लेकिन रोने-पीटने से क्या होना था, मेरी पत्नी और इनकी पुत्री तो अब दुनिया में नहीं रही। मैं तब से अत्यंत शोक संतप्त हूँ और किसी प्रकार चैन नहीं पा रहा हूँ। मैंने सारा हाल सच्चा-सच्चा आपके आगे रख दिया। अब आप आज्ञा दें कि मुझे फाँसी पर चढ़ाया जाए।'

खलीफा को सारा वृत्तांत बड़ा आश्चर्यजनक लगा। किंतु जब बूढ़े आदमी ने भी इस बात की पुष्टि की तो उसने कहा, 'अगर कोई व्यक्ति अनजाने अपराध करे तो वह मेरी और भगवान की दृष्टि में क्षमा योग्य हैं। मैं इस आदमी की सत्यप्रियता और न्यायप्रियता से भी प्रसन्न हूँ कि इसने निरपराधों को मृत्यु से बचाने के लिए स्वयं मृत्यु का आह्वान किया और अपना अपराध स्वीकार किया। मृत्यु दंड का भागी वह गुलाम है जिसके झूठ के कारण ऐसी दुखद घटना हुई। मंत्री महोदय, तुम अभी अपने को मुक्त न समझो। तुम्हें तीन दिन के अंदर उस दुष्टात्मा को खोज लाना है जिसके कारण यह सब हुआ। तीन दिन में ऐसा न कर सके तो तुम्हें फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा।'

मंत्री ने सोचा कि एक बार मौत से छुटकारा मिला तो वह दुबारा पीछे पड़ गई। वह रोता-पीटता घर आया। उसे विश्वास था कि अबकी बार जान नहीं बच सकती क्योंकि लाखों गुलाम बगदाद में हैं, अभियुक्त गुलाम कैसे मिलेगा। फिर उसने सोचा कि परमात्मा

की दया से निराश न होना चाहिए। जिस प्रकार अकस्मात ही उसने अनजान स्त्री के हत्यारे को प्रकट दिया वैसे ही संभव है कि इस बार भी जान बच जाए।

किंतु इस बार भी निश्चित अवधि में वांछित गुलाम नहीं मिला। मंत्री जाफर फाँसी पर चढ़ाने के लिए बुलाया गया। उसके संबंधी उससे मिल कर रोने लगे। मंत्री की बच्चे खिलानेवाली सेविका मंत्री की एक पाँच-छह बरस की बेटी को लाई। वह इस बच्ची को बहुत प्यार करता था।

मंत्री ने उन सिपाहियों से कहा कि मैं चलने के पहले अपनी इस बच्ची को प्यार कर लूँ। उन्होंने अनुमति दे दी। मंत्री ने जब बच्ची को उठा कर अपने सीने से लगाया तो उसके सीने में रखी हुई कोई चीज अड़ी। मंत्री ने बच्ची के सीने के ऊपर देखा तो एक बँधी हुई गोल चीज महसूस हुई। मंत्री के पूछने पर बच्ची ने बताया कि यह सेब है जिस पर शाही बाग की मुहर लगी हुई है।

यह पूछने पर कि यह तुम्हारे पास कहाँ से आया बच्ची ने कहा कि मेरा हब्शी गुलाम, जिसका नाम रैहान है, लाया था और मैंने उससे चार सिक्कों में इसे खरीदा है। मंत्री ने सेब को खोल कर देखा और उस पर शाही बाग की मुहर पाई तो गुलाम से डाँट कर पूछा कि तुझे यह सेब कहाँ से मिला, क्या तूने मेरे बादशाह के महल में चोरी की है? गुलाम ने हाथ जोड़ कर कहा, 'मैंने इसे न आपके यहाँ से चुराया है न शाही महल से। मैं आपको सच्ची बात बता रहा हूँ। कुछ दिन पहले मैं एक गली से निकला जहाँ एक घर के सामने तीन-चार बच्चे खेल रहे थे। उनमें सब से बड़े लड़के के हाथ में यह सेब था। मैंने उससे छीन लिया। वह रोता हुआ मेरे पीछे भागा और कहने लगा कि यह सेब मेरे पिता मेरी बीमार माता के लिए बहुत दूर से लाए हैं, मैं इसे माता से बगैर पूछे उठा लाया हूँ, तुम इसे दे दो। लेकिन मैंने सेब नहीं दिया और ला कर आपकी बेटी के हाथ चार सिक्कों में बेच दिया।'

मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ कि सेब का चोर उसके घर ही का गुलाम है। चुनाँचे चुनाँचे वह अपने साथ उस गुलाम को ले गया और सिपाहियों से कहा कि मुझे खलीफा के पास ले चलो। खलीफा के सामने जा कर उसने गुलाम को खलीफा के सामने खड़ा कर दिया। खलीफा के पूछने पर गुलाम ने वही कहानी दुहराई। खलीफा को यह अजीब किस्सा सुन कर हँसी आई किंतु उसकी अपराधी को मृत्युदंड देने की इच्छा बनी हुई थी। उसने मंत्री से कहा, 'सारी दुखद घटना तुम्हारे गुलाम के कारण हुई इसलिए यही मृत्युदंड का भागी है। इसे फाँसी पर चढ़ाओ ताकि लोगों को शिक्षा मिले।'

मंत्री ने कहा कि आपका आदेश उचित है। यह अभागा इसी योग्य है। किंतु यह हमारा पुराना गुलाम है। मैं आपको मिस्र के बादशाह के मंत्रियों नूरुद्दीन अली और बदरुद्दीन हसन की कहानी सुनाना चाहता हूँ। यदि इससे आपका मनोरंजन हो तो उसके बदले में कृपया गुलाम को इतना बड़ा दंड देने का आदेश वापस ले लें। खलीफा ने कहानी सुनाने

को कहा।

नूरुद्दीन अली और बदरुद्दीन हसन की कहानी

मंत्री जाफर ने कहा कि पहले जमाने में मिस्र देश में एक बड़ा प्रतापी और न्यायप्रिय बादशाह था। वह इतना शक्तिशाली था कि आस-पड़ोस के राजा उससे डरते थे। उसका मंत्री बड़ा शासन- कुशल, न्यायप्रिय और काव्य आदि कई कलाओं और विधाओं में पारंगत था। मंत्री के दो सुंदर पुत्र थे जो उसी की भाँति गुणवान थे। बड़े का नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद था और छोटे का नूरुद्दीन अली। जब मंत्री का देहांत हुआ तो बादशाह ने उसके दोनों पुत्रों को बुला कर कहा कि तुम्हारे पिता के मरने से मुझे भी बड़ा दुख है, अब मैं तुम दोनों को उनकी जगह नियुक्त करता हूँ, तुम मिल कर मंत्रिपद सँभालो। दोनों ने सिर झुका कर उसका आदेश माना। एक मास पर्यंत अपने पिता का शोक करने के बाद दोनों राज दरबार में गए। दोनों मिल कर काम करते थे। जब बादशाह आखेट के लिए जाता तो बारी-बारी से हर एक को अपने साथ ले जाता तो और दूसरा राजधानी में रह कर शासन कार्य को देखता।

एक शाम को, जब दूसरी सुबह को बड़ा भाई बादशाह के साथ शिकार पर जानेवाला था, दोनों भाई आमोद-प्रमोद कर रहे थे। हँसी-हँसी में बड़े भाई ने कहा कि हम दोनों एक मत हो कर इतना बड़ा राज्य चलाते हैं, हम क्यों न ऐसा करें कि एक ही दिन संभ्रांत परिवारों की सुशील कन्याओं से विवाह करें, तुम्हारी क्या राय है? छोटे ने कहा कि मैं आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हूँ, जैसा आप कहेंगे वैसा ही होगा।

दोनों को मद्यपान से नशा भी आ रहा था। बड़े भाई ने कहा, 'सिर्फ एक रात में शादी होना ही काफी नहीं है। हमारी पत्नियों को भी एक ही रात में गर्भ रहना चाहिए।' छोटे ने हँस कर कहा कि वह भी हो जाएगा। फिर बड़े ने कहा कि हमारी संतानें भी एक ही दिन जन्में और तुम्हारे यहाँ पुत्र हो मेरे यहाँ पुत्री हो। छोटे ने कहा, बहुत अच्छी बात है। बड़े ने कहा कि जब तुम्हारा बेटा और मेरी बेटी बड़े हो जाएँ उनका विवाह भी कर दिया जाए क्योंकि शुरू से साथ-साथ रहेंगे तो उन्हें एक-दूसरे से प्रेम हो ही जाएगा। छोटे भाई ने कहा, इससे अच्छी क्या बात हो सकती हैं कि मेरे बेटे के साथ आपकी बेटी की शादी हो।

बड़े ने कहा, 'लेकिन एक शर्त है। मैं शादी में तुम से दहेज भरपूर लूँगा। इसमें नौ हजार अशर्फियाँ नकद, तीन गाँव और दुल्हन की सेवा के लिए तीन दासियाँ। छोटे ने मजाक को बढ़ाते हुए कहा, 'यह आप कैसी बातें कर रहे हैं? हम दोनों की पदवी बराबर है। फिर लड़केवाला दहेज कहाँ देता है? वह तो दहेज लेता है। आपको चाहिए कि आप शादी में भरपूर दहेज मुझे दें, न कि मुझसे दहेज लें।'

यद्यपि मजाक ही हो रहा था किंतु बड़ा भाई अत्यंत क्रोधी स्वभाव का था। वह बिगड़ कर बोला, 'तुम समझते हो कि तुम्हारा बेटा मान-सम्मान में मेरी बेटी से अधिक होगा। मैं तो आशा करता था कि तुम मेरी बेटी की मान-प्रतिष्ठा करोगे, लेकिन मालूम होता है तुम उसका बड़ा अपमान करोगे।' दोनों भाई नशे में थे। यह बेकार बहस थी क्योंकि शादी

किसी की नहीं हुई थी और संभावित पुत्र और पुत्री के विवाह के दहेज का झगड़ा हो रहा था। लेकिन बहस बढ़ती ही गई और हास-परिहास से गंभीर रूप ले बैठी।

अंत में बड़े ने कहा, 'सवेरा होने दे। मैं तुझे बादशाह के सामने ले जा कर दंड दिलाऊँगा, तब तुझे मालूम होगा कि बड़े भाई से गुस्ताखी करने का क्या फल होता है।' यह कह कर वह अपने शयन कक्ष में चला गया। छोटा भी अपने कमरे में आ कर अपने पलंग पर लेट गया। किंतु उसे रात भर नींद न आई। वह गुस्से में जलता-भुनता रहा और सोचता रहा कि यह भाई जो मजाक की बात पर भी इस तरह बात करता है कोई गंभीर बात पैदा होने पर क्या करेगा।

दूसरे दिन सुबह शम्सुद्दीन मुहम्मद तो बादशाह के साथ शिकार पर चला गया और इधर छोटे भाई ने बहुत-से रत्नाभूषण आदि एक मजबूत खच्चर पर लादे, बहुत-सा खाने-पीने का समान रखा और शहर छोड़ कर चल दिया। सेवकों से कह दिया कि दो-एक दिन के लिए जा रहा हूँ। वह अरब देश की राह पर चल पड़ा। बहुत दिन की कष्टप्रद यात्रा के बाद उसका खच्चर बीमार हुआ और मर गया। वह बेचारा अपना सामान कंधे पर रख कर पैदल ही चलने लगा। हसना नामी शहर से वह बसरा की ओर बढ़ रहा था कि उसे एक घुड़सवार उसी तरफ जाता हुआ मिला। घुड़सवार को उस पर दया आई और उसने नूरुद्दीन अली को अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया और बसरा तक पहुँचा दिया। बसरा पहुँच कर नूरुद्दीन अली ने उसे बहुत धन्यवाद दिया।

बसरा नगर में नूरुद्दीन अली ने देखा कि एक बड़ी सड़क पर भीड़ सड़क के दोनों ओर खड़ी हुई है। वह भी वहीं खड़ा हो गया। कुछ ही देर में एक अमीराना सवारी आई जिसके साथ बहुत से नौकर-चाकर थे। जिस भव्य व्यक्तित्ववाले आदमी की सवारी निकल रही थी उसे लोग झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे। वह उस राज्य का मंत्री था। नूरुद्दीन अली के सलाम करने पर मंत्री ने उसे देखा और उसके विदेशी परिधान और उसके चेहरे पर उच्च वंशीयता की छाप देख कर उससे पूछा कि तुम कौन हो, कहाँ से आ रहे हो। नूरुद्दीन अली ने कहा, 'सरकार, मैं मिस्र देश के काहिरा नगर का निवासी हूँ। अपने संबंधियों से मेरा झगड़ा हो गया है इसीलिए देश-देश घूम रहा हूँ।' मंत्री ने कहा, 'इस यायावरी में तुम बहुत दुख उठाओगे। मेरे साथ चलो बड़े आराम से रहोगे।'

अतएव नूरुद्दीन अली मंत्री के साथ रहने लगा। मंत्री उसकी विद्या-बुद्धि देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन मंत्री ने एकांत में उससे कहा 'बेटे, अब मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, अब मुझे अधिक दिनों तक जीने की आशा नहीं है। मेरी संतान केवल एक बेटी है जो बड़ी रूपवती है। वह अब विवाह योग्य है। कई सामंत और धनी-मानी व्यक्ति उससे विवाह करना चाहते हैं। किंतु मैंने यह स्वीकार नहीं किया। मुझे वह बेटी बहुत ही प्रिय है। मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारे योग्य है। अगर तुम्हें कोई आपत्ति नहीं तो मैं तुम्हारे साथ उसका विवाह बादशाह से अनुमति ले कर कर दूँ और साथ ही मंत्री पद के लिए तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाऊँ और सारी संपत्ति भी तुम्हारे नाम कर दूँ।'

नूरुद्दीन अली ने कहा, 'मैं आपको अपना बुजुर्ग मानता हूँ, जो कुछ आपका आदेश होगा मैं वैसा ही करूँगा।' मंत्री ने उसकी स्वीकृति पाई तो बहुत खुश हुआ। उसने विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दी और नगर निवासियों में से खास-खास लोगों को यह बात बताने के लिए बुलाया। जब सब लोग एकत्र हुए तो नूरुद्दीन अली ने अलग ले जा कर मंत्री से कहा, 'मैंने अपने कुटुंब के बारे में अभी तक किसी को कुछ नहीं बताया। अब यह बताता हूँ। मेरे पिता मिस्र के बादशाह के मंत्री थे।

'हम दो भाई हैं। दूसरा भाई मुझसे बड़ा है। मेरे पिता की मृत्यु के उपरांत बादशाह ने हम दोनों भाइयों को उनका कार्य भार दे दिया। हम कुछ समय तक शासन कार्य विधिपूर्वक करते रहे। एक दिन मेरी अपने बड़े भाई के साथ एक बात पर बहस हो गई। उसने मुझसे ऐसे कटु शब्द कहे कि मैंने देश छोड़ दिया।'

मंत्री ने जब यह वृत्तांत सुना तो और भी प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यह तो बहुत अच्छी बात है कि यह भी मंत्री का बेटा निकला। उसने एकत्र हुए नागरिकों से कहा, 'मैं एक बात में आपकी सलाह लेना चाहता हूँ। मेरा एक भाई मिस्र के बादशाह का मंत्री है। उसके केवल एक पुत्र है। उसने मिस्र में अपने बेटे का विवाह न करना चाहा और उसे यहाँ मेरे पास भेज दिया ताकि मैं उसका विवाह करके उसे अपने पास रखूँ। आप क्या कहते हैं? सभी ने एक स्वर से कहा कि बहुत ही अच्छी बात है, भगवान वर-वधू को चिरायु करे। मंत्री ने सब लोगों को भोजन कराया और रस्मी तौर पर शादी की मिठाई बाँटी। काजी ने आ कर विवाह संपन्न किया। फिर सब लोग मंत्री के घर से विदा हो गए।

मंत्री ने सेवकों को आज्ञा दी कि नूरुद्दीन को स्नान कराओ। स्नान के बाद नूरुद्दीन अपने मामूली कपड़े ही पहनना चाहता था किंतु मंत्री के सेवकों ने उसे वे रत्नजड़ित मूल्यवान वस्त्र पहनाए जो मंत्री ने इस अवसर के लिए भेजे थे। उसके शरीर और वस्त्रों पर नाना प्रकार की सुगंध भी लगाई और उसका अन्य साज-शृंगार किया। फिर नूरुद्दीन अली अपने श्वसुर यानी मंत्री के पास गया। मंत्री उसे देख कर प्रसन्न हुआ, प्यार से उसे अपने पास बिठाया। फिर उसने पूछा, 'तुम मिस्र के मंत्री के बेटे हो। फिर भी तुमने परदेश में रहना पसंद किया। ऐसी क्या बात हो गई थी कि तुम दोनों भाइयों की ऐसी ठनी कि तुम्हें देश छोड़ने का निर्णय लेना पड़ा। अब तुम मेरे दामाद हो। हम एक हो गए हैं। अब तुम्हें मुझसे कोई भेद छुपाना नहीं चाहिए। तुम साफ बताओ कि घर क्यों छोड़ा।'

नूरुद्दीन अली ने उसे सविस्तार बताया कि किस तरह हँसी हँसी में पैदा हुई एक बात कटु विवाद का रूप ले बैठी। मंत्री यह वृत्तांत सुन कर बहुत हँसा और बोला, 'सिर्फ इतनी-सी बात पर तुम अपने भाई से अलग हो गए और अपना देश छोड़ बैठे? बेकार बात थी कि तुम्हारा और तुम्हारे भाई का एक साथ विवाह होता, एक साथ संतानें होतीं; तुम्हारे यहाँ पुत्र और उसके यहाँ पुत्री होती और उनके विवाह में दहेज का प्रश्न उठता। लेकिन हाँ, तुम्हारे भाई की ज्यादती थी कि हँसी-हँसी में होनेवाली बात को खींच कर इतना कटु बना दिया। तुम्हारा देशत्याग समझदारी की बात तो नहीं थी किंतु मेरे सौभाग्य से यह सब हो

गया। खैर, अब यहाँ समय न लगाओ। अपनी दुल्हन के पास जाओ। वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।' नूरुद्दीन अली उसकी आज्ञा मान कर अपनी पत्नी के पास चला गया।

इधर मिस्र में उस दिन की कहा-सुनी के एक महीने बाद जब बड़ा भाई शम्सुद्दीन मुहम्मद शिकार से वापस आया तो उसे सेवकों ने बताया कि उसका भाई दो दिन के लिए जाने को कह कर वापस नहीं लौटा। शम्सुद्दीन मुहम्मद को इस पर बड़ा खेद हुआ क्योंकि उसने समझ लिया कि नूरुद्दीन अली मेरे कटु वचनों से क्रुद्ध हो कर किसी दिशा में निकल गया है। उसने चारों ओर उसकी तलाश में आदमी भिजवाए जो दमिश्क और हलब तक हो आए किंतु उसे न खोज सके क्योंकि वह तो बसरा में था। अंत में शम्सुद्दीन निराश हो कर बैठ रहा। उसने समझ लिया कि नूरुद्दीन जीवित नहीं है।

फिर शम्सुद्दीन मुहम्मद ने विवाह किया। संयोग से उसका विवाह उसी दिन और उसी समय पर हुआ जब नूरुद्दीन का विवाह बसरा में हो रहा था। इससे भी अजीब बात थी कि नौ महीनों के बाद एक ही दिन नूरुद्दीन अली के घर में पुत्र और शम्सुद्दीन मुहम्मद के यहाँ कन्या का जन्म हुआ। नूरुद्दीन के पुत्र का नाम बदरुद्दीन हसन रखा गया। बसरा का मंत्री नाती के जन्म पर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने बहुत बड़ा समारोह किया और अच्छी तरह सेवकों को इनाम और फकीरों को भिक्षा दी। फिर कुछ दिन बाद वह नूरुद्दीन अली को शाही दरबार में ले गया और बादशाह से निवेदन किया कि मेरी जगह मेरे दामाद को मंत्री बना दीजिए। वह पहले भी कई बार उसे दरबार में ले गया था और बादशाह नूरुद्दीन की बुद्धि और चातुर्य से प्रभावित था। अतएव उसने बगैर किसी हिचक के नूरुद्दीन अली को अपना मंत्री बना दिया। पुराना मंत्री यानी नूरुद्दीन का ससुर यह देख कर अत्यंत प्रसन्न हुआ कि नूरुद्दीन अली में इतनी प्रबंध कुशलता है और वह ऐसी न्यायप्रियता और मृदुल स्वभाव से काम करता है कि राजा-प्रजा सभी का प्रिय हो गया है।

चार वर्षों के बाद अवकाश-प्राप्त मंत्री बीमार हो कर मर गया। नूरुद्दीन अली ने उसका बड़ा मातम किया और सारे मृतक संस्कार अच्छी तरह से किए। बदरुद्दीन हसन जब सात वर्ष का हुआ तो उसके पिता ने उसका विद्यारंभ कराया और बड़े-बड़े विद्वानों को उसका शिक्षक नियुक्त किया। बदरुद्दीन ऐसा कुशाग्रबुद्धि था कि कुछ ही समय में उसने पूरा कुरान कंठस्थ कर लिया। बारह बरस का हुआ तो उसने सारी प्रचलित विद्याएँ अच्छी तरह पढ़ लीं। वह अत्यंत सुंदर और सुशील भी था। जो भी उसे देखता उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाता था।

एक दिन नूरुद्दीन अली अपने पुत्र को राजदरबार में ले गया। बदरुद्दीन ने बादशाह को ऐसे विधिपूर्वक प्रणाम किया और उसके प्रश्नों का इतनी बुद्धिमानी से उत्तर दिया कि बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने बदरुद्दीन को इनाम-इकराम भी दिया। नूरुद्दीन अपने पुत्र के प्रशिक्षण पर बहुत ध्यान दिया करता था और बराबर उसे ऐसी बातें सिखाता था जिससे बेटे को लाभ हो और वह संसार में उच्च पद के योग्य सिद्ध हो। इसी तरह कई वर्ष

निकल गए।

फिर नूरुद्दीन बीमार पड़ गया। किसी इलाज से वह ठीक ही नहीं होता था और उसकी बीमारी बढ़ती चली जाती थी। अपना अंत समय आया देख कर उसने बदरुद्दीन को अपने निकट बुला कर उपदेश दिया, 'बेटे, यह जीवन नश्वर हे और संसार असार है। तुम मेरे मरने पर दुख न करना और भगवान की इच्छा समझ कर संतोष करना। हमारे खानदान के लोग ऐसा ही करते हैं और जिन अध्यापकों ने तुम्हें पढ़ाया है उनका भी यही कहना था। अब मैं जो कहता हूँ उसे ध्यान से सुनो।

'मुझे आशा है कि मैं जैसा कहूँगा वैसा ही तुम करोगे। मैं वास्तव में मिस्र देश का निवासी हूँ। मेरे पिता वहाँ के बादशाह के मंत्री थे। उनके मरने पर मैं और मेरा बड़ा भाई शम्सुद्दीन मुहम्मद दोनों मंत्री बना दिए गए। मेरा बड़ा भाई अब तक वहाँ का मंत्री है लेकिन मैं किसी कारण से यहाँ चला आया।' फिर उसने एक छोटे कलमदान से एक कागज निकाल कर बेटे को दिया और कहा, 'फुरसत से इसे पढ़ना। इसमें तुम्हें सारा हाल मिलेगा। मेरे विवाह और अपने जन्म की तिथियाँ भी तुम इसमें लिखी पाओगे।' यह कह कर नूरुद्दीन अली बेहोश हो गया।

बदरुद्दीन को पिता की मृत्यु निकट देख कर बड़ा रंज हुआ। वह रोने-पीटने लगा। लेकिन बदरुद्दीन को कुछ देर बाद होश आया। उसने बेटे से कहा, 'अब मैं कुछ देर ही का मेहमान हूँ। मैं इस अंतिम समय पर तुम्हें कुछ उपदेश कर रहा हूँ जिन्हें तुम हमेशा याद रखना। पहली बात तो यह कि किसी से बहुत घनिष्ठ मित्रता न करना न अपने भेद किसी से कहना। दूसरी यह कि किसी व्यक्ति पर अत्याचार न करना क्योंकि अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि यह दुनिया लेन-देन की जगह है, जैसी भलाई-बुराई तुम करोगे वैसा ही तुम्हें बदला मिलेगा। तीसरी बात यह है कि कभी ऐसी बात मुँह से न निकालना जिससे तुम्हें बाद में लज्जित होना पड़े, और यह भी याद रखो कि बहुत बोलनेवाला आदमी हमेशा लज्जित होता है और जो कम बोलता है और सोच-समझ कर बोलता है उसे लज्जा नहीं उठानी पड़ती क्योंकि गंभीरता से आदमी का मान बढ़ता है और उसके प्राणों को भी खतरा नहीं होता और बकवासी आदमी ऊटपटाँग बातें करके मुसीबत उठाता है। चौथी बात यह है कि मद्यपान कभी न करना क्योंकि मदिरा बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है। पाँचवीं बात यह है कि हाथ रोक कर खर्च करना और मितव्ययिता को हमेशा अपना सिद्धांत बनाए रखना। मतलब यह नहीं कि इतना कम खर्च करो कि लोग तुम्हें कंजूस कहने लगें लेकिन इतना खर्च न करना कि निर्धन हो जाओ। जो धनवान होता है उसे हजार दोस्त घेरे रहते हैं मगर जब पैसा नहीं रहता तो कोई बात भी नहीं पूछता।'

नूरुद्दीन अली इस प्रकार अपने पुत्र को जीवन के लिए उपयोगी बातें अपने अंतिम श्वास तक बताता रहा। जब वह मर गया तो बदरुद्दीन ने बड़े समारोहपूर्वक गमी की सारी रस्में कीं।

इतना कहने के बाद रानी शहजाद ने बादशाह शहरयार से कहा कि यहाँ तक कहानी सुन कर खलीफा हारूँ रशीद बहुत प्रसन्न हुआ इसलिए मंत्री जाफर ने कथा को आगे

बढ़ाया। उसने कहा कि बदरुद्दीन ने, जिसे बसरा में जन्म लेने के कारण लोग बसराई कहने लगे थे, उस देश की रीति के अनुसार एक महीने तक घर में बैठ कर पिता की मृत्यु का मातम किया। इस पर बादशाह को आपत्ति ही क्या होती किंतु बदरुद्दीन को बाप के मरने का इतना शोक हुआ कि इसके बाद भी दरबार में न गया। जब दूसरा महीना भी बीत गया तो बादशाह को बड़ा क्रोध आया। उसने बदरुद्दीन हसन के बजाय दूसरे व्यक्ति को मंत्री नियुक्त कर दिया और एक दिन नए मंत्री को आज्ञा दी कि पुराने मंत्री की जमीन-जायदाद जब्त कर लो और बदरुद्दीन हसन को गिरफ्तार करके मेरे सामने लाओ।

नया मंत्री सिपाहियों की एक टुकड़ी ले कर बदरुद्दीन के घर की ओर चला। बदरुद्दीन के एक गुलाम ने यह देख लिया और वह दौड़ कर अपने स्वामी के निकट गया और उसके पाँवों पर गिर कर उसके वस्त्रों को चूम कर बोला कि आप तुरंत घर छोड़ दें। बदरुद्दीन ने पूछा कि आखिर बात क्या है। गुलाम ने कहा कि अधिक कुछ कहनेसुनने का अवसर नहीं है, बादशाह ने आपकी संपत्ति जब्त करने और आपको गिरफ्तार करने का आदेश दिया है और नया मंत्री राजमहल से सिपाही ले कर चल चुका है। बदरुद्दीन यह सुन कर घबरा गया और बोला कि मैं कुछ रत्न और रूपया-पैसा तो ले लूँ। गुलाम ने कहा कि कुछ न लीजिए, सिर्फ अपनी जान ले कर निकल जाइए क्योंकि मंत्री का किसी क्षण भी इस मकान में प्रवेश हो सकता है।

यह सुन कर बदरुद्दीन पैदल जा रहा था इसलिए उसके कब्रिस्तान पहुँचते-पहुँचते सूरज डूब गया। वह अपने पिता की उस लंबी-चौड़ी कब्र पर पहुँचा जहाँ वह दफन था। यह कब्र नूरुद्दीन ने अपने जीवन काल ही में अपने लिए बनवा ली थी।

वह कब्र पर जा कर बैठा ही था कि उसकी एक यहूदी व्यापारी से भेंट हुई। यहूदी ने बदरुद्दीन को पहचाना और कहा कि आप यहाँ रात में कैसे आए। बदरुद्दीन ने कहा कि मैंने स्वप्न में अपने पिता को देखा था जो नाराज हो कर मुझ से कह रहे थे कि तू मुझे बिल्कुल भूल गया और मुझे दफन करने के बाद मेरी कब्र पर भी नहीं आया इसीलिए मैं परेशान हो कर तुरंत ही घर से चल पड़ा और यहाँ पहुँच गया। इसीलिए मैंने कोई सेवक आदि भी अपने साथ नहीं लिया।

यहूदी को उसकी बात पर विश्वास न हुआ और वह समझ गया कि बदरुद्दीन पर कोई मुसीबत आई है। उसने कहा, 'आपको शायद नहीं मालूम कि आपके पिता ने व्यापार में भी पैसा लगाया था। कई जहाजों पर उनका हजारों दीनार का माल लदा हुआ है और वे जहाज व्यापार यात्राओं पर हैं। आपके पिता मुझ पर बड़े कृपालु थे और मैं अपने को उनका सेवक समझता था। अब उस माल के मालिक आप हैं। चाहें तो अपने पहले जहाज के माल को मेरे हाथ बेच दें मैं उसे छह हजार मुद्राओं से खरीदने के लिए तैयार हूँ।'

बदरुद्दीन के पास तो कानी कौड़ी न थी। उसने इन मुद्राओं को भगवान की देन समझा और सौदा मंजूर कर लिया। यहूदी ने कहा 'अच्छी तरह सोच लीजिए, छह हजार मुद्राएँ दे कर मैं आपके पहले जहाज के माल का स्वामी हो जाऊँगा चाहे माल कितने ही का हो।

क्या आप यह सौदा पूरी रजामंदी से कर रहे हैं?' बदरुद्दीन ने कहा, हाँ मैं पूरी रजामंदी से माल बेच रहा हूँ। यहूदी ने कहा, 'मालिक, मैं आपके ऊपर पूरा विश्वास करता हूँ किंतु दूसरों को दिखाने के लिए जरूरी है कि आप यह क्रय पत्र लिखित रूप में मुझे दें।' यह कह कर उसने कमर से बँधा हुआ कलमदान निकाला। बदरुद्दीन ने लिख कर दे दिया,' मैं बसरा पहुँचनेवाले अपने पहले जहाज का माल इसहाक यहूदी के हाथ छह हजार मुद्राओं में बेचता हूँ।' यह लिख कर नीचे हस्ताक्षर कर दिए। यहूदी ने वह कागज लिया और बदरुद्दीन को छह हजार मुद्राओं की थैली दे कर चला गया।

बदरुद्दीन अब अपने पिता की कब्र से लिपट कर अपने दुर्भाग्य पर रोने लगा और बहुत देर तक रोता रहा। यहाँ तक कि रोते-रोते सो गया। इसी अरसे में एक जिन्न उधर घूमता-फिरता आ निकला। बदरुद्दीन का सुंदर रूप देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने इतना सुंदर कोई मनुष्य नहीं देखा था। उसे देर तक देखने के बाद वह आकाश में पहुँचा। परी से उससे कहा कि 'जमीन पर मेरे साथ चलो। मैं वहाँ पर एक कब्रिस्तान में एक कब्र पर रोता हुआ ऐसा आदमी दिखाऊँगा जिसकी सुंदरता पर तुम भी मोहित हो जाओगी।' परी ने स्वीकार किया। दोनों जमीन पर आए और जिन्न ने सोते हुए बदरुद्दीन की ओर उँगली उठा कर कहा, 'ऐसा सुंदर मनुष्य कहीं देखा है?'

परी ने बदरूद्दीन को गौर से देखा और बोली, 'वास्तव में यह अत्यंत रूपवान है किंतु मैं काहिरा में जो मिस्र की राजधानी है एक विचित्र बात देख कर आई हूँ। यदि तुम उसे जानना चाहो तो बताऊँ।' जिन्न ने कहा, जरूर बताओ। परी बोली, मिस्र के बादशाह का एक मंत्री है जिसका नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद है। उसकी एक बीस बरस की पुत्री है जो अतीव सुंदरी है। बादशाह ने उसके रूप की प्रशंसा सुन कर मंत्री से कहा कि उस कन्या का विवाह मेरे साथ कर दो।

मंत्री ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज, मुझे इस अनुग्रह से क्षमा करें। कारण पूछने पर उसने कहा कि मेरा छोटा भाई नूरुद्दीन अली भी मेरे साथ आपका मंत्री था, वह बहुत दिन हुए घर छोड़ कर चला गया। सुना है कि वह बसरा का मंत्री हो गया था। और अब जीवित भी नहीं है। लेकिन उसके यहाँ एक बेटा हुआ था जो अब भी होगा। फिर मंत्री ने बादशाह को एक तकरार बताई जो उसके और उसके भाई के बीच हुई थी और कहा कि चूँकि मैंने भाई को वचन दे दिया था कि अपनी पुत्री का विवाह उसके पुत्र के साथ करूँगा इसलिए मैं मजबूर हूँ और आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकूँगा। आपके लिए तो काहिरा में अमीरों की अनगिनत सुंदरी कन्याएँ हैं, जिससे चाहे विवाह करें।

बादशाह मंत्री की बात सुन कर अत्यंत क्रुद्ध हुआ। उसने कहा कि तुम मुझे इतना छोटा समझते हो कि मेरे साथ रिश्तेदारी भी न करो, मैं तुम्हें इस गुस्ताखी की ऐसी सजा दूँगा कि तुम्हें हमेशा याद रहे। अब तुम्हारी कन्या एक बदसूरत गुलाम से ब्याही जाएगी। यह कह कर बादशाह ने घुड़साल में काम करनेवाले एक महाकुरूप कुबड़े हब्शी गुलाम को दूल्हे की तरह सजाने का आदेश दिया। इस गुलाम का पेट भी बहुत बड़ा था और पाँव भी टेढ़े थे। उसने मंत्री से कहा कि जाओ, अपनी पुत्री के उस गुलाम के साथ विवाह

करने की तैयारी करो।

मंत्री बेचारा अत्यंत दुखी मन से अपने भवन में आया। बादशाह की आज्ञा टाली नहीं जा सकती थी इसलिए उसने विवाह की तैयारियों का आदेश दिया। रात को काहिरा में गुलामों ने बरात सजाई और कुबड़े गुलाम को हम्मारम में भेजा और खुद हम्माम के द्वार पर एकत्र हो गए। कुबड़े और बदसूरत गुलाम को नहला-धुला कर अच्छे कपड़े पहनाए गए। उसी समय जिन्नग से परी ने कहा, 'कुरूप गुलाम को शादी के कपड़े पहनाए गए हैं और इस समय उसका दूल्हेउ की तरह शृंगार किया जा रहा है। कितने दुख की बात है कि मंत्री की इतनी सुंदर कन्या इतने कुरूप गुलाम की पत्नीज बने।'

यह सुन कर जिन्ने बोला, 'अगर हम लोग कुछ ऐसा करें कि उस कन्या का विवाह इस सुंदर युवक से हो जाए तो कैसा रहे?' परी ने कहा, 'मैं तो दिल से चाहती हूँ कि कुछ ऐसा किया जाए कि बादशाह का अन्यासय घटित न हो सके, गुलाम को धोखा दे कर उसकी जगह इस युवक को बिठा दिया जाए। इससे बादशाह को भी उनके अनुचित क्रोध का फल मिल जाएगा और मंत्री और उसकी पुत्री का भी गुलाम के साथ रिश्तेकदारी करने के अपमान से बचाव हो जाएगा।'

जिन्नप ने परी से कहा कि अगर तुम मेरी सहायता करो तो यह काम हो सकता है। मैं इसके जागने के पहिले ही इसे उठा कर काहिरा में पहुँचा दूँगा। चुनाँचे जिन्नक और परी एक क्षण ही में बदरुद्दीन हसन को उठा कर काहिरा में हम्माम के पास ले गए।

बदरुद्दीन की आँख खुली तो वह स्वेयं को नई जगह पा कर बहुत घबराया और चीत्कार करने ही वाला था कि जिन्न ने उसके कंधे पर हाथ रख कर उससे चुप रहने के लिए कहा। फिर उसे समझाया, 'मैं तुम्हेंक एक मशाल देता हूँ, उसे ले कर शादी के जुलूस में सम्मिलित हो जाओ, मंत्री के मकान में निडर हो कर चले जाओ और अंदर जा कर कुबड़े के दाहिनी ओर बैठ जाना, इसके पहले गाने-बजानेवालों को जो बरात के साथ होंगे खूब इनाम देना और अंदर जा कर दुल्हन की बंदियों को भी मुट्ठी भर कर सिक्के देना, यह खयाल मत करना कि तुम्हांरी थैली खाली हो जाएगी। तुम किसी से न डरना और मेरे बताए पर काम करते जाना।'

अतएव बदरुद्दीन मशाल ले कर भीड़ में शामिल हो गया। कुछ देर में दूल्हा बना गुलाम भी हम्माम से बाहर निकला और शाही घोड़े पर बैठ कर दुल्ह न के घर की ओर चला। बदरुद्दीन ने गाने-बजानेवालों को मुट्ठी भर-भर कर रुपए दिए, वे इससे बड़े प्रसन्न हुए। बरात मंत्री के द्वार पर पहुँची तो द्वारपाल ने बरातियों को बाहर रोक दिया। गाने-बजानेवालों को तो अंदर जाना ही था, उन्हों ने इस खुले हाथवाले बराती यानी बदरुद्दीन के भी अंदर जाने की अनुमति द्वारपाल से लड़ झगड़ कर दिलवा दी और कहा कि यह गुलाम नहीं, उच्चे वर्ग का परदेशी है। उन्हों ने उसके हाथ से मशाल भी ले ली और उसे दूल्हेग की दाहिनी ओर बिठा दिया, दूल्हेश की बाईं ओर दुल्हन बैठी थी। दुल्हान यद्यपि अतीव सुंदरी थी किंतु कुरूप गुलाम से ब्याही जाने पर अत्येधिक शोक संतप्तु और मुरझाई हुई थी।

कुछ क्षण में दुल्हन की बाँदियाँ हाथ में मशालें ले कर आईं। उनके साथ काहिरा की अन्यह स्त्रियाँ भी थीं। वे सब कहने लगीं कि इस कुबड़े की तरफ देखा भी नहीं जाता, हम लोग तो अपनी सुंदरी दुल्हवन का हाथ इस सजीले जवान को देंगे जो उसके पास बैठा है। उन्होंलने इस बात का भी खयाल न किया कि बादशाह की आज्ञा से गुलाम का विवाह हो रहा है और ऐसी बातें करने पर उन्हेंो दंड मिल सकता है। उन्हों ने ऐसा शोरगुल किया कि गाने-बजाने की आवाजें तक दब गईं।

कुछ देर में फिर गाना-बजाना शुरू हो गया। रात भर यह राग-रंग चलता रहा। डोमिनियों ने सात प्रकार के राग गाए और प्रत्येबक राग पर दुल्हरन को एक नया जोड़ा पहनाया गया। जोड़े बदलने के बाद दुल्ह न ने गुलाम को घृणापूर्वक देखा और उसके पास से उठ कर अपनी सहेलियों के साथ बदरुद्दीन के समीप जा बैठी। बदरुद्दीन ने जिन्ना के आदेशानुसार बाँदियों आदि को मुट्ठी भर-भर इनाम देना शुरू किया और मुट्ठी भर-भर सिक्के उछालने भी शुरू किए। स्त्रियाँ एक-दूसरे से लड़-झगड़ कर सिक्के उठाने लगीं और बदरुद्दीन की ओर प्रशंसा के भाव से देखने लगीं और उसे आर्शीवाद देने लगीं। वे एक-दूसरे को इशारे से बता रही थीं कि यह सुंदर युवक ही दुल्हन के लायक है, यह कुबड़ा गुलाम उसके लायक नहीं है।

महल के अन्यन सेवकों में भी यह बात होने लगी। कुबड़े की कान में कुछ तो भनक पड़ी किंतु वह साफ न सुन सका क्यों कि गाने-बजाने की आवाज भी ऊँची थी और सामने तरह-तरह के तमाशे भी हो रहे थे। दुल्होन जब सारे जोड़े बदल चुकी तो गाना-बजाना बंद हो गया। अब सेवकों ने बदरुद्दीन को उठने का इशारा किया। वह उठ कर खड़ा हो गया। अब सारे लोग उस कक्ष से बाहर चले गए और दुल्हन भी अपनी सहेलियों के साथ अपने भवन चली गई। वहाँ उसे सेविकाओं ने सोने के समय के कपड़े पहना दिए। इस कक्ष में गुलाम और बदरुद्दीन ही रह गए।

गुलाम ने क्रुद्ध दृष्टि से बदरुद्दीन को देख कर कहा, 'अब तेरा यहाँ क्या काम है? क्योंर खड़ा है यहाँ? जाता क्योंं नहीं?' वह बेचारा घबरा कर बाहर जाने को उद्यत हुआ किंतु परी और जिन्नव ने, जो अदृश्य् रूप से वहाँ मौजूद थे, उससे कहा कि तुम बाहर न जाओ, हम लोग इस कुबड़े ही को भगा देंगे और तुम दुल्हंन के कमरे में चले जाना। परी और जिन्नक के आश्‍विासन पर बदरुद्दीन वहीं पर रुका रहा। उसकी जगह कुबड़े को ही भागना पड़ा। हुआ यह कि जिन्न् ने बिल्लीं का रूप धारण कर लिया और वह बिल्ली कुबड़े को तेज नजरों से देखने लगी। कुबड़े ने डपट कर और हाथ फटकार कर भगाना चाहा मगर वह बिल्‍लीी भयानक रूप से गुर्राने लगी और अंगारे जैसी लाल आँखों से देखने लगी। साथ ही उसने अपना आकार बढ़ाना शुरू किया और गधे जितनी हो गई।

अब कुबड़ा घबड़ाया और भागने को तैयार हुआ। बिल्लीय ने और आकार बढ़ाया और भैंस जैसी हो गई और गरज कर बोली, 'ठहर कमीने, तू जा कहाँ रहा है। तेरा अंत निकट है।'

कुबड़ा गुलाम डर के मारे जमीन पर गिर पड़ा। उसने कपड़ों से मुँह छिपा लिया और कहा, 'भैंसे जी महाराज, मुझसे क्यार कसूर हुआ है?' भैंसा बना हुआ जिन्नै बोला, तेरा यह साहस कि मेरी प्रेयसी से विवाह रचाए? कुबड़े ने कहा, 'मालिक, मुझे क्षमा करें, मुझे मालूम नहीं था कि मंत्री की कन्यास आपकी प्रेमिका है।' भैंसा बोला, 'अच्छाु तेरी जान नहीं लूँगा लेकिन जैसा कहूँ वैसा कर। तू इसी तरह आँखें बंद करके रात भर यहाँ रह और जब सवेरा हो जाय तो भागे जाना, इधर मुड़ कर भी नहीं देखना वरना मैं सींगों से तेरा पेट फाड़ डालूँगा।' वह भैंसा मनुष्यत के रूप में आ गया। उसने कुबड़े को सिर के बल दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और कहा, 'अगर तुमने रात में कभी हिलने-डुलने की कोशिश की तो तुझे इसी दीवार से रगड़ कर खत्मह कर दूँगा।' फिर परी और जिन्न वहाँ से चले गए।

इधर बदरुद्दीन हँसी-खुशी से दुल्हइन के भवन पहुँचा। वहाँ एक वृद्धा परिचारका उसे देख कर बड़ी प्रसन्नु हुई और बोली, 'बड़ा अच्छा हुआ कि कुबड़े की जगह तुम आए। अब तुम इस कमरे में जाओ जहाँ दुल्हन तुम्हाहरी प्रतीक्षा में है। उसके साथ रात भर आनंद करना।' फिर वह बदरुद्दीन को कमरे में भेज कर बाहर से कमरा बंद करके चली गई।

मंत्री की पुत्री ने उससे पूछा कि तुम तो मेरे पति के साथी हो, यहाँ कैसे आए। बदरुद्दीन ने कहा, 'मैं तुम्हा रे पति का साथी नहीं, स्वीयं तुम्हाारा पति हूँ।' बादशाह की आदत हँसी-मजाक करने की है इस लिए उसने कुबड़े की बारात सजाई थी किंतु वास्तिव में उसने तुम्हारे साथ मेरी शादी करवाई है। उस कुबड़े से सभी हँसी-ठट्ठा करते हैं सो बादशाह ने भी किया। वह वापस घुड़साल में काम करने के लिए भेज दिया गया है। तुम इत्मीनान रखो, वह अब कभी तुम्हेंस सूरत नहीं दिखाएगा।'

मंत्री की पुत्री जो पहले बड़ी उदास थी अपने पति को देख कर बड़ी प्रसन्न हुई। वह कहने लगी, 'मैं तो दुख और चिंता के मारे मरी जा रही थी, ऐसे कुरूप कुबड़े के साथ जीवन कैसे कटेगा। भगवान का लाख-लाख धन्यहवाद है कि उसने मुझे कुबड़े से बचा कर तुम जैसा पति दिया है।'

यह कह कर वह बदरुद्दीन से लिपट गई। बदरुद्दीन भी उसके रूप और प्रेम को देख कर भावविभोर हो गया। उसने अपनी पगड़ी और थैली एक चौकी पर रखा और भारी पोशाक उतार दी। सोते समय पहननेवाली टोपी, एक मिर्जई और तंग मुहरी का पाजामा, ही उसके बदन पर रहा। ज्ञातव्यत हो कि इतना खर्च करने पर भी उसकी थैली जिन्न के जादू के कारण भरी की भरी रही थी। शयन काल के वस्त्र् पहन कर बदरुद्दीन अपनी दुल्हकन को बगल में ले कर सो रहा।

रात में जिन्न् और परी फिर आए। अब उन्हेंद शरारत सूझी। उन्होंकने तय किया कि बदरुद्दीन को जैसे सोते में बसरा से काहिरा लाए थे वैसे ही कहीं और पहुँचा दिया जाय। चुनाँचे उन्होंरने उसे उठा कर दमिश्के नगर की जामा मस्जिद के बाहर लिटा दिया। फिर दोनों वहाँ से चले गए।

सवेरे अजान की आवाज सुन कर दमिश्क वासी जब नमाज पढ़ने आए तो सीढ़ियों पर बदरुद्दीन को सोया देख कर ताज्जुब में पड़े कि यह कौन है और यहाँ क्यूँ सो रहा है। कोई कहता है कि रात में अपनी पत्नीर से लड़-झगड़ कर आ गया है और इतना गुस्सेह में था कि रात के पहननेवाले कपड़े भी नहीं बदले। किसी ने कहा, यह बात नहीं है, यह रात को बहुत देर तक शराब पीता रहा है और घर का रास्तिा भूल कर लड़खड़ाता हुआ यहाँ आया और गिर कर सो गया। इसी प्रकार वे लोग भाँति-भाँति की अटकलें लगाने लगे क्यों कि किसी को पता नहीं था कि वह कौन है और क्योंप पड़ा है।

बदरुद्दीन कुछ तो सवेरे की ठंडी हवा से और कुछ चारों ओर घिरे लोगों की आवाज से जाग गया और अपने को अपरिचित जगह एक मस्जिद के सामने देख कर बड़े आश्चरर्य में पड़ा और उसने लोगों से पूछा कि यह कौन-सी जगह है और मैं यहाँ कैसे आया। लोगों ने कहा, भाई, यह तो हम लोग भी सोच रहे हैं कि तू कौन है और यहाँ कैसे आया। तुझे तो यह भी नहीं मालूम है कि यह कौन-सी जगह है। यह दमिश्क का नगर है और यह यहाँ की जामा मस्जिद है।' बदरुद्दीन ने कहा, 'बड़े आश्चीर्य की बात है कि कल रात मैं काहिरा में सोया था और आज सुबह दमिश्कद में पहुँच गया।' उसकी बात सुन कर लोगों ने समझा कि यह पागल है और उसकी जवानी और खूबसूरती को देख कर उसके उन्मा दग्रस्त होने पर खेद प्रकट करने लगे।

एक बुड्ढे ने कहा, 'बेटे, तू क्याप बातें कर रहा है। यह कैसे हो सकता है कि रात को तुम काहिरा में हो और सुबह दमिश्क पहुँच जाओ।' बदरुद्दीन ने कहा, 'मैं सच कहता हूँ, पिछली रात मैं काहिरा में था और उससे पिछली रात में बसरे में था।' यह सुन कर आसपास के लोग ठहाका मार कर हँसने लगे और शोरगुल करने लगे। वे कहने लगे, 'तुम बिल्कुआल मूर्ख हो या फिर किसी गुप्तऔ कारण से ऐसे बेसिरपैर की बातें कर रहे हो। बड़े ही खेद की बात है कि तुम जैसे भले-चंगे दिखनेवाले आदमी की मानसिक दशा विछिप्तक-सी हो जाए।' एक आदमी ने कहा, 'तुम खुद ही बताओ यह कैसे संभव है कि कोई रात को काहिरा में सोए और सुबह दमिश्क में जागे। मालूम होता है तुमने सपना देखा है और अभी तक ठीक तरह से जागे नहीं हो, उसी सपनों की दुनिया में खोए हो।'

बदरुद्दीन हसन ने कहा, 'मैं बिल्कुकल ठीक कहता हूँ। कल रात को काहिरा में मेरा विवाह हुआ था।' लोग और हँसे और कहने लगे कि यह वाकई अभी तक सपना देख रहा है। बदरुद्दीन बोला, 'नहीं, सच्चीर बात है, सपना नहीं है। रात को मेरी दुल्हदन ने सात रागों पर सात जोड़े बदले। उसका विवाह एक कुबड़े गुलाम से किया जा रहा था किंतु फिर मेरे साथ कर दिया गया। मैं अच्छे वस्त्रड और भारी पगड़ी पहने था और मुद्राओं से भरी एक थैली भी मेरे पास थी। मालूम नहीं वे चीजें कौन ले गया और मुझे यहाँ छोड़ गया।'

बदरुद्दीन जितना अपनी बात पर जोर देता था उतना ही लोग हँसते और उसे पागल बताते थे। वह तंग आ कर एक ओर चला गया तो भीड़ उसके पीछे हो ली। सभी लोग चिल्लास रहे थे, 'पागल है।' उसके ऊपर पत्थभर भी फेंके जाने लगे। बदरुद्दीन घबरा कर एक हलवाई की दुकान में घुस गया। यह हलवाई पहले पश्चिमी क्षेत्रों में लुटेरों का

सरदार था और लूटमार से जीवन निर्वाह करता था। कुछ काल से वह इस निंद्य कर्म को छोड़ कर ईमानदारी से रोजी कमाने लगा था। वह बहुत परोपकारी और मिलनसार हो गया था और आम लोग उसके प्रशंसक थे फिर भी उसे क्रुद्ध करना कोई भी नहीं चाहता था क्यों कि उसका अतीत लोगों को मालूम था, उससे लोग भय भी खाते थे।

हववाई ने सब को डाँट-डपट कर भगा दिया और बदरुद्दीन से पूछा कि क्या, बात है। उसने फिर अपना पूरा हाल बताया तो हलवाई ने कहा, 'तुम बड़े समझदार लगते हो लेकिन यह कहानी अब और किसी से न कहना वरना लोग तुम्हेंा पागल ही कर छोड़ेंगे। मेरे कोई संतान नहीं है। मैं तुम्हें। गोद ले लूँगा और जब तुम मेरे दत्तक पुत्र बन जाओगे तो तुम्हेंे छेड़ने का किसी को साहस नहीं रहेगा।' बदरुद्दीन को अपने वर्ग से नीचे के आदमी का दत्तक पुत्र बनने के विचार से दुख तो हुआ लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। इसलिए उसने हलवाई की बात मान ली। हलवाई ने उसे अच्छे कपड़े पहनाए और मित्रों और संबंधियों को बुला कर गोद लेने की रस्मस पूरी कर दी। काजी के सामने भी कार्यवाही हो गई। बदरुद्दीन ने हलवाई का काम सीखा और हसन हलवाई के नाम से मशहूर हो गया।

उधर काहिरा में क्याह हुआ यह भी सुनिए। मंत्री शम्सुद्दीन की पुत्री जब सवेरे सो कर उठी तो उसने अपने पति को अपने पास न पाया। वह समझी कि वह शौच आदि के लिए गया होगा और वह उसकी प्रतीक्षा करने लगी। इतने में मंत्री शम्सुद्दीन शोकाकुल दशा में वहाँ आया क्यों कि वह समझता था कि कुबड़ा गुलाम ही उसका दामाद हो गया है। उसने दुखी स्व र में अपनी पुत्री को पुकारा। उसने जब दरवाजा खोला तो बड़ी प्रसन्न्बदन थी। मंत्री को आश्चर्य हुआ क्यों कि गुलाम की पत्नीउ होने पर उसे दुखी होना चाहिए था। उसने पूछा, तुम इतनी खुश कैसे हो, मैं तो सोचता था तुम रो रही होगी। लड़की बोली, 'पिताजी, मेरा विवाह कुरूप कुबड़े के साथ नहीं हुआ बल्कि एक अति रूपवान नवयुवक के साथ हुआ है।'

मंत्री ने कहा, 'तू क्या बकती है। वह कुबड़ा ही तेरा पति है और वही यहाँ सोया होगा।' पुत्री बोली, 'नहीं पिताजी, कुबड़ा जाए जहन्नाम में। मेरा पति तो काली भवोंवाला और बड़ी-बड़ी आँखोंवाला सजीला जवान है। अभी वह शौच आदि के लिए गया है। वही इस कमरे में सोया था। अभी वापस आता होगा, आप स्वचयं उसे देखेंगे।' मंत्री चक्क र में पड़ा कि यह सजीला जवान कहाँ से आ गया। वह उसे महल में ढूँढ़ने लगा लेकिन वह कहीं न मिला। हाँ, उसने एक कमरे में यह जरूर देखा कि कुबड़ा गुलाम सर के बल दीवार से सहारे खड़ा है।

मंत्री ने उससे पूछा कि तुम्हेंद इस प्रकार किसने खड़ा किया। कुबड़ा उसकी आवाज पहचान कर भी वैसे ही उल्टो खड़ा रहा और बोला, 'आपको मेरे साथ ऐसा क्रूर परिहास नहीं करना चाहिए था। आप जानते थे कि भैंसा बना हुआ जिन्नइ आपकी पुत्री का प्रेमी है तो मुझे दामाद बनाने के लिए क्योंन कहा।' मंत्री ने कहा, 'तू पागल तो नहीं हो गया है कि ऐसी ऊटपटाँग बातें कर रहा है?' कुबड़े ने कहा, 'नहीं, मैं सच कह रहा हूँ। सुबह

होने तक मैं हिल भी नहीं सकता वरना जिन्नत मुझे मार डालेगा। आप जानना ही चाहते हैं तो सुनिए। रात को एक काली बिल्ली मुझे आ कर डराने लगी। मैंने उसे भगाया तो वह बड़ी होने लगी और कुछ देर में भैंसा बन गई। उसने बताया कि वह आप की पुत्री का प्रेमी है। उसने मुझे इस प्रकार खड़ा कर दिया और कहा कि सुबह से पहले अपनी जगह से हिले तो मार डालूँगा।'

मंत्री यह बेसिरपैर की कहानी सुन कर ऊब गया। उसने गुलाम को सीधा खड़ा कर दिया। गुलाम सिर पर पाँव रख कर भागा और पीछे निगाह भी नहीं की। वह सीधा राजमहल में गया और बादशाह के पाँवों पर गिर पड़ा। बादशाह के पूछने पर उसने रात का अपना सारा अनुभव बताया। बादशाह यह सब सुन कर बहुत हँसा।

इधर मंत्री अपनी पुत्री के पास फिर गया और बोला, 'तुम जिसे अपना पति कहती हो वह तो महल में कहीं नहीं मिला। तुम झूठ बोल रही हो।' पुत्री ने कहा, 'मैं बिल्कुलल सच कहती हूँ। आप को मेरी बात पर विश्वामस न हो तो यह चौकी पर रखे हुए कपड़े और यह पगड़ी देखिए। यह चीजें मेरे पति की हैं। सोने के पहले उसने कपड़े उतार कर यहाँ रख दिए थे।

मंत्री ने पगड़ी को देखा और जान गया कि ऐसी पगड़ी मोसिल के मंत्रिगण पहना करते हैं। उसने पगड़ी को उलट-पलट कर देखा तो उसमें से कपड़े में लिपटी हुई कोई चीज गिरी। उसे खोल कर देखा तो उसमें एक लंबा पत्र था। यह वह अंतिम पत्र था जो नूरुद्दीन अली ने अपने पुत्र को लिखा था और बदरुद्दीन उसे हमेशा अपनी पगड़ी में सुरक्षापूर्वक रखता था। मंत्री को सिक्कों से भरी एक थैली भी वहाँ मिली जिसके अंदर इसहाक यहूदी का लिखा हुआ कागज था कि छह हजार मुद्राओं में मैंने बदरुद्दीन के जहाज का माल खरीद लिया है। शम्सुद्दीन यह सब चीजें पा कर गश खा गया। थोड़ी देर में सचेत होने पर वह बोला, 'बेटी, तुम ठीक ही कहती हो और तुम्हासरी प्रसन्न ता भी उचित है। तुम्हाचरा पति तुम्हाखरा चचेरा भाई है।' यह कह कर वह अपने भाई के हाथ के लिखे पत्र को बार-बार चूमने और भाई को याद करके रोने लगा।

उक्ता पत्र में नूरुद्दीन ने सविस्तोर लिखा था कि वह कब बसरा पहुँचा, कब उसका विवाह हुआ और कब उसका पुत्र बदरुद्दीन पैदा हुआ। शम्सुाद्दीन को यह देख कर आश्च र्य हुआ कि नूरुद्दीन का और उसका विवाह एक ही दिन हुआ था और उसकी पुत्री और बदरुद्दीन का जन्मक भी एक ही दिन हुआ था। पहले मजाक में कही हुई बातों के ठीक निकलने पर उसे बड़ा आश्चकर्य हुआ। वह तुरंत ही पगड़ी और पत्र ले कर बादशाह के सम्मुख गया और सारा हाल विस्ता.रपूर्वक बताया। बादशाह को भी आश्चरर्य हुआ और उसने आदेश दिया कि यह सारी बातें उसकी इतिहास पुस्तयक में लिखी जाएँ।

मंत्री ने बदरुद्दीन के आने की एक सप्तादह तक प्रतीक्षा की। फिर उसने काहिरा नगर में उसकी खोज की। बदरुद्दीन कहीं न मिला। इससे मंत्री को अत्यंत दुख हुआ। उसने बदरुद्दीन की सारी चीजें सुरक्षापूर्वक संदूक में रखीं बल्कि विवाह के समय प्रयुक्त सारे

कमरों को वहाँ की हर चीज जैसी की तैसी रख कर ताला डलवा दिया। मंत्री की पुत्री को कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि उसे गर्भ रह गया। नौ महीने बाद उसने एक पुत्र को जन्मत दिया। वह पुत्र अत्यंत सुंदर था। उसके नाना ने उसकी सेवा के लिए बहुत-से नौकर-चाकर रखे। उसका नाम रखा गया अजब। जब अजब सात वर्ष का हुआ तो शम्सुद्दीन ने उसे एक अच्छेन मकतब में भेजा जहाँ उसने अत्यंत विद्वान गुरुजनों से शिक्षा लेनी आरंभ की। उसके मकतब में जाने के समय भी दो सेवक उसके साथ रहा करते थे।

अजब को अपने ऐश्व र्य का बड़ा घमंड हो गया क्योंेकि उसके सभी सहपाठी उससे सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से निम्नस स्तडर के थे। इसलिए वह अक्सकर उन्हें मारा-पीटा करता था और गालियाँ देता रहता था। वे इस बात से दुखी हुए और उन्हों ने गुरु से शिकायत की। गुरु ने पहले तो उस से कहा कि बड़े घर का लड़का है, उसकी बातें सह लिया करो, लेकिन जब अजब की ज्यादतियाँ सीमा से बाहर हो गईं और उसने गुरु के समझाने-बुझाने पर भी ध्या न न दिया तो गुरु ने लड़कों से कहा, 'मैं तुम्हेंु एक उपाय बताता हूँ। तुम सब लोग एक नया खेल शुरू करो जिसमें हर लड़का अपने माता-पिता का नाम बताए। अजब अपने पिता का नाम न बता सकेगा और तुम्हा रे साथ खेलना छोड़ देगा।'

लड़कों ने ऐसा ही किया। दूसरे दिन मैदान में इकट्ठे हो कर कहा कि हम नया खेल आरंभ करते हैं जिसमें हर लड़का अपने माँ-बाप का नाम बताएगा। जो न बता सकेगा वह खेल से अलग कर दिया जाएगा। अतएव सभी लड़कों ने एक-एक करके अपने माता-पिता का नाम बताना शुरू किया।

जब अजब की बारी आई तो उसने कहा, 'मेरा नाम अजब है। मेरी माँ का नाम हसना है और मेरे पिता का नाम शम्सुद्दीन मुहम्मदद है। मेरा पिता मिस्र के बादशाह का मंत्री है।'

यह सुन कर सब लड़के कह उठे कि यह तू क्याह कहता है, तेरे पिता शम्सुद्दीन नहीं हैं। अजब ने उन्हें डपट कर पूछा 'क्यों ? मेरे पिता शम्सुद्दीन मुहम्मतद क्यों नहीं है।' लड़के ठहाका मार कर हँसे और बोले, 'शम्सुद्दीन तेरा पिता नहीं तेरी, माँ का पिता यानी तेरा नाना है। तू अपने बाप का नाम नहीं बता सका। हम तेरे साथ नहीं खेलेंगे।' और वे सब उसे अकेला छोड़ कर चले गए। उसने जा कर गुरु से कहा कि लड़के यह झूठ कहते हैं कि शम्सुद्दीन मेरा पिता नहीं है। गुरु ने कहा, 'बेटा, वे ठीक कहते हैं। तेरे पिता का नाम तो मुझे भी नहीं मालूम। शम्सुद्दीन तो वास्त व में तेरा नाना है। बादशाह ने क्रुद्ध हो कर तेरी माँ का विवाह एक गुलाम से लगवाया था लेकिन विवाह की रात ही किसी जिन्नक ने गुलाम को भगा दिया और स्वगयं तेरी माँ के पास सो रहा। अब तुम सहपाठियों के साथ खेल उन्हेंद दुख न दे।'

अजब यह बातें सुन कर रोता हुआ अपनी माँ के पास आया और उससे कहा, भगवान के

लिए मुझे बताओ कि मेरा पिता कौन है। माँ ने कहा, तुम्हाऔरा बाप शम्सुद्दीन है, वह तुम्हें ा हमेशा प्याठर किया करता है। अजब ने कहा, तुम झूठ बोलती हो, शम्सुद्दीन मेरा नहीं तुम्हाएरा बाप है, तुम मुझे मेरे असली पिता का नाम क्यों नहीं बताती? उसकी माँ यह सुन कर रोने लगी क्यों ाकि उसे अपने पति की याद आ गई जो केवल एक रात उसके साथ रह कर न जाने कहाँ लोप हो गया था। इसी बीच शम्सुद्दीन भी वहाँ आ गया और बेटी को रोते देख कर उसने पूछा, तुम क्योंश रो रही हो। बेटी ने रोने का कारण बताया तो वह भी दुखी हुआ।

वह रात भर दुख में निमग्न रहा और सोचता रहा कि कैसे दुर्भाग्यत की बात है कि लड़की की बदनामी इस तरह हो रही है। दूसरे दिन में दरबार में गया तो रोते हुए बादशाह के पैरों में गिर पड़ा। उसने सारा हाल बता कर कहा कि अब मुझ से यह बर्दाश्तह नहीं होता कि लोग कहें कि मेरी बेटी ने जिन्नर से लड़का पैदा किया है, आप मुझे कुछ दिनों की छुट्टी दें तो मैं अपने दामाद बदरुद्दीन को सारे बड़े नगरों, विशेषतः बसरा में जा कर तलाश करूँ।

बादशाह को भी यह सारी बातें जान कर बड़ा दुख हुआ। उसने न केवल मंत्री की छुट्टी मंजूर कर ली बल्कि हर जगह के बादशाहों के नाम पत्र और अपने हाकिमों के नाम आदेश लिखवा कर शम्सुद्दीन को दे दिया। इनमें कहा गया था कि आप मेरे मंत्री शम्सुद्दीन के भतीजे और दामाद बदरुद्दीन की खोज में उसकी सहायता करें। जो उस नवयुवक को ढूँढ़ देगा मैं उससे बड़ा प्रसन्नप होऊँगा और उसका अहसान मानूँगा। शम्सुद्दीन ने अपने स्वाोमी की इस कृपा पर उसका बड़ा अहसान माना और विदा हुआ।

शम्सुद्दीन अपनी पुत्री और नाती को ले कर काहिरा से रवाना हुआ। बीस दिनों की यात्रा के बाद वह दमिश्कन पहुँचा। वहाँ जा कर उसने नदी के किनारे अपने डेरे खड़े किए और सेवकों को आज्ञा दी कि नगर में जा कर आवश्य क क्रय-विक्रय करो। वह खुद बदरुद्दीन को ढूँढ़ने नगर में निकल पड़ा। अजब भी अपने कुछ सेवकों के साथ नगर की सैर को निकला। नगर में आने पर उसके चारों ओर उसके अनुपम रूप को देख कर लोग जमा हो गए। इससे परेशान हो कर अजब बदरुद्दीन की दुकान में घुस गया।

बदरुद्दीन को जिस हलवाई ने गोद लिया था उसका देहांत हो चुका था और इस समय उसकी दुकान का मालिक बदरुद्दीन ही था। बदरुद्दीन का नगर निवासी बड़ा मान करते थे क्योंककि वह मिठाई बहुत अच्छीद बनाता था। बदरुद्दीन ने अजब को देखा तो उसके हृदय में प्रेम का ज्वाकर उठने लगा। वैसे अन्यछ लोग भी अजब को प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे थे किंतु बदरुद्दीन का तो खून का रिश्तौ था इसलिए वह प्याबर में विह्वल-सा हो गया। उसने अजब से कहा कि आप मेरी दुकान के अंदर बैठें और कुछ भोजन करें। अजब के साथ के सेवकों के हब्शीग प्रमुख ने कहा कि आप मंत्री पुत्र हैं। आप के लिए इस मामूली दुकान पर बैठ कर खाना-पीना उचित नहीं हैं।

बदरुद्दीन ने चुपके से कहा कि इस बेहूदा गुलाम की बात न मानिए। साथ ही उसने प्रमुख सेवक की भी खुशामद की और उसकी प्रशंसा में एक गीत गाया जिसका तात्प र्य यह था कि तुम ऊपर से काले लगते हो लेकिन तुम्हा्रा मन अत्यंत स्वतच्छा है। उसने हब्शीथ जाति की प्रशंसा में भी गीत गाए और सेवक से कहा कि मैं कवि हूँ, तुम्हा री तारीफ में कसीदा (प्रशस्ति काव्य) लिखूँगा। हब्शीऔ सेवक यह सुन कर प्रसन्न हुआ और उसने अजब को अंदर ले जा कर बिठा दिया। अब बदरुद्दीन ने कहा कि मेरी दुकान की मलाई सब जगह प्रसिद्ध है, मैंने मलाई जमाने का गुर अपनी माता से सीखा है और उसके और मेरे सिवाय ऐसी मलाई कोई नहीं जमा सकता है। मेरी मलाई दूर-दूर जाती है और आप भी इसे खा कर बहुत प्रसन्ना होंगे।

यह कह कर बदरुद्दीन ने कड़ाही से मलाई निकाली और उसमें अनार का रस और मिश्री डाल कर अजब को दी। वह उसे खा कर बहुत प्रसन्न हुआ। शम्सुउद्दीन ने प्रधान सेवक को भी मलाई खिलाई। वह भी खा कर बहुत खुश हुआ। बदरुद्दीन अजब को देखता जाता था और सोचता जाता था कि अगर उस सुंदरी से जिसके पास उस ने एक ही रात गुजारी थी कोई पुत्र होता तो शायद ऐसा ही होता। उस सुंदरी की याद कर के वह रोने लगा। फिर उसने अजब से पूछा कि आप दमिश्का में कैसे आए। अजब जबाव देने ही वाला था कि गुलाम ने कहा कि अब यहाँ नहीं ठहरिए, बहुत देर हो गई है, आपकी माँ आपकी प्रतीक्षा कर रही होंगी।

यह सुन कर अजब दुकान से उठ कर चल दिया। बदरुद्दीन को उसका अचानक जाना बर्दाश्ता नहीं हुआ। वह अपनी दुकान बंद करके उसके पीछे चलने लगा। जब नगर के द्वार पर पहुँचा तो अजब के सेवकों के सरदार ने बदरुद्दीन से डपट कर पूछा कि तुम हमारे पीछे क्यों लगे आते हो। उसने अजब से भी कहा कि मैंने आप से इसीलिए दुकान में न जाने को कहा था कि यह लोग मुँह लगाने योग्यत नहीं होते। बदरुद्दीन ने कहा कि मैं तुम्हा रे पीछे नहीं लगा हूँ। मुझे उधर कुछ काम है।

अजब ने भी अपने सेवक से कहा कि वह अपने काम से जा रहा है, इसे जाने दो, तुम किसी को कहीं आने-जाने से कैसे रोक सकते हो। लेकिन जब अजब अपने खेमे के पास पहुँचा और उसने मुड़ कर देखा तो बदरुद्दीन को कुछ पीछे चलते पाया। अब वह डरा कि नाना को मालूम होगा कि मैंने इस हलवाई की मलाई खाई है तो वे नाराज होंगे। उसने घबराहट में एक पत्थ र उठाया और खींच कर बदरुद्दीन की ओर फेंका और जल्दीा से अपने खेमे में घुस गया।

अजब का फेंका हुआ पत्थंर बदरुद्दीन के माथे पर लगा और उसका माथा लहूलुहान हो गया। उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मैं तो अपना काम-काज छोड़ कर इस लड़के के प्रेम में यहाँ तक आया और उसे मेरा कोई न ख्या ल हुआ बल्कि पत्थेर मार कर उसने मुझे घायल कर दिया। उसने अपनी दुकान पर आ कर घाव की मरहम-पट्टी की और अपने मामूली काम काज में लग गया।

इधर शम्सुद्दीन तीन दिन दमिश्कु में दामाद को खोजने के बाद कई प्रमुख नगरों में गया। इनमें हलब, नारदीन, मोसल, सरवर आदि शामिल थे। अंत में वह बसरा पहुँचा और वहाँ के बादशाह से भेंट की। बादशाह ने उसका बड़ा आदर-सत्कालर किया और पूछा कि तुम यहाँ कैसे आए। शम्सुद्दीन ने कहा कि मैं अपने भाई नूरुद्दीन अली के पुत्र बदरुद्दीन हसन को ढूँढ़ने निकला हूँ, आप कुछ उसके बारे में जानते हों तो कृपा करके मुझे बताएँ।

बादशाह ने कहा, 'नूरुद्दीन मेरा मंत्री था। बहुत दिन हुए उसका देहांत हो गया और उसका पुत्र बदरुद्दीन भी बाप के मरने के दो महीने बाद कहीं गायब हो गया। मैंने उसकी बहुत खोज कराई किंतु उसका कहीं पता नहीं चला। किंतु उसकी माँ यानी हमारे मंत्री की पत्नीज अभी तक जीवित है।'

शम्सुद्दीन बादशाह से विदा ले कर अपनी भावज के निवास स्थायन की ओर चला। दूसरे दिन उसने अपनी पुत्री और दौहित्र के साथ उसके महल में प्रवेश किया। एक नाम पट्टिका पर अपने भाई का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा देख कर उसने उसे चुंबन दिया और सेवकों से नूरुद्दीन की विधवा के बारे में पूछा। उन्होंने बताया। 'उसका निवास स्थोन यही है किंतु वह अक्सेर अपने पति की कब्र पर पड़ी रहती है, वहाँ अपने पुत्र की तस्वी र देख-देख कर रोती रहती है क्योंरकि पुत्र भी बहुत दिनों से लापता है। वैसे इस समय वह अपने महल ही में है।'

सेवकों ने खबर की तो नूरुद्दीन की विधवा आई। उसको शम्सुद्दीन ने अपना परिचय दिया और बताया कि तुम्हािरे पुत्र और मेरी बेटी का विवाह हुआ है। उसने अपनी पुत्री और दौहित्र को भी अपनी छोटी भाभी से मिलवाया। बेचारी विधवा अपने पुत्र से मिलने की आशा ही छोड़ बैठी थी। वह बहू और पोते को देख कर अति प्रसन्नध हुई और उसे आशा बँधी कि मेरा पुत्र भी जीवित होगा। बहू-पोते को गले लगा कर वह रोने लगी। शम्सुद्दीन ने उसे कहा कि यह समय रोने-पीटने का नहीं, तुम बादशाह से अनुमति ले कर मेरे साथ मिस्र देश चलो। यह कह कर उसने विस्तानरपूर्वक सारी बातें बताईं। नूरुद्दीन की पत्नी इस वृत्तांत को सुन कर आश्चरर्य में भी पड़ी और प्रसन्नब भी हुई।

फिर शम्सुद्दीन बादशाह के पास गया और उससे निवेदन किया, मैं अपनी भावज को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। बादशाह ने खुशी से यह बात मंजूर कर ली और मिस्र के बादशाह के लिए उत्तमोत्तम भेंट की वस्तुएँ दे कर मिस्र के मंत्री को विदा किया। शम्सुद्दीन सारे लोगों को ले कर फिर दमिश्क की ओर चला। इस बाद उसने फिर नगर के बाहर डेरे डाले और अपने सेवकों और गुमाश्तोंक को व्या।पार करने की आज्ञा दे कर स्व यं वहाँ के बादशाह के पास पहुँचा और उसे मिस्र के बादशाह का पत्र और उसके द्वारा भेजे गए तोहफे दिए। इधर अजब ने जब देखा नाना बहुत देर के लिए गए हैं तो उसने अपने सेवकों से कहा कि मैं फिर नगर की सैर करना चाहता हूँ। सेवक अजब की माँ से अनुमति ले कर उसे ले चले। नगर में चारों ओर घूमते-फिरते वे लोग दोपहर के समय बदरुद्दीन की दुकान पर पहुँचे। अजब को वास्त व में दुख था कि उसने पिछली बार बेकार ही हलवाई पर पत्थदर चलाया। उसने बदरुद्दीन से पूछा कि तुम मुझे पहचानते हो या

नहीं। बदरुद्दीन ने उसे देखा तो पहली बार ही की तरह फिर उसके हृदय में प्रेम का ज्वाार उठने लगा।

बदरुद्दीन उससे बोला, 'मालिक, आप दुकान के अंदर आ जाएँ और थोड़ी-सी मलाई खाएँ। मुझे खेद है कि इतने दिनों तक आपके दर्शन नहीं हुए नहीं तो मैं आपकी बराबर सेवा करता।' अजब ने कहा, 'पहले तुम वादा करो कि उस बार की तरह मेरा पीछा नहीं करोगे। तुमने यह वादा किया तो मैं तुम्हानरी दुकान पर आऊँगा बल्कि रोजाना एक बार आऊँगा।' बदरुद्दीन ने कहा कि जैसी आपकी आज्ञा होगी मैं वैसा ही करूँगा, आपके आदेश का उल्लंाघन कभी नहीं करूँगा।' अजब उसकी दुकान के अंदर बैठ गया।

बदरुद्दीन ने उसके तथा उसके सेवक के आगे मलाई के प्योले रखे। अजब ने बदरुद्दीन को भी अपने पास बिठाया। सब लोग मलाई खाने लगे। अजब बराबर उसे ताकीद करता रहा कि तुम्हें मुझ से चाहे जितना प्रेम हो तुम किसी से इसके बारे में न कहना। बदरुद्दीन ने वादा किया कि किसी से यह बात नहीं कहूँगा। वह अजब और उसके सेवकों की अभ्यदर्थना करता रहा और उन्हेंह मलाई खिलाता रहा, खुद उसने कुछ नहीं खाया। अजब जब खा चुका तो बदरुद्दीन ने उसके हाथ धुलाए और हाथ पोंछने के लिए एक साफ कपड़ा उसे दिया। फिर उसने चीनी के प्या ले में शर्बत बनाया और उसमें बर्फ डाल कर ले आया और अजब से बोला, 'यह गुलाब का शरबत अत्यंात स्वा दिष्टल है। ऐसा शरबत आपको मेरी दुकान के अतिरिक्ते और कहीं नहीं मिलेगा।' अजब उसे पी कर बहुत खुश हुआ। बदरुद्दीन ने प्रधान सेवक को भी शर्बत दिया जिसे वह एक बार ही में गटागट पी गया।

अब अजब और उसका सेवक बदरुद्दीन को धन्यभवाद दे कर अपने डेरी की ओर चले। अजब अपनी दादी के डेरे में गया। वह उसे गले से लिपटा कर रोने लगी कि भगवान मुझे जल्दर तुम्हादरे साथ तुम्होरे पिता को भी देखने का सुख प्रदान करे। उसने दस्त रख्वान बिछाया और अजब से भी खाने के लिए कहा और पूछने लगी कि तुम शहर में क्यार देख आए। अजब उससे बातें तो करता रहा किंतु उसने खाया बिल्कुछल नहीं। बुढ़िया ने अजब और उसके अंगरक्षक शाबान को अपने हाथ की बनाई हुई मलाई दी किंतु दोनों बदरुद्दीन की दुकान पर पेट भर मलाई खा चुके थे इसीलिए किसी ने इस मलाई की ओर दृष्टि भी नहीं की।

अजब की दादी ने कहा, 'बड़े आश्चनर्य की बात है कि मेरे हाथ की बनाई हुई मलाई भी तुम नहीं खा रहे हो। तुम्हेंभ ज्ञात होना चाहिए कि इस प्रकार की स्वा दिष्टन मलाई केवल मैं और मेरा पुत्र बदरुद्दीन ही बना सकते हैं और उसे भी मलाई बनाना मैंने ही सिखाया है।' अजब ने कहा, 'दादी जी, मेरा अपराध क्षमा करें तो बताऊँ कि इस नगर में एक हलवाई है जो इतनी अच्छीा मलाई बनाता है कि क्याम कहूँ। आपकी मलाई उतनी अच्छीइ नहीं होगी।'

दादी यह सुन कर अजब के अंगरक्षक शाबान पर बड़ी क्रुद्ध हुई और बोली, 'क्योंन निकम्मेम, तू मेरे बच्चेय की कैसी सुरक्षा करता है कि वह भिखमंगों की तरह हलवाइयों की दुकान पर बैठ कर खाया-पिया करता है?' शाबान ने कहा कि हम लोग थक गए थे इसलिए हलवाई की दुकान पर सुस्ताहने को बैठे थे किंतु हमने मलाई वगैरा नहीं खाई। किंतु अजब ने कहा कि यह झूठ कहता है, हलवाई की दुकान पर हम दोनों ने मलाई खाई थी।

अजब की दादी यह सुन कर क्रोध में भर गई और उसी समय उठ कर अजब के नाना के डेरे में पहुँची और उसे सारा हाल बताया। शम्सुभद्दीन अपनी भावज की बातें सुन कर उसके साथ उसके डेरे में पहुँचा और शाबान को डाँट कर पूछा कि क्याअ यह सच है कि तुम दोनों ने हलवाई के यहाँ मलाई खाई थी। शाबान ने फिर इनकार किया किंतु अजब ने कहा कि यह बात सच है, हम दोनों ने हलवाई की दुकान पर मलाई भी खाई थी और बाद में शर्बत भी पिया था। मंत्री ने शाबान से कहा, 'देख, अजब क्याा कहता है? क्याा तुम दोनों ने हलवाई के यहाँ कुछ खाया-पिया नहीं?' शाबान ने फिर इनकार किया और झूठी कसम भी खा ली कि हम लोगों ने कुछ खाया-पिया नहीं। अब मंत्री ने शाबान को पीटना शुरू किया। काफी ठुकाई हो चुकने के बाद उसने स्वीोकार किया कि अजब की बात सच्चीा है और हलवाई की मलाई इस मलाई से अधिक स्वासदिष्टन थी।

अजब की दादी यह सुन कर भी बिगड़ी। उसने शाबान से कहा, 'तेरा दिमाग फिर गया है क्याथ? कोई हलवाई मुझ से अच्छीभ मलाई बना सकता है? और अगर अब भी तू यह कहता है कि तो हलवाई की दुकान पर जा कर थोड़ी-सी मलाई ले आ। मैं भी तो देखूँ कि वह मलाई कैसी है।' शाबान बदरुद्दीन की दुकान पर गया और कुछ पैसे दे कर बोला कि एक प्यावले में मलाई दे दो, मेरी मालकिन तुम्हाीरी मलाई खाना चाहती हैं। बदरुद्दीन ने मलाई दे कर कहा, 'ऐसी मलाई तुम्हें दुनिया भर में कहीं और न मिलेगी। केवल मैं और मेरी माँ ही इस तरह की मलाई बना सकते हैं।'

शाबान ने मलाई ला कर अजब की दादी को दी। उसने उसे खाया तो भावातिरेक में मूर्छित हो गई। शम्सुद्दीन मुहम्मजद को उसकी दशा देख कर चिंता हुई। उसने अपनी भावज के मुँह पर गुलाब जल छिड़कवाया तथा अन्यज उपचार किए जिससे वह होश में आ गई। फिर उसने कहा कि यह मलाई बदरुद्दीन ही ने बनाई है। शम्सुद्दीन मुहम्महद को भी विश्वा स तो हो गया था कि यह बात ठीक है किंतु प्रकटतः उसने कहा, 'ऐसी क्या बात है कि तुम्हा रे बेटे के अलावा दुनिया में और कोई आदमी ऐसी मलाई न बना सके।' उसकी भावज ने कहा, 'मैं पूरे विश्वा स और जानकारी से कहती हूँ कि बदरुद्दीन के अतिरिक्त' कोई और व्य क्ति ऐसी मलाई बना ही नहीं सकता।'

शम्सुद्दीन मुहम्मकद ने कहा, 'अच्छााक ठहरो। मैं बहाने से उस हलवाई को यहाँ बुलवाता हूँ। तुम और तुम्हा्री बहू उसे छुप कर देखें। अगर तुम लोग उसे पहचान लो कि बदरुद्दीन वही है तो हम लोग उसे अपने साथ काहिरा ले चलेंगे। मैंने तो उसे कभी देखा ही नहीं इसीलिए मैं उसे पहचान नहीं सकता, तुम लोग ही उसे पहचानो।' यह कह कर उसने

अपने डेरे में जा कर अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि बदरुद्दीन की दुकान पर जा कर उसका सामान तोड़-फोड़ देना और उसे बाँध कर ले आना, लेकिन खबरदार उसे मारना-पीटना बिल्कु-ल नहीं और न और किसी तरह का दुख देना।

सेवकों को यह आदेश दे कर शम्सुद्दीन स्वरयं बादशाह की सेवा में पहुँचा और उससे कहा कि मेरा दामाद मिल गया है और उसे काहिरा ले जाने की मुझे अनुमति दें। बादशाह ने प्रसन्न तापूर्वक यह अनुमति दे दी। शम्सुद्दीन ने यह भी कहा कि किसी कारणवश मैं अभी असलियत बता नहीं सकता और उसे जोर-जबर्दस्तीह का नाटक करके ले जाना चाहता हूँ, आप अपने कोतवाल और सिपाहियों को आदेश करें कि वे मेरे सिपाहियों की इस मामले में रोक-टोक न करें। बादशाह ने यह भी स्वीदकार कर लिया।

शम्सुद्दीन के सिपाही बदरुद्दीन की दुकान पर गए और उन्होंोने उसके सारे बरतन-भाँडे तोड़ फोड़ डाले और रस्सी के बजाय पगड़ी से उसे बाँध दिया। उसने दुखी हो कर पूछा कि मेरा क्यास अपराध है तो सिपाहियों ने पूछा कि मंत्री के डेरे में भेजी गई मलाई तुम्हींो ने बनाई थी। उसकी स्वीेकारोक्ति पर उन्हों ने बगैर कुछ कहे-सुने उसको दुकान से बाहर घसीट लिया। नगर निवासियों को इससे दुख हुआ। उन्होंपने मंत्री के सिपाहियों को रोकना चाहा और शहर के सिपाहियों से सहायता चाही किंतु कोई लाभ न हुआ। दोनों ओर के सिपाहियों को अपने-अपने हाकिमों के आदेश थे।

शम्सुद्दीन के सामने बदरुद्दीन को लाया गया तो उसने रो कर पूछा कि मालिक, मैंने आपका क्या अपराध किया। शम्सुद्दीन ने कहा कि क्या तुम्हींं ने मेरे सेवक के हाथ मलाई बेची थी? बदरुद्दीन ने कहा कि हाँ। मंत्री बोला, 'तुम्हाकरा यही कसूर है। तुमने ऐसी वाहियात मलाई मेरे लिए भेजी? मैं तुम्हेंह प्राण दंड दूँगा।' बदरुद्दीन ने हैरान हो कर कहा कि खराब बेचने पर फाँसी दी जाती है? मंत्री बोला, हमारे यहाँ यही नियम है।

उधर परदे के पीछे से बदरुद्दीन की माँ और पत्नीा ने उसे देखा तो मूर्छित हो गईं। उन्हों ने चाहा कि जा कर उससे लिपट जाएँ किंतु उनसे शम्सुद्दीन ने पहले ही कह रखा था कि जब तक मैं न कहूँ उसके पास न जाना। दूसरे दिन शम्सुद्दीन सब लोगों को ले कर मिस्र की ओर चला। बदरुद्दीन को उसने एक संदूक में बंद करके एक ऊँट पर लाद लिया। दिन भर उसे संदूक में रख कर चलता और रात को पड़ाव करने पर संदूक से बाहर निकाल देता था। इसी तरह जब चलते-चलते काहिरा के पास पहुँचा तो पड़ाव डाल कर मंत्री ने एक बढ़ई से कहा कि एक आदमी को फाँसी चढ़ाने के लिए एक लकड़ी की टिकटी बनाओ। बदरुद्दीन ने यह देख कर पूछा कि किसे फाँसी पर चढ़ाया जाएगा। मंत्री ने कहा कि कल मैं नगर में प्रवेश करूँगा और तुझे इसी टिकटी से बाँध कर पूरे नगर में फिराऊँगा और तेरे आगे एक आदमी यह मुनादी करता जाएगा कि इस आदमी को इसीलिए फाँसी दी जाएगी कि इसने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली, बदरुद्दीन यह सुन कर विलाप करने लगा कि हे भगवान, मैं सिर्फ इस कसूर पर मारा जाऊँगा कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली।

यह कह कर रानी शहरजाद ने बादशाह शहरयार से कहा कि खलीफा हारूँ रशीद यद्यपि गंभीर प्रकृति का था तथापि अपने मंत्री से इतनी कहानी सुन कर ठट्ठा मार कर कर हँसने लगा। बदरुद्दीन ने कहा, 'हे परमात्मा यह कैसा न्यायमय है। कहीं ऐसा भी होता है कि केवल इतने से अपराध पर कि मलाई में काली मिर्च नहीं पड़ी किसी हलवाई की दुकान लूट ली जाए, उसे बाँध कर लाया जाय और फिर उसे फाँसी दे दी जाए। यह बात तो सरासर इस्ला मी व्य,वस्थाँ के विरुद्ध है। धिक्कायर है मुझ पर कि मैंने मलाई बनाने का धंधा किया कि इस परेशानी में पड़ा। सारे शहर में बदनाम हो कर फाँसी चढ़ने से बड़ी बदनामी की बात क्यां हो सकती है। हे भगवान मैं अभागा पैदा होते ही क्योँ न मर गया। अब भी अच्छा है कि मुझे यूँ ही मौत आ जाए, बदनामी से बचूँगा।'

बदरुद्दीन यही कह कर रोता चिल्लारता रहा किंतु मंत्री ने कुछ ध्या न न दिया। कुछ ही देर में मंत्री के सामने फाँसी की टिकटी पेश की गई जिसके ऊपर लोहे की सलाख लगी हुई थी। बदरुद्दीन ने उसे देखा तो बहुत घबराया और चिल्ला ने लगा, 'मैंने न किसी की चोरी की, न किसी धार्मिक आदेश का उल्लंहघन किया, न किसी की हत्याख की। फिर भी मुझे सिर्फ इतनी-सी बात पर प्राणदंड मिल रहा है कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली।'

मंत्री शम्सिुद्दीन ने उससे कहा कि रोने-चिल्ला ने से कुछ नहीं होगा, कल तो मैं तुझे नगर में ले जा कर फाँसी पर चढ़ाऊँगा ही। यह कह कर उसने बदरुद्दीन को दुबारा संदूक में बंद करवा दिया। सुबह उसने उसे ऊँट पर लदवाया और स्वरयं अपनी सवारी पर बैठ कर समारोहपूर्वक अपनी राजधानी में प्रवेश किया। अपने महल में पहुँच कर उसने आज्ञा दी कि इस संदूक को उतार कर रखो किंतु इसे खोलना नहीं। सारा असबाब घर पर रख दिया गया तो शम्सु द्दीन ने अपनी बेटी को एकांत में ले जा कर उससे कहा, 'भगवान का लाख-लाख धन्यदवाद है कि तुम्हीारा पति तुम्हें मिल गया है। अब तुम अपने कमरे को ठीक वैसे ही सजाओ जैसा वह तुम्हामरे विवाह की रात को सजाया गया था, हर चीज ठीक उसी जगह पर होनी चाहिए जैसे उस समय पर थी।'

मंत्री की पुत्री ने अपने पिता के आदेशानुसार काम किया और कमरे को बिल्कु'ल उसी तरह सजा दिया जैसे कि वह विवाह की रात को सजाया गया था। जहाँ उसे कोई बात भूल गई उसने अपने पिता से पूछ ली। ठीक उसी तरह तख्तस बिछाया गया और सारी मोमबत्तियाँ भी ठीक उसी प्रकार रखी गईं। पूरा कमरा बल्कि आसपास के कमरे भी ठीक वैसे ही दिखने लगे जैसे शादी की रात को दिखते थे। शम्सुद्दीन मुहम्मपद ने स्वायं वहाँ आ कर बदरुद्दीन के कपड़े और रुपयों की थैली ठीक वहीं रखी जहाँ से उसने उठाई थी। फिर उसने अपनी पुत्री से कहा कि तुम उसी रात की तरह सोने के कपड़े पहनो और पति के आने पर इस तरह का भाव प्रकट न करना जैसे उससे बहुत दिनों बाद मिल रही हो, ऐसा बरताव करना जैसे वह कभी तुमसे अलग ही नहीं हुआ था।

कहानी यहाँ तक पहुँची तो सवेरा हो गया और मलिका शहरजाद चुप हो रही। बादशाह को कहानी का अंत सुनने की इतनी उत्कं ठा थी कि अगली रात को उसे ठीक तरह नींद

भी नहीं आई। अगली रात को अंतिम पहर में मलिका शहरजाद ने नियमानुसार कहानी प्रारंभ की।

उसने कहा कि मंत्री शम्सुद्दीन ने आज्ञा दी कि उस भवन में दो या तीन दासियाँ ही रहें। जब एक पहर रात बीती तो मंत्री ने बदरुद्दीन को संदूक में बंद ही बंद उस भवन के समीप भिजवाया। सेवकों ने वहाँ उसे संदूक से निकाला तो वह लगभग अचेत था। उन्होंसने जल्दीा से उसे रात्रिकालीन वस्त्र मिर्जई आदि पहना दिए। फिर उसे मकान के अंदर छोड़ कर उन्हों ने बाहर से दरवाजे में कुंडी लगा दी।

कुछ देर में बदरुद्दीन को हाथ पाँव फैलने से चेत हुआ तो उसने अपने को विवाह के लिए सजे हुए कमरे में पाया। उसे याद आया कि यह उसकी सुहागरात वाला कक्ष है। पासवाले कमरे को देख कर भी उसने पहचाना कि यही उस कुबड़े गुलाम के पास मैं बैठा था। उसका ताज्जुकब और बढ़ा। दो क्षणों के बाद उसने देखा कि उसके विवाह के वस्त्रं और थैली उसी तरह वहाँ रखी है जैसी सुहागरात को रखी थी। इससे आश्चकर्य के मारे उसका सिर चकरा गया। वह सोचने लगा कि समझ में नहीं आता कि मैं जाग रहा हूँ या स्व्प्न देख रहा हूँ।

इतमें ही में उसकी पत्नी ने मसहरी से सिर उठा कर कहा, 'प्रियतम, तुम द्वार पर क्यों खड़े हो। यहाँ पलंग पर आ कर आराम करो। तुम दिन भर कहाँ रहे? आज सुबह मेरी आँख खुली तो मैंने तुम्हें पलंग पर नहीं देखा। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने पर भी तुम न आए तो मैं दिन भर बहुत दुखी रही। खैर अब तुम मेरे पास आओ।'

बदरुद्दीन को यह सुन कर बड़ा हर्ष हुआ। वह आश्चकर्य और उसके बाद पैदा हुए उल्लाभस के कारण यह भी भूल गया कि मंत्री ने उसे कैद किया था और मृत्युच दंड दिया था। उसका चेहरा चमकने लगा और निराशा की काली छाया उसके चेहरे से हट गई। उसने देखा कि उसकी पत्नी अब भी वैसी सुंदर और मनोहारणी है जैसी विवाह की रात को थी।

कमरे के अंदर जा कर उसने प्रत्ये क वस्तुद को फिर अच्छी तरह देखा और उसे मालूम हुआ कि सारी चीजें बिल्कु ल वैसी ही हैं जैसी दस बरस पहले विवाह की रात को थीं। चौकी पर उसके वस्त्रर और द्रव्यब की थैली भी जैसी की तैसी थी। वह उच्चह स्व र में कहने लगा, 'हे भगवान, यह क्या। लीला है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि मैं कहाँ हूँ।' उसकी पत्नी बोली, 'यह क्यान कह रहे हो? क्याह खड़े-खड़े अजीब बातें कर रहे हो।' बदरुद्दीन ने कहा, 'सच बताओ तुम कब से मुझ से अलग हो?' उसने कहा, 'आज सुबह ही तो तुम उठ कर गए थे।'

बदरुद्दीन बोला, 'तुम्हातरी बात मेरी समझ में नहीं आती। मैंने तुम्हा रे साथ सुहागरात बिताई जरूर थी किंतु इस बात को हुए दस बरस हो गए। इस सारे समय मैं दमिश्क में रहा। मेरी अक्लह चक्क र खा रही है कि अपने विवाह का समय कौन-सा मानूँ, वर्तमान

समय या दस बरस पहले का। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा, तुम्हींे बताओ कि मैं दस बरस तुम से अलग रहने को सवप्ने समझूँ या इस समय तुमसे होनेवाली बातचीत को।

उसकी पत्नीे ने कहा, 'तुम कैसी पागलों की सी बातें करते हों। स्पसष्टे बताओ कि यह दमिश्क बीच में कहाँ से आ गया।' बदरुद्दीन ने हँस कर कहा, 'मालूम नहीं मैं पागल था या अब हूँ। दस बरस पहले मैं यही शयनकालीन वस्त्र पहने दमिश्कस की मस्जिद के द्वार पर पड़ा था। वहाँ के निवासी मुझे देख कर हँस रहे थे और मेरा मजाक उड़ा रहे थे। मैं वहाँ से उठ कर भागा और एक हलवाई की दुकान में जा छुपा। उसने मुझे गोद लिया और अपना धंधा सिखाया। जब वह मरा तो सारी संपत्ति मुझे दे गया। मैं दस बरस तक उसी दुकान पर हलवाई का व्य।वसाय करता रहा।

'एक दिन कहीं का मंत्री दमिश्कत में आया। उसका लड़का बड़ा भोला भाला और सुंदर था। उसे देख कर मेरे हृदय में बहुत प्याादर उमड़ा। एक दिन वह अपने नौकर के साथ मेरी दुकान पर आया और वहाँ बैठ कर मलाई खाई। तब वह वापस अपने डेरे में गया तो उसके पिता ने मेरी दुकान से मलाई मँगवाई। इसके बाद मुझे पकड़वा बुलाया और यह कह कर कि तूने बगैर काली मिर्च की मलाई क्योंई बनाई, मेरी दुकान लुटवा दी और मुझे संदूक में बंद ऊँट पर रखवा कर अपने देश को लाया। फिर कल रात उसने फाँसी की टिकटी बनवाई और आज के लिए कहा कि तुझे नगर में घुमाने के बाद फाँसी दी जाएगी। मैं यह सुन कर भय से अचेत हो गया। जब होश आया तो देखा तुम्हा रे पास मौजूद हूँ।'

उसकी पत्नीब यह सुन कर हँसने लगी और मजाक में बोली, 'यह तो नहीं हो सकता कि इतनी-सी बात पर किसी को फाँसी दे दी जाए, तुमने कोई बड़ा अपराध किया होगा।' बदरुद्दीन ने कहा, 'मैं सच कहता हूँ इसके अलावा मेरा कोई अपराध नहीं था कि मलाई में काली मिर्च नहीं पड़ी थी।'

अब यह अजीब-सी बहस चल पड़ी। उसकी पत्नीक हँस-हँस कर कहती जाती थी कि तुमने जरूर कोई बड़ा अपराध किया होगा। और बेचारा बदरुद्दीन बार-बार सफाई दिए जाता था कि मेरा अपराध बगैर काली मिर्च डाले मलाई भेजने के अलावा कुछ नहीं था और इतनी ही बात पर मंत्री ने मुझे फाँसी चढ़ाने के लिए टिकटी बनवा ली जिसके ऊपर मुझे लटकाने के लिए लोहे की मजबूत सलाख लगाई गई थी।

बादशाह शहरयार यहाँ तक कहानी सुन कर हँसने लगा और बहुत देर तक हँसता रहा। उसने कहा, 'मंत्री शम्सुसद्दीन ने अपने दामाद के साथ अच्छा मजाक किया और आश्च र्य यह है कि उसकी भावज ने भी बेटे के इस तरह तंग किए जाने पर कुछ न कहा। खैर कल कहानी पूरी होगी तो आशा है उसका अंत अच्छो होगा।'

दूसरी रात के अंतिम पहर मलिका शहजाद ने कहानी फिर शुरू की। उसने कहा कि रात भर बदरुद्दीन इसी चक्क र में रहा कि मैं अपनी पत्नी के पास वास्त व में हूँ या सपना

देख रहा हूँ। वह बार-बार पलँग से उठता और घूम-घूम कर भवन को देखता। उसे हर चीज वैसी ही दिखाई देती जैसी विवाह की रात को थी। उधर पिछले दस बरसों की घटनाओं की अनदेखी भी वह नहीं कर पाता था। सारी रात उसने उसी उधेड़बुन में काटी।

सुबह हुई तो शम्सु द्दीन ने बेटी के शयन कक्ष के द्वार पर आ कर ताली बजाई। उसकी बेटी ने द्वार खोला तो शम्सुमद्दीन ने अंदर जा कर स्व्यं अपनी ओर से बदरुद्दीन को प्रणाम किया। बदरुद्दीन ने कहा, 'आपने तो मुझे फाँसी देने का प्रबंध किया था। उसके विचार से मैं अब तक काँप रहा हूँ और मेरा अपराध क्यास था, सिर्फ यह कि मैंने मलाई में काली मिर्च नहीं डाली थी।'

मंत्री ने मुस्कसरा कर कहा, 'तुम मेरे भतीजे हो और मैंने अपनी बेटी का विवाह तुम्होरे साथ किया था। बादशाह के हुक्मे से उसका विवाह कुबड़े गुलाम से होनेवाला था।' यह कह कर उसने नूरुद्दीन का लिखा हुआ वृत्तांत उसे दिखाया और कहा, 'तुम्होरी खोज में ही मैं बसरा, दमिश्कन और न जाने कौन-कौन-सी जगह-जगह मारा-मारा फिरता रहा। मैंने तुम पर प्रकट में जो अन्या य किया है उसे भूल जाओ। मैं सिर्फ यह चाहता था कि बगैर झंझट के दमिश्कु से तुम्हें यहाँ लाऊँ, साथ ही यह ख्याजल था कि अगर तुम्हिारी भेंट अचानक तुम्हासरी माँ और पत्नील से हो जाय तो कहीं तुम आनंदातिरेक में मर न जाओ।' यह कह कर उसने दामाद को सीने से लगा लिया।

बदरुद्दीन यह सुन कर अत्यं त प्रसन्नर हुआ। उसने रात के कपड़े उतार कर दिन के कपड़े पहने। फिर उसने अपनी माँ से भेंट की। इस अवसर पर सारे परिवार में आनंद की कैसी लहर आईं उसका वर्णन नहीं हो सकता। उसकी माँ उसे सीने से लगा कर बहुत देर तक रोती रही और बताती रही कि तेरे लापता होने पर यह दस बरस कितने कष्टेंस से काटे। इतने ही में अजब, जिसे उसके नाना ने असलियत बता दी थी, अपने बाप से आ कर लिपट गया। बदरुद्दीन ने कहाअ, 'अरे तूने ही तो मेरे यहाँ मलाई खाई थी।' यह कह कर उसने अपने बेटे को छाती से लगा लिया। शम्सुद्दीन ने दामाद को बादशाह के सामने पेश किया और सारी कहानी सुनाई। बादशाह ने इस वृत्तांत को लिखने का आदेश दिया और बदरुद्दीन को भी सम्माानित किया।

हारूँ रशीद से उसके मंत्री जफर ने यह कहानी सुना कर कहा कि आप भी उदारता दिखाएँ और मेरे गुलाम रैहान का अपराध क्षमा कर दें। हारूँ रशीद ने ऐसा ही किया और उस आदमी को, जिसने भ्रमवश अपनी पत्नीा को मार डाला था, अपनी एक दासी दे दी कि विवाह कर ले और सुखपूर्वक रहे।

यह कहानी पूरी करके मालिक शहरजाद ने कहा, 'स्वाअमी, अब सवेरा हो गया, अगर आज मुझे आज प्राणदान मिले तो मैं और अच्छ्ीन कहानी सुनाऊँ।' बादशाह चुपचाप दरबार को चला गया किंतु कहानी के लालच में उसने शहरजाद के वध का आदेश मुल्त। वी रखा।

काशगर के दरजी और बादशाह के कुबड़े सेवक की कहानी

दूसरी रात को मलिका शहरजाद ने पिछले पहर अपनी बहन दुनियाजाद के कहने से यह कहानी सुनाना आरंभ किया। पुराने जमाने में तातार देश के समीपवर्ती नगर काशगर में एक दरजी था जो अपनी दुकान में बैठ कर कपड़े सीता था। एक दिन वह अपनी दुकान में काम कर रहा था कि एक कुबड़ा एक दफ (बड़ी खंजरी जैसा बाजा) ले कर आया और उसकी दुकान के नीचे बैठ कर गाने लगा। दरजी उसका गाना सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने कुबड़े से कहा, अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो यहाँ से कुछ ही दूर मेरा घर है, वहाँ चलो और आराम से गाओ-बजाओ। कुबड़ा राजी हो गया और दरजी के साथ उसके घर आ गया।

घर पहुँच कर दरजी ने हाथ-मुँह धोया और रूपवती पत्नी से, जिसे वह बहुत प्यार करता था, बोला कि मैं इस आदमी को लाया हूँ ताकि तुम्हें इसका सुंदर गायन सुना पाऊँ। उसने यह भी कहा कि यह मेरे साथ खाना भी खाएगा। पत्नी ने थोड़ी ही देर में स्वादिष्ट भोजन बना कर परोस दिया। फिर वे दोनों भोजन करने लगे और कुबड़े को भी अपने साथ बिठा लिया। दरजी की पत्नी ने मछली बनाई थी और बड़ी स्वादिष्ट बनाई थी। कुबड़ा लालच के मारे काँटा निकाले बगैर ही मछली का एक बड़ा टुकड़ा खा गया। टुकड़े का एक बड़ा काँटा उसके गले में ऐसा चुभा कि वह दर्द के मारे तड़पने लगा। कुछ ही देर में उसकी साँस रुकने लगी। दरजी और उसकी पत्नी ने बहुत कोशिश की कि उसके गले से काँटा निकले किंतु कोई उपाय सफल न हुआ। दरजी बहुत घबराया कि कोतवाल को पता चलेगा तो हत्या के अभियोग में मुझे पकड़ लिया जाएगा।

अतएव वह कुबड़े को अचेतावस्था में उठा कर एक यहूदी हकीम के दरवाजे पर ले गया। उसे नीचे रख कर दरजी ने दरवाजे पर ताली बजाई तो हकीम की नौकरानी ने दरवाजा खोला। दरजी ने उसे पाँच मुद्राएँ दे कर कहा कि वह अपने स्वामी से कहे कि शीघ्र ही आ कर मेरे मित्र का उपचार करें। नौकरानी अपने मालिक को खबर करने ऊपरी मंजिल में गई और दरजी ने फिर कुबड़े को देखा तो समझा कि वह मर गया है। उसने उसे उठाया और हकीम के दरवाजे के सहारे खड़ा कर दिया। इसके बाद वह चुपके से खिसक गया।

हकीम नौकरानी से सारा हाल सुन कर जल्दी से नीचे आया, वह समझे हुए था कि पहली ही बार पाँच मुद्राएँ देनेवाला आदमी जरूर अमीर होगा और इलाज में काफी पैसा खर्च करेगा। उसके हाथ में दीया भी था। उसने ज्यों ही दरवाजा खोला कि कुबड़ा गिर कर सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ गली में आ गिरा। हकीम को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या गिरा है। दीए की रोशनी में देखा तो कुबड़े को मृतक समझ कर बहुत घबराया और सोचने लगा कि यह आदमी मेरे दरवाजे पर मरा पड़ा है। अगर बादशाह को मालूम होगा तो बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊँगा।

अतएव हकीम ने कुबड़े को उठा कर घर में लाने के बाद एक रस्सी में बाँधा और पिछवाड़े रहनेवाले एक मुसलमान के घर के अंदर उसे चुपके से डाल दिया। वह मुसलमान शाही पाक शाला में सामान बेचनेवाला व्यवसायी था, उसके घर में बहुत-सा अनाज, घी आदि रहता था। उस व्यापारी का बहुत-सा सामान चूहे खा जाते थे और उसे नुकसान होता। आधी रात को अपनी जिंस को देखने-भालने वह व्यापारी आया तो कुबड़े को देख कर समझा कि यह चोर है, यही मेरी चीजें चुरा ले जाता है और मैं समझता हूँ कि चूहों ने नुकसान किया है। वह एक लाठी ले आया और कुबड़े के सिर पर मारी। एक लाठी पड़ते ही कुबड़ा जमीन पर लुढ़क गया। व्यापारी ने पास जा कर गौर से देखा तो उसे मालूम हुआ कि वह मर चुका है।

अब व्यापारी बड़ा परेशान हुआ। वह अपने मन में कहने लगा कि यह व्यर्थ ही नर हत्या का पाप मुझे लगा, क्या हर्ज था अगर थोड़ी जिंस का नुकसान होता रहता, और अब चोर को जान से मारने के अपराध में मुझे मृत्युदंड दिया जाएगा। यह सोच कर वह मूर्छित हो गया। थोड़ी देर में होश आने पर वह अपने बचाव का उपाय सोचने लगा। फिर उसने कुबड़े के शरीर को उठाया और अँधेरे में बाजार में ले जा कर एक दुकान के दरवाजे के सहारे खड़ा कर दिया ओर अपने घर में जा कर सो रहा।

कुछ ही देर में एक ईसाई उधर से निकला। यह ईसाई एक वैश्या के घर से निकला था और नशे में झूमता चला आता था। ऐसी ही दशा में उसका शरीर कुबड़े के शरीर से टकराया और कुबड़ा गिर गया। ईसाई ने समझा कि यह चोर है जो मुझे लूटने के इरादे से यहाँ खड़ा था। उसने उसे घूँसों से मारना शुरू किया और साथ ही ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, 'चोर,चोर।' पास ही में सिपाही गश्त लगा रहे थे, वे 'चोर, चोर' की पुकार सुन कर दौड़े आए तो देखा कि एक मुसलमान नीचे पड़ा हुआ है और एक ईसाई उसे मार रहा है।

सिपाहियों ने ईसाई से पूछा कि तुम इसे क्यों पीट रहे हो। उसने कहा कि यह चोर है, यहाँ चुपचाप खड़ा था ताकि अँधेरे में मेरी गर्दन दबा कर मुझे लूट ले। सिपाहियों ने उसे खींच कर अलग किया और कुबड़े को हाथ पकड़ कर उठाया तो देखा कि वह मुर्दा है। अब सिपाहियों ने ईसाई को पकड़ कर कुबड़े के शरीर समेत कोतवाल के सामने पेश किया। उसने सुबह ईसाई और कुबड़े के साथ गश्त के सिपाहियों को भी काजी के सामने पेश किया और रात का हाल बताया।

काजी ने स्वयं फैसला करने के बजाय ईसाई को बादशाह के दरबार में पेश कर दिया और कहा कि ईसाई ने इस मुसलमान को चोर समझ कर इतना मारा कि यह मर गया। बादशाह ने पूछा, इस्लामी न्याय व्यवस्था के अनुसार इस अपराध का क्या दंड होता है। काजी ने कहा कि शरीयत के अनुसार ईसाई को प्राणदंड मिलना चाहिए। बादशाह ने कहा कि फिर शरीयत के अनुसार ही इसे दंड दिया जाए।

चुनाँचे एक बड़े चौराहे पर फाँसी देने की टिकटी खड़ी की गई और सारे शहर में मुनादी करवा दी गई कि एक कुबड़े मुसलमान की जान लेने के अपराध में एक ईसाई को फाँसी दी

जाएगी, जिसे देखना हो वह आ कर देख ले। थोड़ी देर में चौराहे पर भीड़ इकट्ठी हो गई। ईसाई को बाँध कर लाया गया और कुबड़े का शरीर भी वहाँ रख दिया ताकि लोग देख लें कि किसकी हत्या हुई थी।

जल्लाद ईसाई के गले में फाँसी का फंदा डालने ही वाला था कि भीड़ से निकल कर शाही रसद पहुँचानेवाला व्यापारी सामने आया और ऊँचे स्वर में बोला, 'हत्यारा यह ईसाई नहीं है, मैं हूँ। मैं एक हत्या तो कर ही चुका हूँ, एक निरपराध को फाँसी चढ़वा कर अपना पाप क्यों बढ़ाऊँ।' यह कह कर उसने काजी के सामने सारी बात बयान कर दी। काजी ने आदेश दिया कि ईसाई को टिकटी से उतार लिया जाए और व्यापारी को फाँसी दी जाए।

व्यापारी की गर्दन में फंदा डाल कर जल्लाद उसे खींचने ही वाला था कि यहूदी हकीम चीख-पुकार करता हुआ भीड़ से निकला और बोला कि फाँसी इस व्यापारी को नहीं मुझे लगनी चाहिए। मैंने ही झटके से अपना दरवाजा खोला जिससे यह गिर कर मर गया। अब काजी ने कहा कि व्यापारी को भी छोड़ दो और उसकी जगह यहूदी को फाँसी चढ़ाओ।

यहूदी की गर्दन का फंदा जल्लाद खींचने ही वाला था कि दरजी चिल्लाता हुआ आया कि हकीम का कसूर नहीं है, कुबड़े की लाश मैंने ही हकीम के दरवाजे पर रखी थी। काजी के पूछने पर उसने बताया, 'यह आदमी कल रात को मेरे घर मेरे साथ खाना खा रहा था। मछली खाते समय काँटा इसके गले में अटक गया और इसकी दशा खराब हुई तो मैं इसे ले कर हकीम के पास गया। हकीम के आने में देर हुई। इतनी देर में मैंने इसे देखा तो मरा पाया। मैं डर के मारे इसकी लाश हकीम के दरवाजे के सहारे खड़ी करके भाग गया।' काजी ने कहा कि जब हत्या हुई है तो किसी न किसी को फाँसी देनी ही है, इसी दरजी को फाँसी चढ़ा दो।

लेकिन फाँसी न दी जा सकी क्योंकि बादशाह के खास सिपाहियों ने आ कर फाँसी रुकवा दी और सभी को बादशाह के सामने चलने को कहा। हुआ यह था कि कुबड़ा बादशाह का विदूषक था और उसका मनोरंजन किया करता था। उस दिन दरबार में न पहुँचा तो उसने पूछा कि कुबड़ा क्यों नहीं आया। उसके नौकरों ने बताया, 'कल शाम को वह शराब पी कर निकल गया था। आज हमने उस चौराहे पर उसकी लाश देखी और वहीं काजी ने उसकी हत्या के अपराध पर एक ईसाई को फाँसी चढ़ाने को कहा। एक अन्य व्यक्ति ने यह अपराध अपने सिर लिया। उसकी जगह भी फाँसी पाने के लिए एक और व्यक्ति ने कहा। अंत में एक दरजी ने यह जुर्म अपने सिर लिया और अब दरजी को फाँसी दी जानेवाली है।'

बादशाह ने चारों अभियुक्तों को अपने सामने बुलाया। उसकी समझ में किसी को फाँसी नहीं मिलनी चाहिए थी किंतु उसने उन सब का बयान लिया और यह बयान इतिहास पुस्तक में लिखने की आज्ञा दे कर इन लोगों से बोला, 'तुम लोगों की कहानी बड़ी अजीब है। अगर तुम लोग एक-एक कहानी इस से अधिक रुचिकर सुना दोगे तो तुम्हें प्राणदान

दे दिया जाएगा, वरना प्राणदंड दिया जाएगा। सब से पहले ईसाई ने कहा कि मुझे एक अति विचित्र कहानी आती है, अनुमति हो तो उसे सुनाऊँ। बादशाह ने अनुमति दे दी और उसने सुनाना शुरू किया।

किस्सा सिंदबाज जहाजी का

जब शहरजाद ने यह कहानी पूरी की तो शहरयार ने, जिसे सारी कहानियाँ बड़ी रोचक लगी थीं, पूछा कि तुम्हें कोई और कहानी भी आती है। शहरजाद ने कहा कि बहुत कहानियाँ आती हैं। यह कह कर उसने सिंदबाद जहाजी की कहानी शुरू कर दी।

उसने कहा कि इसी खलीफा हारूँ रशीद के शासन काल में एक गरीब मजदूर रहता था जिसका नाम हिंदबाद था। एक दिन जब बहुत गर्मी पड़ रही थी वह एक भारी बोझा उठा कर शहर के एक भाग से दूसरे भाग में जा रहा था। रास्ते में थक कर उसने एक गली में, जिसमें गुलाब जल का छिड़काव किया हुआ था और जहाँ ठंडी हवा आ रही थी, उतारा और एक बड़े-से घर की दीवार के साए में सुस्ताने के लिए बैठ गया। उस घर से इत्र, फुलेल और नाना प्रकार की अन्य सुगंधियाँ आ रही थीं, इसके साथ ही एक ओर से पक्षियों का मनोहर कलरव सुनाई दे रहा था और दूसरी ओर, जहाँ रसोईघर था, नाना प्रकार के व्यंजनों के पकने की सुगंध आ रही थी। उसने सोचा कि यह तो किसी बहुत बड़े आदमी का मकान मालूम होता है, जानना चाहिए कि किस का है।

मकान के दरवाजे से कई सेवक आ जा-रहे थे। मजदूर ने उन में से एक से पूछा कि इस घर का स्वामी कौन है। सेवक ने कहा, बड़े आश्चर्य की बात है तू बगदाद का निवासी है और इस घर के परम प्रसिद्ध मालिक को नहीं जानता। यह घर सिंदबाद जहाजी का है जो लाखों बल्कि करोड़ों की संपत्ति का मालिक है।

हिंदबाद ने यह सुनकर आकाश की ओर हाथ उठाए और कहा, 'हे संसार को उत्पन्न करने वाले और पालने वाले भगवान, यह क्या अन्याय है। एक यह सिंदबाद है जो रात-दिन ऐश करता है, एक मैं हूँ हिंदबाद जो रात-दिन जानतोड़ परिश्रम करके किसी प्रकार अपने स्त्री-बच्चों का पेट पालता हूँ। यह और मैं दोनों मनुष्य हैं। क्या अंतर है?' यह कह कर उसने जैसे भगवान पर अपना रोष प्रकट करने के लिए पृथ्वी पर पाँव पटका और सिर हिलाकर निराशापूर्वक अपने दुर्भाग्य पर दुख करने लगा।

इतने में उस विशाल भवन से एक सेवक निकला और उसकी बाँह पकड़कर बोला, 'चल अंदर, हमारे मालिक सिंदबाद ने तुझे बुलाया है।' हिंदबाद यह सुनकर बहुत डरा। उसने सोचा कि मैंने जो कहा वह सिंदबाद ने सुन लिया है और क्रुद्ध होकर मुझे बुला भेजा है ताकि मुझे इस गुस्ताखी के लिए सजा दे। वह घबराकर कहने लगा कि मैं अंदर नहीं जाऊँगा, मेरा बोझा यहाँ पड़ा है, उसे कोई उठा ले जाएगा। किंतु सेवकों ने उसे न छोड़ा। उन्होंने कहा कि तेरे बोझे को हम सुरक्षापूर्वक अंदर रख देंगे और तुझे भी कोई नुकसान नहीं होगा। हिंदबाद ने बहुत देर तक सेवकों से वाद-विवाद किया किंतु उसका कोई फल न निकला और अंततः उसे उनके साथ महल के अंदर जाना ही पड़ा।

सेवक हिंदबाद को कई आँगनों से होता हुआ एक बड़ी दालान में ले गया जहाँ बहुत- से

लोग भोजन करने के लिए बैठे थे। नाना प्रकार के व्यंजन वहाँ रखे थे और इन सब के बीच में एक शानदार अमीर आदमी, जिसकी सफेद दाढ़ी छाती तक लटकी थी, बैठा था। उस के पीछे सेवकों का पूरा समूह हाथ बाँधे खड़ा था। हिंदबाद यह ऐश्वर्य देखकर घबरा गया। उसने झुककर अमीर को सलाम किया। सिंदबाद ने उसके फटे और मैले कपड़ों पर ध्यान न दिया और प्रसन्नतापूर्वक उसके सलाम का जवाब दिया और अपनी दाहिनी ओर बिठाकर उसे सामने अपने हाथ से उठाकर स्वादिष्ट खाद्य और मदिरा पात्र रखा। जब सिंदबाद ने देखा कि सभी उपस्थित जन भोजन कर चुके हैं तो उसने हिंदबाद की ओर फिर ध्यान दिया।

बगदाद में जब किसी का सम्मानपूर्वक उद्बोधन करना होता था तो उसे अरबी कहते थे। सिंदबाद ने हिंदबाद से कहा, 'अरबी, तुम्हारा नाम क्या है। मैं और यहाँ उपस्थित अन्य जन तुम्हारी यहाँ पर उपस्थिति से अति प्रसन्न हैं। अब मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे मुँह से फिर वे बातें सुनूँ जो तुमने गली में बैठे हुए कहीं थीं।' सिंदबाद जहाँ बैठा था वह भाग गली से लगा हुआ था और खुली खिड़की से उसने वह सब कुछ सुन लिया था जो हिंदबाद ने रोष की दशा में कहा था।

हिंदबाद ने लज्जा से सिर नीचा कर लिया और कहा, 'सरकार, उस समय मैं थकन और गरमी के कारण आपे में नहीं था। मेरे मुँह से ऐसी दशा मे कुछ अनुचित बातें निकल गई थीं। इस सभा में उन्हें दुहराने की गुस्ताखी मैं नहीं करना चाहता। आप कृपया मेरी उस उद्दंडता को क्षमा कर दें।'

सिंदबाद ने कहा, 'भाई, मैं कोई अत्याचारी नहीं हूँ जो किसी की कुछ बातों के कारण ही उस की हानि करूँ। मुझे तुम्हारी बातों पर क्रोध नहीं बल्कि दया ही आई थी और तुम्हारी दशा देखकर और भी दुख हुआ। लेकिन मेरे भाई, तुमने गली में बैठकर जो कहा उस से तुम्हारा अज्ञान ही प्रकट होता है। तुम समझते हो कि यह धन-दौलत और यह ऐश-आराम मुझे बगैर कुछ किए-धरे ही मिल गया है। ऐसी बात नहीं है। मैंने संसार में जितनी विपत्तियाँ पड़ सकती हैं लगभग सभी झेली हैं। इसके बाद ही भगवान ने मुझे आराम की यह सामग्री दी है।'

यह कहकर सिंदबाद ने दूसरे मेहमानों से कहा, 'मुझ पर विगत वर्षों में बड़ी-बड़ी मुसीबतें आईं और बड़े विचित्र अनुभव हुए। मेरी कहानी सुनकर आप लोगों को घोर आश्चर्य होगा। मैंने धन प्राप्त करने के निमित्त सात बार बड़ी-बड़ी यात्राएँ कीं और बड़े दुख और कष्ट उठाए। आप लोग चाहें तो मैं वह सब हाल सुनाऊँ।' मेहमानों ने कहा कि जरूर सुनाइए। सिंदबाद ने अपने सेवकों से कहा कि वह बोझा, जो हिंदबाद बाजार से अपने घर लिए जा रहा था, उसके घर पहुँचा दें। उन्होंने ऐसा ही किया। अब सिंदबाद ने अपनी पहली यात्रा का वृत्तांत कहना आरंभ किया।

सिंदबाद जहाजी की पहली यात्रा

सिंदबाद ने कहा कि मैंने अच्छी-खासी पैतृक संपत्ति पाई थी किंतु मैंने नौजवानी की मूर्खताओं के वश में पड़कर उसे भोग-विलास में उड़ा डाला। मेरे पिता जब जीवित थे तो कहते थे कि निर्धनता की अपेक्षा मृत्यु श्रेयस्कर है। सभी बुद्धिमानों ने ऐसा कहा है। मैं इस बात को बार-बार सोचता और मन ही मन अपनी दुर्दशा पर रोता। अंत में जब निर्धनता मेरी सहन शक्ति के बाहर हो गई तो मैंने अपना बचा-खुचा सामान बेच डाला और जो पैसा मिला उसे लेकर समुद्री व्यापारियों के पास गया और कहा कि अब मैं भी व्यापार के लिए निकलना चाहता हूँ। उन्होंने मुझे व्यापार के बारे में बड़ी अच्छी सलाह दी। उसके अनुसार मैंने व्यापार की वस्तुएँ मोल लीं और उन्हें लेकर उनमें से एक व्यापारी के जहाज पर किराया देकर सामान लादा और खुद सवार हो गया। जहाज अपनी व्यापार यात्रा पर चल पड़ा।

जहाज फारस की खाड़ी में से होकर फारस देश में पहुँचा जो अरब के बाईं ओर बसा है और हिंदुस्तान के पश्चिम की ओर। फारस की खाड़ी लंबाई में ढाई हजार मील और चौड़ाई में सत्तर मील थी। मुझे समुद्री यात्रा का अभ्यास नहीं था इसलिए कई दिनों तक मैं समुद्री बीमारी से ग्रस्त रहा। फिर अच्छा हो गया। रास्ते में हमें कई टापू मिले जहाँ हम लोगों ने माल खरीदा और बेचा। एक दिन हमारा जहाज पाल उड़ाए हुए जा रहा था। तभी हमारे सामने एक हरा-भरा सुंदर द्वीप दिखाई दिया। कप्तान ने जहाज के पाल उतरवा लिए और लंगर डाल दिए और कहा कि जिन लोगों का जी चाहे वे इस द्वीप की सैर कर आएँ। मैं और कई अन्य व्यापारी, जो जहाज पर बैठे-बैठे ऊब गए थे, खाने का सामान लेकर उस द्वीप पर नाव द्वारा चले गए। किंतु वह द्वीप उस समय हिलने लगा जब हमने खाना पकाने के लिए आग जलाई। यह देखकर व्यापारी चिल्लाने लगे कि भाग कर जहाज पर चलो, यह टापू नहीं, एक बड़ी मछली की पीठ है। सब लोग कूद-कूद कर जहाज की छोटी नाव पर बैठ गए। मैं अकुशलता के कारण ऐसा न कर सका। नाव जहाज की ओर चल पड़ी। इधर मछली ने, जो हमारे आग जलाने से जाग गई थी, पानी में गोता लगाया। मैं समुद्र में बहने लगा। मेरे हाथ में सिर्फ एक लकड़ी थी जिसे मैं जलाने के लिए लाया था। उसी के सहारे समुद्र में तैरने लगा। मैं जहाज तक पहुँच पाऊँ इससे पहले ही जहाज लंगर उठा कर चल दिया।

मैं पूरे एक दिन और एक रात उस अथाह जल में तैरता रहा। थकन ने मेरी सारी शक्ति हर ली और मैं तैरने के लिए हाथ-पाँव चलाने के योग्य भी न रहा। मैं डूबने ही वाला था कि एक बड़ी समुद्री लहर ने मुझे उछाल कर किनारे पर फेंक दिया। किंतु किनारा समतल नहीं था। बल्कि खड़े ढलवान का था। मैं किसी प्रकार मरता-गिरता वृक्षों की जड़ें पकड़ता हुआ ऊपर पहुँचा और मुर्दे की भाँति जमीन पर गिर रहा।

जब सूर्योदय हुआ तो मेरा भूख से बुरा हाल हो गया। पैरों से चलने की शक्ति नहीं थी इसलिए घुटनों के बल घिसटता हुआ चला। सौभाग्य से कुछ ही दूर पर मुझे मीठे पानी

का एक सोता मिला जिसका पानी पीकर मुझमें जान आई। मैंने तलाश करके कुछ मीठे फल और खाने लायक पत्तियाँ भी पा लीं और उनसे पेट भर लिया। फिर मैं द्वीप में इधर-उधर घूमने लगा। मैंने एक घोड़ी चरती देखी। बहुत सुंदर थी किंतु पास जाकर देखा तो पाया कि खूँटे से बँधी थी। फिर पृथ्वी के नीचे से मुझे कुछ मनुष्यों के बोलने की आवाज आई और कुछ देर में एक आदमी जमीन से निकल कर मेरे पास आकर पूछने लगा कि तुम कौन हो, क्या करने आए हो। मैं ने उसे अपना हाल बताया तो वह मुझे पकड़कर तहखाने में ले गया।

वहाँ कई मनुष्य और थे। उन्होंने मुझे खाने को दिया। मैंने उनसे पूछा कि तुम लोग इस निर्जन द्वीप में तहखाने में बैठे क्या कर रहे हो। उन्होंने बताया, हम लोग बादशाह के साईस हैं। इस द्वीप के स्वामी बादशाह वर्ष भर में एक बार यहाँ अपनी अच्छी घोड़ियाँ भेजते हैं ताकि उन्हें दरियाई घोड़ों से गाभिन कराया जाए। इस तरह जो बछेड़े पैदा होते हैं वे राजघराने के लोगों की सवारी के काम आते हैं। हम घोड़ियों को यहाँ बाँध देते हैं और छुपकर बैठ जाते हैं। दरियाई घोड़े की आदत होती है कि वह संभोग के बाद घोड़ी को मार डालता है। जब वह घोड़ा संभोग के बाद हमारी घोड़ी को मारना चाहता है तो हम लोग तहखाने से बाहर निकलकर चिल्लाते हुए उसकी ओर दौड़ते हैं। घोड़ा हमारा शब्द सुनकर भाग जाता है और समुद्र में डुबकी लगा लेता है। कल हम लोग अपनी राजधानी को वापस होंगे।

मैंने उनसे कहा कि मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा क्योंकि इस द्वीप से तो किसी तरह खुद अपने देश को जा नहीं सकता। हम लोग बातचीत कर ही रहे थे कि दरियाई घोड़ा समुद्र से निकला और घोड़ी से संभोग करके वह उसे मार ही डालना चाहता था कि साईस लोग चिल्लाते हुए दौड़े और घोड़ा भाग कर समुद्र में जा छुपा। दूसरे दिन वे सारी घोड़ियों को इकट्ठा करके राजधानी में आए। मैं भी उनके साथ चला गया। उन्होंने मुझे अपने बादशाह के सामने पेश किया। उसके पूछने पर मैंने अपना सारा हाल कहा। उसे मुझ पर बड़ी दया आई। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इस आदमी को आराम से रखो। अतएव मैं सुख- सुविधापूर्वक रहने लगा।

मैं वहाँ व्यापारियों और बाहर से आने वाले लोगों से मिलता रहता था ताकि कोई ऐसा मनुष्य मिले जिसकी सहायता से मैं बगदाद पहुँचूँ। वह नगर काफी बड़ा और सुंदर था और प्रतिदिन कई देशों के जहाज उसके बंदरगाह पर लंगर डालते थे। हिंदुस्तान तथा अन्य कई देशों के लोग मुझसे मिलते रहते और मेरे देश की रीति-रस्मों के बारे में पूछते रहते और मैं उन से उनके देश की बातें पूछता।

बादशाह के राज्य में एक सील नाम का द्वीप था। उसके बारे में सुना था कि वहाँ से रात-दिन ढोल बजने की ध्वनि आया करती है। जहाजियों ने मुझे यह भी बताया कि वहाँ के मुसलमानों का विश्वास है कि सृष्टि के अंतकाल में एक अधार्मिक और झूठा आदमी पैदा होगा जो यह दावा करेगा कि मैं ही ईश्वर हूँ। वह काना होगा और गधा उसकी सवारी होगी। मैं एक बार वह द्वीप देखने भी गया। रास्ते में समुद्र में मैंने विशालकाय मछलियाँ

देखीं। वे सौ-सौ हाथ लंबी थीं बल्कि उनमें से कुछ तो दो-दो सौ हाथ लंबी थीं। उन्हें देखकर डर लगता था। किंतु वे स्वयं इतनी डरपोक थीं कि तख्ते पर आवाज करने से ही भाग जाती थीं। एक और तरह की मछली भी मैंने देखी। उसकी लंबाई एक हाथ से अधिक न थी किंतु उसका मुँह उल्लू का-सा था। मैं इसी प्रकार बहुत समय तक सैर-सपाटा करता रहा।

एक दिन मैं उस नगर के बंदरगाह पर खड़ा था। वहाँ एक जहाज ने लंगर डाला और उसमें कई व्यापारी व्यापार वस्तुओं की गठरियाँ लेकर उतरे। गठरियाँ जहाज के ऊपरी तख्ते पर जमा थीं और तट से साफ दिखाई देती थीं। अचानक एक गठरी पर मेरी नजर पड़ी जिस पर मेरा नाम लिखा था। मैं पहचान गया कि यह वही गठरी है जिसे मैंने बसरा में जहाज पर लादा था। मैं जहाज के कप्तान के पास गया। उसने समझ लिया था कि मैं डूब चुका हूँ। वैसे भी इतने दिनों की मुसीबतों और चिंता के कारण मेरी सूरत बदल गई थी इसलिए वह मुझे पहचान न सका।

मैं ने उससे पूछा कि यह लावारिस-सी लगने वाली गठरी कैसी है। उसने कहा, हमारे जहाज पर बगदाद का एक व्यापारी सिंदबाद था। हम एक रोज समुद्र के बीच में थे कि एक छोटा-सा टापू दिखाई दिया और कुछ व्यापारी उस पर उतर गए। वास्तव में वह टापू न था बल्कि एक बहुत बड़ी मछली की पीठ थी जो सागर तल पर आकर सो गई थी। जब व्यापारियों ने खाना बनाने के लिए उस पर आग जलाई तो पहले तो वह हिली फिर समुद्र में गोता लगा गई। सारे व्यापारी नाव पर या तैरकर जहाज पर आ गए किंतु बेचारा सिंदबाद वहीं डूब गया। ये गठरियाँ उसकी ही हैं। अब मैंने इरादा किया है इस गठरी का माल बेच दूँ और इसका जो दाम मिले उसे बगदाद में सिंदबाद के परिवार वालों के पास पहुँचा दूँ।

मैंने उससे कहा कि जिस सिंदबाद को तुम मरा समझ रहे हो वह मैं ही हूँ और यह गठरी तथा इसके साथ की गठरियाँ मेरी ही हैं। उसने कहा, 'अच्छे रहे, मेरे आदमी का माल हथियाने के लिए खुद सिंदबाद बन गए। वैसे तो शक्ल-सूरत से भोले लगते हो मगर यह क्या सूझी है कि इतना बड़ा छल करने को तैयार हो गए। मैंने स्वयं सिंदबाद को डूबते देखा है। इसके अतिरिक्त कई व्यापारी भी साक्षी हैं कि वह डूब गया है। मैं तुम्हारी बात पर कैसे विश्वास करूँ।

मैंने कहा, भाई कुछ सोच-समझ कर बात करो। तुमने मेरा हाल तो सुना ही नहीं और मुझे झूठा बना दिया। उसने कहा, अच्छा बताओ अपना हाल। मैंने सारा हाल बताया कि किस प्रकार लकड़ी के सहारे तैरता रहा और चौबीस घंटे समुद्र में तैरने के बाद निर्जन द्वीप में पहुँचा और किस तरह से बादशाह के साईसों ने मुझे वहाँ से लाकर बादशाह के सामने पेश किया।

कप्तान को पहले तो मेरी कहानी पर विश्वास न हुआ। फिर उसने ध्यानपूर्वक मुझे देखा

और अन्य व्यापारियों को भी मुझे दिखाया। सभी ने कुछ देर में मुझे पहचान लिया और कहा कि वास्तव में यह सिंदबाद ही है। सब लोग मुझ नया जीवन पाने पर बधाई और भगवान को धन्यवाद देने लगे।

कप्तान ने मुझे गले लगाकर कहा, ईश्वर की बड़ी दया है कि तुम बच गए। अब तुम अपना माल सँभालो और इसे जिस प्रकार चाहो बेचो। मैंने कप्तान की ईमानदारी की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि मेरे माल में से थोड़ा-सा तुम भी ले लो। किंतु उसने कुछ भी नहीं लिया, सारा माल मुझे दे दिया।

मैं ने अपने सामान में से कुछ सुंदर और बहुमूल्य वस्तुएँ बादशाह को भेंट कीं। उसने पूछा, तुझे यह मूल्यवान वस्तुएँ कहाँ से मिलीं? मैंने उसे पूरा हाल सुनाया। वह यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने मेरी भेंट सहर्ष स्वीकार कर ली और उसके बदले में उनसे कहीं अधिक मूल्यवान वस्तुएँ मुझे दे दीं। मैं उससे विदा होकर फिर जहाज पर आया और अपना माल बेचकर उस देश की पैदावार यथा चंदन, आबनूस, कपूर, जायफल, लौंग, काली मिर्च आदि ली और फिर जहाज पर सवार हो गया। कई देशों और टापुओं से होता हुआ हमारा जहाज बसरा के बंदरगाह पर पहुँचा। वहाँ से स्थल मार्ग से बगदाद आया। इस व्यापार में मुझे एक लाख दीनार का लाभ हुआ। मैं अपने परिवार वालों और बंधु-बांधवों से मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ। मैं ने एक विशाल भवन बनवाया और कई दास और दासियाँ खरीदीं और आनंद से रहने लगा। कुछ ही दिनों में मैं अपनी यात्रा के कष्टों को भूल गया।

सिंदबाद ने अपनी कहानी पूरी करके गाने-बजाने वालों से, जो उसके यात्रा वर्णन के समय चुप हो गए थे, दुबारा गाना-बजाना शुरू करने को कहा। इन्हीं बातों में रात हो गई। सिंदबाद ने चार सौ दीनारों की एक थैली मँगाकर हिंदबाद को दी और कहा कि अब तुम अपने घर जाओ, कल फिर इसी समय आना तो मैं तुम्हें अपनी यात्राओं की और कहानियाँ सुनाऊँगा। हिंदबाद ने इतना धन पहले कभी देखा न था। उसने सिंदबाद को बहुत धन्यवाद दिया। उसके आदेश के अनुसार हिंदबाद दूसरे अच्छे और नए वस्त्र पहन कर उसके घर आया। सिंदबाद उसे देखकर प्रसन्न हुआ और उसने मुस्कराकर हिंदबाद से उसकी कुशल-क्षेम पूछी।

कुछ देर में सिंदबाद के अन्य मित्र भी आ गए और नित्य के नियम के अनुसार स्वादिष्ट व्यंजन सामने लाए गए। जब सब लोग खा-पीकर तृप्त हो चुके तो सिंदबाद ने कहा, दोस्तो, अब मैं तुम लोगों को अपनी दूसरी सागर यात्रा की कहानी सुनाता हूँ, यह पहली यात्रा से कम विचित्र नहीं है। सब लोग ध्यान से सुनने लगे और सिंदबाद ने कहना शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की दूसरी यात्रा

मित्रो, पहली यात्रा में मुझ पर जो विपत्तियाँ पड़ी थीं उनके कारण मैंने निश्चय कर लिया था कि अब व्यापार यात्रा न करूँगा और अपने नगर में सुख से रहूँगा। किंतु निष्क्रियता मुझे खलने लगी, यहाँ तक कि मैं बेचैन हो गया और फिर इरादा किया कि नई यात्रा करूँ और नए देशों और नदियों, पहाड़ों आदि को देखूँ। अतएव मैंने भाँति-भाँति की व्यापारिक वस्तुएँ मोल लीं और अपने विश्वास के व्यापारियों के साथ व्यापार यात्रा का कार्यक्रम बनाया। हम लोग एक जहाज पर सवार हुए और भगवान का नाम लेकर कप्तान ने जहाज का लंगर उठा लिया और जहाज पर चल पड़ा।

हम लोग कई देशों और द्वीपों में गए और हर जगह क्रय-विक्रय किया। फिर एक दिन हमारा जहाज एक हरे-भरे द्वीप के तट से आ लगा। उस द्वीप में सुंदर और मीठे फलों के बहुत से वृक्ष थे। हम लोग उस द्वीप पर सैर के लिए उतर गए। किंतु वह द्वीप बिल्कुल उजाड़ था यानी वहाँ किसी मनुष्य का नामोनिशान भी नहीं था, बल्कि कोई पक्षी भी दिखाई नहीं देता था। मेरे साथी पेड़ों से फल तोड़ने लगे लेकिन मैंने एक सोते के किनारे बैठ कर खाना निकाला और खाया और उसके साथ शराब पी। शराब कुछ अधिक हो गई और मैं सो गया तो बहुत समय तक सोता ही रहा। जब आँख खुली तो देखा कि मेरा कोई साथी वहाँ नहीं है और हमारा जहाज भी पाल उड़ाता हुआ समुद्र में आगे जा रहा है। कुछ ही क्षणों में जहाज मेरी आँखों से ओझल हो गया।

मैंने यह देखा तो हतप्रभ रह गया। मुझे उस समय जो दुख और संताप हुआ उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुझे विश्वास हो गया कि इसी उजाड़ द्वीप में मैं मर जाऊँगा और मेरी खबर लेने वाला भी कोई न रहेगा। मैं चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगा और सिर और छाती पीटने लगा। मैं अपने को बार-बार धिक्कारता कि कमबख्त तुझ पर पहली यात्रा ही में क्या कम विपत्तियाँ पड़ी थीं कि दुबारा यह मुसीबत मोल ले ली। लेकिन कब तक रोता-पीटता। अंत में भगवान का नाम लेकर उठा और इधर-उधर घूमने लगा कि कोई राह मिले तो जाऊँ। कोई रास्ता न दिखाई दिया तो मैं एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया कि शायद इधर-उधर कोई ऐसी जगह मिले जहाँ रात काटूँ। किंतु द्वीप के पेड़ों, समुद्र के जल और आकाश के अतिरिक्त कुछ न देख सका।

कुछ देर बाद टापू पर मुझे दूर पर एक सफेद चीज दिखाई दी। मैंने सोचा कि शायद वहीं ठिकाना मिले यद्यपि समझ में नहीं आता था कि वह क्या है। मैं पेड़ से उतरा और अपना बचा-खुचा खाना लेकर उस सफेद चीज के पास पहुँचा। वह एक बड़े गुंबद-सा था लेकिन उसका कोई दरवाजा न था। वह चिकनी चीज थी जिस पर चढ़ा भी नहीं जा सकता था। उसके चारों ओर घूमने में पचास कदम होते थे।

अचानक मैंने देखा कि अँधेरा हो गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह शाम का समय तो है नहीं, अँधेरा कैसे हो गया। फिर मैंने देखा कि एक विशालकाय पक्षी जो मेरे अनुमान में भी

पहले नहीं आ सकता था मेरी तरफ उड़ा आता है। मैं उसे देखकर भयभीत हुआ। फिर मुझे कुछ जहाजियों के मुँह से सुनी बात याद आई कि रुख नामी एक बहुत ही बड़ा पक्षी होता है। अब मैंने जाना कि वह सफेद विशालकाय वस्तु इसी मादा रुख का अंडा है। मादा रुख आकर अपने अंडे पर उसे सेने के लिए बैठ गई। उसका एक पाँव मेरे समीप पड़ गया। उसका एक-एक नाखून एक बड़े वृक्ष की जड़ जैसा था। मैंने अपनी पगड़ी से अपना शरीर उसके एक नाखून से कसकर बाँध लिया क्योंकि मुझे आशा थी कि यह पक्षी कहीं उड़कर जाएगा ही।

सवेरे वह पक्षी उड़ा और इतना ऊँचा हो गया कि जहाँ से पृथ्वी बड़ी कठिनता से दिखाई देती थी। कुछ ही देर में वह उतर कर एक बड़े जंगल में जा पहुँचा। मैंने जमीन से लगते ही अपनी पगड़ी की गाँठ खोलकर उससे अलग हो गया। उसी समय रुख ने एक बहुत ही बड़े अजगर को धर दबोचा और उसे पंजों में लेकर फिर उड़ गया।

जहाँ मुझे रुख ने छोड़ा था वह एक बहुत नीची और खड़ी ढलान की एक घाटी थी। वहाँ पर आने जाने की शक्ति किसी मनुष्य में नहीं हो सकती। मुझे खेद हुआ कि मैं कहाँ आ गया, यह जगह उस द्वीप से भी खराब है। मैंने देखा कि वहाँ की भूमि पर असंख्य हीरे बिखरे पड़े हैं। उनमें से कुछ तो इतने बड़े थे जो साधारण मनुष्य के अनुमान के बाहर थे। मैंने बहुत से हीरे इकट्ठे किए और एक चमड़े की थैली में उन्हें भर लिया। किंतु हीरों के मिलने की प्रसन्नता क्षणिक ही थी क्योंकि मैंने शाम होते ही यह भी देखा कि वहाँ बहुत-से अजगर तथा अन्य विशालकाय और भयानक साँप घूम रहे हैं। यह साँप दिन में रुख के डर से खोहों में छुपे रहते थे और रात को निकलते थे। मैंने भाग्यवश एक छोटी-सी गुफा पा ली और उसमें छुपकर बैठ गया और उसका मुँह पत्थरों से अच्छी तरह बंद कर दिया ताकि कोई अजगर अंदर न आ सके। मैंने अपने पास बँधे भोजन में से कुछ खाया किंतु मुझे रात भर नींद नहीं आई क्योकि साँपों और अजगरों की भयानक फुसकारें मुझे डराती रहीं और मैं रात भर जान के डर से काँपता रहा।

सुबह होने पर साँप फिर छुप गए और मैं बाहर निकल कर एक खुली जगह में सो गया। कुछ ही देर में मेरे पास एक भारी-सी चीज गिरी। आवाज से मेरी आँख खुल गई। मैंने देखा कि वह एक विशाल मांस पिंड था। कुछ ही देर में देखा कि इसी तरह के अन्य मांस पिंड घाटी में चारों ओर से गिरने लगे। मुझे यह सब देखकर घोर आश्चर्य हुआ।

कुछ ही देर में मुझे जहाजियों के मुँह से सुनी एक बात याद आई कि एक घाटी में असंख्य हीरे हैं। किंतु वहाँ कोई जा नहीं सकता। हीरों के व्यापारी आस-पास के पहाड़ों पर चढ़कर वहाँ बड़े-बड़े मांस पिंड फेंक देते हैं जिनमें हीरे चिपक जाते हैं। इसके बाद विशालकाय गिद्ध आकर उन मांस पिंडों को ले जाते हैं। जब वे ऊपर बने अपने घोंसलों में जाते हैं तो व्यापारी लोग बड़ा शोरगुल करके उन्हें उड़ा देते हैं और मांस पिंडों में चिपके हुए हीरे ले लेते हैं।

मैं पहले परेशान था कि इस कब्र जैसी घाटी से कैसे निकलूँगा क्योंकि पिछले दिन बहुत

घूमने-फिरने पर भी निकलने की कोई राह नहीं दिखाई दी थी। किंतु उन मांस पिंडों को देख कर मुझे बाहर निकलने की कुछ आशा बँधी। मैंने पुराने उपाय से काम लिया। मैंने अपने को एक मांस पिंड के नीचे की ओर बाँध लिया। कुछ ही देर में एक विशाल गिद्ध उतरा और मांस पिंड को और उसके साथ मुझे लेकर उड़ गया। मैंने वह चमड़े की थैली भी मजबूती से अपनी कमर में बाँध ली जिसमें पहले मेरा भोजन था। और जिसमें बाद में मैंने हीरे भर लिए थे। गिद्ध ने मुझे पहाड़ की चोटी पर बने अपने घोंसले में पहुँचा दिया। मैंने तुरंत स्वयं को मांस खंड से अलग कर लिया।

उसी समय बहुत-से व्यापारी शोरगुल करते हुए आए और बड़ा गिद्ध डरकर भाग गया। उन व्यापारियों में से एक की दृष्टि मुझ पर पड़ी। वह मुझे देख कर मुझ पर क्रोध करने लगा कि तू यहाँ क्यों आया। उसने समझा कि मैं हीरे चुराने के लिए गिद्ध के घोंसले में चला आया था। अन्य व्यापारियों ने भी मुझे घेर लिया। मैंने कहा कि भाइयो, आप लोग मेरी कहानी सुनेंगे तो मुझ पर क्रोध करने के बजाय मुझ पर दया ही करेंगे, मेरे पास बहुत-से हीरे इस थैली में हैं, वे सारे हीरे मैं आप लोगों को दे दूँगा। यह कहकर मैंने अपनी सारी कहानी उन लोगों को सुनाई और उन सभों को मेरी विचित्र कथा और संकटों से बचकर निकलने पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

व्यापारियों का नियम था कि एक-एक गिद्ध के घोंसले को एक-एक व्यापारी चुन लेता था। वहाँ से मिले हीरों पर उसके सिवा किसी का अधिकार नहीं होता था। इसीलिए वह व्यापारी, जिसके हिस्से में वह घोंसला था, मुझ पर क्रोध कर रहा था। मैंने अपनी थैली उलट दी। सब लोगों की आँखें आश्चर्य से फट गईं क्योंकि मैंने कई बहुत बड़े-बड़े हीरे भी भर लिए थे। मैंने उस व्यापारी से, जिसके हिस्से में वह घोंसला था, कहा कि आप यह सारे हीरे ले लीजिए। उसने कहा कि यह हीरे तुम्हारे हैं, मैं इनमें से कुछ न लूँगा। किंतु जब मैंने बहुत जोर दिया तो उसने एक बड़ा हीरा और दो-चार छोटे हीरे ले लिए और कहा कि इतना धन मुझे सारी जिंदगी आराम से रहने को काफी है और मुझे दोबारा यहाँ आने और हीरे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

रात मैंने उन्हीं व्यापारियों के साथ गुजारी। उन्होंने मुझसे विस्तार से मेरी कहानी जाननी चाही और मैंने सारे अनुभवों का उनसे वर्णन किया। मुझे अपने सौभाग्य पर स्वयं जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। दूसरे दिन उन्हीं व्यापारियों के साथ रुहा नामी द्वीप में पहुँचा। यहाँ पर भी बड़े-बड़े साँप भरे पड़े थे। हम लोगों का भाग्य अच्छा था कि उन साँपों से हमें कोई क्षति नहीं हुई।

रुहा द्वीप में कपूर के बहुत बड़े पेड़ थे। कपूर के पेड़ की टहनियों को छुरी से चीरकर नीचे एक बर्तन रख देते हैं। पेड़ का रस निकलकर बर्तन में जमा हो जाता है और जमकर यही कपूर कहलाता है। पूरा रस निकल जाने पर वह टहनी मुरझा कर सूख जाती है। कपूर का पेड़ इतना बड़ा होता है कि उसकी छाया में सौ आदमी बैठ सकते हैं। उस द्वीप में एक पशु होता है जिसे गेंडा कहते है। वह भैंसे से बड़ा और हाथी से छोटा होता हैं। उसकी नाक पर एक लंबी सींग होती है। उस सींग पर सफेद रंग के आदमी की तस्वीर बनी होती है। कहा

जाता है कि गेंडा हाथी के पेट में सींग घुसेड़ कर उसे मार डालता है और अपने सिर पर उठा लेता है। किंतु हाथी का खून और चरबी जब उसकी आँखों में पड़ती है तो वह अंधा हो जाता है। ऐसी दशा में रुख पक्षी आता है और गेंडे और हाथी दोनों को पंजों में दबाकर उड़ जाता है और अपने घोंसले में जाकर अपने बच्चों को उनका मांस खिलाता है।

उस द्वीप से होता हुआ मैं और बहुत-से द्वीपों में गया और अपने हीरों के बदले वहाँ की बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदीं। इस प्रकार कई द्वीपों और देशों में व्यापार करता हुआ बसरा के बंदरगाह और वहाँ से बगदाद पहुँचा। मेरे पास इस यात्रा में भी बहुत धन इकट्ठा हो गया था। मैंने उसमें से काफी दान किया और कई निर्धनों को धन से संतुष्ट किया। अपनी दूसरी सागर यात्रा का वृत्तांत समाप्त करके सिंदबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें देकर विदा किया और कहा कि कल इसी समय यहाँ आना तो तुम्हें अपनी तीसरी सागर यात्रा का वृत्तांत सुनाऊँगा। यह सुन कर हिंदबाद भी उसे धन्यवाद देकर विदा हुआ और अन्य उपस्थित लोग भी।

तीसरे दिन नियत समय पर हिंदबाद तथा अन्य मित्रगण सिंदबाद के घर आए। दोपहर का भोजन समाप्त होने पर सिंदबाद ने कहा, दोस्तो, अब मेरी तीसरी यात्रा की कहानी सुनो जो पहली दो यात्राओं से कम विचित्र नहीं है।

सिंदबाद जहाजी की तीसरी यात्रा

सिंदबाद ने कहा कि घर आकर मैं सुखपूर्वक रहने लगा। कुछ ही दिनों में जैसे पिछली दो यात्राओं के कष्ट और संकट भूल गया और तीसरी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। मैंने बगदाद से व्यापार की वस्तुएँ लीं और कुछ व्यापारियों के साथ बसरा के बंदरगाह पर जाकर एक जहाज पर सवार हुआ। हमारा जहाज कई द्वीपों में गया जहाँ व्यापार करके हम लोगों ने अच्छा लाभ कमाया।

किंतु एक दिन हमारा जहाज तूफान में फँस गया। इसके कारण हम लोग सीधे मार्ग से भटक गए। अंत में एक द्वीप के पास जाकर जहाज ने लंगर डाल दिया और पाल खोल डाले। कप्तान ने ध्यान देकर द्वीप को देखा फिर उसकी आँखों में आँसू बहने लगे। हमने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, 'अब हम लोगों का भगवान ही रक्षक है। क्योंकि इस द्वीप के समीप ही जंगली लोगों के द्वीप हैं। उनके शरीर पर लाल-लाल बाल होते हैं। इन वन-वासियों से भटके हुए जहाजियों पर बड़े-बड़े संकट आए हैं। वे हम लोगों से आकार में छोटे है किंतु हम उनके आगे विवश हैं। यदि उनमें से एक भी हमारे हाथ से मारा जाए तो वे हमें चीटियों की तरह चारों ओर से घेर लेंगे और हमारा सफाया कर देंगे।'

हम सब लोग इस बात को सुनकर बहुत घबराए किंतु कर ही क्या सकते थे। कुछ देर में जैसा कप्तान ने कहा था वैसा ही हुआ। जंगली लोगों का एक बड़ा समूह, जिनके शरीर छोटे-छोटे थे और लाल रंग के बालों से भरे हुए थे, तट पर आए और तैर कर जहाज के चारों ओर आ गए। वे अपनी भाषा में कुछ कहने लगे किंतु वह हमारी समझ में नहीं आया। वे बंदरों की तरह आसानी से जहाज पर चढ़ आए। उन्होंने पालों को लपेट दिया और लंगर की रस्सी काटकर जहाज को किनारे पर खींच लाए। उन्होंने हमें जहाज से उतार लिया और घसीटते हुए अपने द्वीप में ले गए। उस द्वीप के निकट कोई जहाज उनके डर से नहीं आता था किंतु हमारी तो मौत ही हमें घसीट लाई थी।

उन्होंने हमें एक घर के अंदर बंद कर दिया। हमने देखा कि आँगन में मनुष्यों की हड्डियों का एक ढेर जमा है और बहुत-सी मोटी लोहे की छड़ें रखी हैं। हम यह देख कर भय के कारण अचेत हो गए। बहुत देर के बाद हमें होश आया तो हम अपनी दशा को विचारकर रोने लगे। अचानक एक दरवाजा खुला और अंदर से एक अत्यंत विशालकाय आदमी हमारे आँगन में आया। उसका शरीर ताड़ की तरह था और मुँह घोड़े की तरह। उसके केवल एक ही आँख थी जो माथे के बीच में थी और अंगारे की तरह दहक रही थी। उसके दाँत बहुत बड़े और नुकीले थे और उसके मुख से बाहर निकले हुए थे। उसका निचला होंठ इतना बड़ा था कि उसकी छाती तक लटकता था। उसके कान हाथी जैसे थे और उसके कंधों को ढँके हुए थे और उसके नाखून बड़े कड़े और घुमावदार थे, जैसे शिकारी जानवरों के होते हैं। हम सब उस राक्षस को देख कर एक बार फिर गश खा गए।

जब हम होश में आए तो देखा कि राक्षस हम लोगों के पास ही खड़ा है और हमें देख रहा

है। फिर वह हमारे और निकट आया और हममें से एक-एक को उठाकर हाथ में घुमा-फिरा कर देखने लगा। जैसे कसाई लोग बकरियों और भेड़ों को उनकी मोटाई का अंदाज लगाने के लिए देखते हैं। सबसे पहले उसने मुझे पकड़ा लेकिन दुबला-पतला देख कर रख दिया। फिर उसने हर एक को इसी तरह देखा और अंत में कप्तान को सब से मोटा-ताजा पाकर उसे एक हाथ से पकड़ा और दूसरे हाथ से एक छड़ उसके शरीर में आर-पार कर दी और फिर आग जला कर कप्तान को भून कर खा गया। फिर अंदर जा कर सो गया। उसके खर्राटे बादल की गरज की तरह आते रहे और रात भर हमें भयभीत करते रहे। दिन निकलने पर वह जागा और घर से बाहर चला गया।

हम सब अपनी दशा पर रोने लगे। हमारी समझ ही में नहीं आ रहा था कि उस भयंकर राक्षस से किस प्रकार प्राण बच सकते हैं। हम सबने अपने को ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दिया। घर से बाहर निकल कर हमने फल-फूल खाकर भूख बुझाई। हमने चाहा कि रात को उस घर में न जाएँ किंतु और कोई स्थान था ही नहीं जहाँ रात बिताते, फिर राक्षस तो हमें ढूँढ़ निकालता ही। अतएव हम उसी मकान में आ गए। कुछ रात बीतने पर वह राक्षस फिर आया। उसने फिर हम लोगों को पहले की तरह उठा-उठा कर देखा और हमारे एक साथी को अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक मोटा-ताजा पाकर उसके शरीर में छड़ घुसेड़कर भूनकर खा गया।

सवेरे जब वह बाहर गया तो हम लोग बाहर निकले। हमारे कई साथियों ने कहा कि इस प्रकार की कष्टदायक मृत्यु से अच्छा है हम लोग समुद्र में डूब मरें। किंतु हममें से एक ने कहा कि हम लोग मुसलमान है और हमारे लिए आत्महत्या बड़ा पाप है। हमें यह न करना चाहिए कि राक्षस से बचने के लिए स्वयं अपनी हत्या कर लें। उसकी बात मानकर हम आत्महत्या से रुक गए और सोचने लगे कि कैसे जान बच सकती हैं।

मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा, 'देखो, यहाँ सागर तट पर बहुत-सी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मौजूद हैं। हम लोग इनकी चार-पाँच नावें बना लें और किसी जगह छुपाकर रख दें। यदि किसी प्रकार अवसर मिले तो हम उन पर निकल भागेंगे। अधिक से अधिक यही तो होगा कि नावें डूब जाएँगी। किंतु राक्षस के हाथों मरने से तो वह मौत कहीं अच्छी होगी।'

मेरे सुझाव को सब लोगों ने पसंद किया। हम लोगों को नाव बनाना आता था और हमने दिन भर में चार-पाँच ऐसी छोटी-छोटी नावें बना लीं जिनमें तीन-तीन आदमी आ सकते थे। शाम को हम फिर उस घर के अंदर गए। राक्षस ने हर रोज की तरह हम लोगों को उठा-उठाकर देखा और एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को सलाख में भेद कर भून दिया और खा गया। जब वह सो गया और उसके खर्राटे बहुत गहरे हो गए तो मैंने अपने साथियों को अपनी योजना बताई और हमने उस पर कार्य करना आरंभ कर दिया।

वहाँ कई सलाखें पड़ी हुई थीं और आग अभी तक खूब जल रही थी। मैंने और नौ अन्य होशियार और साहसी लोगों ने एक-एक सलाख को आग में लाल कर दिया। फिर उस

राक्षस की आँख में हम सभी ने उन सलाखों को घुसेड़ दिया जिससे वह बिल्कुल अंधा हो गया। उसने अपने हाथ इधर-उधर मारने शुरू किए। हम लोग उससे बच कर कोनों में जा छुपे। अगर वह किसी को पा जाता तो कच्चा ही खा जाता। फिर वह चिंघाड़ता हुआ घर के बाहर भाग गया और हम लोग समुद्र के तट पर आकर उन नावों पर चढ़ गए जिन्हें हमने पहले से बना रखा था। हम चाहते थे कि सवेरा होने पर यात्रा आरंभ करें। तभी हमने देखा कि दो राक्षस उस राक्षस के हाथ पकड़े अपने बीच में लिए आते हैं जिसे हमने अंधा किया था। अन्य कई राक्षस भी उनके पीछे दौड़े आते थे। हमने उन्हें देखते ही नावें समुद्र में डाल दीं और तेजी से उन्हें खेने लगे। राक्षस समुद्र में तैर नहीं सकते थे किंतु उन्होंने तट पर से ही बड़ी-बड़ी चट्टानें हमारी ओर फेंकना शुरू किया। केवल एक नाव को छोड़ कर जिस पर मैं और मेरे दो साथी बैठे थे सारी नावें राक्षसों की फेंकी चट्टानों से डूब गईं। हम अपनी नाव को तेजी से खेकर इतनी दूर आ गए जहाँ पर उनकी चट्टानें आ नहीं सकती थीं।

किंतु खुले समुद्र में आकर भी हमें चैन न मिला। तेज हवा हमारी छोटी-सी नाव को तिनके की तरह पानी पर उछालने लगी। चौबीस घंटे हम इसी दशा में रहे। फिर हमारी नाव एक द्वीप में पहुँच गई। हम लोग प्रसन्नतापूर्वक उस द्वीप पर उतरे और तट पर लगे पेड़ों से पेट भर फल खाने के बाद हमारे शरीरों में कुछ शक्ति आई। रात को हम लोग समुद्र के तट ही पर सो रहे। अचानक एक जोर की सरसराहट से नींद खुली तो मैंने देखा कि एक साँप जो नारियल के पेड़ जितना लंबा था हमारे एक साथी को खाए जाता है। उसने पहले हमारे साथी के शरीर को चारों ओर से कस कर तोड़ डाला फिर उसे निगल गया। कुछ देर में साँप ने उसकी हड्डियाँ उगल दीं और चला गया। हम दो बचे हुए आदमियों ने बड़े दुख और चिंता में रात बिताई। कितनी मुश्किलों से राक्षस से छूटे थे तो यह मुसीबत आ गई जिससे छुटकारा ही नहीं दिखाई देता था। दिन में हमने फल खाकर गुजारा किया। शाम तक हमने अपने बचने के लिए एक पेड़ खोज लिया था। और रात होते ही उस पर चढ़ गए।

मैं तो वृक्ष पर काफी ऊँचे पहुँच गया था किंतु मेरा साथी उतने ऊँचे न जा सका और नीचे की एक मोटी डाल पर लेट गया। साँप फिर रात को आया। पेड़ की जड़ पर पहुँच कर उसने अपना शरीर ऊँचा किया और मेरे साथी को पकड़ कर खा गया और फिर वहाँ से चला गया। मैं सारी रात भय से अधमरा-सा रहा। सूर्योदय होने पर मैं पेड़ से उतरा और फिर कुछ फल आदि खाकर पेट भरा। मुझे विश्वास था कि आज मैं अवश्य ही उस साँप का ग्रास बनूँगा क्योंकि उसने मुझे देख तो लिया ही है। मैंने काफी सोच-विचार के बाद यह तरकीब निकाली कि पेड़ के चारों ओर ढेर सारी कँटीली झाड़ियाँ रख दीं और ऊपर भी काँटों की ऐसी ओट कर ली कि किसी को दिखाई न दूँ।

रात को साँप आया। वह झाड़ियों के कारण पेड़ की जड़ तक न पहुँच पाया किंतु सारी रात घात लगाकर बैठा रहा। सवेरे वह चला गया। मैं रातों की जगाई और जान के डर और रात भर साँप की फुँफकार सुनने से इतना अशक्त और निराश हो गया था कि सोचने लगा कि ऐसे जीने से तो समुद्र में डूब जाना अच्छा है। इसी इरादे से समुद्र तट पर गया।

किंतु सौभाग्यवश किनारे कुछ ही दूर पर एक जहाज दिखाई दिया। मैंने चिल्लाकर आवाज देना और पगड़ी को हवा में हिलाना शुरू किया। जहाज के लोगों ने मुझे देखा और कप्तान ने एक नाव भेजकर मुझे जहाज पर चढ़ा लिया।

वे लोग मुझसे पूछने लगे कि मैं उस द्वीप में कैसे पहुँचा। एक बूढ़े आदमी ने कहा कि, 'मुझे आश्चर्य है कि तुम जीवित किस तरह बचे हो। मैंने तो सुना है कि इन द्वीपों में नरभक्षी राक्षस रहते हैं जो आदमियों को भूनकर खाते हैं। इसके अलावा यहाँ विशालकाय सर्प भी हैं जो दिन में गुफाओं में सोते रहते हैं और रात में शिकार के लिए निकलते हैं और कोई आदमी पाते हैं तो उसे निगल जाते हैं।'

मैं उनकी बातों का उत्तर न दे सका क्योंकि भूख और जगाई के कारण निढाल हो रहा था। उन्होंने मुझे भोजन कराया और चूँकि मेरे वस्त्र तार-तार हो रहे थे इसलिए एक जोड़ा कपड़ा भी मुझे दिया। फिर मैंने विस्तारपूर्वक अपनी विपत्तियों का वर्णन किया और बताया कि किस प्रकार राक्षस और साँप से बचा। सबने कहा कि तुम पर भगवान की बड़ी कृपा है जिससे तुम जीवित बच रहे।

हम लोगों का जहाज सिलहट द्वीप में पहुँचा जहाँ चंदन होता है जो बहुत-सी दवाओं में डाला जाता है। जहाज ने वहाँ लंगर डाला और व्यापारीगण अपना सामान लेकर द्वीप पर क्रय-विक्रय करने के लिए उतर गए। कप्तान ने मुझसे कहा, 'भाई, तुम बगदाद के निवासी हो। वहाँ के एक व्यापारी का बहुत-सा माल बहुत दिनों से मेरे जहाज पर पड़ा है। तुम उसकी गठरियाँ ले जाकर उसके स्त्री-बच्चों को दे देना। मैं चिट्ठी लिख दूँगा तो वे लोग तुम्हारी लदान की मजदूरी दे देंगे।'

मैंने उसको धन्यवाद दिया कि उसने मुझे काम तो दिलाया। उसने अपने लिपिक से कहा कि उस व्यापारी का माल इस आदमी को सौंप दे।

लिपिक ने पूछा कि उस व्यापारी का नाम क्या था। कप्तान ने कहा कि माल का मालिक सिंदबाद जहाजी था। मुझे इस बात पर इतना आश्चर्य हुआ कि कप्तान का मुँह देखने लगा। कुछ देर में मैंने पहचाना कि मेरी दूसरी यात्रा में भी जहाज का कप्तान यही था। उस द्वीप पर मुझे सोता हुआ छोड़कर मेरे साथी जहाज पर चले गए थे और सभी ने समझ लिया था कि मैं कहीं मर खप-गया हूँ। यद्यपि इस घटना को बहुत दिन नहीं हुए थे तथापि इधर लगातार पड़ने वाली विपत्तियों के कारण मेरे चेहरे का रंग और नक्श इतने बदल गए थे कि कप्तान मुझे पहचान नहीं सका।

मैंने पूछा कि यह सामान क्या सिंदबाद जहाजी का है। कप्तान ने कहा, 'यह सामान निःसंदेह सिंदबाद का है। वह बगदाद का निवासी था और बसरा बंदरगाह से हमारे जहाज पर माल लेकर चढ़ा था। एक दिन हम लोग एक द्वीप पर पहुँचे और जहाज का लंगर डाला ताकि द्वीप से लेकर मीठा पानी जहाज पर भर लें। कई व्यापारी भी घूमने-फिरने को उतर गए। उनमें सिंदबाद भी था। कुछ देर में अन्य लोग तो जहाज पर आ गए लेकिन सिंदबाद

न आया। मैंने चार घड़ी तक उसकी राह देखी किंतु जब हवा अनुकूल देखी तो मैंने पाल खोल दिए और जहाज को आगे बढ़ा दिया।'

मैंने पूछा कि तुम्हें क्या पूरा विश्वास है कि सिंदबाद मर गया है। कप्तान ने कहा कि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि सिंदबाद अब दुनिया में नहीं है। मैंने उससे कहा, 'तुम मुझे पूरे ध्यान से देखो और पहचानो कि मैं ही सिंदबाद हूँ कि नहीं। हुआ यह था कि द्वीप पर उतर कर मैं एक स्रोत के निकट खा-पीकर गहरी नींद सो गया था। मेरे साथियों ने मुझे जगाया ही नहीं। शायद उन्हें यह मालूम भी न था कि मैं कहाँ सो रहा हूँ। जब मेरी आँख खुली ओर मैं समुद्र तट पर पहुँचा तो देखा कि तुम्हारा जहाज दूर चला गया है।'

कप्तान ने यह सुनकर मुझे ध्यानपूर्वक देखा और मुझे पहचान गया। उसने मुझे गले लगाया और भगवान को धन्यवाद दिया कि मैं जीवित हूँ हालाँकि मुझे मरा हुआ समझ रहा था। उसने कहा, 'तुम्हारे माल को भी मैंने हर जगह व्यापार में लगाया और इस पर हर सौदे में मुनाफा हुआ है। अब मैं तुम्हारे माल को तुम्हारे मुनाफे के साथ तुम्हें सौंपता हूँ।' यह कहकर उसने मुझे मेरी गठरियाँ सौंप दीं और वह नगद राशि भी दे दी जो मेरे माल के व्यापार के लाभ के रूप में उसके पास थी। मुझे यह सब मिलने की कोई आशा नहीं थी और मैंने भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया।

फिर हमारा जहाज सिलहट द्वीप से अन्य द्वीपों में गया जहाँ से हमने लौंग, दारचीनी आदि खरीदा। हमने दूर-दूर की यात्रा की। एक जगह हमने इतने बड़े कछुए देखे जिनकी लंबाई चौड़ाई पचास-पचास हाथ की थी और अजीब मछलियाँ भी जो गाय की तरह दूध देती हैं। कछुओं का चमड़ा बहुत कड़ा होता है, उसकी ढालें बनाई जाती हैं। हमने एक और अजीब किस्म की मछलियाँ देखीं। इसका रंग और मुँह ऊँट जैसा होता है। घूमते-फिरते हमारा जहाज बसरा के बंदरगाह में आया। वहाँ से मैं बगदाद आ गया।

मैं कुशल-क्षेम से अपने घर आने पर भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया। इस खुशी में मैंने बहुत-सा धन भिखारियों को तथा निर्धनों के सहायतार्थ दिया। इस यात्रा में मुझे इतना लाभ हुआ कि जिसकी गिनती नहीं की जा सकती। मैंने दान आदि करने के अतिरिक्त कई सुंदर भवन तथा आराम-आसाइश की चीजें भी खरीदीं।

तीसरी समुद्र यात्रा का वर्णन करने के बाद सिंहबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें दीं। उससे यह भी कहा कि कल तुम फिर इसी समय आना और तब मैं तुम्हें अपनी चौथी यात्रा का हाल सुनाऊँगा। चुनांचे सिंदबाद तथा अन्य उपस्थित लोग सिंदबाद के घर से विदा हुए। दूसरे दिन निश्चित समय पर सब लोग आए और भोजनोपरांत सिंदबाद ने कहना शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की चौथी यात्रा

सिंदबाद ने कहा, कुछ दिन आराम से रहने के बाद मैं पिछले कष्ट और दुख भूल गया था और फिर यह सूझी कि और धन कमाया जाए तथा संसार की विचित्रताएँ और देखी जाएँ। मैंने चौथी यात्रा की तैयारी की और अपने देश की वे वस्तुएँ जिनकी विदेशों में माँग है प्रचुर मात्रा में खरीदीं। फिर मैं माल लेकर फारस की ओर चला। वहाँ के कई नगरों में व्यापार करता हुआ मैं एक बंदरगाह पर पहुँचा और व्यापार किया।

एक दिन हमारा जहाज तूफान में फँस गया। कप्तान ने जहाज को सँभालने का बहुत प्रयत्न किया किंतु सँभाल न सका। जहाज समुद्र की तह से ऊपर उठी पानी में डूबी एक चट्टान से टकरा कर चूर-चूर हो गया। कई लोग तो वहीं डूब गए किंतु मैं और कुछ अन्य व्यापारी टूटे तख्तों के सहारे किसी प्रकार तट पर आ लगे। हम लोग एक द्वीप में आ गए थे। इधर-उधर घूम कर हम लोगों ने वृक्षों के फल तोड़-तोड़ कर खाए और अपनी भूख मिटाई।

फिर हम समुद्र तट पर आ कर लेट गए और अपने दुर्भाग्य को कोसने लगे। किंतु इससे क्या होना था। हमें नींद आ गई और रात भर गहरी नींद में सोते रहे। सवेरे उठ कर फिर द्वीप में घूमने और फल आदि इकट्ठा करने लगे। अचानक काले रंग के आदमियों की एक बड़ी भीड़ ने हमें घेर लिया। उन्होंने हमारे गले में रस्सियाँ बाँध दीं और भेड़-बकरियों की भाँति हमें हाँक-हाँककर बहुत दूर पर बसे अपने गाँव में ले गए। फिर उन्होंने हमारे सामने एक खाद्य पदार्थ रखकर इशारे से कहा कि इसे खाओ। मेरे साथियों ने बगैर कुछ सोचे-समझे उसे पेट भर खाया और तुरंत ही नशे मे मतवाले हो गए। मैंने वह चीज बहुत कम खाई और काले लोगों की हरकतों को ध्यान से देखने लगा। मेरे साथी तो कुछ न समझ सके लेकिन मैंने समझ लिया कि इन लोगों की नीयत अच्छी नहीं है। फिर उन्होंने खाने के लिए हमें नारियल के तेल में पका हुआ चावल दिया। इस खाद्य से आदमी मोटे हो जाते हैं। मैं समझ गया कि काले लोगों का इरादा है कि हमें मोटा करें और फिर अपने कबीले की दावत करके हम लोगों का मांस पका कर सब लोग खाएँ। मेरे साथी तो नशे में खूब पेट भर कर खाते थे किंतु मैं बहुत थोड़ा खाता था ताकि मोटा न होऊँ और नर भक्षियों का आहार न बनूँ। मैं कम खाने और अपने प्राणों की चिंता में इतना दुबला हो गया कि बदन में हड्डी-चमड़े के सिवाय कुछ न रहा।

मैं दिन में उस द्वीप में घूमा-फिरा करता था। एक दिन मैंने देखा कि गाँव के सब लोग काम पर चले गए हैं। केवल एक बूढ़ा बैठा था। मैं अवसर पाकर भाग निकला। बूढ़े ने मुझे बहुतेरा चिल्ला-चिल्लाकर बुलाया किंतु मैं न रुका। शाम को गाँव में लोग आए तो मेरी खोज में निकले। किंतु तब तक मैं बहुत ही दूर निकल चुका था। मैं दिन भर भागता रात में कहीं छुपकर सो जाता। रास्ते में फल आदि से भूख मिटाता या नारियल तोड़कर उसका पानी पी लेता जिससे भूख और प्यास दोनों शांत होती थी।

आठवें दिन मैं समुद्र के तट पर पहुँचा। वहाँ देखा कि मेरी तरह के बहुत-से श्वेत वर्ण मनुष्य काली मिर्च इकट्ठी कर रहे हैं क्योंकि वहाँ काली मिर्च बहुत पैदा होती थी। उन्हें देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैं उनके पास पहुँच गया। वे भी चारों ओर जमा हो गए और अरबी भाषा में मुझसे पूछने लगे कि तुम कहाँ से आ रहे हो। मैं अरबी बोली सुनकर और भी हर्षित हुआ और मैंने विस्तार से उन्हें बताया कि जहाज टूटने पर हम लोग द्वीप के किसी अन्य तट पर लगे जहाँ से हमें बहुत-से श्याम वर्ण लोग पकड़ कर ले गए।

उन लोगों को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बोले, 'अरे वे लोग नरभक्षी हैं। तुम्हें उन्होंने छोड़ कैसे दिया?' मैंने उन्हें आगे का हाल बताया कि किस प्रकार कम खाकर और मौका पाकर भाग कर मैंने जान बचाई।

उन लोगों को मेरे जीते-जागते बच निकलने पर अति आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। जब तक उनका काम पूरा न हुआ मैं उनके साथ मिलकर काम करता रहा, फिर वे लोग मुझे अपने साथ जहाज पर लेकर अपने देश आए और अपने बादशाह के सामने मुझे यह कह कर पेश किया कि यह व्यक्ति नरभक्षियों के चंगुल से सही-सलामत निकल आया है। बादशाह को जब मैंने अपना पूरा हाल सुनाया तो उसे भी सुनकर बड़ा आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। वह बादशाह बड़ा दयालु प्रकृति का था। उसने मुझे पहनने के लिए वस्त्र तथा अन्य सुख-सुविधाएँ दीं।

बादशाह के कब्जे में जो द्वीप था वह बहुत बड़ा और धन-धान्य से पूर्ण था। वहाँ के व्यापारी अन्य देशों में अपने यहाँ की चीजें ले जाते थे और बाहर के कई व्यापारी भी आते थे। मुझे आशा होने लगी कि किसी दिन मैं अपने देश पहुँच जाऊँगा। बादशाह मुझ पर बड़ा कृपालु था। उसने मुझे अपना दरबारी बना लिया। लोग मुझे देखकर ऐसा बर्ताव करने लगे जैसे मैं उनके देश का निवासी हूँ।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ लोग बगैर जीन-लगाम ही घोड़ों पर सवार होते थे। यहाँ तक कि बादशाह भी घोड़े की नंगी पीठ पर सवारी करता था। मैंने एक दिन बादशाह से पूछा कि आप लोग जीन-लगाम लगाकर घोड़े पर क्यों नहीं चढ़ते। उसने कहा, जीन लगाम क्या होती है। उसने यह भी कहा कि मैं उसके लिए ये चीजें बना दूँ।

मैंने एक नमूना बनाकर लकड़ी के कारीगर को दिया। उसने मेरे नमूने के अनुसार जीन बना दी। मैंने उसे चमड़े से मढ़वाया और उस पर अतलस और कमरख्वाब का आवरण चढ़ाया। एक लोहार से रकाबे बनाने को कहा और लगाम का सामान भी बनवाया। जब सारा सामान तैयार हो गया तो मैं उसे घोड़े पर सजाकर घोड़ा बादशाह के सामने ले गया। वह उस पर सवार हुआ तो उसे बहुत प्रसन्नता और संतोष हुआ। उसने मुझे बहुत इनाम-इकराम दिया और पहले से भी अधिक मुझे मानने लगा। फिर मैंने बहुत-सी जीनें और लगामें बनवा कर राज्य परिवार के सदस्यों, मंत्रियों आदि को दीं। उन्होंने उनके बदले

हजारों रुपए तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ मुझे प्रदान कीं। राज दरबार में मेरा मान बढ़ा तो नगरवासी भी मेरा बहुत सम्मान करने लगे।

एक दिन बादशाह ने मेरे साथ एकांत बातचीत की। वह बोला, 'मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ और तुम पर अधिकाधिक कृपा करना चाहता हूँ। मेरे दरबार के लोग और साधारण प्रजाजन भी तुम्हारी बुद्धिमत्ता के कारण तुम्हें बहुत मानते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम एक काम करो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो मैं कहूँगा तुम उससे इनकार नहीं करोगे।' मैंने कहा, 'आप जो भी आज्ञा करेंगे वह मेरे हित में होगी क्योंकि आपकी मुझ पर कृपा रहती है। मैं क्यों आपकी आज्ञा का उल्लंघन करूँगा?' उसने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम स्थायी रूप से यहाँ बस जाओ और अपने देश जाने का विचार छोड़ दो। इसलिए मैं यहाँ की एक सुंदर और सुशील कन्या से तुम्हारा विवाह करना चाहता हूँ।' मैंने सहर्ष इसे स्वीकार किया।

उसने एक अत्यंत रूपवती और गुणवती नव यौवना से मेरा विवाह करा दिया। मैं उसे पाकर बगदाद में बसे अपने परिवार को भूल-सा गया। कुछ दिनों बाद मेरे पड़ोसी की पत्नी बीमार हो गई और कुछ दिन बाद मर गई। पड़ोसी से मेरी अच्छी दोस्ती थी इसलिए मातमपुर्सी को उसके घर गया। वह आदमी अत्यंत शोक में डूबा था और उसके आँसू ही नहीं थमते थे। मैंने उसे समझाया कि वह धैर्य रखे, भगवान चाहेगा तो दूसरी शादी के बाद और अच्छा जीवन बीतेगा। उसने कहा, 'तुम कुछ नहीं जानते इसीलिए ऐसी तसल्ली दे रहे हो। मैं तो दो-चार घंटे का ही मेहमान हूँ।'

मैंने परेशान होकर उससे स्थिति स्पष्ट करने को कहा तो वह बोला, 'आज मुझे मृत पत्नी के साथ जीते जी दफन किया जाएगा। हमारे यहाँ बहुत पुराने जमाने से यह रस्म चली आ रही है कि पति मरता है तो पत्नी उसके साथ दफन कर दी जाती है और पत्नी मरती है तो पति को उसके साथ गाड़ दिया जाता है। अब मेरी जान बचने की कोई सूरत ही नहीं है। यहाँ के निवासी एकमत हो कर इस रिवाज को स्वीकार करते हैं। कोई इसके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।'

इस भयंकर रिवाज की बात सुनते ही मेरे होश उड़ गए। मैं उसी समय से अपने बारे में चिंता करने लगा क्योंकि मेरा भी विवाह हो चुका था। थोड़ी देर में उसके सगे संबंधी एकत्र हो गए। उन्होंने कफन आदि का प्रबंध किया। उन्होंने औरत की लाश को नहला-धुलाकर बहुमूल्य वस्त्र पहनाए और एक खुली अर्थी पर रख कर ले चले। उसका पति भी शोकसूचक वस्त्र पहने रोता-पीटता उनके पीछे चला।

सब लोग एक बड़े पहाड़ पर पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने एक बड़ी चट्टान हटाई तो उसके नीचे बड़ा गहरा और अँधेरा गड्ढा दिखाई दिया। सब लोगों ने रस्सी के द्वारा अर्थी को गड्ढे की तह तक उतार दिया। उसके बाद मृत स्त्री के पति को भी गड्ढे में उतार दिया। उन्होंने उसके साथ सात रोटियाँ और जल से भरा पात्र भी रख दिया और उसे उतारने के बाद गढ्ढे का मुँह चट्टान से बंद कर दिया। वह पहाड़ बहुत लंबा-चौड़ा था। उसके दूसरी

ओर समुद्र था और उस ओर का क्षेत्र दुर्गम और निर्जन था। चट्टान को यथावत रख कर और पति-पत्नी के लिए शोक करके सब लोग वापस हुए।

मैं बहुत ही डर गया था और सोचता था कि ऐसी अमानुषिक रीति जो दुनिया के किसी देश में नहीं है यहाँ क्यों मानी जाती है। किंतु जिससे भी बात करता वह इस रिवाज का समर्थन करता और मेरी बात को गलत कहता था। यहाँ तक कि जब मैंने बादशाह से बात की तो उसने कहा, 'सिंदबाद, यह हमारे बुजुर्गों की बहुत पुरानी चलाई गई रस्म है। मैं अगर चाहूँ भी तो इसे रोक नहीं सकता। यह रस्म मुझ पर भी लागू होती है। भगवान न करे अगर रानी का देहांत हो जाय तो मुझे भी उसके साथ जीते जी दफन कर दिया जाएगा।' मैंने पूछा कि यह रस्म क्या उन अन्य देशवासियों पर भी लागू होती है जो यहाँ पर रहने लगे हैं। बादशाह मुस्कराने लगा और बोला, 'यह रस्म देशी-विदेशी सब के लिए है। इससे कोई व्यक्ति बाहर नहीं समझा जाता।'

इसके बाद मैं बहुत घबराया रहने लगा। मैं बराबर सोचता था कि कहीं मेरी पत्नी मर गई तो मुझे भी ऐसी भयानक मौत मरना पड़ेगा। मैं इसीलिए अपनी पत्नी के स्वास्थ्य की बहुत देखभाल करने लगा। किंतु ईश्वर की इच्छा कौन टाल सकता है। कुछ समय के बाद मेरी पत्नी सख्त बीमार हुई और कुछ दिनों में काल कवलित हो गई। मुझ पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। मैं सर पीटता था और कहता था कि मैं बेकार ही उस द्वीप से भागा। इस प्रकार जीते जी गाड़े जाने से कहीं अच्छा था कि नरभक्षी मुझे मार कर खा जाते।

इतने में बादशाह अपने दरबारियों और सेवकों के साथ मेरे घर आया। नगर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी वहाँ एकत्र हो गए और उसे अर्थी पर रख कर लोग ले चले और उनके पीछे मैं भी रोता-पीटता आँसू बहाता चला। दफन के पहाड़ पर पहुँच कर मैंने एक बार फिर अपने प्राण बचाने का प्रयत्न किया। मैंने बादशाह से कहा, स्वामी, मैं तो यहाँ का रहने वाला नहीं हूँ। मुझे यह कठोरतम दंड क्यों दिया जा रहा है। मुझ पर दया करके मुझे जीवन प्रदान कर दीजिए। मैं अकेला भी नहीं हूँ, मेरे देश में स्त्री-बच्चे मौजूद हैं। उनका खयाल करके मुझे छोड़ दीजिए।

मैंने हजार फरियाद की किंतु बादशाह या अन्य किसी व्यक्ति को मुझ पर दया न आई। पहले मेरी पत्नी की अर्थी को गड्ढे में उतारा गया फिर मुझे एक दूसरी अर्थी पर बिठाकर मेरे साथ रोटियाँ और पानी का घड़ा रख कर उतार दिया गया और गड्ढे पर चट्टान को वापस रख दिया गया।

वह कंदरा लगभग पचास हाथ गहरी थी। उसमें उतरते ही वहाँ उठने वाली बदबू से, जो लाशों के सड़ने से पैदा हो रही थी, मेरा दिमाग फटने लगा। मैं अपनी अर्थी से उठकर दूर भागा। मैं चीख-चीखकर रोने लगा और अपने भाग्य को कोसने लगा। मैं कहता था 'भगवान जो करता है उसे अच्छा ही कहा जाता है। जाने मेरे इस दुर्भाग्य में क्या अच्छाई है। मैं तीन-तीन यात्रा के कष्टों और खतरों से भी चैतन्य नहीं हुआ और फिर

मरने के लिए चौथी यात्रा पर चला आया। अब तो यहाँ से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है।' इसी प्रकार मैं घंटों रोता रहा।

किंतु सुख हो या दुख, मनुष्य को भूख तो सताती ही है। मैं नाक-मुँह बंद करके अपनी अर्थी पर पहुँचा और थोड़ी रोटी खाकर पानी पिया। कुछ दिनों इस तरह जिया। रोटियाँ खत्म हो गईं तो सोचा कि अब तो भूखा मरना ही है। इतने में ऊपर उजाला हुआ। ऊपर की चट्टान खोल कर लोगों ने एक मृत पुरुष और उसके साथ उसकी विधवा को गढ्ढे में उतार दिया। जब लोग चट्टान बंद कर चुके तो मैंने एक मुर्दे की पाँव की हड्डी उठाई और चुपचाप पीछे से आकर स्त्री के सिर पर उसे इतनी जोर से मारा कि वह गश खाकर गिर पड़ी। मैंने लगातार चोटें करके उसे मार डाला और साथ रखी हुई रोटियाँ और पानी लेकर अपने कोने में चला गया। दो-चार दिन बाद एक आदमी को उसकी मृत पत्नी के साथ उतारा गया। मैंने पहले की तरह आदमी को खत्म करके उसकी रोटियाँ और पानी ले लिया। मेरे भाग्य से नगर में महामारी पड़ी और रोज दो-एक लाशें और उसके साथ जीवित व्यक्ति आने लगे जिन्हें मारकर मैं उनकी रोटियाँ ले लेता।

एक दिन मैंने वहाँ ऐसी आवाज सुनी जैसे कोई साँस ले रहा हो। वहाँ अँधेरा तो इतना रहता था कि दिन-रात का पता नहीं चलता था। मैंने आवाज ही पर ध्यान दिया तो साँस के साथ पाँवों की भी हलकी आहट आई। मैं उठा तो मालूम हुआ कि कोई चीज एक तरफ दौड़ रही है। मैं भी उसके पीछे दौड़ा। कुछ देर इसी प्रकार दौड़ने के बाद मुझे दूर एक तारे जैसी चमक दिखाई दी जो झिलमिला-सी रही थी। मैंने उस तरफ दौड़ना आरंभ किया तो देखा कि एक इतना बड़ा छेद है जिसमें से मैं बाहर जा सकता हूँ।

वास्तव में मैं पहाड़ के दूसरी ओर के ढाल पर निकल

या था। पहाड़ इतना ऊँचा था कि नगर निवासी जानते ही नहीं थे कि उधर क्या है। उस छेद में से होकर कोई जंतु मुर्दों को खाने के लिए अंदर आया करता था और उसी के सहारे मुझे बाहर निकलने का रास्ता मिला। मैं उस छेद से बाहर खुले आकाश के नीचे आ निकला और भगवान को उनकी अनुकंपा के लिए धन्यवाद दिया। मुझे अब अपने बच निकलने की आशा हो गई थी।

अब मैने कुछ सोचना आरंभ किया क्योंकि अभी तक तो मुर्दों की दुर्गंध के कारण कुछ सोच नहीं पाता था। थोड़ा-थोड़ा भोजन करके मैंने इतने दिन तक किसी प्रकार अपने को जीवित रखा था। मैं एक बार फिर जी कड़ा करके उस मुर्दों की गुफा में घुस गया। बहुत-से मुर्दों के साथ बहुमूल्य रत्न भूषण, आदि रख दिए जाते थे। मैंने टटोल-टटोल कर अंदाज से बहुत-से हीरे जवाहरात इकट्ठे किए।

मुर्दों के कफनों ही में उनकी अर्थियों की रस्सियों से हीरे-जवाहरात की कई गठरियाँ बाँधीं और एक-एक करके उन्हें बाहर ले आया, जहाँ से सामने समुद्र दिखाई देता था। मैंने समुद्र तट पर दो-तीन दिन फल फूल खाकर बिताए।

चौथे दिन मैंने तट के पास से एक जहाज गुजरता देखा। मैंने पगड़ी खोलकर उसे हवा में उड़ाते हुए खूब चिल्लाकर आवाजें दीं। जहाज के कप्तान ने मुझे देख लिया। उसने जहाज रोककर एक नाव मुझे लेने को भेजी। नाविक लोग मुझसे पूछने लगे कि तुम इस निर्जन स्थान पर कैसे आए। मैंने उन्हें पूरा वृत्तांत सुनाने के बजाय कह दिया कि दो दिन पहले हमारा जहाज डूब गया था, मेरे सभी साथी भी डूब गए, सिर्फ मैं कुछ तख्तों के सहारे अपनी जान और कुछ सामान बचा लाया। वे लोग मुझे गठरियों समेत जहाज पर ले गए।

जहाज पर कप्तान से भी मैंने यही बात कही और उसकी कृपा के बदले उसे कुछ रत्न देने लगा किंतु उसने लेने से इनकार कर दिया। हम वहाँ से चल कर कई द्वीपों में गए। हम सरान द्वीप से दस दिन की राह पर स्थित नील द्वीप गए। वहाँ से हम कली द्वीप पहुँचे जहाँ सीसे की खानें हैं और हिंदुस्तान की कई वस्तुएँ ईख, कपूर आदि भी होती हैं। कली द्वीप बहुत बड़ा है और वहाँ व्यापार बहुत होता है। हम लोग अपनी चीजें खरीदते-बेचते कुछ समय के बाद बसरा पहुँचे जहाँ से मैं बगदाद आ गया। मुझे असीमित धन मिला था। मैंने कई मसजिदें आदि बनवाईं और आनंदपूर्वक रहने लगा। यह कहकर सिंदबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें और दीं और दूसरे रोज भी आने को कहा। अगले दिन सब लोग फिर एकत्र हुए और भोजनोपरांत सिंदबाद ने अपनी पाँचवीं यात्रा का वर्णन शुरू किया।

सिंदबाद जहाजी की पाँचवीं यात्रा

सिंदबाद ने कहा कि मेरी विचित्र दशा थी। चाहे जितनी मुसीबत पड़े मैं कुछ दिनों के आनंद के बाद उसे भूल जाता था और नई यात्रा के लिए मेरे तलवे खुजाने लगते थे। इस बार भी यही हुआ। इस बार मैंने अपनी इच्छानुसार यात्रा करनी चाही। चूँकि कोई कप्तान मेरी निर्धारित यात्रा पर जाने को राजी नहीं हुआ इसलिए मैंने खुद ही एक जहाज बनवाया। जहाज भरने के लिए सिर्फ मेरा माल काफी न था इसीलिए मैंने अन्य व्यापारियों को भी उस पर चढ़ा लिया और हम अपनी यात्रा के लिए गहरे समुद्र में आ गए।

कुछ दिनों में हमारा जहाज एक निर्जन टापू पर लगा। वहाँ रुख पक्षी का एक अंडा रखा था जैसा कि एक पहले की यात्रा में मैंने देखा था। मैंने अन्य व्यापारियों को उसके बारे में बताया। वे उसे देखने उसके पास गए। उस अंडे में से बच्चा निकलने वाला था। जब जोर की ठक-ठक की आवाज के साथ बच्चे की चोंच अंडा तोड़ कर निकली तो व्यापारियों को सूझा कि रुख के बच्चे को भूनकर खा जाएँ। वे कुल्हाड़ियों से अंडा तोड़ने लगे। मेरे लाख मना करने पर भी वे न माने और बच्चा निकालकर उसे काट-भून कर खा गए।

कुछ ही देर में चार बड़े-बड़े बादल जैसे आते दिखाई दिए। मैंने पुकारकर कहा कि जल्दी से जहाज पर चलो, रुख पक्षी आ रहे हैं। हम जहाज पर पहुँचे ही थे कि बच्चे के माता-पिता वहाँ आ गए और अंडे को टूटा और बच्चे को मरा देख कर क्रोध में भयंकर चीत्कार करने लगे। कुछ देर में वे उड़कर चले गए। हमने तेजी से जहाज एक ओर भगाया कि रुख पक्षियों के क्रोध से बचें किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। कुछ ही देर में रुख पक्षियों का एक पूरा झुंड हमारे सिर पर आ पहुँचा। उनके पंजों में विशालकाय चट्टानें दबी थीं। उन्होंने हम पर चट्टान गिराना शुरू किया। एक चट्टान जहाज से थोड़ी दूर पर गिरी और उससे पानी इतना उथल-पुथल हुआ कि जहाज डगमगाने लगा। दूसरी चट्टान जहाज के ठीक ऊपर गिरी और जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो गए। सारे व्यापारी और व्यापार का माल जलमग्न हो गया। मुझे ही प्राण रक्षा का अवसर मिला और मैं एक तख्ते का सहारा लेकर किसी तरह एक टापू पर पहुँचा।

तट पर कुछ देर तक सुस्ताने के बाद मैं उस द्वीप पर घूम फिर कर देखने लगा कि क्या किया जा सकता हैं। मैंने देखा कि वहाँ सुंदर फलों के कई बाग हैं। कई पेड़ों के फल कच्चे थे किंतु बहुत-से फल पके और मीठे थे। कई जगह मैंने मीठे पानी के स्रोत देखे। मैंने पेट भरकर पके फल खाए और एक स्रोत से पानी पिया। रात हो गई थी इसीलिए मैं एक जगह पर सोने के इरादे से लेट गया। किंतु मुझे नींद न आई। निर्जन स्थान का भय भी था और अपने दुर्भाग्य पर दुख भी था। मैं रोता था और स्वयं को धिक्कारता था कि इतनी धन-दौलत होने पर भी, जिससे आयुपर्यंत सुख और ऐश्वर्य के साथ रह सकता था, यह फिर यात्रा करने की मूर्खता क्यों की। कभी यह भी सोचने लगता था कि इस द्वीप से किस तरह निकलकर बाहर जाया जा सकता है।

इतने में सवेरा हो गया। मैं भी अपनी उधेड़बुन को छोड़कर उठ खड़ा हुआ और फलवाले पेड़ों को घूम-घूमकर देखने लगा। कुछ ही देर में मैंने देखा कि वहाँ किनारे एक बूढ़ा बैठा है। वह बहुत कमजोर लगता था और मालूम होता था कि उसकी कमर से नीचे का भाग पक्षाघात-ग्रस्त है। पहले मैंने सोचा कि यह भी मेरी तरह का कोई भूला-भटका यात्री है जिसका जहाज डूब गया है। मैंने उसके समीप जाकर उसका अभिवादन किया। उसने कुछ उत्तर न दिया, केवल सिर हिलाया।

मैंने उससे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो। उसने मुझे संकेत में बताया कि चाहता है कि मैं उसे अपने कंधों पर बिठाकर नहर पार करा दूँ। मैंने सोचा कि शायद उस पार यह मेरे कंधों पर चढ़कर पेड़ों से फल तोड़ना और खाना चाहता है। मैंने उसे अपनी गर्दन पर चढ़ा लिया।

अब मुझे वह बात याद आती है तो हँसता हूँ। नहर के पार जाकर मैंने उतारना चाहा तो वह बूढ़ा जो बिल्कुल मरियल लगता था एकदम से शक्तिवान हो गया। उसने मेरी गर्दन के चारों ओर इतने जोर से पाँव करे कि मेरा दम घुटने लगा। मेरी आँखें बाहर को निकलने को हुईं और मैं अचेत होकर गिर पड़ा। फिर उसने पाँव ढीले किए जिससे मैं साँस लेने लगा और कुछ देर में होश आ गया। अब बूढ़े ने मुझे उठने का इशारा किया और मेरे न उठने पर उसने एक पाँव मेरे पेट में गड़ाया और दूसरा मुँह पर मारा। इससे मैं विवश हो गया कि उसके कहने के अनुसार काम करूँ। मैं उसे लिए घूमने लगा। वह पेड़ों के नीचे मुझे ले जाता और फल तोड़ता, खुद खाता और कुछ मुझे भी खाने को दे देता।

रात होने पर मैं लेटने की तैयारी करने लगा। बूढ़ा अब भी मेरी गर्दन से न उतरा। वैसे ही अपनी गर्दन के चारों ओर उसके पाँवों का घेरा लिए हुए लेट गया और सो गया। वह भी इसी दशा में सो गया। सुबह उसने ठोकर मारकर मुझे जगाया और उसी तरह मुझ पर सवार होकर वह द्वीप में घूमता फिरा। मैं क्रोध और दुख से अधमरा हो गया किंतु कुछ कर ही नहीं सकता था क्योंकि वह मुझे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ता था और रुकने पर एड़ियों को ठोकरें मारता था जिससे मुझे अतीव कष्ट होता था।

एक दिन मैंने वहाँ पर कद्दू के सूखे खोल पड़े देखे। मैंने उन्हें साफ किया और उनमें पके अंगूरों का रस निचोड़ कर भर दिया। कुछ दिनों बाद फिर घूमता हुआ वहाँ गया तो देखा कि रस से खमीर उठ गया है और वह मदिरा बन गया है। मैं बहुत कमजोर हो गया था इसीलिए स्वयं को शक्ति देने का यह उपाय किया था। मैंने थोड़ी- सी शराब पी और मुझ में शक्ति आ गई। मैं तेजी से चलने लगा और गाने भी लगा। बूढ़े को यह देखकर आश्चर्य हुआ। उसने इशारे से एक कद्दू की शराब देने के लिए कहा।

मैं तो दो-चार घूँट ही लेता था। उसे थोड़ी मदिरा पीकर आनंद आया तो वह एकदम से पूरे कद्दू की शराब पी गया। इससे उसे तेज नशा चढ़ आया। वह गाने लगा और झूमने और डगमगाने लगा। जब मेरी गर्दन पर उसकी पकड़ ढीली हो गई तो मैंने उसे पृथ्वी पर पटक

दिया। उसके गिरते ही मैंने एक पत्थर से उसका सिर कुचल -कुचलकर उसे मार डाला। मुझे उसी पकड़ से छूट कर बड़ा सुख मिला और मैं समुद्र तट पर आ गया।

संयोग से उसी समय एक जहाज के कुछ लोग जहाज में मीठा पानी भरने उस द्वीप में उतरे। उन्हें मेरी कहानी सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, 'क्या तुम सचमुच इस बूढ़े के हाथ पड़े थे? उसने तो न जाने कितनों को इसी तरह दौड़ाकर और गला घोंटकर मार डाला है। उसके हाथ से कोई नहीं बचा। तुम वास्तव में बहुत भाग्यशाली हो। इस द्वीप के अंदर कोई नहीं जाता, सभी इससे भय खाते हैं।' फिर वे मुझे अपने जहाज पर ले आए। कप्तान ने भी मेरा हाल सुनकर मुझ पर दया की और बगैर किराए के पूरी सुविधा के साथ मुझे ले चला। यात्रा के दौरान एक बड़े व्यापारी से मेरी गहरी मित्रता हो गई।

एक अन्य द्वीप पर पहुँच कर उस व्यापारी ने अपने कई नौकर जमीन पर भेजे और मुझे एक टोकरा देकर कहा कि इनके साथ चले जाओ और जैसा यह करें वैसा ही तुम भी करना और इनसे अलग न होना वरना बड़ी मुसीबत में फँस जाओगे।' मैं सब आदमियों के साथ टापू पर उतर गया। द्वीप पर नारियल के बहुत-से पेड़ थे किंतु वे इतने ऊँचे थे कि उन पर चढ़ना असंभव लगता था। वहाँ बहुत-से बंदर भी थे। वे हमारे डर से तुरंत पेड़ों पर चढ़ गए। अब मेरे साथियों ने यह किया कि ढेले-पत्थर जमा किए और बंदरों पर फेंकने लगे। मैंने भी ऐसे ही किया। बंदर क्रोध में आ कर नारियल तोड़ तोड़कर हम लोगों के सिरों पर फेंकने लगे। कुछ ही देर में सारी जमीन पर नारियल बिछ गए। हम लोगों ने नारियलों से टोकरे भरे। मैं इस प्रकार नारियल प्राप्त होने पर आश्चर्य में पड़ गया। फिर मैं उन लोगों के साथ शहर में आया जहाँ नारियल अच्छे दामों में बिक गए।

व्यापारी ने नारियलों की कीमत में मेरा हिस्सा मुझे देकर कहा कि तुम रोज इसी तरह जाकर नारियल जमा किया करो और उनसे जो पैसा मिले उसे बचाते जाओ। कुछ दिनों में तुम्हारे पास इतना धन इकट्ठा हो जाएगा कि आसानी से अपने देश को वापस जा सकोगे। मैंने उसकी बात मानी और कई दिन तक इसी तरह नारियल बेचता रहा। मेरा पास इस सौदे से पर्याप्त धन हो गया।

कुछ दिनों बाद जिस जहाज ने मुझे बचाया था वह उस बंदरगाह से चला गया। मैं वहीं रुक गया क्योंकि मैं दूसरी ओर जाना चाहता था। मैंने बहुत-से नारियल अपने पास भी जमा कर लिए थे। कुछ दिनों में एक जहाज उधर जाने वाला आया जिधर मैं जाना चाहता था। मैं अपनी नारियल की खेप लेकर सवार हुआ। वहाँ से जहाज उस द्वीप में आया जहाँ काली मिर्च पैदा होती है। वहाँ से हम लोग उस टापू में गए जहाँ चंदन और आबनूस के पेड़ बहुतायत से हैं। वहाँ के निवासी न तो मदिरापान करते हैं न अन्य किसी प्रकार के कुकर्म करते हैं। उन दोनों द्वीपों में मैंने नारियल बेच कर काली मिर्च और चंदन खरीदा। इसके अतिरिक्त कई अन्य व्यापारियों के सलाह से मैं समुद्र से मोती निकलवाने की योजना में उनका भागीदार बन गया। हम लोगों ने बहुत से गोताखोरों को मजदूरी पर लगाया। भगवान की कुछ ऐसी कृपा हुई कि मेरे गोताखोरों ने अन्य गोताखोरों की अपेक्षा कहीं अधिक मोती निकाले और मेरे मोती अन्य मोतियों से बड़े और सुडौल भी थे। इसके

बाद मैं एक जहाज पर बसरा बंदरगाह आ गया। वहाँ पर मैंने काली मिर्च, चंदन और मोतियों को बेचा तो मेरी आशा से कहीं अधिक लाभ हुआ। मैंने उसका दसवाँ भाग दान में दे दिया और अपने सुख सुविधा की वस्तुएँ खरीदकर बगदाद में अपने घर पर आकर रहने लगा।

पाँचवी यात्रा का वृत्तांत सुनाकर सिंदबाद ने हिंदबाद को फिर चार सो दीनारें दीं और उसे तथा अन्य मित्रों को विदा करके अगले दिन फिर नया यात्रा वृत्तांत सुनने के लिए आमंत्रित किया। अगले दिन सब आए और खाना पीना होने के बाद यात्रा वृत्तांत आरंभ हो गया।

सिंदबाद जहाजी की छठी यात्रा

सिंदबाद ने हिंदबाद और अन्य लोगों से कि आप लोग स्वयं ही सोच सकते हैं कि मुझ पर कैसी मुसीबतें पड़ीं और साथ ही मुझे कितना धन प्राप्त हुआ। मुझे स्वयं इस पर आश्चर्य होता था। एक वर्ष बाद मुझ पर फिर यात्रा का उन्माद चढ़ा। मेरे सगे-संबंधियों ने मुझे बहुत रोका किंतु मैं न माना। आरंभ में मैंने बहुत-सी यात्रा थल मार्ग से की और फारस के कई नगरों में जाकर व्यापार किया। फिर एक बंदरगाह पर एक जहाज पर बैठा और नई समुद्र यात्रा शुरू की।

कप्तान की योजना तो लंबी यात्रा पर जाने की थी किंतु वह कुछ समय बाद रास्ता भूल गया। वह बराबर अपनी यात्रा पुस्तकों और नक्शों को देखा करता था ताकि उसे यह पता चले कि कहाँ है। एक दिन वह पुस्तक पढ़ कर रोने-चिल्लाने लगा। उसने पगड़ी फेंक दी और बाल नोचने लगा। हमने पूछा कि तुम्हें यह क्या हो गया है, तो उसने कुछ देर में बताया कि यहाँ एक समुद्री धारा हमें एक ओर लिए जाती हैं, वह हमें एक तट पर ऐसा पटकेगी कि हमारा जहाज टूट जाएगा और हम सब उसी तट पर मर जाएँगे। यह कहकर उसने जहाज के पाल उतरवा दिए।

उससे कुछ न हुआ। धारा के वेग से उछल कर जहाज पहाड़ी से टकराया और शीशे की तरह बिखर गया। चूँकि तट ही पर यह हुआ था इसीलिए हम लोग खाद्य सामग्री और अन्य सामान किनारे पर ले आए। कप्तान ने कहा 'भाग्य पर किसी का वश नहीं है। अब हम सब लोग एक-दूसरे के गले लगकर रो लें और अपनी-अपनी कब्रें खोद लें क्योंकि यहाँ से कोई बचकर नहीं गया है।' यह सुनकर हम लोग एक-दूसरे के गले लगकर रोने लगे क्योंकि हमने देखा कि किनारे पर दूर-दूर तक जहाजों के टुकड़े और मानव कंकाल बिखरे पड़े थे। मालूम होता था कि हजारों यात्री वहाँ आकर मर गए हैं। चारों ओर उनके व्यापार की वस्तुएँ बिखरी पड़ी थीं।

उस पहाड़ पर बिल्लौर और लाल की खदान थीं। पास ही कई नदियाँ एक स्थान पर मिलकर एक गुफा के अंदर जाती थीं। उस पहाड़ से राल टपक कर समुद्र में गिरती थी और मछलियाँ उसे खाकर कुछ समय बाद उसे उगल देती थीं। वही अभ्रक बन जाती थी। उस अभ्रक के ढेर भी वहाँ थे। समुद्र में समुद्री धारा से बचना इसीलिए असंभव था कि पहाड़ की ऊँचाई के कारण जहाजों को विपरीत दिशा में खींच ले जाने वाली तेज हवा रुक जाती थी। पहाड़ इतना ऊँचा था कि उस पर चढ़कर दूसरी ओर जा निकलना भी असंभव था।

हम लोग अपने दुर्भाग्य पर रोते रहे और अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहे। जहाज पर से लाया हुआ खाना हमने बराबर बाँट लिया। हममें से जो भी मरता बाकी लोग कब्र खोदकर उसे दफन कर देते थे। मैं ही सबसे अधिक मुर्दे गाड़ा करता और उनका बचा हुआ भोजन ले लेता। इस प्रकार मेरे पास खाद्य सामग्री काफी हो गई। धीरे- धीरे मेरे सभी

साथी मर गए। अकेला रह जाने के कारण मैं और भी दुखी हुआ। मैंने भी अपनी कब्र खोद ली ताकि मरने का समय आए तो उसमें जा लेटूँ।

मैं रात-दिन अपने को धिक्कारता था कि घर पर इतना सुख का जीवन छोड़कर यहाँ मंदगामी मौत मरने के लिए क्यों आया। किंतु पछताने से क्या होना था। भगवान की दया से एक रात अचानक एक विचार मेरे मन में आया। मैंने सोचा कि नदियाँ मिलकर एक बड़ी नदी के रूप में जब खोह के अंदर बहती ही जाती हैं तो खोह के बाद कहीं और निकलती भी होंगी। इसीलिए मैंने सोचा कि किसी तरह इस नदी के सहारे ही किसी देश में जा निकलूँ। किनारे पर बीसियों जहाज टूटे पड़े थे। मैंने तख्तों को जोड़- जाड़कर एक नाव बनाई। मैंने सोचा कि किनारे पर तो मरना निश्चित ही है, नदी में जाने पर भी अधिक से अधिक मौत ही होगी और हो सकता है कि बच ही जाऊँ।

बचने की आशा में मैंने नाव पर खाद्य सामग्री के अलावा वहाँ पड़े हुए असंख्य रत्नों और मृत यात्रियों के बिखरे हुए सामान की बहुमूल्य वस्तुओं में से चुन-चुनकर चीजें जमा की ओर उनकी कई गठरियाँ बनाईं। नाव को नदी के किनारे लाकर मैंने उसके दोनों ओर गठरियाँ रखीं ताकि नाव बहुत हल्की भी न रहे और संतुलित भी रहे। यह करने के बाद मैंने डाँड़ सँभाली और ईश्वर का नाम लेकर नदी में नाव छोड़ दी।

नाव गुफा में गई तो बिल्कुल अँधेरे में आ गई। मुझे दिखाई न देता था। नाव को कभी धारा पर छोड़कर सुस्ताने लगता, कभी खेने लगता। कहीं-कहीं गुफा की छत इतनी नीचे थी कि मेरे सिर पर टकराती थी। अपने पास जो मैंने रख लिया था उसमें से बहुत थोड़ा-थोड़ा खाता था ताकि जीवित भर रह सकूँ। कुछ समय के बाद मुझ पर निद्रा का ऐसा प्रकोप हुआ कि मैं सो गया तो घंटों तक सोता रहा। जब जागा तो देखा कि नाव खुले में नगर के समीप नदी के तट पर बँधी हुई है। मैंने देखा कि मेरे चारों ओर बहुत- से श्याम वर्ण लोग हैं। मैंने इन्हें सलाम करके उनका हाल-चाल पूछा।

उन्होंने उत्तर में कुछ कहा किंतु मैं उसे बिल्कुल न समझ सका।

खैर, आदमियों के बीच पहुँचकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैंने ऊँचे स्वर में अपनी भाषा अरबी में भगवान को धन्यवाद दिया और कहा कि भगवान क्षण-क्षण पर मनुष्य की सहायता करता है और मनुष्य को चाहिए कि उसकी अनुकंपा से निराश न हो और मुझे भी उचित है कि आँख बंद करके स्वयं भगवान के सहारे छोड़ दूँ।

उन लोगों में से एक को अरबी भाषा आती थी। मेरी बातें सुनकर वह मेरे पास आया और कहने लगा, 'तुम हम लोगों को देखकर चिंता न करो। हम लोग इस क्षेत्र के वासी हैं। हम यहाँ नदी से अपने खेतों में पानी देने के लिए आते हैं। आज नदी में पानी कम आ रहा था जैसे धारा को कोई चीज रोके हुए हो। हमने आगे जाकर देखा तो एक मोड़ पर तुम्हारी नाव टेढ़ी होकर अटकी थी जिससे पानी धारा में आना कम हो गया था। हममें से एक व्यक्ति तैर कर गया और तुम्हारी नाव को उसने फिर सीधा करके धारा में डाला। फिर

हमने तुम्हारी नाव यहाँ बाँध दी। अब तुम बताओ कि कौन हो और कहाँ से आए हो।'

मैंने उससे कहा कि मेरी भूख से जान निकली जा रही है, पहले कुछ खाने को दो। उन लोगों ने कई तरह की खाने की चीजें दीं। फिर मैंने आरंभ से अंत तक अपना हाल उन्हें बताया। उन लोगों को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें अपने बादशाह के पास ले जाएँगे, वहाँ तुम उन्हें अपना हाल सुनाना। मैंने कहा, मैं इसके लिए तैयार हूँ।

वे लोग मेरी गठरियाँ उठा कर मेरे साथ चले। यह सरान द्वीप (लंका) था। मैंने राज दरबार में प्रवेश किया और सिंहासन पर बैठे राजा को देखकर हिंदुओं की प्रथानुसार उसे प्रणाम किया और उसके सिंहासन को चूमा। बादशाह ने पूछा, तू कौन है। मैंने कहा, मेरा नाम सिंदबाद जहाजी है, मैं बगदाद नगर का निवासी हूँ। उसने कहा, तू कहाँ जा रहा है और मेरे राज्य में कैसे आया। मैंने उसे अपनी यात्रा का वृत्तांत आद्योपांत बताया। उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आज्ञा दी कि सिंदबाद के जीवन का वृत्तांत लिख लिया जाए बल्कि सोने के पानी से लिखा जाए ताकि यह हमारे यहाँ के इतिहास की तथा अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकों में भी जगह पर सके।

उसने मेरी गठरियाँ खोलने की आज्ञा दी। उनमें के बहुमूल्य रत्नों तथा चंदनादि अन्य वस्तुओं को देखकर उसे और भी आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, 'महाराजाधिराज, यह सब आप ही का है, आप इसमें से जितना चाहें ले लें बल्कि सब कुछ लेना चाहें तो वह भी करें।' उसने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'नहीं, यह सब तेरा हैं, हम इसमें से कुछ नहीं लेंगे।' फिर उसने आज्ञा दी कि इस मनुष्य को इसके माल-असबाब के साथ एक अच्छे घर में ठहराओ, इसकी सेवा के लिए अनुचर रखो और हर प्रकार इसकी सुख-सुविधा का खयाल रखो। उसके सेवकों ने ऐसा ही किया और मुझे एक शानदार मकान में ले जाकर उतारा। मैं रोज राज दरबार जाया करता था और वहाँ से छुट्टी मिलने पर इधर-उधर घूम-फिर कर राज्य की देखने योग्य चीजें देखा करता था।

सरान द्वीप भूमध्य रेखा के किंचित दक्षिण में है। इसीलिए वहाँ सदैव ही दिन और रात बराबर होते हैं। उस द्वीप की लंबाई चालीस कोस है और इतनी ही उसकी चौड़ाई है। राजधानी के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। वहाँ से समुद्र तट तीन दिन की राह पर है। वहाँ लाल (मणि) तथा अन्य रत्नों की कई खानें हैं और वहाँ कोरंड नामी पत्थर भी पाया जाता है जिससे हीरों और अन्य रत्नों को काटते और तराशते हैं। वहाँ नारियल के तथा अन्य कई फलों के वृक्ष भी बहुतायत से हैं। वहाँ के समुद्र में मोती भी बहुत मिलते हैं। हजरते आदम, जो कुरान और बाइबिल के अनुसार मनुष्यों के आदि पुरुष हैं, जब स्वर्ग से उतारे गए थे तो इसी द्वीप के एक पहाड़ पर लाए गए थे।

जब मैं वहाँ खूब घूम-फिर कर देख चुका तो मैंने बादशाह से निवेदन किया कि अब मुझे मेरे देश जाने की अनुमति दीजिए। उसने मुझे अनुमति ही नहीं बल्कि कई बहुमूल्य वस्तुएँ

इनाम के तौर पर भी दीं। उसने खलीफा हारूँ रशीद के नाम एक पत्र और बहुत-से उपहार भी मुझे दिए कि मैं उन्हें खलीफा तक पहुँचा दूँ। मैंने सिर झुका कर यह स्वीकार किया। बादशाह ने मेरे ले जाने के लिए एक मजबूत जहाज का प्रबंध किया और कप्तान और खलासियों को ताकीद की कि सिंदबाद को बड़े सम्मान से उसके देश में पहुँचाना, रास्ते में इसे किसी प्रकार की असुविधा न हो।

सरान द्वीप के बादशाह ने जो पत्र खलीफा के नाम दिया था वह पीले रंग के नरम चमड़े पर लिखा था। यह चमड़ा किसी पशु विशेष का था और बहुत ही मूल्यवान था। उस पर बैंगनी स्याही से पत्र लिखा था। पत्र का लेख इस प्रकार था, 'यह पत्र सरान द्वीप के बादशाह की ओर से भेजा जा रहा है। उस बादशाह की सवारी के आगे एक हजार सजे-सजाए हाथी चलते हैं, उसका राजमहल ऐसा शानदार है जिसकी छतों में एक लाख मूल्यवान रत्न जड़े हैं और उसके खजाने में अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त बीस हजार हीरे जड़े मुकुट रखे हैं। सरान द्वीप का बादशाह खलीफा हारूँ रशीद को निम्नलिखित उपहार भातृभाव से भेज रहा है। वह चाहता है कि खलीफा और उसके दृढ़ मैत्री संबंध हो जाएँ और एक-दूसरे का अहित हम दोनों न चाहें। मैं सरान द्वीप का बादशाह खलीफा की कुशल-क्षेम चाहता हूँ।'

जो उपहार बादशाह ने खलीफा को भेजे थे उनमें मणि का बना हुआ एक प्याला था जिसका दल पौन गिरह (लगभग पौने दो इंच) मोटा था और उसके चारों ओर मोतियों की झालर थी। झालर के मोतियों में प्रत्येक तीन माशे के वजन का था। एक बिछौना अजगर की खाल का, जो एक इंच से अधिक मोटा था। इस बिछौने की विशेषता यह थी कि उस पर सोने वाला आदमी कभी बीमार नहीं पड़ता था। तीसरा उपहार एक लाख सिक्कों के मूल्य की चंदन की लकड़ी थी। चौथा उपहार तीस दाने कपूर के थे जो एक-एक पिस्ते के बराबर थे। पाँचवाँ उपहार एक दासी थी जो अत्यंत ही रूपवती थी और अति मूल्यवान वस्त्राभूषणों से सुसज्जित थी।

हमारा जहाज कुछ समय की यात्रा के बाद सकुशल बसरा के बंदरगाह में पहुँच गया। मैं अपना सारा माल और खलीफा के लिए भेजा गया पत्र और उपहार लेकर बगदाद आया। सब से पहले मैंने यह किया कि उस दासी को - जिसे मैंने परिवार के युवकों से सुरक्षित रखा था - तथा अन्य उपहार और पत्र लेकर खलीफा के राजमहल में पहुँचा। मेरे आने की बात सुनकर खलीफा ने मुझे तुरंत बुला भेजा। उस के सेवकगण मुझे सारे सामान के साथ खलीफा के सम्मुख ले गए। मैंने जमीन चूमकर खलीफा को पत्र दिया। उसने पत्र को पूरा पढ़ा और फिर मुझ से पूछा, 'तुमने तो सरान द्वीप के बादशाह को देखा है, क्या वह ऐसा ही ऐश्वर्यशाली है जैसा इस पत्र में लिखा है?

मैंने कहा, 'वह वास्तव में ऐसा ही है जैसा उसने लिखा है। उसने पत्र में बिल्कुल अतिशयोक्ति नहीं की, मैंने उसका ऐश्वर्य और प्रताप अपनी आँखों से देखा है। उसके राजमहल की शान-शौकत का शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। जब वह कहीं जाता है तो सारे मंत्री और सामंत अपने-अपने हाथियों पर सवार होकर उसके आगे-पीछे चलते हैं।

उसके अपने हाथी के हौदे के सामने अंग रक्षक सुनहरे काम के बरछे लिए चलते हैं और पीछे सेवक मोरछल हिलाता रहता है। उस मोरछल के सिरे पर एक बहुत बड़ा नीलम लगा हुआ है। सारे हाथियों के हौदे और साज-सामान ऐसे सुसज्जित हैं जिसका वर्णन मेरे वश की बात नहीं है।

'जब बादशाह की सवारी चलती है तो एक उद्घोषक उच्च स्वर में कहता है कि शानदार बादशाह की सवारी आ रही है जिसके महल में एक लाख रत्न जड़े हैं और जिसके पास बीस हजार हीरक जटित मुकुट हैं और जिसके सामने कोई राजा नहीं ठहर सकता चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान।'

'पहले उद्घोषक के बोलने के बाद दूसरा उद्घोषक कहता है कि बादशाह के पास चाहे जितना ऐश्वर्य हो मरना तो इसके लिए प्रारब्ध है। इस पर पहला कहता है कि इसे सब लोगों का आशीर्वाद मिलना चाहिए कि यह अनंत जीवन पाए।

'यह बादशाह इतना न्यायप्रिय है कि इसके राज्य में न कोई न्यायाधीश है न कोतवाल। उसकी प्रजा ऐसी सुबुद्ध है कि कोई न किसी पर अन्याय करता है न किसी को दुख पहुँचाता है। चूँकि सब लोग बड़े मेल-मिलाप से रहते हैं इसीलिए कोई जरूरत ही नहीं पड़ती कि व्यवस्था ऊपर से कायम की जाए। इसीलिए सरान द्वीप के राज्य में न पुलिस या कोतवाल रखे गए हैं न न्यायाधीश।'

खलीफा ने यह सुनकर कहा कि तुम्हारे वर्णन और इस पत्र से जान पड़ता है कि वह बादशाह बड़ा ही समझदार और होशियार है, इसीलिए इतनी अच्छी व्यवस्था कर पाता है कि पुलिस आदि की आवश्यकता ही न हो। यह कहकर खलीफा ने मुझे खिलअत (सम्मान परिधान) दी और विदा किया।

यह कहानी कहकर सिंदबाद ने कहा कि आप लोग कल फिर आएँ तो मैं अपनी सातवीं और अंतिम समुद्र यात्रा का वर्णन करूँगा। यह कहकर उसने चार सौ दीनारें हिंदबाद को दीं। दूसरे दिन भोजन के समय हिंदबाद आया और सिंदबाद के मुसाहिब भी आए। भोजनोपरांत सिंदबाद ने कहानी शुरू की।

सिंदबाद जहाजी की सातवीं यात्रा

सिंदबाद ने कहा, दोस्तो, मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि अब कभी जल यात्रा न करूँगा। मेरी अवस्था भी इतनी हो गई थी कि मैं कहीं आराम के साथ बैठ कर दिन गुजारता। इसीलिए मैं अपने घर में आनंदपूर्वक रहने लगा। एक दिन अपने मित्रों के साथ भोजन कर रहा था कि एक नौकर ने आ कर कहा कि खलीफा के दरबार से एक सरदार आया है, वह आपसे बात करना चाहता है। मैं भोजन करके बाहर गया तो सरदार ने मुझसे कहा कि खलीफा ने तुम्हें बुलाया है। मैं तुरंत खलीफा के दरबार को चल पड़ा।

खलीफा के सामने जा कर मैंने जमीन चूम कर प्रणाम किया। खलीफा ने कहा, 'सिंदबाद, मैं चाहता हूँ कि सरान द्वीप के बादशाह के पत्र के उत्तर में पत्र भेजूँ और उसके उपहारों के बदले उपहार भेजूँ। तुम यह सब ले जा कर सरान द्वीप के बादशाह को पहुँचा दो।'

मुझे यह आदेश पा कर बड़ी परेशानी हुई। मैंने हाथ जोड़ कर कहा, 'हे समस्त मुसलमानों के अधिपति, मुझ में आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस तो नहीं है किंतु मैंने समुद्र की कई यात्राएँ की हैं और हर एक में ऐसे ऐसे जानलेवा कष्ट झेले हैं कि अब दृढ़ निश्चय किया है कि कभी जहाज पर पाँव नहीं रखूँगा।' यह कह कर मैंने खलीफा को संक्षेप में अपनी छहों यात्राओं की विपदा सुनाई। खलीफा को यह सब सुन कर आश्चर्य बहुत हुआ किंतु उसने अपना निर्णय न बदला। उसने कहा, 'वास्तव में तुम पर बड़े कष्ट पड़े हैं लेकिन मेरे कहने से एक बार और यात्रा करो क्योंकि इस काम को तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। फिर तुम कभी यात्रा न करना।'

मैंने देखा कि खलीफा अपने निश्चय से हटनेवाला नहीं है और तर्क-वितर्क से कोई लाभ न होगा इसीलिए मैंने यात्रा पर जाना स्वीकार कर लिया। खलीफा ने मुझे राह खर्च के लिए चार हजार दीनार देने को कहा और कहा कि तुम तुरंत ही अपने घर जाओ और घर की व्यवस्था ठीक करके यात्रा की तैयारी शुरू कर दो। मैं घर जा कर अपने काम- काज को समेटने लगा और यात्रा के लिए तैयारी करके कुछ दिनों के बाद खलीफा के दरबार में जा पहुँचा।

मुझे खलीफा के सामने हाजिर किया गया। मैंने रीति के अनुसार धरती चूम कर खलीफा को प्रणाम किया। खलीफा मुझे देख कर प्रसन्न हुआ और उसने मेरी कुशलक्षेम पूछी। मैंने भगवान की अनुकंपा और खलीफा की दया की प्रशंसा की। खलीफा ने मुझे चार हजार दीनार यात्रा व्यय के लिए दिलाए।

मैं खलीफा की आज्ञानुसार उसके दिए हुए उपहार ले कर बसरा बंदरगाह पर आया और वहाँ से एक जहाज ले कर सरान द्वीप को चल दिया। यात्रा निर्विघ्न समाप्त हुई। मैं सूचना दे कर सरान द्वीप के बादशाह के सामने गया और अपना परिचय दिया। उसने कहा, हाँ सिंदबाद, मैंने तुम्हें पहचान लिया। तुम कुशल-मंगल से तो हो। मैंने बादशाह की

न्यायप्रियता और मृदु स्वभाव की प्रशंसा की और कहा कि मैं खलीफा की ओर से आपके लिए कुछ भेंट और एक पत्र लाया हूँ।

खलीफा ने जो उपहार भेजे थे उनमें अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त एक अत्यंत सुंदर लाल रंग का कालीन था जिसका मूल्य चार हजार दीनार था। उस पर बहुत ही सुंदर सुनहरा काम किया हुआ था। एक प्याला माणिक का था जिसका दल एक अंगुल मोटा था। प्याले पर एक मनुष्य का चित्र बना था जो तीर-कमान से एक शेर का शिकार कर रहा था। एक राज सिंहासन भी था, जो ऊपर से नीचे तक रत्नों से जड़ा था और हजरत सुलेमान के तख्त को भी मात करता था। इसके अलावा और बहुत-सी मूल्यवान और दुर्लभ वस्तुएँ थीं। उपहारों को देखने के बाद बादशाह ने खलीफा का पत्र पढ़ा।

खलीफा ने अपने पत्र में लिखा था, 'आपको अब्दुल्ला हारूँ रशीद का, जो भगवान की दया से अपने पूर्वजों का उत्तराधिकारी है, प्रणाम पहुँचे। हमें आपका पत्र और आपके भेजे हुए उपहार प्राप्त हुए। हमें इन बातों से बड़ी प्रसन्नता है कि हम आप के उपहारों के बदले में कुछ उपहार आप को भेज रहे हैं। हमें पूर्ण आशा है कि यह पत्र आपकी सेवा में पहुँचेगा और इससे आपको ज्ञात होगा कि आपके लिए हमारे मन में कितना प्रेम हैं।'

सरान द्वीप का बादशाह यह पत्र पढ़ कर बहुत खुश हुआ। अब मैंने विदा माँगी। वह अपनी कृपालुता के कारण मुझे विदा न करना चाहता था किंतु जब मैंने इसके लिए बार - बार अनुनय की तो उसने मुझे खिलअत (सम्मान परिधान) तथा बहुत - सा इनाम दे कर विदा किया। मैं अपने जहाज पर वापस आया और कप्तान से कहा कि मैं शीघ्रातिशीघ्र बगदाद पहुँचना चाहता हूँ। उसने जहाज को तेज चलाया किंतु भगवान की कुछ और ही इच्छा थी। हमारा जहाज चले तीन-चार ही दिन हुए थे कि समुद्री लुटेरों ने आ कर हमें घेर लिया। हम उनका सामना करने में असमर्थ रहे। लुटेरों ने जहाज का सारा सामान भी लूट लिया और हम सब लोगों को भी बंदी बना लिया। हममें से जिन लोगों ने प्रतिरोध करना चाहा उन्हें लुटेरों ने मार डाला। फिर लुटेरों ने हम लोगों के कपड़े उतार कर गुलामों जैसे कपड़े, जो गाढ़े के बने होते हैं, पहनाए और एक दूरस्थ द्वीप में ले जा कर हमें बेच डाला।

मुझे एक मालदार व्यापारी ने खरीद लिया। उसने अपने घर ले जा कर मुझे अपने गुलामों जैसे कपड़े पहनाए और मुझे खाने-पीने को दिया। वह यह तो जानता नहीं था कि मैं कौन हूँ और क्या करता हूँ। उसने एक दिन मुझसे पूछा कि तुम्हें कोई काम आता है या नहीं तब मैंने बताया कि मेरा धंधा व्यापार का था और समुद्री लुटेरों ने हमारा जहाज लूट लिया और हम लोगों को गुलाम बना कर बेच दिया। मालिक ने पूछा कि तुम्हें तीर चलाना आता है या नहीं। मैंने कहा कि बचपन में मैंने इसका अभ्यास किया था और अब भी इसे भूला नहीं हूँगा।

अब मालिक ने धनुष-बाण दे कर मुझे अपने साथ एक हाथी पर बैठाया और नगर से कई दिनों की राह पर स्थित एक बड़े वन में गया। वहाँ एक बड़ा वृक्ष दिखा कर कहा कि इस

पर छुप कर बैठो और इधर से जो हाथी निकले तो उसे मारो, जब कोई हाथी शिकार हो जाए तो मुझे आ कर बताओ।

यह कह कर उसने मेरे पास कई दिनों के लिए भोजन रख दिया और स्वयं वापस शहर को चला गया।

मैं वृक्ष पर चढ़ गया। रात भर प्रतीक्षा करता रहा किंतु कोई हाथी न दिखाई दिया। दूसरे दिन सवेरे के समय वहाँ हाथियों का एक झुंड आया। मैंने कई तीर छोड़े और एक हाथी घायल हो कर गिर पड़ा और अन्य हाथी भाग गए। मैं शहर में आया और अपने मालिक को बताया कि मेरे तीर से एक हाथी गिरा है। वह यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन मुझे खिलाए। दूसरे दिन हम दोनों उसी जंगल में गए। मालिक के कहने पर मैंने गड्ढा खोद कर हाथी को गाड़ दिया। मालिक ने कहा, जब हाथी सड़ जाए तो उसके दाँत निकाल कर ले आना क्योंकि यह बहुमूल्य वस्तु है।

मैं दो महीने तक यही काम करता रहा। मैं उसी वृक्ष पर चढ़ता-उतरता रहता था। मैंने इस बीच कई हाथियों को निशाना बनाया। एक दिन मैं उस वृक्ष पर चढ़ा था कि हाथियों का एक विशाल समूह आया। वे सब पेड़ को घेर कर खड़े हो गए और अत्यंत भयानक रव करने लगे। वे संख्या में इतने अधिक थे कि सारी धरती काली दिखाई देती थी और उनके पैरों की धमक से भूकंप आ रहा था। उन्होंने मुझे देख लिया था और वे पेड़ को उखाड़ने लगे। यह देख कर मैं डर के मारे अधमरा हो गया। तीर-कमान मेरे हाथ से गिर पड़े। एक बड़े हाथी ने अंततः सूँड़ लपेट कर उस वृक्ष को उखाड़ ही डाला। मैं धरती पर गिर गया। उसने मुझे उठा कर पीठ पर रख लिया।

मैं मुर्दे की तरह उसकी पीठ पर पड़ा रहा। वह मुझे ले कर एक ओर चला और शेष हाथी उसके पीछे चले। हाथी मुझे एक लंबे-चौड़े मैदान में ले गए और मुझे उतार कर एक ओर चले गए और अदृश्य हो गए। फिर मैं उठा और चारों ओर देखने लगा। कुछ दूर पर मुझे एक बड़ा खड्ढा दिखाई दिया जिसमें हाथियों के अस्थिपंजरों के ढेर लगे थे। अब मैंने सोचा कि हाथी कितना बुद्धिमान जीव होता है। जब हाथियों ने देखा कि मैं उनके दाँतों के लिए ही उनका शिकार करता हूँ तो उन्होंने खुद मुझे यहाँ ला कर यह खड्ड दिखाया और यह इशारा किया कि तुम हमें मत मारो बल्कि यहाँ से जितने चाहो हाथी दाँत ले लो। मालूम होता था कि जब कोई हाथी मृत्यु के निकट होता है तो खड्ड में गिर कर मर जाता है।

मैं वहाँ एक क्षण के लिए ही ठहरा और वापस अपने मालिक के यहाँ पहुँचा। रास्ते में मुझे एक भी हाथी नहीं दिखाई दिया। मालूम होता था कि सभी हाथी उस जंगल को छोड़ कर किसी दूर के जंगल में चले गए थे। मेरा मालिक मुझे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, 'अरे अभागे सिंदबाद, तू अभी तक कहाँ था? मैं तो तेरी चिंता में मरा जा रहा था। मैं तुझे ढूँढ़ता हुआ उस जंगल में गया तो देखा कि पेड़ उखड़ा पड़ा है और तेरे तीन-कमान जमीन पर पड़े हैं। मैंने बहुत खोजा किंतु तेरा पता न मिला। मैं तेरे जीवन से निराश

हो कर बैठ गया था। अब तू अपना पूरा हाल सुना। तुझ पर क्या बीती और तू अब तक किस प्रकार जीवित बचा है?'

मैंने व्यापारी को पूरा हाल सुनाया। वह उस खड्ड की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। मेरे साथ वह उस खड्ड तक पहुँचा और जितने हाथी दाँत उसके हाथी पर लद सकते थे उन्हें लाद कर शहर वापस आया। फिर उसने मुझ से कहा, 'भाई, आज से तुम मेरे गुलाम नहीं हो। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है, तुम्हारे कारण मेरे पास अपार धन हो जाएगा। मैंने तुम से अभी तक एक बात छुपा रखी थी। मेरे कई गुलाम हाथियों ने मार डाले हैं। जो कोई हाथियों के शिकार को जाता था दो या तीन दिन से अधिक नहीं जी पाता था। भगवान ने तुम्हें हाथियों से बचाया। इससे मालूम होता है कि तुम बहुत दिन जिओगे। इससे पहले बहुत-से गुलाम खो कर भी मैं मामूली लाभ ही पाता था, अब तुम्हारे कारण मैं ही नहीं इस नगर के सारे व्यापारी संपन्न हो जाएँगे। मैं तुम्हें न केवल स्वतंत्र करूँगा बल्कि तुम्हें बड़ी धन-दौलत भी दूँगा और अन्य व्यापारियों से भी बहुत कुछ दिलवाऊँगा।'

मैंने कहा, 'आप मेरे स्वामी हैं। भगवान आपको चिरायु करे। मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आपने समुद्री डाकुओं के पंजे से मुझे छुड़ा लिया और मेरा बड़ा भाग्य था कि मैं इस नगर में आ कर बिका। अब मैं आपसे और अन्य व्यापारियों से इतनी दया चाहता हूँ कि मुझे मेरे देश पहुँचा दें।' उसने कहा, 'तुम धैर्य रखो। जहाज यहाँ पर एक विशेष ॠतु में आते हैं और उनके व्यापारी हमसे हाथी दाँत मोल लेते हैं। जब वे जहाज आएँगे तो हम लोग तुम्हारे देश को जाने वाले किसी जहाज पर तुम्हें चढ़ा देंगे।' मैंने उसे सैकड़ों आशीर्वाद दिए।

मैं कई महीनों तक जहाजों के आने की प्रतीक्षा करता रहा। इस बीच मैं कई बार जंगल में गया और हाथी दाँत लाया और इनसे उसका घर भर दिया। व्यापारियों को भी उस खड्ड के बारे में बताया और वे सभी वहाँ से हाथी दाँत ला कर अत्यंत संपन्न हो गए। जहाजों की ॠतु आने पर जहाज वहाँ पहुँचे। मेरे स्वामी व्यापारी ने अपने घर के आधे हाथी दाँत मुझे दे दिए और एक जहाज पर मेरे नाम से उन्हें चढ़ा दिया और अनेक प्रकार की खाद्य सामग्री भी मुझे दे दी। अन्य व्यापारियों ने भी मुझे बहुत कुछ दिया। मैं जहाज पर कई द्वीपों की यात्रा करता हुआ फारस के एक बंदरगाह पर पहुँचा। वहाँ से थल मार्ग से बसरा आया और हाथी दाँत बेच कर कई मूल्यवान वस्तुएँ ली। फिर बगदाद आ गया।

बगदाद आ कर मैं तुरंत ही खलीफा के दरबार में पहुँचा और उससे पत्र और उपहारों को सरान द्वीप के बादशाह के पास पहुँचाने का हाल कहा। खलीफा ने कहा कि मेरा ध्यान सदैव तुम्हारी कुशलता की ओर लगा रहता था और मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि तुम्हें सही-सलामत वापस लाए। जब मैंने अपना हाथियोंवाला अनुभव उसे सुनाया तो उसे यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने अपने एक लेखनकार को यह आदेश दिया कि मेरे वृत्तांत को सुनहरे अक्षरों में लिख ले और शाही अभिलेखागार में रखे। फिर उसने मुझे खिलअत और बहुत-से इनाम दे कर विदा किया।

सिंदबाद ने कहा कि मित्रो, इसके बाद मैं किसी यात्रा पर नहीं गया और भगवान के दिए हुए धन का उपभोग करता हूँ। फिर उसने हिंदबाद से कहा कि अब तुम बताओ कि कोई और मनुष्य ऐसा कहीं है जिसने मुझ से अधिक विपत्तियाँ झेली हों। हिंदबाद ने सम्मानपूर्वक सिंदबाद का हाथ चूमा और कहा, 'सच्ची बात तो यह है कि इन सात समुद्र यात्राओं के दौरान जितनी मुसीबत आपने उठाई और जितनी बार प्राणों के संकट से बच कर निकले उतनी किसी की भी शक्ति नहीं है। मैं अभी तक बिल्कुल अनजान था कि अपनी निर्धनता को रोता था और आपकी सुख-सुविधाओं से ईर्ष्या करता था। मैं रूखी-सूखी खाता हूँ किंतु भगवान को लाख धन्यवाद है कि अपने स्त्री-पुत्रों के बीच आनंद से रहता हूँ। ऐसी कोई विपत्ति मुझ पर नहीं आई जैसी विपत्तियाँ आपने उठाई हैं। वास्तव में जो सुख आप भोग रहे हैं आप उससे अधिक के अधिकारी हैं। भगवान करें आप सदैव इसी प्रकार ऐश्वर्यवान और सुखी रहें।'

सिंदबाद ने हिंदबाद को चार सौ दीनारें और दीं और उससे कहा कि तुम अब मेहनत-मजदूरी करना छोड़ दो और मेरे मुसाहिब हो जाओ। मैं सारी उम्र तुम्हारे स्त्री-बच्चों का भरण-पोषण करूँगा। हिंदबाद ने ऐसा ही किया और सारी आयु आनंद से बिताई।

ईसाई द्वारा सुनाई गई कहानी

ईसाई ने कहा, मैं मिस्र की राजधानी काहिरा का निवासी हूँ। मेरा बाप दलाल था। उस के पास काफी पैसा हो गया। उस ने मरने के बाद मैं ने भी वही व्यापार आरंभ किया। एक दिन मैं अनाज की मंडी में अपने दैनिक व्यापार के लिए गया तो मुझे अच्छे कपड़े पहने एक आदमी मिला। उस ने मुझे थोड़े-से तिल दिखा कर पूछा कि ऐसे तिल क्या भाव बिकते हैं। मैं ने कहा इनका मूल्य सौ मुद्रा प्रति मन है। उस ने कहा कि तुम इन्हें इस मूल्य पर बेच दो और खरीदनेवाला मिल जाए तो उसे मेरे पास ले आना, मैं फलाँ सराय में ठहरा हूँ।

मैं ने व्यापारियों से मोल-भाव किया तो उन्होंने कहा कि हम एक सौ मुद्रा प्रति मन पर सारे तिल खरीद लेंगे। मैं उस सराय में गया जहाँ का पता मुझे दिया गया था और व्यापारी ने गोदाम खुलवा कर अपना माल तुलवाया। वह एक सौ पचास मन निकला। माल गधों पर लदवा कर मैं ने मंडी के व्यापारियों को दिया और उन से उस का मूल्य ले कर सराय में गया और साढ़े सोलह हजार मुद्राएँ उस के आगे रखीं। उस ने कहा कि दस मुद्रा प्रति मन के हिसाब से डेढ़ हजार मुद्राएँ तो तुम्हारी ही हुईं, तुम इन्हें ले लो और बाकी पंद्रह हजार मुद्राएँ भी अपने पास रखो, जरूरत पड़ने पर मैं तुम से ले लूँगा।

यह कह कर वह अपने नगर को चला गया। एक महीने बाद मेरे पास आ कर बोला कि मेरा रुपया तुम्हारे पास है। मैं ने कहा, 'रुपया तैयार है, कहें तो अभी दे दूँ। लेकिन आप घोड़े से तो उतरिए और कुछ खा-पी कर ताजादम हो जाइए।' उस ने कहा, 'मुझे एक जरूरी काम से फौरन जाना है। तुम रुपए निकलवा रखो। मैं थोड़ी देर में लौट कर तुम से ले लूँगा।'

मैं ने रुपए निकलवा लिए लेकिन वह लौट कर न आया। एक महीने तक उस की प्रतीक्षा करने के बाद मैं ने उस की रकम को सुरक्षापूर्वक तहखाने में रखा। तीन महीने बाद वह मुझे फिर दिखाई दिया। मैं ने उस से कहा कि आप अपनी रकम तो ले लीजिए। उस ने हँस कर कहा, 'जल्दी क्या है, ले लूँगा। मैं जानता हूँ कि मेरा धन ईमानदार आदमी के पास है।' यह कह कर वह फिर चला गया।

एक वर्ष बाद वह फिर दिखाई दिया तो मैं ने कहा, 'अब तो आप अपना पैसा ले ही लीजिए, अगर आप इसे इस बीच व्यापार में लगाते तो अच्छा मुनाफा कमाते। खैर, अब मेरे घर चल कर भोजन करें और रुपया लें।' उस ने कहा, 'अच्छा चलता हूँ किंतु भोजन में कोई विशेष आयोजन न करना।'

मैं ने उस के सामने भोजन रखा। वह बाएँ हाथ से खाने लगा। मैं ने यह भी देखा कि वह हर काम बाएँ हाथ से करता था। मुझे यह देख कर इसका कारण जानने की उत्कंठा हुई। मैं ने सोचा कि यह व्यक्ति बड़ा सभ्य और सुसंस्कृत है, इस से इस बात का कारण पूछूँ तो यह बुरा न मानेगा। इसलिए जब हम लोग भोजन कर चुके और नौकर हमारे भोजन के

बर्तन ले गए तो हम लोग दूसरे दालान में जा बैठे। मैं ने उस का पान आदि से सत्कार किया और यह चीजें भी उस ने बाएँ हाथ से लीं।

मैं ने उस से कहा, 'अगर आप नाराज न हों तो एक बात पूछूँ। क्या कारण है कि आप जो भी काम करते हैं बाएँ हाथ ही से करते हैं। दाहिने हाथ से कुछ भी नहीं करते। यहाँ तक कि खाना भी आप ने बाएँ हाथ से ही खाया। उस ने यह सुन कर ठंडी साँस भरी और आस्तीन उलट कर दाहिना हाथ, जो हमेशा लंबी आस्तीन से ढका रहता था, मुझे दिखाया। मैं ने देखा कि उस का दाहिना हाथ कलाई से गायब है। मैं ने पूछा कि आपका हाथ कैसे कटा तो वह दुखी हो कर रोने लगा, फिर उस ने अपनी कहानी सुनाई।

उस ने कहा मैं बगदाद का रहनेवाला हूँ। मेरा पिता वहाँ के प्रमुख रईसों में से था। मैं ने मिस्र देश की बड़ी प्रशंसा सुनी थी और उसे देखना चाहता था, विशेषतः मिस्र की राजधानी काहिरा को देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी। जब तक मेरा बाप जिंदा रहा उस ने मुझे मिस्र को जाने की अनुमति न दी। जब उस का देहांत हो गया तो मैं स्वतंत्र हो गया और मैं ने बहुत दिनों की इच्छा की पूर्ति करना चाहा। मैं ने बगदाद और मोसिल की बहुत-सी व्यापार वस्तुएँ खरीदीं और मिस्र की ओर चल दिया। काहिरा पहुँच कर मैं एक सराय में उतरा। इस सराय का नाम मसरूर था। दो-चार दिन बाद मैं ने किराए पर एक घर और एक गोदाम लिया। मैं ने कुछ सेवक भी रखे और उन से कहा कि बाजार से मेरे खाने के लिए कुछ ले आओ। उन्होंने नाना प्रकार के व्यंजन मेरे सामने ला कर रखे। मैं ने भोजन कर के शहर की दर्शनीय मस्जिदें, किले आदि देखे और सारा दिन सैर सपाटे में बिताया।

दूसरे दिन मैं अच्छे कपड़े पहन कर अपनी गठरियों से दो-चार थान निकाल कर उन्हें बाजार ले गया ताकि उनके मूल्य का अनुमान करूँ। मेरा आगमन पहले ही लोगों को ज्ञात था इसलिए मेरे पास कई दलाल आ गए। उन्होंने मेरे थान बजाजों को दिखाए और उन्हें बेच डाला। मैं रोज थोड़ा-थोड़ा माल बाजार लाता और वह बिक जाता। किंतु मेरा घर बाजार से बहुत दूर था और मुझे माल लाने की मजदूरी काफी पड़ जाती थी। इसलिए दलालों ने मुझे सलाह दी कि 'यदि तुम हम पर विश्वास करो तो हम तुम्हें अच्छी तरकीब बताएँ। तुम अपना सारा बेचनेवाला माल इन व्यापारियों की दुकानों में रखवा दो। हर सप्ताह सिर्फ एक दिन सोमवार या गुरुवार को बाजार आया करो और व्यापारियों से अपने बिके हुए माल का दाम ले लिया करो। इसमें तुम्हारी रोज की मजदूरी भी बचेगी और समय भी। इस खाली समय में तुम नील नदी या अन्य सुंदर स्थानों की सैर करके जी बहलाया करना।'

मैं ने यह स्वीकार कर लिया। मैं दलालों को अपने घर ले गया और एक बार ही उन्हें सारा बिकनेवाला माल दे दिया। वे माल को ले कर मेरे साथ बाजार आए और सारा माल व्यापारियों की दुकानों पर रखवा दिया। उन्होंने मुझे मेरे माल की रसीद लिख दी और मैं ने भी लिख कर दे दिया कि मैं महीने-महीने आ कर बिके माल का दाम वसूल किया करूँगा। यह सब कर के मुझे बड़ा संतोष मिला और मैं ने अपने कुछ समवयस्कों से मित्रता कर के

उनके साथ घूमना-फिरना शुरू किया। अक्सर मैं उनके साथ बाजार भी जाता और वहाँ के मोल-भाव को देख कर ज्ञान और मनोरंजन प्राप्त करता।

एक दिन मैं बदरुद्दीन व्यापारी की दुकान पर बैठा हुआ था। एक अत्यंत संभ्रांत स्त्री, जो कीमती पोशाक और तरह-तरह के जेवर पहने थी और जिसके साथ कई साफ- सुथरी सेविकाएँ भी थीं, आ कर मेरे पास बैठ गई। मुझे इच्छा होने लगी कि वह अपने चेहरे से नकाब हटाए तो मैं नेत्र सुख उठाऊँ। उस ने मेरी इस इच्छा को समझ लिया और बहाने से दो क्षण के लिए नकाब को झटके से उठा दिया। मैं उस के अनुपम रूप को देख कर ठगा-सा रह गया। उस ने बदरुद्दीन से साधारण कुशल-क्षेम पूछने के बाद एक जरी का थान माँगा। उस ने एक थान दिखाया जो उस सुंदरी को पसंद आया। उस ने पूछा यह थान कितने का है, मैं इसे ले जाऊँगी और कल इसका दाम भिजवा दूँगी।

बदरुद्दीन ने कहा थान छह हजार छह सौ मुद्राओं का है किंतु यह इनका माल है और मैं ने इनसे वादा किया है कि उनके बिके हुए सारे माल की कीमत आज ही इन्हें दूँगा, अगर मेरा माल होता तो मुझे चिंता नहीं थी, आप जब भी चाहतीं इसका दाम दे देतीं। उस स्त्री ने कहा आप एक दिन के लिए भी नहीं ठहर सकते? बदरुद्दीन ने कहा कि मजबूरी है, मुझे आज ही इनके माल की कीमत देनी होगी। वह सुंदरी इस पर नाराज हो गई। उस ने थान बदरुद्दीन के सामने फेंक दिया और बोली, 'तुम व्यापारी लोगों में सभ्यता और शील बिल्कुल नहीं होता, तुम अपने अलावा किसी का विश्वास नहीं करते।' यह कह कर वह तमक कर उठ खड़ी हुई और दुकान से चल दी।

वह कुछ ही दूर गई थी कि मैं ने पुकार कर कहा कि आप आइए, मैं आप को कष्ट पहुँचाए बगैर सौदा कर लूँगा। वह स्त्री लौट आई क्योंकि उसे यह तो मालूम था कि माल का मालिक मैं हूँ। मैं ने वह थान उसे दे कर कहा कि आप इसे शौक से ले जाएँ, यह आप ही का है - चाहे दाम दें या न दें। वह यह सुन कर प्रसन्न हुई और बोली कि भगवान आप को धनी और सुखी रखे। मैं ने उस से चुपके से कहा, 'लेकिन आप को थान ले जाने के पहले यह करना होगा कि मुझे आप अपने अनूप रूप का रसास्वादन करने दें।' उस ने अपने मुख पर पड़ी हुई जाली की नकाब हटा दी। मैं पहले से भी अधिक चकित दृष्टि से उसे टकटकी बाँध कर देखने लगा। उस ने कुछ क्षणों के बाद नकाब फिर डाल लिया और थान उठा कर चली गई।

मैं कुछ देर तक अवाक और भ्रमित-सा बैठा रहा। फिर मैं ने व्यापारी बदरुद्दीन से पूछा कि यह स्त्री कौन है। उस ने कहा कि वह अमुक व्यापारी की पुत्री है, उसके पिता के पास असंख्य धन था, उस का देहांत हो गया है और वही सारी संपत्ति की स्वामिनी है। मैं कुछ देर में उठ कर अपने निवास स्थान पर पहुँचा किंतु उसी सुंदरी के ध्यान में निमग्न रहा। मैं ने भोजन भी नहीं किया और रात भर उस की मोहिनी छवि मेरी आँखों में समाई रही।

दूसरे दिन मैं फिर बाजार गया और अपने मित्र बदरुद्दीन की दुकान पर जा बैठा। मुझे पहुँचे कुछ ही क्षण बीते थे कि वह अपनी सेविकाओं के समूह के साथ वहाँ पहुँच गई और बोली, 'देखा तुम लोगों ने कि मैं अपने वादे का कितना ध्यान रखती हूँ?' मैं ने कहा कि

आप पर मुझे पूरा भरोसा था और आप ने बेकार ही इतनी जल्दी दाम पहुँचाने का कष्ट किया। वह बोली कि यह ठीक है किंतु लेन-देन में खरापन अच्छा रहता है। यह कह कर उस ने छह हजार छह सौ मुद्राओं की थैली मुझे दी और मेरे पास बैठ गई।

मैं ने कुछ क्षणों में, जब बदरुद्दीन तथा अन्य लोगों का ध्यान इधर न था, उस से अपने प्रेम का निवेदन किया। उस ने कुछ उत्तर न दिया और उठ कर चली गई। मैं ने समझा कि मेरे प्रेम निवेदन से यह रुष्ट हो गई है अतएव और दुखी हुआ। कुछ देर बाद मैं भी वहाँ से उठ कर निरुद्देश्य ही एक ओर चल दिया। काफी दूर जा कर जब एक गली में पहुँचा तो किसी ने मेरी पीठ पर हाथ रखा। मैं ने पलट कर देखा तो वह उसी सुंदरी की एक सेविका थी। मुझे उसे देख कर खुशी हुई। उस ने धीरे से कान में कहा कि मेरी मालकिन तुमसे बात करना चाहती हैं और तुम्हें बुला रही हैं।

मैं तुरंत उस परिचारिका के साथ हो लिया। थोड़ी दूर जा कर देखा कि वह सुंदरी एक सर्राफ की दुकान पर बैठी है। वह मेरी प्रतीक्षा अधीरतापूर्वक कर रही थी और उस ने मुझे तुरंत हाथ पकड़ कर अपने समीप बिठा लिया और बोली, 'तुम ही मेरे प्रेम में व्याकुल नहीं हो, मेरी भी यही दशा है। किंतु बदरुद्दीन के सामने यह कहना उचित नहीं था।' उस ने कहा कि या तो तुम मेरे घर चलो या मैं तुम्हारे घर आऊँ। मैं ने कहा मेरा किराए का मकान तुम्हारे आगमन के योग्य नहीं है, मैं ही आ जाऊँगा। उस ने कहा, 'ठीक है, कल बुधवार है। तीसरे पहर तुम अमुक गली में आ कर अमुक व्यापारी का मकान पूछना। मैं वहीं मिलूँगी।'

मैं घर आ गया। वह दिन और रात बेचैनी से बिताई। दूसरे दिन सवेरे ही मैं ने बढ़िया कपड़े पहने। निश्चित समय पर एक थैली पचास अशर्फियों की अपनी कमर में बाँध कर उस सुंदरी की बताई हुई गली में पहुँचा। मैं ने एक आदमी से उस का मकान पूछा तो उस ने बता दिया। मैं ने अपने किराए के ऊँट के चालक को किराया दे कर कहा कि कल सुबह यहीं से मुझे ले जाना और मेरे घर पहुँचा देना। घर के दरवाजे पर जा कर ताली बजाई तो दो गुलाम लड़कों ने द्वार खोला और कहा कि अंदर आइए, मालकिन आप की राह देख रही हैं।

मैं अंदर गया तो देखा कि सात सीढ़ी ऊँचे फर्श की एक विशाल बारहदरी है जिसके चारों ओर जाली का घेरा है। उस के आगे एक फूलों का बाग था। इस के अलावा कई घने वृक्ष भी उस भवन में थे। कई फलों से लदे हुए पेड़ भी थे जिन पर पक्षी कलरव कर रहे थे। पक्षियों की मधुर ध्वनि के अतिरिक्त ऊँचाई पर बने हुए कुंडों से निर्झर रूप में पानी उस बाग में गिर रहा था। वे कुंड बड़े विशाल और सुंदर थे और उनमें अजगर के मुख की आकृति के परनाले बने थे, जिन से पानी बाग में गिरता था। पानी भी स्फटिक मणि की भाँति स्वच्छ और अत्यंत निर्मल था।

दोनों गुलाम मुझे एक मकान में ले गए जो अत्यंत सुंदर था और उसमें भाँति- भाँति की

सजावट की चीजें रखी थीं। वहाँ एक गुलाम मेरे पास रहा और दूसरा दौड़ कर अपनी मालकिन को खबर करने के लिए गया। कुछ ही देर में वह सुंदरी हंस जैसी मंद और शालीन गति से चलती हुई आई। वह अत्यंत मूल्यवान वस्त्र पहने थी और सिर से पाँव तक जेवरों से लदी हुई थी। उसे देख कर मैं खुशी से पागल हो गया। वह भी मुझे देख कर अत्यंत प्रसन्न हुई। हम दोनों एक दालान में बैठ कर बातें करने लगे। कुछ देर में भोजन बन गया। हम दोनों ने साथ ही भोजन किया और फिर बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद गुलाम हमारे पास फल, मेवे और शराब लाए। कुछ सेविकाएँ मीठे स्वर में गाने लगीं और कुछ अन्य प्रकार की परिचर्या करने लगीं। मेरी प्रेमिका भी अपने हाव-भाव और अपने मधुर गायन से मेरी प्रसन्नता बढ़ाती रही।

इसी तरह सारी रात आनंद से बीती। सवेरा हुआ तो मैं ने पचास अशर्फियों की थैली चुपके से उस के गाव तकिए के गिलाफ के अंदर रख दी और उस के पास से उठ कर कहा कि अब मैं चलता हूँ।

उस ने पूछा कि अब कब आओगे। मैं ने कहा कि आज शाम को फिर आऊँगा। वह हँसी-खुशी मुझे द्वार तक पहुँचा गई। सवारी के लिए ऊँटवाला दरवाजे पर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। ऊँट पर बैठ कर मैं अपने घर आया और ऊँटवाले से कहा कि शाम को मुझे फिर उसी मकान पर पहुँचा देना। अपने घर से मैं ने तरह-तरह की खाद्य वस्तुएँ उस सुंदरी के घर भिजवाईं।

शाम को निश्चित समय पर ऊँटवाला आया। मैं ने एक और पचास अशर्फियों की थैली कमर से बाँधी और अपनी प्रेमिका के साथ सारी रात बिता कर सुबह फिर चुपके से वह थैली उस के पास छोड़ कर विदा हुआ। इसी तरह मैं काफी समय तक उस के यहाँ जाता रहा और रोजाना पचास अशर्फियों की एक थैली उस के पास छोड़ आता। कुछ ही समय में मेरा सारा धन समाप्त हो गया और मैं ने उस के यहाँ जाना छोड़ दिया। धनाभाव में मेरी बुरी हालत हो गई और मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ।

एक दिन सवेरे के समय मैं शाही किले के पास घूमने गया। वहाँ काफी भीड़-भाड़ थी। अचानक मैं ने देखा कि एक आदमी घोड़े पर सवार आ रहा है और उस की जीन से एक लंबी डोर के सहारे एक मुद्राओं की थैली लटक रही है। संयोग से एक लकड़हारा उस के समीप से निकला। उस ने लकड़ियों की खरोंच से बचने के लिए घोड़े का रुख यकायक फेरा। इस से वह थैली मेरे बिल्कुल पास आ गई। मैं ने लालच में आ कर थैली को झटके से अपने कब्जे में कर लिया। सवार ने जब देखा कि थैली गायब है तो अपनी तलवार म्यान के अंदर रखे हुए ही उसे मेरे सिर पर मारा। मैं गिर पड़ा। आसपास के लोग उस सवार को बुरा-भला कहने लगे कि तुम ने इस बेचारे को क्यों मारा। उस ने कहा तुम लोगों को कुछ नहीं मालूम, यह चोर है और इसने मेरी थैली चुराई है।

मेरे दुर्भाग्य से उसी समय सिपाहियों की गश्त आ पहुँची। गश्त के मुखिया यानी दारोगा ने पूछा कि भीड़ क्यों लगाए हो। सवार ने अपनी थैली के खोने की बात कही। दारोगा ने

पूछा कि तुम्हें किसी पर शक है या नहीं तो उस ने मेरी ओर इशारा करके कहा कि थैली इस आदमी ने चुराई है। दारोगा ने पूछा तो मैं ने इनकार किया। फिर भी सवार ने जोर दे कर कहा कि चोर यही है। अब दारोगा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि मेरी तलाशी ली जाए। मेरी तलाशी ली गई तो थैली मेरे पास से निकली। दारोगा ने सवार से कहा कि अगर यह थैली तुम्हारी है तो कुछ पहचान बताओ जिससे सिद्ध हो सके कि थैली तुम्हारी ही है। उस ने एक विशेष प्रकार के सिक्कों का नाम ले कर कहा कि इस थैली में इस प्रकार के बीस सिक्के हैं। थैली को खोल कर देखा गया तो उसमें वास्तव में उस प्रकार के बीस सिक्के निकले।

दारोगा ने थैली सवार को दे दी और मुझे पकड़ कर काजी के सामने पेश कर दिया। काजी ने आदेश दिया कि इसका दाहिना हाथ काट दो क्योंकि चोरी की यही सजा है। चुनांचे मेरा हाथ काट दिया गया। फिर काजी ने कहा कि यह तो चोरी का दंड हुआ। इसने झूठ भी बोला तो इसलिए झूठ के दंडस्वरूप इसका एक पाँव भी काटा जाए। अब मैं ने उस सवार के, जो गवाह के तौर पर वहाँ था, पाँव पकड़े और अनुनय-विनय की कि मुझे काफी सजा मिल चुकी है, अब इस नई सजा से मुझे बचाओ। उसे मुझ पर दया आई और उस ने काजी से कहा कि मैं अपना अभियोग वापस लेता हूँ, इसे झूठ बोलने का दंड न दें। अतएव काजी ने पाँव काटने का आदेश वापस ले लिया।

सवार वास्तव में भला आदमी था। उस ने वह थैली मुझे दे दी और कहा, 'तुम्हारे व्यवहार और सूरत-शक्ल से यह नहीं मालूम होता कि तुम पेशेवर चोर हो, तुम पर जरूर कोई ऐसी विपत्ति पड़ी होगी कि तुम ने ऐसा काम किया।' यह कह कर वह अपनी राह चला गया। वहाँ जो लोग थे वे मुझ पर दया करके एक घर में ले गए। वहाँ उन्होंने मुझे कुछ खाने-पीने को दिया, एक गिलास शराब पिलाई और मेरे हाथ में दवा लगा कर खून बंद करने के बाद उस पर पट्टी बाँध दी। मैं धीरे-धीरे अपने घर आया। अब कोई सेवक वहाँ नहीं था, क्योंकि निर्धनता के कारण मैं ने सब को हटा दिया था। कुछ देर में जी घबराया कि अकेले कैसे रहूँ। सोचा कि अपनी प्रेमिका के पास चलूँ। एक बार खयाल आया कि मेरी ऐसी हालत देख कर वह भी मुझ से घृणा करने लगेगी। किंतु और कोई व्यक्ति ऐसा था भी नहीं जिसका मैं सहारा लेता। अतएव एक अन्य रास्ते से गिरता पड़ता मैं उस के घर पहुँच गया और एक बिस्तर पर चुपचाप लेट गया।

कुछ देर में वह सुंदरी मेरे आने का समाचार पा कर मेरे पास आई। मैं ने अपना कटा हुआ हाथ अपनी आस्तीन में छुपा लिया। मुझे अशक्त और पीड़ा से तिलमलाता देख कर बोली, 'प्रियतम, यह तुम्हारी क्या दशा है?' मैं ने सारी घटना को छुपाने का निर्णय किया और कहा कि मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है इसीलिए तड़प रहा हूँ। वह बोली, 'यह तुम बहाना बना रहे हो। तुम्हें कोई और कष्ट है। केवल सिर दर्द से तुम ऐसे तड़पनेवाले नहीं हो। कुछ दिन पहले तक तो तुम हट्टे-कट्टे थे। यह तुम्हें क्या हो गया है।'

मैं ने उस की बात का कुछ उत्तर न दिया लेकिन मुझे अपनी दशा पर रोना आ गया। उस ने कहा, 'देखो, तुम्हें सारा हाल सच-सच बताना पड़ेगा। अगर झूठ बोलेगे या हाल

छुपाओगे तो मैं समझूँगी कि तुम्हें मुझ से बिल्कुल प्रेम नहीं है और अभी तक जो प्रेम प्रदर्शन करते थे वह केवल ढोंग था।' मैं ने और रो कर कहा, 'प्रियतमे, तुम मुझ से मेरा हाल न पूछो। मेरा हाल ऐसा नहीं है कि बताया जा सके। कम से कम मैं अपने मुँह से अपनी दशा के वर्णन करने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूँ।'

इस पर वह चुप हो गई, और मेरे सिर पर हाथ फेरने लगी। इसी भाँति काफी समय बीत गया। शाम हुई तो उस ने कहा, 'चलो हम लोग भोजन कर लें।' मैं ने सोचा कि दाहिना हाथ तो है ही नहीं, भोजन कैसे करूँगा। इसलिए मैं ने कहा कि मुझे भूख नहीं है। उसने कहा, 'बड़े खेद की बात है कि तुम इतने पीड़ित और दुखित हो कि भोजन भी नहीं करते और फिर भी मुझ से अपना हाल छुपा रहे हो। अच्छा, यह शराब पियो।' मैं ने शराब का प्याला बाएँ हाथ से पकड़ा और आँसू बहाते हुए शराब पीने लगा। मेरी प्रेमिका ने पूछा, 'तुम क्यों ठंडी साँसें ले रहे हो और क्यों तुम्हारी आँखों में आँसू हैं?' मैं ने कहा कि मेरे हाथ में सूजन हो गई है, उसमें बहुत दर्द हो रहा है। उस ने कहा कि मैं देखूँ क्या हो गया है तुम्हारे हाथ में। इस पर मैं ने कुछ न कहा और प्याले की सारी मदिरा एक ही बार में पी ली। प्याले में शराब बहुत थी। पीड़ा और थकान के अलावा शराब के तेज नशे ने जो असर किया तो मैं लगभग बेहोश-सा हो कर सो गया। उस सुंदरी ने मुझे सोता जान कर मेरी पीड़ा का भेद जानना चाहा और आस्तीन उलट कर देखा तो मेरा दाहिना हाथ कटा हुआ पाया। उसे बहुत ताज्जुब और दुख हुआ।

मैं जागा तो उसे बहुत उदास और दुखी देखा। उस ने मुझ से यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारा हाथ देख चुकी हूँ। शायद वह सोच रही थी कि मैं इस बात से बुरा मानूँगा। लेकिन उस ने अपने सेवकों से कहा कि तुरंत मुर्ग की गाढ़ी यखनी तैयार करो। उन्होंने थोड़ी ही देर में यखनी बना दी। उसे पी कर मेरे शरीर में शक्ति आई और मैं वहाँ से चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। मेरी प्रेमिका ने मेरा दामन पकड़ लिया। वह कहने लगी, 'मैं तुम्हें इस दशा में जाने न दूँगी। तुम मुझ से अपने दुर्भाग्य और दुख का कारण नहीं बताते। फिर भी मैं जानती हूँ कि तुम्हारी यह दशा मेरे ही कारण हुई है। मुझे इस से जो पश्चात्ताप हो रहा है उसे तुम नहीं समझ सकते। मैं इस सदमे को झेल नहीं सकूँगी और मेरा अंत समय निकट ही समझो। अब तुम वही करो जो करने को मैं तुम से कहूँ।'

यह कह कर उस ने अपने सेवकों से कहा कि मुहल्ले के पुलिस दारोगा और कुछ माननीय निवासियों को बुलाओ। उनके आने पर उस स्त्री ने मेरे नाम अपनी सारी संपत्ति लिख दी और कागज पर उनकी गवाही ले ली। इस के बाद उन्हें कुछ भेंट आदि दे कर विदा किया। उस के जाने के बाद उस ने एक संदूक खोला जिसमें मेरी दी हुई सारी अशर्फियों की थैलियाँ रखी थीं। उस ने कहा कि तुम यह थैलियाँ मेरे लिए छोड़ गए थे लेकिन मैं ने उन्हें हाथ भी नहीं लगाया है। यह कह कर उस ने संदूक में ताला डाल दिया और उस की चाबी मुझे दे दी।

उसी दिन से वह स्त्री बीमार पड़ गई। उस का रोग तेजी से बढ़ता गया और वह तीन सप्ताह बाद मर गई। मैं ने उस के सारे अंतिम संस्कार पूरे किए और फिर उस सारी संपत्ति

को ले कर, जो उस ने मेरे नाम कर दी थी, बगदाद आ गया। वे तिल जो तुम ने बिकवाए थे, उसी के धन से खरीदे गए थे।

उस बगदाद के व्यापारी ने सारा हाल कह कर मुझ से कहा, 'अब तुम्हें मेरे बाएँ हाथ से खाने का रहस्य मालूम हो गया। मैं तुम्हारा आभारी हूँ कि तुम ने इतना समय लगा कर और कष्ट सह कर मेरी कहानी सुनी और मेरे जी को हलका किया। तुम्हारे शालीन व्यवहार और भद्रता से मुझे बहुत ही आनंद मिला है। मेरे तिलों का जो दाम तुम्हारे पास है वह तुम्हीं रख लो। किंतु मैं तुम से एक बात चाहता हूँ। मैं बहुत दिनों से बगदाद में हूँ और बहुत दिनों से देशाटन छोड़ चुका हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी सहायता करो ताकि मैं नगर जा कर व्यापार करूँ। साल में जो भी मुनाफा होगा उसमें से हम लोग आधा-आधा बाँट लिया करेंगे। मैं ने कहा, 'आप की कृपा की तो कोई सीमा ही नहीं मालूम होती। आप ने तिलों का सारा मूल्य मुझे दे डाला और अब अपने विशाल व्यापार में मुझे साझीदार बना रहे हैं। मुझे इस बात से हार्दिक प्रसन्नता होगी कि व्यापार में आप की सहायता करूँ।'

इस के बाद एक शुभ मुहूर्त में हम लोगों ने अपनी यात्रा आरंभ की। हम लोग बगदाद से कूच करके कई देशों के प्रमुख नगरों में व्यापार के लिए गए फिर ईरान पहुँचे। वहाँ से आप की राजधानी काशगर आए। हम लोगों को इस तरह का व्यापार करते हुए कई वर्ष हो गए थे। और हमारे पास काफी धन हो गया था। फिर उस आदमी ने कहा कि अब मेरी इच्छा है कि मैं ईरान में स्थायी रूप से रहने लगूँ। चुनांचे हम लोगों ने अपनी सारी धन-संपत्ति आधी-आधी बाँट ली और खुशी-खुशी एक-दूसरे से विदा ली। वह ईरान में जा कर रहने लगा और मैं काशगर में बस गया।

यह कह कर ईसाई व्यापारी ने कहा, 'मेरी यह कहानी कुबड़े की कहानी से विचित्र है या नहीं?' बादशाह ने आँखें तरेर कर कहा, 'बिल्कुल बकवास है। तुम्हारी कहानी में कोई दम नहीं है। मैं तुम चारों को उस कुबड़े के बदले मरवा दूँगा।' अब मुसलमान व्यापारी आगे बढ़ा और बोला, 'सरकार, मुझे भी मौका दिया जाए। मुझे आशा है मेरी कहानी अधिक मनोरंजक होगी।' बादशाह ने उसे कहानी सुनाने की अनुमति दे दी।

अनाज के व्यापारी की कहानी

अनाज का व्यापारी बोला कि कल मैं एक धनी व्यक्ति की पुत्री के विवाह में गया था। नगर के बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्ति उसमें शामिल थे। शादी की रस्में पूरी होने पर दावत हुई और नाना प्रकार के व्यंजन परोसे गए। एक थाल में एक मसालेदार स्वादिष्ट लहसुन का व्यंजन रखा था जिन्हें उठा-उठा कर हर आदमी रुचिपूर्वक खा रहा था। किंतु एक आदमी उसे नहीं खाता था। पूछने पर उस ने बताया कि मैं ने एक बार लहसुन के कारण ऐसा घोर कष्ट उठाया कि अभी तक नहीं भूला। सब लोगों की उत्कंठा और बढ़ी और सब उस व्यंजन को खाने के लिए उस पर जोर डालने लगे।

गृहस्वामी ने कहा कि यदि आप इसे नहीं खाएँगे तो मैं समझूँगा कि मेरे अन्न का आप ने निरादर किया है। उस पर बहुत जोर डाला गया तो उस ने कहा, 'मैं इसे चख तो लेता हूँ किंतु इस के बाद मैं चालीस बार फलाँ घास की राख से और सौ बार साबुन से हाथ धोऊँगा। मैं ने यह सौगंध खाई है कि इसी प्रकार से लहसुन खा सकता हूँ। मैं अपनी प्रतिज्ञा को भंग नहीं कर सकता।'

गृहस्वामी ने ढेर सारी विशेष राख, साबुन और गर्म पानी का प्रबंध कर दिया। उस आदमी ने एक बार फिर इनकार किया किंतु सबके जोर देने पर एक बार डरते-डरते एक दाना मुँह में रख लिया। हम लोगों को उस की हिचक से भी आश्चर्य हुआ और इस बात से भी कि उस ने केवल चार उँगलियों से खाया, अँगूठे का प्रयोग नहीं किया। अब हम लोगों को याद आया कि वह पहले भी जब भोजन कर रहा था तो अँगूठे का प्रयोग नहीं कर रहा था। गृहस्वामी ने कहा, 'आप अजीब तरह से खा रहे हैं, खाने में अँगूठे का प्रयोग क्यों नहीं करते, इस से आप को आसानी होगी।'

उस आदमी ने हाथ फैला कर दिखाया तो उसमें अँगूठा था ही नहीं। गृहस्वामी तथा अन्य अतिथियों ने पूछा कि आपके अँगूठे का क्या हुआ तो वह बोला कि मुझ पर एक बार ऐसी मुसीबत पड़ी जिसे कहना मुश्किल है, उसी विपत्ति के कारण मेरे दोनों हाथों और दोनों पैरों के अँगूठे काट लिए गए। लोगों ने उस से वह वृत्तांत सुनाने को कहा। उस ने एक सौ चालीस बार हाथ धोए और फिर अपनी कहानी शुरू की।

उस आदमी की कहानी जिसके चारों अँगूठे कटे थे

उस ने कहा कि दोस्तो, मेरा पिता बगदाद का रहनेवाला था और खलीफा हारूँ रशीद के जमाने में था। मैं भी उसी समय पैदा हुआ। मेरा पिता यद्यपि धनवान तथा बड़े व्यापारियों में गिना जाता था तथापि वह बहुत ही विलासी और व्यसनी था। इसीलिए व्यापार की ठीक तरह देख-भाल नहीं कर पाता था और उसमें काफी गड़बड़ होती थी। जब वह मरा तो मुझे मालूम हुआ कि न जाने कितने लोगों से उस ने ऋण ले रखा था। मुझे कठिनाई तो बहुत हुई किंतु मैं ने परिश्रम से व्यापार बढ़ाया और धीरे-धीरे सारे ऋणदाताओं का रुपया वापस कर दिया।

अब मैं इत्मीनान से अपनी कपड़े की दुकान पर बैठ कर व्यापार किया करता था। एक दिन मैं दुकान पर बैठा था कि एक सुंदरी, जो खच्चर पर सवार थी और जिसके आगे एक नौकर और पीछे दो नौकरानियाँ चल रही थीं, मेरी दुकान के पास आई। उस के नौकर ने उसे हाथ पकड़ कर खच्चर से उतारा और कहा, 'मालकिन, आप बेकार ही इतने सवेरे बाजार में आ गईं। अभी तो कोई दुकान ही नहीं खुली है, आप कहाँ तक प्रतीक्षा करेंगी।' उस ने कहा, 'तुम ठीक कहते हो, केवल एक ही दुकान खुली है। चलो उसी में चलें।'

अतएव वह मेरी दुकान पर आ कर बैठ गई। उस ने देखा कि मेरे और नौकर के अलावा कोई नहीं है तो साफ हवा लेने के लिए नकाब थोड़ा-सा उठाया। मैं ने ऐसा रूप कभी नहीं देखा था। मैं ठगा-सा टकटकी लगा कर उसे बराबर देखता रहा। उस ने मेरी उत्कंठा देख कर पूरा नकाब उलट दिया और मैं जी भर कर उस के सौंदर्य का रसास्वादन करने लगा। कुछ ही देर में अन्य व्यापारी और ग्राहक आ गए और बाजार में भीड़ बढ़ गई तो उस ने नकाब फिर चेहरे पर डाल दिया।

उस ने मुझ से कहा, 'मैं जरी के कपड़े खरीदना चाहती हूँ। आपके पास ऐसे थान हों तो दिखाइए।' मैं ने कहा, 'मैं तो सादा थान बेचता हूँ लेकिन आप कहें तो अन्य दुकानदारों के यहाँ से खुद आपके लिए अच्छे-अच्छे थान ला दूँ, इस से आपका दुकान- दुकान जा कर कपड़े देखने और खरीदने का कष्ट बच जाएगा।' वह इस बात से बहुत प्रसन्न हुई और देर तक मुझ से इधर-उधर की बातें करती रही।

कुछ देर बाद मैं कई दुकानों में गया और बहुत-से जरी के थान मैं ने उस स्त्री के आगे ला कर रख दिए। उस ने उसमें कुछ थान पसंद किए। उनका मूल्य 24,750 मुद्राएँ था। उस ने यह दाम मंजूर कर लिया और मैं ने थान उस के सेवक को दे दिए। उस स्त्री ने विदा ली। मैं उस के सौंदर्य के मोह में इतना किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था कि उस से थानों का मूल्य माँगा ही नहीं और उस ने भी नहीं दिया। मैं ने उस से यह भी नहीं पूछा कि तुम रहती कहाँ हो।

मुझे फिक्र हुई कि उस से रुपया न मिला तो मैं यह पौने पच्चीस हजार कहाँ से भरूँगा।

दुकानदारों को दिलासा दे दिया कि मैं उस स्त्री को जानता हूँ और दाम मिल जाएँगे। लेकिन रात भर चिंता में मुझे नींद न आई। दूसरे दिन मैं ने व्यापारियों से एक हफ्ते में अदायगी करने का वादा किया और उन्होंने इसे मंजूर कर लिया। एक हफ्ते तक भी उस स्त्री का पता नहीं लगा।

आठवें दिन वह सुंदरी उसी खच्चर पर उन्हीं सेवकों के साथ मेरी दुकान पर आई और बोली, 'तुम रुपए लेने क्यों नहीं आए। अब मुझे खुद इन्हें ले कर आना पड़ा। अब मैं सारा पैसा ले आई हूँ। सर्राफ से परखवा लो कि सिक्के ठीक हैं या नहीं।' मैं ने सर्राफ को दिखाया तो सब सिक्के खरे निकले। वह सुंदरी देर तक मुझ से बातें करती रही और बातचीत से मालूम हुआ कि वह बहुत बुद्धिमती है। मैं ने वस्त्र व्यापारियों को बुला कर उनका रुपया दे दिया। वे सब बड़े प्रसन्न हुए और मेरे व्यवहार से बाजार में मेरी साख बढ़ गई।

उस सुंदरी ने कई और थान माँगे और मैं ने व्यापारियों से ला कर उसे दे दिए लेकिन फिर भी न उस का नाम पूछा न निवास स्थान। उस के जाने के बाद फिर सोचने लगा कि एक बार तो वह रुपए दे गई, अब अगर न दिए तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। फिर सोचता कि यह असंभव है कि वह धोखा करे, वह तो मेरे शील की परीक्षा ले रही है। उसे मेरे हानि-लाभ और प्रतिष्ठा का खयाल जरूर होगा। वह तो जानती ही है कि मेरी साख पर ही व्यापारियों ने कपड़े के थान दिए हैं। कभी मुझे अपनी संभावित हानि का ध्यान आता और कभी उस के सौंदर्य का ध्यान करके सारा दुख भूल जाता।

इस बार उस ने बहुत दिनों तक रुपए न पहुँचाए और बजाज लोग बेसब्र हो कर मुझ से रुपयों का तकाजा करने लगे। मैं अपनी आमदनी में से थोड़ा-थोड़ा उन्हें भिजवा कर उनकी तसल्ली कर देता था। एक महीने बाद वह फिर अपने सेवकों के साथ आई और उस ने पिछली बार के खरीदे कपड़ों का मूल्य दे दिया। फिर उस ने मुझ से पूछा कि तुम्हारा विवाह हो चुका है या नहीं। मैं ने कहा, अभी तक नहीं हुआ। उस ने अपने नौकर को इशारा किया और वह मुस्कुराता हुआ उठा और मुझे एक तरफ ले जा कर बोला, 'तुम क्या समझते हो कि मालकिन तुम से कपड़े खरीदने के लिए आती हैं। मैं जानता हूँ कि तुम उन पर आसक्त हो लेकिन तुम ने सभी से यह बात छुपाई है। अब यह जान लो कि वह भी तुम से प्रेम करती है इसीलिए तुम्हारे विवाह के बारे में पूछा। तुम इतने बुद्धू निकले कि उस का इशारा भी नहीं समझे।' मैं ने कहा, 'भाई, मैं ने तो जब पहली ही बार तुम्हारी मालकिन को देखा तो उस पर मर मिटा। किंतु मुझे यह आशा नहीं थी कि वह भी मुझ से प्रेम करेगी। अब तुम इस मामले में अगर मेरी सहायता करोगे तो मैं आजीवन तुम्हारा अहसान नहीं भूलूँगा।'

वह मेरे पास से उठ कर अपनी मालकिन के पास पहुँचा और उसे मेरी बात बताई। वह सुंदरी अपनी सेविकाओं को कुछ इशारा कर के उठ खड़ी हुई और फिर मुझ से बोली, 'मैं अपने नौकर को तुम्हारे पास भेजूँगी, वह जैसा कहे वैसा करना।' यह कह कर वह चली गई। मैं कई दिन तक नौकर की बाट देखता रहा। जब वह आया तो मैं ने उस से उस सुंदरी

की कुशलक्षेम पूछी। उस ने कहा कि तुम बड़े भाग्यवान आदमी हो, वह तुम पर अत्यधिक मोहित हैं, उनका बस चलता तो अभी तुम्हारे पास पहुँच जातीं।

मैं ने कहा, वह बहुत शीलवती जान पड़ती हैं कि इतने संयम से काम लेती हैं। उस ने कहा, 'तुम्हें इसलिए उनके शील पर आश्चर्य हो रहा है कि उन्हें जानते नहीं हो। वह खलीफा हारूँ रशीद की पत्नी जुबैदा की सहेली हैं। बीबी उन्हें बहुत प्यार करती हैं, उन्होंने उनके बचपन ही से उन्हें पाला-पोसा है। वह जनानखाने की सारी व्यवस्था करती हैं। जुबैदा कई बार उन से विवाह करने को कह चुकी हैं। अब उस ने कहा कि एक व्यापारी है, आप अनुमति दें तो उस से विवाह कर लूँ। बीबी ने कहा, अच्छी बात है लेकिन उस व्यापारी को एक बार देखने के बाद ही मैं शादी के लिए अनुमति दूँगी। इसीलिए मैं तुम्हें लेने आया हूँ।'

मैं ने कहा, मैं तैयार हूँ, जब भी चाहो मुझे ले चलो। उस ने कहा, 'ठीक है। लेकिन तुम जानते हो कि खलीफा के महल में कोई बाहरी आदमी नहीं जा सकता। मैं तुम्हें और किसी तरकीब से ही ले जाऊँगा। तुम आज शाम को नदी के किनारे बनी फलाँ मस्जिद में मेरी राह देखना।' मैं ने बड़ी प्रसन्नता से उस की बात स्वीकार की।

शाम को मैं उस मस्जिद में जा कर बैठ गया। थोड़ी ही देर में एक डोंगी आ कर किनारे से लगी। उसमें कई संदूक रखे थे। मल्लाहों ने डोंगी किनारे से बाँधी और एक काफी लंबा संदूक ला कर मस्जिद में रख दिया और नाव पर चले गए। नाव पर आया हुआ एक नौकर वहीं रह गया। कुछ देर में वह सुंदरी वहाँ आई। मैं ने कहा, 'मेरे लिए क्या हुक्म है।' वह बोली, ' बाद में बातें होंगी, इस समय बात करने की फुरसत नहीं है। तुम सिर्फ इस लंबे संदूक में जा कर लेटे रहो।' मैं संदूक में लेट रहा तो उस ने संदूक में ताला लगा दिया और सेवक से कहा कि इसे नाव पर पहुँचा दो। नौकर ने मल्लाहों को पुकारा और वह संदूक, जिसमें मैं था, नाव पर पहुँचा दिया। वह सुंदरी भी नाव पर बैठ गई।

मैं संदूक के अंदर पड़ा-पड़ा अपने भाग्य को कोसने लगा कि अच्छी-खासी जिंदगी छोड़ कर किस मुसीबत में फँस गया। नाव खलीफा के महल के मुख्य द्वार के समीप जा लगी। सारे संदूक द्वार पर पहुँचा दिए गए। द्वारपालों के पास सारी चाबियाँ थीं और देखे-भाले बगैर कोई चीज अंदर नहीं जा सकती थी। प्रधान द्वारपाल उस समय सो रहा था। उसे जगाया गया तो वह बहुत झुँझलाया और कहने लगा कि मैं संदूकों की एक-एक चीज देखूँगा। सुंदरी ने चुपचाप अपने नौकरों से कहा कि सारे संदूक द्वारपाल को दिखाए बगैर अंदर ले जाओ, ऐसा न हो कि वह संदूकों को खोल कर देखे और भेद खुल जाए। किंतु द्वारपालों ने ऐसा नहीं होने दिया। वे सारे संदूक प्रधान द्वारपाल के पास ले गए। सबसे पहले वही संदूक रखा जिसमें मैं था। सुंदरी की प्रधान द्वारपाल से बहस होने लगी। मैं इस बहस को सुन कर अंदर ही अंदर सूखा जाता था। यह तो स्पष्ट ही था कि अगर मुझे संदूक में पाया गया तो खलीफा मुझे अवश्य मृत्युदंड देंगे।

लेकिन मेरी प्रेमिका ने प्रधान द्वारपाल को संदूक नहीं खोलने दिया। वह बोली, 'तुम अच्छी तरह जानते हो कि जुबैदा की आज्ञा के बगैर कोई चीज अंदर नहीं ले जाती। इस संदूक में बड़े व्यापारियों से खरीदा हुआ बहुत-सा कीमती और नाजुक सामान रखा है तुम उसे निकालोगे तो वे चीजें टूट-फूट जाएँगी। इस के अतिरिक्त एक पतले काँच के घड़े में मक्के से लाया हुआ जमजम का पवित्र जल है। वह काँच का घड़ा अगर टूट गया या अन्य वस्तुएँ नष्ट हो गईं तो तुम्हें इसकी जवाबदेही करनी पड़ेगी और जुबैदा के हाथों तुम्हें कठोर दंड मिलेगा।'

प्रधान द्वारपाल इस बात से डर गया। वह चुप हो गया। सुंदरी ने गुलामों से सारे संदूक अंदर पहुँचाने के लिए कहा और उन्होंने ऐसा ही किया। किंतु अंदर जा कर भी मेरी मुसीबत खत्म नहीं हुई। संदूकों के खुलने के पहले ही अचानक वहाँ खलीफा आ गया। उस ने बहुत-से संदूक देख कर पूछा कि इन में क्या है, और न जाने उसे क्या सूझी कि हुक्म दिया कि सारे संदूकों का सामान मुझे दिखाया जाए। सुंदरी ने बड़े बहाने बनाए लेकिन खलीफा टस से मस न हुआ। विवशतः उस ने एक एक संदूक खोल कर दिखाना शुरू किया मेरा संदूक इस आशा में आखिर तक डटा रहा और उस ने अंतिम संदूक, जिसमें मैं बंद था, खोल कर दिखाने का आदेश दिया।

मित्रो, आप लोग सोच सकते हैं कि उस समय भय से मेरी क्या दशा हुई होगी। अगर कोई मुझे काटता तो बदन से खून न निकलता। किंतु उस सुंदरी ने बड़ी समझदारी से काम लिया। उस ने हाथ जोड़ कर कहा, 'सरकार, इस संदूक के खुलवाने का आग्रह न करें। इसमें जुबैदा के काम की खास चीजें हैं। जुबैदा की अनुमति के बगैर मैं इसे नहीं खोल सकती।' खलीफा ने हँस कर कहा, अच्छा फिर न खोल इसे।' और यह कह कर वह चला गया। मेरी जान में जान आई।

सुंदरी ने सेवकों से सारे संदूक अपने निवास कक्ष में पहुँचवाए। जब सारे नौकर चले गए तो उस ने मेरा संदूक खोला और मुझे एक जीना दिखा कर कहा कि ऊपर के कमरे में बैठो, मैं थोड़ी ही देर में आऊँगी। मैं ऊपर गया तो उस ने जीने का ताला लगा दिया। ताला लगाए दो क्षण भी नहीं हुए थे कि खलीफा फिर वहाँ आ गया और उसी संदूक पर बैठ कर उस स्त्री से बहुत देर तक नगर के बारे में पूछताछ करने लगा। वह सुंदरी काफी देर तक खलीफा से वार्तालाप करती रही। जब खलीफा अपने शयन कक्ष में चला गया तो वह ऊपर आई और बोली, 'तुम पर मेरे कारण बड़े कष्ट पड़े, किंतु अब तुम आराम से रहो। सुबह तुम्हें जुबैदा के पास ले चलूँगी।' फिर हम दोनों ने भोजन किया और वह चली गई।

मैं बड़े आनंद से उस भव्य प्रासाद में सोया। मुझे बड़ी प्रसन्नता थी कि यद्यपि यहाँ तक पहुँचने में बड़ी कठिनाइयाँ और खतरे उठाए किंतु अब तो किसी बात का खटका ही नहीं है। मुझे यह भी खुशी थी कि इतनी सुंदर और बुद्धिमती स्त्री स्वयं मेरे प्रेम में ग्रस्त है। सुबह वह मेरे पास आई और मुझ से बोली कि चलो मैं तुम्हें जुबैदा के पास ले चलती हूँ। इस के साथ उस ने मुझे खलीफा की पत्नी से बातचीत और व्यवहार करने के तौर-तरीके भी बताए। उस ने वे सभी संभव प्रश्न जो जुबैदा मुझ से पूछ सकती थी बताए और यह

भी बताया कि उनका क्या उत्तर दूँ। उस ने मुझे एक स्थान पर ले जा कर खड़ा कर दिया और कहा कि जुबैदा अपने शयनागार से निकल कर यहीं बैठती है। यह कह कर वह चली गई। वह कमरा इतना शानदार था कि मैं चकराया-सा खड़ा रह गया और आँखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर देखने लगा।

सबसे पहले बीस दासियाँ आईं। वे उस तख्त के सामने जो जुबैदा के बैठने के लिए बिछा था दो पंक्तियों में खड़ी हो गईं। फिर बीस अन्य दासियों के मध्य हंस जैसी चाल से चलती हुई जुबैदा आई और तख्त पर बैठ गई। वह गहने और भारी पोशाक से इतनी लदी हुई थी कि मंद गति ही से चल सकती थी। वह उसी रत्नजटित सिंहासन पर बैठ गई। सब दासियाँ अपने-अपने उचित स्थान पर खड़ी हो गईं और मेरी प्रेमिका, जो जुबैदा की खास मुसाहिब थी, बड़ी आन-बान से जुबैदा के दाहिनी ओर खड़ी हो गई।

अब एक दासी ने मुझे इशारा किया कि झुक कर सलाम करो। मैं ने तख्त के आगे जा कर अपने सिर को इतना झुकाया कि वह जुबैदा के पाँव से लग गया। मैं बराबर इसी दशा में रहा और सिर तभी उठाया जब जुबैदा ने मुझ से उठाने के लिए कहा। उस ने मेरा नाम, पेशा, कुटुंब आदि-आदि के बारे में प्रश्न किए जिनका मैं ने यथोचित उत्तर दिया। जुबैदा मेरी शक्ल-सूरत देख कर और मेरी बातें सुन कर प्रसन्न हुई। उस ने कहा, 'मैं चाहती हूँ कि तुम्हारा विवाह अपनी मुँहबोली बेटी से करूँ। मैं विवाह की तैयारियों के लिए आदेश देती हूँ। दस दिन बाद तुम्हारा विवाह हो जाएगा। दस दिन तक तुम इसी तरह होशियारी से रहो। इसी अवधि में मैं खलीफा से तुम्हारे विवाह के लिए अनुमति भी ले लूँगी।' '

मैं जुबैदा से विदा ले कर अपने कमरे में चला गया। मेरी प्रेमिका कई बार मौका निकाल कर मेरे पास आती और बातचीत करके चली जाती। मैं बड़ी सुख-सुविधा से वहाँ रहने लगा। जुबैदा ने इस अवधि में खलीफा से विवाह की अनुमति भी ले ली और शादी के समारोह के लिए बहुत-सा धन दिया। रोज ही वहाँ गाना-बजाना और तरह-तरह के खेल-तमाशे होने लगे। दसवें दिन हम दूल्हा-दुल्हन ने नहा-धो कर मूल्यवान वस्त्र पहने। शाम को दासियों ने हम लोगों के सामने नाना प्रकार के व्यंजन खाने के लिए परोसे। एक रकाबी में वही लहसुन का व्यंजन था जो आप लोगों ने मुझे खिलाया है। मुझे वह बहुत अच्छा लगा और मैं ने अन्य चीजों के बजाय उसे अधिक खाया। दुर्भाग्य से खाने के बाद मैं ने अच्छी तरह से हाथ नहीं धोए, यूँ ही रूमाल से हाथ पोंछ लिए।

रात और बीती तो दासियों ने वहाँ बहुत-से दीए और मोमबत्तियाँ जलाईं और देर तक नाच और गाना बजाना होता रहा। जब रात काफी ढल गई तो दासियों ने हम दोनों को शयनागार में पहुँचा दिया। मैं ने अपनी पत्नी को जब अपनी गोद में खींचना चाहा तो वह बड़े क्रुद्ध स्वर में चीखने-चिल्लाने लगी। सारी दासियाँ यह देखने के लिए दौड़ी आईं कि क्या हो गया। मैं तो इतना घबरा गया था कि उस से पूछ ही न सका कि क्या बात हो गई। दासियों ने पूछा कि मालकिन, ऐसी क्या बात हो गई कि आप इतनी नाराज हैं, हम से कुछ भूल हो गई हो तो बताइए। मेरी पत्नी चीख कर बोली, 'इस अभागे को मेरे पास से तुरंत हटाओ।' मैं ने डरते-डरते पूछा, 'सुंदरी, ऐसा क्या अपराध मुझ से हुआ कि आप

मुझे अपने पास ही से हटा रही हैं?' उस ने कहा, 'तुम दुष्ट भी हो और असभ्य भी। तुम ने लहसुन का पुलाव खाया और हाथ भी अच्छी तरह नहीं धोए। ऐसे गंदे आदमी से मुझे हार्दिक घृणा है। तुम्हारे हाथों की बदबू से अभी तक मेरा दिमाग फटा जा रहा है।'

यह कह कर उस ने दासियों को आज्ञा दी कि मुझे जमीन पर गिरा कर दबाए रहें। दासियों ने ऐसा ही किया। उस सुंदरी ने हाथ में चमड़े का चाबुक ले कर मुझे मारना शुरू किया और तब तक मारती रही जब तक खुद पसीने-पसीने न हो गई। फिर उस ने दासियों से कहा कि इसे दारोगा के पास ले जाओ ताकि वह इसका दाहना हाथ जिससे इसने पुलाव खाया था काट डाले। मैं अपने मन में पश्चात्ताप करने लगा कि इतने छोटे- से अपराध पर मेरा हाथ काट डाला जाएगा, इतनी मार मेरे लिए यथेष्ट नहीं समझी गई, वह बावर्ची जिसने उसे पकाया था और वह दासी जिसने मेरे सामने वह रकाबी रखी थी ऐसा करने के पहले ही क्यों न मर गए।

मेरी पत्नी की निष्ठुरता तो जैसी की तैसी रही किंतु हर एक बाँदी मेरी दशा से दुखी होने लगी। उन सभी ने मेरी पत्नी से कहा, 'मालकिन, अब गुस्सा थूक दो। इस के अपराध और मूर्खता में संदेह नहीं किंतु यह बेचारा तुम्हारी प्रतिष्ठा और तुम्हारी सुरुचि को क्या जाने। इसे काफी सजा मिल चुकी है। अब इस के अपराध क्षमा हों।' वह बोली, 'हरगिज नहीं। इसे ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि यह हमेशा याद रखे कि लहसुन खाने के बाद हाथ-धोना जरूरी होता है। इस के पास कुछ ऐसी निशानी होनी चाहिए जिससे यह अपने अपराध को हमेशा याद रखे और फिर यह अपराध न करे।' दासियों ने फिर एक स्वर से अनुनय की विनय की तो वह चुप हो रही और उस कमरे से उठ कर चली गई।

सारी दासियाँ भी उस के पीछे चली गईं। मुझे उसी कमरे में बंद कर दिया। दस दिन तक मैं वहीं बंद रहा। कोई दासी या नौकर-चाकर मेरी पत्नी के क्रोध से डर से मेरे पास फटकता भी नहीं था, सिर्फ एक बुढ़िया दिन में दो बार आ कर खाने-पीने के लिए मुझे कुछ दे जाती थी। एक दिन उस से मैं ने अपनी पत्नी का हाल पूछा। उस ने कहा, 'वह तो बीमार पड़ी है। तुम्हारे हाथ की लहसुन की बदबू उस से बर्दाश्त नहीं हुई। तुम ने लहसुन का पुलाव खा कर हाथ क्यों नहीं धोए?' मैं ने कहा, 'अब तो जो हो गया वह हो ही गया।' मैं सोचने लगा कि इन स्त्रियों की नजाकत की भी हद नहीं है और क्रोध की भी। फिर भी आश्चर्य यह था कि मेरे मन से उस का प्रेम न गया और मैं उस कीएक झलक पाने के लिए तड़पने लगा।

दस दिन बाद बुढ़िया ने बताया, तुम्हारी पत्नी स्वस्थ हो गई और नहाने के लिए हम्माम को गई है। उस ने कहा कि स्नान के बाद वह यहाँ आएगी। शायद आज न आ सके लेकिन कल जरूर आएगी।

दूसरे दिन वह मेरे पास आई किंतु उस का क्रोध शांत न हुआ था। वह बोली कि मैं तुझे प्यार करने को नहीं, दंड देने को आई हूँ। यह कह कर उस ने फिर दासियों को आज्ञा दी कि मुझे जमीन पर गिरा दें। उन्होंने मुझे जमीन पर गिरा कर मुझे अच्छी तरह दबा रखा और मेरी निर्दयी पत्नी ने छुरी ले कर मेरे दोनों हाथों और दोनों पावों के अँगूठे काट डाले। एक

दासी ने तुरंत ही किसी विशेष वृक्ष की पिसी हुई जड़ मेरे घावों पर लगा दी जिससे खून बहना बंद होगा किंतु पीड़ा के कारण मैं अचेत हो गया। जब मुझे होश आया तो उन्होंने मुझे थोड़ी मदिरा पिलाई जिससे मेरे शरीर में शक्ति आ गई।

मुझे फिर भी अपनी पत्नी की खुशामद करनी ही थी क्योंकि उस की कृपा के बगैर मेरी जान न बचती। मैं ने उस से कहा कि अब मैं कभी ऐसा दुर्गंधयुक्त भोजन नहीं करूँगा और करूँगा भी तो एक सौ चालीस बार हाथ धोऊँगा। उस ने कहा, 'फिर मैं भी उस कष्ट को जो तुम्हारे कारण मुझे हुआ है, भूल जाऊँगी। अतः हम लोग आनंदपूर्वक पति-पत्नी की तरह रहने लगे। किंतु मुझे यह बड़ा कष्ट था कि शाही महल में मुझे छुप कर रहना पड़ता था। मेरी पत्नी मेरे कहे बगैर ही मेरे दुख को समझ गई और उस ने एक दिन जुबैदा से यह बात कही तो उस ने मेरे अलग घर में रहने के लिए पचास हजार अशर्फियाँ दीं। मेरी पत्नी ने मुझे दस हजार अशर्फी दे कर कहा कि नगर में कोई अच्छा मकान खरीद लो ताकि हम वहाँ रहें।

मैं ने शहर में एक अच्छा मकान खरीद कर उसे बहुमूल्य वस्तुओं से सजाया और कुछ दास-दासियाँ भी मोल लीं। हम दोनों सुखपूर्वक रहने लगे। किंतु कुछ समय के बाद ही मेरी पत्नी बीमार हो कर मर गई। मैं ने दूसरा विवाह किया, कुछ दिनों के बाद वह स्त्री भी मर गई। फिर मैं ने तीसरा विवाह किया किंतु मेरी तीसरी पत्नी भी काल कवलित हो गई। मैं ने विचार किया कि यह घर ही मनहूस है, इसमें रहना नहीं चाहिए। इस के अलावा लगातार तीन पत्नियों की मृत्यु से मैं खिन्न भी था। इसलिए मैं मकान को बेच-बाच कर देश-विदेश के व्यापार को निकला। पहले फारस गया, वहाँ से समरकंद पहुँचा और वहाँ से यहाँ आया हूँ।

अनाज के व्यापारी ने यह कह कर बादशाह से पूछा कि कहानी कैसी है। उस ने कहा, ईसाई की कहानी से तो अच्छी है किंतु कुबड़े की कहानी को नहीं पहुँचती। अब यहूदी हकीम ने कहानी शुरू की।

यहूदी हकीम द्वारा वर्णित कहानी

यहूदी हकीम ने बादशाह के सामने झुक कर जमीन चूमी और कहा कि पहले मैं दमिश्क नगर में हकीमी किया करता था। अपनी चिकित्सा विधि के कारण वहाँ मेरी बड़ी प्रतिष्ठा हो गई थी। एक दिन वहाँ के हाकिम ने मुझ से कहा कि फलाँ मकान में एक रोगी है, वह यहाँ आ नहीं सकता, उसे वहीं जा कर देखो। मैं वहाँ गया तो देखा एक अत्यंत सुंदर नवयुवक चारपाई पर लेटा है। उस ने मेरे अभिवादन के उत्तर में इशारे से कहा कि आपका यहाँ स्वागत है।

मैं ने उस से नाड़ी दिखाने को कहा तो उस ने बायाँ हाथ बढ़ा दिया। मैं ने समझा कि इसे मालूम नहीं है कि नाड़ी दाहिने हाथ की देखी जाती है किंतु मैं ने बहस बगैर नाड़ी देखी और दवा लिख दी। नौ दिन तक मैं उसे देखने को जाता रहा। नवें दिन मैं ने कहा, अब आप बिल्कुल स्वस्थ हैं, स्नान कीजिए। दमिश्क के हाकिम ने मुझे यथेष्ट पारितोषिक दिया और मुझे शाही दवाखाने का प्रमुख बना दिया। जिस युवक का मैं ने इलाज किया था वह भी मुझे बहुत मानने लगा। उस ने कहा, 'मैं आप की निगरानी ही में स्नान करूँगा।' अतएव मैं स्नानागार में उस के साथ गया।

उस के कपड़े उतारने पर मैं ने देखा कि उस का दाहिना हाथ कटा हुआ है। वह हाथ कटने ही से बीमार पड़ा था और इसी कारण बायाँ हाथ दिखाया करता था। मुझे वह देख कर बड़ा दुख हुआ। उस ने मेरी आँखों की करुणा देख कर कहा, 'आप मेरा दाहिना हाथ कटा देख कर ही आश्चर्य और दुख में डूबे हैं। अगर आप मेरी कहानी सुनेंगे तो और भी आश्चर्य करेंगे। स्नान के बाद जब मैं भोजन करने बैठूँगा तो आप को पूरी कहानी सुनाऊँगा। लेकिन यह बताइए कि क्या इस समय बाग की सैर करने से मुझे कुछ हानि होगी।' मैं ने कहा, 'बाग की सैर करने से तुम्हें फायदा ही होगा, नुकसान नहीं। उस ने कहा, ठीक है, बाग की सैर करते-करते ही मैं आप को सारा किस्सा सुनाऊँगा। फिर उस ने अपने सेवकों को भोजन तैयार करने की आज्ञा दी। और हम दोनों बाग में गए। हमने दो-तीन चक्कर लगाए और फिर वहाँ पर बिछे एक कालीन पर बैठ गए और उस युवक ने अपना वृत्तांत आरंभ किया।

उस ने कहा कि मैं मोसिल का रहनेवाला हूँ। मैं एक बड़े घराने का लड़का हूँ। मेरे पितामह के दस बेटे थे जिनमें मेरे पिता सबसे बड़े थे। अपने पिता का मैं एकमात्र पुत्र था और मेरे किसी चचा की कोई संतान नहीं थी। मेरे पिता ने मेरी शिक्षा-दीक्षा पर बहुत ध्यान दिया और मुझे प्रत्येक पाठनीय विषय की शिक्षा ही नहीं दिलाई बल्कि अनेक कला के क्षेत्रों में पारंगत करवा दिया।

एक दिन मैं अपने पिता और चचा के साथ जुमे की नमाज को गया। नमाज के बाद सारे नमाजी अपने-अपने काम पर चले गए और मेरे पिता और चचा बातें करने लगे। मेरे चचा ने कहा कि कोई देश मिस्र जैसा सुंदर नहीं है। उन्होंने मिस्र देश और उसमें बहनेवाली

नील नदी की इतनी प्रशंसा की कि मेरा मन बेतहाशा उस देश को देखने के लिए होने लगा। घर पर भी यही चर्चा रही। मेरे पिता भी मिस्र देश के बड़े प्रशंसक थे। मेरे दूसरे चचा लोग कह रहे थे कि बगदाद जैसी सुंदर जगह कोई नहीं है किंतु मेरे पिता ने उनकी बात का विरोध किया और मिस्र की बहुत प्रशंसा की।

उन्होंने कहा, 'जिसने मिस्र नहीं देखा उस ने ईश्वर की महिमा भी नहीं देखी। वहाँ की भूमि सोना उगलती है, वहाँ के निवासी बड़े धन-संपन्न हैं। मिस्र की स्त्रियाँ अत्यंत रूपवती और चतुर होती हैं। नील नदी जैसी कोई नदी नहीं है। उस का पानी बहुत स्वादवाला और पाचक होता है और कई रोगों की दवा जैसा काम करता है। वह सारे देश को हरा-भरा रखती है। वहाँ की मिट्टी बड़ी नरम है और खेती करने में बहुत श्रम नहीं पड़ता। वहाँ के निवासी अरबी भाषा में नील की प्रशंसा में गीत गाते हैं जिनका भाव यह है कि नील नदी तुम्हारे लिए कितनी लंबी यात्रा करती है और बड़े खेद की बात होगी अगर तुम उसे छोड़ कर अन्यत्र जा बसो।'

यह कहने के बाद मेरे पिता ने कहा, 'मिस्र में सारी ॠतुओं में हरियाली रहती है। वहाँ नाना प्रकार के स्वादिष्ट फलों के वृक्ष और भाँति-भाँति के पशु-पक्षी रहते हैं। वहाँ की राजधानी काहिरा की आबादी बहुत अधिक हैं। वहाँ मीठे पानी की बहुत-सी नहरें बहती हैं और वहाँ के निवासी कला-कौशल में बड़े प्रवीण हैं। वहाँ के महल बहुत बड़े-बड़े और रत्नजटित हैं। मैं ने कई नगर देखे हैं और सैकड़ों कलाकारों और विद्वानों से मिला हूँ। मिस्र जैसा देश और वहाँ के निवासियों जैसे लोग कहीं भी नहीं देखे।'

उस जवान ने कहा कि अपने पिता के मुँह से मिस्र की इतनी प्रशंसा सुन कर मेरी उत्कंठा बहुत बलवती हो गई और रात-दिन भगवान से प्रार्थना करने लगा कि वह कुछ ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दे कि मुझे मिस्र देश को देखने का अवसर मिल जाए। मेरे पिता के मुँह से मिस्र की प्रशंसा सुन कर मेरे चचाओं ने कहा, हम लोगों को भी चल कर मिस्र देश देखना चाहिए। उन्होंने मेरे पिता से कहा कि आप भी हमारे साथ चलिए। उन्होंने इसे स्वीकार किया। मेरे चचाओं ने, जो सब व्यापार करते थे, तरह-तरह का दिसावर का माल खरीदा ताकि मिस्र में सैर की सैर हो और व्यापार का व्यापार। रात- दिन उन लोगों में मिस्र की यात्रा की चर्चा होती रहती थी।

जब मैं ने यह तैयारियाँ देखीं तो एक दिन रोता हुआ अपने पिता के पास गया और कहा कि मैं भी आप लोगों के साथ मिस्र को जाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि तुम अभी छोटे हो, तुम्हें यात्रा के दौरान बहुत कष्ट होगा, तुम यहीं रहो। मुझे बड़ा दुख हुआ किंतु मैं ने प्रयत्न न छोड़ा, एक-एक करके सभी चचाओं के पास गया कि मेरे पिता से मुझे भी साथ ले चलने की सिफारिश करें। उन्होंने मेरे पिता से कहा कि लड़का इतना चाहता है तो उसे भी साथ ले चलिए। मेरे पिता मुझे मिस्र तक ले जाने को राजी न हुए लेकिन यह मान गए कि मुझे दमिश्क तक ले चलेंगे और जब दमिश्क से मिश्र की ओर बढ़ेंगे तो इसे वापिस मोसिल भेज देंगे। दमिश्क भी जलवायु, पानी और सौंदर्य के लिहाज से बहुत अच्छा नगर है।

यद्यपि मेरी इच्छा मिस्र देश को देखने की थी तथापि मैं ने इसी बात को गनीमत जाना कि मुझे दमिश्क देखने को मिलेगा। कुछ दिन बाद मैं अपने पिता और चचाओं के साथ विदेश यात्रा पर चल पड़ा। हम लोग कई नगरों से होते हुए दमिश्क पहुँचे। मुझे यह नगर बड़ा सुंदर जान पड़ा और मैं उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। हम लोग एक सराय में ठहरे। कई दिनों तक हम वहाँ के बागों और महलों की सैर करते रहे। वास्तव में मुझे ऐसा मालूम होता था कि स्वर्ग के बाद अगर कोई जगह है तो यहाँ है।

मेरे पिता और चचाओं ने वहाँ काफी अच्छा व्यापार किया। मेरे हिस्से का भी जो माल बिका उस पर पाँच प्रति सैकड़ा का लाभ हुआ। यह लाभ की राशि मुझे दे दी गई। मेरे पास काफी पैसा हो गया। यह तय हुआ कि जब सब लोग मिस्र से वापस होंगे तो मुझे साथ लेते हुए मोसिल को जाएँगे। मैं ने अपने रुपयों को बड़ी होशियारी और किफायत से खर्च किया। एक छोटी हवेली अपने रहने के लिए किराए पर ली। बड़ी खूबसूरत संगमरमर की बनी हवेली थी जिसकी दीवारों पर मनोहर चित्रकारी थी और जिसके अंदर एक सुंदर पुष्प वाटिका थी। मैं ने उसे दो अशर्फी के किराए पर लिया।

मैं ने किफायत से किंतु सुरुचिपूर्वक अपने निवास स्थान को सजाया। उस का मालिक पहले अब्दुर्रहीम नाम का एक व्यक्ति था जिससे उसे उस के तत्कालीन मालिक ने मोल लिया था। यह व्यक्ति एक प्रसिद्ध जौहरी था। मैं ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप कुछ दास-दासियाँ भी खरीदीं और माननीय नगर निवासियों से जान-पहचान बढ़ाई। कभी वे लोग मुझे अपने घरों पर खाने के लिए बुलाते कभी में उन लोगों की दावत अपने घर पर किया करता था। मतलब यह कि अपने पिता और चचाओं की अनुपस्थिति में मैं ने बड़ी सुख-सुविधा के साथ दमिश्क नगर में जीवन यापन किया।

एक दिन भोजन करने के बाद मैं अपनी हवेली में बाहर के हिस्से में बैठा था। इतने में एक स्त्री आई जो अति मूल्यवान वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित थी। उस ने पूछा, क्या तुम कपड़े के व्यापारी हो किंतु मेरे मुँह से कोई उत्तर निकले इस से पहले ही वह मकान के अंदर चली गई। मैं भी उठ कर दरवाजा अंदर से बंद करके उस के पास एक दालान में जा बैठा, मैं ने कहा कि मैं कपड़े का व्यापार अवश्य करता हूँ किंतु खेद है इस समय मेरे पास थान नहीं है। उस ने अपने सुंदर मुख से नकाब लगभग उलट दी और कहा, 'मैं ही कहाँ कपड़े लेने आई हूँ। मैं तो तुमसे मिलने आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि सुबह तक यहीं रहूँ। किंतु मुझे भूख लगी है, मुझे कुछ खिलाओ।' मैं ने अपने सेवकों को भोजन आदि लाने को कहा। वे भोजन के साथ फल आदि भी लाए, जिन्हें मैं भी इस रमणी का साथ देने के लिए में खाने लगा। आधी रात तक हम लोग इसी प्रकार बातचीत करते रहे फिर हम एक साथ सोने के लिए चले गए। सुबह मैं ने दस अशर्फियाँ निकाल कर उसे दी किंतु उस ने उन्हें लेने से इनकार ही नहीं किया बल्कि दस अशर्फियाँ मुझे दीं। मैं ने जब कहा कि मैं तुम्हारा धन नहीं लूँगा बल्कि तुम्हें अशर्फियाँ जरूर दूँगा, वह बोली, 'मैं तो रोज तुम्हारे पास आने को सोचती थी किंतु अगर तुम मेरी बात न मानोगे और अपनी बात पर अड़े रहोगे तो मैं न आऊँगी।'

इस बार मजबूर हो कर मुझे उस से अशर्फियाँ लेनी पड़ीं और वह चली गई। शाम को वह फिर आई और हम लोगों ने रात भर राग-रंग किया और दूसरी सुबह वह फिर मुझे दस अशर्फियाँ दे कर कहने लगी कि आज शाम को फिर आऊँगी।

तीसरी रात को जब हम दोनों मदिरा के नशे में आलिंगनबद्ध थे तो उस ने मुझ से पूछा, 'प्यारे, तुम मुझे सुंदर समझते हो या नहीं?' मैं ने कहा, 'तुम कैसी बातें कर रही हो? क्या तुम अपने लिए मेरे प्रेम को नहीं जानती? मैं तुम्हें संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी मानता हूँ।' वह हँस कर कहने लगी, 'यह बेकार की बात है। मेरी एक सहेली मुझ से कहीं अधिक सुंदर है। उसे एक बार देखोगे तो मेरी ओर मुँह भी नहीं करोगे। वह मुझ से आयु में भी कम है और बड़ी कोमल है। उसे भी तुम्हें देखने की बड़ी लालसा है। मैं उसे यहाँ लाऊँगी।' मैं ने कहा, 'मैं तो तुम्हें ही चाहता हूँ। तुम चाहो तो उसे ले आओ लेकिन मैं प्रेमी तो तुम्हारा ही रहूँगा।'

उस स्त्री ने कहा, 'तुम ने जो कहा है उस पर दृढ़ रहना। मैं उसे सामने ला कर तुम्हारी परीक्षा लूँगी।' यह कह कर वह स्त्री विदा हुई। उस दिन उस ने मुझे पचास अशर्फिया दीं जो मुझे लेनी पड़ीं। जाते समय वह कहने लगी, 'दो दिन बाद मैं आऊँगी और एक नया मेहमान भी लाऊँगी और उस की अभ्यर्थना के लिए भोजन आदि की अच्छी व्यवस्था रखना।'

जिस दिन की बात तय हुई थी उस दिन मैं ने घर की सफाई करवाई, फर्श बगैरा झड़वाया और नाना प्रकार के फल तथा खाद्य सामग्री घर में तैयार रखी। शाम को दोनों स्त्रियाँ आईं। उन्होंने अपने चेहरों से नकाब उतार लिए। वास्तव में पहली स्त्री से नई स्त्री हर बात में सवाई थी। अगर पहली पर एक बार नजर जाती थी तो दूसरी पर बार-बार जाती थी। उस का सौंदर्य इतना मनमोहक था कि नजर उस पर से हटती ही नहीं थी। जब उस की प्रेमदृष्टि मुझ पर पड़ती मैं अधीर हो जाता था। मैं ने दोनों स्त्रियों के प्रति आभार प्रगट किया कि वे मेरे यहाँ आईं। नई स्त्री ने कहा कि आभारी तो मुझे होना चाहिए कि आप ने मुझे अपने घर तक आने की अनुमति दी।

मैं ने दोनों स्त्रियों को भोजन पर बिठाया। मैं अपनी नई मेहमान के सामने जा बैठा और बराबर उसे देखता रहा। वह स्त्री चाहते हुए भी मेरी तरफ न आँख भर कर देख सकी न हँस-बोल सकी। लगता था जैसे वह पहली स्त्री से भयभीत है। फिर भी कभी-कभी तिरछी नजर से मुझे देख लिया करती थी। जब उस ने देखा कि मेरी निगाहों में प्यार उमड़ रहा है तो उस ने भी प्रेम की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया।

यह सब पहली स्त्री की आँखों में छुपा न रहा। वह हँस कर कहने लगी, 'तुम इसे बार-बार क्यों देख रहे हो। तुम ने तो मुझ से प्रतिज्ञा की थी कि मेरे अलावा किसी पर भी आँख नहीं डालोगे। इतनी जल्दी अपना वादा भूल गए।' मैं ने उसी की भाँति हँस कर कहा, 'तुम बेकार ही मुझ पर शक करती हो। आखिर तुम्हीं तो इन्हें कृपापूर्वक यहाँ लाई हो। मैं यह कैसे कर सकता हूँ कि इन पर वैसी नजर डालूँ। यदि मैं ऐसा करूँ तो तुम दोनों के लिए घृणा का पात्र हो जाऊँगा।'

हम लोग देर तक मद्यपान करते रहे और हमें नशा चढ़ गया। नशे में मैं और नई स्त्री एक-दूसरे की ओर अत्यंत प्रेम तथा वासना से भरी निगाहों से देखने लगे। यह खुला प्रेम व्यापार देख कर पहली स्त्री ईर्ष्या और द्वेष से जलने-भुनने लगी। कुछ देर में वह यह कह कर उठ खड़ी हुई कि मैं अभी आती हूँ। दो-चार क्षणों में मेरे पास बैठी हुई स्त्री के चेहरे का रंग बदल गया और वह मरणासन्न-सी दिखाई देने लगी। मैं ने उठ कर उसे सँभाला कि वह गिर न जाए किंतु उस ने देखते ही देखते मेरी बाँहों में दम तोड़ दिया। मैं ने घबरा कर अपने सेवकों को पुकारा कि इसे सँभालो और इस के साथ आई हुई स्त्री को बुलाओ। उन्होंने कहा कि वह तो घर से निकल कर फलाँ गली में चली गई थी।

अब मैं ने जाना कि यह सब उसी दुष्टा की करतूत है। वह इस बेचारी के अंतिम मदिरा पात्र में विष घोल कर चली गई। इस अचानक आई मुसीबत से मैं बदहवास हो गया। मैं डर के मारे काँपने-सा लगा कि अब भगवान ही जाने मुझ पर क्या विपत्ति आए। मैं ने सोचा जो होना होगा वह तो होगा ही, पहले लाश को तो ठिकाने लगाया जाए।

मैं ने सेवकों से कहा कि कमरे का संगमरमर का फर्श होशियारी से धीरे-धीरे उखाड़ें। उन्होंने ऐसा किया तो मैं ने गड्ढा खुदवा कर लाश को उसी गड्ढे में दबा दिया।

फिर मैं ने अपने साथ सारा धन लिया और सेवकों को विदा कर के हवेली में ताला लगाया और ताले को मुहरबंद कर दिया। फिर मकान मालिक जौहरी के पास जा कर उसे एक वर्ष का पेशगी किराया दिया और उस से कहा कि मैं आवश्यकतावश काहिरा जा रहा हूँ। फिर मैं कोहिरा चला गया और अपने चचाओं से मिला। उन्होंने पूछा कि तुम कैसे आए तो मैं ने कहा कि आप लोगों का कुछ हाल नहीं मिला था इसलिए चला आया। मैं बहुत दिनों तक काहिरा में रहा। किंतु मैं अच्छी तरह काहिरा न देख पाया था कि उन्होंने वापस मोसिल जाने की तैयारी शुरू कर दी। मैं उनकी निगाहों से छुपा रहा। उन्होंने बहुत ढूँढ़ा पर मुझे पा न सके। मजबूरी में मेरे बगैर ही वापस चले गए।

इस के बाद मैं तीन वर्ष तक काहिरा में रहा। मैं साल साल पर दमिश्क के जौहरी के पास किराया भिजवा दिया करता था। फिर मैं दमिश्क वापस आया। यहाँ पर मुझ पर वह मुसीबत पड़ी कि कहा नहीं जाता। यहाँ आ कर जौहरी से चाबी माँग कर घर खुलवाया और देखा कि सारी वस्तुएँ यथावत हैं। मैं ने कुछ नए सेवक रखे और उन से मकान साफ करवाया। सफाई के दौरान एक सेवक को एक सोने का हार मिला जिसमें दस बड़े-बड़े मोती जड़े हुए थे। वह उसे मेरे पास ले आया। मैं ने पहचाना कि यह वही हार है जो उस नई स्त्री के गले में पड़ा था जिस की लाश मैं ने गड़वाई थी।

मैं ने उस की स्मृति के तौर पर वह हार कपड़े में लपेट कर अपनी गर्दन में डाल दिया। फिर मैं वहाँ रहने लगा किंतु कुछ करने में मेरा मन नहीं लगता था। फलतः मेरे पास का सारा धन धीरे-धीरे खर्च हो गया और मैं घर का सामान बेच कर गुजारा करने लगा। जब सब कुछ बिक गया तो मैं ने सोचा कि इस मुक्ताजटित हार को बेचने के सिवा कोई उपाय नहीं

है। किंतु मोती उसमें ऐसे लगे थे जिनके मूल्य का मुझे कोई अंदाजा ही नहीं था। फिर भी मैं उसे बेचने पर मजबूर था और उसे बेच कर मैं ने बहुत बड़ी मुसीबत मोल ले ली।

मैं बाजार में उस हार को ले कर गया तो अपने मकान मालिक जौहरी की दुकान पर जा कर अपना मंतव्य कहा कि मैं एक हार बेचना चाहता हूँ। उस ने एक दलाल बुला दिया। मैं ने दलाल के साथ जा कर उसे हार दिखाया। उस ने कहा कि मुझे भी ऐसे मोतियों का मूल्य नहीं मालूम, आप उसी जौहरी की दुकान पर बैठें, मैं और जौहरियों को यह हार दिखा कर इसका दाम पूछ कर आता हूँ।

मैं अपने मकान मालिक की दुकान पर बैठा। कुछ देर में दलाल ने आ कर कहा कि इसका मूल्य तो दो हजार अशर्फियाँ लगाया गया है लेकिन इस समय कोई व्यापारी इसे लेने का इच्छुक नहीं है, सिर्फ एक व्यापारी है जो इसे पचास मुद्राओं में लेने को तैयार है। मैं ने कहा कि जो दाम मिले उसी पर बेच दो। किंतु जब दलाल उस जौहरी के पास पचास अशर्फियों में हार बेचने गया तो जौहरी उसे पकड़ कर कोतवाली ले गया और शिकायत लिखाई कि यह आदमी चोरी का हार लाया है इसीलिए इतना सस्ता बेच रहा है।

दलाल ने कहा कि मैं तो दलाल हूँ, इसे बेचनेवाला तो फलाँ दुकान पर बैठा है, वही इसे पचास अशर्फी में बेचने को राजी है। कोतवाल ने मुझे पकड़वा बुलाया। उस ने पूछा कि तुम्हीं यह हार बेच रहे हो। मेरे हाँ कहने पर उस ने कहा कि यह चोरी का माल है, इसीलिए सस्ता बेच रहे हो। मेरे इनकार करने पर उस ने मुझे इतना पिटवाया कि मुझे लगा मेरी जान ही निकल जाएगी। इसीलिए मैं ने घबरा कर कह दिया कि यह चोरी का है। इस पर कोतवाल ने मेरा दाहिना हाथ कटवा दिया। उस ने हार भी मालखाने में जमा करा दिया।

मैं पीड़ा से व्याकुल गिरता-पड़ता अपने घर आया। नौकर-चाकर पुलिस के डर से भाग गए थे। मैं किसी तरह खुद ही अपना काम चलाता था। चौथे दिन बहुत-से पुलिसवाले मेरे घर में घुस आए और मुझे पकड़ ले गए। उनके साथ मकान मालिक भी था और वह जौहरी भी जिसने मुझ पर चोरी का आरोप लगाया था। उन्होंने मुझे बहुत गालियाँ दीं और कहा कि यह हार शहर के हाकिम का है, यह तीन वर्ष हुए खो गया था, उसी समय से हाकिम की पुत्री भी लापता है। यह कह कर उन्होंने मुझे रस्सी से बाँधा और हाकिम के सामने पेश कर दिया। मैं पहले तो घबराया कि यह और बड़ी मुसीबत गले पड़ी। फिर मैं ने सोचा कि हाकिम अधिक से अधिक मुझे मरवा ही तो देगा और वह भी इस कष्ट, निर्धनता और लज्जा के जीवन से अच्छा है। किंतु हाकिम ने मुझे देख कर कहा, 'यह आदमी चोर नहीं हो सकता। जिसने इस पर चोरी का आरोपी लगाया है वह मारा जाए।' अतएव वह व्यापारी कत्ल कर दिया गया।

अब हाकिम ने समस्त उपस्थित व्यक्तियों को जाने का आदेश दिया, सिर्फ मुझे रोक रखा। एकांत होने पर उस ने मुझ से कहा, 'बेटे, अब तुम बेखटके पूरा हाल बता दो कि यह हार

तुम्हारे हाथ किस तरह लगा। यह ध्यान रहे कि मुझ से कोई छोटी से छोटी बात भी न छुपाई जाए।' अतएव मैं ने पूरी तरह बताया कि किस तरह पहली स्त्री दूसरी को मेरे पास लाई थी और किस तरह उस ने उसे विष दे कर मार डाला। मैं ने यह भी बताया कि दूसरी स्त्री की लाश कहाँ गड़ी है।

हाकिम ने यह सब सुन कर ठंडी साँस भरी और कहा, 'भगवान की इच्छा के आगे सब लोग विवश हैं। मैं भी वह सब विनयपूर्वक स्वीकार करता हूँ जो उस की इच्छा से हुआ। तुम पर जो कुछ मुसीबत पड़ी उस का मुझे अत्यंत खेद है। अब तुम मेरा हाल सुनो कि मुझ पर कैसे-कैसे दुख पड़े। वे दोनों स्त्रियाँ मेरी बेटियाँ थीं। पहले जो तुम्हारे पास गई वह मेरी बड़ी बेटी थी और बाद में जिसे वह ले गई वह उस की छोटी बहन थी। बड़ी बेटी का विवाह मैं ने अपने भतीजे से कर दिया जो काहिरा में रहता था। वह कुछ दिनों बाद अचानक मर गया। मेरी बेटी कई वर्ष तक वैधव्य की दशा में भी काहिरा में रही और वहाँ उस ने तरह-तरह के दुष्कर्म सीख लिए। फिर वह यहाँ आ गई।'

'दूसरी बेटी जो उस से छोटी थी और जो तुम्हारी बाँहों में मरी बड़ी समझदार और सदाचारिणी थी। उस से मुझे कोई शिकायत नहीं हुई लेकिन उस की बड़ी बहन ने उसे भी आवारा बनने पर राजी कर लिया। जब छोटी मरी तो मैं ने दूसरे दिन बड़ी से पूछा कि तुम्हारी बहन कहाँ है। उस ने ठंडी साँस भर कर कहा, मैं तो सिर्फ इतना जानती हूँ कि कल वह बहुत मूल्यवान वस्त्राभूषण पहन कर घर से निकली थी और अभी तक नहीं आई। मैं ने अपनी बेटी की बहुत खोज कराई किंतु उस का कहीं पता नहीं चला। कुछ समय बाद बड़ी बेटी भी, जो रात-दिन अपने पाप कर्म को याद करके रोती रहती थी, बीमार हो कर मर गई।'

यह वृत्तांत सुना कर हाकिम ने मुझ से कहा, 'बेटे, हम-तुम दोनों ही दुर्भाग्य के मारे हुए हैं। किंतु अब तुम किसी बात की चिंता न करो। मैं अपनी तीसरी बेटी से, जो अपनी दोनों बहनों से अधिक सुंदर और बुद्धिमती है, तुम्हारा विवाह कर दूँगा। तुम मेरे घर को अपना घर समझो। मैं मरणोपरांत तुम्हें अपनी संपत्ति का उत्तराधिकार देने का वसीयतनामा लिख दूँगा।' मैं ने कहा कि आप का हर प्रकार मुझ पर उपकार है, मैं आप को बुजुर्ग समझता हूँ और जो कुछ आप का आदेश होगा वैसा ही करूँगा। हाकिम ने कहा कि फिर देर करने की क्या जरूरत है। उस ने गवाहों को तुरंत बुलाया और दिखावटी राग-रंग के बगैर काजी के द्वारा अपनी पुत्री से मेरा विवाह करवा दिया।

इस के अतिरिक्त उस ने अपनी संपत्ति भी अपने मरणोपरांत मेरे नाम करने के कागज लिख दिए। आप ने भी देखा होगा कि हाकिम मुझ पर कैसा दयालु है।

यह कह कर उस जवान ने कहा कि कल ही मोसिल से मेरे चचाओं का पत्र ले कर एक आदमी आया है। पत्र में लिखा था कि तुम्हारे पिता का देहांत हो गया है और तुम आ कर जायदाद में अपना हिस्सा सँभालो। मैं ने उन्हें लिखवा दिया कि मैं भगवान की दया से यहाँ अच्छी तरह हूँ किंतु मेरे लिए मोसिल आना संभव नहीं है। मैं ने यह भी लिखवा

दिया कि पिता से मिलनेवाली जायदाद खुशी से आप लोगों को दे रहा हूँ। यह कह कर उस जवान ने मुझ से कहा कि अब मैं ने आप को अपना पूरा हाल बता दिया कि किस तरह से मेरा दाहिना हाथ जाता रहा।

यहूदी हकीम ने यह कथा सुना कर काश कर के बादशाह से कहा कि जब मैं दमिश्क में था तो मैं ने मोसिल के व्यापारी के मुँह से यह कहानी सुनी। जब तक दमिश्क का हाकिम जीवित रहा मैं उस की सेवा में रहा। उस के मरने पर मेरी तबीयत वहाँ न लगी। मैं फारस देश चला गया। वहाँ के कई नगरों की सैर करके हिंदुस्तान आ गया। वहाँ से आप की राजधानी में आया और यहाँ हकीमी का सिलसिला डाल दिया।

बादशाह ने कहा, 'तुम्हारी कहानी पहली दोनों से अधिक मनोरंजक है। किंतु तुम लोगों को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि उस के कारण तुम्हारी जानें बच जाएँगी। कुबड़े की कथा अब भी तुम लोगों की कथाओं से अधिक विचित्र है। अगर उस से अच्छी कहानी न सुनाई गई तो तुम चारों की मृत्यु निश्चित है।' अब दरजी ने उठ कर सिर नवाया और कहा कि मेरी भी कहानी सुन लीजिए, मुझे पूरा विश्वास है कि आप इसे सुन कर प्रसन्न होंगे।

काशगर के बादशाह के सामने दरजी की कथा

दरजी ने कहा कि इस नगर के व्यापारी ने एक बार अपने मित्रों को भोज दिया और उनके लिए भाँति-भाँति के व्यंजन बनवाए। मुझे भी बुलाया गया। मैं जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि बहुत-से निमंत्रित लोग मौजूद हैं किंतु मकान मालिक नहीं है। थोड़ी देर में हम लोगों ने देखा कि मकान मालिक एक लँगड़े किंतु अति सुंदर व्यक्ति को ले कर वहाँ आया और अतिथियों के बीच बैठ गया। लँगड़ा आदमी वहाँ बैठनेवाला ही था कि उस की दृष्टि वहाँ पर उपस्थित एक नाई पर पड़ी।

वह बैठने के बजाय सभा से बाहर जाने लगा। आतिथ्यकर्ता व्यापारी ने आश्चर्य से पूछा कि मित्र, तुम जा क्यों रहे हो, अभी भोजन आनेवाला है, तुम भोजन के बिना कैसे चले जाओगे। किंतु उस लँगड़े ने, जो परदेशी जान पड़ता था, कहा, 'श्रीमान, मुझे आपके घर पर ठहर कर मरने की इच्छा नहीं है। मैं इस मनहूस नाई का मुँह नहीं देखना चाहता जिसे आप ने अपनी दावत में बुलाया है। मुझे जाने ही दीजिए।'

दरजी ने कहा कि उस लँगड़े की यह बात सुन कर हम सब को और भी आश्चर्य हुआ। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि उस नाई से उस लँगड़े को इतनी नाराजगी किस कारण हो सकती है।

हम लोग उत्सुकतावश उस लँगड़े के चारों ओर जमा हो गए और पूछने लगे कि क्या बात है। उस लँगड़े ने कहा, 'मित्रो, मैं इसी कमबख्त नाई के कारण लँगड़ा हुआ हूँ और इस के कारण अन्य विपत्तियाँ भी झेली हैं। मैं ने प्रण किया था कि न केवल इसका मुख न देखूँगा बल्कि यह जहाँ रहेगा वहाँ रहूँगा भी नहीं। मैं बगदाद का रहनेवाला हूँ, मैं ने बगदाद नगर इसीलिए छोड़ा कि यह वहाँ रहता था। अपने नगर को छोड़ कर मैं यहाँ आया, लेकिन यह मेरी जान का दुश्मन यहाँ भी मौजूद है। इसीलिए अब मैं इस सभा या इस नगर में बिल्कुल नहीं ठहर सकता। मुझे आप लोग क्षमा करें। मुझे यह देश छोड़ना पड़ेगा वरना यह दुष्ट न जाने मेरी क्या-क्या दुर्गति करेगा।'

यह कह कर लँगड़ा अतिथि गृह स्वामी की अनुमति के बगैर ही सभा से बाहर जाने लगा। हम लोगों ने उसे दौड़ कर रोका और दूसरे मकान में ले जा कर भोजन कराया। फिर गृह स्वामी ने कहा कि कृपापूर्वक हमें यह बताएँ कि इस नाई ने आपके साथ क्या दुष्टता की है। वह बड़ी मुश्किल से यह कहानी कहने को तैयार हुआ, लेकिन कहानी सुनाते समय नाई की ओर पीठ करके बैठ गया। नाई भी सिर झुकाए हुए चुपचाप सब कुछ सुनता रहा। लँगड़े ने अपना वृत्तांत इस प्रकार कहा।

लँगड़े आदमी की कहानी

मेरा पिता बगदाद के सम्मानित व्यक्तियों में से था और हम लोग आनंदपूर्वक वहाँ रह रहे थे। मैं अपने पिता का अकेला बेटा था। जिस समय मेरे पिता की मृत्यु हुई उस समय तक मैं न केवल विद्याध्ययन पूरा कर चुका था बल्कि व्यापार के कार्य में भी प्रवीण हो गया था। मेरे पिता ने अपने जीवनकाल ही में अपनी संपत्ति मेरे नाम कर दी थी। मैं धन के व्यय में होशियारी से काम लेता था। नगरनिवासी मुझे बहुत चाहते थे। यद्यपि मेरी यौवन की अवस्था थी तथापि मैं स्त्रियों के व्यवहार और उनकी प्रीति से अनभिज्ञ था। मुझे स्त्रियों से मिलने में लज्जा भी लगती थी।

एक दिन मैं कहीं जा रहा था कि सामने से कई स्त्रियाँ आती दिखाई दीं। मैं उनसे बच कर एक छोटी गली में घुस गया और एक मकान के सामने पड़े तख्त पर बैठ गया कि जब स्त्रियाँ निकल जाएँ तो मैं अपनी राह पकड़ूँ। मेरी आँखों के आगे एक खिड़की थी और उसमें से बहुत-से फूल दिखाई दे रहे थे। वह खिड़की पहले थोड़ी ही खुली थी। अचानक वह पूरी खुल गई और उसमें से एक षोडशी दिखाई दी। मैं उसका सौंदर्य देख कर ठगा-सा रह गया। वह मेरी ओर देख कर मुस्कुराई और कुछ देर पौधों में पानी देने के बाद खिड़की बंद कर के चली गई।

कहाँ तो मैं स्त्रियों से भागता था और कहाँ उस सुंदरी के चले जाने से इतना दुखी हुआ कि अचेत हो गया। जब होश आया तो देखा कि नगर का बड़ा काजी बड़े समारोह के साथ उस मकान में प्रविष्ट हुआ। मैं ने समझ लिया कि वह सुंदरी इसी की पुत्री है। मैं अपने घर वापस आ गया किंतु उस रमणी का ध्यान मुझे बिल्कुल नहीं भूलता था। दो चार दिन में विरह-व्याधि से मैं ऐसा पीड़ित हुआ कि बिस्तर से लग गया। मेरे मित्रों और संबंधियों को मेरी दशा से बड़ी चिंता हुई और सब आ कर मेरा हाल पूछने लगे। मैं ने लज्जावश उन्हें कुछ न बताया। इस पर वे हकीम को ले आए किंतु उस हकीम तथा अन्य हकीमों की दवाओं से मुझे कोई लाभ न हुआ। मेरी दशा क्षय के रोगी की भाँति निरंतर बिगड़ती गई।

एक दिन एक बुढ़िया मुझे देखने को आई। यह वृद्धा मेरे कुछ संबंधियों की परिचिता थी। उसने बड़े ध्यानपूर्वक मेरा सिर से पाँव तक निरीक्षण किया किंतु किसी रोग के लक्षण मुझ में नहीं पाए। वह कुछ सोचती रही, फिर उसने अन्य लोगों को वहाँ से हटा दिया और कहा कि मैं एकांत में इस को देख कर बताऊँगी कि क्या रोग है। जब सब लोग चले गए तो बुढ़िया ने धीमे स्वर में मुझसे कहा, देखो, तुम्हारे रोग को मैं भली-भाँति पहचान गई हूँ। तुम्हें किसी प्रकार का कोई शारीरिक रोग नहीं है। तुम किसी सुंदरी पर मोहित हो और लज्जावश किसी से अपना भेद नहीं कहते। इसी से तुम्हारी ऐसी दशा हुई है। अगर तुम मुझ से सारी बात साफ-साफ बताओ और अपनी प्रेयसी का पता ठिकाना बताओ तो मैं तुम्हारी सहायता करूँ। मैं केवल एक ठंडी साँस भर कर रह गया क्योंकि संकोच ने मेरी जबान बंद कर रखी थी। लेकिन बुढ़िया मेरे पीछे पड़ गई कि ऐसी हालत में लज्जा ठीक नहीं है और अपने हितचिंतकों की सहायता लेनी ही चाहिए।

बुढ़िया के इतना कहने-सुनने से मेरी झिझक भी खुल गई और मैं ने उससे अपने दिल का हाल कह कर कहा कि अगर तुम्हारी मध्यस्थता से मुझे एक बार वह देखने को भी मिल जाए और उसे मेरे प्रेम का हाल मालूम हो जाए तो मेरा जीवन सफल हो जाए। बुढ़िया बोली, बेटे जिस रूपसी की बात तुम कर रहे हो वह शहर के बड़े काजी की पुत्री है। इसमें संदेह नहीं कि उस जैसी सुंदर और मनमोहिनी स्त्री सारे बगदाद में शायद ही कोई हो। किंतु वह लड़की और उसका पिता दोनों ही महागर्वीले और कटुभाषी है। बड़ा काजी अपनी पुत्रियों को घर के अंदर ही बंद रखता है। उसने उन्हें आज्ञा दी है कि अगर आवश्यकतावश बाहर भी निकलो तो किसी पुरुष की ओर न देखना। जब वे बाहर जाती हैं तो उनकी आँखों पर पट्टियाँ बाँध दी जाती हैं ओर दासियाँ उनका हाथ पकड़ कर गलियों में से निकलती हैं जैसे अंधों को ले जाते हैं। ऐसा अजीब हाल है उनके पिता का। अच्छा होता यदि तुम किसी और स्त्री के प्रति आकृष्ट हुए होते।

मैं यह सुन कर चुप हो रहा। मेरी निराशा देख कर बुढ़िया ने कहा, यह जो मैं ने तुम से कहा है पूर्वाग्रह भी हो सकता है। संभव है सफलता की कोई राह निकल आए। सब कुछ भगवान की इच्छा पर निर्भर है। देखो, मैं जा कर अपनी-सी कोशिश करती हूँ। यह कह कर बुढ़िया चली गई।

दो चार दिन बाद वह फिर आई और मुझसे कहने लगी, बेटा, मैं पहले ही कहती थी कि वह स्त्री अत्यंत मानिनी और गर्वीली है। मैं ने उसे बहुत समझाया-बुझाया किंतु इसका उस पर कुछ असर न हुआ। जब मैं ने तुम्हारी बीमारी की बात की तो वह चुपचाप रही किंतु जब मैं ने तुमसे भेंट करने के लिए उससे कहा तो वह बिगड़ पड़ी और मुझ से कहा कि तुम बड़ी बदतमीज हो, अगर ऐसी बेशर्मी की बातें तुमसे सुनूँगी तो तुम्हें धक्के मार कर निकाल दूँगी। यह कह कर भी बुढ़िया ने मुझे धीरज दिया और कहा कि परेशान होने की जरूरत नहीं, मैं अपना प्रयत्न जारी रखूँगी। यह कह कर वह चली गई। उसके इतना दिलासा देने पर भी मेरी निराशा कम न हुई और मेरी शारीरिक दशा पहले से खराब होने लगी। बीच-बीच में बुढ़िया आती और उससे बातें कर के मुझे किंचित धैर्य होता। एक दिन जब वह आई तो मेरे पास कई रिश्तेदार स्त्रियाँ बैठी थीं। बुढ़िया ने मेरे कान में कहा कि मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लाई हूँ। यह सुन कर मुझ में नई शक्ति का संचार हुआ और मैं वृद्धा को ले कर बगलवाले कमरे में चला गया ताकि उसका लाया हुआ समाचार सुनूँ।

बुढ़िया ने कहा, कल सोमवार था। मैं उस सुंदरी के पास गई। वह प्रसन्न मुद्रा में थी और मैं ने सोचा कि काम बन सकता है। मैं ने अपनी दशा बड़ी दुखपूर्ण बनाई और कुछ देर में आँसू बहाने लगी। उसने पूछा कि अम्मा, क्या बात है, तुम रो क्यों रही हो। मैं ने कहा क्या कहूँ, मैं उस आदमी की दशा सोच कर रो रही हूँ, वह बेचारा अब तक रो रहा है और तुम्हारे प्रेम के कारण मृत्यु के समीप जा पहुँचा है। ओर तुम इतनी कठोर- हृदया हो कि उस की जान लेने पर तुली हो। वह कहने लगी तुम क्या बक रही हो, मैं उसे जानती भी नहीं तो उस की जान क्यों लूँगी। तुम बेकार के आरोप मुझ पर न लगाया करो।

मैं ने कहा : सुंदरी, तुम शायद भूल गई हो कि मैं ने तुम्हें पहले ही बताया था कि यह वही

आदमी है जो तुम्हारे सामनेवाले मकान के चबूतरे पर बैठा था। तुमने खिड़की खोली थी और वृक्षों पर पानी दिया था। वह उसी समय तुम पर मोहित हो गया और तब से तुम्हारे विछोह में रात-दिन घुल रहा है।

अब उसमें साँस के आने-जाने के अलावा कुछ नहीं रहा। उस दिन मैं ने उस की बात की थी तो तुम बुरी तरह बिगड़ गई थी। यह बात जब उसे मालूम हुई तो उस की दशा और बिगड़ने लगी। अब अगर तुम्हारी कुछ कृपा हो तो शायद वह बच जाए, वरना तो उसे गया ही समझो।

यह कहने के बाद मैं ने अपने स्वर और आँखों में और दुख भर कर ठंडी साँसें लेना और आँसू बहाना आरंभ किया। फिर उस मनमोहिनी ने कहा अम्मा, तुम ठीक कहती हो कि मेरे प्रेम ने उस की यह दशा कर दी है। फिर कुछ देर बाद वह बोली कि अगर मुझे देखने और मुझसे बात करने भर से उस की दशा सुधर जाए तो कोई हर्ज नहीं। मैं ने ठंडी साँस भर कर कहा, तुम्हारी इतनी ही कृपा बहुत होगी। उसने कहा कि तुम उससे कहो कि अगर वह मुझे देखना और मुझसे बात करना चाहता है तो मैं इसके लिए तैयार हूँ किंतु इतने से अधिक कोई आशा मुझ से न रखे। और आगे की बात तभी हो सकती है जब मेरे पिता की रजामंदी से उसके साथ मेरा विवाह हो जाए।

मैं ने उसे अनेक आशीर्वाद दिए और कहा कि मैं अब यह प्राणदायक समाचार जा कर उसे सुनाती हूँ। उस सुंदरी ने कहा, मेरे पिताजी शुक्रवार को जुमे की नमाज जामा मस्जिद में जा कर पढ़ते है। उस समय वह आदमी यहाँ अकेला आए तो मैं उसे अंदर बुला लूँगी और पिता के आने के एक घड़ी पहले उसे विदा कर दूँगी, उस समय वह जी भर कर मुझे देख सकता है और मुझ से बातें कर सकता है।

जब बुढ़िया ने यह सब बातें मुझ से कहीं तो मैं खुशी से पागल हो गया। मुझ में जैसे नई जीवनी शक्ति आ गई। मैं ने उस बुढ़िया को बार-बार धन्यवाद दिया और एक हजार अशर्फियाँ उसे इनाम में दे डालीं। अगले शुक्रवार मैं जल्दी उठ गया। मैं ने सोचा मैं हजामत बनवा कर अच्छे कपड़े पहन कर और इत्र लगा कर बड़े काजी के महल में जाऊँ और अपनी प्रेयसी से भेंट करूँ। अतएव मैं ने एक सेवक को आज्ञा दी कि किसी अच्छे नाई को बुला लाए जिससे मैं हजामत बनवाऊँ। वह इसी दुष्ट नाई को ले आया जो इस समय मेरे पीछे बैठा है।

इसने आते ही मुझे देख कर कहा, आप अभी हाल ही में बहुत बीमार जान पड़ते हैं। मैं ने कहा कि हाँ, मैं ने बहुत दिनों तक बीमारी से बड़ा कष्ट उठाया है और अभी हाल ही में अच्छा हुआ हूँ।

उसने कहा, भगवान आपको दीर्घायु करें और सदा नीरोग रखें। मैं ने कहा, सब उस की इच्छा पर निर्भर है, वह जैसे चाहे वैसे रखें। इसके बाद यह बोला कि मुझे क्या आज्ञा है, मैं

आपकी हजामत बनाऊँ या फस्द खोलूँ। मुझे गुस्सा आ गया और मैं ने कहा, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या? अभी मैं कह चुका हूँ कि मैं लंबी बीमारी से उठा हूँ। फस्द खुलवा कर और खून निकलवा कर क्या मुझे जान देनी है। तुम जल्दी से मेरी हजामत बनाओ और अपनी राह पकड़ो। मुझे दोपहर को एक जरूरी काम से जाना है।

यह नाई इस पर भी काफी देर तक बकवास करता रहा। न तो इसने अपनी औजारों की पेटी खोली न कोई उस्तरा निकाल कर तेज किया। हाँ, कुछ देर बाद उसने अपनी पेटी से एक यंत्र-सा निकाला और आँगन में जा कर उसे सूर्य की ओर लगा दिया। फिर उँगलियों पर गिन कर कहने लगा कि आप को प्रसन्न होना चाहिए, आज बृहस्पति और मंगल का बड़ा अच्छा योग है और हजामत के लिए इससे अच्छा कोई अन्य योग नहीं हो सकता। किंतु इसके अतिरिक्त एक दुर्भाग्य का योग भी है। ग्रहों की गति से मालूम हो रहा है कि आप पर बड़ा कष्ट पड़ेगा आज। किंतु आपके प्राणों को कोई खतरा नहीं है। हाँ कष्ट ऐसा होगा कि आप उसे जीवन भर न भूल सकेंगे। आप कृपा कर मुझे साथ रखें तो शायद मुसीबत पड़ने पर मैं आपके काम आऊँ।

यह कह कर लँगड़े आदमी ने कहा कि दोस्तो, आप लोग खुद ही सोचें कि मेरी क्या दशा होगी। एक ओर मेरी जीवनदायिनी प्रेयसी ने मुझे अकेले ऐसी जगह बुलाया जहाँ चिड़िया भी उड़ कर न जा सके, दूसरी ओर यह दुष्ट बेकार की बकबक में समय नष्ट कर रहा है। मुझे क्रोध तो बहुत आया किंतु मैं ने उस पर काबू पा कर कहा कि देखो मैं ने तुम्हें यहाँ सलाह लेने और मुहूर्त देखने को नहीं बुलाया, हजामत बनवाने को बुलाया है। तुम्हें हजामत बनानी है तो बनाओ वरना चले जाओ, मैं दूसरा नाई बुला लूँगा।

इसने दाँत निपोरते हुए कहा, आप इतना क्रुद्ध क्यों हो रहे हैं। मेरे जैसा गुणी नाई आपको सारे संसार में नहीं मिलेगा। मैं अनेक विद्याओं में पारंगत हूँ जिनमें से कुछ का उल्लेख कर रहा हूँ। मैं हकीमी जानता हूँ, ज्योतिष, व्याकरण, काव्यशास्त्र, वेदांत, न्याय व्यवस्था आदि सब जानता हूँ। मैं गणित भी जानता हूँ और खगोलशास्त्र भी और सारे बादशाहों के इतिहासों से भी परिचित हूँ। मेरे स्वर्गवासी पिता ने, जिन की याद से मेरा दिल अब भी भर जाता है, सारी विद्याएँ मुझे सिखाई थीं जिससे मैं आप सज्जनों की सेवा भी करूँ और सुरक्षा भी।

उस की यह बकवास सुन कर मुझे क्रोध की बजाय हँसी आ गई। मैं ने कहा, तुम कब तक बकबक किए जाओगे और किस समय मेरी हजामत बनाओगे। इसने कहा, यह भी अच्छी रही। और लोग तो कहते हैं कि मैं बहुत कम बोलता हूँ और आप कहते हैं कि मैं बकबक करता हूँ। अब सुनिए, मेरे छह भाई हैं। बड़े का नाम है बकबक, दूसरे का बकबारह, तीसरे का बूबक, चौथे का अलकूज, पाँचवें का अलनसचर और छठे का शाहकुबक। इसमें संदेह नहीं कि यह सब बड़े बकवासी हैं। मैं इन सब से छोटा हूँ और बहुत कम बोलता हूँ।

दरजी ने कहा कि लँगड़े व्यक्ति ने यह कह कर कहा कि मित्रो, अब आप ही लोग न्याय

करें कि इतना बकबक करने पर भी यह अपने को अल्पभाषी कहता है। अब मैं ने दूसरे सेवक से जो घर की व्यवस्था देखता था कहा कि इस नाई को तीन अशर्फियाँ दे कर विदा कर दो, मैं आज हजामत नहीं बनवाऊँगा। इस नाई ने कहा, मालिक यह आप क्या कह रहे हैं। मैं कोई अपने आप तो आ नहीं गया, आपने बुलाया है तो आया हूँ। मैं तो अब आपकी हजामत बनाए बगैर जाऊँगा नहीं। आप मेरे गुणों को नहीं जानते इसीलिए मेरी कद्र नहीं करते। मेरा दुर्भाग्य है। आपके पिता मेरी कद्र जानते थे। वे जब मुझे बुलाते तो इतना स्नेह करते जैसे गोद में बिठा लेंगे, अपने साथ ही मुझे भोजन कराते थे और मेरी जानकारी और बुद्धिमत्ता की बातें सुन कर बड़े प्रसन्न होते थे। एक दिन उन्होंने मेरे काम से खुश हो कर मुझे सौ अशर्फी और एक भारी जोड़े का इनाम दिया, यानी एक बार ही फस्द खोजने में मेरे पास इतना धन आ गया जो मेरे सारे जीवन के लिए काफी है। मुझे उनकी कृपा बहुत याद आती है।

यह कह कर भी यह नाई चुप नहीं हुआ और दूसरी कहानी शुरू कर दी। मैं बड़ा दुखी हो गया कि यह तो किसी प्रकार पीछा छोड़ता ही नहीं। मैं ने सोचा कि डाँट-फटकार का तो इस पर कुछ असर होता ही नहीं, इसे मीठी बातों से बहलाना चाहिए। मैं ने कहा, भाई, तुम बहुत अच्छी बातें करते हो लेकिन इस समय चुप रहो, जल्दी से मेरी हजामत बना दो क्योंकि मुझे एक जगह जाना है।

यह हँस कर बोला, निस्संदेह आप को कोई बड़ा जरूरी काम होगा जिसके कारण आप इतनी जल्दी कर रहे हैं। आप यह काम मुझे जरूर बताएँ बल्कि मुझे अपने साथ ले चलें ताकि मैं हर मौके पर आप की सहायता कर सकूँ। मैं तो यह कहूँगा कि हर महत्वपूर्ण काम आप मेरी सलाह से ही करें जैसा कि आपके पिता और पितामह किया करते थे। आप मुझे अपना नौकर बल्कि गुलाम समझिए। आप बेझिझक मुझ से अपने मन की बात कहिए।

मैं ने चीख कर कहा, तू बकबक कर के मेरा मगज चाटे जा रहा है, भाग यहाँ से। यह कह कर मैं उठ खड़ा हुआ और जमीन पर पाँव पटकने लगा। इस बेशर्म नाई ने फिर भी अपनी हरकतें नहीं छोड़ीं। मुझे अति क्रुद्ध देख कर बोला कि आप नाराज न हो, मैं अभी आप की हजामत बनाए देता हूँ। यह कह कर इसने अपनी पेटी खोली और मेरी हजामत शुरू की। बहुत देर तक तो यह मेरे सिर पर पानी ही रगड़ता रहा, फिर थोड़ी जगह उस्तरा चला कर ठहर गया और कहने लगा कि आप न मेरे बुढ़ापे का ख्याल करते हैं न मेरे गुणों की कद्र करते हैं, यह सब बातें अच्छी नहीं हैं। मैं ने कहा, चुपचाप अपना काम करो, अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है। इसने कहा, ऐसा महत्वपूर्ण काम क्या आ पड़ा है जिसके लिए आपको इतनी जल्दी और घबराहट है। मैं ने फिर बिगड़ कर कहा, तू यहाँ हजामत बनाने आया है या दुनियाभर के झगड़ों में पड़ने? तुझे इस से क्या लेना देना कि मुझे क्या काम है?

इस निर्लज्ज ने कहा, मेरे मालिक, आप चाहे जितना क्रोध करें मैं तो यही कहूँगा कि मुझे डर है कि आप बगैर समझे-बूझे जल्दी में काम करेंगे और आपकी हानि होगी। बुद्धिमानों का कहना है कि हर काम सोच-समझ कर करना चाहिए। आप कृपा कर के मुझे अपना

काम जरूर बताएँ। अभी तो दोपहर होने में तीन घड़ी बाकी हैं, ऐसी जल्दी भी क्या है? मैं ने कहा, जो लोग वादे के पक्के होते हंब वे नियत समय से पहले ही निश्चित स्थान पर पहुँच जाते हैं। तुम फौरन हजामत बनाओ। इसने धीरे-धीरे मेरा सिर मूँड़ना शुरू किया और आधा सिर मूँड़ कर खड़ा हो गया और सूर्य की ओर देख कर कहने लगा कि अभी हजामत पूरा करने की साइत नहीं आई। मैं ने कहा, मुझे ज्योतिष पर विश्वास नही, तू जल्द हाथ चला।

इसने कहा, अच्छा आप कहते है तो बनाए देता हूँ लेकिन डर है कि आप कहीं बीमार न पड़ जाएँ। यह कह कर इसने काम तो शुरू किया लेकिन यह हाल कि एक बाल मूँड़ता था तो दस बातें कहता था। मैं ने इसे धोखा देने के लिए कहा कि मेरे मित्रों ने मेरे स्वास्थ्य लाभ की खुशी में भोज दिया है, मुझे उसमें जाना है। यह सुन कर ये उछल पड़ा और बोला, आपने अच्छी याद दिलाई। मैं ने भी अपने मित्रों को भोजन पर बुलाया था लेकिन मैं भूल गया और कुछ भी तैयारी नहीं की। मैं ने कहा, भाई, तुम इसकी फिक्र न करो, मैं तुम्हें अपनी रसोई से पका-पकाया खाना दिलवा दूँगा। पिताजी तुम्हारी बातों से खुश हो कर इनाम देते थे, मैं तुम्हें उनसे बढ़ कर इनाम दूँगा मगर इस शर्त पर कि तुम चुप रहो।

इसने कहा कि भगवान आपको प्रसन्न रखे, लेकिन न जाने आपका दिया हुआ सामान काफी होगा या नहीं। मैं ने कहा कि छह भुने हुए मुर्ग हैं, तरह-तरह के मांस के पकवान तथा अन्य खाद्य सामग्री है, सत्तर-अस्सी आदमियों के लिए काफी भोजन होगा। मैं ने नौकरों से कहा कि सारा पका खाना इस कमबख्त को दे दो और मदिरा की सुराहियाँ भी। इसने कहा कि कुछ फलों को देने की कृपा करें। मैं ने कहा इसे फल भी दे दो।

लेकिन इसकी दुष्टता का अंत नहीं हुआ। इसने हजामत आधी ही छोड़ कर हर चीज को परखना शुरू किया और काफी देर लगा दी। फिर मैं ने डाँटा तो आ कर हजामत बनाने लगा लेकिन कुछ ही देर में उस्तरे को रख कर कहने लगा, आपके स्वर्गीय पिता ने मुझे कभी धनाभाव न होने दिया लेकिन भगवान की कृपा से आप भी मेरे कद्रदान हैं और मुझे किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। मैं ने तो आपके पिता के अलावा किसी के आगे हाथ न फैलाया। मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ। देखिए, एक आदमी जो नाइयों का दलाल था बड़ा अच्छा नाचता-गाता था, उसे हम लोग झिंझोटी कहते थे। एक आदमी था जिसका नाम शावल था, वह गलियों में घूम-घूम कर भुने चने बेचता था, एक शातिर था जो बाकला और दूसरी तरकारियाँ बेचने का धंधा करता था, एक आदमी था आबूबकर वह गलियों में पानी छिड़कने का काम किया करता था। यह सब बड़े अच्छे आदमी थे और मेरी तरह कम बोलनेवाले थे जिसकी वजह से बड़े सफल रहे। और हाँ, एक कासिम भी था जो खलीफा के यहाँ प्यादागिरी करता था। अब मैं झिंझोटी भाई का एक मशहूर गीत आपको सुनाऊँगा और उसका नाच भी दिखाऊँगा।

यह कह कर इसने उठ कर नाचना-गाना आरंभ कर दिया। मैं ने इसे बहुत डाँटा-फटकारा किंतु इसने पूरा गीत सुना कर ही दम लिया। फिर कहने लगा, अब मैं अपने मित्रों को

भोजन करा आऊँ फिर आ कर आपकी हजामत बनाऊँगा, बल्कि आप भी ऐसा कीजिए कि अपने मित्रों की दावत छोड़िए और मेरे यहाँ चल कर मेरे मित्रों के साथ भोजन कीजिए। मुझे क्रोध तो बहुत था किंतु मैं इस मूर्खता की बात पर हँस पड़ा और बोला कि किसी और दिन मैं तुम्हारे दिन भोजन के लिए आऊँगा। यह जिद करने लगा कि आज ही चलिए। मैं ने डाँट कर कहा कि आज मैं किसी प्रकार नहीं जा सकता। फिर यह कहने लगा कि मुझे ही अपने साथ ले चलिए, यह खाना मैं अपने घर ले जा कर अपने मित्रों को खिला दूँ, फिर आ कर आपके साथ आपके मित्रों की दावत में चलूँगा। आप क्या वहाँ अकेले जाते अच्छे लगेंगे।

मैं अपने मन में बड़ा दुखी हुआ। मैं ने दिल ही दिल में रो कर कहा कि हे भगवान, इस दुष्ट नाई से मेरा पीछा किस प्रकार छूटेगा। फिर मैं ने इससे कहा, तुम तुरंत मेरी हजामत बना कर अपने घर जाओ और अपने मित्रों को खिलाओ-पिलाओ। मेरे मित्र अकेले मेरा ही इंतजार कर रहे हैं, वे किसी को मेरे साथ अतिथि नहीं बनाना चाहते। मैं तुम्हें ले गया तो शायद मुझे भी उस दावत में न बैठने दिया जाए। इसने कहा, आप भी खूब मजाक करते हैं। जब आपके मित्र हैं तो आप के साथ एक और आदमी के आने पर उन्हें क्या आपत्ति होगी। फिर मैं तो बड़ा सुभाषी हूँ, मेरे जाने से आपके सभी मित्रों को बड़ी प्रसन्नता होगी।

लँगड़े आदमी ने कहा कि मित्रो, इसकी यह बात सुन कर मैं बिल्कुल निराश हो गया कि आज का सारा मामला तो इसने चौपट कर दिया। यह भी सोचा कि इसको बिगड़ने से भी कोई लाभ नहीं। मैं ने इसकी बात का कुछ उत्तर न दिया।

इतने में जुमे की नमाज की पहली अजान हुई। मैं चुप हो रहा तो इसने भी अपना काम शुरू किया और थोड़ी ही देर में हजामत पूरी कर दी। फिर मैं ने इससे प्रसन्नतापूर्वक कहा कि तुम मेरे नौकरों से खाने-पीने का सामान उठवा कर अपने घर जाओ और अपने मित्रों को खिलाओ-पिलाओ। फिर आ जाना तो मैं तुम्हें दावत में ले चलूँगा। यह किसी तरह मेरे घर से टला तो मैं जल्दी से नहा कर और नए कपड़े पहन कर दूसरी अजान की प्रतीक्षा करता रहा ताकि मेरी प्रेमिका का पिता नमाज को चला जाए तो मैं वहाँ पहुँचूँ। दूसरी अजान होते ही मैं घर से चला किंतु यह दुष्ट वहीं गली में छुपा था और मेरे पीछे चुपचाप चलने लगा।

जब मैं काजी के घर के सामने पहुँचा तो देखा कि यह अभागा भी पीछे चला आ रहा है। मैं बड़ा चिंतित हुआ किंतु उस अवसर पर कुछ कहना-सुनना भी उचित नहीं था। वहाँ जा कर देखा कि बड़े काजी के घर का मुख्य द्वार आधा खुला है। मुझे आता देख कर वह बुढ़िया जो वहाँ प्रतीक्षारत थी दौड़ी आई और मुझे मेरी प्रेमिका के पास ले गई। हम लोग प्रेम और मैत्री से बातचीत कर ही रहे थे कि बाहर कई मनुष्यों के बोलने की आवाज आई। मैं और मेरी प्रेमिका दोनों खिड़की के बाहर देखने लगे। सब से पहले देखा कि काजी नमाज पढ़ कर वापस आ रहा है। फिर इस नाई को भी देखा कि सामनेवाले मकान के उसी तख्त पर बैठा है जहाँ मैं बैठा था।

मुझे दोनों ही को देख कर डर लगा। मेरी प्रेयसी ने मुझे घबराया देखा तो तसल्ली दी। और पहले से तय की हुई एक जगह दिखाई कि आवश्यकता पड़ने पर यहाँ छुप जाना। क्या बताऊँ, उस दिन इस दुष्ट नाई के कारण मुझ पर ऐसी विपत्ति पड़ी जिसका वर्णन नहीं कर सकता। जिस समय काजी अपने घर पहुँचा उसी समय एक अधीनस्थ कर्मचारी ने किसी नौकर को किसी बात पर मारा। वह नौकर बड़ी जोर से चिल्लाया। उस की चीख-पुकार सुन कर तख्त पर बैठा हुआ यह कमबख्त समझा कि मुझ पर मार पड़ रही है और यह अपने कपड़े फाड़ कर और सिर में धूल डाल कर चीख-पुकार करने लगा और आसपास के लोगों को बुलाने लगा।

उन्होंने आ कर पूछा कि क्या बात है तो इसने रोते हुए सिर्फ इतना कहा कि इस मकान के लोग मेरे स्वामी को मार रहे हैं। इसके बाद यह दौड़ा हुआ मेरे घर पहुँचा और मेरे सगे-संबंधियों और नौकरों-चाकरों से भी यही कहा। वे बेचारे भी यह सुन कर दौड़ आए। काजी के मकान के सामने भीड़ लग गई और लोग चीखने-चिल्लाने और दरवाजा भड़भड़ाने लगे। काजी ने अपने एक सेवक से कहा कि बाहर जा कर देख कि यह लोग क्या चाहते हैं। सेवक ने बाहर आ कर देखा और घबरा कर अंदर जा कर कहा कि हजारों लोग जमा हैं और क्रोध में दरवाजा तोड़े दे रहे हैं। काजी खुद बाहर आया और लोगों से पूछने लगा कि क्यों शोर कर रहे हो।

दरवाजे पर जमा भीड़ ने काजी की प्रतिष्ठा का भी कुछ लिहाज न किया और कहा, पापी, कुकर्मी, तूने एक बेकसूर प्रतिष्ठित व्यक्ति को क्यों घर में बंद कर के मारा। वह हैरान हो कर बोला, न कोई बाहरी आदमी मेरे घर में है न मैं ने किसी को मारा-पीटा है। अब यह मूर्ख नाई आगे बढ़ा और काजी को भद्दी-भद्दी गालियाँ दे कर बोला, 'तेरी बेटी मेरे स्वामी पर जान देती है। उसने उसे दोपहर में मिलने के लिए बुलाया। तूने उसे अंदर पा कर बहुत मारा है। अब तू अपना भला चाहे तो तुरंत उसे छोड़ दे।' काजी ने अपने गुस्से को पी कर कहा, यहाँ कोई तुम्हारा स्वामी नहीं है, तुम लोग चाहो तो अंदर जा कर देख लो।

यह सुन कर यह नाई और मेरे रिश्तेदार अंदर घुस गए और एक-एक कमरे में जा कर देखने लगे। मैं अपनी बदनामी और काजी के क्रोध के भय से वहाँ रखे एक खाली संदूक में घुस गया और मेरी प्रेमिका ने उसे बंद कर के कुंडी लगा दी। यह नाई ढूँढ़ता हुआ आया और संदूक की कुंडी खोल कर ढक्कन जरा-सा उठा कर देख लिया कि मैं उसमें हूँ। फिर इसने संदूक अपने सर पर रख लिया और बाहर भागा। काजी के नौकर-चाकर इतने घबराए हुए थे कि किसी ने रोक-टोक नहीं की। जब यह संदूक ले कर भाग रहा था तो रास्ते में ढक्कन खुल गया और मैं संदूक से बाहर जा गिरा। मैं मुँह छुपा कर अपने मकान की ओर भागने लगा। यह नाई और बहुत-से लोग मेरे पीछे दौड़े आए थे। इसी परेशानी में एक नाले को छलाँगते समय मेरा पैर फिसला और मैं उसमें इतनी बुरी तरह गिरा कि मेरा पाँव टूट गया। किंतु उस समय मुझे पाँव की चिंता न थी। मैं गिरता- पड़ता भागने लगा। जब भीड़ मेरे पास पहुँचती तो मैं जेब से मुट्ठी भर सिक्के उस की ओर फेंकता। वह लोग सिक्के उठाते तब तक मैं और आगे भागता।

काफी दूर निकल जाने पर भीड़ ने मेरा पीछा छोड़ दिया किंतु यह दुष्ट नाई बराबर बकवास करता हुआ मेरे पीछे लगा रहा। यह बराबर चिल्ला कर कह रहा था, देखिए, मैं ने आप का कितना उपकार किया है और आप के लिए कितना कष्ट झेला है और किस भाँति आपको काजी के हाथ से बचाया है। मैं ने पहले ही कहा था कि अगर मुझे साथ न ले चलेंगे तो बड़ी मुसीबत में फँसेंगे। यह जो कुछ हुआ आपकी बुद्धि की कमी के कारण हुआ। और आप फिर बड़ी भूल कर रहे हैं कि मुझसे भाग रहे हैं। आप मुझसे भागेंगे तो फिर मुसीबत में पड़ेंगे।'

यह पापी इसी प्रकार बकवास करता हुआ आ रहा था। सारे सुननेवाले समझ गए कि मैं किस काम के लिए गया था और सभी मुझे देख कर हँसने लगे थे। सभी लोग मेरी खिल्ली उड़ा रहे थे। मेरा जी करने लगा कि इसी जगह इसे पकड़ कर इसका गला दबाऊँ। लेकिन यह सोच कर रह गया कि ऐसा करने में मेरी ही और फजीहत होगी। लोग बराबर मेरा मजाक उड़ा रहे थे और यह बराबर बकता हुआ मेरे पीछे लगा था। मैं लाचार हो कर एक बड़े घर में घुस गया। उसका स्वामी मेरा परिचित था। उसके पास जा कर मैं ने कहा, मित्रवर, मुझे इस राक्षस नाई से बचाओ वरना आज यह मेरी जान ही ले लेगा। मित्र इस अचानक आई मुसीबत से परेशान तो हुआ लेकिन उसने दरवाजे पर आ कर इस नाई को डाँट-फटकार कर और धक्के दिलवा कर भगा दिया।

फिर उसने पूछा कि आखिर बात क्या है। मैं घबराहट, थकन और पाँव की तकलीफ से अधिक बात करने के योग्य नहीं था। मैं ने उससे कहा कि मुझे तनिक सावधान हो लेने दो, फिर मैं तुम्हें सारी बातें बताऊँगा। कुछ देर बाद मैं ने उसे सारा किस्सा, विशेषतः उस दिन की सारी घटनाएँ ब्यौरेवार बताईं। वह हँसने लगा और बोला, अब तो वह दुष्ट भाग गया है, अब तुम प्रसन्नतापूर्वक अपने घर जाओ। मैं ने उससे कहा, भाई, मुझ पर कृपा करो और अपने घर से न भगाओ। अगर मैं अपने घर गया तो यह जानलेवा नाई फिर वहाँ पहुँच जाएगा और मुझे इतना दुख देगा कि मेरी जान ही जाती रहेगी। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि इस अभागे के कारण सारे शहर में मेरी ऐसी बदनामी हो गई है कि मैं यहाँ किसी को मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहा हूँ।

मित्र मेरी बात सुन कर चुप हो रहा। मैं कुछ दिनों तक उसके घर में रहा और वहाँ छुपे-छुपे अपने गुमाश्तों को बुला कर अपनी संपत्ति का प्रबंध कर दिया। जब पाँव का घाव ठीक हो गया तो लँगड़ाता हुआ (क्योंकि हड्डी टूटने के कारण मैं सारी उम्र के लिए लँगड़ा तो हो ही गया था) बगदाद को छोड़ कर इस नगर में आ बसा। मुझे आशा थी कि यहाँ इस नाई से छुटकारा मिलेगा किंतु मेरे दुर्भाग्य से यह यहाँ भी मौजूद है। मित्रो, आप लोग स्वयं विचार कर देखें कि इस कमबख्त ने मुझ पर क्या-क्या मुसीबत नहीं डाली। उस चंद्रमुखी से जो मुझ से विवाह करने को राजी थी मैं हमेशा के लिए बिछुड़ गया, अपने नगर में किसी को मुँह न दिखा सकने के कारण वहाँ से भागने को विवश हुआ और जीवन भर के लिए लँगड़ा हो गया वह अलग।

यह कहने के बाद वह लँगड़ा सभा से चला गया। सभी लोग उस की दुर्भाग्यपूर्ण कथा सुन

कर बड़े प्रभावित हुए। सब ने उस नाई से पूछा कि इसने जो बातें कहीं क्या वे बातें सच हैं। अगर उसका वृत्तांत सच है तो निस्संदेह तू महामूर्ख और खतरनाक आदमी है और तुझे इसकी अच्छी तरह सजा मिलनी चाहिए। नाई बोला, जो कुछ उस आदमी ने कहा वह बिल्कुल सच है। लेकिन आप ही बताइए कि मेरा क्या कसूर है। मैं तो उस की चीख-पुकार सुन कर उस की सहायता के लिए गया था। वह तो लँगड़ा ही हुआ है, मैं न होता तो उस की जान भी जा सकती थी। वह मुझे उल्टे दोष देता है। मैं तो सात भाइयों में सब से कम बोलनेवाला हूँ। कहो तो अपनी और अपने भाइयों की कहानी कहूँ। यह कह कर उसने बगैर उनकी अनुमति की प्रतीक्षा किए अपनी कहानी शुरू कर दी।

दरजी की जबानी नाई की कहानी

खलीफा हारूँ रशीद के काल में बगदाद के आसपास दस कुख्यात डाकू थे जो राहगीरों को लूटते ओर मार डालते थे। खलीफा ने प्रजा के कष्ट का विचार कर के कोतवाल से कहा कि उन डाकुओं को पकड़ कर लाओ वरना मैं तुम्हें प्राणदंड दूँगा। कोतवाल ने बड़ी दौड़-धूप की और निश्चित अवधि में उन्हें पकड़ लिया। वे नदी पार पकड़े गए थे इसलिए उन्हें नाव पर बिठा कर लाया गया। मैं ने, जो बाद में नाव पर चढ़ा था, समझा कि यह लोग मामूली आदमी हैं। दूसरे किनारे पर अन्य सिपाहियों ने उनके साथ मुझे भी बाँध लिया। मैं ने यह भी न कहा कि मैं डाकू नहीं हूँ, क्योंकि आप जानते हैं कि मैं अल्पभाषी हूँ।

खलीफा के सामने हमें पहुँचाया गया तो उसने जल्लाद को आज्ञा दी कि दसों डाकुओं का सिर काट लो। भाग्यवश मुझे सब के अंत में बिठाया गया। जल्लाद ने दसों के सिर काट दिए तो मेरे पास आ कर रुक गया। खलीफा ने ध्यान से मुझे देखा और कहा, मूर्ख बूड्ढे, तू तो डाकू नहीं है, तू किस तरह इन के साथ आ मिला। मैं ने कहा, मालिक, मैं तो इन्हें भला आदमी समझ कर इनके साथ नाव पर बैठ गया था।

खलीफा को यह सुन कर हँसी आई और वह कहने लगा, तू अजीब आदमी है। पहले क्यों नहीं बोला कि तू डाकुओं में नहीं है। मैं ने कहा, सरकार मैं सात भाइयों में सब से छोटा हूँ। मेरे छहों भाई बकवासी हैं, मैं कम बोलता हूँ। मेरा एक भाई कुबड़ा है, दूसरा पोपला, तीसरा काना, चौथा अंधा, पाँचवाँ बूचा यानी कनकटा और छठा खरगोश की तरह होंठकटा है। कहें तो मैं उनका वृत्तांत कहूँ। किंतु शायद वह सुनना न चाहता था इसलिए उसके बोलने के पहले ही मैं ने अपने भाइयों की कथा आरंभ कर दी।

नाई के कुबड़े भाई की कहानी

सरकार, मेरा सबसे बड़ा भाई जिसका नाम बकबक था, कुबड़ा था। उसने दरजीगीरी सीखी और जब यह काम सीख लिया तो उसने अपना कारबार चलाने के लिए एक दुकान किराए पर ली। उस की दुकान के सामने ही एक आटा चक्कीवाले की दुकान थी। चक्कीवाले का काम अच्छा चलता था और वह बहुत धनवान था किंतु मेरे भाई का काम नया था और वह बेचारा रोज कमाता और रोज खाता था।

एक दिन मेरा भाई काम कर रहा था और सामने चक्कीवाले के मकान की ऊपर की खिड़की खुली थी। कुछ देर में चक्कीवाले की अति सुंदर पत्नी वहाँ आ खड़ी हुई। मेरा भाई उसके रूप पर मर मिटा और उसे टकटकी लगाए देखता रहा। जब स्त्री की दृष्टि

उस पर पड़ी तो उसने तुरंत ही खिड़की बंद कर ली क्योंकि वह बड़ी पतिव्रता थी। दूसरे दिन वह खिड़की न खुली। तीसरे दिन उस स्त्री ने खिड़की खोली तो फिर मेरे भाई को अपनी ओर देखता पाया। वह समझ गई कि यह आदमी मुझ पर बुरी नजर रखता है। वह इस बात पर जल गई किंतु उसने इसे दंड देना चाहा। वह इसकी ओर देख कर मुस्कुरा दी। यह भी हँस दिया। फिर वह शरमा कर चली गई। यह मूर्ख इससे समझा कि स्त्री मुझे चाहने लगी है।

अब उस स्त्री ने अपनी योजना आरंभ की। उसने अपनी सेविका के हाथ कई गज बहुमूल्य कपड़ा दरजी के पास भेजा कि मेरे लिए तुरंत ही अच्छा परिधान बना दे। मेरे भाई ने समझा कि यह वास्तव में मुझे चाहने लगी है नहीं तो इतना मूल्यवान कपड़ा नए दरजी के पास क्यों भेजती। उसने मेहनत से दिन भर लग कर शाम तक परिधान तैयार कर दिया। दूसरे दिन सेविका के आने पर उसने कहा कि अपनी स्वामिनी से कहना कि अपने सारे परिधान मुझी से सिलवाया करें, मैं बहुत शीघ्र और अत्यंत उत्तम सिलाई करता हूँ। सेविका थोड़ी दूर जा कर लौट आई और कहने लगी, मैं तुम्हें अपनी मालकिन का एक संदेश देना तो भूल ही गई। उसने पुछवाया है कि उस की रात तो तुम्हारे ध्यान में जागते ही कटी, तुम्हारी रात कैसी बीती। मेरा भाई यह सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला कि उनसे कह देना कि मेरी तो चार रातें उनकी याद में जागते बीती हैं।

थोड़ी देर में सेविका फिर आई और कहने लगी कि मेरी मालकिन ने यह रेशमी कपड़ा दिया है कि उसके लिए परिधान बनाया जाए। मेरा मूर्ख भाई मनोयोग से उसे सीने लगा। सेविका के जाने के थोड़ी देर बाद वह मनमोहिनी फिर खिड़की पर आ गई और तरह-तरह के हाव-भाव के साथ अपनी लंबी केशराशि, उन्नत यौवन और पतली कमर का प्रदर्शन कर के चली गई। इस मूर्ख ने प्रेम के नशे में दिन भर लग कर वह कपड़ा भी सी दिया। शाम को सेविका आ कर यह दूसरा वस्त्र भी ले गई। सिलाई उसने न पहले कपड़े की दी न दूसरे कपड़े की। अतएव मेरे भाई को दूसरे दिन भी भूखा ही सोना पड़ा। भूख से व्याकुल हो कर उसने शाम को अपने मित्रों से कुछ पैसा उधार लिया और किसी तरह पेट भरा।

दूसरे दिन सवेरे सेविका ने आ कर उससे कहा कि मेरे मालिक ने तुम्हें बुलाया है। पहले तो मेरा भाई घबराया किंतु फिर सेविका के इस कथन से आश्वस्त हो गया कि मालकिन ने मालिक को तुम्हारे सिए हुए वस्त्र दिखाए कि तुमने कितनी होशियारी से उस की ठीक नाप के कपड़े बनाए हैं। इससे मालिक भी बहुत खुश हुए और चाहते हैं कि अपने वस्त्र भी तुमसे सिलवाएँ। दरअसल मेरी मालकिन चाहती हैं कि इसी बहाने तुम्हारा उनके घर आना हो जाए जिससे बाद में मिलन की कोई तरकीब निकल सके।

मेरा भाई यह सुन कर फूला न समाया। वह सेविका के साथ चला गया। चक्कीवाले ने उस की बड़ी प्रशंसा की और खूब स्वागत-सत्कार किया। उसने उसे एक थान दिया कि इसमें से मेरे लिए कई वस्त्र बना दो और जो कपड़ा बचे मुझे वापस कर दो। मेरे भाई ने लग कर पाँच-सात दिन में वे वस्त्र तैयार कर दिए। चक्कीवाला इन्हें देख कर बड़ा खुश हुआ। उसने एक कीमती थान और दिया कि वैसे ही उत्तम वस्त्र सिए जाएँ। मेरे भाई ने

फिर कर्ज ले कर अपने खाने-पीने का काम चलाया और दूसरे थान के कपड़े भी सी दिए।

कपड़े ले कर वह चक्कीवाले के पास गया तो चक्कीवाला और प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि तुम्हें सिलाई तो अभी मैं ने दी नहीं। मेरा भाई चुप रहा तो चक्कीवाले ने खुद हिसाब लगा कर सारे कपड़ों की उचित सिलाई के पैसे दिए। मेरा भाई उन्हें लेनेवाला ही था कि वही कमबख्त दासी चक्कीवाले के पीछे खड़ी हो कर इशारा करने लगी कि खबरदार, कुछ न लेना, वरना काम बिगड़ जाएगा। मेरा भाई ऐसा मूर्ख निकला कि उसने सिलाई तो क्या उस डोरे का दाम भी नहीं लिया जो उसने सीने में लगाया था। कहने लगा कि सिलाई देने की क्या जरूरत है, फिर देखा जाएगा।

चक्कीवाले से विदा हो कर वह अपने मित्रों के पास फिर कर्ज लेने पहुँचा किंतु उसे निराश होना पड़ा। मित्रों ने कहा कि तुम उधार ले कर कभी वापस तो करते नहीं, तुम्हें एक पैसा भी नहीं देंगे। फिर वह मेरे पास आया कि कुछ पैसे दो, मैं कई दिन से भूखा हूँ। मैं ने उसे थोड़ा-सा धन दिया क्योंकि मैं भी कौन अमीर था। इन पैसों से उसका कुछ दिन तक इस तरह काम चला कि रोज दो-एक सूखी रोटियाँ खा लेता था।

एक दिन मेरा भाई फिर चक्कीवाले के यहाँ गया। वह उस समय चक्की पर काम कर रहा था। उसने समझा कि यह सिलाई माँगने आया है। उसने जेब में हाथ डाल कर कुछ सिक्के उसे देने के लिए निकाले। इसी समय सेविका ने पीछे से इशारा किया कि अगर सिलाई ली तो हमेशा के लिए काम बिगड़ जाएगा। अतएव उस बेचारे ने उस दिन भी कुछ न लिया और कहा कि मैं सिलाई लेने नहीं आया था, यूँ ही पड़ोसी होने के नाते तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछने के लिए आया था। चक्कीवाला उस की भद्रता से बड़ा प्रभावित हुआ और उसे एक और कपड़ा सीने को दिया। मेरे भाई ने उसे भी उसी दिन सी दिया और दूसरे दिन चक्कीवाले के पास ले गया। चक्कीवाले ने सारे पैसे देने चाहे लेकिन सेविका ने फिर इशारा किया कि एक पैसा भी लिया तो मालकिन कभी तुम्हारे सामने न आएँगी। इसलिए उसने कहा, जल्दी क्या है, साहब? पैसे भी ले लूँगा। मैं तो आपका हाल-चाल पूछने के लिए आता हूँ, पैसे के लिए नहीं आता। यह कह कर फिर वह बेचारा अपनी दुकान में आ कर भूखा-प्यासा काम करने लगा।

लेकिन चक्कीवाले की पत्नी को इतनी बात से संतोष न हुआ। पैसे तो उसे बाद में मिल जाने ही थे। वह उसे कठोर दंड दिलवाना चाहती थी। इसलिए एक दिन उसने अपने पति को पूरी बात बता दी कि वह मुझ पर बुरी नजर रखता है, इसीलिए उसने इतने ढेर सारे कपड़े सी कर भी सिलाई नहीं ली। चक्कीवाला यह सुन कर बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने दो-चार दिन तक सोच विचार कर के मेरे भाई को अच्छी तरह दंड देने की योजना बनाई। उसने एक दिन इसे शाम के खाने पर बुलाया। खाना खाने के बाद दोनों देर तक बातें करते रहे। फिर चक्कीवाले ने कहा कि अब बहुत रात बीत गई है, कहाँ जाओगे इस समय। यह कह कर उसे एक जगह सुला दिया।

आधी रात को उसने मेरे भाई को जगाया और कहा, भाई, मेरी मदद करो नहीं तो मेरी बड़ी हानि हो जाएगी। मेरा खच्चर जो चक्की चलाता था बीमार पड़ गया है और चक्की बंद पड़ी है।

मेरे भाई ने कहा, चक्की चलवाने के लिए क्या कर सकता हूँ। उसने कहा कि तुम खच्चर की जगह चक्की में बँध जाओ और उसे चारों ओर दौड़ कर घुमाओ। मेरे भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह आनाकानी करने लगा। किंतु चक्कीवाले ने उसे चक्की से बाँध ही दिया और कहा कि तेज दौड़ो। मेरे भाई ने चलना शुरू किया तो चक्कीवाले ने उसे एक चाबुक मारा। इसने पूछा यह क्या बात है। उसने कहा कि खच्चर को मैं इसी तरह तेज चलाया करता हूँ, तुम भी तेज न चलोगे तो सारा अनाज बगैर पिसा रह जाएगा। मेरा भाई बेचारा दौड़ने लगा लेकिन दो-चार चक्कर लगाने के बाद बेदम हो कर बैठ रहा। चक्कीवाले ने दस बार चाबुक उसे मारे और उसे खूब गालियाँ दीं जैसी वह खच्चर को दिया करता था।

मेरे भाई की सुबह तक यही दशा रही। सुबह चक्कीवाला उसे वैसा ही बँधा छोड़ कर अपनी स्त्री के पास यह कहने को गया कि अपने प्रेमी की दशा देख लो। इसी बीच सेविका ने आ कर उसे खोला और कहा कि मुझे और मालकिन को तुम पर दया आई है, इसीलिए मैं ने तुम्हें छुड़ाया है। इसने कुछ उत्तर न दिया और गिरता पड़ता अपने घर आया। इस प्रकार उसके सिर से प्रेम का भूत उतरा।

खलीफा ने कहा कि आज ईद है, इस नाई को इनाम दे कर विदा करो। मैं ने यह कह कर विदा ली कि सारे भाइयों की बातें सुना कर ही इनाम लूँगा।

नाई के दूसरे भाई बकबारह की कहानी

दूसरे रोज खलीफा के सामने पहुँच कर मैं ने कहा कि मेरा दूसरा भाई बकबारह पोपला है। एक दिन उससे एक बुढ़िया ने कहा, मैं तुम्हारे लाभ की एक बात कहती हूँ। एक बड़े घर की स्वामिनी तुम से आकृष्ट है। मैं तुम्हें उसके घर ले जा सकती हूँ। उस की कृपा हो गई तो तुम शीघ्र ही धनवान हो जाओगे। मेरे भाई ने उसका बड़ा अहसान माना और कुछ पैसे भी बुढ़िया को दिए।

बुढ़िया ने कहा, लेकिन मैं एक चेतावनी तुम्हें देती हूँ। उस सुंदरी की उम्र कम है और उसका बचपन और खिलंदरापन अभी नहीं गया है। वह अपने मित्रों और उन सभी लोगों के साथ तरह-तरह के तंग करनेवाले मजाक करती है, इसी में उसे आनंद आता है। और अगर कोई उसके शारीरिक परिहासों का बुरा मानता है तो वह उससे हमेशा के लिए बिगड़ जाती है और कभी उसका मुँह नहीं देखती। इसलिए यह जरूरी है कि वह और उस की सहेलियाँ और दासियाँ तुम से कितनी ही छेड़छाड़ या खींचतान करें तुम किसी बात का बुरा न मानना। मेरे भाई ने यह बात स्वीकार कर ली।

फिर एक दिन वह बुढ़िया मेरे भाई को वहाँ ले गई। मेरे भाई बकबारह को उस भवन की विशालता और भव्यता को देख कर अति आश्चर्य हुआ। बुढ़िया के साथ होने से उसे किसी द्वारपाल ने नहीं रोका। बुढ़िया ने फिर ताकीद की कि वह सुंदरी या उसके साथ की स्त्रियाँ हँसी-मजाक करें तो बुरा न मानना। महल बहुत ही शानदार था और निवास कक्षों के सामने एक मनोहर उद्यान था। बुढ़िया उसे एक दालान में बिठा कर अंदर गई कि उसके आने का समाचार गृहस्वामिनी को दे। कुछ देर में उसने कई स्त्रियों के आने की आवाज सुनी।

वह चैतन्य हो कर बैठ गया। बहुत सी स्त्रियों का समूह वहाँ आ गया। वे सब परिचारिकाएँ लग रही थीं। बकबारह को देख कर वे सब हँसने लगी। उन सेविकाओं के बीच में एक अति सुंदर रमणी मूल्यवान वस्त्राभूषण पहने शालीनतापूर्वक आ रही थी। स्पष्टतः वह उनकी स्वामिनी थी।

बकबारह इतने स्त्रियों को देख कर घबरा-सा गया। उसने उसे झुक कर सलाम किया। उस सुंदरी ने उसे बैठ जाने को कहा और मुस्कुरा कर बोली, हम लोगों को तुम्हारे आगमन से बड़ी प्रसन्नता हुई है, अब तुम बताओ कि तुम क्या चाहते हो। मेरे भाई ने कहा कि मैं केवल यह चाहता हूँ कि आपकी सेवा में रहूँ। उसने कहा कि अच्छी बात है, मैं भी यही चाहती हूँ कि हम लोग चार घड़ी हँस-बोल कर काटें।

यह कह कर उसने अपनी दासियों को भोजन लाने की आज्ञा दी। दासियों ने भोजन परोसा और भोजन के लिए बकबारह को अपनी स्वामिनी के सम्मुख ही बिठाया। जब बकबारह ने खाने के लिए मुँह खोला तो उसने देखा कि इसके मुँह में एक भी दाँत नहीं है। उसने अपनी

सेविकाओं को इशारे से यह दिखाया और हँसने लगी। वे सब भी हँसीं। मेरा भाई समझा कि मेरी संगत से यह प्रसन्न है इसलिए वह भी हँसने लगा। फिर उस सुंदरी ने अपनी दासियों को हट जाने का इशारा किया और अपने हाथ से कौर उठा- उठा कर उसे खिलाना शुरू किया। खाने के बाद सुंदरी की परिचारिकाएँ आईं और नाचने- गाने लगीं। मेरा भाई भी उन लोगों के साथ नाचने-गाने लगा। केवल वह सुंदरी ही चुपचाप बैठी रही।

नाच-गाना समाप्त होने के बाद सब सेविकाएँ बैठ कर आराम करने लगीं। मेरे भाई को उस सुंदरी ने एक गिलास भर कर शराब दी और एक गिलास खुद पी। मेरे भाई ने कृतज्ञतावश खड़े हो कर पिया क्योंकि स्वयं अपने हाथों से मदिरा दे कर सुंदरी ने उसे सम्मानित किया था। सुंदरी ने उसे अपने पास बिठाया। वह सलाम कर के बैठ गया। सुंदरी ने उसके गले में बाँह डाल दी और उसके मुँह पर धीरे-धीरे तमाचे मारने लगी।

मेरा भाई स्वयं को संसार का सबसे भाग्यशाली मनुष्य समझ रहा था कि ऐसी सुंदर और धनवान स्त्री उसे इतना प्यार दे रही है। किंतु अचानक ही उस स्त्री ने उसे जोर-जोर से तमाचे मारना शुरू कर दिया। अब वह बिगड़ कर उस सुंदरी से दूर जा बैठा। बुढ़िया भी कुछ दूर पर मौजूद थी। वह इशारा करने लगी कि तुम नाराज हो कर ठीक नहीं कर रहे हो, मैं ने तुम से क्या कहा था। मेरा मूर्ख भाई फिर उस सुंदरी के पास जा कर बैठ गया और कहने लगा कि आप यह न समझें कि मैं नाराज हो कर आप से दूर जा बैठा था। दरअसल दूसरी ही बात थी। उस सुंदरी ने उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया।

सुंदरी ने प्रकट में तो उस पर बड़ी कृपा की किंतु अपनी दासियों को इशारा कर दिया और वे उसे भाँति-भाँति से दुखी करे लगीं। उन्होंने मेरे भाई को बिल्कुल विदूषक बना डाला। कोई उस की नाक पकड़ कर खींचती कोई उसके सिर पर धौलें मारती। इसी बीच मौका पा कर मेरे भाई ने बुढ़िया से कहा कि तुम ठीक कहती थीं, ऐसे विचित्र स्वभाव की स्त्री कहीं संसार में नहीं मिलेगी और तुम भी देखो कि मैं इन लोगों को प्रसन्न करने के लिए कैसे-कैसे दुख सह रहा हूँ। उसने कहा कि अभी देखते जाओ क्या होता है।

फिर उस सुंदरी ने मेरे भाई से कहा, तुम तो बड़े बिगड़ैल जान पड़ते हो। हम लोग जरा-सा हँसी-मजाक करते है तो तुम बुरा मान जाते हो। हम तो तुम से खुश हैं और तुम पर मेहरबानियाँ करना चाहते हैं और तुम्हारे मिजाज ही नहीं मिलते। मेरे भाई ने कहा, नहीं मेरी सरकार, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं आपकी प्रसन्नता के लिए प्रस्तुत हूँ। जैसा चाहेंगी वैसा ही करूँगा। जब उस स्त्री ने देखा कि वह निपट मूर्ख उसके कहने में पूरी तरह आ गया और हर बात बर्दाश्त कर लेगा तो उसके गले में बाँहें डाल कर कहने लगी कि अगर तुम वास्तव में हमें प्रसन्न करना चाहते हो तो हमारी तरह हो जाओ। मूर्ख बकबारह बिल्कुल न समझा कि उसका क्या तात्पर्य है।

उस मदमाती नवयौवना ने अपनी सेविकाओं से कहा कि गुलाब जल और इत्र- फुलेल लाओ ताकि हम अपने मेहमान का आदर-सत्कार करें। यह चीजें आने पर उसने अपने

हाथ से मेरे भाई पर गुलाब जल छिड़का और उसके कपड़ों पर इत्र लगाया। वह यह सब देख कर फूला नहीं समाता था। फिर उस सुंदरी ने अपनी सेविकाओं को फिर राग रंग की आज्ञा दी और उन्होंने फिर नाचना-गाना शुरू किया। फिर उसने दासियों से कहा कि इस आदमी को दूसरे कमरे में ले जाओ और जिस तरह मैं चाहती हूँ इसे सजा-सँवार कर ले आओ। बकबारह यह सुन कर बुढ़िया के पास गया और पूछा कि यह लोग मेरे साथ क्या करेंगी। उसने कहा, यह सुंदरी तुम्हें स्त्री रूप में देखना चाहती हैं। अब यह परिचारकाएँ तुम्हारी भौंहों को रंग कर सजाएँगी और तुम्हारी मूँछें मूड़ कर तुम्हें स्त्रियों जैसे वस्त्र पहनाएँगी।

बकबारह ने कहा, स्त्रियों के कपड़े मैं पहन लूँगा और भौंहें भी रँगवा लूँगा क्योंकि उन्हें पानी से धो सकता हूँ किंतु मूँछें नहीं मुड़वाऊँगा। इससे तो मेरी सूरत बड़ी अजीब लगेगी। बुढ़िया ने कहा, इस मामले में कोई बहस या कोई जिद न करना। यह सुंदरी तुम पर मोहित है। तुम से जरा-सा हँसी-ठट्ठा करना चाहती है तो कर लेने दो, क्या हर्ज है। यह तुम्हें इतना धन देगी जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। इस मामले में अगर तुमने हुज्जत की तो सारा मामला खराब हो जाएगा। तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।

इस पर वह बेचारा राजी हो गया और दासियों से कहने लगा कि मेरे साथ जो चाहो वह करो। दासियाँ उसे दूसरे कमरे में ले गईं। उन्होंने तरह-तरह से उस की भौंहों को रँगा और उस की मूँछें मूँड़ दीं। फिर उन्होंने उस की दाढ़ी मूँड़नी चाही तो उसने फिर प्रतिरोध किया। वे कहने लगीं कि यदि दाढ़ी बचानी थी तो मूँछें क्यों मुड़वाईं, स्त्रियों के वस्त्रों के साथ दाढ़ी कैसे चलेगी। अब वह बेचारा दाढ़ी मुड़वाने को भी तैयार हो गया। दासियों ने उस की दाढ़ी मूड़ कर उसे स्त्रियों के कपड़े पहनाए। इसके बाद वे उसे सुंदरी के पास ले आईं। वह इसका यह रूप देख कर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई। उसने कहा, तुम ने यहाँ तक मेरी बात मानी है तो एक बात और मान लो। तुम सर पर हाथ रख कर और नाक पर उँगली रख कर स्त्रियों की भाँति नाच कर दिखाओ। वह उसी प्रकार नाचने लगा। सारी सेविकाएँ यहाँ तक कि गृहस्वामिनी भी उसके साथ नाचने लगी। वे सब इस तमाशे पर हँसते-हँसते पागल-सी होती जा रही थीं।

उन स्त्रियों ने उसे केवल नचाया ही नहीं, और भी दुर्गति की। उन्होंने उसके हाथ-पाँव बाँध दिए, उसे खूब थप्पड़ और लातें मारीं और उसे उठा-उठा कर एक दूसरे पर फेंकने लगीं। यह देख कर बुढ़िया ने पूर्व योजनानुसार उन सब को डाँटा कि यह बेहूदगी बंद करो। अभिप्राय यह था कि वह बुढ़िया को हितचिंतक समझे और उसके कहने से और तमाशे करे।

अब बुढ़िया ने उसे एक ओर ले जा कर कहा, तुम्हें दुखी तो बहुत किया गया किंतु अब केवल एक बात ही रह गई है। उसमें सफल हो गए तो पौ बारह समझो। यह सुंदरी जब किसी पर प्रसन्न होती है तो उसके साथ एक खेल जरूर करती है। शराब पीने के बाद यह उस व्यक्ति को, उसके सारे कपड़े उतरवा कर और कमर पर एक छोटा कपड़ा भर बँधवा कर अपने सामने बुलाती है और उसके आगे दौड़ती हुई उससे कहती है कि मुझे पकड़ो

और कमरे-कमरे और दालान-दालान में दौड़ती फिरती है। जब वह थक कर खड़ी हो जाती है और वह व्यक्ति उसे पकड़ लेता है तो उस की बाँहों में चली जाती है।

अतएव मेरे भाई ने एक लँगोट को छोड़ कर सारे कपड़े उतार डाले और वह स्त्री उससे बीस कदम आगे भागने लगी। भागते-भागते वह उसे एक बिल्कुल अँधेरे कमरे में ले गई। वह स्वयं तो न जाने कहाँ निकल गई, वह बेचारा अँधेरे में भटकता रहा।

अंत में एक ओर प्रकाश देख कर वह उधर दौड़ा। वह पिछवाड़े का दरवाजा था। मेरा भाई वहाँ से ज्यों ही निकला कि वह द्वार बंद हो गया। पिछवाड़े की गली में चर्मकार रहते थे। उन्होंने एक दाढ़ी, मूँछ मुड़ाए, भौंहे रँगाए, लँगोट पहने आदमी को देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ और शरारत भी सूझी। उन्होंने हँसना और तालियाँ बजाना और चपतियाना शुरू किया। फिर वे एक गधा पकड़ लाए और उस पर उसे बिठा दिया और बाजार की तरफ ले जाने लगे। मेरे भाई के दुर्भाग्य से रास्ते में काजी का घर पड़ता था। काजी ने शोर सुन कर अपने नौकर से पुछवाया कि क्या बात है।

नौकरों ने सब लोगों को काजी के सामने ला खड़ा किया। काजी के पूछने पर चर्मकारों ने कहा, सरकार, हमने इस आदमी को इसी दशा में उस गली में पाया जो मंत्री के महल के पिछवाड़े खुलती है। यह वहीं घूम रहा था। काजी ने मंत्री के महल का नाम सुन कर कहा, यह पागल और खतरनाक आदमी मालूम होता है। इसे लिटा कर इसके पाँव उठवा कर तलवों पर सौ डंडे मारे जाएँ और उसके बाद इसे शहर से निकाल दिया जाए। इसके बाद इसके नगर में प्रवेश पर हमेशा के लिए रोक लगा दी जाए। अतएव ऐसा ही किया गया।

इसके बाद नाई ने कहा कि सरकार, यह मेरे दूसरे भाई बकबारह की कहानी है जो मैं ने आपको सुनाई है। अब मैं आपको अपने तीसरे भाई की कहानी सुनाता हूँ। यह कह कर बगैर खलीफा की अनुमति लिए वह कहानी सुनाने लगा।

नाई के तीसरे भाई अंधे बूबक की कहानी

नाई ने कहा, सरकार, मेरा तीसरा भाई बूबक था जो बिल्कुल अंधा था। वह बड़ा अभागा था। वह भिक्षा से जीवन निर्वाह करता था। उसका नियम था कि अकेला ही लाठी टेकता हुआ भीख माँगने जाता और किसी दानी का द्वार खटखटा कर चुपचाप खड़ा रहता। वह अपने मुँह से कुछ न कहता और दानी जो कुछ भी देता उसे ले कर आगे बढ़ जाता। इसी प्रकार एक दिन उसने एक दरवाजा खटखटाया। गृहस्वामी ने, जो घर में अकेला रहता था, आवाज दी कि कौन है। मेरा भाई अपने नियम के अनुसार कुछ नहीं बोला लेकिन दुबारा दरवाजा खटखटाने लगा। गृहस्वामी ने फिर पुकारा कि कौन है। यह बगैर बोले फिर द्वार खटखटाने लगा। अब घर के मालिक ने दरवाजा खोला और पूछा कि तू क्या चाहता है।

बूबक ने कहा कि मैं गरीब भिखमंगा हूँ, भगवान के नाम पर कुछ भीख दो। गृहस्वामी ने कहा कि क्या तू अंधा है, उसने कहा कि हाँ। फिर गृहस्वामी ने कहा, हाथ बढ़ा। यह समझा कि कुछ भीख मिलेगी। उसने हाथ फैलाया तो घर का स्वामी उसे खींच कर ऊपर ले गया। फिर उसने बूबक से पूछा कि तू भीख लेता है तो कुछ देता भी है? उसने कहा, मैं आशीर्वाद ही दे सकता हूँ, तुझे आशीर्वाद देता हूँ। उस आदमी ने कहा कि मैं भी तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि तेरी आँखों की ज्योति लौट आए।

बूबक ने उससे कहा, तू यह बात पहले ही कह देता। मुझे जीना चढ़ा कर क्यों लाया? उसने कहा, मैं ने तुझे दो बार आवाज दी थी। तू कुछ न बोला तो मुझे भी बेकार जीना उतरना-चढ़ना पड़ा। बूबक बोला कि अच्छा, मुझे जीने से उतार तो दे। उसने कहा कि सामने ही तो जीना है, तू खुद उतर जा। मजबूर हो कर बेचारा बूबक टटोल-टटोल कर जीना उतरने लगा लेकिन एक जगह उसका पाँव फिसल गया और वह लुढ़कता हुआ नीचे आ रहा। उसके सिर और पीठ में बड़ी चोट आई जिससे वह तिलमिला उठा। बेचारा बड़ी देर तक अपनी चोटों को सहलाता हुआ गृहस्वामी को गालियाँ देता और उस की भर्त्सना करता रहा। फिर वह लाठी टेकता हुआ आगे भीख माँगने के लिए बढ़ गया।

कुछ देर में उसे अपने दो साथी अंधे भिखारी मिले। उन्होंने पूछा कि तुम्हें आज भिक्षा में क्या मिला। बूबक ने सारा वृत्तांत कहा कि किस तरह एक घर का निवासी उसे पकड़ कर ऊपर ले गया और वहाँ जा कर उसके साथ कैसा निष्ठुर परिहास किया और उसे हाथ पकड़ कर उतारा भी नहीं। उसने यह भी बताया कि जीना उतरते समय पाँव फिसलने से उसे कैसा कष्ट हुआ। फिर मेरे भाई ने उनसे कहा कि आज मुझे कुछ नहीं मिला है लेकिन मेरे पास पहले के कुछ पैसे पड़े है, तुम जा कर उनसे कुछ भोजन सामग्री खरीद लाओ।

जो मनुष्य बूबक को जीने से ऊपर चढ़ा ले गया था वह वास्तव में एक ठग था। वह चुपके से बूबक के पीछे आ रहा था। वे तीनों अंधे जब अपने निवास स्थान पर आए तो वह भी उनके पीछे पीछे चल कर उनके घर में आ घुसा। मेरे भाई ने फिर अपनी जेब से कुछ पैसे

निकाल कर एक अन्य अंधे से कहा कि बाजार से कुछ खाने को ले आओ लेकिन पहले हम लोग अपना हिसाब-किताब साफ कर लें, तुम लोग देख-भाल कर दरवाजा अच्छी तरह बंद कर लो कि कोई बाहरी आदमी न देखे। ठग उनका व्यापार देखना चाहता था इसलिए वह छुपने के लिए छत में बँधी हुई एक रस्सी पकड़ कर ऊँचा लटक रहा।

अंधों ने अपनी लाठियों से सारे घर को टटोला और फिर दरवाजा बंद कर लिया। ठग ऊँचा लटका था इसलिए लाठियों की टटोल से बच गया। अब मेरे भाई ने कहा कि तुम लोगों ने मुझे ईमानदार समझ कर अपने जो रुपए मेरे पास रखे थे उन्हें वापस ले लो, अब मैं उन्हें अपने पास नहीं रखूँगा। यह कह कर वह अपनी एक पुरानी गुदड़ी उठा लाया जिसके अंदर बयालीस हजार चाँदी के सिक्के सिले थे। उसके साथियों ने कहा कि इन्हें अपने पास ही रहने दो, हम न इन्हें लेंगे न गिनेंगे क्योंकि तुम पर हमें पूरा विश्वास है। बूबक ने टटोल-टटोल कर गुदड़ी की माल का अंदाजा लगाया और फिर गुदड़ी को यथास्थान रख आया।

फिर बूबक ने जेब से पैसे निकाल कर खाना लाने के लिए कहा। एक अंधे ने कहा, तुम पैसे रखो, बाजार से कुछ लाने की जरूरत नहीं है। मुझे आज एक अमीर आदमी के घर से बहुत-सा खाना मिला है। कुछ तो मैं ने खा लिया है लेकिन अब भी बहुत कुछ बचा हुआ है। यह कह कर उसने अपनी झोली से बहुत-सी रोटियाँ और पनीर तथा फल-मेवे निकाले। तीनों अंधे भोजन करने लगे। ठग भी अपने को रोक न सका और मेरे भाई के दाहिनी तरफ बैठ कर यह सुस्वादु वस्तुएँ खाने लगा।

ठग ने अपने को छुपाने का पूरा प्रयत्न किया था किंतु उसके मुँह से खाना चबाने की ध्वनि सुन कर बूबक चौंका। उसने मन में सोचा कि महाविपत्ति आ गई, यहाँ कोई अन्य व्यक्ति है जो हमारे साथ खाना भी खा रहा है और जिसने गुदड़ी का भेद जान लिया है। उसने एक दम से ठग का हाथ पकड़ लिया और चोर चोर चिल्लाता हुआ उसे घूँसे मारने लगा। अन्य दोनों अंधों ने भी ठग को चिल्ला-चिल्ला कर मारना शुरू कर दिया। चोर भी जहाँ तक उससे हो सका उन अंधों की मार से बचता हुआ उन्हें मारने लगा। वह भी चिल्लाने लगा कि मुझे बचाओ, चोर मुझे मारे डालते हैं।

आसपास के लोग चीख-पुकार सुन कर दरवाजा तोड़ कर अंदर घुस आए और पूछने लगे कि क्या बात है। मेरे भाई ने कहा कि मैं जिसे पकड़े हुए हूँ वह चोर है, यह हमारी भीख से बचाए हुए रुपए चुराने आया है। ठग ने लोगों को देख कर आँखें बंद कर लीं और अंधेपन का अभिनय करने लगा और बोला, भाइयो, यह अंधा बिल्कुल झूठ बकता है। सच्ची बात यह है कि हम चारों अंधों ने भीख माँग कर यह रुपया जमा किया है। अब यह तीनों बेईमान मुझे मेरा हिस्सा नहीं देते। यह मुझे चोर बना रहे हैं और मुझे मार रहे हैं। भगवान के लिए मेरा न्याय करो और मुझे इनसे बचाओ।

लोग इस मामले को उलझा हुआ देख कर सब को कोतवाल के पास ले गए। वहाँ अंधा

बने हुए ठग ने कहा, मालिक, हम चारों ही दोषी हैं। लेकिन हम कसमें खा कर भी अपना दोष स्वीकार न करेंगे। अगर हम लोगों को एक-एक कर के मार पड़े तो हम अपराध कबूल कर लेंगे। आप पहले मुझ से आरंभ कीजिए, इस पर मेरे भाई ने कुछ कहना चाहा तो कोतवाल ने उसे डाँट कर चुप कर दिया।

ठग पर मार पड़ने लगी। बीस-तीस कोड़े खाने के बाद उसने एक-एक कर के अपनी दोनों आँखें खोल दीं और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा, सरकार, हाथ रोक लीजिए। मैं सब कुछ बताऊँगा।

कोतवाल ने पिटाई बंद करवा दी तो ठग बोला, सरकार, असली बात यह है कि मैं और मेरे यह तीनों साथी अंधे नहीं हैं। हम अंधे बने हुए हैं और भीख माँगने के बहाने लोगों के घरों में घुस जाते हैं और मौका देख कर चोरी कर लेते हैं। इस तरह से हमने बयालीस हजार रुपया जमा किया है। आज मैं ने इन लोगों से कहा कि मेरे हिस्से का चौथाई रुपया मुझे दे दो तो इन लोगों ने भेद खुलने के भय से मुझे रुपया न दिया और मेरे जिद करने पर मुझ से मारपीट की। अगर आप को मेरी बात पर विश्वास न हो तो इन्हें भी मेरी तरह एक-एक कर के पिटवाइए। फिर देखिए यह लोग तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे।

मेरे भाई और दो अन्य अंधों ने भी चाहा कि अपनी बात कहें किंतु उन्हें बोलने नहीं दिया गया।

कोतवाल ने कहा कि तुम सब अपराधी हो। मेरे भाई ने बहुतेरा कहा कि यह ठग है और हम तीनों वास्तव में अंधे हैं। लेकिन कोतवाल ने उसका विश्वास न किया और तीनों पर मार पड़ने लगी।

ठग ने इन चिल्लाते हुए लोगों से कहा, दोस्तो, क्यों अपनी जान दे रहे हो। मेरी तरह तुम भी अपनी आँखें खोल दो और अपना अपराध स्वीकार कर लो। लेकिन वे बेचारे आँखोंवाले होते तो आँखें खोलते, उसी तरह पिटते और चिल्लाते रहे। अब ठग ने कहा, सरकार, यह लोग बड़े पक्के हैं, अगर आप इन्हें पीटते-पीटते मार डालेंगे तो भी यह अपना अपराध स्वीकार नहीं करेंगे। इन्होंने जितना अपराध किया है इन्हें उससे अधिक दंड मिल चुका है। अब हम सभी को काजी के सामने पेश कर दिया जाए। वह ठीक फैसला करेगा।

काजी के सामने उस ठग ने कहा, हम लोगों ने चोरी से वह धन एकत्र किया है। आज्ञा हो तो मैं उस राशि को आपके सामने पेश करूँ। काजी ने अपना एक सेवक उसके साथ कर दिया। ठग उसके साथ जा कर मेरे भाई की गुदड़ी उठा लाया। काजी ने उस रकम का चौथाई भाग ठग को दे दिया जिसे ले कर वह चला गया। शेष रकम उसने अपने पास रख ली और बाकी तीन लोगों को और पिटवाया और देशनिकाला दे दिया।

यह कह कर नाई ने खलीफा से कहा कि मुझे मालूम हुआ तो मैं ढूँढ़ कर बूबक को गुप्त

रूप से अपने घर लाया और कई गवाह ले कर काजी के सामने उसको निर्दोष सिद्ध किया। काजी ने ठग को बुला कर उसका रुपया छीन कर उसे दंड दिया किंतु रकम इन लोगों को न दी। खलीफा यह सुन कर बहुत हँसा। फिर नाई ने चौथे भाई की कहानी शुरू कर दी।

नाई के चौथे भाई काने अलकूज की कहानी

नाई ने कहा कि मेरा चौथा भाई काना था और उसका नाम अलकूज था। अब यह भी सुन लीजिए कि उसकी एक आँख किस प्रकार गई। मेरा भाई कसाई का काम करता था। उसे भेड़-बकरियों की अच्छी पहचान थी। वह मेढ़ों को लड़ाने के लिए तैयार भी करता था। इस कारण वह नगर में सर्वप्रिय हो गया। वह बड़े अच्छे-अच्छे मेढ़े पालता और प्रतिष्ठित लोग उसके यहाँ मेढ़ों की लड़ाई देखने आते। इसके अलावा वह भेड़ का बहुत अच्छा मांस बेचता था।

एक दिन एक बुड्ढा उसके पास आया और एक पसेरी मांस खरीद कर और उसका मूल्य दे कर चला गया। उसके दिए हुए चाँदी के सिक्के बिल्कुल नए और चमकते हुए थे। मेरे भाई ने उन्हें देख कर एक संदूक में डाल दिया। वह बूढ़ा पाँच महीने तक इसी तरह आता और उतना ही मांस रोज उसकी दुकान से ले जाता रहा और बदले में उतने ही रुपए रोज दे जाता रहा। पाँच महीने बाद मेरे भाई ने जब और भेड़ें खरीदनी चाहीं तो संदूक खोलने पर वहाँ कागज के गोल कटे टुकड़े पाए।

यह देख कर वह अपना सिर पीट-पीट कर रोने-चिल्लाने लगा। उसने पड़ोसियों को बुलाया ओर उन्हें संदूक में भरी हुई कागज की गोल चिंदियाँ दिखाईं। वे भी यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़े। मेरा भाई दाँत पीस-पीस कर कह रहा था कि अगर वह कंबख्त बुड्ढा मिल जाए तो उसकी अक्ल ठिकाने लगाऊँ। संयोग से गली में कुछ दूर पर वह बुड्ढा दिखाई दिया। मेरे भाई ने दौड़ कर उसे पकड़ा और पड़ोसी तथा अन्य कई लोग भी वहाँ एकत्र हो गए। मेरे भाई ने पुकार कर कहा, भाइयो, देखो इस निर्लज्ज पापी ने मेरे साथ कैसी धोखाधड़ी की है। यह कह कर उसने सारा वृत्तांत कहा।

बूढ़ा यह सुन कर मेरे भाई से बोला, तेरे लिए यह अच्छा होगा कि तूने मेरा जो अपमान किया है और जो गालियाँ मुझे दी हैं उनके लिए मुझ से क्षमा माँग और अपना निराधार आरोप वापस ले। तूने ऐसा न किया तो तूने मेरा जितना अपमान किया है उससे अधिक तेरा अपमान कराऊँगा। मैं नहीं चाहता कि तू जो अभक्ष्य वस्तु खिलाता रहा है उसका उल्लेख भी करूँ। मेरे भाई ने कहा, तू यह क्या बकवास कर रहा है? तू जो चाहे कह दे। मैं किसी बात से नहीं डरता क्योंकि मैं कोई काम धोखेबाजी का काम करता ही नहीं।

बूढ़े ने कहा, तू अपनी फजीहत कराना ही चाहता है तो करा। सुनो भाई लोगो, यह अधम कसाई आदमी मारता है और उनका मांस भेड़ और बकरी के नाम पर तुम लोगों के हाथ बेचता है। मेरे भाई ने चिल्ला कर कहा, नीच बूढ़े, तू इस उम्र में भी झूठ बोलने से बाज नहीं आया। क्यों यह बेसिरपैर की हाँक रहा है? उसने कहा, मैं बेसिरपैर की क्या हाँकूँगा। बेसिरवाली आदमी की एक-आध लाश अब भी तुम्हारी दुकान के अंदर के हिस्से में होगी। वहाँ जा कर जो भी देखेगा उसे मालूम हो जाएगा कि झूठा मैं हूँ या तू। अलकूज ने गुस्से में भर कर कहा, जिसका जी चाहे मेरी दुकान देख ले।

अतएव पड़ोसी लोगों ने तय किया कि बूढ़े को दुकान पर ले जाया जाय और अगर उसकी बात झूठ निकले तो जितना रुपया उस पर वाजिब है उससे दुगुना उससे वसूल किया जाए। वहाँ जा कर देखा कि दुकान के भीतरी भाग में वास्तव में एक मनुष्य की बगैर सिर की लाश लटक रही थी जैसे कि कसाइयों की दुकानों पर जानवरों की बेसिर की लाशें लटकी रहती हैं। वास्तविकता यह थी कि वह बूढ़ा जादूगर था और दृष्टि भ्रम पैदा करने में निपुण था। पाँच महीने तक उसने कागज की गोल चिंदियाँ मेरे भाई को दीं और इस समय उस भेड़ को, जिसे मेरे भाई ने कुछ देर पहले मारा था, आदमी बना कर लोगों को धोखा दिया। उसका जादू का खेल कौन समझता। लोगों ने क्रोध में आ कर मेरे भाई को बहुत मारा और उससे चीख-चीख कर कहा कि तुम नीच और पापी हो, हमें नर मांस खिलाते रहे हो। इसी मार के कारण मेरे भाई की एक आँख फूट गई।

मारनेवालों में बूढ़ा भी शामिल था। उसने मार-पीट पर ही पर मामला खत्म नहीं किया बल्कि सारे लोगों के साथ मेरे भाई और उसकी दुकान में टँगी हुई लाश को ले कर काजी के यहाँ पहुँचा। काजी पर भी उसने दृष्टि भ्रम का प्रयोग किया और उसे भी लाश आदमी ही की दिखाई दी। काजी ने मेरे भाई की कहानी पर विश्वास न किया न उसकी चीख-पुकार पर दया दिखाई। उसने आज्ञा दी कि इस कसाई को पाँच सौ कोड़े मारे जाएँ और फिर इसे ऊँट पर बिठा कर सारे शहर में फिराया जाए, फिर नगर से निष्कासित कर दिया जाए। अतएव ऐसा ही किया गया।

जिस समय मेरे भाई पर यह कष्ट पड़ रहा था उस समय मैं बगदाद में था। मेरा भाई किसी गुमनाम जगह पर छुपा रहा और कुछ दिनों के बाद जब उसमें चलने- फिरने की कुछ शक्ति आई तो वह वहाँ से निकला और छुपता-छुपाता एक ऐसे शहर में पहुँचा जहाँ पर उसे कोई नहीं जानता था। किसी तरह उसने कुछ और दिन काटे, कभी काम मिल जाता था तो थोड़ी-बहुत मेहनत-मजदूरी कर लेता था, नहीं तो भीख माँगता था। भीख में भी अगर कुछ नहीं मिलता तो भूखा ही रह जाता।

एक दिन वह एक सड़क पर चला जा रहा था कि उसने अपने पीछे से आती हुई घोड़े की टापों की आवाज सुनी। मुड़ कर देखा तो कई सवारों को अपना पीछा करता पाया। उसने सोचा कि कहीं यह मुझे पकड़ने तो नहीं आ रहे। इसलिए वह दौड़ कर एक बड़े मकान में जाने लगा। वहाँ उसे दो आदमियों ने पकड़ लिया और कहा, भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि तुम आज खुद ही हमारे हाथ पड़ने के लिए यहाँ आ गए हो। हम तीन दिन से रात-दिन तुम्हारी तलाश में दौड़ रहे थे।

मेरा भाई यह सुन कर बहुत आश्चर्यान्वित हुआ। उसने कहा, मैं कुछ भी नहीं समझा। तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो? क्यों मुझे पकड़ा है? तुम्हें कुछ भ्रम हुआ है। उन लोगों ने कहा, हमें कोई भ्रम नहीं हुआ। तू और तेरे कई साथी चोर हैं। तुम लोगों ने हमारे मालिक का सब माल लूट कर उसे लगभग कंगाल कर दिया। इस पर भी तुम्हारी अभिलाषा पूरी नहीं हुई। अब तू हमारे स्वामी के प्राण लेने के लिए भेजा गया है। कल रात भी तू इसी उद्देश्य से आया था और जब हम तुझे पकड़ने को दौड़े तो तेरे हाथ में

छुरी देखी थी। अब भी तेरे पास छुरी होगी। यह कह कर उन दोनों ने मेरे भाई की तलाशी ली तो उसके कपड़ों में वह छुरी निकल आई जिससे वह जानवर काटा करता था। छुरी पा कर वे कहने लगे कि अब तो निश्चय ही हो गया कि तू चोर है। मेरे भाई ने रोते हुए कहा, भाई, किसी के पास छुरी निकले तो क्या इतने भर से वह चोर या हत्यारा हो जाएगा? मेरी कहानी सुनो तो तुम्हें मेरी सत्यता का विश्वास होगा। यह कह कर अलकूज ने अपनी सारी विपदाओं का उनसे वर्णन किया।

किंतु यह कहानी सुन कर वह दोनों व्यक्ति अलकूज पर दया करने के बजाय उससे चिमट गए। उन्होंने उसके कपड़े फाड़ दिए और उसकी पीठ और कंधों पर पुरानी चोटों के निशान देख कर बोले कि इन निशानों से मालूम होता है कि तू पुराना अपराधी है और पहले भी मार खा चुका है। यह कह कर उन्होंने उसे मारना शुरू किया। अलकूज रोता-चिल्लाता रहा और भगवान से शिकायत करता रहा कि मैंने ऐसा क्या अपराध किया है जिसका यह दंड मिल रहा है। एक बार की बेकार की मार के बाद, जिसमें मेरा कोई अपराध नहीं था, यह दूसरा दंड क्यों मिल रहा है।

उन लोगों पर उसके रोने-चिल्लाने का कोई असर नहीं हुआ और वे उसे काजी के पास पकड़ कर ले गए कि यह चोर हमारे स्वामी के यहाँ चोरी करने के बाद उसे मारने के इरादे से छुरी ले कर आया था। मेरे भाई ने काजी से कहा, सरकार, मेरी फरियाद भी सुनिए। मेरी बातें सुनेंगे तो आपके सामने स्पष्ट हो जाएगा कि मुझ जैसा निरपराध व्यक्ति कोई नहीं होगा। उसके पकड़नेवालों ने काजी से कहा, आप इसकी झूठी कहानी न सुनें। इसका इतिहास जानना हो तो इसके शरीर को वस्त्रहीन करें तो देखेंगे कि यह पुराना पापी है और हमेशा मार खाता रहा है।

काजी ने उसका कुरता उतरवा कर देखा तो पुरानी चोटों के निशान देखे। उसने आज्ञा दी कि इसे सौ कोड़े मारे जाएँ और ऊँट पर बिठा कर शहर में घुमाया जाए और इसकी अपराध कथा कही जाए और फिर इसे नगर से निकाल दिया जाए। ऐसा ही किया गया। नाई ने कहा कि मुझ से कुछ लोगों ने जब उसकी दुर्दशा बताई तो मैं वहाँ गया और तलाश कर के अपने भाई को घर लाया। खलीफा का इस कहानी से मनोरंजन हुआ और उसने कहा कि इसे इनाम दे कर विदा करो। लेकिन नाई ने कहा कि सरकार, मेरे बाकी दो भाइयों की कहानी भी सुन लीजिए।

नाई के पाँचवें भाई अलनसचर की कहानी

नाई ने कहा कि मेरे पाँचवें भाई का नाम अलनसचर था। वह बड़ा आलसी और निकम्मा था। वह रोज किसी न किसी मित्र के पास जा कर बेशर्मी से कुछ भीख माँग लेता और खा-पी कर पड़ा रहता।

मेरा बाप कुछ समय बाद बूढ़ा हो कर मर गया। उसने तीन हजार एक सौ पचास रुपए छोड़े। इन रुपयों को हम सातों भाइयों ने बराबर-बराबर बाँट लिया। अलनसचर ने भी अपना भाग पाया और उससे कुछ व्यापार करने की सोची। उसने साढ़े चार सौ रुपए के शीशे के बरतन खरीदे और उन्हें टोकरी में रख कर बाजार में सड़क के किनारे बैठ गया। वहीं एक दरजी की दुकान थी। दो-एक दिन में दरजी से उसकी दोस्ती हो गई।

अलनसचर वाचाल और मूर्ख तो था ही, हवाई किले भी बनाता रहता था। एक दिन वह दरजी से कहने लगा, मैं इन साढ़े चार सौ के बरतनों को नौ सौ में बेचूँगा और फिर उससे और बरतन लूँगा जिन्हें अठारह सौ में बेचूँगा। इसी तरह व्यापार करते-करते मेरे पास तीस हजार रुपए हो जाएँगे। फिर मैं बहुमूल्य व्यापार सामग्री माणिक, मोती आदि खरीदूँगा और उनसे काफी मुनाफा कमाऊँगा। जब मेरे पास काफी रुपया हो जाएगा तो मैं एक विशाल भवन खरीद कर दास-दासियाँ भी मोल लूँगा और रईसों की तरह रहूँगा और मेरी प्रसिद्धि सारे नगर में हो जाएगी, मेरे यहाँ बड़े-बड़े गवैये और कलावंत आएँगे और मेरे यहाँ रात-दिन रास-रंग होंगे। मेरा व्यापार भी जारी रहेगा। जब बढ़ते-बढ़ते मेरा धन पाँच लाख तक पहुँच जाएगा तो मैं यहाँ के मंत्री के पास संदेश भेजूँगा कि अपनी बेटी का विवाह मुझ से कर दे। उसने स्वीकार किया तो ठीक वरना मैं उसकी बेटी को जबर्दस्ती उठा लाऊँगा।

फिर जब मंत्री की पुत्री से मेरा विवाह हो जाएगा तो मैं दस गुलाम खरीदूँगा और शहजादों जैसे बढ़िया कपड़े पहनूँगा और रत्नजटित जीन लगामवाले असील घोड़े पर चढ़ कर शान से मंत्री के घर जाऊँगा। जब मैं उसके महल में पहुँचूँगा तो सभी छोटे-बड़े लोग भय और आदरपूर्वक मुझे देखेंगे और मेरा पूर्ण सत्कार करते हुए मुझे अंदर ले जाएँगे। जब मैं ऊपर जाना चाहूँगा तो मेरे नौकर और गुलाम और नौकरों के जमादार अदब से जीने में दोनों और खड़े होंगे। वजीर अपना दामाद समझ कर मुझे अपने आसन पर बैठने की जगह देगा और स्वयं मेरे सामने बैठेगा। मैं अपने सेवकों से हजार-हजार अशर्फियों के दो तोड़े लाने को कहूँगा। मैं एक तोड़ा वजीर को दूँगा कि यह तुम्हारी बेटी का महर है और दूसरा अपनी इच्छा से तुम्हें देता हूँ। मेरी उदारता की चर्चा चारों ओर होने लगेगी। फिर मैं वैसे ही ठाठ-बाट से अपने घर आऊँगा।

जब मेरी पत्नी सुनेगी कि मैं उसके पिता से मिलने गया था और उसे भेंट दी थी तो वह मेरा एहसान मानेगी और एक उच्च कर्मचारी द्वारा कृतज्ञता का प्रकाशन करेगी। मैं उस कर्मचारी को बढ़िया इनाम दूँगा। कभी-कभी मैं अपनी पत्नी पर कृपा कर के उसका संग

करने के लिए उसके महल में जाऊँगा और वहाँ भी ऐसी गंभीरता से जाऊँगा कि दाएँ-बाएँ किसी ओर निगाह न डालूँगा।

मेरी पत्नी, जिसका मुख पूर्णमासी के चंद्रमा की तरह होगा, बड़ी सज-धज के साथ सोलह श्रृंगार कर के मेरे सामने आएगी तो मैं गर्व के मारे उसकी ओर आँख भी नहीं उठाऊँगा, फिर उसकी प्रधान सेविकाएँ और सखी-सहेलियाँ मेरे सामने आ कर विनय करेंगी कि मालिक, आपकी पत्नी, जो आपकी दासी के समान है, आप की आज्ञा की प्रतीक्षा में है और आप के सामने खड़ी है। कृपा कर के उसे अपने आगे बैठ जाने को कहें। मैं फिर भी उन्हें कोई उत्तर नहीं दूँगा। उन्हें इस बात का बड़ा आश्चर्य होगा कि मैं उनकी ओर और अपनी पत्नी की ओर देखता क्यों नहीं हूँ। वे लोग बड़ी देर तक मेरे सामने खड़ी हो कर मुझ से अपनी पत्नी पर ध्यान देने के लिए अनुनय करती रहेंगी।

फिर मैं एक कृपापूर्ण दृष्टि अपनी पत्नी पर डालूँगा लेकिन फिर निगाह फेर लूँगा। मेरे इस रवैये से मेरी पत्नी की सेविकाएँ और साथिनें समझेंगी कि मैं वैसे किसी बात पर नाराज नहीं हूँ किंतु पत्नी का जो साज-श्रृंगार किया गया है वह मेरे मन का नहीं है इसलिए वे उसे दूसरे कक्ष में ले जाएँगी ताकि उसका नए सिरे से साज-श्रृंगार करें। इतने समय में मैं भी उठ कर नए कपड़े पहन लूँगा।

शयनकक्ष में जाने पर भी मैं अपनी पत्नी से पूर्ण उपेक्षा का बरताव करूँगा। मैं उसकी ओर एक दृष्टि भी नहीं डालूँगा और उससे एक बात भी नहीं करूँगा। मैं पलंग पर उसकी ओर पीठ कर के सो रहूँगा। मेरी पत्नी रात भर इस उपेक्षा से दुखी हो कर आँसू बहाती रहेगी और सवेरा होने पर अपनी माता यानी मंत्री की पत्नी से रो-रो कर कहेगी कि मेरे पति ने रात में मेरे साथ गर्व और उपेक्षा का बर्ताव किया। उसकी माँ उसे दिलासा देगी, फिर मेरे महल में आ कर सम्मानपूर्वक मेरा हाथ चूमेगी और कहेगी कि जमाई राजा, मेरी बेटी पर इतना अत्याचार न करो कि उसकी ओर देखना ही छोड़ दो। उसका अगर कोई कसूर है तो बताओ मैं उसे दंड दूँगी। वैसे यह तो कहने की जरूरत नहीं कि वह तुम्हारी दासी है और तब मन से तुम्हारी सेवा करना उसका कर्तव्य है। तुम उस पर एक बार तो कृपा दृष्टि करो।

उसके इस अनुनय-विनय का मुझ पर कोई असर नहीं होगा। फिर मेरी सास मेरे पास आ कर मेरा पाँव चूमेगी। मैं इस पर भी टस से मस नहीं हूँगा। फिर मेरी सास शराब का एक प्याला भर कर मेरी पत्नी को देगी कि अपने पति को पिला दो, शायद इससे वह तुम से प्रसन्न हो जाए। मेरी पत्नी मेरे सामने आ कर प्याला लिए बहुत देर तक भयभीत-सी खड़ी रहेगी। फिर वह कहेगी कि आपको उसी भगवान की सौगंध है जिसने आप को इतना ऊँचा बनाया है, कि इस दासी के हाथ से मद्यपात्र ले कर पियें। मैं उसकी इस बात को बदतमीजी समझूँगा और उसके मुँह पर एक तमाचा लगाऊँगा और उठ कर उसके इतने जोर से लात मारूँगा कि वह दालान से नीचे गिर पड़ेगी।

मेरा भाई अपनी कल्पना में इतना खो गया कि उसे अपनी स्थिति का भी ध्यान नहीं रहा।

उसने उठ कर उसी टोकरे पर, जिसमें उसके शीशे के बरतन रखे हुए थे, जोर की लात जमाई। टोकरा सड़क पर जा गिरा और उसमें के सारे बरतन टूट-फूट कर बिखर गए। दरजी, जो उसकी बकवास को मजे ले कर सुन रहा था, हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया। उसने मेरे भाई से कहा, मूर्ख, अभागे, तुझे मालूम है कि तेरी यह हानि क्यों हुई है। तूने इतनी सम्मानित और सुंदर स्त्री का जो अपमान किया यह उसी का फल है। अगर मैं तेरे श्वसुर यानी मंत्री की जगह होता तो ऐसी बदतमीजी पर तेरे सौ कोड़े लगवाता और गधे पर बिठा कर सारे शहर में घुमाता कि लोग तुझे दंडित अपराधी के रूप में जान जाएँ।

मेरे भाई को भी अपने माल की बरबादी देख कर बड़ा दुख हुआ और वह रोने-चिल्लाने लगा। बहुत-से लोग उस समय जुमे की नमाज के लिए मस्जिद की ओर आ रहे थे। उसका रोना-पीटना सुन कर वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई। लोग पूछने लगे कि क्या बात है। जब दरजी ने उन लोगों को पूरा हाल बताया तो वे सब भी हँसने लगे और मेरे भाई का मजाक उड़ाने लगे।

संयोग से उसी समय एक अमीर घराने की स्त्री परदेवाली सवारी पर बैठी कहीं जा रही थी और उस स्थान से गुजर रही थी। उसने सवारी रुकवा कर भीड़ के लोगों से पूछा कि क्या बात है, कौन रो रहा है और उस पर क्या विपत्ति पड़ी है। उन लोगों ने जल्दी में पूरी बात नहीं बताई बल्कि कह दिया कि एक गरीब बरतनवाला एक चबूतरे पर टोकरे में बरतन रखे था, संयोग से ठोकर लगी और सारे बरतन जमीन पर गिर कर चूर-चूर हो गए। उस स्त्री को दया आई। उसने अपने एक सेवक को अशर्फियों की एक थैली दे कर कहा कि उस बेचारे गरीब को दे आओ जिसका नुकसान हुआ है। सेवक ने वह थैली, जिसमें पाँच सौ अशर्फियाँ थीं, मेरे भाई अलनसचर को दी। उसने थैली पा कर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और उस दानी स्त्री को बहुत-से आशीर्वाद दे कर थैली ले कर अपने घर चला आया।

कुछ ही देर में उसका दरवाजा किसी ने खटखटाया। उसने दरवाजा खोला तो देखा कि एक बुढ़िया खड़ी है। बुढ़िया ने कहा, बेटा, नमाज का समय हो गया है। मुझे एक लोटा पानी दो तो मैं वजू कर के नमाज पढ़ लूँ। मेरे भाई ने देखा कि वह काफी बूढ़ी है इसलिए नितांत अपरिचित होने पर भी उसने उसे ला कर पानी दिया। बुढ़िया नमाज पढ़ कर मेरे भाई के सामने आई और उसके सामने ऐसे झुकी जैसे नमाज में भगवान के समक्ष झुकते हैं और फिर उठ कर उसे बराबर आशीर्वाद देती रही। मेरे भाई ने उसके फटे कपड़े देख कर समझा कि यह भीख माँग रही है। उसने अशर्फियों की थैली निकाली और उसे दो अशर्फियाँ देने लगा। बुढ़िया ने वे अशर्फियाँ नहीं लीं। मेरे भाई अलनसचर ने बिगड़ कर पूछा कि क्या तू इतनी भीख से भी संतुष्ट नहीं है। बुढ़िया ने कहा कि तुमने गलत समझा कि मैं भिखारिन हूँ। मैं तो अति धनवान और सुंदर युवती की नौकरानी हूँ, वह मुझे बहुत कुछ देती है और मुझे भीख की जरूरत नहीं है।

मेरा भाई मूर्ख तो था ही, उस बुढ़िया के फरेब को न समझा और उससे कहने लगा कि हमें भी अपनी मालकिन को दिखाओ। इसके लिए वह उसे इनाम देने लगा। बुढ़िया हँस कर बोली, तुम यह इनाम रख लो और मेरे साथ चलो। तुम मेरी मालकिन को तो देखोगे ही,

यह भी संभव है कि तुम्हारी सुंदरता देख कर वह तुमसे विवाह कर ले। ऐसा हुआ तो तुम वास्तव में भाग्यशाली हो जाओगे, असंख्य धन और अनिंद्य सुंदरी के स्वामी। मेरे भाई ने अंदर जा कर अच्छे वस्त्र पहने और अशर्फियों की थैली ले कर बुढ़िया के साथ चला। बुढ़िया उसे एक बड़े विशाल और सजे-सजाए मकान के सामने ले गई। उसके आवाज देने पर एक यूनानी दासी ने द्वार खोला। बुढ़िया ने उसे एक सुसज्जित स्थान पर बिठाया और अंदर गई। कुछ ही देर में एक अत्यंत रूपवती युवती आ कर उसके समीप बैठ गई और उससे घुल-मिल कर बातें करने लगी। उसने कहा, यह ऊपरी कपड़े उतार कर आराम से बैठो। अलनसचर ने ऐसा ही किया। कुछ ही देर में वह युवती घर के अंदर यह कह कर चली गई कि मैं अभी आती हूँ।

कुछ ही देर में एक बड़ा लंबा-चौड़ा हब्शी हाथ में नंगी तलवार ले कर आया और गरज कर मेरे भाई से बोला, तू यहाँ मेरे घर में क्या कर रहा है? मेरे भाई की भय के मारे घिग्घी बँध गई। हब्शी ने उसे तलवार के कई हाथ मारे जिससे वह गिर कर बेहोश हो गया। हब्शी ने उसकी कमर से अशर्फियों की थैली खोल ली और आवाज दी कि नमक लाओ। वही यूनानी दासी एक कटोरे में पिसा हुआ नमक ले आई। नमक वह यह देखने के लिए मँगाता था कि उसका शिकार अगर मरा न हो तो वह उसे फिर तलवार मार कर खत्म कर दे। दोनों ने उसके घावों पर नमक छिड़का। मेरा भाई उनका उद्देश्य समझ गया था इसलिए तकलीफ सह कर भी चुप हो कर पड़ा रहा।

हब्शी और दासी उसे पूर्ण मृत जान कर थैली ले कर चले गए। कुछ देर में बुढ़िया फिर आई और मेरे भाई को घसीटती हुई ले गई और एक कोने में बने हुए गढ़े में फेंक आई जहाँ और भी कई लाशें पड़ी हुईं थीं। मेरा भाई इस अरसे में तकलीफ की वजह से बेहोश हो गया था। गढ़े में फेंके जाने के कुछ देर बाद उसे होश आया। वास्तविकता यह थी कि तकलीफ देने के लिए डाला गया नमक ही उसके प्राण बचाने और शक्ति देने का कारण बना। थोड़ी देर के बाद वह उस गढ़े से निकल कर एक कोने में दब कर बैठा फिर छुपता-छुपाता मकान के दरवाजे पर पहुँचा। जो कुछ कहीं पड़ा मिलता खा-पी लेता। दो दिन बाद बुढ़िया फिर नए शिकार की तलाश में निकली तो यह मौका पा कर भाग निकला और मेरे पास आ गया और मुझसे अपनी सारी विपत्तियों का हाल कहा।

महीने भर में उसके सारे घाव भर गए और वह पूर्णतः स्वस्थ हो गया। अब उसने बदला लेने की योजना बनाई। उसने एक बड़ी-सी थैली बनाई और उसमें अशर्फियों के बराबर शीशे के टुकड़े भर दिए। फिर उसने बुढ़ियों जैसे कपड़े पहने और कपड़ों के अंदर तलवार छुपा कर हाथ में थैली ले कर निकल पड़ा।

संयोग से एक गली में वही धोखेबाज बुढ़िया मिल गई। उसने बूढ़ी स्त्रियों के जैसे स्वर में उससे कहा, बहन, मैं फारस देश की रहनेवाली हूँ और इस नगर में नई आई हूँ। मेरे पास पास सौ अशर्फियाँ हैं। मैं चाहती हूँ कि उन्हें परख और तौल कर देख लूँ कि पूरी और ठीक हैं या नहीं। तुम कहीं से मेरे लिए सिक्के तौलने का तराजू ला दो। उसने उत्तर दिया, बहन, तुम मेरे साथ चली आओ। मुझ से अधिक विश्वसनीय व्यक्ति इस नगर में कोई नहीं है।

मेरा पुत्र सर्राफी का काम करता है। वह तुम्हारी अशर्फियाँ भली भाँति तौल और परख देगा। लेकिन जल्दी करो, ऐसा न हो कि वह घर से अपनी दुकान को चला जाए।

वह पापिन मेरे भाई को उसी घर में ले गई जिसमें पहले ले गई थी। यूनानी दासी ने पहले की भाँति द्वार खोला और मेरे भाई को अंदर ले जा कर एक अच्छी जगह बिठा दिया। बुढ़िया ने कहा, तुम यहीं बैठो, मैं अभी अपने बेटे को ले कर आती हूँ। कुछ ही देर में उसका तथाकथित पुत्र यानी वही हत्यारा हब्शी आया और कहने लगा कि भाई, मेरे साथ चलो। मेरा भाई अलनसचर बुढ़िया के वेश में उसके पीछे चल दिया। रास्ते में जब वह हब्शी लापरवाह हो गया तो मेरे भाई ने तलवार निकाल कर ऐसा हाथ मारा कि उसका सिर कट कर अलग जा पड़ा। अलनसचर ने उसका सिर और धड़ दोनों खींच कर उसी गढ़े में डाल दिए।

इतने में यूनानी दासी बरतन में पिसा नमक ले कर आई किंतु बुढ़ियों के वस्त्र पहने नंगी तलवार लिए पुरुष को देख बरतन फेंक कर भागने लगी। मेरे भाई ने झपट कर उसे पकड़ा और उसका सिर काट दिया।

दौड़-भाग और चीख-पुकार सुन कर वह बुढ़िया भी वहाँ आ गई। लेकिन वहाँ का हाल देख कर जान बचाकर भागने लगी। मेरे भाई ने दौड़ कर उसे पकड़ा और कहा, दुष्टा, कुकर्मिणी, तूने मुझे पहचाना या नहीं। बुढ़िया काँपती हुई बोली कि मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा, पहचानूँगी कैसे। मेरा भाई बोला, तूने देखा कैसे नहीं है, मैं वही हूँ जिससे तूने उस गली में नमाज के लिए पानी माँगा था और फिर यहाँ ला कर अपनी समझ में मरवा डाला है। बुढ़िया हाथ जोड़ कर और गिड़गिड़ा कर कहने लगी कि मेरा अपराध क्षमा कर दो। किंतु मेरे भाई ने उस पर दया न की और उसके भी चार टुकड़े कर दिए।

अब मेरे भाई ने उस सुंदर युवती की तलाश की जिससे उसने पहले प्रेमालाप किया था। वह एक अन्य कक्ष में मिली और मेरे भाई को देख कर काँपने लगी। मेरे भाई ने उसे निरपराध जान कर उससे कोई कटु वाक्य न कहा बल्कि सांत्वना दी और पूछा, सुंदरी, मैंने उन दोनों बदमाश स्त्रियों और हब्शी का अंत कर दिया है। अब तुम बताओ कि तुम कौन हो, कहाँ की रहनेवाली हो और इन अत्याचारियों के फंदे में कैसे फँस गई। उसने उत्तर दिया, मैं एक धनी व्यापारी की पत्नी थी। यह बुढ़िया कभी-कभी मेरे घर आती थी लेकिन मुझे यह नहीं मालूम था कि यह कौन है और क्या करती है। एक दिन इसने आ कर मुझ से कहा कि मेरे घर विवाह है, तुम उसमें शामिल होने के लिए चलो। इसके बहुत अनुनय-विनय करने पर मैं इसके साथ उत्तम-उत्तम वस्त्राभूषण पहन कर और सौ अशर्फियाँ ले कर यहाँ आ गई। यहाँ से इन लोगों ने मुझे अपने घर न जाने दिया और इसी हब्शी के साथ सहवास के लिए मजबूर किया। तीन वर्ष से मैं यहीं रहती हूँ। इस हब्शी से और इन लोगों के कुकृत्यों में विवशतापूर्वक शामिल होने से मैं बड़ी दुखी थी किंतु कुछ कर नहीं पाती थी।

मेरे भाई ने पूछा कि इन लोगों ने भोले-भाले लोगों को मार कर कितना धन जमा किया है। उसने कहा कि धन तो इतना है कि तुम सारी आयु आराम से रह सकते हो। यह कह कर वह उसे कई कमरों में ले गई जहाँ पर कई संदूक मुद्राओं आदि से भरे थे। मेरे भाई की यह देख कर आँखें फट गईं। उस स्त्री ने उससे कहा कि तुम बाहर जा कर कुछ मजदूर ले आओ तो हम लोग यह सब यहाँ से उठा कर ले चलें। मेरा भाई बाहर जा कर बाजार की तरफ दौड़ गया और कई मजदूर ले कर आ गया किंतु उसे देख कर आश्चर्य हुआ कि इतनी देर में वह स्त्री संदूकों के समेत गायब हो गई, केवल एक कोने में अनुमानतः पाँच सौ अशर्फियों के मूल्य का सामान पड़ा हुआ था। मेरे भाई ने सोचा कि चलो, जो कुछ हाथ आया वही बहुत है और मजदूरों से वही सामान उठवा कर अपने घर आ गया।

दुर्भाग्य से मजदूरों को लाने के बाद उसने उस घर का दरवाजा बंद नहीं किया था, न बाहर जाने पर घर को ताला लगाया। अतएव आसपास के लोग वहाँ आ गए और मजदूरों को सामान उठाए हुए जाते देख कर और घर को खाली पा कर काजी के यहाँ चले गए और उससे सारा मामला बता दिया। मेरा भाई अपने घर में एक रात निश्चिंत हो कर सो रहा था कि कई सिपाही आए और उसे पकड़ कर काजी के पास ले गए। काजी ने उससे पूछा कि यह सामान कहाँ मिला। उसने कहा कि मैं ये सारी बातें सच-सच आपको बताऊँगा किंतु आप यह आश्वासन दें कि मुझे दंड न दिया जाएगा। काजी ने कहा, सच बोलने पर मैं तुझे दंड न दूँगा।

अतएव मेरे भाई ने सारी घटनाएँ उसे आद्योपांत बता दीं। काजी ने अपने सेवकों को भेज कर मेरे भाई के घर से सारा सामान उठवा मँगाया और उसे अपने घर भिजवा दिया और उसमें से मेरे भाई को कुछ भी नहीं दिया। इसके बाद उसने मेरे भाई अलनसचर को दो-तीन वर्ष के लिए नगर से निष्कासित कर दिया ताकि वह खलीफा के पास जा कर उससे काजी की शिकायत न कर सके।

मेरा भाई बेचारा उन दो-चार अशर्फियों को ले कर, जो उसकी जेब में पड़ी थीं, शहर से बाहर निकला और एक ओर को चल दिया किंतु दुर्भाग्य ने यहाँ भी उसे धर दबाया। दो-तीन दिन बाद उसे डाकुओं ने घेर लिया। वे उसका सारा धन, यहाँ तक कि पहनने के कपड़े भी, लूट कर ले गए। मुझे मालूम हुआ तो मैं कुछ कपड़े और रुपए ले कर अपने भाई की खोज में निकला और कुछ दिनों बाद उसे खोज निकाला। उसे वस्त्र और रुपए दे कर मैं उसे छुपा कर नगर में ले आया और अपने घर में ला कर रखा। इसके बाद मैं बराबर उसका भरण-पोषण करता रहा था।

नाई के छठे भाई कबक की कहानी

नाई ने कहा कि अब मेरे आखिरी भाई शाह कबक का वृत्तांत रह गया है। इसे भी सुन लीजिए, फिर मैं आप से विदा लूँ। इस भाई का नाम शाह कबक था और उसके होंठ खरगोश की तरह ऊपर को चढ़े हुए थे और वह चलता भी खरगोश की तरह कूद-कूद कर था। पिता के मरने पर उसे अपने हिस्से के रुपए मिले और उसने उनसे व्यापार किया जिससे उसे काफी मुनाफा हुआ किंतु कुछ दिनों बाद दुर्भाग्य से उसे ऐसा घाटा हुआ कि दाने-दाने को मुहताज हो गया। मतलब यह कि उसके पास बहुत ही कम धन रह गया।

अब उसने यह धंधा शुरू किया कि अमीरों के घर जाता और द्वारपालों से साठ-गाँठ करता और उन्हें घूस देता। वे उसे अंदर जाने देते जहाँ वह गृहस्वामी के पाँव पकड़ कर उससे भीख माँगता। द्वारपाल भी कहते कि बेचारा वास्तव में अत्यंत दुखी है, इसे जरूर कुछ दे दीजिए।

एक दिन घूमते-घूमते वह एक विशाल भवन के सामने गया जहाँ बहुत-से नौकर- चाकर दौड़-भाग कर रहे थे। उसने एक सेवक से पूछा कि यह किसका मकान है। उसने कहा, मालूम होता है तू परदेसी है तभी इस महल के स्वामी का नाम पूछ रहा है। हमारा स्वामी तो सूर्य की भाँति प्रसिद्ध है। उसका नाम जाफर बरमकी है जो खलीफा का विश्वासपात्र मंत्री है। मेरे भाई ने उन सेवकों से पूछा कि क्या मुझे यहाँ कुछ भिक्षा मिल सकती है। उन्होंने कहा कि हमारा स्वामी अति दयालु है, वह किसी याचक को नहीं रोकता, तुम बेखटक अंदर चले जाओ और हमारे मालिक से भीख माँगो, वह तुम्हें निहाल कर देगा।

मेरा भाई अंदर गया तो वहाँ का ऐश्वर्य देख कर उसकी आँखें फट गईं। महल बहुत बड़ा था और अत्यंत मूल्यवान वस्तुओं से सजा हुआ था। उसमें शानदार संगमरमर का फर्श था और हर जगह रंगीन रेशमी परदे लटक रहे थे। कई दालानों और वाटिकाओं से होता हुआ मेरा भाई एक दालान में पहुँचा जहाँ बहुत-से नौकर-चाकर थे और एक वृद्ध पुरुष एक सोने के कामवाली गद्दी पर बैठा था। मेरा भाई समझ गया कि यही बरमकी है। उसने प्रणाम किया तो बरमकी बोला, क्या चाहते हो?

मेरे भाई ने उसे झुक कर सलाम किया और कहा, सरकार मैं निर्धन मनुष्य हूँ और आप जैसे ऐश्वर्यवान व्यक्ति से कुछ माँगने आया हूँ। बरमकी इस बात से खुश हुआ और उसकी दीन-हीन दशा देख कर बोला कि आश्चर्य है कि हमारे बगदाद शहर में भी कोई ऐसा निर्धन व्यक्ति है। मेरा भाई यह समझा कि यह मुझे बहुत कुछ देगा और उसने बरमकी को बहुत आशीर्वाद दिया। बरमकी ने उससे कहा कि मैं तुम्हें ऐसा दान दूँगा जिसे तुम जीवन भर याद रखोगे। फिर मेरा भाई बोला कि मैं सौगंधपूर्वक कहता हूँ कि मैंने अभी तक कुछ नहीं खाया है। बरमकी बोला, यह तो बड़े दुख की बात है कि तुम अत्यंत भूखे भी हो। मैं तुम्हारे लिए अभी भोजन मँगवाता हूँ।

यह कह कर बरमकी ने जोर से आवाज दी, छोकरे, हाथ धोने के लिए पानी ला। न कोई छोकरा आया न पानी किंतु बरमकी अपने हाथ ऐसे मल-मल कर धोने लगा जैसे कि उन पर कोई पानी डाल रहा हो। उसने मेरे भाई से कहा कि तुम भी आगे आओ और हाथ धोओ। मेरे भाई ने सोचा कि बरमकी परिहास-प्रिय है। वह भी आगे बढ़ कर झूठ-मूठ हाथ धोने लगा। फिर बरमकी बोला कि अभी भोजन भी आ रहा है। कुछ क्षणों के बाद वह अपने मुँह तक हाथ ले गया और ऐसे मुँह चलाने लगा जैसे ग्रास को चबा रहा है। उसने मेरे भाई से कहा कि तुम भी खाओ। संकोच क्यों कर रहे हो। इस घर को अपना ही समझो। मेरा भाई, जो वास्तव में भूखा था, इस झूठ-मूठ की दावत से कुढ़ कर रह गया और कुछ न बोला।

बरमकी ने कहा, क्या बात है? क्या तुम्हें यह शीरमाल और यह कबाब अच्छे नहीं लगते? तुम खा क्यों नहीं रहे हो? मेरे भाई ने कुछ और उपाय न देख कर बरमकी की भाँति ही झूठ-मूठ खाना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद बरमकी ने पुकार कर कहा, सच कहो तुमने ऐसा स्वादिष्ट चकोर और बटेर का मांस कभी खाया है। फिर इसी प्रकार उसने झूठ-मूठ बतख का मांस खाया और खिलाया। फिर बरमकी बोला कि देखो यह मुर्गे का कैसा स्वादिष्ट मांस है, एक टाँग और एक बाजू तुम भी लो। फिर कहा, देखो यह बकरी के बच्चे का भुना मांस है। उसे भी उसने झूठ-मूठ खाया और खिलाया।

इसी प्रकार कई प्रकार के कल्पित व्यंजन उसने मँगाए और झूठ-मूठ खाए और खिलाए। फिर एक व्यंजन का एक ग्रास ले कर मेरे भाई के मुँह की ओर ले गया और कहा कि इसे मेरे हाथ से खाओ।

शाह कबक ने उस झूठे ग्रास को चबाया और कहा, वास्तव में इसका स्वाद अद्वितीय है। बरमकी बोला कि मैं पहले ही कहता था कि तुम इसे पसंद करोगे, अच्छा अब एक और चीज खा कर देखो। यह कह कर वह फिर एक हवाई ग्रास शाह कबक के मुँह की ओर ले गया। शाह कबक ने यूँ ही मुँह चला कर कहा, वाह, इसके स्वाद का क्या कहना, यह भी पिछले व्यंजन से कम नहीं है। इसमें से अंबर, लौंग, जायफल और जावित्री सब की सुगंध आ रही थी और कोई सुगंध किसी दूसरी सुगंध को दबा नहीं रही है। बरमकी बोला कि जी भर कर इसे खाओ।

फिर बरमकी ने छोकरे को (जो कहीं उपस्थित नहीं था) आवाज दी कि खाने के बरतन उठा ले और फल ला। फिर मेरे भाई से कहा कि यह बादाम आज ही तोड़े गए हैं। इसके बाद वे दोनों काल्पनिक रूप से बादामों को तोड़ कर उनका छिलका फेंक कर गूदा खाने लगे। इसी प्रकार और भी भाँति-भाँति के मेवों और फलों को बरमकी ने झूठ-मूठ खाया खिलाया। शाह कबक ने खूब तारीफ की और कहा कि बहुत ही स्वादिष्ट चीजें खाने को मिलीं जिनसे मुँह थक गया लेकिन मन न भरा।

अब बरमकी ने मुस्कुरा कर उसकी ओर हाथ बढ़ाया और कहा कि यह मदिरा पियो। शाह

कबक ने कहा कि हमारे परिवार में मदिरापान वर्जित है किंतु बरमकी बराबर जोर देता रहा तो उसने झूठ-मूठ का प्याला अपने गले में उड़ेल लिया और कहा, मालिक, मैंने सुना था कि शराब में नशा होता है, मुझे तो बिल्कुल नशा नहीं चढ़ा। बरमकी ने कहा कि अब मैं तुम्हें एक नए प्रकार की तेज शराब पिलाता हूँ। यह कह कर उसने एक काल्पनिक प्याला मेरे भाई की ओर बढ़ाया। उसने उसे झूठ-मूठ पी लिया और मद्यप की तरह चेष्टाएँ करने लगा। कुछ देर में उसने बरमकी को एक घूँसा मारा, फिर एक और घूँसा मारा। तीसरी बार बरमकी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा कि तू पागल हो गया है क्या?

मेरे भाई ने ऐसा हाव-भाव दिखाया जैसे नशे से चौंका हो। फिर वह हाथ जोड़ कर बोला, सरकार, मुझ से बड़ा अपराध हुआ। आप ने मुझे इतने सुस्वादु व्यंजन खिलाए और मैंने आप के साथ ऐसी धृष्टता की। किंतु आपने मुझे तेज शराब भी पिला दी। मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया था कि मेरे परिवार में मद्यपान नहीं होता है और मुझे इसकी आदत नहीं है। इसी के नशे में मुझ से भूल हुई। मुझे क्षमा करें।

बरमकी यह सुन कर क्रुद्ध होने के बजाय हँस पड़ा और बोला, मुझे बहुत दिनों से तेरे जैसे मनुष्य की ही तलाश थी। मैं तेरा अपराध इस शर्त पर क्षमा कर सकता हूँ कि तू यहीं हमेशा मेरे साथ रह। अभी तक हम लोगों ने झूठ-मूठ का भोजन किया है, अब सचमुच का करेंगे। यह कह कर उसने सेवकों को आज्ञा दी और वे सब एक-एक कर के वहीं व्यंजन लाए जिन्हें अब तक बरमकी ने झूठमूठ खाया और खिलाया था। मेरे भाई ने रुचिपूर्वक वे स्वादिष्ट व्यंजन पेट भर खाए। फिर बरतन उठाए गए और उत्तम मदिरा के पात्र लाए गए। मद्यपान के बीच ही कई रूपसी नवयुवतियाँ आईं और उन्होंने सुरीले वाद्यों के साथ मधुर स्वर में देर तक गाना-बजाना किया।

मेरा भाई इन सब बातों से स्वभावतः ही बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने बरमकी की उदारता की बड़ी प्रशंसा की और उसे बहुत आशीर्वाद दिया। बरमकी ने कहा कि अब तुम यह फटे-पुराने कपड़े उतारो और कायदे के कपड़े पहनो। यह कह कर उसने सेवकों को आज्ञा दी कि इसके लिए नए कपड़े लाओ। वे बरमकी के अपने वस्त्रागार से बहुमूल्य वस्त्र शाह कबक के लिए ले आए।

बरमकी ने मेरे भाई को हर तरह से बुद्धिमान और व्यवहार-कुशल पाया और अपने घर का सारा प्रबंध उसके सुपुर्द कर दिया। इस प्रकार वह बड़ा संतुष्ट और प्रसन्न हो कर बरमकी के महल में रहने लगा। किंतु उसके इस सौभागय ने बहुत दिनों तक उसका साथ न दिया। खलीफा ने बरमकी के मरने पर उसकी सारी संपत्ति और धन जब्त कर लिया। मेरे भाई ने जो संपत्ति अर्जित की थी वह भी उससे छीन ली गई। वह बेचारा अपना थोड़ा-बहुत बचा हुआ रुपया ले कर व्यापारियों के एक दल के साथ विदेश को चला कि कुछ व्यापार करें। किंतु रास्ते में डाकुओं ने उन सब व्यापारियों पर हमला कर के उन्हें लूट लिया और उन्हें गुलाम बना कर बेच दिया।

मेरा भाई भी एक जंगली आदमी के हाथ बेच दिया गया। वह जंगली उसे मारा-पीटा करता और कहता कि मुझे इतने रुपए दे तो तुझे आजाद कर दूँगा। मेरे भाई ने कसम खा कर कहा कि मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। इस पर उस जंगली ने छुरी निकाल कर मेरे भाई के होंठ चीर डाले। इस पर भी उस पर दया न की और होंठ ठीक हो जाने के बाद उसे कठिन परिश्रम के काम पर लगा दिया गया। बेचारा इसी तरह दुख में जीवन बिताने लगा।

उस जंगली की पत्नी बड़ी सुंदर थी। वह जब लूट-मार करने जाता था तो अपनी पत्नी की रक्षा का भार मेरे भाई पर छोड़ जाता था। पति के जाने के बाद वह स्त्री शाह कबक से बड़ी मीठी-मीठी बातें करती, उसकी हर जरूरत का ध्यान रखती और बड़े आकर्षक हाव-भाव दिखाती। शाह कबक समझ गया कि यह मुझे चाहती है और मेरे साथ भोग की इच्छुक है। किंतु अपने जंगली मालिक के डर से शाह कबक उससे अलग ही रहता और जब एकांत में वह उसे आकर्षक हाव-भाव दिखाती तो आँखें नीचे कर लेता।

एक दिन प्रेमावेश में वह स्त्री पति की उपस्थिति ही में शाह कबक के सामने ऐसी चेष्टाएँ करने लगी। जंगली ने उसे शाह कबक की शरारत समझा और क्रोध में आ कर एक ऊँट पर अपने पीछे उसे बिठाया और एक ऊँचे पहाड़ पर ले जा कर उसे छोड़ दिया ताकि वह भूख-प्यास से मर जाए। वह स्वयं अकेला ऊँट पर बैठ कर नीचे उतर आया। कुछ दिनों में उधर से कुछ लोग बगदाद की तरफ आते हुए निकले। वे स्वयं तो मेरे भाई को न लाए किंतु बगदाद आ कर मुझे उसका हाल बता दिया। मैंने जा कर उसे सांत्वना दी और उसे अपने घर ले आया।

नाई ने कहा कि यह सब कथाएँ सुन कर खलीफा बहुत हँसा। उसने मुझे अच्छा इनाम दिया और गंभीर व्यक्ति का खिताब दिया। लेकिन कहा कि तुम बगदाद से निकल जाओ। कुछ वर्षों बाद मैंने सुना कि खलीफा का देहांत हो गया है इसलिए अपने घर वापस आया। उस समय तक मेरे छहों भाई भी मर गए थे। इसके बाद कई वर्ष तक मैंने इस लँगड़े और उसके बाप की सेवा की जैसा कि आप लोगों ने स्वयं ही इसके मुँह से सुना है। फिर भी यह अत्यंत दुख की बात है कि इनकी इतनी भलाई करने पर भी इसने कृतघ्नता का सबूत दिया और मुझसे घृणा करता रहा। इसके शहर से निकलने पर इसे ढूँढ़ता हुआ मैं काशगर पहुँचा।

दरजी ने काशगर के बादशाह के सामने नाई के मुख से सुना वृत्तांत सुना कर कहा कि नाई की कहानी के बाद सब लोगों ने भोजन किया और तीसरे पहर मैं अपनी दुकान पर गया। शाम को घर आने लगा तो देखा कि यह कुबड़ा शराब में धुत्त हो कर मेरी दुकान के सामने बैठा गा-बजा रहा है। मैं उसे अपने घर ले गया। मेरी पत्नी ने उस दिन मछली पकाई थी। हम दोनों के खाने के लिए वह कई मछलियाँ लाई। मैंने कुबड़े को कुछ मछलियाँ खाने को दीं। वह मूर्ख उनके काँटे निकाले बगैर ही उन्हें खा गया। काँटे उसके गले में अटक गए और वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। मैंने उसे ठीक करने के बहुत- से प्रयत्न किए किंतु जब वह मर गया तो मैं उसे यहूदी हकीम के दरवाजे से टिका कर घर लौट आया।

दरजी ने फिर कहा, जहाँपनाह, इसके बाद की सारी बातें आप को ज्ञात हैं। हकीम ने उसे मरा जान कर व्यापारी के गोदाम में गिरा दिया। व्यापारी ने उसे चोर समझ कर उसको थप्पड़ लगाए और समझा कि यह उसी मार से मर गया है अतएव इसे बाजार में एक दुकान के सहारे खड़ा कर दिया। मैंने सारी बातें सच-सच आप को बता दीं। अब आप को अधिकार है चाहे मुझे मृत्युदंड दें या क्षमादान करें।

बादशाह दरजी की बात सुन कर संतुष्ट हो गया और बोला कि दरजी और बाकी तीनों लोग निर्दोष हैं, उन्हें छोड़ दिया जाए। उसने यह भी कहा कि मैं लँगड़े और नाई के छह भाइयों के किस्से सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ, निस्संदेह यह कुबड़े की कहानियों से भी अधिक मनोरंजक है। लेकिन उसने आज्ञा दी कि उस नाई को, जो इसी शहर में है, यहाँ लाया जाए और जब तक वह यहाँ न आए न कुबड़े की लाश को दफन किया जाए और न किसी अभियुक्त को घर जाने दिया जाए।

अतएव बादशाह के आदेश से उसके नौकर-चाकर दरजी के साथ गए और कुछ देर में खोज कर के नाई को बादशाह के सामने ले आए। नाई की अवस्था नब्बे वर्ष की थी, उसकी दाढ़ी, मूँछें और भवें बर्फ की तरह सफेद थीं। उसकी नाक बहुत लंबी थी और उसके कान बुढ़ापे के कारण काफी लटक आए थे। बादशाह को उसका यह विचित्र रूप देख कर बरबस हँसी आ गई। उसने नाई से कहा, मैंने सुना है कि तुम बड़ी विचित्र और विस्मयकारी कहानियाँ कहते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी कुछ कहानियाँ तुम्हारे मुँह से सुनूँ।

नाई ने हाथ जोड़ कर कहा, हे पृथ्वीनाथ, मैं आपका दासानुदास हूँ। मुझे जो भी आज्ञा होगी उसके पालन में मैं सदैव तत्पर हूँ। किंतु कहानियाँ सुनाने के पहले एक प्रश्न पूछने की धृष्टता करना चाहता हूँ। कृपया यह बताएँ कि यह दरजी, यह यहूदी हकीम और इतने सारे नागरिक यहाँ क्यों जमा हैं और यह कुबड़ा आदमी जमीन पर किस लिए लेटा है। बादशाह ने कहा, तुझे इन बातों से क्या लेना-देना। नाई ने कहा, मैं सिर्फ यह साबित करना चाहिता हूँ कि मैं बकवासी नहीं हूँ। मैं बोलता हूँ तो सुनना भी चाहता हूँ।

बादशाह उसकी यह बात सुन कर हँस पड़ा और उसने पूरी घटना बताई कि किस तरह कुबड़े की हत्या के अपराध पर चार आदमी फाँसी चढ़ाए जानेवाले थे। नाई यह कथा सुनते समय गंभीरतापूर्वक सिर हिलाता रहा जैसे वह सब समझ रहा है और किसी ऐसे भेद को पा गया है जो वह अपने हृदय में छुपाए है। फिर उसने बादशाह से कुबड़े को देखने की अनुमति चाही। अनुमति मिलने पर वह उठ कर कुबड़े के पास गया और बहुत देर तक उसके शरीर का निरीक्षण करता रहा और नाड़ी, आँखें आदि देखता रहा।

यकायक वह बड़े जोर से हँसा। वह हँसता ही रहा और हँसते-हँसते पीठ के बल गिर पड़ा। उसे यह भी ध्यान न रहा कि बादशाह के सामने इस प्रकार हँसना बड़ी उद्दंडता है। उठने के बाद भी बहुत देर तक हँसता रहा। फिर बोला सरकार, इस कुबड़े की कहानी तो ऐसी है कि स्वर्णाक्षरों में लिखवा कर रखी जाए। लोग उसकी बात सुन कर आश्चर्यचकित हुए

और कहने लगे कि या तो इस नाई का मस्तिष्क फिर गया है या बुढ़ापे के कारण इसकी मति मारी गई है। बादशाह ने भी विनोदपूर्वक कहा, हे अल्पभाषी, बुद्धिसागर महोदय, आपको इतनी हँसी किस कारण आ रही है?

नाई ने कहा, पृथ्वीपाल, मैं आपकी न्यायप्रियता और क्षमाशीलता की सौंगध खा कर कहता हूँ कि यह कुबड़ा मरा ही नहीं है। मैं इसे ठीक कर सकता हूँ। आप अनुमति दें तो मैं इसका ईलाज करूँ। अगर मैं सफल न होऊँ तो फिर आप मुझे दुर्बुद्धि या विक्षिप्त जो भी चाहें ठहराएँ और जो दंड चाहें वह दें। बादशाह से अनुमति पा कर नाई ने अपना संदूकचा खोला और उसमें से एक तेल निकाल कर कूबड़े के हाथ और गले पर कुछ देर तक मलता रहा। फिर उसने एक औजार से कुबड़े का मुँह खोला और एक चिमटी उसके मुँह के अंदर डाल कर उसके गले में अटका मछली का काँटा पकड़ा और जोर लगा कर उसे बाहर निकाल लिया। उसने काँटा सभी उपस्थित व्यक्तियों को दिखाया। कुछ ही देर में कुबड़े के हाथ-पैरों में हरकत हुई और उसने अपनी आँखें खोल दीं। इसके अतिरिक्त भी उसके शरीर में जीवन के कई चिह्न दिखाई दिए।

काशगर का बादशाह और सारे उपस्थित व्यक्ति इस बात को देख कर घोर आश्चर्य में पड़ गए कि एक पूरे दिन-रात मुर्दों के समान पड़े रहने के बाद भी कुबड़ा यकायक जी उठा। सभी लोगों को इस बात से खुशी हुई। बादशाह ने आज्ञा दी कि कुबड़े की तथाकथित मृत्यु की घटना और नाई की कही हुई कहानियाँ लिपिबद्ध की जाएँ और शाही ग्रंथागार में रखी जाएँ। उसने यह भी आज्ञा दी कि चूँकि दरजी, यहूदी हकीम, मुसलमान व्यापारी और ईसाई को कुबड़े की वजह से बड़ा मानसिक और शारीरिक कष्ट सहना पड़ा है इसलिए इन लोगों को शाही खजाने से काफी इनाम दे कर विदा किया जाए। उसने तीसरी आज्ञा यह दी कि नाई का कुछ मासिक वेतन नियत कर के दरबार में रख लिया जाए ताकि वह अपनी कहानियों से हमारा मनोरंजन किया करे।

मंत्री की बेटी शहरजाद इस संपूर्ण कथा को कहने के बाद चुप हो रही। दुनियाजाद ने कहा, दीदी, यह तो बहुत अच्छी कहानी थी। मैंने तो समझा था कि बेचारा कुबड़ा मर ही गया होगा। वास्तव में नाई बहुत ही कुशल और बुद्धिमान था कि उसने उसे जीवनदान दे दिया।

हिंदुस्तान के बादशाह शहरयार ने कहा, मैं भी इस कहानी को सुन कर, विशेषतः लँगड़े और नाई के वृत्तांतों को सुन कर अत्यंत प्रसन्न हूँ। शहरजाद ने कहा, यदि बादशाह सलामत मुझे आज प्राणदान दें तो मैं बका के पुत्र अबुल हसन और खलीफा हारूँ रशीद की प्रेयसी शमसुन्निहार की कहानी सुनाऊँगी। यह कहानी कुबड़े की कहानी से भी अधिक मनोरंजक है।

चुनांचे उस कहानी के सुनने की इच्छा के कारण बादशाह ने उस दिन भी शहरजाद का वध न करवाया। वह दिन भर दरबार में बैठ कर अपने राज्य प्रबंध में लगा रहा और रात को

आ कर शहरजाद के साथ सो गया। दूसरी सुबह होने के एक पहर पहले दुनियाजाद ने शहरजाद को जगा कर कहा कि अब वह कहानी सुनाओ जिसे सुनाने को कहा था। शहरयार भी जाग गया और कहानी सुनने को उत्सुक हो गया। शहरजाद ने कहना शुरू किया।

अबुल हसन और हारूँ रशीद की प्रेयसी शमसुन्निहर की कहानी

खलीफा हारूँ रशीद के शासनकाल में बगदाद में एक अत्यंत धनाढ्य और सुसंस्कृत व्यापारी रहता था। वह शारीरिक रूप से तो सुंदर था ही, मानसिक रूप से और भी सुंदर था। वहाँ के अमीर-उमरा उसका बड़ा मान करते। यहाँ तक कि खलीफा के आवास के लोगों में भी वह विश्वस्त था और महल की उच्च सेविकाएँ उसी के यहाँ से वस्त्राभूषण आदि लिया करती थीं। खलीफा का कृपापात्र होने के कारण सभी प्रतिष्ठित नागरिक उसके ग्राहक थे और उसका व्यापार खूब चलता था। बका नामक एक अमीर का बेटा अबुल हसन विशेष रूप से उसका मित्र था और रोज दो-तीन घंटे उसकी दुकान पर बैठता था। बका फरस देश के अंतिम राजवंश का व्यक्ति था इसलिए अबुल हसन को भी शहजादा कहा जाता था।

अबुल हसन अत्यंत रूपवान युवक था। जो स्त्री-पुरुष भी उसे देखता वह मोहित हो जाता था। इसके अतिरिक्त अबुल हसन बड़ा कला प्रवीण था। गायन-वादन और कविता करने में भी वह अद्वितीय था। वह व्यापारी की दुकान में जब गाना-बजाना शुरू कर देता था तो उसे सुनने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी।

एक दिन शहजादा अबुल हसन व्यापारी की दुकान पर बैठा था। उसी समय चितकबरे रंग के खच्चर पर सवार एक युवती आई। उसके आगे-पीछे दस सेविकाएँ भी थीं। वह सुंदरी कमर में एक सफेद पटका बाँधे थी जिसमें चार अंगुल चौड़ी लेस टँकी हुई थी। वह हीरे-मोती जड़े इतने आभूषण पहने थी जिनके मूल्य का अनुमान भी कठिन काम है। उसकी दासियों की सुंदरता भी झिलमिले नकाबों के अंदर से झलक मारती थी, फिर स्वयं स्वामिनी की सुंदरता का क्या कहना।

वह युवती अपनी जरूरत का कुछ सामान लेने के लिए उक्त व्यापारी की दुकान पर आई। व्यापारी उसे देख कर झपट कर आगे बढ़ा और अत्यंत स्वागत-सत्कारपूर्वक उसे दुकान के अंदर ले आया और एक सज्जित कक्ष में बिठाया। शहजादा अबुल हसन भी एक कमख्वाब से मढ़ी हुई तिपाई ले आया और सुंदरी के सामने उसे रख कर उसके पाँव उस पर रखे और झुक कर कालीन की उस जगह का चुंबन किया जहाँ उसके पाँव रखे थे।

अब उस सुंदरी ने सुरक्षित स्थान समझ कर अपने चेहरे का नकाब उतार दिया। शहजादा अबुल हसन उसके अनुपम सौंदर्य को देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह सुंदरी भी शहजादे के मोहक रूप को देख कर मोहित हो गई। दोनों एक दूसरे के प्रेम-पाश में जकड़ गए। सुंदरी ने कहा कि आप बैठ जाएँ, मेरे सन्मुख आपका खड़े रहना ठीक नहीं। अबुल हसन बैठ तो गया किंतु चित्रवत उसे देखता ही रहा।

वह सुंदरी शहजादे की दशा से समझ गई कि यह मुझ पर मुग्ध है। उसने उठ कर व्यापारी को अलग ले जा कर अपनी इच्छित वस्तुओं के बारे में पूछताछ और मोलभाव किया और फिर उस शहजादे का नाम-पता पूछा। व्यापारी ने कहा, महोदया, यह नौजवान अबुल हसन है। यह बका का पुत्र है। इसका दादा ईरान का अंतिम बादशाह था। इसके परिवार की कई कन्याएँ खलीफा के वंश में ब्याही गई हैं। वह सुंदरी इस बात से बड़ी प्रसन्न हुई कि उच्चवंशीय है। उसने व्यापारी से कहा, मुझे यह नौजवान बड़ा सुसंस्कृत लगता है और इसके साथ बात कर के मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। आप की सहायता से मुझे इससे भेंट होने की आशा है। मैं एक विशेष दासी को आपके पास भेजूँगी। उस समय आप इसे अपने साथ ले कर मेरे यहाँ आएँ। मैं इसे अपने बाग और महल की सैर कराऊँगी और इससे उसका जी खुश होगा। आप मुझ पर कृपा कर के इसे अपने साथ जरूर लाएँ।

व्यापारी समझ गया कि सुंदरी भी शहजादे पर मुग्ध है। उसने शहजादे को लाने का वादा किया। इसके बाद वह अनिंद्य सुंदरी अपने रूप की छटा बिखेरती हुई अपने घर को चल दी। शहजादा बड़ी देर तक टकटकी लगाए उस मार्ग को देखता रहा जहाँ से हो कर वह गई थी। काफी देर इसी तरह बीती तो व्यापारी ने कहा, भाई, यह तुम्हें क्या हो गया है? एक ही जगह पागल की तरह देखे जा रहे हो। लोग तुम्हें इस दशा में देखेंगे तो कितना हँसेंगे। तुम अपने को सँभालो और दूसरी बातों में ध्यान लगाओ।

शहजादे ने कहा, मित्र, यदि तुम मेरे हृदय की दशा जानते तो शायद ऐसा न कहते। जब से मैंने उस मनमोहिनी को देखा है, मैं उसी का हो रहा हूँ। उसका ध्यान बिल्कुल नहीं भुला पा रहा हूँ। भगवान के लिए यह तो बताओ कि उसका नाम क्या है और वह कहाँ रहती है। व्यापारी ने कहा, मेरे प्यारे मित्र, इस सुंदरी का नाम शमसुन्निहार है। यह खलीफा की सबसे चहेती सेविका है। अबुल हसन ने कहा, यह सुंदरी यथा नाम तथा गुण है। शमसुन्निहार का अर्थ है दोपहर का सूर्य। इसका सौंदर्य वास्तव में दोपहर की सूर्य की भाँति प्रखर है जिस पर निगाह नहीं ठहरती। इसीलिए एक बार इसे देखने पर मैं और कुछ देख नही पा रहा हूँ।

व्यापारी ने समझाना चाहा कि उस सुंदरी के प्रेम में फँसना ठीक नहीं है। उसने कहा, यह खलीफा की सबसे प्यारी सेविका है और वे इसे इतना मानते है कि मुझे कह रखा है कि इसे जिस चीज की जरूरत हो इसे तुरंत दी जाए, यह मेरा निश्चित आदेश है। इस प्रकार व्यापारी ने और भी बातें कहीं कि खलीफा का प्रेम-प्रतिद्वंद्वी बनने में जान का खतरा है। लेकिन अबुल हसन पर उसके समझाने-बुझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह शमसुन्निहार के लिए तड़पता रहा।

यह सब चल रहा था कि एक दिन शमसुन्निहार की भेजी हुई विशेष दासी आई। उसने चुपके से व्यापारी से कहा कि स्वामिनी ने आपको और शहजादे को बुलाया है। वे दोनों तुरंत उसके साथ हो लिए। शमसुन्निहार खलीफा के विशाल राजप्रासाद के एक कोने में बने हुए भव्य आवास में रहती थी। दासी दोनों आदमियों को अपनी स्वामिनी के आवास

में एक गुप्त द्वार से ले गई। अंदर ले जा कर उसने दोनों को एक स्वच्छ और सुंदर स्थान पर बिठाया। तुरंत ही सुसंस्कृत सेवकों ने सोने की तश्तरियों में भाँति-भाँति के खाद्य पदार्थ ला कर रख दिए। जब वे लोग जी भर खा चुके तो एक दासी उनके लिए सुगंधित मदिरा मूल्यवान प्यालों में लाई। मद्यपान के बाद उनके हाथ धुलवाए गए और भाँति-भाँति के इत्र उनके सामने लाए गए जिन्हें उन्होंने अपने कपड़ों पर मला।

इसके बाद वही विश्वस्त दासी इन लोगों को एक अति सुंदर बारहदरी में ले गई। उसकी छत गुंबद की तरह थी और उसमें रत्न जड़े थे। सामने की ओर संगमरमर के दो विशाल खेमे थे जिनमें नीचे की ओर भाँति-भाँति के पशु-पक्षियों के सुंदर रंगों में मनोहारी चित्र बने थे। बारहदरी के फर्श पर भी तरह-तरह के फूल-बूटों के चित्र बने थे। एक ओर नाजुक-सी दो अल्मारियाँ रखी थीं। जिनमें चीनी, बिल्लौर, संगमूसा आदि के अत्यंत सुंदर पात्र रखे हुए थे। उन पात्रों पर सोने के पानी से बड़े सुंदर चित्र बने थे और सुलेख लिखे हुए थे। दूसरी ओर के खंभों में दरवाजे लगे थे। जिसके बाद बरामदा था। बरामदे के बाद बाग था। बाग की जमीन पर भी रंगीन पत्थर जड़े हुए थे। बारहदरी के दोनों ओर दो सुंदर और बड़े हौज थे जिनमें सैकड़ों फव्वारे छूट रहे थे। बाग में बीसियों तरह के पक्षी वृक्षों पर बैठे चहचहा रहे थे।

यह लोग उस अनुपम शोभा का आनंद ले ही रहे थे कि बहुत-सी दासियाँ जो सुंदर वस्त्राभूषण पहने थीं आईं और बारहदरी में बिछी हुई सुनहरे काम की चौकियों पर बैठ गईं और तरह-तरह के वाद्ययंत्र अपने सामने रख कर उन्हें ठीक करने लगीं ताकि आज्ञा मिलते ही गाना-बजाना शुरू कर दें। यह दोनों भी ऐसे स्थान पर बैठ गए जहाँ से सब कुछ देख सकें। उन्होंने देखा कि एक ओर ऊँची रत्नजटित चौकी रखी है। व्यापारी ने शहजादे से चुपके से कहा, अनुमानतः यह बड़ी चौकी स्वयं शमसुन्निहार के बैठने के लिए है। यह महल खलीफा के राजप्रासाद ही का एक भाग है किंतु इसे विशेष रूप से शमसुन्निहार के लिए बनवाया गया है। कारण यह है कि खलीफा के महल में जितनी दासियाँ और सेविकाएँ हैं उनमें वह सब से अधिक शमसुन्निहार ही को चाहता है। शमसुन्निहार को अनुमति है कि जहाँ चाहे खलीफा से पूछे बगैर चली जाए। खलीफा स्वयं भी जब इसके पास आना चाहता है तो पहले से संदेश भिजवा कर आता है। वह अभी आती ही होगी।

व्यापारी शहजादे से यही वार्ता कर रहा था कि एक दासी ने आ कर गानेवालियों से कहा कि गाना-बजाना शुरू करो। उन लोगों ने तुरंत अपने-अपने साजों को बजाना शुरू कर दिया और गानेवालियाँ गाने लगीं। शहजादा उस स्वर्गोपम संगीत को सुन कर मुग्ध- सा रह गया। इतने में दासियों ने शमसुन्निहार के आने की घोषणा की। शहजादा भी सँभल कर बैठ गया। सब से पहले वही विशेष और मुख्य दासी आई जिसने दस मजदूरिनों से उठवा कर बड़ी चौकी शहजारे के बैठने की जगह के पास रखवाई। फिर कई हब्शिन बाँदियाँ हथियार ले कर उस चौकी के पीछे पंक्तिबद्ध हो कर खड़ी हो गईं। बीस गायिकाएँ और वाद्यकर्मियाँ सामने खड़ी हो गईं जहाँ से वह आनेवाली थीं।

कुछ ही देर में मंद-मंद हंसगति से चलती हुई शमसुन्निहार उन्हीं प्रतीक्षारत सेविकाओं

के मध्य अपनी चौकी की ओर आने लगी। उसकी दासियाँ भी सुंदर थीं किंतु उसके रूप की छटा सब से निराली थी। वह सिर से पाँव तक रत्नजटित आभूषणों से लदी थी और दो दासियों के कंधों पर हाथ रखे हुए धीरे-धीरे चल रही थी। वह आ कर अत्यंत शालीनतापूर्वक अपने आसन पर विराजमान हुई। बैठने के बाद उसने संकेत से उसका अभिवादन किया। फिर शमसुन्निहार ने गाने-बजानेवाली सेविकाओं को आज्ञा दी कि अपनी कला का प्रदर्शन करें। हब्शिनों ने गानेवालियों की चौकियाँ उस जगह के समीप लगा दीं जहाँ व्यापारी और शहजादे की चौकी बिछी थी। वे गानेवालियाँ व्यवस्थापूर्वक अपनी चौकियों पर बैठ गईं।

शमसुन्निहार ने एक गानेवाली से कहा कि कोई शृंगारिक राग गाओ। उसने अत्यंत मृदु स्वर में एक तड़पता हुआ गीत गाया। यह गीत शहजादे और शमसुन्निहार की दशा को व्यक्त कर रहा था। शहजादा भावातिरेक में बेहाल हो गया। उसने एक वादिका से बाँसुरी ली और बाँसुरी पर तड़पते हुए प्रेम की एक ध्वनि निकाली और बहुत देर तक उसे बजाता रहा। जब उसने बजाना खत्म किया तो शमसुन्निहार ने वही बाँसुरी उससे ली और एक हृदयग्राही ध्वनि निकाली जिसमें शहजादे की बजाई रागिनी से अधिक तड़प थी। शहजादे ने फिर एक वाद्य यंत्र लिया और एक अति मोहक रागिनी उस पर बजानी शुरू की। अब ऐसा वातावरण हो गया कि शहजादा और शमसुन्निहार इतने प्रेम विह्वल हो गए कि उनका संयम जाता रहा। शमसुन्निहार अपनी चौकी से उठ कर बारहदरी के अंदरूनी हिस्से में जाने लगी। शहजादा भी उसके पीछे चल दिया। दो क्षण बाद ही दोनों आलिंगनबद्ध हो गए और सुध-बुध खो कर जमीन पर गिर पड़े।

दासियों ने दौड़ कर दोनों को सँभाला और बेदमुश्क का अरक छिड़क कर दोनों को चैतन्य किया। शमसुन्निहार ने होश में आते ही पूछा कि व्यापारी कहाँ है। व्यापारी बेचारा अपनी जगह बैठा काँप रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस कांड की परिणति कहाँ होगी और खलीफा को यह हाल मालूम हो जाएगा तो क्या होगा। शहजादे ने आ कर कहा कि शमसुन्निहार तुम्हें बुलाती है तो वह उठ कर उसके पास आया। शमसुन्निहार ने उससे कहा कि मैं आप की बड़ी आभारी हूँ कि आप ने शहजादे से मेरा मिलन करवा दिया। व्यापारी ने कहा, मुझे यह आश्चर्य है कि आप लोग एक-दूसरे से मिलन होने पर भी इतने विह्वल क्यों हैं। शमसुन्निहार ने कहा कि सच्चे प्रेमियों की यही दशा होती है, उन्हें वियोग का दुख तो सालता ही है, मिलन में भी उनकी व्याकुलता कम नहीं होती।

यह कहने के बाद शमसुन्निहार ने दासियों को भोजन लाने की आज्ञा दी। शमसुन्निहार, शहजादे और व्यापारी ने रुचिपूर्वक भोजन किया। फिर शमसुन्निहार ने शराब का प्याला उठाया और एक गीत गा कर उसे पी गई। दूसरा प्याला उसने शहजादे को दिया। उसने भी एक गीत गा कर प्याला पी लिया।

यह आनंद मंगल हो ही रहा था कि एक दासी ने धीरे से कहा कि खलीफा का प्रधान सेवक मसरूर खलीफा का संदेश लाया है और आपकी प्रतीक्षा में खड़ा है। शहजादा और व्यापारी यह बात सुन कर बड़े भयभीत हुए और उनके मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

शमसुन्निहार ने उन्हें धीरज बँधाया और दासी से कहा कि तुम मसरूर को कुछ देर बातों में उलझाओ ताकि मैं शहजादे को छुपा सकूँ, मैं शहजादे को छुपा लूँगी तो मसरूर को बुलाऊँगी। वह दासी गई तो शमसुन्निहार ने आज्ञा दी कि बारहदरी के दरवाजे बंद कर दो और बाग की तरफ लगे बड़े परदे गिरा दो ताकि रोशनी न आए। फिर उसने शहजादे और व्यापारी को बारहदरी के ऐसे कोने में बिठा दिया जहाँ से वे किसी को दिखाई न दें। यह सब कर के उसने पूर्ववत गाने-बजाने वालियों को कला प्रदर्शन की आज्ञा दी और आदेश दिया कि मसरूर को अंदर लाया जाए।

मसरूर बीस दासों के साथ आया और शमसुन्निहार को झुक कर अभिवादन करने के बाद बोला कि खलीफा आपके विरह में व्याकुल है और आपसे भेंट के लिए बड़े इच्छुक हैं। शमसुन्निहार ने खुश हो कर कहा, यह तो मेरा बड़ा भाग्य है कि वे कृपा करना चाहते हैं। मैं तो उनकी दासी हूँ। जब चाहें आएँ। लेकिन मसरूर साहब, आप कुछ देर लगा कर ही उन्हें लाएँ। कहीं ऐसा न हो कि जल्दी में खलीफा के स्वागत के प्रबंध में कुछ त्रुटि रह जाए।

यह कह कर शमसुन्निहार ने मसरूर और उसके सेवकों को विदा किया और खुद आँखों में आँसू भर कर शहजादे के पास आई। व्यापारी उसे आँसू बहाते देख कर घबराया कि कहीं ऐसा न हो कि भेद खुल गया हो। शहजादा भी प्रेम-मिलन में यह अचानक व्याघात देख कर अत्यंत दुखी हो कर आहें भरने लगा। इतने ही में एक विश्वसनीय दासी ने शमसुन्निहार से कहा कि आप बैठी क्या कर रही हैं, नौकर-चाकर आने लगे हैं और खलीफा किसी भी समय आ सकते हैं। शमसुन्निहार ने सर्द आह खींच कर कहा कि भगवान भी कैसा निर्दयी है कि मिलन होते ही विरह का दुख हम पर डाल दिया। यह कह कर उसने दासी से कहा, इन दोनों को ले जा कर उस मकान में रखो जो बाग के दूसरे कोने पर है। इन्हें बिठा कर मकान में ताला लगा देना। फिर अवसर पाने पर इन्हें मकान के गुप्त द्वार से निकाल कर दजला नदी के किनारे ले जा कर नाव पर बिठा देना।

यह कह कर उसने शहजादे का आलिंगन कर के उसे विदा किया। दासी ने होशियारी के साथ शहजादे और व्यापारी को दजला नदी के तटवाले मकान में पहुँचा कर कहा कि तुम बेखटके यहाँ रहो, किसी को पता नहीं चलेगा। यह कह कर दासी तो मकान में बाहर से ताला लगा कर चली गई किंतु यह दोनों काफी देर तक इधर-उधर घूम कर देखते रहे कि शायद कहीं भागने का रास्ता मिल जाए, किंतु उन्हें कोई रास्ता नहीं मिला। फिर उन्होंने झरोखे से देखा कि खलीफा के अंगरक्षक पैदल और सवार बाग में आ रहे हैं। यह देख कर इन दोनों के प्राण सूखने लगे। फिर देखा कि एक ओर से बहुत-से नौजवान सेवक हाथों में मोमबत्तियाँ लिए आ रहे हैं, उनके पीछे सौ हथियारबंद अंगरक्षक हैं और उनके मध्य खलीफा और उसका प्रधान भृत्य मसरूर हैं। जब खलीफा रात को किसी प्रेयसी के घर जाता था तो पूरी सुरक्षा का प्रबंध किया जाता था।

शमसुन्निहार अपने मकान से निकल कर बीस सुंदर सुसज्जित दासियों के साथ खलीफा के स्वागत के लिए बाग में आ खड़ी हुई। उसके साथ ही दासियाँ स्वागत गान गाने लगीं।

खलीफा आया तो शमसुन्निहार आगे बढ़ी और उसने सिर खलीफा के पाँवों पर रख दिया। खलीफा ने उसे उठा कर सीने से लगाया और कहा, तुम पैरों पर न गिरो, मेरे बगल में बैठो ताकि मैं तुम्हारे सौंदर्य को देख कर तृप्त होऊँ। शमसुन्निहार खलीफा के बगल में बैठी और उसने एक गानेवाली को इशारा किया। गानेवाली ने एक विरह संबंधी गीत बड़े करुण स्वर में गाया। खलीफा ने समझा कि यह मेरी उपेक्षा से पैदा हुए अपने विरह दुख की अभिव्यक्ति करना चाहती है जब कि वास्तविकता यह थी कि शमसुन्निहार शहजादे के विरह में अपनी दशा की अभिव्यक्ति चाहती थी।

शमसुन्निहार यह विरह गीत सुन कर इतनी विह्वल हुई कि गश खा कर गिरने लगी। दासियों ने दौड़ कर उसे सँभाला। उधर शहजादा भी उस गीत को सुन कर इतना व्याकुल हुआ कि अचेत हो कर गिर पड़ा। उसे व्यापारी ने सँभाला। कुछ ही क्षणों में वही विश्वस्त दासी आ कर व्यापारी से कहने लगी, तुम दोनों का यहाँ रहना ठीक नहीं है, जल्दी से जल्दी यहाँ से चले जाओ। वहाँ सभा के रंग-ढंग अच्छे नहीं दिखाई देते। किसी क्षण भी कोई बात हो सकती है। व्यापारी बोला, तुम यह तो देखो कि शहजादा बेहोश हो गया है, ऐसी दशा में हम लोग बाहर किस तरह जा सकते हैं।

दासी झपट कर पानी और बेहोशी में सुँघानेवाली दवा ले आई और इस तरह शहजादा अपने होश में आया।

अब व्यापारी ने शहजादे से कहा कि हम लोगों का यहाँ रहना खतरनाक है, हमें तुरंत यहाँ से चल देना चाहिए। इसके बाद वह दासी दोनों को गुप्त द्वार से बाहर निकाल कर उस नहर पर लाई जो बाग से हो कर जाती थी और दजला नदी से मिलती थी। वहाँ पहुँच कर उसने धीरे से आवाज लगाई। एक आदमी नाव खेता हुआ उस स्थान पर आ गया। दासी ने उन दोनों को नाव पर बिठा दिया। माँझी शीघ्रता से नाव खेता हुआ दजला नदी में ले गया। शहजादे की हालत अब भी खराब थी। व्यापारी उसे बराबर समझाता जा रहा था कि तुम अपने को सँभालो, हमें दूर जाना है, अगर इस अरसे में हमें गश्त के सिपाही मिल गए तो हमारी जान के लाले पड़ जाएँगे क्योंकि वे हमें चोर समझेंगे।

खुदा-खुदा कर के यह लोग एक सुरक्षित स्थान पर नाव से उतरे। किंतु न शहजादे की मानसिक अवस्था ही ठीक थी न उसमें चलने की शक्ति ही अधिक थी। व्यापारी इसी चिंता में था कि क्या किया जाए। अचानक उसे याद आया कि उस जगह के समीप ही उसका एक मित्र रहता है। वह शहजादे को किसी तरह खींचखाँच कर अपने मित्र के घर ले गया। मित्र उसे देखते ही दौड़ा आया। उसने दोनों को अपनी बैठक में ला कर बिठाया और पूछा कि तुम ऐसी हालत में कहाँ से आए हो। व्यापारी ने कहा, अजीब झंझट में पड़ा हूँ। एक आदमी पर मेरा काफी रुपया उधार है। मुझे मालूम हुआ कि वह शहर छोड़ कर भागा जा रहा है। मुझे उसका पीछा कर के अपना रुपया वसूल करने की चिंता हुई। यह आदमी जो मेरे साथ है उस भगोड़े को जानता है। इसकी मदद से मैंने उसका पीछा किया। किंतु मेरा यह साथी रास्ते में अचानक बीमार हो गया। वह भगोड़ा भी मेरे हाथ से निकल गया और इस बीमार साथी को भी मुझे सँभालना पड़ रहा है। अब हम लोग रात

को यहाँ रहेंगे और सुबह ही यहाँ से चलेंगे।

व्यापारी का मित्र शहजादे की चिकित्सा का यत्न करने लगा किंतु व्यापारी ने कहा कि तुम कुछ चिंता न करो, यह रात भर आराम से सोएगा तो सुबह घर जाने योग्य हो जाएगा। मित्र ने दोनों के बिस्तर एक हवादार कमरे में लगा दिए। शहजादा सो तो गया किंतु कुछ ही देर में उसने स्वप्न देखा कि शमसुन्निहार मूर्छित हो कर खलीफा के पाँवों में गिर पड़ी है। वह जाग कर फिर रोने-बिसूरने लगा। व्यापारी भी खुदा-खुदा कर के रात काट रहा था ताकि सुबह होते ही अपने घर पहुँचे। वह जानता था कि उसके घरवाले चिंता में पड़े होंगे क्योंकि वह कभी रात को घर से बाहर नहीं रहता था। सुबह होते ही वह मित्र से विदा हुआ और शहजादे को ले कर अपने घर पहुँचा। उसे देख कर घरवालों को धैर्य हुआ। उसने बात बना दी कि व्यापार के एक जरूरी काम से उसे अचानक बाहर जाना पड़ गया था। अपने हृदय में वह भगवान को धन्यवाद देता था कि कितनी खतरनाक जगह से प्राण बचा कर निकल आने में सफल हुआ था।

शहजादा दो-तीन दिन व्यापारी के घर रहा, फिर उसके रिश्तेदार आए और उसे उसके घर ले गए। विदा होते समय शहजादे ने व्यापारी से कहा, भाई तुम मेरी दशा को भुला न देना। जब से मैंने स्वप्न में शमसुन्निहार को अचेत देखा है मेरी अवस्था बड़ी शोचनीय हो गई है। उसका कुछ हाल मिले तो मुझ से जरूर कहलवा देना। व्यापारी ने कहा, तुम चिंता न करो। वह विशेष दासी जरूर शमसुन्निहार का समाचार मुझ तक पहुँचाएगी।

व्यापारी दो-तीन दिन बाद शहजादे को देखने उसके घर गया तो देखा कि वह बिस्तर पर पड़ा कराह रहा है और उसके रिश्तेदार और कई हकीम उसके बिस्तर के आसपास बैठे परिचर्या कर रहे हैं। उन लोगों ने व्यापारी को बताया कि हकीम लोग बहुत प्रयत्न कर रहे हैं किंतु शहजादे को कोई लाभ नहीं हो रहा है। दो क्षण बाद शहजादे ने आँखें खोलीं और व्यापारी को देख कर मुस्कुराया बल्कि हँसने भी लगा। हँसी के दो कारण थे। एक तो यह कि व्यापारी आया है और शमसुन्निहार की खबर लाया होगा, दूसरा कारण यह है कि हकीम लोग बेकार ही सिर खपा रहे हैं क्योंकि इस रोग का उनके पास कोई इलाज नहीं है।

शहजादे ने हकीमों और रिश्तेदारों से कहा, मैं इनसे अकेले में बात करना चाहता हूँ। उनके जाने पर उसने व्यापारी से कहा, मित्र, तुम देख रहे हो कि इस अनिंद्य सुंदरी का वियोग मुझे किस तरह घुला-घुला कर मारे डालता है। सारे कुटुंबीजन और मित्रगण मेरी यह अवस्था देख कर बराबर दुखी रहते हैं। उन लोगों को दुखी देख कर मेरा दुख और बढ़ता है। मुझे अपना हाल उनसे कहने में लज्जा भी आती है इसलिए मैं जी ही जी में घुटता जा रहा हूँ। तुम्हारे आने से मुझे बड़ा धैर्य हुआ। अब तुम बताओ कि शमसुन्निहार का क्या समाचार लाए हो। उस दासी ने तुम से कब बात की ओर अपनी स्वामिनी का क्या हाल बताया।

व्यापारी ने बताया कि दासी अभी तक नहीं आई है। शहजादा यह सुन कर आँसू बहाने लगा। व्यापारी ने कहा कि तुम्हें चाहिए कि अपने को सँभालो, रोने से कुछ भला तो होना नहीं है। शहजादा बोला कि मैं क्या करूँ, मैं लाख अपने को सँभालता हूँ किंतु सँभाल नहीं पाता। व्यापारी ने कहा, तुम बेकार की चिंता न करो। दासी आज नहीं तो कल आएगी ही और शमसुन्निहार की कुशलता का समाचार देगी। इस प्रकार उसे बहुत कुछ धैर्य बँधा कर व्यापारी अपने घर आया। घर आ कर देखा कि शमसुन्निहार की दासी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने व्यापारी से कहा कि अपना हाल बताओ कि तुम पर और शहजादे पर महल से निकल कर क्या बीती क्योंकि विदा के समय शहजादे की हालत अच्छी नहीं थी। व्यापारी ने मार्ग के कष्ट और शहजादे की लंबी खिंचती बीमारी का उल्लेख किया।

दासी ने कहा, स्वामिनी का भी वही हाल है जो शहजादे का है। तुम्हें विदा कर के जब मैं उनके महल में गई तो देखा कि बेहोश है। खलीफा को भी आश्चर्य था कि वह बेहोश क्यों हो गई।

उसने हम लोगों से इस बेहोशी का कारण पूछा तो हम असली भेद को छुपा गए। हमने कहा, हमें कुछ नहीं मालूम। हम लोग केवल रोते-धोते रहे। कुछ देर में स्वामिनी की आँखें खुलीं।

खलीफा ने पूछा, शमसुन्निहार, यह बेहोशी तुम्हें क्यों आ गई। स्वामिनी ने कहा, आप ने अचानक मुझ पर इतनी कृपा की कि स्वयं आ कर कृतार्थ किया। इसी आनंदातिरेक को मैं न सँभाल सकी और अचेत हो गई। मैं बड़ी हतभागिनी हूँ कि आपने तो मुझ पर इतनी कृपा की और मैंने आपको चिंता में डाला।

खलीफा ने कहा, हम जानते हैं कि तुम्हें हम से बड़ा प्रेम है। हम इस बात से बड़े प्रसन्न भी हैं। अब तुम किसी और कमरे में न जाना, यहीं बिस्तर लगवा कर सो जाना। ऐसा न हो कि चलने-फिरने से तुम्हारी तबीयत और खराब हो जाए। यह कह कर खलीफा ने विदा ली। उसके जाने के बाद स्वामिनी ने मुझे संकेत से अपने पास बुलाया और तुम लोगों को हाल पूछा। मैंने कहा कि वे दोनों आनंदपूर्वक सकुशल यहाँ से चले गए। मैंने उन्हें शहजादे के बेहोश हो जाने की बात नहीं बताई। फिर भी उसने रो कर कहा, शहजादे, न जाने मेरे विछोह में तुम पर क्या बीती होगी। यह कह कर वे फिर बेहोश हो गईं। दासियों ने दौड़ कर उनके मुँह पर बेदमुश्क का अरक छिड़का तो वे होश में आईं। मैंने कहा, स्वामिनी, क्या आप इस तरह जान देंगी। और हम सब को मारेंगी। आप को अपने प्रिय शहजादे की सौगंध है, अपना मन दूसरी बातों से बहलाएँ। उन्होंने कहा, तुम ठीक कहती हो लेकिन मैं क्या करूँ, मन ही वश में नहीं है। फिर उसने दासी को हटा दिया सिर्फ मुझे अपने पास रहने को कहा। रात भर वह शहजादे का नाम ले-ले कर रोती रही। सुबह मैं उसे उठा कर उसके मुख्य विश्राम कक्ष में ले गई। वहाँ खलीफा के आदेश से भेजा हुआ हकीम पहले ही से मौजूद था। कुछ देर में खलीफा स्वयं वहाँ आ गए। दवा-दारू की गई लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हुआ। उल्टे उसकी दशा और गंभीर होती गई। दो दिन बाद उसे रात को थोड़ी देर के लिए नींद आई। सुबह उठ कर उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि मैं तुम्हारे पास आऊँ और

शहजादे का समाचार ला कर उन्हें दूँ। व्यापारी ने कहा, उनसे कहो, शहजादा बिलकुल ठीकठाक है किंतु शमसुन्निहार की बीमारी की बात सुन कर बड़ा चिंतित है। उनसे यह भी कहना कि वे ध्यान रखें कि खलीफा के सामने उनके मुँह से कोई ऐसी बात न निकल जाए जिससे हम सब मुसीबत में फँस जाएँ।

व्यापारी ने दासी से यह कह कर उसे विदा किया और स्वयं शहजादे के समीप गया और उसे बताया कि शमसुन्निहार ने तुम्हारा हाल पूछने के लिए दासी भेजी थी। उसने दासी से सुनी हुई बातें विस्तारपूर्वक शहजादे को बताईं। शहजादे ने व्यापारी को रात भर अपने पास रखा। सुबह व्यापारी अपने घर आया। कुछ ही देर हुई थी कि शमसुन्निहार की दासी उसके पास आई और उसे सलाम कर के कहा कि स्वामिनी ने यह पत्र शहजादे के लिए भेजा है। व्यापारी उस दासी को ले कर शहजादे के पास गया और बोला कि शमसुन्निहार ने तुम्हारे लिए यह पत्र भेजा है और साथ ही अपनी दासी को तुम्हारी कुशलता जानने के लिए भेजा है। शहजादा यह सुन कर उठ बैठा। उसने दासी को बुला कर पत्र उससे लिया और पत्र को चूम कर उसे आँखों से लगाया। पत्र में शमसुन्निहार ने अपनी वियोग व्यथा का वर्णन किया था। शहजादे ने उसका उत्तर लिख कर दासी को दे दिया।

शहजादे से विदा हो कर दासी और व्यापारी अपने-अपने घर गए। व्यापारी चिंता में पड़ गया कि यह दासी रोज-रोज मेरे पास आती है और मुझे रोज-रोज उसे ले कर शहजादे के पास जाना पड़ता है। शहजादा और शमसुन्निहार तो एक-दूसरे के प्रेम में पागल हैं किंतु अगर खलीफा को पता चलेगा तो मैं मुफ्त में मारा जाऊँगा, मेरी सारी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाएगी और क्या जाने जान पर भी बन आए और मेरे परिवार पर भी मुसीबत पड़े। इससे अच्छा है कि मैं यह नगर ही छोड़ दूँ और कहीं और जा बसूँ। एक दिन व्यापारी इसी चिंता में अपनी दुकान पर बैठा था कि उसका एक मित्र जो जौहरी था उससे मिलने को आया। वह बराबर व्यापारी के पास शमसुन्निहार की दासी को आते और फिर दोनों को शहजादे के पास आते देख रहा था। व्यापारी को चिंतित देख कर वह समझा कि इस पर कोई बड़ी विपत्ति पड़ी है। अतएव उसने पूछा कि खलीफा के महल की दासी तुम्हारे पास क्यों आया करती है। व्यापारी को इस प्रश्न से भय हुआ। उसने कहा कि यूँ ही कुछ लेन-देन के काम से आती है। जौहरी ने कहा, लेन-देन नहीं, कोई और बात है। व्यापारी ने जब देखा कि जौहरी को उसके उत्तर से संतोष नहीं हुआ तो उसने तय किया कि उसे पूरा हाल बता ही देना ठीक है। उसने भेद गुप्त रखने का वचन ले कर उससे कहा, शमसुन्निहार और फारस का शहजादा एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और मेरी मध्यस्थता से एक-दूसरे का हाल पाते हैं, मैं सोचता हूँ कि कहीं यह बात खलीफा को ज्ञात हो गई तो भगवान जाने मेरा क्या हाल होगा। इसलिए अब मैं सोचता हूँ कि यहाँ का कारोबार समेट कर बसरा चला जाऊँ और वहीं बस जाऊँ।

जौहरी को यह सुन कर आश्चर्य हुआ। कुछ देर में उसने विदा ली। दो दिन बाद वह व्यापारी की दुकान पर आया तो उसे बंद पाया। वह समझ गया कि व्यापारी यहाँ का हिसाब समेट कर बसरा को चला गया है। जौहरी के हृदय में शहजादे के लिए बड़ी करुणा उपजी। बेचारे का एकमात्र सहारा वह व्यापारी था और वह भी चला गया इसीलिए उसने

सोचा कि व्यापारी के स्थान पर वह स्वयं शहजादे का सहायक हो जाए। वह शहजादे के पास गया। शहजादे ने यह जान कर कि वह एक प्रतिष्ठित जौहरी है उसका सम्मान किया और बिस्तर से उठ कर बैठ गया और पूछा कि मेरे लायक क्या काम है। जौहरी ने कहा, यद्यपि मैं पहली बार आपसे मिला हूँ तथापि मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ। इस समय एक बात पूछना चाहता हूँ। शहजादे ने कहा कि जो पूछना चाहें खुशी से पूछिए।

जौहरी ने कहा, अमुक व्यापारी आपका बड़ा मित्र था। आप मुझे भी उसी की तरह विश्वसनीय समझिए। वह कह रहा था कि मैं बगदाद छोड़ कर बसरा जा बसूँगा। आज मैं उसकी दुकान पर गया तो बंद पाया। मैं समझता हूँ कि व्यापारी वास्तव में बसरा में जा बसा है। क्या आप बता सकेंगे कि उसके बगदाद छोड़ने और बसरा जाने के क्या कारण हैं।

शहजादा जौहरी की बात सुन कर पीला पड़ गया और बोला, क्या तुम्हारी यह बात ठीक है कि व्यापारी बगदाद छोड़ गया? जौहरी ने कहा कि मेरा तो यही विचार है। शहजादे ने अपने एक नौकर से कहा कि व्यापारी के घर जा कर पता लगाए कि वह कहाँ है। सेवक ने कुछ देर बार आ कर कहा कि व्यापारी के घरवाले कहते हैं कि वह दो दिन हुए बसरा चला गया है और वहीं रहेगा। नौकर ने चुपके से यह भी बताया कि किसी अमीर महिला की दासी आप से मिलने आई है। शहजादा समझ गया कि शमसुन्निहार की ही दासी होगी। उसने उसे बुलाया। जौहरी उसके आने के पहले उठ कर दूसरे कक्ष में जा बैठा। दासी ने आ कर शहजादे की दशा अधिक अच्छी देखी और उससे कुछ बातें कर के विदा हुई।

अब जौहरी फिर आ कर शहजादे के पास बैठा और कहने लगा कि आपका तो खलीफा के महल से बड़ा संपर्क जान पड़ता है। शहजादे ने चिढ़ कर कहा, तुम यह कैसे कहते हो? क्या तुम्हें मालूम है कि यह स्त्री कौन है। जौहरी ने कहा, मैं इसको और इसकी स्वामिनी को अच्छी तरह जानता हूँ। यह खलीफा की चहेती सेविका शमसुन्निहार की दासी है और अपनी मालकिन के साथ आया करती है जो कि मेरे दुकान से जवाहारात खरीदने आती-रहती है। मैंने इसे कई बार उस व्यापारी के पास भी आते-जाते देखा है।

शहजादा यह सुन कर डर गया कि यह आदमी हमारे सारे भेद जानता है। वह एक क्षण चुप रह कर बोला, मुझ से सच-सच कहो कि क्या तुम इस दासी के यहाँ आने का भेद जानते हो। जौहरी ने व्यापारी से हुई सारी बातें शहजादी को बताईं और कहा, मैं आपके पास इसी कारण से उपस्थित हुआ हूँ। व्यापारी के चले जाने के बाद मुझे आप पर बड़ी दया आई कि आपका मध्यस्थ कौन होगा। मैंने तय किया कि व्यापारी की जगह मैं ही आपका विश्वासपात्र सेवक बन कर कार्य करूँ। मुझसे अधिक विश्वसनीय व्यक्ति आपको और कोई नहीं मिलेगा।

शहजादे को उसकी बातें सुन कर धैर्य हुआ। उसने अपने मन का भेद जौहरी को बताया किंतु साथ ही कहा, भाई, मुझे तो तुम पर पूरा विश्वास है किंतु शमसुन्निहार की दासी ने तुम्हें यहाँ बैठे देख लिया है। वह तुमसे खुश नहीं मालूम होती। वह कह रही थी कि तुम्हीं

ने व्यापारी को यह नगर छोड़ कर बसरा जा बसने की सलाह दी है। दासी ने यह बात अपनी स्वामिनी से भी कही होगी। ऐसी दशा में तुम मध्यस्थ किस तरह बन सकते हो।

जौहरी ने कहा, मैंने व्यापारी को शहर छोड़ने की सलाह नहीं दी। हाँ, यह जरूर है कि जब उसने मुझ से कहा कि मैं बसरा में बसना चाहता हूँ तो मैंने उसे रोका नहीं। मैंने सोचा कि इस व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा और अपनी जान बचाने की चिंता है तो उसे क्यों रोका जाए। शहजादे ने कहा, तुम्हारी बात मेरी समझ में आती है और मुझे तुम पर पूरा विश्वास है किंतु शमसुन्निहार की दासी ने अपनी स्वामिनी से भी यही बात कही होगी जो मुझसे कही है। अब यह जरूरी हो गया है कि जैसे तुमने मुझे अपनी सदाशयता का विश्वास दिलाया है वैसे ही अपने प्रति दासी में भी विश्वास पैदा करो ताकि शमसुन्निहार भी तुम्हें विश्वस्त समझे।

इस प्रकार दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे और परामर्श करते रहे कि दोनों प्रेमीजनों के मिलन की क्या सूरत निकल सकती है। फिर वह जौहरी शहजादे से विदा ले कर अपने घर गया। शहजादे ने दासी को विदा करते समय कहा था कि अब की बार आना तो शमसुन्निहार से मेरे लिए पत्र लिखवा कर लाना। दासी ने महल में जा कर व्यापारी को शहर छोड़ जाने और शहजादे की पत्र पाने की इच्छा की बातें शमसुन्निहार को बताईं। शमसुन्निहार ने एक लंबा पत्र लिखा जिसमें अपनी विरह-दशा का कारुणिक वर्णन था और इस बात पर भी दुख प्रकट किया गया था कि हम लोगों का मध्यस्थ व्यापारी शहर छोड़ कर चला गया है।

दासी पत्र ले कर शहजादे के पास आने लगी तो रास्ते में उसके हाथ से पत्र गिर गया। दस-बीस कदम आगे जा कर उसने अपनी जेब में पत्र न देखा तो उलटे पाँव लौटी। मार्ग में उसने जौहरी को वह पत्र पढ़ते हुए पाया। इससे दोनों में कहा-सुनी हुई। दासी ने कहा, यह मेरा पत्र है, मुझे वापस दो। जौहरी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया और पत्र पढ़ता रहा और फिर अपने घर को चल पड़ा। दासी भी पत्र वापस करने का तकाजा करती हुई उसके पीछे-पीछे चली। जौहरी के घर पहुँच कर उसने कहा, तुम मुझे यह पत्र दे दो। यह तुम्हारे किसी काम का नहीं है। तुम्हें तो यह भी नहीं मालूम है कि यह पत्र किसने किसके नाम लिखा है। जौहरी ने उसे एक जगह दिखा कर बैठने का इशारा किया।

दासी बैठ गई तो जौहरी ने कहा, यद्यपि इस पत्र पर न लिखनेवाले का नाम है न पानेवाले का नाम तथापि मुझे मालूम है कि यह पत्र शमसुन्निहार ने शहजादा अबुल हसन को लिखा है। दासी यह सुन कर घबरा गई। जौहरी ने कहा, मैं तुम्हें रास्ते ही में यह पत्र दे देता किंतु मुझे तुम से कुछ पूछना है, इसीलिए मैं तुम्हें यहाँ ले आया। तुम सच-सच बताओ कि क्या तुमने शहजादे से यह नहीं कहा कि इस जौहरी ने व्यापारी को बगदाद छोड़ने की राय दी है। दासी ने स्वीकार किया कि उसने यही कहा है। जौहरी बोला, तू मूर्ख है। मैं तो चाहता हूँ कि अब व्यापारी के बदले मैं ही शहजादे की सहायता करूँ। तू उलटा ही समझे है। निःसंदेह मैंने ही शहजादे को व्यापारी के शहर छोड़ने का समाचार दिया था। पहले शहजादा मुझसे सशंकित था किंतु मेरे विश्वास दिलाने पर उसने

सारा भेद मुझसे कह दिया। अब तू मुझे व्यापारी की जगह इस बात में पूरा विश्वासपात्र समझ और अपनी स्वामिनी से भी कहना कि जौहरी तुम्हारी और शहजादे की प्रसन्नता के लिए अपनी प्रतिष्ठा ही नहीं, अपने प्राण भी दाँव पर लगा देगा।

दासी ने कहा, शहजादा अबुल हसन और शमसुन्निहार दोनों बड़े भाग्यशाली हैं कि व्यापारी चला गया तो तुम जैसा बुद्धिमान सहायक उन्हें मिला। मैं तुम्हारी सद्भावना की पूरी बात अपनी स्वामिनी से कहूँगी। जौहरी ने पत्र उसे दे दिया और कहा कि शहजादा उसके उत्तर में जो कुछ लिखे वह भी मुझे लौटते समय दिखाती जाना और साथ ही हमारी इस समय की बातचीत भी शहजादे को बता देना।

दासी पत्र ले कर शहजादे के पास गई। उसने तुरंत ही उस का उत्तर लिख दिया। दासी ने अपने वचन के अनुसार शहजादे का पत्र भी जौहरी को दिखाया। वह शमसुन्निहार के पास पहुँची और शहजादे का पत्र उसे दे कर जौहरी की भी बड़ी प्रशंसा करने लगी। दूसरे दिन सुबह वह फिर जौहरी के पास आई और बोली, मैंने अपनी स्वामिनी से वह सब कहा जो आप ने मुझ से कहा था। वह यह सुन कर अति प्रसन्न हुई कि व्यापारी चला गया फिर भी आप उसका स्थान ले कर प्रेमियों के बीच मध्यस्थता के लिए प्रस्तुत हैं। मैंने आपकी शहजादे से हुई बातें भी उन्हें बताईं और कहा कि आप उससे भी बढ़ कर हैं। वह और भी खुश हुई और कहने लगी कि मैं चाहती हूँ कि ऐसे भले मानस से भेंट करूँ जो बगैर कहे और बगैर पूर्व परिचय के खतरा उठा कर भी दूसरों की सहायता करने को राजी हो जाता है। मैं स्वयं उसकी बुद्धि और चतुरता देखना चाहती हूँ और तू उसे कल यहाँ ले आ।

जौहरी चिंतित हो कर बोला, शमसुन्निहार मुझे भी व्यापारी इब्न ताहिर जैसा समझे है। इब्न ताहिर को तो राजमहल में सब जानते थे और द्वारपाल उसे बे रोक-टोक आने देते थे। मुझे कौन आने देगा?

दासी ने कहा, जो कुछ आप कहते हैं वह बिल्कुल ठीक है। लेकिन शमसुन्निहार मूर्ख नहीं है। उसने आप को बुलाया है तो आगा-पीछा सोच ही लिया होगा। आप बेधड़क हो कर मेरे साथ चलिए, आपको कोई परेशानी न होगी। आपको कुशलतापूर्वक आपके घर पहुँचाने की जिम्मेदारी मेरी रही। इस प्रकार दासी ने उसे बहुत दिलासा दिया किंतु वह किसी प्रकार भी राजमहल में जाने के लिए तैयार नहीं हुआ।

फिर वह दासी शमसुन्निहार के पास पहुँची और उससे कहा कि जौहरी यहाँ आने से डरता है और मेरे लाख समझाने पर भी आने को राजी नहीं होता। शमसुन्निहार ने थोड़ी देर सोच कर कहा, उसका डरना ठीक ही है। मैं स्वयं ही गुप्त रूप से यहाँ से निकल कर उससे उसके घर में मिलूँगी। तुम जा कर उसे बता दो कि मैं उसके घर आ कर उससे बात करना चाहती हूँ। दासी ने ऐसा ही किया। जौहरी के घर जा कर उसने कहा, आप कहीं बाहर न जाएँ। कुछ ही देर में मैं मालकिन को ले कर आपके यहाँ आती हूँ।

यह कह कर दासी वापस फिरी और कुछ देर में शमसुन्निहार को ले कर जौहरी के घर पहुँची। जौहरी ने बड़े आदरपूर्वक शमसुन्निहार का स्वागत कर के उसे उच्च स्थान पर बिठाया। जब शमसुन्निहार ने अपने चेहरे से नकाब उतारा तो जौहरी उसे देखता ही रह गया। उसने सोचा कि अगर शहजादा इस स्वर्गोपम सौंदर्य के पीछे पागल है तो क्या आश्चर्य है। फिर शमसुन्निहार उससे बातें करने लगी। अपने प्रेम का पूरा वर्णन करने के बाद उसने कहा, मुझे तुझसे मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई है। भगवान की बड़ी कृपा है कि इब्न ताहिर के चले जाने के बाद उसने हम दो प्रेमियों को तुम्हारे जैसा सहायक दिया है। अब मैं विदा होती हूँ, भगवान तुम्हारी रक्षा करें।

शमसुन्निहार के जाने के बाद जौहरी शहजादे के पास गया। शहजादे ने उसे देखते ही कहा, मित्र, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। कल शमसुन्निहार की दासी ने मुझे उसका पत्र ला कर दिया किंतु उससे तो मेरी विरह व्यथा और बढ़ गई। क्या यह संभव नहीं है कि परम सुंदरी शम्सुनिहार कृपा कर के स्वयं ही कोई उपाय ऐसा करे जिससे हम दोनों का मिलन हो। इब्न ताहिर होता तो शायद कोई रास्ता निकलता। उसके जाने के बाद मेरी समझ में नहीं आता कि मैं किस तरह शमसुन्निहार से मिलूँ।

जौहरी ने कहा, इतना निराश होने की जरूरत नहीं है। मैंने आपके उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो उपाय सोचा है उससे बढ़ कर कोई उपाय नहीं हो सकता। यह कह कर जौहरी ने सविस्तार शहजादे को बताया कि किस प्रकार मैंने दासी को राजी किया और किस तरह शमसुन्निहार ने मेरे घर आ कर मुझसे बातचीत की। उसने कहा कि आप दोनों की भेंट अवश्य होगी किंतु मेरा या आपका राजमहल में जाना ठीक नहीं है, मैं एक सुंदर भवन को किराए पर लेने का प्रबंध करूँगा जहाँ आप दोनों मिल सकें।

शहजादा यह सुन कर बड़ा खुश हुआ। उसने जौहरी का बड़ा आभार प्रकट किया और कहा कि तुम जैसा कहोगे वैसा ही करूँगा। जौहरी उससे विदा हो कर अपने घर आया। दूसरे दिन दासी फिर आई। जौहरी ने कहा, बहुत अच्छा हुआ कि तुम आई, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। दासी ने कारण पूछा तो जौहरी ने कहा कि शहजादे का विरह में बुरा हाल है, तुम जैसे भी हो शमसुन्निहार को लाओ ताकि दोनों का मिलन हो सके।

दासी ने कहा, स्वामिनी का भी शहजादे के विरह में यह हाल है जैसे कोई मछली गर्म बालू पर तड़प रही हो। किंतु आपका घर बहुत छोटा है, उन दोनों के मिलन के योग्य नहीं है। जौहरी ने कहा कि मैंने एक बड़ा मकान ठीक किया है, तुम मेरे साथ चल कर उसे देख लो। दासी ने उसके साथ वह मकान देखा और पसंद किया और बोली कि मैं अभी आती हूँ, अगर स्वामिनी आने को राजी होती हैं तो मैं उन्हें ले कर तुरंत आ जाऊँगी। दासी विदा हो कर कुछ ही देर में फिर जौहरी के पास आ गई और जौहरी को अशर्फियों की एक थैली दे कर बोली, यह स्वामिनी ने इसलिए भिजवाई है कि आप उस बड़े मकान में आवश्यक साज-सज्जा करा लें और नाश्ते, पलंग, मसनद आदि वहाँ पर तैयार रखें। यह कह कर दासी चली गई और इधर जौहरी ने अपने व्यापारी मित्रों के यहाँ से कई सोने-चाँदी के बरतनों और गद्दे, तकिया, मसनद, पर्दे आदि मँगवा कर उक्त मकान को सजा दिया।

सारा प्रबंध करने के बाद वह शहजादे के पास गया और उससे अपने साथ चलने को कहा। शहजादा उत्तम और सजीले कपड़े पहन कर जौहरी के साथ चला। जौहरी उसे सुनसान गलियों से हो कर बड़े मकान में ले आया। शहजादा मकान और साज-सज्जा को देख कर प्रसन्न हुआ और जौहरी से इधर-उधर की बातें करता रहा। दिन ढला और शमसुन्निहार अपनी उसी विशिष्ट दासी तथा अन्य दासियों को ले कर वहाँ गई। शहजादा और शमसुन्निहार दोनों एक-दूसरे को देख कर ऐसे प्रसन्न हुए जिसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। बहुत देर तक तो वे बगैर बोले-चाले एक दूसरे को एकटक देखते ही रहे।

फिर दोनों ने अपनी-अपनी विरह व्यथा का इतने कारुणिक रूप से वर्णन किया कि जौहरी की आँखों में आँसू आ गए और शमसुन्निहार की तीनों दासियाँ रोने लगीं। जौहरी ने उन दोनों को तसल्ली दी और धैर्य से काम लेने के लिए समझाया-बुझाया। फिर दोनों को उस जगह लाया जहाँ जलपान की व्यवस्था थी। जलपान के उपरांत वे लोग वहाँ पर आ कर मसनदों पर बैठे जहाँ से उठ कर नाश्ता करने गए थे। वे एक-दूसरे से प्रीतिपूर्वक वार्तालाप करने लगे। शमसुन्निहार ने पूछा कि यहाँ कोई बाँसुरी तो नहीं होगी। जौहरी ने सारा प्रबंध पहले ही कर रखा था। उसने एक बाँसुरी ला कर दे दी। शमसुन्निहार ने बाँसुरी पर बड़ी देर तक प्रेम और विरह को व्यक्त करनेवाली एक धुन बजाई। इसके बाद शहजादे ने भी उसके जवाब में उसी बाँसुरी पर बड़ी कारुणिक ध्वनि में एक विरह-राग निकाला।

इतने ही में मकान के बाहर बड़ा शोरगुल सुनाई दिया। दो क्षण बाद जौहरी का एक नौकर दौड़ा-दौड़ा आया और बोला कि द्वार पर बहुत-से आदमी जमा हैं और वे द्वार तोड़ कर अंदर आना चाहते हैं। उसने कहा कि जब मैंने उनसे पूछा कि तुम कौन हो और क्या चाहते हो तो उन्होंने मुझे पीटना शुरू कर दिया और मैं जान बचा कर द्वार बंद कर के अंदर भाग गया। यह सुन कर जौहरी स्वयं द्वार पर गया कि देखे कि क्या बात है। द्वार खोला तो देखा कि सौ आदमी हाथों में नंगी तलवारें लिए खड़े हैं। उसकी हिम्मत न उनसे बात करने की हुई न अंदर वापस आने की। वह एक पड़ोसी की, जिसे वह पहले से जानता था, दीवार पर चढ़ कर उसके मकान में कूद पड़ा। उसने पड़ोसी को बताया कि मुझ पर क्या बीत रही है। पड़ोसी ने उसे घर के एक कोने में छुपा लिया।

आधी रात को पड़ोसी की तलवार ले कर जौहरी बाहर निकला क्योंकि उस समय सारा शोर थम गया था और निस्तब्धता छा गई थी। बड़े मकान में देखा तो उसे सुनसान पाया। न वहाँ शहजादा या शमसुन्निहार या उनकी दासियाँ थीं न कोई साज सामान या बरतन-भाँडे। मकान में घूमते-घूमते एक कोने में उसे एक आदमी का शब्द सुनाई दिया। उसने पूछा, कौन हो? छुपे हुए आदमी ने उसकी आवाज पहचानी और बाहर निकल आया। वह जौहरी का एक सेवक था।

जौहरी ने उससे पूछा कि वे हथियारबंद लोग क्या गश्त के सिपाही थे। उसने कहा वे लोग गश्त के सिपाही नहीं थे बल्कि डाकू थे और सब कुछ लूट कर ले गए, कई दिनों से यह लोग लूट-मार कर रहे हैं और कई मुहल्लों में जा कर कई घरों में डाका डाल चुके हैं।

जौहरी को भी विश्वास हो गया कि वे लोग डाकू ही थे क्योंकि वे सारी चीजें भी लूट कर ले गए थे। उसने शहजादा और शमसुन्निहार के साथ सारा साज-सामान भी गायब देखा तो सिर पीटने लगा कि जिन मित्रों से वह चीजें माँग कर लाया था उन्हें क्या जवाब दूँगा। सेवक ने उसे धैर्य देते हुए कहा, विश्वास रखिए कि शहजादा और शमसुन्निहार दोनों कुशलपूर्वक होंगे। जहाँ तक माँगे की चीजों की बात है उसके बारे में भी आपके मित्र कुछ न कहेंगे क्योंकि इस डाके का समाचार तो सब को मालूम ही हो जाएगा। जौहरी सोचने लगा कि इब्न ताहिर ही अच्छा रहा कि समय रहते निकल गया। मेरा माल तो लूटा ही है, देखो आगे क्या होता है, जान भी बचती है या नहीं।

सवेरा होने पर सारे शहर में डाके का समाचार फैल गया। जौहरी के मित्र भी उसके घर पर सहानुभूति प्रकट करने आए क्योंकि उन्हें मालूम था कि वह मकान उसने किराए पर लिया था। जिन मित्रों से चीजें माँग कर लाया था उन्होंने तो कह दिया कि सामान की चिंता न करो, लेकिन जौहरी को शहजादा और शमसुन्निहार की चिंता होने लगी कि न जाने उन पर क्या बीत रही हो। मित्रों के विदा होने के बाद जौहरी के सेवक उसके लिए भोजन लाए किंतु उसे शमसुन्निहार और शहजादे की चिंता इतनी सता रही थी कि उसने नाममात्र को भोजन किया।

वह इसी तरह चिंता में पड़ा था कि दोपहर को एक सेवक ने उससे कहा कि एक आदमी आप से मिलना चाहता है। उस आदमी ने अंदर जा कर जौहरी से कहा कि यहाँ नहीं, अपने किराएवाले बड़े मकान में चलो, वहीं तुमसे बात करूँगा। जौहरी को आश्चर्य हुआ कि इस अजनबी को यह कैसे मालूम है कि मैंने कोई मकान किराए पर लिया था। आदमी उसे घुमावदार गलियों से हो कर ले चला और बोला कि इन्हीं गलियों से हो कर डकैत कल तुम्हारे घर आए थे। जौहरी को यह तो आश्चर्य हो ही रहा था कि इसे सब बातें मालूम कैसे हैं, इस बात पर भी आश्चर्य और भय हो रहा था कि वह उसे उसके दूसरे मकान में भी नहीं ले जा रहा था बल्कि कहीं और ही ले जा रहा था।

चलते-चलते शाम हो गई। जौहरी बहुत थक भी गया था और उसका भय भी बहुत बढ़ गया था किंतु उसकी कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। शाम को वे लोग दजला नदी पर पहुँचे और नाव से नदी पार कर के नदी पारवाले क्षेत्र में भी गलियों में चलते-चलते एक मकान के सामने पहुँचे जहाँ खड़े हो कर उस आदमी ने ताली बजाई।

दरवाजा खुलने पर वह आदमी जौहरी को अंदर ले गया। अंदर दस व्यक्ति बैठे थे जिन्होंने जौहरी का स्वागत किया और आदरपूर्वक अपने पास बिठाया। कुछ देर में उनका सरदार आया जिसके बाद सबने भोजन किया। भोजन के बाद उन लोगों ने जौहरी से पूछा कि क्या तुमने कभी पहले भी हमें देखा है। उसने कहा कि न तो मैंने पहले तुम लोगों ही को देखा न नदी पार के इस हिस्से की गलियाँ ही देखीं। फिर उन लोगों ने कहा कि कल रात जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ वह साफ-साफ बताओ। जौहरी ने आश्चर्य से कहा कि तुम लोगों को यह कैसे मालूम कि कल रात मेरे साथ कोई विशेष घटना घटी थी। उन लोगों ने कहा कि हमें यह उस पुरुष और स्त्री से मालूम हुआ जो कल रात तुम्हारे साथ थे लेकिन

हम चाहते हैं कि तुम्हारे मुँह से पूरा विवरण सुनें। जौहरी सोचने लगा कि कहीं यही तो वे डाकू नहीं है जो रात को आए थे।

उसने कहा, भाइयो, जो कुछ होना था वह हो गया किंतु मुझे असली चिंता उसी आदमी और उसी सुंदरी की है। तुम लोगों को उनका कुछ हाल मालूम हो तो बताओ। उन लोगों ने कहा कि तुम उन दोनों की चिंता छोड़ दो, वे दोनों कुशलतापूर्वक हैं। उन्होंने जौहरी को दो कक्ष दिखाए और कहा, वे दोनों अलग-अलग इन्हीं कमरो में हैं। उन्हीं से हमें तुम्हारा पता चला है और उन्होंने बताया है कि तुम उनके सहायक और मित्र हो। हम लोगों का काम किसी पर दया करना नहीं है, फिर भी हमने अपने स्वभाव के विपरीत उन दोनों को बड़ी सुख-सुविधा के साथ रखा और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। और हम तुम्हें भी कोई कष्ट नहीं होने देंगे।

अब जौहरी को विश्वास हो गया कि वे डाकू हैं। उसने उनकी दया के लिए आभार प्रकट किया और शहजादे तथा शमसुन्निहार की प्रेम-कथा आरंभ से पिछली रात तक विस्तारपूर्वक बताई। उन लोगों ने आश्चर्य से कहा, क्या यह सच है कि यह आदमी फारस के शहजादे बका का पुत्र अबुल हसन है और यह स्त्री खलीफा की प्रेयसी शमसुन्निहार है? जौहरी ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है बिल्कुल सच कहा है। जब डाकुओं को जौहरी के कहने का विश्वास हुआ तो उन्होंने एक-एक कर के अबुल हसन और शमसुन्निहार के पास जा कर अपने अपराध के लिए क्षमा-प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि हम लोग आपको जानते नहीं थे इसीलिए हम से यह अपराध हुआ है।

उन्होंने कहा कि हमने जो कुछ आपके घर से लूटा था वह सब का सब तो वापस नहीं कर सकते क्योंकि उसमें से बहुत कुछ हमारे अन्य साथी ले गए हैं किंतु सोने और चाँदी के बरतन जरूर यहाँ है, उन्हें हम वापस कर देंगे। उन डाकुओं ने बरतन दे कर उन तीनों से कहा कि हम तुम्हें सुरक्षापूर्वक नदी के उस पार पहुँचा देंगे। किंतु तुम लोगों को यह वादा करना पड़ेगा कि हमारा भेद नहीं खोलोगे। उन तीनों ने कसम खाई कि हम लोग तुम्हारे बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

इसके बाद वे डाकू उन तीनों को एक नाव में बिठा कर नदी के पार तक छोड़ गए। किंतु ज्यों ही वे तीनों तट पर उतरे कि गश्त के सिपाही इधर आ निकले। डाकू तो उन्हें देखते ही अपनी नाव तेजी से खेते हुए भाग गए किंतु गश्तवालों ने इन तीनों को पकड़ लिया और पूछा कि तुम लोग इस निर्जन स्थान में क्या कर रहे थे।

जौहरी ने सच्ची बात न बताई बल्कि कहा कि डाकू दल मेरे घर डाका डाल कर मुझे पकड़ ले गए और इन दोनों को भी मेरे यहाँ से पकड़ ले गए। आज न जाने क्या सोच कर उन्होंने हम सभी को नदी पार पहुँचा दिया और लूटा हुआ कुछ माल भी वापस कर दिया। उसने कहा कि वे लोग जो नाव में नदी पार कर रहे हैं डाकू ही हैं। गश्त के मुखिया ने उसकी बात का विश्वास कर लिया। उसे छोड़ कर शहजादे और शमसुन्निहार से पूछने

लगे कि तुम लोग कौन हो और इस सुंदरी को उसके घर से कौन लाया है। इस पर शहजादा तो कुछ न बोला किंतु शमसुन्निहार ने गश्ती दल के मुखिया को अलग ले जा कर कुछ कहा। उसने तुरंत घोड़े से उतर कर उसे सलाम किया और आदेश दिया कि दो नावें लाई जाएँ। उसके एक पर शमसुन्निहार को बिठा कर उसके घर पहुँचाने का आदेश दिया। दूसरी पर माल की गठरियों के साथ ही शहजादे और जौहरी को बिठा कर अपने दो सिपाही उनके साथ कर दिए ताकि वे उन्हें सुरक्षापूर्वक उनके घर पहुँचा दें।

किंतु वे सिपाही इन लोगों से खुश नहीं थे। उन्होंने नाव को शहर के घाट पर ले जाने के बजाय कारागार की ओर मोड़ दिया और जौहरी के लाख प्रतिवाद करने पर भी उन्हें कारागार में पहुँचा दिया। कारागार के प्रधान अधिकारी ने इन लोगों से पूछा कि तुम लोग कौन हो और तुम्हें क्यों पकड़ा गया है। जौहरी ने इस अधिकारी को भी पूरी बात बताई और कहा कि गश्ती दल के मुखिया ने हमारी बात का विश्वास कर के हमें हमारे घर पहुँचाने का आदेश दिया था किंतु इन दो सिपाहियों ने हमें बंदीगृह में पहुँचा दिया - शायद यह लोग हमसे कुछ घूस चाहते थे और वह न मिलने पर उन्होंने ऐसा किया। कारागृह के अधिकारी को भी जौहरी की बात का विश्वास हो गया।

उसने गश्त के दोनों सिपाहियों को खूब डाँटा-फटकारा और अपने दो सिपाहियों को आदेश दिया कि दोनों को माल-असबाब के साथ शहजादे के घर पर पहुँचा दिया जाए।

जब यह दोनों शहजादे के घर पहुँचे तो इतने थके थे कि एक कदम चलना भी मुश्किल था किंतु शहजादे के नौकरों ने दोनों को सहारा दे कर अंदर पहुँचाया और आराम से बिठाया। जौहरी कुछ ताजादम हुआ तो शहजादे ने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि जौहरी को माल-असबाब के साथ आराम से उसके घर पर पहुँचा दिया जाए। जौहरी जब अपने घर आया तो देखा कि घरवाले उसकी चिंता में रो-पीट रहे हैं। जौहरी को सही-सलामत देख कर उन लोगों को ढाँढ़स बँधा और सब उससे पूछने लगे कि तुम कहाँ गए थे और क्या हुआ था। उसने यह कह कर कि मैं बहुत थका हूँ सभी को चुप कर दिया और चुपचाप अपने बिस्तर पर लेट गया।

दो दिन में जौहरी अपनी थकान और मानसिक आघात से उबर सका। तीसरे दिन वह अपने एक मित्र के घर जी बहलाने जा रहा था कि मार्ग में एक स्त्री ने उसे अपने पास आने का इशारा किया। जौहरी पास गया तो उसने पहचाना कि यह शमसुन्निहार की विश्वस्त दासी है। जौहरी इतना डरा हुआ था कि उसने उससे वहाँ पर कोई बात न की और उसे अपने पीछे आने का इशारा कर के एक ओर को चलने लगा। दासी भी पीछे-पीछे चली। वे लोग चलते-चलते एक निर्जन मस्जिद में गए और वहाँ दासी ने जौहरी से पूछा कि आप डाकुओं से कैसे बचे। जौहरी ने कहा, पहले तुम अपना हाल बताओ कि तुम और दो अन्य दासियाँ कैसी बचीं। दासी ने कहा कि जब डाकू आपके घर पर आए तो हम तीनों ने समझा कि खलीफा को पता चल गया है और उसने अपने सिपाही भेजे हैं। हम तीनों अपनी जान के डर से मकान की छत पर चढ़ गईं और छतों-छतों होते हुए एक भले मानस के घर में आ गईं। उसने दया कर के हमें रात भर अपने यहाँ सुरक्षित रखा। सवेरे

हम लोग अपने आवास पर पहुँचे। अन्य दासियाँ स्वामिनी को हमारे साथ न देख कर चिंतित हुई तो हमने उन्हें दिलासा दिया कि वे अपनी एक सहेली के घर रह गई हैं।

दासी ने कहा, हम लोग भी स्वामिनी के बारे में चिंतित थे। हमने उस शाम को एक नाव पर एक आदमी को भेजा कि अगर किसी सुंदरी को किसी आदमी के साथ भटकते देखें तो यहाँ ले आएँ।

हम लोग आधी रात तक हर आहट पर कान लगाए रहे। आधी रात को अपने आवास के पिछवाड़े के घाट पर नाव का शब्द सुना। जा कर देखा कि हमारे भेजे हुए आदमी तथा एक अन्य व्यक्ति के साथ स्वामिनी नाव पर आई हैं। वे इतनी अशक्त थीं कि एक कदम चल भी नहीं सकती थीं। हम लोग उन्हें सँभाल कर लाए। उन्होंने चुपके से उन दो आदमियों को एक हजार अशर्फी दे कर विदा किया। अब वे अच्छी हैं। उन्होंने हम लोगों को डाकुओं द्वारा पकड़े जाने और छूटने का वृत्तांत भी बताया। दासी के यह कहने के बाद जौहरी ने भी वह सब कुछ बताया जो उस पर और शहजादे पर बीता था।

दासी ने दो थैलियाँ अशर्फियों की दीं और कहा, हमारी स्वामिनी ने यह आपके लिए भेजी हैं क्योंकि उन्हें इस बात का बड़ा ख्याल है कि आपको उनकी वजह से बड़ा कष्ट और नुकसान हुआ है इसलिए आपकी क्षतिपूर्ति की जा रही है। जौहरी ने धन्यवादपूर्वक वह धन ले लिया। उसने उसमें से कुछ इसलिए खर्च किया कि मित्रों से माँगी हुई वस्तुएँ उन्हें खरीद कर लौटा दे। फिर भी काफी बचा जिससे उसने एक विशाल और सुंदर मकान उसी दिन बनवाना आरंभ कर दिया।

फिर वह शहजादे के घर उसका हालचाल पूछने को गया। शहजादे के नौकरों ने बताया वे जब से आए हैं आँखें बंद किए अपने बिस्तर पर पड़े हैं। उन्होंने कुछ भी खाया-पिया नहीं है। जौहरी इससे चिंतित हुआ। उसने शहजादे के पास जा कर उसे बड़ा धैर्य दिया। शहजादे ने जौहरी की आवाज सुन कर आँखें खोलीं और उसकी बातें सुनता रहा। फिर उसने जौहरी का हाथ दबा कर कहा कि मित्र, तुमने हमारे लिए बड़ा कष्ट सहा, मैं कैसे तुम्हारा आभार प्रकट करूँ। जौहरी ने कहा, मैं आपका सेवक हूँ, आपके लिए सब कुछ कर सकता हूँ किंतु भगवान के लिए खाना-पीना शुरू कीजिए और अपने स्वास्थ्य को ठीक रखिए।

शहजादे ने जौहरी के कहने से कुछ खाया-पिया। फिर एकांत में उसने शमसुन्निहार का समाचार पूछा। जौहरी ने कहा, वह कुशलपूर्वक हैं और कल ही उसने अपनी दासी को भेजा था कि मुझसे आप की कुशलक्षेम पूछें। जौहरी इसके बाद अपने घर आना चाहता था किंतु शहजादे ने उसे रोक लिया और आधी रात तक जाने न दिया। आधी रात को जौहरी अपने घर गया और दूसरे दिन फिर शहजादे के पास पहुँचा। शहजादे ने चाहा कि जौहरी की क्षतिपूर्ति के निमित्त कुछ धन दे दे किंतु जौहरी ने न लिया और कहा कि मुझे शमसुन्निहार ने काफी धन इस हेतु दे दिया है। दोपहर को जौहरी शहजादे से विदा हो कर अपने घर पहुँचा।

उसे घर पहुँचे बहुत देर न हुई थी कि शमसुन्निहार की वही विश्वस्त दासी रोती-पीटती उसके घर पहुँची। उसने बताया कि अब तुम्हारी और शहजादे की जान खतरे में है। अगर तुम लोगों को अपने प्राण प्यारे हैं तो तुरंत शहर छोड़ कर कहीं को निकल जाओ। जौहरी ने हैरान हो कर कहा, आखिर हुआ क्या है? तू क्यों इतना रो-पीट रही है और क्यों मुझे इतना भय दिखा रही है? साफ-साफ पूरी बात बता। उस दासी ने कहा, जब हम लोग उस मकान से भाग कर अपने आवास पर पहुँचे और बाद में शमसुन्निहार भी घर पहुँची तो उसने मेरे साथ की दो दासियों में से एक को किसी बात पर रुष्ट कर उसे दंड देने की आज्ञा दी। उस पर बहुत मार पड़ी और वह उसी रात को भय और क्रोध के कारण शमसुन्निहार के महल से भाग गई और महल के रक्षकों के प्रधान के पास शरण लेने चली गई।

उस दासी ने रक्षकों के प्रमुख से उस रात का सारा हाल बता दिया। रक्षकों के प्रमुख ने उसे न जाने क्या सलाह दी। फिर वह खलीफा के महल में चली गई और संभवतः उसने खलीफा को भी सारी बातें बता दीं। खलीफा ने बीस सिपाही भेज कर शमसुन्निहार को पकड़वा कर बुलाया। इसके आगे मुझे नहीं मालूम कि उसने उसे मरवा डाला या कुछ और किया। मैं यह देख कर सारा हाल तुमसे कहने आई हूँ।

यह सुन कर जौहरी के होश उड़ गए। उसने फिर शहजादे के मकान की ओर दौड़ लगाई। शहजादे को उसकी बदहवासी को देख कर आश्चर्य हुआ और उसने तुरंत जौहरी से बात करने के लिए एकांत करवाया। जब जौहरी ने उसे पूरा हाल बताया और कहा कि खलीफा ने शमसुन्निहार को गिरफ्तार करवा दिया है तो शहजादे को गश आ गया। कुछ देर में होश आने पर उसने पूछा कि शमसुन्निहार के लिए क्या किया जा सकता है। जौहरी ने कहा कि आप शमसुन्निहार के लिए कुछ नहीं कर सकते, लेकिन यहाँ रहे तो स्वयं भी मरेंगे और मुझे भी मरवा डालेंगे। आप कृपा कर के फौरन उठिए और मेरे साथ इवनाजपुर की ओर प्रस्थान करिए। किसी समय भी खलीफा के सिपाही आ कर हम दोनों को पकड़ सकते हैं और बाद में हम दोनों बड़े निरादरपूर्वक मारे जाएँगे।

शहजादे ने फौरन कुछ तीव्रगामी घोड़ों के लाने का आदेश दिया और कई हजार अशर्फियाँ अपने और जौहरी के पास रखीं और कुछ सेवकों के साथ शहर से निकल पड़े। कई रोज वे उसी तरह रात-दिन चलते रहे। एक दिन दोपहर के समय वे थकान के कारण आराम करने के लिए वृक्षों के नीचे लेटे। इतने में डाकुओं के एक दल ने उन पर आक्रमण कर दिया। शहजादे के नौकरों ने उनका सामना किया किंतु सब मारे गए। डाकुओं ने शहजादे और जौहरी के सारे हथियार, घोड़े और धन ले लिया बल्कि उनके शरीर के कपड़े भी उतार लिए और उन दोनों को वैसा ही असहाय छोड़ कर चले गए।

शहजादे ने कहा, संसार में मुझसे अधिक अभागा कौन होगा कि एक विपत्ति समाप्त नहीं होती कि दूसरी आ पड़ती है। यदि इस्लाम में आत्महत्या को पाप न समझा जाता तो मैं अपनी जान अपने हाथों दे देता। अब मैंने तय किया है कि यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा बल्कि शमसुन्निहार की याद में यहीं जान दे दूँगा। जौहरी ने उसे बहुत समझाया-बुझाया कि इस प्रकार निराश नहीं होना चाहिए और भगवान की इच्छा को स्वीकार करना

चाहिए। बहुत समझाने पर शहजादा उठा और दोनों एक पगडंडी पर चलने लगे। कई मील चल कर इन्हें एक मस्जिद मिली। वे दोनों भूखे-प्यासे रात भर वहीं पड़े रहे।

सवेरे एक भला मानस वहाँ नमाज पढ़ने आया। नमाज के बाद उसने दो आदमियों को एक कोने में दुबक कर बैठे देखा। उसने कहा कि तुम लोग परदेसी जान पड़ते हो। जौहरी ने कहा, हमारी दशा आप देख ही रहे हैं। हम लोग बगदाद से आ रहे थे कि रास्ते में डाकुओं ने हमें लूट लिया, कुछ भी हमारे पास न छोड़ा। उस आदमी ने कहा कि आप लोग मेरे घर चलें और आराम करें। जौहरी बोला, कैसे चलें? वे लोग हमारे कपड़े भी ले गए और हम नंगे बैठे हैं। उस आदमी ने बाहर जा कर अपने घर से दो चादरें लीं और मस्जिद में आ कर इन लोगों से चलने को कहा।

अब जौहरी को कुछ और ही शक हुआ कि यह आदमी इतना कृपालु क्यों है। उसने सोचा कहीं ऐसा तो नहीं कि खलीफा ने हम लोगों की गिरफ्तारी के लिए इनामी इश्तिहार दिया हो और यह इनाम के लालच में हमें पकड़वाना चाहता हो। उसने कहा, आपकी कृपा के लिए धन्यवाद किंतु बीमारी और भूख से मेरे साथी की हालत खराब हो गई है और वह चलने-फिरने के योग्य नहीं है। उस भले आदमी ने एक नौकरानी से उन दोनों के लिए कुछ खाना भी भिजवा दिया। जौहरी ने पेट भर खाना खा लिया।

किंतु शहजादे की हालत वास्तव में खराब थी। उससे एक कौर भी नहीं खाया गया। उसने समझ लिया कि मेरा अंत समय आ गया है और वह जौहरी से बोला, भाई, अब मैं बच नहीं सकता तुम देख ही रहे हो कि मैंने शमसुन्निहार के प्रेम में क्या-क्या विपत्तियाँ उठाईं और इस अंत समय में भी उसी की याद कर रहा हूँ। मुझे मरने का दुख नहीं है। अब तुमसे अंतिम प्रार्थना है कि मैं मर जाऊँ तो मेरे शव को कुछ दिनों के लिए इसी भले आदमी की निगरानी में छोड़ना और बगदाद जा कर मेरी माता को मेरी मृत्यु की सूचना देना और कहना कि यहाँ से मेरी लाश उठवा कर ले जाएँ और विधिपूर्वक दफन करवाएँ।

यह कह कर शहजादे ने अपने प्राण छोड़ दिए। जौहरी उसके लिए बहुत देर तक विलाप करता रहा। उस दिन उस भले आदमी के पास लाश रखवा कर एक यात्री दल के साथ बगदाद की ओर चला। बगदाद पहुँच कर उसने शहजादे की मृत्यु की सूचना उसकी माँ को दी। बेचारी वृद्धा जवान बेटे के लिए सिर पीट-पीट कर बहुत रोई। फिर कई सेवकों के साथ वहाँ गई जहाँ शहजादे का शव रखा हुआ था।

इधर जौहरी अपने घर में बैठा शोक मना रहा था कि उसके पूरे प्रयत्नों के बाद भी इस प्रेम-प्रसंग का ऐसा दुखद अंत हुआ। एक दिन वह इसी शोक में अपने घर के सामने घूम रहा था कि उसे शमसुन्निहार की वही विश्वस्त दासी मिली। वह उसे अपने घर में ले गया और उसे बताया कि उसकी सूचना के बाद जब शहजादे के साथ मैं भागा तो क्या हुआ और किस प्रकार उस शहजादे ने शमसुन्निहार की याद करते हुए प्राण छोड़ दिए। और अब शहजादे की माँ अपने बेटे की लाश लेने गई है।

यह सुन कर दासी भी सिर पीट-पीट कर रोने लगी। बाद में दासी ने कहा, अब शमसुन्निहार भी इस दुनिया में नहीं है। खलीफा ने उसे पकड़वा मँगाया तो उसने खलीफा के सामने स्वीकार कर लिया कि वह अबुल हसन के प्रेम में पागल है। अबुल हसन का नाम लेने के साथ ही वह इस तरह तड़पने और छटपटाने लगी कि उसके सच्चे प्रेम से खलीफा भी प्रभावित हुआ और उसके हृदय में क्रोध के बजाय सहानुभूति जागृत हो गई। उसने शमसुन्निहार को गले लगाया और बहुत कुछ भेंट और पारितोषक दे कर उसे विदा किया। उसने अपने महल में आ कर मुझसे कहा कि तूने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है किंतु मैं भी अब दो घड़ी की मेहमान हूँ। मैंने उसे धैर्य दिया और कहा ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। शाम को खलीफा फिर उसके पास आया और गाना-बजाना शुरू हुआ किंतु प्रेम-संगीत ने उसकी दशा खराब कर दी और वह मर गई।

खलीफा ने पहले तो उसे बेहोश समझा और उसे होश में लाने के बहुत प्रयत्न करवाता रहा किंतु जब निश्चय हुआ कि वह मर गई तो उसने शोक में आज्ञा दी कि समस्त वाद्य-यंत्र तोड़ दिए जाएँ। अब उस सभा में संगीत के बदले रुदन के स्वर उठने लगे। खलीफा खुद भी वहाँ अधिक न बैठ सका और अपने महल को चला गया। मैं रात भर स्वामिनी के शव के पास बैठी रही। सुबह मैंने लाश को नहलाया और महल के अंदर बड़े मकबरे में, जहाँ दफन होने की अनुमति शमसुन्निहार ने पहले ही खलीफा से ले ली थी, दफन किया। अब मैं चाहती हूँ कि जब शहजादे की लाश आए तो उसे भी स्वामिनी की कब्र के बगल में गाड़ा जाए ताकि दोनों प्रेमी मर कर तो एक जगह रहें।

जौहरी ने कहा कि खलीफा की अनुमति के बगैर यह कैसे संभव है। दासी ने कहा, इसकी चिंता न करें। खलीफा ने मुझसे कहा कि तू हमेशा उसकी वफादार रही, अब मरने के बाद भी उसकी सेवा में रह और उसकी कब्र की देखभाल कर। खलीफा ने मुझे वहाँ का सारा अधिकार दे दिया है। वैसे भी उसे शहजादे और शमसुन्निहार के प्रेम का हाल मालूम है और वह इस प्रसंग से नाराज भी नहीं है।

जब शहजादे की लाश बगदाद पहुँची तो जौहरी ने उस दासी को इसकी सूचना भिजवाई। वह आ कर शहजादे की लाश को शहजादे की माता की अनुमति ले कर महलवाले मकबरे में ले गई। शहजादे की शवयात्रा में हजारों आदमी शामिल थे। अंततः शहजादे को भी अपने प्रेयसी के बगल में दफन कर दिया गया। तब से दूर-दूर के देशों से लोग आ कर उनकी कब्रों पर मनौती मानते हैं।

शहरजाद ने यह कथा समाप्त की तो उसकी बहन दुनियाजाद ने कहा कि यह कहानी बहुत ही सुंदर थी, क्या तुम्हें और भी कोई कहानी आती है। शहरजाद बोली, यदि मुझे आज प्राणदंड न मिला तो मैं कल शहजादा कमरुज्जमाँ की कहानी सुनाऊँगी। बादशाह शहरयार ने नई कहानी सुनने के लालच में उस दिन भी शहरजाद का वध नहीं करवाया और अगली सुबह के पूर्व शहरजाद ने नई कहानी आरंभ कर दी।

कमरुज्जमाँ और बदौरा की कहानी

फारस देश में बीस दिन की राह पर एक देश खलदान है। उस देश में कई टापू भी शामिल हैं। बहुत दिन पहले वहाँ का बादशाह शाहजमाँ था। उसके चार पत्नियाँ थीं और सात विशेष दासियाँ। वह बड़ा प्रतापी राजा था, उसके देश में समृद्धि और शांति का राज्य था। कोई शत्रु उसके देश पर निगाह नहीं लगाए था किंतु उसे एक बड़ा दुख था कि उसके कोई संतान नहीं थी। एक दिन उसने अपने मंत्री से कहा कि मेरी अवस्था व्यर्थ ही बीती जाती है और मेरे बाद इतने बड़े राज्य का क्या होगा, क्योंकि मेरे कोई संतान नहीं है, मालूम होता है भगवान भी मुझे भूल गया है।

मंत्री ने कहा, पृथ्वीपाल, आप इस प्रकार की निराशा की बातें न करें। भगवान के घर देर है अंधेर नहीं। वह किसी को भूलता नहीं है। आप दीनतापूर्वक रात-दिन भगवान से संतान की भीख माँगें। इसके अतिरिक्त फकीरों, दरवेशों के आशीर्वाद लें तो मनोकामना पूर्ण होगी।

मंत्री के परामर्श के अनुसार बादशाह ने पूरे जोर से धार्मिक कृत्य शुरू किए और फकीरों को खूब दान दिया और उनसे संतान का आशीर्वाद चाहा। कुछ काल के उपरांत उसकी रानी को गर्भ ठहर गया। नौ महीनों के बाद उससे एक पुत्र का जन्म हुआ। बादशाह की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने लाखों रुपया फकीरों के दान और अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं के इनाम पर खर्च किए, यहाँ तक कि उसके देश में कोई भी व्यक्ति भूखा-नंगा नहीं रहा और महीनों तक राजमहल में उत्सव होता रहा।

राजकुमार अत्यंत रूपवान था। उसका नाम रखा था कमरुज्जमाँ। बादशाह ने उसके कुछ बड़े होने पर उसकी शिक्षा के लिए कई विशेषज्ञ नियुक्त किए जो हर प्रकार के कला-कौशल और विद्याओं में उसे शिक्षा देते थे। और तो सब ठीक रहा किंतु शिक्षा के दौरान उस पर न जाने क्या प्रभाव पड़ा कि उसे स्त्रियों से घृणा हो गई। जब वह जवान होने लगा तो बादशाह ने उसे एक दिन अपने पास बुला कर कहा, मैं चाहता हूँ कि अब तुम्हारा विवाह करवा दूँ। तुम क्या कहते हो?

शहजादे को इस बात से बुरा लगा। उसने पिता की बात का कोई उत्तर न दिया और बहुत देर तक चुपचाप खड़ा रहा। जब बादशाह ने जोर दे कर अपनी बात का उत्तर चाहा तो उसने हाथ जोड़ कर कहा, पिताजी, आपका आदेश न मानना निश्चय ही बड़ी अशोभनीय बात है किंतु इस मामले में मैं विवश हूँ। मैं विवाह बिल्कुल नहीं करना चाहता। सभी स्त्रियाँ झूठी और कुटिल होती है। बादशाह को यह सुन कर बड़ा क्रोध आया। उसने कहा, मेरा जी तो चाहता है कि तुम्हें अभी इस अशिष्टता का दंड दूँ किंतु मैं तुम्हें एक वर्ष का अवसर देता हूँ।

किंतु एक वर्ष के बाद भी शहजादा इस बात पर अड़ा रहा कि मुझे विवाह नहीं करना है।

उसने कहा कि मैंने सारी पुस्तकों में स्त्रियों की बुराइयाँ ही पढ़ी हैं, मैं कैसे उनका विश्वास करूँ। बादशाह बहुत ही नाराज हुआ और इस बात के लिए तैयार हो गया कि शहजादे को कोई कठोर दंड दे। किंतु मंत्री के कहने पर उसने शहजादे को अपना निश्चय बदलने के लिए एक वर्ष का और समय दिया।

यह समय भी बेकार गया क्योंकि शहजादा अब भी इस पर अड़ा हुआ था कि मैं विवाह नहीं करूँगा। बादशाह ने एक बार फिर अपने क्रोध पर संयम किया और शहजादे की माँ, रानी फातिमा से कहा कि तुम अपने बेटे को समझाओ नहीं तो मैं उसे बड़ा कठोर दंड दूँगा। फातिमा ने शहजादे को समझाया कि तुम्हारे वंश में सदा से यह विवाह की रीति चली आती है, तुम्हारे लिए इसका उल्लंघन करना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। कमरुज्जमाँ ने वही दलील दी कि स्त्रियाँ भ्रष्ट और धोखेबाज होती हैं। माँ ने समझाया, बेटे, तुम सभी स्त्रियों के लिए यह बात कैसे कह सकते हो। कुछ स्त्रियाँ दुष्ट होती हैं तो कई पवित्र भी होती हैं। मैंने भी कई दुष्ट पुरुषों की कथाएँ पढ़ी हैं किंतु इसका मतलब यह तो नहीं हुआ कि सारे पुरुष दुराचारी होते हैं।

किंतु माँ के लाख समझाने-बुझाने पर भी शहजादा टस से मस न हुआ। कुछ और समय बीता। अंत में बादशाह स्वयं पर संयम न रख सका। उसने आदेश दिया कि शहजादे को एक पुराने और छोटे-से मकान में, जिसमें हवा-रोशनी भी ठीक से नहीं आती थी, बंद कर दिया जाए। उसने कहा कि उसके लिए दो-चार कपड़े वहाँ रखवा दो और एक बूढ़ी दासी उसकी सेवा में रख दो और दो-चार पुस्तकें पढ़ने के लिए रखवा दो, किंतु उसे मकान से बाहर न निकलने दिया जाए।

लेकिन कमरुज्जमाँ को कोई परवाह नहीं थी। वह आनंदपूर्वक उस मकान में गया, दिन में पुस्तकें पढ़ता रहा और रात को अपने पलंग पर लेट कर सो गया। उस मकान में एक कुआँ था जिसमें जिन्नों के बादशाह दिउमर्स की परी बेटी मैमून रहती थी। रात को मैमून संसार भ्रमण के लिए रोज की तरह कुएँ से निकली। उसे मकान में प्रकाश देख कर आश्चर्य हुआ कि यहाँ रहने के लिए कौन आ गया। यद्यपि शहजादे का शयनकक्ष बाहर से बंद किया हुआ था तथापि परी को इससे क्या बाधा होती। वह कमरे के अंदर जा कर सोने के पलंग पर रेशमी चादर ओढ़ कर सोते हुए शहजादे को एकटक देखने लगी।

कमरुज्जमाँ का अनुपम सौंदर्य देख कर वह ठगी-सी रह गई। उसने धीरे से चादर खिसका कर उसे सिर से पाँव तक देखा। कुछ देर उसे देखने के बाद उसने शहजादे के मुँह और माथे का चुंबन किया और पहले की भाँति उसे चादर उढ़ा दी। इसके बाद वह उड़ कर आकाश में गई और संसार भ्रमण करने लगी। तभी उसे अपने पीछे पंखों की सरसराहट सुनाई दी। उसने आवाज दी, कौन जा रहा है, इधर आ। उड़नेवाला भी एक जिन्न था। वह जिन्नों के एक सरदार शहमर का बेटा नहस था। जिन्नों की शहजादी की आवाज सुन कर वह उसके पास आया। मैमून ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो। उसने कहा, मैं इस समय चीन देश से आ रहा हूँ। चीन बहुत बड़ा देश है और उसके अंतर्गत कई द्वीप हैं। वहाँ के बादशाह का नाम गोर है। उसकी बेटी बदौरा है। वह इतनी सुंदर है कि मालूम होता है विधाता ने उससे

अधिक सुंदर किसी को नहीं पैदा किया है। न मनुष्यों में और न हमारी जाति में उससे बढ़ कर कोई रूपवान है।

नहस ने आगे कहा, शहजादी बदौरा के होंठ मूँगे की तरह हैं, आँखें तिरछी और मदभरी हैं, उसकी केशराशि श्यामल घटा की भाँति है जिसमें लगे चाँदी के सितारे बिजली की तरह चमकते हैं, उसकी नाक बड़ी ही सुडौल है और माथा बड़ा उज्ज्वल है। उसकी दंत-पंक्ति जैसे मोती की लड़ी हो। उसकी चाल हंसिन की भाँति है और उसकी आवाज में चाँदी की घंटियों की खनक है। वह हँसती है तो नैर फूल झड़ते हैं। उसका यौवन उन्नत और पुष्ट हैं। संक्षेप में वह हर मामले में अद्‌वितीय है।

बादशाह गौर ने करोड़ों अशर्फियों की लागत से अपनी प्यारी बेटी के लिए एक सतखंडा महल बनवाया है। उसका पहला खंड बिल्लौर पत्थर का है, दूसरा खंड ताँबे का, तीसरा फौलाद का, चौथा पीतल का, पाँचवाँ कसौटी के पत्थर का है, छठा खंड चाँदी का है और सातवाँ खंड सोने का। इस महल के चारों ओर मनोहर वाटिका है। इसमें हर प्‌रकार के फलों और हर प्‌रकार के फूलों के वृक्ष हैं। उस वाटिका में हर समय पके फलों और सुगंधित फूलों की खुशबू गमगमाती रहती है। जगह-जगह फव्वारे चलते हैं और स्वच्छ जल की नहरें और तालाब जगह-जगह बने हैं। कुछ पेड़ ऐसे घने हैं जिनके नीचे धूप नहीं आती और वहाँ आराम करने में सारी थकन मिट जाती है।

उस बादशाह का ऐश्वर्य और शहजादी के रूप की प्‌रशंसा सुन कर दूर-दूर के देशों के राजकुमारों ने उससे विवाह का प्‌रस्ताव किया है। बादशाह ने अपनी बेटी को अनुमति दे रखी है कि जिससे चाहे विवाह करे किंतु शहजादी को विवाह से चिढ़ है। उसके माँ-बाप ने बहुत समझाया किंतु वह राजी नहीं होती और कहती है कि अगर आप लोगों ने विवाह के लिए जोर दिया तो आत्महत्या कर लूँगी। बादशाह ने उसे एक मकान में बंदी बना रखा है। उसकी सेवा के लिए दस बूढ़ी स्‌त्रियाँ नियत की गई हैं जिनकी प्‌रमुख वह स्‌त्री है जिसका दूध राजकुमारी ने बचपन में पिया है। अब न शहजादी स्वयं कहीं जा सकती है न उसके पास कोई जा सकता है। बादशाह ने अपनी पुत्‌री को पागल समझ कर यह विज्ञापित कर दिया है कि जो हकीम या ज्योतिषी या तांत्‌रिक उसे अच्छा कर देगा उसी के साथ राजकुमारी का विवाह हो जाएगा। मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि वह परम सुंदरी राजकुमारी इस प्‌रकार से बंदीगृह के दुख भोग रही है।

मैमून ने हँस कर नहस से कहा, मालूम होता है तुम्हारी अकल ठिकाने नहीं है। एक बेकार-सी लड़की के रूप की इतनी प्‌रशंसा कर रहे हो। अगर तुम उस शहजादे को देखो जिसे मैंने देखा है और जिसने मेरा मन मोह लिया है तो तुम्हें मालूम होगा कि सौंदर्य किसे कहते हैं। बल्कि मुझे विश्वास है कि शहजादे को देख कर तुम चीन की राजकुमारी का सौंदर्य भूल ही जाओगे।

नहस ने कहा, शहजादी, वह रूपवान शहजादा कहाँ है? मैमून ने कहा, वह तो अति निकट

है। वह भी बंदी हो कर एक मकान में पड़ा है क्योंकि उसने भी विवाह करने से इनकार कर दिया है। वह उसी मकान में बंद है जिसके कुएँ में मैं रहती हूँ। नहस ने कहा, मैं उस शहजादे को देखने के बाद ही कह सकता हूँ कि वह कितना सुंदर है। फिर भी मैं कहता हूँ कि चीन की शहजादी अधिक सुंदर है। परी बोली कि तुम झख मारते हो, शहजादी उसके मुकाबले में क्या होगी। इसी तरह वे दोनों बड़ी देर तक बहस करते रहे। अंत में जिन्न बोला, परी रानी, तुम्हें इस प्रकार मेरी बात का विश्वास नहीं होगा। मैं उसे उसके मकान से उड़ा कर लाता हूँ फिर तुम खुद ही देख लेना। मैमून बोली, अच्छी बात है, तुम उसे ला कर शहजादे के पास लिटा दो ताकि दोनों की तुलना हो सके।

जिन्न ने उड़ान भरी और कुछ ही क्षणों में चीन की राजकुमारी को ला कर उसने शहजादे के बगल में लिटा दिया। लेकिन इससे भी बात न बनी। परी जिद करती रही कि कमरुज्जमाँ अधिक सुंदर है और नहस राजकुमारी बदौरा की प्रशंसा करता रहा। अंत में दोनों ने तय किया कि किसी तीसरे व्यक्ति को ला कर फैसला करवाएँ कि कौन अधिक सुंदर है। परी ने जमीन पर पाँव पटका तो जमीन फट गई और उसमें से एक लँगड़ा, काना और कुबड़ा जिन्न निकला जिसके सिर पर छह सींग थे और हाथ-पाँव बहुत ही लंबे थे। उसने आ कर परी मैमून को दंडवत प्रणाम किया और पूछा कि मुझे किस सेवा के लिए बुलाया गया है। परी ने कसकस नामी इस भयानक जिन्न से कहा कि मेरे और नहस के बीच बहस पड़ गई है कि इन दोनों में कौन अधिक सुंदर है, तू इस बात का फैसला कर दे।

कसकस बहुत देर देर तक दोनों को देखता रहा किंतु कुछ निर्णय न कर सका। उसने कहा, अभी तो कुछ नहीं कह सकता। कोई एक बात में बढ़ कर है कोई दूसरी बात में। अगर यह बारी-बारी से जाग कर एक दूसरे को प्रेमदृष्टि से देखें तो संभव है कि उनका वास्तविक सौंदर्य प्रकट हो। मैमून और नहस ने कसकस का यह सुझाव पसंद किया। पहले मैमून खटमल बन गई और उसने शहजादे की गर्दन में जोर से काट लिया। शहजादे ने खटमल पकड़ने के लिए हाथ मारा किंतु मैमून फुर्ती से अपनी असली सूरत में आ गई और फिर तीनों अदृश्य हो कर देखने लगे कि शहजादा क्या करता है। कमरुज्जमाँ ने आँखें खोलीं और शहजादी को अपने बगल में लेटा देख कर उस पर तुरंत मोहित हो गया। कहाँ तो उसे स्त्रियों के नाम से चिढ़ थी कहाँ वह इतना प्रेम-विवश हो गया कि बेतहाशा उसका मुख और कपोल चूमने लगा। इस बीच नहस के जादू से शहजादी बेखबर हो कर सोती रही, उसे कुछ पता न चला।

शहजादे ने सोचा कि कदाचित यह वही सुंदरी है जिसके साथ मेरे माँ-बाप मेरा विवाह करना चाहते थे, अगर मैं इसे पहले देख लेता तो शादी करने से क्यों इनकार करता। उसे अपनी इस मूर्खता पर बड़ी लज्जा आई कि बेकार ही माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया। उसने शहजादी को जगाना चाहा किंतु वह तो जिन्न नहस के जादू के प्रभाव से बेखबर सो रही थी। कमरुज्जमाँ ने शहजादी की नीलम की अँगूठी उतारी और उसकी जगह अपनी हीरे की अँगूठी पहना दी और स्वयं शहजादी की नीलम की अँगूठी पहन कर अपनी जगह पहले की तरह लेटा रहा और कुछ ही क्षणों में मैमून के जादू से अचेत हो कर सो गया।

अब जिन्न नहस ने मच्छर बन कर शहजादी के होंठ पर डंक मारा जिसके दर्द से वह जाग उठी। उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके बगल में यह सुंदर युवक कैसे आ कर सो गया। वह भी विवाह से बहुत चिढ़ती थी किंतु कमरुज्जमाँ पर तुरंत मोहित हो गई। उसने सोचा कि मेरे पिता शायद मेरा विवाह इसी युवक से करना चाहते थे और मैं अपनी मूर्खता और हठवादिता के कारण इनकार करती रही। किंतु उसे यह बड़ा अजीब लगा कि मेरा प्रियतम मेरे पास आ कर भी केवल सो रहा है और न प्रेम-दृष्टि डालता है न बातचीत करता है। कुछ देर बाद वह स्वयं को न रोक सकी। उसने शहजादे की बाँह पकड़ कर कई झटके दिए किंतु वह तो मैमून के जादू से अचेत हो कर सोया था। फिर शहजादी उसका हाथ चूमने लगी। उसने देखा कि मेरी अँगूठी इसकी उँगली में है। अपना हाथ देखा तो उसने दूसरी अँगूठी पाई। उसने सोचा कि शायद मुझे याद नहीं रहा है किंतु मेरा विवाह इस युवक के साथ हुआ है वरना यह अँगूठियाँ कैसे बदली जातीं। उसने शहजादे को गले से लिपटा कर बहुत प्यार किया और फिर सो रही। मैमून ने नहस से कहा, तुमने देख लिया कि शहजादा अधिक सुंदर है तभी शहजादी पागल की तरह उसे प्यार कर रही थी। अब तुम शहजादी को उसके महल में पहुँचा दो। यह कह कर उसने कसकस को भी विदा दी और स्वयं अपने कुएँ में वापस आ गई।

कमरुज्जमाँ सुबह जागा और उसने शहजादी को अपने पास न देखा। उसने सोचा कि शायद मेरे पिता ने उसे बुला भेजा है। उसने अपनी सेवा के लिए नियत दास को पुकारा। वह शहजादे के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। शहजादे ने हाथ-मुँह धो कर पूछा कि जो सुंदरी रात को मेरे पास सो रही थी वह कहाँ गई। दास ने कहा, सरकार, मैंने तो किसी सुंदरी को नहीं देखा। फिर यहाँ कोई सुंदरी आ कैसे सकती है, इस कमरे पर तो बाहर की ओर से ताला लगा रहता है। आपने निश्चय ही कोई स्वप्न देखा होगा।

कमरुज्जमाँ को यह सुन कर बड़ा क्रोध आया। उसने दास को बहुत मारा और बराबर पूछता रहा कि वह सुंदरी कहाँ गई। दास बेचारा क्या बताता। कमरुज्जमाँ ने कहा कि तू बहुत दुष्ट है। साधारण दंड से नहीं मानेगा। यह कह कर उसने अन्य दासों को बुला कर इस दास को रस्सी से बँधवाया और कुएँ में लटकवा दिया। दास ने सोचा कि मैं अपनी सच बात पर अड़ता हूँ तो इसी तरह मर जाऊँगा क्योंकि शहजादा निश्चय ही पागल हो गया है। उसने पुकार कर कहा, सरकार, मुझे प्राणों की भिक्षा दें तो मैं सही बात बता दूँ। शहजादे ने उसे निकलवाया और कहा कि अब मेरी बात का जवाब दे। उसने हाँफते हुए कहा कि मुझे जरा दम तो लेने दीजिए।

कुछ क्षणों में वह दास लघुशंका के बहाने उठा। उसने बाहर आ कर फिर कमरे में ताला डाल दिया और दौड़ कर बादशाह के पास गया। उसने शहजादे की सारी बातें बताईं कि किसी कल्पित सुंदरी के पीछे उसने मुझे बहुत मारा और कुएँ में लटकवा दिया और मैं बहाना बना कर यहाँ आया हूँ। उसने कहा, पृथ्वीपाल, आप स्वयं ही विचार कर देखें कि जब बाहर से ताला बंद है तो कोई स्त्री कैसे अंदर जा सकती है और बाहर आ सकती है। बादशाह को भी यह सब सुन कर आश्चर्य हुआ। उसने मंत्री को आदेश दिया कि वह शहजादे के पास जा कर पूरा हाल मालूम करे।

मंत्री ने शहजादे के मकान में जा कर उसे प्रणाम किया और कहा कि आप के पिता आपकी बातें सुन कर चिंतित हैं। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं आप से उस स्त्री के बारे में पूछूँ जिसे आपने स्वप्न में देखा है। शहजादे ने कहा, इस दुष्ट दास के कहने से आपने भी समझ लिया कि मैंने स्वप्न देखा है? मेरा वास्तव में उसके साथ विवाह हो चुका है और मैं उसके विरह में आतुर हूँ। बादशाह मुझे पहले ही उसे दिखा देते तो मैं विवाह से क्यों इनकार करता?

मंत्री ने कहा, यह आप क्या कर रहे है? बंद कमरे में कोई स्त्री कैसे आ सकती है। आपने स्वप्न ही देखा होगा। शहजादा उन्मत्त हो ही रहा था, उसने मंत्री की दाढ़ी पकड़ कर झटके दिए और उसे थप्पड़ मारे। मंत्री ने यह कह कर जान बचाई कि संभव है महाराज ने कोई स्त्री भेजी हो, मैं जा कर पूछता हूँ। हो सकता है वह सारा हाल सुनने पर उसे फिर आपके पास भेजें। शहजादे ने कहा, बुढ़ऊ, अब तुम राह पर आए हो। जल्दी से जाओ और मेरी प्राणप्रिया को मेरे पास पहुँचाने का प्रबंध करो।

मंत्री भाग कर बादशाह के पास आया और कहा, मालिक, उस गुलाम की बात बिल्कुल ठीक है। शहजादे ने मुझे भी मारा है और अपनी कोमलांगी प्रेयसी को भिजवाने के लिए मुझसे कहा है। बादशाह की चिंता यह सुन कर और बढ़ी। उसने स्वयं शहजादे के पास जा कर बात करने का निश्चय किया। उसके पास जा कर कहा, बेटे, यह सब क्या मामला है? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। तुम किस स्त्री की बात कर रहे हो कि वह तुम्हारे बगल में आ कर सोई थी। यह भी समझ में नहीं आता है जब कमरा बाहर से बंद था तो वह स्त्री यहाँ पर आई कैसे।

शहजादे ने कहा, अब्बा हुजूर, मैंने उस स्त्री को स्वप्न में नहीं बल्कि सचमुच अपने पास लेटे देखा है। इस बात का प्रमाण यह अँगूठी है जो मैंने उससे बदली है। अगर मैंने स्वप्न में देखा होता तो यह अँगूठी मेरे पास कैसे आती। आप विश्वास मानिए कि मैं पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में हूँ। न मैं मूर्ख हूँ न पागल। आप कृपा कर के उस सुंदरी को मेरे पास भेजें। यदि आप पहले ही उस कोमलांगी को दिखा देते तो मैं क्यों शादी से इनकार करता और क्यों आपकी आज्ञा का उल्लंघन करता।

बादशाह अँगूठी देख कर सोचने लगा कि वास्तव में यह अँगूठी शहजादे की नहीं है बल्कि उसके देश भर में ऐसी गढ़त की अँगूठियाँ नहीं बनती हैं और इसका नीलमणि भी अत्यंत मूल्यवान है। मालूम होता है कि शहजादे की बात गलत नहीं है, फिर भी यह समझ में नहीं आता कि ताला-बंद कमरे में कोई स्त्री कैसे आई गई, विशेषकर जब वह अति सुंदर तरुणी हो।

उसने सोच-विचार कर कमरुज्जमाँ को कैद से निकाल कर अपने महल में रखा और उसे बहुत दिलासा दिया कि तुम चिंता न करो, हम उस तरुणी को तुम्हारे लिए जरूर ढूँढ़ निकालेंगे और उसका विवाह तुम्हारे साथ करेंगे। वह स्वयं भी अधिकतर शहजादे के

समीप रहने लगा। इससे राज्य प्रबंध को यथोचित समय न दे पाता था। अतएव एक दिन उसके मंत्री ने कहा, आप पूर्ववत राजकाज में संलग्न हो जाएँ ताकि देश को किसी प्रकार की हानि न हो। और जहाँ तक शहजादे का प्रश्न है उसे समुद्र के बीच में बसे खिरद नामी द्वीप के किले में भेज दीजिए। वहाँ हर देश के जहाज और हर देश के लोग आते ही रहते हैं, उनसे बात कर के शहजादे का जी बहला रहेगा। फिर वह स्थान यहाँ से दूर भी नहीं है, आप जब चाहे उसके पास जा सकते हैं। बादशाह को मंत्री की राय पसंद आई। उसने शहजादे को खिरद टापू के किले में भेज दिया। वह स्वयं भी कभी-कभी उसे देखने जाया करता था।

अब इधर का हाल सुनिए। नहस जिन्न ने जब शहजादी को ले जा कर उसके आवास में छोड़ दिया तो दूसरे दिन सवेरे वह अपने साधारण नियमानुसार जागी। उसने अपने आसपास शहजादा कमरुज्जमाँ की खोज की। उसे न पा कर अपनी रक्षिका वृद्धा दासी को पुकारा और घबरा कर पूछने लगी कि वह सुंदर युवक जो रात को मेरे साथ सो रहा था कहाँ चला गया है, उसे तुरंत ही मेरे पास ला। बुढ़िया को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, प्यारी बेटी, तुम्हें क्या हो गया है? यह क्या कह रही हो? तुम्हारे शयनगृह में चिड़िया तक का प्रवेश तो संभव नहीं है, सुंदर युवक कहाँ से आ जाएगा। तुमने अवश्य कोई सपना देखा है। भगवान के लिए ऐसी बातें न करो। तुम्हारी बातों का तुम्हारे माता-पिता को पता चलेगा तो मेरी गर्दन उड़ा दी जाएगी।

शहजादी बदौरा को दासी की बात पर बड़ा गुस्सा आया। उसने बुढ़िया के केश पकड़ लिए और उसे बेतहाशा मारना शुरू किया। बुढिया तड़प कर उसकी पकड़ से निकल गई और भागी-भागी राजमहल में पहुँची। वहाँ जा कर उसने बादशाह और बेगम को बताया कि बदौरा कैसी पागलपन की बातें करती है। वे दोनों परेशान हो कर शहजादी के पास पहुँचे और बोले - बेटी, तुमने रात को क्या स्वप्न देखा जिससे तुम इतनी परेशान हो गई हो कि बेकार बकवास करने लगी?

शहजादी बदौरा ने लज्जावश सिर झुका कर कहा, मुझे बड़ा खेद है कि आप लोग मेरा विवाह करना चाहते थे और मैं नादानी से जिद कर के आपकी आज्ञा का उल्लंघन करती रही किंतु जिस युवक को आपने मेरे लिए चुना है वह रात को मेरे साथ आ कर सोया था। मैं सच कहती हूँ कि अगर आप पहले से उसे दिखा देते तो मैं विवाह से इनकार ही क्यों करती। अब कृपया उसे तलाश कराइए, न जाने वह कहाँ चला गया है। मुझे उसके प्रेम ने ऐसा जकड़ लिया है कि मैं उसके बगैर एक क्षण नहीं रह सकती। वह न मिला तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। अगर आप को विश्वास न हो तो यह देखिए, वह अपनी अँगूठी मुझे दे गया है।

उसके माता-पिता को यह देख कर वास्तव में आश्चर्य हुआ कि अँगूठी किसी और की है, शहजादी की नहीं। वे बहुत सोचते रहे किंतु उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि इतनी कड़ी कैद के बाद भी कोई आदमी कैसे यहाँ तक आया और अँगूठी बदल गया। बहुत सिर मारने पर भी उनकी समझ में बेटी की बात नहीं आई और उन्होंने समझ लिया कि वह

बिल्कुल पागल हो गई है, उन्होंने सोने की जंजीरें मँगा कर उनसे बेटी के हाथ-पाँव जकड़ दिए और अति दुखित हो कर अपने महल को वापस आए। उन्होंने आदेश दिया कि एक विश्वस्त बूढ़ी दासी के अलावा इसके पास कोई नहीं जा सकेगा। उन्होंने बंदीगृह के चारों ओर का पहरा भी बड़ा सख्त कर दिया। इसके अतिरिक्त बादशाह ने दरबार में सारे अमीरों और सामंतों के समक्ष घोषणा की कि मेरी बेटी पर उन्माद का प्रकोप हुआ है। कोई भी व्यक्ति जो उसे अच्छा कर देगा उसके साथ कुमारी का विवाह कर दिया जायगा और युवराज बना दिया जायगा। किंतु जो व्यक्ति इस प्रयत्न में असफल होगा उसे प्राणदंड दिया जाएगा।

इस घोषणा के बाद बहुत-से हकीम, वैद्य, तांत्रिक, योगी आदि शहजादी के इलाज के लिए आए और विफल हो कर प्राण गँवा बैठे। दो-तीन वर्षों में लगभग डेढ़ सौ व्यक्तियों को इस सिलसिले मंज मृत्युदंड मिला। बादशाह ने शहर की रक्षाभित्ति के साथ उन सभी के सिरों को लटकवा दिया। अब किसी का साहस शहजादी के इलाज के लिए आगे आने का नहीं होता था। जो दासी उस शहजादी की सेवा के लिए नियुक्त थी उसके पुत्र के साथ शहजादी बचपन में खेली थी। उस युवक का नाम मर्जुबन था। वह चीन के बाहर विद्याध्ययन करने गया था। कई वर्ष बाद वह वापस लौटा तो उसे रक्षाभित्ति के साथ इतने सारे सिर लटके देख कर आश्चर्य हुआ। फिर वह अपने घर गया तो अपने घरवालों से बातों-बातों में अपनी बचपन की सहेली शहजादी बदौरा का हाल पूछा।

उसके संबंधियों ने बताया कि शहजादी पागल हो गई है, बादशाह ने उसे जंजीरों में जकड़ कर कैदखाने में डाल दिया है। बादशाह ने घोषणा की है कि जो भी उसे अच्छा कर देगा उसके साथ शहजादी ब्याह दूँगा और उसे युवराज बना दूँगा किंतु जो उससे अच्छा नहीं कर सका तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा। यह घोषणा सुन कर बहुत-से गुणीजन - वैद्य, ज्योतिषी, रमलकर्ता, तांत्रिक आदि आए और इस प्रयत्न में असफल हो कर प्राण गँवा बैठे, उन्हीं के सिरों को रक्षाभित्ति के सहारे लटकाया गया है। बाकी बातें तुम्हें अपनी माँ से मालूम होंगी। इस समय शहजादी के पास तुम्हारी माँ के अतिरिक्त किसी को जाने की अनुमति नहीं दी जाती। अपने सेवाकार्य से अवकाश पा कर मर्जबान की माँ घर आई तो उसे बेटे के वापस आने से बड़ी प्रसन्नता हुई । मर्जबान के पूछने पर उसने राजकुमारी का हाल ब्योरेवार बताया। मर्जबान ने पूछा कि क्या यह संभव है कि मैं गुप्त रूप से शहजादी से भेंट करूँ और देखूँ कि उसे क्या बीमारी है। उसकी माँ ने कहा कि यह काम बड़ी जोखिम का है। किंतु जब मर्जवान ने बहुत जिद की तो उसने कहा कि मैं देखभाल कर बताऊँगी कि कुछ प्रबंध हो सकता है या नहीं।

दूसरे दिन बुढ़िया जब शहजादी की सेवा के लिए गई तो उसने पहरे के सिपाहियों के प्रधान से कहा, भैया, मैं तुम्हारी थोड़ी-सी कृपा चाहती हूँ। उसने कहा, बोलो क्या चाहती हो। बुढ़िया बोली, तुम्हें शायद मालूम हो कि मेरी एक बेटी शहजादी ही की उम्र की है। दोनों ने एक साथ ही मेरा दूध पिया था। कई वर्ष पूर्व मैंने उसका विवाह कर दिया था। अब वह पहली बार ससुराल से आई है। उसने अपनी बचपन की सहेली का हाल सुना तो उसे बड़ी चिंता हुई है। वह उसे देखना चाहती थी किंतु वह बड़ा सख्त पर्दा करती है

और किसी को यह भी नहीं बताना चाहती कि वह कहाँ आती-जाती है। तुम्हारी अनुमति हो तो मैं अपनी बेटी को शहजादी से मिलवा दूँ। प्रधान रक्षक ने इसमें कोई हर्ज नहीं समझा। उसने कहा, एक पहर रात गए बादशाह शयन के लिए जाते हैं। तुम अपनी बेटी को उसी समय लाना। मैं इस मकान का दरवाजा खुला रखूँगा। शहजादी का मन बहलाने के लिए उसकी सहेली उससे मिले तो अच्छी ही बात होगी।

अतएव बुढ़िया ने मर्जबान को जनाने कपड़े पहना कर नकाब से उसका मुँह ढका और नियत समय पर शहजादी के आवास में ले गई। उसे बाहरी कमरे में छोड़ कर शहजादी के पास जा कर बोली कि मेरा बेटा छद्म वेश में तुम्हारा हाल-चाल पूछने आया है। शहजादी को अपने बचपन के साथी के आने पर प्रसन्नता हुई। उसने मर्जबान को बुलाया और जब वह प्रणाम कर के दूर खड़ा हुआ तो बोली, मर्जबान भाई, पास आओ। भाई-बहन में क्या तकल्लुफ? मेरा जी बहुत घबरा रहा था। तुम्हारे साथ दो घड़ी बात कर के मेरी तबीयत बहलेगी।

मर्जबान ने अपनी ज्योतिष, रमल आदि की पुस्तकें निकालीं और शहजादी के रोग के निदान का प्रयत्न करने लगा। शहजादी बदौरा बोली, मर्जबान, बड़े दुख की बात है कि तुम भी मुझे औरों की तरह पागल समझे हुए हो। मैं तुम से जोर दे कर कहती हूँ कि मैं मानसिक रूप से बिल्कुल स्वस्थ हूँ। जो लोग मेरे इलाज को आते हैं वे मेरी कहानी तो जानते नहीं इसलिए मुझे पागल समझते हैं।

यह कहने के बाद शहजादी बदौरा ने उसे सविस्तार बताया कि उसकी कैसे एक युवक से भेंट हुई जिसने उसके सोते में उसकी अँगूठी बदल ली। मैं पागल नहीं हूँ। जिस समय मुझे मेरा प्रियतम मिल जाएगा मैं बिल्कुल ठीक हो जाऊँगी।

मर्जबान यह सुन कर बहुत देर तो चुपचाप खड़ा रहा फिर बोला, राजकुमारी, औरों ने चाहे आपकी बात का विश्वास न किया हो किंतु मुझे विश्वास है। आप निश्चिंत रहें। मैं आपके मनोवांछित पुरुष की खोज में जाता हूँ। ईश्वर की इच्छा हुई तो उसे खोज ही लाऊँगा। अगर ऐसा न हो सका तो मैं यहाँ मुँह न दिखाऊँगा। अब जब आप सुनें कि मर्जबान नगर में है तो समझ लें कि आपका प्रियतम भी उसके साथ आया है। यह कह कर वह विदा हो गया। अपने नगर से निकल कर वह देश-देश की, नगर-नगर की यात्रा करता रहा और पूछताछ करता रहा। किंतु उसकी यह भी समझ में नहीं आया था कि क्या पूछे।

संयोग से वह एक दिन वह सुंदर नगर में ठहरा हुआ था जो एक नदी के तट पर बसा हुआ था। यह उसके चीन से जाने के लगभग चार महीने की बात है। कुछ सैलानियों ने उसे बताया कि फारस का शहजादा कमरुज्जमाँ अजीब तरह से उन्माद से ग्रस्त है। वह सख्त पहरे के अंदर था, फिर भी कहता है कि उसके साथ एक सुंदरी लेटी जिससे उसने अँगूठी बदली है। मर्जबान को आशा हुई कि शायद यह वही पुरुष है जिसका उल्लेख बदौरा ने किया है। उसने उस द्वीप का मार्ग पूछा जहाँ कमरुज्जमाँ किले में कैद था। मालूम हुआ

कि दो रास्ते हैं। एक थल मार्ग है जो निरापद है किंतु लंबा है, दूसरा समुद्री माग है किंतु वह खतरनाक है। मर्जबान ने खतरनाक समुद्री मार्ग ही से जाना निश्चित किया।

कुछ दिनों तक तो यात्रा ठीक रही किंतु बाद में एक तेज तूफान आया जिसने जहाज को एक पहाड़ के जल मार्ग पर पटक दिया। जहाज टुकड़े-टुकड़े हो कर गहरे समुद्र में आ गिरा। जहाज के सारे लोग डूब गए किंतु मर्जबान कुशल तैराक भी था। वह एक तख्ते का सहारा ले कर तैरता रहा और धीरे-धीरे उसी द्वीप के तट पर आ लगा जहाँ कमरुज्जमाँ को कैद कर रखा गया था। संयोग की बात थी कि उसी समय बादशाह वहाँ समुद्र को देख कर मन बहला रहा था। मर्जबान को तख्ते के सहारे तैरते देख कर उसने मंत्री को आज्ञा दी कि इस आदमी को तुरंत डूबने से बचाया जाय। माँझी लोग आज्ञा पा कर समुद्र में गए और मर्जबान को निकाल कर उसे बादशाह के समक्ष ले गए। बादशाह ने उससे बात करने के बाद आदेश दिया कि यह व्यक्ति शिक्षित और बुद्धिमान है और शहजादे का समवयस्क भी अतएव इसे उसके साथी के रूप में शहजादे के पास रखा जाए। उसने शहजादे की बीमारी का हाल उससे कहा।

मर्जबान अँगूठी बदलने की बात सुन कर समझ गया कि बदौरा इसी शहजादे की बातें करती है। उसने बादशाह से प्रार्थना की कि अगर उसे एकांत में शहजादे से बात करने दिया जाए तो संभव है कि शहजादे का रोग दूर हो जाए। बादशाह ने इसकी अनुमति दे दी। अकेले में कमरुज्जमाँ ने मर्जबान से पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। उसने धीरे से कहा, सरकार, मैं चीन से आया हूँ। जो सुंदरी आपके समीप आ कर लेटी थी और जिससे आपने अपनी अँगूठी बदली है उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह चीन के महापराक्रमी सम्राट की पुत्री है। उसका नाम बदौरा है। जिस प्रकार आप उसके वियोग में उन्मत हो गए हैं वैसे ही वह भी आपके विछोह में जलविहीन मछली की तरह तड़पती रहती है।

मर्जबान ने आगे बताया, मैं उसका दूध भाई हूँ और उसे मुझ पर पूरा विश्वास है, इसलिए उसने मुझे अपना और आपका हाल ब्योरेवार बताया है। आप ही की भाँति वह भी अपने पिता के आदेशानुसार कैद में है बल्कि आप से अधिक दुर्दशा में है क्योंकि उसे सोने की जंजीरों से बाँध दिया गया है। उसके पिता ने मुनादी करवा दी है कि जो कोई मेरी बेटी को ठीक कर देगा उसे मैं अपना दामाद और युवराज बना दूँगा। किंतु जो इस प्रयत्न में असफल हुआ उसे मरवा डालूँगा। इसी चक्कर में लगभग डेढ़ सौ ज्योतिषियों, रमल के जानकारों, तांत्रिकों, हकीमों ने अपनी जान गँवा दी है और नगर की रक्षाभित्ति के सहारे उनके सिर लटके हैं। अगर आप वहाँ जाएँगे तो निश्चय ही शहजादी ठीक हो जाएगी और सम्राट अपने वचन के अनुसार उससे आप का विवाह करा देंगे और आप को सम्राट के मरणोरपरांत वहाँ का राज्य भी मिलेगा। इसीलिए अब सबसे पहले तो जरूरी है कि आप ठीक तरह से स्वास्थ्यवर्धक भोजन कर के अपने शरीर में शक्ति पैदा करें और फिर मेरे साथ चीन चलें।

कमरुज्जमाँ को यह सुन कर इतनी प्रसन्नता हुई कि वह उत्साह के मारे खड़ा हो गया।

उसे अपनी प्रियतमा से मिलने की आशा हो गई थी। उसने स्नान कर के अच्छे वस्त्र धारण किए और सब से साधारण रूप में हँसने-बोलने लगा। उसने अपने पिता के साथ डट कर भोजन किया। बादशाह यह देख कर फूला न समाया। उसने अपने पुत्र को गले लगाया और खिरद द्वीप के किले से निकाल कर अपने महल में ले गया। उसने राज्य भर में शहजादे के स्वास्थ्यलाभ पर बड़ा भारी उत्सव कराया और महल में सामंतों और प्रमुख नागरिकों की बड़ी शानदार दावत की। उसने दीन, अनाथ और भिखारियों को मुँह माँगा दान भी दिया। राज्य के सभी लोग अपने शहजादे के स्वास्थ्य लाभ से बहुत प्रसन्न हुए और कई दिनों तक उत्सव चलता रहा।

कमरुज्जमाँ ने अब स्वास्थ्यकारी भोजन करना आरंभ कर दिया था। इसलिए कुछ ही दिनों में उसके शरीर में पूर्ववत शक्ति आ गई। फिर उसने मर्जबान से कहा कि अब मुझमें वियोग सहने की और शक्ति नहीं है, मैं तुम्हारे साथ चीन के लिए तुरंत ही रवाना होना चाहता हूँ किंतु मेरे पिताजी मुझे इतना चाहते हैं कि इतनी दूर की यात्रा की अनुमति न देंगे। यह कह कर वह रोने लगा।

मर्जबान ने कहा, आपकी बात ठीक है किंतु एक तरकीब है जिससे आप यहाँ से निकल सकते हैं। आप अपने पिता से दो-तीन दिन के लिए आखेट पर जाने की अनुमति लीजिए और अपने साथ मुझे और कुछ सेवकों को रखिए। साथ में दो असील तीव्रगामी घोड़े भी ले चलें। वहाँ से हम दोनों चीन को चल देंगे।

शहजादे को उसकी राय पसंद आई। उसने बादशाह से आखेट की अनुमति माँगी जो उसने प्रसन्नतापूर्वक दे दी। यह लोग पूर्व दिशा की ओर चल दिए। सायं होने पर यह लोग एक सराय में रुके। खाने-पीने के बाद और लोग सो गए किंतु आधी रात को यह दोनों अपने तेज घोड़े पर निकल पड़े। उन्होंने एक तीसरा मामूली घोड़ा भी लिया और राजसेवकों जैसी एक पोशाक भी। पाँच-छह घंटे चलने के बाद वे उस चौराहे पर पहुँचे जहाँ से जंगल शुरू होता था। मर्जबान ने शहजादे से कहा कि आप अपने कपड़े उतार कर मुझे दे दें और यह नौकरों जैसे कपड़े पहन लें। शहजादे ने ऐसा ही किया। मर्जबान ने तीसरे घोड़े को मार डाला और उसके खून में कमरुज्जमाँ की शाही पोशाक फाड़ कर लिथेड़ दी और घोड़े की लाश को खींच कर छुपा दिया और चौराहे के पास खून से सनी और तार-तार शाही पोशाक डाल दी। शहजादे ने आश्चर्य से पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया।

मर्जबान ने कहा, आप के सेवकगण आप को ढूँढ़ते हुए यहाँ आएँगे और इन कपड़ों को देख कर समझेंगे कि कोई वन्य पशु आपको खा गया। फिर आपकी तलाश छोड़ दी जाएगी और हम आराम से चलेंगे।

तत्पश्चात वे दोनों बहुत-सी अशर्फियाँ और जवाहिरात ले कर कभी समुद्री और कभी थल मार्ग से यात्रा करते हुए चीन पहुँचे। उन्होंने एक सराय में ठहर कर तीन दिन तक विश्राम किया। इस बीच मर्जबान ने शहजादे के लिए हकीमों जैसे कपड़े बनवा लिए। फिर हम्माम में दोनों ने स्नान किया और शहजादे ने हकीमी लिबास पहना। मर्जबान ने

कहा कि अब तुम बादशाह के पास हकीम बन कर जाओ और बदौरा की चिकित्सा की बात करो और मैं बदौरा के पास जा कर तुम्हारे आगमन का समाचार देता हूँ। यह कह कर वह अपने घर गया और अपनी माँ से कहा कि तुम तुरंत शहजादी को मेरे आने की खबर करो।

इधर कमरुज्जमाँ महल में नीचे पहुँचा और पुकार कर कहने लगा, मैं दूर देश से आया हुआ हकीम हूँ। मैं शहजादी का इलाज करना चाहता हूँ। यदि शहजादी मेरे इलाज से अच्छी हो जाएगी तो बादशाह अपने वचनानुसार उससे मेरा विवाह कर दें वरना मुझे मृत्युदंड दे दें। बादशाह के सेवकों ने उसकी सौंदर्य और यौवनावस्था को देख कर दुख किया कि यह कहाँ मरने के लिए आ गया है। उन्होंने उसे बहुत समझाया कि क्यों अपनी जान का दुश्मन हुआ है, तेरे जेसे न मालूम कितने आदमी मर गए हैं। किंतु कमरुज्जमाँ अपनी बात पर दृढ़ रहा। सेवक उसे सम्राट के पास ले गए।

कमरुज्जमाँ दरबार में जा कर धड़धड़ाता हुआ सम्राट के बगल में बैठ गया। सम्राट को इस बात पर क्रोध आना चाहिए था किंतु वह इस जवान हकीम की हालत पर तरस खाने लगा। उसके समझाने पर भी जब कमरुज्जमाँ न माना तो सम्राट ने उससे प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कराए और बदौरा के आवास में उसे भेज दिया। वहाँ का प्रधान रक्षक शहजादे को बाहर बिठा कर बदौरा को बताने गया कि तुम्हारा इलाज करने के लिए एक हकीम आया है। शहजादी ने कहा, उसे भी लाओ।

प्रधान रक्षक ने आ कर कहा कि शहजादी तुम्हें बुलाती हैं। कमरुज्जमाँ ने कहा कि मेरे वहाँ जाने की जरूरत नहीं है। यहीं से उसे ठीक कर दूँगा। शहजादे ने कलम- दवात निकाल कर एक पत्र लिखा जिसमें उनकी मिलन-रात्रि का वर्णन था और उस पत्र को बदौरा की अँगूठी के साथ बदौरा के पास भेज दिया। बदौरा ने पत्र पढ़ा और अपनी अँगूठी पहचान ली और समझ गई कि यह मेरा प्रिय पुरुष है। उसने झटके से जंजीरें तोड़ डालीं और दौड़ती हुई वहाँ आई जहाँ शहजादा बैठा था। दोनों ने एक-दूसरे को पहचान आलिंगनबद्ध हो गए।

शहजादी की परिचारिका बुढ़िया ने दोनों को अंदर बैठाया। दोनों प्रेम की बातें करने लगे। बदौरा ने अपनी अँगूठी शहजादे को दे कर कहा, तुम इसे अपने पास ही रखो और मैं भी तुम्हारी अँगूठी अपनी जान से भी प्यारी समझ कर अपने पास रखूँगी।

बदौरा के प्रधान रक्षक ने दौड़ कर सम्राट को सूचना दी कि हकीम ने तो दूर ही से शहजादी को स्वस्थ कर दिया और अब वह बिल्कुल सामान्य रूप से बातचीत कर रही है। सम्राट तुरंत ही बदौरा के आवास में आया और बेटी को पूर्ण स्वस्थ देख कर अपने सीने से लगा लिया। फिर उसने बदौरा का हाथ कमरुज्जमाँ के हाथ में दे कर कहा कि मैं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपनी बेटी तुम्हें दे रहा हूँ। अब तुम बताओ कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। कमरुज्जमाँ ने कहा कि मैं न हकीम हूँ न तांत्रिक। मैं फारस देश के खलदान नामक भाग के बादशाह का पुत्र हूँ। फिर उसने अपने प्रेम का सविस्तार वर्णन

सम्राट के सन्मुख किया। सम्राट को यह सब सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने आदेश दिया कि इस वृत्तांत को स्वर्णाक्षरों में लिखवा कर शाही ग्रंथागार में रखवा दिया जाए। फिर उसने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि विवाह की तैयारियाँ की जाएँ। कुछ दिनों में तैयारियाँ पूरी हो गईं और बदौरा का कमरुज्जमाँ के साथ विवाह हो गया। दोनों प्रेमियों की बड़े दिनों की मनोकामना पूरी हुई और वे आनंदपूर्वक रहने लगे। सम्राट ने कमरुज्जमाँ को अपना मंत्री नियुक्त कर दिया और उससे राज्य प्रबंध में सहयोग लेने लगा।

किंतु यह आनंद-उल्लास कुछ दिनों बाद ठंडा पड़ गया। हुआ यह कि कमरुज्जमाँ ने एक रात यह स्वप्न देखा कि उसका पिता मरणासन्न है और रो-रो कर कह रहा है कि हाय मेरा इकलौता बेटा मुझसे बिछुड़ गया और उसके वियोग में मेरे प्राण निकल रहे हैं। कमरुज्जमाँ यह स्वप्न देख कर चौंक उठा और दुख के मारे रोने लगा। उसके रोदन से उसकी पत्नी जाग गई और परेशान हो कर पूछने लगी कि तुम्हें क्या हो गया है, रो क्यों रहे हो। कमरुज्जमाँ ने उसे बताया कि मैंने क्या सपना देखा है।

शहजादी बदौरा समझ गई कि उसे अपने पिता की बहुत याद आएगी और उसका जी इस देश में नहीं लगेगा। उसने शहजादे को दिलासा दिया कि मैं तुम्हें तुम्हारे पिता से मिलवाने का प्रबंध करूँगी। इससे दूसरे दिन उसने अपने पिता से कहा कि हम लोग एक वर्ष के लिए देशाटन को जाना चाहते हैं। उसने खेदपूर्वक यह बात स्वीकार कर ली और बहुत-से सेवक, घोड़े, हाथी, अशर्फियाँ और रत्नादि दे कर कहा कि तुम लोग एक वर्ष में वापस जरूर आ जाना। वह स्वयं भी कुछ दूर तक उनके साथ गया।

अब यहाँ से कमरुज्जमाँ पर नई विपत्तियाँ पड़नी शुरू हो गईं। एक महीने की यात्रा के बाद वे लोग एक विशाल वन के किनारे पहुँचे। कमरुज्जमाँ थक गया, उसने बदौरा से कहा कि कहो तो यहाँ डेरा डाल कर कुछ समय तक आराम कर लें। बदौरा भी यही चाहती थी। उसने कहा कि मैं तुमसे भी अधिक थक गई हूँ, यहाँ तक की यात्रा में हमारे बहुत-से सेवक पीछे छूट गए हैं, वे भी हम लोगों के साथ आ कर मिल जाएँगे।

कमरुज्जमाँ की आज्ञा पा कर उसके सेवक फर्राशों ने सघन पेड़ों की छाया में तंबू लगा लिया। उनके अन्य साथी और सैनिक भी अपने तंबू तान बैठे, बदौरा गर्मी और थकन से बड़ी व्यथित थी। वह डेरे के सज जाने पर उसमें जा कर उसमें बिछे पलंग पर लेट गई और लेटते ही सो गई। कुछ समय के बाद बाहरी प्रबंध की देख-भाल कर के कमरुज्जमाँ भी वहाँ आया और पत्नी के बगल में लेट रहा।

बदौरा ने लेटने से पहले अपनी कमर का पटका खोल कर वहीं पास में डाल दिया था। यह पटका रत्नजड़ित था और इसमें जरदोजी के काम का एक बटुआ भी बँधा था। कौतूहलवश शहजादे ने वह बटुआ उठाया तो मालूम हुआ कि उसके अंदर कोई ठोस और कठोर-सी वस्तु है। कमरुज्जमाँ ने बटुआ खोल कर उसे निकाला तो देखा कि वह एक बड़ा-सा लाल था जिस पर कुछ यंत्र जैसा बना था। शहजादे को ताज्जुब हुआ कि बदौरा

ने उसे सुरक्षापूर्वक किसी पेटिका में न रख कर ऐसी बेपरवाही से क्यों फेंक दिया। वास्तव में यह यंत्र बदौरा की माँ ने उसकी रक्षा के लिए दिया था। शहजादा उसे डेरे से बाहर लाया ताकि प्रकाश में उसके अक्षर पढ सके किंतु तभी एक पक्षी उसे उसके हाथ से ले कर उड़ गया।

शहजादे को बड़ी परेशानी हुई कि उसकी प्रिया की यह अमूल्य वस्तु उसके हाथ से ही निकली। उसने पक्षी का पीछा किया। पक्षी कुछ दूर जा बैठा। जब शहजादा उसके पास गया तो वह उड़ कर फिर कुछ दूर जा बैठा। शहजादा फिर उसके पास पहुँचा तो पक्षी ने वह लाल निगल लिया और फिर कुछ दूर तक उड़ कर बैठ गया। कमरुज्जमाँ इसी प्रकार उसका पीछा करता रहा। शाम तक वह पक्षी इसी प्रकार कमरुज्जमाँ को भटकाता रहा। कमरुज्जमाँ अपने लश्कर से दूर निकल गया था और उसे दिशा ज्ञान भी नहीं रहा। उसने पेड़ों के कुछ फल खाए और एक पेड़ की छाँह में सो रहा।

सवेरे उसने देखा कि वह पक्षी उसी पेड़ पर बैठा है। कमरुज्जमाँ ने उसे पकड़ना चाहा तो वह फिर उड़ कर दूर जा बैठा। इसी प्रकार दूसरे दिन भी उस पक्षी ने कमरुज्जमाँ को दिन भर अपने पीछे दौड़ाया। वह बेचारा दिन भर पक्षी का पीछा करता और रात को किसी पेड़ के नीचे सो रहता।

वह सोचता कि वापस जाऊँ भी तो लश्कर का पता कहाँ मिलेगा। इससे अच्छा है कि इस पक्षी को पकड़ कर इसके अंदर से माणिक निकाल लूँ।

ग्यारहवें दिन वह पक्षी एक नगर के समीप पहुँचा। कमरुज्जमाँ भी उसके पीछे-पीछे चला। अब वह पक्षी तेजी से उड़ा और एक विशाल भवन के पीछे जा कर ऐसा लोप हुआ कि कमरुज्जमाँ के लाख ढूँढ़ने पर भी वह दिखाई नहीं दिया। कमरुज्जमाँ की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। वह नगर समुद्र के तट पर बसा था। कमरुज्जमाँ बहुत देर तक उस नगर की सड़कों और गलियों में भटकता रहा ताकि किसी नागरिक से सहायता माँगे किंतु वहाँ के किसी आदमी ने उससे बात ही नहीं की।

अब वह बेचारा शहर से निकल कर समुद्र तट पर घूमने लगा। उसे एक बाग दिखाई दिया और उसके अंदर जाने को उद्यत हुआ किंतु बाग के माली ने उसे देख कर बाग का फाटक बंद कर लिया। कमरुज्जमाँ को इस से आश्चर्य हुआ और उसने माली से पूछा कि तुमने मुझे देख कर फाटक क्यों बंद कर लिया। माली ने उत्तर दिया, यह मैंने इसलिए किया कि तुम मुसलमान हो। तुम परदेसी हो इसलिए यहाँ की बातें नहीं जानते। यह देश प्रस्तर पूजकों का है। यहाँ के लोग मुसलमानों को उत्पीड़ित करना अपने धर्म का एक भाग समझते हैं। मुझे इस बात का आश्चर्य है कि तुम इतनी देर से यहाँ घूम रहे हो और किसी ने तुम्हें अब तक कोई यातना नहीं दी। इसे भगवान की तुम पर अति कृपा कहनी चाहिए।

कमरुज्जमाँ की समझ में बिल्कुल न आया कि क्या करूँ। उसकी परेशानी को देख कर बूढ़े माली को दया आई। उसने कहा, खैर तुम भूखे-प्यासे और परेशान मालूम होते हो। चुपके से बाग के अंदर आ जाओ और मेरे झोपड़े में छुप कर बैठो और खा-पी कर कुछ देर

आराम करो। कमरुज्जमाँ ने उसके प्रति आभार प्रकट किया और झोपड़े में जा कर कुछ खाया-पिया और फिर माली के पूछने पर अपना सारा हाल बयान किया कि किस प्रकार वह दुष्ट पक्षी मुझे भटकता हुआ यहाँ ले आया है। अपना हाल सुनाते-सुनाते वह रोने लगा कि न जाने अब मेरे प्यारी पत्नी से मेरी भेंट होगी भी या नहीं और उसे ले कर अपने पिता से भी मिल पाऊँगा या नहीं। उसने कहा कि यह भी तो ठीक नहीं है कि मेरी पत्नी अब भी उसी वन में हो जिसमें मैं उन्हें छोड़ आया था।

माली ने उसे बताया, मुसलमानों के देश यहाँ से बहुत दूर हैं। कम से कम एक वर्ष की यात्रा करनी होती है उनमें जाने के लिए। उनमें से सब से निकट का देश अवौनी है। अवौनी भी समुद्र तट पर है और वहाँ से लोग समुद्र के रास्ते आसानी से तुम्हारे पिता के खलदानी द्वीपों में पहुँच जाते हैं। साल में एक बार अवौनी का एक व्यापारी यहाँ आता है और अपने यहाँ की वस्तुएँ यहाँ ला कर बेचता है और यहाँ की पैदावार खरीद कर वापस अपने देश को चला जाता है। वह कुछ दिन पहले ही आया था। तुम उस समय यहाँ होते तो मैं उससे तुम्हारा परिचय करा देता और वह अपने जहाज पर तुम्हें अवौनी ले जाता। किंतु अब वह एक वर्ष के बाद आएगा, तब तक तुम मेरे झोपड़े में आराम से रहो। हाँ, किसी से अपने मुसलमान होने का जिक्र न करना नहीं तो मेरी भी मुसीबत आ जाएगी।

कमरुज्जमाँ ने माली के प्रस्ताव को भी भगवान की दया समझा और वह उसके सहायक के रूप में जीवन यापन करने लगा। दिन भर वह बाग की साज-सँवार करता और रात को बिस्तर पर लेट कर बदौरा की याद में आँसू बहाया करता। उसे एक वर्ष बाद वहाँ से छुटकारे की तो आशा थी किंतु बदौरा से मिलने की कोई उम्मीद कम ही रह गई थी।

उधर बदौरा उस दिन नींद से उठी तो कमरुज्जमाँ को न देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ी। फिर उसने अपने पटके को देखा तो मालूम हुआ कि उसमें से बटुआ खोल लिया गया है। वह समझ गई कि शहजादा ही उसे देखने को ले गया होगा। रात होने पर भी शहजादा न लौटा तो वह बड़ी निराश हुई और रोने लगी। उसने क्रोध में यंत्र के निर्माता को खूब गालियाँ दीं जिसके कारण उसके प्रियतम पर यह विपत्ति पड़ी थी। लेकिन वह बुद्धिमती थी, उसने साहस नहीं खोया और तय कर लिया कि आगे क्या करना चाहिए।

शहजादे के जाने का हाल दो-एक दासियों के अलावा किसी को नहीं मालूम था। बदौरा ने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि वे किसी भी दशा में शहजादे के जाने का समाचार किसी को न दें। वह सोचती थी कि लश्करवाले इस समाचार को सुन कर बगावत न कर दें और उसे कोई हानि न पहुँचाएँ। उसने खुद शहजादे के कपड़े पहने और उसी की तरह साज-सज्जा की। फिर उसने लश्कर के लोगों के लिए आदेश पहुँचवाया कि कल सुबह अँधेरा रहते ही यहाँ से कूच कर दिया जाए। उसने अपनी पालकी में अपनी जगह एक दासी को बिठा दिया और स्वयं एक तीव्रगामी घोड़े पर सवार हो गई। शाही लश्कर के कूच करते ही मौका पा कर उसने एक अन्य दिशा में अपना घोड़ा दौड़ा दिया।

वह कई मास तक कभी जल मार्ग और कभी थल मार्ग से यात्रा करती हुई, जिसके दौरान

हर जगह अपने पति का पता लगाती जाती थी, अवौनी में पहुँची। उसने अपना नाम खलदान द्वीप का शहजादा कमरुज्जमाँ बताया था। अवौनी के बादशाह अश्शम्स को उसके आगमन का समाचार मिला तो वह उससे भेंट करने के लिए स्वयं ही सागर तट पर गया जहाँ बदौरा के जहाज ने लंगर डाला था। अवौनी और खलदान देशों के बादशाहों में मैत्री के संबंध थे। बादशाह ने बदौरा को कमरुज्जमाँ समझ कर उसका बड़ा सम्मान किया और आदरपूर्वक उसे अपने महल में ले आया और तीन दिन तक उसके सम्मान में कई भोज और समारोह किए। इसके बाद कमरुज्जमाँ रूपी बदौरा ने विदा की अनुमति चाही।

अवौनी का बादशाह उसके रूप और चातुर्य पर मुग्ध था और चाहता था कि उसे अपने पास रखूँ। लेकिन इस बात को सीधी तरह न कह कर उसने कहा, मेरे युवा मित्र, तुम जानते हो कि मैं अब वृद्ध और अशक्त हो गया हूँ और राज्य संचालन में मुझे कठिनाई होती है। मेरा कोई पुत्र नहीं है जो मेरी सहायता करे। मेरे केवल एक बेटी है जो अत्यंत सुंदर और बुद्धिमान है। मैं चाहता हूँ कि उसका विवाह उसी के अनुरूप किसी सुंदर और चतुर व्यक्ति के साथ कर के निश्चिंत हो जाऊँ। तुम हर तरह से उसके योग्य हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम उससे विवाह कर लो और मेरे राज्य के उत्तराधिकारी बन जाओ। तुम्हें इस बारे में क्या कहना है?

बदौरा बड़ी उलझन में पड़ी। सोचने लगी यदि मैं वास्तव में पुरुष होती तो इससे अच्छा अवसर मेरे जीवन में आना नहीं था। लेकिन मैंने तो मजबूरी में यह वेश धारण किया है, मैं राजकुमारी के साथ विवाह कैसे कर सकती हूँ? सुहागरात ही में मेरा भेद खुल जाएगा और फिर सभी अपने-परायों में मेरा न जाने कितना अपमान होगा। और अगर मैं विवाह से इनकार करती हूँ तो बादशाह नाराज हो जाएगा और नाराज हो कर न जाने मुझ पर क्या-क्या अत्याचार करे, संभव है आजीवन कारावास दे दे। अभी तक मेरे पति का भी पता नहीं चला है और मुझे उसका पता लगाना है। यह सब सोच कर उसने विवाह के लिए स्वीकृति इस शर्त पर दे दी कि एक दिन का अवकाश दिया जाए जिसमें साथ के लोगों की सलाह भी ले ली जाए। बादशाह ने इसकी अनुमति दे दी और अपने सामंतों और दरबारियों को बुला कर कहा कि मैंने इस नवागंतुक से अपनी बेटी का विवाह करने का निश्चय किया है, आप लोग इस बारे में क्या कहते हैं? उन लोगों ने कहा कि आपका निर्णय अत्युत्तम है।

अतएव बड़ी धूमधाम से कमरुज्जमाँ बनी हुई बदौरा का विवाह अवौनी की शहजादी के साथ हो गया। इसके बाद बादशाह ने उतनी ही धूमधाम से अपने तथाकथित दामाद को युवराज बनाने की रस्म पूरी की और राज्य का प्रबंध उसके सुपुर्द कर दिया। सभी सामंतों ने उसे भेंटें दीं। रात को बदौरा को शहजादी के शयनकक्ष में पहुँचा दिया गया। बदौरा आधी रात तक ईश्वर की वंदना में लगी रही और जब शहजादी सो गई तो पलंग के किनारे खुद भी सो गई। अवौनी की रस्म थी कि बेटी का उसके पति से प्रथम संभोग होने पर बड़ी धूमधाम से समारोह किया जाता था। इसलिए दूसरे दिन बादशाह ने इशारे से अपनी बेटी से रात का हाल पूछा।

शहजादी सिर झुका कर बैठी रही। उसकी उदासी देख कर बादशाह समझ गया कि इसकी इच्छापूर्ति नहीं हुई। उसने कहा, शायद तुम्हारा पति दिन के कामकाज के कारण कल रात को बहुत थक गया था इसीलिए तुम से बोला-चाला नहीं। आज की रात देखो क्या होता है। लेकिन होना क्या था, उस रात भी बदौरा अलग-थलग हो कर लेटी रही। दूसरे दिन बादशाह को मालूम हुआ तो वह क्रोध से भर गया। वह कहने लगा, इस युवक में इतनी धृष्टता आ गई कि मेरी बेटी का अपमान कर रहा है। अगर आज रात भी वह इसी तरह अलग-थलग रहा तो मैं कल उसे मृत्युदंड दूँगा, उससे छुटकारा पाने पर मेरी बेटी का दूसरा विवाह तो हो सकेगा।

तीसरी रात को भी आधी रात तक ईशवंदना करने के उपरांत जब बदौरा शहजादी को सोता जान कर पलंग पर एक ओर लेटी तो शहजादी उठ बैठी और बोली, प्यारे, आखिर बात क्या है। दो रातें हो गईं और तुमने मुझे स्पर्श करना तो क्या मुझसे बात तक नहीं की। मैं तो तुम पर जी-जान से मुग्ध हूँ और तुम बात भी नहीं करते। मुझसे क्या अपराध हुआ है जो तुम क्रुद्ध हो? मुझमें कोई कमी है जिससे तुम असंतुष्ट हो? मेरे पिताजी कहते थे कि अगर बेटी आज रात को भी कुँवारी रही तो दामाद को मरवा डालूँगा।

बदौरा यह सुन कर अत्यंत व्याकुल हुई किंतु चुप रही। वह सोच रही थी कि अपना असली भेद बताती हूँ तो बादशाह धोखेबाजी पर जरूर मुझे मरवा देगा और अगर चुप रहती हूँ तो भी उसकी कोपाग्नि में मुझे जल मरना ही होगा। उसे चुप देख कर शहजादी उससे लिपट गई और कहने लगी, प्राणप्रिय, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया। तुम अपनी चिंता मुझे क्यों नहीं बताते? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, हर प्रकार तुम्हें सुखी ही देखना चाहती हूँ।

यह सुन कर बदौरा की अश्रुधारा बह निकली और उसे अशक्तता के कारण गशी आने लगी। किंतु उसने स्वयं को स्थिर किया और बोली, मेरी प्यारी, मैंने तुम्हारा बड़ा अपकार किया है। मैं अपना सारा वृत्तांत तुम से ब्योरेवार कहती हूँ, इसके बाद तुम्हें अधिकार होगा कि चाहे मेरी मजबूरी देख कर मुझे क्षमा कर दो या अपराधी समझ कर मरवा डालो।

उसने शहजादी को अपनी छाती खोल कर दिखाई और बोली, बहन, मैं भी तुम्हारी तरह औरत हूँ। मैं चीन के सम्राट की बेटी हूँ। अब अपना पूरा हाल कहती हूँ। यह कह कर बदौरा ने आरंभ से ले कर उस दिन तक की सारी आपबीती विस्तारपूर्वक शहजादी को सुनाई। फिर वह हाथ जोड़ कर बोली, मेरी तुम से प्रार्थना है कि जब तक मेरे पति का पता न चले तुम मेरा यह भेद छुपाए रखो। मुझे पूरी आशा है कि उससे भेंट अवश्य होगी। जब वह आ जाए तो तुम भी उससे विवाह कर के मेरे साथ सपत्नी बन कर रहना। हम दोनों मिल कर उसकी सेवा करेंगे और बहनों की तरह आपस में प्रीतिपूर्वक रहेंगे।

अवौनी की शहजादी बदौरा के साहस से बड़ी प्रभावित हुई और बोली, तुमने मुझे सब कुछ बता कर बहुत अच्छा किया। अब तुम पुरुष के रूप में निश्चिंत हो कर राजकाज करो, तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। सब मुझ पर छोड़ दो।

दूसरे दिन शहजादी ने अपनी दासियों को ऐसे इशारे दिए जिनसे स्पष्ट हो गया कि उसके साथ उसके पति ने संभोग कर लिया है। पहले भी रात में उसने ऐसी ध्वनियाँ कीं जिससे बाहर बैठी हुई दासियाँ समझें कि रात-कार्य हो रहा है। अतएव दूसरे दिन खूब धूमधाम हुई। बदौरा दिन भर राजकाज करती और रात को दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे का आलिंगन कर के सो जातीं।

उधर कमरुज्जमाँ प्रस्तर पूजकों के देश में माली के साथ रहता हुआ मालीगीरी में दिन बिता रहा था। एक दिन माली ने कहा, आज यहाँ प्रस्तर पूजकों का महोत्सव है। आज के दिन यहाँ के लोग न खुद काम करते हैं न किसी को करने देते हैं। आज वे मुसलमानों या किन्हीं अन्य धर्मावलंबियों को दुख भी नहीं देते। तुम आराम से नगर में घूमो और वहाँ के खेल-तमाशे देखो। मैं भी अपने मित्रों के पास जा रहा हूँ। मैं उनसे पूछूँगा कि अवौनीवाला जहाज कब छूटेगा ताकि मैं तुम्हारे लिए यथेष्ट खाद्य सामग्री उस पर रख दूँ।

यह कह कर माली समुद्र की ओर चल दिया। कमरुज्जमाँ का जी न चाहा कि नगर में जा कर वहाँ के खेल-तमाशों में मन बहलाए। वह खाली समय पा कर अपनी पत्नी की याद में रोने लगा। कुछ देर में उसने स्वयं को सँभाला और निरुद्देश्य इधर-उधर देखने लगा। इतने में उसने देखा कि समीप के वृक्ष पर दो पक्षी आ कर लड़ने लगे। काफी देर की लड़ाई के बाद उनमें से एक पक्षी मर कर नीचे गिर पड़ा और दूसरा उड़ गया। कुछ ही देर में उसी प्रकार के किंतु बड़े डील-डौलवाले दो पक्षी आए और मृत पक्षी के सिर और दुम की ओर बैठ कर सिर हिलाने लगे जैसे उसकी मृत्यु पर शोक कर रहे हों। फिर उन्होंने चोंचों और पंजों से एक गढ़ा खोद कर मृत पक्षी को उसमें गाड़ा और उड़ गए। कुछ देर में वे उस पक्षी को, जिसने पहले पक्षी को मारा था, अपने पंजों में दबा लाए और उसे भूमि पर रख कर उन्होंने उसके पंख नोच डाले और शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इसके बाद वे उड़ गए।

कमरुज्जमाँ ने कौतूहलवश मृत पक्षी के पास जा कर देखा तो उसे उसकी आँतों में कुछ चमकदार-सी चीज दिखाई दी। उसने वह चीज निकाल कर पानी से धो कर देखी तो वह वही यंत्रवाली मणि निकली जो उसके हाथ से निकल गई थी। उसे विश्वास हो गया कि अब उसका पत्नी से मिलन अवश्य हो जाएगा। दूसरे दिन माली ने उससे कहा कि फलाँ पेड़ सूख गया हे, उसे जड़ से खोद डालो। शहजादा कुल्हाड़ी ले कर उसे खोदने लगा। इसी काम में उसकी कुल्हाड़ी एक शिला से टकराई। उसने शिला हटा कर देखा तो एक सुंदर आवास पाया। उसमें ताँबे के पचास पात्र रखे थे जो स्वर्ण के चूरे से भरे थे। कमरुज्जमाँ ने माली से जा कर कहा तो वह बोला, वह धन तुम्हारे भाग्य का है, तुम्हीं ले लो। तीन दिन बाद तुम्हारा अवौनीवाला जहाज छूटेगा। तुम इस स्वर्ण चूर्ण को भी ले जाओ किंतु पात्रों को थोड़ा-थोड़ा खाली कर के जैतून का तेल भर देना जिससे यह सुरक्षित रहे। जैतून का तेल मेरे पास बहुत है। अब कमरुज्जमाँ ने उससे कहा, वैसे तो यह धन तुम्हारा ही है किंतु तुम अगर पूरा नहीं लेते तो आधा ही ले लो। माली ने यह बात स्वीकार कर ली।

कमरुज्जमाँ ने प्रत्येक पात्र का आधा स्वर्ण चूर्ण निकाल लिया और उसे माली के घर के एक कोने में ढेर बना कर रख दिया। उसने सोचा ऐसा न हो कि यह यंत्र फिर हाथ से जाता रहे अतएव एक पात्र को पूरा खाली कर के उसकी तह में यंत्र रख दिया और ऊपर से स्वर्ण चूर्ण बिछा दिया और उस बरतन पर निशान लगा दिया कि मणि निकालने में सुविधा रहे। यह प्रबंध कर के वह निश्चिंत हुआ ही था कि माली की दशा खराब हो गई। सवेरे उस जहाज का कप्तान आया और पूछने लगा कि हमारे जहाज पर यहाँ से कौन जानेवाला है। कमरुज्जमाँ ने कहा कि मैं ही जानेवाला हूँ, आप मेरी पचास हाँडियाँ जैतून के तेल की (जिसके नीचे स्वर्ण चूर्ण भरा था) जहाज पर पहुँचवा दीजिए। जहाज के मल्लाह वे हाँडियाँ ले गए। कमरुज्जमाँ ने कहा कि मैं भी दो दिन बाद आऊँगा। कप्तान ने जाने से पहले कहा कि जल्दी आना क्योंकि वायु अनुकूल होते ही हम चल देंगे।

कमरुज्जमाँ उतनी जल्दी न जा सका क्योंकि माली का रोग बढ़ता गया और दूसरे दिन वह मर गया। कमरुज्जमाँ उसकी लाश को वैसे छोड़ कर नहीं जा सकता था। उसने वहाँ के नागरिकों को इकट्ठा किया और उसे नहला-धुला कर उसका अंतिम संस्कार करवाने में कमरुज्जमाँ को कुछ अधिक समय लग गया। इससे निश्चिंत हो कर उसने बाग को ताला लगा कर उसकी चाबी अपनी जेब में रखी और फिर समुद्र तट पर देखने गया कि जहाज है या चला गया। जहाज वास्तव में उसके स्वर्ण चूर्ण से भरे पात्र ले कर जा चुका था। कमरुज्जमाँ को बहुत खेद हुआ किंतु हो ही क्या सकता था। उसने कुछ और हाँडियाँ खरीदीं और माली के हिस्से का स्वर्ण चूर्ण उनमें भर कर उनमें ऊपर से जैतून का तेल रख दिया। इन्हें सुरक्षित स्थान में रख कर उसने बाग के मालिक को चाबी देने के बजाय खुद बाग में रहने लगा और माली की जगह स्वयं उसकी देखभाल करने लगा क्योंकि अब तो उसे एक साल और काटना ही था।

उधर वह जहाज अनुकूल वायु पा कर शीघ्र ही अवौनी देश में पहुँचा। बदौरा हर नए जहाज को देखती थी कि शायद उसका पति उसमें आया हो। इस जहाज को भी देखने पहुँची। उसने बहाना बनाया कि मुझे जहाज से कुछ व्यापार की वस्तुएँ खरीदनी हैं। उसने जा कर जहाज के कप्तान से पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और जहाज में क्या- क्या माल है। कप्तान ने कहा कि जहाज पर हमेशा यात्रा करनेवाले व्यापारी ही हैं और माल भी वही है जिसे यह जहाज साधारण तौर पर लाता है। अर्थात सादा और छपाईदार कपड़ा, जवाहिरात, सुगंधियाँ, कपूर, केसर, जैतून आदि। बदौरा को जैतून बहुत पसंद था। उसने कहा कि मुझे तुम्हारा सारा जैतून और उसका तेल चाहिए और उसका मुँह माँगा दाम दे दिया जाएगा, सारा जैतून अभी उतरवाओ।

कप्तान ने सारा जैतून उतरवाया। और माल के दाम तो व्यापारियों को वहीं दे दिए किंतु कप्तान ने कहा कि एक व्यापारी पीछे छूट गया है, उसकी जैतून के तेल से भरी पचास हाँडियाँ भी मेरे पास हैं। बदौरा ने कहा, मुझे वह भी खरीदना है, तुम इसका दाम अगली बार जाने पर उस व्यापारी को दे देना। उसने उस माल का दाम भी पूछा। कप्तान ने कहा कि वह बहुत छोटा व्यापारी था, आप इस माल के साढ़े चार हजार रुपए दे दें। बदौरा ने कहा, नहीं, जैतून के तेल के भाव ऊँचे हैं। तुम्हें इसके लिए नौ हजार रुपए मिलेंगे जो तुम

इसके मालिक को अपना किराया काट कर दे देना। किसी निर्धन व्यापारी की अनुपस्थिति का अनुचित लाभ उठाना ठीक नहीं है।

बदौरा के सुपुर्द वे हाँडियाँ कर के जहाज के कप्तान ने अन्य व्यापारियों का माल उतरवाया। बदौरा हाँडियों को महल में ले गई और उन्हें खोल कर देखने लगी। उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आधी-आधी हाँडियाँ स्वर्ण-चूर्ण से भरी थीं। एक हाँडी की तह में उसे वही यंत्र मिला जिसके साथ उसका पति गायब हो गया था। वह उसे देख कर अचेत हो गई। दासियों ने बेदमुश्क का अरक और अन्य दवाएँ छिड़क कर उसे प्रकृतस्थ किया। होश में आने पर वह बहुत देर तक उस यंत्र को चूमती और आँखों से लगाती रही। उसने दासियों के सामने तो कुछ न कहा किंतु अपनी सहेली यानी अबौनी की शहजादी को एकांत में जैतून के तेल की हाँडियों, स्वर्ण चूर्ण और मणि पर अंकित यंत्र का हाल बताया और कहा कि अब मुझे आशा हो गई है कि जिस प्रकार मेरे हाथ यह यंत्र वापस आया है उसी प्रकार मेरा पति भी वापस आएगा।

दूसरे दिन बदौरा फिर समुद्र तट पर गई और उसने उस जहाज के कप्तान को बुला भेजा और उसे उस व्यापारी का विस्तृत हाल पूछा जिसकी जैतून के तेल की हाँडियाँ थीं। कप्तान ने उसे बताया वह है तो मुसलमान किंतु प्रस्तर पूजकों के देश में रहता है। वह एक बूढ़े माली के साथ रहता है और उसी के साथ बाग में काम करता है। मैंने स्वयं बाग में उससे भेंट की थी। उसने कहा था कि मेरा माल जहाज पर ले चलो और कुछ समय के पीछे मैं भी आता हूँ। मैंने दो-तीन दिन तक उसकी प्रतीक्षा की किंतु न मालूम क्या कारण हो गया कि वह नहीं आया। मैंने मजबूरी में जहाज का लंगर उठा दिया क्योंकि बाद में अनुकूल वायु न रहती।

अब बदौरा ने अपने युवराज और मंत्री होने के अधिकार का प्रयोग किया। उसने सारे व्यापारियों और कप्तान का माल जहाज से उतरवा कर जब्त कर लिया और कप्तान से बोली, तुम्हें नहीं मालूम कि उस आदमी को न ला कर तुमने कितना बड़ा अपराध किया है। मुझे खजांची से मालूम हुआ कि वह आदमी हमारा लाखों का देनदार है और भगा हुआ है। तुम तुरंत ही जहाज को वापस ले जाओ और उस व्यक्ति को ले कर मेरे सुपुर्द करो। जब तक तुम यह न करोगे तुम्हारा और अन्य व्यापारियों का माल नहीं छोड़ा जाएगा। यह भी समझ लो कि अगर तुम उसे यहाँ न लाए तो तुम्हें कठोर दंड दिया जाएगा। अब देर न करो, तुरंत प्रस्तर पूजकों के देश की ओर रवाना हो जाओ क्योंकि उधर जाने के लिए वायु अनुकूल है।

कप्तान बेचारा जहाज ले कर तुरंत ही प्रस्तर पूजकों के देश की ओर चल दिया। कुछ ही दिनों में वह वहाँ पहुँच गया। उसने जहाज का लंगर डाला और एक नाव पर कुछ खलासियों को ले कर बैठा तो तट पर उतरा। बाग बस्ती के किनारे था। वहाँ जा कर उसने आवाज दी कि दरवाजा खोलो। कमरुज्जमाँ कई रातों से बदौरा की याद और माली की मृत्यु से दुखी हो कर ठीक से सोया नहीं था। वह इस समय सो रहा था। लगातार आवाजों और दरवाजा भड़भड़ाए जाने से वह उठा और द्वार खोल कर उसने पूछा कि क्या बात है,

तुम लोग क्यों शोर कर रहे हो। कप्तान और उसके साथ के खलासियों ने इसकी बात का कोई उत्तर न दिया। वे एक साथ उस पर टूट पड़े और उसके लाख चीख-पुकार करने पर भी वे लोग उसे अपने जहाज पर ले गए और यह काम पूरा होते ही उन्होंने जहाज का लंगर उठा दिया।

जब जहाज चल पड़ा तो कमरुज्जमाँ से पूछा कि अब तो मुझे बताओ कि मेरा कसूर क्या है, तुमने मुझे पकड़ कर क्यों जहाज पर चढ़ाया है और अब मुझे कहाँ लिए जा रहे हो। कप्तान ने कहा कि तुम पर अवौनी के बादशाह का लाखों का कर्ज है और हमें आदेश है कि तुम्हें पकड़ कर शीघ्रातिशीघ्र अवौनी के बादशाह के सामने पेश करें। कमरुज्जमाँ ने कहा, भाई, जरूर उसे कोई भ्रम हुआ है। मैंने कभी उस बादशाह की सूरत भी नहीं देखी है। यह कैसे संभव है कि मैंने उसका लाखों का ॠण लिया हो? कप्तान ने कहा, हम तो उस बादशाह के आदेश का पालन मात्र कर रहे हैं। हम तुम्हारे साथ होनेवाले न्याय-अन्याय का फैसला नहीं कर सकते। किंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह बादशाह बहुत ही न्यायप्रिय है और यदि उसने वास्तव में भ्रमवश ही तुम्हें गिरफ्तार करने का आदेश दिया है और तुम वास्तव में निरपराध हो तो विश्वास रखो कि तुम्हारे साथ पूरा न्याय किया जाएगा और तुम्हें कोई दुख नहीं पहुँचेगा। कम से कम यात्रा के दौरान तुम्हारी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाएगा क्योंकि इसके लिए मुझे आदेश मिला है।

जहाज कुछ ही दिनों में अवौनी द्वीप में पहुँच गया। कप्तान ने तट पर पहुँचते ही युवराज बनी हुई बदौरा को समाचार भिजवाया कि आपका देनदार कैदी आ गया है। कुछ देर में वह खलासियों के बीच घिरे हुए कमरुज्जमाँ को ले कर युवराज के पास पहुँचा। बदौरा उसे मैले-कुचैले और फटे-पुराने कपड़ों में देख कर दुखी हुई। उसका जी चाहा कि दौड़ कर पति से लिपट जाए किंतु यह सोच कर रुक गई कि सब लोगों के सामने रहस्योद्घाटन ठीक न होगा।

उसने कमरुज्जमाँ को एक सरदार को सौंपा और कहा कि इसे नहला-धुला कर ठीक तरह के कपड़े पहनाओ और कल सुबह मेरे पास लाओ। दूसरे दिन जब कमरुज्जमाँ को उसके पास भेजा गया तो बदौरा ने कप्तान और व्यापारियों का सारा माल वापस कर दिया और साथ ही कप्तान को खिलअत (सम्मान वस्त्र) और ढाई हजार रुपए का पारितोषिक भी दिया। उसने कमरुज्जमाँ को भी एक उच्च राजपद दिया और हमेशा उसे अपने साथ रखने लगी। कमरुज्जमाँ बिल्कुल न पहचान सका कि यही उसकी पत्नी हैं और उसे अपने कृपालु स्वामी की तरह मानता रहा।

एक रात को बदौरा ने उसे यंत्रयुक्त मणि दिखा कर कहा, तुम तो बहुत-सी विद्याएँ जानते हो, इसे देख कर बताओ कि यह क्या चीज है और इसे अपने पास रखने का फल श्रेष्ठ होगा या नेष्ट। कमरुज्जमाँ को वह यंत्र देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह इस जगह कैसे आ गया। उसने कहा, मेरे मालिक, यह चीज बहुत ही अशुभ है। यह पहले मेरे हाथ आई और इसके कारण मुझ पर बड़ी-बड़ी मुसीबतें आईं और इसने लगभग अधमुआ कर दिया। इसी के कारण मेरी पत्नी मुझसे छूट गई जिसके वियोग में मैं रात-दिन

तड़पता रहता हूँ। अगर मैं आप को पूरी कहानी सुनाऊँ तो आप को भी मुझ पर दया आएगी।

बदौरा ने कहा, तुम्हारी कहानी को विस्तारपूर्वक बाद में सुना जाएगा। अभी तुम कुछ देर यहीं पर मेरी प्रतीक्षा करो। मुझे कुछ देर के लिए विशेष काम है। यह कह कर वह अंदरवाले कमरे में चली गई। वहाँ जा कर उसने रानियों जैसे वस्त्र पहने और कमर में वही पटका बाँधा जिस में से खोल कर कमरुज्जमाँ उसका बटुआ ले गया था और फिर से बटुए में से यंत्रखचित मणि को निकाल कर देखने लगा था जिसके बाद पक्षी उसे ले भाग था।

कमरुज्जमाँ ने इस वेश में अपनी पत्नी को पहचान लिया और दौड़ कर उसे अपनी बाँहों में भर लिया। वह कहने लगा, यहाँ के युवराज की सेवा मुझे कितनी फली कि इतने समय बाद मैं अपनी प्राणप्रिया से मिल सका हूँ। बदौरा हँस कर कहने लगी, युवराज को भूल जाओ। वह तुम्हें अब दिखाई न देगा क्योंकि मैं ही युवराज बनी हुई थी। यह कहने के बाद उसने कमरुज्जमाँ से बिछुड़ने के दिन से लेर उस दिन तक का पूरा हाल कहा। कमरुज्जमाँ ने भी विस्तार से बताया कि उस दिन से ले कर यहाँ आने तक मुझ पर क्या बीती। इसके बाद वे दोनों पलंग पर जा कर आराम से एक-दूसरे की बाँहों में निद्रामग्न हो गए। सुबह बदौरा ने नहा-धो कर जनानी पोशाक पहनी और अवौनी के बादशाह को अपने महल में बुला भेजा।

बादशाह को अपने दामाद के बजाय एक सुंदरी को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, बेटी, तुम कौन हो? और मेरा दामाद कहाँ गया है? बदौरा मुस्करा कर बोली, पृथ्वीनाथ, मैं कल तक आपका दामाद और इस राज्य का युवराज थी। आज मैं चीन के बादशाह की बेटी और खलदान देश के राजकुमार की पत्नी हूँ। आप कृपया धैर्यपूर्वक मेरा वृत्तांत सुनें जो बड़ा ही विचित्र है। फिर उसने अपनी कहानी आद्योपांत कही और अंत में कहा, हम सब मुसलमान हैं। हमारे धर्म में कोई भी पुरुष दूसरा विवाह करता है तो उसकी पहली पत्नी के मन में ईर्ष्या जागती है। मैं शहजादे की पहली पत्नी हूँ। मैं स्वयं आप से प्रार्थना कर रही हूँ कि अपनी बेटी को मेरे पति से ब्याह दें। उसका मेरे साथ जो विवाह हुआ था वह झूठा था।

बादशाह को यह सुन कर आश्चर्य हुआ। उसने कमरुज्जमाँ को देखने की इच्छा की। बदौरा ने उसे ला कर उपस्थित किया। बादशाह उसे देख कर खुश हुआ और बोला, बेटे, अभी तक हम इसे अपना दामाद मानते थे। हमें नहीं मालूम था कि यह तुम्हारी पत्नी और चीन देश की राजकुमारी है। अब मैं तुम्हें दामाद बनाना चाहता हूँ। तुम्हारी पत्नी की भी यही इच्छा है। तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं अपनी बेटी ह्यातुन्नफ्स का विवाह तुम्हारे साथ कर दूँ। तुम उससे शादी कर के इस राज्य का शासन सँभालो।

कमरुज्जमाँ ने कहा, चाहता तो मैं यह था कि अपने देश को जाऊँ किंतु आपकी और

बदौरा की जो इच्छा होगी उसे मैं अवश्य पूरा करूँगा। अतएव उसका विवाह धूमधाम के साथ अबौनी की शहजादी के साथ हो गया और दोनों स्त्रियाँ आपस में मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने लगीं। कमरुज्जमाँ बारी-बारी से दोनों के पास जाता और विहार करता और किसी पत्नी को दूसरी पत्नी के विरुद्ध शिकायत का मौका नहीं देता था।

भगवान की दया से एक ही वर्ष में उन दोनों को एक-एक पुत्र की प्राप्ति हुई। कमरुज्जमाँ ने उनके जन्मोत्सव पर लाखों रुपया खर्च किया। बदौरा के पुत्र का नाम रखा गया अमजद और अबौनी की शहजादी के बेटे का नाम असद हुआ। दोनों भाई बड़े हुए तो उन्हें कई योग्य शिक्षकों से प्रत्येक विषय की शिक्षा दिलवाई गई। बचपन में तो वे एक साथ खेले-कूदे ही थे, बड़े होने पर भी उनकी परस्पर प्रीति और बढ़ी। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि हमें अपनी माताओं के पृथक-पृथक महलों में न रखा जाए बल्कि एक अलग महल में दोनों को एक साथ रखा जाए। कमरुज्जमाँ ने यह बात मान ली।

जब वे उन्नीस वर्ष के हुए और राज्य प्रबंध सँभालने योग्य हुए तो कमरुज्जमाँ ने तय किया कि जब वह खुद शिकार के लिए जाया करें तो बारी-बारी से दोनों शहजादों के सुपुर्द राज्य प्रबंध कर जाया करे। एक खास बात यह थी कि दोनों रानियाँ अपने सगे बेटों से सौतेले बेटों को अधिक चाहती थीं यानी बदौरा को असद अधिक प्रिय था और ह्यातुन्नफ्स को अमजद। वे दोनों भी अपनी माताओं से अधिक विमाताओं को मानते थे। किंतु यही बात आगे जा कर स्त्रियों के वैमनस्य का कारण बन गई। दोनों यह चाहने लगीं कि अपने पुत्रों का मन उनकी विमाताओं यानी अपनी सौतों की ओर से फेर दें। एक दिन बदौरा का पुत्र अमदज राजसभा से उठ कर अपने महल को जा रहा था कि एक गुलाम ने उसे एक पत्र दिया जो उसकी विमाता ने लिखा था। यह पत्र पढ़ कर उसे ऐसा क्रोध चढ़ा कि उसने तलवार निकाल कर गुलाम के दो टुकड़े कर दिए। उसने पत्र अपनी माँ बदौरा को दिखाया। वह भी उसे पढ़ कर बहुत बिगड़ी और कहने लगी कि ह्यातुन्नफ्स ने मेरे बारे में जो लिखा है बिल्कुल बकवास है, और तुम भी अब मेरे सामने न आओ।

अमजद ने अपने महल में जा कर सारा हाल अपने भाई असद से कहा। उसे भी यह सुन कर बड़ा गुस्सा आया। दूसरे दिन असद राजसभा से महल को जा रहा था कि एक बुढ़िया को मार डाला और अपनी माँ के महल में जा कर उसे बदौरा के पत्र की बात बताई। वह यह सुन कर बहुत बिगड़ी और बोली, बदौरा ने तो बकवास की ही है, तेरा भी दिमाग फिर गया है। बेचारी बुढ़िया को बेकसूर ही मार डाला। अब तू मेरे सामने मत आना।

वास्तव में इन स्त्रियों ही ने एक-दूसरे के नाम से पत्र लिख कर अपने बारे में निराधार आरोप लगाए थे ताकि विमाताओं की ओर से पुत्रों का मन फिर जाए किंतु जब ऐसा न हुआ तो दोनों को भय हुआ कि बेटों ने अगर बादशाह कमरुज्जमाँ के शिकार से लौटने पर यह बात कह दी तो स्वयं उन दोनों यानी बदौरा और ह्यातुन्नफ्स की जान खतरे में पड़ जाएगी। अब दोनों ने मिल कर सलाह की कि इन नालायक बेटों को किस तरह ठिकाने लगाया जाए कि स्वयं उनके प्राण बचें।

कमरुज्जमाँ के शिकार से लौटने पर दोनों ने एक साथ ही बड़ी रोनी सूरत बना कर भेंट की। उसके पूछने पर दोनों ने बताया कि तुम्हारे दोनों बेटों ने हम दोनों पर निराधार आरोप लगाए हैं जिससे लज्जावश हमारा डूब मरने को जी करता है। कमरुज्जमाँ भी क्रोध में अंधा हो गया और उसने कहा कि ऐसे नालायकों को जो अपनी माँओं ही को लांछित करें जीने का कोई अधिकार नहीं है। उसने अपने एक विश्वस्त सरदार जिंदर से कहा कि तुम इन दोनों को रात ही रात किसी जंगल में जा कर मार डालो, और कल सुबह मुझे कोई चिह्न दिखाओ जिससे यह सिद्ध हो जाय कि यह दोनों मार डाले गए हैं।

जिंदर शाम को कोई बहाना बना कर दोनों को जंगल में ले गया और वहाँ उन्हें बताया कि बादशाह का आदेश है कि आप दोनों का मैं वध करूँ। दोनों ने कहा कि अगर उनकी यह इच्छा है तो तुम जरूर हमें मारो। लेकिन दोनों ही कहने लगे कि मुझे पहले मारो। जिंदर ने यह समस्या इस तरह हल की कि दोनों को एक चादर में बाँध दिया ताकि एक ही वार से दोनों खत्म हो जाएँ। फिर उसने तलवार निकाली।

तलवार की चमक देख कर जिंदर का घोड़ा बिदक कर भागा। जिंदर ने सोचा कि यह तो बँधे ही हैं, कहा जाएँगे, पहले अपना घोड़ा पकड़ लाऊँ। वह घोड़े के पीछे दौड़ा। इसी भाग-दौड़ और चीख-पुकार में एक झाड़ी में सोता हुआ एक शेर जाग कर बाहर निकल आया और जिंदर के पीछे पड़ गया। उधर जब जिंदर को लौटने में देर हुई तो उन दोनों ने कहा कि न जाने उस पर क्या मुसीबत पड़ी है, हमें जा कर उसकी मदद करनी चाहिए। ऐसे कब तक बँधे रहेंगे। यह सोच कर दोनों ने जोर लगा कर चादर खोली और अमजद ने जिंदर की तलवार उठाई और दोनों उधर दौड़े जिधर जिंदर और उसका घोड़ा गया था। कुछ दूर जा कर देखा कि एक शेर जिंदर पर सवार है और मारना ही चाहता है। अमजद ने शेर को ललकारा और वह अमजद पर झपटा। अमजद ने एक ही वार में शेर के दो टुकड़े कर दिए। उधर असद दौड़ कर गया और जिंदर का घोड़ा ले आया।

जिंदर को उठा कर और उसके कपड़ों की धूल झाड़ कर दोनों शहजादों ने उससे कहा कि अब तुम पिताजी के आदेश का पालन करो। जिंदर ने दोनों की ओर देखा, शेर की लाश को देखा और दोनों के पैरों पर गिर पड़ा और बोला, मेरे मालिको, आपने मेरे प्राण बचाए और मैं आपके प्राण लूँ? यह तो हरगिज नहीं हो सकता। किंतु आप लोग एक दया करें कि अपना एक ऊपरी वस्त्र दें जिसे इस शेर के लहू में डुबो कर मैं बादशाह को आपके मरने का प्रमाण दूँ। अगर ऐसा नहीं हुआ तो बादशाह मुझे और सारे कुटुंबियों को मार डालेगा। आप लोग यहाँ से किसी अन्य देश को चले जाएँ। उन दोनों ने ऐसा ही किया जैसा जिंदर ने कहा था।

जिंदर उनके खून से सने कपड़े ले कर कमरुज्जमाँ के पास गया। इन वस्त्रों को देख कर बादशाह को कोप की जगह पश्चात्ताप का बोध होने लगा कि इतने सुंदर और बुद्धिमान शहजादों को मैंने खुद ही मरवा दिया। उनके वस्त्रों की जेबों में वे पत्र भी मिले जो उन्हें भिजवाए गए थे। कमरुज्जमाँ अपनी दोनों पत्नियों की हस्तलिपि पहचानता था और समझ गया कि दोनों स्त्रियों ने शहजादों को छला है। उसे अब और भी दुख हुआ कि

निर्दोष राजकुमारों को मरवा डाला। वह रंज के मारे पछाड़ें खाने लगा और कहने लगा कि मुझ जैसा अत्याचारी पिता भी इस संसार में कहाँ होगा क्योंकि मैंने अपनी दुष्ट पत्नियों के बहकावे में आ कर अपने बेटों को मरवा दिया। उसने प्रतिज्ञा की कि इन स्त्रियों का मुँह कभी न देखूँगा। उसने अपनी दोनों रानियों को गिरफ्तार कर के बंदी गृह में डलवा दिया। इस पर भी उसके चित्त को शांति न थी और वह रात-दिन अपने बेटों के वियोग में रोया करता।

इधर वे दोनों भाई जंगल में भटकते रहे और फल-फूल खा कर जीवन यापन करते रहे। रात को आधे समय एक भाई सोता और दूसरा पहरा देता ताकि कोई वन्य प्राणी हमला न कर दे। शेष रात को दूसरा भाई पहरा देता और पहला सोता। एक मास तक इसी तरह चलते-चलते वे एक पहाड़ की तलहटी में पहुँचे। फिर वे उस पहाड़ पर चढ़ने लगे। पहाड़ की खड़ी चढ़ाई थी। असद अत्यधिक थक गया और वहीं गिर गया। अमजद साहस कर के पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ पर फलों से लदा हुआ एक अनार का पेड़ था और एक मीठे पानी का स्रोत था। वह असद को सहारा दे कर पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहाँ दोनों ने पानी पिया, अनार खाए और तीन-दिन वहाँ आराम किया। फिर वे पहाड़ की चोटी पर बने समतल मार्ग पर चलने लगे और इसी प्रकार चलते रहे। फिर रास्ता नीचे जाता दिखाई दिया। वे उस पर से उतरने लगे। कुछ दिनों बाद उन्हें दूर पर एक नगर बसा हुआ दिखाई दिया। अमजद ने कहा कि हम दोनों ही चलें। असद बोला, यह ठीक नहीं है। संभव है वहाँ कोई खतरा हो, जाना पहले एक ही को जाना चाहिए। कम से कम एक तो सुरक्षित रहेगा। तुम यहीं ठहरो, मैं जाता हूँ और हम दोनों के लिए भोजन ले कर आता हूँ। यह कह कर वह नगरी की ओर चल पड़ा।

नगर में पहुँचा तो सब से पहले उसे एक बूढ़ा मिला। उसने पूछा, बाबा, यहाँ का बाजार कहाँ है। मुझे अपने और अपने भाई के लिए भोजन खरीदना है। बूढ़े ने पूछा कि क्या तुम परदेसी हो। उसने कहा कि हाँ। बूढ़े ने उसे ऊपर से नीचे तक देख कर कहा, बेटा, तुम बाजार की चिंता छोड़ दो, मेरे घर चलो। वहाँ प्रचुर खाद्य सामग्री है, तुम खुद भी पेट भर खाना और अपने भाई के लिए भी जितनी चाहना ले जाना। यह कह कर वह छली बूढ़ा उसे अपने विशाल मकान में ले गया। असद ने देखा कि चालीस बूढ़े अग्नि के चारों ओर बैठे उपासना कर रहे हैं। असद घबराया कि यह अग्निपूजक धोखे से मुझे यहाँ ले आया है और मेरा न जाने क्या करेगा।

उस बूढ़े ने अपने साथियों से कहा कि अग्निदेव हम पर प्रसन्न हैं, उन्होंने अपनी भेंट के लिए हमारे हाथ में इस मुसलमान को पहुँचाया है। फिर उसने गजवान, गजवान पुकार कर कई आवाजें दीं। इस पर एक लंबा-चौड़ा हब्शी आया। बूढ़े के इशारे पर उसने असद को जमीन पर पटक दिया और बाँध दिया। बूढ़े ने कहा, इसे ले जा कर तहखाने में रखो और मेरी बेटियों बोस्तान और कैवाना के सुपुर्द कर दो। उन्हें मेरा यह आदेश भी देना कि वे दिन में कई बार इसकी पिटाई किया करें और चौबीस घंटे में एक बार दो छोटी रोटियाँ और एक लोटा पानी दे दिया करें ताकि यह मरे नहीं। साल भर बाद अग्निदेवता के बलिदान का दिन आएगा। तब हम इसे जहाज पर चढ़ा कर ज्वालामुखी पर्वत को ले जाएँगे और

अग्निदेवता के सामने इसकी बलि देंगे।

गजवान के आदेशानुसार असद को तहखाने में डाल दिया। वहाँ बोस्तान और कैवान अक्सर आतीं और असद को खूब पीटतीं जिससे वह बेहोश हो कर गिर जाता। वे दोनों उसे रोटी के कुछ टुकड़े और एक लोटा पानी भी रोज दे देतीं जिससे उसके प्राण बच रहते। असद को अपनी इस दुर्दशा पर बहुत दुख था किंतु साथ ही उसे यह संतोष भी था कि अकेले मुझी पर मुसीबत है, मेरा भाई अमजद तो इस से बचा हुआ है।

उधर अमजद ने शाम तक असद के आने की राह देखी। रात को उसे बड़ा दुख हुआ और उसने समझ लिया कि असद किसी मुसीबत में फँस गया है। किसी तरह उसने रात काटी और सुबह उठ कर शहर को चला कि भाई का पता लगाए। उसे देख कर ताज्जुब हुआ कि शहर में मुसलमान इक्का-दुक्का ही दिखाई देते हैं। एक मुसलमान को रोक कर उसने पूछा कि यह कौन-सा नगर है। उसने कहा, तुम परदेसी हो यहाँ कहा आ फँसे। यह अग्निपूजा नगर है क्योंकि यहाँ सब अग्निपूजक रहते है। अमजद ने पूछा कि अवौनी नगर यहाँ से कितनी दूर है। उसने कहा, जलमार्ग सरल है, इससे वहाँ चार महीने में पहुँच जाते हैं। थल मार्ग में कठिनाइयाँ हैं लेकिन उसमें दो महीने ही में पहुँच जाते हैं। अमजद आश्चर्य से सोचने लगा कि मैं तो सवा महीने ही में यहाँ पहुँच गया। फिर उसने सोचा कि मेरी तरह इस बीहड़ रास्ते से कौन जाता होगा। सूचना देनेवाले को जल्दी थी, वह अपने काम में चला गया।

अमजद घूमता-फिरता एक दरजी की दुकान पर पहुँचा। वह भी मुसलमान था। अमजद ने उसे अपनी कठिन यात्रा और अपने भाई के गुम होने की बात कही। दरजी ने कहा, अगर तुम्हारा भाई किसी अग्निपूजक के हाथ में पड़ गया तो उसकी जान बचना मुश्किल है। तुम खुद अपनी जान की फिक्र करो। वह उसके साथ रहने लगा। एक महीना इसी प्रकार बीता। अमजद दरजी का थोड़ा-बहुत काम कर दिया करता था।

एक दिन वह बाजार में घूम रहा था कि उसे एक अत्यंत रूपवती स्त्री मिली। उस स्त्री ने उसे एक ओर ले जा कर और अपने मुँह से नकाब उठा कर कहा, मेरे प्यारे, तुम किस देश के वासी हो? कब से यहाँ पर हो? इस समय कहाँ जा रहे हो? अमजद उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया और बोला, जा तो मैं अपने महल को रहा था। किंतु अब तुम जहाँ ले जाओगी वहीं चला चलूँगा। स्त्री ने कहा, मैं प्रतिष्ठित परिवार की स्त्री हूँ। हम लोग अपने प्रेमियों को अपने घर नहीं ले जाते। प्रेमी ही हम लोगों को अपने घर ले जाते हैं।

अमजद सोचने लगा कि मैं इसे कहाँ ले जा सकता हूँ, मेरा तो कोई घर ही नहीं है। अगर मैं दरजी के यहाँ इसे ले जाता हूँ तो वह क्या करेगा। इसलिए उसने स्त्री को कोई उत्तर न दिया और दरजी के घर की ओर चल पड़ा। किंतु वह निर्लज्ज स्त्री भी उसके पीछे हो ली। अमजद ने सोचा कि इसे भटकाना चाहिए इसलिए वह गलियों में चक्कर लगाने लगा। किंतु उस स्त्री ने पीछा न छोड़ा। अंततः वह थक कर एक गली में ऐसे मकान पर

पहुँचा जहाँ सामने चबूतरे पर चौकियाँ बिछी थीं। वह थक कर एक चौकी पर बैठ गया। स्त्री भी वहीं बैठ गई।

स्त्री ने पूछा कि क्या तुम्हारा महल यही है। अमजद फिर चुप रहा। स्त्री बोली, प्रियतम, बाहर क्यों बैठे हो? ताला खोल कर अंदर क्यों नहीं चलते? अमजद ने बहाना बनाया कि महल की ताली मेरे दास के पास है जो बाजार चला गया है ताकि मेरे लिए भोजन लाए। वह सोचता था कि स्त्री उससे ऊब कर चली जाएगी किंतु वह वहीं डटी रही। कुछ देर बार वह कहने लगी, तुम्हारा गुलाम बड़ा लापरवाह आदमी है, इतनी देर तक बाजार से नहीं आया। जब आए तो उसे खूब सजा देना। अमजद ने उससे पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से हाँ कर दी। कुछ देर बार स्त्री दरवाजे पर लगा हुआ ताला तोड़ने लगी। अमजद ने कहा, ताला क्यों तोड़ रही हो। उसने कहा कि आखिर घर तो तुम्हारा ही है, एक ताला खराब हो जाएगा तो कौन बड़ा नुकसान हो जाएगा।

अमजद सोचने लगा कि कुछ गड़बड़ी हुई तो यह तो औरत है, इससे कोई कुछ नहीं कहेगा, मुझी को सब लोग पकड़ेंगे। उसने सोचा कि चुपके से चल दे। किंतु वह स्त्री अंदर जा कर फिर बाहर आई और कहने लगी कि तुम अंदर क्यों नहीं चलते। अमजद ने कहा कि मैं अपने गुलाम की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उस औरत ने कहा, प्रतीक्षा तो अंदर बैठ कर भी हो सकती है, बाहर बैठ कर प्रतीक्षा करना क्या जरूरी है? विवश हो कर अमजद को अंदर जाना पड़ा। उसने देखा कि मकान बहुत ही साफ-सुथरा और लंबा-चौड़ा है। दोनों कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कर बैठकवाली दालान में गए। वह दालान बहुत साफ-सुथरी और सुरम्य वस्तुओं से सजी हुई थी। एक ओर कई सुंदर पात्रों में नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन रखे थे और दूसरी तरफ फलों और मेवों के पात्र थे। एक ओर शीशे की सुराहियों में सुवासित मदिरा भरी थी और मदिरा पान के लिए कई सुंदर प्याले थे। अमजद सोचने लगा कि यह किसी रईस का मकान है और किसी समय भी उसके नौकर-चाकर आ कर मेरी पिटाई करेंगे।

वह तो इस चिंता में था और स्त्री उससे कहने लगी, प्यारे, तुम तो कहते थे कि तुमने गुलाम को खाद्य वस्तुएँ खरीदने के लिए बाजार भेजा है, यहाँ तो इतना उत्तमोत्तम सामान रखा हुआ है। मालूम होता है तुम्हारा गुलाम यह भोजन, फल आदि रख कर कहीं ओर चला गया है। और तुम कहीं इसलिए तो उदास नहीं बैठे हो कि यह सब किसी और सुंदरी के लिए था और मैं बीच में आ गई। तुम चिंता न करो। मैं उसके आने पर आपत्ति भी न करूँगी और उसे मना भी लूँगी जिससे तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। हम तीनों मिल कर आनंद मनाएँगे। अमजद ने हँस कर कहा, कोई और स्त्री नहीं आएगी। लेकिन यह भोजन मेरे खाने योग्य नहीं है, मेरे विश्वासों के अनुसार यह अपवित्र है। मेरा गुलाम मेरे लिए पवित्र भोजन लाता होगा। मैं इसीलिए कुछ खा नहीं रहा हूँ।

किंतु वह स्त्री लंबी प्रतीक्षा के लिए तैयार न थी। उसने भोजन करना आरंभ कर दिया। दो-चार ग्रास खा कर उसने शराब का प्याला भर कर पिया और एक प्याला अमजद को दिया। उसने विवश हो कर उसे पी लिया। वह यह भी सोचने लगा कि अच्छा हो कि गृह

स्वामी के सेवकों के आने के पहले हम लोग खा-पी कर चल दें वरना बड़ी बदनामी होगी। इसलिए वह थोड़ा-बहुत जल्दी-जल्दी खाने लगा किंतु वह स्त्री आराम से खा-पी रही थी।

इतने में घर का मालिक आता दिखाई दिया। स्त्री उसे न देख सकी क्योंकि उसकी पीठ दरवाजे की तरफ थी। अमजद ने उसे देख लिया और उसे चिंता बढ़ी कि अब क्या होगा। किंतु गृहस्वामी ने उसको संकेत दिया कि चिंता न करो और आराम से खाओ- पियो। वास्तव में घर का स्वामी शाही घुड़साल का प्रधान अधिकारी था। उसका नाम बहादुर था। उसके निवास का मकान दूसरा था। इस घर में वह आमोद-प्रमोद के लिए आया करता था। उस दिन उसके अपने कुछ मित्रों को भोज पर बुलाया था और इसीलिए सारा सामान ला रखा था। किंतु बाहर से आने पर ताला टूटा देखा और अंदर एक आदमी और एक औरत को मौज-मस्ती करते देखा तो छुप कर देखने लगा कि आगे क्या होता है।

अमजद लघुशंका के बहाने उठा और बहादुर से आ कर धीमे-धीमे बात करने लगा। उसने सारा हाल उसे बताया। बहादुर ने कहा, शहजादे, आप चिंता न करें। मुझे विश्वास हो गया कि आप निर्दोष हैं। मेरा तो इसके अलावा दूसरा घर है जहाँ मैं निवास करता हूँ और इस घर में कभी-कभी आमोद प्रमोद के लिए आता हूँ। मैं तो वैसे भी आप का सेवक हूँ। मैं कुछ देर में गुलामों के-से कपड़े पहन कर आता हूँ। आप मुझ पर नाराज हों बल्कि मुझे मारें भी कि मैंने इतनी देर क्यों लगाई। आप रात भर उस स्त्री के साथ सहवास करें और सबेरे इसे कुछ दे-दिला कर विदा करें। मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता हूँ कि किसी शहजादे ने मेरे घर पर पधार कर उसे पवित्र किया। आप जा कर रुचिपूर्वक भोजन करें। शहजादा यह सुन कर अंदर आ गया और खाने-पीने लगा।

बहादुर घर के बाहर गया क्योंकि आमंत्रित मित्र आ पहुँचे थे। उसने उनसे बहाना बनाया कि एक अपरिहार्य कारण से दावत स्थगित करनी पड़ी है। मैं आप लोगों को फिर बुलाऊँगा। आज के लिए आप लोग मुझे क्षमा करें। मित्रगण बाहर ही से वापस लौट गए। इधर बहादुर गुलामों जैसे कपड़े पहन कर आया और शहजादे के पैरों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगा। अमजद ने बनावटी क्रोध में कहा कि तुम सुबह के गए थे, अभी तक कहाँ मर रहे थे। बहादुर फिर क्षमा याचना करने लगा। अमजद ने कहा कि मैं आज तेरी पिटाई किए बगैर नहीं मानूँगा। यह कह कर वह उठा और एक छड़ी उठा कर दो-चार बार बहादुर को हल्की चोटें दीं। स्त्री ने कहा, इस तरह मारने से इसकी समझ में कुछ आएगा? देखो, सजा ऐसी दी जाती है। यह कह कर उसने चार-छह छड़ियाँ पूरे जोर से मारीं और बहादुर बिलबिला उठा और चिल्ला कर रोने लगा। अमजद ने उस स्त्री के हाथ से छड़ी छीन ली और बोला, रहने दो, आखिर वह भी आदमी है, जानवर तो नहीं जो इतनी बेदर्दी से मार रही हो।

बहादुर आँसू पोंछता हुआ उठ खड़ा हुआ और गुलामों की तरह दोनों को मदिरा पात्र भर-भर कर देने लगा। जब वह दोनों अच्छी प्रकार खा-पी चुके तो उसने एक कमरे में दोनों की शय्या तैयार की ताकि रात को उस पर सोएँ। शाम होने पर उसने सारे घर में दिए

जलाए। काफी रात होने पर जब शहजादा और स्त्री अपने कमरे में गए तो वह खुद बाहर दालान में अपने बिस्तर पर लेट गया ताकि जरूरत होने पर शहजादा उसे बुला सके। दुर्भाग्यवश बहादुर सोते समय बड़े जोर से खर्राटे भरता था। स्त्री को असुविधा हुई तो उसने कहा कि तुम अभी जा कर उस बदतमीज गुलाम का सिर काटो, वह तो रात भर सोने नहीं देगा।

अमजद ने समझा कि वह नशे में बहक कर ऐसा कह रही है। वह बोला, खर्राटे भरना तो ऐसा अपराध नहीं है जिस पर किसी की गर्दन मारी जाए। मुझे तो पहले ही उस पर तरस आ रहा है कि तुमने उसे ऐसी क्रूरता से मारा। वह बोली, तुम्हें मेरा ज्यादा ख्याल है या एक तुच्छ गुलाम का? मंस दिल से चाहती हूँ कि उसे मार डाला जाए। आखिर एक गुलाम ही तो है। अगर तुम नहीं मारते तो मैं खुद जा कर उसकी गर्दन अलग करती हूँ।

अमजद ने सोचा कि किसी तरह बहादुर की जान तो बचानी ही चाहिए। उसने कहा कि तुम्हारी यही जिद है तो यही सही लेकिन वह मेरा गुलाम है, उसे मैं ही मारूँगा, तुम नहीं। यह कह कर उसने स्त्री के हाथ से तलवार ले ली। स्त्री उसके आगे-आगे यह देखने को चली कि अमजद वास्तव में उसे मारता है या यूँ ही छोड़ देता है। सोते हुए बहादुर के पास पहुँच कर अमजद ने तलवार निकाली और दो कदम पीछे हट कर बहादुर के बजाय उस स्त्री की गर्दन पर ऐसा शक्तिशाली प्रहार किया कि उसकी लाश दो टुकड़े हो कर जमीन पर गिर पड़ी।

बहादुर इस शब्द से चौंक कर जागा तो देखा कि शहजादे के हाथ में खून से सनी तलवार है और स्त्री के शरीर के दोनों टुकड़े तड़प रहे हैं। उसने आश्चर्य से पूछा कि आपने इसे क्यों ऐसी सजा दी। अमजद ने कहा, अगर मैं इसे ना मारता तो तुम्हारी जान किसी तरह नहीं बच सकती थी। इसके बाद उसने बताया कि वह क्या जिद कर रही थी। बहादुर ने शहजादे के पाँव पर सिर रख दिया और कहा, आप बड़े कृपालु हैं, आप ही के कारण मैं इस निर्लज्ज कुलटा के हाथ से मरते-मरते बचा। अब मैं इसकी लाश ले जा कर अँधेरे में कहीं फेंक आता हूँ। दिन निकलने पर यह लाश यहाँ पाई गई तो बड़ा झंझट होगा।

उसने यह भी कहा, खतरा अब भी है। इसलिए मैं अपनी सारी संपत्ति का उत्तराधिकार आपको लिखे देता हूँ। इस स्त्री के गहने आदि तो आप ले ही लीजिए। अगर मैं सूर्योदय तक इस लाश को ठिकाने लगा कर आ गया तो ठीक है वरना समझ लेना कि मैं पकड़ा गया। यह कह कर वह एक चादर में लाश बाँध कर ले चला। रास्ते में उसे दुर्भाग्यवश पुलिस की गश्त मिल गई। सिपाहियों ने गठरी खुलवा कर देखा तो लाश पाई। वह बहादुर को लाश की गठरी समेत थाने में ले गए और प्रमुख अधिकारी से बोले कि यह गुलाम इस स्त्री को मार कर फेंकने के लिए ले जा रहा था।

प्रमुख अधिकारी गुलामों के वेश में भी अश्वशाला के प्रमुख को पहचान गया। उसने तय किया कि मुझे खुद इसे सजा देने के बजाय बादशाह के सामने पेश करना ठीक रहेगा।

उसने रात भर बहादुर को मय लाश के अपने घर में बंद रखा और सुबह दोनों को बादशाह के सामने पेश कर दिया। बादशाह को यह देख कर बड़ा क्रोध आया। उसने बहादुर से कहा, तू कितना बेशर्म है। इतना बड़ा अधिकारी हो कर भी इस प्रकार निरपराधों की हत्या करता है। तुझे तो जीने का बिल्कुल अधिकार नहीं है। यह कह कर उसने पुलिस अधिकारी से कहा कि इसे चौराहे पर फाँसी की टिकटी लगा कर आज ही फाँसी दी जाए।

प्रमुख पुलिस अधिकारी ने सारे शहर में मुनादी करवा दी कि एक अपरिचित स्त्री को मारने के अपराध में शाही घुड़साल के मुख्याधिकारी को फलाँ चौराहे पर फाँसी दी जाएगी। अमजद ने यह मुनादी सुनी तो समझ गया कि बहादुर पकड़ा गया है और फाँसी चढ़ाया जानेवाला है। वह फौरन फाँसीवाले चौराहे पर चला गया। उसने पुलिस अधिकारी से कहा, अपराधी यह आदमी नहीं है, मैं हूँ। मैंने उस स्त्री को मारा है क्योंकि वह इसे मारना चाहती थी। यह कह कर उसने पिछले दिन का सारा किस्सा पुलिस अधिकारी को सुनाया। उसने दुबारा बहादुर और अमजद को मय लाश के बादशाह के सामने पेश कर दिया।

बादशाह ने अमजद से सारा किस्सा सुन कर पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। उसने अपनी सारी कहानी - पिता द्वारा मृत्यु-दंड मिलने, भटकते हुए यहाँ आने और दो दिन पहले छोटे भाई के लापता होने की बात सुनाई। बादशाह ने कहा, इस स्त्री को मार कर तुमने अच्छा किया, मैं तुम्हें इसके लिए दंड नहीं दूँगा। बहादुर का तो कोई कसूर ही नहीं है इसलिए इसे इनाम दे कर इसके पद पर प्रतिष्ठापूर्वक भेजूँगा। तुम्हें मैं अपना मंत्री बनाऊँगा ताकि तुम्हारे पिता ने जो ज्यादती तुम्हारे साथ की है उसका कुछ तो प्रतिकार हो जाए।

मंत्री बनने के बाद अमजद ने सार्वजनिक घोषणा करवाई कि जो भी असद का समाचार ला कर देगा उसे बहुत इनाम दिया जाएगा। उसने सैकड़ों जासूस भी इस काम के लिए नियुक्त किए किंतु असद का कहीं पता नहीं चला। वह बेचारा उसी तहखाने में बंद रहता और रोजाना बूढ़े की बेटियों बोस्तान और कैवाना के हाथ से खूब मार खाने के बाद रोटी का टुकड़ा पाता। धीरे-धीरे उसके भेंट चढ़ जाने का दिन आया। बूढ़े ने उसे एक जहाज के कप्तान बहराम को सौंपा जो उसे एक संदूक में बंद कर के अपने जहाज में ले चला।

जहाज छूटने के पहले अमजद को मालूम हो गया था कि अग्निदेवता की बलि के लिए साल में एक जहाज इस नगर में आया करता है और किसी न किसी मुसलमान को बलि चढ़ाने के लिए ले जाता है। उसने सोचा कि इस बार कहीं असद ही को तो इस हेतु नहीं भेजा जा रहा है। उसे इस जहाज पर शक था इसलिए वह स्वयं भी जहाज पर चढ़ गया और सारे खलासियों और व्यापारियों को अलग खड़ा कर के अपने सेवकों को जहाज की तलाशी लेने की आज्ञा दी। सेवकों ने अच्छी तरह हर जगह देखा किंतु असद को संदूक में बंद किया गया था इसलिए वह न मिला। इसके बाद जहाज को यात्रा करने की अनुमति दे दी गई।

रास्ते में बहराम कप्तान ने असद को संदूक से निकाला लेकिन उसके पाँवों में बेड़ियाँ डाल दीं ताकि वह अपनी बलि की बात सुन कर समुद्र में न कूद पड़े। किंतु जहाज इच्छित ज्वालामुखी के द्वीप में न पहुँचा। प्रतिकूल वायु और समुद्री धाराओं ने उसे दूसरी ओर मोड़ दिया। कुछ दिनों बाद भूमि दिखाई दी किंतु जब कप्तान बहराम ने पहचाना कि यह कौन-सा देश है तो वह बहुत घबराया। यह भूमि एक मुसलमान रानी मरजीना का राज्य था। वह अग्निपूजकों की घोर शत्रु थी।

वह अपने देश में किसी अग्निपूजक को नहीं रहने देती थी बल्कि उनका कोई जहाज भी अपने बंदरगाहों में नहीं आने देती थी। जहाज वहाँ के तट पर पहुँचा तो बहराम ने अपने साथियों से कहा, यदि मरजीना के सिपाही जहाज पर इस कैदी को बेड़ियों में देखेंगे तो मरजीना जहाज को लुटवा देगी और हम सब लोगों को मरवा डालेगी। इसलिए इस आदमी की बेड़ियाँ काट दो और इसे नौकरों जैसे कपड़े पहना दो। मैं इसी के हाथ से रानी को रत्नादि की भेंट दिलाऊँगा ताकि रानी भी प्रसन्न हो और यह भी समझे कि मुझे बलि नहीं चढ़ाया जाएगा।

जहाज के लोगों को कप्तान का यह उपाय पसंद आया क्योंकि इसके अलावा और किसी प्रकार रानी के कोप से बचा ही नहीं जा सकता था। असद की बेड़ियाँ काट दी गईं और उसे दासों जैसे सफेद कपड़े पहनाए गए। उन लोगों ने उसे बढ़िया खाना खिलाया और झूठा आश्वासन दिया कि यहाँ से निकल कर हम तुम्हें तुम्हारे देश में पहुँचा देंगे। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि उस बुड्ढे के घर पर तुम से जो दुर्व्यवहार हुआ है वह किसी को न बताना वरना हम लोग तुम्हें जीता न छोड़ेंगे।

उन्होंने हर तरह की खुशामद और धमकी से काम लिया।

असद ने भी देखा कि उनकी बात को अस्वीकार करने में कोई लाभ नहीं है, उसने मान लिया कि मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा। अब जहाज ने मरजीना के बंदरगाह में लंगर डाला। मरजीना का बाग समुद्र तट पर था और वह उस समय अपने बाग की सैर कर रही थी। उसने अग्निपूजकों का जहाज देखा तो अपने सिपाही भेजे और कुछ देर में स्वयं समुद्र तट पर आ गई। कप्तान बहराम असद के हाथ भेंट वस्तुएँ ले कर उसके पास गया और झुक कर सलाम करने के बाद कहा कि हम प्रतिकूल वायु और समुद्र धाराओं से विवश हो कर आपके बंदरगाह पर टिके हैं। हम लोग व्यापारी हैं और दासों का व्यापार करते हैं। हमारे और दास तो बिक गए और सिर्फ यह बचा है। यह पढ़ा-लिखा है इसलिए हमने इसे हिसाब-किताब लिखने के लिए रख लिया है।

मरजीना असद के रूप पर मुग्ध हो गई। उसने कहा, तुम अपनी सभी भेंट वस्तुएँ अपने पास रखो, केवल इस दास को मुझे दे दो। तुम इसका जो भी मूल्य माँगोगे वह मैं दे दूँगी। यह कह कर वह बहराम के उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर ही असद के हाथ में हाथ डाल कर बाग में घूमने लगी। कुछ देर बाद उसने असद से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? असद ने आँसू भर कर कहा, मलिका, मैं अपना कौन-सा नाम बताऊँ। कुछ महीने पहले तक मेरा

नाम असद था और मैं अवौनी का शहजादा था। अब मेरा नाम कुरबानिए-आतिश रखा गया है क्योंकि यह अग्निपूजक मुझे अपने देवता के सामने बलि देने के लिए लिए जा रहे हैं।

मरजीना यह वृत्तांत सुन कर आग बबूला हो गई। उसने बहराम को बुला कर बहुत गालियाँ सुनाईं और कहा, नीच कमीने, तूने मुझसे इतना बड़ा झूठ बोला? तू इस व्यक्ति को आग की कुरबानी के लिए ले जा रहा है और मुझे बता रहा है कि यह दास है? अब खैरियत चाहता है तो फौरन जहाज को खोल दे नहीं तो मैं सारा माल लुटवा दूँगी, जहाज जला दूँगी। बहराम घबराया हुआ जहाज पर आया। तेज उलटी हवा होने पर भी जहाज का लंगर उठवाने लगा। उधर मरजीना असद को बाग में बने हुए राजकीय आवास में ले गई। उसने स्वादिष्ट भोजन मँगवाया। असद ने पेट भर भोजन किया और जी भर शराब पी। शराब वह जरूरत से ज्यादा पी गया था। उसने मलिका से बाग में घूम-फिर कर नशा उतारने की अनुमति ली और बाग में घूमने लगा। कुछ देर बाद उसने एक कुंड के निकट बैठ कर अपना मुँह धोया और कुछ चैतन्य हो कर वहीं घास पर लेट गया। दो क्षणों ही में उसे गहरी नींद आ गई।

उधर बहराम ने अपने खलासियों से कहा, अब शाम हो गई है, रात भर तो बेखटके यहाँ भी रह सकते हैं। आशा है कि सुबह तक अनुकूल वायु भी मिल जाएगी। जहाज पर मीठा पानी भी कम है। हम लोग जमीन पर उतर कर देखें तो कोई न कोई कुआँ या कुंड मिल ही जाएगा। पानी ला कर हम सुबह होने के पहले ही जहाज खोल देंगे।

खलासी लोग जल की खोज में निकले तो उन्हें याद आया कि रानी मरजीना के बाग में मीठे पानी का एक बड़ा कुंड देखा था। वे वहाँ आए। सोते हुए असद को उन्होंने पहचान लिया और उसे अकेला पा कर बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने सारे बरतनों में पानी भरा और धीरे से असद को उठा कर जहाज पर पहुँचा दिया। बहराम पानी के साथ असद को पा कर बहुत प्रसन्न हुआ। हवा भी अनुकूल चलने लगी थी इसलिए उसने दो घड़ी रात रहे ही लंगर उठा दिया। जहाज तेजी से ज्वालामुखी पर्वत की ओर जिसे वे आतशी कोह कहते थे चल पड़ा।

सुबह मलिका ने असद को अपने पास न पाया तो पहले सोचा कि वह शौचादि के लिए गया होगा किंतु जब वह देर तक न आया तो अपनी दासियों और सेविकाओं को आदेश दिया कि उसे ढूँढ़ें। उन्होंने बहुत ढूँढ़ा किंतु उसका पता नहीं पाया। काफी देर के बाद दासियों ने बताया कि बाग का फाटक खुला मिला है और कुंड के पास एक आदमी के जूते रखे हैं। मलिका उठ कर स्वयं कुंड के पास आई और जूतों को देख कर पहचान गई कि यह असद ही के हैं। कुछ दासियों ने यह भी कहा कि कल शाम को कुंड में जितना पानी था इस समय उससे काफी कम दिखाई दे रहा है।

रानी मरजीना समझ गई कि रात को बहराम के खलासी बाग में पानी लेने आए होंगे और पानी के साथ निद्रामग्न असद को भी उठा ले गए होंगे। उसने एक आदमी समुद्र तट पर

यह पता करने के लिए भेजा कि बहराम का जहाज है या नहीं। वहाँ उसे मालूम हुआ कि जहाज सुबह से पहले ही रवाना हो गया है। अन्य जहाजों के लोगों ने यह भी बताया कि पहर रात गए उस जहाज से एक नाव आई थी जिसके लोग शाही बाग की ओर गए थे।

अब तो कोई संदेह ही न रहा कि बहराम ने असद को उठवा लिया है। तब तक शाम होने लगी थी। उसने अपनी नौसेना के सारे जहाजों को तैयार रहने की आज्ञा दी और कहा दस जहाज बंदरगाह पहुँच जाएँ, मैं स्वयं इस जंगी बेड़े के साथ चलूँगी। दूसरी सुबह दस युद्धपोत रानी को ले कर बहराम के जहाज के पीछे चले। दो दिन बाद उन्होंने बहराम का जहाज आगे जाता हुआ देखा ओर कुछ ही देर में उसे चारों ओर से घेर लिया।

बहराम समझ गया कि असद के लिए ही मलिका ने पीछा किया है। उसने सोचा कि असद के साथ पकड़ा गया तो रानी मुझे मरवा ही देगी इसलिए उसे जहाज से हटा देना चाहिए। प्रकटतः वह बलि को इस प्रकार हाथ से भी जाने नहीं दे सकता था। इसलिए उसने क्रोध में चिल्ला कर कहा, इस मनहूस की वजह से हम पर मुसीबत आ रही है और हम सभी की जान खतरे में है। उसे खूब मारो और फिर समुद्र में फेंक दो ताकि यह यहीं खत्म हो जाए। उसके आधीनस्थ लोगों ने ऐसा ही किया। उसे खूब मारा और फिर उठा कर समुद्र में फेंक दिया। उन्हें विश्वास था कि इस गहरे पानी में से वह किसी तरह बच कर नहीं निकल सकता।

किंतु असद बहुत अच्छा तैराक था। वह तैरते-तैरते कुछ घंटों में एक भूमि पर जा लगा। उसने तट पर पहुँच कर भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने दूसरी बार प्राण बचाए। उसने अपने कपड़े सुखाए और सोचा कि तट से कुछ दूर दिखाई देनेवाले नगर में चलूँ। पास पहुँच कर देखा तो वह वही अग्निपूजकों की बस्ती थी जहाँ से वह जहाज पर लादा गया था। उसने सोचा कि दिन में वहाँ जाना ठीक नहीं है, रात में चलूँगा। यह सोच कर वह मुसलमानों के कब्रिस्तान में जा कर सो गया।

उधर मरजीना के जहाजों ने बहराम के जहाज को दबा लिया। मरजीना ने स्वयं उस जहाज पर चढ़ कर पूछा कि असद कहाँ है जिसे तुम मेरे बाग से उड़ा लाए थे। बहराम ने असद को लाने की बात से इनकार किया। मरजीना ने असद को ढुँढ़वाया। उसे न पा कर वह और भी क्रुद्ध हुई। उसने जहाज को लूटने और सब लोगों को निकटस्थ भूमि पर ले चलने की आज्ञा दी और कहा कि मैं इन सब को मौत के घाट उतरवाऊँगी। उसके सिपाहियों ने बहराम और उसके साथियों को तट पर पहुँचाया।

तट पर जा कर बहराम भी पहचान गया कि यह उसी का नगर है। वह पहरेदारों की आँख बचा कर भाग निकला। नगर तक उसे पहुँचते-पहुँचते काफी रात हो गई। उसने भी सोचा कि रात यहीं कब्रिस्तान में बिता कर सुबह शहर में जाऊँगा। वहाँ असद को सोता देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि इस जगह सोनेवाला कौन है। उसने उसे अच्छी तरह देखना शुरू किया। असद की भी आँख खुल गई और वह उठ बैठा। बहराम ने कहा, अच्छा तुम

यहाँ सोए हो? तुम्हारी वजह से मुझ पर ऐसी विपदा पड़ी। इस वर्ष तो बलि से बच गए, अब देखता हूँ कि अगले वर्ष कैसे बचते हो।

बहराम असद से कहीं तगड़ा था। उसने असद को एक चादर में बाँधा और रात ही रात उसे उस बूढ़े अग्निपूजक के घर पहुँचा दिया जहाँ से असद को लाया था। बूढ़े ने फिर असद के पाँव में बेड़ियाँ डाल कर उसे तहखाने में पहुँचाया और बोस्तान और कैवाना को पहले की तरह उसे रोज खूब मारने और रोटी-पानी देने की आज्ञा दी। बोस्तान उसे तहखाने में ले गई। असद ने विलाप आरंभ किया कि इस सारे साल की मार से तो अच्छा था कि मुझे बलि ही दे दिया जाता। बोस्तान को पहले ही अपनी क्रूरता पर खेद था। इस समय उसे असद पर बड़ी दया आई। उसने कहा, तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें न मारूँगी। मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि मैं मुसलमान हो गई हूँ।

बोस्तान की बातों से असद को बहुत तसल्ली हुई किंतु उसे अब भी कैवाना की ओर से डर लग रहा था। उसने कहा, भगवान ने तुम्हारे हृदय में मेरी ओर से दया उपजा दी है किंतु कैवाना तो मुझे पूर्ववत ही मारेगी। बोस्तान ने कहा, तुम डरो नहीं। अब तुम्हारे पास कैवाना नहीं, मैं ही आऊँगी। उस दिन से बोस्तान ही उसके पास आने लगी। वह उसे भरपेट स्वादिष्ट भोजन खिलाती और उससे मित्रतापूर्वक बातें करती।

एक दिन बोस्तान अपने दरवाजे पर खड़ी थी कि उसने मुनादी होते सुनी। मुनादी करनेवाला उच्च स्वर में कह रहा था, इस देश का मंत्री अमजद अपने छोटे भाई असद को ढूँढ़ने स्वयं ही नगर में निकला है। जो भी उसके भाई को उसके पास लाएगा उसे इतना धन दिया जाएगा कि कई पीढ़ियों के लिए काफी होगा। और अगर कोई असद को जान-बूझ कर छुपा कर रखेगा तो वह अपने परिवारवालों के सहित मार डाला जाएगा और उसका घर खुदवा कर उस जमीन पर हल चलवा दिया जाएगा। यह मुनादी सुन कर बोस्तान दौड़ी हुई असद के पास गई। उसने उसकी बेड़ियाँ काट दीं और उसे ले कर गली में निकल आई। यहाँ आ कर उसने पुकार कर कहा, यह है मंत्री अमजद का भाई असद, इसे मंत्री के पास पहुँचा दो।

मंत्री के सेवकों ने मंत्री को तुरंत इस बात की सूचना दी। वह असद को बुलाने के बजाय स्वयं ही वहाँ पर आ गया। असद को पहचान कर उसने उसे आलिंगनबद्ध किया। फिर वह असद और बोस्तान को ले कर बादशाह के पास पहुँचा। वहाँ पहुँच कर असद ने अपने ऊपर पड़नेवाली सारी विपत्तियों का वर्णन किया। बादशाह के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने आज्ञा दी कि बुड्ढे अग्निपूजक का घर खुदवा डाला जाए तथा उसे और बहराम आदि रिश्तेदारों को मृत्युदंड की आज्ञा दी। उन सबने उसके पैरों पर गिर कर प्राणों की भिक्षा माँगी। बादशाह ने कहा कि तुम्हारा अपराध बहुत बड़ा है, तुम्हें इसी शर्त पर प्राण-दान मिल सकता है कि तुम अपना यह झूठा धर्म छोड़ कर मुसलमान हो जाओ। उन्होंने यह स्वीकार कर के जान बचाई।

मंत्री अमजद ने इसके बाद उन लोगों को गुजारे के लिए यथेष्ट धन दिया। बहराम इससे प्रभावित हुआ। उसने कहा कि सरकार, पिछले साल मैं अवौनी देश गया था। वहाँ बादशाह कमरुज्जमाँ आप लोगों के वियोग में बड़े व्याकुल हैं। आश्चर्य न होगा यदि इस दुख में उनके प्राण निकल जाएँ। आप दोनों यदि वहाँ चलने को तैयार हों तो मैं आपको सुविधापूर्वक पहुँचा दूँ।

अमजद और असद ने यह स्वीकार किया और बादशाह से जाने की अनुमति माँगी जो उसने दे दी। उसने उन्हें गले लगा कर विदा किया और बहुत साधन यात्रा के लिए दिया।

इतने में एक हरकारे ने आ कर कहा कि एक ओर से एक बड़ी सेना आ रही है। बादशाह सोचने लगा कि मेरा ऐसा कौन दुश्मन है जो चढ़ाई करे। उसने अमजद से जा कर सेनाध्यक्ष से मिलने को कहा। अमजद गया तो उसे मालूम हुआ कि सेना की नायक एक स्त्री है। उसने उससे भेंट कर उससे पूछा कि आप युद्ध का इरादा ले कर आई हैं या मैत्री का? उसने कहा, मैं युद्ध करने नहीं आई हूँ। यहाँ का बहराम नामी कप्तान मेरे दास असद को चुरा लाया है। मैं उसी को लेने आई हूँ। मेरा नाम मरजीना है। यदि आप असद को मुझे वापस दिलाने में सहायक हों तो आपकी आभारी हूँगी।

अमजद ने कहा, आपका दास असद मेरा छोटा भाई है। मैं यहाँ का मंत्री हूँ। आप कृपया चल कर हमारे बादशाह से भेंट करें। वे असद को आपकी सेवा में दे देंगे। मरजीना यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुई और सारी सेना वहीं छोड़ कर कुछ अंगरक्षकों को साथ ले कर अमजद के साथ बादशाह के पास आने लगी।

इसी बीच एक और हरकारे ने आ कर कहा कि दूसरी दिशा से एक और सेना आ रही है। बादशाह फिर चिंतित हुआ। उसने अमजद को इस सेना का हाल जानने के लिए भेजा। अमजद कुछ सिपाहियों के साथ गया और फौज के एक सरदार से कहा कि मैं यहाँ का मंत्री हूँ, मुझे अपने बादशाह के पास ले चलो। बादशाह के पास जा कर उसने पूछा कि आप अगर युद्ध के लिए आए हैं तो यह भी बताए कि हमसे क्यों युद्ध करना चाहते हैं। बादशाह ने कहा, मैं युद्ध करने नहीं आया। मैं चीन का बादशाह गौर हूँ। मेरी बेटी बदौरा और दामाद कमरुज्जमाँ बहुत दिनों से लापता हैं। मैं उन्हें ढूँढ़ने निकला हूँ।

अमजद ने उसके पाँव चूम कर कहा, आप मेरे नाना हैं। मेरे पिता कमरुज्जमाँ अवौनी के बादशाह हैं। वे और मेरी माता बदौरा आनंदूपर्वक हैं। बादशाह गौर ने उसे सीने से लगाया और उसे देर तक प्यार करता रहा। वह अमजद की सारी पिछली आपदाओं को सुन कर बहुत दुखी हुआ।

उसने अमजद को तसल्ली दी और कहा कि मैं स्वयं वहाँ तुम्हें ले जा कर तुम दोनों का मेल करवा दूँगा। अमजद ने विदा हो कर अपने स्वामी को उसका हाल बताया। उसे आश्चर्य हुआ कि चीन के सम्राट जैसा प्रतापी आदमी बेटी-दामाद की तलाश में भटक रहा है। उसने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी कि चीन के सम्राट की पूरी तरह अभ्यर्थना की जाए। वह स्वयं भी इस बात की तैयारी करने लगा कि चीन के सम्राट के शिविर में जा

कर उससे भेंट करे।

इसी बीच एक और हरकारे ने सूचना दी कि एक फौज तीसरी तरफ से भी आई है। बादशाह ने सोचा यह अच्छी मुसीबत है, चारों ओर से सेनाएँ चली आ रही हैं। उसने इस बार भी अमजद को इस सेना के आगमन का उद्देश्य जानने को भेजा। अमजद ने जा कर पता किया तो मालूम हुआ कि यह उसका पिता कमरुज्जमाँ है जो अपने दोनों पुत्रों की तलाश में देश-विदेश भटकता हुआ यहाँ आ पहुँचा है। उसे मालूम हुआ कि पहले तो अपनी रानियों के षडचंत्र में फँस कर उसने बेटों के वध की आज्ञा दे दी थी किंतु बाद में उसे इतना पछतावा हुआ कि वह प्राण त्याग करने के लिए तैयार हो गया। जब जिंदर ने उसे बताया कि शहजादों को मारा नहीं गया है तो उसकी हालत सँभली किंतु इसके बाद वह चैन से न बैठ सका और बड़ी फौज ले कर बेटों को ढूँढ़ने निकल पड़ा। अमजद वापस आ कर असद को साथ ले गया और दोनों बेटों ने बाप से भेंट की। वह इन दोनों को गले लगा कर बहुत देर तक हर्ष के आँसू बहाता रहा।

इतने ही में वहाँ के बादशाह को एक और हरकारे ने बताया कि राज्य की चौथी ओर से भी एक बड़ी सेना चली आ रही है। बादशाह ने फिर अमजद के पास खबर भिजवाई। कमरुज्जमाँ ने कहा, और बातें बाद में होंगी, पहले यह देखना चाहिए कि यह नई फौज किसलिए आई है। मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर उस फौज लानेवाले बादशाह से मिलूँगा। अमजद ने पिता को यह भी बताया कि एक ओर से चीन का सम्राट भी ससैन्य आया हुआ है। कमरुज्जमाँ यह सुन कर खुश हुआ और बोला कि चलो रास्ते में हम लोग तुम्हारे नाना से भी मिलते चलेंगे।

चीन के सम्राट से संक्षिप्त रूप से भेंट करने के बाद कमरुज्जमाँ और उसके दोनों बेटे उस तरफ गए जहाँ चौथी फौज ने पड़ाव डाला था। पास पहुँचने पर अमजद आगे बढ़ कर गया। संयोग से उसकी पहली ही भेंट इस फौज के बादशाह के मंत्री के साथ हुई। उसने पूछा, आप लोग तो मुसलमान हैं, इस देश में जहाँ मुख्यतः अग्निपूजक रहते हैं क्या करने आए हैं? उस मंत्री ने कहा, हम लोग खलदान देश से आए हैं। हमारे बादशाह का बेटा कमरुज्जमाँ बीस वर्ष से अधिक समय से लापता है। हमारे बादशाह उसी की खोज में भटक रहे हैं। अगर आप लोगों ने कमरुज्जमाँ का कुछ हाल सुना हो तो बताइए, आपकी बड़ी कृपा होगी।

अमजद ने हँस कर कहा, आप कमरुज्जमाँ का समाचार पूछ रहे हैं। मैं स्वयं कमरुज्जमाँ को यहाँ लिए आता हूँ। आप बादशाह से हम लोगों की भेंट का प्रबंध कराइए। इधर मंत्री अपने बादशाह को यह समाचार देने गया उधर अमजद ने जा कर अपने बाप से कहा कि आपके पिता आप की खोज में यहाँ तक आए हैं और यह फौज उन्हीं की है। कमरुज्जमाँ ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि पिता से भेंट होगी और वह भी इतने आकस्मिक ढंग से। वह भावातिरेक से मूर्छित हो गया। जब वह सचेत हुआ तो बेटे को साथ ले कर पिता से मिलने चल पड़ा और उसके पास जा कर उसके पैरों पर गिर पड़ा। वह उसे छाती से लगा कर बहुत देर तक रोता रहा।

उसने कमरुज्जमाँ से पूछा, बेटे, मुझ से ऐसी क्या भूल हो गई थी कि तुम बगैर कुछ कहे-सुने चले आए। तुम इस अरसे में कहाँ-कहाँ और किस तरह रहे? कमरुज्जमाँ ने लज्जित हो कर चुपचाप देश छोड़ने पर पिता से क्षमा याचना की और फिर उसे अपना, बदौरा का और बेटों का पूरा हाल बताया। उसने अपने दोनों बेटों को पिता से मिलवाया। वह दोनों पौत्रों को गले लगा कर बहुत देर तक प्यार करता रहा।

फिर सारे बादशाहों और रानी मरजीना ने अग्निपूजक देश के मुसलमान बादशाह के महल में एक-दूसरे से भेंट की और तीन दिन तक राग-रंग होता रहा। सभी की सलाह से मंत्री अमजद के साथ भूतपूर्व अग्निपूजक की बेटी बोस्तान का विवाह कर दिया गया क्योंकि वह सब से पहले स्वयं ही मुसलमान हुई थी और उसी ने असद को पिता की कैद से निकाला था। इसी तरह सब की सलाह से असद का विवाह रानी मरजीना से कर दिया गया क्योंकि वह इतनी शक्तिशालिनी हो कर भी असद पर इतनी मुग्ध थी कि उसकी तलाश में भटक रही थी। असद अपनी पत्नी के साथ चला गया। अमजद को वहाँ के बादशाह ने अपना राजपाट सौंप दिया। इस सारे वृत्तांत का यह प्रभाव पड़ा कि उस देश के अधिकतर अग्निपूजक अपना पुराना धर्म छोड़ कर मुसलमान हो गए। चीन का सम्राट, खलदान का बादशाह और कमरुज्जमाँ उस देश के बादशाह की दी हुई बहुमूल्य भेंटें स्वीकार करने के बाद अपने-अपने देशों की ओर रवाना हो गए।

शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने कहा, दीदी, तुमने बहुत ही अच्छी कहानी सुनाई। मैं चाहती हूँ कि और भी ऐसी कहानियाँ सुनूँ। शहरजाद बोली, यदि मुझे आज प्राणदंड न दिया गया तो कल नूरुद्दीन और फारस देश की दासी की सुंदर कथा सुनाऊँगी। बादशाह शहरयार ने इस कहानी के लालच में उस दिन भी शहरजाद का प्राणदंड स्थगित कर दिया।

ईरानी बादशाह बद्र और शमंदाल की शहजादी की कहानी

शहरजाद ने कहा कि बादशाह सलामत, ईरान बहुत बड़ा देश है। पुराने जमाने में वहाँ बड़े शक्तिशाली और प्रतापी नरेश हुआ करते थे और उन्हें शहंशाह यानी बादशाहों का बादशाह कहा जाता था। उसी काल का वहाँ का एक बादशाह बद्र था। उसके पास अपार धन- दौलत और सैनिक शक्ति थी। उसके सौ पत्नियाँ और हजारों दासियाँ थीं किंतु उसे बड़ा दुख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। दूर-दूर के व्यापारी उसके लिए सुंदर दासियाँ लाते। वह उनसे पुत्र प्राप्ति की इच्छा से भोग करता। अपने देश के सिद्धों और तांत्रिकों से भी इस बारे में सहायता करने को कहा, हजारों कँगलों को धन का दान करता कि किसी के आशीर्वाद से पुत्र प्राप्ति हो। किंतु कोई उपाय सफल नहीं हो सका था और बादशाह की चिंता का अंत नहीं था।

एक दिन उसके एक सेवक ने आ कर बताया कि एक दूर देश का व्यापारी एक अति सुंदरी दासी ले कर बेचने के लिए आया है। बादशाह ने आज्ञा दी कि व्यापारी दासी को लाए। दूसरे दिन व्यापारी उस दासी को ले कर उपस्थित हुआ। बादशाह ने उससे पूछा कि तुम किस देश से दासी लाए हो। उसने कहा, मैं बहुत दूर देश की बाँदी लाया हूँ। आप उसकी सूरत देखेंगे तो यह पूछना भूल जाएँगे कि वह कहाँ की है। बादशाह ने कहा कि उसे दिखाते क्यों नहीं। व्यापारी ने कहा, मैं पहले आपकी अनुमति चाहता था। अभी मैंने उसे एक विश्वस्त दास को सौंप रखा है, आप कहें तो अभी ले आऊँ। बादशाह ने कहा कि फौरन लाओ।

व्यापारी ने ला कर दिखाया तो बादशाह ने देखा कि दासी वास्तव में अजीब-सी छटा बिखेर रही है। गौरवर्ण, कुंचित केशी, सुडौल शरीरवाली दासी थी जिसका चेहरा नकाब के अंदर से भी सौंदर्य की किरणें-सी बिखेर रहा था। बादशाह व्यापारी और दासी दोनों को अपने रंगमहल में ले गया। वहाँ पर दासी का नकाब उठा कर देखा तो उसके रूप की छवि से लगभग अचेत हो गया। जब थोड़ी देर में उसे पूर्ण चेत हुआ तो उसने व्यापारी से पूछा कि इस दासी का कितना मूल्य है। व्यापारी ने कहा, महाराज, इसे मैंने एक हजार अशर्फियों में मोल लिया था। इसे तीन वर्ष पहले लिया था। इस काल में इतना ही धन इसके भोजन, वस्त्र आदि पर व्यय हुआ। लेकिन मैं इसे यूँ ही आपको भेंट करने के लिए लाया हूँ अगर यह आपको पसंद हो।

बादशाह व्यापारी की विनयपूर्ण बातों से प्रसन्न हुआ। वह बोला, हम किसी से यूँ ही कोई वस्तु नहीं लेते। और जो चीज हमें पसंद आती है उसके दूने-चौगुने दाम भी दे देते हैं। यह दासी हमें बहुत पसंद है। हम इसके मूल्य के तौर पर तुम्हें दस हजार अशर्फियाँ देंगे। व्यापारी ने सिर झुका कर कई बार बादशाह को नमन किया और हजार अशर्फियों के दस तोड़े ले कर शाही महल से विदा हुआ। इधर बादशाह ने कई दासियों को बुला कर आज्ञा

दी कि इसे हम्माम में ले जाओ और नहला-धुला कर अच्छे कपड़े पहनाओ।

सुघड़ परिचारिकाओं ने नई दासी को हम्माम में ले जा कर गरम पानी से भली भाँति नहलाया और जरी के काम के रत्नजटित वस्त्र पहनाए। परिचारिकाओं ने, जिन्हें बादशाह ने नई दासी के निमित्त नियुक्त किया था, उसके निखरे हुए रूप को देख कर आश्चर्य किया। उसे बादशाह के सामने ला कर उन्होंने कहा, इसे दो-चार दिन पूरा आराम दिया जाए और पौष्टिक भोजन दिया जाए तो इसका रूप और निखरेगा क्योंकि अभी इस पर लंबी यात्राओं की थकन बढ़ी होगी। तीन दिन बाद अगर आप इसे देखेंगे तो शायद पहचान भी न सकेंगे। बादशाह ने यह बात मान ली और कहा कि इसे तीन दिन के बाद ही रंगमहल में भेजा जाए।

बादशाह की राजधानी समुद्र तट पर थी और शाही महल का पिछवाड़ा बिल्कुल समुद्रतट के सामने पड़ता था। वह नई दासी अक्सर अपने कमरे के छुज्जे पर बैठ जाती और एकटक समुद्र की लहरों के तट पर टकराने का तमाशा देखती थी। तीन दिन के बाद चौथे दिन भी उसी प्रकार वह समुद्र की ओर देख कर अपना मन बहला रही थी कि उसी समय परिचारिकाओं ने बादशाह से कहा कि अब नई दासी अपनी पूरी छवि में आ चुकी है। बादशाह उससे मिलने को इतना बेचैन हुआ कि उसे बुला भेजने के बजाय खुद उसके पास जा पहुँचा। पहले तो उसके आने की आहट से नई दासी ने यह समझा कि कोई परिचारिका आई होगी। किंतु जब कुछ क्षणों के बाद उसने बादशाह को देखा तो भी कुरसी से न उठी, न किसी और तरह सम्मान प्रदर्शित किया। बादशाह को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। किंतु उसे क्रोध नहीं आया, उसने यह समझा कि यह इतनी उद्दंडता इसलिए दिखा रही है कि उसकी शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई।

बादशाह के इशारे से परिचारिकाएँ हट गईं। बादशाह ने समीप जा कर उसके गले में हाथ डाला। दासी ने कोई आपत्ति नहीं की किंतु वह बोली-चाली भी नहीं। बादशाह उसे कमरे में ले गया। रतिक्रिया के बाद उसने दासी से कहा, मेरी प्राणप्यारी, तुम किस देश की निवासिनी हो और तुम्हारे माता-पिता का क्या नाम है। मेरे महल में सौ रानियाँ और कई हजार दासियाँ हैं किंतु उनमें से कोई एक भी सौंदर्य में तुम्हारे पास भी नहीं फटक पाती। मुझे तुमसे जितना प्रेम है उतना किसी रानी से भी नहीं है।

नई दासी इस पर भी चुप रही। बादशाह ने कहा, प्रिये, तुमने मेरी किसी बात का उत्तर नहीं दिया। कुछ तो बोलो ताकि मैं जैसे तुम्हारे सुंदर मुखमंडल से आनंदित होता हूँ वैसे ही तुम्हारे मीठे वचनों को सुन कर भी तृप्ति प्राप्त करूँ। तुमने तो मेरी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा जिससे मेरे नयन तृप्त होते। आखिर तुम्हें कौन-सी चिंता सता रही है जिसने तुम्हारी वाणी को अवरुद्ध कर दिया है। तुम मुझे अपनी व्यथा बताओ। अगर तुम अपने माँ-बाप को याद कर रही हो तो उनका मिलना तो असंभव है, हाँ इसके अतिरिक्त तुम जो कुछ भी चाहो उसे तुम्हारी सेवा में उपस्थित कर दिया जाएगा।

बादशाह ने उससे इस प्रकार की बहुत-सी बातें कहीं किंतु दासी मुँह नीचा किए भूमि की ओर ही देखती रही। बादशाह फिर भी उससे क्रुद्ध न हुआ। उसने परिचारिकाओं को आवाज दी और उनसे भोजन मँगवाया, वह स्वयं भी खाने लगा और अपने हाथ से स्वादिष्ट व्यंजनों के ग्रास नई दासी के मुख में देने लगा। वह खाती रही किंतु चुप ही रही। फिर बादशाह ने आज्ञा दी कि गायन-वादन और नृत्य का आयोजन किया जाए। इस पर भी वह चुप रही। बादशाह ने दासी की परिचारिकाओं से पूछा कि यह कभी बोलती भी है या नहीं, उन्होंने कहा कि किसी ने इसे बोलते क्या मुस्कुराते भी नहीं देखा। खैर, बादशाह ने रात भर उससे विहार किया और तय किया कि उसके अतिरिक्त किसी से संभोग न करेगा।

इस निर्णय के बाद बादशाह ने कुछ दासियों को सेवा कार्य के लिए रख कर बाकी दासियों और सभी रानियों को बुला कर उन्हें काफी धन दे कर स्वतंत्र कर दिया कि वे जहाँ चाहें जाएँ और जिस से चाहें विवाह करें। एक वर्ष तक वह प्रतीक्षा करता रहा कि नई दासी उससे कुछ बात करेगी। किंतु जब ऐसा न हुआ तो उसने विकल हो कर कहा, मेरी प्राणप्रिया, मुझे बड़ा दुख है कि तुम्हारे बारे में अभी तक कुछ पता नहीं चल सका है। मैं यह तक नहीं जान पाया कि तुम मेरे साथ रहने में प्रसन्न हो या अप्रसन्न। मैं तो तुम्हारे लिए कुछ उठा नहीं रखता हूँ। तुम्हारे पीछे मैंने अपनी सारी रानियों और दासियों को छोड़ दिया। कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम गूँगी हो। ऐसा हुआ तो यह ईश्वर का बड़ा अन्याय होगा कि ऐसा भुवन मोहन रूप दे कर अंदर ऐसा दोष पैदा कर दिया। अगर तुम गूँगी नहीं हो तो भगवान के लिए कुछ बोलो क्योंकि तुम्हारे चुप रहने से मैं बड़े कष्ट में रहता हूँ। मैं इस सारे वर्ष में भगवान से प्रार्थना करता रहा कि तुम्हारे पेट से मेरा कोई लड़का पैदा हो जो मेरे बाद राज-काज सँभाले क्योंकि मेरा बुढ़ापा आ रहा है और शारीरिक निर्बलता मेरे अंदर घर करती जा रही है। अगर तुम गूँगी नहीं हो तो मुझसे बातें करो। मैं और अधिक तुम्हारी चुप्पी नहीं सह सकता। तुम न बोलीं तो मैं जान दे दूँगा और मेरी हत्या का पाप तुम पर पड़ेगा।

वह सुंदरी यह सुन कर मुस्कुराई और बादशाह की ओर देखने लगी। वह भी समझ गया कि यह कुछ बोलेगी और उसकी बात की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद वह परम सुंदरी बोली, मुझे आप से बहुत-सी बातें कहनी हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि किस बात से आरंभ करूँ। आप ने इस सारे समय में मुझ पर इतनी दया की है और ऐसा मान दिया है जो वर्णन के बाहर है। मैं आपकी बड़ी आभारी हूँ और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वह आप को सवा सौ बरस की आयु दे और आपके शत्रु आपके प्रताप से ऐसे नष्ट हो जाएँ जैसे दीपक से पतिंगे। आप को कभी कोई कष्ट न हो। एक शुभ समाचार मैं आप को यह देती हूँ कि आप से गर्भ रह गया है। मुझे पूरी आशा है कि मेरे बेटा ही पैदा होगा। इस बीच मुझ से जो कुछ अविनय हुआ इसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ। अभी तक मैं इसलिए नहीं बोली थी कि जबर्दस्ती यहाँ लाए जाने से मुझे बड़ा क्रोध चढ़ा था किंतु अब मैं आपसे जान से प्यार करने लगी हूँ।

बादशाह इतनी बात सुन कर खुशी से पागल हो गया। उसने उसे खींच कर सीने से लगा

लिया और कहा कि गर्भ रहने का समाचार दे कर तुमने मेरे सारे दुख दूर कर दिए। यह कह कर बाहर आया और मंत्री को यह शुभ सूचना दे कर कहा कि फौरन एक लाख अशर्फियाँ गरीबों और भिखारियों में बँटवा दो, मेरे राज्य में कोई दीन-दुखी न रहे। इसके बाद वह फिर उस सुंदरी के पास आ कर बोला, माफ करना, मैं तुम्हारे गर्भ धारण के समाचार से इतना प्रसन्न हुआ कि सार्वजनिक दान की घोषणा में विलंब न कर सका। अब तुम यह बताओ कि तुम्हें ऐसी क्या नाराजगी थी कि तुम साल भर तक मुझ से या किसी से भी नहीं बोलीं। वह बोली, कारण यह था कि भगवान ने मुझे आपके पास दासी रूप में भेजा और अपने देश से इतनी दूर कर दिया कि कभी वहाँ जा ही न सकूँ। विशेषतः अपने माँ-बाप, भाई-बंधु आदि का बिछोह मुझे सता रहा था। आप जानते हैं कि परतंत्र हो कर जीने में कोई आनंद नहीं, इससे तो मौत ही अच्छी। बादशाह ने कहा, तुम्हारी बात ठीक है लेकिन जब कोई स्त्री तुम्हारी जैसी सुंदर हो और मेरे जैसे व्यक्ति के हृदय में घर कर ले तो फिर उसे परेशान होने की क्या जरूरत है। सुंदरी ने कहा, आप ठीक कहते हैं। आपकी बड़ी कृपा है, किंतु दासी फिर भी दासी है।

बादशाह ने कहा, तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम किसी बड़े घराने की संतान हो। मुझे विस्तार से बताओ कि तुम कहाँ की हो और तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं।

वह बोली, मेरा नाम गुल अनार आसीन है। मेरा पिता आसनी नामी समुद्र का राजा था। मरते समय उसने अपना राज्य मेरी माता और मेरे भाई सालेह को सौंप दिया। मेरी माँ भी किसी समुद्री राजा की बेटी थीं। हम तीनों आनंद से समय बिता रहे थे कि हमारे राज्य पर एक अन्य राजा ने चढ़ाई कर दी और हमारा राज्य छीन लिया। मेरा भाई उसका मुकाबला न कर सका और मुझे और माँ को ले कर चुपके से राज्य से निकल गया। सुरक्षित स्थान पर पहुँच कर वह बोला कि हम पर विपत्ति पड़ी है और हमारी दुर्दशा हो गई है, भगवान चाहेगा तो मैं दुबारा अपने राज्य पर कब्जा करूँगा किंतु मैं चाहता हूँ कि इससे पहले तुम्हारे विवाह से छुट्टी पा जाऊँ और चूँकि किसी जल राज्य का कोई शहजादा तुम्हारे लायक नहीं है इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा विवाह किसी थल के राजा से कर दूँ और अपनी हैसियत के अनुसर काफी दहेज आदि दूँ।

मैं यह सुन कर बहुत बिगड़ी। मैंने उससे कहा कि देखो हम दोनों एक ही माँ-बाप की संतान हैं। मैं तुम्हारा हमेशा साथ देना चाहती हूँ बल्कि जरूरत हो तो तुम्हारे लिए जान भी दे सकती हूँ किंतु जब आज तक किसी जल देश की राजकुमारी का विवाह किसी स्थलवासी राजा के साथ नहीं हुआ तो मैं ही ऐसी कहाँ गिरी-पड़ी हूँ कि किसी थलवासी के गले मढ़ी जाऊँ। मेरे भाई ने कहा कि आखिर ऐसी क्या बात है कि तुम किसी थलवासी राजा से विवाह नहीं करना चाहतीं। क्या तुम समझती हो कि सारे थलवासी कमीने और दुष्ट होते हैं। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है, उनमें भी बहुत-से भलेमानस होते हैं। इस प्रकार उसने मुझे बहुत समझाया। मैंने उससे बहस तो नहीं की किंतु मुझे क्रोध बहुत आया। मैंने मन में कहा कि यह लोग मुझे भारस्वरूप समझ रहे हैं इसलिए मुझे हटाना चाहते हैं, मैं खुद चली जाऊँगी।

अतएव एक दिन जब सब लोग अपने काम में व्यस्त थे मैं अवसर पा कर जल से निकल आई और एक टापू पर एक सुरक्षित स्थान तलाश कर के लेट गई और लेटते ही गहरी नींद में सो गई। किंतु मेरा अनुमान गलत था। एक धनी आदमी वहाँ आया और मुझे सोते देख कर अपने नौकरों से उठवा कर अपने विशाल मकान में ले गया। मुझे शयनकक्ष में ले जा कर उसने मुझसे बड़ा प्रेम दिखाया किंतु मैंने उसकी ओर से पूरी उदासीनता बरती। फिर उसने चाहा कि बलपूर्वक मेरा कौमार्य भंग करे। इस पर मैंने उसे उठा कर फेंक दिया। उसका क्रोध और ग्लानि से बुरा हाल हो गया। दूसरे ही दिन उसने एक व्यापारी को बुला कर मुझे उसके हाथ बेच डाला। वह व्यापारी बड़ा भला आदमी था। उसने मुझसे कभी कोई ऐसी-वैसी बात नहीं की। उससे मुझे आपने खरीद लिया।

यह कह कर गुल अनार बोली, मैं सारे थलवासियों से घृणा करती थी इसलिए आप से भी नहीं बोली। किंतु आपका सौहार्द देख कर मुझे आपसे घृणा भी न हुई। अगर आप मेरे साथ किसी प्रकार की जोर-जबर्दस्ती करते तो मैं समुद्र में कूद जाती और अपने कुटुंबी जनों से जा मिलती। मुझे एक ही भय था कि अगर मेरी माता और भाई को यह मालूम होगा कि मैं थल देश के किसी बादशाह के पास दासी के तौर पर रही हूँ तो वे लज्जावश मुझे जीता न छोड़ते। अब तो मैं आप के पुत्र की माँ बननेवाली हूँ। अब अगर कभी चाहूँ भी तो आप का आश्रय छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती। मैं अपनी ओर से स्वयं को आपकी दासी समझती हूँ और आगे भी समझूँगी किंतु मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ जैसे अब तक रानियों जैसा व्यवहार किया गया है आयंदा भी वैसा ही किया जाता रहे।

बादशाह ने कहा, तुम्हारा सुंदर मुख देख कर ही मैं तुम्हारा दीवाना हो गया था, अब तुम्हारी सुमधुर बातें सुन कर और भी हो गया हूँ। यह सुन कर मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि तुम भी एक शहजादी हो। इससे पहले तुम समुद्र के एक देश की राजकुमारी थी और आज से तुम ईरान की मलिका हो। मैं आज ही दरबार में इस बात की घोषणा करूँगा और सारे देश में मुनादी करवा दूँगा। मैं अभी तक तुम से जितना प्यार करता था आगे उससे भी अधिक करूँगा। तुम भी मेरे अलावा किसी और आदमी का ध्यान भी न करना। लेकिन एक बात बताओ। तुमने कहा कि तुम जल की निवासिनी हो। मेरी समझ में यह नहीं आया कि तुम लोग पानी में डूबते क्यों नहीं हो। सुना तो पहले भी था कि जल के अंदर भी मनुष्य रहते हैं किंतु इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता था। अब तुमने खुद कहा कि मैं जल की निवासिनी हूँ तो विश्वास करना पड़ा लेकिन समझ में अब तक नहीं आया कि यह बात संभव किस तरह है। आदमी किस तरह पानी के अंदर रह सकता है और किस तरह वहाँ काम-काज कर सकता है?

गुल अनार ने कहा, 'देखिए, पानी कितना ही गहरा हो किंतु आप उसकी तह तक देख सकते हैं। जैसे निगाह पर पानी रोक नहीं लगाता उसी प्रकार कुछ लोग पानी के अंदर रहते भी हैं। वैसे तो समुद्र के नीचे जहाँ हम लोग रहते हैं रात-दिन के बीच कोई अंतर नहीं दिखाई देता किंतु हम लोग पानी के अंदर से भी आसमान में चलनेवाले सूर्य तथा चंद्रमा और तारों को देख सकते हैं। जैसे धरती पर कई देश हैं और कई नगर बसे हुए हैं वैसे ही समुद्र की तलहटी में कई देश बसे हुए हैं जो अलग-अलग बादशाह के अंतर्गत

हैं। बल्कि सच तो यह है कि पृथ्वी के ऊपर जितने देश हैं उसके तिगुने देश जल के नीचे आबाद हैं। यहाँ की तरह ही वहाँ भी मनुष्यों की कई जातियाँ हैं। हम लोगों के अच्छे-अच्छे भवन और राजमहल बड़े भव्य होते हैं। वे संगमरमर के बने होते हैं और उनकी दीवारों और छतों में सीप, मोती और मूँगे ही नहीं, तरह-तरह के बिल्लौर और रत्नादि जड़े होते हैं। पानी में पृथ्वी से अधिक रत्न पाए जाते हैं और मोती तो इतने बड़े होते हैं जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते और न मैं आप को ठीक तरह बता ही सकती हूँ।

'जल निवासियों में हर व्यक्ति अपने लिए सुंदर भव्य महल बना लेता है। वहाँ आने-जाने के लिए गाड़ियों की जरूरत नहीं पड़ती, हर आदमी जितनी दूर चाहे बगैर थके जा सकता है। आम आदमी घोड़ा भी नहीं रखते, सिर्फ बादशाह लोग शोभायात्रा के लिए अपनी घुड़सालों में दरियाई घोड़े रखते हैं। जब वे जुलूस में निकलते हैं या कहीं तमाशा देखने जाते हैं तो इन दरियाई घोड़ों को विशेष रूप से बनाई हुई गाड़ियों में जोत देते हैं। गाड़ियाँ इतनी आरामदेह होती हैं और घोड़े इतने होशियार होते हैं कि सवार का शरीर भी नहीं हिलता और घोड़े इशारे भर से चलते हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ बड़ी सुंदर, चतुर और पतिपरायण होती है।'

यह कह कर गुल अनार बोली, स्वामी, यदि आज्ञा हो तो मैं अपने भाई और माता को यहाँ बुला लूँ ताकि वे खुद अपनी आँखों से देखें कि उनकी बेटी अब ईरान की मलिका बन गई है। बादशाह ने कहा, मुझे उनका स्वागत करने में अति प्रसन्नता होगी किंतु मेरी यह समझ में नहीं आता कि तुम उन्हें कैसे बुलाओगी। तुम्हें तो यह भी नहीं मालूम कि तुम्हारे देश को कौन सा रास्ता जाता है। गुल अनार बोली, वह सब मुझ पर छोड़िए। आप सिर्फ कुछ देर के लिए बगलवाले भवन में बैठें और तमाशा देखें।

मलिका गुल अनार ने अपनी दासी से आग मँगवाई फिर उसने कहा, तू बाहर जा और कमरे का द्वार बंद कर दे और जब तक मैं न बुलाऊँ यहाँ न आना। दासी के जाने पर उसने एक संदूकचे से एक चंदन का टुकड़ा निकाल कर आग पर डाल दिया और जब उसमें से धुआँ उठने लगा तो वह कोई मंत्र पढ़ने लगी। बादशाह उस मंत्र के शब्द बिल्कुल न समझ सका और आश्चर्यपूर्वक मलिका की ओर देखता रहा। मंत्र ज्यों ही समाप्त हुआ कि समुद्र की सतह ऊँची होने लगा और समुद्र बढ़ते-बढ़ते राजमहल से जा लगा। कुछ देर बाद समुद्र का पानी फट गया और उसमें से एक सुंदर युवक निकला। उसकी मूँछें पानी की तरह हरी थीं। फिर एक शालीन प्रौढ़ महिला निकली जिसके पीछे पाँच सुंदर युवतियाँ थीं।

गुल अनार ने पानी के किनारे खड़े हो कर उन सब का अभिवादन किया। दो-चार क्षणों में वे लोग किनारे आ गए। युवक का नाम सुल्तान सालेह था और वह मलिका गुल अनार का भाई था। प्रौढ़ स्त्री गुल अनार की माँ थी। किनारे पर आ कर सालेह तथा उसकी माँ ने गुल अनार को गले लगाया और उसके मिलने पर आनंद के आँसू बहाए। गुल अनार ने अपने भाई, माँ और उनके साथ आए लोगों का यथोचित आदर-सत्कार किया। उसकी माँ ने कहा, बेटी, तुम्हारे वियोग में हम पर जो कष्ट पड़ा उसके वर्णन के लिए मेरे पास शब्द

नहीं है। तुम्हारे भाई ने मुझे बताया था कि तुम किसी बात पर रूठ कर घर से निकल गई थीं। हम लोग तो बराबर तुम्हारे लिए रोते रहे। अब तुम बताओ कि तुम इस बीच कहाँ-कहाँ रहीं और तुम पर क्या बीती और यहाँ किस तरह पहुँचीं।

यह सुन कर गुल अनार अपनी माँ के चरणों पर गिर पड़ी। फिर कुछ देर बाद सिर उठा कर बोली, वास्तव में मुझ से बड़ा भारी अपराध हुआ जो आप लोगों को इस प्रकार छोड़ कर चली आई। मुझ पर बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ीं किंतु अंत में मैं इस सुखद स्थान पर पहुँच गई। यहाँ आ कर मुझे मालूम हुआ कि स्थल के बादशाह भी जल देशों के बादशाहों की तरह होते हैं। अब सालेह ने कहा, प्यारी बहन, जो हुआ सो हुआ। अब तुम हमारे साथ अपने देश को चलो। हम लोग तुम्हें अपने बीच पा कर आनंद से रहेंगे।

ईरान के बादशाह पास ही के एक स्थान से सब कुछ देख-सुन रहा था। वह मन में घबराने लगा कि अगर यह लोग मलिका को ले गए तो मैं तो जीते जी मर जाऊँगा क्योंकि मैं गुल अनार का बिछोह सहन नहीं कर सकता। लेकिन गुल अनार की बातों से उसे धैर्य हुआ। वह बोली, अब मैं यहाँ से कहीं नहीं जा सकती। एक तो यहाँ के बादशाह ने मुझे दस हजार अशर्फियों में खरीदा है, दूसरे उससे मुझे चार महीने का गर्भ है। उसके भाई और माँ ने फिर कुछ नहीं कहा।

गुल अनार ने दासियों को आवाज दे कर सारे मेहमानों के लिए नाना प्रकार के भोजन परसवा दिए। उसने उनसे भोजन करने के लिए कहा। किंतु इस पर उनके चेहरे लाल हो गए और मुँह और नथुनों से आग की लपटें निकलने लगीं। उन्होंने कहा, यह ठीक है कि तुम्हारा पति बादशाह हैं, किंतु क्या हम लोग इतने नीचे हैं कि वह हमारे साथ भोजन भी न करें। बादशाह कुछ दूर बैठा था। उनकी बात तो न सुन सका किंतु उनके मुँह और नथुनों से लपटें निकलते देख कर घबराया। गुल अनार ने उसके पास आ कर कहा, वे लोग चाहते हैं कि आप ही के साथ भोजन करें। अब यही उचित है कि आप उन लोगों के पास चलें और सब से यथायोग्य भेंट करें और सबके साथ भोजन करें। बादशाह ने कहा, मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है किंतु उनके मुँह और नथुनों से तो आग निकलती है। गुल अनार हँस कर बोली, आप चिंता न करें। इस समय वे सोच रहे हैं कि आपने स्वयं न आ कर उनका अपमान किया है। वे लोग क्रोध में आते हैं तो उनके मुँह और नथुनों से आग निकलने लगती हैं। आप चलेंगे तो उनका क्रोध दूर हो जाएगा। मेरे भाई और माँ का कहना है कि मैं उनके साथ देश चलूँ। किंतु मैं आपके प्रेम में इतनी फँसी हूँ कि आप को छोड़ कर नहीं जा सकती। बादशाह यह सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, मैं तुम्हारे जाने की बात से बड़ा दुखी था, अब तुम्हारी बात से मुझे ढाँढ़स मिला। मैं तुम्हारी माता और भाई से मिलने अभी चलता हूँ। उन्हें मुझ से कोई शिकायत नहीं रहेगी।

यह कह कर बादशाह गुल अनार के साथ उस मकान में गया जहाँ उसकी सास और साला मौजूद थे। उन लोगों ने बादशाह को देखा तो पृथ्वी से अपने सिरों को लगा कर नमन किया। बादशाह ने उनको एक-एक कर के उठाया और गले लगाया। फिर सब लोग बैठ कर प्रसन्नतापूर्वक बातें करने लगे। सालेह ने कहा, हम सब भगवान को बड़ा धन्यवाद

देते हैं कि हमारी बहन बड़े कष्ट उठाने के बाद आप की छत्र छाया में आई और यहाँ बहुत ही प्रसन्न है। भगवान आपको चिरायु करे। बादशाह ने भी अभ्यागतों के स्वागतार्थ विनीत वचन कहे और सब लोग काफी देर तक सानंद बातचीत करते रहे।

रात पड़ने पर बादशाह ने भोजन लाने की आज्ञा दी। सब के साथ भोजन करने के बाद उसने पास के मकान में मेहमानों के लिए कोमल सुखदायी शैय्याएँ बिछवाईं और उनसे आराम करने को कहा। वह स्वयं गुल अनार को साथ ले कर अपने शयन कक्ष में चला गया। कुछ दिन बाद अतिथियों ने जाना चाहा तो बादशाह ने उन्हें आग्रहपूर्वक रोका कि गुल अनार के प्रसव तक तो रुक ही जाओ। वे लोग भी इस बात को सहर्ष मान गए और ईरान का सम्राट रोजाना उनके लिए नए-नए मनोरंजन प्रस्तुत करवाता रहा।

समय आने पर एक दिन गुल अनार प्रसव-पीड़ा से छटपटाने लगी। दूसरे दिन उसने एक पुत्र को जन्म दिया। यह पुत्र सुंदरता में चंद्रमा के तुल्य था इसलिए उसका नाम बद्र (चंद्रमा) रखा गया। गुल अनार की माँ ने अपने देश के अनुसार भी रस्में कीं और यहाँ के रिवाज के अनुसार छठी का भारी जोड़ा भी दिया। ईरान के सम्राट ने सार्वजनिक उत्सव की आज्ञा दी और देश के सभी निवासियों ने अपने-अपने घरों में राग-रंग का आयोजन किया।

शाही महल में जो उत्सव हुए उनका तो वर्णन ही असंभव है। बादशाह ने खजाने का मुँह खोल दिया और दीन-दुखियों को दान तथा सैनिकों, विद्वानों, कलाविदों आदि को भरपूर पारितोषिक दिए गए।

जब सौर गृहवास के दिन पूरे हो गए तो मलिका गुल अनार को स्नान करवाया गया और बादशाह, सुल्तान सालेह, उसकी माता तथा अन्य संबंधी नवयौवनाएँ बच्चे को देखने के लिए आए। सभी ने उसे उठा कर चूमा और तरह-तरह से प्यार-दुलार किया। सब के बाद सालेह बच्चे की दाई के पास गया और उसकी गोद से बच्चे को ले कर काफी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। जब सब लोग इधर-उधर की बातों में लगे थे तो सालेह चुपचाप कमरे के दरवाजों से बाहर निकला और तेजी से समुद्रतट की ओर चला। सब लोग तो इत्मीनान से रहे किंतु बादशाह घबराने लगा। सालेह तेजी से समुद्र तट पर पहुँचा और एक ऊँची जगह से झम से समुद्र में कूद पड़ा।

बादशाह यह देख कर हाय-हाय करने लगा और सिर पीटने लगा। मलिका गुल अनार ने हँस कर उसे धैर्य दिया, बादशाह सलामत, आप परेशान न हों। बच्चे को कुछ भी नहीं होगा। आप देखते तो जाइए। आप उसके पिता हैं तो मैं भी उसकी माँ हूँ, मैं तो कुछ भी चिंता नहीं कर रही।

बादशाह ने पूछा, लेकिन तुम्हारे भाई को यह क्या सूझी? उसने ऐसा क्यों किया? गुल अनार ने कहा, उन्होंने इसलिए यह किया कि बच्चे को हम लोगों की तरह जल और स्थल दोनों में रहने की आदत हो जाय। उसकी माँ तथा अन्य संबंधियों ने भी बादशाह

को ऐसे आश्वासन दिए तो उसका चित्त स्थिर हुआ।

कुछ देर बाद समुद्र की सतह पर फिर उथल-पुथल होने लगी और सालेह बद्र को गोद में लिए हुए जल-तरंगों से बाहर आया। फिर वह हवा में उड़ता हुआ महल में आया जहाँ बादशाह और दूसरे लोग बैठे थे। बादशाह को यह देख कर ताज्जुब हुआ कि बच्चा अपने मामा की गोद में सो रहा है। सालेह ने बादशाह से कहा, सरकार, जब मैं आपके बच्चे को ले कर समुद्र में गया था तो आपको डर तो नहीं लगा था? बादशाह ने कहा, भाई, क्या पूछते हो। मेरी तो जान ही निकल गई थी। अब उसे सही-सलामत देख कर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मुझे नए सिरे से जीवन मिला है।

सालेह ने कहा, बच्चे को कुछ हो ही नहीं सकता था। मैंने समुद्र में पैठने के पहले हजरत सुलैमान की अँगूठी पर खुदा महामंत्र इस्मे-आजम पढ़ लिया था। हमारे यहाँ की यह रीति हे कि हम लोगों की नस्ल में कोई बच्चा अगर पृथ्वी पर पैदा होता है तो हम इस्मे-आजम की शक्ति के बल पर उसे जल के अंदर ले जाते हैं। वही मैंने किया। यह कह कर उसने बच्चे को दाई की गोद में दे दिया।

फिर उसने अपने वस्त्रों से एक छोटा संदूकचा निकाला। उसमें से सौ हीरे, जो कबूतर के अंडों के बराबर थे, निकाले। इसके अलावा सौ लाल और नीलम जिनमें प्रत्येक लगभग आधी छटाँक का था निकाले और तीस हार भी नीलम के निकाले और उन्हें बादशाह को दे कर कहा, हमें मालूम न था कि मेरी बहन कितने ऐश्वर्यवान बादशाह को ब्याही है। हमारी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें।

ईरान का बादशाह उन रत्नों को देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उनमें दो इतने बड़े थे कि समस्त पृथ्वी पर कहीं न होंगे। उसने हर्षपूर्वक इस भेंट को आँखों से लगाया और सालेह से कहा, भाई, मैं तुम्हारी विनयशीलता से अति प्रभावित हूँ। तुम उन रत्नों को, जिनसे कई राज्य खरीदे जा सकते हैं, तुच्छ भेंट कहते हो। फिर उसने अपनी मलिका से कहा, सुंदरी, तुम्हारे भाई साहब मुझे यह सारे रत्न भेंट में दे रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि इनमें थोड़े-से रख कर शेष उन्हें वापस करूँ। किंतु वे उन्हें लेने को तैयार नहीं हैं। तुम अगर उन पर जोर दो तो वे शायद मान जाएँ। गुल अनार ने उत्तर दिया, हे स्वामी, आप निःशंक हो कर उन्हें स्वीकार करें। इस प्रकार के रत्न पृथ्वी पर कम हैं, किंतु समुद्र में उनकी कोई कमी नहीं है। मेरे भाई को यह सब देने पर भी कोई हानि नहीं होगी। बादशाह यह सुन कर चुप हो गया और उसने वह पूरी भेंट स्वीकार कर ली।

कुछ दिन बाद सालेह ने बादशाह से कहा, आपने हमारा इतना स्वागत-सत्कार किया कि हम आपको यथोचित धन्यवाद नहीं दे सकते। लेकिन हमें यहाँ आए अब बहुत दिन हो गए हैं। मुझे अब अपने राज्य को वापस जाना चाहिए। आप तो जानते ही हैं कि बादशाह की अनुपस्थिति में राज्य-प्रबंध में कुछ न कुछ गड़बड़ पैदा हो जाती है। अतएव हमें अनुमति दीजिए कि हम आप से और बहन से विदा लें और अपने देश को सिधारें।

बादशाह ने कहा, तुम्हें जाने देने को जी तो नहीं चाहता लेकिन बात तुम्हारी ठीक है और मैं विवशतापूर्वक तुम्हें विदा दे रहा हूँ। किंतु यह जोर दे कर कहता हूँ कि बद्र को न भूलना और बद्र तथा उसकी माँ को देखने के लिए कभी-कभी यहाँ आते रहना।

अतएव सालेह उससे विदा हो कर अपनी माता और कुटुंबीजनों के साथ अपने देश में गया। इधर सब लोग यथावत रहने लगे। बद्र जैसे-जैसे बड़ा होता रूप और गुण में और भी निखरता जाता और उसके माता-पिता उसके विकास को देख कर प्रसन्न होते। कभी-कभी बद्र का मामा और नानी भी उसे देखने को आते। बद्र कुछ बड़ा हुआ तो उसे विभिन्न विद्याएँ और कलाएँ सिखाने के लिए विद्वान अध्यापक रखे गए। पंद्रह वर्ष की अवस्था में वह सारी विद्याओं और कलाओं में निपुण हो गया। अब उसके पिता ने उसे युवराज घोषित कर के उसके हाथ में राज्य का प्रबंध दे दिया। उसने कुछ ही दिनों में शासन को सुचारु रूप से सँभाल लिया। उसके शासन प्रबंध से कर्मचारी और प्रजा दोनों प्रसन्न हुए। बादशाह ने यह देखा तो एक दिन पूर्व घोषणा के उपरांत अपने हाथ से अपना राजमुकुट उसे पहनाया और उसके सम्मानार्थ उसके हाथ चूमने के बाद वह स्वयं मंत्रियों और अमीरों की पंक्ति में जा बैठा। सामंतों, मंत्रियों आदि ने नए बादशाह को भेंटें दीं और उसकी आज्ञा का पालन करने लगे। राजदरबार से उठ कर जब राजमुकुट लगाए हुए बद्र अपनी माँ के पास गया तो उसने दौड़ कर उसे सीने से लगा लिया।

उसके पिता ने दो वर्ष तक उसका राज्य प्रबंध देखा और उसे हर प्रकार से चतुर पा कर नगर के बाहर जा कर एकांत स्थान में भजन आदि में समय बिताने लगा। बद्र जी-जान से राज्य प्रबंध में लगा। वह नगर-नगर, ग्राम-ग्राम जा कर स्वयं सारी व्यवस्था देखता। अवकाश के समय में जंगल में जा कर शिकार खेलता। कुछ वर्षों के बाद पुराना सम्राट बीमार पड़ा और उसका रोग बढ़ता गया। अंततः वह मर गया। मरने के पहले उसने मंत्रियों आदि को बुला कर नए बादशाह के प्रति वफादार रहने की ताकीद की। उसके मरने पर बद्र और उसकी माता ने उसका बड़ा मातम किया और गौरवपूर्ण ढंग से उसके अंतिम संस्कार किए। इस अवसर पर सालेह और उसकी माँ भी शामिल हुए।

जब बादशाह के अंतिम संस्कार से फुरसत मिली तो सालेह ने एक दिन अपनी बहन से कहा, ताज्जुब है तुम्हें अभी तक बद्र के विवाह की चिंता नहीं हुई यद्यपि वह कई वर्षों से विवाह योग्य हो चुका है। लेकिन उसके बारे में तुम्हें उस समय बताऊँगा जब बद्र सो जाएगा क्योंकि संभव है उस पर वह बिना देखे ही मोहित हो जाए।

बद्र के कान में इस बात की भनक पड़ गई। रात को वह ऐसा बन गया कि जैसे गहरी नींद सो रहा है किंतु वास्तव में बगल के कमरे में माँ और मामा के बीच होनेवाला वार्तालाप सुनता रहा। वे दोनों भी उसे सोता जान कर अपने साधारण स्वर में बातें करने लगे थे।

सालेह ने अपनी बहन से कहा, मैं जिस शहजादी को बद्र के योग्य समझता हूँ वह समंदाल देश के बादशाह की पुत्री है। यह देखो, मैं तुम्हारे दिखाने के लिए उसकी एक नवनिर्मित मूर्ति ले आया हूँ। इससे तुम्हें उसके सौंदर्य का अंदाजा हो जाएगा। दिक्कत

सिर्फ एक है। समंदाल नरेश बहुत ही घमंडी है और किसी को भी अपनी हैसियत का नहीं समझता है। इसीलिए उसने अपने पुत्री का विवाह अब तक नहीं किया। फिर भी वह इतनी सुंदर है कि अगर बद्र को उसके सौंदर्य का पता चलेगा तो उसके प्रेम में पागल हो जाएगा बल्कि जान तक दे देगा। उस शहजादी का नाम है जवाहर।

गुल अनार बोली, मैं समंदाल के सुल्तान को जानती हूँ। मुझे आश्चर्य है कि उसकी बेटी अब तक कुआँरी है। अपना देश छोड़ने के पहले मैंने उसे देखा था। उस समय वह आठ महीने की थी। वह उसी समय इतनी सुंदर थी कि उसका सौंदर्य दूर-दूर तक विख्यात था। इस समय जवानी में तो उसके रूप का कहना ही क्या होगा। फिर भी वह बद्र से बड़ी है और उसे समंदाल नरेश से माँगने में क्या कठिनाई हो सकती है? सालेह ने कहा कि मैंने बताया कि वह बादशाह बड़ा ही घमंडी है। देखो बहन, मैं पूरा प्रयत्न करूँगा कि उसके पिता को विवाह के लिए राजी करूँ। लेकिन काम मुश्किल है और इसमें देर लग सकती है। इस बीच बद्र को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए वरना इसमें संदेह नहीं कि वह जवाहर के प्रेम में पागल हो जाएगा और जान दे देगा। इसी प्रकार दोनों में बातें होती रहीं और बद्र सुनता रहा।

दूसरे दिन उसने चुपके से अपनी माँ के संदूक से निकलवा कर जवाहर की वह मूर्ति देखी जो उसके मामा ने अपनी बहन को दी थी। वह सचमुच ही मूर्ति देख कर जवाहर पर मर मिटा। अब उसका जी न खाने-पीने में लगता था न किसी से बोलने- चालने में। वह रात-दिन अपनी प्रिया के ध्यान में निमग्न रहने लगा। जब सालेह अपनी बहन से विदा लेने आया तो उसने भानजे की बदली हुई हालत देख कर पूछा कि क्या बात है, तुम्हारी तबियत तो ठीक है? बद्र ने कहा, मेरे स्वास्थ्य को कुछ नहीं हुआ है लेकिन आप अभी यहाँ से न जाएँ। मेरा जी घबराने लगा है और मुझे आप के साथ ही रह कर संतोष होता है। आप दो-चार दिन और रुकिए। हम लोग कल शिकार के लिए चलेंगे।

सालेह ने यह मंजूर कर लिया। वास्तव में बद्र चाहता था कि अपनी माँ से छुपा कर अपने मामा से अपने दिल की हालत कह दे और शिकार ही से आगे बढ़ कर वह अपनी प्रिया की खोज में निकल जाए। माँ से साफ-साफ कहना संभव ही नहीं था क्योंकि वह उसे किसी हालत में नहीं जाने देती। चुनांचे दोनों मामा-भानजा कुछ सेवकों के साथ शिकार पर निकल गए। वहाँ दोनों ने एक हिरन के पीछे अपने घोड़े डाल दिए। इसी चक्कर में पहले दोनों अपने सेवकों से अलग हो गए, फिर एक-दूसरे से भी। बद्र एक घने वृक्ष के नीचे घोड़े से उतर कर बैठा और अकेले में अपनी प्रिया का नाम ले कर रुदन करने लगा। कुछ देर बाद सालेह भी उसे ढूँढ़ता हुआ आया तो देखा कि एक पेड़ के नीचे बद्र विरह विलाप कर रहा है।

सालेह समझ गया कि मैंने अपनी बहन से जो शहजादी जवाहर के बारे में कहा था वह इसने सुन लिया है। वह घोड़े से उतर कर धीरे-धीरे आ कर एक पेड़ की आड़ में खड़ा हो कर सुनने लगा। बद्र कह रहा था, हे मेरी प्राण प्यारी समंदाल पुत्री, मैं तो तुम्हारी मूर्ति देख कर ही अपना धैर्य खो बैठा हूँ। मेरा विश्वास है कि तुम सारे संसार की राजकुमारियों

ही से नहीं, चंद्रमा से भी अधिक सुंदर हो। तुमने मेरे हृदय पर अधिकार कर लिया है। लेकिन मैं कहाँ जाऊँ कि तुम मुझे मिलो। सालेह को इससे अधिक सुनने का धैर्य न रहा। वह आगे बढ़ कर बद्र के पास जा बैठा और बोला, इसका मतलब यह है कि तुमने हम-भाई बहन की बातें सुन ली हैं। हमने तो इस बात का ध्यान रखा था कि तुम्हें कुछ न मालूम हो लेकिन हम लोगों की होशियारी कुछ काम नहीं आई।

बद्र ने कहा, जो कुछ होना था वह तो हो ही गया। अब सोचिए कि आगे क्या होना है। यदि आप चाहते हैं कि मैं जीवित रहूँ तो मेरे विवाह का संदेशा ले कर जाएँ और उसके पिता को राजी करें। सालेह ने उसे दिलासा देते हुए कहा, तुम अब अपने नगर को जाओ। मैं अभी समंदाल देश जाता हूँ और तुम्हारे विवाह की बात वहाँ के बादशाह से चलाता हूँ। बद्र बोला, नहीं मामाजी, आप मुझे बहला रहे हैं। अगर आप को वास्तव में मेरे प्राणों की चिंता होती तो ऐसी दशा में मुझे अकेला नहीं छोड़ते। अगर आप को वास्तव में मुझसे प्रेम है तो मुझे भी अपने साथ ले चलें। सालेह ने कहा, भाई, कैसी बातें करते हो? तुम्हें तुम्हारी माँ की अनुमति के बगैर मैं किस तरह ले जा सकता हूँ?

बद्र ने कहा, फिर तो हो चुका। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मेरी माँ मुझे प्राणों से भी अधिक चाहती हैं। वे मुझे कभी आपके साथ जाने नहीं देंगी।

सालेह अजीब चक्कर में पड़ा कि किस तरह वह इस स्थिति से निकले। उसने कुछ देर सोच कर कहा, मैं तुम्हें अपने साथ तो नहीं ले जा सकता किंतु यह अँगूठी देता हूँ जिस पर इस्मे-आजम (चमत्कारी महामंत्र) खुदा है। इसे पहन कर निःशंक पानी में घुस जाना, तुम्हें कुछ नहीं होगा। बद्र ने अँगूठी पहन ली। सालेह ने कहा, अब तुम्हारे हाथ में चमत्कारी अँगूठी है और जो कुछ मैं कर सकता हूँ वह सब तुम कर सकते हो। तुम मेरे पीछे-पीछे आओ। यह कह कर वह हवा में उड़ने लगा। बद्र भी उसके पीछे उड़ता हुआ समुद्र तट पर पहुँचा। फिर वह अपने मामा के पीछे समुद्र में गोता लगा गया और दोनों तेजी से चलते हुए सालेह के राज्य में पहुँच गए। बद्र को सालेह अपनी माँ के पास ले गया।

बद्र ने आदरपूर्वक नानी के हाथ चूमे और वह भी उसे देख कर बड़ी प्रसन्न हुई और आशीर्वाद देने लगी और उसे खूब प्यार करने लगी। उसने परिवार की अन्य स्त्रियों से भी मिलवाया और सब लोग बहुत देर तक बातें करते रहे।

इस बीच सालेह ने अवकाश पा कर अपनी माँ से बद्र का सारा हाल बताया कि वह किस प्रकार समंदाल देश की शहजादी के पीछे पागल हो गया है। उसने कहा कि अब तुम बद्र को रखना, मैं समंदाल के बादशाह से बद्र के लिए जवाहर को माँगने जा रहा हूँ। उसने कहा, मैंने और गुल अनार ने इस बात का बहुत ध्यान रखा कि इस बात की भनक बद्र को न लगे किंतु उसे मालूम हो ही गया और अब सिवाय इसके कुछ नहीं हो सकता कि जल्दी से जल्दी विवाह की बात की जाय।

सालेह की माँ बड़ी चिंतित हुई। उसने कहा, यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम यह नहीं

जानते कि समंदाल का बादशाह बहुत ही घमंडी है? तुमने उसकी बेटी की बात ही अपनी बहन से क्यों की? इसी से तो बद्र पर पागलपन चढ़ा है। सालेह ने कहा, आप की बात ठीक है, मेरी भूल थी। किंतु अब और किया भी क्या जाय। अगर जवाहर न मिली तो बद्र निश्चय ही अपनी जान दे देगा। मैं इस सिलसिले में जो भी हो सकेगा करूँगा।

मैं वहाँ जा कर विवाह की प्रार्थना करने के पहले बादशाह को बहुमूल्य रत्नों की भेंट दूँगा और फिर चतुरता से बात शुरू करूँगा। आशा है कि मैं अपने कार्य में सफलता प्राप्त करूँगा।

उसकी माँ बोली, बेटा यह सब ठीक हैं फिर भी मुझे बड़ा डर लग रहा है। वह बादशाह बेहद घमंडी है और क्रोध में न जाने क्या करे। तुम मेरे सबसे कीमती जवाहरात ले जाओ और उसे भेंट दो। किंतु इस समय बद्र को अपने साथ न ले जाओ, उसे मेरे पास ही छोड़ जाओ। इसके अलावा यह ध्यान रखना कि बड़ी चतुराई से बात शुरू की जाय, किसी भी दशा में उसे क्रुद्ध नहीं होने देना है क्योंकि वह क्रुद्ध हुआ तो विवाह तो होगा ही नहीं, और भी कोई मुसीबत आ सकती है।

यह कह कर बुढ़िया ने अपना संदूकचा खोला और बहुमूल्य रत्न सालेह को दिए और ताकीद की कि कोई भी बात शुरू हो इससे पहले यह भेंट उसे देना ताकि वह प्रसन्न रहे। सालेह ने माँ के दिए हुए रत्न एक सुंदर मंजूषा में रखे और थोड़ी-सी सेना ले कर समंदाल देश की ओर चल दिया। कुछ काल में वह वहाँ पहुँच गया। समंदाल के बादशाह ने उसका यथोचित स्वागत किया। स्वयं सिंहासन से उतर कर उससे मिला और अपने बगल में उसे बिठाया। सालेह विनयपूर्वक बैठ गया। उससे समंदाल के बादशाह ने कहा, शायद आप किसी राजनीतिक कार्यवश आए हैं। मेरे लायक जो काम हो वह बताइए। सालेह ने कहा, कोई राजनीतिक कार्य नहीं था, केवल आपके दर्शन की इच्छा थी। हाँ, एक व्यक्तिगत कार्य भी था। यदि आप मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनना चाहें तो मैं निवेदन करूँ। समंदाल के बादशाह ने हँस कर कहा, जरूर कहिए। कहिए, आपकी क्या सेवा करूँ।

सालेह ने अपने सेवक के हाथ से रत्नों का संदूकचा लिया और समंदाल के बादशाह से कहा, मेरी ओर से यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें। बादशाह ने प्रसन्नतापूर्वक भेंट को स्वीकार किया। फिर सालेह ने कहा, हम दोनों के देशों में जो परंपरागत मैत्री रही है और जिस प्रकार आप जैसे प्रतापी नरेश की दया हम लोगों पर रही है उसी से प्रोत्साहित हो कर मैं आपसे अपने हृदय की बात कहने के लिए आया हूँ। आप का मन अति स्वच्छ है और आप किसी की प्रार्थना नहीं टालते इसीलिए मैं निवेदन कर रहा हूँ कि मेरी बहन का नाम गुल अनार है। बहुत दिन पूर्व उसका विवाह ईरान के सम्राट के साथ हुआ था। उसका एक बेटा है जो इस समय ईरान का सम्राट है। वह न केवल अतीव सुंदर है अपितु प्रत्येक प्रकार की विद्याओं और कलाओं में भी निपुण है। वह पंद्रह वर्ष की अवस्था से राज-काज देख रहा है। अब वह विवाह योग्य हो गया है। मेरी आप से सविनय प्रार्थना है कि आप उसे अपने दासत्व के लिए स्वीकार करें और अपनी अद्वितीय पुत्री जवाहर का विवाह मेरे भानजे बद्र के साथ कर दें।

समंदाल देश का राजा अभी तक तो बड़ा शालीन रहा था किंतु यह सुनते ही उसका चेहरा और आँखें लाल हो गईं। सालेह का हृदय काँपने लगा। कुछ क्षणों के उपरांत समंदाल नरेश ने कहा, सालेह, मैं समझता था कि तुम बड़े समझदार आदमी हो। लेकिन आज मालूम हुआ कि तुममें बिल्कुल बुद्धि नहीं है। मैंने सौजन्य के नाते तुम्हारी अभ्यर्थना अवश्य की किंतु इसका यह अर्थ तो नहीं है कि तुम्हें अपनी बराबरी की हैसियत दे दूँ। क्या तुम नहीं जानते कि मेरा ऐश्वर्य और वैभव कितना अधिक है? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा राज्य मेरे राज्य के सामने अति तुच्छ है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि मेरी पुत्री जवाहर का नाम अपनी जुबान से निकालो। तुम्हारी मौत तो तुम्हें यहाँ नहीं खींच लाई है?

सालेह ने घबरा कर कहा, शायद आपने मेरी बातों का अर्थ ठीक नहीं समझा। मैं बूढ़ा आदमी हूँ। मैं अपने लिए जवाहर को नहीं माँग रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे भानजे यानी ईरान के सम्राट बद्र के साथ कर दीजिए।

समंदाल का बादशाह यह सुन कर और क्रुद्ध हुआ और आपे से बाहर हो कर कहने लगा, तूने यह कह कर मेरा और अपमान किया है। कमबख्त, तू समझता है तेरे भानजे की कोई बराबरी मेरी बेटी से हो सकती है? तेरा भानजा क्या चीज है। यह कह कर उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि सालेह को पकड़ कर उसका सिर काट लें। सालेह इस स्थिति को पहले ही से भाँपे हुए था। उसके कुछ सेवक बादशाह का क्रोध देख कर पहले ही भाग गए थे और अपनी सेना के बजाय भाग कर अपने देश को चले गए थे।

किंतु सालेह तड़प कर समंदाल के सैनिकों के बीच से निकल गया और टेढ़े-मेढ़े रास्तों से चल कर अपनी सेना में जा पहुँचा। उसका सेनापति उसकी दशा सुन कर आगबबूला हो गया और बोला, आप अपनी सैना की कमी को न देखिए। एक बार हमें जौहर दिखाने का आदेश दीजिए, फिर देखिए क्या तमाशा होता है।

सालेह ने आक्रमण का आदेश दिया। समंदाल की सेना ने सामना किया किंतु परास्त हुई। सालेह ने उस बादशाह को कैद कर लिया और उसकी पुत्री को पकड़ लाने के लिए उसके महल पर चढ़ दौड़ा। किंतु जवाहर को पहले से इसकी भनक लग गई थी और वह कुछ दासियों के साथ भाग कर एक सुनसान द्वीप में जा छुपी। इधर सालेह के जो सेवक पहले ही भाग कर अपने देश में पहुँचे थे उन्होंने जा कर सालेह की माता से कहा कि समंदाल के बादशाह ने अब तक सालेह को मरवा डाला होगा। वह बेचारी यह सुन कर पछाड़ खा कर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। दूसरे लोग भी रोने-पीटने लगे। बद्र भी वहाँ मौजूद था। उसे बड़ी ग्लानि हुई कि मेरे कारण मेरे मामा की जान गई। उसने सोचा कि अब मैं इन लोगों को क्या मुँह दिखाऊँ। यह सोच कर वह ईरान के लिए चल पड़ा।

बद्र बड़ी हड़बड़ी में चला था इसलिए पानी में रास्ता भूल गया और कई दिन बाद भटकता हुआ उसी टापू में पहुँचा जहाँ पर जवाहर ने आश्रय लिया था। वह थक कर एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था कि उसे एक ओर से कुछ स्त्रियों की बोली सुनाई दी। वह उधर गया तो देखा कि एक शहजादी दासियों से घिरी बैठी है। वह समझ गया कि यही

मेरी प्रेयसी है। उसने पास जा कर कहा, भगवान की बड़ी दया है कि आपसे भेंट करने का अवसर मिला। मैं आपका सेवक हूँ। अगर आपकी कुछ सहायता कर सकूँ तो मुझे प्रसन्नता होगी। जवाहर बोली, आपके वचनों से मुझे बड़ा धैर्य मिला। मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। मैं समंदाल नरेश की बेटी जवाहर हूँ। पड़ोस के एक राजा सालेह ने हम पर आक्रमण कर के मेरे पिता को कैद कर लिया है। मैं किसी तरह भाग कर यहाँ पर आ कर छुपी हूँ।

बद्र ने बगैर आगा-पीछा सोचे अपना सच्चा परिचय दे दिया। उसने कहा, मैं ईरान का सम्राट हूँ। मेरा नाम बद्र है। सालेह साहब मेरे मामा हैं। वे आपके साथ मेरे विवाह का संदेशा ले कर आपके पिता के पास गए थे किंतु आपके पिता ने उन्हें मार डालने का आदेश दिया। इस पर मेरे मामा की सेना ने आपके देश पर चढ़ाई कर दी और आपके पिता को कैद कर लिया। अब आप धैर्य रखिए। सालेह केवल यह चाहते हैं कि आपके पिता आपको मुझ से ब्याह दें। अब मैं इन दोनों बादशाहों से मेल करा दूँगा।

जवाहर बद्र के रूप और शील को देख कर मोहित थी किंतु जब उसे मालूम हुआ कि इसी नवयुवक के कारण मेरे राज्य पर विपत्ति आई है तो उसके हृदय में क्रोध भर गया। चूँकि उसका सीधा सामना नहीं कर सकती थी इसलिए उसने छल से काम लिया। वह जादूगरनी थी लेकिन मंत्र पढ़ने के लिए भी किसी तरह के पानी की जरूरत होती है और वह टापू निर्जल था। उसने कहा, ईरान के सम्राट, मुझे आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। वास्तव में मेरे पिता ने बड़ी भूल की कि मेरा विवाह आप से नहीं किया शायद वे आपको देखते तो इनकार न करते। खैर, अब तो मेरे पास आ कर बैठिए। यह कह कर उसने हाथ बढ़ाया। बद्र ने पास आ कर उसका हाथ पकड़ना चाहा तो उसने हाथ खींच लिया और उसके मुँह पर थूक दिया और इस प्रकार जल की कमी पूरी कर के मंत्र पढ़ कर उसे लाल पीठ और पाँवों का पक्षी बना दिया और एक दासी से कहा, इसे इससे भी अधिक निर्जल द्वीप में छोड़ दे ताकि यह वहाँ भूखा-प्यासा मर जाए।

दासी पक्षी रूपी बद्र को पकड़ कर ले चली। मार्ग में उसे उस पर दया आई कि ऐसा लाड़-प्यार का पाला जवान बगैर दाना-पानी के तड़प-तड़प कर मरेगा। उसने यह भी सोचा कि यद्यपि शहजादी ने क्रोध में उसे ऐसा दंड दिया है किंतु स्वभावतः वह दयालु है और क्रोध उतरने पर इसकी मौत पर उसे पछतावा ही होगा। इसलिए उसने तय किया कि उसे निर्जन द्वीप में तो छोड़े किंतु वह हरा-भरा द्वीप हो जहाँ वह जीवित रह सके। उसने यही किया, ऐसे द्वीप में उसे ले जा कर छोड़ा जहाँ सघन वृक्ष थे और पानी के झरने थे और जगह-जगह पर तालाब भी थे।

इधर सालेह ने महल में बहुत तलाश करवाई किंतु जवाहर कहीं न मिली। उसने क्रोध में आ कर अपने सेवकों को आदेश दिया कि समंदाल नरेश को बंदीगृह में तरह-तरह के कष्ट दो क्योंकि उसे जवाहर के बारे में मालूम होगा और जब कष्ट से बेचैन हो जाएगा तो उसका पता बताएगा। फिर वह अपने देश में वापस आया और दूसरे दिन अपनी माँ से पूछा कि बद्र दिखाई नहीं देता, क्या बात है। उसकी माँ ने कहा कि जब मैंने समंदाल

नरेश के तुमसे कुपित होने का समाचार सुना और वहाँ से तुम्हारी सहायता के लिए दूसरी बड़ी सेना भेजी उसी समय से बद्र कहीं दिखाई नहीं देता है, पता नहीं वह कहाँ चला गया।

सालेह यह सुन कर बड़ा दुखी हुआ और सोचने लगा कि इतना सारा झंझट बेकार ही हुआ, मैंने बद्र की प्रसन्नता के लिए ही यह सब किया था और इस समय बद्र ही गायब है। उसे बड़ी लज्जा लगी कि अब वह अपनी बहन को क्या मुँह दिखाएगा। उसने अपने सरदारों और समस्त उच्च कर्मचारियों को आदेश दिया कि सारे देश में खोज कर के बद्र का पता लगाया जाय। किंतु कई दिनों तक तलाश होने पर भी उसका पता नहीं चला। फिर सालेह ने सोचा कि संभव है कि बद्र खुद भी उसकी सहायतार्थ समंदाल देश को गया हो। इसलिए सालेह ने अपनी माँ को राज्य का प्रबंध सौंपा और स्वयं समंदाल देश को चल पड़ा।

इधर ईरान में मलिका गुल अनार ने बहुत दिनों तक प्रतीक्षा की किंतु सालेह या बद्र किसी की वापसी न हुई। फिर उसने दोनों के साथ गए शिकारियों को पुछवाया कि वे आए हैं या नहीं। उन्होंने वापस आ कर मलिका का आदेश सुना तो उसके पास आए और कहने लगे, दोनों ने एक हिरन के पीछे घोड़े डाल दिए थे और हम पीछे रह गए। बहुत दिनों तक हम उन्हें ढूँढ़ते रहे। वे तो नहीं मिले किंतु उनके घोड़े एक पेड़ से बँधे हुए मिले। हम उन्हीं घोड़ों को ले कर चले आए।

शिकारियों की बात सुन कर मलिका को इत्मीनान हुआ कि घोड़ों को छोड़ कर सालेह और बद्र दोनों समुद्र में प्रवेश कर गए होंगे और सालेह के राज्य में चले गए होंगे। प्रकट में उसने शिकारियों और सिपाहियों को आज्ञा दी कि बद्र और सालेह को उसी वन में ढूँढ़ते रहें जहाँ से वे गायब हुए थे। फिर वह अपनी दासियों की नजर बचा कर समुद्र में पैठ गई और अपने मायके पहुँची। वहाँ जा कर अपनी माँ से पूछा कि सालेह और बद्र अचानक गायब हो गए हैं, कहीं ऐसा तो नहीं कि वे यहाँ आए हों।

उसकी माँ ने कहा, बेटी, उन दोनों का हाल मैं क्या बताऊँ। उन दोनों के यहाँ पर आने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई किंतु जब सालेह ने बताया कि बद्र समंदाल की शहजादी के पीछे पागल है और उससे विवाह न हुआ तो जान दे देगा तो मैं चिंतित हुई कि वह बादशाह तो बड़ा घमंडी है, इस विवाह के लिए कैसे तैयार होगा। सालेह ने कहा कि मैं विवाह का प्रस्ताव ले कर जाता हूँ। मुझे जो आशंका थी वही हुआ। समंदाल नरेश ने क्रुद्ध हो कर सालेह को पकड़ लिया और उसका वध करने का आदेश दिया। उसके साथ के कुछ लोग भाग कर यहाँ आए और हाल सुनाया। मैंने यह सुन कर एक बड़ी सेना सालेह को छुड़ाने के लिए भेजी। यह हाल सुन कर बद्र किसी ओर को चुपचाप निकल गया। उधर सालेह समंदाल नरेश के बंधन से निकल भागा और अपनी थोड़ी-सी सेना से समंदाल के बादशाह को हरा कर उसे कैद कर लिया। वापस आने पर जब उसे बद्र के गुम होने का हाल मालूम हुआ तो यहाँ ढुँढ़वाने के बाद उसकी खोज में फिर समंदाल चला गया।

गुल अनार यह सुन कर रोने लगी। वह अपने भाई को बुरा-भला भी कहने लगी कि अच्छी शहजादी का जिक्र किया कि लड़के का दिमाग ही फिर गया। उसकी माँ ने कहा, इसमें संदेह नहीं कि सालेह को चाहिए था कि जवाहर का उल्लेख तुमसे करते समय सावधानी बरतता कि बद्र को यह मालूम न हो पाता। किंतु अब तुम चिंता न करो। वह बद्र को जरूर ढूँढ़ निकालेगा। तुम्हारे लिए यही उचित है कि ईरान जा कर राज्य प्रबंध सँभालो वरना वहाँ कोई उपद्रवी व्यक्ति गड़बड़ी कर सकता है। गुल अनार ने माँ की सलाह मान ली और ईरान वापस आ गई। ईरान आ कर उसने एक और समझदारी का काम किया। उसने राजधानी में घोषणा करवा दी कि बद्र का हालचाल मालूम हो गया है, वह सकुशल है और शीघ्र ही यहाँ वापस आएगा। सभी लोग इस बात को सुन कर प्रसन्न हुए और यथानियम अपना-अपना काम मुस्तैदी से करने लगे।

अब बादशाह बद्र का हाल सुनिए। जब दासी उसे पक्षी के रूप में पृथ्वी के एक टापू पर छोड़ आई तो वह अपने को पक्षी के शरीर में देख कर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ। उसे मालूम भी न था कि ईरान किधर है और उसके पंखों में इतनी शक्ति भी न थी कि उड़ कर किसी दूर देश को जाता। और ईरान पहुँच भी जाता तो क्या लाभ था, उसे पक्षी के रूप में कौन पहचान पाता। मजबूरी में उस द्वीप के फल और दाने खाता रहता और रात को किसी डाल पर बैठ कर सो जाता। कुछ दिन बाद एक चिड़ीमार जाल ले कर वहाँ आया और उसे देख कर आश्चर्य करने लगा। उसने इतना सुंदर पक्षी कभी नहीं देखा था। उसने जाल बिछाया और अन्य पक्षियों के साथ बद्र को भी पकड़ लिया और नगर में आ कर बाजार में पक्षियों को बेचने के लिए बैठ गया।

कई लोगों ने उस लाल रंग के पक्षी का दाम पूछा। चिड़ीमार ने कहा, यह तुम लोगों के काम का नहीं है। तुम इस का क्या करोगो? भून कर खाने के लिए ही तो खरीद रहे हो। इसका क्या दोगे? दो-चार आने या हद से हद एक रुपया। तुम दूसरे पक्षी ले लो। इसे तो मैं यहाँ के बादशाह को भेंट दूँगा। वह इसकी कद्र करेगा और मुझे अच्छा इनाम देगा। उस बहेलिए ने ऐसा ही किया। वह पक्षी को ले कर राजमहल की ओर गया। संयोग से उस समय बादशाह महल के छज्जे पर बैठा हुआ बाजार का तमाशा देख रहा था। उसने बहेलिए के पिंजरे में वह सुंदर पक्षी देखा तो सेवकों द्वारा बहेलिए को बुलाया। बहेलिया आया तो बादशाह ने पूछा, इस पक्षी को कितने में बेचोगे? बहेलिए ने भूमि चूम कर कहा, पृथ्वीपाल, मैं इसे बेचने के लिए नहीं लाया हूँ, सरकार को भेंट देने के लिए लाया हूँ। ऐसे सुंदर पक्षी की कद्र बादशाह के अलावा और कौन कर सकता है?

बादशाह चिड़ीमार की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने चिड़ीमार को दस अशर्फियाँ दिलवाईं और पिंजरा रखवा लिया। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इस पक्षी को सोने के पिंजरे में रखा जाए ओर इसकी दाने-पानी की प्यालियाँ नीलम की हों। एक दिन बाद उसने सेवकों से पूछा कि लाल रंग के पक्षी का क्या हाल है। उन्होंने कहा, हमने उसके लिए अच्छा से अच्छा दाना और पानी रखा किंतु वह कुछ खाता-पीता ही नहीं है। बादशाह के खाने का समय हो गया था। उसने भोजन भी मँगवाया और पक्षी को भी पिंजरे से निकाल कर अपने हाथ पर बिठाया। ज्यों ही शाही भोजन की तश्तरियाँ लगीं

कि पक्षी बने हुए बद्र ने कूद-कूद कर स्वादिष्ट राजसी व्यंजन खाना शुरू कर दिया। बादशाह को यह देख कर हँसी आई कि यह पक्षी भी राजसी व्यंजनों का शौकीन हैं। उसने दासियों को आज्ञा दी कि मलिका को भी बुला लाएँ ताकि वह इस पक्षी का तमाशा देखें।

मलिका आई तो मुँह खोले हुए किंतु पक्षी को देखते ही उसने मुँह पर नकाब डाल लिया। बादशाह ने आश्चर्य से पूछा, मलिका, यहाँ तो केवल मैं हूँ और महल की दासियाँ। यहाँ कौन बेगाना मर्द बैठा है जिससे तुम परदा कर रही हो? मलिका ने कहा, आप गैर मर्द को अपने हाथ पर लिए बैठे हैं। बादशाह ने कहा, तुम पागल तो नहीं हो गई हो? आदमी किसी आदमी को हाथ पर ले कर कैसे बैठ सकता है? मलिका ने कहा, नहीं, मैं ठीक कह रही हूँ। यह पक्षी जिसे आप हाथ पर लिए बैठे हैं स्वाभाविक पक्षी नहीं है। यह आदमी है जिसे जादू के जोर से पक्षी बना दिया गया है।

बादशाह का कौतूहल बढ़ा। उसने विस्तारपूर्वक सारा हाल बताने को कहा तो मलिका ने बताया, यह ईरान का बादशाह है। इसका नाम बद्र है। इसकी माता गुल अनार है जो एक प्रख्यात जलदेश की शहजादी है। इसकी नानी का नाम रानाफर्राशी है, वह भी एक अन्य जलदेश की राजकुमारी थी। प्रख्यात जलदेश समंदाल की शहजादी जवाहर ने क्रोध में आ कर इसे जादू के जोर से पक्षी बना दिया है। बादशाह को यह सुन कर बड़ा खेद हुआ। वह बोला, देखो भाग्य भी कैसे-कैसे खेल खिलाता है। कहाँ तो यह बादशाह था, कहाँ अब पक्षी बन कर पिंजरे में बंद है। एक बात बताओ। तुम अगर इतना सब जानती हो तो यह भी जानती होगी कि यह किसी तरह अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर सकता है या नहीं।

मलिका ने कहा, यह क्या मुश्किल है। मैं भी जादू जानती हूँ और इसलिए मैंने इसका रूप भी पहचान लिया और इसका इतिहास भी जान लिया। किंतु मैं परदेदार औरत हूँ, इसे अपने सामने इसके असली रूप में न लाऊँगी। आप इसे ले कर दूसरे कक्ष में चले जाइए, फिर मैं जो कुछ करने को आपसे कहलवाऊँ वह कीजिए। वह अपने असली रूप में आ जाएगा।

बादशाह पक्षी को ले कर दूसरे कमरे में चला गया। इधर रानी ने एक पात्र में जल मँगवाया और उस पर मंत्र पढ़ने लगी। कुछ देर में पात्र का जल खौलने लगा। मलिका ने थोड़ा अभिमंत्रित जल बादशाह के पास भिजवाया और जल ले जानेवाली दासी से कहा, बादशाह से कहना कि इस जल को उस पक्षी पर छिड़क कर कहें कि इस मंत्र की शक्ति से तथा समस्त संसार के रचयिता सर्वसमर्थ भगवान की इच्छा से तू अपने पूर्वरूप को प्राप्त हो जा और अगर तू स्वाभाविक रूप से पक्षी हो कर ही जन्मा है तो इसी शरीर में रह।

बादशाह ने मलिका की इच्छानुसार यह शब्द कहे और तुरंत ही बादशाह बद्र अपने असली रूप में आ गया। बादशाह को उसका रूप और चेहरे पर राजसी भाव देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह पक्षी की योनि से छूट गया। बद्र अपने पुराने शरीर को पा कर

खुशी के आँसू बहाने लगा। उसने हाथ उठा कर भगवान को इस कृपा के लिए धन्यवाद दिया और फिर बादशाह के चरणों में गिर पड़ा और उसे भाँति-भाँति रूप से धन्यवाद देते हुए उसके चिरायु और सर्वाधिक वैभवशाली होने की कामनाएँ करने लगा। मलिका ने यह देखा तो संतुष्ट हो कर अपने आवास में वापस चली गई।

बादशाह ने बद्र को उठा कर गले लगाया और फिर उसे अपने साथ बिठा कर भोजन कराया। भोजन के उपरांत उसने बद्र से पूछा कि तुम से शहजादी जवाहर इतनी नाराज क्यों हो गई थी कि तुम्हें इतना बड़ा दंड दे बैठी। बद्र ने उसे आद्योपांत सारी कथा कह सुनाई। बादशाह को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, भाई, तुम्हारी कहानी तो लिख कर रखने के लायक है। अच्छा, जो हुआ सो हुआ। अब तो तुम फिर से अपने रूप में आ गए हो। अब क्या इरादा है। जो मदद मुझसे माँगो मैं देने के लिए तैयार हूँ।

बद्र ने कहा, मेरे गायब होने के बाद मेरी माता दुख से तड़प रही होगी। वैसे तो आपने मुझ पर जो अहसान किया है वही क्या कम है, किंतु यदि मेरी प्रसन्नता की बात पूछते हैं तो मेरे लिए एक जहाज का प्रबंध करा दीजिए जिससे मैं अपने देश ईरान को चला जाऊँ और अपनी माँ को धैर्य दे कर अपना राज्य प्रबंध सँभालूँ।

बादशाह ने खुशी से मंजूर कर लिया। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि बद्र को ईरान वापस ले जाने के लिए एक बढ़िया जहाज सजाया जाए। ऐसा ही किया गया और बादशाह से धन्यवादपूर्वक विदा ले कर बद्र ने ईरान के लिए यात्रा शुरू कर दी। दस दिन तक जहाज आराम से चलता रहा लेकिन ग्यारहवें दिन मुसीबत खड़ी हो गई। समुद्र में एक प्रचंड तूफान आया। साथ ही हवा का रुख भी बदल गया। जिससे जहाज अपने रास्ते से भटक गया। कुछ ही देर में जहाज के सारे मस्तूल टूट गए और जहाज काग की तरह लहरों पर उछलने लगा। देखते ही देखते उसका तला एक जलगत चट्टान से टकराया और जहाज टुकड़े-टुकड़े हो गया। औरों का मालूम नहीं क्या हुआ किंतु बद्र एक तख्ते के सहारे तैरता हुआ कुछ घंटों में भूमि पर जा लगा। यह एक द्वीप था जिसमें समुद्रतट पर एक ओर पहाड़ था और दूसरी ओर दूर पर एक नगर दिखाई दे रहा था। बद्र जल से निकल कर भूमि पर आया और आराम करने के लिए लेट गया।

किंतु तुरंत ही घोड़े, गाएँ और बहुत-से दूसरे जानवर आ कर शोर करने लगे और उसे समुद्र की ओर ढकेलने लगे। वह किसी तरह उनसे बच कर एक पहाड़ की खोह में जा छुपा और कुछ देर आराम करने के बाद और कपड़े सुखाने के बाद नगर में जाने के लिए उद्यत हुआ किंतु वे जानवर फिर आ गए और चिल्ला-चिल्ला कर उसका रास्ता रोकने लगे। वह किसी तरह उनसे बचता-बचाता नगर में प्रविष्ट हो गया। वहाँ उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सड़कों आदि पर सफाई आदि खूब है किंतु दुकानदार कम ही हैं। काफी देर बाद उसे एक दुकान में एक बूढ़ा दिखाई दिया जो वहाँ रखे फलों को पोंछ- पोंछ कर साफ कर रहा था। बद्र ने पास जा कर उसे सलाम किया। उसने बद्र को देखा तो उसके रूप से बहुत प्रभावित हुआ। फिर उसके सलाम का जवाब दे कर उसने पूछा, तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? बद्र ने संक्षेप में अपना परिचय दिया। इसके बाद बूढ़े ने पूछा, मेरे

अलावा तुम्हें और किसी ने तो यहाँ नहीं देखा? बद्र ने कहा, नहीं, आपके सिवा किसी मनुष्य को मैंने यहाँ पर पास से नहीं देखा। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा स्वच्छ और सुंदर नगर ऐसा वीरान क्यों हैं। बूढ़ा बोला, अच्छा, अच्छा, तुम बाहर खड़े न रहो, अंदर आ जाओ।

बद्र अंदर गया तो बूढ़ा बोला, यह बड़ा अच्छा हुआ कि अभी तक तुम्हें किसी ने नहीं देखा है। इस नगर की बड़ी विचित्र कथा है। किंतु तुम भूखे-प्यासे मालूम होते हो, पहले खाना खाओ फिर मैं यहाँ की बातें तुम्हें बताऊँगा। बद्र खा-पी कर तृप्त हुआ तो वृद्ध ने कहना शुरू किया, देखो बादशाह बद्र, यहाँ पर तुम्हें बहुत होशियारी से रहना है, यह जादू नगरी है। यहाँ की शासिका एक स्त्री है। वह अत्यंत रूपवती है और साथ ही मंत्र विद्या में निपुण। वह बड़ी विलासिनी भी है। तुमने देखा होगा कि नगर के बाहर समुद्र तट पर बहुत-से जानवर हैं जो हर एक को रोकने की कोशिश करते हैं कि वह इस शहर में प्रवेश न करे। वे सब पहले तुम्हारी तरह मनुष्य थे। यहाँ की मलिका ने उन्हें अपने मंत्र बल से पशु बना रखा है।

बद्र को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, मलिका आदमी को जानवर क्यों बना देती है?

बूढ़े ने कहा, मैंने तुम्हें बताया न कि मलिका बड़ी विलासप्रिय है। जब कोई तरुण सुंदर पुरुष उसे दिखाई देता है तो वह उसे पकड़वा मँगाती है। मैंने इसीलिए तुमसे पूछा था कि तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं। वह उसका बड़ा आदर-सत्कार करती है और उसके साथ भोग-विलास करती है। कुछ दिनों में जब उसका जी उस आदमी से भर जाता है और जब उसके जाल में कोई और रूपवान पुरुष आ जाता है तो वह इस पहले आदमी को बैल, घोड़ा या कोई और जानवर बना कर छोड़ देती है। ताकि उसका भेद किसी पर प्रकट न हो। यह सब बेचारे जानवर किसी समय उसके प्रेमपात्र रह चुके हैं। जब भी कोई दुर्भाग्य का मारा सुंदर जवान आदमी इस नगर में आना चाहता है तो वे शोर मचा कर उसे रोकने की कोशिश करते हैं। वे बेचारे कोई भाषा तो बोल नहीं पाते कि अपनी दुर्दशा का पूरा हाल कहें। सिर्फ चिल्ला-चिल्ला कर यही कहना चाहते हैं कि वापस चले जाओ, इस मनहूस शहर के अंदर न आना वरना तुम्हारी हालत भी हमारे जैसी हो जाएगी। लेकिन आनेवाला उनके अभिप्राय को समझने में असमर्थ रहता है और उनके शोरगुल को अनसुना कर नगर में चला जाता है और रानी के जाल में फँस कर कुछ दिनों बाद पशु बन कर उन पशुओं में जा मिलता है।

बद्र यह सुन कर बहुत घबराया और कहने लगा, हे ईश्वर, यह कैसा अन्याय है। मैं अभी-अभी एक जादूगरनी के जादू से छूटा हूँ और दूसरी के देश में आ फँसा हूँ। बूढ़े के पूछने पर उसने विस्तार में जवाहर द्वारा अपने पक्षी बनाए जाने और अज्ञात द्वीप की रानी द्वारा फिर से मनुष्य बनाए जाने की कहानी कही। बूढ़े ने कहा, इसमें संदेह नहीं कि तुम बड़े खराब देश में आ फँसे हो लेकिन तुम्हारा भाग्य प्रबल था कि तुम सब से पहले मुझ से मिले। अब तुम इसी दुकान में रह कर काम करो। मुझे यहाँ का हर एक व्यक्ति जानता है, तुम्हें यहाँ रहने में कोई कष्ट न होगा किंतु खबरदार किसी और से मेल-जोल नहीं बढ़ाना वरना

मुसीबत में फँस सकते हो।

बादशाह बद्र ने वृद्ध को बड़ा धन्यवाद दिया कि तुमने मुझे खतरे से सावधान कर दिया। वह उसकी दुकान में बैठा रहता और दुकान का काम किया करता। जो भी व्यक्ति उस बूढ़े की दुकान पर आता वह बद्र के रूप को देख कर ठगा-सा रह जाता। देखनेवालों को यह भी आश्चर्य होता कि यह अभी तक दुष्ट रानी के फंदे से किस तरह बच पाया है क्योंकि वह तो किसी रूपवान मनुष्य को अपने पाश में फँसा कर जानवर बनाए बगैर छोड़ती ही नहीं है। कई लोगों ने बुड्ढे से पूछा कि क्या यह जवान आदमी तुम्हारा दास है। बुड्ढे का हमेशा एक ही जवाब होता, भाइयो, यह मेरा दास नहीं है, मेरा भतीजा है। इसके पिता यानी मेरे भाई का हाल ही में देहांत हो गया है। वह मरते समय बिल्कुल निर्धन हो गया था और इस जवान का कोई ठिकाना नहीं था। मेरा भी कोई पुत्र नहीं है। इसलिए मैंने इसे बुला कर अपने पास रख लिया है। सुननेवाले कहते, यह सुन कर तो हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुमने इस पितृहीन को आश्रय दिया किंतु हमें इस बात का बड़ा भय और खेद है कि अगर किसी ने मलिका से इसके रूप की प्रशंसा कर दी तो इस बेचारे की छुट्टी समझो। वह इसे ले जाएगी और कुछ दिनों तक इसके साथ भोग- विलास कर के इसे भी जानवर बना कर चरने के लिए छोड़ देगी।

इस पर बूढ़ा कहता, होता तो वही है जो भगवान चाहता है किंतु मुझे आशा है कि जब मैं मलिका से निवेदन करूँगा कि यह मेरा भतीजा और दत्तक पुत्र है तो वह इस पर दया करेगी और इसे पशु न बनाएगी। बद्र को यह सुन कर ढाँढ़स होता।

किंतु बूढ़े की यह आशा व्यर्थ सिद्ध हुई। लगभग एक महीने बाद की बात है कि बद्र हमेशा की तरह बूढ़े की दुकान पर बैठा हुआ था। उसी समय मलिका की सवारी उधर से निकली। उसके आगे-पीछे बड़ी सेना चल रही थी। बद्र उठ कर दुकान के अंदर गया और उसने वृद्ध से पूछा कि यह शानदार सवारी किसकी है। वृद्ध ने बताया कि यह सवारी उसी मलिका की है जिसके बारे में मैंने तुमसे पहले कहा था। उसने बद्र से कहा कि तुम घबराओ नहीं, अपने साधारण स्थान पर जा कर बैठो।

बद्र अपनी जगह जा बैठा और तमाशा देखने लगा। फौज के जितने अफसर थे सभी उस बूढ़े को सलाम करते जाते थे। सारी फौज की वर्दी गुलाबी थी। उनके पीछे ख्वाजासराओं के दस्ते थे जो उम्दा कमख्वाब के जोड़े पहने हुए थे। दुकान के सामने से निकलने पर उनके प्रमुखों ने भी वृद्ध को सलाम किया। उनके पीछे स्त्रियों का एक दल आया। वे कीमती कपड़े और जड़ाऊ जेवर पहने हुए थीं ओर उनके हाथों में बर्छियाँ चमक रही थीं। इन सशस्त्र दासियों के बीच में एक मुश्की घोड़े पर, जिसका साज सुनहरा था जिसमें कई जगह हीरे जड़े हुए थे, अत्यंत भव्य परिधान पहने हुए रानी सवार थी। सभी दासियों ने भी झुक-झुक कर वृद्ध को प्रणाम किया। जब मलिका की सवारी दुकान के सामने आई तो उसकी नजर बद्र पर पड़ी। वह उसे देखते ही उस पर मर-मिटी और उसने दुकान के मालिक बूढ़े को आवाज दी।

बूढ़ा बाहर निकला और उसने मलिका के घोड़े की रकाब चूमी। मलिका ने पूछा, यह सुंदर युवक, जो तुम्हारी दुकान पर बैठा है, कौन है? क्या यह तुम्हारा नौकर है? वृद्ध ने सिर झुका कर कहा, सरकार, यह मेरा भतीजा है। कुछ दिन पहले इसका पिता यानी मेरा भाई मर गया। मेरे कोई औलाद नहीं थी इसलिए इस लड़के को गोद ले लिया है। ताकि मेरा बुढ़ापा भी आराम से गुजरे और मरने के बाद मेरा नामलेवा भी कोई रहे। मलिका तो बद्र के रूप को देख कर दीवानी हो रही थी। उसका पूरा इरादा हो गया कि उसको अपने शयनकक्ष में ले जा कर आनंद करे। उसने बूढ़े से कहा, बड़े मियाँ, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि अपना भतीजा मुझे दे दो। हम लोगों के देवता अग्नि और प्रकाश हैं। मैं उनकी सौगंध खा कर कहती हूँ कि मेरे यहाँ इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। तुम मुझे हमेशा से मानते रहे हो और मुझे विश्वास है कि तुम मेरी इस प्रार्थना को न ठुकराओगे। अगर तुमने अपना भतीजा मुझे दे दिया तो मैं जन्म भर तुम्हारा अहसान मानूँगी।

अब्दुल्ला यानी उक्त वृद्ध ने उसके विनय के पीछे छुपी हुई धमकी साफ-साफ महसूस की और चाहा कि किसी बहाने से बद्र को मलिका के चंगुल से बचाए। उसने कहा, सरकार, यह तो आपकी असीम कृपा है कि मेरे भतीजे को अपने पास रख कर उसी का नहीं मेरा भी अपूर्व सम्मान किया। किंतु यह बड़ा अनाड़ी लड़का है। अभी गाँव से आया। इस राजमहल के तो क्या सभ्य नागरिकों के भी तौर-तरीके नहीं जानता। इसलिए अभी इसे कुछ दिन मेरे पास ही रहने दीजिए। महिला ने कहा, तुम इस बात की चिंता न करो। मैं इसे एक दिन ही में सारे तौर-तरीके सिखा दूँगी। अब तुम इस मामले में टालमटोल बिल्कुल न करो। मैं कहे देती हूँ कि जब तक तुम इस युवक को मेरे हाथों में न सौंप दोगे मैं यहाँ से नहीं हटूँगी। मैं इसे ले कर ही जाऊँगी। मैं फिर अपने देवताओं अग्नि और प्रकाश की सौगंध खाती हूँ कि इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया जाएगा और तुम भी इस बात पर कभी पश्चात्ताप न करोगे कि तुमने अपने भतीजे को मुझे सौंपा।

अब बूढ़े ने सोचा कि जिद करना ठीक नहीं है। अगर मलिका को क्रोध आ गया तो मालूम नहीं मेरे साथ क्या कर डाले। उसने कहा, आप का हुक्म सिर आँखों पर किंतु एक विनय है। यह भतीजा मुझे बहुत प्यारा है। कम से कम एक दिन तो इसे मेरे पास और रहने दीजिए। कल यह अवश्य आपकी सेवा में उपस्थित हो जाएगा। मलिका ने यह बात मान ली और अपने सेना के साथ वापस चली गई। उसके जाने के बाद बूढ़े ने बद्र से कहा, मैं तो नहीं चाहता था कि तुम्हें उसके हाथ में दूँ लेकिन मुझे भय था कि अगर वह क्रोध में आ गई तो इसी समय हम दोनो को मरवा देगी। शायद वह तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार न भी करे। उसने अपने आराध्य अग्निदेव की कसम खाई है। फिर मलिका के सारे दरबारी मुझे मानते हैं। वे भी तुम्हारी भरसक सहायता करेंगे। बद्र को इन बातों से कुछ ढाँढ़स हुआ और वह कहने लगा, अब तो जो कुछ मेरी किस्मत में है वह भोगना ही पड़ेगा। अब चाहे इस रानी के हाथों में मेरी मौत हो या मेरे भाग्य खुलें, मुझे तो उसके पास जाना ही है।

बूढ़े ने कहा, तुम अधिक चिंता न करो। यद्यपि रानी जादूगरनी है और उसके पास राजशक्ति भी है किंतु वह मेरी शक्ति भी जानती है। वह अचानक कोई बात मेरी मरजी के खिलाफ नहीं करेगी। फिर भी वह महादुष्ट है। तुम्हें चाहिए कि हरदम होशियार रहो और

अगर कोई बात असाधारण रूप से होते देखो तो मुझे उसकी सूचना देते रहना।

दूसरे दिन वह पापिनी रानी पिछली जैसी शान-शौकत से निकली और अब्दुल्ला की दुकान पर रुक गई। वह बूढ़े अब्दुलला से कहने लगी, तुम्हारे भतीजे के ख्याल में मैं रात भर सो नहीं सकी। अब तुमने कल जो वादा किया था उसे निभाओ। बूढ़े ने मलिका के सम्मानार्थ अपना शीश भूमि से लगाया फिर मलिका के समीप जा कर ताकि उसकी बात को कोई दूसरा न सुने - बोला, कल जो कुछ मैंने अपने भतीजे के बारे में कहा था उसे कृपया न भूलें। मैं उसे आपके हाथों में सौंपता हूँ। किंतु इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि इसे किसी प्रकार का कष्ट न हो। मैंने आप से पहले भी कहा है कि और अब फिर कहता हूँ कि यह लड़का मेरे बेटे जैसा है और इसके दुख से मुझे दुख होगा। मलिका ने कहा, तुम्हें विश्वास क्यों नहीं हुआ है? मैंने तो इस बारे में तुम्हारे सामने अग्निदेवता की सौंगंध खाई है कि मेरे पास कोई दुख नहीं पहुँच सकता।

बूढ़े ने बद्र का हाथ मलिका के हाथ में दिया और कहा, आपकी बात पर विश्वास न होने का कोई प्रश्न नहीं है किंतु जहाँ आपने इतनी कृपा की है वहाँ इतनी कृपा अवश्य कीजिए कि इसे कभी-कभी यहाँ आ कर मुझ से मिलने की अनुमति दे दें। इसीलिए मैंने दुबारा इसे दुख न पहुँचने की बात की है। यह कभी-कभी आ कर मुझसे मिलेगा तो मुझे तो संतोष होगा ही, इसे भी धैर्य बना रहेगा। मलिका ने यह स्वीकार कर लिया और हजार अशर्फियों का एक तोड़ा बूढ़े को दे दिया। फिर नौकरों को आज्ञा दी कि एक बढ़िया घोड़ा लाओ जिसका साज बहुत अच्छा हो। वे तुरंत ही ऐसा घोड़ा ले आए। मलिका के कहने पर बद्र उस पर सवार हो गया। मलिका ने बूढ़े से उस का नाम पूछा तो उसने नाम बताया बद्र। मलिका बोली, यह नाम ठीक नहीं है। इसे तो बद्र (चाँद) के बजाय शम्स (सूर्य) कहना चाहिए।

यह कह कर मलिका अपने महल की ओर चल दी। बद्र भी अपने घोड़े पर उसके पीछे बाएँ बाजू से चलने लगा। रास्ते में नागरिकों की हलके स्वर में की जानेवाली बातचीत बद्र के कानों में पड़ने लगी। लोग कह रहे थे, देखो कैसा सुंदर सजीला जवान इस रानी ने चुना है। कुछ लोग कह रहे थे, यह दुष्ट नए निरपराध व्यक्ति को फँसा कर लाई है और इसके साथ भी वही नीच व्यवहार करेगी जो कई लोगों के साथ कर चुकी है। किसी ने कहा, भगवान से प्रार्थना है कि इस पुरुष पर दया करें और इसे इस कुकर्मिणी से मुक्ति दिलाएँ। कोई बोला, इसे क्या मुक्ति मिलनी है। इसके भाग्य ने साथ दिया होता तो इस व्यभिचारिणी के फंदे ही में क्यों फँसता। इन बातों को सुन कर बद्र को विश्वास हो गया कि मलिका के बारे में बूढ़े अब्दुल्ला ने जो कुछ कहा है और जो चेतावनी मुझे इसके बारे में दी है वह अक्षरशः ठीक है और मुझे सचेत रहना चाहिए।

मलिका ने महल के बाहर घोड़े से उतरने के बाद बद्र का हाथ पकड़ा और उसे महल के अंदर ले गई। महल की शान-शौकत का क्या कहना। जो चीज भी देखिए, चाहे चौकी हो चाहे अलमारी, वह स्वर्ण से निर्मित थी और हर चीज में नाना प्रकार के रत्न जड़े थे। फिर वह उसे अपने साथ बाग की सैर के लिए ले गई। बद्र ने महल की प्रत्येक वस्तु और

बाग की उचित शब्दों में प्रशंसा की। महल के सारे कर्मचारी समझ गए कि यह कोई देहाती गँवार नहीं है बल्कि किसी संभ्रांत परिवार का व्यक्ति है जो हर बहुमूल्य वस्तु का सही मूल्यांकन करता है।

बाग में घूमते-घूमते खाने का समय हो गया और दासियों ने कहा कि भोजन तैयार है। मलिका उसे ले कर भोजन कक्ष में आई और दोनों सोने-चाँदी के बरतनों में स्वादिष्ट राजसी व्यंजन खाने लगे। खाना खत्म करने के बाद मलिका ने एक स्फटिक पात्र में स्वच्छ सुवासित मदिरा भर कर पी और एक प्याला बद्र को दी। अब मदिरापान का सिलसिला चलने लगा ओर गाने-बजानेवाली सेविकाएँ आ कर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगीं। देर तक यह राग-रंग चलता रहा।

जब काफी रात बीत गई और दोनों को खूब नशा चढ़ गया तो मलिका ने राग-रंग की सभा को समाप्त करने का इशारा किया और अन्य दासियाँ दोनों को शयन कक्ष में ले गईं।

दोनों ने केलि क्रीड़ा की और सो गए। दूसरे दिन सुबह उठ कर स्नान करने के बाद दोनों ने नए वस्त्र पहने और दिन का भोजन किया। कुछ देर के आराम के बाद मलिका फिर उसे बाग की सैर को ले गई और घंटों तक वे लोग आपस में वार्तालाप और हँसी-मजाक करते रहे। शाम होने पर वे महल के अंदर गए और पूर्व संध्या की भाँति भोजन, मद्यपान और गायन-वादन से आनंदित होने के बाद दोनों ने शयन कक्ष में विहार तथा शयन किया।

लगभग चालीस दिन तक यही क्रम चला। मलिका ने बद्र के साथ का पूरा आनंद उठाया किंतु अब उसका रवैया बदलने लगा था। बद्र ने यह परिवर्तन लक्ष्य किया ओर सचेत हो गया कि कहीं उसके साथ कोई शरारत न की जाए। एक दिन आधी रात को वह शैय्या से उठ गई। वह समझ रही थी कि बद्र सोया हुआ है किंतु वह जाग रहा था, सिर्फ सोने का बहाना किया था। वह अधखुली आँखों से मलिका के कार्यकलाप को देखने लगा।

मलिका ने एक संदूक खोला और उसमें से एक प्याला निकाला जिसमें पीली मिट्टी भरी हुई थी। फिर वह विशाल शयनकक्ष के एक कोने में गई और वहाँ जा कर कुछ मंत्र पढ़ने लगी जिससे कुछ क्षणों में वहाँ एक जलकुंड पैदा हो गया। यह लीला देख कर बद्र भयभीत हुआ और बिस्तर पर पड़ा-पड़ा काँपने लगा लेकिन अपनी जगह से नहीं हिला।

मलिका ने उस कुंड से एक पात्र में जल भरा और दूसरे पात्र में थोड़ा मैदा ले कर उस जल से उसे सानने लगी। वह मैदा सानते-सानते कोई मंत्र भी पढ़ रही थी। फिर उसने एक आलमारी से कई डिबियाँ और खाना पकाने के बरतन निकाले। डिबियों में से कुछ खास मसाले और दवाएँ निकाल कर उसने सने हुए मैदे में मिलाया और एक कुलचा तैयार किया। फिर कोयले सुलगा कर तवे पर कुलचे को सेंका और बाद में उसे सीधे कोयलों पर सेंका। कुलचा सिंक जाने पर उसने आलमारी में सामान रखा और मंत्र पढ़ कर जलकुंड को गायब कर दिया। कुलचे को सावधानी से रखने के बाद वह बद्र के पार्श्व में लेट कर सो रही।

बद्र ने यह सब देख कर समझ लिया कि इस सारी क्रिया में कोई गहरा रहस्य है। उसने सोचा कि मुझे यहाँ रहते चालीस दिन हो गए हैं और अब मलिका कोई नया गुल खिलाना चाहती है और इस मामले को अब्दुल्ला से कहना चाहिए। सुबह नहा-धो कर जब उसने नए कपड़े पहने तो उसने मलिका से कहा, आप ने मुझ पर इन दिनों ऐसी कृपा की और ऐसे आराम से रखा कि मैं भोग-विलास में अपने बूढ़े चचा को बिल्कुल भूल गया। वे बेचारे मेरी याद कर के दुखी होते होंगे और मेरी लापरवाही पर कुढ़ते होंगे। आप दो-तीन घंटे की अनुमति दें तो मैं उन्हें देख आऊँ। मध्याह्न भोजन के समय तक वापस आ जाऊँगा। बस दोनों को एक दूसरे की कुशल-क्षेम पूछनी है।

मलिका को उसकी ओर से कोई शंका न थी। उसने अनुमति दे दी। साथ ही एक बढ़िया मुश्की घोड़ा मँगवा कर और दो-एक गुलामों को उसके साथ के लिए दे कर उसे अब्दुल्ला की दुकान की तरफ रवाना कर दिया। बद्र ने गुलामों को बाहर घोड़े के पास बिठाया और खुद दुकान के अंदर चला गया। अब्दुल्ला उसे देख कर खुश हुआ और पूछने लगा कि मलिका के साथ कैसी गुजर रही है। बद्र ने कहा कि अभी तक तो उसने मुझे बड़े आराम और अपनत्व के साथ रखा है किंतु कल रात को जो कुछ मैंने देखा उससे मेरे मन में संदेह हो रहा है। फिर उसने विस्तारपूर्वक विगत रात की घटनाओं का वर्णन किया और कहा, अभी तक तो तुम्हारी बातें मैंने सिर्फ मामूली तौर पर याद रखी थीं किंतु इस रहस्यमय व्यापार से मुझे बड़ी घबराहट हुई और मैं तुम्हारे पास आ गया। अब मुझे बताओ कि वह क्या करना चाहती है और उस की दुष्टता से मैं कैसे बच सकता हूँ क्योंकि मुझे संदेह है कि वह मुझे हानि पहुँचाना चाहती हैं।

अब्दुल्ला ने हँस कर कहा, अब वह तुम्हें भी जानवर बनाने की तैयारी कर रही है। यह तुमने बहुत अच्छा किया कि फौरन मेरे पास चले आए। अब तुम किसी प्रकार का भय न करो और जो उपाय मैं बताऊँ वह करो। फिर उसने एक संदूक से दो कुलचे मैदे के निकाले और बद्र को दे कर बोला, यह अपने पास रखो। वह अपने बनाए हुए कुलचे को खाने के लिए तुम्हें देगी। तुम शौक से उसे ले लेना किंतु उसे खाने के बजाय उसकी निगाह बचा कर उसे अपनी एक आस्तीन में रख लेना और दूसरी आस्तीन से निकाल कर मेरा दिया एक कुलचा खाने लगना। वह समझेगी कि तुम उसका दिया कुलचा खा रहे हो। फिर वह तुम्हें कहेगी कि अमुक पशु बन जाओ। तुम उसका कुलचा न खाने के कारण अपने शरीर ही में रहोगे। वह आश्चर्य करेगी किंतु तुम उसके शब्दों या कार्यों पर प्रकटतः कुछ ध्यान न देना। फिर होशियारी से उसका बनाया हुआ कुलचा उसे यह कह कर खिला देना कि यह अब्दुल्ला ने तुम्हारे लिए भेजा हैं। जब वह अपना बनाया कुलचा खा ले तो उसके मुँह पर पानी के छींटे देना और कहना, अमुक पशु बन जा। उस समय तुम जिस पशु का नाम लोगे वह वही पशु बन जाएगी। फिर तुम उसे मेरे पास ले आना और उसी समय हम लोग यह तय करेंगे कि उसका क्या किया जाए।

बद्र को अब्दुल्ला की योजना बहुत पसंद आई। वह तेज-तर्रार आदमी था और लोगों की निगाहों से बचा कर चीजों को कुशलतापूर्वक छुपा लेने में प्रवीण था। उसने कई बार बूढ़े की योजना को उसके सामने दुहरा कर हृदयंगम कर लिया और बाहर आ कर घोड़े पर

सवार हो कर महल की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचा तो देखा कि मलिका बाग में बैठी हुई उसकी प्रतीक्षा कर रही है। बद्र को देख कर कहने लगी, मेरे प्रियतम, तुमने इतनी देर क्यों लगाई। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे बगैर एक क्षण भी नहीं रह सकती। बद्र ने कहा, मुझे भी तुमसे अलग हो कर अच्छा नहीं लगता लेकिन मैं क्या करता। चचा ने बहुत दिनों तक खोज-खबर न लेने पर मुझ से बहुत देर तक शिकायत का सिलसिला जारी रखा। उन्होंने मेरे लिए भाँति-भाँति के खाद्य पदार्थ तैयार किए। किंतु मैं यहाँ आ कर तुम्हारे साथ भोजन करने का इच्छुक था इसलिए थोड़ा-सा मुँह जूठा भर कर लिया। मेरे चचा ने तुम्हारे लिए भी एक कुलचा भेजा है और प्रार्थना की है कि इसे जरूर खाना। यह कह कर उसने अब्दुल्ला के दिए हुए कुलचों में से एक निकाला। मलिका बोली, अब्दुल्ला का मुझ पर बड़ा स्नेह है। मैं उसका दिया हुआ कुलचा जरूर खाऊँगी लेकिन इससे पहले तुम यह कुलचा खाओ जो मैंने खास तौर पर तुम्हारे लिए अपने हाथ से पकाया है। यह कह कर उसने रात को पकाया हुआ कुचला बद्र को दिया।

बद्र बड़ी देर तक उसकी प्रशंसा करता रहा कि इस कृपा को कभी भूल न सकूँगा। इसी वार्तालाप में उसने मलिका का दिया हुआ कुलचा छिपा लिया और अब्दुल्ला का दिया हुआ कुलचा खा लिया और उसके स्वाद की बड़ी प्रशंसा की। मलिका ने उसके पूरा कुलचा खा लेने पर उस पर जल छिड़का और कहा, भद्दा काना घोड़ा बन जा। किंतु बद्र ने साधारण कुचला खाया था इसलिए उस पर कुछ प्रभाव न हुआ। मलिका को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जादू ने असर क्यों नहीं किया। उसने सोचा कि कुलचा तैयार करने में कुछ भूल हो गई होगी और रात को वह फिर होशियारी से जादू का कुलचा तैयार करेगी और इस समय इसे किसी प्रकार का संदेह होना न चाहिए।

अतएव जब बद्र ने अब्दुल्ला के कुलचे के नाम पर उसी का कुलचा उसे दिया तो वह कुछ देख न सकी और उसे खा गई। बद्र ने उसे मुँह पर पानी के छींटे दे कर कहा, घोड़ी बन जा। वह तुरंत घोड़ी बन गई। अपनी यह दशा देख कर वह बड़ी दुखी हुई और बद्र के पाँवों पर अपना थूथन रगड़ कर क्षमा-प्रार्थना करने लगी। किंतु यह बेकार था। बद्र चाहने पर भी उसे स्त्री नहीं बना सकता था। बद्र ने साईस से कहा कि इस घोड़ी के मुँह में लगाम लगा दे। किंतु उसके मुँह में कोई लगाम ठीक से जमती ही नहीं थी। फिर बद्र ने दो घोड़े मँगाए। एक पर खुद सवार हुआ और दूसरे पर साईस को बिठाया और घोड़ी बनी हुई मलिका को रस्सी बाँध कर घसीटता हुआ अब्दुल्ला की दुकान पर ले गया। अब्दुल्ला ने दूर से यह दृश्य देखा तो प्रसन्न हुआ। वह समझ गया था कि बद्र अपने कार्य में सफल हुआ है और मलिका को उसकी दुष्टता का उचित दंड मिला। बद्र घोड़े से उतरा, साईस के हाथ में नई घोड़ी की रस्सी दी और दुकान में चला गया।

अब्दुल्ला ने उठ कर उसे गले लगाया और उसकी चतुरता की बड़ी प्रशंसा की। बद्र ने उसे पूरा हाल बताया और कहा कि इसके मुँह में कोई लगाम नहीं समाती। बूढ़े अब्दुल्ला ने अपने घोड़ों में से एक की लगाम लगाई तो वह घोड़ी बनी हुई मलिका के मुँह में आ गई। फिर उसने बद्र से कहा कि अब तुम इस देश में बिल्कुल न ठहरो, इसी घोड़ी पर सवार हो कर अमुक मार्ग से होते हुए अपने देश को चले जाओ लेकिन यह ध्यान रखना

कि यह लगाम कभी इसके मुँह से निकलने न पाए वरना यह तुम्हारे काबू के बाहर हो जाएगी। यह कह कर और रास्ते का ब्यौरा दे कर वृद्ध ने उसे विदा किया।

बद्र उसी घोड़ी बनी हुई रानी पर बैठ कर चल दिया। कई दिनों के बाद वह एक देश में पहुँचा। वहाँ उसे एक बूढ़ा मिला। यह दूसरा बूढ़ा भी बड़ा सभ्य आदमी लगता था। उसने बद्र से उसके बारे में पूछा कि कहाँ से आते हो, कहाँ जाने का इरादा है, यात्रा ठीक से हो रही है या नहीं, आदि। बूढ़ा उसे इन्हीं बातों में लगाए था कि एक भिखारिन-सी दिखाई देनेवाली बुढ़िया आई और बोली, तुम मुझे यह घोड़ी दे दे और कोई अच्छा घोड़ा ले लो। मेरे पुत्र की घोड़ी बिल्कुल ऐसी ही थी लेकिन वह मर गई और मेरा बेटा इससे बड़ा दुखी है। तुम जो भी दाम इस घोड़ी का माँगोगे मैं दूँगी।

बद्र को तो घोड़ी बेचनी ही नहीं थी। उसने इनकार किया। बुढ़िया पीछे पड़ गई और बोली, बेटा, मुझ पर दया करो। घोड़ी न मिली तो मेरा बेटा दुख से मर जाएगा और वह मर गया तो मैं भी जीवित न रह सकूँगी। बद्र ने उससे पीछा छुड़ाने के लिए कहा कि इसका मूल्य बहुत है, तुम दे नहीं सकोगी। बुढ़िया ने कहा कि तुम दाम बताओ तो, मैं किसी भी तरह दाम दूँगी। बद्र ने सोचा, यह भिखारिन अधिक से अधिक कुछ रुपयों का प्रबंध कर सकेगी। इसलिए उसने कहा कि तुम मुझे एक हजार अशर्फी दो और यह घोड़ी ले जाओ। बुढ़िया ने यह सुनते ही अपनी कमर में बँधी हुई थैली निकाली और बद्र को दे कर कहा, यह अशर्फियाँ गिन लो, और घोड़ी मुझे दो। दो-चार अशर्फियाँ कम हों तो मेरा घर पास ही है, फौरन ला कर दे दूँगी।

अब बद्र घबराया और बोला, अम्मा, यह थैली रख ले, मैं इस घोड़ी को किसी भी मूल्य पर नहीं बेचूँगा। बूढ़ा पास ही खड़ा था और सारी बातें सुन रहा था। वह बोला, भाई, अब तो तुम्हें यह घोड़ी देनी ही पड़ेगी। तुम्हें इस देश का नियम नहीं मालूम है। यहाँ पर जो आदमी व्यापार में धोखा करता है उसे प्राणदंड मिलता है। तुमने जो मूल्य माँगा वह इस बुढ़िया ने दे दिया। अब तुम बेकार की हुज्जत न करो। घोड़ी बुढ़िया की हो गई, उसे फौरन बुढ़िया को दे डालो। सौदे का गवाह मैं हूँ। बादशाह ने अगर सुना कि तुम सौदे से फिर रहे हो तो फिर समझ लो कि भगवान ही तुम्हारी रक्षा कर सकेगा।

बद्र यह सुन कर बहुत परेशान हुआ किंतु बहुत सोचने पर भी उसे घोड़ी को बचाने का कोई उपाय न सूझा। अंततः वह घोड़ी से उतर पड़ा और उसने घोड़ी की लगाम बुढ़िया के हाथ में दे दी। बुढ़िया घोड़ी को पास ही बहनेवाली एक नहर पर ले गई और उसकी लगाम निकाल कर उसने घोड़ी के मुँह पर पानी छिड़क कर कहा, मेरी प्यारी बेटी, घोड़ी का शरीर छोड़ कर अपने पुराने शरीर में आ जाओ। यह कहते ही मलिका अपने असली रूप में आ गई। बद्र यह देख कर डर के मारे गश खा कर जमीन पर गिरने लगा। उस बूढ़े ने बद्र को थाम लिया। बुढ़िया वास्तव में मलिका की माँ थी और मलिका ने सारी जादू की विद्या उसी से सीखी थी। बेटी को असली रूप में ला कर उसने अपने गले लगाया। इसके बाद उसने एक मंत्र पढ़ा जिससे पश्चिम की ओर से एक महाभयानक और अतिविशाल दैत्य प्रकट हुआ। उसने एक हाथ से बद्र और दूसरे हाथ से मलिका और उसकी माँ को उठाया

और आकाश में उड़कर उसने दो क्षण ही में सब को मलिका के महल में पहुँचा दिया।

मलिका ने वहाँ पहुँचने पर दाँत पीसते हुए बद्र से कहा, दुष्ट, मेरे अहसानों का तूने यह बदला दिया। अब देख, में तुझे कैसा दंड देती हूँ। तेरे बने हुए चचा को मैं बाद में समझूँगी। यह कह कर उसने हाथ में पानी ले कर बद्र पर छिड़का और कहा, मनहूस उल्लू बन जा। बद्र उल्लू के रूप में आ गया। फिर मलिका ने उसे एक नई दासी को दे कर कहा, इसे पिंजरे में बंद कर दे और इसे दाना-पानी कुछ न देना, अपने आप भूखा मर जाएगा। दासी दयालु थी। उसने बद्र को पिंजरे में तो बंद कर दिया किंतु मलिका से छुपा कर उसे खाना-पानी देती रही। उस दासी ने उसी दिन गुप्त रूप से अब्दुल्ला से भी कहा, मलिका ने तुम्हारे भतीजे को पकड़ लिया है। वह देर-सवेर उसे तो मार ही डालेगी, अब तुम अपनी जान बचाओ क्योंकि उसने तुम्हें मारने की भी धमकी दी है।

अब्दुल्ला ने समझ लिया कि कठिनतम समय आ गया है और अपनी शक्ति से पूरा काम लेना चाहिए। उसने एक विशेष ध्वनि निकाली। तुरंत ही एक जिन्न प्रकट हो गया। उसके चार हाथ थे और सबों में पंखे लगे थे। उसका नाम बर्क था। उसने आते ही कहा, स्वामी, क्या आज्ञा है? अब्दुल्ला ने कहा, तुम्हें बद्र के प्राणों की रक्षा करनी है किंतु अभी सिर्फ यह करो कि इस दासी को ईरान के शाही महल में पहुँचा दो। ताकि इसके मुँह से राजमाता गुल अनार अपने पुत्र का पूरा समाचार जान लें। जिन्न ने तुरंत ही उस दासी को ईरान के राजमहल की छत पर पहुँचा दिया।

दासी जीने से उतर कर नीचे गई तो देखा कि गुल अनार और उसकी माता चिंतित हो कर बातचीत कर रही थीं। दासी ने विनयपूर्वक दोनों को प्रणाम किया और बताया कि बद्र जादू देश की मलिका की कैद में उल्लू बन कर पड़ा हुआ है। गुल अनार ने दासी को गले लगा लिया और उसके काम की बड़ी सराहना की। फिर उसने आज्ञा दी कि यह मुनादी करवाई जाए कि बादशाह बद्र दो-एक दिन ही में देश में आनेवाले हैं। तीसरी बात उसने यह की कि आग मँगा कर उसमें सुगंधित द्रव्य डाल कर मंत्र पढ़ा और इस तरह अपने भाई सालेह को बुला लिया। सालेह के आने पर उसने बताया कि तुम्हारा भानजा बद्र जादू के देश की अग्निपूजक रानी की कैद में उल्लू बन कर पड़ा हुआ है। सालेह ने अपनी समुद्री सेना को तुरंत जादू के देश में पहुँचने का आदेश दिया और कहा कि मैं भी वहाँ शीघ्र आ रहा हूँ। फिर उसने जिन्नों की एक बड़ी फौज इकट्ठी की और उसे ले कर उक्त देश में पहुँच गया। दोनों सेनाओं के प्रचंड आक्रमण से वह देश कुछ ही घंटों में पराजित हो गया और सेना ने महल में प्रवेश कर के मलिका तथा दूसरे सभी अग्निपूजकों को मार डाला।

गुल अनार भी वहाँ पहुँच गई थी। उसने दासी से कहा कि वह पिंजरा उठा लाओ जिसमें बद्र बंद है। वह पिंजरा बाहर ले आई और उल्लू बने हुए बद्र को उसने बाहर निकाल लिया। गुल अनार ने अभिमंत्रित जल उस पर छिड़क कर कहा, अपने पुराने रूप में आ जा। वह अपने असली शरीर में आ गया और गुल अनार ने उसे गले लगाया। फिर बद्र ने अपने मामा और अन्य संबंधियों से उचित रूप से भेंट की। उसने और दासी ने बद्र पर

अब्दुल्ला के अहसानों का उल्लेख किया। गुल अनार सब को ले कर अब्दुल्ला के घर गई और बोली, आप ही की कृपा से बद्र मुझसे दुबारा मिला है। आपके उपकार का बदला मैं किस प्रकार दूँ। बूढ़े ने कहा, मुझे तो भगवान ने जो कुछ दिया है वही मेरे लिए बहुत है किंतु मुझे इनाम देना ही चाहें तो यह दीजिए कि बादशाह बद्र का विवाह इस दासी से कर दें क्योंकि यह सुंदर और चतुर भी है और इस समय इसने बद्र की और मेरी अमूल्य सेवा की है। गुल अनार ने यह मान लिया और काजी को बुला कर बद्र के साथ दासी का विवाह करा दिया।

अब बद्र ने माँ से कहा, मैंने तुम्हारी और इन पितातुल्य अब्दुल्ला साहब की आज्ञा बगैर नानुकर के मान ली। लेकिन तुम जानती हो कि मेरी हार्दिक इच्छा समंदाल देश की शहजादी जवाहर से विवाह करने की है। गुल अनार ने मुस्कुरा कर कहा, अच्छा, उसका प्रयत्न भी करेंगे। यह कह कर उसने समुद्री कटक को आदेश दिया कि जल-थल में जहाँ भी बद्र के योग्य राजकुमारी देखो उसे बद्र के साथ ब्याहने को यहाँ ले आओ। बद्र ने कहा, यह सब बेकार बातें हैं। मैं तो शहजादी जवाहर ही से विवाह करूँगा, किसी और से नहीं। उसने मुझे जो कष्ट दिया वह अपने पिता के कष्ट से कुपित हो कर दिया है। अगर आप लोग समंदाल नरेश को कैद से छुड़ा कर यहाँ बुलाएँ तो वह अब जवाहर से मेरे विवाह की बात अवश्य स्वीकार कर लेगा। गुल अनार ने कहा, बेटे, अभी तो वह तुम्हारे मामा की कैद में है। उसको यहाँ आने ही पर मालूम होगा कि उसे विवाह स्वीकार है या नहीं। अब बद्र ने सालेह से प्रार्थना की कि समंदाल नरेश को कैद से छुड़ा कर यहाँ लाओ। सालेह ने आग में लोबान डाल कर मंत्र पढ़ा और तुरंत ही समंदाल नरेश को भी वहाँ पहुँचा दिया गया। बद्र उसके चरणों पर गिरा और विनयपूर्वक बोला, सालेह मामा ने मेरे लिए ही शहजादी जवाहर का हाथ माँगा था। मैं ईरान का बादशाह हूँ। आप मुझ पर कृपा कीजिए और मेरे साथ अपना संबंध स्वीकार कीजिए। जो कुछ अभी तक हुआ उसे भूल जाइए।

समंदाल नरेश उसकी इस विनयशीलता से बहुत प्रभावित हुआ और उसे उठा कर गले लगाते हुए बोला, तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम जवाहर के बगैर जीवित नहीं रहोगे। तुम्हें उससे इतना गहरा प्रेम है तो मैं इनकार कैसे करूँ। मैंने पूरे हृदय से उसे तुम्हें दिया। उसकी ओर से भी इत्मीनान रखो। उसने कभी मेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है और मैं कहूँगा तो वह तुम्हारे साथ विवाह करने को खुशी से तैयार हो जाएगी।

यह कह कर उसने अपने सरदारों को आदेश दिया कि शहजादी जवाहर जहाँ भी हो वहाँ से उसे यहाँ ले आए। वे लोग उसकी खोज में निकले और अल्प समय ही में उसे ढूँढ़ कर उस स्थान पर ले आए जहाँ उसका पिता था। समंदाल नरेश ने जवाहर को गले लगा कर कहा, बेटी, मैंने बादशाह बद्र को वचन दिया है कि तुम्हारा विवाह उसके साथ कर दूँगा। आशा है तुम इस बात को मान जाओगी। जवाहर ने कहा, आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है किंतु बादशाह बद्र से बहुत लज्जित हूँ। मैंने क्रोध में आ कर उनसे बड़ा बुरा सलूक किया। मालूम नहीं कि वे इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे या नहीं। बद्र ने कहा, तुमने वास्तव में क्रोध में आ कर मुझे दुख दिया था। अब मैं उसे भूल गया और तुम भी उसे भूल जाओ।

एक खुशी की बात यह भी हुई कि मलिका के मर जाते ही वे सब लोग जिन्हें मंत्रबल से जानवर बना रखा गया था, अपने मनुष्य रूप में वापस आ गए और विवाह में हँसी-खुशी शामिल हो कर वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए अपने-अपने देशों को चले गए। फिर समंदाल नरेश अपने सरदारों के साथ अपने देश को गया, बादशाह बद्र अपनी माता और पत्नियों को ले कर ईरान को रवाना हुआ और कुछ दिन वहाँ रहने के बाद सालेह भी अपनी माता के साथ अपने देश को वापस हुआ

गनीम और फितना की कहानी

दुनियाजाद ने मलिका शहरजाद से नई कहानी सुनाने को कहा और बादशाह शहरजाद ने भी अपनी मौन स्वीकृति दे दी तो शहरजाद ने नई कहानी शुरू कर दी। उसने कहा कि पुराने जमाने में दमिश्क नगर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम अय्यूब था। उसके दो ही संतानें थीं, एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्र का नाम था गनीम और पुत्री का अलकिंत। पुत्री अत्यंत रूपवती और गुणवंती थी और उसे जो भी देखता उस पर मुग्ध हो जाता। कुछ समय के बाद अय्यूब बीमार पड़ा और उस बीमारी से उबर न सका। गनीम अभी बिल्कुल नौजवान था। पिता का पूर्णरूपेण अंतिम संस्कार करने के बाद उसने व्यापार वस्तुओं तथा संपत्ति को सँभालना शुरू किया।

उसने अपने पिता के गोदाम में जा कर देखा कि बहुत-सी गाँठें हैं जिन पर बड़े बड़े अक्षरों में बगदाद लिखा है। उसकी समझ में कुछ न आया और उसने अपनी माँ से पूछा कि गठरियों और गाँठों पर बगदाद क्यों लिखा है। माँ ने उत्तर दिया, बेटे, तुम्हारे पिता का हर काम बड़ा व्यवस्थित होता था। जिस चीज को जहाँ जा कर बेचना चाहते थे उसकी गाँठ पर उस स्थान का नाम लिख देते थे ताकि व्यापार यात्रा करते समय हर चीज को खोल कर देखने की जरूरत न पड़े और समय का अपव्यय या गड़बड़ी की संभावना न हो। जिन गाँठों पर बगदाद लिखा है उन्हें वे बगदाद जा कर बेचना चाहते थे। किंतु इस व्यापार यात्रा पर जाने के पहले ही वे महायात्रा पर चले गए। बगदाद की यात्रा न हो सकी और बगदाद में बेची जाने वाली वस्तुएँ यहीं धरी रह गईं। यह कह कर वह अपने पति की याद में रोने लगी। गनीम ने उस समय माता की दशा देख कर कुछ कहना उचित न समझा।

किंतु यह बात उसके मन में बैठी रही और एक दिन उचित अवसर पा कर उसने माँ से कहा, पिताजी का छोड़ा हुआ काम मैं पूरा करूँगा। वे यह माल बगदाद नहीं ले जा सके, इसे मैं वहाँ ले जा कर बेचूँगा। उसकी माँ यह बात सुन कर बड़ी दुखी हुई और बोली, बेटा, अभी तुम्हारी उम्र कम है। तुम इतनी लंबी यात्रा के योग्य नहीं हो। अभी तो मैं तुम्हारे पिता के रंज ही से उबर नहीं पाई हूँ फिर तुम भी अपने बिछोह का दुख मुझे देना चाहते हो। तुम यात्रा का विचार दिल से निकाल दो। कम मुनाफे पर यह चीजें यहीं दमिश्क के व्यापारियों के हाथ बेच दो। इस लंबी यात्रा में तुम पर बड़ी मुसीबतें पड़ेंगी। मुझे यह मंजूर है कि थोड़ी आय में जीवन यापन करें, तुम्हें किसी प्रकार का दुख हो यह मुझे मंजूर नहीं।

किंतु गनीम पर अपनी माँ के समझाने-बुझाने का कोई असर नहीं हुआ। वह अपनी बात पर अड़ा रहा और कहने लगा कि मैं कब तक घर में घुसा रहूँगा, मुझे भी तो बाहर जा कर व्यापार करने का अनुभव होना चाहिए। उसकी बात गलत नहीं थी। माल काफी था और उसके विक्रय से अच्छा मुनाफा होने की आशा थी। माँ उसे रोकती ही रह गई और वह रुपया ले कर दमिश्क के बाजार को चल दिया। वहाँ उसने अपना माल सँभालने के लिए कुछ दास खरीदे और सौ ऊँट। उन्हीं दिनों पाँच-छह व्यापारियों का एक काफिला बगदाद

को जा रहा था। गनीम ने अपना माल ऊँटों पर लदवाया और इस काफिले के साथ बगदाद शहर की ओर चल पड़ा। यात्रा लंबी थी। मार्ग में सभी लोग थक गए। कई दिन बाद दूर से बगदाद नगर दिखाई दिया। उसे देख कर सब लोग अपनी थकन भूल गए।

दूसरे दिन काफिले ने विशाल नगर बगदाद में प्रवेश किया। वे सब लोग एक बड़ी सराय में उतरे। गनीम ने अपना माल उस सराय में उतार दिया किंतु स्वयं उस भीड़भाड़ में नहीं रहना चाहा। उसने एक अच्छा मकान किराए पर लिया जिसमें एक सुंदर बाग भी था। वह यात्रा में बहुत थक गया था इसलिए उसने कुछ दिन तक मकान में रह कर आराम किया। जब रास्ते की थकान बिल्कुल जाती रही तो उसने नए कपड़े पहने और वहाँ के व्यापारियों से मिलने के लिए उस जगह को चल दिया जहाँ वे लोग व्यापार की बातें करने के लिए एकत्र होते थे। वह अपने साथ अपने माल के नमूने भी दो दासों के सिरों पर लदवा कर ले गया। व्यापारी उसके पिता को अच्छी तरह जानते थे, उन्होंने उसका प्रेमपूर्वक स्वागत किया। उन्होंने उसके लाए हुए कपड़ों के नमूने भी पसंद किए और उसका सारा माल खरीद लिया। गनीम को अप्रत्याशित लाभ हुआ। उसने अपना सारा दूसरा माल भी उसी दिन बेच दिया, सिर्फ एक गाँठ बचा ली।

दूसरे दिन अपने घर से निकल कर वह बाजार की सैर करने निकला तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सारी दुकानें बंद थीं। उसने आसपास के लोगों से पूछा कि आज बाजार बंद क्यों है। उसे बताया गया कि अमुख व्यापारी, जो यहाँ के व्यापारियों में सबसे धनी था, आज सबेरे मर गया है। गनीम ने उचित समझा कि उसके अंतिम संस्कार में शामिल हो। उसने पूरा विवरण पूछा तो लोगों ने उसे बताया कि फलाँ मसजिद में नमाज पढ़ी जाएगी फिर जनाजा शहर से दूर बड़े कब्रिस्तान में ले जाया जाएगा। गनीम ने अपने दासों को सराय में वापस भेजा और मसजिद को चल दिया। वहाँ जा कर वह लोगों के साथ नमाज में सम्मिलित हुआ और फिर उसकी अर्थी के साथ कब्रिस्तान को चल दिया।

कब्रिस्तान शहर से काफी दूर था। वहाँ जा कर उसने देखा कि व्यापारी के लिए पहले से कब्र खुदी हुई है और कब्र को पक्का करने के लिए उत्तम प्रस्तर शिलाएँ और कब्र बनाने का सामान, राज मजदूर आदि सभी मौजूद हैं और कब्र के चारों ओर बहुत-से खेमे खड़े किए गए हैं। वहाँ पहुँच कर व्यापारी लोग उन डेरों में जा कर कुरान का पाठ करने लगे। फिर जब लाश को कब्र में उतार कर कब्र को ढक दिया गया तो सभी व्यापारी आसपास जमा हो कर फातिहा पढ़ने लगे और बहुत देर तक पढ़ते रहे। यहाँ तक कि रात पड़ने लगी। उसे आश्चर्य हुआ कि इतनी देर क्यों लगाई जा रही है। उसके पूछने पर लोगों ने बताया कि जब कोई बड़ा आदमी मरता है और उसकी अर्थी के साथ बहुत-से आदमी होते हैं तो उस रात को सब लोग कब्रिस्तान ही में ठहरते हैं, सब लोगों का यहीं खाना-पीना होता है और सब लोग दूसरे दिन अपने-अपने घरों को वापस होते हैं। उसे यह भी मालूम हुआ कि रात को होनेवाले मृतक संस्कार भोज में शामिल होना जरूरी है, यह वहाँ की रस्म है और सब लोग इस पर जोर देते हैं।

अतएव गनीम को रात के भोज में शामिल होने के लिए रुकना पड़ा किंतु वह थोड़ा-बहुत खा-पी कर वहाँ से चुपचाप शहर की ओर चल दिया। उसने सोचा कि घर खाली देख कर कहीं चोर घुस कर मेरा धन न लूट ले जाएँ या ऐसा न हो कि मेरे दास ही बेईमानी करें और मेरा धन ले कर रफूचक्कर हो जाएँ। वह बगैर किसी को बताए आया था इसलिए किसी से रास्ता भी ठीक तरह नहीं पूछ सका था। वह दिन भर का थका था, चोरी के विचार से परेशान था और रास्तों से अच्छी तरह परिचित भी नहीं था। फलस्वरूप वह अँधेरे में बुरी तरह भटक गया और उसे किसी प्रकार वह मार्ग न मिला जिस पर चल कर वह घर पहुँचे। काफी भटकने के बाद जब वह नगर के मुख्य द्वार पर पहुँचा तो आधी रात हो गई थी और द्वार बंद हो गया था। उसकी अनुनय-विनय के बावजूद द्वारपालों ने फाटक नहीं खोला। उसे अफसोस होने लगा कि बेकार ही व्यापरियों का साथ छोड़ कर शहर की ओर आया।

अब वह रात बिताने के लिए शहर से बाहर कोई स्थान खोजने लगा। कुछ देर बाद उसे शहर के पास ही एक छोटा-सा कब्रिस्तान दिखाई दिया। वह वहीं चला गया कि किसी कब्र पर लेट कर रात बिताए। वह उसके अंदर चला गया और एक जगह घास उगी हुई देखी तो वहीं पर लेट गया। वह सोना चाहता था किंतु स्थान की भयानकता के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी। वह घबरा कर उठ खड़ा हुआ और कब्रिस्तान की दीवार के पास टहलने लगा।

अचानक उसने देखा कि एक प्रकाश बिंदु उसकी ओर आ रहा है। वह प्रेतबाधा के डर से एक घने वृक्ष पर चढ़ गया और उसकी शाखाओं के बीच छुप कर बैठ गया। उसने देखा कि आनेवाले तीन आदमी हैं जो राजमहल के सेवकों जैसे कपड़े पहने हैं। आगे का आदमी मशाल लिए आ रहा था और उसके पीछे दो व्यक्ति एक लंबा संदूक उठाए हुए ला रहे थे। एक जगह संदूक उतार कर संदूक ढोनेवालों में से एक ने कहा, भाइयो, मुझे तो बड़ा भय लग रहा है, यहाँ ठहरने को भी जी नहीं करता। मेरी मानो तो इस संदूक को यूँ ही छोड़ कर भाग चलो। आगे आनेवालों ने, जो सेवकों का प्रधान मालूम होता था, उसे डाँटा, क्या बकवास कर रहा है? क्या मालकिन ने स्पष्ट रूप से आज्ञा नहीं दी थी कि संदूक को कब्र में गाड़ कर आना? अगर उसे मालूम हुआ कि संदूक गाड़ा नहीं गया है तो वह हम लोगों की खाल खिंचवा देगी।

फिर तीनों ने फावड़ा उठाया और संदूक को गाड़ने के लिए गढ़ा खोदने लगे। उन्होंने इतना गहरा गढ़ा शीघ्र ही खोद डाला जिसमें वह संदूक आसानी से समा जाए। संदूक को गढ़े में उतार कर उन्होंने उसके ऊपर मिट्टी पाट दी और फिर वापस चले गए। गनीम ने सोचा कि संभवतः संदूक में धन-दौलत होगी जिसे सुरक्षित रखने के लिए किसी स्त्री ने कब्रिस्तान में गड़वा दिया है। आदमियों के जाने के बाद वह पेड़ से उतरा और उसने मिट्टी हटा कर संदूक को देखा। मिट्टी उसी समय पड़ी थी इसलिए उसे हटाने में तो दिक्कत न हुई लेकिन संदूक भारी था, उसे न निकाल सका। उसने देखा कि संदूक में ताला भी लगा है। उसने दो पत्थर उठाए और उनकी मदद से ताला तोड़ दिया। जब उसने संदूक का ढक्कन उठाया तो देखा कि उसमें रुपए- पैसे के बजाय एक सुंदर तरुणी लेटी हुई है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

पहले वह समझा कि वह सो रही है क्योंकि उसकी साँस चल रही थी। किंतु फिर उसने सोचा कि अगर वह सो रही होती तो ताला टूटने की आवाज से जाग जाती, वह जरूर बेहोश होगी। उसने देखा कि उसके जेवरों में बहुमूल्य हीरे जड़े हैं। वह समझ गया कि यह खलीफा के महल की स्त्री होगी। उसके सौंदर्य ने उस पर जादू-सा डाल दिया और वह यह भी न कर सका कि उसे छोड़ कर यूँ ही भाग जाए। उसने उस सुंदरी को संदूक से उठाया और बाहर घास पर लिटा दिया। हाँ, इसके पहले उसने जा कर कब्रिस्तान का द्वार बंद कर दिया जिसे सेवक खुला छोड़ गए थे।

जब उस स्त्री को ठंडी हवा लगी तो उसके हाथ-पाँव हिलने लगे और कुछ देर में उसने थोड़ी-थोड़ी आँखें खोलीं और क्षीण स्वर में आवाज दे कर कहने लगी, अरी जोहरा, बोस्तान, शाहसफरा, अम्रकला, कासा बोस, नूरुन्निहार, तुम सब की सब कहाँ मर गईं। स्पष्ट था कि वह अपनी दासियों को आवाज दे रही थी और वे दासियाँ रात-दिन उसकी सेवा में लगी रहने वाली थीं। गनीम को खुशी हुई कि ऐसी अतीव सुंदरी को उसने कब्र में जिंदा ही मर जाने से बचा लिया। जब स्त्री ने देखा कि उसकी आवाज पर कोई नहीं आया तो उसने आँखें खोल कर देखा और घबरा कर चिल्ला उठी, क्या बात है? यहाँ इतनी कब्रें कैसी हैं? क्या कयामत आ गई है और मैं अपनी कब्र से उठी हूँ? लेकिन कयामत में तो दिन होता है, यह रात में कयामत कैसे आ गई?

अब गनीम उसके सामने जा कर बोला, इत्मीनान रखिए। अभी कयामत नहीं आई है। मैं परदेसी हूँ। भगवान को आप के प्राणों की रक्षा करनी थी इसलिए कब्र खोद कर आपको निकालने के लिए मुझे यहाँ भेज दिया। अब बताइए, आप की क्या सेवा करूँ। स्त्री बोली, पहले यह बताइए कि मैं यहाँ कैसे पहुँची और कौन मुझे यहाँ लाया।

गनीम ने सारी घटना कह सुनाई। वह स्त्री उठ बैठी और सिर ढक कर बोली, सच है कि भगवान ने मेरी प्राणरक्षा के लिए आप को यहाँ भेजा था। वरना तो मेरे मरने में संदेह ही नहीं था। अब आप ऐसा करें कि सवेरा होने से पहले मुझे उसी संदूक में बंद करें और सवेरे शहर जा कर किराए पर एक खच्चर लाएँ और उसकी पीठ पर मेरे समेत यह संदूक लाद कर अपने घर ले चलें। फिर मैं आप को सारा किस्सा बताऊँगी। मैं आप के साथ पैदल भी चल सकती थी किंतु इन वस्त्राभूषणों में मुझे शहर के लोग पहचान लेंगे और फिर मैं और आप दोनों मुसीबत में फँस जाएँगे।

गनीम ने संदूक बाहर निकाल कर उसकी मिट्टी वगैरह साफ की और उसे गढ़े में रखा। सुंदरी उसमें लेटी रही। गनीम ने संदूक का ढकना इस तरह बंद किया कि उसमें हवा आती-जाती रहे। सुबह होने पर गनीम शहर गया और एक खच्चरवाले से उसका खच्चर किराए पर माँगा। खच्चरवाले के पूछने पर उसने कहा, कल मैं अपने माल का संदूक ले कर एक खच्चर पर लदवा कर बाहर जा रहा था किंतु उस खच्चरवाले को कोई और अच्छी कीमत देनेवाला मिल गया और वह मेरा संदूक कब्रिस्तान में पटक कर चल दिया। अब मैं वह अपने घर लाना चाहता हूँ। खच्चरवाला उसके साथ कब्रिस्तान आया और संदूक खच्चर पर रख कर गनीम के घर पहुँचा दिया।

घर आ कर गनीम ने अपने एक गुलाम से दरवाजा बंद करने को कहा। फिर संदूक से उस युवती को निकाला और उसका हाल पूछा कि कैसी तबीयत है। उसने उत्तर दिया कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ। फिर गनीम एक गुलाम को ले कर घर से निकला और बाजार में जा कर अपने हाथ से उत्तमोत्तम खाद्य पदार्थ तथा बादशाहों के पीने योग्य मदिरा खरीदी।

इसके अलावा अच्छे फल, मिठाइयाँ आदि भी खरीदीं। घर आ कर सारी खाद्य सामग्री थालियों में सजा कर उस सुंदरी के पास ले गया। किंतु उसने कहा कि मैं अकेले नहीं खाऊँगी, तुम भी साथ में बैठ कर खाओ। गनीम विवश हो कर उसके पास बैठ गया।

खाने के पहले उस सुंदरी ने अपने चेहरे से नकाब उतारा और एक तरफ रख दिया। गनीम की नजर उस पर पड़ी तो वह चौंक उठा। उसमें अंदर की तरफ रेशमी धागे से कढ़ा हुआ था, मैं खलीफा हारूँ रशीद की प्रेयसी हूँ और वह मेरा है। गनीम यह देख कर बहुत घबराया कि यह किस मुसीबत को मैं अपने घर ले आया। उसने नम्रतापूर्वक पूछा, सुंदरी, अब तुम मुझे अपने बारे में बताओ कि कौन हो और कैसे कब्रिस्तान में पहुँची।

उसने कहा, मेरा नाम फितना है। मैं खलीफा हारूँ रशीद की प्रेयसी हूँ। मैं अपने बचपन ही से दासी के रूप में खलीफा के महल में आ गई थी। मुझे वहाँ अच्छी शिक्षा मिली और कुछ दिनों ही में मैं सारी कलाओं और विद्याओं में निपुण हो गई। खलीफा ने मेरे उभरते रूप और गुणों को देखा तो मुझसे प्यार करने लगा। उसने एक बड़ा मकान मेरे लिए बनवा दिया और बीस दास-दासियाँ मेरी सेवा के लिए नियुक्त किए। उसने मुझे इतना धन दिया कि मैं शहजादियों जैसी शान-शौकत से रहने लगी। खलीफा की विवाहिता रानी जुबैदा है। वह मेरे प्रति खलीफा के बढ़े हुए प्रेम को देख कर जलने लगी। उसने इरादा कर लिया कि किसी तरह मुझे मरवा दे। मैं होशियार रहती थी इसलिए मलिका जुबैदा की कोई चाल न चल सकी। इधर की तरफ खलीफा को किसी शत्रु से निपटने के लिए काफी दिन के लिए बाहर जाना चाहा। जुबैदा ने उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाया। उसने मेरी एक दासी को भारी इनाम दे कर तोड़ लिया। उस नमकहराम दासी ने कल रात को शरबत में मुझे बेहोशी की दवा दे दी। जब मैं बेहोश हो गई तो उसने मुझे इस ताबूत में बंद कर दिया। रानी के सेवक आ कर मुझे ले गए और जीते जी ही कब्र गाड़ आए। किंतु भगवान को मंजूर था कि मुझे अभी जीवित रखे इसलिए उसने तुम्हें उस कब्रिस्तान में पहले ही से पहुँचा दिया। तुमने मुझे बचा लिया लेकिन अपनी मौत का सामान कर लिया। कोई चमत्कार ही हो तो तुम बच सकोगे।

गनीम यह सुन कर और घबराया और पूछने लगा कि मुझे किस अपराध पर मारा जाएगा। फितना बोली, अगर जुबैदा को मालूम होगा कि तुमने मुझे बचाया है तो वह तुम्हें और मुझे दोनों को मरवा डालेगी। अगर उसे न मालूम हुआ तो खलीफा युद्ध से वापस आने पर मेरी कब्र पर जाएगा और वहाँ मेरा ताबूत न पा कर सारे नगर बल्कि देश-देशांतर में मेरी खोज करवाएगा। जब उसे मालूम होगा कि तुमने मुझे अपने मकान में रखा है तब वह तुम्हें मरवा देगा। गनीम ने कहा, मतलब यह कि मैं किसी तरह बच नहीं सकता। फितना ने कहा, इतना निराश होने की भी जरूरत नहीं है। जब तक घर के लोग

ही भेद न दें कोई किसी और का हाल कैसे जान सकेगा। गनीम ने कहा, यहाँ तो कोई भेद देनेवाला नहीं है। पहले तो मेरे दासों की किसी से जान-पहचान भी नहीं है कि उस पर तुम्हारा भेद प्रकट करें। फिर सभी लोग जानते हैं कि धनवान अविवाहित पुरुष अपने पास रखैलें रखते हैं, तुम्हें भी यह लोग यही समझेंगे।

इतना इत्मीनान होने के बावजूद गनीम इस बात का ध्यान रखता कि उसके अपने दास फितना के सामने जहाँ तक हो सके न आएँ। उपर्युक्त बातचीत के बाद एक दास ने दरवाजा खटखटाया तो गनीम स्वयं बाहर आया। दास उसकी आज्ञानुसार बाजार से भोजन सामग्री लाया था। गनीम ने सारी चीजें उसके हाथ से खुद ले कर फितना के सामने रखीं। उससे कहा, तुम यहाँ खाओ पियो, मैं अभी आता हूँ। यह कह कर वह बाजार गया और फितना के लिए दो दासियाँ और उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण ले आया। फितना इन्हें पा कर बहुत खुश हुई और बोली, वाह मेरे मालिक, आप मेरा इतना खयाल रखते हैं। गनीम ने कहा, मेरे लिए ऐसा संबोधन न करो। मैं इतने सम्मान के योग्य नहीं हूँ। मैं तो तुम्हारे सेवक जैसा हूँ।

फितना बोली, यह आप क्या कहते हैं। मैं तो आपको मालिक से भी बढ़ कर कुछ कहूँ तो उचित होगा। आपने भयंकर मृत्यु से मेरी रक्षा की है। मैं कितना कुछ भी करूँ सारे जीवन आपका अहसान नहीं उतार सकती। मेरी दशा में यह कैसे संभव है कि मैं आपको अपने दास जैसा समझूँ। गनीम यह सुन कर मुस्कुरा कर रह गया।

गनीम और फितना दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगे थे, फिर भी दोनों को मालूम था कि मर्यादा के बंधन उनका शारीरिक संबंध न होने देंगे। कारण यह था कि फितना खलीफा की संपत्ति थी और बादशाह की संपत्ति का उपयोग कोई प्रजाजन नहीं कर सकता। शाम होने पर गनीम ने घर के अंदर दीये जलवाए और भूमि पर स्वच्छ चादरें बिछा कर उस पर बढ़िया शराब और फल ला कर रखे। बगदादवासियों की साधारण रीति यह थी कि दिन में रोटी, मांस आदि ठोस पदार्थ खाते थे और रात को केवल फल खाते थे और शराब पीते थे। जब दोनों ने दो-दो तीन-तीन पात्र मदिरा के पी लिए तो इन्हें नशा चढ़ने लगा और उन्होंने मस्ती में गाना शुरू कर दिया। पहले गनीम ने सद्यःरचित शृंगारिक गीत सुनाए। फिर फितना ने भी इसी प्रकार सद्यःरचित गीत सुनाए। काफी देर तक वे एक-दूसरे के बाद इसी तरह गाते रहे।

जब काफी रात बीत गई तो गनीम फितना को एक कमरे में सुला कर स्वयं दूसरी जगह जा कर सो रहा। अब उन दोनों की दिनचर्या यही हो गई थी। वे दिन भर एक-दूसरे के साथ रह कर आनंदित होते थे और रात को अलग-अलग जा कर सोए रहते थे। इसी प्रकार उनके दिन बीतने लगे। गनीम ने इतना प्रबंध कर के समझ लिया कि वे दोनों सुरक्षित हें। वे दोनों एक- दूसरे की प्रीति में डूबे रहे और अपनी अनुभवहीनता से यह भी न सोच सके कि उन्हें वेश बदल कर बगदाद छोड़ देना चाहिए।

वैसे तो बगदाद में किसी को नहीं मालूम था कि खलीफा की प्रेयसी फितना कहाँ गई। फिर भी रानी जुबैदा परेशान रहती थी कि अगर किसी तरह फितना की खोज शुरू हुई तो वह स्वयं खलीफा के संदेह से किस प्रकार बच सकेगी। बहुत सोच-विचार कर उसने एक बूढ़ी दासी को बुलाया। इस दासी ने जुबैदा को बचपन में गोद खिलाया था। वह दासी से बोली, अम्मा, तुम्हें मालूम है कि जब मैं किसी कठिनाई में फँसती हूँ तब तुम्हीं से सहायता लेती हूँ। तुम मेरा कष्ट सुन कर ठंडे दिमाग से उस पर विचार करती हो। तुम्हारे जैसी चतुर स्त्री मैंने कोई नहीं देखी और तुम्हारे पास प्रत्येक संकट से उबरने का उपाय है। इस समय मुझे एक ऐसी चिंता लगी है जिससे मेरी नींद हराम हो गई है। बुढ़िया ने पूछा, बेटी, ऐसी क्या बात है? जुबैदा ने उसे पूरा किस्सा बताया, मैंने फितना को बेहोशी की दवा दिलवा कर कुछ आदमियों के द्वारा एक छोटे कब्रिस्तान में जिंदा गड़वा दिया है, अब इस बात पर कैसे परदा डालूँ। उसे वीरान कब्रिस्तान में गड़वाया ही इसलिए है कि उसका पता किसी को न चले किंतु खलीफा उसे बहुत प्यार करता है और युद्ध से लौट कर वह उसकी खोज जरूर करवाएगा और अगर भेद खुल गया तो मुझे अपनी प्रतिष्ठा बचाना कठिन हो जाएगा।

बुढ़िया बड़ी खुर्राट थी। उसने कहा, बेटी, तुम बिल्कुल चिंता न करो। यह कौन बड़ी बात है? मैं ऐसी तरकीब बताऊँगी कि किसी को इस मामले में तनिक भी संदेह न हो सकेगा। खलीफा तुम पर कोई संदेह नहीं करेंगे। जुबैदा ने कहा, अम्मा, ऐसा क्या उपाय हो सकता है।

बुढ़िया बोली, बताती हूँ। तुम कारीगर से एक बड़ा-सा लकड़ी का पुतला बनवाओ, उसकी ऊँचाई औरतों जैसी होनी चाहिए। मैं उस पर पुराने कपड़े लपेट दूँगी। फिर एक ताबूत मँगवा कर उसमें वही पुतला रख देना और तुरंत ही शाही कब्रिस्तान में गड़वा देना। इतना ही नहीं, कब्र के ऊपर एक आलीशान मकबरा भी बनवा देना और उस मकबरे में फितना का एक बड़ा-सा चित्र टँगवा देना। कब्र पर रोज बहुत ही दीये जलवाया करना। कभी-कभी तुम और तुम्हारी दासियाँ काले कपड़े पहन कर मकबरे पर जाया करें और वहाँ जा कर फितना के लिए मातम किया करें। फितना की अपनी दासियों तो रोजाना काले कपड़े पहन कर फितना के लिए मातम करने को उसके मकबरे पर काले कपड़े पहन कर जाया ही करेंगी। खलीफा जिस दिन आने को हो उस दिन तुम विशेष रूप से मातम करने के लिए जाना। खलीफा यह देख कर तुमसे जरूर पूछेंगे कि काले कपड़े क्यों पहने हो। तुम कहना कि तुम्हारी प्रेयसी और मेरी प्यारी सखी फितना का निधन हो गया है, उसी के मातम में मैंने यह कपड़े पहने हैं। यह सुन कर खलीफा को बहुत दुख होगा किंतु वह रो-पीट कर बैठ जाएगा।

जुबैदा ने कहा, अगर कहीं खलीफा ने फितना की कब्र खुदवा कर उसका अंतिम दर्शन करना चाहा तब तो भेद खुल ही जाएगा और मैं झूठी पड़ जाऊँगी। बुढ़िया ने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। हमारे इस्लाम धर्म के अनुसार कोई कब्र खुलवाई नहीं जा सकती। फिर फितना खलीफा की कितनी ही प्यारी क्यों न हो, थी तो उसकी दासी ही। दासी के लिए कौन बादशाह इतना झंझट करता है कि धार्मिक नियमों का भी उल्लंघन कर दे। अब तुम

पुतला जल्दी बनवाओ, बल्कि तुम भी यह झंझट न करो। मैं स्वयं एक अच्छे और विश्वस्त कारीगर को जानती हूँ। वह तुरंत ही इस काम को कर देगा।

बुढ़िया ने फिर कहा, तुम्हें एक काम सावधानी से करना होगा। तुम उसी दासी को बुलाओ जिसने तुम्हारे कहने पर फितना को शरबत में बेहोशी की दवा दी थी। उसे आदेश देना कि वह फितना के सेवकों तथा अन्य राज कर्मचारियों में यह बात प्रसिद्ध कर दे कि उसने एक सुबह फितना को उसके बिस्तर में मरा पाया है। यह भी जरूरी है कि जिस दिन तुम अपनी तैयारी पूरी करके उसे आदेश दो उसी दिन वह फितना की मौत की खबर फैलाए और किसी को फितना के कमरे में प्रवेश करने की अनुमति न दे। तुम तुरंत राजमहल के मुख्य प्रबंधक हब्शी मसरूर को बुला कर राजकीय शोक का आदेश दे देना और ताबूत मय पुतले के फितना के कमरे में भेज कर उसे समारोहपूर्वक बाहर निकलवाना। संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए।

रानी जुबैदा ने बुढ़िया को गले लगा लिया और अपने संदूकचे से एक हीरे की अँगूठी उसे इनाम दी और कहा, अम्मा, तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया है। अब मेरे जी को चैन आया। अब तुम तुरंत कारीगर के पास जाओ और जितनी जल्दी हो सके उससे पुतला बनवाओ। यहाँ का प्रबंध मैं करती हूँ। बुढ़िया दूसरे ही दिन कारीगर से उचित नाप का एक पुतला बनवा लाई। इधर फितना की दासी ने फितना के मरने का शोर मचा दिया और जुबैदा ने मसरूर को आदेश दे कर वह ताबूत गड़वा दिया जिसमें काठ का पुतला रखा हुआ था। उसने स्वयं भी काले कपड़े पहन कर मातम शुरू कर दिया। दूसरे दिन सैकड़ों मजदूर लगवा कर कब्र पर बड़ा मकबरा खड़ा कर दिया और उसमें फितना का चित्र लगवा दिया। वह स्वयं भी दासियों समेत काले कपड़े पहन कर फितना के मकबरे पर मातम करने गई। इतने आयोजन के फलस्वरूप समस्त नगर निवासियों को मालूम हो गया कि फितना मर गई है।

गनीम को शहर में यह समाचार मिला तो उसने आ कर फितना से कहा, सुंदरी, तुम्हारी मृत्यु का समाचार सारे शहर में फैल गया है। फितना ने कहा, मैं भगवान की आभारी हूँ कि उसने तुम्हारे हाथों मेरी प्राण रक्षा करवाई। भगवान की कृपा रही तो वे सब लोग जो इस समय मेरे विरुद्ध षडयंत्र कर रही हैं शर्मिंदा होंगे। भगवान चाहेगा तो एक दिन हम दोनों का मनोरथ पूरा होगा। तुमने निःस्वार्थ भाव से जो भलाई मेरे साथ की है खलीफा उसका पारितोषिक तुम्हें देगा और आश्चर्य नहीं तुम्हारे इनाम में मुझे ही दे डाले। गनीम बोला, प्रबुद्धजनों ने कहा है कि स्वामी की संपत्ति सेवक को लेनी क्या, उसे लेने की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए।

खलीफा को युद्धभूमि में काफी समय लगा। शत्रु को परास्त करके तीन महीने बाद जब वह बगदाद वापस आया तो उसने सोचा कि पहली फुरसत ही में फितना के पास जाऊँ।

किंतु अपने महल में आते ही जुबैदा और दासियाँ शोकवसन पहने दिखाई दीं तो उसने पूछा कि इसका क्या कारण है। जुबैदा ने छल के आँसू बहाते हुए फितना की मृत्यु का

समाचार दिया। खलीफा इसे सुन कर मूर्छित होने लगा तो मंत्री जाफर ने उसे सँभाला। खलीफा की तबीयत कुछ सँभली तो उसने पूछा कि फितना को कहाँ दफन किया गया है। जुबैदा ने कहा कि मैंने शाही कब्रिस्तान में उसके लिए अच्छी कब्र बनवाई है और उस पर एक शानदार मकबरा बनवाया, जिसमें फितना का चित्र भी रखा है, आप कहें तो आपके साथ चल कर सब कुछ दिखाऊँ। खलीफा ने कहा, तुम आराम करो, मैं स्वयं ही वह मकबरा देख आऊँगा।

खलीफा मसरूर को ले कर गया तो देखा कि बड़ी सुंदर कब्र और मकबरा मौजूद है और वहाँ बहुत-से दीये जल रहे हैं। उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सौतिया डाह होने पर भी जुबैदा ने फितना के अंतिम संस्कार के लिए ऐसा आयोजन किया है। उसने सोचा कि यह संभव है कि जुबैदा ने फितना को निकाल दिया हो और इस बात को छुपाने के लिए उसकी मौत का ढोंग रचाया हो। उसने मकबरे पर लगा हुआ चित्र भी उतार कर देखा तो वह काफी खराब था, किसी अनाड़ी चित्रकार से जल्दी में बनवाया हुआ लगता था। अब उसने सोचा कि कब्र खुदवा कर देखना चाहिए कि फितना वास्तव में मरी है या जीवित है। उसने धर्मगुरुओं से सलाह ली तो उसने कहा कि आप यह काम नहीं कर सकते क्योंकि इस्लाम में कब्र खुदवाना धर्मविरुद्ध है।

इस पर खलीफा ने फितना की कब्र खुदवाने का विचार त्याग दिया और रस्मी तौर पर उसके लिए मातम शुरू कर दिया। उसने कई कुरानपाठियों को फितना की कब्र पर निरंतर कुरान पाठ करने के लिए नियुक्त किया। स्वयं काले कपड़े पहन लिए और शोक और विषाद का जीवन व्यतीत करने लगा। एक महीने तक रोजाना एक बार जाफर और अन्य सभासदों को ले कर फितना की कब्र पर जाता और फातिहा पढ़ता और बैठ कर उसकी याद में आँसू बहाता। इस सारी अवधि में उसने राज्य-प्रबंध भी नहीं देखा और सारे समय रुदन और विरह-विलाप करता रहा।

चालीस दिनों के बाद मातम खत्म हुआ। खलीफा ने खुद काले कपड़े उतारे और दूसरों से भी मातमी लिबास उतारने को कहा। इस सारे समय में वह कभी ठीक से सोया नहीं था इसलिए बहुत थका हुआ था। वह अपने शयनकक्ष में गया और पलंग पर जा कर सो रहा। थकन और जगाई के बावजूद उसको गहरी नींद नहीं आई।

शयनकक्ष में दो दासियाँ मौजूद थीं ताकि खलीफा उठ कर जो आज्ञा दे उसका पालन करें। एक उसके सिरहाने की ओर बैठी थी, उसका नाम नूरुन्निहार था। दूसरी पैंताने की तरफ बैठी थी, उसका नाम निकहत था। दोनों समय काटने के लिए कशीदाकारी कर रही थीं। पहली ने खलीफा को सोता जान कर कहा, मुझे एक शुभ संवाद मिला है जिससे खलीफा खुश होंगे। फितना मरी नहीं है। निकहत ने आश्चर्य से उच्च स्वर में कहा, हैं, फितना जिंदा है? उसकी ऊँची आवाज से खलीफा जाग गया और डाँट कर बोला, बदतमीजो, तुमने शोर करके मुझे क्यों जगाया?

दासी ने काँपते हुए उत्तर दिया, हुजूर, मेरा अपराध क्षमा करें, मैंने आपके आराम में विघ्न डाला किंतु इस दूसरी दासी ने बात ही ऐसी कही थी जिससे मेरी आवाज ऊँची हो गई। इसने कहा है कि आपकी प्रेयसी फितना मरी नहीं है, जीवित हैं। खलीफा ने नूरुन्निहार से पूछा तो उसने हाथ जोड़ कर कहा, सरकार, मुझे आज शाम ही को फितना का लिखा हुआ एक पत्र मिला है। मैं चाहती थी कि आपके शयनकक्ष में आते ही वह पत्र आपको दिखाऊँ क्योंकि उसमें फितना ने सारा हाल लिखा है। किंतु आप बहुत थके हुए थे इसलिए मैंने सोचा आप के जागने पर सारा हाल आप को बताऊँ।

खलीफा ने कहा, तू बड़ी बेवकूफ है। इतना महत्वपूर्ण पत्र छुपाए रही। अभी निकाल कर वह पत्र मुझे दे। और हाँ, तुझे वह पत्र मिला कहाँ? नूरुन्निहार ने बताया, मैं महल के बाहर एक काम से गई थी। तभी एक आदमी मेरे हाथ में यह पत्र दे कर चला गया। मैं उससे कुछ पूछ तो क्या पाती, उसकी सूरत भी ठीक तरह से नहीं देख सकी। यह कह कर उसने वह पत्र दे दिया। खलीफा ने देखा कि पत्र फितना ही की हस्तलिपि में है। उसमें उसने अपने जीते जी गाड़े जाने और फिर गनीम द्वारा बचाए जाने का विवरण लिखा था और यह भी लिखा था कि गनीम बड़े सद्भाव से मेरी सेवा करता है।

खलीफा को पत्र पढ़ कर न फितना के जीवित होने की प्रसन्नता हुई न जुबैदा की हरकत पर क्रोध आया। उसे क्रोध आया तो गनीम पर जिसने उसकी प्रेयसी को घर में डाल रखा था। उसे विश्वास हो गया कि गनीम ने फितना के साथ संभोग अवश्य किया होगा और खलीफा की प्रतिष्ठा का ध्यान नहीं रखा होगा। वह फितना पर दाँत पीसता रहा कि उस नौजवान के साथ गुलछर्रे उड़ाती रही और यह भी ध्यान न दिया कि मैं खुद उसके वियोग में किस तरह चालीस दिन तक तड़पता रहा।

रात में तो उसने किसी से कुछ नहीं कहा लेकिन दूसरे दिन दरबार में जा कर उसने प्रधानमंत्री जाफर को बुला कर कहा, आज मैं तुम्हारी मुस्तैदी की परीक्षा लेता हूँ। तुम चार हजार सिपाहियों को ले कर अमुक मुहल्ले में जाओ। वहाँ दमिश्क का एक जवान व्यापारी गनीम रहता है। उसके पिता का नाम अय्यूब है। उसने मेरी प्रेयसी फितना को रख छोड़ा है। तुम जा कर गनीम को पकड़ो और उसके हाथ-पैर बाँध कर ले आओ। और ध्यान रहे कि फितना भी हाथ से निकलने न पाए, उसे भी पकड़ कर ले आना किंतु उसे बाँधना नहीं। इसके साथ ही जिस मकान में गनीम रहता है उसे खुदवा कर जमीन के बराबर करवा देना। मैं उन दोनों को कठोर दंड देना चाहता हूँ।

मंत्री जाफर ने यह आज्ञा पा कर चार हजार सैनिक बुलाए और कुछ ही देर बाद गनीम के भव्य भवन को चारों ओर से घेर लिया। वह अपने साथ सैकड़ों बेलदार भी ले गया था ताकि मकान को खुदवा कर जमीन के बराबर करवा दे। सिपाहियों को भी उसने ताकीद की कि बहुत होशियार रहो ताकि गनीम कहीं से निकल कर भागने न पाए। गनीम पकड़ा जाता किंतु फितना राज कर्मचारियों के तौर-तरीकों से परिचित थी। उसने दूर ही से मंत्री को सेना के साथ आते देख कर समझ लिया कि खलीफा को यहाँ का हाल मालूम हो गया है और उसने दोनों को पकड़वाने के लिए सेना भेजी है।

उसी समय गनीम और फितना भोजन से निवृत्त हुए थे। फितना को बड़ा भय अपने से अधिक गनीम के लिए हुआ क्योंकि वह उसे प्रेम करने लगी थी। उसने यह भी सोचा कि खलीफा को मुझसे प्रेम है इसलिए मुझे तो मामूली सजा ही देगा। किंतु इस निरपराध को जरूर मरवा डालेगा। उसके मुँह से गिरफ्तारी के लिए सैनिकों के आने का हाल सुन कर गनीम प्राण-भय से काँपने लगा और उसमें बोलने और उठने की शक्ति भी नहीं रही। फितना ने झुँझला कर उसे हाथ पकड़ कर उठाया और बोली, मूर्ख, देर करने का समय नहीं है। तुम फौरन गुलामों जैसे कपड़े पहनो, मुँह और हाथ-पैर में कोयले का चूरा मलो जिससे हब्शी मालूम पड़ो। इसके बाद रसोई के बरतनों का टोकरा ले कर बाहर निकल जाओ। वे लोग तुम्हें गुलाम समझ कर जाने देंगे। इसके अलावा और किसी तरह तुम्हारी जान नहीं बच सकेगी। अगर वे लोग पूछें कि तुम्हारा मालिक कहाँ है तो कहना कि घर के अंदर है।

गनीम ने कहा, इस समय मुझे अपने प्राणों से भी अधिक तुम्हारी सुरक्षा की चिंता है। फितना बोली, मेरी चिंता न करो। मैं खलीफा के सामने अपना सारा अपराध क्षमा करवा लूँगी। किंतु तुम्हें देखते ही वह तुम्हें मरवा डालेगा और किसी की कुछ न सुनेगा। मैं घर का सामान भी बचा लूँगी और यह भी संभव है कि बाद में समझा-बुझा कर खलीफा से तुम्हें माफी दिलवा दूँ। अब तुम देर न करो, जैसा मैंने कहा है उसी उपाय से बच कर निकल जाओ। गनीम फिर भी हिचक रहा था लेकिन फितना ने उसे जबर्दस्ती गुलामों के कपड़े पहना दिए। गनीम ने अपने हाथ-पैर और मुँह पर राख और कोयले का चूरा मल कर एक टोकरे में रसोई के खाली बरतन ले कर निकला। सिपाहियों ने समझा कि घर का यह गुलाम बरतनों पर कलई करने जा रहा है। इसलिए उन्होंने उससे रोक-टोक नहीं की। वह बड़े इत्मीनान से मंत्री जाफर के सामने से निकल गया और जाफर को भी कुछ संदेह न हुआ। जाफर के साथ जो बड़े-बड़े जासूसों के अफसर थे वे भी गनीम के छद्म वेश के धोखे में आ गए और गनीम के प्राण फितना की बताई तरकीब से बच गए।

इधर मंत्री ने घर का दरवाजा खुलवाया और अफसरों के साथ घर में आ गया। उसने देखा कि घर के अंदरूनी कमरों में बहुत-सा कीमती सामान, व्यापार की कुछ वस्तुएँ और रुपए-पैसे से भरे संदूक हैं। वह सारा माल गनीम का था। फितना मंत्री को देख कर काँपती हुई उठी जैसे कि उसे मृत्युदंड सुनाया जा रहा है। फिर वह मंत्री के पैरों के सामने गिर पड़ी और बोली, खलीफा ने अगर मेरे बारे में कोई आदेश दिया हो तो कृपया मुझसे कहें, मैं उसका तत्काल पालन करूँगी। मंत्री ने सविनय प्रणाम किया और कहा, सुंदरी, मुझे खलीफा ने यह आदेश दे कर भेजा है कि मैं तुम्हें उन तक पहुँचाऊँ और यह भी कहा है कि इस मकान के मालिक गनीम नामक व्यापारी को पकड़ कर उनके सामने ले चलूँ। उन्होंने यह भी आदेश दिया है कि इस घर को खुदवा कर जमीन के बराबर करवा दूँ।

फितना ने कहा, मैं तो मौजूद ही हूँ। मुझे खलीफा के सामने पहुँचा दो। जहाँ तक गनीम का सवाल है, वह एक महीना से अधिक हुए व्यापार के लिए बाहर चला गया है, शायद दमिश्क गया हो। जाते समय वह अपना रुपया-पैसा और मूल्यवान वस्तुएँ मेरे सुपुर्द कर गया कि मैं इनकी रखवाली करूँ। आप इस माल-असबाब को भी खलीफा के तोशखाने में

पहुँचा दीजिए और फिर घर का जो चाहे कीजिए।

मंत्री जाफर ने यही किया। उसने पहले मकान की तलाशी ली किंतु गनीम कहीं नहीं मिला। फिर उसने मजदूरों के सिरों पर रखवा कर गनीम की सारी संपत्ति राजमहल में पहुँचा दी। फितना को ले कर खुद खलीफा के पास चल दिया और कोतवाल को आदेश दिया कि मकान को होशियारी से खुदवाओ ताकि गनीम अगर कहीं छुपा हुआ हो तो मलबे में दब न जाए बल्कि निकल भागने का प्रयत्न करे। उस समय तुम उसे पकड़ कर खलीफा के दरबार में पहुँचा देना क्योंकि खलीफा उसकी गिरफ्तारी पर बड़ा जोर दे रहे हैं।

मंत्री और अन्य अफसर इधर राजमहल को चले उधर कोतवाल ने मकान के चप्पे-चप्पे की तलाशी ली किंतु गनीम को कहीं नहीं पाया। खलीफा ने वजीर को आते देखा तो दूर ही से पूछा, मेरी आज्ञाओं का पालन किया? जाफर ने कहा, एक को छोड़ कर सभी आज्ञाओं का पालन हुआ है। अभी आ कर पूरा हाल बताता हूँ। इतने में कोतवाल भी आ गया किंतु गनीम का कहीं पता नहीं चला। मंत्री ने खलीफा के पास जा कर फितना और उसकी दोनों दासियों को उपस्थित किया और कहा, मैंने मकान का एक-एक कोना छान मारा लेकिन गनीम कहीं नहीं था। लोगों ने बताया कि वह एक महीने से अधिक हुआ व्यापार के काम से दमिश्क चला गया है। इसके बाद मैंने बेलदार लगवा कर अपने सामने उसका मकान गिरवा कर जमीन के बराबर कर दिया।

खलीफा को गनीम के हाथ से निकल जाने पर और गुस्सा आया। उसने अपने सामने खड़ी भय से काँपती फितना को देखा तो गुस्से के कारण उससे भी कुछ न बोला क्योंकि वह समझता था कि यह गनीम के उपभोग में रही है। उसने महल के हब्शी प्रबंधक मसरूर से कहा कि इसे दासियों के लिए बने बंदीगृह में डाल दे। यह बंदीगृह खलीफा के अपने निवास कक्षों से लगा हुआ था।

फिर खलीफा ने उसी क्रोध की दशा में पत्र लेखक को बुलवाया और दमिश्क के हाकिम के नाम निम्नलिखित पत्र लिखवाया :

दमिश्क के हाकिम को खलीफा हारूँ रशीद की ओर से ज्ञात हो कि दमिश्क के मृत व्यापारी अय्यूब का पुत्र गनीम शाही महल की एक दासी का अपहरण करके ले गया था। इस समय वह भागा हुआ है। आप उसे हर जगह ढुँढ़वाएँ। जहाँ मिले उसे पकड़ कर हथकड़ी डाल कर गलियों में फिराएँ और सिपाहियों को आदेश दें कि हर चौराहे पर उसे कोड़े मारें और घोषणा करें कि बादशाह या खलीफा के साथ धोखा करनेवाले और उसकी दासी को भगानेवाले का यही दंड होता है। फिर उसे पहरे में मेरे पास भेज दें ताकि मैं उसका उचित न्याय करूँ। उसके घर को खुदवा दें और उस जमीन पर हल चलवा दें।

अगर वह न मिले तो दमिश्क में उसकी माँ, बहन, भाई या जो भी दूसरे कुटुंबी हों उन्हें भी इसी प्रकार का दंड तीन दिन तक दिया जाए। अगर दमिश्क का कोई और निवासी गनीम की किसी प्रकार की प्रत्यक्ष या परोक्ष सहायता करता हुआ पाया जाए तो उसे भी इसी प्रकार नगर में अपमान तथा मकान खुदवा डालने का दंड दिया जाए। इस आदेश को

जरूरी समझें और इसका अविलंब और पूर्णरूपेण पालन करें।

खलीफा ने यह पत्र बंद करवाया और लिफाफे पर अपनी मुहर लगवाई। फिर एक दूत को आज्ञा दी, इसे दमिश्क के हाकिम के पास ले जा कर दो। अपने साथ एक सिखाया हुआ कबूतर भी ले जाओ। इस पत्र की रसीद दमिश्क के हाकिम जुबैनी से ले कर कबूतर के पंख में बाँध कर इधर उड़ा देना ताकि उसी दिन कुछ घंटों के अंदर मुझे मिल जाए। दूत ने खलीफा का पत्र जुबैनी को दिया तो उसने वह रस्म के अनुसार पहले अपने सिर पर रखा और तीन बार चूम कर खोला और पढ़ा। फिर दूत को उसकी रसीद दे दी।

इसके बाद जुबैनी कोतवाल और सिपाहियों को ले कर गनीम के घर पर पहुँचा। गनीम जब से दमिश्क छोड़ कर बगदाद गया था तब से उसने कोई पत्र भी अपनी माँ को नहीं भेजा था। जो व्यापारी उसके साथ गए थे उन्होंने भी बताया कि गनीम उनसे अलग रहने लगा था। बहुत दिनों तक उसका पता न चलने से माँ ने सोचा कि वह मर गया है। वह खूब रोई जैसे उसके सामने ही उसका बेटा मरा हो। उसने अपने घर में प्रतीक रूप में उसकी कब्र बनवाई और उस पर उसका चित्र रखा और रोज कुछ देर के लिए कब्र पर बैठ कर मातम करती जैसे कि वास्तव में गनीम की लाश कब्र के अंदर हो। उसकी बेटी अलकित भी अपनी माँ के साथ मिल कर अपने भाई का मातम किया करती थी। उनके पड़ोसी भी अक्सर मातम में शरीक हो जाया करते थे। अच्छे पड़ोसी इसी तरह मातम में शरीक हुआ करते थे।

जुबैनी ने दरवाजे पर जा कर आवाज दी तो अंदर से एक दासी निकली। जुबैनी ने स्वयं उससे पूछा कि गनीम कहाँ है। दासी दमिश्क के हाकिम को पहचान गई और घबराहट में हकला कर बोली, सरकार, गनीम का तो काफी दिन पहले देहावसान हो गया है। उसकी माँ और बहन रोज उसकी कब्र पर बैठ कर मातम किया करती हैं। इस समय भी वहाँ बैठी मातम कर रही हैं। जुबैनी ने दासी की बात पर विश्वास नहीं किया और खुद ही कोतवाल समेत घर के अंदर घुस आया और सिपाहियों से कहा, घर का कोना-कोना छानो और गनीम कहीं छुपा हो तो उसे बाहर निकालो।

गनीम की माँ और बहन ने बाहरी आदमियों को देख कर अपने चेहरे ढक लिए। फिर गनीम की माँ ने जुबैनी के पैरों के पास जमीन से सिर लगा कर पूछा कि कैसे कष्ट किया। उसने कहा, देवी जी, हम तुम्हारे पुत्र गनीम की तलाश में आए हैं। वह यहाँ है या नहीं?

वह बोली, वह तो बहुत दिन हुए मर गया और अब हम माँ-बेटियाँ उसकी कब्र पर मातम ही किया करते हैं। यह कह कर वह अपने बेटे की याद करके फूट-फूट कर रोने लगी और आगे कुछ न कह सकी। जुबैनी मन में सोचने लगा कि अपराधी तो गनीम है, उसकी माँ और बहन का क्या अपराध है। यह हारूँ रशीद का बड़ा अन्याय है जो इन्हें दंड दे रहा है। किंतु खलीफा का आदेश स्पष्ट था और जुबैनी को उसका पालन करना ही था।

कुछ देर में वे लोग जिन्हें जुबैनी ने नगर में गनीम की खोज करने के लिए भेजा था वापस

आ गए और जुबैनी को बताया कि गनीम का पता कहीं नहीं चला। गनीम की माँ और बहन के मातम करने से जुबैनी को यह भी विश्वास हो गा कि गनीम की मृत्यु हो गई है। जुबैनी को इन निर्दोष स्त्रियों को दंड देने में बड़ा कष्ट हो रहा था किंतु वह खलीफा के आदेश के कारण विवश था। उसने गनीम की माँ से कहा, माताजी, आप बेटी को ले कर घर से निकल जाइए। वे बेचारियाँ घर से निकल कर गली में बैठ गईं। जुबैनी ने इस खयाल से कि उनकी बेपरदगी न हो उन्हें अपनी लंबी-चौड़ी चादर उढ़ा दी। फिर उसने नगर निवासियों को आदेश दिया कि घर में घुस कर सब कुछ लूट लो। यह सुनते ही सैकड़ों मनुष्य घर में घुस गए और उन्होंने कुछ ही मिनटों में घर का सफाया कर दिया। गहने, कपड़े, बरतन, काठ, कबाड़ सब लूट कर ले गए। गनीम की माँ और बहन दुख और आश्चर्य से इस लूटपाट को देखती रहीं। फिर जुबैनी ने कोतवाल को आज्ञा दी कि घर को गिरवा कर जमीन के बराबर करवा दो। कोतवाल ने सैकड़ों मजदूर लगवा दिए और कुछ मिनटों के बाद घर का नाम-निशान तक बाकी न रहा। दोनों स्त्रियाँ यह देख कर सिर पीट कर रोने लगीं।

लेकिन उन्हें तो और भारी मुसीबतें देखनी थीं। उस दिन जुबैनी उन्हें अपने महल में ले गया और बोला, मैं जानता हूँ कि आप लोगों का कोई कसूर नहीं है लेकिन खलीफा ने मुझे आदेश दिया है कि मैं आप लोगों को दंड दूँ और मुझे वह आदेश मानना ही है। दूसरे दिन वह उन्हें महल से बाहर मैदान में लाया और आज्ञा दी कि इनके कपड़े उतार दो और पुरवासी इनके नंगे शरीरों पर कोड़े चलाएँ। जब उनके ऊपरी वस्त्र उतारे गए तो उनके कोमल गुलाबी शरीरों को देख कर जुबैनी को दया आई। उसने घोड़े के बालों से बुने हुए दो भारी कंबल उन्हें उढ़ा दिए ताकि उन्हें कम चोट लगे। उसने उनके सिर भी ढक दिए और उनके बालों को शरीर के चारों ओर बिखरा दिया। अलकिंत के बाल बड़े नर्म थे और इतने लंबे थे कि एड़ियों तक पहुँचते थे। ऐसी अपमानजनक स्थिति में उन्हें नगर में घुमाया गया। उनके साथ कोतवाल भी था जो सिपाहियों को साथ लिए हुए था। एक मुनादी करनेवाला उनके आगे-आगे यह मुनादी करता जाता था कि खलीफा के प्रति अपराध करनेवालों के कुटुंबियों की यही दशा होती है। इन दोनों माँ-बेटियों ने ऐसा अपमान कहाँ देखा था। बेचारियाँ फूट-फूट कर रो रही थीं लेकिन उन पर दया करनेवाला कोई नहीं था। उन्होंने अपने बालों को अपने चेहरों पर डाल लिया ताकि उन्हें जनसाधारण न देख सके।

उनकी दुर्दशा पर साधारणतः नगर निवासी भी दुखी थे। स्त्रियाँ अपनी छतों पर चढ़ कर या अपनी खिड़कियों से इस दृश्य को देखतीं और हाय-हाय करती थीं। बच्चे अपनी माँ-बहनों का रोना-पीटना सुन कर सहम जाते थे। विशेषतः लोगों को अलकिंत की इस दशा पर बहुत दुख था क्योंकि वह नवयुवती और अतीव सुंदरी थी। दिन भर उन्हें नगर में इसी अपमान के साथ घुमाया गया और कोड़े मारे गए। शाम को फिर उन्हें जुबैनी के महल में लाया गया। उस समय थकन, चोटों और अपमान के दुख से दोनों बेहोश हो गईं।

दमिश्क के हाकिम जुबैनी की पत्नी को उनकी इस दशा पर तरस आया। जुबैनी ने खलीफा के आदेश के अनुसार आज्ञा दी थी कि गनीम की माँ और बहन की कोई व्यक्ति

सहायता न करे। किंतु जुबैनी की पत्नी ने गुप्त रुप से उनकी सहायता के लिए अपनी दासियाँ भेजीं। इन दासियों ने उन बेहोश पड़ी औरतों के मुँह पर गुलाबजल के छींटे दिए और उनके आँखें खोलने पर उन्हें शरबत पिलाया। इसके बाद वे दोनों उठ कर बैठ गईं।

दासियों ने उन्हें पंखा झला और बताया कि तुम लोगों की यह दशा देख कर जुबैनी की बेगम को बहुत दुख हुआ है और उन्होंने हम लोगों को इसलिए यहाँ भेजा है कि तुम लोगों की यथासंभव सहायता करें यद्यपि खलीफा के आदेश के अनुसार तुम्हारी सहायता करनेवाला भी दंड का भागी होगा। गनीम की माँ जुबैनी की पत्नी के प्रति देर तक आभार प्रकट करती रही और उसे दुआएँ देती रही। फिर उसने पूछा कि हाकिम जुबैनी ने हम लोगों को इतना दंड तो दिया लेकिन यह नहीं बताया कि मेरे बेटे ने खलीफा के प्रति ऐसा कौन-सा अपराध किया था जिसका यह दंड हमें मिला है। दासियों ने कहा, हम ने तो यह सुना है कि तुम्हारा पुत्र गनीम खलीफा की एक अतिसुंदर प्रेयसी को ले भागा है, उसी कारण खलीफा ने तुम लोगों को यह दंड देने का आदेश दिया है। अब तुम यह तो जानती ही हो कि खलीफा के आदेश का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। इसलिए हमारे मालिक जुबैनी ने विवश हो कर तुम्हें यह दंड दिया है। वैसे हमारे मालिक को तुम्हारे निर्दोष होने के कारण तुम्हें दंड देने का बहुत बड़ा दुख है। और हमारी मालकिन तथा हम लोगों को भी तुम्हारे लिए बड़ा खेद है, लेकिन इस मामूली मदद के अलावा हम लोग तुम्हारी और कुछ सहायता नहीं कर सकते।

गनीम की माँ ने कहा, यह तो मैं कभी नहीं मान सकती कि मेरे बेटे ने वह अपराध किया होगा जिसका दोष उस पर लगाया गया है। मैंने उसे बचपन ही से उसकी शिक्षा और आचार-व्यवहार के प्रशिक्षण पर बहुत परिश्रम किया है। विशेष रूप से हम लोगों ने उसे इस बात की पूरी शिक्षा दी है कि बादशाहों और अमीर-उमरा के साथ किस प्रकार का बरताव करना चाहिए। अपहरण जैसा लफंगों का काम उससे हो ही नहीं सकता। फिर भी यह सुन कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह भागा हुआ है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि वह जीवित है। हम तो उसे मरा ही समझ बैठे थे। अगर वह जीता है तो हमें अपनी दुर्दशा और अपमान का कोई दुख नहीं। हम उसके लिए बड़ा से बड़ा कष्ट उठा सकते हैं। हाकिम जुबैनी ने जो कुछ किया हमें उसकी कोई शिकायत नहीं है।

अलकिंत को भी अच्छी तरह होश आ गया था। वह अपनी माँ की बातें सुन कर उसके गले से लिपट गई और बोली, अम्मा, तुमने बिल्कुल ठीक कहा। अगर भाई जिंदा है तो मैं उसके पीछे और भी कष्ट भोगने के लिए तैयार हूँ। इसके बाद दोनों माँ बेटी फूट-फूट कर रोने लगीं। जुबैनी के महल की दासियों को भी दुख हुआ और वे भी रोने लगीं। फिर इन दासियों ने उन्हें भोजन करने को कहा। उनकी इच्छा तो नहीं थी किंतु दासियों के बहुत कहने-सुनने से उन्होंने थोड़ा-बहुत भोजन पेट में डाल लिया।

खलीफा का आदेश था कि उन लोगों को तीन दिन तक सार्वजनिक अप्रतिष्ठा का दंड दिया जाए। अतएव जुबैनी ने दूसरे दिन भी उन्हें उसी प्रकार नगर में अपमानपूर्वक फिराने का आदेश दिया। किंतु अब नगर निवासी इस बेकार बात से बहुत ऊब चुके थे। वे

अपना काम-धंधा बंद कर के शहर के बाहर चले गए। उनकी स्त्रियों ने भी घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर लीं। इस प्रकार सार्वजनिक अपमान का उद्देश्य ही पूरा नहीं हुआ। जुबैनी के इशारे पर उन लोगों पर सिपाहियों की मार भी दिखाने भर की पड़ी।

उसके अगले दिन भी दंड की यह रस्म पूरी की गई, उस दिन भी नगर में सन्नाटा रहा। इसके अगले दिन जुबैनी ने आज्ञा दे कर घोषणा करवाई कि कोई नगर निवासी इन दोनों स्त्रियों को अपने यहाँ शरण न दे वरना खलीफा के द्वारा निर्धारित दंड का भागी होगा। साथ ही आज्ञा दी कि इन दोनों को नगर की सीमा से बाहर कर दिया जाए ताकि यह जहाँ चाहें चली जाएँ। पहले वे दोनों नगर निवासियों के पास ही गईं कि कुछ सहायता लें किंतु सभी को डर था कि खलीफा के आदेश से जुबैनी उन्हें दंड देगा इसलिए जिसके पास जाती वह या तो उन्हें दुतकार कर भगा देता या खुद भाग जाता।

दो-चार जगह यह व्यवहार देख कर गनीम की माँ ने बेटी से कहा, इस शहर में हमें कोई भी व्यक्ति आश्रय नहीं देगा, सभी को अपनी जान की पड़ी है। यहाँ तो शरण क्या, कोई हमें भीख भी नहीं देगा जिससे हम पेट भर सकें। अब इस के अलावा और कोई उपाय नहीं है कि हम किसी अन्य देश में जाएँ। इधर जुबैनी ने कबूतर द्वारा खलीफा के पास संदेश भिजवाया कि आपके आदेश का पालन कर दिया गया। खलीफा ने उसी कबूतर से यह आदेश भिजवाया कि तीन मंजिल (एकदिवसीय यात्रा की दूरी) इधर-उधर तक के गाँवों में मुनादी करा दो कि इन लोगों की कोई आदमी सहायता न करे ताकि इन लोगों को फिर से अपने शहर में आने की कोई संभावना ही न रहे।

जुबैनी ने खलीफा के आदेशानुसार यह मुनादी तो करवा दी किंतु इन दोनों से कह भी दिया कि नए आदेश के अनुसार तुम्हें कोई शरण तीन मंजिलों तक नहीं मिल सकेगी। साथ ही उन दोनों को आधी-आधी अशर्फी भी चुपके से दे दी कि चार-छह दिन तक खाने का प्रबंध कर लें। वे दोनों जुबैनी के दिए कंबल ओढ़ कर ओर गले में पुराने कपड़ों की बनी भीख की झोली डाल कर शहर से निकलीं। रात के समय वे किसी मसजिद में जा कर पड़ी रहतीं और मसजिद न होती तो किसी टूटी-फूटी सराय के कोनों में ठहर जातीं। काफी दूर जाने पर वे एक गाँव में पहुँची। वहाँ किसानों की स्त्रियाँ उनके चारों ओर एकत्र हो गईं और पूछने लगीं कि कौन हो। उन्होंने बताया कि हम लोग खलीफा के आदेशानुसार प्रताड़ित किए गए हैं। स्त्रियों ने पूछा कि खलीफा ने तुम्हें यह दंड क्यों दिया तो उन्होंने पूरा हाल बताया।

किसानों की स्त्रियों को उनकी इस दशा पर बड़ी दया आई। उन्होंने उनके कंबलों को उतरवा कर उन्हें पहनने के लिए अपने कपड़े दिए और उन्हें भोजन कराया। किंतु वे गाँव में क्या करतीं, उन्हें गनीम को भी खोजना था। इसलिए एक दिन आराम करके दूसरे दिन वे वहाँ से चलीं और पूर्ववत माँगते-खाते हुछ दिनों बाद हलब नगर में पहुँचीं। वहाँ दो-चार दिन घूम कर गनीम का पता लगाने की कोशिश की। फिर वहाँ से रवाना हुईं ओर कई दिन के बाद मोसिल नगर पहुँचीं। वहाँ भी कई दिन तक पूछने पर गनीम का पता न चला तो वे दोनों बगदाद की ओर चलीं कि शायद वह उसी नगर में कहीं छुप रहा हो। यद्यपि इन

भिखमंगी बनी हुई स्त्रियों को किसी छुपे हुए अपराधी का पता मिलना असंभव था तथापि आशा बलवती होती है। और वही आशा इन्हें द्वार-द्वार भटका रही थी। बेचारियाँ हर एक से गनीम के बारे में पूछतीं और हर जगह से जवाब मिलता कि हमें कुछ नहीं मालूम।

उधर फितना पर क्या बीती यह भी सुनिए। वह बेचारी अपने कारागार की तंग कोठरी में रात-दिन विलाप किया करती। उसी कोठरी से लगा हुआ खलीफा के आवास का आँगन था। वह अक्सर शाम को उस आँगन में टहलता और उसी समय अपनी प्रशासनिक समस्याओं पर विचार किया करता था। एक शाम को वह वहाँ टहल रहा था कि उसे अत्यंत करुण ध्वनि सुनाई दी। वह उसे सुन कर खड़ा हो गया। उसने ध्यान से सुना तो अपनी प्रेयसी फितना की आवाज पहचानी। वह कान लगा कर सुनने लगा। फितना रो-रो कर कह रही थी, अभागे गनीम, तू कहाँ है? तूने मेरी इतनी सेवा की और मेरी भलाई की और उसका बदला यह मिला कि आर्थिक रूप से बिल्कुल बरबाद हो गया। मालूम नहीं तू अब जिंदा है या खलीफा के डर से मर गया।

कुछ देर बाद उसकी आवाज फिर आई, ओ खलीफा हारूँ रशीद, तूने निरपराध गनीम पर ऐसा अत्याचार किया जैसा किसी बादशाह ने किसी पर नहीं किया होगा। क्या तुझे ईश्वर का भय नहीं है? कयामत में जब सारे लोग ईश्वर के समक्ष होंगे और जब उनसे उनके भले-बुरे कामों की पूछताछ की जाएगी उस समय तू अपने इस महाअन्याय का क्या औचित्य देगा? यह कहने के बाद फितना जोरों से विलाप करने लगी। खलीफा यह सुन कर बड़ी चिंता में पड़ा। उसने सोचा कि अगर फितना सच कह रही है और गनीम निर्दोष है तो वास्तव में उस पर और उससे भी अधिक उसकी बहन पर अन्याय हुआ। खलीफा के लिए जो भगवान का प्रतिनिधि होता है ऐसा अन्याय किसी प्रकार उचित नहीं है।

वह अपने कक्ष में गया और वहाँ राजमहल के मुख्य अधिकारी मसरूर को बुलाया और उसे आदेश दिया कि फितना को कैदखाने से निकाल कर मेरे पास ले आओ। मसरूर को फितना से स्नेह था। वह यह आदेश पा कर बड़ा प्रसन्न हुआ और फितना के पास जा कर बोला, सुंदरी, चलो, तुम्हें खलीफा ने बुलाया है। मुझे विश्वास है कि अब तुम कैद से छूट जाओगी। फितना तुरंत ही तैयार हो गई और मसरूर ने उसे खलीफा के सामने पेश कर दिया। खलीफा ने उसे देखते ही पूछा, तुमने यह कैसे कहा कि कयामत में मैं ईश्वर को मुँह नहीं दिखा सकूँगा। मैंने किस निरपराध व्यक्ति को हानि पहुँचाई है? तुम्हें मालूम है कि मैं न्याय के लिए प्रसिद्ध हूँ और किसी पर भी अन्याय नहीं करता न किसी और को अन्याय करने देता हूँ।

फितना समझ गई कि वह अभी जो विलाप कर रही थी उसे खलीफा ने सुन लिया है। वह जमीन से सिर लगा कर बोली, मालिक, मेरे मुँह से कुछ अनुचित निकला हो तो मैं क्षमा चाहती हूँ। यह जरूर कहूँगी कि दमिश्क का व्यापारी गनीम रंचमात्र भी अपराधी नहीं है। उसने मेरे प्राण बचाए और मुझे अपने घर में आराम से रखा। पहले वह मुझे देख कर मेरी ओर आकृष्ट हुआ था किंतु जब उसे मालूम हुआ कि मैं आपकी सेवा में हूँ तो उसका

रवैया बिल्कुल बदल गया। उसने मुझ से स्पष्ट कहा कि शासक की संपत्ति प्रजाजन के लिए त्याज्य है। उसके बाद वह मुझसे पवित्र प्रेम करता रहा है, अपना बिस्तर हमेशा दूसरे कमरे में लगवाता रहा है। यह सुन कर खलीफा ने फितना को जमीन से उठाया और कहा कि तुम अपना पूरा हाल बताओ कि मेरी अनुपस्थिति में तुम्हें क्या-क्या अनुभव हुए हैं।

फितना ने आद्योपरांत अपना वृत्तांत सुनाया। खलीफा ने फितना से कहा, तुम्हारी बात के ढंग से लग रहा है कि तुम झूठ नहीं बोल रही हो। परंतु मेरी समझ में यह नहीं आया कि जब मैं इतने दिनों से आया हुआ हूँ तो तुम अब तक चुप क्यों रही और फिर अपना हाल भेजा भी तो लिख कर भेजा। इस देरी का क्या कारण है? फितना बोली, सरकार, इसका कारण यह है कि एक महीने से अधिक हुआ गनीम अपना तमाम माल-असबाब मेरे सुपुर्द करके बाहर चला गया। इस बीच मेरी किसी आदमी से बात ही नहीं हुई जो आप के आगमन का समाचार देता। बहुत दिनों में अपनी दासी द्वारा आप का समाचार ज्ञात हुआ तो फौरन ही मैंने पत्र भेजा।

खलीफा ने कहा, अब मुझे वास्तव में यह महसूस हो रहा है कि मैंने गनीम और उसकी माँ और बहन के साथ घोर अन्याय किया है। मैं चाहता हूँ कि इस अन्याय का निराकरण करने के लिए उसका कुछ उपकार करूँ। तुम्हारे विचार से मुझे इस दशा में कार्य करने के लिए क्या करना चाहिए। फितना ने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि खलीफा का क्रोध दूर हो गया है और वह दया दर्शाना चाहता है। उसने सिर झुका कर कहा, आप यह मुनादी करवा दीजिए कि गनीम का अपराध क्षमा किया गया। वह यह मुनादी सुनेगा तो वापस आ जाएगा। खलीफा ने कहा, ठीक है, मैं ऐसी ही घोषणा करवाए देता हूँ। उसका जो नुकसान हुआ है उससे दुगुना उसे दे दूँगा। और जब वह आएगा तो तुम्हारा विवाह भी उसके साथ कर दूँगा। खलीफा ने यह घोषणा तो करवा दी किंतु उसका कोई फल नहीं हुआ। न गनीम आया न किसी और ने उसका समाचार दिया। इस पर फितना ने खलीफा से कहा कि आप अनुमति दें तो मैं स्वयं गनीम को खोजने निकलूँ। खलीफा ने अनुमति दे दी।

फितना दूसरे दिन सवेरे ही एक तोड़ा अशर्फियों का ले कर निकली। बड़ी मसजिद में जा कर उसने संतों और फकीरों को दान दिया और उनसे अपने मनोरथ की सिद्ध के लिए आशीर्वाद प्राप्त किए। फिर वह जौहरियों के बाजार में गई और एक दलाल से मिली। यह दलाल बहुत ही धर्मप्राण व्यक्ति था और विदेशियों तथा बीमारों को भरसक सहायता किया करता था। इसीलिए कई धनवान व्यक्ति उसके पास पुण्यार्जन के निमित्त धन भेजा करते थे और जिस दीन-दुखी को सहायता चाहिए होती थी वह उसके पास आया करता था।

फितना ने उसे अशर्फियों की थैली दे कर कहा कि इस धन को भी दीन-दुखियों के काम में लगा देना। दलाल ने उसके राजसी वस्त्राभरण देखे तो समझ गया कि यह खलीफा की पत्नी या प्रेयसी है। उसने सिर झुका कर कहा, सुंदरी, मैं तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूँ

किंतु अच्छा होगा कि आप अपने हाथों ही से यह पुण्य कार्य करें। आप यदि मेरे घर चलने का कष्ट करें तो बहुत अच्छा रहेगा। मेरे यहाँ दो स्त्रियाँ आई हैं जो अत्यंत दीन दशा में हैं।

वे कल ही इस नगर में आई हैं और यहाँ उनकी कोई जान-पहचान नहीं है। मैंने उन्हें इसलिए अपने घर में ठहराया है कि वे अत्यंत दयनीय दशा में थीं। उनके वस्त्र मैले-कुचैले और फटे-पुराने थे। धूप में चलने के कारण उनका रंग सँवला गया था और भूख-प्यास ने उनके शरीरों को अति दुर्बल कर दिया था और वे हड्डियों का ढाँचा भर रह गई थीं। मैंने उन्हें अपनी पत्नी के सुपुर्द कर दिया कि वह उनकी अच्छी तरह देखभाल करे। मेरी पत्नी ने उन्हें गरम पानी से नहलाया और सुखद शैय्या बिछवा कर उन्हें आराम करने को कहा और पहनने के लिए उचित वस्त्रादि दिए। उनकी ऐसी खराब हालत थी कि मैंने उनसे उनका हाल पूछना ठीक नहीं समझा। अब आप उचित समझें तो मेरे घर पधार कर उनका हाल पूछ लें।

दलाल ने अपने घर का पता बताया तो फितना ने अपना शाही टट्टू तुरंत उस ओर दौड़ा दिया। दलाल भी उसके साथ दौड़ने लगा। फितना ने कहा, आप इस प्रकार न दौड़िए। आप जैसे सज्जन व्यक्ति के साथ मैं यह व्यवहार नहीं करना चाहती। आप अपना एक दास मेरे साथ कर दीजिए और स्वयं बाद में धीरे-धीरे आइए। दलाल ने अपना दास साथ कर दिया और फितना दलाल के घर जा कर सवारी से उतरी। दास ने अंदर जा कर सूचना दी कि एक बादशाही महल की महिला मिलने आई है। दलाल की पत्नी यह सुन कर जल्दी से उठी कि घर के दरवाजे पर जा कर राजमहिषी का स्वागत करे। फितना ने इसका अवसर न दिया। वह स्वयं दास के पीछे-पीछे चल कर जनानखाने में आ गई। दलाल की पत्नी उसके पाँव चूमने को झुकी। फितना ने यह भी न करने दिया। उसका सिर उठा कर वह बोली, महाभागे, मैं उन दो परदेशी स्त्रियों को देखने आई हूँ जो कल आपके घर पर आई हैं। दलाल की पत्नी उसे ले कर आगंतुकाओं की चारपाइयों के पास आ गई।

फितना ने उनके पास जा कर कहा, देवियो, मैं आप लोगों का हाल-चाल पूछने और आपकी सेवा करने के लिए आई हूँ। वे स्त्रियाँ गनीम की माँ और बहन थीं। माँ ने फितना को आशीष दी, भगवान तुम्हें इस सत्कार्य का भरपूर फल दे। हम लोगों पर तो ऐसी आपदा पड़ी है जो कि भगवान शत्रु पर भी न डाले। यह कह कर वह रोने लगी। उसे रोते देख कर फितना और दलाल की पत्नी की आँखों में आँसू आ गए। फिर फितना ने कहा, माताजी, आप कृपया अपना वृत्तांत मुझे बताएँ, मैं भरसक आपकी सहायता करूँगी।

गनीम की माँ ने कहा, बेटी, खलीफा की प्रेयसी फितना हमारे दुर्भाग्य का कारण बन गई है। फितना यह सुन कर भी चुप ही रही और ध्यानपूर्वक प्रौढ़ा की बात ऐसे सुनने लगी जैसे फितना को जानती ही न हो। गनीम की माँ ने कहा, मैं दमिश्क के प्रसिद्ध व्यापारी स्वर्गीय अय्यूब की पत्नी हूँ। मेरा पुत्र गनीम व्यापार के लिए बगदाद आया था। वहाँ उस पर फितना को भगाने का आरोप लगाया गया और खलीफा ने उसके वध की आज्ञा

दी। लेकिन वह न मिला तो खलीफा ने दमिश्क के हाकिम को आदेश दिया कि गनीम की माँ और बहन को तीन दिन बीच शहर में कोड़े मारे जाएँ और घर का सामान लुटवा दिया जाए और घर गिरवा कर जमीन के बराबर करवा दिया जाए। हाकिम ने ऐसा ही किया और तीन दिन तक हम माँ-बेटी को पिटवा कर दमिश्क से निकाल दिया। इस सब पर भी हम दोनों को अपने भाग्य से कोई शिकायत नहीं रहेगी अगर मेरा प्यारा बेटा हमें देखने को मिल जाए। खलीफा की प्रेयसी के कारण हम पर और हमारे पुत्र पर जो कुछ अन्याय हुआ है वह हम खुशी से और हमेशा के लिए माफ कर देंगे और हमें उससे पूरी सहानुभूति और पूरा प्यार हो जाएगा अगर हमारा प्यारा गनीम हमें मिल जाए।

फितना बोली, माताजी, मैं ही वह अभागी फितना हूँ जो तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण बनी। किंतु मेरे दुर्भाग्य से आप लोगों की जितनी प्रतिष्ठा नष्ट हुई है भगवान चाहेगा तो उस से दुगुनी बनेगी और जो कुछ तुम्हारी धन हानि हुई है उसके बदले कई गुना धन तुम्हें मिलेगा। मेरी बात पर खलीफा ने विश्वास कर लिया है और मुनादी करवा दी है कि गनीम का अपराध क्षमा कर दिया गया और गनीम खलीफा के दरबार में हाजिर हो। माताजी, अब तुम धीरज रखो। खलीफा अब तुम लोगों से कुपित नहीं है। वह गनीम से मिलना चाहता है। वह चाहता है कि जो अन्याय उससे गनीम पर हुआ है उसका पूरा बदला उसे काफी इनाम-इकराम दे कर कर दे। उसने मुझ से यह भी कहा है कि गनीम आएगा तो मैं तेरा विवाह उसके साथ कर दूँगा। आज से तुम मुझे भी अपनी बेटी समझो।

गनीम की माँ यह सुन कर पहले तो स्तंभित रही फिर खुशी के आँसू बहाने लगी। उसने उठ कर फितना को गले लगा लिया और रोने लगी। फितना भी उस से चिमट कर रोने लगी। फिर गनीम की माँ के साथ अलकिंत के पास गई और उसे गले लगा कर प्यार किया। फिर उन दोनों को धीरज बँधाते हुए कहने लगी, यहाँ पर गनीम का जो कुछ धन था उसका नुकसान नहीं हुआ है। वह सुरक्षित है और तुम लोगों को पूरा का पूरा मिलेगा यद्यपि मैं जानती हूँ कि धन से तुम्हारी तसल्ली नहीं होगी क्योंकि तुम गनीम को पाना चाहती हो। भगवान ने चाहा तो वह भी तुम्हें आ मिलेगा। भगवान के लिए कोई बात कठिन नहीं है। जब उसने तुम पर इतनी अनुकंपा की है तो गनीम का तुम से आ मिलना क्या मुश्किल है।

यह लोग यह बातें कर ही रही थीं कि दलाल आ गया और बोला, कुछ देर पहले मैंने देखा कि एक ऊँटवाला एक निर्बल रोगी को कजावे में रस्सी से बाँध कर यहाँ के बड़े औषधालय में लाया है। मैंने और ऊँटवाले ने उसे ऊँट से कजावे समेत उतारा। हमने बहुत कुछ इसका हाल पूछा परंतु उसने रोने के सिवा और कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उसे नितांत शक्तिहीन देखा तो यहाँ ले आया और उसे अपने बगलवाले मकान में उतारा। मैंने उसे साफ कपड़े पहनाए हैं और बाजार से उसके लिए परहेजी खाना मँगवाया है। खाना खा कर शायद उसे बोलने की ताकत आ जाए। फिर उनका हाल पूछ कर एक हकीम को लाऊँगा कि उसका ठीक इलाज हो सके।

फितना ने यह सुना तो बोल उठी, महोदय, मुझे भी उस बीमार के पास ले चलिए क्योंकि

मैं भी उस रोगी को देखना चाहती हूँ। दलाल फितना को वहाँ ले गया। गनीम की माता ने कहा, इस धर्मात्मा दलाल के पास दूर-दूर से दीन-दुखी आया करते हैं। बेटी, यह रोगी कहीं तुम्हारा भाई ही न हो। फितना जब उस मकान में पहुँची तो देखा कि एक नौजवान मरीज पलंग पर पड़ा है, उसके बदन की हड्डियाँ भर रह गई हैं, उसका चेहरा बिल्कुल पीला और भयानक हो गया है और उसकी आँखों से निरंतर आँसू बह रहे हैं। फिर भी हृदय की भावनाओं ने अनजाने ही जोर मारा तो उसके पास झपट कर पहुँची और गौर से देखा तो पहचाना कि यह गनीम ही है। वह रो कर कहने लगी, हाय गनीम, तुम्हारी यह दशा। गनीम ने आँखें खोलीं और ध्यान से उसे देख कर बोला, अरे सुंदरी, तुम यहाँ। और यह कह कर बेहोश हो गया।

अब दलाल आगे बढ़ा। उसने फितना से कहा, आप अभी यहाँ से हट जाइए। कहीं ऐसा न हो कि आपको देख कर हर्षातिरेक के मारे मर जाए। फितना चली गई तो दलाल ने गुलाबजल छिड़क कर गनीम को सचेत किया और उसे एक शक्तिवर्धक शर्बत पिलाया। वह होश में आया तो चारों ओर देख कर बोला, सुकुमारी, तुम कहाँ हो? तुम वास्तव में मेरे सामने आई थी या मैंने तुम्हें स्वप्न में देखा था? दलाल बोला, यह स्वप्न नहीं, सत्य था। अब मुझे मालूम हुआ कि तुम्हीं गनीम हो। खलीफा ने मुनादी करवाई है कि तुम्हारा अपराध क्षमा किया गया। तुम धैर्य रखो। तुम्हारी साथिन तुम्हें सब कुछ बताएगी। मैं तुम्हारे लिए भरसक प्रयत्न करूँगा।

फिर दलाल दवा आदि के लिए चला गया। इधर फितना गनीम की माँ और बहन के पास गई और उसने दोनों को बताया कि आगंतुक रोगी गनीम ही है। गनीम की माँ वह सुन कर अपनी खुशी न सँभाल सकी और बेहोश हो गई। दलाल भी दवा लेने के पहले किसी काम से वहाँ आया था। फितना और दलाल के प्रयत्न से वह होश में आई और कहने लगी कि मुझे तुरंत मेरे बेटे के पास ले चलो। दलाल ने उसे रोका और कहा, यह ठीक नहीं रहेगा। बहुत कमजोर है। तुम्हारी दशा देख कर उसे दुख होगा और उसकी हालत और खराब हो जाएगी। इसलिए तुम अभी उसके पास न जाओ। माँ ने यह बात मान ली।

फितना ने कहा, माता जी, चिंता न करें। मैं और आप साथ-साथ ही गनीम के पास चलेंगे। मैं इस समय विदा लेती हूँ। महल में जा कर मुझे खलीफा को गनीम के मिलने का समाचार भी देना है। यह कह कर वह खलीफा के महल की ओर चल दी। महल में जा कर उसने खलीफा के पास संदेश भिजवाया कि मैं तुरंत ही आपको एक महत्वपूर्ण संदेश एकांत में देना चाहती हूँ। खलीफा दरबार से उठ कर अंदर आया। फितना ने उसके पाँव चूम कर कहा, सरकार, गनीम और उसकी माँ-बहन सभी मिल गए हैं। खलीफा को यह सुन कर आश्चर्य और हर्ष हुआ। उसने कहा, भाई, तुमने तो कमाल कर दिया। कैसे उन लोगों का पता लगाया? फितना ने दलाल से मिलने और उसके घर जा कर पहले गनीम की माँ-बहन और फिर स्वयं गनीम से मिलने का हाल कहा और बताया कि यद्यपि दोनों महिलाएँ कठिनाइयों के कारण इस समय कृशगात हो रही हैं किंतु बड़ी सुंदर हैं। खलीफा ने मन में निश्चय किया कि उन्हें देखूँगा और उनके सारे अपमान की भरपाई कर दूँगा।

उसने फितना से कहा, मैं तुम्हें गनीम के साथ जरूर ब्याह दूँगा। अब तुम जाओ उन सब को यहाँ लाओ। दूसरे दिन सुबह फितना अधीरतापूर्वक दलाल के घर पहुँची और गनीम का हाल पूछा। दलाल ने कहा, क्षमादान की बात सुन कर उसकी दशा सँभल गई और अब उसे आपके वियोग के अलावा कोई कष्ट नहीं है। हाँ, वह यह लालसा रखता है कि शीघ्रातिशीघ्र आपको और अपनी माँ-बहन को, जिनका उल्लेख मैंने कर दिया है, देखे।

यह सुन कर फितना पहले अकेली ही गनीम के पास गई, उसकी माँ और बहन को उसने कमरे के बाहर ही छोड़ दिया और कहा कि मैं बुलाऊँ तब अंदर आना। फितना के साथ दलाल भी था। उसने कहा, दोस्त, यही वह सुंदरी है जिसे देख कर कल तुम अचेत हो गए थे और बाद में कह रहे थे कि शायद मैंने स्वप्न देखा है। अब इससे अच्छी तरह मिलो। गनीम ने फितना की ओर देखा और कहा, मेरी प्यारी मित्र, पहले तुम यह बताओ कि तुम महल छोड़ कर मुझसे मिलने किस तरह आई। मैं तो समझता हूँ कि खलीफा एक क्षण को भी अपने पास से जाने नहीं देता। उसने तुम्हें कैसे आने दिया? फितना ने कहा कि मैं खलीफा की पूर्ण अनुमति से यहाँ आई हूँ और उसने मुझसे यह भी वादा किया है कि तुम्हारे साथ मेरा विवाह करवा देगा।

गनीम यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला, तुम सच कहती हो कि खलीफा तुम्हारा मेरे साथ विवाह करा देगा? क्या इतनी सुखदायी बात संभव है? फितना ने कहा, इसमें आश्चर्य की तो बात ही नहीं है। खलीफा ने तुम्हें मरवा देने की जो आज्ञा दी थी वह गलत संदेह के आधार पर थी। जब तुम उसके हाथ न लगे तो उसने दमिश्क के हाकिम को आदेश दिया कि दमिश्कवाला तुम्हारा घर खुदवा कर जमीन के बराबर करवा दिया जाए, तुम्हारी संपत्ति लुटवा दी जाए और तुम्हारी माँ और बहन को तीन दिन तक सड़कों पर कोड़े लगवा कर दमिश्क से निकलवा दिया जाए। बाद में जब उसे मुझ से मालूम हुआ कि उसके सम्मान के ख्याल से तुमने मुझसे संबंध स्थापित नहीं किया था तो वह अपने जल्दबाजी में लिए हुए अन्याय पर लज्जित हुआ और अब सोच रहा है कि जैसे भी हो सके अपने अन्याय का प्रतिकार करे।

गनीम ने विस्तार से अपनी माँ और बहन के बारे में पूछा। फितना ने बताया तो वह रोने लगा। फितना ने कहा, जो हो गया उसे भूल जाओ। अब रोने की जरूरत नहीं, तुम्हारी माँ और बहन यहीं हैं। गनीम ने कहा कि उन्हें अंदर क्यों नहीं लाती? फितना ने बुलाया तो दोनों अंदर दौड़ी आईं और गनीम को गले लगा कर देर तक रोती रहीं। दलाल ने उन सभी को धीरज बँधाया। फिर गनीम ने अपना पूरा हाल बताया। उसने कहा, खलीफा के भय से बगदाद से भाग कर मैं एक गाँव में जा कर छुपा रहा। वहाँ मैं बीमार हो गया। मैं मसजिद में असहाय पड़ा रहता। एक किसान को मुझ पर दया आई और वह मुझे उठा कर अपने घर ले गया। जहाँ तक उससे हो सका उसने मेरी दवा-दारू कराई। किंतु जब मेरा रोग बढ़ता ही गया तो उसने एक ऊँटवाले को किराया दे कर कहा कि इस रोगी को बगदाद के बड़े शफाखाने में पहुँचा दे जहाँ बड़े-बड़े हकीम इसका इलाज करेंगे। ऊँटवाले ने मुझे रस्सियों से कजावे से बाँध दिया क्योंकि मुझ में बैठने की शक्ति भी नहीं थी और मैं ऊँट से गिर जाता। इसके बाद फितना ने सविस्तार अपना हाल बताया कि किस तरह

खलीफा ने उसकी काल्पनिक कब्र पर मातम किया, कैसे उसने महल में पत्र भिजवाया, कैसे वह कैद में डाली गई और फिर दुबारा कैसे खलीफा की निगाहों में चढ़ी। गनीम की माँ और बहन ने भी अपना हाल बताया। फिर फितना ने कहा, अब हम सभी को दयामय भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि हम सब पर मुसीबत डाल कर हमें उससे बाहर निकाला।

दो-चार दिन में गनीम का रोग पूर्णतः जाता रहा और फितना ने सोचा कि उसे खलीफा के सामने पेश किया जाए, लेकिन इसके लिए गनीम के पास उपयुक्त वस्त्र मौजूद नहीं थे।

फितना फिर महल में जा कर धन लाई और हजार अशर्फियाँ दलाल को दे कर कहा कि इससे गनीम और उसकी माँ और बहन के लिए राजदरबार में पहने जाने योग्य कपड़े सिलवा दो। दलाल को इन बातों का बहुत ज्ञान था। उसने बढ़िया रेशमी थान खरीदे और तीन दिन के अंदर होशियार दर्जियों से तीनों के लिए कपड़ों के कई जोड़े तैयार करवा दिए।

फिर फितना ने एक दिन खलीफा से इन लोगों की भेंट का निश्चित किया। उस दिन गनीम और उसकी माँ-बहन नए कपड़े पहन कर दलाल के घर में दरबार में बुलाने की प्रतीक्षा करती रहीं। खलीफा के आदेशानुसार मंत्री जाफर बहुत-से सैनिकों और सरदारों के साथ आया और गनीम का हाल-चाल पूछने के बाद उससे कहा कि मैं तुम्हें और तुम्हारी माँ-बहन को खलीफा के महल में ले जाने के लिए आया हूँ। अतएव गनीम एक बढ़िया घोड़े पर सवार हुआ और फितना ने उसकी माँ और बहन को पर्देदार कजावों में ऊँटों पर बिठाया और एक गुप्त मार्ग से दोनों स्त्रियों को महल में ले आई। गनीम को मंत्री अपने साथ बाजारों से होता हुआ लाया और दरबार में ले गया। दरबार पूरी शान से लगा था।

सारे सरदार और राजदूत उपस्थित थे। गनीम ने भूमि को चूम कर खलीफा को प्रणाम किया और खलीफा की प्रशंसा में एक स्वरचित कसीदा पढ़ा जिसकी सभी लोगों ने प्रशंसा की।

खलीफा ने कहा, गनीम, हम तुम्हें देख कर बहुत खुश हुए। हम चाहते हैं कि तुम हमारे सामने विस्तारपूर्वक बताओ कि तुमने हमारी प्रिय दासी के प्राण किस प्रकार बचाए।

गनीम ने वह सारा वृत्तांत सविस्तार सुनाया। खलीफा उसे सुन कर प्रसन्न हुआ और आज्ञा दी कि गनीम को भारी खिलअत (सम्मान, वस्त्राभरण) दी जाए। गनीम ने खिलअत पहन कर फिर सलाम किया और कहा, मालिक मैं चाहता हूँ कि आजीवन आपकी चरणसेवा में लगा रहूँ। खलीफा ने यह स्वीकार कर लिया और उसे अपना दरबारी बनाने के साथ एक उच्च पद पर आसीन भी कर दिया। इसके बाद वह दरबार खत्म करके महल में आ गया।

महल में आ कर उसने मंत्री को बुलाया और कहा कि गनीम को यहाँ ले आओ। उसने फितना को भी बुलाया और उससे कहा कि गनीम की माँ और बहन को यहीं ले आओ।

दोनों स्त्रियों ने भूमिचुंबन करके खलीफा का अभिवादन किया। खलीफा ने कहा, मैंने तुम दोनों को बड़ा कष्ट दिया है किंतु अब उस की पूरी भरपाई कर दूँगा। जुबैदा ने फितना से जलन होने के कारण उसके साथ कमीनी हरकत की। उसका दंड यह है कि उसकी यह जलन और बढ़े। मैं गनीम की बहन से विवाह करूँगा। और उसे रानी का पद दूँगा जिससे वह जुबैदा के अधीन न रहे। गनीम की माँ, तुम्हारी उम्र अभी अधिक नहीं हुई, तुम हमारे मंत्री जाफर से विवाह कर लो। गनीम, तुम्हें फितना से प्रेम है और मैं इसका विवाह तुम्हारे साथ कराऊँगा। यह कह कर खलीफा ने काजी और गवाहों को बुलाया और तीनों निकाह वहीं पढ़वा दिए। गनीम इसी बात को बहुत समझता कि अलकित खलीफा की दासी बन जाए, किंतु खलीफा ने उसे रानी का दरजा दे दिया। इस पर गनीम फूला न समाया। खलीफा ने यह भी आज्ञा दी कि यह सारा वृत्तांत लिखवा कर शाही ग्रंथागार में रखा जाए और उसकी नकलें सारे बड़े देशों को भेजी जाएँ।

मलिका शहरजाद ने गनीम और फितना की कहानी समाप्त की तो दुनियाजाद ने इसकी बड़ी तारीफ की। शहरजाद ने कहा कि अगली कहानी इससे भी अच्छी है। शहरयार ने कहा, मैं भी अगली कहानी सुनना चाहता हूँ, लेकिन अब दिन निकल आया है। अगली कहानी कल सुनाना।

शहज़ादा खुदादाद और दरियाबार की शहज़ादी की कथा

उपर्युक्त कहानी के मध्य में एक यात्रा में जैनुस्सनम के दरियाबार देश मे जाने का भी उल्लेख है। वहाँ की एक चित्ताकर्षक कथा उस ने सुनी थी। वह कथा भी इस जगह कही जाती है।

हैरन नगर में एक बड़ा प्रतापी बादशाह था जिसे भगवान ने सब कुछ दे रखा था। किंतु उस के कोई संतान नहीं थी। एक रात को उसे सपने में दिखाई दिया कि एक दिव्य पुरुष उस से कह रहा है, उठ, भगवान तेरी मनोकामना पूरी करेगा। सुबह माली से अपने बाग का एक अनार मँगा कर खाना।

सवेरे नमाज पढ़ने के बाद उस ने माली से अनार मँगाया और उस में से निकले पचास दाने खाए क्योंकि उस की पचास रानियाँ थीं। इस के बाद वह एक-एक कर सभी के पास गया। ईश्वर की कृपा से एक रानी पीरोज के अलावा उस की सभी रानियाँ गर्भवती हो गईं। बादशाह को इस बात से बड़ी ग्लानि हुई। उसे विश्वास हो गया कि यह रानी बाँझ है। उस ने चाहा कि पीरोज का वध करवा दे किंतु उस के मंत्री ने उसे ऐसा करने से रोका और कहा कि संभव है वह भी गर्भवती हो किंतु उस में गर्भ के लक्षण प्रकट न हुए हों।

बादशाह ने कहा, अच्छी बात है। मैं इसका वध नहीं कराऊँगा किंतु इसे अपने पास नहीं रहने दूँगा। मंत्री ने कहा, ठीक है। उसे आप अपने भतीजे सुमेर के पास, जो समारिया देश का हाकिम है, भेज दीजिए।

अतएव बादशाह ने पीरोज को समरिया भेज दिया और साथ ही अपने भतीजे को पत्र लिखा कि हम अपनी रानी को तुम्हारे पास भेज रहे हैं। यदि उस के कोई पुत्र पैदा हो तो मुझे खबर देना। समरिया में दिन पूरे होने पर पीरोज ने एक पुत्र को जन्म दिया। सुमेर ने सूचना भिजवाई कि रानी के पुत्र हुआ है। बादशाह यह सुन कर खुश हुआ किंतु उस ने पीरोज को वापस नहीं बुलाया। उस ने सुमेर को लिखा कि यहाँ भी भगवान की दया से उनचास रानियों के पुत्र हुए हैं, तुम पीरोज के पुत्र का नाम खुदादाद रखो, उस की पैदायश की सारी रस्में करो और उस की अच्छी शिक्षा का प्रबंध करो, हम यहाँ से उस का सारा खर्चा भेजेंगे।

सुमेर नवजात शिशु का पितृवत पालन करने लगा। जब खुदादाद बड़ा हुआ तो उसे बाण-विद्या, घुड़सवारी और तत्कालीन सारी विद्याओं, कलाओं की शिक्षा प्रवीण शिक्षकों से दिलाई गई और वह सारी विद्याओं में पारंगत हो गया। अठारहवाँ वर्ष लगते उस का रूप और शरीर ऐसा निखरा कि वह संसार का सबसे रूपवान पुरुष लगने लगा। उस में जवानी का जोश उभरा तो उस ने अपनी माँ से कहा, अगर तुम अनुमति दो तो मैं समरिया से

निकल कर अपने बल की परीक्षा लूँ। मेरे पिता हैरन नरेश के बहुत-से शत्रु हो गए हैं। चारों ओर के बादशाह भी हैरन पर आक्रमण करना चाहते हैं। आश्चर्य है कि ऐसे कठिन समय में भी मेरे पिता ने मुझे क्यों नहीं बुलाया और मेरे शौर्य का उस ने लाभ क्यों नहीं उठाया। फिर भी मेरा घर बैठना उचित नहीं है। मेरे पिता ने मुझे नहीं बुलाया तो न सही, मुझे चाहिए कि मैं स्वयं ही उस की सेवा में उपस्थित हूँ। माँ ने उस से कहा, यह तो ठीक है कि देश को शत्रुओं का भय हो तो तुम्हें घर पर नहीं बैठना चाहिए। किंतु तुम अभी प्रतीक्षा करो। शायद वह तुम्हें बुला भेजे। बगैर बुलाए तुम्हारा जाना ठीक नहीं है।

खुदादाद ने कहा, जब राज्य पर ऐसा संकट पड़ा हो तो बुलावे की प्रतीक्षा करना बेकार बात है। मुझे इस समय इतनी बेचैनी हो रही है कि यदि मैं तुरंत अपने पिता की सेवा में उपस्थित नहीं होता तो शायद जीवित ही न रह सकूँगा। मैं वहाँ अपनी वास्तविकता प्रकट ही नहीं करूँगा। मैं अपने को परेदशी बताऊँगा ओर उस की सेवा करूँगा। मैं तभी यह बात बताऊँगा कि मैं उस का पुत्र हूँ जब वह मेरे शौर्य से प्रभावित हो जाएगा। फिर तो नाराजगी की बात न रहेगी।

किंतु उस की माँ ने उसे जाने की अनुमति नहीं दी। इस पर वह कुछ दिनों बाद एक सफेद घोड़े पर सवार हो कर शिकार के बहाने निकला और अपने साथ कुछ विश्वस्त साथी भी ले लिए। कुछ ही दिनों में वे सब हैरन पहुँच गए। खुदादाद ने बादशाह के दरबार में प्रवेश पा लिया और जा कर उसे फर्शी सलाम किया। बादशाह ने उस का वैभव और व्यवहार देख कर उसे कृपापूर्वक अपने पास बुलाया और उस का परिचय पूछा। खुदादाद ने कहा, मैं काहिरा नगर का निवासी हूँ और एक अमीर का बेटा हूँ। मैं संसार भ्रमण के लिए अपने देश से निकला हूँ। मैं ने सुना है आप को शत्रुओं ने परेशान कर रखा है। अनुमति हो तो आप के लिए रणक्षेत्र में पदार्पण करूँ। बादशाह इस बात से बड़ा खुश हुआ और उसे अपनी निजी सेना का मुख्य अधिकारी बना दिया।

खुदादाद ने कुछ ही दिनों में उस सेना को सज्जित और शिक्षित कर दिया और उस के नायकों को भी पारितोषिक और सम्मान दे कर प्रसन्न कर दिया। मंत्रिगण भी उस के व्यवहार से मुग्ध हो गए। दरबार में उस का सम्मान सारे शहजादों और सरदारों से अधिक होने लगा। उस पर बादशाह की कृपा अधिकाधिक हो गई। उस ने सेना का विस्तार और सुप्रबंध किया। यह देख कर राज्य के शत्रुगण भी बगैर लड़े अपने देशों को खिसक गए। बादशाह ने अपने बेटों के प्रशिक्षण का भार भी खुदादाद पर डाल दिया। यद्यपि वह अपने भाइयों में सबसे छोटा था तथापि सब का अधिष्ठाता हो गया। इस बात से शहजादे उस से और भी जलने लगे। वे आपस में कहने लगे कि हमारे बूढ़े पिता को जाने क्या हो गया है कि इस परदेशी को इतना चाहने लगा है कि हम सब पर उस का आदेश चलवा दिया है। उन्होंने एक मत से कहा कि यह स्थिति असह्य है।

वे सलाह करने लगे कि इस परदेशी का क्या किया जाए। एक ने राय दी कि इसे अकेला पा कर मार डालेंगे। एक अन्य शहजादे ने कहा कि यह ठीक नहीं है, यह बात छुपी न रहेगी और बादशाह हमें कठोरतम दंड देगा। अंत में एक शहजादे की बात सब को सबको

पसंद आई। उस की राय थी कि हम लोग इस से शिकार खेलने की अनुमति लें और इस बहाने निकल कर किसी दूर देश को चले जाएँ, इस से हमारे पिता को चिंता होगी और वह खुद ही इसे मरवा डालेगा। इस उपाय पर सारे शहजादे एकमत हो गए और इस योजना को पूरा करने की तैयारी करके लगे। फिर एक दिन उन्होंने खुदादाद से कहा कि हम कल शिकार के लिए जाना चाहते हैं, शाम तक वापस आ जाएँगे। खुदादाद ने अनुमति दे दी। वे लोग तो फिर लौटे ही नहीं। तीसरे दिन बादशाह ने खुदादाद से पूछा कि शहजादे दिखाई नहीं देते, वे कहाँ चले गए।

खुदादाद ने कहा, सरकार, यह सेवक स्वयं इस चिंता में है। वे मुझ से शिकार की अनुमति ले कर गए थे। आज तीसरा दिन है उनका पता नहीं है। बादशाह को भी चिंता हुई। वह रोज खुदादाद से उनका हाल पूछता और वही उत्तर पाता। अंत में एक दिन उस ने क्रोध में आ कर खुदादाद से कहा, परदेशी, तूने इतना साहस कैसे किया कि शहजादों को शिकार पर भेज दिया और खुद उन के साथ नहीं गया। अब खैरियत इसी में है कि तू खुद उनकी खोज में जा और जहाँ भी मिलें उन्हें ले कर आ। तू उन्हें न लाया तो तेरा सिर उतरवा दूँगा।

खुदादाद बादशाह के क्रोध से डर गया और कुछ धन ले कर घोड़े पर सवार हो कर चला गया। वह नगर-नगर और गाँव-गाँव उन्हें तलाश करता रहा किंतु वे कहीं नहीं मिले। वह अक्सर विलाप किया करता और कहता, मेरे भाइयो, तुम लोग कहाँ हो? तुम किसी दुश्मन के हाथ में तो नहीं पड़ गए? जब तक तुम नहीं मिलते मैं हैरन वापस नहीं जा सकता और तुम्हारा कहीं पता नहीं है। अब उस ने बस्तियों को छोड़ कर जंगलों में उन्हें ढूँढ़ना शुरू किया। इसी खोज में वह एक गहन वन में जा पहुँचा। उस में काले पत्थर का एक विशाल भवन बना हुआ था। वह जा कर उस महल के नीचे खड़ा हो गया और ऊपर देखने लगा। काफी ऊँचे पर एक खिड़की खुली और एक अत्यंत सुंदर स्त्री, जिसके बाल बिखरे और वस्त्र मैले और फटे थे, धीरे-धीरे कुछ कहने लगी। खुदादाद ने कान लगा कर सुना। वह कह रही थी, ओ मुसाफिर, यहाँ से फौरन भाग जा, नहीं तो इस भवन का स्वामी तेरी दुर्दशा कर डालेगा। वह महाविकराल नरभक्षी हब्शी है। उस के पंजे में फँसा हुआ आदमी बचता नहीं। वह परदेशियों को पकड़ लाता है, उन्हें एक अँधेरे तहखाने में बंद कर देता है, फिर उन्हें एक-एक करके भून कर खाता है। खुदादाद ने पूछा, तुम कौन हो? स्त्री बोली, मैं काहिरा की रहनेवाली हूँ। बगदाद जा रही थी। इस वन से निकल रही थी कि यही हब्शी आ गया। इस ने मेरे सेवकों को मार डाला और मुझे इस जगह बंद कर दिया। वह मुझ से भोग करना चाहता है किंतु मैं बचती रही हूँ। आज मैं ने उस की बात नहीं मानी तो वह मुझे मार डालेगा। मैं उस का साथ करने से मर जाना पसंद करती हूँ। किंतु तुम क्यों जान देना चाहते हो? तुम भाग जाओ। वह भटके हुए मुसाफिरों को ढूँढ़ने गया है ताकि अपनी खाद्य सामग्री बढ़ाए। वह आता ही होगा। उस की दृष्टि तीक्ष्ण है, वह बहुत दूर से देख लेता है। तुम चले जाओ।

सुंदरी खुदादाद से यह सब कह ही रही थी कि वह राक्षस जैसा मनुष्य आ पहुँचा। वह पर्वताकार लगता था और बहुत ऊँचे तुरकी घोड़े पर बैठा था। उस की तलवार इतनी भारी

थी कि उस के अलावा किसी और से उठ ही नहीं सकती थी और उस की गदा कई मन की थी। खुदादाद उसे देख कर डर गया और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि इस राक्षस से बचा। हब्शी ने उसे तलवार निकाले देखा किंतु उसे तुच्छ जान कर अपने हथियार न सँभाले बल्कि चाहता था कि वैसे ही उसे हाथों से पकड़ ले। यह देख कर खुदादाद ने घोड़ा बढ़ाया और उस के घुटने पर एक तलवार की चोट की। घाव खा कर हब्शी ने घोर गर्जन किया और अपनी भारी तलवार निकाल कर खुदादाद पर चलाई। खुदादाद पैंतरा बदल कर बच गया वरना वहीं खीरे की तरह कट जाता। अब खुदादाद ने अपनी गदा इस कौशल और ऐसे कोण से चलाई कि हब्शी का हाथ ही कट कर गिर गया और वह घोड़े से नीचे आ रहा। खुदादाद झपट कर पहुँचा और अपनी तलवार से हब्शी का सिर उस के शरीर से अलग कर दिया।

वह सुंदरी खिड़की से यह युद्ध देख रही थी और भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि खुदादाद को विजयी बनाए। हब्शी की मृत्यु देख कर खुशी से फूली न समाई और पुकार कर कहने लगी, भगवान की बड़ी दया हुई। अब तुम इसकी कमर से चाबियों का गुच्छा लो और ताला खोल कर मेरे पास आओ।

वह विशाल हब्शी किले की सारी कुंजियाँ अपने पास ही रखा करता था। खुदादाद उस के पास आया। वह सुंदरी उस के पैरों पर गिरने को उद्यत हुई किंतु खुदादाद ने उसे बीच ही में उठा लिया। सुंदरी उस की प्रशंसा करने लगी और बोली कि मैं ने तुम्हारे जैसा वीर पुरुष और कोई नहीं देखा। खुदादाद ने उसे अभी तक दूर से देखा था, पास से देखा तो पहले की अपेक्षा वह कहीं अधिक सुंदर दिखाई दी। वे दोनों बैठ कर बातें करने लगे।

वे दोनों बातें कर ही रहे थे कि एक ओर से चिल्लाने का शब्द सुनाई दिया। खुदादाद ने पूछा, यह आवाज कहाँ से आ रही है और उस का क्या मतलब है? सुंदरी ने कमरे के एक ओर बने हुए दरवाजे की और उँगली उठाई, यानी इशारे से बताया कि आवाज इस दरवाजे के पीछे से आ रही है। और पूछने पर वह बोली, यहाँ एक बड़ा-सा कमरा है। उस हब्शी ने यहाँ बहुत-से मनुष्य कैद कर रखे हैं। नए लोगों को ला कर वह यहीं रखता था और प्रतिदिन वहाँ जा कर एक मनुष्य को चुन कर बाहर लाता था और भून कर खा जाता था।

खुदादाद ने कहा कि मैं उन्हें इस कैद से छुड़ाना चाहता हूँ। वे दोनों उस दरवाजे के पास गए और विभिन्न कुंजियाँ लगा-लगा कर उसे खोलने का प्रयत्न करने लगे। कई कुंजियाँ लगने से ताला देर तक खड़खड़ाता रहा। अंदर से आनेवाली चीख-पुकार और बढ़ गई। खुदादाद को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि यह रोना-पीटना क्यों बढ़ गया है। सुंदरी ने कहा कि ताला खड़खड़ाने से वे समझते हैं कि हब्शी आया है और उनमें से किसी को ले जाएगा। उनकी आवाज भी ऐसी थी जैसे किसी गहरे कुएँ के अंदर से आ रही हो। ताला खुलने पर एक लंबा जीना दिखाई दिया। वे उत्तर कर नीचे गए तो देखा कि एक तंग अँधेरी जगह में सौ के लगभग आदमी पड़े हैं जिनके हाथ-पाँव बँधे हैं। खुदादाद बोला, मित्रो, अब भय त्याग दो। भगवान की दया से मैं ने तुम्हारे शत्रु हब्शी को मार डाला है। वे यह सुन कर बड़े खुश हुए।

खुदादाद ने उन के बंधन खोलने शुरू किए। जिनके बंधन खुलते थे वे औरों के भी खोलने लगते थे। इस प्रकार अल्प समय ही में सारे लोग मुक्त हो गए। तहखाने से बाहर निकल कर सबने खुदादाद के पाँव चूमे और उसे आशीर्वाद देने लगे। जब वे महल के बाहर खुले प्रकाश में आए तो खुदादाद ने देखा कि उनमें उस के वे सभी भाई हैं जिन्हें वह ढूँढ़ने निकला था। उस ने कहा, भगवान की बड़ी अनुकंपा है कि तुम लोग सही-सलामत हो। तुम्हारे पिता तुम्हारे वियोग में अति कातर हो रहे हैं। तुम लोगों में से तो कोई राक्षस के पेट में नहीं गया? यह कह कर उस ने उन्हें गिना और शेष समूह से अलग कर दिया। सारे शहजादे एक-दूसरे के गले मिले।

खुदादाद ने सुंदरी से पूछ कर हब्शी के भंडार-गृह का पता लगाया और सब लोगों को भरपेट भोजन कराया। उस ने यह भी देखा कि गोदामों में तरह-तरह की मूल्यवान वस्तुएँ, रत्न, सुगंधियाँ, रेशनी थान, मखमल आदि के ढेर लगे हैं। यह माल हब्शी ने व्यापारियों से लूटा था जिन्हें वह तहखाने के लिए पकड़ लाता था। उस गोदाम में सारे मुक्त बंदियों को ले जा कर खुदादाद ने कहा कि अपना-अपना माल उठा लें। सबने अपनी-अपनी गठरियाँ लीं तो खुदादाद ने शेष वस्तुओं में से भी अधिकांश उन्हें बाँट दीं। किंतु उस ने कहा कि इस सुनसान वन में से तुम लोग इन चीजों को ले कैसे जाओगे। उन्होंने कहा, यह हब्शी हमारे ऊँट और खच्चर भी पकड़ लाता था। वे कहीं बँधे होंगे।

खुदादाद पशुशाला में गया तो उस ने सैकड़ों ऊँटों और खच्चरों के अलावा शहजादों के घोड़े भी बँधे देखे। उनकी रखवाली हब्शी सेवक करते थे। वे सब इन बंदियों को छूटा देख कर समझ गए कि हमारा हब्शी मालिक मारा गया। वे सब जान बचा कर इधर- उधर भाग गए। खुदादाद ने उन्हें जाने दिया। फिर खुदादाद ने उस सुंदरी से कहा, तुम्हें यह हब्शी कहाँ से लाया था? हम तुम्हें वहीं पहुँचा देंगे। यह हैरन के शहजादे तो तुम्हारे देश को जानते ही होंगे, वही तुम्हे पहुँचा देंगे।

लड़की बोली, यह मैं पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं काहिरा की रहनेवाली हूँ। तुमने मेरी जान और इज्जत बचाई, इस के लिए तुम्हारी अति आभारी हूँ। मैं अपना और हाल क्या बताऊँ। बस इतना काफी है कि मैं भी एक शहजादी हूँ। एक दुष्ट ने मेरे पिता को मार डाला और उस के देश को लूट लिया। मैं वहाँ से भागी और यहाँ आ कर इस राक्षस जैसे हब्शी के हाथ पड़ गई। इस पर खुदादाद तथा अन्य शहजादों ने जोर दिया तो वह अपना विस्तृत वृत्तांत इस प्रकार बताने लगी।

दरियाबार की शहजादी की कहानी

उस सुंदरी ने कहा कि काहिरा के निकट दरियाबार नाम एक द्वीप है। उस का बादशाह सब प्रकार से सुखी था किंतु उसे संतान न होने का बड़ा दुख था। वर्षों की प्रार्थनाओं और सिद्धों के आशीर्वादों से उस के यहाँ एक पुत्री जन्मी। मैं ही वह अभागी हूँ। मेरे जन्म पर मेरे पिता ने बड़ा समारोह किया। मैं बड़ी हुई तो उस ने मुझे सारी विद्याओं और कलाओं की शिक्षा दिलवाई। उस ने मुझे राज्य के प्रबंध की स्वयं शिक्षा दी। उस का विचार यह था कि उस की मृत्यु के बाद मैं ही राज्य की अधिष्ठात्री बनूँ।

एक दिन मेरा पिता शिकार खेलने गया। उस ने एक हिरन के पीछे घोड़ा डाल दिया और अपने साथियों से बिछुड़ गया। शाम हो गई किंतु हिरन हाथ न आया। मेरा पिता एक पेड़ के नीचे जा बैठा और सोचने लगा कि राजधानी को किस प्रकार वापस हुआ जाए। रात होने पर उस ने देखा कि गहन वन के बीच एक जगह से प्रकाश आ रहा है। वह उधर चला। उसे आशा थी कि यह प्रकाश किसी गाँव से आ रहा होगा किंतु काफी दूर चलने के बाद उस ने देखा कि प्रकाश एक विशाल भवन से आ रहा है। वह उस ओर बढ़ा तो देखा कि घर में एक लंबा-चौड़ा हब्शी बैठा मांस खा रहा है और हाँडियाँ उठा कर उनसे शराब पी रहा है। उस ने यह भी देखा कि पास ही में एक अति सुंदर स्त्री बैठी है जिसके हाथ बँधे हैं और उस के पास ही दो-तीन वर्ष का एक लड़का बैठा है।

मेरे पिता को उस स्त्री पर दया आई और उस ने इरादा किया कि हब्शी को मार कर इस सुंदरी को छुड़ाऊँ। वह अवसर की प्रतीक्षा से खड़ा रहा। हब्शी जब आधा बैल खा चुका और सारी हाँडियों की शराब पी चुका तो स्त्री से कहने लगा, ओ मनमोहनी, तू कब तक मुझ से अलग-अलग रहेगी और कब तक मेरी इच्छा पूरी नहीं करेगी। तू यह तो देख कि मैं तुझ से कितना अधिक प्यार करता हूँ ओर कैसे तेरे ही ध्यान में मरता हूँ। तुझे भी चाहिए कि मुझ से इसी तरह प्रेम करे। स्त्री ने कहा, दुष्ट जंगली, क्या बकवास लगा रखी है। मैं, और तुम से प्रेम करूँगी। पहले अपनी सूरत तो आईने में देख। तू मुझे बराबर दुख दे रहा है। तू चाहे इस से भी अधिक दुख मुझे दे बल्कि मेरी जान भी ले ले तो भी मैं तेरी ओर मुँह कर के थूकूँगी भी नहीं।

हब्शी यह सुन कर क्रोध से पागल हो गया। उस ने उठ कर बाएँ हाथ से स्त्री को पकड़ा और दाहिने से तलवार निकाल कर उस का सिर काटने को उद्यत हुआ। इतने ही में मेरे पिता का छोड़ा हुआ तीर उस की छाती में घुस गया और वह मर कर गिर पड़ा। मेरे पिता ने अंदर जा कर सुंदरी की रस्सियाँ खोलीं और उस से पूछा कि तुम कौन हो और कैसे इस राक्षस के हाथ पड़ी। उस ने कहा, यहाँ से कुछ ही दूर सरासंग नामी एक कबीला रहता है। उस के निवासी अर्धसभ्य हैं। वहाँ का बादशाह मेरा पति है। यह दुष्ट हब्शी, जिसे अभी तुमने मारा है, मेरे पति का दरबारी था। यह मुझ पर बहुत दिनों से मुग्ध था। यह बराबर मुझे भगाने की ताक में रहता था। एक दिन मेरे पति को असावधान देख कर यह मुझे और मेरे इस बच्चे को ले भागा। यहाँ ला कर उस ने मुझे बाँध रखा और रोजाना

चाहता था कि मेरे साथ संभोग करे। अभी तक भगवान ने कुछ ऐसी कृपा की कि यह मुझ पर हाथ न डाल सका। आज यह तुम्हारे हाथों मारा गया। मेरे पिता ने कहा, फिक्र न करो, मैं दरियाबार का बादशाह हूँ। मैं तुम्हें अपने महल में ले जाऊँगा। तुम जितने दिन चाहना वहीं रहना। सुंदरी ने यह मान लिया।

दूसरे दिन मेरा पिता उसे और उस के बालक को लिए हुए चला। कुछ देर में मेरे पिता के छूटे हुए साथी भी मिल गए। उन सभी को इस गहन वन में ऐसी सुंदरी को देख कर आश्चर्य हुआ। साथ ही वे बादशाह को देख कर खुश भी हुए। बादशाह ने विस्तारपूर्वक उन्हें बताया कि किस तरह यह युवती हब्शी के पंजे से छुड़ाई गई। बादशाह के साथियों में से एक ने स्त्री और दूसरे ने उस के लड़के को अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया और कुछ दिनों में पूरा काफिला राजमहल में जा पहुँचा।

मेरे पिता ने एक बड़ा और सुंदर महल उस स्त्री को दे दिया। उस ने उस के पुत्र की शिक्षा का भी प्रबंध कर दिया। एक वर्ष तक उस स्त्री ने अपने पति की राह देखी किंतु उस का कुछ भी समाचार न मिला तो उस से निराश हो गई और मेरे पिता को रिझाने लगी। वह उस से पहले ही आकृष्ट था इसलिए दोनों का विवाह हो गया। वह बच्चा भी कुछ वर्षों में सजीला जवान हो गया। वह सारी विद्याओं और राज्य संचालन आदि में भी प्रवीण हो गया। मेरे पिता और दरबार के सारे लोग उसे बहुत पसंद करने लगे। सब की राय हुई कि उस जवान के साथ मेरा विवाह कर दिया जाय और मेरे पिता के बाद राज गद्दी उसी को मिले। मेरे पिता भी इस से सहमत हो गए और वह नौजवान अपने भविष्य की कल्पना में मग्न रहने लगा।

किंतु मेरे पिता ने शादी की एक शर्त यह रखी कि वह फिर किसी अन्य स्त्री से विवाह नहीं करेगा। मुसलमानों में चार विवाह तक जायज हैं, इसलिए यह शर्त उसे अपमानजनक लगी और उस ने यह शर्त अस्वीकार कर दी। चुनांचे विवाह न हुआ। वह इस बात से बहुत नाराज हुआ और बदला लेने के लिए षडयंत्र करने लगा। एक दिन अवसर पा कर उस ने मेरे पिता को मार डाला और मेरी हत्या के इरादे से मेरे महल में आया। किंतु हमारे मंत्री ने मुझे पहले ही एक गुप्त मार्ग से निकाल लिया था। मंत्री ने एक मित्र के घर रखा। दो दिन में एक जहाज के कप्तान से बात करके मुझे ऐसे बादशाह के देश की ओर रवाना कर दिया जिसका राजा मेरे पिता का मित्र था।

जहाज चला तो सब ठीक-ठाक था कि किंतु कुछ दिनों बाद ऐसा तूफान आया जिसे देख कर कप्तान और नाविक तक गश खा कर गिर पड़े। कुछ ही देर में जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो गए और उस में के सब लोग डूब गए। किंतु मुझे एक तख्ता मिल गया जिस पर मैं बैठ गई और एक दिन बाद किनारे आ लगी। किंतु मुझे यह नहीं मालूम था कि भगवान ने और दुख देने के लिए मेरी जान बचाई है। मैं किनारे लगी और मैं ने भगवान को धन्यवाद दिया। मैं बहुत देर तक तलाश करती रही कि शायद मंत्री या जहाज का कोई अन्य व्यक्ति मुझे जीवित मिल जाए किंतु ऐसा नहीं हुआ।

मैं अपने पिता की याद करके और उस निर्जन स्थान में अपने को निपट अकेला पा कर रोने लगी और सोचने लगी कि समुद्र में डूब मरूँ।

इतने में मैं ने अपने पीछे कई मनुष्यों और घोड़ों की आवाज सुनी। पलट कर देखा तो कई घुड़सवार थे जिनके हाथों में शस्त्रास्त्र थे और जिनके मध्य एक नवयुवक था। वह जवान जरी की पोशाक पहने था और रत्नजटित पेटी कमर में बाँधे था। उनको मुझे उस स्थान पर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन के नायक नवयुवक ने, जो वास्तव में एक शहजादा था, मेरे पास यह जानने के लिए भेजा कि मैं कौन हूँ और वहाँ कैसे पहुँची। उस आदमी ने तरह-तरह से मेरा हाल पूछा। मुझे और भी भय लगा कि यह लोग न जाने कौन हैं और जाने मेरी क्या दशा करें। इसलिए मैं जोर-जोर से रोने लगी। वह परेशान हो कर लौट गया। फिर शहजादे ने कई लोगों को एक साथ मेरे पास भेजा। उन लोगों ने भी मुझ से बहुत पूछा किंतु मैं रोती रही और मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन लोगों ने तट पर बहुत-से तख्ते, मस्तूल आदि टूटे हुए पाए और समझ गए कि कोई जहाज टूट कर डूबा है और यह लड़की उस में से बच कर किनारे आ लगी है।

उन्होंने जा कर यह बात शहजादे को बताई। वह स्वयं मेरे पास आ कर मृदुलता से मेरा हाल पूछने लगा। उस ने यह भी कहा कि तुम अपना हाल बताओगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और मैं तुम्हें अपनी माँ के पास ले जाऊँगा जो तुम्हें बड़े प्यार से रखेगी। मैं ने उसे पूरा हाल बताया। मेरा हाल सुन कर उस के आँसू आ गए। उस ने मुझे हर तरह से धैर्य बँधाया। फिर वह मुझे अपने साथ ले गया और अपनी माता का सौंप दिया। मैं ने उस वृद्धा को अपनी कहानी सुनाई तो उसे भी बड़ा दुख हुआ। वह मुझे पसंद तो पहले ही से करती थी इसलिए उस ने अपने पुत्र के साथ मेरा विवाह कर दिया।

किंतु यहाँ तक मुझे पहुँचा कर मेरी किस्मत फिर पलट गई। उस राज्य का एक पड़ोसी राजा उस का पुराना दुश्मन था। जिस रोज मेरी सुहागरात होनी थी उसी दिन उस ने आक्रमण कर दिया।

उस की सेना अति विशाल थी और उस ने कुछ घंटों ही में नगर को रौंद डाला। उस ने मेरे पति को और मुझे पकड़ने के लिए आदमी भेजे किंतु हम पहले ही बच निकले और छुपते-छुपाते समुद्र तट पर रात के समय पहुँचे। वहाँ एक मछुवारे की नाव बँधी थी। हम दोनों उसे खोल कर समुद्र में बढ़ने लगे। कुछ दूर जा कर वह नाव एक समुद्री धारा में पड़ गई। हमें कुछ नहीं पता था कि नाव किधर जा रही है। दो दिन बाद देखा कि एक जहाज हमारी ओर आ रहा है। हम समझे कि वह कोई व्यापारी जहाज है। इसलिए हमने सहायता के लिए आवाज दी। लेकिन यहाँ फिर धोखा हुआ। जहाज पर पाँच-सात डाकू थे। वे गदाएँ लिए हुए हमारी डोंगी पर आए और हमे बाँध कर अपने जहाज पर ले गए।

जहाज पर उन्होंने मेरा नकाब उठाया तो सब ठगे-से रह गए क्योंकि उन्होंने ऐसी सुंदर स्त्री कभी नहीं देखी थी। फिर उनमें झगड़ा होने लगा। हर एक चाहता था कि मेरा मालिक बने। फिर उनमें तलवार चलने लगी और एक अति बलवान डाकू को छोड़ कर सभी मारे गए। उस डाकू ने कहा, मैं तुझे काहिरा ले जा कर एक मित्र को भेंट करूँगा,

उस ने मुझ से एक सुंदर दासी माँगी थी। लेकिन यह आदमी कौन है? तेरा भाई-बंद है या प्रेमी? मैं ने बताया कि यह मेरा पति है तो वह बोला, फिर तो इसका दुख दूर होना चाहिए, इस से तेरी दशा कब तक देखी जाएगी। यह कह कर उस ने मेरे पति को बँधा-बँधा ही समुद्र में डाल दिया।

मैं बहुत रोई-पीटी और पति के पीछे समुद्र में कूदने को तैयार हो गई किंतु डाकू ने मुझे मस्तूल से बाँध दिया और जहाज को चलाने लगा। वायु अनुकूल थी। और हमारा जहाज कुछ ही दिनों में एक छोटे-से नगर के तट पर आ लगा। डाकू ने वहाँ कई दास और कई ऊँट मोल लिए और स्थल मार्ग से काहिरा की ओर प्रस्थान किया। हम कई दिनों की यात्रा के बाद इस जंगल से गुजर रहे थे तो हमने उस राक्षस जैसे हब्शी को अपनी ओर आते देखा। पहले हमें आश्चर्य हुआ कि यह मीनार कैसे चल रही है। पास पहुँचा तो देखा कि आदमी है।

इस दुष्ट ने पास आ कर अपनी गदा उठाई और डाकू से कहा, अपने आदमियों के हाथ बाँध और अपने भी बाँध और इस सुंदरी को ले कर मेरे पीछे चला आ। किंतु डाकू और उस के दासों ने उस के साथ युद्ध किया फिर वे सब के सब मारे गए। नर भक्षी ने और लाशें छोड़ कर सिर्फ डाकू की लाश एक ऊँट पर रखी और ऊँट पर मुझे बिठाया और इस किले में ले आया। यह कल ही की बात है। शाम को उस ने डाकू की लाश को भून कर खाया और मुझे सारा हाल बताया कि किस तरह वह खाने को आदमी लाया करता है और कैसे उस ने तहखाने में आदमी बंद कर रखे हैं कि अगर किसी दिन नया भोजन न मिले तो इन्हीं में से किसी को भून खाए। उस ने कहा, मांस तो तेरा भी नरम होगा किंतु मैं तुझे मारूँगा नहीं बल्कि तुझ से विलास करूँगा। आज तो तू थकित और दुखी है इसलिए आज छोड़ता हूँ कल से तुझे मेरी शैय्या पर सोना पड़ेगा। किंतु इस की नौबत नहीं आई, आज तुमने इसे मार डाला।

खुदादाद ने कहा, अब तुम कुछ फिक्र न करो। यह उनचास शहजादे हैरन राज्य के हैं, इनमें से जिसके साथ तुम चाहो तुम्हें ब्याह दिया जाए। उस ने कहा, मैं तो अपने उद्धारकर्ता को ब्याहना चाहती हूँ। अन्य लोगों ने भी उस का समर्थन किया और वहीं खुदादाद के साथ दरियाबार की शहजादी ब्याह दी गई।

वह दिन तो विवाह समारोह और हँसी-खुशी में बीता, दूसरे दिन सब लोग वहाँ से हैरन की ओर चल दिए। दिन भर चलने के बाद शाम को एक अच्छी जगह देख कर उन्होंने रात के लिए पड़ाव डाला। शाम को भोजन करके सब ने खूब शराब पी। इसी उल्लास में खुदादाद सब लोगों के सामने अपनी पत्नी से बोला, अभी तक मैं ने सभी से अपनी वास्तविकता छुपाई थी। अब मैं अपना सच्चा हाल कहता हूँ। मैं भी इन उनचास शहजादों का भाई यानी हैरन के बादशाह का पुत्र हूँ। मुझे मेरे चचेरे भाई शहजादा सुमेर ने पाला-पोसा है। मेरी माँ का नाम पीरोज है। अब तुम्हें इस बात से भी संतोष होना चाहिए कि तुमने साधारण व्यक्ति से नहीं, एक शहजादे से विवाह किया है। दरियाबार की शहजादी ने कहा, तुमने अपने को छुपाया जरूर किंतु मुझे तुम्हारी चाल-ढाल और व्यवहार से

अंदाजा हो गया था कि तुम अवश्य ही राजकुमार होंगे। साधारण आदमी में वे बातें बिल्कुल नहीं होतीं जो तुम में हैं।

खुदादाद के सौतेले भाई यह सुन कर प्रकटतः तो बड़े प्रसन्न हुए किंतु उन के दिलों में बैर की आग सुलगने लगी। वे चुपके-चुपके आपस में परामर्श करने लगे। वे इस बात को भूल गए कि एक दिन पहले ही खुदादाद ने उन्हें मौत के मुँह से बचाया था। उनमें से एक ने कहा, इसे विदेशी समझ कर तो हमारे पिता ने इसे हमारा अभिभावक बना दिया है, जब उसे मालूम होगा कि यह उस का पुत्र है तो स्पष्टतः इसे सारा राज-पाट सौंप देगा और हम कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए अच्छा है कि हम इसे यहीं खत्म कर दें। इस पर सारे शहजादे एकमत हो गए। उन्होंने रात गए खुदादाद के खेमे में घुस कर उस पर गदाओं की चोटें कीं और जब वह निश्चेष्ट हो गया तो स्वयं सारे ऊँट और सामान ले कर रात ही रात हैरन की ओर रवाना हो गए। हैरन पहुँच कर उन्होंने अपने पिता की चिंता यह कह कर दूर कर दी कि हम लोग बहुत दिन तक शिकार खेलते रहे। उन्होंने हब्शी के हाथों अपनी गिरफ्तारी और खुदादाद द्वारा मुक्ति की बात बिल्कुल छुपा ली।

उधर सुबह जब शहजादी ने खुदादाद के खेमे में उस का हाल देखा और शहजादों को गायब पाया तो वह सारी बात समझ गई और पति के लिए विलाप करने लगी। कुछ देर में जब उस का शोक कुछ कम हुआ तो उस ने ध्यान में खुदादाद को देखा। उस ने उस की साँस भी कुछ चलती देखी ओर शरीर भी गर्म पाया। वह खेमे को बंद करके एक निकटवर्ती कस्बे में गई और वहाँ से एक जर्राह को ले आई। किंतु वापस आ कर देखा तो खुदादाद अपने खेमे में नहीं था। उस ने समझा कि इस बीच कोई खूनी जानवर आ कर उसे उठा ले गया। अब वह सिर पीट-पीट कर रोने लगी। जर्राह दयावान था। वह उसे कस्बे में ले गया और एक मकान में उसे रख कर उस की सेवा के लिए दो दासियाँ नियुक्त कर दीं और कभी-कभी खुद भी जा कर हाल-चाल पूछ लेता।

एक दिन उस ने शहजादी को उदास देख कर कहा, सुंदरी, तुम कुछ विस्तार से अपना हाल कहो तो तुम्हारी सहायता का प्रयत्न करूँ। शहजादी ने उसे अनुभवी और हमदर्द देखा तो अपना और खुदादाद का हाल सुनाया। जर्राह को मलिका पीरोज का हाल मालूम था जिसे हैरन के बादशाह ने फिर अपने पास बुला लिया था और उस ने जान लिया था कि खुदादाद उसी का पुत्र था। जर्राह ने किराए पर दो ऊँट लिए और शहजादी के साथ हैरन को रवाना हुआ और एक सराय में पहुँच कर डेरा डाला। सरायवाले से नगर का हाल पूछने पर उस ने बताया, बादशाह अपने पुत्र खुदादाद के गायब होने से बहुत परेशान है। उस की माँ पीरोज ने उसे बहुत ढुँढ़वाया किंतु कहीं पता नहीं है। उस की याद करके उस के माँ-बाप और सरदार-सामंत सभी दुखी रहते थे। यूँ तो बादशाह के और भी उनचास बेटे हैं किंतु खुदादाद को कोई नहीं पहुँचता। वास्तव में खेद की बात है कि ऐसा शहजादा लापता हो जाए।

जर्राह ने दरियाबार की शहजादी को यह बताया तो बादशाह के पास जा कर उसे पूरा हाल बताने के लिए तैयार हो गई। जर्राह ने कहा, यह ठीक नहीं है। इसमें खतरा है।

उनचास शहजादों में से किसी को भी तुम्हारे बारे में मालूम हुआ तो तुम्हारे बादशाह के पास पहुँचने के पहले ही वे तुम्हें मरवा देंगे। अच्छा यह होगा कि वह स्वयं खुदादाद की माँ के पास किसी तरह पहुँचूँ और जब उसे पूरा हाल बता दूँ तो तुम्हें बुलाऊँ। तब तक के लिए तुम यहीं सराय में ठहरो।

शहजादी ने यह मान लिया। जर्राह शहर में गया तो एक बड़े रास्ते में देखा कि एक भव्य महिला एक ऊँट पर सवार आ रही है। उस ऊँट का साज-सामान बहुत ही मूल्यवान था और उस ऊँट के पीछे बहुत-से गुलाम चल रहे थे। पुरवासी भी ऊँट को देख कर विनयपूर्वक सड़के के किनारे खड़े हो जाते और उस का अभिवादन करते थे। जर्राह ने भी एक किनारे खड़े हो कर उस का अभिवादन किया।

फिर उस ने एक आदमी से पूछा कि यह कौन है। उस ने बताया कि यह खुदादाद की माँ मलिका पीरोज है। यह सुन कर जर्राह उस की सवारी के पीछे लग गया। उस महिला ने एक मसजिद में जा कर नमाज पढ़ी और निर्धनों तथा भिखारियों को खूब दान दिया। बादशाह ने उस से कहा था कि तुम खुदादाद की वापसी का आशीर्वाद पाने के लिए भिखारियों को खूब दान दिया करो। जर्राह भीड़ में घुस गया और उस ने एक दास से कहा कि मैं मलिका से बात करना चाहता हूँ। उस ने कहा, भाई, इस समय तो उसे रात-दिन खुदादाद की ही चिंता है। वह इस विषय के अलावा किसी से कोई बात नहीं करती। जर्राह ने दास के कान में कहा, मुझे इसी बारे में उस से बात करनी है। दास ने कहा, अच्छी बात है। लेकिन रास्ते में तो बात हो नहीं सकती, तुम हमारे साथ महल तक चलो फिर मैं बात करवाने की कोशिश करूँगा।

महल पहुँच कर दास ने मलिका पीरोज से कहा कि एक परदेशी आप से बात करना चाहता है और कहता है कि आप ही के लाभ की बात है। मलिका ने जर्राह को अपने सामने बुलाया और कृपापूर्वक पूछा कि क्या बात है। जर्राह ने धरती चूम कर कहा कि मैं एक लंबी कहानी कहना चाहता हूँ। यह कह कर उस ने हब्शी से शहजादों और दरियाबार की शहजादी की रिहाई और फिर उस के घायल और लापता होने का हाल कहा।

पीरोज यह सुन कर बेहोश हो गई। दासियाँ गुलाब और केवड़े का पानी छिड़क कर उसे होश में लाईं। फिर उस ने जर्राह से कहा कि तुम सराय जा कर बहू शहजादी को मेरा और बादशाह का आशीर्वाद दो। यह कह कर उस ने जर्राह को विदा किया और खुद खुदादाद को याद करके रोने लगी।

कुछ देर में बादशाह वहाँ आया और मलिका से उस के रोने का कारण पूछा। पीरोज ने जो कुछ उस जर्राह से सुना था वह विस्तार से कह सुनाया।

शहजादों की कमीनगी सुन कर बादशाह को आग लग गई। वह कुछ कहे-सुने बगैर दरबार में आया। उस का लाल चेहरा देख कर सारा दरबार थर्रा उठा। बादशाह ने मंत्री को आदेश दिया कि हजार सिपाही ले जा कर उनचासों शहजादों को पकड़ो और रस्सियों

में बाँध कर खूनी कैदियों के बीच डाल दो। मंत्री ने कुछ ही देर में इस आदेश का पालन किया और आ कर बादशाह को यह सूचना दे दी। बादशाह ने ऐलान किया कि एक महीने तक दरबार नहीं होगा।

फिर वह मंत्री के साथ मलिका पीरोज के महल में आया। कुछ देर के सलाह- मशविरे के बाद उस ने मंत्री को आदेश दिया कि अमुक सराय में जा कर दरियाबार की शहजादी और जर्राह को आदरपूर्वक यहाँ ले आओ। मंत्री एक सजा-सजाया ऊँट और एक उम्दा घोड़ा ले कर सराय को गया और ऊँट पर शहजादी और घोड़े पर जर्राह को सवार करा के चला। मार्ग में यह सवारी बड़ी शान से निकली और सभी को मालूम हो गया कि शहजादा खुदादाद की पत्नी दरियाबार की शहजादी है। सब लोग खुश हुए, उन्हें आशा बँधी कि अब शहजादे का भी पता चल जाएगा। सवारी जब महल के द्वार पहुँची तो तो बादशाह खुद अगवानी के लिए आया। शहजादी ने सवारी से उतर कर बादशाह और मलिका के पाँव चूमे। फिर तीनों गले मिल कर खुदादाद की याद में देर तक रोते रहे।

जब उन लोगों की तबीयत कुछ सँभली तो दरियाबार की शहजादी ने कहा कि मुझे आशा है कि जिन लोगों ने मेरे निर्दोष पति की इतनी निर्दयता से हत्या की हैं उनसे इसका बदला लिया जाएगा। बादशाह ने कहा, तुम भरोसा रखो यद्यपि वे मेरे पुत्र हैं तथापि मैं उन्हें जीता न छोड़ूँगा। उस के बाद वह कहने लगा, अपने बेटे खुदादाद का शव नहीं मिला है फिर भी मैं चाहता हूँ कि उस की याद बनाए रखने के लिए एक मकबरा बनवाऊँ। इस के बाद उस ने मंत्री को आदेश दिया। मंत्री ने नगर के बीच में एक जगह ले कर उस में सफेद संगमरमर का एक विशाल और सुंदर मकबरा कुशल कारीगरों से बनवा दिया। बादशाह को जब यह सूचना मिली कि मकबरा तैयार है तो उस ने एक दिन तय किया जब सारे लोग वहाँ जा कर मातम और कुरान पाठ करें।

वह दिन भी आ पहुँचा। नगर के सभी निवासी मकबरे पर पहुँच गए। बादशाह भी अपने दरबारियों और सरदारों-सामंतों के साथ वहाँ पहुँचा। कब्र पर एक काली मखमल की सुनहरे काम की चादर बिछी थी। बादशाह और अमीर उस पर बैठे। कुछ देर बाद फौजी सवारों की एक टुकड़ी आई। इस के जवान सिर नीचा और आँखें आधी बंद किए थे। उन्होंने कब्र की दो बार परिक्रमा की और फिर कब्र के सामने खड़े हो कर बोले, राजपुत्र, यदि हमारी शक्ति और शौर्य से तुम जीवित हो सको तो हम अपने प्राण दे कर भी तुम्हें जीवित कर देंगे किंतु यदि ईश्वर की इच्छा कुछ और हो तो हम लोग मजबूर हैं। यह कह कर वे लोग चले गए। फिर एक गिरोह महात्माओं का आया जो कुटीरों में रहते थे और किसी से मिलते-जुलते नहीं थे। उनका अगुआ एक वृद्ध था जिसने एक मोटी पुस्तक अपने सिर पर रखी थी। वे भी कब्र की तीन बार परिक्रमा कर के कब्र के सामने खड़े हो गए और बोले, हे राजकुमार, यदि हमारी सारी तपस्याओं के फलस्वरूप तुम पुनः जीवित हो जाओ तो हम इस के लिए तपस्याओं का फल अर्पित कर देंगे। यह कहने के बाद वे लोग भी जिधर से आए थे उधर ही चले गए।

इस के बाद सफेद टट्टुओं पर सवार और भव्य वस्त्राभूषण पहने सिरों पर रत्नों की

मंजूषाएँ लिए हुए पचास अतीव सुंदर कुमारियाँ आईं। उन्होंने भी कब्र की कई बार परिक्रमा की। फिर उनमें सबसे अल्पायु और सुंदर स्त्री कब्र के सामने खड़े हो कर बड़े उच्च स्वर में बोली, शहजादे, हम तुम्हारी दासियाँ है। हमारा सौंदर्य तुम पर न्योछावर है। यदि इस के बदले तुम्हें जीवनदान मिले तो हम इस के लिए प्रस्तुत हैं। यद्यपि हमें ज्ञात है कि तुम जिस स्थान पर हो वहाँ यह चीजें काम नहीं आतीं। यह कहने के बाद सुंदरियों का गिरोह भी चला गया।

फिर बादशाह अपने दरबारियों और सरदारों के साथ खड़ा हो गया। इन सब ने भी तीन बार कब्र की परिक्रमा की। फिर बादशाह उच्च स्वर में बोला, ओ शहजादे, तुम कहाँ हो? तुम्हारे वियोग में मेरी आँखों की ज्योति जाने लगी है। यह कह कर वह फूट-फूट कर रोने लगा। उस के साथ के लोग भी रोने और मातम करने लगे। कुछ देर बार सब लोग अपने-अपने स्थानों को लौट गए और मकबरे का दरवाजा बंद कर दिया गया। बादशाह ने नियम बना दिया कि सप्ताह में एक दिन शहजादे के मकबरे पर इसी तरह का मातम हुआ करे।

फिर बादशाह ने आज्ञा दी कि उस के उनचास दुष्ट पुत्रों को निर्दोष खुदादाद की हत्या के अपराध में मृत्युदंड दिया जाए। सारे नगर में यह समाचार फैल गया। उन के लिए फाँसी की टिकटियाँ तैयार की जाने लगीं। लेकिन इस बीच एक व्यवधान उपस्थित हो गया। बादशाह द्वारा पहले पराजित हुआ एक शत्रु राज्य पर एक बड़ी सेना ले कर चढ़ दौड़ा। बादशाह ने खेदपूर्वक कहा कि आज खुदा बख्शे, साथ ही उस ने पराजय की स्थिति में भाग जाने की तैयारी भी कर रखी थी। युद्ध अभी शुरू भी नहीं हुआ था कि एक ओर से सवारों की एक बड़ी टुकड़ी आई। पहले किसी को मालूम न था कि वे मित्र हैं या शत्रु किंतु उन्होंने आ कर शत्रु पर हमला किया और उसे मार भगाया।

हैरन का बादशाह बड़े आश्चर्य में पड़ा कि यह दैवी सहायता कहाँ से आ गई। उस ने भगवान को धन्यवाद दिया और अपने भृत्यों से कहा कि सहायक सेना में जा कर पूछो कि उस का सरदार कौन है और कहाँ से आया है। भृत्यों ने जा कर उस के सिपाहियों से पूछा तो उन्होंने कहा कि हमारा सरदार खुद ही बादशाह से मिलने जाएगा। शत्रुओं का संपूर्ण रूप से सफाया करने के बाद जब बादशाह की खुशी का ठिकाना न रहा तो वह इतना अभिभूत हुआ कि कुछ बोल भी न सका।

खुदादाद ने कहा, पिता जी, मैं आप का पुत्र खुदादाद ही हूँ जिसे आप सब लोग मरा हुआ समझते थे। ईश्वर ने मुझे शायद इसीलिए जीवित रखा कि मैं आज के कठिन समय पर आप के काम आऊँ। बादशाह ने कहा, बेटे, मुझे तो विजय से अधिक तेरे मिलने की प्रसन्नता है। मैं तो यह आशा ही छोड़ बैठा था कि कभी तेरा मुँह देख सकूँगा। इस के बाद पिता-पुत्र दोनों अपनी सवारियों से उतरे और एक-दूसरे से लिपट गए। बादशाह ने कहा, मुझे तुम्हारी वीरता की गाथा पहले ही मालूम हो चुकी है कि किस तरह तुमने हब्शी दानव को मार कर अपने भाइयों को छुड़ाया किंतु उन्होंने तुम से दगा किया। अब तुम अपनी माँ के पास चलो क्योंकि वह तुम्हारे वियोग से सूख कर काँटा हो गई है।

रास्ते में खुदादाद ने पूछा, मेरा हाल आप को मेरे भाइयों ने बताया? बादशाह ने कहा, वे दुष्ट क्या बताते। वे तो बंदीगृह में मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं। मुझे यह सब तुम्हारी पत्नी यानी दरियाबार की शहजादी ने बताया। उसी ने मुझ से माँग की कि तुम्हारे भाइयों से तुम्हारी मौत का बदला लूँ। खुदादाद यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ कि उस की पत्नी भी सही-सलामत यहीं पर मौजूद है। खुदादाद महल में पहुँचा तो उस की माँ और उस की पत्नी ने उसे गले लगा कर बहुत देर तक रोती रहीं। प्रजाजनों को मालूम हुआ कि खुदादाद जीवित है और अंत के युद्ध का विजेता है तो सारे नगर में उत्सव होने लगे और जगह-जगह पर नाच-गाना और खेल-तमाशे होने लगे।

बादशाह के पूछने पर खुदादाद ने अपना हाल यह बताया, जब मेरे भाइयों ने मुझे मरा जान कर रात में प्रस्थान किया तो सुबह वहाँ से एक किसान निकला। उस ने मुझे अचेत और रक्तरंजित देखा तो अपने गाँव में उठा लाया। उस ने मेरे घावों पर जड़ी-बूटियाँ पीस कर लगाईं और मुझे अच्छा कर दिया। स्वस्थ हो कर मैं सोच रहा था कि मैं यहाँ आऊँ। इतने में सुना कि आप का पुराना शत्रु आप पर आक्रमण करनेवाला है। मैं ने कई गाँवों के जवान इकट्ठे किए। वे सब आप की रक्षा के लिए जान देने को तैयार हो गए। मैं ने उनकी फौज बनाई और अवसर रहते आप की सेवा में आ गया।

बादशाह ने खुदादाद की बड़ी प्रशंसा की और मंत्री को आदेश दिया कि उनचास पुत्रों को फाँसी दी जाए। खुदादाद ने हाथ जोड़ कर कहा, निस्संदेह न्याय की दृष्टि से उन्हें यही दंड मिलना चाहिए। किंतु आखिरकार वे आप के पुत्र और मेरे भाई हैं। मैं ने हृदय से उनका अपराध क्षमा किया और आप से भी निवेदन करता हूँ कि उन्हें क्षमा करें। बादशाह ने कहा कि तुम कहते हो तो मैं उन्हें क्षमा करता हूँ। खुदादाद ने बंदीगृह से अपने भाइयों को बुलाया। उस ने एक बार फिर उसी तरह उन के बंधन खोले और उन्हें गले लगाय जैसे हब्शी दैत्य के महल में किया था। प्रमुख नागरिकों और सामंतों ने खुदादाद के हृदय की विशालता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बादशाह ने खुदादाद को उसी समय युवराज और राज्य का स्वामी घोषित कर दिया। उस ने जर्राह और खुदादाद के सहायक किसान को अपार धन-संपदा दे कर विदा किया और खुदादाद के सैनिकों को भी इनाम दिया।

शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने इस की बड़ी प्रशंसा की। शहरजाद ने कहा कि मेरे पास एक और अति मनोरंजक कथा सोते-जागते आदमी की है, यदि बादशाह मुझे प्राणदंड न दे तो मैं यह कहानी भी सुनाऊँगी, क्योंकि सवेरा हो गया है और कल ही कहानी सुनाई जा सकती है। बादशाह ने दूसरे दिन नई कहानी आरंभ करने की अनुमति दे दी।

सोते-जागते आदमी की कहानी

शहरजाद ने कहा कि खलीफा हारूँ रशीद के जमाने में बगदाद में एक धनी व्यापारी था। उस का एक ही पुत्र था जिसका नाम अबुल हसन था। व्यापारी बड़ा कंजूस था। वह धन एकत्र ही करता था, खर्च बहुत कम करता था। इसलिए जब वह मरा तो उस ने बेहद धन-दौलत छोड़ी। अबुल हसन का स्वभाव इस से उलटा था। उस ने जब पिता का धन पाया तो दोनों हाथों से खर्च करने लगा। उस ने अपने मित्रों को खूब पैसा दिया। फिर उस ने अपनी दौलत के दो भाग किए। एक से उस ने मकान खरीदे जिनका किराया उस के सारे जीवन के लिए काफी था। दूसरे को उस ने पूर्ववत रागरंग पर लुटाना शुरू कर दिया। उस के यहाँ हमेशा नाच-गाना होता था और शराब चलती थी। वह अपने मित्रों के साथ अति मूल्यवान पात्रों में स्वादिष्ट भोजन करता था। नाच-गाने की महफिलों के साथ भाँड़ और अन्य लोग उसे तरह-तरह के तमाशे दिखाते थे।

इस प्रकार एक ही वर्ष में अबुल हसन ने अपने पिता का सारा संचित धन खर्च कर डाला। जब उस ने मित्रों को दावतें देना छोड़ दिया तो उन्होंने भी उस के घर आना छोड़ दिया। यद्यपि वे सब अबुल हसन के कारण धनवान हो गए थे तथापि उन्होंने खराब भावना प्रदर्शित की। वे उस से राह-बाट में मुँह चुराने लगे। अगर वह किसी को रोक कर बात भी करता तो वह कोई बहाना बना कर अपनी राह चला जाता।

अबुल हसन को अपने मित्रों की इस अमैत्री से बड़ा क्षोभ हुआ। अक्सर पछताया करता कि मैं ने ऐसे लोगों पर क्यों धन लुटाया जिनकी आँखों में बिल्कुल शील नहीं है। एक दिन वह इसी चिंता में अपनी माँ के पास बैठा था। माँ ने उस से उदासी का कारण पूछा, क्योंकि वह साधारणतः प्रफुल्लित रहता था। वह कुछ न बोला तो माँ ने कहा, मैं जानती हूँ कि तुम्हें क्या दुख है। तुमने इस बीच बड़ी मूर्खता की कि अपना सारा धन लुटा दिया। मैं जानती थी कि तुम एक दिन धनहीन हो जाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी हरकतों से रोकती भी थी किंतु तुम तो अपनी लफंगे दोस्तों के फेर में पड़े थे। तुमने मेरी बात नहीं मानी। अब वे स्वार्थी और नीच लोग तुम्हारी बात कहाँ पूछते होंगे।

अबुल हसन ने कहा, वे मुझ से बात तो कम करते हैं किंतु वे नीच नहीं मालूम होते। संभव है कि वे अधिक व्यस्त हो गए हैं। मैं उनकी परीक्षा लेने के लिए उनसे ऋण माँगता हूँ। मुझे विश्वास है कि वे इस से इनकार नहीं करेंगे। यह कह कर वह एक-एक करके उन सभी के पास गया और उनसे व्यापार आरंभ करने के लिए ऋण माँगने लगा। किंतु सबने टका-सा जवाब दे दिया यद्यपि वह धन जिस पर वे ऐश कर रहे थे अबुल हसन ही का था। उनमें से कई ने तो अबुल हसन को फटकार भी दिया।

अब वह माँ के पास आ कर बोला, तुम ठीक कहती थीं। वे सभी बड़े दुष्ट और नीच हैं। मैं अब किसी व्यक्ति को मित्र नहीं बनाऊँगा। उस ने अपने बचे हुए धन को सँभाला, कुछ मुल्यवान गृह सामग्री बेच कर कुछ रुपया इकट्ठा किया और छोटा-मोटा व्यापार शुरू

किया। शाम को वह नदी के पुल पर चला जाता और एक परदेशी को घर ले आता, उसे स्वादिष्ट भोजन कराता और आधी रात तक उस से बातें करता। फिर सुबह उसे विदा करके कहता कि अब तुम कभी मेरे घर न आना।

उस की यह हरकत इसलिए थी कि उसे अकेले भोजन करने की आदत नहीं थी। इसलिए खाने पर किसी को साथ रखता। मैत्री वह करना भी नहीं चाहता था। उस के मेहमानों में से अगर उसे संयोगवश कोई व्यक्ति बाद में किसी स्थान पर मिल जाता था तो वह उस की ओर से मुँह फेर लेता था और अगर वह अबुल हसन से कुछ बात करना चाहता था तो यह ऐसा बन जाता जैसे उसे पहले कभी देखा ही नहीं हो।

एक दिन अपनी दैनिक चर्या के अनुसार अबुल हुसन पुल पर किसी अकेले परदेशी की प्रतीक्षा में बैठा था। इसी समय खलीफा हारूँ रशीद केवल एक दास को ले कर उधर से निकला। खलीफा का नियम था कि वह कभी-कभी वेश बदल कर प्रजा का हाल देखने के लिए निकला करता था। इस समय भी उसे पहचानना संभव नहीं था। खलीफा के प्रशासन में मंत्रियों और अधिकारियों की कमी नहीं थी किंतु वह प्रजा की कठिनाइयाँ अपनी आँखों से देखना चाहता था।

इस समय खलीफा ने मोसिल के व्यापारी का रूप धरा था। और किसी आकस्मिक दुखदायी स्थिति से निपटने के लिए एक विशालकाय दास भी अपने साथ रखा था। अबुल हसन ने यही समझा कि वह मोसिल से आनेवाला कोई व्यापारी है। वह उस के समीप गया और सलाम करने के बाद उस से कहने लगा कि आप परदेशी हैं, मुझ पर इतनी कृपा कीजिए कि मेरी कुटिया पर चल कर रूखा-सूखा भोजन कीजिए और रात को वहीं शयन भी कीजिए।

खलीफा को आश्चर्य हुआ कि कोई ऐसा दानवीर हो सकता है जो खुद जा कर परदेशियों को अपने घर आ कर भोजन और शयन को कहे। अबुल हसन का चेहरा-मोहरा और बातचीत का ढंग भद्रतापूर्ण था। खलीफा की इच्छा हुई कि उस के बारे में कुछ विस्तारपूर्वक जाने। इसलिए उस ने अबुल हसन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अबुल हसन ने उसे एक सजे-सजाए कमरे में बिठाया, जहाँ झाड़-फानूस आदि लगे थे। फिर उस के सामने स्वच्छ और मूल्यवान पात्रों में भाँति-भाँति के स्वादिष्ट व्यंजन ला कर रखे। उस की माँ पाक कला में प्रवीण थी और अपने पुत्र की प्रसन्नता के विचार से खुद ही भोजन बनाती थी। उस ने तीन तरह के सालन परोसे। एक मुर्गे के मांस का, एक कबूतर के मांस का और एक भुने हुए मांस का। भोजन की मात्रा इतनी अधिक थी कि कई व्यक्ति उस से तृप्त हो सकते थे। अबुल हसन खलीफा के सामने बैठ कर उस के साथ भोजन करने लगा। खलीफा ने भोजन की बड़ी प्रशंसा की।

भोजनोपरांत खलीफा के दास ने जल पात्र ला कर दोनों के हाथ धुलाए। फिर अबुल हसन की माँ ने बादाम और अन्य मेवे भिजवाए। कुछ रात ढलने पर अबुल हसन शराब की

सुराहियाँ और प्याले लाया और उधर माँ से कहा कि मेहमान के गुलाम को पेट भर भोजन करा दे। फिर उस ने एक प्याला भर कर खलीफा को दिया और खलीफा के पीने के बाद प्याले में बची शराब खुद पी गया। खलीफा ने भी इस के जवाब में ऐसा ही किया। खलीफा ने अबुल हसन का शिष्ट व्यवहार देख कर उस का नाम, परिवार आदि पूछा। उस ने कहा कि मेरी कथा विचित्र है। खलीफा ने उसे सुनाने पर जोर दिया।

अबुल हसन बोला, मेरा नाम अबुल हसन है। मेरा स्वर्गीय पिता एक साधारण किंतु खाता-पीता व्यापारी था। उस के मरने पर उस का धन मुझे मिला। मैं ने अपनी नादानी में उस धन का अपव्यय कर दिया। मेरे पास कई दुष्ट प्रकृति के लोग मित्र बन कर आ गए और मैं ने उन पर अपना सारा धन लुटा डाला। जब मेरे पास कुछ नहीं रहा और उन्होंने देखा कि मैं अंदर से ढोल की तरह खोखला हो गया हूँ तो उन्होंने मेरे घर आना-जाना छोड़ दिया। मेरे पास धन की कमी हो गई थी। इसलिए व्यापार करने के लिए मैं ने उनसे उधार माँगा किंतु सभी ने मुझे धता बताया। मैं ने समझ लिया कि यह सभी लोग बड़े स्वार्थी और लज्जाहीन हैं। मैं ने भी उनसे संबंध तोड़ लिया और प्रण किया कि बगदाद के कमीने निवासियों से कोई सरोकार नहीं रखूँगा। हर रात को एक परदेसी को अपने साथ ला कर भोजन कराऊँगा और सवेरे उसे विदा करने के बाद उस से भी आगे के लिए कोई संबंध नहीं रखूँगा। इसी तरह मैं आज तुम्हें लाया हूँ।

खलीफा अबुल हसन की बातों से बहुत खुश हुआ। उस ने कहा, भाई, तुमने यह बड़ा अच्छा किया कि ऐसे स्वार्थी और नीच मित्रों का साथ छोड़ दिया। अब तुम वास्तव में सुख से होंगे। तुम्हारी यह आदत भी बड़ी अच्छी है कि एक विदेशी को केवल एक रात के लिए मेहमान बनाते हो फिर उस से कोई संबंध नहीं रखते। सच पूछो तो मुझे तुम्हारे भाग्य पर ईर्ष्या हो रही है।

फिर वह काफी देर तक मैत्री वार्ता और हँसी-मजाक करते रहे। फिर खलीफा ने कहा, अब सोना चाहिए क्योंकि कल मुझे बहुत दूर की यात्रा करनी है। मैं सुबह तुम्हारे जागने के पहले चला जाऊँगा। किंतु तुमने बड़ी सुंदरता से मेरा आतिथ्य सत्कार किया है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे अहसान का बदला दूँ। तुम्हारी कोई इच्छा हो तो कहो। अबुल हसन ने कहा, मुझे भगवान ने मेरी जरूरतों से ज्यादा दिया है, मेरी कोई इच्छा नहीं। मेरा तुम पर कोई अहसान नहीं है। परदेशियों का सत्कार कर के मुझे खुद ही खुशी होती है। यह तो तुम्हारी कृपा है कि तुमने मुझे वह खुशी दी है।

खलीफा ने कहा, फिर भी तुम्हारी कोई इच्छा तो होगी ही। अबुल हसन ने कहा, मेरी इच्छा सुनोगे तो मुझ पर हँसोगे और मुझे पागल समझोगे। खलीफा ने फिर भी जोर दिया तो अबुल हसन बोला, तुम जानते ही हो कि बगदाद में हजारों गलियाँ हैं। प्रत्येक गली में एक या एक से अधिक मसजिदें हैं। हर एक मसजिद में एक मुअज्जिन होता है जो पाँचों वक्त नमाज के लिए अजान दिया करता है। इस गली की मसजिद का मुअज्जिन एक बूढ़ा है। वह बड़ी दुष्ट प्रकृति का आदमी है और मुहल्लेवालों की हानि करके और उन्हें कष्ट देने के उपाय सोचता रहता है। उस के चार साथी भी हैं जो उस की दुष्टता में उस का

साथ देते हैं। वे उसी मुअज्जिन के घर में जा कर अपनी दुष्टतापूर्ण योजनाएँ बनाते हैं। उन लोगों से सभी को कुछ न कुछ क्षति पहुँची है। मुझे भी उनकी वजह से परेशानी हो रही है। मुझे तो उन लोगों की सूरत देख कर भी घृणा होती है।

खलीफा ने कहा, यह तो तुमने किस्सा बताया, अपनी इच्छा तो नहीं बताई। अबुल हसन बोला, अगर भगवान अपनी शक्ति से मुझे खलीफा हारूँ रशीद की तरह तख्त पर बिठा दे तो मैं इन पाँचों को यथोचित दंड दूँगा। खलीफा ने कहा, उन्हें क्या दंड दोगे? अबुल हसन बोला, बूढ़े को चार सौ कोड़े और उस के साथियों को सौ-सौ कोड़े लगवाऊँगा।

खलीफा बड़ा विनोदप्रिय था। उसे मजाक का एक मौका मिला। उस ने कहा, मित्र, मैं भी चाहता हूँ कि ऐसे दुष्टों को ऐसा ही कठोर दंड मिले। ईश्वर की लीला अपरंपार है। कुछ असंभव नहीं कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो और तुम पाँचों दुष्टों को यथोचित दंड दे सको। मैं तो व्यापारी मात्र हूँ और वह भी परदेशी। मुझे अधिकार होता तो मैं उन लोगों को तुम्हरे हाथ से दंड दिलवाता। अबुल हसन ने कहा, तुम निश्चय ही मुझे पागल समझ कर मेरा मजाक उड़ा रहे हो। भला मुझे ऐसा अधिकार कैसे मिल सकता है? खलीफा ने कहा, मैं मजाक नहीं उड़ा रहा, विशेषतः तुम्हारे जैसे उदार और शिष्ट व्यक्ति का कैसे मजाक उड़ाऊँगा जिसने मेरा ऐसा सत्कार किया है। खलीफा को तुम्हारी बात मालूम होगी तो वह भी तुम्हारी बात का समर्थन करेगा।

फिर खलीफा ने कहा, अब सोना चाहिए, बहुत रात हो गई है। अबुल हसन बोला, ठीक बाते है। यह थोड़ी-सी शराब रह गई है। हम लोग उसे खत्म कर दें फिर सोने के लिए जाएँ। हाँ, एक बात कहनी है। सवेरे तुम्हारी आँख खुले तो मुझ से विदा लिए बगैर चले जाना और दरवाजा बंद कर जाना। खलीफा ने कहा, अच्छी बात है। लेकिन एक बात मेरी चलेगी। अभी तक तुमने प्याले भर-भर कर शराब पिलाई है, यह बाकी बची शराब मैं तुम्हें पिलाऊँगा। अबुल हसन ने मान लिया। खलीफा ने एक प्याला खुद पिया फिर एक प्याला भर कर अबुल हसन को दिया और उस में नजर बचा कर बेहोशी की दवा, जिसे वह अपने साथ लाया था, मिला दी। बेहोशी की दवा बहुत तेज थी। उस ने फौरन अपना असर दिखाया। अबुल हसन ने खाली प्याला भी बड़ी कठिनाई से जमीन पर रखा। उस का सिर घुटनों में जा लगा। खलीफा यह देख कर खूब हँसा।

फिर खलीफा ने अपने दास को बुलाया। वह भोजन कर के आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ा ही था। खलीफा ने कहा, इस आदमी को उठा कर कंधे पर रख कर ले चल। और इस मकान को अच्छी तरह पहचान ले। जब मैं आदेश दूँ तो महल से इस आदमी को इसी तरह ला कर इसी जगह छोड़ जाना। दास ने आसानी से अबुल हसन को कंधे पर लाद लिया और खलीफा ने चलते समय मकान का दरवाजा बंद कर दिया। महल में जा कर वह दास को लिए हुए चोर दरवाजे से अंदर पहुँचा। वहाँ बीसियों दास-दासियाँ खलीफा के शयन कक्ष के बाहर उस की प्रतीक्षा में थे।

खलीफा ने आज्ञा दी, इस आदमी को मेरे जैसे शयनवस्त्र पहनाओ और मेरे पलंग पर सुलाओ। तुम सब लोग रात भर जागते रहो। सुबह जागने के समय तुम लोग उसी प्रकार

इसे प्रणामादि करना जैसे मुझे करते हो। इसकी आज्ञा का पालन भी यथावत करना ओर इसे खलीफा कह कर संबोधित करना। उन सबों ने कहा, बहुत अच्छा, हम ऐसा ही करेंगे। फिर खलीफा बाहर आया और उस ने मंत्री को उस के घर से बुला कर कहा, मेरे पलंग पर सोए हुए इस आदमी को देख लो। कल यह मेरे राजसी वस्त्र पहन कर मेरी जगह सिंहासन पर बैठेगा। तुम सब लोग इस के साथ ऐसा ही बरताव करना जैसा मेरे साथ करते हो। मेरे कोष से जो कुछ इनाम वगैरह किसा को दिलाए फौरन दे देना और इसी तरह जो दंड किसी को दिलवाए वह भी देना। सवेरे सभी दरबारी इसका स्वागत ऐसे ही करें जैसा मेरा करते हैं। फिर उस ने महल के प्रबंधक मसरूर को भी आदेश दिया कि हर सुबह जिस तरह मुझे नमाज पढ़ने के लिए जगाया करते हो वैसे ही इसे भी जगाया करना और अन्य व्यवहार भी ऐसे ही करना।

यह आदेश दे कर खलीफा बगल के एक कमरे में जा कर सो रहा। सुबह वह जल्दी ही जाग गया और परदे के पीछे छुप कर देखने लगा कि अबुल हसन क्या करता है और क्या बोलता है। उधर खलीफा के आदेशानुसार सारे कर्मचारी और दास-दासियाँ खलीफा के अपने शयन कक्ष में अबुल हसन की सेवा के लिए एकत्र थे। जब नमाज का समय हुआ तो मसरूर ने, जो अबुल हसन के सिरहाने खड़ा हुआ था, उस की नाक के नीचे सिरके में भीगा हुआ स्पंज रखा। सिरके की तेज गंध से अबुल हसन को छींक आई और उस ने खखार कर बलगम निकालना चाहा तो एक दासी ने आगे बढ़ कर उसे एक सोने के उगालदान में ले लिया। यह इसलिए किया जाता था कि नीचे बिछे हुए मूल्यवान कालीन गंदे न हो जाएँ और खलीफा को नित्य प्रति इसी तरह सिरके में डूबा स्पंज सुँघा कर जगाया जाता था ताकि वह उठ कर नमाज पढ़े।

अबुल हसन ने आँखें खोल कर अतिशय सुसज्जित शयन कक्ष देखा जिस में कीमती परदे लगे थे और जिस की दीवारों और छत पर रंग-बिरंगी सुंदर चित्रकारी की हुई थी। उस ने यह भी देखा कि अति सुंदर नवयौवना दासियाँ बीसियों की संख्या में खड़ी हैं, किसी के हाथ में उगालदान है किसी के हाथ में मोरछल, कइयों के हाथों में वाद्य यंत्र थे। महलों की रखवाली करनेवाले ख्वाजासरा (जनखे) भी सुनहरी पोशाक पहने खड़े थे। उस ने अपने पलंग के लिहाफ और चादर को भी देखा कि वे गुलाबी रंग के कमख्वाब नामी कपड़े के बने थे और उनमें हीरे-मोती की झालरें लटकती थीं। इसी प्रकार मसहरी आदि भी सोने की बनी हुई थी। पास ही एक तिपाई पर खलीफा का ताज रखा था।

यह देख कर अबुल हसन ने सोचा कि यह सब कुछ वास्तविक नहीं हो सकता। उस ने सोचा, गत रात्रि को मैं ने खलीफा होने की बात कहीं थी इसीलिए मुझे स्वप्न में यह चीजें दिखाई दे रही हैं। यह सोच कर वह फिर आँखें बंद करके सोने का प्रयत्न करने लगा। इस पर एक ख्वाजासरा पास आया और हाथ जोड़ कर बोला, हे दीनबंधु कृपासिंधु प्रजावत्सल महाराज, यह समय सोने का नहीं है। सूर्योदय होने ही वाला है। कृपा करके शैय्या त्याग करें और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आराधना के लिए नमाज पढ़ें। अबुल हसन को यह सुन कर आश्चर्य हुआ किंतु उस ने अब भी इसे स्वप्न समझा और एक बार खोल कर फिर आँखें बंद कर लीं। ख्वाजासरा ने फिर विनय की, सरकार सुबह की नमाज का समय हो गया है। अब तुरंत शैय्या त्याग करें वरना नमाज का समय निकल जाएगा और आप को पश्चात्ताप होगा।

अब अबुल हसन को विश्वास हो गया कि यह स्वप्न नहीं है। स्वप्न इतनी देर तक ठहरा नहीं करता। उस ने आँख खोल कर देखा तो सुबह का उजाला फैल रहा था। उसे दिन के प्रकाश में भी वही चीजें दिखाई दीं जो कुछ देर पहले दीपकों के प्रकाश में देखी थीं। वह पलंग से उठ गया और बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि भगवान ने उस की सुन ली है और खलीफा का पद उसे प्रदान किया है। परदे के पीछे बैठा हुआ खलीफा अलग उसी दशा का आनंद ले रहा था। इतने में एक दासी ने सामने आ कर उस के पाँव चूमे और गाने-बजानेवाली दासियों ने मधुर संगीत छेड़ दिया। संगीत की लहरियों ने उसे आत्म-विस्मृत कर दिया और वह सोचने लगा कि यह सब क्या हो रहा है। उस ने आँखों पर हथेलियाँ रख लीं और सोचने लगा कि यह सुनहरे वस्त्र पहने हुए दास और यह मनमोहिनी नवयौवना दासियाँ और यह मधुर संगीत क्या है और कहाँ से आ गया। यह भी स्वप्न तो नहीं है, यह सोच कर वह अपनी आँखों पर हथेलियाँ रगड़ने लगा।

इतने में ख्वाजासरा मसरूर आया और सिर झुका कर बोला, सरकार, क्या कारण है कि आज आप ने नमाज अदा नहीं की? क्या रात को आप की नींद में व्याघात हुआ था? क्या, भगवान न करे, आप का शरीर कुछ अस्वस्थ है? अब सरकार उठ कर नित्य कर्म करें और फिर दरबार में पदार्पण करें। वहाँ सभी दरबारी और सामंत आप की राह देख रहे हैं। मसरूर की बातें सुन कर अबुल हसन को और विश्वास हुआ कि मैं जाग रहा हूँ और यह सब कुछ स्वप्न नहीं है किंतु उस की समझ में अब भी नहीं आया कि मुझे खलीफा पद कैसे प्राप्त हो गया। उस ने मसरूर से पूछा, तुमने यह बातें किस आदमी से कही हैं? किसे तुम बादशाह और खलीफा कहते हो? मैं ने तो तुम्हें कभी नहीं देखा। तुमने शायद किसी और के धोखे में मुझे खलीफा समझ लिया है?

मसरूर ने कहा, पृथ्वीपालक, आप यह क्या कह रहे हैं? क्या आप इस सेवक की परीक्षा ले रहे हैं? क्या आप ही खलीफा नहीं हैं? और क्या समस्त संसार में आ पका आदेश नहीं माना जाता? आप की कृपा हम सब पर रहे। जान पड़ता है आप ने रात कोई दुःस्वप्न देखा है जिस से यह अजीब बातें कर रहे हैं।

मसरूर की यह बातें सुन कर अबुल हसन हँसने लगा। हँसते-हँसते वह मसनद पर पीठ के बल गिर पड़ा। खलीफा को भी जोरों की हँसी आई और वह ठट्टा मार कर हँसनेवाला ही था कि उस ने यह सोच कर अपनी हँसी दबा ली कि कहीं अबुल हसन आवाज न पहचान पाए। अबुल हसन बहुत देर तक हँसता रहा। फिर वह उठ बैठा और एक लड़के को, जिस का रंग मसरूर की तरह काला था, बुला कर पूछने लगा कि सच बता मैं कौन हूँ। उस के लड़के ने सविनय निवेदन किया कि आप खलीफा हैं। अबुल हसन ने कहा, तू बड़ा झूठा है, इसी कारण तेरा रंग काले कुत्ते जैसा हो गया है। लड़के ने कहा, सरकार विश्वास कीजिए कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, आप वास्तव में खलीफा हैं।

अबुल हसन की समझ में अब भी नहीं आ रहा था कि यह सब लोग क्या कह रहे हैं। उसे फिर स्वप्न देखने का संदेह हुआ। उस ने पास खड़ी हुई एक दासी से कहा, हाथ बढ़ा कर मेरा हाथ अपने हाथ में ले और दाँतों से मेरी उँगली का पोर काट। दासी तो यह जानती थी कि खलीफा छुप कर सारी बातें देख रहा है। वह आगे बढ़ी और उस ने अबुल हसन की उँगली का पोर धीमे से दाँत के तले दबाया। कष्ट हुआ तो अबुल हसन ने अपना हाथ

खींच लिया और कहा, हे भगवान, मैं रातोंरात ही खलीफा किस तरह बन गया। फिर उस ने एक बार और दासी से पूछा, तुझे भगवान की सौंगध है, सच कह कि क्या मैं वास्तव में तेरा स्वामी और खलीफा हूँ। उस ने कहा, निस्संदेह आप हमारे स्वामी खलीफा हैं।

जब अबुल हसन उठने लगा तो एक दास ने उसको सहारा दिया। जब वह खड़ा हुआ तो सारे महल में जयघोष उठने लगा और सारे ख्वाजासराओं और दासियों ने आगे बढ़ कर दुआएँ दीं कि भगवान आज दिन भर आप पर प्रसन्न रहें। अबुल हसन सोचता रहा कि यह क्या बात है, कल तक मैं अबुल हसन था आज खलीफा कैसे बन गया, कैसे मुझे अचानक ही यह महान पद मिल गया। फिर सेवकों ने उसे राजसी परिधान पहनाया और दरवाजे तक दोनों ओर पंक्तिबद्ध हो कर खड़े हो गए। शाही महल के प्रबंध कर ख्वाजासरा मसरूर उस के आगे चलता हुआ उसे दरबार तक ले गया।

अबुल हसन दरबार के कक्ष के अंदर जा कर सिंहासन के समीप इस प्रतीक्षा में खड़ा हो गया कि उसे सिंहासन पर चढ़ाया जाए। दो बड़े सरदारों ने उस की बाँह पकड़ कर सहारा दिया और उसे तख्त पर बिठा दिया।

वह ज्यों ही तख्त पर बैठा कि चारों ओर से सलामी की आवाजें उठने लगीं। वह यह जयघोष सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ। उस ने अपने दाएँ-बाएँ निगाह डाली तो देखा कि राज्य के बड़े-बड़े सरदार सिर झुकाए और हाथ बाँधे खड़े हैं। उस ने एक-एक कर के सारे सरदारों का अभिवादन स्वीकार किया। फिर राज्य का मंत्रि, जो सिंहासन के पीछे खड़ा था और दरबार का इंतजाम देख रहा था, अबुल हसन के सामने आया और फर्शी सलाम करके उसे दुआ देने लगा, भगवान आप को लाखों बरस की उम्र दे और सदैव अपनी कृपा आप के ऊपर बनाए रखे। भगवान करे कि आप के मित्र और शुभचिंतक सुखी और आप के शत्रु परास्त रहें। यह सब देख कर अबुल हसन को पूर्ण विश्वास हो गया कि मैं स्वप्न नहीं देखता, वास्तव में खलीफा बन गया हूँ।

फिर मंत्री ने उस से कहा कि महल के बाहर सेना पंक्तिबद्ध खड़ी है, आप उस का निरीक्षण करें। अबुल हसन सारे सरदारों के साथ बाहर गया और उस ने एक ऊँचे चबूतरे से फौज की सलामी ली। वह फिर दरबार में वापस हुआ और मंत्री ने प्रजा के आवेदन पत्र उस के सामने पेश किए। उनकी समझ में जैसा आया उसे वैसा ही फैसला किया। फिर मंत्री ने राज्य के समाचार सुनाने शुरू किए। अभी यह समाचार पूरे नहीं हुए थे कि अबुल हसन ने शहर के कोतवाल को बुलाया। वह आया तो उसे अपनी गली का नाम बता कर कहा, तुम सिपाहियों को ले कर वहाँ जाओ। वहाँ की मसजिद में एक बूढ़ा मुअज्जिन है। उसे तलवे ऊपर करके उन पर चार सौ डंडे लगवाओ और उस के चार साथियों को सौ कोड़े लगवाओ। फिर उन सबों को ऊँट पर पीछे की ओर मुँह करवा कर नगर भर में फिराओ ओर एलान कराते जाओ कि जो लोग अपने पड़ोसियों को दुख पहुँचाते हैं उनका यही परिणाम है। इस के बाद पाँचों आदमियों को नगर से निष्कासित करो। कोतवाल ने जा कर चुपके से खलीफा से पूछा तो उस ने इसकी अनुमति दे दी क्योंकि उसे अबुल हसन पहले से उन सभी की दुष्टों की बातें बता चुका था। कोतवाल यह आदेश पा कर अबुल हसन की गली में गया और दरबार में आ कर सूचना दी कि मैं ने खलीफा का आदेश पूरा कर दिया है। अबुल हसन ने मुस्कुरा कर उस से कहा, हम तुम्हारी मुस्तैदी से बहुत खुश

हुए। खलीफा परदे के पीछे बैठा हुआ यह सब देख रहा था और इस तमाशे का आनंद ले रहा था। इस के बाद अबुल हसन ने आज्ञा दी, खजाने से एक हजार अशर्फियों का एक तोड़ा ले जाया जाए और उसी गली में, जिस में यह मुअज्जिन था, रहनेवाले व्यक्ति अबुल हसन की माँ को दिया जाए।

वह बुढ़िया तो यह सब तमाशा जानती नहीं थी। वह धन पा कर बड़ी प्रसन्न हुई और सोचने लगी कि खलीफा कैसे मुझ पर कृपालु हो गया। अबुल हसन के बारे में उस ने सोच लिया था कि कहीं घूमने-फिरने निकल गया होगा।

जब अबुल हसन राजकाज से निवृत्त हुआ तो सारे दरबारी और सरदार उसे सलाम करके विदा हो गए और उस के पास केवल मंत्री और प्रबंधक ख्वाजासरा मसरूर रह गए। फिर मंत्री की सहायता से अबुल हसन सिंहासन से नीचे उतरा और उसी भवन की ओर जाने लगा जहाँ से वह दरबार में आया था। रास्ते में अबुल हसन को दिशा जाने की जरूरत पड़ी। मसरूर ने एक ओर उसे ले जा कर शाही शौचालय खोल दिया। वह न केवल अति स्वच्छ था अपितु उस में मखमल का फर्श था। अंदर जाने के पहले उस के एक अंगरक्षक ने एक सुनहरे काम का स्लीपर, जिसे पहन कर खलीफा दिशा को जाता था, दिया। अबुल हसन उस का उपयोग नहीं जानता था इसलिए उस ने जूते को अपनी ढीली आस्तीन में रख लिया। इस बात पर मंत्री और मसरूर दोनों को बड़ी हँसी आई किंतु खलीफा के भय से उसे दबा गए। मंत्री ने कहा, सरकार, आप को शायद याद नहीं रहा। यह जूता शौचालय में पहन कर जाने के लिए होता है। यह सुन कर उस ने जूता पहन लिया।

शौचालय से निकलने पर मसरूर उसे भोजन के कक्ष में ले गया। उस के पहुँचते ही वहाँ का द्वार खोल दिया गया और सेवकगण गानेवालियों को बुलाने चले गए। जब वह भोजन करने को तैयार हुआ तो गानेवालियों ने मधुर स्वर में गाना-बजाना शुरू कर दिया। अबुल हसन को यह सब देख कर अति प्रसन्नता हुई और वह सोचने लगा कि मैं कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहा। फिर उस ने कहा कि यह स्वप्न नहीं हो सकता, स्वप्न इतना लंबा नहीं होता। मुझे अभी तक यह वहम था कि मैं खलीफा नहीं हूँ, कोई और हूँ किंतु वास्तविकता यह है कि मैं ही खलीफा हूँ क्योंकि मैं ने दंड और दान के जो आदेश दिए सब पर कार्य हुआ।

उस स्थान पर ढेर सारे सोने-चाँदी के बरतन थे और सात सुंदर दासियाँ उस के समीप गाना-बजाना कर रही थीं। छत में अति सुंदर सात झाड़ लगे थे जिनमें कपूर की बनी मोमबत्तियाँ जल रही थीं। फर्श पर चमचमाते भोजन पात्र रखे थे और कोनों में सात सुनहरी अँगीठियों में भाँति-भाँति की सुगंधियाँ जलाई जा रही थीं और सुंदर वस्त्रीभूषण पहने सात दासियाँ उस की सेवा के लिए खड़ी थीं। उन के हाथों में मोरछल और हलके पंखे थे जिनके हत्थों में रत्न जड़े हुए थे। अबुल हसन यह सब देख कर खुश हो रहा था। फिर वह भोजन के आसन पर बैठा। उस के बैठते ही सातों दासियाँ मोरछल और पंखियाँ झलने लगीं। अबुल हसन उन्हें देख कर खुश हुआ। वह बोला, तुम लोगों में से हर एक बारी-बारी से मोरछल हिलाए और बाकी मेरे साथ बैठ कर खाएँ।

चुनांचे उस ने तीन को अपनी दाईं और तीन को बाईं ओर बिठा लिया। वे उस के आदेश पर बैठ तो गईं किंतु खलीफा के भय से उन्होंने भोजन को हाथ नहीं लगाया।

अबुल हसन ने देखा तो मुस्कुरा कर बोला, तुम लोग खाना क्यों नहीं खा रही हो? वे सब चुप रहीं। फिर उस ने उन के नाम पूछने शुरू किए। एक ने अपना नाम मेहताब, दूसरी ने हसीना, तीसरी ने माहलका, चौथी ने नजीफा, पाँचवीं ने हूरे-जिनाँ और सातवीं ने अपना नाम साइका बताया। अब उस ने हँस कर मोरछल झलनेवाली दासी से कहा कि तुम भी अपना नाम बताओ। उस ने कहा कि मेरा नाम माहे-मुनीर है। खलीफा यह सब तमाशे देख कर आनंद ले रहा था कि एक बाहरी अनाड़ी व्यक्ति खलीफा बन कर किस तरह व्यवहार करता है।

जब अबुल हसन ने भोजन से हाथ खींचा तो प्रतीक्षारत सेवकगण जल्दी से आगे आए। एक ने उस के हाथों के नीचे चिलमची रखी और दूसरे ने पानी धार डाल कर उस के हाथ धुलाए। भोजन से निवृत्त होने पर सेवकगण उसे कक्ष में ले गए जहाँ उसे मसनद पर बिठा दिया गया। इस कक्ष की सजावट भोजन कक्ष से अधिक थी। उस में छत से सात कंदीलें लटक रही थीं जिनमें लाल जड़े हुए थे और उन के अंदर कई-कई बत्तियाँ जल रही थीं। उस की दीवारों पर कुशल कारीगरों द्वारा बनाए गए प्राकृतिक दृश्यों के रंगीन चित्र अंकित थे। उन के नीचे सूखे मेवों और ताजे फलों की सात कश्तियाँ लगी थीं। वहाँ भी अति सुंदरी सात दासियाँ और वे परम सुंदरी थीं। अबुल हसन उन पर भी मोहित हो गया और सबसे उन के नाम पूछने लगा और अपने हाथ से उन्हें मेवे खिलाने लगा।

फिर मसरूर उसे तीसरे कमरे में ले गया। वहाँ पर सात समूह गानेवालियों के थे। यह गायिकाएँ पिछली सभी गायकाओं से अधिक कुशल थीं। उन के अलावा सात अति सुंदर दासियाँ सात पात्र लिए खड़ी थीं जिनमें तरह-तरह के शरबत भरे थे। वहाँ उस के जाते ही गाना बजाना शुरू हुआ। उस ने थोड़ा-थोड़ा शरबत चख कर दासियों से कहा कि तुम्हें जो शरबत पसंद हो वह पी लो। उस ने इन दासियों से भी नाम पूछे ओर उन के बताने पर खूब खुश हुआ। वह बहुत देर तक उनसे हास-परिहास भी करता रहा। खलीफा भी छुपे-छुपे उस की सारी हरकतें देखता रहा और मजे लेता रहा।

सूर्यास्त होने पर ख्वाजासरा मसरूर अबुल हसन को चौथे कमरे में ले गया। वह भी वैसा ही सजा हुआ था जैसे और कमरे थे, बल्कि उनसे भी कुछ अधिक ही सजा हुआ था। इसमें हीरों जड़े सात फानूस थे जिनमें कपूर की बनी मोमबत्तियाँ जल रहीं थी और यह बत्तियाँ इतनी अधिक थीं कि कमरे में दिन जैसी रोशनी हो रही थी। कमरे के बाहरी दालान में गायिकाओं और वादिकाओं के सात समूह बैठे हुए थे और अपनी-अपनी कला का वे सभी प्रदर्शन कर रही थीं। वास्तव में वे अपनी-अपनी कलाओं में इतनी पारंगत थीं कि संसार में शायद कोई कलाकार उनकी स्पर्धा करने के योग्य नहीं होगा।

उन गायिकाओं के अतिरिक्त बहुत-सी अति सुंदर दासियाँ, जिनमें से हर एक अपने रूप से पूर्ण चंद्र को लजानेवाली थीं, बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहने खड़ी थीं। उन के हाथों में सुनहरे पात्र थे। उनमें तरह-तरह के कुलचे, मिठाइयाँ और अन्य प्रकार की गजक थी जिसे मद्यपान के साथ प्रयोग किया जाता है। कमरे में एक ओर चाँदी की सात सुराहियाँ शराब की रखी थीं। उन के पास ही सात प्याले बिल्लौर पत्थर के बने हुए रखे थे। बगदाद नगर की यह रीति थी कि जितने बड़े आदमी थे वे दिन में मद्यपान से परहेज रखते थे बल्कि शराब का नाम भी अपनी जिह्वा पर नहीं लाते थे किंतु रात को घरों में छुप कर

मद्यपान जरूर करते थे। यही रीति खलीफा के महल में चलती थी।

अबुल हसन जब इस मद्यपान के कक्ष में आया तो उस ने देखा कि यहाँ की दासियाँ पिछले कक्षों की सभी दासियों से अधिक सुंदर और आकर्षक हैं। उस ने उन्हें देखा तो देखता ही रह गया। उस की आवाज भी गले में फँसने लगी क्योंकि वह उन के सौंदर्य से अत्यधिक अभिभूत हो गया था। उस का जी चाहने लगा कि उन सुंदरियों के साथ हास-परिहास करूँ। किंतु संगीत के स्वर इतने ऊँचे उठ रहे थे कि कुछ कहना-सुनना मुश्किल था। अतएव उस ने ताली बजाई जिसका अर्थ था कि संगीत बंद हो जाए। अतएव संगीत बंद कर दिया गया। अबुल हसन ने अपने पास खड़ी हुई एक दासी को हाथ पकड़ कर अपने समीप बिठाया और पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है। उस ने कहा कि मेरा नाम सिलके-गुहर (मोती माला) है। अबुल हसन बोला, जिसने तुम्हारा नाम रखा है उस ने नाम रखने में कंजूसी की है। वास्तविकता यह है कि तुम्हारी दंत-पंक्ति हीरे की माला की तरह चमकती है। मैं सोच कर कोई इस से अच्छा तुम्हारा नाम रखूँगा। अब तुम अपने कोमल हाथों से भर कर मुझे मद्य का एक प्याला दो ताकि मैं तुम्हारे मुख की ओर देखता हुआ उसे पियूँ।

सिल्के-गुहर ने तुरंत ही स्वच्छ और सुगंधित मदिरा से भर कर एक प्याला अबुल हसन को दिया जिसे उस ने तुरंत ही खाली कर दिया। फिर अबुल हसन ने उस से कहा कि एक प्याला शराब तुम भी पियो। सिल्के-गुहर ने उस के आदेश पर एक प्याला भर कर पी लिया। शराब पी कर सिल्के-गुहर ने एक अति नवीन राग बाँसुरी पर गाया। इस राग को सुन कर अबुल हसन झूमने लगा।

इस के बाद अबुल हसन ने अपने हाथ से उसे एक फल खिलाया। और दूसरी दासी को अपने पास बिठा कर उस से उस का नाम पूछा। उस ने कहा कि मेरा नाम माहजबीं (चंद्रमा सदृश माथेवाली) है। अबुल हसन बोला, तुम्हारा भी नाम इस से अधिक सुंदर होना चाहिए था क्योंकि तुम्हारी आँखें चंद्रमा से भी अधिक प्रकाशवान हैं। उस ने उस के हाथ से भी शराब पी और उसे पीने को कहा और उसे भी फल खिलाया। इसी प्रकार उस ने सातों दासियों के हाथ से मदिरा पी और पिलाई और उसे काफी नशा हो गया और उस की आँखें बंद होने लगीं।

अब परदे के पीछे छुपे हुए खलीफा ने सिल्के-गुहर नाम की दासी को इशारा किया। दासी ने एक प्याला शराब का भरा और उस में बेहोशी की दवा डाल कर अबुल हसन के सामने लाई और बोली, हुजूर, अब इस रात का आखिरी जाम मेरे हाथ से पिएँ। इस के बाद मैं एक राग सुनाऊँगी। वह राग मैं ने आज सुबह ही बनाया है और अभी तक किसी और ने उसे नहीं सुना है। अबुल हसन ने एक ही साँस में सारा प्याला पी लिया। दासी ने बाँसुरी ले कर वह राग बजाया जिसे उस ने नवीनतम राग कहा था। अबुल हसन ने उसे पसंद किया और दुबारा सुनाने को कहा। जब दासी ने दुबारा वह राग सुनाया तो अबुल हसन ने चाहा कि उस की प्रशंसा करे। किंतु उस पर बेहोशी की दवा का पूरा असर हो गया इसलिए उस के मुँह से आवाज न निकल सकी और वह मुँह खोल कर रह गया। उस की आँखें बंद हो गईं और उस के हाथ-पाँव ऐसे ढीले हो गए जैसे किसी गश खाए हुए आदमी के हो जाते हैं। उस के हाथ से मद्यपान गिरने लगा जिसे एक दासी ने दौड़ कर सँभाल लिया।

अबुल हसन बेहोश हो गया तो खलीफा परदे के पीछे से निकल आया। उस ने अबुल हसन के शाही वस्त्र उतरवाए और उस के अपने कपड़े उसे पहनवा दिए। फिर उस ने उसी विशालकाय दास को आदेश दिया कि इसे इस के घर में लिटा आ और वापसी में द्वार खुला छोड़ देना। वह उसे उठा कर महल के चोर दरवाजे से निकला और जैसा खलीफा ने कहा था वैसा ही किया। खलीफा ने वहाँ उपस्थित लोगों को कहा, यह आदमी भगवान से प्रार्थी था कि एक दिन के लिए खलीफा बन जाऊँ तो गली के मुअज्जिन और उस के साथियों को दंड दूँ। मैं ने इसे यह अवसर दे दिया।

सुबह बेहोशी दूर होने पर जब अबुल हसन की आँख खुली तो से आश्चर्य हुआ कि मैं इस साधारण घर में किस तरह आ गया। वह महल की दासियों सिल्के-गुहर, मैहताब आदि को आवाज देने लगा कि तुम कहाँ मर गई हो, मेरी सेवा के लिए क्यों नहीं आतीं। जब कोई न बोला तो वह बड़ी ऊँची आवाज में उन्हें बुलाने लगा और नाराज हो कर अनाप-शनाप बकने लगा। उस की माँ यह चीख-पुकार सुन कर दौड़ी आई और उस से कहने लगी, बेटे, तुझे क्या हो गया है? तू किस पर बिगड़ रहा है?

अबुल हसन ने बड़े घमंड से उस की तरफ देखा और कहा, श्रीमती जी, आप किसे अपना बेटा कह रही हैं? माँ ने कहा, तू ही मेरा बेटा अबुल हसन है, और किस आदमी को मैं बेटा कहूँगी। यह अजीब बात है कि चौबीस घंटे के अंदर तू मुझे भूल गया। अबुल हसन ने सहूलियत से कहा, देवी जी, तुम्हें कुछ भ्रम हुआ है। मैं अबुल हसन नहीं हूँ। मैं खलीफा हूँ। उस की माँ ने कहा, हाय हाय बेटे, तुम कैसी बातें कर रहे हो। तुम अबुल हसन नहीं हो? अबुल हसन बोला, तुम बकवास किए ही चली जाती हो। मैं खलीफा हूँ और तुम मुझे अपना बेटा समझती हो।

बुढ़िया ने कहा, धीरे बोलो बेटे, इतनी बड़ी बात मुँह से नहीं निकालते। बगदाद के लोग तुम्हें पागल समझेंगे और तुम्हारी पिटाई कर देंगे। अबुल हसन ने कहा, खूब बातें करती हो तुम। पहले मुझे अपना बेटा बनाया, अब कह रही हो कि मैं पागल हूँ। मैं तुम से कहता हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ। मैं अपने पूरे होश-हवास में हूँ। मैं खलीफा हूँ जिसे सब लोग अपने भूलोक का स्वामी कहते हैं और जिसके अधीन दुनिया के सभी राजा-महाराजा हैं। माँ बोली, हाय भगवान, मै क्या करूँ तुम्हारे सिर पर कोई भूत प्रेत सवार हो गया है या खुद शैतान तुम्हें बहका रहा है। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। देखो, तुम अबुल हसन हो। तुम मेरी कोख से इसी घर में पैदा हुए हो। यहाँ की हर एक चीज को देखो और पहचानो। इसी घर पर तुम्हारा राज है, सारी दुनिया पर नहीं। खलीफा का पद तुम्हें न मिला है न मिल सकता है।

अबुल हसन कुछ देर माथे पर हाथ धर कर सोचता रहा जैसे कि कोई भूली हुई बात याद कर रहा हो। फिर धीरे-धीरे बडबड़ाने लगा, हो सकता है कि इस बुढ़िया की बात ठीक हो, यही मेरी माता हो और मैं खलीफा न हो कर अबुल हसन हूँ। फिर चौंक कर कहने लगा, नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। न जाने मेरे मन में यह तुच्छ विचार कैसे आ गया कि मैं खलीफा नहीं बल्कि अबुल हूँ। बुढ़िया ने सोचा कि शायद इस ने कोई दुःस्वप्न देखा है जिस से अभी तक अच्छी तरह जाग नहीं सका है। उस ने प्यार से पूछा, बेटे, क्या तुमने

रात को कोई स्वप्न देखा है जो ऐसी बातें कर रहे हो? तुम्हें खलीफा बनने की खब्त क्यों है?

अबुल हसन ने डाँट कर कहा, बुढ़िया, जबान सँभाल कर बोल। क्या तेरा दिमाग फिर गया है कि खलीफा को अपना बेटा बना रही है और बकवास करती ही जा रही है? इस के अलावा खलीफा की शान में गुस्ताखी भी करती जा रही है। बुढ़िया ने दुखी हो कर कहा, बेटा, भगवान के लिए ऐसी बातें न करो। क्या तुमने गली के मुअज्जिन और उस के साथियों का हाल नहीं सुना कि उन्हें कैसी कड़ी सजा दी गई। मुअज्जिन को चार सौ कोड़े लगे और उस के चार साथियों को सौ-सौ और फिर उन सबों को पीछे की ओर मुँह करके ऊँट पर बिठा कर शहर में घुमाया गया और फिर शहर से निकाल दिया गया। कहीं ऐसा न हो कि खलीफा के पास तुम्हारी यह बातें कोई पहुँचा दे और तुम्हारा भी वही हाल हो।

अबुल हसन ने कहा, तुम्हारी इस बात से और भी साबित हो गया कि मैं खलीफा हूँ। मैं तुम्हारा पुत्र नहीं हूँ न हो सकता हूँ। कल दिन में मैं ने ही आज्ञा दी थी कि मुअज्जिन और उस के साथियों को वही दंड दिया जाए जिसका तुमने अभी उल्लेख किया है। कोतवाल ने मेरे आदेश ही पर उन पाँचों दुष्टों को दंड दिया था और मुझे आ कर बताया था कि सजा दे दी गई।

अबुल हसन की माँ को बड़ी चिंता हुई कि इसे क्या हो गया कि मुअज्जिन की सजा की बात सुन कर यह और जोरों से कहने लगा कि मैं खलीफा हूँ। उस ने फिर कहा, बेटा, सोच-समझ कर बात करो, तुम्हारी बातों को अगर कोई सुनेगा तो तुम्हें क्या कहेगा। अबुल हसन को अब बड़ा क्रोध चढ़ा, वह बोला, देख मक्कार बुढ़िया, मैं ने तेरी बदतमीजी बहुत सह ली। अब अपनी जबान बंद कर ले। वरना मैं उठ कर तुझे इतना मारूँगा कि सारी जिंदगी याद करेगी। मैं खलीफा हूँ और खलीफा रहूँगा। अब तेरी जबान से एक बार भी नहीं निकलना चाहिए कि मैं तेरा बेटा हूँ।

उस की माँ यह देख कर रोने लगी कि लड़के का पागलपन बढ़ता ही जा रहा है। अबुल हसन को यह देख कर और गुस्सा आया। वह अपने बिस्तर से उठा और उस ने हाथों में एक छड़ी ले ली और बुढ़िया से घुड़क कर कहने लगा, बोल, अब क्या कहती है? मैं कौन हूँ, खलीफा या तेरा बेटा? उस ने कातर दृष्टि से देख कर कहा, तुम मेरे बेटे हो, खलीफा कैसे हो जाओगे? तुम अबुल हसन हो। तुम्हें मैं ने जन्म दिया है और दूध पिलाया है। खलीफा के पद पर तो सिर्फ हारूँ रशीद हैं जिनकी हम दोनों और दूसरे लोग प्रजा हैं। वे सारे राजाओं के सर्वेसर्वा हैं। अभी कल ही उन्होंने कृपा करके मेरे पास एक हजार अशर्फियों का तोड़ा भिजवाया था।

अशर्फियों के नाम पर अबुल हसन को खलीफा होने का और भी निश्चय हो गया। उस ने अपनी माँ से कहा, धूर्त स्त्री, तू बड़ी कृतघ्न है। कल मैं ने ही अपने मंत्री जाफर के हाथ तेरे पास अशर्फियों का तोड़ा भिजवाया और आज तू बेटा बना कर मुझी पर कब्जा करना

चाहती है? तेरी इस धृष्टता का दंड तुझे मिलना चाहिए। यह कह कर उस ने माँ का हाथ पकड़ा और डपट कर पूछा, मैं कौन हूँ? उस ने कहा, मेरा बेटा। अबुल हसन ने उसे एक छड़ी जमाई। वह इसी तरह बार-बार पूछता और जब बुढ़िया उसे बेटा बताती तो उसे छड़ी मारता। बुढ़िया के चिल्लाने से पड़ोसी घर में आ गए और उस के हाथ से छड़ी छीन कर कहने लगे, तुम्हें क्या हो गया है, अबुल हसन? कोई अपनी माँ को ऐसे मारता है?

अबुल हसन ने लाल आँखें करके उन्हें देखा और कहा, तुम क्या बक रहे हो? अबुल हसन कौन है? पड़ोसी यह सुन कर परेशान हुए और बोले, तुम्हीं हो अबुल हसन, और कौन होगा? हम तुम्हारे पड़ोसी हैं। यह तुम्हारा घर है और यह तुम्हें जननेवाली तुम्हारी माँ है। अबुल हसन चीखा, बकवास बंद करो तुम लोग। मैं इस दुष्ट स्त्री को जानता भी नहीं। मैं तुम्हें भी नहीं जानता। मैं खलीफा हूँ। खलीफा के भी कहीं पड़ोसी होते हैं?

पड़ोसियों ने समझ लिया कि अब यह पागल हो गया है और इस से अधिक बातचीत की तो यह हम से भी मारपीट करेगा। उन में से एक उस क्षेत्र के दारोगा को जानता था और दौड़ कर उसे बुला लाया। अबुल हसन ने दारोगा से डाँट-डपट की तो उस ने उसे दो-चार चाबुक जड़ दिए और जब अबुल हसन भागने लगा तो उसे सिपाहियों ने पकड़ लिया। पुलिसवाले उस के हाथों में हथकड़ी और गले में जंजीर डाल कर ले चले। रास्ते में सिपाही उसे घूँसों और थप्पड़ों से मारते जाते थे जैसे पागल आदमियों को काबू में रखने के लिए किया जाता है। बेचारा अबुल हसन हैरान था कि मेरा मस्तिष्क तो ठीक है, यह लोग मुझ से उन्मत्तों जैसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं। फिर भी उस की समझ में कुछ न आया।

दारोगा ने उसे हवालात में बंद कर दिया। रोजाना चालीस-पचास कोड़े उस पर पड़ते। तीन सप्ताह तक उसे इसी हालत में रखा गया। दारोगा रोज उसे पूछता कि तू कौन है और वह जब स्वयं को खलीफा बताता तो उस पर कोड़े पड़ते। उस की माँ रोज हवालात में जा कर देखती और उस की दशा पर आँसू बहाती। अबुल हसन दिनोंदिन सूखता जा रहा था। रात-दिन उसे मार और अपमान से शारीरिक और मानसिक कष्ट रहता था। उस की पीठ और बाजुओं पर मार के कारण काले-नीले निशान पड़ गए थे और जगह-जगह से खाल भी उधड़ गई थी। वह बराबर रोता रहता था। लेकिन उस की माँ की हिम्मत उस से बात करने की नहीं होती थी कि कहीं उस का पागलपन बढ़ न जाए।

जब अबुल हसन ने चुप रहना शुरू किया तो उस की माँ ने सोचा कि इस से बात करूँ, शायद वह कुछ सँभला हो। उधर वह बराबर सोचता था कि मैं किस बात को सपना समझूँ और किसे सच। वह सोचने लगा था कि महल और दरबार की सारी बातें स्वप्न ही होंगी। स्वप्न की बात न होती तो इतने दिन मेरी यह दुर्दशा क्यों होती और मेरे हजार आवाज देने पर भी मेरी दासियाँ और दास क्यों न आते। साथ ही वह यह भी सोचता कि अगर वह सब सचमुच सपना था तो मेरी आज्ञा से मंत्री ने मेरी माँ को अशर्फियाँ क्यों दीं और कोतवाल ने मुअज्जिन को और उस के साथियों को दंड क्यों दिया। वह बहुत सोचता कि असलियत क्या है। उस की समझ में कुछ नहीं आता था किंतु इस द्विविधा का परिणाम यह हुआ कि उस ने स्वयं को खलीफा कहना छोड़ दिया।

ऐसे ही जब एक दिन उस की माँ उसे देखने आई तो उस ने माँ को बड़े विनयपूर्वक प्रणाम किया। माँ यह देख कर खुश हुई और बोली, बेटा, अब तुम्हारा क्या हाल है? वह निराधार विचार जिसने तुम्हारी यह दशा करवाई अब भी तुम्हारे मन में है या नहीं? अबुल हसन ने कहा, अम्मा, जो कुछ अपराध और जो कुछ धृष्टता मुझ से हुई उसे क्षमा कर दो। पड़ोसियों से जो दुर्व्यवहार मैं ने किया उस के लिए उनसे क्षमा चाहता हूँ और यह बात उन्हें बता देना। मैं खलीफा बिल्कुल नहीं हूँ। मैं अबुल हसन हूँ। तुम मेरी माँ हो और मैं तुम्हारा बेटा हूँ।

उस की माँ यह सुन कर प्रसन्न हुई। उस ने समझा कि बेटे का दिमाग ठीक हो गया है। वह कहने लगी, मेरे विचार से उस परदेशी के कारण यह सब हुआ जिसे तुम आखिरी बार घर लाए थे। वह जाते समय दरवाजा खुला छोड़ गया था जिस से शैतान ने आ कर तुम्हें बहका दिया। अबुल हसन ने कहा, मैं तो समझता था कि मोसिल का वह व्यापारी द्वार बंद करके गया है किंतु तुमने दरवाजा खुला देखा तो निश्चय ही शैतान ने आ कर मुझे बहका दिया। अबुल हसन की माँ ने दारोगा से कहा कि मेरा बेटा ठीक हो गया है तो उस ने उसे छोड़ दिया।

अब फिर अबुल हसन पहले की तरह कारोबार करने और रोज शाम को एक परदेशी का आदर-सत्कार करके सुबह उसे विदा देने लगा। एक दिन वह पुल पर नए मेहमान की खोज में बैठा था कि खलीफा फिर मोसिल के व्यापारी के वेश में उसी दास के साथ वहाँ आया। अबुल हसन उसे दूर से देख कर जान गया कि यह वही मोसिल का व्यापारी है जिसके कारण मुझ पर इतनी मुसीबतें पड़ीं। यही दरवाजा खुला छोड़ गया था जिस से शैतान ने आ कर मुझे बहका दिया। वह डर कर भगवान से प्रार्थना करने लगा कि इस बार इसकी लाई हुई मुसीबत से मुझे बचा। उस के पास आने पर अबुल हसन उस की ओर से मुँह फेर कर नदी की लहरों की ओर देखने लगा।

खलीफा उसे खोज ही रहा था और इसलिए पुल पर आया था। खलीफा का इरादा था कि एक बार फिर उसे महल में ले जा कर तमाशा देखे। उसे जासूसों से यह भी मालूम हो गया था कि तीन सप्ताह तक अबुल हसन को हवालात में मार पड़ी है और उस के कष्टों का यथोचित प्रतिकार भी करना चाहता था। इसलिए खलीफा जा कर उस के पास खड़ा हुआ और बोला, सलाम अलैकुम। अबुल हसन ने अभद्र हो कर कहा, भाड़ में जाए तुम्हारा सलाम अलैकुम। तुम अपनी राह लगो। क्यों मुझे परेशान कर रहे हो?

खलीफा ने कहा, तुमने मुझे नहीं पहचाना? महीना भर हुआ कि तुमने अपने घर ले जा कर मेरी अभ्यर्थना की थी। अबुल हसन ने कहा, मुझे कुछ भी याद नहीं कि कब तुम मेरे घर आए थे। मैं तुम्हें नहीं जानता। अपनी राह चले जाओ। खलीफा ने समझा कि शायद यह इसलिए ऐसा व्यवहार कर रहा है कि एक व्यक्ति को एक ही बार ले जाने की प्रतिज्ञा कर चुका है। खलीफा ने कहा, आश्चर्य है कि तुम मुझे इतनी जल्दी भूल गए। ऐसा मालूम होता है कि तुम पर इस बीच कुछ ऐसी विपत्ति पड़ी है कि तुम बहुत उद्विग्न हो गए हो। अगर तुम मुझ से अपनी मुश्किल कहो तो मैं उस में तुम्हारी सहायता का प्रयत्न करूँ।

अबुल हसन ने कहा, क्या सहायता करोगे?

खलीफा ने आगे बढ़ कर उसे गले लगा लिया और कहा, भाई, अगर मेरी वजह से तुम्हें कोई कष्ट हुआ तो मैं तुम से उस के लिए क्षमा चाहता हूँ। तुम्हें शिकायत है तो आज रात मैं तुम्हारे घर जरूर ठहरूँगा और तुम्हारी बात सुन कर तुम्हारी शिकायत दूर कर दूँगा। तुम्हारे घर का भोजन और मदिरा मुझे अब तक याद है और तुम्हारा सद्व्यवहार भी। इसलिए आज तो तुम्हें मेरा आतिथ्य सत्कार करना ही होगा। अबुल हसन ने कहा, भाई, मैं ने पहले भी कहा और बार-बार कहूँगा कि तुम चले जाओ। तुम अपना यह मायाजाल कहीं और फैलाओ। मैं ने एक बार तुम्हें अपने घर ले जा कर बहुत दुख झेले हें, अब और सहने की मुझ में शक्ति नहीं। भगवान के लिए मेरा पीछा छोड़ो। खलीफा ने उसे दोबारा गले लगाया और कहा, बड़े अफसोस की बात है कि मुझ से नाराज हुए चले जाते हो और इसका कारण भी नहीं बताते। तुम मुझे बताओ तो कि तुम पर मेरे कारण कौन-सी मुसीबत पड़ी। मैं तुम्हें उस का पूरा बदला दूँगा।

अबुल हसन बेचारा खलीफा की बातों में आ गया। उस ने खलीफा को पास बिठा लिया। उस ने विस्तारपूर्वक राजमहल का हाल कहा। खलीफा तो यह सब कुछ खुद ही करा ओर अपनी आँखों से देख चुका था। मजे ले कर सब सुनता रहा। अबुल हसन ने वह सारा वर्णन करके कहा, यह सपना मेरे मन में ऐसा समा गया है कि मैं खुद को खलीफा समझने लगा और इस के कारण लोगों से मुझे घोर अपमान सहना पड़ा और मैं ने बड़ी मार खाई। उस से भी अधिक खेद मुझे इस बात का है कि मैं ने उस मूर्खता में अपनी माँ पर हाथ उठाया। मैं ने उसे गालियाँ भी दीं और पड़ोसियों को भी भला-बुरा कहा। और यह सब इसलिए हुआ कि तुमने मेरी बात नहीं मानी और जाते समय द्वार बंद नहीं किया जिस से शैतान ने मुझे बहका दिया।

खलीफा को तो सब मालूम था। अबुल हसन की बातें सुन कर जोरों से हँसने लगा। अबुल हसन और बिगड़ा और बोला, मैं ने तो समझा था कि तुम्हें अपने काम पर पछतावा होगा लेकिन तुम हँस रहे हो। तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं है। यह कह कर उस ने अपना कुरता उतार दिया। खलीफा ने काले निशान देखे तो बड़ी सहानुभूति प्रकट की और एक बार फिर उसे गले लगा कर कहा, भाई, मुझे तुम्हारी बात पर पूरा विश्वास हुआ। तुम्हारी दुर्दशा पर मुझे बड़ा खेद हे। मैं अपनी गलती मानता हूँ और उस का बदला भी दूँगा। लेकिन आज मैं तुम्हारा मेहमान अवश्य बनूँगा।

यद्यपि अबुल हसन ने किसी व्यक्ति की दोबारा अभ्यर्थना न करने का प्रण किया था और इस आदमी के कारण उस पर घोर कष्ट भी पड़ा था तथापि वह इस प्रकार उस के पीछे पड़ा कि अबुल हसन इनकार न कर सका और उसे ले कर अपने घर में आया। रास्ते में खलीफा ने कहा, तुम मुझ पर विश्वास रखो कि हर हाल में तुम्हारी भलाई की बात करूँगा। मैं तुम्हारा हितचिंतक हूँ और तुम्हें मुझ पर किसी तरह का संदेह नहीं करना चाहिए। अबुल हसन ने कहा, चलो, मान लिया। किंतु आज के बाद तुम कभी मेरे यहाँ आतिथ्य सत्कार की आशा न रखना। तुम्हारे कारण जो दुख मुझ पर पड़े हैं उन्हें भूल पाना

मेरे लिए संभव नहीं है। खलीफा ने मुस्कुरा कर कहा, भाई, बड़े अड़ियल आदमी हो। मैं इतनी देर से तुम्हारी दोस्ती का दम भर रहा हूँ और तुम्हें विश्वास नहीं होता। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिला कर ही रहूँगा।

वे लोग बातें करते-करते अबुल हसन के घर पहुँचे। उस की माँ ने रोज की तरह भोजन का प्रबंध कर रखा था। खाने के बाद अबुल हसन की माँ ने फल, शराब आदि भेजी। यह करके वह अपनी कोठरी में जा कर सो रही। इन दोनों ने खूब शराब पी। जब अबुल हसन को नशा चढ़ गया तो खलीफा ने उस से पूछा, तुम्हें किसी से प्रेम हुआ है? वह बोला, न मुझे प्रेम हुआ है न मेरी विवाह की इच्छा है। मैं केवल यह चाहता हूँ कि दोस्तों के साथ अच्छी शराब पियूँ और गप्पे लड़ाऊँ। हाँ, एक सुंदरी को जरूर चाहता हूँ जिसने उस सपने में मेरे साथ बैठ कर मद्यपान किया था। किंतु वैसी स्त्री राजमहल ही में मिल सकती है, और फिर यह सब स्वप्न ही की तो बातें हैं। कौन सचमुच की ऐसी स्त्री है।

अब उस ने शराब का प्याला भर कर खलीफा को दिया, आज रात का अंतिम प्याला मेरे हाथ से पियो। खलीफा उसे पी गया फिर उस ने वह रस्मी तौर पर अपनी ओर से अंतिम प्याला अबुल हसन को दिया, लेकिन फिर से उस में बेहोशी की दवा डाल दी और प्याला उसे दे कर कहा, लो, यह प्याला पियो और सपनेवाली महलों की सुंदरी का ध्यान धर कर सो जाओ। अबुल हसन ने मुस्कुरा कर प्याला लिया और पी गया और कुछ क्षणों में बेहोश हो कर गिर गया। खलीफा ने अपने बलिष्ठ दास को संकेत किया और वह अबुल हसन को कंधे पर डाल कर ले चला। खलीफा भी बाद में निकला और उस ने अब की बार द्वार बंद कर दिया। महल में पहुँच कर खलीफा ने दास से कहा कि इसे उसी कक्ष में ले जा कर लिटा दे जहाँ से उठा कर इस के घर ले गया था। फिर ख्वाजासराओं (जनखों) से कहा कि इस के वस्त्र उतार कर इसे मेरे कपड़े पहना दो। उन्होंने उस की आज्ञा का पालन किया।

खलीफा रात को एक कमरे में जा कर सो गया और सुबह होते ही अबुल हसन के कमरे के पास छुप कर बैठ गया कि उस का तमाशा देख सके। जब अबुल हसन पर से बेहोशी की दवा का असर हटा और उस की नींद खुली तो वह फिर भौचक्का रह गया। उस ने देखा कि वह न केवल अपना पुराना राजमहलवाला सपना देख रहा है बल्कि वहाँ की हर चीज बिल्कुल वैसी ही रखी है जैसी उस ने पहले देखी थी। यहाँ तक कि सोने का उगालदान भी वही रक्खा था। उस की आँख खुलते ही वहाँ उपस्थित गायिकाओं ने सुर मिलाए और साजों पर गाना शुरू किया। विशेषतः नफीरी की आवाज पर तो अबुल हसन झूम उठा। उस ने यह भी देखा कि उस के चारों ओर ख्वाजासरा लोग खड़े हैं और उस के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उस ने दालान पर हर तरफ नजर दौड़ाई और पहचान गया कि पिछली बार भी सपने में यही दालान देखी थी। फिर खलीफा के इशारे पर गाना बंद हुआ क्यों कि वह अबुल हसन की बातें सुनना और उस की हरकतें देखना चाहता था।

अबुल हसन ने स्वप्न से जागने के लिए दाँत से अपनी उँगली काटी और कहने लगा, अजीब मुसीबत है। मैं वही सपना फिर देख रहा हूँ जो मैं ने पिछली बार देखा था और

जिसके कारण मुझ पर हवालात में इतनी मार पड़ी। कल मैं ने जिसे मेहमान बनाया था उस ने फिर बदमाशी की। उसी के कारण पिछली बार मैं ने वह सपना देखा जिस से महीना भर मेरी दुर्दशा होती रही। इस बार मैं ने ताकीद की थी कि दरवाजा बंद कर जाना किंतु वह दुष्ट फिर दरवाजा खोल कर चला गया जिस से मुझे शैतान ने बहका दिया मुझे फिर ऐसा सपना दिखाई दे रहा है जिस से मैं स्वयं को खलीफा समझूँ और दोबारा अपमान सहन करूँ। हे भगवान, मुझे शैतान के जाल से बचा।

यह कह कर उस ने आँखें बंद कर लीं और बहुत देर तक लेटा रहा ताकि सपना समाप्त हो जाए। किंतु जब आँखें खोलीं तो सभी वस्तुएँ यथावत देखीं। उस ने फिर आँखें बंद कर लीं और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि मुझे शैतान की माया से बचा। वह शायद इसी तरह पड़ा रहता किंतु खलीफा के इशारे से उसे दास-दासियों ने चैन न लेने दिया। आरामे-जाँ नाम की एक सुंदर दासी जिसे पहले भी अबुल हसन ने बहुत पसंद किया था, उस के निकट आ कर बैठ गई और बोली, ऐ सारी दुनिया के मालिक, दासी का अपराध क्षमा हो। मेरी प्रार्थना है कि आप निद्रा त्याग करें। यह समय सोने के लिए नहीं है। सूरज निकल आया है।

अबुल हसन ने डाँट कर कहा, भाग जा शैतान यहाँ से। दासी का रूप धर कर आया है और मुझे खलीफा कह कर बहका रहा है? आरामे-जाँ बोली, यह क्या फरमा रहे हैं सरकार? आप खलीफा नहीं तो कौन हैं? आप ही सारे संसार के मुसलमानों एवं अन्य धर्मावलंबियों के स्वामी हैं और मैं आप की एक तुच्छ दासी हूँ। लगता है आप ने रात कोई दुःस्वप्न देखा है। आप आँखें खोलें, आप का भ्रम दूर हो जाएगा। रात को आप बहुत देर तक सोए और हमने आप के शयन में विघ्न डालना उचित न समझा, इसी बीच आप ने सपना देखा होगा।

अबुल हसन ने आँख खोली तो सारी दासियों को फिर मौजूद पाया। इस बार वे उस के अति निकट आ खड़ी हुईं। फिर आरामे-जाँ कहने लगी, हुजूर, यह समय आप के जागने का है, देखिए उजाला हो गया है। अबुल हसन ने आँखें मल कर कहा, तुम मुझे खलीफा क्यों कह रही हो? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं खलीफा नहीं हूँ। मैं अबुल हसन हूँ। आरामे-जाँ बोली, हम लोग किसी अबुल हसन को नहीं जानते। हम आप को जानते हैं जो हमारे स्वामी और खलीफा हैं। हाँ, आप यह न कहें कि मैं खलीफा नहीं हूँ। अबुल हसन ने चारों ओर नजर दौड़ाई और बोला, हे भगवान, इस सपने की तो सभी चीजें जैसी की तैसी दिखाई दे रही हैं। क्या फिर तेरी यही मरजी है कि यह स्वप्न मेरा दिमाग फेर दे और मैं पहले जैसे दुख उठाऊँ और मार खाऊँ?

खलीफा को यह सब सुन कर बड़ी हँसी आ रही थी किंतु उस ने हँसी पर काबू रखा। अबुल हसन उपर्युक्त बातें कह कर फिर आँखें बंद करके लेट गया। आरामे-जाँ फिर बोली, सरकार, इस दासी ने दो बार आप से निवेदन किया कि आप शैय्या को छोड़ें। समय गुजर रहा है। सारे दरबारी और सरदार आप के स्वागत के लिए खड़े हैं। आप ही का तो आदेश है कि आप को सूर्योदय के पहले जगा दिया जाए। फिर उस के इशारे से दोनों और दो-दो

दासियों ने उस के बाजू पकड़ कर उसे उठा दिया और उसे ला कर मसनद पर बिठा दिया और स्वयं उस के सामने आकर्षक नृत्य और गान करने लगीं। साथ ही चारों ओर से कुशल वादकों ने बाजे बजाने शुरू कर दिए।

अबुल हसन यह सब देख कर सोचने लगा कि कहीं सचमुच तो ऐसा नहीं कि मैं वास्तविक खलीफा हूँ और मैं ने हवालात में बंद होने और मार खाने का सपना ही देखा हो। वह इस बात को पूछना चाहता था किंतु गाने-बजाने का बहुत शोर हो रहा था। उस ने हाथ के इशारे से नाच-गाना रोका और अपने आगे नाचती हुई दासी महलका को पास बुला कर पूछा, सच बता कि मैं कौन हूँ।

वह बोली, आप बार-बार हमारी परीक्षा क्यों ले रहे हैं? आप निःसंदेह खलीफा हैं। आप कुछ अधिक सोए रहे और आप ने कोई सपना देखा है। कल ही आप ने पाँच आदमियों को सजा दिलाई और एक वृद्धा के पास अशर्फियाँ भेजीं। फिर आप भोजन कक्ष में गए और अमुक-अमुक वस्तु का स्वाद लिया। फिर आप ने फल खाए और हम लोगों के हाथों से मद्य पान किया और हमारा गाना सुनते हुए अपने पलंग पर सो गए। सुबह आप बहुत देर से उठे हैं। अन्य दासियों और ख्वाजासराओं ने भी महलका की बात का समर्थन किया और सब के सब कहने लगे, अब आप उठें। नमाज का समय अभी नहीं बीता है। नमाज पढ़ें और दरबार करें।

अबुल हसन ने दासियों से कहा, तुम सब झूठी और मक्कार हो। तुम्हें भगवान ने रूप और कलाएँ तो प्रदान की हैं किंतु तुम में झूठ बोलने की आदत भी डाल दी है। तुम मुझे फिर बहकाने आई हो? पहले भी मैं ने ऐसा ही सपना देखा था। उस का असर ऐसा हुआ कि मेरा बड़ा अपमान हुआ और मुझे रोज पचास कोड़े कई सप्ताह तक खाने पड़े। मेरी पीठ की खाल उधड़ गई और मेरी बाँहों और पीठ पर मार के काले-नीले निशान पड़ गए। महलका ने जवाब दिया, सरकार, यह आप का भ्रम है। आप को सजा देनेवाला और मारनेवाला दुनिया में कहाँ है। आप ने स्वप्न मात्र देखा है। आप कहीं बाहर गए ही नहीं। रात भर इस कक्ष में सोते रहे हैं। हाँ, आज सुबह आप की आँखें देर में जरूर खुली हैं। अबुल हसन ने सिर थाम कर कहा, शायद तू ठीक कहती है। जब मैं इस महल से बाहर ही नहीं निकला तो यह सब सपना ही होगा।

किंतु उस का संदेह नहीं गया। वह सोचता रहा कि वास्तविकता क्या है, मैं खलीफा हूँ या अबुल हसन? मैं मार खाने को सपना समझूँ या इस सब को जो मैं देख रहा हूँ? फिर उस ने ऊपर के कपड़े उतारे और अपनी बाँहों पर पड़े मार के निशान देखे। उस ने दासियों को यह निशान दिखा कर कहा, धूर्तो, देखो। कहीं सोए हुए आदमी के बदन पर ऐसे मार के निशान पड़ते हैं जिन्हें दबाने से दर्द हो। अब तो यह निश्चित हो गया कि मैं खलीफा अलीफा नहीं, केवल गरीब अबुल हसन हूँ। कोई विश्वास नहीं कर सकता कि किसी पर सपने में मार पड़े और उस के शरीर पर मार के वास्तविक निशान पड़ जाएँ। फिर भी उसे वर्तमान दृश्यों के स्वप्न होने को सिद्ध करना था। उस ने एक दासी से कहा, तू मेरी उँगली में काट खा। खलीफा के इशारे से दासी ने उस की उँगली में जोर से दाँत गड़ा दिए। अबुल हसन ने

चीख कर उँगली खींची। इस के साथ ही जोर से बाजे बजने लगे।

अबुल हसन के मस्तिष्क ने इतने सोच-विचार और इतने उलझन के बाद काम करना बंद कर दिया था। उस ने कुर्ता भी नहीं पहना और जब दासियों ने गाने के साथ नाच शुरू कर दिया तो वह उठ कर सिर्फ पजामा पहने हुए उन के साथ नाचने लगा। वह बराबर ताली बजा रहा था और नृत्य की भंगिमाओं में कभी इधर झुकता था कभी उधर और बराबर थिरक रहा था। कभी वह इतना झुकता कि दुहरा-सा होता जाता, कभी पीछे की तरफ झुक जाता। संक्षेप में यही कहना चाहिए कि कोई मसखरापन ऐसा नहीं बचा जो अबुल हसन ने नाचती और हँसती दासियों के आगे न किया हो।

खलीफा अब हँसी न रोक सका। लेकिन अबुल हसन अपनी धुन में वह हँसी न सुन पाया। कुछ देर हँसने के बाद खलीफा ने पुकार कर कहा, बंद कर अबुल हसन। क्या तू हँसाते-हँसाते मुझे मार ही डालना चाहता हैं? खलीफा के बोलते ही नाच-गाना और बाजे बंद हो गए। अबुल हसन भी नाच रोक कर देखने लगा कि आवाज किस ओर से आई और किस ने मुझे नाम ले कर पुकारा।

खलीफा को देख कर उस ने कहा, अच्छा, तो आप ही व्यापारी बने हुए थे। फिर वह अपनी दशा देख कर कुछ लज्जित हुआ और उसे लगा कि खलीफा ने उस के साथ मजाक किया है। फिर उसने कहा, सरकार आप ही तो दो बार मोसिल के व्यापारी बन कर आए थे और आप ही के कारण मुझ पर हफ्तों मार पड़ी। खलीफा ने कहा, तुम ठीक कहते हो। किंतु अब मैं तुम्हारे साथ इतनी भलाई करूँगा कि सभी पहलेवाले कष्ट भूल जाओगे। यह कह कर खलीफा ने आदेश दिया कि अबुल हसन को दरबारियों जैसे वस्त्र पहनाए जाएँ।

अबुल हसन ने कहा, सरकार यह तो बताएँ कि मेरे साथ यह सलूक क्यों किया गया। खलीफा ने कहा, देखो, मैं हर महीने की पहली तारीख को वेश बदल कर प्रजा के बीच जाता हूँ। महीने भर पहले तुमने मेरा अच्छा आतिथ्य सत्कार किया और तभी तुमने कहाँ कि अगर एक दिन को खलीफा बन जाऊँ तो मुअज्जिन और उस के साथियों को कोड़े लगवाऊँ। इसलिए मैं तुम्हें बेहोश कर के यहाँ ले आया और एक दिन के लिए खलीफा बना दिया। किंतु इस से तुम वाकई अपने को खलीफा समझने लगे और सब से मार-पीट करने लगे। तभी तुम्हें हफ्तों मार पड़ी। कल रात को फिर मैं तुम्हारे घर से तुम्हें बेहोश करके ले आया कि तुम कुछ और तमाशा दिखाओ।

अबुल हसन ने कहा, पृथ्वीपालक, अब मुझे कोई शिकायत नहीं है। यदि आप के मनोरंजन के लिए मुझ पर मार पड़े तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूँगा। किंतु आप से एक निवेदन करना चाहता हूँ। मुझे अनुमति दीजिए कि मैं आप का सेवक बन कर रहूँ, हमेशा मुझे आप के पास आने की अनुमति हो। खलीफा ने कहा, मैं ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली। तुम जब चाहो मेरे पास आ सकते हो, तुम्हें कोई नहीं रोकेगा। यह कह कर खलीफा ने उसे दरबार की नौकरी दे दी और उस का मासिक वेतन एक हजार अशर्फी नियत कर दिया।

जब खलीफा दरबार को गया तो अबुल हसन अपनी माँ के पास गया। उस ने बताया कि मैं ने पहले भी कोई स्वप्न नहीं देखा था बल्कि खलीफा ने अपने मनोरंजन के लिए मेरे साथ यह किया और अब एक हजार अशर्फी मासिक पर मुझे अपना दरबारी बनाया है। यह समाचार उस के पड़ोस ही में नहीं, सारे नगर में फैल गया। उस दिन से अबुल हसन रोज दरबार में जाया करता और अपनी बकवास और मसखरेपन से खलीफा का जी बहलाया करता। एक दिन खलीफा ने उसे महल में जा कर मलिका जुबैदा से मिलाया और फिर वह अकसर मलिका के पास भी आने-जाने लगा।

एक दिन मलिका जुबैदा ने खलीफा से कहा, यह अक्सर महजबीन नाम की दासी को बड़े प्यार से देखा करता है और वह भी इस से राजी मालूम होती है। कहिए तो दोनों का विवाह करवा दें। खलीफा ने कहा, यह तो तुमने मेरे मन की बात कह दी। मैं ने इस से वादा भी किया था कि तुम्हें मनचाही स्त्री दूँगा किंतु अभी तक यह न जान पाया कि इसे कौन स्त्री पसंद है। फलतः अबुल हसन का महजबीन से विवाह कर दिया गया। महजबीन मलिका जुबैदा की प्रिय दासी थी इसलिए उस ने खूब दहेज महजबीन को दिया। खलीफा ने भी अबुल हसन की शादी पर खूब धूम-धाम की। अबुल हसन अपनी पत्नी को खलीफा के दिए हुए मकान में ले गया। दोनों ने कई रोज तक वहाँ अपने तौर पर खूब जश्न किया। फिर दोनों पति-पत्नी आराम से रहने लगे। वे सिर्फ उसी समय एक-दूसरे से अलग होते जब अबुल हसन दरबार में जाता और महजबीन मलिका जुबैदा के पास उस की संगिनी बन कर जाती।

अबुल हसन महजबीन के सान्निध्य में इतना मस्त हो गया कि उसे खर्च की कोई परवाह न रही। दोनों अच्छे से अच्छे कपड़े पहनते, बढ़िया भोजन करते और शराब पीते और दास-दासियों और ख्वाजासराओं को, जो उन के घर आया करते थे, बगैर खिलाए- पिलाए नहीं आने देते थे और साथ ही उन्हें वापसी में उत्तमोत्तम वस्त्र और अच्छा इनाम देते। वे तरह-तरह के मूल्यवान मेवे, अचार, मुरब्बे आदि प्रयोग करते और खाते समय गायन-वादन आदि का भी प्रबंध करते थे। इस प्रकार उन्होंने अमीर-उमरा की तरह रहना शुरू किया, यद्यपि उनकी आय इतनी न थी। रसोइयों और सेवकों ने उनका यह हाल देखा तो खुद भी लूट शुरू कर दी ।

एक दिन रसोइए ने आ कर खर्च का हिसाब दिखा कि इतना बनियों का उधार हो गया है। कुछ देर में तोशखाने के अध्यक्ष ने बताया कि बजाजों से इतने-इतने के कपड़े उधार लिए गए हैं। अबुल हसन और महजबीन ने अपने पास का सारा नकद रुपया दे दिया, फिर भी बहुत-सा कर्ज बाकी रहा। अबुल हसन ने खलीफा से वादा किया था कि वेतन के अलावा कुछ नहीं माँगूँगा।

शादी में जो मिला था वह उस ने माँ को दे दिया था। वह कहीं से कुछ नहीं माँग सकता था। महजबीन भी जुबैदा से इतना ले चुकी थी कि उसे और कुछ माँगने की हिम्मत नहीं हुई।

अबुल हसन ने महजबीन से कहा, यह तो बड़ी मुसीबत है। इस से छुटकारे की एक ही तरकीब समझ में आती है। तुम तरकीब बताओ, लेकिन तरकीब में पूरी सफलता निश्चित होनी चाहिए। अबुल हसन ने कहा, सफलता निश्चित है। लेकिन इस के लिए हम दोनों को मरना होगा। महजबीन भड़क कर बोली, तुम्हें मरने का शौक है तो तुम मर जाओ, मैं तो नहीं मरती। मुझे तो बहुत कुछ दुनिया देखनी है। अबुल हसन ने कहा, आखिर हो तो औरत ही, अक्ल कहाँ से आएगी तुम में। औरतों के बारे में तो विद्वानों ने कहा ही है कि बुद्धिहीन होती हैं। अरे, मैं सचमुच मरने को कहाँ कह रहा हूँ, मैं तो सिर्फ यह कह रहा था कि हम लोग मरने का बहाना करते। एक तुम हो कि मरने का नाम सुना और होश गायब हो गए। महजबीन ने कहा कि अगर बहाना ही बनाना है तो मैं तैयार हूँ लेकिन तुम मुझे पूरी योजना बताओ कि मैं उस पर कार्य कर सकूँ।

अबुल हसन ने कहा, मैं दालान में पश्चिम की ओर पाँव करके लेट जाऊँगा। तुम मेरे सिर पर एक पगड़ी रख देना और मेरे शरीर पर सफेद चादर डाल देना। फिर कपड़े फाड़ कर बाल बिखरा कर विलाप करते हुए जुबैदा के पास जाना। वह जरूर तुम्हें कुछ धन दे देगी ताकि मेरा जनाजा अच्छी तरह से निकले। और वह तुम्हें भी नए थान देगी कि अपने कपड़े सिला लो। जब तुम धन ले कर महल से आना तो मैं उठ बैठूँगा और तुम लेट कर मरने का स्वाँग करना। मैं तुम पर सफेद चादर डाल कर कपड़े फाड़ कर बाल बिखरा कर खलीफा के पास जाऊँगा और तुम्हारे मरने की सूचना दूँगा। आशा है कि जुबैदा जितना देगी खलीफा उस से अधिक देगा। महजबीन ने कहा, यह योजना बहुत अच्छी है। वे लोग निस्संदेह हमारी अच्छी मदद करेंगे। हमने होशियारी और पूरे सहयोग के साथ काम किया तो जरूर फायदा होगा।

अतः अबुल हसन पश्चिम की ओर पाँव करके लेट गया। उस की पत्नी ने उसे सफेद चादर उढ़ा दी और उस के मुँह पर मलमल का कपड़ा डाल कर पगड़ी रख दी ताकि उस की साँस न रुके। फिर अपने सिर का कपड़ा फाड़ कर बाल बिखरा कर विलाप करने लगी और ऐसी ही हालत में जुबैदा के महल में गई और उसे अबुल हसन की मौत की खबर दी। जुबैदा तथा अन्य दासियों को यह सुन कर बहुत अफसोस हुआ। महजबीन जुबैदा की चहेती दासी रह चुकी थी। उस ने महजबीन को एक हजार अशर्फियाँ और कमख्वाब का एक भारी थान दिया और कहा कि थान को कफन के काम में लाना और अशर्फियों से अंतिम संस्कार करना। महजबीन अपने घर आई और उस ने अशर्फियों का तोड़ा और थान दिखाया। अबुल हसन इन्हें देख कर बहुत खुश हुआ और उठ कर खड़ा हो गया।

अब महजबीन ने कहा कि मैं मरने का स्वाँग रचती हूँ और तुम जा कर खलीफा से कुछ सहायता की जुगाड़ करो। अबुल हसन ने कहा, तुम मुझे क्या सिखा रही हो। मेरी ही बताई हुई तो यह तरकीब है। मैं इन बातों में तुम से कुछ कम चतुर नहीं हूँ। तुम मुर्दा तो बनो फिर देखो कि मैं कितना बढ़िया नाटक करता हूँ। अब महजबीन पश्चिम की ओर पाँव करके लेट गई और अबुल हसन रोता-पीटता दरबार की ओर चला गया। दरबार में जा कर उस ने इतने ऊँचे स्वर में विलाप किया कि वहाँ के सारे कामकाज रुक गए और सब लोग उस की ओर देखने लगे। खलीफा ने पूछा, अबुल हसन, तुम्हें क्या हुआ है? क्यों इस तरह

रो रहे हो? उस ने कहा, सरकार, मैं तो लुट गया। आप ने जिस सुंदरी महजबीन से मेरी शादी कराई थी वह भगवान को प्यारी हो गई। अब मैं क्या करूँ, सरकार?

खलीफा को उस का दुख देख कर बड़ा खेद हुआ और उस के चेहरे पर दुख के चिह्न प्रकट हुए। यह देख कर खुशामदी दरबारियों ने भी हाय-हाय करनी शुरू कर दी। खलीफा ने भी एक हजार अशर्फियाँ और भारी कमख्वाब का थान दे कर उसे विदा किया। उस ने घर जा कर यह चीजें महजबीन को दिखाईं तो महजबीन भी बहुत खुश हुई। उधर खलीफा को महजबीन के मरने का इतना अफसोस हुआ कि वह दरबार का काम जल्दी निबटा कर महल में आया और बेगम को शोकमग्न देख कर दिलासा देने लगा, भगवान की इच्छा के आगे किसी का वश नहीं है। अब तुम महजबीन को भूल जाओ। वह वापस नहीं आ सकती। जुबैदा ने कहा, आप क्या कह रहे हैं? महजबीन नहीं बल्कि अबुल हसन मरा है। मैं तो महजबीन के वैधव्य से दुखी थी। खलीफा ने हँस कर मसरूर से कहा, देखो बेगम जैसी समझदार औरत ऐसी पागलपन की बात कर रही हैं, मरी है महजबीन और यह कह रही हैं कि अबुल हसन मरा है। अरे बेगम साहबा, अबुल हसन के मरने का रंज न करो, वह तो मरा ही नहीं है। तुम अगर अपनी पुरानी और प्रिय दासी की मृत्यु का शोक करो तो समझ में आनेवाली बात है और स्वाभाविक भी है। अबुल हसन हट्टा-कट्टा है। अभी कुछ ही देर पहले वह अपनी स्त्री की मौत पर रोता-बिलखता दरबार में आया था। सभी लोगों ने उसे देखा। यह मसरूर भी उस समय मौजूद था, यह भी मेरी बात की पुष्टि करेगा। इस से पूछो कि मैं ने क्रिया-कर्म के लिए अबुल हसन को एक हजार अशर्फियाँ और कमख्वाब का एक थान दिलवाया है या नहीं। अबुल हसन रोते-रोते ही दुआएँ दे कर चला गया।

मलिका जुबैदा बोली, हुजूर, मैं जानती हूँ कि विनोदप्रियता आप के स्वभाव में है इसीलिए ऐसी बात कह रहे हैं। किंतु यह अवसर हँसी-मजाक का नहीं है। अबुल हसन बहुत अच्छा आदमी था। आप का तो वह प्रिय दरबारी था। स्वाभाविक तो यह था कि आप को उस की मृत्यु पर खेद होता और आप हैं कि कहते हैं महजबीन मर गई। खलीफा ने कहा, बेगम, मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि मैं मजाक नहीं करता। यह वास्तविकता है कि अबुल हसन जीता है और महजबीन की मृत्यु हो गई है। जुबैदा ने कहा, आप को कुछ भ्रम है। दासी का पति मरा है, वह नहीं मरी। अभी कुछ देर पहले वह रोती हुई मेरे पास आई थी और बहुत देर तक अपने पति की मृत्यु पर विलाप करती रही। उस की दशा देख कर यह सब दासियाँ रोने लगीं बल्कि मुझे भी रोना आ गया। आप इन सब से पूछ सकते हैं कि यह बात ठीक है या नहीं। मैं ने महजबीन को मृतक का संस्कार करने के लिए एक हजार अशर्फियाँ और कमख्वाब का एक थान दिया है। मैं तो आप के पास अबुल हसन के मरने की खबर भिजवानेवाली थी। दोनों देर तक इसी तरह तकरार करते रहे।

अंत में तंग आ कर खलीफा ने मसरूर से कहा, मैं जानता हूँ कि महजबीन मरी है। फिर भी यह बहस खत्म होनी चाहिए। तुम जा कर अपनी आँखों देख कर आओ कि महजबीन मरी है या नहीं। मसरूर के जाने के बाद भी खलीफा और जुबैदा में बहस होती रही। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े थे। खलीफा ने कहा, इसी बात पर हम दोनों में बाजी लग

जाए। अगर अबुल हसन के मरने की तुम्हारी बात सच निकले तो मैं फलाँ बाग तुम्हारे नाम कर दूँगा और अगर महजबीन की मौत की मेरी बात सच निकली तो मैं तुम्हारा कठपुतलियोंवाला महल ले लूँगा। जुबैदा ने कहा कि मुझे यह शर्त मंजूर है। वे दोनों मसरूर की वापसी की प्रतीक्षा करने लगे।

अबुल हसन को यह तो मालूम ही था कि इस बात को ले कर खलीफा और मलिका जुबैदा में तकरार हो जाएगी और वास्तविकता की जाँच कराई जाएगी। इसलिए वह होशियार था। उस ने अपना दरवाजा बंद कर रखा था लेकिन एक छेद से अपने घर की ओर आनेवालों को देख रहा था। जब उस ने मसरूर को सीधा अपने घर की ओर आते देखा तो समझ गया कि यह खलीफा का भेजा हुआ आ रहा है। उस ने महजबीन से कहा, जल्दी से एक बार फिर मरने का नाटक करो। महजबीन पश्चिम की ओर पाँव करके लेट गई और अबुल हसन ने उस पर खलीफा का दिया हुआ कमख्वाब का थान डाल दिया और दरवाजा खोल कर उस के सिरहाने अपनी आँखों पर रूमाल रख कर बैठ गया।

मसरूर आया और जब उस ने अबुल हसन को मातम करते देखा तो उसे संतोष हुआ कि खलीफा बेगम के सामने अपनी बात सिद्ध कर देगा। अबुल हसन उठा और आदरपूर्वक उस के हाथ चूम कर कहने लगा, आप देख रहे हैं कि मुझ पर कैसा पहाड़ टूटा है। महजबीन जैसी स्त्री मुझे कहाँ मिलेगी। आप तो खुद उसे अच्छी तरह जानते थे। मसरूर की आँखों में भी आँसू आ गए। उस ने महजबीन के सिर की ओर का कफन उठा कर उस का मुख देखा। महजबीन ने साँस रोक ली।

मसरूर ने उस का मुँह फिर ढक कर कहा, भाई, भगवान की मरजी में कौन दखल दे सकता है। महजबीन को मैं अपनी बहन की तरह चाहता था और मुझे उस की मृत्यु पर बड़ा दुख है। कुछ देर बार वह बोला, स्त्रियों में बुद्धि नहीं होती। अब यह देखो कि मलिका जुबैदा जैसी औरत इस बात पर अड़ी हुई है कि तुम मरे हो, महजबीन जीवित है। वह देर से इस बात पर खलीफा से झाँय-झाँय कर रही है। मैं तो जानता ही था कि महजबीन मरी है क्योंकि मेरे सामने तुम दरबार में रोते-पीटते आए थे, और मैं ने इस बात को कहा भी। लेकिन जुबैदा फिर भी अपनी बात पर अड़ी रही तो खलीफा ने मुझे भेजा कि तथ्य का पता लगाऊँ। अब मैं ने जो देखा है वह कहूँगा और खलीफा को सच्चा साबित करूँगा।

अबुल हसन बोला, खलीफा को भगवान चिरायु करे। उनकी मुझ पर बड़ी कृपा रही है। उनकी बात सही साबित करने को मैं खुद ही महल में जाता किंतु बार-बार मुर्दे को घर में छोड़ कर कहाँ जाऊँ। मसरूर ने कहा, तुम्हें खलीफा के पास जाने की जरूरत नहीं है। महजबीन का मुर्दा चेहरा मैं ने खुद देखा है और यही कहूँगा। अगर मुझे खलीफा को इस मामले की आँखों देखी सूचना न देनी होती तो मैं स्वयं यहाँ बैठता और तुम्हारे दुख में सम्मिलित होता। लेकिन मजबूरी है। मैं अब चलता हूँ।

अबुल हसन ने उठ कर दरवाजे तक मसरूर को पहुँचाया। जब मसरूर दूर चला गया तो उस ने जुबैदा के ऊपर से थान उठाया और कहा, अब तुम उठ बैठो। मुझे विश्वास है कि मलिका जुबैदा मसरूर की बात पर विश्वास नहीं करेंगी और अपनी किसी विश्वस्त दासी

को यहाँ का हाल जानने के लिए भेजेंगी। महजबीन ने उठ कर वही मातमी कपड़े पहन लिए। दोनों दरवाजे के छेदों से बाहर देखते रहे कि देखें, अब कौन अंदर आता है ताकि उस के अनुसार कार्य करें।

मसरूर ने महल में पहुँच कर कहा, वही बात है जो मैं कहता था। महजबीन मरी है। खलीफा ने यह सुन कर जोरों से ठहाका लगाया और कहा बेगम साहिबा, आप शर्त हार गई हैं, अब कठपुतलियों का महल मेरे हवाले कीजिए। मसरूर भी हँसने लगा। जुबैदा का चेहरा लाल हो गया। खलीफा ने मसरूर से कहा, पूरा हाल बताओ। मसरूर ने कहा, हे पृथ्वीपालक, मैं पहुँचा तो देखा कि घर का दरवाजा खुला है। अबुल हसन मुर्दे के सिरहाने बैठा आँसू बहा रहा था। महजबीन दालान के बीच पड़ी थी और आप का दिया हुआ कमख्वाब का थान उस के ऊपर पड़ा था। मैं लाश के पास पहुँचा और उस के सिर की तरफ से कफन उठा कर देखा। महजबीन की साँस बंद थी और चेहरा पीला पड़ा था और कुछ सूजा भी था। मैं ने फिर से कफन उस के मुँह पर डाल दिया और कुछ देर बैठ कर चला आया। मुझे महजबीन के मरने से कोई संदेह तो पहले भी नहीं था किंतु आप के कहने से गया तो अपनी आँखों से देख कर आया हूँ कि महजबीन मर गई।

खलीफा ने जुबैदा से कहा, अब तो तुम्हें अबुल हसन के मरने का संदेह नहीं होना चाहिए, मसरूर अपनी आँखों से देख कर आया है। जुबैदा ने कहा, मुझे इस हब्शी के कहने पर बिल्कुल विश्वास नहीं है। मैं न अंधी हूँ न पागल। मैं ने खुद यहाँ महजबीन को विलाप करते देखा है। मैं कैसे मान लूँ कि वह मरी है और उस का पति जिंदा है? मसरूर बोला, मालिक, मैं खलीफा और आप दोनों ही की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं ने जो कुछ कहा है सच कहा है। जुबैदा ने दाँत पीस कर कहा, मसरूर मियाँ, मैं तुम्हारा झूठ साबित करूँगी। अपनी विश्वस्त दासी को भेज कर असलियत का पता करूँगी।

फिर उस ने उपस्थित दासियों से पूछा, सच कहो कि खलीफा के शुभागमन के कुछ पहले कौन मेरे पास रोता और बाल नोचता आया था। उन सबों ने एक स्वर से कहा कि महजबीन आई थी। फिर जुबैदा ने अपनी भंडारिन से कहा, मेरे कहने पर तुमने किसे कमख्वाब का थान और हजार अशर्फियाँ दी थीं? उस ने कहा, महजबीन को। जुबैदा ने दाँत पीस कर कहा, झूठे हब्शी, अब बता कि तू क्या कहता है? यह सब दासियाँ क्या कह रही हैं। क्या यह सब झूठ है और उन के साथ मैं भी झूठी हूँ?

मसरूर तो जुबैदा का क्रोध देख कर चुप हो रहा लेकिन खलीफा ने हँस कर कहा, विद्वानों ने स्त्रियों को बुद्धिहीन कहा है सो ठीक ही कहा है। तुम यह तो देखो कि मसरूर खुद अपनी आँखों से महजबीन की लाश देख कर आया है और अबुल हसन को इस ने उस के सिरहाने बैठ कर रोते देखा है। अब भी तुम्हें विश्वास क्यों नहीं होता? जुबैदा ने कहा, मसरूर पर मुझे विश्वास कैसे हो? वह तो आप की-सी ही कहेगा। अनुमति हो तो मैं भी अपनी एक विश्वस्त दासी भेज कर पता लगाऊँ।

खलीफा ने अनुमति दे दी। उसे विश्वास था कि दासी मसरूर के वक्तव्य का समर्थन करेगी और फिर जुबैदा को विश्वास हो जाएगा। जुबैदा ने एक बूढ़ी दासी को, जिसने जुबैदा को दूध पिलाया था, अबुल हसन के घर वास्तविकता का पता लगाने के लिए भेजा और कहा, तुम आ कर निर्भय हो कर जो देखा है सच-सच कहना। मैं तुम्हें इनाम दूँगी। बुढ़िया जुबैदा और खलीफा को अभिवादन करके अबुल हसन के घर को चल दी।

अबुल हसन दरवाजे की सेंध से देख रहा था। दूर से बुढ़िया को आते देखा तो समझ गया कि यह जुबैदा की भेजी आ रही है। उस ने अपनी पत्नी से कहा, अब मैं मरने का स्वाँग करता हूँ और तुम मातम का स्वाँग करो। वह दालान में लेट गया और महजबीन ने उस के मुँह पर पगड़ी और शरीर पर जुबैदा का दिया हुआ थान डाल दिया। जब बुढ़िया दासी उन के घर पहुँची तो उस ने दरवाजा खुला पाया और देखा कि महजबीन उसी प्रकार बाल बिखराए कपड़े फाड़े छाती पीटते हुए महाविलाप कर रही है। बुढ़िया ने उस से कहा कि मैं तुम्हारे मातम में शरीक नहीं हो सकूँगी क्योंकि मुझे दूसरे काम को भेजा गया है। महजबीन ने उस की बात अनसुनी कर दी जैसे बहुत दुख में हो और बोली, हाय अम्मा, मेरा दुर्भाग्य तो देखो। खलीफा और मलिका ने कितने चाव से हमारा विवाह कराया था लेकिन मेरा सुहाग दो दिन भी नहीं रहा। फिर वह छाती पीट कर चिल्लाने लगी, अबुल हसन, तुम मुझे छोड़ कर कहाँ चले गए? तुम्हारे बगैर मैं क्या करूँगी? मुझे किसके सहारे छोड़े जा रहे हो?

बूढ़ी दासी ने देखा कि यहाँ तो जो कुछ है वह मसरूर के कथन से उलटा है। उस ने कहा, खुदा की मार पड़े उस मुए मसरूर पर, उस ने झूठ बोल कर खलीफा और बीबी में झगड़ा डलवा दिया।

फिर उस ने महजबीन से कहा, बेटी, तुमने और कुछ सुना है। वह नालायक हब्शी मसरूर खलीफा से क्या कह रहा था? उस ने कहा कि तुम (भगवान न करे) मर गई हो और अबुल हसन तुम्हारी लाश के सिरहाने बैठ कर आँसू बहा रहा है। इस बात पर जुबैदा बीबी क्रुद्ध हुईं और उन्होंने मुझे यहाँ भेजा।

महजबीन रो कर बोली, अम्मा, काश मसरूर का कहा हुआ सच होता। रँड़ापे से तो मौत कहीं अच्छी है। हाय, अब मेरे जीवन में भी क्या रखा है। यह कह कर वह फिर बुक्का फाड़ कर रोने लगी। बुढ़िया भी उस के साथ मिल कर रोने लगी। इसी विलाप के बीच उस ने चतुरता से अबुल हसन के मुँह से पगड़ी उठा कर मुँह देखा और रोती हुई बोली, अबुल हसन, भगवान तुझे स्वर्ग भेजे और तेरी आत्मा को शांति दे। तू कितना भला आदमी था। फिर महजबीन से कहने लगी, अच्छा बेटी, खुदा हाफिज। मैं तो चाहती थी तुम्हारे साथ बैठ कर मातम करती रहती किंतु कुछ ऐसी विवशता है कि तुम्हारे यहाँ अधिक नहीं ठहर सकूँगी। जुबैदा बीबी मेरी राह देख रही होंगी। इस झूठे मसरूर ने उन्हें नाराज कर रखा है। उस बेशर्म ने उन्हीं की कसम खा कर कहा है कि तुम मर गई हो और तुम्हारा पति जीवित है जब कि मैं देख रही हूँ कि वह मरा पड़ा है और तुम उस की लाश पर रो-पीट रही हो। यह कह कर वह आँसू पोंछती हुई चली गई।

अबुल हसन भी उठ बैठा और दोनो दरवाजे बंद करके उस की सेंध से देखने लगा कि देखिए अब क्या होता है। साथ ही वे सोचने लगे कि अब इस झूठ को किस प्रकार निभाया जाए। पैसा तो मिल गया किंतु खलीफा और जुबैदा तो बुरी तरह पीछे पड़े हैं। उधर बुढ़िया अपनी कमजोरी के बावजूद पाँव घसीटती हुई महल को गई। वह जुबैदा के कमरे में पहुँची और उसे बुला कर सारी बात बताई। उस ने कहा, मेरे साथ आओ और सारी बात खलीफा के सामने बताओ। मसरूर खुश-खुश बैठा था कि दासी वही कहेगी जो मैं ने कहा है। लेकिन दासी मसरूर से बोली, मियाँ, तुम बड़े ही झूठे आदमी हो। तुमने कैसे यहाँ सब के सामने कहा कि महजबीन मर गई है और अबुल हसन जीवित है? मैं ने खुद अपनी आँख से देखा कि वह मरा पड़ा है और बेचारी महजबीन छाती पीट-पीट कर रो रही है। तुम्हें ले कर ही महल का प्रबंध बनाया गया है। ऐसे जिम्मेदार आदमी हो कर तुम्हें सफेद झूठ बोलते शर्म नहीं आई? तुम्हें तो इस प्रकार अपने स्वामी को धोखा देने के अपराध में करावास मिलना चाहिए।

मसरूर चीख कर बोला, क्या बकवास कर रही है बुढ़िया? मरने के करीब हो गई है लेकिन झूठ बोलना न छोड़ा। कयामत के दिन खुदा को क्या मुँह दिखाएगी। तुझे नरक में जाने का भी डर नहीं है। मैं ने खुद उस स्त्री को मृत देखा है। बुढ़िया बुरी तरह बिगड़ कर बोली, झूठा तू खुद और तेरे बाप दादे। मुझे झूठा बना रहा है। मैं खुद देख कर आ रही हूँ कि अबुल हसन की लाश पड़ी है। उस का मरा मुँह देखा है। मसरूर बोला, शैतान की खाला, बराबर झूठ बोले जा रही है। खुदा तेरा मुँह काला करे। बुढ़िया बोली, तेरा मुँह तो पहले ही से काला है, भगवान तुझसे समझेगा। जुबैदा ने खलीफा से कहा, देखिए आप का नौकर कितना झूठा और धृष्ट है। इस ने मेरी दूध पिलानेवाली को क्या-क्या नहीं कहा। आप सब कुछ सुन कर भी चुप रहे, उसे कुछ नहीं कहा।

यह कह कर जुबैदा ने अंतिम अस्त्र अपनाया यानी रोना शुरू कर दिया।

खलीफा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि किसे झूठा समझे किसे सच्चा। वह बहुत देर तक चुप रहा। अन्य लोग भी चुप हो गए। अंत में खलीफा ने कहा, हम दोनों में कोई दूसरे के सामने अपने को सच्चा साबित नहीं कर सका। मसरूर और तुम्हारी दाई भी एक-दूसरे को झूठा कह रहे हैं।

अब एक ही बात मुमकिन है। वह यह कि हम सभी अबुल हसन के घर चल कर देखें कि क्या बात है। जुबैदा ने मंजूर किया क्योंकि अबुल हसन का घर पास ही था। सब लोग पैदल ही चल पड़े। रास्ते में भी मसरूर और बुढ़िया दासी झगड़ते और एक-दूसरे को झूठा कहने लगे। जुबैदा ने भी दाई का पक्ष ले कर मसरूर को बुला-भला कहा। मसरूर बोला, मलिका, यह सच्ची हो तो मेरे साथ शर्त बदे। मैं झूठा हूँ तो इसे एक सुनहरी कमख्वाब का थान दूँ और अगर इसका झूठ साबित हो तो यह मुझे ऐसा ही थान दे। जब इसे कमख्वाब का थान देना पड़ेगा तो मालूम होगा कि झूठ बोलने का नतीजा क्या होता है। बुढ़िया बोली, मुझे शर्त मंजूर है। थान मसरूर ही को देना पड़ेगा, मुझे नहीं।

अबुल हसन और महजबीन दोनों ने देखा कि सभी लोग चले आ रहे हैं। महजबीन घबरा कर बोली, मारे गए। अबुल हसन बोला, डरती क्यों हो। घबराहट में तुम वह भी भूल गई जो मैं ने तुम से कहा था। तुम वही करो, बाकी बात मैं सँभाल लूँगा। उस के बाद दोनों ही अपने-अपने कफन के लिए मिला हुआ थान अपने-अपने ऊपर डाल कर लेट गए।

जब खलीफा, जुबैदा और उनका दल मकान पर पहुँचा तो सब लोग दरवाजा ठेल कर अंदर पहुँचे और देखा कि दोनों मुर्दे की तरह पड़े हैं। जल्दी में वे यह भी न सोच पाए कि दोनों मुर्दों पर कफन कैसे पड़ा है।

जुबैदा ने खलीफा से कहा, हाय, अभागी महजबीन बेचारी अपने पति का वियोग नहीं सहन कर सकी और खुद भी मर गई। फिर दाईं और मसरूर की ओर देख कर बोली, तुम लोगों के बार-बार आने-जाने से इसका रंज इतना बढ़ा कि यह भी मर गई। खलीफा ने कहा, नहीं, यह बात बिल्कुल नहीं है। पहले महजबीन मरी है, फिर रंज की वजह से अबुल हसन मरा है। मैं शर्त जीत गया और कठपुतलियों का महल तुम्हारे हाथ से गया। जुबैदा ने कहा, आप का बाग मेरा हुआ क्योंकि मैं जीती हूँ। अभी मेरी दाई महजबीन को जीवित देख गई है, स्पष्ट है कि वही बाद में मरी है। इसी तरह की बहस मसरूर और बूढ़ी दासी के बीच होने लगी क्योंकि कोई भी शर्त हारना नहीं चाहता था। अजीब स्थिति थी। सभी के आने पर भी समस्या जहाँ की तहाँ रही। अब यह कौन बताता कि पहले किसकी मृत्यु हुई।

खलीफा ने बहुत देर तक विचार किया। फिर अबुल हसन और महजबीन के बीच में बैठ गया और पुकार कर बोला, मैं इसी समय एक हजार अशर्फियाँ उस आदमी को दूँगा जो स्पष्ट रूप से सिद्ध कर सके कि इन दोनों में पहले कौन मरा। एक हजार अशर्फियों का लालच दोनों को हुआ। अबुल हसन ने अपने ऊपर का थान उतार फेंका और खलीफा के पैरों पर गिर कर बोला, सरकार, पहले यह मरी थी। इसी तरह महजबीन जुबैदा के पाँवों पर गिर कर बोली, महारानी, मैं नहीं, यह पहले मरा है। जुबैदा मुर्दों को बोलते देख कर चीख कर खलीफा से लिपट गई। खलीफा भी स्तंभित-सा रह गया।

कुछ देर बाद स्वस्थ होने पर जुबैदा हँसते हुए बोली, दुष्टा, तेरे ही कारण मैं और खलीफा दिन भर एक-दूसरे से लड़ते रहे। खैर, मुझे यही संतोष है कि तू जीवित है। तुझे सजा न दूँगी। लेकिन यह तो बता कि यह तमाशा क्यों किया था? इसी प्रकार खलीफा ने भी हँसते हुए अबुल हसन से कहा, क्यों बे, यह क्या हरकत थी? तुम दोनों के इस नाटक से हम लोग आपस में लड़ते रहे और इस समय मेरी हँसी नहीं रुक रही। अगर मैं ने हँसना शुरू किया तो शायद हँसते-हँसते मर जाऊँगा।

अबुल हसन ने कहा, सरकार, आप ने कृपापूर्वक हम दोनों का विवाह कराया। हम लोग आनंदपूर्वक रहने लगे। किंतु हमारा आनंद अधिक ही बढ़ गया। मेरा हाथ खुल गया और मैं अनाप-शनाप खर्च करने लगा। मुझ पर इतना कर्जा हो गया कि तनख्वाह में उस की अदायगी संभव हो नहीं थी। आप की सेवा में आने के बाद व्यापार भी मैं ने बंद कर दिया

था। विवश हो कर आखिर इस नीच हरकत पर उतर आया ताकि झूठ बोल कर ही कुछ पैसा मिल जाए। मैं ने सब कुछ आप से कह दिया। आप का अधिकार है चाहे क्षमा करें चाहे दंड दें।

खलीफा ने हँस कर कहा, यह क्यों नहीं कहता कि मैं ने जो छल तुझ से किया था तूने उस का बदला ले लिया। खैर, मुझे तेरा नाटक बहुत पसंद आया। तूने यह भी अच्छा किया कि किसी और के आगे हाथ नहीं फैलाया। अब यह तीन हजार अशर्फियाँ और दोनों थान तुम लोगों के हुए। लेकिन आयंदा सँभल कर खर्च करना। अब की बार ऐसी हरकत हुई तो कठोर दंड दिया जाएगा। अबुल हसन और उस की पत्नी ने सिर नवाया। इस के बाद सारी जिंदगी उन दोनों ने हँसी, खुशी और आराम से बिताई।

दुनियाजाद ने कहा, बहन, यह कहानी तो बड़े मजे की रही। शहरजाद ने कहा, मैं अलादीन और जादुई चिराग की कहानी भी सुनाऊँगी। शहरयार ने कहा, कल सुनाना, आज सवेरा हो गया है।

अलादीन और जादुई चिराग की कथा

चीन की राजधानी में मुस्तफा नाम का एक दरजी रहता था। वह गरीब आदमी था और बड़ी कठिनाई से अपने परिवारवालों का पेट भरता था। उस के पुत्र का नाम अलादीन था जो कुछ काम-काज नहीं करता था सिर्फ खेल-कूद में समय बिताता था। माता-पिता की बातों की उपेक्षा कर के सवेरे ही घर से निकल जाता और अपनी ही तरह के आवारा लड़कों के साथ दिन भर खेलता रहता। वह कुछ बड़ा हुआ तो उस के पिता ने उसे अपना काम सिखाने के लिए अपनी दुकान पर बिठाना शुरू किया किंतु न प्यार से न मार से, उसे कुछ भी सिखाया न जा सका। वह पिता की आँख बचा कर दुकान से भाग जाता और दिन भर खेल-कूद में बिता कर शाम को घर लौटता और मार खाता। मुस्तफा बहुत खीझता और परेशान होता कि मेरे मरने के बाद यह क्या करेगा। इसी चिंता में वह बीमार हो गया और कुछ महीनों बाद उस की मृत्यु हो गई।

अलादीन की माँ जानती थी कि अलादीन से दुकान न चल सकेगी इसलिए उस ने दुकान बेच दी और रूई खरीद कर सूत कातने का धंधा करने लगी। बूढ़ी माँ के इस कष्ट का भी अलादीन पर कोई प्रभाव न पड़ा। जब वह उस से कुछ काम करने को कहती तो वह उस से गाली-गलौज और झगड़ा करता। उस का साथ तो आवारा लोगों का था कि वह किसी भले आदमी की बात भी नहीं सुनता था।

कुछ दिन और बीते। अलादीन चौदह वर्ष का हो गया किंतु उस में बिल्कुल बुद्धि न आई, उसे यह विचार तक नहीं आया कि कुछ कमाई करके अपना और माँ का पेट पालना उस का कर्तव्य है। एक दिन वह बाजार में खिलंदड़ापन कर रहा था कि एक परदेशी ने कुछ देर तक उसे गौर से देखा और फिर उस के बारे में पूछताछ की कि यह किसका लड़का है और कहाँ रहता है।

वास्तव में वह परदेशी अफ्रीका का रहनेवाला एक जादूगर था और एक खास उद्देश्य से चीन आया हुआ था। वह जादू के अलावा रमल इत्यादि कई और विद्याएँ भी जानता था। वह जिस काम के लिए आया था उस में सहायता देने के लिए उसे यही लड़का उपयुक्त मालूम हुआ। एक दिन अकेले में अलादीन को पा कर वह बोला, बेटे, तुम मुस्तफा दरजी के लड़के तो नहीं हो? उस ने कहा, हूँ तो, किंतु कई वर्ष पूर्व मेरे पिता का देहांत हो गया है। यह सुन कर अजनबी ने उसे खींच कर अपने सीने से लगा लिया और खूब प्यार किया और आहें भर कर रोने लगा। अलादीन को इस पर आश्चर्य हुआ और उस ने पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो।

जादूगर आहें भरता हुआ बोला, हाय बेटा, क्या कहूँ। तुम्हारा पिता मेरा बड़ा भाई था। मैं कई वर्षों तक देश-विदेश की यात्रा करने के बाद चीन आया हूँ। इस नगर में आने का मेरा उद्देश्य यही था कि मैं अपने बड़े भाई से मिलूँ। मैं इस खयाल से बहुत खुश था और मुझे विश्वास था कि इतने लंबे समय के बाद मुझे देख कर वे भी बड़े प्रसन्न होंगे। तुम्हारे मुँह

से उनकी मृत्यु का समाचार सुन कर मुझे ऐसा दुख हुआ है जो कहा नहीं जा सकता। मेरे यहाँ आने का उद्देश्य तो मिट्टी में मिल गया और मार्ग का सारा श्रम वृथा हुआ। अब मेरी भगवान से प्रार्थना है कि तुम्हें लंबी उम्र दे। मैं तुम में तुम्हारे पिता के सारे हाव-भाव और चाल-ढाल देखता हूँ। तुम्हारी सूरत भी उनसे मिलती है, तुम्हें देख कर मुझे बड़ा संतोष होता है। यह कह कर उस ने जेब से कुछ पैसे निकाले और उसे दे कर कहा, बेटा, तुम्हारी माँ कहाँ रहती है? तुम उन से मेरा सलाम कहना और कहना कि कल अवकाश मिलने पर मैं तुम्हारे घर अवश्य आऊँगा और फिर उस जगह पर बैठूँगा जहाँ भाई साहब बैठते थे और इस तरह मन को संतोष दूँगा। अलादीन ने उसे अपने घर का पता बता दिया।

जादूगर के जाने के बाद अलादीन माँ के पास पहुँचा और बोला, अम्मा, क्या मेरे कोई चचा भी है। माँ ने इस से इनकार किया तो वह बोला, अभी एक आदमी मुझ से कह रहा था कि मैं तुम्हारा चचा हूँ। जब मैं ने उसे पिताजी के मरने की बात बताई तो वह मुझे गले लगा कर बहुत रोया और उस ने मुझे बहुत प्यार भी किया और पैसे भी दिए। उस ने तुम्हें सलाम कहा है और कहा है कि कल फुरसत मिली तो आऊँगा और उस जगह बैठ कर अपने मन को संतोष दूँगा जहाँ मेरा भाई बैठता था। उस की माँ ने कहा, तुम्हारे पिता का तो एक ही भाई था जो उस के जीवनकाल ही में मर गया। मैं ने तुम्हारे पिता से किसी और भाई के बारे में कुछ नहीं सुना।

दूसरे दिन अलादीन बाजार में अन्य लड़कों के साथ खेल रहा था तो उसे वही जादूगर मिला। उसे गले से लगा कर दो अशर्फियाँ दीं और कहा, इनसे खाद्य सामग्री ले कर अपनी माँ से खाना पकवा रखना, मैं शाम को तुम्हारे घर आऊँगा और हम सब लोग मिल कर भोजन करेंगे। तुम एक बार फिर अपने घर का ठीक-ठीक पता बताओ जिस से मैं शाम को वहाँ पहुँच सकूँ। अलादीन ने समझा कर पूरा पता बता दिया और जादूगर चला गया। अलादीन भी तुरंत अपने घर गया और उस ने अपनी माँ को दो अशर्फियाँ दे कर सारा हाल बताया। उस की माँ बाजार से अच्छी खाद्य सामग्री लाई और पड़ोसियों से पकाने और खाने के लिए अच्छे बरतन उधार माँग कर सारी दोपहर और तीसरे पहर भोजन बनाने में लगी रही।

भोजन तैयार होने पर उस ने अलादीन से कहा, अब शाम हो गई है। तुम्हारा चचा मकान की तलाश में भटक रहा होगा, तुम बाजार जा कर उसे अपने घर ले आओ। अलादीन ने जादूगर को अच्छी तरह घर का पता बताया था फिर भी वह उसे लेने के लिए उठा। किंतु द्वार पर पहुँच कर उसे लगा जैसे कोई दरवाजा खुलवा रहा है। दरवाजा खोलने पर उस ने देखा कि वही जादूगर दो बोतल शराब और कुछ फल हाथों में लिए खड़ा है। उस ने यह चीजें अलादीन को दीं और खुद मकान के अंदर चला गया। उस ने अलादीन की माँ को नम्रतापूर्वक नमस्कार किया और उस से पूछा कि मेरा भाई किस जगह बैठा करता था। उस ने जादूगर को वह जगह दिखा दी।

जादूगर ने वहाँ जा कर सिर झुकाया, फिर उस जगह को कई बार चूमा। इस के बाद वह

रोते हुए कहने लगा, हाय हाय, मैं कैसा भाग्यहीन हूँ, भाई साहब। मैं इतनी दूर से यात्रा में तरह-तरह का कष्ट उठा कर यहाँ इसीलिए आया था कि तुम्हारे दर्शन करूँ। किंतु तुम्हारे दर्शन मेरे भाग्य में न थे, तुम पहले ही महायात्रा पर चले गए। अलादीन की माँ ने उसे उसी जगह बैठने को कहा तो वह बोला कि मैं अपने भाई की जगह कैसे बैठ सकता हूँ। अलादीन की माँ ने इस बारे में और आग्रह न किया और कहा, जहाँ जी चाहे बैठो। वह एक जगह बैठ गया और उस ने बातचीत शुरू कर दी।

उस ने कहा, भाभी, तुम्हें आश्चर्य तो हो रहा होगा कि यह कौन है लेकिन मैं तुम्हें सारी बात बताए देता हूँ। मैं इसी नगर में पैदा हुआ था किंतु चालीस वर्ष पूर्व मैं ने यह शहर छोड़ दिया। पहले मैं हिंदोस्तान गया। फिर फारस गया और इस के बाद मिस्र देश। इन महान देशों में कई वर्षों तक रह कर मैं अफ्रीका के बड़े देशों में जा कर रहा। वहाँ मैं ने देखे कि बड़े अच्छे लोग रहते हैं इसलिए मैं वहीं जा कर बस गया। इस के बावजूद मैं अपने जन्मस्थान को नहीं भूला। मुझे परिवारवालों और इष्ट मित्रों की बड़ी याद आती रही, विशेषतः अपने बड़े भाई की। मेरी सदैव आकांक्षा बनी रही कि जा कर उन से मिलूँ इस बार मैं ने अपना कारोबार गुमाश्तों के सुपुर्द कर दिया और लंबी यात्रा करके यहाँ आया तो यह कुसमाचार मिला कि वे परलोकवासी हो गए हैं। इस से मुझे इतना दुख हुआ जिस का मैं वर्णन नहीं कर सकता। कितने दुख की बात है कि मैं ने इतनी लंबी यात्रा के कष्ट उठाए और सब कुछ बेकार गया। खैर, मुझे अलादीन को देख कर तसल्ली हुई। यह मेरे प्रिय भाई की निशानी है। इसीलिए इसे पहली ही बार देख कर समझ लिया कि यह मेरे भतीजे के अलावा और कोई नहीं हो सकता। इस ने तुम्हें यह भी बताया होगा कि इस के पिता की मृत्यु की बात सुन कर मुझे कितना रोना आया था। भगवान को धन्यवाद है कि मैं ने उन के पुत्र को देखा, जैसे उन्हीं को दूसरे रूप में देख लिया।

यह बातें सुन कर अलादीन की माँ का भी जी भर आया और वह अपने पति की याद में फूट-फूट कर रोने लगी। अब जादूगर ने यह बातें छोड़ दीं और अलादीन से पूछा, बेटा, तुम जीविका के लिए क्या करते हो, तुमने कौन-सा धंधा अपनाया है और कौन-सा हुनर सीखा है? अलादीन ने शर्मा कर गर्दन झुका ली। उस की माँ ने कहा, यह बिल्कुल निकम्मा है। इस के पिता ने बहुत कोशिश की कि यह कुछ सीख जाए लेकिन इस ने कुछ न सीखा। इस ने सारा समय खेल-कूद ही में बरबाद किया है। आप ने भी इसे खेलते ही पाया होगा। आप इसे समझाएँ कि कुछ ढंग की बात सीखे और किसी कारआमद काम के सीखने में जी लगाए। इसे अच्छी तरह मालूम है कि इस का बाप कोई जायदाद नहीं छोड़ गया है। इसे यह भी मालूम है कि मैं दिन भर चरखा कातती हूँ और किसी प्रकार रूखी-सूखी का जुगाड़ करती हूँ। कई बार मैं ने झुँझला कर चाहा कि इसे घर से निकाल बाहर करूँ ताकि भूखों मरने लगे तो कुछ काम-काज करे। लेकिन अपना ही पैदा किया हुआ बेटा होने की वजह से इस के साथ निर्दयता नहीं कर सकती। यह कह कर बुढ़िया फिर रोने लगी। जादूगर ने अलादीन से कहा, बेटा, क्या तुम्हारी माँ ठीक कह रही है? तुम अब बड़े हो गए हो। तुम्हें चाहिए कि कोई व्यापार करो। जरूरी नहीं है कि कोई एक खास काम ही करो, जिस पेशे में तुम्हारा जी लगता हो वही शुरू करो। तुम अपने मन की बात खुल कर मुझ से कहो, मुझ से जितनी भी हो सकेगी तुम्हारी सहायता करूँगा।

अलादीन इतना सुन कर भी चुप रहा। जादूगर ने फिर कहा, बेटे, अगर तुम चाहते हो कि ऐसा काम करो जिस में धन और प्रतिष्ठा दोनों मिले तो वह बजाजी का काम है। तुम चाहो तो मैं तुम्हें बजाजे की बड़ी दुकान खुलवा दूँ जिस में देश-विदेश के थान और तरह-तरह का कपड़ा हो और तुम उस में आराम से बैठ कर धन कमाओ। मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम अपने मन की बात खुल कर मुझ से करो ताकि मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारी सहायता कर सकूँ। अलादीन ने इशारे से कहा कि मुझे बजाजी का काम पसंद है और वही करना चाहता हूँ। उस ने देखा था कि कपड़े के व्यापारी बड़ी शान-शौकत से रहते हैं, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं और भाँति-भाँति का स्वादिष्ट भोजन करते हैं। जादूगर ने कहा, अगर तुम्हें यह काम पसंद है तो बड़ी अच्छी बात है। कल मैं तुम्हारे लिए अच्छे कपड़े खरीद दूँगा क्योंकि इन कपड़ों में तुम्हारा व्यापारी समाज में प्रवेश नहीं हो सकेगा। मैं तुम्हारा परिचय एक बड़े व्यापारी से करा दूँगा और एक दुकान तुम्हें किराए पर ले दूँगा।

अलादीन की माँ, जो अब तक उस के अलादीन के चचा होने पर विश्वास न करती थी, उस की बातें सुन कर खुश हो गई। उस ने अलादीन का हाथ उसे पकड़ाया और कहा, अब तुम्हीं इसे राह पर लगाओगे तो लगेगा। यह कह कर उस ने भोजन निकाल कर परोसा और तीनों ने जी भर कर खाना खाया और बाद में मद्य, फल आदि खाए। फिर जादूगर कहने लगा कि अब रात काफी हो गई है, मैं जाता हूँ। कल सुबह फिर आऊँगा।

दूसरे दिन वह फिर आया और अलादीन को उस दुकान में ले गया जहाँ सिले-सिलाऐ कपड़े बिकते थे। उस ने अलादीन से कहा कि तुम्हें इन में से जो भी कपड़े का जोड़ा पसंद हो वह ले लो, मैं उस के दाम दे दूँगा। अलादीन यह सोच कर बहुत खुश हुआ कि उस का चचा उस के लिए यह करने को तैयार है। उस ने एक मूल्यवान जोड़ा पसंद किया। जादूगर ने उसे वह दिलवा दिया और उस से मेल खाते हुए जूते, पटका, पगड़ी आदि भी दिलवा दी। अलादीन ने सारी चीजें पहन लीं और शीशे में अपने को देखा तो बहुत खुश हुआ। फिर जादूगर उसे उस बड़े बाजार में ले गया जहाँ बड़े-बड़े व्यापारियों का व्यवसाय था। उस ने अलादीन से कहा, अगर तुम चाहते हो कि इन लोगों की तरह बनो तो यहाँ अक्सर आया करो और इन लोगों के तौर-तरीके देखा करो। फिर उस ने अलादीन को शाही इमारतें और अन्य दर्शनीय स्थल दिखाए।

इस के बाद वह अलादीन को उस सराय में ले गया जहाँ वह ठहरा था। वहाँ कई व्यापारी भी ठहरे थे जिन से जादूगर ने मित्रता कर ली थी। जादूगर ने अलादीन को उन सब से मिलाया। सब ने एक साथ भोजन किया और सब लोग देर तक बातें करते रहे। शाम हुई तो अलादीन ने घर वापस जाना चाहा। जादूगर ने कहा कि तुम्हारा अकेले जाना ठीक नहीं है, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। यह कह कर वह उसे उस के घर ले आया। अलादीन की माँ ने अपने बेटे को बहुमूल्य वस्त्र पहने देखा तो अति प्रसन्न हुई और जादूगर की बड़ी प्रशंसा करने लगी और कहने लगी कि मेरा बेटा तो नालायक है फिर भी तुम इस पर इतने कृपालु हो। जादूगर बोला, यह अच्छा लड़का है। अच्छी राह चलेगा। कल तो शुक्रवार है, बाजार बंद रहेंगे। परसों मैं इस के लिए दुकान किराए पर लेने और उस में

माल रखने का काम करूँगा। कल सभी व्यापारी सैर-तमाशे को जाएँगे। मैं भी इसे बड़े बागों और उत्तम स्थानों की सैर के लिए जाऊँगा।

यह कह कर जादूगर अपनी सराय को वापस चला गया। अलादीन बड़ा खुश था कि उसे शहर के बाहर के बड़े बाग देखने को मिलेंगे। अभी तक उस ने अपने घर के आसपास की गलियाँ और बाजार ही देखे थे और शहर के बाहर के बागों या गाँवों में कभी नहीं गया था। दूसरे दिन सुबह ही से कपड़े पहन कर वह जादूगर की प्रतीक्षा करने लगा। काफी देर तक वह न आया तो अलादीन दरवाजे के बाहर बैठ कर उस की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में जादूगर आता दिखाई दिया। अलादीन ने घर के अंदर आ कर माँ से कहा कि चचा आ गया है और मैं उस के साथ जा रहा हूँ।

वह आगे बढ़ कर रास्ते ही में जादूगर से मिला। जादूगर ने उस से प्यार से बातें कीं और कहा कि मैं तुम्हें आज बड़े शानदार भवन और सुंदर उद्यान दिखाऊँगा। दोनों आगे बढ़े और जादूगर ने उसे सारी सुंदर इमारतें और बाग-बगीचे दिखाए। अलादीन उन सब को देख कर बहुत खुश हुआ।

चलते-चलते वे लोग काफी दूर निकल गए और उन्हें थकन महसूस होने लगी। किंतु जादूगर को अपने काम के लिए अलादीन को आगे ले जाना था इसलिए एक जल स्रोत के पास बैठ कर उस ने एक पोटली निकाली जिस में बहुत से स्वादिष्ट फल और कुलचे थे। उस ने आधे कुलचे अलादीन को दिए और कहा कि फल जितने भी चाहो तुम खाओ। इस बीच वह तरह-तरह की उपदेश की बातें भी करता रहा जिस से मालूम हो कि उस से बढ़ कर अलादीन का और कोई हितचिंतक नहीं है। वह कहने लगा, बेटे, देखो अब तुम बड़े हो गए हो। अब तुम्हें बालकों के साथ खेल-कूद करना शोभा नहीं देता। तुम्हें चाहिए कि समझदार लोगों का साथ करो और उन के रंग-ढंग सीखो। उन्हीं की राह पर चलने से तुम्हें मान-प्रतिष्ठा मिलेगी और तुम धनवान भी हो जाओगे। इसी तरह की बहुत-सी बातें उस ने कीं।

नाश्ता करने के बाद जादूगर फिर अलादीन को आगे ले चला और नगर से बहुत दूर पर वे लोग पहुँच गए। अलादीन इतनी दूर कभी भी नहीं आया था। वह थक भी गया था। वह पूछने लगा कि और कितनी दूर जाना है। जादूगर बोला, थोड़ी ही दूर पर ऐसा सुंदर बाग है जिसके आगे अभी तक देखे हुए बाग कुछ भी नहीं हैं। जब तुम उसे देखोगे तो स्वयं ही उस में दौड़ कर चले जाओगे। इसी तरह वह उसे दम-दिलासा देता हुआ बड़ी दूर ले गया। वह उस का जी बहलाने के लिए मनोरंजक कहानियाँ भी कहता जाता था। अंत में वे एक घने जंगल में जा पहुँचे जो दो पर्वतों के बीच में था।

यही वह स्थान था जहाँ वह दुष्ट जादूगर अलादीन को लाना चाहता था। यहीं उस का वह मनोरथ सिद्ध होना था जिसके लिए वह अफ्रीका से यहाँ तक भाँति-भाँति के कष्ट उठा कर आया था। यहाँ पहुँच कर वह बोला, यही वह सुंदर बाग है जिसका मैं ने जिक्र किया

था किंतु वह आसानी से दिखाई नहीं देता। उस के लिए तरकीब करनी पड़ती है। आग जला कर उस में सुगंधियाँ डालनी पड़ती हैं। तुम यहाँ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करो, मैं कहीं से आग ले कर आता हूँ। अलादीन ने लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और जादूगर ने कहीं से आग ला कर उन्हें सुलगाया। वे जलने लगीं तो उस ने कुछ सुगंधित वस्तुएँ आग में छोड़ीं और मंत्र पढ़ा। कुछ देर में भूचाल आया और जहाँ वे खड़े थे वहाँ लगभग एक वर्ग गज का पत्थर दिखाई दिया जिसके बीच में लोहे का एक कड़ा लगा हुआ था।

अलादीन डर कर भागने लगा तो जादूगर ने उसे पकड़ कर जोर से एक तमाचा उस के मुँह पर मारा जिस से उस के दाँतों से खून निकलने लगा। अलादीन रो कर कहने लगा, मैं ने क्या अपराध किया जिस पर आप ने मुझे मारा? जादूगर उसे पुचकारते हुए बोला, मैं तुम्हारे पिता की जगह हूँ।

मैं ने बगैर बात भी तुम्हें मार दिया तो क्या हुआ। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए ही यह सब कर रहा हूँ जिस से तुम बड़े आदमी बनो और तुम इसी से भाग रहे हो। अब मैं जैसा कहता जाऊँ वैसा ही करते चलो। इस से तुम्हारा लाभ ही लाभ होगा। इसी प्रकार उस ने बहुत कुछ दिलासा देने के लिए कहा, जिस से अलादीन आश्वस्त हो गया। जादूगर ने उसे फिर समझाया, तुमने देखा कि मेरे मंत्र पढ़ने से भूचाल आ गया। अब तुम समझ लो कि इस पत्थर के नीचे एक गुप्त वस्तु तुम्हारे लिए रखी है जिस से तुम अत्यंत धनवान बन जाओगे।

अलादीन ने कहा, वह कैसे होगा? जादूगर बोला, बात यह है कि तुम्हारे अलावा कोई और आदमी उस चीज को हाथ भी नहीं लगा सकता। तुम यह पत्थर उठाओ और जो रास्ता दिखाई दे उस पर चले जाओ। लेकिन पहले मुझ से कुछ जरूरी बातें समझ लो। मैं तुम से यह सब इसलिए कह रहा हूँ कि वह दुर्लभ वस्तु तुम्हारे ही लिए है। अलादीन ने जादूगर की बातें मानना स्वीकार किया। न करता तो भी कोई रास्ता नहीं था। जादूगर ने उसे फिर प्यार से गले लगाया और कहा, तुम बड़े अच्छे लड़के हो। यह देखो यह एक लोहे का छल्ला है। इसे पहन कर इस शिला को उठाओ तो वह आसानी से उठ आएगी। अलादीन बोला, मैं इसे अकेला कैसे उठाऊँगा, आप भी हाथ लगाएँ। जादूगर बोला, अगर मैं इसे हाथ लगा पाता तो खुद ही उठा लेता, तुम से उठाने को क्यों कहता। यह सब मंत्रों की बात है, तुम नहीं समझ सकोगे। तुम भगवान का नाम ले कर उठाओ तो, यह तुरंत उठ जाएगी।

अलादीन ने कड़े को पकड़ कर जोर लगाया तो शिला बगैर दिक्कत के उठ आई। नीचे तीन-चार हाथ गहरा गढ़ा जो नीचे गई थीं। जादूगर ने अलादीन से कहा, बेटे, अब जो कुछ मैं कहूँ उसे ध्यान से सुनना और याद रखना। जब तुम इस सीढ़ी से नीचे उतरोगे तो आगे जा कर एक बड़ा सुंदर भवन मिलेगा। उस में तीन समानांतर दालान हैं। वहाँ कई ताँबे की देगें रखी हैं। उनमें अशर्फियाँ और रुपए भरे हैं। लेकिन तुम उन्हें हाथ न लगाना क्योंकि आगे तुम्हारे लिए इस से भी अच्छी चीज मिलेगी। जब तुम पहले दालान में जाओ तो अपने कपड़ों को कस कर अपने बदन से बाँध लेना। दूसरे और तीसरे दालान में

भी इसी तरह कपड़ों को बदन से कसे हुए प्रवेश करना। खबरदार, दालान की दीवारों से तुम्हारा कोई अंग या तुम्हारा कपड़ा भी नहीं छूना चाहिए। इस बात का सब से पहले ध्यान रखना जरूरी है।

बदन या कपड़ा दीवारों से छुआ तो तुम वहीं भस्म हो जाओगे और तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए रोती-पीटती रह जाएगी।

जब तुम तीसरे दालान से आगे बढ़ोगे तो एक बाग मिलेगा जिस में तरह-तरह से फलदार वृक्ष हैं। तुम उन्हें न छूना। आगे जा कर तुम्हें एक चबूतरा मिलेगा जिस पर पचास सीढ़ियाँ चढ़ कर पहुँचा जाता है। चबूतरे पर एक कमरा है जिसके एक ताक में एक दीया जलता हुआ मिलेगा। तुम उसे उठा कर उस का तेल और बत्ती फेंक देना और उसे सावधानी से कपड़ों के अंदर रख लेना। तुम्हारे कपड़े खराब नहीं होंगे क्योंकि वह जादू का तेल है जो फौरन सूख जायगा। वापसी में तुम पेड़ों से जितने फल ले सको वह भी ले लेना। इस के बाद उसी तरह दालानों की दीवारों से बचते हुए वापस आ जाना। यह कहने के बाद जादूगर ने कुछ सोचा और लोहे का छल्ला जो उस से वापस लिया था उसे फिर दे दिया और कहा, इसे पहने रहोगे तो किसी प्रकार की उलझन में नहीं पड़ोगे। अब तुम बेझिझक इस गढ़े में कूद जाओ और जैसा मैं ने कहा है वैसा करो। इस से हम दोनों ही बड़े धनवान बन जाएँगे। तुम्हें फिर सारी जिंदगी कुछ करने की जरूरत नहीं रहेगी।

अलादीन हिम्मत करके गढ़े में कूद पड़ा। सीढ़ियों से उतर कर वह पहले दालान के सामने पहुँचा। वहाँ उस ने अपने कपड़े को कस कर अपने शरीर से लपेट कर बाँध दिया और डरते-डरते दालान में प्रवेश किया कि कहीं उस का कोई वस्त्र दीवार से न छू जाए। दूसरे और तीसरे दालान को भी उस ने इसी तरह डरते-डरते पार किया और फिर बाग में आ कर चैन की साँस ली। बाग के रास्ते से आगे बढ़ता हुआ वह ऊँचे चबूतरे पर बने कमरे में गया तो देखा एक ताक में एक दीया जल रहा है। उस ने उस का तेल-बत्ती फेंक कर उसे वस्त्रों के अंदर सीने से बाँध लिया। फिर वहाँ से उतर कर बाग के रास्ते वापस आने लगा और वहाँ के पेड़ों के फल तोड़े। वे दूर से तो लाल, पीले, हरे, आदि रंगों के फल लगते थे किंतु खेलने के लिए अपनी जेबों में तथा और जहाँ भी संभव हुआ उस ने यह रत्न भर लिए। उस ने अपनी ढीली आस्तीनों में भी यथासंभव फल भर लिए और कलाइयों के पास आस्तीनों को कस कर बाँध दिया ताकि फल गिर न पड़ें। अब यह हालत हो गई कि अंदर रखे रत्नों के कारण उस के कपड़े चारों ओर से फूल गए। किसी तरह दालान की दीवारों से बचता-बचाता एक-एक कदम सँभाल कर रखता हुआ वह सीढ़ियाँ चढ़ कर गढ़े में पहुँचा। वहाँ जा कर उस ने आवाज दी, चचा, मैं दीया ले कर आ गया हूँ, तुम मुझे हाथ बढ़ा कर बाहर निकालो।

जादूगर ने कहा, बेटा, मैं तुम्हें अभी निकालता हूँ लेकिन पहले तुम मुझे दीया दे दो। अलादीन ने कहा, मैं बाहर आ कर ही दीया निकाल सकता हूँ, इस जगह नहीं निकाल सकता। तुम मुझे बाहर निकालो। जादूगर ने कहा, नहीं, पहले चिराग दो, फिर मैं तुम्हें बाहर निकालूँगा। अब यही बहस शुरू हो गई। अलादीन कहता था कि बाहर निकालो तब

चिराग दूँगा, जादूगर कहता था पहले चिराग दो फिर बाहर निकालूँगा। दरअसल अलादीन अपनी कठिनाई बता भी नहीं पा रहा था। चिराग उस ने सीने के पास रख कर उस के चारों ओर फल भर लिए थ। वैसे भी उस की आस्तीनें फलों के भार से फूली हुई थीं और गढ़े में इतनी जगह नहीं थी कि वह फलों (रत्नों) को बाहर निकाल कर सीने के पास से चिराग निकालता। गढ़े में जगह कम होने से उस का दम घुटा जा रहा था और वैसे भी थकावट से उस का बुरा हाल था।

जादूगर की समझ में भी यह बात न आई और वह अलादीन की बातों को उस की जिद समझ कर इतना क्रुद्ध हुआ कि जोर से चिल्लाया, तू मुझे चिराग नहीं देता तो यहीं चिराग को लिए मर जा। यह कह कर उस ने मंत्र पढ़ा जिस से शिला अपने आप उठ कर गढ़े के मुँह पर आ गई और उस के ऊपर मिट्टी भी इस तरह बराबरी से बिछ गई कि शिला का कोई चिह्न ऊपर से नहीं दिखाई देता था। जादूगर को चिराग तो नहीं मिला जिसे पाने के लिए उस ने यह सारा खटराग किया था किंतु उसे यह डर जरूर हुआ कि अलादीन गढ़े में मर जायगा और उस की मौत के लिए उसी को पकड़ा जाएगा। कारण यह था कि अलादीन की माँ रोती-पीटती और कई दूसरे लोगों ने भी उस के साथ अलादीन को वीरान जंगल की ओर जाते देखा था। वह सीधा अपनी सराय में गया और उसी दिन अपना सामान उठा कर अफ्रीका के लिए रवाना हो गया।

यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि यह आदमी न तो मुस्तफा का भाई था न अलादीन का चचा। वह अफ्रीका का ही निवासी था। उस ने चालीस वर्ष तक वहाँ पर जादू सीखा। इस के अलावा ज्योतिष, रमल आदि कई विद्याएँ भी उस ने पढ़ीं जिसके कारण उसको गुप्त रहस्यों की जानकारी हो गई थी। इन्हीं विद्याओं के बल पर उसे ज्ञात हुआ कि चीन देश में एक स्थान पर एक ऐसा जादू का चिराग है जिसके स्वामी के अधीन कई जिन्न हो जाते हैं। इसी कारण वह अफ्रीका से इतनी लंबी यात्रा कर के चीन आया था और अपनी रहस्यमयी विद्याओं से पता लगाते-लगाते अलादीन के नगर में पहुँचा था। इन विद्याओं से उसे यह भी मालूम हुआ कि उस चिराग के पास किसी पूर्णतः निष्कपट बालक के अलावा और कोई नहीं जा सकता, कम से कम वह जादूगर खुद तो हरगिज नहीं जा सकता था। एक बात यह भी थी कि जादूगर खुद मोटा-ताजा था और चाहे जितने कसे कपड़े पहनता दालानों की दीवारों से वह छू ही जाता और वहीं भस्म हो कर रह जाता। उस ने अलादीन को इसीलिए पटाया था और उस पर इतना धन इसलिए व्यय किया था कि अलादीन के द्वारा उसे चिराग की प्राप्ति हो जाए। उस का यह भी इरादा था कि अलादीन से चिराग ले कर अपने मंत्रबल से उसे वहीं मार डाले और उस की आकस्मिक मृत्यु की बात कह कर निर्दोष बना हुआ अफ्रीका चला जाए।

जब अलादीन ने उसे चिराग न दिया, या वह चिराग न दे सका तो जादूगर निराशा और क्रोध के कारण यह भी भूल गया कि उस का दिया हुआ जादुई छुल्ला अभी अलादीन के पास है। जादूगर को शायद खुद उस छुल्ले की इतनी जरूरत भी न थी, इसलिए वह छुल्ले को भूल गया।

किंतु अलादीन का जीवन इसी छल्ले के कारण बचा। जादूगर तो मंत्रबल से गढ़े पर शिला रख कर चला गया, अलादीन यही समझता रहा कि मेरा चचा बाहर खड़ा है। वह लगातार रोता-पीटता और चचा की मनुहार करता रहा कि मुझे वापस निकाल लीजिए, मैं किसी तरह सीने के ऊपर से चिराग निकाल कर आप को दे दूँगा।, इस के बाद ही मुझे गढ़े से निकालिएगा। लेकिन अब उस की कौन सुनता। जादूगर तो इतने में मीलों आगे चला गया था। बेचारा अलादीन घंटों तक चिल्लाता रहा जब तक प्यास ने उस का गला बंद नहीं कर दिया।

अंत में फिर वह सीढ़ी से उतर कर दालान के बाहर बैठ गया। यहाँ कम से कम उस के हाथ-पाँव हिलाने की जगह तो थी। वह यह देख कर और परेशान हुआ कि दालान, बाग आदि धीरे-धीरे गायब होने लगे क्योंकि वे सब जादू के खेल थे। हाँ, उस के पास चिराग और बटोरे हुए रत्न जैसे के तैसे थे। किंतु अब वह इनका क्या करता। वह अँधेरे में इधर-उधर भटकने लगा और फूट-फूट कर रोने लगा। अंत में वह एक जगह थक कर बैठ गया। उस ने सोना चाहा किंतु उसे नींद भी नहीं आई। एक पूरा दिन इसी तरह गुजर गया हालाँकि अलादीन को दिन-रात का अंतर क्या मालूम होता।

अब उस ने समझ लिया कि अब मुझे यहीं भूखे-प्यासे मर जाना है और मेरी माँ को मेरी कोई खबर नहीं लगेगी और वह भी रो-रो कर मर जाएगी। वह निपट निराशा में अपने हाथ मलने लगा। इसी में उस के हाथ का छल्ला किसी चीज से रगड़ खा गया और इस के साथ ही एक महाभयानक जिन्न उस के सामने प्रकट हो गया और बोला, मेरे लिए क्या आज्ञा है? मैं आप का गुलाम हूँ। अलादीन भय के मारे कुछ बोल नहीं सका तो जिन्न ने फिर कहा, स्वामी, आप डरें नहीं। मैं उस आदमी का सेवक हूँ जो यह लोहे का छल्ला पहने हुए है। उस की आज्ञा पर मैं सब कुछ कर सकता हूँ। अलादीन जीवन से निराश तो हो ही चुका था, डर को छोड़ कर बोला, अगर ऐसे ही बलवान हो तो मुझे यहाँ से निकाल कर ऐसी जगह खड़ा कर दो जहाँ से मैं अपने घर को जा सकूँ। जिन्न ने एक क्षण ही में उसे उस के सारे सामान के साथ बाहर निकाल दिया और गायब हो गया।

अलादीन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या हो रहा है। उस ने आँखें मल कर चारों ओर देखा तो पहचान गया कि यह वही रास्ता है जिस से वह अपने नगर से आया था। बहुत देर तक इसी आश्चर्य में पड़ा रहा कि उस अँधेरे से मैं किस प्रकार बाहर निकला और वह महाभयानक आदमी कौन था जो स्वयं को मेरा दास कहता था। लेकिन अधिक सोच-विचार से लाभ भी क्या था। वह दो दिन का भूखा-प्यासा था और यह भी भूल गया था कि रत्नों को फेंक-फाक कर अपना बोझ हलका करे। उसी तरह लदा-फँदा धीरे-धीरे रेंगता हुआ-सा अपने घर की ओर चलने लगा और दो-तीन घंटे में वहाँ पहुँच गया।

घर पहुँच कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। किंतु वह माँ से कुछ कह न सका, भूख, प्यास और कमजोरी की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़ा। उस की माँ भी उस की चिंता में दो दिन से सोई न थी। उसे बेहोश होते देख कर दौड़ी और उस के मुँह पानी के छींटे दे कर और पंखा करके उसे थोड़ी देर में होश में लाई। होश में आ कर उस ने माँ से कहा कि कुछ खाने को

लाओ, मैं ने दो-तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। खाना तैयार था और उस की माँ उसे ले भी आई और बोली, बेटा, थोड़ा-सा खाना। बहुत भूख में एकदम बहुत-सा खा लेने से मृत्यु तक हो सकती है। अलादीन ने थोड़ा-सा खा कर थोड़ा पानी पिया और बोला, मैं भगवान की दया ही से जीवित बचा। जिस आदमी को तुम अपना देवर समझे थी और जिसके हाथ में तुमने मुझे सौंपा था उस ने मेरे साथ बड़ी दुश्मनी की और अपनी समझ में मुझे जान से मार कर चला गया था। वह मुझ से झूठा स्नेह दिखा कर मुझ से अपना कोई काम निकलवा कर फिर मेरी हत्या कर देना चाहता था।

थोड़ी देर आराम करके अलादीन ने विस्तृत रूप से अपने ऊपर बीती हुई बातें अपनी माँ को बताईं। यह सुन कर उस की माँ ने जादूगर को बहुत गालियाँ दीं और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि अलादीन सही-सलामत घर लौट आया। उसे अलादीन ने फल लगनेवाले रत्न भी दिए। वह बेचारी भी उनका मूल्य नहीं जानती थी इसलिए उस ने उन्हें एक ओर रख दिया। किंतु उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि अँधेरे में वे रोशनी देने लगते हैं। खैर, इन बातों पर अधिक ध्यान देना उस ने जरूरी न समझा। बेटे के अलग होने पर वह भी दो रातों से नहीं सोई थी और रोते-रोते निढाल हो गई थी। अब बेटा वापस आ गया तो वह घर के एक कोने में लेटी रही और गहरी नींद सो गई।

अलादीन भी सो गया और सारी रात सोता रहा। सुबह वह जागा तो भूख से उस का बुरा हाल हो गया था। उस ने माँ से कहा कि मुझे कुछ खाने को दो। वह बोली, इस समय तो घर में कुछ भी नहीं है। कल मैं ने कुछ सूत काता था, उसे ले कर बाजार जाती हूँ। उसे बेच कर कुछ खाने को खरीदूँगी। अलादीन को कुछ याद आया। उस ने कहा, सूत बाद में बेच लेना। अभी तो वह ताँबे का दीया ले जाओ जो मैं लाया हूँ। उसे बेच कर कुछ ले आओ। बुढ़िया बोली, अच्छी बात है। लेकिन यह दीया गंदा हो रहा है। मैं इसे साफ करके चमका दूँ तो इस के अधिक दाम मिलेंगे।

यह कहने के बाद बुढ़िया चिराग को साफ करने बैठ गई। उस ने पानी और रेत से उसे साफ करना शुरू किया। ज्यों ही उस ने दीये को जोर से रगड़ा कि एक महाभयानक विशालकाय जिन्न धरती फाड़ कर निकला और बादल की गरज जैसी आवाज में बोला, तुम मुझे क्या आज्ञा देती हो? मैं उस व्यक्ति का दास हूँ जिस के पास यह चिराग होता है। और केवल मैं ही नहीं, बहुत-से दूसरे जिन्न भी उस व्यक्ति के अधीन होते हैं जिस के पास यह चिराग होता है।

बुढ़िया उस भयानक जिन्न को देखते ही डर के मारे बेहोश हो गई। डर तो अलादीन को भी लगा किंतु चूँकि वह पहले भी अँगूठी रगड़ने पर सामने आनेवाले जिन्न को देख चुका था इसलिए वह बेहोश नहीं हुआ। उस ने एक हाथ से अपनी गिरती हुई माँ को सँभाला और दूसरे हाथ में चिराग उठा लिया। फिर उस ने जिन्न को कहा, मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे तुरंत भोजन चाहिए। जिन्न यह सुन कर गायब हो गया और दो क्षणों बाद एक बड़ा-सा सोने का थाल अपने सिर पर रख कर प्रकट हो गया। उस ने थाल को भूमि पर रखा। उस में बारह चाँदी की तश्तरियाँ थीं जिन में स्वादिष्ट व्यंजन थे। इस के अलावा यह दोनों हाथों

में दो शीशे की सुराहियाँ शराब की और दो चाँदी के गिलास भी लिए था। यह समान रख कर वह गायब हो गया।

अलादीन ने माँ के मुँह पर पानी की छींटे दिए जिस से वह होश में आ गई। अलादीन ने कहा, अम्मा, भय छोड़ कर उठ बैठो। जल्दी से चल कर खाना खा लो नहीं तो वह ठंडा हो जाएगा। वह उठी तो तरह-तरह से स्वादिष्ट व्यंजन देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी कि इतना अच्छा खाना ऐसे बढ़िया बरतनों में किस ने भेज दिया। कहीं ऐसा तो नहीं है कि बादशाह ने हमारी दशा पर तरस खा कर हमें यह चीजें भिजवाई हों। अलादीन ने कहा, अब सोच-विचार मत करो, जल्द आ कर खाना खा लो। फिर मैं तुम्हें इस का पूरा-पूरा हाल बताऊँगा।

वे दोनों रुचिपूर्वक भोजन करने लगे। बुढ़िया यह भी सोचने लगी कि यह बरतन किस चीज के बने हैं क्योंकि उस के खयाल में नहीं आ सकता था कि खाने के बरतन सोने-चाँदी के हो सकते हैं। पेट-भर खाने के बाद भी बहुत-सा भोजन बच गया जिसे उन दोनों ने उठा कर रख दिया और तीन दिन तक खाते रहे। उस दिन खाना खाने के बाद अलादीन ने बताया कि यह भोजन वही जिन्न लाया था जिसे देख कर तुम डर के मारे बेहोश हो गई थीं। जिसके हाथ में वह दीया होता है उस के अधीन वह जिन्न और उस के अतिरिक्त कई और जिन्न भी होते हैं।

उस की माँ ने कहा, मुझे तो इस बात पर विश्वास नहीं होता। और ऐसा हो तो भी इस दिए को किसी को दे डालो या फेंक दो। मैं उस भयानक जिन्न को नहीं देखना चाहती। तुम इस छल्ले को भी निकाल कर फेंक दो। हमें जिन्नों को बुला कर क्या करना है। हम अपने वैसे ही सीधे-सादे अच्छे हैं। अलादीन ने कहा, वाह, तुम भी खूब बात करती हो। छल्ले के जिन्न के कारण तुम मुझे जीता-जागता देख रही हो। चिराग के जिन्न ने भी स्वादिष्ट भोजन ला कर हमारी भूख मिटाई है। तुम यह भी सोचो वह जादूगर, जो मेरा चचा बना हुआ था, इसी चिराग के लिए अफ्रीका से यहाँ की यात्रा करके आया था और मुझे उस गुप्त स्थान में इसी चिराग को लाने को भेजा था।

माँ को अब भी असंतुष्ट देख कर अलादीन ने कहा, तुम इसे या इस के जिन्न को नहीं देखना चाहती तो मैं इसे उठा कर घर के एक अँधेरे कोने में रख दूँगा और अवसर पड़ने पर इसका लाभ उठाऊँगा। तुम भी किसी से इसका उल्लेख न करना। अगर हमारे पड़ोसी इस बात को जान गए तो वे हम से ईर्ष्या करने लगेंगे ओर संभव है कि कोई हमें हानि पहुँचाने के लिए बादशाह से शिकायत कर दे। अब तुम इस दीये को बिल्कुल भूल जाओ, मैं इसे तुम्हारी नजरों से छुपा कर रखूँगा। लेकिन यह जादू का छल्ला मैं अपनी उँगली से अलग नहीं कर सकता। मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि इसी छल्ले के कारण मेरी जान बची है वरना मैं गढ़े के अंदर ही घुट-घुट कर मर गया होता। क्या मालूम आगे भी कोई मुसीबत पड़े तो इसी की मदद से मैं उस से छुटकारा पाऊँ। अलादीन की माँ ने कहा, अच्छा भाई, जो चाहो सो करो लेकिन यह ध्यान रखना कि तुम्हारे जिन्न मेरे सामने न आएँ, वरना मैं डर के मारे मर ही जाऊँगी।

इस के बाद माँ-बेटे ने दो दिनों तक बचे हुए भोजन से काम चलाया। इस के बाद फिर भोजन का प्रश्न उठा तो माँ की सलाह से अलादीन ने एक चाँदी की तश्तरी ली और उसे बेचने के लिए बाजार में गया। उस की भेंट एक यहूदी से हुई जो सोने-चाँदी की चीजों का व्यापार करता था। यह यहूदी महाधूर्त था। जो तश्तरी अलादीन के पास थी वह बहुत बड़ी थी और उस पर ऐसी बढ़िया नक्काशी थी कि उस का दाम बहुत अधिक था। अलादीन तो उस का दाम जानता ही नहीं था। यहूदी ने उस से पूछा, कि तुम इसका क्या लोगे तो अलादीन बोला कि जो तुम ठीक समझो वह दे दो, मुझे तो इसका दाम मालूम नहीं है। यहूदी ने देखा कि लड़का बिल्कुल बुद्धू है तो उस ने कहा, मैं इसे एक अशर्फी में ले सकता हूँ। यद्यपि उस का दाम कई अशर्फियाँ थीं जैसा अलादीन को बाद में मालूम हुआ, किंतु अलादीन ने बड़ी खुशी से यह मंजूर कर लिया। यहूदी अब यह सोच कर पछताने लगा कि यह लड़का इतना मूर्ख है तो उसे एक अशर्फी से भी कम क्यों नहीं दिया। कुछ देर विचार करने के बाद वह अलादीन के पीछे दौड़ा कि उस से अपनी अशर्फी ले कर और सस्ता सौदा करे किंतु अलादीन इतनी दूर निकल गया था कि यहूदी की समझ में नहीं आया कि वह किधर गया।

अलादीन के अशर्फी भुना कर कुछ पैसों से भोजन लिया और घर आ कर शेष रकम माँ को दे दी कि उस से अनाज आदि खाद्य वस्तुएँ ला कर खाना पकाने का इंतजाम करे। कई दिनों तक इस तरह काम चला, फिर जब सारा सामान खत्म हो गया तो अलादीन दूसरी रकाबी यहूदी के पास ले गया। पहले यहूदी ने उस के एक अशर्फी से भी कम दाम लगाए किंतु अलादीन झिझका। यहूदी को डर हुआ कि कहीं अलादीन किसी और से उस का दाम न पूछ बैठे। इसलिए उस ने कहा, यह एक अशर्फी की तो नहीं है फिर भी जो दाम मैं एक बार दे चुका हूँ उस में कमी नहीं करूँगा। यह कह कर उस ने उसे एक अशर्फी दे दी।

अलादीन का काम इसी तरह चलता रहा। जब अशर्फी से खरीदा हुआ सामान खत्म हो जाता तो वह एक रकाबी ले कर फिर उसी यहूदी के हाथ बेच आता। इसी तरह धीरे-धीरे सारी चाँदी की रकाबियाँ खत्म हो गईं। फिर वह सोने का थाल ले कर उसी यहूदी के पास गया। उस थाल का मूल्य सैकड़ों अशर्फियों का था किंतु धूर्त यहूदी व्यापारी ने उस के बदले दस अशर्फियाँ दीं। अलादीन उसी से खुश हो गया।

जादूगर के दो दिन के साथ का एक अच्छा असर यह हुआ कि अलादीन खेल में समय बरबाद करने के बजाय बाजार में जा कर व्यापारियों से बातें करने लगा और उन से क्रय-विक्रय के ढंग सीखने लगा। यद्यपि वे लोग उसे निर्धन बालक जान कर मुँह न लगाते थे किंतु वह चुपचाप ही उनकी बातें सुन कर व्यापार और लेन-देन के व्यवहार की कुछ बातें सीखने लगा। एक-आध व्यापारी उसे पहचान भी गए और कभी-कभी फुरसत में उस के साथ बात भी करने लगे।

थाल की दस अशर्फियाँ भी उस से खर्च हो गईं तो अलादीन ने फिर जादू के चिराग को हलके से रगड़ा। वह जिन्न सामने आ गया और नम्रतापूर्वक बोला, स्वामी, मेरे लिए क्या आज्ञा है? मैं और मेरे अन्य कई साथी जिन्न हर समय उस आदमी की सेवा में तत्पर

रहते हैं जिस के पास यह दीया है। आप क्या चाहते हैं? अलादीन ने कहा, मैं भूखा हूँ। पहले की तरह मेरे लिए भोजन लाओ। जिन्न यह सुन कर गायब हो गया और दो क्षण ही में पहले जैसा स्वादिष्ट व्यंजनों से भरा थाल और शराब की सुराहियाँ और चाँदी के गिलास ले कर उपस्थित हो गया और सारा सामान जमीन पर रख कर गायब हो गया।

इस समय अलादीन की माँ बाहर गई हुई थी। लौट कर घर में खाद्य पदार्थों से भरा हुआ थाल देखा तो समझ गई कि अलादीन ने फिर चिराग के जिन्न की मदद ली है। किंतु इस बार वह कुछ न बोली। दोनों ने उस समय और उस के दो दिन बाद तक वही भोजन किया। फिर पहले की तरह अलादीन एक चाँदी की रकाबी ले कर बाजार गया ताकि उसे यहूदी के हाथ बेचे।

रास्ते में एक ईमानदार सर्राफ की दुकान पड़ती थी। अलादीन जब कपड़ों में रकाबी छुपाए उधर से निकला तो सर्राफ ने उसे बुला कर कहा, बेटे, मैं ने कई बार देखा है कि तुम वस्त्रों में कुछ छुपा कर यहूदी व्यापारी के पास जाते हो और फिर बगैर उस वस्तु के वापस आते हो। मालूम होता है कि तुम उस के हाथ कोई चीज बेचा करते हो। शायद तुम्हें यह नहीं मालूम की वह यहूदी एक नंबर का बेईमान है, बाजार में उस से बड़ा ठग कोई नहीं है। उस से एक बार भी सौदा करके लोग उस की धूर्तता को समझ लेते हैं और तुम बराबर उसी से व्यवहार रखते हो। वह निश्चय ही तुम्हें बराबर ठगता रहेगा। तुम अगर कोई चीज बेचते हो तो मुझे दिखाओ। मैं तुम्हें उस चीज का ठीक मूल्य दूँगा और अगर वह चीज इतनी कीमती है कि मैं खुद उसे खरीद न सकूँ तो बाजार में बड़े व्यापारियों के पास जा कर उसे सही दामों पर बिकवा दूँगा।

अलादीन ने यह सुन कर रकाबी अपने कपड़ों से निकाली और सर्राफ को दिखाई। उस ने उसे परख कर कहा, यह तो बहुत मूल्यवान वस्तु है। क्या तुमने ऐसी रकाबियाँ यहूदी के हाथ बेची हैं? और बेची हैं तो उस ने क्या दाम लगाए हैं? अलादीन ने कहा, ऐसी बारह रकाबियाँ मैं यहूदी के हाथ बेच चुका हूँ और उस ने हर रकाबी की कीमत एक अशर्फी दी है। यहूदी ने कहा, बड़ा अनर्थ हो गया। यह रकाबियाँ बहत्तर-बहत्तर अशर्फियों की हैं। मैं तुम्हें इस के बदले में बहत्तर अशर्फियाँ देता हूँ। तुम और जगह जा कर पूछ लो। अगर किसी ने इस से अधिक मूल्य लगाया तो मैं तुम्हें इसका दुगुना दूँगा। लेकिन तुम यह बात यहूदी से न कहना वरना वह मुझ से झंझट करेगा। अलादीन ने उसे धन्यवाद दिया और किसी और जगह सौदा न किया। कई वर्षों तक माँ-बेटे का काम इस धन से बड़ी आसानी से चला। वे चाहते तो जिन्न से असंख्य धन ले सकते थे किंतु उन्हें उस से अधिक की जरूरत ही महसूस नहीं हुई।

इस अरसे में अलादीन अक्सर सर्राफे और जौहरी बाजार में जाया करता और तरह- तरह के रत्नों को देखा करता। अब वह समझ गया कि अपने घर में उस ने जो चीजें पत्थर के फल समझ कर रक्खी थीं वे पत्थर नहीं बल्कि ऐसे रत्न हैं जिन के मुकाबले में जौहरियों की दुकानों में रक्खे हुए रत्न कोई हैसियत नहीं रखते। फिर भी उस की हिम्मत उन का सौदा करने की न हुई, क्योंकि फौरन यह सवाल उठता कि इतने बड़े रत्न कहाँ से आए।

उस ने इस बारे में माँ से भी कुछ नहीं कहा। वह या तो इस पर विश्वास न करती या दूसरों से इसका उल्लेख कर देती।

एक दिन अलादीन बाजार में घूम रहा था। उस ने सुना कि बादशाह की तरफ से मुनादी हो रही है कि कल न कोई व्यापारी अपनी दुकान खोले न कोई आदमी बाजार में या सड़कों पर दिखाई दे। कल शहजादी बदर बदौर शहर के बड़े हम्माम में स्नान करेगी और फिर अपने महल को जाएगी। अलादीन स्वभाव से बेफिक्रा तो था ही, उस की इच्छा होने लगी कि किसी तरह उस शहजादी को देखना चाहिए जिसके परदे के लिए इतना प्रबंध हो रहा है। उस ने हम्माम के सामने का एक मकान एक दिन के लिए किराए पर लिया और दूसरे दिन मुँह अँधेरे ही उस में जा कर किवाड़ बंद कर लिए और वहीं बैठ कर किवाड़ों की दरारों से हम्माम की ओर देखने लगा। कुछ देर बार अपनी दासियों के साथ शहजादी आई और हम्माम के बाहर उस ने अपने चेहरे से नकाब उतारा और भारी कपड़े भी उतारे और हम्माम में चली गई।

अलादीन ने उस समय तक अपनी बूढ़ी और कुरूप माँ के अलावा कोई स्त्री देखी ही नहीं थी और जानता ही नहीं था कि स्त्रियों का सौंदर्य कैसा होता है। यहाँ उस के सामने स्वयं राजकुमारी आ गई थी जिस से बढ़ कर सारे चीन देश में कोई सुंदरी नहीं थी। यह उस के अनिंद्य सौंदर्य को देख कर गश खा कर गिर पड़ा। कुछ देर में वह होश में आया तो सोचा कि अब यहाँ ठहरने से कोई लाभ नहीं क्योंकि शहजादी की एक दासी ने उस से कहा था, इस समय आप ने नकाब बाहर उतार दिया तो कोई बात नहीं किंतु हम्माम से खुले मुँह बाहर न निकलिएगा। अलादीन ने दरवाजे में अंदर से जंजीर लगाई और घर के पिछवाड़े से निकल कर छोटी गलियों से छुपता-छुपाता अपने घर पहुँच गया।

घर जा कर वह मुँह ढाँप कर लेटा रहा क्योंकि वह शहजादी के प्रेम में जकड़ चुका था और विरह-व्यथा को सहन नहीं कर पा रहा था। वह रह-रह कर ठंडी साँसें भी भरता था। उस की माँ को देख कर आश्चर्य हुआ कि कल तक तो लड़का ठीक-ठाक था, आज इसे क्या हो गया है। उस ने पूछा, बेटे, क्या तुम्हारी तबीयत खराब है जो इस तरह लेटे हुए आहें भर रहे हो? अलादीन ने कोई उत्तर नहीं दिया। माँ ने उस समय अधिक पूछताछ नहीं की क्योंकि उसे भोजन भी बनाना था। वह भोजन बनाती रही और अलादीन उसी तरह लेटा हुआ आहें भरता रहा। उस की माँ खाना बना कर उस के पास लाई और दोनों खाने लगे किंतु अलादीन ने दो-चार कौर ही खाए और खाने से हाथ खींच लिया। उस की माँ ने फिर पूछा, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं जो खाना नहीं खा रहे हो? अलादीन ने कुछ बहाना बना दिया और अपनी व्यथा माँ से न कही।

शाम के खाने के समय भी उस का यही हाल रहा तो उस की माँ ने फिर उस के दुख का कारण पूछा। उस ने फिर चुप साध ली। माँ भी पूछते-पूछते थक गई थी और झुँझला कर चुप हो रही कि अपना कष्ट नहीं बताता तो न बताए। अलादीन रात भर शहजादी की याद में तड़पता रहा। लेकिन अब उस की विरह-व्यथा उस के बर्दाश्त के बाहर हो गई थी। वह उठ कर अपनी माँ के पास जा बैठा जो चर्खा कात रही थी। उस ने कहा, अम्मा,

तुम कल से मेरी तकलीफ के बारे में पूछ रही हो और मैं छुपाता रहा हूँ। अब मैं तुम से अपना कष्ट कहता हूँ। मुझे कोई बीमारी नहीं है और न मुझे किसी हकीम के पास जाने की जरूरत है। कल शहजादी के हम्माम में जाने की परसों मुनादी हुई थी। कल मैं ने एक जगह छुप कर शहजादी का अनुपम सौंदर्य देखा। उसे देखते ही मेरे मन की ऐसी दशा हो गई जिसे मैं बता नहीं सकता। मैं उस के विरह में व्याकुल हूँ। यही मेरी बीमारी है और इस बीमारी का इलाज सिर्फ यही हो सकता है कि मैं बादशाह से प्रार्थना करूँ कि वह अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ कर दे।

उस की माँ यह सुन कर हँसने लगी और बोली, अलादीन, तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। मेरे सामने कहा सो कहा, और किसी के सामने ऐसी पागलपन की बात न करना। अलादीन ने कहा, मैं जानता हूँ कि तुम यही कहोगी। मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ और मैं राजकुमारी से अवश्य विवाह करूँगा। उस की माँ ने कहा, लड़के, तू क्या बेकार की बातें कर रहा है। क्या तुझे याद नहीं रहा कि तू एक मामूली दरजी का बेटा है और तेरा पिता बादशाह की प्रजा में एक निर्धन व्यक्ति था? तुझे क्या यह बात भी नहीं मालूम कि बादशाह लोग विवाह-संबंध या तो बादशाह में करते हैं या फिर मंत्री आदि के कुलीन घरानों में? अगर वे ऐसा न करें तो उनकी प्रजा में कुछ प्रतिष्ठा न रहे और राज्य का प्रबंध भी चौपट हो जाए।

अलादीन ने कहा, अम्मा, जो कुछ तुम ने कहा वह सब ठीक है लेकिन मैं राजकुमारी से विवाह किए बगैर नहीं रह सकता। तुम्हें शाही महल में जा कर शहजादी के साथ मेरे विवाह का प्रस्ताव करना ही पड़ेगा। शहजादी से मेरा विवाह नहीं हुआ तो मैं जीवित न रह सकूँगा। वैसे भी उस के वियोग में आधा तो मर ही चुका हूँ और उस के बगैर मैं जीवन वृथा भी समझता हूँ। उस की माँ यह सुन कर बहुत घबराई। वह कातर हो कर कहने लगी, देखो बेटे, हमें वही काम करना चाहिए जो हमें शोभा दें। और वही बातें कहनी चाहिए जो हमारे मुँह से अच्छी लगें। कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली। तुम किसके सपने देख रहे हो। अगर अपनी हैसियत के किसी परिवार की कन्या होती तो मैं बगैर झिझक तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव ले कर जाती। लेकिन इतने बड़े बादशाह के सामने ऐसा प्रस्ताव रखने की मेरी हिम्मत कैसे हो सकती है। मेरी तो हालत यह है कि तुम्हारा बाप भी मुझ पर बिगड़ता था तो मैं डर के मारे काँपने लगती थी और तुम कह रहे हो कि मैं बादशाह से बात करूँ और वह भी ऐसे विषय पर जिसे मानने के लिए दुनिया में कोई भी तैयार नहीं होगा।

अलादीन इस पर भी अपनी जिद पर अड़ा रहा और रोता-पीटता रहा तो उस की माँ ने कहा, अच्छा, मैं बादशाह के पास चली जाऊँगी। लेकिन बड़े लोगों विशेषत: बादशाहों के पास कोई जाता है तो खाली हाथ नहीं जाता, कुछ भेंट ले कर जाता है। बादशाह के पास जाने के लिए कोई भेंट भी होनी चाहिए जो उस की प्रतिष्ठा के अनुकूल हो। मेरे पास ऐसी कौन-सी चीज हो सकती है जो बादशाह को भेंट कर सकूँ? तुम क्यों ऐसी बात पर जिद कर रहे हो जो हो ही नहीं सकती। तुम शहजादी का खयाल दिल से निकाल दो।

अलादीन ने कहा, अम्मा, तुम क्या कर रही हो? शहजादी का प्रेम मेरे हृदय में इतना गहरा जम चुका है कि या तो शहजादी का आलिंगन करूँगा या मृत्यु का। मैं तुम से विनय करता हूँ कि अगर तुम्हें मेरे जीवन से जरा-सा लगाव है तो तुम यह ऊहापोह छोड़ कर बादशाह से बात करने चली जाओ। मेरा मन कहता है कि तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। और जो तुम ने यह कहा कि तुम्हारे पास बादशाह को भेंट देने योग्य कोई वस्तु नहीं है तो मैं उस का उपाय भी बताता हूँ। जिन अलभ्य रत्नों को मैं गुफा से लाया था और जिन्हें तुम अभी तक रंग-बिरंगे पत्थर समझे हुए हो वे अमूल्य हैं। पहले मैं भी नहीं जानता था कि वे क्या चीज हैं किंतु इतने वर्षों से बाजार में घूम कर मैं ने देख लिया है कि यहाँ के जौहरियों की दुकानों में जितने रत्न हैं उन सभी से कहीं बड़े और चमकदार मेरे लाए हुए रत्न हैं। इनसे बढ़ कर बादशाह को कोई भी व्यक्ति कुछ भेंट नहीं दे सकता। तुम अंदर जा कर उन रत्नों को उठा लाओ। मैं उन्हें रगड़ कर और चमका दूँगा और आकार तथा रंग के अनुसार उन्हें एक चीनी पात्र में सजा दूँगा जिस से वे बादशाह के सामने पेश किए जाए। तुम देखोगी तो खुद ही उन्हें पसंद करोगी।

अत: अलादीन की माँ अंदर के ताक से उन ढेर सारे रत्नों को उठा लाई। अलादीन ने उन्हें रगड़ कर चमकाया और फिर चीनी के एक सुंदर पात्र में सजा कर रखा तो वे सूर्य के प्रकाश में ऐसी चमक देने लगे कि उन पर निगाह नहीं ठहरती थी। अलादीन ने अपनी माँ से कहा, अब इन्हें देखो। तुम विश्वास करो कि इनसे बढ़ कर बादशाह को कोई और भेंट नहीं दी जा सकती। अब तुम बताओ कि तुम्हें बादशाह के पास जाने में क्या दिक्कत है।

यद्यपि रत्न बहुत ही जगमगा रहे थे तथापि बुढ़िया उनका मूल्य न जानने के कारण तकरार करती रही। वह बोली, इन बेकार पत्थरों में क्या रखा है? इस भेंट से बादशाह कैसे खुश हो सकते हैं? तेरा मनोरथ पूरा न होगा और मैं यूँ ही वापस आ जाऊँगी। मैं जो कुछ कहती हूँ वही होगा। फिर मान लो कि मैं ने बादशाह से तेरे विवाह का प्रस्ताव किया भी तो वह मेरी बात पर हँसेगा और मुझे पागल समझ कर दरबार से धक्के दे कर निकलवा देगा। यह भी संभव है कि कुपित हो कर मुझे और तुम्हें दोनों को मरवा डाले। बेटा, मैं फिर कहती हूँ कि तुम यह नादानी छोड़ दो और अपने जैसे किसी परिवार की लड़की से शादी कर लो।

अलादीन इस पर भी अपनी जिद पर अड़ा रहा तो उस की माँ ने कहा, अच्छा, यह बताओ कि अगर बादशाह ने मुझ से पूछा कि तुम कहाँ रहती हो और तुम्हारी आर्थिक हैसियत क्या है तो मैं क्या जवाब दूँगी? क्या मैं उस से यह कहूँगी कि मैं गरीब दरजी की विधवा हूँ और झोपड़े जैसे मकान में रहती हूँ? अलादीन ने कहा, तुम इस की भी चिंता न करो। मेरे पास जादू का चिराग है। चिराग का जिन्न इतना शक्तिशाली है कि मैं उस से जो कुछ भी माँगूगा वह तुरंत प्रस्तुत कर देगा। तुम तो कई बार यह देख चुकी हो कि कुछ भी माँगा है तो उस जिन्न ने तुरंत ला कर दे दिया है।

जिन्न की बात सुन कर बुढ़िया को भी भरोसा हुआ और उस का साहस बँधने लगा और

उसे आशा होने लगी कि उस का मनोरथ सिद्ध हो जाएगा। उस ने स्वीकार कर लिया कि कल वह शाही दरबार में जाएगी और विवाह का प्रस्ताव करेगी। अगर वह यह वादा न करती तो और करती भी क्या, अलादीन तो बुरी तरह उस के पीछे पड़ गया था और किसी तरह मानता ही न था। अलादीन ने, जो अब बाहर घूम कर फिर कर लोक-व्यवहार में कुशल हो गया था, माँ से यह भी कहा कि यह प्रस्ताव बादशाह को छोड़ कर और किसी के कानों में नहीं पड़ना चाहिए। माँ ने यह मंजूर कर लिया।

यह सब तय करने के बाद दोनों अपने-अपने बिस्तरों में चले गए। बुढ़िया तो सो गई किंतु अलादीन को अपनी प्रेयसी की याद में नींद नहीं आई। रात भर वह तड़पता रहा। सुबह जल्दी ही उठ कर उस ने माँ को जगाया और कहा, दरबार का समय होनेवाला है। तुम शीघ्र ही नए वस्त्र पहन कर दरबार को जाओ। बुढ़िया ने रत्नों के पात्र को एक रेशमी रूमाल से बाँधा। इस के बाद उसे भी एक दूसरे कपड़े में बाँध कर वह दरबार को गई। वहाँ जा कर वह चकरा गई। दीवानखाना बहुत बड़ा था, मंत्री और सभासदों के अलावा प्रजाजनों की भी भीड़ थी जो अपनी-अपनी फरियादें ले कर आए थे। बादशाह सब की बातें धैर्यपूर्वक सुनता था और उचित निर्णय देता था। सारे मुकदमों का फैसला करके बादशाह राजमहल में चला गया। वहाँ अपने विशेष राजकक्ष में उस ने मंत्री से आने को कहा और बाकी लोग धीरे-धीरे दरबार से विदा हो गए। कुछ देर में मंत्री भी राज्य-प्रबंध के आदेश ले कर निकल आया और बाकी दरबार भी बर्खास्त हो गया। अलादीन की माँ भी यह सोच कर घर वापस आ गई कि बादशाह से भेंट न होगी।

अलादीन ने उसे वस्त्रों की पोटली के समेत देखा तो समझ गया कि इसकी भेंट बादशाह से नहीं हुई हैं। वह व्यग्र हो कर माँ से सारा हाल पूछने लगा। माँ ने कहा, मुझ से किसी ने रोक-टोक नहीं की। मैं ने बादशाह को अच्छी तरह देखा। मैं बहुत देर तक उस के सामने खड़ी रही लेकिन बादशाह को इतनी फुरसत नहीं मिली कि मुझ से मेरी बात पूछता। हाँ, मैं ने यह जरूर देखा कि बादशाह अनावश्यक रूप से किसी पर क्रोध नहीं करता और सब का हाल धैर्यपूर्वक सुन कर ठंडे दिमाग से फैसले करता है। वह हर एक छोटे-बड़े की बातें ध्यानपूर्वक सुनता है, सचमुच उस जैसा प्रजापालक नरेश कोई नहीं होगा। आज उसे मुझ से बात करने का अवकाश नहीं मिला। लेकिन मैं कल फिर जाऊँगी और आशा है उस से बात कर सकूँगी। अलादीन को यह सोच कर संतोष हुआ कि माँ की हिम्मत खुल गई है, वह देर-सवेर विवाह का प्रस्ताव कर ही देगी।

बुढ़िया दूसरे दिन फिर उसी तरह तैयार हो कर दरबार पहुँची। किंतु उस का जाना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ। दरबार का द्वार बंद था और वहाँ के कर्मचारियों ने उसे बताया कि दो दिनों तक दरबार में छुट्टी रहेगी। अतएव वह दरबार से वापस लौट आई और दरबार की छुट्टी की बात अलादीन को बताई। तीसरे दिन फिर वह दरबार में गई किंतु उस दिन भी बड़ी भीड़ थी और उसे बादशाह से बात करने का मौका नहीं मिला। इस के बाद वह बराबर कई दिनों तक दरबार में पहुँची लेकिन कभी उस ने बादशाह से बात करने का अवसर नहीं पाया। रोजाना आधा दिन वहाँ बिताती और फिर घर वापस आ जाती।

एक दिन बादशाह ने मंत्री से कहा, मैं कई दिनों से देख रहा हूँ कि वह बुढ़िया रोज यहाँ आती है और चुपचाप खड़ी रहती है। यह अपने हाथ में भी कोई पोटली लिए रहती है। यह कौन है और मुझ से क्या चाहती है? वास्तव में मंत्री को बुढ़िया से उस का मंतव्य पूछ रखना चाहिए था किंतु उस ने आलस्यवश ऐसा नहीं किया था, इसलिए कहा, पृथ्वीपाल, यह स्त्रियाँ जरा-जरा-सी बात के लिए राजदरबार में पहुँच जाती हैं। यह भी ऐसी ही कोई नालिश ले कर आई होगी कि कसाई ने गोश्त या कुंजड़े ने सब्जी खराब कर दी या तौल में कम दी। बादशाह को इस उत्तर से संतोष न हुआ। उस ने कहा, ऐसी बात नहीं मालूम होती। इन बातों के लिए कोई दिन-प्रतिदिन नहीं खड़ा रहता। कल अगर यह आए तो इसे सबसे पहले पेश किया जाए। मंत्री ने सिर झुका कर यह आदेश स्वीकार किया किंतु उस का पालन न किया। दूसरे दिन बुढ़िया के आने पर मंत्री ने उसे आगे न बढ़ाया। बादशाह ने खुद मंत्री से कहा कि इस बुढ़िया को मेरे पास क्यों नहीं लाते, तो मंत्री को विवश हो कर उसे पेश करना पड़ा।

बुढ़िया ने, जो इतने दिनों तक दरबार का अदब-कायदा देख चुकी थी, अपने सिर को भूमि से लगाया और सिंहासन के सामने बिछे हुए सुंदर कालीन को चूम कर देर तक धरती से सिर लगाए रही। उस ने तभी सिर उठाया जब कि बादशाह ने आदेश दिया कि उठ कर अपनी बात कहो। वह खड़ी हुई तो बादशाह ने कहा, मैं कई दिनों से तुम्हें यहाँ आते देख रहा हूँ। तुम क्या चाहती हो? बुढ़िया ने एक बार फिर धरती चूमी और बोली, हे दीनबंधु प्रजापालक न्यायमूर्ति महाराज, यदि मुझे प्राणदान का आश्वासन दिया जाए तो मैं अपना मनोरथ आप के सामने रखूँ। किंतु मैं जो कुछ कहना चाहती हूँ आप से एकांत में कहना चाहती हूँ। बादशाह ने आदेश दिया कि दरबार खाली हो जाए। अतएव सभी लोग बाहर चले गए, केवल प्रधानमंत्री ही वहाँ रह गया क्योंकि उस से कोई बात गुप्त नहीं रखी जाती थी, साथ ही बादशाह की सुरक्षा के लिए भी एक आदमी का रहना जरूरी था।

बादशाह ने कहा, अब कहो, क्या कहती हो? अलादीन की माँ ने कहा, पहले आप आश्वासन दें कि मेरी बात से क्रुद्ध न होंगे और मेरा कोई अपराध भी समझेंगे तो क्षमा करेंगे। बादशाह ने यह आश्वासन दिया कि निर्भय हो कर अपनी बात कहे। बुढ़िया ने विस्तारपूर्वक बताया कि अलादीन ने किस प्रकार छुप कर शहजादी को देखा था और कैसे उस के विरह में मृत्यून्मुख हो रहा है। उस ने कहा, मैं अपने पुत्र की प्राणरक्षा के हेतु उस के साथ शहजादी के विवाह का प्रस्ताव ले कर आई हूँ।

बादशाह ने इस पर नाराजगी तो न दिखाई किंतु कुछ कहा भी नहीं। फिर बोला, तुम इस पोटली में क्या चीज रोज ले कर आती हो? अलादीन की माँ ने रत्नों का पात्र खोल कर बादशाह के पैरों के पास रख दिया। बादशाह की आँखें फट गईं। वह एक-एक रत्न को उठा कर देखता और उस की प्रशंसा करता। उस ने मंत्री को पास बुला कर कहा, तुम भी देखो। तुमने कहीं इतने बड़े और चमकीले रत्न देखे हैं? मंत्री ने कहा, मैं ने नहीं देखे। बादशाह ने कहा कि ऐसे रत्नों के मालिक के साथ राजकुमारी का विवाह होना ठीक रहेगा।

मंत्री को इस बात से दुख हुआ। उसे विश्वास था कि शहजादी का विवाह उस के पुत्र ही से होगा और बाद में उस के पुत्र को चीन का विशाल राज्य मिलेगा। इस समय रत्नों के कारण बादशाह की राय बदलते देख कर वह दुखी हुआ और कहने लगा, शहजादी के सामने यह रत्न क्या चीज हैं? मेरा पुत्र तीन महीने में इन से अच्छे रत्न ला सकता है।

बादशाह जानता था कि अलादीन की माँ की दी हुई भेंट से अधिक मूल्यवान कोई भेंट नहीं हो सकती किंतु उस ने मंत्री की बात मान ली। लेकिन उस ने ऊँची आवाज में अलादीन की माँ से कहा, हमने शहजादी से तुम्हारे पुत्र के विवाह का प्रस्ताव स्वीकार किया। लेकिन हमें अपनी बेटी के लिए समुचित दहेज की व्यवस्था करने में कुछ समय लगेगा। यह दहेज लगभग तीन महीने में तैयार होगा। इसलिए तुम तीन महीने बाद मेरे पास आना। तब मैं शादी के समारोह की रूपरेखा बनाऊँगा। अलादीन की माँ ने यह सुन कर कई बार झुक कर भूमि स्पर्श की और खुश घर वापस आई। उस की प्रसन्नता कई कारणों से थी - एक तो यह कि उस के बेटे की मनोकामना पूरी हो गई, दूसरे यह कि उसे बादशाह के कोप ओर उस के फलस्वरूप मिलनेवाले कठोर दंड का भय था, वह भय दूर हो गया और उसे बादशाह की प्रसन्नता प्राप्त हुई। तीसरे यह कि रोज-रोज की दरबार तक आने-जाने की और दरबार में घंटों खड़े रहने की मुसीबत से छुट्टी मिल गई।

अलादीन ने दूर ही से माँ को देख कर समझ लिया कि उसे अपने काम में सफलता मिली है। वह और दिनों की अपेक्षा प्रसन्न भी थी और दरबार से जल्द ही वापस आ गई थी। जब वह घर पहुँची तो अलादीन ने कहा, अम्मा, सब खैरियत तो है? उस की माँ दरबार के वस्त्र उतारती हुई बोली, बेटे, अब तू खुश हो जा, तुझे मैं अच्छी खबर सुनाने जा रही हूँ? फिर उस ने सारा हाल बता कर कहा, मुझे अभी बादशाह ने हाँ ना कुछ भी नहीं की थी, इस से पहले ही मंत्री ने चुपके से बादशाह से कुछ कहा। मैं तो डर गई थी कि अब मुझे इनकार में जवाब मिलेगा किंतु बादशाह ने प्रस्ताव स्वीकार करके मुझे तीन महीने बाद आने को कहा है। अलादीन यह सुन कर खुशी से फूला न समाया और एक-एक दिन करके तीन महीने की अवधि समाप्त की प्रतीक्षा करने लगा।

दो महीने बाद एक दिन उस की माँ को मालूम हुआ कि दीया जलाने का तेल नहीं है। वह तेल लेने बाजार गई तो देखा कि बाजार में बड़ी धूमधाम और सजावट हो रही है और हर जगह दीपों की कतारें लगी हैं। हर जगह उच्च कर्मचारी सुनहरे रुपहले काम के वस्त्र पहने घूम रहे हैं और विवाह के योग्य सजावट का सामान राजमहल की ओर ले जाया जा रहा है। उस ने कजस तेली से तेल लिया था, उस से पूछा कि यह सब कैसी धूमधाम है। तेली ने उत्तर दिया, तुम मालूम होता है परदेशी हो। इस शहर में तो सभी जानते हैं कि आज रात को मंत्री के पुत्र से शहजादी का विवाह होगा। एक घड़ी के बाद शहजादी हम्माम में स्नान करने आएगी, उस के लिए यह सब राजकर्मचारी घूम रहे हैं। शादी के लिए जरूरी सामान भी राजमहल की ओर इसीलिए भेजा जा रहा है।

यह सुन कर अलादीन की माँ फौरन घर लौटी और अलादीन से बोली, बेटा, यह तो बड़ी गड़बड़ हुई। मेरी सारी मेहनत बेकार गई। बादशाह ने मुझे जो वचन दिया था उस से फिर

गया है।

यह कह कर उस ने बाजार में सुना हुआ सारा हाल बताया और कहा कि आज शहजादी हम्माम में जाएगी और फिर मंत्री के पुत्र से उस का विवाह होगा। अलादीन ने यह सुना तो उस पर बिजली-सी टूट पड़ी। कुछ देर तक तो वह पागल की तरह आँखें फाड़े देखता रहा फिर जब कुछ जी ठिकाने हुआ तो सोचने लगा कि यह तो मेरे लिए डूब मरने की बात होगी कि शहजादी बदर बदौर का विवाह किसी और से हो, लेकिन इतनी देर हो गई है कि अब किया ही क्या जा सकता है, साथ ही यह कि अपनी प्रियतमा को दूसरे की पत्नी बनने दिया भी कैसे जा सकता है।

सहसा उसे जादू के चिराग का ध्यान आया और वह खुश हुआ। वह माँ के सामने चिराग से काम लेना नहीं चाहता था इसलिए माँ से बोला, कर लेने दो मंत्री पुत्र को विवाह, किंतु वह अपनी पत्नी को भोग नहीं सकेगा। तुम खाना बनाओ, मैं जरा अंदर जाता हूँ। उस की माँ समझ गई कि उस का चिराग से काम लेने का इरादा है। अब उसे इस में कोई आपत्ति भी नहीं रही थी। अलादीन अंदर के कमरे में गया जहाँ वह चिराग रखा था। उस ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया और चिराग को रगड़ा। तुरंत ही जिन्न आ गया और बोला, मैं और कई जिन्न आप के अधीन हैं। क्या आज्ञा है?

अलादीन ने कहा, अभी तक मैं ने भोजन माँगने के अलावा और कोई काम तुम से नहीं लिया। अब एक बड़े काम के लिए कहता हूँ। मैं ने यहाँ के बादशाह से प्रार्थना की थी कि अपनी बेटी बदर बदौर को मुझ से ब्याह दे। उस ने यह मंजूर भी कर लिया था लेकिन बाद में वह अपनी बात से फिर गया। मुझ से तीन महीने का समय माँगा था और आज दो महीने बाद ही रात को उसे मंत्री के पुत्र से ब्याहनेवाला है। मुझे अभी-अभी यह समाचार मिला है। तुम्हें यह करना है कि ज्यों ही नव दंपत्ति पलंग पर जाए तुम दोनों को पलंग समेत मेरे घर ले आओ। जिन्न ने कहा कि यह तो मामूली काम है, इस के अलावा भी कुछ काम हो तो बताओ। अलादीन ने कहा कि अभी तो इतना ही काम है। यह सुन कर वह जिन्न गायब हो गया।

अलादीन इस के बाद माँ के पास गया और उस के साथ हँसी-खुशी की बातें करता रहा और कहता रहा कि बदर बदौर मेरे अतिरिक्त किसी और की नहीं हो सकती। खाना बन जाने पर उस ने मन से पेट भर भोजन किया और अपनी माँ से इधर-उधर की बहुत-सी बातें करता रहा। इस के बाद उस की माँ अपने कमरे में सोने को चली गई और अलादीन भी अपने पलंग पर लेट गया। इस समय उसे कोई दुख नहीं था फिर भी उत्तेजना के कारण उसे नींद नहीं आई। वह इसका इंतजार कर रहा था कि जिन्न कब उन दोनों को यहाँ लाता है। वैसे उसे कभी-कभी यह शंका भी होने लगती थी कि जिन्न उस के लिए यह काम करेगा भी या नहीं।

उधर शाही महल में जब मंत्री के पुत्र और बदर बदौर की शादी की सारी रस्में पूरी हो

गईं और रात काफी बीत गई तो मंत्री के पुत्र को सुहागरात के कमरे में पहुँचा दिया गया जहाँ वह पलंग पर लेट गया। शहजादी की दासियों ने उसे रात के कपड़े पहना कर कमरे में भेज दिया और द्वार बंद कर दिया। शहजादी के पलंग पर बैठते ही जिन्न ने दोनों के पलंग को अलादीन के घर पहुँचा दिया। अब अलादीन ने जिन्न से कहा कि मंत्रि-पुत्र के पाजामे के अलावा सारे कपड़े उतार कर उसे घर के तंग और बदबूदार शौचालय में बंद कर दे। उस ने वह भी कर दिया। बेचारे मंत्रि-पुत्र की बदबू और सर्दी से बुरी हालत हो गई। अलादीन ने शहजादी से अधिक बात नहीं की। उस ने सिर्फ यह कहा, तुम्हारे पिता ने मुझ से तुम्हें ब्याहने का वादा किया था। वे अपने वचन से फिर गए हैं। मैं ने यह सब सिर्फ इसलिए किया है कि मंत्रि-पुत्र तुम्हारा अंग स्पर्श न कर सके। वह बेचारी वैसे ही इस अद्भुत व्यापार को देख कर हक्का-बक्का हो रही थी, अलादीन की बातें सुन कर चुपके से पलंग पर दुबक गई। फिर अलादीन ने अपनी पगड़ी और ऊपरी वस्त्र उतारा और शहजादी के पलंग पर उस की ओर पीठ करके और बीच में नंगी तलवार रख कर सो गया। यह इस बात का प्रतीक था कि यद्यपि वह शहजादी को अपना समझता था किंतु विवाह के पूर्व संभोग का अपराध नहीं करना चाहता था। अपनी प्रेमिका की पवित्रता बचा सकने पर उसे बहुत संतोष हुआ और वह रात भर आराम की नींद सोया। उधर मंत्रि-पुत्र रात भर पाखाने में सड़ता रहा और सर्दी में ठिठुरता रहा और शहजादी भी अपने और अपने शैय्या के साथी के बीच में नंगी तलवार देख कर भयभीत रही और बहुत कम सोई।

सुबह जिन्न बगैर बुलाए ही आ गया और अलादीन से बोला, मालिक, अब मुझे क्या आज्ञा है? अलादीन ने बीच से तलवार हटा दी और पलंग से उतर कर कहा, अब मंत्रि-पुत्र को पलंग पर लिटा कर दोनों को मय पलंग के उन के कमरे में पहुँचा दो। वह जिन्न मंत्रि-पुत्र को शौचालय से निकाल कर लाया और उसे उस के कपड़े पहना दिए, फिर उसे शहजादी के पलंग पर पटक दिया। इस बार जिन्न ने स्वयं को गुप्त नहीं रखा बल्कि अपने स्वाभाविक महाभयानक आकार में बना रहा। शहजादी बदर बदौर और मंत्रि-पुत्र दोनों की उस का विकराल रूप देख कर घिग्घी बँध गई। कोई आश्चर्य की बात न होती अगर वे दोनों डर के मारे ही मर जाते। लेकिन भाग्यवश दोनों केवल अधमरे हो गए।

उस देश की रीति थी कि सुहागरात के बाद की सुबह को कन्या का पिता आ कर उस से इशारे से पूछता था कि रात स्वाभाविक रूप से बीती या नहीं। बादशाह भी सुबह यह हाल लेने के लिए आया।

उस की आहट सुनते ही मंत्रि-पुत्र पलंग से कूदा और दूसरे दरवाजे से निकल गया क्योंकि वह अपनी दुर्दशा छुपाना चाहता था। बादशाह ने कमरे में जा कर बेटी से मुस्कुरा कर पूछा, रात आराम से तो बीती? उस ने आगे बढ़ कर प्यार से उस का माथा चूमा तो उसे दिखाई दिया कि शहजादी को असीम दुख महसूस हो रहा है। बादशाह को आश्चर्य हुआ और वह यह न समझ सका कि शहजादी लज्जावश कुछ नहीं कह रही या रात उसे बहुत कमजोरी आ गई है या उसे वास्तव में कोई दुख है जिसके कारण वह चुप्पी साधे है। वह वहाँ से अपनी बेगम के पास गया और उसे शहजादी की विचित्र दशा बताई और कहा कि कुछ समझ में नहीं आता। बेगम ने कहा, सरकार, कुछ चिंता न करें। कई

लड़कियाँ ऐसी होती हैं कि प्रथम संसर्ग में उन्हें बड़ा कष्ट होता है और किसी-किसी लड़की की तो दो-तीन दिन तक खराब हालत रहती है। मैं स्वयं जा कर उस से उस का हाल पूछूँगी और आप से आ कर बताऊँगी।

इस के बाद मलिका शहजादी के महल में गई और उसे गले लगा कर उस का हाल पूछा। शहजादी इस पर भी चुप रही और उस के चेहरे की उदासी जरा भी कम नहीं हुई। मलिका ने बड़े प्यार से आग्रहपूर्वक कई बार पूछा तो वह ठंडी साँस ले कर बोली, माता जी, मैं जो कुछ कहूँगी उस में आप को अगर धृष्टता लगे तो पहले ही से उस की क्षमा माँग लेती हूँ। वास्तविकता यह है कि रात को ऐसी विचित्र घटनाएँ हुईं जिन पर किसी को विश्वास नहीं होगा। किंतु उन घटनाओं ने मेरे होश-हवास गायब कर दिए और उन बातों को याद करके अब तक मेरा हृदय काँप रहा है। रात को जब मेरी दासियाँ मुझे इस कमरे में बंद करके चली गईं और मैं पलंग पर बैठी उसी समय किसी ने हम दोनों को मय पलंग किसी मामूली-से कमरे में पहुँचा दिया। वहाँ मंत्रि-पुत्र को वह गुप्त व्यक्ति कहीं ले गया और रात भर कहीं और रखा। इधर एक जवान आदमी ने मुझे बहुत दिलासा दिया और उसी पलंग पर मेरी ओर पीठ करके सो गया और मेरे और अपने बीच में नंगी तलवार रख ली। सुबह मंत्रि-पुत्र को एक भयानक जिन्न ने मेरे साथ लिटाया और हम दोनों को मय पलंग के यहाँ वापस पहुँचा दिया। सुबह जब पिता जी मेरे कमरे में आए तो मैं भय और शोक में इतनी डूबी थी कि उस ने कुछ भी बात न कर सकी। मेरा दुख उन्हें मालूम होगा तो वे मुझे अवश्य क्षमा करेंगे।

बदर बदौर ने जब बीती रात की पूरी घटना सुनाई तो उस की माँ को उस पर बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ। उस ने कहा, तुम ने मुझ से कहा सो ठीक किया लेकिन किसी और से यह पागलपन की बातें न करना। इस से क्या फायदा कि लोग तुम्हें पागल समझें।

शहजादी बोली, मैं पागल नहीं हूँ, अपने पूरे होश-हवास में हूँ। तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं तो मैं क्या करूँ। तुम चाहो तो मेरे पति मंत्रि-पुत्र से पूछ लो। वह भी यही कहेगा जो मैं कह रही हूँ। मलिका ने कहा, अच्छी बात है। मैं तुम्हारे पति से पूछूँगी। अगर उस ने तुम्हारी बात का समर्थन किया तो तुम्हारी बात सच समझूँगी। इस समय तुम इन बातों को भूल जाओ। देखो, नगर में चारों तरफ से गायन-वादन की आवाजें आ रहीं है जो तुम्हारे विवाह के उपलक्ष्य में हो रही हैं। तुम क्यों इस राग-रंग को अपनी बेकार बातों से भंग करना चाहती हो? इस पर शहजादी चुप हो गई।

मलिका ने बादशाह को जा कर वह सब बताया जो बदर बदौर ने कहा था। उस ने यह भी कहा, मुझे तो यह दुःस्वप्न मात्र मालूम होता है। फिर भी अच्छा है कि जैसा वह कहती है उस के पति से भी पूछ लिया जाए। बादशाह ने मंत्री-पुत्र को बुला कर पूछा, क्या तुमने भी रात को वही देखा है जो शहजादी ने देखा है? उसने कहा, मुझे नहीं मालूम उस ने क्या देखा है। असलियत यह थी कि रात के घोर कष्ट के बाद भी वह सोचता था कि अब वह कष्ट फिर न होगा और शादी वह तोड़ना नहीं चाहता था क्योंकि इस से उसे तत्कालीन प्रतिष्ठा और भविष्य में बड़ा राज्य मिलता। जब उसे बताया गया कि बदर

बदौर क्या कहती है तो उस ने कहा, शहजादी को भ्रम हुआ होगा। ऐसी कोई बात नहीं हुई। कल सुबह तक वह ठीक हो जाएँगी।

उधर अलादीन ने फिर दीया रगड़ कर जिन्न को बुलाया और उस से महल का हाल पूछा। उस ने बताया कि मंत्रि-पुत्र कल रात की बातें मानने से इनकार करता है। अलादीन ने कहा, आज भी वे दोनों पलंग पर लेटें तो उस के भोग-विलास से पहले यहाँ पर कल की तरह ले आना। जिन्न ने ऐसा ही किया और बदर बदौर तथा मंत्रि-पुत्र के पलंग पर लेटते ही वह पलंग को उन दोनों के साथ अलादीन के घर उठा लाया। अलादीन ने गत रात की तरह मंत्रि-पुत्र को शौचालय में बंद करवा दिया और खुद नंगी तलवार बीच में रख कर शहजादी के पलंग पर उस की ओर पीठ करके सो गया। शहजादी उस रात को भी रात भर यह विचित्र बातें देख कर काँपती रही और मंत्रि-पुत्र तंग और बदबूदार पाखाने में रात भर सरदी और मल की दुर्गंध से कष्ट उठाता रहा। सुबह फिर जिन्न ने उसे शहजादी के पलंग पर मंत्रि-पुत्र को लिटा दिया और दोनों को मय पलंग राजमहल में वापस पहुँचा दिया।

दूसरी सुबह को बादशाह फिर शहजादी के पास पहुँचा और उसे पिछले दिन से भी अधिक चिंतित और दुखी पाया। बादशाह को पूरे दिन खटका तो लगा ही रहा था, वह व्यग्र हो कर बोला, बेटी, तुम बताओ तो आखिर क्या बात है। शहजादी चुप ही रही। बादशाह के बहुत पूछने पर भी वह कुछ न बोली तो बादशाह का धैर्य छूट गया। उस ने म्यान से तलवार खींच ली और गरज कर बोला, तू सच्ची बात बता वरना मैं अभी तेरे टुकड़े-टुकड़े किए डालता हूँ। बदर बदौर घबरा कर रोने लगी और बोली, पिताजी, मुझ से कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा कर दें। आप जोर देते हैं तो मैं पिछली दो रातों का हाल आप को बताए देती हूँ परंतु आप को इस पर विश्वास नहीं होगा। इसीलिए मैं अब तक चुप थी। यह कह कर बादशाह को अपने मुँह से सारा हाल बताया। फिर कहने लगी, आप को विश्वास न हो रहा हो तो मंत्रि-पुत्र से पूछ लीजिए। बादशाह ने कहा, बेटी, मैं तुम्हें किसी तरह दुख नहीं देना चाहता। मैं ने तुम्हारा विवाह तुम्हारी प्रसन्नता के लिए किया था, दुखी करने के लिए नहीं। खैर, अब तुम चिंता छोड़ो। अब तुम्हें ऐसा अनुभव नहीं होगा।

इस के बाद बादशाह अपने महल में आया और उस ने वहाँ मंत्री को बुलाया। उस ने मंत्री से पूछा, क्या तुमने अपने बेटे से बात की और उस का हाल पूछा? उस ने कहा मैं ने नहीं पूछा। बादशाह ने बदर बदौर का बताया हुआ पूरा किस्सा उसे सुनाया और कहा, यद्यपि मैं अपनी पुत्री की बात विश्वास करता हूँ फिर भी तुम्हारे बेटे द्वारा इसकी पुष्टि चाहता हूँ। तुम जा कर अपने बेटे से यह बात पूछो। मंत्री अपने घर गया और अपने बेटे को बुला कर कहने लगा, शहजादी ने बादशाह से यह बातें कही हैं, तुम इस बारे में क्या कहते हो?

मंत्रि-पुत्र पिछले दिन विवाह टूटने के भय से झूठ बोल गया था किंतु दूसरे दिन भी वही अनुभव हुआ तो उस की हिम्मत टूट गई। उस ने कहा, कल मैं ने इस बात से इनकार कर

दिया था लेकिन वास्तविकता यह है कि शहजादी ठीक कहती है। दो रातों से एक महाभयानक जीव हम दोनों को पलंग समेत उठा कर कहीं पहुँचा देता है। फिर मेरे कपड़े सिवा पाजामे के, उतार कर मुझे एक तंग शौचालय में बंद कर देता है जहाँ भरे हुए मल की बदबू से रात भर मेरा दिमाग फटता रहता है और मैं सरदी से ठिठुरता रहता हूँ और हाथ-पाँव भी नहीं हिला पाता। मुझे पता नहीं कि रात भर मेरी पत्नी के साथ क्या होता है। सुबह वही जीव मुझे निकाल कर कपड़े पहनाता है और पलंग पर लिटा कर हम दोनों को पलंग समेत महल में वापस ले आता है। मैं ऐसी शादी से बाज आया। दो-तीन दिन और यही हाल रहा तो मर ही जाऊँगा।

मंत्री ने देखा कि दो दिन में उस का बेटा बदहवास ही नहीं, दुबला भी हो गया था। वह भी इस नतीजे पर पहुँचा कि इसे शहजादी से अलग रखना चाहिए वरना वास्तव में चार-छह रोज में मर जाएगा। उस के बाद वह बादशाह के पास गया और बोला, सरकार, शहजादी बिल्कुल ठीक कहती है। मेरे बेटे ने कल शादी टूटने के डर से झूठ बोला था लेकिन आज उस ने सच्ची बात बताई है। उसे दो रातों से तंग गंदे पाखाने में बंद कर दिया जाता है। अब मेरा विचार है कि पति-पत्नी को साथ न सोने दिया जाए और राज्य में विवाह के सिलसिले में जो समारोह हो रहे हैं उन्हें बंद कर दिया जाए।

बादशाह ने भी इस बात को पसंद किया और विवाह के समारोह रोक दिए गए। मंत्री के पुत्र को महल में आ कर पत्नी से मिलने से भी रोक दिया गया। नगरवासियों में जोरों से इस बात की चर्चा होने लगी। लोग तरह-तरह की अटकलें लगाते थे कि क्यों विवाह समारोह बंद कर दिए गए और क्यों मंत्री के पुत्र को राजमहल से निकाल दिया गया। कारण केवल दूल्हा-दुल्हन, उन के माता-पिता और अलादीन को ज्ञात था। अलादीन ने अब दीया रगड़ कर जिन्न को बुलाने की जरूरत न समझी और अपनी तीन महीने की मियाद बीतने की प्रतीक्षा करने लगा। उस ने ऐसा प्रकट किया जैसे बदर बदौर के मंत्रि-पुत्र से ब्याहे जाने के बारे में उसे कुछ पता ही न हो।

तीन महीने की मियाद बीतने के बाद अलादीन ने फिर अपनी माँ को बादशाह के पास भेजा। बुढ़िया फिर दरबार के लायक कपड़े पहन कर दरबार में गई और बादशाह के सिंहासन के सामने खड़ी हो गई। बादशाह उसे देख कर समझ गया कि वह वादा याद दिलाने को आई है। मंत्री भी इस बात को ताड़ गया और उस ने कोशिश की कि बादशाह को किसी और बात में उलझाए रखे। बादशाह ने उसे रोक दिया और कहा, वह बुढ़िया जो सामने खड़ी है उसे हाजिर करो। मंत्री ने चोबदार द्वारा उसे बुलवा लिया। बुढ़िया ने पहले की तरह भूमि चूमी। बादशाह ने कहा, बोलो, क्या कहना चाहती हो? उस ने कहा, सरकार ने तीन महीने पहले मुझ से कहा था कि शहजादी का विवाह मेरे पुत्र अलादीन से तीन महीने बाद कर देंगे। आज मैं आप को आप का वही वचन याद दिलाने आई हूँ।

समझ तो बादशाह पहले भी गया था कि वृद्धा इसी बात को कहने के लिए आई है फिर भी चूँकि उसे अलादीन के बारे में कुछ पता नहीं था इसलिए विवाह की स्वीकृति देने में हिचकिचा रहा था। उसे परेशानी यह थी कि अमूल्य रत्नों के उपहार से प्रभावित हो कर

उस ने शादी का वादा दिया था।

अब उस से साफ मुकरने से उस की प्रतिष्ठा में जो बट्टा लगता वह भी उसे मंजूर नहीं था। उस ने अपनी कठिनाई मंत्री को चुपके से बताई। उस ने चुपके से कहा, कोई परेशानी नहीं है। आप अलादीन को कहला भेजें कि शहजादी का मेहर बहुत बड़ा होगा, तुम में वह देने की सामर्थ्य हो तो मैं विवाह को राजी हूँ वरना आगे से विवाह की बात भी मेरे आगे न चलाना, और मेहर आप इतना भारी माँगें कि वह दे ही न सके। बादशाह को यह सलाह पसंद आई। उस ने अलादीन की माँ से कहा, देवी जी, मैं ने तुम्हें जो वचन दिया है उस से मैं फिरता नहीं हूँ। मैं उसे जरूर पूरा करता लेकिन शहजादी ने एक बेढब शर्त रखी है। वह कहती है कि मैं उसी आदमी से शादी करूँगी जो मुझे काफी बड़ा मेहर दे। तुम अपने पुत्र से कहो कि शहजादी का विवाह उस से तभी होगा जब वह चालीस हब्शी गुलामों के सरों पर धरे हुए चालीस स्वर्ण पात्रों में उसी तरह के रत्न भर कर भेजे जैसे तुमने भेंट में दिए थे। हर एक हब्शी गुलाम के आगे एक सुंदर गोरे रंग का गुलाम भी होना चाहिए। सभी गुलामों की पोशाकें बहुमूल्य जरदोजी की होनी चाहिए। साथ ही जिन स्वर्ण पात्रों में रत्न भेजे जाएँ उन के ढकनों पर सुंदर चित्रकारी मीना के काम में होनी चाहिए। तुम यह शर्त अपने पुत्र को बताओ और पूछो कि क्या कहता है। वह जो कुछ उत्तर दे वह कल आ कर बताना। सीधे मेरे पास चली आना, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

अलादीन की माँ ने सिंहासन का पाया चूमा और घर वापस हुई। रास्ते भर वह अपने बेटे की मूर्खता पर झुँझलाती रही। वह सोचती रही कि वे रंगीन पत्थर तो अलादीन उस गुफा से लाया था जहाँ उसे जादूगर ने भेजा था। अब वैसे पत्थर और वे भी पचास स्वर्ण पात्रों में भरे हुए कहाँ मिलेंगे, वह गुफा तो बंद हो गई है। फिर कीमती पोशाकें पहने अस्सी गुलाम कहाँ से आएँगे। इस लड़के ने बेकार मुझे दौड़ा कर मेरे पाँव तोड़ दिए।

घर आ कर उस ने अलादीन से कहा, बेटा, मैं तुम से कहती थी कि शहजादी को भूल जाओ। वही बात हुई। बादशाह शहजादी के लिए तैयार है और अपना वादा नहीं भूला है।

लेकिन उस ने मेहर इतना बड़ा माँगा है जो तुम कयामत तक नहीं दे सकोगे। फिर उस ने सविस्तार बादशाह की माँग बताई। अलादीन बोला, अम्मा, तुम कुछ परवा न करो। वास्तव में शहजादी तो अद्वितीय है। उस के लिए इतना मेहर भी कम है। देखो मैं कोशिश करता हूँ कि इस मेहर का प्रबंध करूँ। यह कह कर वह इधर-उधर की बातें करने लगा।

दूसरे दिन सवेरे उस ने माँ से कहा, अम्मा, बड़ी भूख लगी है। तुम बाजार से कुछ खाने को ले आओ, घर में बनाने में देर लगेगी। वह बेचारी बाजार चली गई। इधर अलादीन ने चिराग को रगड़ा। जिन्न प्रकट हुआ और कहने लगा, क्या आज्ञा है? अलादीन ने कहा, भाई, अब बादशाह मेरे साथ शहजादी का विवाह करने के लिए राजी हो गया है लेकिन उस ने मेहर बड़ा कीमती माँगा है। वह कहता है कि चालीस हब्शी गुलाम चालीस स्वर्ण

पात्रों में, जिनके ढक्कनों पर मीनाकारी से सुंदर चित्र बने हों, उसी तरह के रत्न भर कर लाएँ जैसे मैं जादू के बाग से लाया था। हब्शी गुलामों के साथ चालीस गोरे रंग के सुंदर गुलाम भी हों और सभी गुलाम जरदोजी की पोशाक पहने हुए हों। अब तुम यह चीजें प्रस्तुत कर दो तो मैं अपनी माँ के साथ यह मेहर बादशाह के पास भेज दूँ।

जिन्न ने कहा, यह सब मैं अभी लाए देता हूँ। यह कह कर वह गायब हो गया और कुछ ही क्षणों में मेहर के साथ फिर उपस्थित हो गया। अलादीन का घर चालीस हब्शी और चालीस गौर वर्ण गुलामों से भर गया। सभी गुलाम जरदोजी के ऐसे मूल्यवान वस्त्र पहने थे जो अमीरों को भी नसीब नहीं होते। हब्शियों के सिरों पर स्वर्ण पात्र थे जिनके मीनाकारी के काम के ढक्कन थे। सब ने स्वर्ण पात्रों को खोल कर दिखाया। उन सभी में उसी तरह के बड़े-बड़े हीरे, मोती, नीलम, लाल, पुखराज आदि भरे हुए थे। अलादीन का घर रत्नों, स्वर्ण पात्रों और जरी की पोशाकों से जगमगाने लगा। जिन्न ने पूछा कि और कोई काम तो नहीं है? अलादीन ने कहा, अभी कोई काम नहीं है। लेकिन जरूरत होगी तो फिर बुलाऊँगा।

अलादीन की माँ बाजार में आई तो यह साज-सामान देख कर स्तंभित रह गई। अलादीन ने उस से कहा, अम्मा, तुम जल्दी से नाश्ता करो और मेरे खाने-पीने की चिंता छोड़ कर इस मेहर को ले कर बादशाह के दरबार में चली जाओ। ऐसा न हो कि बादशाह की मति फिर पलट जाए। अभी बादशाह इस मेहर को देखेगा तो इतना अभिभूत होगा कि इनकार न कर सकेगा। इसलिए तुम जाने की जल्दी करो।

बुढ़िया ने जल्दी-जल्दी खाया-पिया और दरबारी पोशाक पहनी। उस बीच अलादीन ने गुलामों को पंक्तिबद्ध किया और यह बताया कि किस प्रकार दरबार में प्रवेश करें और किस भाँति एक-एक करके स्वर्ण पात्रों को बादशाह को ढक्कन खोल कर दिखाएँ। उस ने एक-एक हब्शी गुलाम के आगे एक-एक गोरे रंग गुलाम खड़ा किया और उनका दर्शनीय समूह बना दिया। उन के पीछे माँ को भेज कर वह अपने घर में व्यग्रता से परिणाम की प्रतीक्षा करने लगा।

यह काफिला चला तो नगरवासी मार्ग के दोनों ओर भीड़ लगा कर तमाशा देखने को खड़े हो गए। एक-एक गुलाम की पोशाक ही एक-एक लाख रुपए की होगी और उन के वस्त्रों तथा स्वर्ण पात्रों से निकलनेवाली चमक से देखनेवालों की आँखें चौंधियाई जाती थीं। गुलामों का समूह जब शाही दरबार के सामने पहुँचा तो हरकारों ने बादशाह को उस की खबर दी। उस ने आदेश दिया कि उन्हें दरबार में हाजिर करो। वे सभी कायदे से चलते हुए अर्ध गोलाकार रूप में सिंहासन के सामने खड़े हो गए। फिर उन गुलामों ने सम्मानपूर्वक ढकने हटा कर रत्नों को पेश किया। अलादीन की माँ ने आगे बढ़ कर सिंहासन का पाया चूमा और कहा, मेरे बेटे ने कहलवाया है कि यद्यपि यह भेंट आप के सम्मान के अनुकूल नहीं है फिर भी आशा है कि इसे स्वीकार करके मुझे अपनी गुलामी में लेंगे। बादशाह ने मंत्री से कहा, जो आदमी ऐसा मेहर दे सकता है वह निस्संदेह मेरe दामाद होने के योग्य है। मंत्री ने उस की मति को फेरना चाहा और ऊँच-नीच समझाया किंतु बादशाह ने उस

की न मानी।

बादशाह ने अलादीन की भेंट स्वीकार कर ली और उस की माँ से कहा, तुम अपने बेटे को यहाँ लाओ। मैं उसे देखना चाहता हूँ। मैं ने जो वचन दिया है उसे जरूर पूरा करूँगा। अलादीन की माँ यह सुन कर दौड़ी हुई अपने घर आई। उधर बादशाह भी दरबार से उठ कर अपने महल में आ गया।

उस ने दासों और सेवकों को आज्ञा दी कि रत्नों से भरे सारे पात्र शहजादी के महल में पहुँचा दिए जाएँ। वह स्वयं भी शहजादी के महल में गया ताकि उन रत्नों को भली-भाँति देखे। शहजादी के महल के आँगन में जब सजे-धजे अस्सी गुलाम आ कर खड़े हुए और शहजादी ने चिक की आड़ से उन्हें देखा तो उन के वैभव को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ी। उस ने इतने विशाल राज्य की राजकुमारी होने पर भी ऐसी तड़क-भड़क और ऐसे अमूल्य रत्न कभी नहीं देखे थे।

अलादीन की माँ ने घर जा कर पुत्र से कहा, तुम भगवान को धन्यवाद दो। तुम्हारा भाग्य खुल गया। बादशाह ने तुम्हारी भेंट पसंद कर ली और कहा कि शहजादी का विवाह तुम से होगा। अन्य दरबारियों ने भी सहमति प्रकट की। बादशाह ने तुम्हें बुलाया है ताकि तुम्हारे हाथ में अपनी पुत्री का हाथ दे दे। अलादीन यह सुन कर खुशी से झूम उठा। उस ने माँ से कहा, अम्मा, तुम्हें थोड़ी ही देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मैं तैयार हो कर अभी चलता हूँ। यह कह कर वह अंदर के कमरे में गया। उस ने चिराग को रगड़ा और जिन्न प्रकट हो कर आदेश की माँग करने लगा। अलादीन बोला, एक तो मैं हम्माम में स्नान करना चाहता हूँ, इस के बाद तुम मेरे लिए बादशाहों के जैसे कपड़े ले आओ। जिन्न ने उस का हाथ पकड़ा और उसे उड़ा कर एक संगमरमर के बने हम्माम में ले गया। अलादीन ने कपड़े उतार कर गर्म पानी से मल-मल कर नहाया और तरह-तरह की सुगंधियाँ अपनी देह में लगाईं। उस का शरीर गोरा और नरम हो गया और बदन के एक-एक जोड़ में चुस्ती आ गई और उस का चेहरा चाँद की तरह दमकने लगा। जब वह उस जगह आया जहाँ उस ने कपड़े उतारे थे तो वहाँ एक भारी कमख्वाब का जोड़ा अपने लिए रखा पाया।

वहाँ जिन्न भी आ गया जिसने कपड़े पहनने में अलादीन की सहायता की। फिर जिन्न ने कहा, अब क्या आज्ञा है? अलादीन ने कहा, मेरे लिए एक ऐसा बढ़िया घोड़ा लाओ जिसके मुकाबिले का कोई घोड़ा शाही अस्तबल में मौजूद न हो। उस का साज-सामान भी लाखों रुपए का होना चाहिए। इस के अलावा बारह गुलाम मेरे दाएँ-बाएँ और पीछे चलने के लिए हों और बीस सिपाही मेरी सवारी के आगे चलने के लिए। छह दासियाँ अच्छे कपड़े पहने हुए मेरी माँ की सेवा में चलें और दो दासियाँ दो भारी और अति मूल्यवान कपड़ों के जोड़े उठाए हुए साथ चलें, एक मेरी माँ के लिए और दूसरा मेरी भावी पत्नी के लिए। इस के अलावा दस तोड़े अशर्फियों के मेरे लिए हों जिन्हें मैं रास्ते में लुटाता चलूँ।

जिन्न यह आदेश पा कर गायब हो गया और दो क्षणों में यह सारी चीजें ला कर दे दीं। अलादीन ने अशर्फियों के चार तोड़े अपनी माँ को दिए ताकि शाही महल में इनाम-इकराम के काम आएँ और छह तोड़े अपने साथ चलनेवाले बारह गुलामों में से छह को दिए कि मुट्ठी भर-भर कर अशर्फियाँ फकीरों और गरीबों के लिए बादशाह के महल तक लुटाते चलें। अपनी माँ के आगे छह दासियाँ करके कहा, यह छह तो तुम्हारी सेवा के लिए हैं। इनके अलावा यह दो दासियाँ बहुमूल्य वस्त्र लिए हैं, इनमें एक जोड़ा जो तुम चाहो बदर बदौर को दे देना और दूसरा अपने लिए रख लेना। फिर उस ने जिन्न से कहा कि इस समय तुम जाओ, जब फिर जरूरत पड़ेगी तो तुम्हें बुलाऊँगा। जिन्न यह सुन कर गायब हो गया।

इस के बाद अलादीन ने एक दास को शाही दरबार में भेजा कि बादशाह से कहे कि अलादीन आना चाहता है। वह जा कर वापस हुआ और बोला, बादशाह और सारे सरदार आप की प्रतीक्षा में हैं। अलादीन कभी घोड़े पर न बैठा था किंतु उस बढ़िया घोड़े पर शान से बैठा और उसे कुदाता हुआ बाजार से निकला। लोगों की भीड़ लग गई और अलादीन के दासों ने अशर्फियाँ लुटानी शुरू कर दीं। लोगों ने अलादीन को हमेशा फटेहाल देखा था। उसे इस ठाठ-बाट में देख कर कोई पहचान न सका और लोग आपस में बातें करने लगे कि यह शानदार आदमी जो इतने खुले हाथों से अशर्फियाँ लुटा रहा है, कौन है। सारे शहर में उस की चर्चा होने लगी और जानकार लोगों ने बताया कि कुछ ही देर पहले इस ने बादशाह के लिए ऐसी बहुमूल्य भेंट भेजी है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी बताया कि इसी आदमी से शहजादी का विवाह होना निश्चित हुआ है। यह सुन कर लोग बड़े खुश हुए और कहने लगे कि वास्तव में शहजादी के लिए इस से अधिक उपयुक्त वर का मिलना असंभव था।

जब अलादीन महल के बाहरी फाटक पर पहुँचा तो उस ने चाहा कि घोड़े से उतरूँ। लेकिन वहाँ उस के स्वागत के लिए मंत्री, सरदार और अमीर-उमरा जो जमा हुए थे उन्होंने उसे उतरने नहीं दिया और उसे घोड़े पर बिठाए हुए ही प्रांगण में से ले गए। जब वह दरवाजे पर पहुँचा तो इन लोगों ने उसे घोड़े से उतारा और दो पंक्तियाँ बना कर उन के बीच में अलादीन को करके सम्मानीय अतिथि के रूप में बादशाह के सामने ले गए। अलादीन का रूप-रंग और वेशभूषा देख कर बादशाह को योग्य दामाद के पाने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। अलादीन ने चाहा कि बादशाह के पाँवों पर गिरे किंतु बादशाह ने उसे ऐसा करने से रोक दिया और उसे अपने साथ ही सिंहासन पर बिठा लिया।

बादशाह ने कहा, तुम किस देश से आए हो? अलादीन ने कहा, मैं आप ही की प्रजा में से हूँ, यहीं का निवासी हूँ, किंतु शहजादी के बगैर जिंदा नहीं रह सकता इसीलिए आप की सेवा में आया हूँ। बादशाह ने उसे गले लगा कर कहा, मैं अन्यायी नहीं हूँ। मैं ने जो वचन दिया है उस पर कायम हूँ। मेरे सामने मरने-जीने की बातें न करो, तुम मुझे बहुत प्यारे हो। मैं ने जैसी तुम्हारी प्रशंसा सुनी थी वैसा ही तुम्हें पाया। यह कह कर बादशाह ने इशारा किया तो चारों ओर से तरह-तरह के बाजे बजने लगे। फिर बादशाह अलादीन का हाथ पकड़ कर उसे महल के अंदर ले गया और दोनों ने साथ-साथ भोजन किया। बादशाह ने

उस से विभिन्न विषयों पर बातें कीं और देखा कि वह हर बात का बुद्धिमानी और शालीनता के साथ उत्तर देता है। बादशाह इस बात से बहुत खुश हुआ। भोजन से निवृत्त हो कर उस ने काजी को बुलाया और निकाह पढ़ने की तैयारी के लिए कहा। वह अलादीन को भेंटवार्ता के कक्ष में लाया जहाँ सरदारों और अमीरों ने अलादीन से बातें कीं और उस की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की। विवाह के बाद बादशाह ने अलादीन से कहा कि आज तुम इसी महल में रहो ताकि सुहागरात यहीं हो। अलादीन ने कहा, मैं आप की आज्ञा से बाहर नहीं हूँ किंतु मैं चाहता हूँ कि नया महल अपनी पत्नी के लिए बनवाऊँ और उसी में उस से भेंट करूँ। बादशाह ने कहा, अच्छी बात है, लेकिन तुम्हारा महल मेरे महल के पास ही होना चाहिए। मेरे महल के सामने एक बड़ा मैदान है। उस में तुम जहाँ भी चाहो अपना महल बनवा लो। यह कह कर उसे गले लगा कर विदा किया। अलादीन वापसी में भी दोनों ओर अशर्फियाँ लुटाता हुआ आया और प्रजाजन ने उस की दानशीलता और वैभव की और अधिक प्रशंसा की।

घर आ कर अलादीन अंदरूनी कमरे में गया। वहाँ उस ने चिराग को रगड़ कर फिर जिन्न को बुलाया। जिन्न ने सदा की भाँति उस से कहा, स्वामी, आज्ञा करें। अलादीन ने जिन्न से कहा, भाई, तुम प्रशंसा योग्य हो। जो कुछ भी मैं ने तुम से कहा है तुमने किया है। अब मैं तुम से एक बड़ा काम करने को कहता हूँ। बादशाह के महल के उस तरफ जो बड़ा मैदान है उस में तुम मेरे लिए एक बहुत ही शानदार महल बनाओ। तुम खुद ही जो पत्थर उचित समझो उस का महल बनाना। उस में एक बड़ी बारहदरी हो जिसकी छत गुंबददार हो और सिर्फ सोने-चाँदी की बनी हो। उस के चारों ओर के चौबीस दरवाजों में सिर्फ एक दरवाजा छोड़ कर बाकी में असंख्य रत्न जड़े हों। महल में एक बड़ा दीवानखाना और बहुत ही सुंदर फूलों का बाग भी होना चाहिए। उस का बावर्चीखाना ऐसा हो जिस में हजारों आदमियों का भोजन बन सके। उस के खजाने में असंख्य रत्न, अशर्फियाँ और रुपए हों। उस के भंडार गृह में हर मौसम के लायक कपड़ों की बहुतायात हो। उस की घुड़साल में सैकड़ों असील घोड़े हों और उन के लिए साईस भी। बहुत-से दास-दासियाँ और सेवक भी चाहिए। इस के अलावा मैं जो कुछ इस समय भूल रहा हूँ वह भी ला कर महल को सब प्रकार से संपूर्ण कर देना। जिस समय अलादीन ने जिन्न से यह सब करने को कहा उस समय संध्या हो रही थी। जिन्न ने कहा, कल सुबह जब आप जागेंगे तो आप को महल तैयार मिलेगा। यह कह कर जिन्न गायब हो गया और अलादीन अपने घर के शयन कक्ष में चला गया।

रात को अलादीन को काफी देर में नींद आई क्योंकि वह शहजादी के विरह में व्याकुल रहा। सवेरे कुछ देर में उस की आँख खुली तो जिन्न उस के पास आया और बोला कि चल कर देख लीजिए, जैसा महल आप ने कहा था वैसा बन कर तैयार हो गया है। अलादीन ने जा कर देखा तो उस की तबीयत खुश हो गई। अलादीन ने देखा कि महल काफी विस्तृत है और उस का प्रत्येक कक्ष इस तरह से सुसज्जित है जैसा अन्य कहीं मिलना मुमकिन नहीं है। हर जगह लाखों रुपए की सजावट है और सारा महल दास-दासियों से भरा हुआ है। सभी चुस्ती से अपना काम करने में लगे थे।

खजाने में सैकड़ों संदूक अशर्फियों, रुपयों तथा रत्नों से भरे हुए रखे थे। अलादीन को यह सब देख कर बहुत अच्छा लगा और उस ने जिन्न की बड़ी प्रशंसा की।

फिर वह जिन्न उसे घुड़साल में ले गया। वहाँ सारे देशों के अच्छी जातियों के घोड़े बँधे थे। हर एक के लिए एक होशियार साईस था और जड़ाऊ जीन लगामें थीं। कई घुड़साल के दारोगा भी साईसों के ऊपर नियुक्त थे। यह सब दिखाने के बाद जिन्न उसे भंडार गृह में ले गया। वहाँ जीवन की प्रत्येक आवश्यक वस्तु भरी पड़ी थी। इसी तरह कई तहखाने और कई ऊपरी कक्ष भी जिन्न ने उसे दिखाए। फिर वह खास बारहदरी दिखाई जिस के लिए अलादीन ने कहा था। यह सारा वैभव देख कर अलादीन बहुत खुश हुआ। फिर उस ने जिन्न से कहा, यह सब बहुत अच्छा है लेकिन एक चीज रह गई है जिसे प्रस्तुत करने के लिए तुम से कहना मैं भूल गया था। मैं चाहता हूँ कि एक काफी चौड़ाईवाला मखमली कालीन मेरे महल से ले कर राजमहल के द्वार तक बिछ जाए ताकि रास्ते पर मेरी स्त्री उस पर चल कर आए। जिन्न ने तुरंत ही मखमली कालीन भी बिछवा दिया।

राजमहल के सेवकों ने सुबह जब द्वार खोले तो देखा कि महल के सामने के मैदान में एक बहुत बड़ा भवन बना हुआ है। यह देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इस से भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उस महल के द्वार से राजमहल के द्वार तक एक चौड़ा मखमली कालीन बिछा हुआ है। उन्होंने महल में सब लोगों से यह कहा। मंत्री जब दरबार में आया तो उसे भी यह सब देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। दरबार के समय उस ने बादशाह से सिर नवा कर कहा, सरकार, राजमहल के सामने के मैदान में एक बड़ा भारी महल दिखाई देता है। कल तक वह मौजूद नहीं था। मुझे तो ऐसा लगता है कि काम जादू का है।

बादशाह ने मंत्री से बिगड़ कर कहा, तुम बिल्कुल गलत कहते हो। यहाँ जादू की कोई बात नहीं है। कल शादी के बाद जब मैं ने उस से राजमहल में रात बिताने को कहा तो उस ने मुझ से आज्ञा माँगी कि मैदान में अपने लिए महल बनवा लूँ और शहजादी का वहीं स्वागत करूँ। तुम्हें उस से जलन है इसलिए जादू आदि की बात करते हो। असली बात यह है कि अलादीन के पास अपार धन है। अगर उस ने लाखों लोगों को काम पर लगा कर एक रात में महल तैयार करवा लिया तो आश्चर्य की क्या बात है। चूँकि दरबार का समय आरंभ हो गया था इसलिए इस विषय पर बादशाह और मंत्री के बीच ओर कोई बातचीत न हो सकी।

अलादीन जिन्न को विदा दे कर अपने पुराने घर में आया। उस की माँ राजमहल में जाने के लिए कपड़े पहन रही थी। अलादीन ने कहा, अम्मा, तुम राजमहल उस समय जाना जब बादशाह दरबार खत्म करके अंतःपुर में जाए। तुम राजमहल में इन दो दासियों के साथ जाना और जिन्न ने हमें जो पोशाकें ले जाने के लिए दी हैं, यह दोनों जोड़े और जेवर तुम शहजादी ही को दे देना। यह सुन कर उस ने वस्त्र पहनना समाप्त किया और बुरका ओढ़ कर राजमहल को गई। इधर अलादीन पिछले दिन की तरह अशर्फियाँ लुटाता हुआ अपने नए महल में आया।

उस की माँ राजमहल में पहुँची तो चोबदारों ने उस के आगमन की सूचना बादशाह को दी। उस ने उस के स्वागतार्थ बाजों के बजाए जाने की आज्ञा दी। महल के बाहर भी बाजे बजने लगे। यह इस बात की सूचना देने के लिए कि शहजादी आज ससुराल जानेवाली है। सारे नागरिकों ने उत्सव मनाना शुरू कर दिया। रात की दीप मालिकाओं का प्रबंध किया जाने लगा। व्यापारी लेन-देन छोड़ कर अपनी दुकानों और घरों की सजावट करने लगे। हर दरवाजे पर वंदनवार और बैठक में कीमती कालीन बिछाए गए। लोग बड़ी तादाद में आ कर शहजादी के जाने के मार्ग पर जमा हो गए। सभी को अलादीन द्वारा बनवाए हुए नए महल तथा राजमहल से उस महल तक के मार्ग पर बिछे हुए कालीन को देख कर बड़ा आश्चर्य था।

महल के ख्वाजासराओं का सरदार अलादीन को सम्मानपूर्वक महल के अंदर ले गया। शहजादी ने भी उठ कर सम्मानपूर्वक अपनी सास की अगवानी की। अलादीन की माँ ने वे वस्त्राभूषण जो अपने साथ लाई थी शहजादी को पहनाने के लिए दिए। सेविकाओं और दासियों ने वे वस्त्राभूषण शहजादी को पहनाए। जब वह ससुराल से आए वस्त्राभूषण पहन चुकी तो बादशाह भी उसे देखने को आया। उस ने पहली बार अलादीन की माँ का खुला चेहरा देखा (क्योंकि अब दोनों में रिश्तेदारी हो गई थी) और कहने लगा, मैं तो आप को खूसट बुढ़िया समझे हुए था। अब देखता हूँ तो आप बुद्धिमती ही नहीं बल्कि सुंदर और जवान भी लगती हैं।

दिन भर उत्सव और दावतें होती रहीं। शाम को दुल्हन अपनी ससुराल के लिए विदा हुई। बादशाह और शहजादी गले मिल कर रोए। फिर शहजादी पतिगृह को चल दी। उस के पीछे सौ दासियों को ले कर अलादीन की माँ चली। यह जुलूस जब महल के मुख्य द्वार पर आया तो वहाँ से एक पार्श्व में सौ सरदार तथा दूसरे में उतने ही ख्वाजासरा शहजादी के आगे हो लिए। इन सब के बीच में सुंदरता की प्रतिमूर्ति शहजादी मखमली कालीन पर हंस की गति से चलने लगी। अलादीन के महल से डोमिनियों और मोरासिनों ने शहजादी को आते देख कर उस की अगवानी में गीत गाए। वह महल के द्वार पर पहुँची तो अलादीन उस के स्वागत के लिए आया। उस की माँ ने बताया कि शहजादी कौन है क्योंकि बढ़िया पोशाकें पहने हुए बीसियों सुंदरी दासियाँ वहाँ मौजूद थीं। शहजादी ने भी पहली बार अलादीन को देखा था क्योंकि विवाह के समय तो लज्जावश वह सिर ही नहीं उठा सकी थी। अलादीन को स्वस्थ और सुंदर देख कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। अलादीन ने बड़ी सुशीलता के साथ उस से कहा, मेरे बड़े भाग्य हैं कि मैं ने तुम जैसी भुवनमोहिनी कोमलांगी वैभवशाली राजकुमारी को पाया है यद्यपि मेरी हैसियत कुछ नहीं है। भगवान ने शायद तुम से सुंदर किसी को रचा ही नहीं।

शहजादी ने भी वैसी ही शालीनता दिखाते हुए कहा, ऐ मेरे सिरताज, वैसे तो मैं लड़की होने के कारण विवाह में अपने पिता की इच्छा की पाबंद हूँ और वे जिसे मेरा पति बनाते उसे मैं प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेती। किंतु अब आप को देख कर अपना भाग्य सराहती हूँ कि मेरे पिता ने मेरे लिए कितना अच्छा वर तलाश किया है। अलादीन यह शालीन उत्तर सुन कर प्रसन्न हुआ। फिर उस ने सम्मानपूर्वक पत्नी का हाथ चूम कर

कहा, पर तुम इतनी दूर पैदल चलने में बहुत थक गई होगी। हम लोग चल कर बारहदरी में बैठें और कुछ जलपान करें।

बारहदरी में इतनी जबर्दस्त सजावट थी कि आँखें चौंधियाई जाती थीं। सैकड़ों मोमबत्तियों की रोशनी में सारी छत और दीवारें, परदे आदि जगमगा रहे थे। रेशमी दस्तरख्वानों पर बीसियों सोने-चाँदी की तशतरियाँ रखी थीं जिनमें भाँति-भाँति के स्वादिष्ट व्यंजन थे। लाखों रुपए का सामान अकेली उस बारहदरी में लगा था। शहजादी कहने लगी, मैं तो समझती थी कि मेरे पिता के महल से ज्यादा शानदार और कोई जगह न होगी किंतु इस महल के आगे तो वह कुछ भी नहीं है।

अलादीन, शहजादी और अलादीन की माँ भोजन करने बैठे तो गायिकाओं ने सुंदर साजों पर मधुर गायन आरंभ किया। शहजादी फिर कहने लगी कि मैं ने जीवन में कभी ऐसा मोहक गायन नहीं सुना। उस बेचारी को क्या पता था कि यह गानेवालियाँ खुद परियाँ हैं जिन्हें चिराग का जिन्न लाया है। शहजादी या किसी को भी सिवा अलादीन और उस की माँ के चिराग का भेद भी ज्ञान नहीं था।

फिर दासियों ने खाने के बरतन उठा दिए और नर्तकियों का एक समूह आया। उस ने तरह-तरह के नृत्य और नाटक उपस्थित किए। जब आधी रात हो गई तो शहजादी और अलादीन भी नाचे क्योंकि चीन में यही रिवाज था कि शादी की पहली रात को दूल्हा-दुल्हन भी नाचते थे। फिर अलादीन और शहजादी अपने शयन कक्ष में गए। रात भर अलादीन आराम से सोया। दूसरे दिन सवेरे दासियाँ उसे पहनाने के लिए नए कपड़े लाईं। यह वस्त्र उसी तरह के थे जैसे पहले दिन के कपड़े थे यद्यपि वे उनसे रंग में किंचित भिन्न थे। सोने-चाँदी की जरदोजी का काम इन पर भी वैसा ही था। इस के बाद उस की सवारी के लिए एक घोड़ा लाया गया जो पिछले दिनवाले घोड़े से भिन्न था किंतु तेजी में उसी तरह का था।

अलादीन घोड़े पर सवार हो कर बिजली जैसी तेजी से राजमहल पहुँचा। उस के साथ दासों का एक दल भी था। बादशाह ने पिछले दिन की भाँति ही उस से सम्मान के साथ भेंट की और अपने साथ ही तख्त पर बिठाया। कुछ देर दरबार में रहने के बाद जहाँ उस ने कई मुकदमों में अलादीन से सलाह ली, वह दरबार खत्म करके महल में आया और अलादीन को भी हाथ पकड़ कर अपने साथ लाया।

अपने विश्राम कक्ष में बैठने के बाद उस ने आज्ञा दी कि भोजन प्रस्तुत किया जाए। अलादीन ने निवेदन किया, आज इस दास को यहाँ न खिलाइए बल्कि इसी के घर में रूखा-सूखा भोजन ग्रहण करके इसे अनुग्रहीत कीजिए। बादशाह ने यह निमंत्रण स्वीकार किया। वह दाईं ओर अलादीन, बाईं ओर मंत्री और पीछे दरबारियों को ले कर आया। सभी ने अलादीन के नए महल के प्रत्येक भाग को देखा। हर एक कक्ष को देख कर उन सभी को बड़ा आश्चर्य होता था। अंत में अलादीन सभी को बारहदरी में ले गया।

बादशाह ने वहाँ बैठ कर मंत्री से कहा कि मेरे खयाल में दुनिया भर में इतना शानदार महल कोई नहीं होगा। मंत्री ने कहा, पृथ्वीपालक, परसों तक इस महल का कहीं नामोनिशान नहीं था, कल सुबह ही यह दिखाई दिया है। मैं ने ही आप को सब से पहले इस के तैयार होने की सूचना दी थी। बादशाह ने कहा, यह सच है। तुम्हीं ने मुझे इस के बारे में बताया था और मुझे यह बात भूली नहीं है। लेकिन मैं यह नहीं समझता था कि इतना सुंदर महल अलादीन ने बनवाया होगा। हम लोग जहाँ संगमरमर की दीवारों और छतों को बहुत समझते हैं वहाँ यहाँ सोने और चाँदी की ईटों का प्रयोग हुआ है। हम लोग जहाँ लोहे और पीतल से दरवाजों को सजाते हैं वहाँ इन दरवाजों में जवाहरात लगे हैं। यहाँ के तो ठाठ ही निराले हैं।

बादशाह उत्सुकतावश बारहदरी के दरवाजों को घूम-घूम कर गौर से देखने लगा। फिर उस ने आश्चर्यान्वित हो कर मंत्री से कहा, इस बारहदरी के तेईस दरवाजों में तो बहुमूल्य रत्न ऊपर से नीचे तक जड़े हैं किंतु एक दरवाजा बिल्कुल सादा रह गया। शायद अलादीन को इसमें रत्न जड़वाने का समय नहीं मिला। यह भी संभव है कि उस के पास के जवाहरात खत्म हो गए हों और यह दरवाजा छूट गया हो। खैर, कोई बात नहीं है। बाद में वह फुरसत से इस दरवाजे पर भी रत्न जड़वा देगा।

उस समय अलादीन किसी काम से गया था। उस के आने पर बादशाह ने पूछा कि एक दरवाजा बगैर रत्नों के कैसे रह गया। अलादीन ने कहा, इस के सादा रहने का कोई कारण नहीं था, किसी तरह यूँ ही सादा रह गया। अब आप की कृपा होगी तो इसमें भी जवाहरात जड़ जाएँगे।

बादशाह ने कहा, तुम्हारी इच्छा हैं तो ऐसा ही होगा। मैं इसे रत्नजटित करवा दूँगा। यह कह कर उस ने नगर के सारे जौहरियों को बुलाया। इधर अलादीन बादशाह को भोजन कक्ष में ले गया जहाँ शहजादी भी अपने पिता से मिली। वह बहुत प्रसन्नवदन दिखाई दे रही थी। वहीं जमीन पर बहुमूल्य दस्तरख्वान बिछे थे और रत्नजटित स्वर्ण पात्रों में नाना प्रकार का भोजन परोसा रखा था। एक जगह शहजादी और बादशाह के साथ अलादीन और दूसरी जगह मंत्री और दरबारी बैठ कर भोजन करने लगे। भोजन करने के बाद बादशाह ने व्यंजनों की प्रशंसा की और कहा कि यद्यपि मेरा बावर्चीखाना बहुत अच्छा है किंतु मैं ने भी ऐसे स्वादिष्ट व्यंजन नहीं खाए।

कुछ देर में मंत्री ने बादशाह से कहा कि आप ने जिन जौहरियों को बुलाया था वे सब आ गए हैं। बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा, इन तेईस दरवाजों के रत्नों की बनावट और सज्जा तुम भली-भाँति देख लो। तुम लोगों को चौबीसवाँ दरवाजा भी ऐसा ही जड़ाऊ बनाना है। उन लोगों ने अच्छी तरह देख-भाल कर कहा, हम रत्न जड़ तो सकते हैं किंतु हमारे पास ऐसे मूल्यवान रत्न नहीं है। बादशाह ने कहा, इसकी चिंता न करो। शाही खजाने से जितने जवाहरात चाहो ले लेना। मंत्री ने भी अपनी वफादारी दिखाने के लिए कहा, मैं अपने पास से सारे रत्न दे दूँगा। किंतु दरवाजा ठीक वैसा ही बनना चाहिए जैसे अन्य दरवाजे हैं।

बादशाह अपने महल में गया। उस ने और मंत्री ने सारे रत्न, जिनमें अलादीन की माँ द्वारा भेंट किए हुए रत्न भी थे, जौहरियों के हवाले कर दिए। उन्होंने अपने कारीगर लगवा कर बारहदरी के खाली दरवाजे पर अन्य दरवाजों के नमूने पर रत्न जड़वाए। एक महीने के काम के बाद देखा गया कि बादशाह और मंत्री के दिए हुए सारे रत्न खत्म हो गए लेकिन दरवाजा पूरा फिर भी न भरा। वे लोग परेशान होने लगे कि बादशाह से जा कर क्या कहेंगे। उस समय अलादीन ने उन से कहा, तुम लोगों ने भरसक प्रयत्न किया। अब तुम यह जड़े हुए रत्न उखाड़ कर बादशाह और मंत्री के पास वापस पहुँचा दो। दरवाजे की फिक्र न करो, वह जड़ जाएगा।

वे लोग रत्न उखाड़ कर ले गए तो अलादीन ने अकेले में फिर चिराग को रगड़ा और जिन्न के आने पर कहा, अब तुम इस दरवाजे को भी दूसरे दरवाजे की तरह बना दो। जिन्न गायब हो गया। अलादीन भी कहीं चला गया। दो क्षण बाद उस ने आ कर देखा कि सादा दरवाजा भी दूसरे दरवाजों की तरह बन गया है। उस ने दास भेज कर सारे जौहरियों को वापस बुलाया और दरवाजा दिखा कर कहा, रत्नों को वापस करते समय यह भी कह देना कि अलादीन ने सादा दरवाजा भी रत्नजटित करवा दिया है। सारे जौहरियों को इस बात पर घोर आश्चर्य हुआ लेकिन वे चुपचाप चले गए।

उन्होंने जा कर बादशाह और मंत्री को रत्न वापस किए और अलादीन का दिया हुआ संदेश भी देना चाहा किंतु बादशाह उन की बात सुने बगैर फिर मंत्री को ले कर अलादीन के महल में आ गया और उसे स्वागत-सत्कार का अवसर दिए बगैर बारहदरी में चला गया। वह अलादीन से कहने लगा, बेटे, मैं सिर्फ यह पूछने के लिए यहाँ आया हूँ कि तुमने उस दरवाजे की जड़ाई क्यों रोक दी और मेरे और मंत्री के रत्न क्यों वापस कर दिए। उस ने कहा, मैं ने खुद ही दरवाजा जड़वा लिया, आप देख लें।

बादशाह ने जा कर देखा तो पहचान ही न सका कि कौन-सा दरवाजा था जिसकी नई जड़ाई हुई है। वह यह देख कर बहुत खुश हुआ। वह कहने लगा, बेटे, तुम जैसा कोई आदमी नहीं हो सकता। तुम हमेशा ऐसे काम करते हो जो मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर हैं। तुम वाकई हर बात में कमाल करते हो। अलादीन ने विनयपूर्वक सिर झुका कर कहा, यह सब आप की महत्ता और आप का मुझ पर अनुग्रह है जो यह प्रशंसा कर रहे हैं वरना मैं तो किसी योग्य भी नहीं हूँ। इस के बाद बादशाह अपने महल में चला गया। वहाँ उस ने मंत्री से अलादीन के महल की प्रशंसा की। मंत्री ने कहा कि मुझे तो यह सब जादू लगता है। बादशाह ने हँस कर कहा, तुम्हें अब भी अलादीन से इसलिए जलन है कि तुम्हारे बेटे के बजाय उसे दामाद बना लिया। वह कसक तुम्हारे दिल से नहीं गई इसीलिए तुम अलादीन की प्रशंसा नहीं सुन सकते। मंत्री यह सोच कर चुप हो रहा कि बादशाह मूर्ख है और धोखे ही में रहना चाहता है। बादशाह रोज अपने महल की छत पर खड़ा हो कर अलादीन के महल को देखता और मन ही मन उस की प्रशंसा किया करता।

अलादीन शौकीन भी था और दिल का अच्छा भी। वह सप्ताह में एक दिन बाजार में सवार हो कर निकलता, कभी मसजिद में सबके साथ नमाज पढ़ने जाता, कभी मंत्री और

अन्य अमीरों-सरदारों के घर उनसे मिलने जाता और अपने घर पर भी उनकी दावतें करता। उस ने दासों को यह काम सौंप रखा था कि जब उस की सवारी निकले तो दोनों ओर फकीरों और निर्धनों के लिए अशर्फियाँ लुटाते चलें। इस कारण जब वह सवार हो कर निकला तो रास्ते में भीड़ हो जाती और लोग उस की शान-शौकत और उदारता की प्रशंसा करते। जो भिखमंगे और निर्धन उस के घर पर जा कर सहायता प्राप्त करने में असमर्थ होते उन्हें भी वह इस प्रकार मदद देता। इस के अलावा हर हफ्ते वह एक बार शिकार के लिए भी जाता था। कभी तो नगर के पास ही शिकार खेल कर वापस चला आता था और कभी जंगल में इतनी दूर निकल जाता कि दो-चार दिन बाद आता।

उस ने अपनी दानशीलता के कारण नगर में किसी को निर्धन न रहने दिया था। इस उदारता के कारण जनसाधारण उसे बहुत प्यार करने लगे थे। यहाँ तक कि उस के सिर की कसम खानेवाले पर भी तुरंत विश्वास कर लिया जाता। साथ ही वह बादशाह को भी प्रसन्न रखता था। वह उसे अपने पराक्रम से भी प्रभावित करना चाहता था। उसे जल्दी ही इसका अवसर मिल गया। बादशाह ने यह इरादा किया कि अपने एक पुराने वैरी बादशाह पर हमला करके उस का राज्य ले ले।

इसलिए उस ने बड़ी फौज जमा की। अलादीन ने कहा, इतनी अधिक सेना की क्या जरूरत है। मुझे आज्ञा दें तो मैं थोड़ी-सी ही सेना ले कर वैरी को खत्म कर दूँ। बादशाह ने अनुमति दे दी और अलादीन ने युद्ध कौशल से थोड़ी-सी सेना के बल पर ही दुश्मन को हरा दिया। बादशाह इस विजय का समाचार सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ, उस की शक्ति बहुत बढ़ गई। अलादीन का भी दूर-दूर तक नाम हुआ। अलादीन इसी प्रकार कई वर्ष तक सम्मानपूर्वक रहा।

जिस जादूगर ने अलादीन को गढ़ेवाली गुफा में बंद किया था उसे विश्वास था कि अलादीन वहीं मर-खप गया होगा। फिर भी एक दिन उसे बैठे-बैठे खयाल आया कि देखें तो उस का क्या हाल है।

उस ने अपने दालान में बैठ कर संदूकचे से रमल की पुस्तकें और यंत्र निकाले और कई घंटों तक विचार करता रहा कि अलादीन का क्या हाल है। उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बार-बार रमल फेंकने पर भी यही मालूम हुआ कि अलादीन अत्यंत धनवान हो गया है और उस का विवाह चीन की राजकुमारी से हो गया है। इस बात को जान कर उस के हृदय में ईर्ष्या की लपटें उठने लगीं। उस का चेहरा लाल हो गया ओर आँखों से जैसे खून टपकने लगा। वह सोचता रहा कि भाग्य की विडंबना देखो कि सारी मेहनत मैं ने की और उस का फल भोग रहा है वह आवारा दरजी का बेटा।

उस ने कई दिनों तक इस बात पर विचार किया और अंत में इस नतीजे पर पहुँचा कि घर में पड़े-पड़े पछताने से कोई लाभ नहीं हैं, एक बार फिर चीन की यात्रा करनी चाहिए। किसी तरह अलादीन से वह जादू का चिराग लेना चाहिए जिस से वह इतना अमीर बना है

कि शहजादी को ब्याह सके। उस ने यह भी सोचा कि अगर संभव हो तो अलादीन को मार भी डालना चाहिए। अजीब बात यह थी कि अलादीन को जादू का छल्ला देने के बाद वह उस के बारे में भूल ही गया था। अलादीन को भी उस की याद न रही थी। दोनों चिराग से अभिभूत थे।

जादूगर घोड़े पर बैठ कर चीन को चल पड़ा। उस ने रातों को सरायों में सोने के अलावा कहीं दम न लिया और कुछ महीनों में चीन जा कर अलादीन के नगर में, जो राजधानी थी, पहुँच गया। उस ने एक सराय में कमरा किराए पर लिया और नगर में घूम कर अलादीन के बारे में पता लगाने लगा। एक दिन बहुत-से लोग अलादीन के विचित्र महल की बातें कर रहे थे। उस ने पूछा, यह अलादीन कौन है? लोगों ने कहा, तुम विदेशी हो इसीलिए उसे नहीं जानते। वह बड़ा ही अमीर है, बादशाह का दामाद है और उस का महल शाही महल से कहीं बढ़ कर शानदार है। हम लोग बताएँगे तो तुम्हें विश्वास नहीं होगा, अपनी आँखों से उस का महल देखोगे तो विश्वास होगा।

जादूगर ने कहा, मैं वास्तव में परदेशी हूँ। मैं अफ्रीका का रहनेवाला हूँ। कल ही यहाँ आया हूँ। आप लोग कृपा करके बताएँ कि अलादीन का विचित्र महल कहाँ पर है तो मैं भी उसे देखूँ। लोगों ने उसे अलादीन के महल का पता बता दिया। उस जादूगर ने जा कर महल को चारों ओर से भली प्रकार से देखा। उसे निश्चय हो गगा कि उसी चिराग के बल पर अलादीन ने यह महल बनवाया है क्योंकि चिराग का जिन्न हर बात कर सकता है। वह सराय में वापस आ कर अपना कमरा बंद करके फिर रमल की पुस्तकें खोल कर बैठ गया और विचार करने लगा कि इस समय वह चिराग कहाँ है। उसे मालूम हुआ कि चिराग किसी आदमी के पास नहीं है बल्कि उसी महल के एक कमरे में रखा हुआ है। साथ ही उसे यह भी मालूम हुआ कि अलादीन इस समय महल में नहीं है और कई दिनों तक महल में नहीं आएगा। वह यह सब जान कर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि अलादीन की अनुपस्थिति में वह आसानी से धूर्ततापूर्वक चिराग को हथिया सकता था और चिराग हाथ में आने के बाद उसे अलादीन या किसी और की क्या चिंता थी।

अपनी पुस्तकें आदि बंद करके वह सराय के मालिक के पास गया और अलादीन के विचित्र महल की बड़ी प्रशंसा करने के बाद कहने लगा कि महल देख कर तो मैं बड़ा प्रसन्न हुआ, अब चाहता हूँ कि उस के मालिक को भी देखूँ। सरायवाले ने कहा, यह क्या मुश्किल है। वह हर हफ्ते सवार हो कर शहर में निकलता है। लेकिन अभी पाँच दिन तक न आएगा क्योंकि शिकार खेलने के लिए दूर के किसी जंगल में गया है। जादूगर के लिए इतनी सूचना काफी थी। वह कुछ देर तक सोचता रहा फिर एक ठठेरे की दुकान पर गया जहाँ धातु की वस्तुएँ बनती थीं। उस ने ठठेरे से कहा कि मुझे ताँबे के बारह सुंदर और बड़े चिराग चाहिए। ठठेरे ने कहा, आज तो नहीं हो सकता किंतु कल तुम्हें चिराग मिल जाएँगे। जादूगर ने कहा, कोई हर्ज नहीं। कल ही दे देना। लेकिन यह ध्यान रहे कि उन्हें खूब रगड़ कर देना ताकि वे चमचमाने लगें। दाम जो भी माँगोगे दे दूँगा। ठठेरे ने चिराग बनाना मंजूर कर लिया।

दूसरे दिन जादूगर ने ठठेरे से बारह सुंदर चमचमाते हुए नए चिराग लिए और उन्हें एक खूबसूरत टोकरी में रख कर अलादीन के महल की ओर चला। जब पास पहुँचा तो ऊँची आवाज में हाँक लगाने लगा, पुराने दीपकों से बदल कर नए चिराग ले जाओ, पुराने दीपकों से बदल कर नए चिराग ले जाओ। गलियों में खेलनेवाले लड़के वहाँ जमा हो गए और पागल समझ कर हो-हल्ला करने लगे और मजाक में उसे अजीब नामों से पुकारने लगे। अधिक अवस्था के लोग भी उस की विचित्र हाँक को सुन कर हँसने लगे और कहने लगे कि यह आदमी पागल हो गया है जो उल्टा व्यापार कर रहा है।

जादूगर ने न तो बड़ी उम्र के लोगों के हँसने की परवा की न लड़कों की भद्दी बातों का बुरा माना। वह बराबर यही आवाज लगाता रहा। पुराने दीपकों से बदल कर नए चिराग ले जाओ। उस समय बदर बदौर अपनी सुसज्जित बारहदरी में बैठी थी। उस ने जादूगर की आवाज सुनी लेकिन समझ न सकी कि वह क्या कह रहा है क्योंकि लड़के बहुत शोर कर रहे थे। इसलिए उस ने एक दासी से, जो उस के पिता के महल से उस के साथ आई थी, कहा कि बाहर जा कर देखो कि कैसा शोर हो रहा है। वह दासी थोड़ी देर बाद हँसती हुई वापस आई तो शहजादी ने कहा, क्यों दाँत निपोर रही है? बताती क्यों नहीं कि क्या बात है? दासी ने अपनी हँसी पर काबू पा कर कहा, मालकिन, एक अजीब पागल आदमी है। नए दीये लिए है। उन्हें बेचता नहीं बल्कि कहता है कि पुराने दीये दे कर नए ले जाओ।

शहजादी हँसने लगी। दासी ने कहा, एक मैला-कुचैला दीया मैं ने अंदर रखा देखा है। ऐसे शानदार महल में वह अच्छा नहीं लगता। आप कहें तो उसे बदल लाऊँ। यह वही जादू का चिराग था। उसे मैला तो होना ही था क्योंकि जरा-सी रगड़ से जिन्न आ जाता था। अलादीन को चाहिए था कि हमेशा अपने ही पास वह चिराग रखता किंतु विनाशकाले विपरीत बुद्धिः। फिर इतने दिनों के ऐश-आराम के बाद वह चिराग की रक्षा की ओर से बेपरवाह भी हो गया। उस ने बादशाह और बदर बदौर को उस के बारे में कुछ न बताया था क्योंकि जादू की बात से शायद उसे धोखेबाज समझा जाता। उस की माँ इस समय तक मर चुकी थी और इस समय अलादीन और जादूगर के अलावा कोई मनुष्य उस चिराग का रहस्य नहीं जानता था।

शहजादी को दासी की बात पसंद आई। उस ने एक दास से कहा, यह दासी जो चिराग बता रही है उसे ले जाओ ओर इस के बदले में नया चिराग ले आओ। वह दास जो चिराग को ले कर जादूगर के पास गया और बोला, यह पुराना दीया लो और नया दीया दे दो। जादूगर इसे देखते ही समझ गया कि यही उस का वांछित चिराग है। उस ने दास के हाथ से चिराग लिया और उस के आगे टोकरी दी कि इनमें से जो दीप कर चाहो छाँट कर ले जाओ। दास ने उस में से सब से अच्छा चिराग ले कर मालकिन को दे दिया। यह होने के बाद लड़कों ने फिर शोर करना शुरू कर दिया।

जादूगर आगे बढ़ा लेकिन अब उस ने आवाज लगाना बंद कर दिया था। अब लड़कों को भी उसे छेड़ने में मजा नहीं आ रहा था इसलिए वे भी इधर-उधर बिखर कर अपने खेलों में लग गए। जादूगर ने जब दोनों महलों के बीच का मैदान पार कर लिया और तंग और

सुनसान गलियों में घुसा तो तेज-तेज चलने लगा। एक बिल्कुल निर्जन स्थान में उस ने टोकरी और सारे नए चिराग कूड़े में फेंक दिए और जादू के चिराग को निकाला। वह सराय में भी न गया क्योंकि वह रमल की सामग्री अपने साथ ले आया था और जादू का चिराग पाने के बाद उसे सराय में रखे सामान और घोड़े की क्या चिंता होनी थी। आधी रात तक वह उसी निर्जन स्थान में रहा फिर उस ने चिराग को रगड़ा। जिन्न ने प्रकट हो कर आदेश माँगा तो जादूगर ने कहा कि मुझे और अलादीन के पूरे के पूरे महल को उठा कर अफ्रीका में मेरे निवास स्थान पर पहुँचा दो। जिन्न ने तुरंत उस की आज्ञा का पालन किया और जादूगर के साथ अलादीन के महल को उस के अंदर के सभी लोगों के साथ अफ्रीका पहुँचा दिया।

बादशाह के बारे में पहले ही बताया जा चुका है कि वह रोजाना अपने महल की छत पर चढ़ कर अलादीन के महल को देखा करता था। दूसरे दिन वह हमेशा की तरह उस महल को देखने गया तो उसे साफ मैदान ही दिखाई दिया। उस ने अपनी आँखों को मला। उसे आश्चर्य हुआ कि सूरज साफ चमक रहा है, न बादल हैं न कुहरा, फिर भी अलादीन का महल क्यों नहीं दिखाई दे रहा है। उस ने चारों ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखा किंतु उसे महल नहीं दिखाई दिया। बादशाह को ऐसा मानसिक उद्वेग हुआ कि वह उस मैदान को जहाँ पर कल शाम तक वह महल खड़ा था देखता ही रहा, देखता ही रहा।

वह सोच रहा था कि हो क्या गया और कैसे हो गया। इतना बड़ा और रत्नों और सोने-चाँदी से जगमगाता हुआ महल ऐसे नजर से गायब हो गया जैसे पहले कभी था ही नहीं। उस का जरा-सा भी निशान नहीं दिखाई देता। अगर वह जमीन में धँसा होता तो उसके कंगूरे तो भूमि से निकले दिखाई देते, और यदि किसी कारण गिर पड़ा होता तो उस के मलबे का ढेर दिखाई देता। किंतु यह विश्वास होने पर भी कि महल नहीं है उस ने किसी दास या कर्मचारी से कुछ न कहा क्योंकि बात इतनी अविश्वसनीय थी कि उसे अपना दृष्टि-भ्रम ही समझता था। बार-बार उधर देखने के बाद वह निराश हो कर विश्रांत कक्ष में चला गया।

वहाँ जा कर उस ने मंत्री को बुलाया। वह आया और कहने लगा, पृथ्वीनाथ, आज आप ने इस समय यहाँ क्यों बुलाया है? कोई विशेष बात है क्या? बादशाह ने कहा, इस से अद्भुत बात क्या होगी जो आज हुई है? तुमने मैदान की ओर भी देखा है? मंत्री बोला, आप ने आज बड़े सरदारों की विशेष सभा बुलाई थी, मैं तो सुबह से उसी के प्रबंध में लगा हूँ। मैं ने कुछ नहीं देखा। बादशाह ने कहा, तुम अभी महल की छत पर चढ़ो और देख कर बताओ कि अलादीन का महल दिखाई देता है या नहीं।

मंत्री ने राजाज्ञा के अनुसार ऊपर जा कर देखा तो उसे भी चटियल मैदान के अलावा कुछ न दिखाई दिया। उस ने भी चारों ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखा और जब उसे विश्वास हो गया कि महल अदृश्य है तो नीचे उतर कर बादशाह के समीप आया। बादशाह ने पूछा कि तुम्हें अलादीन का महल दिखाई दिया या नहीं। मंत्री ने हाथ जोड़ कर कहा, स्वामी, इस सेवक ने पहले ही निवेदन किया था कि यह सब जादू के सिवा कुछ नहीं। आप ने मेरी बात

पर ध्यान नहीं दिया।

बादशाह ने क्रोध में भर कर कहा, यह समय तुम्हारी बात को सच या झूठ साबित करने का नहीं है। मुझे बताओ कि वह बदमाश और मक्कार अलादीन कहाँ है। मैं उसे मृत्युदंड दूँगा। मंत्री ने कहा, सरकार, वह तीन-चार दिन पहले आप से छुट्टी ले कर एक सप्ताह के लिए शिकार खेलने को गया है। मैं अभी पता लगाता हूँ कि इस समय वह कहाँ है। बादशाह ने गरज कर कहा, तुम चुने हुए तीस बहादुर फौजी अफसरों को भेजो जो चारों तरफ नाकेबंदी भी कर लें। ऐसा न हो कि वह बदमाश कहीं छुप कर निकल जाए।

शाही आदेश पा कर यह तीस अफसर उस तरफ चले जिधर अलादीन शिकार खेलने गया था और सिपाहियों को भी इधर-उधर चौकसी के लिए भेज दिया गया। अलादीन शिकार खेल कर लौट रहा था। शहर से दस बारह मील निकल कर इन अफसरों ने उसे देखा और उसे सलाम करके कहा, बादशाह की आज्ञा है कि हम आप को उन के सामने पहुँचाएँ। अलादीन ने देखा कि अफसरों ने उस के चारों ओर से घेरा डाल लिया है। अलादीन यह तो समझ गया कि यह रंग-ढंग गिरफ्तारी के हैं। वह उन के साथ चलने लगा। जब नगर लगभग एक मील रह गया तो अफसर उस के सामने जंजीरें ले कर आए और कहा कि इन्हें पहन लीजिए। उस ने कहा, मेरा अपराध क्या है जिसके लिए मेरी गिरफ्तारी हो रही है? उन्होंने कहा, यह हम नहीं जानते। हमें तो सिर्फ यह कहा गया है कि आप को जंजीरों में जकड़ कर बादशाह के सामने पेश करें।

अलादीन कहता भी क्या। फौजियों ने उस की गर्दन और हाथ-पाँव को ऐसा जंजीरों से जकड़ा कि वह हिल-डुल भी नहीं सकता था। कुछ देर बाद उसे घोड़े से भी उतार दिया गया और एक सवार ने उस की जंजीर थाम ली। शहर में लोगों ने यह देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि अब इसका प्राणांत होनेवाला है क्योंकि मृत्युदंड के भागी ही को इस तरह से ले जाया जाता है। लोग इस से भड़क गए। अलादीन सभी को प्यारा था और सभी उस के कृतज्ञ थे। चुनांचे जिसे भी जो अस्त्र-शस्त्र मिला वह उसे ले कर दौड़ा आया।

फौजी सवारों ने देखा कि वे लोग अलादीन को छुड़ाने के लिए आ रहे हैं तो उन्होंने उसे एक घोड़े पर लादा और कौशलपूर्वक जनता से बचा कर उसे किले में ले आए और द्वारपाल ने खतरा देख कर किले का द्वार बंद कर लिया। अलादीन को उसी बँधी हुई हालत में बादशाह के सामने पेश किया गया। बादशाह गुस्से में अंधा हो रहा था। उस ने पहले ही जल्लाद को बुला रखा था। अलादीन को देखते ही उस ने चीख कर कहा, इस से बहस करने की कोई जरूरत नहीं है। अभी इसका सिर उड़ा दिया जाए।

जल्लाद ने अलादीन की जंजीर खोल कर उसे बिठाया और उस की आँखों पर पट्टी बाँधी। फिर उस ने हवा में दो-तीन बार तलवार लहराई। जल्लाद लोग यह इसलिए करते हैं कि असली हाथ सधा हुआ पड़े। इतने में मंत्री ने हाथ जोड़ कर कहा, सरकार,

अलादीन को मारने में जल्दी न कीजिए। बड़ी गड़बड़ी हो जाएगी। इसका वध होते ही लोग विद्रोह कर देंगे और आप की जान पर बन आयगी। बादशाह ने गुर्रा कर कहा, किसकी हिम्मत है विद्रोह करने की? बकवास मत करो। मंत्री बोला, उधर किले की दीवार पर देखिए। बाहर तो लाखों सशस्त्र लोग जमा हैं। बादशाह ने देखा कि सैकड़ों आदमी किले की दीवार पर चढ़ गए हैं और अंदर कूदनेवाले ही हैं। अब बादशाह सचमुच ही डर गया। उस ने जल्लाद से कहा, तलवार दूर फेंक दो। राजाज्ञा के अनुसार जल्लाद ने तलवार दूर फेंक दी।

बादशाह ने एक बड़े सरदार को आज्ञा दी कि ऊँचे स्वर में घोषणा करे कि बादशाह ने अलादीन का अपराध क्षमा करके उसे छोड़ दिया है। सरदार की घोषणा के बाद नियमानुसार मुनादी करनेवालों ने सारे शहर में इस क्षमादान की घोषणा की। सरदार की घोषणा पर जो नागरिक विद्रोह के लिए शस्त्र धारण करके किले की दीवारों पर चढ़ गए थे वे भी बाहर कूद गए। सारे नगर में यह समाचार तुरंत फैल गया और सभी को इस से बड़ी प्रसन्नता हुई।

इधर अलादीन ने बादशाह से कहा, सरकार, आप ने प्राणदान दे कर मुझ पर बड़ी कृपा की किंतु अब कृपापूर्वक यह भी बता दिया जाए कि मैं ने कौन-सा अपराध किया था जिसकी यह सजा मिलनेवाली थी। बादशाह ने पहले तो केवल घृणापूर्वक उसे देखा किंतु जब उस ने दुबारा यही प्रश्न किया तो उस ने कहा, मक्कार, तू मुझ से ऐसे अपराध पूछता है जैसे कि जानता ही नहीं। मेरे साथ महल की छत पर आ। मैं तुझे तेरा अपराध बताऊँगा नहीं बल्कि दिखाऊँगा। यह कह कर बादशाह उसे महल की छत पर ले गया और उस से पूछने लगा, बताओ, तुम्हारा बनवाया महल कहाँ है?

अलादीन भी आश्चर्य से आँखें फाड़ कर देखने लगा लेकिन उसे महल का निशान भी देखने को न मिला। वह ऐसा हक्का-बक्का हुआ कि जड़वत बहुत देर तक खड़ा रहा। बादशाह ने फिर पूछा, अब चुप क्यों हो? बताओ महल का क्या हुआ। अलादीन ने कहा, महल वाकई गायब है लेकिन इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, मेरा तो इतना बड़ा महल चला गया। बादशाह ने कहा, तुम्हारा महल जाए भाड़ में। मुझे तो यह चिंता है कि मेरी बेटी कहाँ गई। मैं उस के दुख में पागल हो गया हूँ। तुम अगर खैरियत चाहो तो मेरी बेटी का पता लगाओ वरना अब जब मैं तुम्हें दंड दूँगा तो ऐसी व्यवस्था करूँगा कि तुम्हारे समर्थक भी कुछ न कर सकें। अलादीन ने कहा, इस की जरूरत नहीं। मुझे भी अपनी पत्नी के गुम हो जाने का दुख कम नहीं है। आप मुझे चालीस दिन का समय दे दीजिए। इस काल में यदि मैं शहजादी का पता न लगा सका तो स्वयं ही अपना सिर काट कर आप के पाँवों पर डाल दूँगा। बादशाह ने यह स्वीकार किया।

बादशाह ने कहा, चालीस दिनों तक तुम्हारी छुट्टी है, तुम जहाँ चाहो खोज कर सकते हो। लेकिन यह न समझना कि तुम मुझ से बच कर निकल सकोगे। तुम संसार में चाहे जहाँ भी रहोगे मैं तुम्हें पकड़वा मँगाऊँगा। अलादीन यह सुन कर महल से बाहर निकला। वह अपने दुर्भाग्य पर रोता हुआ जा रहा था। सरदार और अमीर-उमरा भी उस के दुख से

दुखी हो कर उस से मुँह छुपाने लगे, वे उस की तसल्ली के लिए कहते भी क्या। अलादीन ने चालीस दिन की अवधि तो ले ली थी किंतु उस की समझ में खुद भी नहीं आ रहा था कि महल और बदर बदौर को कहाँ ढूँढ़े। तीन दिनों तक वह शहर में भटकता रहा। हर जान पहचानवाले से पूछता, भाई, तुम्हें मालूम हो तो बताओ कि मेरा खोया हुआ महल कहाँ मिल सकता है। लोग उस पर तरस खाते और आपस में कहते, बेचारा पागल हो गया है। कितना भला आदमी है किंतु दुर्भाग्य की मार से किसे छुटकारा मिला है। वे लोग दया करके उसे कुछ खाने-पीने को दे देते। इस से अधिक कर भी क्या सकते थे।

तीन दिन बाद वह बिल्कुल निराश हो गया। कहाँ तो कल तक यह हाल था कि लोगों में अशर्फियाँ लुटवाता था और अपनी बुद्धि और पराक्रम से राजदरबार में बड़ा सम्मान प्राप्त किए था कहाँ यह हाल कि लोग उसे पागल समझ कर तरस खाते और उसे भीख के तौर पर कुछ टुकड़े दे देते। अंत में वह अर्धविक्षिप्त अवस्था में शहर से बाहर निकल कर जंगल में चला गया। बड़ी दूर तक जाने के बाद उसे एक नदी मिली। उस ने सोचा कि मेरी पत्नी तो अब मुझ से मिलने से रही, अब जीवन व्यर्थ है। और जीवन भी कितने दिन का है। अवधि के अंत में बादशाह उसे मरवा ही देगा। उस ने सोचा कि नदी में डूब मरूँ।

फिर उसे खयाल आया कि मुसलमान के लिए आत्महत्या वर्जित है। उस ने सोचा कि मैं नदी में स्नान करके फिर नमाज पढ़ूँगा और भगवान से निरंतर अपने उद्देश्य की सफलता की प्रार्थना करूँगा। यह सोच कर वह नदी में उतरा लेकिन उस का पाँव फिसल गया और वह तैरना नहीं जानता था इसलिए डूबने लगा। तभी उस का हाथ एक छोटी-सी चट्टान पर लगा और उस ने उसे कस कर पकड़ लिया।

यह डूबना भी उस के लिए सौभाग्यपूर्ण हुआ। वह छल्ले को भूल गया था किंतु छल्ले के पत्थर पर रगड़ खाने से छल्ले का जिन्न आ गया और बोला, स्वामी, क्या आज्ञा है? अलादीन ने कहा, पहले मुझे डूबने से बचाओ, फिर तुम से कुछ बात करूँगा। जिन्न ने उसे उठा कर किनारे पर बिठाया। कुछ देर बाद अलादीन सावधान हुआ तो उस ने पूछा, तुम क्या मुझे बता सकते हो कि मेरा महल कहाँ गायब हो गया और मेरी पत्नी यानी शहजादी कैसी है? जिन्न ने कहा, यह मैं बता सकता हूँ। जिस जादूगर ने आप को उस गढ़े में बंद किया था जहाँ से पहली बार मैं ने आप को निकाला था वही जादूगर आप की पत्नी के साथ आप के महल को उड़ा ले गया है। वह अफ्रीका का रहनेवाला है और वहीं पर अपने निवास नगर में महल को ले गया है। उस के हाथ जादू का चिराग लग गया था।

अलादीन ने कहा, क्या तुम शहजादी के समेत महल को वापस ला कर उस की पुरानी जगह पर रख सकते हो? जिन्न ने कहा, यह मेरा काम नहीं है, यह चिराग के जिन्नों का काम है। हम लोग एक-दूसरे के कामों में दखल नहीं दे सकते। अलादीन ने कुछ सोच कर कहा, अच्छा, क्या तुम मुझे उस जगह पहुँचा सकते हो जहाँ वह महल है? जिन्न बोला, यह जरूर कर सकता हूँ। चुनांचे अलादीन ने जिन्न से यही करने को कहा और जिन्न ने कुछ क्षणों ही में अफ्रीका के उस नगर में उसे पहुँचा दिया जहाँ जादूगर रहता था और जहाँ उस ने चीन से महल को ला कर रखा था। अलादीन को उस के महल के सामने उतार

कर जिन्न गायब हो गया।

यद्यपि उस समय रात काफी बीत गई थी और अँधेरा हो गया था तथापि अलादीन ने अपना महल पहचान लिया। वह एक पेड़ के नीचे जा बैठा और मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देने लगा जिसने तीन-चार दिन की परेशानी के बाद उसे पत्नी के निकट पहुँचा दिया था। उसे ऐसा संतोष मिला कि वह पेड़ के नीचे भूमि पर ही सो गया। सुबह पक्षियों के कलरव से उस की आँख खुली तो वह अपने महल के और समीप जा कर बैठ गया और महल को ध्यान से देखने लगा।

कुछ देर बाद अलादीन उस खिड़की के सामने टहलने लगा जो बदर बदौर के रहने के कमरे में थी। उसे आशा थी कि शहजादी जाग कर उसे देखेगी। शहजादी रात भर जादूगर की काम चेष्टाओं से बचने की परेशानी में लगी रही थी इसलिए वह बहुत देर तक सोती रही। उधर अलादीन यह सोचने लगा कि आखिर जादूगर इस महल को यहाँ लाया कैसे। उस ने यही निष्कर्ष निकाला कि मैं चिराग को महल में रख कर भूल गया था, वहीं से किसी तरह जादूगर ने उसे हथिया लिया होगा क्योंकि चिराग के जिन्नों के अलावा महल को और कोई ला ही नहीं सकता। वह सोचता रहा कि महल में इतने पहरे के बावजूद जादूगर को चिराग मिला कैसे लेकिन वह बिल्कुल न समझ पाया कि यह संभव कैसे हुआ। उस ने सोचा कि शहजादी से भेंट होने पर ही यह रहस्य खुलेगा किंतु यह भी समस्या थी कि उस से भेंट कैसे हो।

जादूगर ने न जाने किस कारण महल में निवास नहीं किया था। वह निकट ही अपने बने हुए घर में रहता था। दिन में वह आम तौर पर बाहर अपने जादूगरी के कामों में लगा रहता था, केवल शाम से आधी रात तक वह शहजादी के आगे प्रेम निवेदन करके उसे परेशान किया करता था। इस समय भी वह महल में नहीं था। जब शहजादी की आँख खुली तो उस के कमरे में उसे सजाने-सँवारने के लिए दासियों की भागदौड़ होने लगी। एक दासी ने खिड़की से देखा कि अलादीन महल के बाहर टहल रहा है। उस ने बदर बदौर से जा कर कहा, तो उस ने अपनी एक विश्वस्त दासी से कहा कि बाहर जा कर देखो, वह आदमी अलादीन हो तो उसे चोर दरवाजे से यहाँ ले आओ। वह दासी बाहर जा कर होशियारी से अलादीन को ले आई।

इतने दिनों बाद पति-पत्नी मिले तो पहले तो एक-दूसरे से लिपट कर खूब रोए। फिर उन्होंने अपने ऊपर पड़नेवाली विपदाओं का एक-दूसरे से वर्णन किया। फिर अलादीन ने शहजादी से कहा, एक बात अच्छी तरह याद करके बताओ। महल के अंदर के कमरे में एक पुराना चिराग रखा रहता था। वह अभी तक है या नहीं। उस की पत्नी ने कहा, हम लोगों पर जो कुछ मुसीबत पड़ी वह उसी चिराग के संबंध में मेरे द्वारा की हुई मूर्खता के कारण ही पड़ी। यह कह कर उस ने जादूगर द्वारा नए दीपकों के बदले पुराने दीपकों को लेने के छल द्वारा उक्त चिराग के हथियाने का सारा हाल कहा। अलादीन ने कहा, तुम बेकार ही अपने को दोषी समझ रही हो। गलती तो मेरी ही थी कि मैं ऐसी चीज की तरफ से लापरवाह हो गया। मैं ने तुम्हें चिराग के बारे में बताया भी कुछ नहीं था इसलिए अगर

तुमने उसे पुराना और बेकार चिराग समझा तो तुम्हें कैसे दोष दिया जाए। शहजादी ने कहा, मैं तो अपनी मूर्खता पर अपने को बार-बार धिक्कारती हूँ। जब अचानक मैं महल समेत इस नई जगह में आ गई तो पहले तो कुछ समझ ही नहीं पाई कि क्या हुआ। फिर उसी दिन जादूगर मेरे पास आया और कहने लगा कि तुम अब अफ्रीका में हो। अपने पति और पिता से मिलने की आशा छोड़ दो। मैं ने पूछा कि मैं यहाँ कैसे आ गई। उस ने हँसते हुए और अपनी चालाकी की शान झाड़ते हुए बताया कि जिस चिराग को तुमने पुराना समझ कर मुझे नए चिराग के बदले में दे दिया था यह सब उसी का चमत्कार है।

अलादीन ने कहा, खैर, यह तो हुआ। अब तुम पहले यह बताओ कि वह चिराग इस समय कहाँ है। और यह भी बताओ कि जादूगर ने अभी तक तुम्हें भ्रष्ट तो नहीं किया है? बदर बदौर बोली, चिराग को वह दुष्ट हमेशा अपने वस्त्रों के अंदर अपने सीने से सटाए रखता है। तुम्हारी दूसरी बात का जवाब यह है कि अभी तक तो भगवान की दया से मेरी पवित्रता बची हुई है, आगे की बात नहीं कह सकती। वह तो रात होने पर रोजाना मेरे पास आता है और तरह-तरह से मुझे फुसलाने का प्रयत्न करता है किंतु मैं उस की तरफ देखती भी नहीं। उस ने बलात्कार शायद इसलिए नहीं किया कि उसे आशा है कि कुछ दिनों में मैं पिता और पति से अलग से अलग होने का दुख भूल जाऊँगी और प्रेमपूर्वक उसकी अंकशायिनी बनूँगी। मैं ने तो तय कर लिया है कि खुद उस से नहीं बोलूँगी और उस ने बलात्कार किया तो आत्महत्या कर लूँगी।

अलादीन ने कहा, वह मेरे प्राणों का शुरू से ग्राहक रहा है और अब भी उसे अवसर मिलेगा तो मारने की चेष्टा करेगा। इस के अतिरिक्त वह तुम से भी पशुवत यौन व्यवहार करना चाहता है, बाद में तुम्हें मार डालेगा। मुझे सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह तुम्हें भ्रष्ट नहीं कर सका। इस समय बाहर जाता हूँ, दोपहर तक फिर वापस आऊँगा। मैं उसी चोर दरवाजे से आऊँगा। मैं दूसरे कपड़े पहने हुए आऊँगा। इसलिए तुम वहाँ ऐसी होशियार और विश्वस्त दासी को रखना जो मेरे चेहरे को पहचानती हो। तुम मुझे कुछ धन भी दो क्योंकि मुझे हम दोनों की मुक्ति का उपाय करना है और आज का काम भी चलाना है।

बदर बदौर ने उसे अशर्फियों की एक थैली दी क्योंकि अलादीन तो फकीर बन कर चीन के राजमहल से निकला था हालाँकि कपड़े हमेशा जैसे पहने था। शहजादी की वही विश्वस्त दासी अलादीन को चोर दरवाजे से हो कर महल के बाहर कर आई। अलादीन आगे बढ़ने लगा। एक सुनसान रास्ते पर उसे एक गरीब किसान आता मिला। उस ने किसान को रोक कर कहा, मुझे एक खास वजह से तुम्हारे कपड़ों की जरूरत है। तुम मुझे अपने कपड़े दो और उस के बदले में मेरे कपड़े पहन लो। इस के लिए मैं तुम्हें कुछ धन भी दूँगा। किसान को क्या आपत्ति थी, उसे फटे-पुराने कपड़ों के बदले नए कपड़े मिल रहे थे। वह राजी हो गया। अलादीन ने उस से कपड़े बदल कर उसे एक अशर्फी दी और कहा कि कोई पूछे तो कि किसने तुम्हें कपड़े दिए है तो बताना मत।

फिर वह एक पंसारी के यहाँ गया और उस ने एक दुर्लभ वस्तु माँगी। पंसारी ने कहा, मेरे

पास वह है तो लेकिन तुम उसे खरीद न सकोगे, वह बहुत ही कीमती है। किंतु अलादीन ने उसे एक अशर्फी दी तो वह फौरन वह चीज, जो वास्तव में महा भयंकर विष था, दे दी। फिर अलादीन ने एक नानबाई की दुकान में जा कर भोजन किया और चोर दरवाजे से फिर महल के अंदर प्रवेश किया। यह सब होशियारी उस ने इसलिए की कि वह अपनी उपस्थिति का तनिक भी संदेह नहीं देना चाहता था।

अब उस ने अपनी पत्नी से कहा, यहाँ से छूटने के लिए तुम्हें नाटक करना होगा। इसे अच्छी तरह समझ लो क्योंकि इस के अलावा छुटकारे की और कोई सूरत नहीं है। तुम अपना शोकवेश त्याग दो और रात में जादूगर के आने तक अपना पूरा शृंगार करके बैठ जाओ। जब वह आए तो तुम उस का मुस्कुरा कर स्वागत करना। उस के पूछने पर उस से कहना कि मैं ने सोचा कि कब तक पिता और पति से बिछड़ने का शोक करती रहूँगी। अब तो मैं ने तुम्हीं को पति की जगह मान लिया है और चाहती हूँ कि तुम्हारे ही साथ आनंदपूर्वक समय बिताऊँ और तुम्हारे साथ बैठ कर शराब पियूँ।

शहजादी इस पर चौंकी तो अलादीन ने उसे रोक कर कहा, तुम उस से पुरानी शराब मँगाना जिसे लेने के लिए वह स्वयं ही बाहर जाएगा। इस बीच तुम एक प्याले में शराब भर कर उस में इस पुड़िया की दवा घोल कर रख देना। इसे अन्य प्यालों से अलग रखना। मद्यपान आरंभ होने पर एक दासी तुम्हारे इशारे पर ही प्याला तुम्हारे हाथ में देगी। तुम कहना कि हमारे यहाँ की रस्म है कि प्रेमीजन एक-दूसरे के हाथ का प्याला बदल कर पीते हैं। इस प्रकार तुम यह दवा मिला प्याला उसे दे देना और वह खुशी के मारे इसे पूरा पी जाएगा। इसे पीते ही वह बेहोश हो जाएगा। मैं इस बीच चोर दरवाजे से निकल कर बाहर मैदान में एक पेड़ के नीचे बैठूँगा। जब जादूगर बेहोश हो जाए तो दासी को भेज कर मुझे बाहर से बुला लेना। इतना काम कर सकोगी?

शहजादी ने यह स्वीकार किया। अलादीन उस समय एक अन्य कक्ष में चला गया और दिन ढलते ही चोर दरवाजे से निकल कर एक पेड़ के नीचे जा बैठा। इधर शहजादी ने होशियारी के साथ अपनी साज-सज्जा करवानी शुरू की। अफ्रीका आने के बाद तो उस ने कपड़े भी नहीं बदले थे। उस ने गले में बहुमूल्य मोतियों की माला पहनी और हाथों में रत्नजटित कंगन। उस ने नए वस्त्र पहने जिनमें बढ़िया इत्र लगाया गया था। कमर में उस ने पटका बाँधा और दासियों से कहा कि मैं ने अभी तक जादूगर को अच्छी तरह देखा भी नहीं है, वह आए तो इशारा कर देना कि वही है ताकि उसे मेरे व्यवहार से यह न मालूम हो कि मैं ने उसे नहीं देखा है।

जादूगर के आने पर दासी ने इशारा दे दिया कि चिराग बदलनेवाला छली आ गया। शहजादी मुस्कुराती हुई उस के स्वागत के लिए उठी और उस का हाथ पकड़ कर उसे अपने पास बिठा लिया। यद्यपि वह सम्मानार्थ दूर ही बैठना चाहता था क्योंकि बहरहाल वह राजकुमारी थी। जादूगर इस बात से खुश तो हुआ लेकिन समझ न पाया कि शहजादी के व्यवहार में यह परिवर्तन कैसे हो गया। इसलिए चुपचाप बैठा रहा।

शहजादी ने मोहक मुस्कान बिखेरते हुए कहा, तुम यह सोच रहे हो न कि आज इस ने अपनी सूरत कैसे बदल डाली। बात यह है कि अभी तक मैं अपने पिता से अलग होने और अपने पति के बिछोह में घुली जाती थी। आज मुझे यह खयाल आया कि मेरा पति बेचारा तो कभी का स्वर्ग सिधार गया होगा, मेरे पिता ने मेरे गायब हो जाने पर क्रोध में आ कर उसे मरवा डाला होगा। अब पति तो जिंदा ही नहीं रहा और पिता से मिलने की आशा न है न इच्छा क्योंकि वह मेरे पति का हत्यारा है। मैं ने सोचा है मैं उनकी याद में कब तक घुल-घुल कर जियूँ। इसीलिए मैं ने पति की जगह तुम्हें ही मान लिया है। आज मैं तुम्हारे साथ भोजन करूँगी। किंतु अभी भोजन का समय नहीं हुआ है, तब तक हम लोग कुछ पिएँ-पिलाएँ। मैं ने बहुत दिनों से अच्छी शराब नहीं पी है। तुम्हारे शहर में अच्छी शराब मिलती है?

जादूगर यह सुन कर फूला न समाया और बोला, आप के लायक तो शहर में शराब नहीं मिलेगी लेकिन मैं ने अपने तहखाने में बड़ी पुरानी शराबें रखी हैं। मैं उन्हीं में से ला रहा हूँ। शहजादी ने कहा, तुम क्यों जा रहे हो? किसी आदमी को भेज कर क्यों नहीं मँगा लेते? जादूगर ने कहा, मुझे खुद ही जाना पड़ेगा। न कोई आदमी तहखाने तक जा पाएगा न उस का ताला ही खोल सकेगा। शहजादी ने कहा, अच्छा जाओ लेकिन जल्दी आना। मुझे तुम्हारे बगैर अच्छा नहीं लगता। जादूगर के जाने के बाद शहजादी ने एक प्याले के शराब में दवा घोली और एक दासी के हवाले कर दी।

कुछ ही देर में जादूगर उत्तम मदिरा ले कर आ पहुँचा और दोनों मद्यपान करने लगे। शहजादी शराब के साथ स्वादिष्ट गजक अपने हाथ से उठा-उठा कर जादूगर के आगे रखती। उस ने जादूगर से कहा, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें गाना भी सुना सकती हूँ लेकिन यहाँ मेरा साथ देने के लिए अच्छे वादक नहीं हैं। इसलिए हम लोग बातें ही करेंगे। जादूगर ऐसे प्रिय वचन सुन कर खुशी से पागल हो गया। शहजादी ने एक जाम भर कर जादूगर के नाम पर पिया। इस के बाद उस ने शराब की बहुत तारीफ की और कहा, तुम ने इस शराब की जितनी प्रशंसा की थी यह उस से भी अधिक अच्छी है। फिर उस ने जादूगर को एक प्याला अपने हाथ से भर कर दिया। उस ने उसे पी कर कहा, यह शराब मेरी ही है किंतु इस ने पहले कभी मुझे इतना आनंद नहीं दिया जितना इस समय दे रही है। इसी प्रकार वे धीरे-धीरे मद्यपान करते रहे और मधुर वार्तालाप करते रहे।

फिर शहजादी ने दासी को संकेत किया और उस ने अफ्रीकी की नजर बचा कर पहले से तैयार किया हुआ प्याला शहजादी को दे दिया। उस ने दूसरा मामूली शराब का प्याला भर कर जादूगर को दिया। शहजादी बोली, हमारे चीन की एक यह भी रस्म है कि दो प्रेमीजन मद्यपान करते हैं तो एक-दूसरे के हाथ से ले कर प्याला पीते हैं। यह कह कर अपना प्याला जिस में दवा के नाम पर विष मिला हुआ था उस ने जादूगर को दिया और बड़े नाज-नखरे के साथ उस के हाथ का मामूली शराब का प्याला अपने हाथ में ले लिया। जादूगर पर उस के हाव-भाव से जो नशा चढ़ा वह शराब से भी अधिक था। उस ने कहा, हे जगत मोहनी, तुम्हारा चीन देश हर तरह से सभ्यता और संस्कृति, विद्या, सौंदर्य आदि में हमारे अफ्रीका से बढ़ा-चढ़ा हे। यह बड़ी ही मनमोहक रीति तुमने मुझे सिखाई। मैं

आगे से हमेशा यहाँ के लोगों में इसका निर्वाह और प्रसार करूँगा।

शहजादी ने तो देखने भर के लिए प्याला मुँह से लगाया किंतु मदमत्त जादूगर एक ही बार में गटगट करके जहरीली शराब का पूरा प्याला पी गया। प्याला नीचे रखते ही वह पीठ के बल गिर पड़ा। जब शहजादी ने देखा कि वह हिलडुल तक नहीं रहा है तो उस ने अपनी विश्वस्त दासी से धीरे से कहा कि अब चोर दरवाजे से अलादीन को ले आए। अलादीन अंदर आया तो उस ने देखा कि वही दुष्ट जादूगर जो पहले उस का चचा बन कर उसे मौत के मुँह में झोंक आया था और इस समय भी उस की पत्नी को उड़ा कर, उस की मौत का सामान कर चुका था विष के प्रभाव से मरा पड़ा है। शहजादी भी समझ गई कि यह प्याले में दवा नहीं थी, जहर था। उस ने अलादीन से कहा, तुम ने अपनी बुद्धि से इस दुष्ट को मार कर बहुत अच्छा किया। अलादीन ने कहा, अच्छा अब तुम दूसरे कमरे में चली जाओ, यहाँ मुर्दों के पास अधिक ठहरना ठीक नहीं है।

शहजादी अपनी दासियों समेत जब दूसरे कमरे में चली गई तो अलादीन ने जादूगर के वस्त्र उघाड़ने शुरू किए ताकि चिराग मिले। जैसा शहजादी की बात से मालूम हुआ था जादूगर उसी चिराग को कपड़ों की कई तहों में लपेट कर अपनी सीने से बाँधे रहता था। अलादीन ने चिराग निकाल कर जादूगर की लाश को उस के वस्त्र यथावत पहना दिए। इस के बाद उस ने चिराग को उठा कर हलके से रगड़ा। तुरंत ही जिन्न आ खड़ा हुआ और विनीत भाव से कहने लगा कि मेरे लिए क्या आज्ञा है। अलादीन ने कहा, तुरंत ही इस महल को ले जा कर चीन की राजधानी में उसी जगह स्थापित कर दो जहाँ यह पहले था। जिन्न ने स्वीकृति में सिर हिलाया और गायब हो गया। इस के साथ ही महल हवा में उठा और दो क्षणों में चीन के राजमहल के सामने अपने पुराने स्थान पर स्थापित हो गया।

जिन्न का काम इतना सुचारु था कि किसी को पता भी नहीं चला कि क्या हुआ। केवल उठने और रखे जाते समय महल धीरे से हिला। अब शहजादी उस कमरे में आई और उसे अलादीन ने बताया कि हम लोग अब वापस चीन में हैं। शहजादी बड़ी प्रसन्न हुई किंतु अलादीन ने कहा, खुशी फिर मनाना। इस समय हम दोनों ही इतनी चिंताओं और श्रम के मारे हैं कि हमें आराम चाहिए। हम लोग भूखे भी हैं। अब खाना खाएँ और इसी जादूगर की लाई शराब पिएँ और सो रहें। उन्होंने ऐसा ही किया।

चीन का बादशाह अपनी पुत्री के लिए बड़ा उद्विग्न रहता था और यद्यपि उसे मालूम था कि अलादीन का महल गायब हो चुका है तथापि वह रोज सवेरे अपने महल की छत पर चढ़ कर उस तरफ देखा करता और पुत्री को याद करके रोया करता। उस दिन भी वह सदा की भाँति अपने महल की ऊपरी मंजिल पर गया और उस ने उस दिशा में देखा तो उसे अलादीन का महल अपनी जगह खड़ा हुआ दिखाई दिया। वह कुछ देर आँखें फाड़ कर देखता रहा, फिर जब उसे विश्वास हो गया तो जल्दी से उतर कर उस ने घोड़ा मँगाया और दो-चार नौकरों के साथ ही उधर चल पड़ा। अलादीन ने उसे देखा तो दौड़ कर महल के बाहर आया ताकि सम्मानपूर्वक उस की बाँह पकड़ कर उसे घोड़े से उतारे। किंतु बादशाह ने कहा, मैं तुम से तभी बात करूँगा जब अपनी बेटी को देख लूँगा। अलादीन ने

कहा, आप अंदर तो चलें। किंतु बादशाह वहीं खड़ा रहा।

अलादीन ने जा कर अपनी पत्नी से कहा कि तुरंत बाहर जा कर अपने पिता को अंदर लाओ, वे मेरे कहने से नहीं आ रहे हैं। वह दौड़ी हुई बाहर आई और बादशाह को अंदर ले गई। बादशाह को अतीव प्रसन्नता हुई और उस ने पूछा कि तुम इतने दिनों तक कहाँ रहीं और तुम पर क्या बीती। बदर बदौर ने बताया कि अफ्रीका के एक जादूगर ने अपने जादू से मेरे और दास-दासियों समेत सारे महल को उड़ा कर अपने नगर में पहुँचा दिया था। उस ने कहा, अलादीन के पराक्रम और बुद्धि से मैं उस जादूगर की कैद से छूटी। मुझे सब से बड़ा भय यह था कि आप ने क्रोध में आ कर मेरे पति को मरवा डाला होगा। भगवान को बड़ा धन्यवाद है कि आप ने उसे मरवाया नहीं।

बादशाह की समझ में कुछ नहीं आ रहा था तो उसे चिराग की करामात और जादूगर द्वारा छल से उस चिराग के हथियाने की बात बताई गई। अलादीन ने दूसरा कमरा खोल कर जादूगर की लाश भी दिखाई। अब बादशाह को विश्वास हुआ और पश्चात्ताप में भर कर कहने लगा, बेटे, मैं ने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया। वह तो भगवान की दया थी कि तुम्हारे प्राण बच गए। बेटी के शोक ने मुझे अंधा बना दिया था। अब तुम मेरी सारी बातें बूढ़े की मूर्खता समझ कर माफ कर दो।

अलादीन ने कहा, मुझे उस बारे में आप से कोई शिकायत नहीं है। जो कुछ हुआ इसी जादूगर के कारण हुआ और मेरे प्राण भी जाते तो उसी के कारण जाते। आप को कभी फुरसत हुई तो मैं विस्तारपूर्वक पहले की कहानी भी बताऊँगा कि इस ने मेरे बचपन में मेरे साथ कैसी दुष्टता की।

बादशाह ने कहा, मैं बाद में जरूर वह कहानी सुनूँगा। पहले तुम इस कुकर्मी की लाश को तो महल से दूर करो। इस के बारे में लोगों को मालूम भी नहीं होना चाहिए वरना शहजादी की भी बदनामी हो सकती है।

अलादीन ने दो विश्वस्त आदमियों को आदेश किया कि अफ्रीकी जादूगर की लाश चोर दरवाजे से ले जा कर घने जंगल में फेंक दें जहाँ पर पशु-पक्षी इसे नोच कर खा जाएँ। फिर बादशाह ने अपने महल में आ कर आदेश दिया कि बदर बदौर के सकुशल वापस आ जाने के उपलक्ष्य में नगर में हर जगह राग-रंग और उत्सव हों। नगर निवासियों ने इस घोषणा का हृदय से स्वागत किया, विशेषतया इसलिए कि वे अलादीन के सकुशल आने और पुनः प्रतिष्ठित होने से बहुत खुश थे।

अलादीन दो बार जादूगर के कारण मारे जाने से बच गया लेकिन तीसरी बार भी उस पर मुसीबत आते-आते बच गई। अफ्रीकी जादूगर का एक छोटा भाई था जो उस की भाँति ही जादू में निपुण था। वह किसी दूर देश में रहता था। दोनों भाई वर्ष में एक बार रमल द्वारा एक-दूसरे के कुशल-मंगल का समाचार जान लेते थे। अतएव कुछ महीनों के बाद

जब छोटे भाई ने रमल के नक्शे फैला कर बड़े भाई का हाल जानना चाहा तो उसे मालूम हुआ कि चीन की राजधानी के एक आदमी ने उसे विष दे कर मार डाला है। वह आदमी पहले बहुत निर्धन था किंतु इस समय बड़ा धनवान और बादशाह का दामाद है।

यह जान कर वह बहुत रोया। फिर उस ने सोचा कि कायरों की तरह रो-पीट कर बैठे नहीं रहना चाहिए, अपने भाई के हत्यारे से इस हत्या का बदला लेना जरूरी है। वह अपना जादू का सामान और रुपया-पैसा ले कर घोड़े पर बैठा और मारा-मारा कुछ महीनों में चीन की राजधानी पहुँचा। उस ने उसी दिन एक घर किराए पर लिया और दूसरी सुबह वह शहर घूमने निकला।

घूमते-घूमते वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ शहर के बेफिक्रे और निठल्ले लोग जमा हो कर बातचीत में सारा दिन बिताते थे। वह भी चुपचाप उन की बातें सुनने लगा। बहुत देर तक उसे कोई मतलब की बात सुनने को नहीं मिली। वे लोग खा-पी भी रहे थे और गप्पें भी मार रहे थे। कुछ ही देर में उन लोगों में फातिमा बीबी की बातें होने लगीं और उन में से हर एक फातिमा बीबी के स्वभाव और आचार-व्यवहार की प्रशंसा करने लगा। यह बातचीत सुन कर जादूगर को आशा हुई कि इस बात से मेरा मतलब पूरा होने की संभावना है।

वह कुछ देर तक सुनता रहा लेकिन चूँकि विदेशी आदमी था इसलिए उन लोगों की दी हुई सूचनाएँ उस की समझ में नहीं आ रही थीं। उस ने उस समूह के एक व्यक्ति को अलग ले जा कर उस से पूछा कि यह फातिमा बीबी कौन हैं और उनमें क्या विशेषता है। उस ने कहा, तुम परदेशी मालूम होते हो वरना इस नगर में तो हर आदमी फातिमा बीबी को केवल जानता ही नहीं उस का भक्त भी है। वह वृद्धा बड़ा पवित्र और सदाचारी जीवन व्यतीत करती है। सारी उम्र उस ने ईश्वर आराधना के सिवाय कुछ नहीं किया है। उस में ऐसी चमत्कारी शक्ति है कि किसी के सिर में चाहे जितना दर्द हो वह हाथ से छू भी दे देती है तो दर्द दूर हो जाता है। जादूगर ने पूछा कि वह रहती कहाँ है। उस आदमी ने जादूगर को फातिमा बीबी के घर का पता दे दिया।

जादूगर उस की गली को पूछते-पूछते उस के घर जा पहुँचा किंतु उस समय वह अंदर नहीं गया। बाहर ही से देख कर उस ने मकान की पूरी तरह पहचान कर ली। आधी रात के लगभग वह अपने मकान से उठ कर फातिमा बीबी के घर जा पहुँचा। बंद दरवाजे को उस ने अपने साथ लाए हुए औजारों से खोल लिया। अंदर देखा कि वृद्धा अपने आँगन में चाँदनी में खाट पर एक पुराना बिस्तर बिछाए सो रही है। उस ने एक हाथ में नंगी तलवार ली और दूसरे से उसे जगाया और कहा, अगर तुम ने जरा-सी भी आवाज निकाली तो तुम्हें अभी मार डालूँगा। अपनी जान की सलामती चाहती हो तो जैसा कहूँ वैसा करो।

फातिमा बीबी की घिग्घी बँध गई। जादूगर ने कहा, मुझे तुम्हारी और किसी चीज से मतलब नहीं है, सिर्फ तुम्हारे बाहर पहने जानेवाले कपड़े चाहिए। उस बेचारी ने अंदर जा कर खूँटी पर टँगे हुए अपने कपड़े दे दिए। जादूगर ने उन्हें पहन लिया। फिर वह फातिमा

बीबी से कहने लगा कि जो-जो निशान तुम्हारे चेहरे पर हैं वह मेरे चेहरे पर बना दो और मेरे चेहरे और हाथ-पाँव की खाल का रंग भी अपने जैसा कर दो। वह जादूगर का मुँह देखने लगी तो जादूगर बोला, तुम डरो मत, इत्मीनान रखो कि मैं तुम्हें जान से नहीं मारूँगा। मैं एक खास जरूरत से तुम्हारा वेश धारण करना चाहता हूँ और बस। वह बेचारी उसे अंदर ले गई। दिया जला कर उस ने एक-दो तरह के लेप और तेल निकाले और उस बदमाश के चेहरे और हाथ-पाँव का रंग अपने जैसा बना दिया। फिर उस के दाढ़ी-मूँछ मुँड़े हुए चेहरे पर अपने चेहरे जैसी झुर्रियाँ भी बना दीं। उस ने उसे अपने सिर की पगड़ी भी दी और अपनी सुमिरनी और लकुटिया भी उसे दे दी। फिर अपना बुरका भी उसे दे दिया और कहा, मैं घर से बाहर बुरका पहन कर निकलती हूँ, तुम भी बाहर जाना तो इसे ओढ़ कर ही जाना। अब जो कुछ तुमने कहा था वह मैं ने कर दिया। शीशा ले कर देख लो, तुम्हारी और मेरी सूरत में अब कोई अंतर नहीं है।

जादूगर ने दर्पण में अपना मुख देखा तो उसे बिल्कुल फातिमा जैसा पाया। यद्यपि उस ने वादा किया था कि उसे मारेगा नहीं फिर भी उस ने बुढ़िया को पटक कर गला दबा कर मार डाला। तलवार से इसलिए नहीं मारा कि उस ने जो फातिमा बीबी के कपड़े पहने थे उन पर खून के छींटे पड़ जाते और उस का छद्म वेश छुपा न रहता। फिर उस ने घर के अंदर बने एक गढ़े में फातिमा बीबी की लाश उठा कर फेंक दी। रात उस ने फातिमा बीबी की खाट पर सो के गुजारी और अगली सुबह घर से निकला। उसे मालूम था कि यह दिन फातिमा बीबी के बाहर आने का नहीं है किंतु इस सिलसिले में भी कोई उस से पूछता तो इस के लिए भी उस ने एक अच्छा बहाना सोच लिया था। वह बाहर निकल कर अलादीन के महल की ओर, जिसे उस ने पहले ही देख रखा था, चला। रास्ते में उस के चारों ओर लोग जमा होने लगे। कोई श्रद्धापूर्वक उस का आँचल चूमता कोई उस से आर्शीवाद माँगता, कोई उस से सिर का दर्द दूर करने की प्रार्थना करता।

जादूगर तो छल-कपट में प्रवीण था ही। वह बराबर कुछ बुड़बुड़ाता जा रहा था। जैसे कोई पवित्र मंत्र पढ़ रहा हो। वह चाहता था कि लोगों की भीड़ अधिक से अधिक हो जाए इसलिए जहाँ जल्दी से निबट सकता था वहाँ भी देर लगाता था। इस प्रकार जब वह अलादीन के महल के सामने पहुँचा तो बड़ी भीड़ जमा हो गई और बड़ा कोलाहल करने लगी। काफी धक्का-मुक्की भी होने लगी क्योंकि हर आदमी उस के पास जा कर उस से आर्शीवाद लेना चाहता था और उस के वस्त्र का स्पर्श करके कृतकृत्य होना चाहता था।

उन दिनों अलादीन शिकार पर गया हुआ था। बदर बदौर ने जब सुना कि महल के बाहर बहुत शोरगुल हो रहा है तो उस ने एक दासी को आज्ञा दी कि बाहर जा कर देखे कि कैसा शोर हो रहा है। दासी ने कुछ देर बाद जा कर बदर बदौर को बताया कि पवित्रात्मा वृद्धा फातिमा बीबी महल के बाहर के मैदान में है। बदर बदौर ने तो पहले ही फातिमा बीबी के बारे में सुन रखा था, अब वह महल के सामने खुद ही आई तो उसे बुलाना भी बदर बदौर ने **[RK1]** जरूरी समझा। उस ने अंगरक्षकों के सरदार को आज्ञा की कि फातिमा बीबी को महल में ले आओ। सरदार वहाँ पहुँचा तो उसे देख कर भीड़ छँट गई।

जादूगर ने अंगरक्षकों के सरदार को देखा तो खुश हुआ कि महल में जाने को मिलेगा। सरदार ने उसे सलाम करके कहा, देवी जी, शहजादी को आप के दर्शन की बड़ी इच्छा है। कृपया आप मेरे साथ महल में पदार्पण करें। जादूगर ने कहा, मैं जरूर चलूँगी। शहजादी तो बड़ी भली महिला हैं। यह कह कर जादूगर महल में गया। बारहदरी में बदर बदौर ने उस का स्वागत किया।

फातिमा बने हुए जादूगर ने उसे बहुत आशीर्वाद दिए और संसार की असारता और भगवदभक्ति के महत्व पर प्रवचन किया। शहजादी के कहने पर वह एक ओर सिर झुका कर बैठ गया जैसे विनय मुद्रा में हो।

कुछ देर के बाद शहजादी ने कहा, माता, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे पास रहो ताकि मैं तुम से आत्मज्ञान प्राप्त करूँ और परलोक सुधारूँ। जादूगर बोला, बेटी, यह कैसे हो सकता है? तुम्हारे महल में दास-दासियों और सेवकों की हमेशा भीड़ रहती है और बड़ा शोर होता है। यहाँ मेरे भगवत भजन में बड़ी बाधा पड़ेगी। शहजादी ने कहा, अगर महल के अंदर नहीं रहना चाहतीं तो महल के अंतर्गत कई मकान महल से अलग भी बने हैं, तुम उनमें से कोई पसंद करके उस में रह सकती हो।

जादूगर को जैसे मुँहमाँगी मुराद मिल गई। वह जानता था कि महल के अंदर रह कर वह अपनी दुष्टतापूर्ण योजना भली प्रकार लागू कर सकता है। वह बोला, बेटी, मैं संसार त्यागी स्त्री हूँ। मुझे यह उचित तो नहीं मालूम होता कि यहाँ राजमहल के वैभव के बीच रहूँ। किंतु तुम जैसे सच्चे मन से परमार्थ का मार्ग खोजना चाहती हो उसे देख मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं तुम्हारी सहायता करूँ। मैं किसी भी बाहरी मकान में रह लूँगी। शहजादी यह सुन कर उठ खड़ी हुई और बोली, पहले यही काम निबटा लिया जाए। मेरे साथ चल कर खुद ही खाली मकानों में से किसी को अपने रहने के लिए पसंद कर लो। जादूगर ने उस के साथ जा कर कई मकान देखे और एक को अपने लिए पसंद किया। शहजादी ने सेवक भेज कर फातिमा का हलका-फुलका घरेलू सामान मँगा दिया और जादूगर फातिमा बन कर महल में डट गया।

शहजादी ने उस से कहा कि मेरे साथ ही भोजन करो। जादूगर को डर था कि भोजन के समय कहीं शहजादी मेरा छद्मरूप पहचान न ले। उस ने हँस कर कहा, मुझे तुम्हारे तर माल से क्या लेना-देना? मैं तो दिन में एक बार रोटी के कुछ टुकड़े मेवों की गिरी के साथ खाया करती हूँ। वह तुम मेरे यहाँ भेज देना। शहजादी बोली, ऐसा ही सही। मैं तुम्हारे लायक खाना भिजवाती हूँ। लेकिन तुम भोजन के बाद मेरे पास आना। यह कह कर शहजादी चली गई और उस ने रोटी और मेवे जादूगर के लिए भिजवा दिए। जादूगर ने भोजन लानेवाले सेवक से कहा, जब शहजादी भोजन कर लें तो मुझे बताना।

शहजादी के भोजन करने के बाद सेवक ने आ कर उस से कहा कि शहजादी ने भोजन समाप्त कर लिया है और आप की प्रतीक्षा में हैं। जादूगर उठ कर बारहदरी में गया जहाँ

शहजादी बैठी थी। शहजादी ने उठ कर उस का स्वागत किया और फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। शहजादी ने कहा, तुम महल के अंदर नहीं रहना चाहती हो तो न सही लेकिन महल को देख तो लो। यह कह कर वह जादूगर को महल के विभिन्न भाग दिखाने लगी। जादूगर ने इसे भी अपना सौभाग्य समझा क्योंकि अपनी योजना पूरी करने के लिए उसे महल का पूरा नक्शा जानना जरूरी था और योजना के पूर्ण होने के बाद उसे महल से भागने में भी आसानी होती।

सारा महल दिखाने के बाद शहजादी उसे फिर बारहदरी में लाई और कहा, यहाँ की एक-एक चीजें देखो। ऐसी शानदार बारहदरी दुनिया में कहीं और न होगी। जादूगर ने घूम- घूम कर बारहदरी को देखा और हर चीज की प्रशंसा की। अंत में वह शहजादी के साथ बारहदरी ही में वार्तालाप के लिए बैठ गया। कुछ देर में बोला, बेटी, यह बारहदरी अद्‌वितीय है। किंतु कोई और भी चाहे तो धन व्यय करके ऐसी बारहरदरी बनवा सकता है। अगर इसमें एक चीज आ जाए तो इसका सौंदर्य भी पूर्ण हो जाए और यह सदा के लिए अद्‌वितीय बनी रहे।

शहजादी ने पूछा कि क्या चीज चाहिए। जादूगर बोला, इस के बीचोबीच छत से रूख नामी पक्षी का विशाल अंडा लटकाया जाए। रुख का अंडा एक ही है। उस जैसी चीज के कारण यह बारहदरी हमेशा के लिए अद्‌वितीय रहेगी। शहजादी ने कहा, रूख पक्षी कैसा होता है और उस का अंडा कहाँ मिलेगा। जादूगर बोला, मुझे इन दुनियादारी की बातों में न घसीटो। जो यह बारहदरी बना सकता है वह रूख का अंडा भी ला सकता है। अब और कुछ बातें करो। शहजादी ने इस बारे में कुछ न पूछा किंतु मन में यह बात धरे रही।

दो-चार दिन में अलादीन शिकार से लौटा तो उस ने देखा कि शहजादी सदा की भाँति प्रसन्नचित्त नहीं है। उस ने इस उदासी का कारण पूछा। पहले तो शहजादी इस बात पर चुप रही किंतु अलादीन पीछे पड़ गया। उस ने कहा, मुझ से तुम्हारी उदासी नहीं देखी जाती। भगवान के लिए बताओ कि इसका क्या कारण है। मैं वादा करता हूँ कि जो कुछ मुझ से बन पड़ेगा वह मैं तुम्हारी प्रसन्नता के लिए जरूर करूँगा। शहजादी ने कहा, हमारी बारहदरी संसार में इस समय अद्‌वितीय है। किंतु इसमें एक कमी है, वह पूरी हो जाए तो यह संसार में सदा के लिए अद्‌वितीय हो जाए। अगर इस के बीच में छत से रूख पक्षी का अंडा लटकाया जाए तो इसका मुकाबला कभी नहीं हो सकेगा।

अलादीन ने कहा, अच्छी बात है। लेकिन तुम जरा देर के लिए दूसरे कमरे में चली जाओ। शहजादी चली गई तो अलादीन ने अपने कपड़ों के बीच से निकाल कर जादू के चिराग को रगड़ा। तुरंत ही जिन्न आ खड़ा हुआ। अलादीन ने कहा, रूख नाम के पक्षी का एक अंडा ला कर इस बारहदरी के बीच में छत से लटका दो।

किंतु जिन्न आज्ञापालन करने के बजाय इतनी जोर से गरजा कि सारा महल हिल गया। अलादीन भी बेहद घबरा गया। जिन्न ने गरजते हुए कहा, दुष्ट कृतघ्न, मैं ने और चिराग

के दूसरे जिन्नों ने सदा तेरी आज्ञा का पालन किया और तू जिस योग्य न था वह सब कुछ तुझे दिलाया। तू कमबख्त इसका अहसान मानने के बजाय हमें यह कह रहा है कि अपने असली स्वामी ही को ला कर तेरी बारहदरी की सजावट बनाएँ? अलादीन यह सुन कर थर-थर काँपने लगा।

जिन्न फिर बोला, इस बात पर हमें चाहिए था कि तेरे इस महल के और इस के निवासियों के टुकड़े-टुकड़े करके हवा में उड़ा देते। किंतु तेरी मौत अभी नहीं लिखी। इसीलिए तूने या तेरी स्त्री ने यह बेहूदा माँग अपनी इच्छा से नहीं की है बल्कि किसी के बहकाने से की है। हम तुझे छोड़ देते है पर अब तेरी आज्ञा पर न आएँगे। हाँ, जाने से पहले मैं तुझे एक बड़े खतरे से होशियार किए देता हूँ। तेरी स्त्री ने एक जादूगर के बहकावे में आ कर यह माँग की है। यह जादूगर उस जादूगर का छोटा भाई है जिसे तूने विष दे कर मारा था। वह अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए आया है क्योंकि उसे रमल से अपने भाई की हत्या की बात मालूम हो गई थी। उस ने फातिमा बीबी के घर जा कर उसे मार डाला है और उस का वेश बना कर तेरे महल के एक बाहरी मकान में रह रहा है।

उस ने शहजादी को इसलिए बहकाया है कि मैं क्रोध में आ कर तुम दोनों को मार डालूँ। तुम उस से होशियार रहो वरना वह भाई का बदला लिए बगैर नहीं रहेगा। यह कह कर जिन्न गायब हो गया।

अलादीन तो फातिमा के बारे में जानता ही था। उस ने कुछ देर सोच कर अपनी योजना बना ली। वह शहजादी के कमरे में गया। शहजादी उस से रूख के अंडे के बारे में कुछ पूछे इस से पहले वह सिर पकड़ कर लेट गया और हाय-हाय करने लगा। शहजादी के पूछने पर उस ने बताया कि अचानक सिर में बहुत तीव्र पीड़ा होने लगी है जिसने मुझे बेहाल कर दिया है। शहजादी बोली, यह सौभाग्य की बात है कि बीबी फातिमा यहीं हैं, वे चुटकी बजाते ही तुम्हारा दर्द दूर कर देंगी। यह कह कर उस ने एक सेवक से कहा कि बीबी फातिमा को बुला लाओ, मालिक के सिर में दर्द हो रहा है।

जादूगर ने देखा कि जिन्न ने भी अलादीन को नहीं मारा तो वह खुद उसे मारने की तैयारी करके आया। अलादीन ने कहा, माता जी, मेरे सौभाग्य से आप यहाँ हैं वरना मैं सिर दर्द के मारे मर ही जाता। आप की कृपा हो तो मेरी पीड़ा एक क्षण में दूर हो सकती है। मेरे हाल पर दया कीजिए और अपने आशीर्वाद और मंत्रों के द्वारा मेरी पीड़ा दूर कीजिए। इस दर्द ने मेरा बुरा हाल कर रखा है। यह कह कर अलादीन ने अपना सिर झुका कर उस के आगे कर दिया।

जादूगर ने एक हाथ अलादीन के सिर पर रखा और दूसरे से अपने कपड़ों में छुपाई हुई कटार निकालने लगा। अलादीन होशियार था ही। उस ने फुर्ती से उस का हाथ मरोड़ कर कटार छीन ली और उस की छाती में उतार दी। वह एक मिनट तड़प कर मर गया।

शहजादी ने दूर से देखा तो चीख कर कहने लगी, मेरे प्रियतम, यह घोर पाप तुमने क्यों किया क्यों? ऐसी पवित्रात्मा वृद्धा की हत्या कर दी! किंतु अलादीन ने उस से कहा, दास-दासियों को हटा दो और तुम मेरे पास आओ। सब के हटने के बाद शहजादी पास आई तो अलादीन ने जादूगर का मुखावरण हटाते हुए कहा, अच्छी तरह देखो। मैं ने फातिमा बीबी को नहीं, इस नरक के कीड़े को मारा है। शहजादी ने मृत चेहरा देखा तो वास्तव में पुरुष दिखाई दिया।

अलादीन ने कहा, यह दुष्ट तुम्हारा अपहरण करनेवाले जादूगर का छोटा भाई था। यह खुद जादूगर था और अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए यहाँ आया था। इस ने बेचारी फातिमा के घर जा कर उस से अपना रूप बदलवाया और फिर यहाँ आ कर तुम्हें बहका कर हम दोनों को मरवाना चाहा। चिराग के जिन्नों का असली स्वामी रूख का अंडा है। मेरी माँग पर जिन्न बहुत बिगड़ा और कहने लगा कि तुमने अपनी ओर से यह माँग की होती तो तुम्हें, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे महल को अभी खत्म कर देता। किंतु तुमने बहकावे में आ कर यह माँग की है इसलिए छोड़ देता हूँ लेकिन अब तुम्हारे बुलाने पर न आऊँगा। यह कहने के बाद उसी ने उस जादूगर का पूरा हाल मुझे सुनाया।

शहजादी ने यह सुन कर भगवान को धन्यवाद दिया। कमी ही किस चीज की रह गई थी जो जिन्न को फिर बुलाया जाता। दोनों ने विश्वस्त सेवकों द्वारा इस जादूगर की लाश भी जंगल में फिंकवा दी। उस के बाद दोनों पति-पत्नी शांति और सुख से रहने लगे। कुछ वर्ष और बीते तो चीन का बादशाह अति वृद्धावस्था के कारण हलकी-सी बीमारी के बाद मर गया। बदर बदौर के अतिरिक्त उस के और कोई संतान न थी इसलिए उस की मौत के बाद वही रानी बनी और अलादीन के हाथ में सारा राज्य-प्रबंध आ गया। लंबे अरसे तक दोनों ने राज्य सुख भोगा।

खलीफा हारूँ रशीद और बाबा अब्दुल्ला की कहानी

दुनियाजाद के प्रस्ताव और शहरयार की अनुमति से नई कहानी प्रारंभ करते हुए शहरजाद ने कहा कि कभी-कभी आदमी का चित्त प्रसन्न होता है और उसकी कोई साफ वजह भी नहीं होती। ऐसी स्थिति भी होती है जब आदमी खुश तो होता है लेकिन हजार सोचने पर भी उसकी समझ में नहीं आता कि खुशी क्यों हो रही है। ऐसी ही बात कभी-कभी चिंता और उद्विग्नता के बारे में भी होती है कि समझ में नहीं आता कि किस बात की चिंता है। खलीफा हारूँ रशीद एक दिन अपने महल में यूँ ही उदास बैठा था और उदासी का कोई कारण भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था। इतने में उसका विश्वासयोग्य मंत्री जाफर आया। खलीफा ने न उसकी ओर देखा न उससे कोई बात की। मंत्री ने कहा, मालिक, इस दासानुदास की समझ में नहीं आ रहा है कि इस समय कौन सी चिंता सताए हुए है। मुझे मालूम हो तो मैं दूर करने का उपाय करूँ। खलीफा ने कहा, मुझे चिंता तो है किंतु मेरी समझ में खुद नहीं आ रहा है कि मैं क्यों चिंतित हूँ। मेरी चिंता दूर करने के पहले अगर बता सकते हो तो यह बताओ कि मेरी चिंता क्या है?

जाफर ने कहा, सरकार मेरी समझ में तो यह बात आती है कि आज महीने की पहली तारीख है जब आप वेश बदल कर बगदाद के गली-कूचों में प्रजा का हाल देखा करते हैं। आज आप यह बात भूल गए हैं किंतु अचेतन रूप से आप को यही चिंता सता रही है कि आप कर्तव्य का पालन नहीं कर रहे। खलीफा ने कहा, तुम सचमुच बड़े बुद्धिमान हो, अब मैं समझा कि मुझे यही परेशानी थी। मैं अपना वेश बदल रहा हूँ, तुम भी साधारण वेश में आ कर मेरा साथ दो। कुछ ही देर में जाफर अपने घर जा कर और वेश बदल कर आ गया और दोनों व्यक्ति महल के चोर दरवाजे से निकल कर शहर में आ गए। कुछ देर गलियों में घूम कर वे दोनों एक नाव में बैठे और नदी पार करके दूसरी ओर की बस्ती में पहुँचे और वहाँ कुछ देर घूमने के बाद पुल के रास्ते इस ओर वापस आने लगे। पुल पर एक अंधे भिखारी ने उनसे भीख माँगी। खलीफा ने उसे एक अशर्फी दी। अंधे ने खलीफा का हाथ पकड़ कर उसे आशीर्वाद दिया और बोला, हे भद्र पुरुष, तुमने अशर्फी दे कर बड़ी कृपा की है। अब तुम मेरे सिर पर एक धौल भी मारो क्योंकि मैं इसी योग्य हूँ कि भीख के साथ दंड भी पाऊँ। यह कह कर उसने खलीफा का हाथ छोड़ कर उसके वस्त्र का छोर पकड़ लिया ताकि खलीफा चला न जाए।

खलीफा को इससे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह बोला, भाई, यह तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मार कर अपने दान का फल भी नष्ट करूँ? यह कह कर खलीफा ने चाहा कि उससे दामन छुड़ा कर चला जाए किंतु अंधे ने उसका दामन पूरे जोर से पकड़ लिया और कहने लगा, मेरी गुस्ताखी माफ हो लेकिन तुम्हें मेरे सिर पर एक धौल तो मारनी पड़ेगी। अगर तुम धौल नहीं मारना चाहते तो अपनी अशर्फी वापस ले लो। मैंने ईश्वर के सामने कसम खाई है कि हर दाता से धौल जरूर खाऊँगा। इसका क्या कारण है यह लंबा किस्सा है। खलीफा ने मजबूर हो कर उसके सिर पर हलके से धौल मारी और आगे चल दिया।

किंतु उसे अंधे की अजीब प्रतिज्ञा के प्रति बड़ी उत्सुकता थी। उसने मंत्री से कहा, तुम जा कर अंधे से कहो कि वह कल दरबार में आ कर मुझे बताए कि उसने ऐसी अजीब प्रतिज्ञा क्यों की है। मंत्री उसके पास गया और उसे एक अशर्फी दे कर और एक हलकी-सी धौल लगा कर बोला, जिस आदमी ने तुम्हें अभी अशर्फी दी है वह खलीफा हारूँ रशीद है और उसने आदेश दिया है कि तुम कल दरबार में आओ और सब को बताओ कि तुम धौल लगाने को क्यों कहते हो। भिक्षुक ने कहा, जरूर आऊँगा।

वे दोनों कुछ दूर और चले तो देखा कि एक मैदान में मूल्यवान कपड़े पहने एक आदमी घोड़ी पर सवार है और उसे बेदर्दी से चाबुक से मार-मार कर और एड़ लगा-लगा कर एक मैदान में बेकार और बेदर्दी से दौड़ा रहा है। घोड़ी का दौड़ते-दौड़ते बुरा हाल हो गया था। उसके मुँह से झाग और खून निकल रहा था किंतु सवार को उस पर बिल्कुल तरस नहीं आ रहा था। वह बराबर उसे चाबुक मार-मार कर चक्कर दिए जा रहा था। खलीफा ने वहाँ खड़े एक आदमी से पूछा कि यह आदमी कौन है और घोड़ी को क्यों ऐसे सता रहा है। उसने कहा, मुझे यह नहीं मालूम। किंतु मैं रोज देखता हूँ कि यह आदमी अपनी घोड़ी को इसी तरह दौड़ाता है और अकारण ही चाबुक मार-मार कर मैदान के सैकड़ों चक्कर उसे दिलवाता है। यह सुन कर खलीफा ने अलग ले जा कर मंत्री से कहा कि मैं आगे जा रहा हूँ। तुम इस जवान घुड़सवार से जा कर कहो कि कल उसी समय, जो भिक्षुक के लिए नियत किया गया है, दरबार में हाजिर हो और इस बात को बताए कि वह अपनी घोड़ी के साथ क्यों ऐसी कठोरता बरतता है। मंत्री ने यही किया और घुड़सवार को खलीफा का आदेश सुनाया।

इसके बाद वे दोनों आगे बढ़े तो देखा कि एक गली में एक भव्य भवन खड़ा है। खलीफा ने पूछा, क्या यह भवन मेरे किसी सरदार का है? मंत्री को स्वयं नहीं मालूम था कि किसका भवन है। अतएव उसने वहाँ के रहनेवालों से पूछा तो उन्होंने बताया कि यह महल एक हव्वाल यानी रस्सी बट कर बेचनेवाले का है। जिसका नाम ख्वाजा हसन है। खलीफा को आश्चर्य हुआ कि कल दरबार में इस हव्वाल को भी आने को कहो ताकि मैं उससे इतना धनवान होने का रहस्य पूछूँ। मंत्री ने ऐसा ही किया।

दूसरे दिन सुबह की नमाज पढ़ने के बाद खलीफा दरबार में अपने सिंहासन पर बैठा। मंत्री ने उपर्युक्त तीनों व्यक्तियों को जो पहले ही वहाँ आ गए थे, खलीफा के सामने पेश किया। खलीफा ने अंधे भिखारी बाबा अब्दुला से पूछा, मैं जानना चाहता हूँ कि तुम दाता से धौल मारने को क्यों कहते हो। भिखारी ने उसकी आवाज पहचान कर अपना सिर जमीन से लगाया और बोला, पहले तो मैं कल की अभद्रता के लिए आपसे क्षमा माँगता हूँ, मैं नहीं जानता था कि आप कौन हैं। अब मैं अपना पूरा वृत्तांत आपके सम्मुख रखता हूँ।

अंधे बाबा अब्दुल्ला की कहानी

बाबा अब्दुल्ला ने कहा कि मैं इसी बगदाद नगर में पैदा हुआ था। मेरे माँ बाप मर गए तो उनका धन उत्तराधिकार में मैंने पाया। वह धन इतना था कि उससे मैं जीवन भर आराम से रह सकता था किंतु मैंने भोग-विलास में सारा धन शीघ्र उड़ा दिया। फिर मैंने जी तोड़ कर धनार्जन किया और उससे अस्सी ऊँट खरीदे। मैं उन ऊँटों को किराए पर व्यापारियों को दिया करता था। उनके किराए से मुझे काफी लाभ हुआ और मैंने कुछ और ऊँट खरीदे और उनको साथ में ले कर किराए पर माल ढोने लगा।

एक बार हिंदुस्तान जानेवाले व्यापारियों का माल ऊँटों पर लाद कर मैं बसरा ले गया। वहाँ माल को जहाजों पर चढ़ा कर और अपना किराया ले कर अपने ऊँट ले कर बगदाद वापस आने लगा। रास्ते में एक बड़ा हरा-भरा मैदान देख कर मैंने ऊँटों के पाँव बाँध कर उन्हें चरने छोड़ दिया और खुद आराम करने लगा। इतने में बसरा से बगदाद को जानेवाला एक फकीर भी मेरे पास आ बैठा। मैंने भोजन निकाला और उसे साथ में आने को कहा। खाते-खाते हम लोग बातें भी करते जाते थे। उसने कहा, तुम रात-दिन बेकार मेहनत करते हो। यहाँ से कुछ दूर पर एक ऐसी जगह है जहाँ असंख्य द्रव भरा है। तुम इन अस्सी ऊँटों को रत्नों और अशर्फियों से लाद सकते हो। और वह धन तुम्हारे जीवन भर को काफी होगा।

मैंने यह सुन कर उसे गले लगाया और यह न जाना कि वह इससे कुछ स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। मैंने उससे कहा, तुम तो महात्मा हो, तुम्हें सांसारिक धन से क्या लेना-देना। तुम मुझे वह जगह दिखाओ तो मैं ऊँटों को रत्नादि से लाद लूँ। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें उनमें से एक ऊँट दे दूँगा। मैंने कहने को तो कह दिया किंतु मेरे मन में द्वंद्व होने लगा। कभी सोचता कि बेकार ही एक ऊँट इसे देने को कहा, कभी सोचता कि क्या हुआ, मेरे लिए उन्यासी ऊँट ही बहुत हैं। वह फकीर मेरे मन के द्वंद्व को समझ गया। उसने मुझे पाठ पढ़ाना चाहा और बोला, एक ऊँट को ले कर मैं क्या करूँगा, मैं तुम्हें इस शर्त पर वह जगह दिखाऊँगा कि तुम खजाने से भरे अपने ऊँटों में से आधे मुझे दे दो। अब तुम्हारी मरजी है। तुम खुद ही सोच लो कि चालीस ऊँट क्या तुम्हारे लिए कम हैं। मैंने विवशता में उसकी बात स्वीकार कर ली। मैंने यह भी सोचा कि चालीस ऊँटों का धन ही मेरी कई पीढ़ियों को काफी होगा।

हम दोनों एक अन्य दिशा में चले। एक पहाड़ में तंग दर्रे से निकल कर हम लोग पहाड़ों के बीच एक खुले स्थान में पहुँचे। वह जगह बिल्कुल सुनसान थी। फकीर ने कहा, ऊँटों को यहीं बिठा दो और मेरे साथ आओ। मैं ऊँटों को बिठा कर उसके साथ गया। कुछ दूर जा कर फकीर ने सूखी लकड़ियाँ जमा कर के चकमक पत्थर से आग निकाली और लकड़ियों को सुलगा दिया। आग जलने पर उसने अपनी झोली में से सुगंधित द्रव्य निकाल कर आग में डाला। उसमें से धुएँ का एक जबर्दस्त बादल उठा और एक ओर को चलने लगा। कुछ दूर जा कर वह फट गया और उसमें एक बड़ा टीला दिखाई दिया। जहाँ हम थे वहाँ

से टीले तक एक रास्ता भी बन गया। हम दोनों उसके पास पहुँचे तो टीले में एक द्वार दिखाई दिया। द्वार से आगे बढ़ने पर एक बड़ी गुफा मिली जिसमें जिन्नों का बनाया हुआ एक भव्य भवन दिखाई दिया।

वह भवन इतना भव्य था कि मनुष्य उसे बना ही नहीं सकते। हम लोग उसके अंदर गए तो देखा कि उसमें असीम द्रव्य भरा हुआ था। अशर्फियों के एक ढेर को देख कर मैं उस पर ऐसे झपटा जैसा किसी शिकार पर शेर झपटे। मैंने ऊँटों की खुर्जियों में अशर्फियाँ भरना शुरू किया। फकीर भी द्रव्य संग्रह करने लगा किंतु वह केवल रत्नों को भरता। उसने मुझे भी अशर्फियों को छोड़ कर केवल रत्न उठाने को कहा मैं भी ऐसा करने लगा। हम लोगों ने सारी खुर्जियाँ बहुमूल्य रत्नों से भर ली। मैं बाहर जाने ही वाला था कि वह फकीर एक और कमरे में गया और मैं भी उसके साथ चला गया। उसमें भाँति-भाँति की स्वर्णनिर्मित वस्तुएँ रखी थीं। फकीर ने एक सोने का संदूकचा खोला और उसमें से एक लकड़ी की डिबिया निकाली और उसे खोल कर देखा। उसमें एक प्रकार का मरहम रखा हुआ था। उसने डिबिया बंद करके अपनी जेब में रख ली। फिर उसने आग जला कर उसमें सुगंध डाली और मंत्र पढ़ा जिससे वह महल गायब हो गया और वह गुफा और टीला भी गायब हो गया जो उसने मंत्र बल से पैदा किया था। हम लोग उसी मैदान में आ गए जिसमें मेरे ऊँट बँधे बैठे थे।

हम ने सारे ऊँटों को खुर्जियों से लादा और वादे के अनुसार आधे-आधे ऊँट बाँट कर फिर उस तंग दर्रे से निकले जहाँ से हो कर आए थे। बसरा और बगदाद के मार्ग पर पड़नेवाले मैदान में पहुँच कर मैं अपने चालीस ऊँट ले कर बगदाद की ओर चला और फकीर चालीस ऊँट ले कर बसरे की ओर रवाना हुआ। मैं कुछ ही कदम चला हूँगा कि शैतान ने मेरे मन में लोभ भर दिया और मैंने पीछे की ओर दौड़ कर फकीर को आवाज दी। वह रुका तो मैंने कहा, साईं जी आप तो भगवान के भक्त हैं, आप इतना धन ले कर क्या करेंगे। आपको तो इससे भगवान की आराधना में कठिनाई ही होगी। आप अगर बुरा न मानें तो मैं आपके हिस्से में से दस ऊँट ले लूँ। आप तो जानते ही है कि मेरे जैसे सांसारिक लोगों के लिए धन का ही महत्व होता है। फकीर इस पर मुस्कुराया और बोला, अच्छा, दस ऊँट और ले जाओ।

जब फकीर ने अपनी इच्छा से बगैर हीला-हुज्जत किए दस ऊँट मुझे दे डाले तो मुझे और लालच ने धर दबाया और मैंने सोचा कि इससे दस ऊँट और ले लूँ, इसे तो कोई अंतर पड़ना ही नहीं है। अतएव मैं उसके पास फिर गया और बोला, साईं जी, आप कहेंगे कि यह आदमी बार-बार परेशान कर रहा है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि आप जैसे संत महात्मा तीस ऊँटों को भी कैसे सँभालेंगे।

इससे आपकी साधना-आराधना में बहुत विघ्न पड़ेगा। इन में से दस ऊँट मुझे और दे दीजिए। फकीर ने फिर मुस्कुरा कर कहा, तुम ठीक कहते हो मेरे लिए बीस ऊँट काफी हैं। तुम दस ऊँट और ले लो।

दस ऊँट और ले कर मैं चला। किंतु मुझ पर लालच का भूत बुरी तरह सवार हो गया था। या यह समझो कि वह फकीर ही अपनी निगाहों और अपने व्यवहार से मेरे मन में लालच पैदा किए जा रहा था। मैंने अपने रास्ते से पलट कर पहले जैसी बातें कह कर और दस ऊँट उससे माँगे। उसने हँस कर यह बात भी स्वीकार कर ली और दस ऊँट अपने पास रख कर दस ऊँट मुझे दे दिए। किंतु मैं अभागा इतने से भी संतुष्ट न हुआ। मैंने बाकी दस ऊँटों का विचार अपने मन से निकालना चाहा किंतु मुझे उनका ध्यान बना रहा। मैं रास्ते से लौट कर एक बार फिर उस फकीर के पास गया और उसकी बड़ी मिन्नत-समाजत करके बाकी के ऊँट भी उससे माँगे। वह हँस कर बोला, भाई, तेरी तो नियत ही नहीं भरती। अच्छा यह बाकी दस ऊँट भी ले जा, भगवान तेरा भला करे।

सारे ऊँट पा कर भी मेरे मन का खोट न गया। मैंने उससे कहा, साईं जी आपने इतनी कृपा की है तो वह मरहम की डिबियाँ भी दे दीजिए जो आपने जिन्नों के महल से उठाई थी। उसने कहा कि मैं वह डिबिया नहीं दूँगा। अब मुझे उस का लालच हुआ। मैं फकीर से उसे देने के लिए हुज्जत करने लगा। मैंने मन में निश्चय कर लिय था कि यदि फकीर ने अपनी इच्छा से वह डिबिया नहीं दी तो मैं जबर्दस्ती करके उससे डिबिया ले लूँगा। मेने मन की बात को जान कर फकीर ने वह डिबिया भी मुझे दे दी और कहा, तुम डिबिया जरूर ले लो लेकिन यह जरूरी है कि तुम इस मरहम की विशेषता समझ लो। अगर तुम इसमें से थोड़ा सा मरहम अपनी बाईं आँख में लगाओगे तो तुम्हें सारे संसार के गुप्त कोश दिखाई देने लगेंगे। किंतु अगर तुमने इसे दाहिनी आँख में लगाया तो सदैव के लिए दोनों आँखों से अंधे हो जाओगे।

मैंने कहा, साईं जी, आप तो इस मरहम के पूरे जानकार हैं। आप ही इसे मेरी आँख में लगा दें। फकीर ने मेरी बाईं आँख बंद की और थोड़ा-सा मरहम ले कर पलक के ऊपर लगा दिया। मरहम लगते ही वैसा ही हुआ जैसा उस फकीर ने कहा था, यानी दुनिया भर के गुप्त और भूमिगत धन-कोश मुझे दिखाई देने लगे। मैं लालच में अंधा तो हो ही रहा था। मैंने सोचा कि अभी और कई खजाने होंगे जो नहीं दिखाई दे रहे हैं। मैंने दाहिनी आँख बंद की और फकीर से कहा कि इस पर भी मरहम लगा दो ताकि बाकी खजाने भी मुझे दिखने लगे। फकीर ने कहा, ऐसी बात न करो, अगर दाहिनी आँख में मरहम लगा तो तुम हमेशा के लिए अंधे हो जाओगे।

मेरी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ था। मैंने सोचा कि यह फकीर मुझे धोखा दे रहा है। यह भी संभव है कि दाहिनी आँख मैं मरहम लग जाने से मुझे उस फकीर की शक्तियों के रहस्य मालूम हो जाए। मैं उसके पीछे पड़ गया। वह बार-बार कहता था कि यह मूर्खता भरी जिद छोड़ो और मरहम को दाईं आँख में लगवाने की बात न करो, किंतु मैं यही समझता कि वह स्वार्थवश ही मेरी दाईं आँख में मरहम नहीं लगा रहा है। मैं बराबर उससे कहता रहा कि दाहिनी आँख में मरहम लगा दो।

उसने मुझसे कहा, भाई, तू क्यों जिद कर रहा है। मैंने तेरा जितना लाभ कराया है क्या उतनी ही हानि मेरे हाथ से उठाना चाहता है। मैं एक बार भलाई करके अब तेरे साथ बुराई

क्यों करूँ।

किंतु मैंने कहा, जैसे आपने अभी तक मेरी हर एक जिद पूरी की वैसे ही आखिरी जिद भी पूरी कर दीजिए। अगर इससे मेरी कोई हानि होगी तो मुझी पर उसकी जिम्मेदारी होगी, आप पर नहीं।

उसने कहा, अच्छा, तू अपनी बरबादी चाहता है तो वही सही। यह कह कर उसने मेरी दाहिनी आँख की पलक पर भी उस मरहम को लगा दिया। मरहम लगते ही मैं बिल्कुल अंधा हो गया। मुझे अपार दुख हुआ, मुझे अपनी मूर्खता याद न रही। मैंने फकीर को भला-बुरा कहना शुरू किया और कहा, अब यह सारा धन मेरे किस काम का? तुम मुझे अच्छा कर दो और अपने हिस्से के चालीस ऊँट ले कर चले जाओ। उसने कहा, अब कुछ नहीं हो सकता, मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दी थी।

मैंने उससे और अनुनय-विनय की तो वह बोला, मैंने तो तुम्हारी भलाई का भरसक प्रयत्न किया था और तुम्हें हमेशा सत्परामर्श ही दिया था किंतु तुमने मेरी बातों को कपटपूर्ण समझा और गलत बातों के लिए जिद की। अब जो कुछ हो गया है वह मुझसे ठीक नहीं हो सकता, तुम्हारी दृष्टि कभी वापिस नहीं लौटेगी। मैंने उससे बहुत ही गिड़गिड़ा कर कहा, साईं जी, मुझे अब कोई लालच नहीं रहा। अब शौक से सारी धन संपदा और मेरे सभी अस्सी ऊँट ले जाइए, सिर्फ मेरी आँखों की ज्योति वापस दिला दीजिए। उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि सारे ऊँट और उन पर लदी हुई संपत्ति ले कर बसरा की ओर चल दिया। ऊँटों के चलने की आवाज सुन कर मैं चिल्लाया, साईंजी, इतनी कृपा तो कीजिए कि इस जंगल में इसी दशा में न छोड़िए। अपने साथ लिए चलिए। रास्ते में कोई व्यापारी बगदाद जाता हुआ मिलेगा तो मैं उसके साथ हो लूँगा। किंतु उसने मेरी बात न सुनी और चला गया। अब मैं अँधेरे में इधर-उधर भटकने लगा। मुझे मार्ग का भी ज्ञान न था कि पैदल ही चल देता। अंत में थक कर गिर रहा और भूख प्यास से मरणासन्न हो गया।

मेरे सौभाग्य से दूसरे ही दिन व्यापारियों का एक दल बसरा से बगदाद को जाते हुए उस मार्ग से निकला। वे लोग मेरी हालत पर तरस खा कर बगदाद ले आए। अब मेरे सामने इसके अलावा कोई रास्ता नहीं रहा कि मैं भीख माँग कर पेट पालूँ। मुझे अपने लालच और मूर्खता का इतना खेद हुआ कि मैंने कसम खा ली कि किसी से तब तक भीख नहीं लूँगा जब तक वह मेरे सिर पर एक धौल न मारे। इसीलिए कल मैंने आपसे धृष्टता की थी।

खलीफा ने कहा, तुम्हारी मूर्खता तो बहुत बड़ी थी। भगवान तुम्हें क्षमादान करेंगे। अब तुम जा कर अपनी सारी भिक्षुक मंडली को अपना वृत्तांत बताओ ताकि सभी को मालूम हो कि लालच का क्या फल होता है। अब तुम भीख माँगना छोड़ दो। मेरे खजाने से तुम्हें हर रोज पाँच रुपए मिला करेंगे और यह व्यवस्था तुम्हारे जीवन भर के लिए होगी। बाबा

अब्दुल्ला ने जमीन से सिर लगा कर कहा, सरकार के आदेश का मैं खुशी से पालन करूँगा।

सीदी नोमान की कहानी

भिखारी की कहानी सुनने के बाद खलीफा ने बराबर घोड़ी दौड़ानेवाले पर ध्यान दिया और उससे पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है। उसने अपना नाम सीदी नोमान बताया। खलीफा ने कहा, मैंने बहुत-से घुड़सवारों और साईसों को देखा है कि वह घुड़सवारी सिखाने या घोड़े को सिखाने में बहुत श्रम करते हैं। मैंने स्वयं भी बहुत-से घोड़ों को फेरा है लेकिन तुम्हारी तरह घोड़ी दौड़ाते मैंने किसी को नहीं देखा। तुम्हारी घोड़ी दौड़ती चली जाती थी फिर भी तुम उसे बराबर चाबुक मारे जा रहे थे। सभी को तुम्हारे इस व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था। किंतु सबसे अधिक ताज्जुब मुझे ही हो रहा था। इसलिए मैंने कल उस जगह खड़े लोगों से तुम्हारे इस बर्ताव का कारण पूछा था किंतु किसी को भी पता नहीं था कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो तुम सच-सच सारा हाल बताओ।

सीदी नोमान के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने समझा कि खलीफा मेरी हरकत से बहुत नाराज है और न मालूम क्या सजा देगा। वह यह भी समझ गया कि खलीफा को उसका रहस्य जानने की अत्यंत प्रबल इच्छा है और बगैर पूरी बात बताए उसे छुटकारा नहीं मिल सकता। फिर भी भय के कारण उसकी जबान बंद हो गई थी और वह मूर्तिवत निश्चल खड़ा था। खलीफा ने यह देख कर कहा, सीदी नोमान, डरो मत। मैं तुम से मित्र भाव से यह बात पूछ रहा हूँ। अगर तुमसे कोई अपराध भी हुआ है तो मैंने अभी से तुम्हें उसके लिए क्षमा कर दिया। अब तुम निर्भय हो कर अपनी बात कहो।

सीदी नोमान को यह सुन कर ढाँढ़स हुआ। वह हाथ जोड़ कर बोला। संसार के स्वामी, आपकी आज्ञानुसार मैं अपनी पूरी कहानी आपके सम्मुख रखता हूँ। मैंने किसी जाति या किसी धर्म के नियमों का उल्लंघन नहीं किया। फिर भी यदि मेरा कोई अपराध सिद्ध हो तो मुझे निःसंदेह दंड मिले। मैं अपनी घोड़ी के प्रति जो कठोरता बरतता हूँ उससे आपको बुरा लगा और घोड़ी पर आपको दया आई। किंतु जब इसकी कहानी सुनेंगे तो आप भी इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि यह दंड उसके लिए कम है।

यह कहने के बाद सीदी नोमान ने अपनी कहानी शुरू की। उसने कहा कि मेरे माता-पिता की मृत्यु के बाद मुझे उत्तराधिकार में इतना धन मिला जो मेरे जीवन भर के लिए काफी था। मैं बड़े आराम से गुजारा कर रहा था और मुझे किसी बात की चिंता नहीं थी। मेरी तरुणावस्था थी इस लिए स्वभावतः ही मेरी इच्छा विवाह करने की हुई। भगवान की ऐसी इच्छा न थी कि मुझे सुगृहणी मिले। मैंने एक स्त्री से अनिंद्य सौंदर्य को देख कर विवाह किया। आप जानते ही है कि हमारी जात में पहले से लड़की को देख-परख कर विवाह करने का रिवाज नहीं है। इसीलिए हमारे लिए उचित है कि मृदुल या कर्कशा जैसी स्त्री भाग्य से मिले उसी पर संतोष करना चाहिए और उसके साथ प्रसन्नतापूर्वक निर्वाह करना चाहिए। किंतु हर बात की एक सीमा होती है और ऐसी स्थितियाँ भी आ जाती हैं कि एक दिन के लिए भी निर्वाह नहीं होता।

मैं अपनी पत्नी के अनूप रूप को देख कर बड़ा प्रसन्न था किंतु दूसरे दिन ही से उसकी कुत्सितता का हाल खुलना शुरू हो गया। सुहागरात के दूसरे दिन मैं दिन का भोजन करने बैठा तो मैंने अपनी पत्नी को भी साथ खाने के लिए बुलाया। हमारे सामने पुलाव था। मैं अपने समाज की रीति के अनुसार चम्मच से उठा-उठा कर पुलाव खा रहा था किंतु मेरी पत्नी कान खोदने की सलाई से चावल का एक एक दाना उठा कर खाने लगी। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, प्यारी, क्या तुम्हारे मायके में इसी तरह से लोग खाना खाया करते हैं। जितनी देर तुमने भोजन किया है उसमें तुमने दस-पंद्रह चावलों से अधिक न खाया होगा। तुम दाने गिन-गिन कर क्यों खा रही हो? क्या तुम किफायत के लिए ऐसा कर रही हो? अगर ऐसा है तो तुम किफायत का ख्याल छोड़ दो और जैसे मैं खुल कर खा रहा हूँ वैसे ही तुम भी खाओ। मुझे भगवान ने इतना दे रखा है कि तुम्हें पेट भर खाना खिला सकूँ।

उसने मेरी बात का कोई उत्तर न दिया। पूर्ववत ही एक-एक दाना उठा कर खाती रही, बल्कि मुझे खिजाने के लिए एक-एक दाना भी बहुत देर में उठाने लगी। जब हमारे सामने शीरमाल और बाकर खानी रोटियाँ आईं तो उसने एक रोटी के छिलके का बहुत ही छोटा टुकड़ा तोड़ कर बड़े नखरे से मुँह में रखा। जितना खाना कुल मिला कर उसने खाया वह एक चिड़िया का पेट भरने को भी काफी नहीं था।

मुझे उसकी अल्प भोजन की जिद पर आश्चर्य हुआ किंतु मैंने सोचा कि यह मेरे साथ पहली बार खाना खा रही है और किसी पुरुष के साथ खाने का पहला मौका होने के कारण लजा रही है, जब इसे मेरे साथ खाने की आदत हो जाएगी तो खुल कर खाएगी। मैंने यह भी सोचा कि हो सकता है कि मेरे साथ खाने के पहले यह कोई चीज अधिक मात्रा में खा चुकी हो और इस समय इसके पेट में जगह न हो। एक विचार यह भी आया कि शायद इसे अकेले ही खाने की आदत हो। यह सब सोच कर मैंने उससे कुछ न कहा और वह पूर्ववत ही नाम चार के लिए खाती रही। खाने के बाद मैं घूमने-फिरने चला गया और यह बात बिल्कुल भूल गया कि मेरी पत्नी कितनी अल्पभक्षी है।

किंतु शाम के खाने पर भी उसका यह हाल रहा। बाद में भी कई दिनों तक मैंने खाने के मामले में उसका यही रवैया देखा तो मुझे यह आश्चर्य हुआ कि यह स्त्री इतना कम खाने पर भी न केवल जीवित है अपितु स्वस्थ भी है। एक दिन हम दोनों सोने के लिए लेटे तो यह मुझे सोता जान कर सावधानी से उठी। मैं आँखें बंद किए था किंतु जाग रहा था। मैं जान-बूझ कर खर्राटे भरने लगा। वह उठ कर अंदर गई और कपड़े पहन कर घर से बाहर निकली। मैं भी अपने कपड़ों को कंधे पर डाल कर चुपके-चुपके उसके पीछे चल दिया। बाहर चाँदनी थी इसलिए उसका पीछा करना मुश्किल न हुआ। वह चलते-चलते हमारे घर के समीपवर्ती कब्रिस्तान में पहुँची। मैं ओट में खड़ा हो कर देखने लगा। मैंने देखा कि मेरी पत्नी एक नरभक्षी जंगली के साथ बैठी है और उससे प्रसन्नतापूर्वक कुछ बातें कर रही है वे बातें मेरी समझ में नहीं आईं क्योंकि मैं दूर खड़ा हुआ था।

दीनबंधु, आपको मालूम ही है कि नरभक्षी जंगली रास्ते में इक्का-दुक्का मुसाफिर को देख

कर उसे मार डालते हैं और खा लेते हैं। जब उन्हें कोई मुसाफिर नहीं मिलता तो वे कब्रिस्तान में चले जाते हैं और नए दफन होनेवाले मुर्दों को खाते हैं। मैं अपनी पत्नी को ऐसे जंगली के पास बैठे देख कर घबराया और समझ गया कि मेरी पत्नी भी इसी जाति की है। इन दोनों ने मिल कर उसी दिन बनी हुई एक नई कब्र खोदी और उसमें से लाश निकाल कर बाहर लाए और उसे काट-काट कर खाने लगे। वे बातें भी करते जाते थे किंतु मेरा भय से बुरा हाल था और मैं थर-थर काँप रहा था। जब वे दोनों पूरी लाश का मांस खा चुके तो उन्होंने उसकी हड्डियों को कब्र में वापस डाला और कब्र पर मिट्टी इस तरह चढ़ा दी जिससे मालूम हो कि कब्र खोदी ही नहीं गई थी।

मैं उन दोनों को वहीं छोड़ कर घर में आ गया और दरवाजा खुला छोड़ कर पलंग पर जा लेटा और सोता हुआ दिखने लगा। कुछ देर में मेरी पत्नी आई। उसने अंदर के कमरे में जा कर वस्त्र बदले और सावधानी से मेरे पलंग पर लेट गई। उसके बर्ताव से स्पष्ट था कि वह यह नहीं जानती कि मैं उसके पीछे पीछे जा कर उसका सारा हाल देख आया हूँ। मुझे ऐसी मुर्दाखोर स्त्री के साथ सोने में बड़ी घृणा उत्पन्न हुई और मैं उससे बच कर ही लेटा रहा और सो गया। सुबह मसजिद के मुल्ला की अजान सुन कर मैं उठा। नित्य कर्म से निवृत्त हो कर मैंने स्नान किया फिर मसजिद में जा कर दूसरी नमाज पढ़ी। इसके बाद मैं बागों की सैर करने चला गया। टहलते-टहलते मैं सोचने लगा कि किस प्रकार अपनी स्त्री की यह गंदी आदत छुड़ाऊँ। घर आ कर भी मैं यही सोचता रहा।

दोपहर के भोजन के समय उसने पुराना क्रम जारी रखा यानि एक-एक दाना उठा कर खाने लगी। मैंने कहा, रानी, अगर तुम्हें कोई विशेष वस्तु पसंद न हो तो दूसरी मँगवा लो, यहाँ तो रसोई में सब कुछ है। फिर हर रोज खाने में भी बदल-बदल कर बनाए जाते हैं, इसलिए एकरसता का सवाल भी नहीं है। अगर तुम्हें इन खानों में कुछ भी पसंद न हो तो अपने पसंद की जो भी चीज जैसे भी चाहो बनवा लो या बना लो। मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि क्या दुनिया में मुर्दे के मांस से, जिसे तुम स्वाद से खाया करती हो, अधिक स्वादिष्ट भोजन कोई नहीं है?

मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि वह समझ गई कि मैंने उसका शवभक्षण का भेद जान लिया है। क्रोध के मारे उसका चेहरा लाल हो गया, उसकी आँखें उभर आईं और उसके मुँह से झाग निकलने लगा। उसका क्रोध देख कर मैं भयभीत हो गया कि न जाने यह दुष्ट अब क्या करे। उसने दाँत पीसते हुए कहा, नीच, दुष्ट, कमीने, तूने छुप कर मेरा रहस्य जान लिया। लेकिन तू अब इस योग्य नहीं रहेगा कि किसी से वह भेद कह सके। यह कह कर उसने पास रखे हुए गिलास के जल में उँगलियाँ डुबोईं और कुछ बोलने लगी जिसे मैं समझ न सका। फिर उसने उँगलियों का पानी मुझ पर छिड़क कर कहा, कुत्ता बन जा। उसके इस शब्दों के साथ ही मैं कुत्ता बन गया।

वह एक लकड़ी उठा कर मुझे मारने लगी। वह शायद मुझे इतना मारती कि मैं मर ही जाता। इसलिए मैं जान बचा कर भागा और सारे घर में दौड़ने लगा कि शायद कहीं बचने की जगह मिल जाए। वह लकड़ी लिए हुए मुझे सारे घर में खदेड़ती और पीटती रही।

जब थक गई तो उसने दरवाजा खोल दिया और मैं दर्द से चिल्लाता हुआ घर के बाहर भाग गया ताकि उसकी पिटाई से बच सकूँ।

बाहर आ कर भी मुझे चैन न मिला। मुहल्ले के कुत्ते मुझे देख कर भौंकने लगे और मुझे पकड़ कर झिंझोड़ने भँभोड़ने लगे। मैं बाजार में भाग कर गया और एक दुकान में, जहाँ बकरी के सिरी पाए और जीभ बिकती थी, घुस कर एक कोने में छुप गया। दुकानदार को मुझ पर दया आई और उसने मेरे पीछे पड़े हुए कुत्तों को भगा दिया। मैं रात भर वहीं पड़ा रहा। सुबह दुकानदार सिरी पाए लेने गया और बहुत-सा माल ले कर अपनी दुकान में रखा। मांस की गंध पाकर बहुत-से कुत्ते दुकान के सामने आ गए। मैं भी जा कर उनमें मिल गया। दुकानदार ने देखा कि मैं रात भूखा ही रहा हूँ इसलिए मेरे सामने उसने मांस का एक लोथड़ा डाल दिया। मैं मांस की ओर झुका भी नहीं, दुकानदार के सामने जा कर दुम हिलाने लगा। दुकानदार यह न चाहता था कि मैं हमेशा उसकी दुकान में रहूँ इसलिए उसने एक लकड़ी उठा कर मुझे धमकाया। मैं भाग कर एक नानबाई की दुकान के आगे पहुँचा। वह उस समय भोजन कर रहा था। उसने रोटी का एक टुकड़ा मेरे आगे फेंक दिया। मेरा इरादा उससे खाना माँगने का न था फिर भी मैं कुत्तों की भाँति झपटा और रोटी खाने लगा। फिर उसके आगे जा कर दुम हिलाने लगा। वह मेरा रूप देख कर प्रसन्न हुआ और मुस्कुराने लगा। मैंने समझ लिया कि इसे इस बात में कोई आपत्ति नहीं है कि मैं उसकी दुकान में रहूँ। मैं उसकी दुकान के सामने उसकी ओर मुँह करके बैठ गया।

शाम को जब नानबाई ने दुकान बंद की तो वह मुझे अपने घर ले गया। इसके बाद उसका नियम हो गया कि रात को अपने घर में रखता और दिन में उसकी दुकान के सामने बैठा रहता था। उसे यह देख कर भी बड़ी खुशी हुई कि मैं उसकी अनुमति के बगैर उसके घर के अंदर पाँव नहीं रखता। वह मुझे बहुत प्यार से रखता था और खूब खाने को देता था। मैं भी उसकी ओर ताकता रहता था और उसके इशारे पर ही सब काम किया करता था। उसने मेरा एक नाम भी रख दिया था।

मैं हर जगह अपने नए मालिक के पीछे-पीछे घूमता था और उसे भी मेरा इतना शौक हो गया था कि अगर कभी वह बाहर जाता और उस समय मैं अपने कोने में सो रहा होता तो वह मेरा नया नाम ले कर पुकारता और मैं उसके पास दौड़ कर चला जाता। वह मुझसे तरह-तरह से दिल बहलाया करता था। मैं उसके इशारे पर कभी लेटता कभी बैठता, कभी दो टाँगों पर खड़ा होता, कभी कोई फेंकी हुई चीज उठा लाता। इसी तरह बहुत दिन बीत गए। मेरा मालिक मुझसे और मैं अपने मालिक से बहुत प्रसन्न रहा करते थे और एक-दूसरे का साथ पसंद करते थे।

एक दिन उसकी दुकान में एक स्त्री आई और सामान खरीद कर जब दाम देने लगी तो अच्छे सिक्कों के साथ एक खोटा सिक्का भी मिला कर देने लगी। नानबाई ने खोटा सिक्का उसे फेर कर दिया तो वह तकरार करने लगी। नानबाई ने कहा, तुम मेरी बात नहीं मानती हो। इस सिक्के को तो मेरा कुत्ता भी खोटा कह देगा। यह कह कर उसने मुझे पुकारा। मैं दौड़ कर उसके सामने गया तो उसने उस स्त्री को दिए सभी सिक्के मेरे आगे

फेंक दिए और कहा कि इनमें खोटा सिक्का पहचान ले। मैंने सारे सिक्के अलग-अलग किए फिर मैंने उसमें से सारे अच्छे सिक्के एक ओर समेट दिए और खोटे सिक्के पर पंजा रख कर नानबाई की ओर देखने लगा। नानबाई यह देख कर बहुत खुश हुआ। उस स्त्री को भी आश्चर्य हुआ और उसने खोटा सिक्का बदल दिया।

उस स्त्री के जाने के बाद नानबाई ने आसपास के लोगों से कहा कि मेरे कुत्ते को खरे-खोटे सिक्कों की पहचान है। उन्होंने पहले विश्वास न किया और मेरी परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने अच्छे सिक्कों में खोटे सिक्के मिला कर मेरे आगे फेंक दिए और देखने लगे कि मुझे खरे-खोटे की पहचान है या नहीं। मैंने उन सिक्कों को देखा और एक-एक करके सारे खोटे सिक्कों पर अपना पंजा रखता चला गया। पड़ोसी दुकानदारों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने दूसरे दुकानदारों तथा ग्राहकों से कहा कि फलाने नानबाई के कुत्ते को खरे-खोटे सिक्कों की परख है। कुछ ही दिनों में यह समाचार सारे नगर में फैल गया और बहुत-से लोग सिक्कों को परखवाने के लिए नानबाई के पास आने लगे।

अब यह हाल हो गया कि नानबाई के दुकान के आगे सिक्के परखवानेवालों की भीड़ लगने लगी। मैं दिन भर सिक्के परखता रहता। नानबाई का व्यापार चमक उठा क्योंकि सिक्के परखवानेवाले उसी से सौदा लेते थे। आसपास के नानबाई इस बात से जलने लगे और चाहने लगे कि मुझे उड़ा ले जाएँ। इस कारण मेरा मालिक मेरी और अच्छी तरह देखभाल करने लगा।

एक दिन एक स्त्री नानबाई के पास आई और छह अच्छे सिक्कों के साथ एक खोटा सिक्का मिला कर उसे देने लगी। नानबाई के इशारे पर मैंने खोटे सिक्के पर पाँव रख दिया। स्त्री ने स्वीकारा कि सिक्का खोटा है, और उसे बदल दिया। फिर उसने नानबाई की नजर बचा कर मुझे इशारा किया कि उसके साथ उसके घर को जाऊँ। मैं बराबर यह चाहता था कि किसी प्रकार फिर मनुष्य बनूँ। उस स्त्री की निगाहों से मुझे ऐसा लगा कि उसके द्वारा यह बात संभव है। मैं उसकी ओर बराबर देखने लगा। वह अपने घर की ओर चली और कई कदम चल कर वापस लौटी और फिर मुझे अपने साथ आने का इशारा किया। अब मैंने निश्चय कर लिया कि उसके साथ जाऊँ। मैं अपने मालिक नानबाई की नजर बचा कर उसके साथ हो लिया। वह यह देख कर बड़ी प्रसन्न हुई। उसने तुरंत रास्ता बदल दिया जिससे नानबाई मुझे उसके साथ जाता हुआ न देख सके।

वह स्त्री मुझे अपने घर ले गई। मेरे अंदर जाने पर उसने बाहर का दरवाजा बंद कर दिया और मुझे घर के अंदर ले गई। अंदर एक नवयौवना सुंदरी कीमती जरी के वस्त्र पहने बैठी थी। मुझे अंदाजे से लगा कि वह उस स्त्री की पुत्री है जो मुझे बाजार से लाई थी। घर के अंदर बैठी हुई सुंदरी जादू की विद्या में अति प्रवीण थी। जो स्त्री मुझे लाई थी उसने उस सुंदरी से कहा, यही वह कुत्ता है जो खोटे-खरे सिक्कों की पहचान जानता है। मैंने कई दिनों से इसका हाल सुन रखा था। मुझे ऐसा लगा कि यह जन्मजात कुत्ता नहीं है, बल्कि कोई आदमी है जिसे जादू से कुत्ता बना दिया गया है। इसीलिए मैं इसे आज घर ले आई। बेटी, तुम देख कर बताओ कि मेरा अंदाजा ठीक है या नहीं। नवयौवना ने ध्यानपूर्वक मुझे

देखा और बोली, अम्मा, तुम ठीक कहती हो, इसे जादू से कुत्ता बनाया गया है। मैं अपनी रमल की पुस्तक देख कर अभी इसका हाल तुम्हें बताती हूँ। यह कह कर वह एक अंदर के कमरे में चली गई।

उसने वापस आ कर एक पानी के बर्तन में हाथ डाल कर मुझ पर पानी छिड़का और बोली, अगर तुझे जादू से कुत्ता बनाया गया है तो फिर से आदमी हो जा। उसके यह कहते ही मैं मनुष्य बन गया। मैंने सुंदरी के पैरों पर गिर कर उसके वस्त्रों को चूमा और कहा, आपने मुझ पर ऐसा अहसान किया है जिसे मैं जिंदगी भर नहीं भूल सकता। मैं चाहता हूँ कि मैं आपका हमेशा के लिए गुलाम बन जाऊँ। यह कह कर मैंने बताया कि क्यों मेरी पत्नी ने मुझे जादू से कुत्ता बना दिया था और उस सुंदरी की दया भावना की अत्यधिक प्रशंसा करने लगा। उसने कहा, मेरी इतनी प्रशंसा न करो। मैं तुम्हारी स्त्री का हाल विवाह के पहले से जानती हूँ। मुझे यह भी मालूम है कि वह जादू की विद्या में पारंगत है। दरअसल हम दोनों जादू के मामले में एक ही शिक्षिका की शिष्याएँ हैं। पहले मेरी उससे मित्रता थी किंतु उसकी दुष्टता के कारण मैंने उससे मिलना-जुलना छोड़ दिया और उससे घृणा करने लगी। मैंने तुम्हें मनुष्य का शरीर वापस दिलाया है किंतु मैं इतने ही पर बस नहीं करूँगी। तुम्हारे जैसे भले मानस के साथ उसने जो दुष्टता की है उसका दंड मैं उसे अवश्य दिलाऊँगी। मैं तुम्हारे ही हाथों उसे पशु बनवाऊँगी। तुम यहीं ठहरो, मैं अभी आती हूँ।

वह फिर अंदर चली गई। कुछ देर में आई तो उसके हाथ में एक बोतल और एक प्याला था। उसने मुझसे कहा, सीदी नोमान, मैंने अभी अपनी रमल पुस्तक देख कर मालूम किया है कि तुम्हारी पत्नी इस समय तुम्हारे घर में नहीं है। तुम्हें घर से निकालने के बाद उसने तुम्हारे नौकरों से कहा कि मेरा पति किसी काम से बाहर चला गया और यह भी कहा कि दरवाजा खुला पा कर एक कुत्ता घर में घुस आया था, उसे मैंने उसे मार कर भगा दिया। अब तुम तुरंत ही अपनी स्त्री के वापस आने के पहले अपने घर जाओ। इस बोतल को अलग न करना और अपनी पत्नी की प्रतीक्षा करना। वह जल्दी ही घर आएगी। तुम्हें देख कर वह परेशान होगी और भागने की कोशिश करेगी। तुम इस बोतल का पानी प्याले में डालना और इसमें से कुछ उस पर छिड़क कर यह शब्द जो मैं तुम्हें बताती हूँ पढ़ देना। इससे अधिक कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम इसी से मेरे जादू का कमाल देखोगे।

मैं उसका सिखाया हुआ मंत्र अच्छी तरह याद करके अपने घर आया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा उस सुंदरी ने कहा था। मेरी पत्नी शीघ्र ही वापस आई और मुझे देखा तो परेशान हो कर भागने लगी। मैंने तुरंत ही बोतल का पानी प्याले में डाल कर उस पर छिड़का और मंत्र पढ़ दिया।

इससे वह घोड़ी बन गई। वह स्त्री वही घोड़ी है जिसे आपने कल देखा था। मैंने उसे घोड़ी के रूप में देखा तो आश्चर्य करने लगा। फिर मुझे उस सुंदरी के शब्द याद आए। मैंने घोड़ी को ले जा कर घुड़साल में बाँध दिया और उसे इतने चाबुक मारे कि मारते-मारते थक गया।

अपना वृत्तांत पूरा करके सीदी नोमान बोला, सरकार, अब यह कहानी सुनने के बाद मुझे क्षमा करेंगे और यह स्वीकार करेंगे कि मैं घोड़ी बनी हुई अपनी स्त्री को जो दंड देता हूँ वह उचित है। अगर अब भी आप मेरा कार्य अनुचित समझें तो जो चाहे वह सजा दें। खलीफा ने कहा, तुम्हारी कहानी वास्तव में विचित्र है और तुम्हारी स्त्री ने जो अपराध किया है उसे देखते हुए उसका दंड कम ही है। किंतु मैं तुम से पूछता हूँ कि क्या तुम आजीवन उसे इसी तरह मारते रहोगे? तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि उस सुंदरी के पास जा कर फिर से अपनी पत्नी को स्त्री रूप दिलवाओ। सीदी नोमान ने कहा, आपकी आज्ञा शिरोधार्य किंतु मेरी पत्नी फिर दुष्टता पर उतरी तो क्या करूँगा? खलीफा ने कहा, तुम ठीक कहते हो। उसे ऐसा ही रहने दो और जब तक चाहो उसे इसी तरह सजा देते रहो।

फिर खलीफा ने तीसरे आदमी यानी ख्वाजा हसन हब्बाल की ओर दृष्टि की और कहा, ख्वाजा हसन, कल मैंने तुम्हारी गली में जा कर तुम्हारा महल देखा। मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। फिर मैंने वहाँ के लोगों से पूछा कि यह विराट भवन किसका है तो तुम्हारे पड़ोसियों ने तुम्हारा नाम लिया।

साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि तुम्हारा पेशा रस्सी बनाने का है। इस पेशे में तो अधिक आय नहीं होती। तुम्हारे पड़ोसियों का भी कहना है कि कुछ समय पूर्व तक तुम कठिनाई से जीवन निर्वाह करते थे। तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारी इस बात में बड़ी प्रशंसा करते हैं कि तुम अपने पुराने जीवन को नहीं भूले और अपने धन को व्यर्थ खर्च नहीं करते हो। मैं यह सब सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ कि मेरे राज्य में तुम जैसे भले आदमी रहते हैं। फिर भी मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि तुमने इतना धन किस प्रकार प्राप्त किया। तुम मेरे प्रश्न से कुछ भयभीत न होना। मुझे तुम्हारी धन-संपत्ति से कुछ लेना देना नहीं है। तुम्हें यह धन भगवान ने दिया है। तुम इसका जैसा चाहो उपयोग करो। भगवान तुम्हारी संपत्ति और बढ़ाए। मुझे केवल यह जानने की उत्कंठा है कि तुम्हारे जैसे निर्धन व्यक्ति को इतनी संपदा मिली कैसे।

ख्वाजा हसन ने सिंहासन के पाए को चूम कर कहा, भगवान आपको हमेशा सही- सलामत रखे। मैं सारा वृत्तांत सच्चा-सच्चा कहता हूँ। भगवान जानते हैं कि मैंने कभी कोई बात ऐसी नहीं की जिसे हमारे इस्लाम धर्म या मेरी जाति-बिरादरी ने वर्जित किया हो। मुझे जो कुछ मिला है भगवान की कृपा ही से मिला है। अब आपकी आज्ञानुसार अपना हाल कहता हूँ।

ख्वाजा हसन हव्वाल की कहानी

ख्वाजा हसन ने कहा कि मैं अपनी बात बताने के पहले अपने दो मित्रों के बारे में बताना चाहता हूँ। वे अभी जीवित हैं और यहीं बगदाद में रहते हैं। वे मेरे प्रत्येक कथन की पुष्टि करेंगे। उनमें से एक का नाम सादी है। सादी का विश्वास था कि संसार में आनंद धन ही से मिलता है और धन उद्योग और परिश्रम ही से प्राप्त होता है। इसके विरुद्ध साद का मत था कि धन ईश्वर की कृपा और मनुष्य के भाग्य ही से मिलता है। दोनों में गाढ़ी दोस्ती थी और कोई झगड़ा नहीं होता था किंतु इस विषय पर हमेशा बहस होती थी। एक दिन इस बात को ले कर दोनों के बीच बहुत अधिक वाद-विवाद हुआ। सादी का कहना था, या तो आदमी गरीब परिवार में पैदा हो कर हमेशा गरीब रहता है, या धनी परिवार में जन्म ले कर जवानी में भोग-विलास में धन को फूँक कर निर्धन हो जाता है। वरना उद्यमी और समझदार आदमी गरीब नहीं होता। साद कहता था, उद्यम और बुद्धि से कुछ नहीं होता। आदमी अपने भाग्य ही से धनवान होता है। गरीबी और अमीरी प्रारब्ध के खेल हैं। पूँजी और उद्यम के अलावा और भी कई रास्तों से दौलत आती है। सादी ने कहा, तुम्हारी यह बात बिल्कुल झूठ है। आओ, हम दोनों अपने-अपने कथन की परीक्षा करें। हम किसी गरीब पेशेवर आदमी को तलाश करेंगे। मैं उसे कुछ धन दूँगा। तुम देख लेना कि वह उस धन के बल पर उद्यम करके बड़ा आदमी बन जाएगा। तभी तुम्हें मेरी बात का विश्वास होगा।

फिर वे दोनों घूमते-घूमते मेरे घर की ओर आए। मैं अपने घर के सामने बैठा हुआ रस्सी बट रहा था, क्योंकि रस्सी बटने का पेशा मेरे बाप-दादा के जमाने से होता आया था। उन दोनों को देख कर मैंने सलाम किया। उन्हें मेरे वस्त्रों और घर की हालत देख कर मेरी निर्धनता का बोध हुआ। साद ने सादी से कहा, यह ऐसा ही आदमी है जैसा तुम तलाश कर रहे थे। मैं इसे काफी दिनों से जानता हूँ। यह बड़ा गरीब है। दिन भर कड़ी मेहनत करके रस्सी बटता रहता है और फिर भी कठिनता से परिवार का पालन- पोषण करता है। सादी ने कहा, अच्छा, लेकिन पहले हम उसे अच्छी तरह देख तो लें। उन्होंने यह बातें इतने धीमे स्वर में की थीं कि मैं कुछ सुन न सका। फिर सादी ने, जो साद से अधिक धनवान था, मेरे और पास आ कर मेरा नाम पूछा।

मैंने कहा, मेरा नाम हसन है और रस्सी बटने के कारण मुझे लोग हसन हव्वाल कहते हैं। सादी ने कहा, तुम्हें अपने पेशे में अच्छी-खासी आमदनी हो जाती होगी। तुम्हारे बाप-दादा भी यही काम करते थे, इसलिए उन्होंने भी तुम्हारे लिए बहुत कुछ छोड़ा होगा। तुमने भी अपनी मेहनत से काफी पैसा कमाया होगा और तुम्हारी संपत्ति और बढ़ गई होगी। मैंने उत्तर दिया, ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। मेरे पास कुछ भी धन-संपत्ति नहीं है। मुझे पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता। मैं सुबह से शाम तक रस्सी बटता हूँ, एक क्षण के लिए भी आराम नहीं लेता हूँ। फिर भी जैसे-तैसे सूखी रोटी ही अपने परिवार के लिए जुटा पाता हूँ। मेरे छोटे-छोटे पाँच बच्चे हैं। उनमें से कोई योग्य नहीं कि मेरी मदद कर सके। मैं अकेला ही उनके लिए खाना कपड़ा जुटाता हूँ। मैं रस्सी बेचता हूँ, उसके मूल्य से कुछ

तो खाने आदि में खर्च करता हूँ और बाकी का सन खरीद कर दूसरे दिन उससे रस्सी बनाता हूँ। फिर भी मैं ईश्वर का धन्यवाद देता हूँ कि मैं केवल निर्धन हूँ। किसी का गुलाम नहीं हूँ, आजादी से अपना काम करता हूँ।

सादी ने कहा, तुमने अपना पूरा हाल मुझे बताया। इसके लिए धन्यवाद लेकिन मैं जो कुछ समझा था इससे तो उलटा ही निकला। अच्छा, अगर मैं तुम्हें दो सौ अशर्फियाँ दे दूँ तब तो तुम्हारी यह दशा नहीं रहेगी। दो सौ अशर्फी पा कर तो तुम धनवान हो जाओगे और आनंदपूर्वक जीवन निर्वाह करोगे? मैंने कहा, दो सौ अशर्फियाँ खुद तो मुझे धनवान नहीं बना सकतीं। लेकिन इससे मैं अपने पेशे को और अच्छी तरह चला सकता हूँ और अधिक धनोपार्जन कर सकता हूँ। सादी ने देखा कि मैं विश्वसनीय आदमी हूँ तो उसने अपनी जेब से दो सौ अशर्फियों की थैली निकाली और मुझे दे कर कहा, मैं यह दो सौ अशर्फियाँ तुम्हें दे रहा हूँ। यह उधार नहीं, दान में दे रहा हूँ। तुम इससे अपना व्यापार बढ़ाओ। भगवान तुम्हारी कमाई में बरकत दें। लेकिन यह ध्यान रहे कि यह धन बेकार खर्च न हो। तुम्हारी समृद्धि में मैं ही नहीं, मेरा परम मित्र साद भी प्रसन्न होगा। भगवान तुम पर अपनी कृपा करें।

मैं दो सौ अशर्फियाँ पा कर फूला न समाया। मैंने धन्यवादस्वरूप सादी का वस्त्र चूमा और उसकी दीनबंधुता की बड़ी प्रशंसा की। इसके बाद वे दोनों चले गए। उनके जाने के बाद मुझे यह चिंता हुई कि मैं इन अशर्फियों को कहाँ रखूँ। मेरे घर में न तो कोई सुरक्षित स्थान था न संदूकचा ही था जहाँ मैं इतना धन, जो मैंने सारी उम्र नहीं देखा था, रखता। आखिर में यह तय किया कि थैली को अपनी पगड़ी ही में छुपा लूँ। मैंने थैली में से दस अशर्फियाँ ले कर जेब में डालीं और थैली का मुँह कस कर डोरे से बाँधा और उसे सावधानी से पगड़ी में रख लिया। मैंने अपने स्त्री-बच्चों को इस धन के बारे में कुछ भी नहीं बताया। वही पगड़ी सिर पर रख कर मैं बाजार गया और यथेष्ट सन खरीदा। लौटते समय कसाई के यहाँ से थोड़ा-सा मांस शाम के भोजन के लिए खरीदा क्योंकि महीनों से मांस खाने को नहीं मिला था। खरीदा हुआ मांस मेरे हाथ में था। रास्ते में एक चील ने मांस पर झपट्टा मारा। मैंने हाथ खींच कर दूसरे हाथ से चील को भगाया। अब चील ने दूसरी ओर से झपट्टा मारा। मैंने इस बार भी मांस को बचा कर दूसरे हाथ से चील को भगाया। लेकिन इस उछलकूद में मेरी पगड़ी मेरे सिर से गिर पड़ी और कमबख्त चील वही पगड़ी ले कर उड़ गई और शीघ्र ही, निगाहों से ओझल हो गई। मैं एकदम से चिल्ला उठा। इससे मुहल्ले की औरतें-बच्चे जमा हो गए और मेरा हाल सुन कर चील के पीछे दौड़ने लगे लेकिन चील कहाँ हाथ आने वाली थी। मैं महादुखी हो कर अपने घर आया और पगड़ी के साथ जानेवाली एक सौ नब्बे अशर्फियों का अफसोस करने लगा जो मेरी मूर्खता के कारण मेरे हाथ से निकल गई थीं।

खैर दस अशर्फियाँ तो थी हीं। उनके बल पर कुछ दिन मेरे स्त्री-बच्चों ने भरपेट भोजन किया।

दो-एक कपड़े भी स्त्री-बच्चों के लिए बन गए। किंतु यह कब तक चल सकता था। कुछ

ही दिनों के बाद मैं पूर्ववत निर्धन हो गया। मैंने अपनी दशा पर संतोष कर के भगवान को धन्यवाद दिया कि मेरा अपना तो कुछ नहीं गया था। मैं अपने जी को यह सोच-सोच कर तसल्ली देता था कि जब निर्धनता और परिश्रम ही मेरे भाग्य में लिखा है तो मुझे उसी में संतोष करना चाहिए, अगर वे अशर्फियाँ मेरे भाग्य की होतीं तो मेरे हाथ से निकलतीं ही क्यों।

मैं तरह-तरह से अपने मन को समझाता था फिर भी खोए हुए धन की कसक मेरे मन से नहीं निकलती थी। मैंने अशर्फियों का हाल पत्नी और बच्चों को भी नहीं बताया था। वे सब मेरी चिंता और उदासी देख कर मुझसे उसका कारण पूछने लगे। मेरे कई पड़ोसियों ने भी आ कर पूछा कि तुम इतने उदास क्यों रहने लगे हो। पहले मैं चुप रहा किंतु उन लोगों के बहुत जोर देने पर मैंने उन्हें सारी बात बता दी। मेरे पड़ोसी, यहाँ तक कि बच्चे भी, मेरी बातों पर हँसने लगे। वे कहने लगे, तुमने सारे जीवन में एक भी अशर्फी देखी है कि दो सौ अशर्फियों की बातें करते हो? तुम्हारे पास दो सौ अशर्फियाँ आईं कहाँ से? चील के पगड़ी ले कर उड़ने की बात भी खूब रही, चील पगड़ी का क्या करेगी? पड़ोसियों ने तो विश्वास न किया किंतु मेरी पत्नी को मेरी बात पर विश्वास था और वह इस पर बहुत रोई। फिर जीवन वैसे ही चलने लगा।

छह महीने बाद दोनों मित्र सादी और साद मेरी गली में आए। साद ने कहा कि चल कर हसन हव्वाल को देखें कि दो सौ अशर्फियाँ पा कर उसकी दशा कितनी बदलती है। सादी ने कहा, यह बहुत अच्छा कहा। हम उसे जरूर देखेंगे। अगर उसकी दशा में सुधार हुआ तो हमें यह देख कर संतोष होगा कि हमारे दिए हुए धन से एक निर्धन का जीवन सुधरेगा। वे दोनों और निकट आए तो साद ने कहा, भाई, मुझे तो उसकी दशा पहले जैसी लग रही है। उसके कपड़े वैसे ही फटे-पुराने हैं, हाँ, उसकी पगड़ी जरूर नई मालूम हो रही है। तुम भी देखो, शायद मुझसे देखने में भूल हुई हो। सादी ने भी देखा और कहा, तुम ठीक कहते हो।

अब दोनों मेरे पास आए। साद ने कहा, हसन भाई, अब तुम्हारा क्या हाल है? दो सौ अशर्फियों से तुम्हारा व्यापार तो अच्छा-खासा बढ़ गया होगा। मैंने कहा, मैं अपने दुर्भाग्य का हाल आप लोगों से क्या कहूँ। मुझे कहते हुए शर्म आती है। न बताऊँ तो भी काम नहीं चलता। आप लोगों ने मुझ पर इतनी कृपा की, आप से छुपाऊँ भी क्या, हालाँकि मेरा हाल सुन कर आप को ताज्जुब ही होगा। यह कह कर मैंने सारा हाल बताया। सादी ने कहा, हसन, क्यों हमें बेवकूफ बना रहे हो। चील खाने की चीजें लेती है या पगड़ियाँ। तुमने भी वही किया है जो तुम्हारे जैसे लोग करते हैं। जब अप्रत्याशित रूप से धन मिलता है तो अपना काम-काज छोड़ भोग-विलास में पड़ जाते हैं। और कुछ दिनों में सब कुछ लुटा कर फिर फटीचर बन जाते हैं। तुमने भी यही किया है।

मैंने कहा, मेरे लिए जो कुछ भी कहें उसे कहने का आपको पूरा हक है। किंतु मैंने कुछ भी झूठ नहीं कहा है। मुझ पर जो कुछ गुजरी है वह यहाँ सभी लोग जानते हैं। मैं भी जानता हूँ कि साधारणतः चील पगड़ियाँ नहीं ले जातीं किंतु मेरे साथ यह अघट घटना घटी है

और उसके साक्षी बहुत-से लोग हैं। साद ने मेरा पक्ष ले कर कहा, इसमें अविश्वास करने की कोई बात नहीं है। कई बार ऐसा देखा गया है कि चीलों ने ऐसी वस्तुएँ भी ले ली हैं जो उनके खाने के काम नहीं आ सकती। यह सुन कर सादी ने अपनी जेब से एक भारी थैली निकाली और उसमें से दो सौ अशर्फियाँ गिन कर मुझे दे दीं और कहा, भाई हसन, मैं फिर तुम्हें दो सौ अशर्फियाँ दे रहा हूँ। इन्हें सावधानी से सुरक्षापूर्वक रखना और पहले की भाँति इन्हें खो मत देना। इससे अपना व्यापार बढ़ाना जिससे तुम्हारी आर्थिक अवस्था ठीक हो जाए। इनका कोई दुरुपयोग भी न करना। मैंने सादी को बहुत धन्यवाद दिया और उसकी लंबी उम्र की कामना की। इसके बाद दोनों मित्र से विदा ले कर चले गए।

मैं अशर्फियाँ ले कर अपने घर के अंदर गया। उस समय मेरी पत्नी और पुत्र कहीं गए हुए थे। मैंने सोचा कि अशर्फियों को किसी ऐसी जगह रखा जाए जहाँ किसी बाहरी आदमी की नजर न पड़े। मैंने दस अशर्फियाँ निकाल कर शेष अशर्फियाँ एक पुराने-से चीथड़े में बाँधीं किंतु घर में कोई संदूक आदि तो था ही नहीं। इधर-उधर देखा तो एक कोने में एक नाँद रखी दिखाई दी जिसमें भूसी भरी हुई थी। मैंने उसी भूसी के अंदर अशर्फियों की पोटली रख दी। कुछ देर में मेरी स्त्री आई। मैंने फिर उससे अशर्फियों की बात छुपाई और रस्सी के लिए सन खरीदने को बाजार चला गया। इधर एक फेरीवाला अया जो सिर धोने की मिट्टी बेचता था। मेरी पत्नी को मिट्टी की जरूरत थी किंतु घर में एक पैसा भी नहीं था। उसने फेरीवाले से कहा, भाई मेरे, पास पैसा तो है नहीं, तुम मुझे इतनी मिट्टी दे दो और इसके बदले में नाँद समेत यह भूसी ले जाओ। फेरीवाले को यह सौदा लाभदायक लगा और उसने इसे मंजूर कर लिया। अतएव वह फेरीवाला सिर धोने की मिट्टी दे कर भूसी की नाँद उठा ले गया।

उसके जाने के बाद मैं सन का गट्ठा सिर पर लादे अपने घर आया। घर में आ कर सबसे पहले भूसी की नाँद को देखा तो उसे वहाँ नहीं पाया जहाँ वह रखी थी। मैंने अपनी पत्नी से पूछा कि नाँद कहाँ गई तो उसने कहा कि फेरीवाले को नाँद दे कर सिर धोने की मिट्टी ले ली। मैंने यह सुन कर सिर पीट लिया और अपनी पत्नी पर बरसने लगा। मैंने कहा, कमबख्त तूने गर्दन काटने का काम किया है। सारे परिवार को भूखों मार दिया और फेरीवाले का घर भर दिया। तू जा कर कहीं डूब मर। उसकी समझ में मेरी नाराजगी नहीं आई और उसने पूछा, क्यों चिल्ला रहे हो तो मैंने बताया कि एक मित्र ने मुझे फिर दो सौ अशर्फियाँ दी थीं जिनमें से दस निकाल कर बाकी को एक कपड़े में बाँध कर मैंने भूसी में छुपा दिया था ताकि किसी और की निगाह उन पर न पड़े।

यह सुन कर मेरी पत्नी ने अपना सिर पीट डाला और चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। उसने कहा, हाय अब मैं उस बदमाश फेरीवाले को कहाँ पाऊँगी। मैं तो उसको पहचानती भी नहीं। कोई मुहल्लेवाला भी उसे नहीं जानता। वह तो पहली बार ही मुहल्ले में आया था। और तुम भी मुझे अपना दुश्मन समझते हो कि मुझे नहीं बताया। दोनों बार मुझसे अशर्फियों को छुपाया और दोनों बार उसे खो दिया। मैंने उससे कहा, अभागी, जो हानि होगी वह तो हो ही गई। अब क्यों इतना चिल्ला रही हो? पड़ोसी यह सुनेंगे तो हमारी मूर्खता पर हँसेंगे ही। अब रोने-पीटने से क्या लाभ।

हम दोनों ने दस अशर्फियों से कुछ सामान घर-गृहस्थी का खरीदा, फिर उसी तरह निर्धनता का जीवन व्यतीत करने लगे। मेरी चिंता और लज्जा का ठिकाना न था। गरीबी की तो शुरू से आदत थी। उसकी इतनी चिंता नहीं थी। परेशानी यह थी कि अब की बार सादी आएगा तो उससे क्या कहूँगा। मैं कोई झूठ बात कह नहीं सकता और सच बात का उसे विश्वास नहीं होगा और वह यही समझेगा कि मैंने भोग-विलास में दो सौ अशर्फियाँ उड़ा दीं। कुछ दिनों के बाद फिर मेरे बारे में बहस करते हुए साद और सादी मेरे घर आए। मैं उन्हें दूर से आता देख कर सोचने लगा कि अब इनसे कैसे आँखें मिलाऊँगा। मैं चाहता था कि उठ कर कहीं चला जाऊँ किंतु वे सीधे मेरे पास आ गए। और मुझे सलाम करके मेरी कुशल-क्षेम पूछने लगे। मैं शर्म के मारे सिर झुकाए बैठा रहा। वे लोग मेरी निर्धनता को पूर्ववत देख कर आश्चर्य करने लगे। सादी ने कहा, क्या बात है? मैंने कहा, आप विश्वास करें या न करें, सच्ची बात यह है कि आपके जाने के बाद मैंने अशर्फियों को एक नाँद में भूसी के अंदर छुपा दिया था। हाँ, उसमें से दस अशर्फियाँ जरूर पहले निकाल ली थीं। उस समय घर में मेरे सिवा कोई न था। दस अशर्फियाँ ले कर मैं बाजार गया ताकि सन मोल लूँ। इस बीच मेरी पत्नी घर आ गई थी। कुछ देर में एक फेरीवाला सिर धोने की मिट्टी बेचता हुआ इधर से निकला। मेरी पत्नी के पास उस समय एक पैसा भी नहीं था। उसने भूसी को बेकार समझ कर फेरीवाले से कहा कि भूसी की नाँद के बदले मुझे सिर धोने की मिट्टी दे दो। फेरीवाला इस सौदे पर राजी हो गया। और मेरी पत्नी ने मिट्टी के बदले उसे भूसी की नाँद दे दी। उसके साथ आपकी दी हुई अशर्फियों में से एक सौ नब्बे अशर्फियाँ भी चली गईं।

सादी ने कहा, तुमने अपनी पत्नी को यह बताया क्यों नहीं कि नाँद में अशर्फियाँ रखी हैं? मैंने कहा, आपने कहा था कि अशर्फियाँ सावधानी से रखना सो मैंने उन्हें सुरक्षित स्थान में रखा। स्त्री के आने पर मुझे बाजार जाने की जल्दी थी और फिर मैं उसे बताना भी नहीं चाहता था क्योंकि स्त्रियों के पेट में बात पचती नहीं है। यह भी डर था कि वह कहीं अपनी शौकीनी में उन्हें खर्च न कर दें। आप ने दो-दो बार मुझे निर्धन से धनवान बनाने का प्रयत्न किया किंतु क्या आप कर सकते हैं और क्या मैं कर सकता हूँ। निर्धनता तो मेरे भाग्य ही में लिखी हैं, फिर मेरे पास धन आएगा कहाँ से। हाँ, आप ने जो अहसान मुझ पर किया उसे मैं जन्म भर नहीं भूलूँगा और जीवन भर आपके गुण गाता रहूँगा। सादी ने कहा, भाई, मैंने तुम्हें जो सहायता दी थी वह अपने गुण गवाने के लिए नहीं दी थी बल्कि इसलिए दी थी कि तुम धनवान बनो। मुझे अत्यंत खेद है कि दो बार प्रयत्न कर करने पर भी मैं यह न कर सका।

अब साद ने, जो मुझे पहले से जानता था, अपनी जेब से एक ताँबे का पैसा निकाला। उसने सादी से कहा, यह पैसा मैं हसन को दे रहा हूँ। तुम देखना कि ईश्वर ने चाहा तो इसी से इसकी किस्मत पलट जाएगी और यह धनवान हो जाएगा। सादी इस बात पर ठहाके लगा कर हँसने लगा। कहने लगा, यह एक पैसा जरूर इसे निर्धन से धनवान बनाएगा। इस एक पैसे को व्यापार में लगा कर यह हजारों रुपए पैदा कर लेगा। तुम भी क्या मूर्खता की बातें कर रहे हो। यह कह कर वह फिर हँसने लगा।

साद ने मुझ से कहा, तुम सादी की बातों का ख्याल न करो। इसे हँसने दो। इसकी तो आदत ही है कि बगैर सोचे-समझे हँसता रहता है। तुम देखना। ईश्वर चाहेगा तो एक दिन के अंदर ही तुम्हें इसका चमत्कार दिखाई देगा। इसी से तुम्हारी दरिद्रता दूर हो जाएगी। मुझे भी इस बात पर विश्वास न हुआ कि एक पैसे से दरिद्रता कैसे दूर होगी। फिर भी मैंने धन्यवाद दे कर वह पैसा अपनी जेब में रख लिया। कुछ देर में दोनों मित्र विदा हो गए और मैं पूर्ववत रस्सी बटने लगा और पैसे को भूल ही गया।

रात में सोने के लिए जब मैं कपड़े उतारने लगा तो वह पैसा जमीन पर गिर गया। मैंने उसे उठा कर एक ताक में रख लिया। संयोग से उसी रात को एक मछुवारे को एक पैसे की जरूरत पड़ी। उसका जाल कुछ टूट गया था और उसे ठीक करने के लिए उसे सुतली लेनी थी। उसने अपनी स्त्री से कहा कि किसी पड़ोसी से एक पैसा माँग ला। वह सब के घर गई किंतु उसे एक पैसा कहीं से नहीं मिला। मछुवारे ने उससे पूछा कि तू हसन हव्वाल के यहाँ गई थी या नहीं। उसने कहा, मैं वहाँ नहीं गई, उसका घर दूर पड़ता है। मछुवारे ने उसे डाँटा कि तुझसे जरा-सा पाँव भी नहीं हिलाए जाते, तू अभी वहाँ जा, उसके यहाँ से पैसा जरूर मिलेगा। चुनांचे वह स्त्री बड़बड़ाती हुई मेरे घर आई और दरवाजा खुलवा कर बोली, हसन भैया, हमें जाल के लिए सुतली लाने के लिए एक पैसा चाहिए, तुम्हारे पास हो तो दे दो। मुझे उस पैसे का ध्यान आया जो मैंने उसी समय ताक पर रखा था। और मैंने अपनी पत्नी से कहा कि ताक पर रखा पैसा इसे दे दे। मछुवारे की स्त्री ने मेरी पत्नी का बड़ा अहसान माना और कहा, तुम लोगों की वजह से हमारा कल का दिन खराब होने से बच गया। मेरा पति दिन निकलने के पहले ही मछलियाँ पकड़ने जाता है। मैं तुमसे वादा करती हूँ कि पहली बार जाल डालने से जितनी मछलियाँ आएँगी वह मैं तुम्हें दे दूँगी। मेरी पत्नी ने इस पर कुछ नहीं कहा। मछवारे की स्त्री ने जब उसे पैसा दिया और कहा कि मैं पहली बार की मछलियों के देने का वादा कर आई हूँ तो उसने खुशी से यह बात स्वीकार कर ली।

सुबह मुँह अँधेरे मछवारा उठा और नदी पर चला गया। उसने भगवान का नाम ले कर जाल डाला और खींचा तो उसमें सिर्फ एक ही मामूली आकार की मछली आई। उसने उसे अलग रख लिया क्योंकि उस मछली को मुझे देना था। फिर उसने कई बार जाल फेंका और हर बार बड़ी-बड़ी और कई-कई मछलियाँ जाल में फँसीं। सभी मछलियाँ उस मछली से बड़ी थीं जिसे पहली बार के जाल डालने में पकड़ा गया था। दिन चढ़े वह मछवाहा मछलियों की खेप ले कर अपने घर आया और उन्हें बाजार ले जाने के पहले मेरे हिस्से की मछली ले कर मेरे घर आया और मुझसे बोला, हसन भाई, रात को मेरी पत्नी ने तुम लोगों से वादा किया था कि पहले जाल की मछलियाँ तुम्हें दी जाएँगी। वह मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। अब यह तुम्हारा भाग्य है कि पहली बार सिर्फ यही एक मामूली-सी मछली फँसी। अगर पहली बार में अधिक मछलियाँ आतीं तो वो सब तुम्हें देता। अब इसी एक मछली को स्वीकार करो।

मैंने कहा, मैंने पैसा तुम्हारी जरूरत को देख कर दिया था, मछली पाने के लिए नहीं दिया था। तुम इसे भी ले जाओ। लेकिन मछवारा अपना वादा निभाने पर अड़ा रहा और

अंततः जबर्दस्ती मुझे मछली दे कर चला गया। मैंने अपनी पत्नी को बुला कर कहा, तुमने कल जो पैसा मछवारे की स्त्री को दिया था उसके बदले में यह मछली मिली है। वह पैसा साद का था और साद ने कहा था कि इस एक पैसे ही से तुम्हारा भाग्य चमकेगा। सो भाग्य चमकाने के लिए यह एक मछली आई है। वह यह सुन कर हँसने लगी।

उसने सोचा कि घर में तेल-मसाला तो है नहीं जिससे यह मछली शोरबेदार बनाई जाए। इसलिए उसने सोचा कि वैसे ही भून कर बच्चों को खिलाई जाए। उसने ले जा कर मछली को साफ किया तो उसके अंदर से एक बड़ा-सा हीरा निकला। हम लोगों ने हीरा काहे को देखा था। मेरी पत्नी ने समझा कि यह शीशे का टुकड़ा है। लेकिन उसने उसे फेंका नहीं बल्कि एक तरफ रख दिया ताकि सबसे छोटे बच्चे को खेलने के लिए उसे दे दे। छोटा बच्चा आया तो मेरी स्त्री ने वह हीरा उसे खेलने के लिए दे दिया। वह कुछ देर उससे खेलता रहा। फिर उसके भाइयों ने उससे हीरा ले लिया और एक-एक करके सभी बच्चे थोड़ी थोड़ी देर के लिए उससे खेलते रहे। वे लोग शाम तक उससे खेलते रहे। अँधेरा होने पर वे उसे घर में ले आए।

जब दिया जलाया गया तो उसकी रोशनी में हीरा अत्यधिक जगमगाने लगा। सब बच्चे उसे देख कर खूब खुश होने और चिल्लाने लगे। वे काफी देर तक उससे खुश होते रहे। फिर मेरी स्त्री ने भोजन तैयार करके सभी को भोजन करने के लिए बुलाया। भोजन करते समय बड़े लड़के ने हीरे को एक ओर रख दिया और सब लोग शांतिपूर्वक भोजन करते रहे। भोजन के उपरांत मैं अपनी चारपाई पर लेट गया और बच्चे फिर हीरे से खेलने और शोर-शराबा करने लगे क्योंकि हर बच्चा जगमगाते हीरे से खेलना चाहता था। पहले उनके झगड़े पर हमने ध्यान नहीं दिया किंतु जब उनका शोर बहुत बढ़ गया तो मैंने उनसे पूछा कि क्या बात है। उन्होंने कहा कि माँ ने एक शीशे का टुकड़ा हमें खेलने के लिए दिया था। उसी पर लड़ाई हो रही है।

मैंने उसे मँगा कर देखा तो मुझे भी उसकी चमक देख कर आश्चर्य हुआ। मैंने पत्नी से पूछा कि तुमने यह टुकड़ा कहाँ पाया। उसने कहा, मछली के पेट में। मैंने दिए को ओट में रखवाया तो भी टुकड़े में इतना प्रकाश था कि हम सब कुछ अच्छी तरह देख सकते थे। मैंने कहा, चलो इतना ही काफी है। हमें ऐसी चीज मिली है जिससे तेल बत्ती की बचत हो जाएगी।

जब बच्चों ने देखा कि वह शीशे का टुकड़ा जगमगाता ही नहीं बल्कि अँधेरे में रोशनी भी देता है तो वे और भी उछलने-कूदने और शोर-शराबा करने लगे। रात काफी हो गई थी इसलिए मुहल्ले के और लोगों ने भी उनकी आवाज सुनी। जब शोर बहुत बढ़ा तो मैंने उन्हें डाँट-डपट कर चुप करा दिया। हम सब लोग अपने बिस्तरों पर सो रहे और उस शीशे के टुकड़े के बारे में मैं बिल्कुल भूल गया।

हमारे पड़ोस में एक बूढ़ा यहूदी जोड़ा रहता था। हमारे बच्चों की चीख-पुकार से उन दोनों की नींद खुल गई और फिर बहुत देर तक नहीं आई। सुबह बुढ़िया इस उलाहने को ले कर मेरे घर आई। उस समय तक मैं अपने काम में लग गया था। जब बूढ़ी यहूदिन हमारे घर

आई तो मेरी पत्नी समझ गई कि क्या उलहना ले कर आई होगी। उसके बोलने के पहले ही मेरी पत्नी ने कहा, दीदी, मैं जानती हूँ कि रात को इन कमबख्तों के शोर की वजह से तुम लोगों को नींद नहीं आई होगी। हमने भी इन्हें बहुत डाँटा है, तुम भी इन्हें क्षमा करो। क्या किया जाए, बच्चे तो बच्चे ही हैं, जरा-सी बात पर खुश हो जाते हैं, जरा-सी बात पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। यह देखो, इसी शीशे के टुकड़े के लिए यह अभागे कल रात को लड़े मरे जा रहे थे। यह कह कर मेरी पत्नी ने वह हीरा उसे दिखाया।

यहूदी खुद रत्नों का व्यापारी था और यहूदिन को भी रत्नों की पहचान थी। वह आश्चर्य से जड़वत हो गई, फिर बोली, ऐसा ही एक शीशे का टुकड़ा मेरे पास है। तुम इसे बेच दो तो मैं जोड़ा बना कर पहन लूँगी। उसने अपनी चालाकी से यह न बताया कि यह अत्यंत ही मूल्यवान हीरा है। मेरी पत्नी उसे बेच भी देती लेकिन सारे बच्चे रोने लगे कि यह टुकड़ा न बेचो, हम अब कभी शोर न करेंगे। इसलिए बात खत्म हो गई क्योंकि बुढ़िया अस्लियत नहीं बताना चाहती थी। लेकिन घर जाने के पहले मेरी स्त्री से चुपके से कह गई कि इसको कोई देखने न पाए और बगैर मुझे बताए इसे किसी के हाथ न बेचना। फिर बुढ़िया ने अपने पति की दुकान पर जा कर उस हीरे का पूरा वर्णन किया तो उसने कहा, ऐसे दुर्लभ हीरे को किसी भी मूल्य पर खरीद लो। पहले तुम उसका थोड़ा दाम लगाना। वे लोग उसका मूल्य तो जानते नहीं हैं, शायद थोड़े ही में उसे दे दें। न मानें तो धीरे-धीरे दाम बढ़ाना। लेकिन किसी मूल्य पर भी हो, उसे ले जरूर लेना।

अपने पति के आदेश पर यहूदिन मेरी स्त्री के पास आई और बोली, मैं इस शीशे के टुकड़े के लिए तुम्हें बीस अशर्फी दे सकती हूँ। मेरी स्त्री यह सुन कर चौंकी और समझ गई कि इस टुकड़े में कोई खास बात है तभी यह इतना दाम देने को तैयार है। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। इतने में मैं भी दोपहर का भोजन करने के लिए घर में आया और दोनों स्त्रियों को बातें करते देखा। मेरी पत्नी मुझे अलग ले जा कर बोली, यह यहूदिन शीशे के टुकड़े के लिए बीस अशर्फियाँ दे रही है। मैंने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है। तुम कहो तो ले लूँ, आखिर शीशे का टुकड़ा ही तो है।

मुझे उसी समय साद की बात याद आई कि यह पैसा तुम्हारी किस्मत चमका देगा। मैं कुछ कहता इसके पहले यहूदिन मेरे पास आ कर कहने लगी कि मैं इस टुकड़े को बीस अशर्फियों में लेना चाहती हूँ। मैं चुप ही रहा। फिर यहूदिन बोली, हसन मियाँ, अगर तुम्हें बीस अशर्फियाँ कम लगती हों तो मैं पचास दे दूँगी। मैंने देखा कि वह बीस से एकदम पचास आ गई है तो समझ लिया कि इस टुकड़े का बहुत मूल्य होगा। मैं फिर भी चुप रहा। उसने कहा, अच्छा सौ अशर्फी ले लो, हालाँकि मेरा पति इतने दाम देने पर क्रुद्ध होगा। मैंने कहा, देखो भाई, मैं इसे लाख अशर्फियों से कम पर न बेचूँगा। हाँ, तुम लोग पड़ोसी हो इसलिए यह कहता हूँ कि कोई दूसरा लाख अशर्फी से अधिक देगा तो भी तुम्हें ही लाख अशर्फियों में दूँगा।

यहूदिन बढ़ते-बढ़ते पचार हजार अशर्फियों तक आ गई किंतु मैं नहीं माना तो वह कहने लगी कि शाम तक इसे किसी के हाथ न बेचना, शाम को मेरा पति आ कर तुमसे खुद ही

बात करेगा। शाम को बूढ़ा यहूदी आया। उसने दिए की रोशनी में हीरे को भली-भाँति परखा और उसके खरेपन को उसे विश्वास हुआ तो बोला, मेरी स्त्री इसकी पचास हजार अशर्फियाँ लगा गई है, मैं सत्तर हजार लगाता हूँ। उससे अधिक न दे सकूँगा।

मैंने कहा, तुम्हें तुम्हारी पत्नी ने बताया होगा कि मैं हीरे को एक लाख अशर्फियों से कम पर बेचने को तैयार नहीं हूँ। अगर तुम इतने पर उसे लेने को तैयार नहीं हो तो मैं दूसरे जौहरी से सौदा करूँगा। काफी झिकझिक करने के बाद यहूदी जौहरी एक लाख अशर्फियों के सौदे पर राजी हो गया क्योंकि हीरा बहुत बड़ा था और एक लाख अशर्फियों में खरीद कर भी यहूदी को बड़ा मुनाफा होना था। यहूदी ने मुझे दो हजार अशर्फियाँ बयाने में दीं और कहा कि कल शाम तक मैं पूरा दाम दे दूँगा और हीरा ले जाऊँगा। दूसरे दिन यहूदी जौहरी ने अपने कई मित्रों से कर्ज ले कर अठानबे हजार अशर्फियाँ मुझे दीं और हीरा ले लिया।

इतना धन पा कर मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसी भगवान के दिए हुए द्रव्य से मैंने धनवानों जैसा गृहस्थी का सामान खरीदा और मेरी पत्नी ने भी अपने लिए और लड़कों के लिए अच्छे कपड़े बनवाए। मैंने रहने के लिए एक बड़ा मकान खरीदा। उसमें परदे, फर्श आदि लगवाए। मैंने अपनी पत्नी से कहा, हमें इतना पैसा जरूर मिल गया है लेकिन अपना पेशा मैं पैत्रिक ही रखूँगा। वह भी इस बात से सहमत हुई। मैंने अपनी पूँजी का कुछ भाग ही व्यापार में लगाया, शेष को सावधानी से रख दिया ताकि आड़े समय काम आए। मैंने नगर के कई कारीगरों को नौकरी पर रखा और कई सौ अशर्फियाँ दे कर नगर में रस्सी बटनेवाले बहुत-से कारखाने लगवाए। कई विश्वस्त व्यवस्थापक भी रखे जिन्होंने उन कारखानों का भार सँभाल लिया। इस समय बगदाद नगर में कोई गली ऐसी नहीं है जिसमें मेरा रस्सी बटनेवाला कारखाना मौजूद न हो। इसी प्रकार अन्य बड़े नगरों और जिलों के प्रशासन केंद्रों में भी मैंने रस्सी के कारखाने खोले। वहाँ व्यवस्थापक और हिसाब-किताब के लिए मुनीमों को नौकर रखा। इससे मुझे बहुत धन प्राप्त हुआ।

मैंने एक बड़ा पुराना मकान लिया जिसमें जमीन बहुत थी। उसकी इमारत तुड़वा कर वहीं एक बड़ी इमारत बनवाई। वही आपने कल देखी थी। उसे मैंने अपना केंद्रीय कार्यालय बनाया और घर का अतिरिक्त सामान भी वहीं रखा। पुराने घर को छोड़ कर नए घर में जा बसा।

काफी दिन बाद साद और सादी मेरे पुराने मकान में मुझे पूछते हुए आए। मुहल्ले के लोगों ने कहा कि अब उसे हसन कोई नहीं कहता, अब उसे ख्वाजा हसन हव्वाल कह कर बुलाते हैं और वह उस मुहल्ले में एक बड़े मकान में रहता है। उसका बहुत बड़ा कारोबार हो गया है। वे दोनों मित्र मुझे पूछते हुए मेरे घर पर आए। उस समय सादी को यह बिल्कुल विश्वास न हुआ कि साद के दिए हुए पैसे से मेरी दशा बदली है, वह समझता था कि मैंने अशर्फियों के खोने की दो बार झूठी कहानी गढ़ी है।

उसने साद से कहा कि हसन ने दो बार मुझसे झूठ बोला कि मेरी दी हुई अशर्फियाँ उससे खो गई हैं, यह व्यापार उसने कहाँ से बढ़ाया अगर वे अशर्फियाँ खो गई थीं। किंतु उसने कहा कि हसन ने सच बोला या झूठ, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता, मुझे उसकी समृद्धि देख कर प्रसन्नता ही होगी। यह मानने को मैं बिल्कुल तैयार नहीं हूँ कि जो ताँबे का पैसा तुमने उसे दिया था उससे वह अमीर बना है।

साद ने कहा, तुम्हारी बात बिल्कुल निर्मूल है। मैं हसन को बहुत दिनों से जानता हूँ। वह निर्धन था किंतु उसकी झूठ बोलने की कभी आदत नहीं थी। जो कुछ भी उसने उन अशर्फियों के बारे में कहा सब सच होगा। तुम्हें यह भी मालूम हो जाएगा कि मेरे एक पैसे की बदौलत ही उसका व्यापार इतना चमका है।

इसी प्रकार बहस करते-करते वे मेरे घर आए। उन्होंने दरवाजे पर आवाज दी तो दरबान ने फाटक खोल दिया। सादी अंदर बहुत-से नौकरों को देख कर डरा कि किसी सरदार के मकान में तो नहीं आ गया। उसने दरबान से पूछा कि ख्वाजा हसन हव्वाल यही रहते हैं? दरबान ने कहा, यहीं रहते हैं और इस समय अपनी बैठक में बैठे हैं। आप अंदर जाइए। नौकर आपके आने की सूचना उन्हें दे देगा। उन दोनों के आने की सूचना मिली तो मैं उन्हें बुलाने के बजाय दीवानखाने से उठ कर उनके स्वागत के लिए चला। उन्हें देख कर मैंने दौड़ कर सम्मानार्थ उनके वस्त्र चूमे। वे मुझे गले लगाना चाहते थे किंतु मैंने ऐसा न होने दिया क्योंकि उन्हें अब भी अपने से ऊँचा समझता था। अंदर ले जा कर मैंने उन्हें एक दालान में एक ऊँचे स्थान पर बिठाया। वे मुझे अपने बराबर बिठाना चाहते थे किंतु मैंने कहा, महानुभावो, मैं यह नहीं भूला कि मैं वही रस्सी बटनेवाला हसन हूँ और आप लोग मेरे उपकारकर्ता हैं। मैं उनके सामने बैठ गया और हम लोगों में प्रारंभिक शिष्टाचार के बाद बातें होने लगीं।

सादी ने कहा, हसन भाई, तुम्हारी इस समृद्धि को देख कर मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। मैं जैसा तुम्हें देखना चाहता था वैसा ही तुम्हें देख रहा हूँ। मुझे यह पूरा विश्वास है कि तुम्हारी सारी समृद्धि उन चार सौ अशर्फियों के कारण हुई हैं जो मैंने दो बार में तुम्हें दी थीं। अब यह सच-सच बताओ कि दोनों बार मुझसे झूठ क्यों बोले थे कि अशर्फियाँ तुमसे खो गई हैं। साद मन ही मन कुढ़ता हुआ उसकी बातें सुनता रहा और उसके चुप हो जाने पर बोला, तुम क्यों अपनी बेतुकी हाँके जा रहे हो और क्यों हसन को झूठा बना रहे हो। मैं तुमसे कह चुका हूँ कि यह झूठा आदमी नहीं है। इस पर उन दोनों में फिर तकरार हो गई।

मैंने कहा, सज्जनो, आप लोग मेरी बात को ले कर आपस में झगड़ा न करें। आप सच मानें या झूठ, अशर्फियाँ मुझसे उसी तरह खो गई थीं जैसा मैंने आप लोगों को बताया था। और यह धन-संपदा मैंने कैसे प्राप्त की वह मैं आप को अभी बताता हूँ। इसके बाद, सरकार, मैंने मछली के पेट से हीरे के निकलने की बात जैसी अभी आपके सम्मुख बताई है वैसे ही उन्हें बताई। इस पर सादी ने कहा, हसन, उस छोटी मछली के पेट से इतना बड़ा हीरा निकलने की बात ऐसी ही है जैसी कि चील के पगड़ी ले जाने की बात। इन बातों पर किसे विश्वास होगा? भूसी की नाँद में रखी हुई अशर्फियों की बात संभव है किंतु विश्वास

मुझे उस पर भी नहीं। खैर छोड़ो। जो हुआ अच्छा हुआ। इसके बाद दोनों विदा होने के लिए उठे। मैंने कहा, आप लोगों ने इतनी कृपा करके मेरी कुटिया को पवित्र किया है तो मेरी इतनी प्रार्थना भी स्वीकार करें कि रात को यहीं ठहरें और कल मेरे साथ चल कर मेरे देहात के मकान को भी देखें जो मैंने मनोरंजन के लिए बनवाया है और जहाँ मैं काम से थक कर आराम करने के लिए चला जाता हूँ।

पहले तो उन्होंने यह बात नहीं मानी लेकिन मैंने बहुत जोर दिया तो वे रुकने को राजी हो गए। मैंने उनके लिए भाँति-भाँति के व्यंजन बनवाए। उन्हें मैंने अपने घर का मूल्यवान सामान दिखाया। वे यह सब देख कर बड़े प्रसन्न हुए और हँसी-मजाक की बातें करते रहे। भोजन तैयार होने पर मैं उन्हें अपने भोजन कक्ष में ले गया। वहाँ मेरे सेवकों के तैयार किए हुए नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन रखे थे। जगह-जगह उचित स्थानों पर बड़े-बड़े दीप जल रहे थे, एक ओर गायक वादक मधुर स्वरों में गा बजा रहे थे, दूसरी ओर नर्तकों और नर्तकियों का कला प्रदर्शन हो रहा था। भोजन के उपरांत उन लोगों के मनोरंजन के लिए बहुत-से खेल-तमाशों का भी प्रबंध किया गया।

इसके बाद हम लोग सो रहे। सुबह उठ कर नित्यकर्म से निश्चिंत होने के बाद हम लोग एक नाव पर सवार हुए और नदी की राह से मेरे देहातवाले मकान की ओर रवाना हुए। कुछ घंटों में हम वहाँ पहुँच गए। नाव से उतर कर हम लोग गाँव की सैर करते हुए मेरे देहाती मकान में आए। वहाँ भी मैंने कारखाना लगा रखा था। वे लोग घर और कारखाने की साज-सज्जा को देख कर खुश हुए। फिर मैं उन्हें उस वाटिका में ले गया जो मैंने वहाँ लगवाई थी। बाग में तरह-तरह के फलों और फूलों के वृक्ष लगे थे। नदी से पक्की नहरों द्वारा सिंचाई का पानी वहाँ आता था। पेड़ों पर तरह-तरह के पके फल लगे थे। तरह-तरह के फूल चारों ओर सुगंध बिखेर रहे थे। जगह-जगह फव्वारे और ऊपर से नीचे गिरनेवाली पानी की चादरें दिखाई दे रही थीं। वे दोनों मित्र यह सब देख कर और भी प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे इस बात का धन्यवाद दिया कि मैंने उन्हें इतने सुंदर स्थान की सैर कराई। साथ ही उन्होंने मुझे हृदय से आशीर्वाद भी दिया कि मेरी समृद्धि और बढ़े।

फिर मैं उन्हें बाग ही में बने हुए एक छोटे-से मकान में ले गया। दोपहर के भोजन का प्रबंध मैंने उसी बगीचे के मकान में किया था। वहाँ एक सुंदर और स्वच्छ स्थान पर जहाँ मसनद तकिए लगे हुए थे उन लोगों को बिठाया। उन लोगों को यहाँ लाने के दो-तीन दिन पहले मैंने अपने दो पुत्रों और उनके शिक्षक को देहाती मकान में आबोहवा बदलने के लिए भेज रखा था। वे लड़के भी बाग में चिड़ियों के घोंसले तलाश करते घूम रहे थे। एक पेड़ पर उन्हें एक बड़ा और सफेद घोंसला दिखाई दिया। वे छोटे भी थे और पेड़ों पर चढ़ना भी नहीं जानते थे, इसलिए उन्होंने एक नौकर से कहा कि ऊपर चढ़ कर उनके खेलने के लिए वह घोंसला उतार लाए। नौकर पेड़ पर चढ़ा तो उसे देख कर आश्चर्य हुआ कि घोंसले में एक पगड़ी रखी है जिसका एक सिरा हवा के कारण घोंसले के चारों ओर लिपट गया है। नौकर ने वह घोंसला उतार कर लड़कों के हाथ में दे दिया।

लड़के मेरे पास घोंसला ले कर दौड़े आए और खुश हो कर उछल-कूद कर कहने लगे,

देखिए अब्बा, यह घोंसला कपड़े का बना हुआ है। मुझे तो यह देख कर आश्चर्य हुआ ही, साद और सादी मुझसे भी अधिक आश्चर्यान्वित हुए कि घोंसले में इतना बड़ा कपड़ा कहाँ से आया। मैंने कपड़े को देखा तो मालूम हुआ कि यह पगड़ी है और वही पगड़ी है जो मेरे सिर से चील ले उड़ी थी। मैंने दोनों मित्रों से कहा, देखिए, यह वही पगड़ी है या नहीं जो मैं उस दिन पहने बैठा था। साद ने कहा, मैंने तुम्हारी पगड़ी पर ध्यान नहीं दिया इसलिए यह नहीं कह सकता कि यह वही पगड़ी है या नहीं।

सादी ने कहा, मैं भी तुम्हारी पगड़ी नहीं पहचानता। लेकिन अगर यह वही पगड़ी है तो इसमें बाकी बची हुई एक सौ नब्बे अशर्फियाँ भी होंगी। मैंने कहा, मैं तो पहचानता हूँ। यह पगड़ी वही है जिसे चील ले गई थी।

मैंने पगड़ी को घोंसले से उठाया तो वह काफी भारी लगी। मैंने उसकी तहें खोलीं तो उसमें से थैली निकली। मैंने सादी से कहा, आप मेरी पगड़ी नहीं पहचानते किंतु आप यह थैली तो पहचानते ही होंगे। दरअसल मुझे सादी के अविश्वास पर रोष आया था किंतु उसका अहसान याद करके मैंने पहले कुछ नहीं कहा था। सादी ने कहा, यह थैली तो वाकई वही है जो मैंने तुम्हें दी थी। इसमें अशर्फियाँ भी होनी चाहिए। मैंने थैली खोल कर उसके सामने उलट दी और कहा कि अशर्फियाँ भी गिन लीजिए। उसने अशर्फियाँ गिनीं तो उनकी संख्या ठीक एक सौ नब्बे निकली।

सादी यह देख कर लज्जित हुआ किंतु उसने कहा, तुम्हारी एक बार की कही हुई बात तो साबित हो गई लेकिन मैं यह नहीं मानता कि एक पैसे में तुम्हारी किस्मत बदली है। तुमने चार सौ अशर्फियों से न सही, उन दो सौ अशर्फियों से जरूर व्यापार आरंभ किया होगा जो मैंने तुम्हें दूसरी बार दी थीं। मैं इस पर चुप हो रहा किंतु साद ने फिर उसे टोका कि तुम बेकार की जिद पर अड़ हुए हो। उन दोनों में फिर से वही बेतुकी बहस शुरू हो गई।

खैर भोजन आया तो बहस खत्म हुई। भोजन के बाद हम लोग वहीं सो रहे। साद और सादी को दूसरे दिन जरूरी काम था और रात ही में हम लोगों को लौटना था। रात में धारा से उलटे चल कर नदी की राह से वापस होने में कोई तुक न थी। इसलिए हम तीनों शाम को घोड़ों पर सवार हो कर बगदाद को रवाना हुए। हमारे साथ तीन गुलाम थे। रात काफी हो गई तो हम एक जगह उतर गए। घोड़ों को शाम को दाना नहीं मिला था इसलिए मैंने दासों से कहा कि कहीं से घोड़ों के चारे का प्रबंध करें। रात हो जाने से सारी दुकानें बंद हो गई थीं, सिर्फ एक परचून की दुकान खुली थी। दाना तो नहीं मिला किंतु भूसी से भरी एक नाँद मिली। मेरे दासों ने इसी को गनीमत जाना और भूसी के दाम दे कर और सवेरे खाली नाँद के वापस करने का वादा करके नाँद उठा लाए। एक नौकर नाँद में से भूसी निकाल-निकाल कर घोड़ों को देने लगा तो उसका हाथ एक पोटली पर लगा और उसे वह मेरे पास ले आया ताकि सवेरे दुकानदार को थैली दे दी जाए।

मैंने पोटली को देखा तो पहचान गया कि वही पोटली है जिसमें अशर्फियाँ बाँध कर मैंने

भूसी की नाँद में रखा था। बाहर जा कर नाँद को देखा तो उसे भी पहचान लिया कि मेरी ही है। मैंने दोनों मित्रों को बुला कर नाँद और उसमें से निकली पोटली दिखाई, फिर पोटली खोल कर उसमें की अशर्फियाँ सादी के सामने उलट दीं, और कहा, इन्हें गिन लीजिए। उसने गिनीं तो पूरी एक सौ नब्बे निकलीं। सादी ने कहा, अब मुझे हसन की सत्यवादिता पर और तुम्हारे सिद्धांत पर पूरा विश्वास हुआ कि धन न पूँजी के बल पर आता है, न उद्यम के बल पर बल्कि भाग्य से मिलता है। इसके बाद हम सो रहे ओर सवेरे बगदाद आ गए जहाँ दोनों मित्र मुझसे विदा हो कर अपने घर चले गए।

खलीफा ने हसन की पूरी कहानी सुन कर कहा, हसन मियाँ, तुम्हारे पड़ोसियों से सुना था कि तुम धन को समझ-बूझ कर खर्च करनेवाले आदमी हो। तुम्हारी कहानी से मालूम हुआ कि तुम सीधे-सच्चे और सभ्य आदमी भी हो। तुम जिस हीरे की बात कर रहे हो वह खजाने में हैं, मैंने उसे यहूदी जौहरी से डेढ़ लाख अशर्फियों में खरीदा था। तुम सादी को यहाँ भेजना कि वह हीरा देखे और इत्मीनान कर ले। तुम मेरे कोषाध्यक्ष के पास जा कर मेरा आदेश दो कि वह तुम्हारे मुँह से हीरे की प्राप्ति का वृत्तांत सुने और लिखवा कर हीरे के साथ रखवा दे।

यह कह कर खलीफा ने हसन को विदा होने के लिए इशारा किया। वह सिंहासन का पाया चूम कर वापस हुआ। बाबा अब्दुल्ला और सीदी नुमान भी खलीफा के सिंहासन का पाया चूम कर अपने-अपने घरों को चले गए।

कहानी सुन कर दुनियाजाद ने उसकी प्रशंसा की और पूछा कि और कोई कहानी भी आती है या नहीं। शहरजाद ने कहा कि एक बड़ी मनोरंजक कहानी है। किंतु शहरयार ने कहा, अब सवेरा हो गया है। दूसरी कहानी कल शुरू करना।

अलीबाबा और चालीस लुटेरों की कहानी

अगली रात को मलिका शहरजाद ने नई कहानी शुरू करते हुए कहा कि फारस देश में कासिम और अलीबाबा नाम के दो भाई रहते थे। उन्हें पैतृक संपत्ति थोड़ी ही मिली थी। किंतु कासिम का विवाह एक धनी-मानी व्यक्ति की पुत्री से हुआ था। उसे अपने ससुर के मरने पर उसकी बड़ी दुकान उत्तराधिकार में मिली और जमीन में गड़ा धन भी। इसलिए वह बड़ा समृद्ध व्यापारी बन गया। अलीबाबा की पत्नी निर्धन व्यक्ति की पुत्री थी इसलिए वह बेचारा गरीब ही रहा। वह अपने तीन गधे ले कर रोजाना जंगल में जाता और वहाँ लकड़ियाँ काट कर गधों पर लाद कर शहर लाता और उन्हें बेच कर पेट पालता।

एक दिन अलीबाबा ने जंगल में जा कर लकड़ियाँ काटीं और उन्हें गधों पर लादा। वह उन्हें हाँक कर नगर की आरे आने ही वाला था कि एक ओर उड़ती हुई धूल को देख कर ठिठक गया। कुछ देर में उसे उस धूल के अंदर से सवार आते हुए दिखाई दिए। वह उनको देख कर घबरा गया।

वह समझ गया था कि यह लुटेरे हैं, मेरे पास कुछ नहीं है तो वे मुझे मार कर मेरे गधों ही को ले जाएँगे। वह सोचने लगा कि जल्दी से जंगल से निकल जाए किंतु यह संभव न था क्योंकि सवार बड़ी तेजी से आ रहे थे। उसने अपने गधों को इधर-उधर हाँक दिया और खुद एक घने पेड़ पर चढ़ गया जहाँ से वह तो सब कुछ देख सकता था लेकिन उसे कोई नहीं देख सकता था।

उस वृक्ष के पास एक बहुत ऊँचा पहाड़ था। सवार आ कर उसी पहाड़ के पास उतर पड़े। अलीबाबा को निश्चय हो गया कि यह डाकू हैं। उनके पास बड़े-बड़े बोरे थे। जिनमें परदेशी यात्रियों से लूटी हुई संपत्ति थी। अलीबाबा ने गिन कर देखा तो वे संख्या में चालीस थे। घोड़ों से उतर कर उन्होंने उनकी लगामें उतार दीं और सोने-चाँदी से भरी बोरियाँ उतार लीं। फिर उनके सरदार ने पहाड़ की खड़ी चट्टान के पास जा कर कहा, खुल जा समसम। समसम अरबी में तिल को कहते हैं।

सरदार के यह कहते ही खड़ी चट्टान में एक द्वार खुल गया। सरदार और उसके उनतालीस साथी उस दरवाजे से हो कर अंदर चले गए। उनके अंदर जाने पर वह द्वार बंद हो गया और चट्टान जैसी की तैसी लगने लगी। अलीबाबा ने एक बार सोचा कि पेड़ से उतरे और सारी लगामें एक घोड़े पर लाद कर उस पर चढ़ कर भाग जाए ताकि वे उसका पीछा न कर सकें। किंतु डर था कि इस अवधि में वे निकल आए तो उसे मार ही डालेंगे। उसका सोचना ठीक था। क्योंकि थोड़ी ही देर में दरवाजा खुला और सारे लुटेरे बाहर आ गए। सबके बाद सरदार निकला और निकल कर बोला, बंद हो समसम। उसके यह कहते ही दरवाजा बंद हो गया और चट्टान पूर्ववत हो गई। इसके बाद इन लुटेरों ने अपने-अपने घोड़ों पर जीनें कसीं और लगामें लगाईं और खाली बोरियाँ ले कर जिधर की ओर से आए थे उधर ही की ओर चले गए। स्पष्ट था कि वे दूसरी बार डाका मारने जा रहे थे। कुछ ही देर में वे नजरों

से गायब हो गए और उनके घोड़ों के सुमों से उड़ी हुई धूल भी बैठ गई।

उन लोगों के प्रस्थान के कुछ देर बार अलीबाबा पेड़ से उतरा। उस समय तक उसे विश्वास हो गया था कि लुटेरे जल्द वापस न आएँगे। वह चट्टान के पास गया और उसने चाहा कि इस बात की परीक्षा करें कि वह भी दरवाजे को खोल सकता है या नहीं। चुनांचे उसने जोर से कहा, खुल जा समसम। उसके यह कहते ही चट्टान में दरवाजा खुल गया। वह अंदर गया तो उसने देखा कि गुफा बहुत लंबी-चौड़ी और साफ-सुथरी है। उसे यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि पहाड़ खोद कर कैसे इतनी लंबी-चौड़ी जगह निकाली गई। गुफा का विस्तार तो बहुत था किंतु उसकी छत आदमी की ऊँचाई से कुछ ही अधिक थी। किंतु इधर-उधर पहाड़ के ढलान पर बने हुए सुराखों से उसमें ऐसी रोशनी आ रही थी कि सब कुछ दिखाई दे रहा था।

अलीबाबा ने देखा कि वह पूरी गुफा मूल्यवान वस्तुओं से भरी पड़ी है। हर प्रकार के माल की गठरियाँ वहाँ रखी दिखाई दीं। कई जगह फर्श से ले कर छत तक बहुमूल्य वस्त्रों यथा कमख्वाब, चिकन, अतलस आदि के थान कायदे से रखे हुए थे। इसके अतिरिक्त बहुमूल्य मसालों और कपूर आदि की पेटियाँ थीं। गुफा के एक सिरे पर कई संदूक और कई घड़े अशर्फियों, रुपयों आदि से भरे हुए रखे हुए थे। अलीबाबा के सामने स्पष्ट हो गया कि यह सारी संपत्ति इन चालीस लुटेरों ही की जमा की हुई नहीं है बल्कि सैकड़ों वर्षों से इन लुटेरों के पूर्वज इसे उस गुफा में जमा करते आए हैं क्योंकि जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक गुफा में मूल्यवान वस्तु रखी दिखाई देती थी।

अलीबाबा के अंदर जाते ही गुफा का द्वार बंद हो गया। यह द्वार इसी प्रकार बना था कि लोगों के अंदर जाते ही अपने आप बंद हो जाता था। अलीबाबा जितनी अशर्फियों की थैलियाँ उठा सकता था उतनी उठा लाया और मंत्र द्वारा दरवाजा खुलवा कर उसने अपने गधों पर थैलियाँ लादीं और उन्हें छुपाने के लिए कुछ लकड़ियाँ रखीं और फिर कहा, बंद हो जा समसम। उसके यह कहते ही गुफा का द्वार बंद हो गया। अलीबाबा रोज की भाँति गधे हाँकता हुआ अपने घर आ गया। घर के अंदर गधे ला कर उसने दरवाजा बंद किया और एक ओर लकड़ियाँ रख दीं और दूसरी ओर अशर्फियों की थैलियाँ। आज उसे लकड़ियों की चिंता नहीं थी। जब वह अशर्फियों को अपनी स्त्री के पास ले गया तो वह बहुत घबराई। उसने समझा कि अलीबाबा इन्हें किसी से लूट कर या किसी के यहाँ से चुरा कर लगाया है। उसने अपने पति को बहुत भला-बुरा कहा और कहने लगी, मैं तो मेहनत की थोड़ी कमाई में खुश हूँ। जो माल तुम लूट कर लाए हो उसे मैं हाथ भी नहीं लगाऊँगी। अलीबाबा ने कहा, तू मूर्ख है। मैंने कोई अपराध करके इन्हें प्राप्त नहीं किया, तुम पूरा हाल सुनोगी तो इस ईश्वरीय देन पर प्रसन्न होगी। यह कह कर उसने सारी कहानी सुना कर अपनी पत्नी को संतुष्ट कर दिया।

अलीबाबा ने उन्हें उसके सामने ढेर कर दिया तो स्त्री की आँखें चौंधिया गईं। फिर वह अशर्फियों को गिनने लगी। अलीबाबा ने कहा, तुम्हें बिल्कुल समझ नहीं है - यह अशर्फियाँ इतनी हैं कि शाम तक गिनती रहोगी। लाओ, मैं गढ़ा खोद कर इन्हें गाड़ देता

हूँ कि किसी को इसका पता न चले। उसकी पत्नी ने कहा, अच्छा, मैं इन्हें गिनूँगी नहीं किंतु अंदाजा जरूर करना चाहती हूँ कि यह कितनी हैं। मैं इन्हें तोल लूँगी। यह कह कर वह कासिम के घर गई और उसकी स्त्री से तराजू माँगने लगी। कासिम की स्त्री को ताज्जुब हुआ कि इन रोज बाजार से लाने और खानेवाले लोगों के पास कौन-सा अनाज आ गया जिसे यह तोलना चाहती है। यह जानने के लिए उसने तराजू के पलड़ों में थोड़ी-थोड़ी चरबी लगा दी ताकि तोली जाने वाली वस्तु कुछ उन में चिपक जाए। अलीबाबा की स्त्री ने अशर्फियाँ तोलीं और अलीबाबा ने घर के आँगन में एक गढ़ा खोदा ओर दोनों ने मिल कर सारी अशर्फियाँ उसमें दबा दीं।

अलीबाबा की स्त्री जब कासिम के घर तराजू वापिस करने गई तो उसने जल्दी में यह न देखा कि तराजू के एक पलड़े में एक अशर्फी लगी रह गई है। वह तो तराजू दे कर लौट आई उधर कासिम की स्त्री ने तराजू में अशर्फी चिपकी देखी तो पहले तो उसकी समझ में न आया। फिर जब समझ में आया कि तराजू में अशर्फियाँ तोली गई हैं तो वह ईर्ष्या की आग में जलने लगी। साथ ही वह इस बात पर आश्चर्य भी करने लगी कि अलीबाबा जैसे गरीब लकड़हारे को इतनी अधिक अशर्फियाँ कहाँ से मिलीं कि उन्हें तोलने की जरूरत पड़ गई। शाम को जब कासिम दुकान बंद करके घर आया तो उसकी स्त्री ने ताने के स्वर में कहा, तुम अपने को बड़ा अमीर समझते हो। तुम अलीबाबा के मुकाबले कुछ नहीं हो। तुम अशर्फियाँ गिन कर रखते हो, वह तोल कर रखता है। कासिम ने कहा, यह तू क्या बक रही है? उसकी स्त्री ने दिन में घटी घटना उसे सुना दी। साथ ही तराजू में चिपकी अशर्फी भी दिखाई जिस पर पुराने जमाने के किसी बादशाह के नाम की मोहर लगी हुई थी।

कासिम को भी जलन के मारे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन तड़के ही उठ कर वह अलीबाबा के घर गया और बोला, भाई, तुम लोगों से अपनी निर्धनता का बहाना क्यों करते हो जब कि तुम्हारे पास अपार संपत्ति है। तुम्हारे पास इतनी अशर्फियाँ हैं कि उन्हें गिनने की तुम्हें फुरसत नहीं है। अलीबाबा को कुछ खटका तो हुआ लेकिन उसने कहा, भैया, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। सभी जानते हैं कि मैं निर्धन लकड़हारा हूँ। कासिम ने कहा, तुम मुझसे झूठ बोलने की कोशिश न करो। वह देखो, इसी प्रकार की अनगिनत अशर्फियाँ कल तुमने तोली थीं या नहीं? उन्हीं को तोलने के लिए तो तुम्हारी स्त्री कल मेरे यहाँ से तराजू माँग लाई थी। यह कह कर उसने अशर्फी अलीबाबा के सामने रख दी।

अब अलीबाबा को मालूम हो गया कि कासिम की स्त्री ने तराजू में कोई चिपकनेवाली चीज लगा कर अशर्फियों का भेद जान लिया है। उसने पिछले दिन की पूरी घटना विस्तारपूर्वक सुनाई। कासिम ने कहा, तुम्हारी बात से मालूम होता है कि डाकू दो चार दिन तक वापस नहीं आएँगे। इसलिए तुम अभी मुझे पूरी तरह बताओ कि वह जगह कहाँ है और उसकी क्या पहचान है। बल्कि तुम आज न जाओ, तुम काफी पैसे ले आए। मुझे यह भी बताओ कि द्वार खोलने का मंत्र क्या है। न बताओगे तो मैं तुम्हें चोरी के इल्जाम में धरवा दूँगा। अलीबाबा ने विवश हो कर उसे सब कुछ बता दिया। कासिम दस खच्चर ले कर उस जंगल की ओर चल पड़ा। उसे जल्दी ही वह जगह मिल गई और उसने खुल जा समसम कहा तो द्वार भी खुल गया।

कासिम खच्चरों को बाहर छोड़ कर गुफा के अंदर गया। उसके अंदर जाते ही दरवाजा बंद हो गया। कासिम ने इतनी दौलत देखी तो आनंद से नाचने लगा। वह हर चीज को अच्छी तरह परख कर देखता रहा। इस चक्कर में उसे न सिर्फ बहुत देर हो गई अपितु वह खुल जा समसम का मंत्र भी भूल गया। आखिर में वह सबसे कीमती सिक्कों और रत्नों के दस भारी बोझ बना कर दरवाजे के पास लाया किंतु चूँकि वह ठीक शब्द भूल गया था इसलिए कभी कहता खुल जा गेहूँ। कभी कहता खुल जा जौ और द्वार बंद का बंद रहता। अब उसकी जान सूखने लगी कि वह इस गुफा में भूखा प्यासा मर जाएगा। संयोग की बात थी कि लुटेरे भी कहीं से लूटपाट करके उसी दोपहर को आ गए। उन्होंने गुफा के बाहर दस खच्चर बँधे देखे तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इन खच्चरों को यहाँ कौन लाया है। आसपास देखा तो कोई दिखाई नहीं दिया।

अंत में उन्होंने खच्चरों की चिंता छोड़ कर अपनी लाई हुई संपत्ति को गुफा में रखने की सोची। सरदार ने कहा, खुल जा समसम, और यह कहते ही दरवाजा खुल गया। कासिम यह तो समझ ही गया था कि लुटेरे आ गए हैं। वह दरवाजा खुलते ही जान बचाने के लिए बाहर भागा लेकिन डाकुओं ने उसे वहीं दबोच लिया। वे उसे घसीट कर गुफा के अंदर ले गए और उसे मार कर उसके शरीर के चार टुकड़े कर दिए। वे लोग देर तक इस बात पर बहस करते रहे कि इस आदमी को इस गुफा का भेद कैसे मालूम हुआ। और किसने इसे गुप्त द्वार खोलने की तरकीब बताई।

देर तक बहस करने के बाद भी वे किसी नतीजे पर न पहुँचे। उन्होंने तय किया कि लाश को गुफा के अंदर ही सड़ने दिया जाए क्योंकि बाहर फेंकने से यह खतरा था कि औरों की निगाह पड़ेगी। उन्होंने दरवाजे के पास ही इधर-उधर लाश के टुकड़े फेंक दिए और लूट का माल रख कर जल्दी से बाहर आ गए। जल्दी और कासिम के द्वारा की हुई गड़बड़ से उन्हें यह न मालूम हुआ था कि अशर्फियाँ कम हो गई हैं। वे बाहर आ कर कासिम के खच्चर भी हाँक ले गए और आश्वस्त हो गए कि अब इनका भेद कोई नहीं जानता।

इधर रात होने पर भी जब कासिम घर वापस नहीं लौटा तो उसकी स्त्री अलीबाबा के घर आई। उसे यह तो मालूम नहीं था कि अलीबाबा और कासिम में क्या बात हुई थी और अलीबाबा ने उसे क्या बताया था। उसने अलीबाबा से कहा, देवर जी, तुम्हारे भाई साहब दिन में दस खच्चर ले कर न जाने कहाँ चले गए हैं। मुझ से कह गए कि दो तीन घंटों में वापस आ जाऊँगा। देर हुई तो मैंने दुकान में भी पुछवाया। वहाँ नौकरों ने बताया कि आज मालिक आए ही नहीं। अब रात हो गई है। अभी तक वह नहीं आए हैं। समझ में नहीं आता क्या करूँ और किससे पूछूँ, तुम्हीं कुछ पता लगाओ उनका।

अलीबाबा का माथा ठनका कि जंगल में कहीं कुछ गड़बड़ हो गई। प्रकट में उसने कहा, भाभी, घबराओ नहीं। भैया होशियार आदमी हैं, कोई बच्चे नहीं हैं। किसी जरूरी काम से कहीं रह गए होंगे। सुबह तक आ ही जाएँगे। वैसे भी रात को कहाँ तलाश किया जाए। शहर का फाटक भी बंद हो गया होगा इसलिए बाहर भी नहीं जाया जा सकता। कासिम की पत्नी विवश हो कर घर लौट गई। वह रात भर अपने पति के लिए व्याकुल रही और

चुपके-चुपके रोती रही। उसे आवाज इसलिए दबानी पड़ी कि उसे पति के गायब हो जाने में किसी रहस्य का आभास हो गया था और वह यह नहीं चाहती थी कि इस बात का पता पड़ोसियों को चले। वह बार-बार स्वयं को धिक्कारती थी कि उसे अलीबाबा के भाग्य से क्यों ईर्ष्या हुई और क्यों उसने अपने पति को उकसाया, अब न जाने वह किस मुसीबत में पड़ा हो।

सुबह वह फिर अलीबाबा के पास गई और उसने कहा, तुम्हारे भाई अब तक नहीं लौटे। कुछ पता लगागो। अलीबाबा ने अपनी भावज को सांत्वना दे कर उसके घर भेजा और खुद अपने तीनों गधे ले कर जंगल में गया और उसी गुफा के पास पहुँचा। उसे वहाँ अंदर की ओर से रिसा हुआ कुछ खून दिखाई दिया बाहर दस खच्चरों में से एक भी न था। उसे विश्वास हो गया कि कासिम के साथ बुरी बीती। उसने इधर-उधर देख कर कहा, खुल जा समसम। दरवाजा खुल गया और उसके अंदर जाते ही बंद हो गया।

अंदर जाते ही अलीबाबा चौंक पड़ा। दरवाजे के पास ही दोनों ओर कासिम की लाश के दो-दो टुकड़े पड़े थे। उसे समझने में देर न लगी कि कासिम के रहते ही डाकू वापस आ गए और उन्होंने उसे मार डाला और खच्चर भी ले गए। उसने वहीं से एक चादर उठा कर कासिम के शरीर के टुकड़ों की गठरी बनाई। ढेर सारी और अशर्फियाँ भी दो बोरियों में भरीं और मंत्र से द्वार खोल कर बाहर आ गया। उसने एक गधे पर कासिम की लाश और बाकी दो पर अशर्फियाँ लादीं और उन्हें लकड़ियों से छिपा कर होशियारी से शहर में होता हुआ अपने घर आया। उसने अशर्फियों की बोरियाँ अपनी पत्नी को दीं किंतु कासिम का कुछ हाल उसे नहीं बताया और तीसरा गधा ले कर वह कासिम के घर पहुँचा। आवाज देने पर कासिम की दासी ने, जिसका नाम मरजीना था और जो बहुत होशियार थी, दरवाजा खोला। अलीबाबा ने गधा अंदर करके दरवाजा बंद कर लिया और मरजीना को कासिम के बारे में बताया और कहा, समझ में नहीं आता इसकी मौत कैसे बताई जाए और इस टुकड़े-टुकड़े शरीर को कैसे दफन किया जाय। मरजीना ने कुछ सोच कर कहा, आप मालकिन को सँभालें। बाकी काम मैं ठीक कर लूँगी।

अलीबाबा अपनी भावज के पास गया तो उसने कहा, क्या खबर लाए? भगवान सब भला करें। तुम्हारे चेहरे पर दुख दिखाई देता है। अलीबाबा ने उसे कासिम की लाश के चार टुकड़ों में मिलने की बात बताई। वह चीख कर रोने लगी तो अलीबाबा ने उसे डाँट कर कहा, क्या करती हो भाभी? भैया तो गए ही, क्या अब रो-पीट कर तुम सारा भेद खोलना चाहती हो? लोगों को अस्लियत मालूम हुई तो हम सब की जानों पर बन आएगी। या तो शहर कोतवाल हमारे धन के लालच में हम पर कासिम की हत्या का आरोप लगा कर फाँसी दे देगा या डाकुओं को पता चला तो वे आ कर हमें मार डालेंगे। कासिम की स्त्री ने कहा, मैं कहाँ जाऊँगी, क्या करूँगी? मेरा तो कोई लड़का भी नहीं जो दुकान सँभाले। अलीबाबा बोला, बाद में सब ठीक हो जाएगा, मैं तुमसे विवाह कर लूँगा। मेरी स्त्री सुशील है, वह तुमसे झगड़ा न करेगी। पहले भैया के दफन का प्रबंध तो कर लें। कासिम की स्त्री चुपचाप आँसू बहाने लगी।

उधर मरजीना पहले एक अत्तार की दुकान पर गई और उसे मरणासन्न रोगी को दी जानेवाली दवा माँगी। अत्तार ने पूछा कि ऐसा बीमार कौन है तो उसने कहा कि मेरे मालिक की दशा बहुत खराब है। अत्तार ने एक दवा दी और कहा कि इससे ठीक न हो तो फिर आना, मैं और प्रभावकारी औषधि दूँगा। मरजीना दवा ले कर एक बूढ़े मोची के पास, जो दूर के एक मुहल्ले में रहता था, गई। मोची का नाम मुस्तफा था। उसकी दुकान में अँधेरा सा था लेकिन वह डट कर काम कर रहा था। मरजीना बोली, बाबा मुस्तफा, तुम तो बड़े होशियार आदमी मालूम होते हो, इतने अँधेरे में ऐसी नाजुक सिलाई कर रहे हो। मोची हँस कर बोला, लड़की, तू समझती क्या है। मैं तो इससे अधिक अँधेरे में तुझे काट कर दुबारा जोड़ दूँ। मरजीना ने पास आ कर फुसफुसा कर कहा, बाबा, मुझे तुम मत काटो जोड़ो। लेकिन एक ऐसा ही काम है। दाम अच्छे मिलेंगे, लेकिन किसी को पता न चले। एक अशर्फी मिलेगी। अशर्फी के लालच में बूढ़ा तैयार हो गया। मरजीना ने कहा, किंतु उस चौराहे के आगे मैं तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध दूँगी। बूढ़ा पहले इस पर तैयार नहीं हुआ। किंतु जब उसे मरजीना ने एक अशर्फी और देने का वादा किया तो वह तैयार हो गया।

उस समय तक अँधेरा हो गया था। चौराहे पर आ कर मरजीना ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और गलियों-गलियों उसे अपने घर तक लाई। बूढ़ा घाघ था। वह अपने कदम गिनता गया और मोड़ों का ध्यान रखता गया। घर ले जा कर उसने एक कोठरी में रखी कासिम की लाश उसे दिखा कर कहा, इन टुकड़ों को सी कर एक पूरा शरीर बनाना है। मुस्तफा को और भेद जान कर क्या करना था। उसने घंटे दो घंटे में टुकड़े सी कर पूरा शरीर बना दिया। मरजीना ने उसे दो के बजाय तीन अशर्फियाँ दीं और कहा, मैं तुम्हें जिस तरह लाई थी उसी तरह वापस तुम्हारी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर पहुँचा दूँगी। यह अतिरिक्त अशर्फी इसलिए है कि तुम इस बात को गुप्त रखो। मुस्तफा ने यह वादा कर लिया।

मरजीना रात ही में मुस्तफा को उसकी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर छोड़ आई। घर में उसने और अलीबाबा ने मिल कर लाश को नहलाया और कफन में लपेट दिया। दूसरी सुबह मरजीना फिर रोती हुई अत्तार के पास गई और उससे कहा, जो दूसरी दवा तुम कहते थे वह दे दो। मालिक की हालत अब तब हो रही है। मालूम नहीं यह दवा भी वे ले सकेंगे या पहले ही दम तोड़ देंगे।

अत्तार ने दवा दे दी और मरजीना चली गई। अत्तार ने और लोगों को भी कासिम की हालत के बारे में बताया। कासिम मुहल्ले का प्रतिष्ठित व्यक्ति था इसलिए कई आदमी उसके द्वार पर उसका हाल पूछने आ गए। कुछ ही देर में घर के अंदर से रोने-पीटने की आवाजें आने लगीं और दस-पाँच मिनट में अलीबाबा आँसू पोंछते हुए आया। उसने लोगों को बताया कि कल सुबह ही कासिम को जानलेवा रोग हुआ और आज सुबह उसने दम तोड़ दिया।

सब लोगों ने इस पर खेद प्रकट किया। मुहल्ले के और बहुत से लोग आए। मसजिद के

इमाम भी आ गए। लाश को मुहल्ले के कब्रिस्तान में ले जा कर दफन कर दिया गया। मसजिद के इमाम ने जनाजे की नमाज पढ़ी और इस तरह कासिम की बीमारी से स्वाभाविक मृत्यु की बात मुहल्ले में मशहूर हो गई। अलीबाबा ने चालीस दिन तक घर में बैठ कर अपने भाई के लिए रस्म के अनुसार शोक किया। चेहल्लुम के बाद वह अपने बड़े भाई के घर में, जो स्वभावतः ही काफी लंबा और चौड़ा था, आ गया और उसकी पत्नी और एकमात्र पुत्र वहीं रहने लगे। मातम की मुद्दत खत्म होने के बाद अलीबाबा ने अपनी विधवा भावज के साथ निकाह कर लिया था। अलीबाबा का पुत्र जो किसी व्यापारी के साथ व्यापार का काम सीख चुका था, कासिम की दुकान को सँभालने लगा और अलीबाबा घर में आराम से रहने लगा।

उधर दो-चार दिन बाद लुटेरे फिर गुफा में आए तो उन्हें यह देख कर घोर आश्चर्य हुआ कि जिस आदमी को मारा गया था उसकी लाश के टुकड़े गायब हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि अशर्फियों के ढेर में से चार-पाँच बोरी अशर्फियाँ भी गायब हो गई हैं। डाकुओं ने सोचा कि यह तो बहुत बुरी बात हुई, मृत मनुष्य के अलावा भी कोई आदमी ऐसा है जो गुफा के भेद को और उसे खोलने की तरकीब को जानता है, वह मृतक के शरीर के टुकड़े भी उठा ले गया है और धन को भी। स्पष्ट है कि वह मृतक का कोई संबंधी होगा लेकिन जब मृतक ही का पता नहीं तो संबंधी का पता कैसे चले।

सरदार ने कहा, भाइयो, हाथ पर हाथ धर कर बैठने से काम नहीं चलेगा। जो आदमी हमारा भेद जानता है वह हमारे और हमारे पुरखों के जमा किए धन को लूट ले जाएगा। हम में से कोई यहाँ रह भी नहीं सकता क्योंकि हमने अपने निवास स्थान से दूर संग्रह स्थान बनाया है, यहाँ किसी के रहने से हमारा भेद खुल जाएगा। तुम लोगों में से जो सबसे होशियार हो वह शहर में जा कर मुहल्ले-मुहल्ले घूम-घूम कर पता लगाए और होशियारी से काम करे। अभी सिर्फ यह जानने की जरूरत है कि कौन आदमी टुकड़े-टुकड़े कर के मारा गया है और दफन हुआ है। बाकी काम बाद में देखा जाएगा। जो यह पता लगाएगा वह लूट के माल में अपने हिस्से के अलावा भारी इनाम पाएगा। किंतु यह भी शर्त है कि असफलता की स्थिति में उसे प्राणदंड दिया जाएगा।

एक डाकू ने इस काम का बीड़ा उठाया। वह शहर में आ कर कई मुहल्लों में टोह लेता फिरा किंतु उसे कुछ पता न चला। संयोग से वह मुस्तफा मोची के पास जा निकला। उसने कहा बाबा, तुम इस उम्र में भी अँधेरी जगह में ऐसी होशियारी से काम करते हो। बूढ़ा तारीफ सुन कर फूल गया। प्रतिज्ञा भूल कर बोला, अरे यह काम क्या है? कुछ दिन पहले मैंने इससे भी अँधेरे में एक लाश के चार टुकड़ों को सी कर एक पूरा शरीर बनाया था। डाकू ने बनावटी ताज्जुब से कहा, कटे आदमी को तुमने क्यों सिया? मुस्तफा ने कहा, भाई, मैंने तुम्हें गलती से वह बात बताई है। मैंने उस बात को गुप्त रखने का वादा किया था। अब मैं इस बारे में तुम से कोई बात नहीं करूँगा, बल्कि तुमसे कोई बात भी नहीं करूँगा।

डाकू ने उसके हाथ पर एक अशर्फी रखी और कहा, मैं इस बात को बिल्कुल नहीं पूछूँगा।

तुम सिर्फ यह करो कि मुझे वह मकान बता दो जहाँ पर तुमने लाश के टुकड़े सिए थे। मुस्तफा घबराया। उसने कहा, तुम अपनी अशर्फी वापस ले लो। मकान मैं इसलिए नहीं बता सकता कि एक दासी उस चौराहे से मुझे रात के समय आँखों पर पट्टी बाँध कर ले गई थी और उसी तरह वहाँ छोड़ गई थी। डाकू ने उसे एक अशर्फी और दी कहा, बाबा, तुम बहुत होशियार आदमी हो। मैं रात में आऊँगा और तुम्हारी आँखों में पट्टी बाँधूँगा। तुम मुझे वहाँ ले चलो।

बूढ़े को लालच आ गया। उसने कहा, अच्छा भाई, तुम रात को आना। काम बड़ा खतरनाक है लेकिन तुम इतना जोर देते हो तो करना ही पड़ेगा। रात में भी मुस्तफा ने दुकान बंद नहीं की पर दुकान में दिया भी नहीं जलाया। डाकू के आने पर वह उसे चौराहे पर ले गया जहाँ डाकू ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी। मुस्तफा अपने कदमों को गिनता और निश्चित संख्या के बाद दाएँ या बाएँ मुडने को कहता। अंत में वह एक जगह ठहर गया और बोला कि यहीं तक आया था और उस ओर के मकान में मुझे दासी ले गई थी। डाकू ने उसकी आँखें खोल कर कहा, बता सकते हो कि वह कौन सा मकान है और किसका है। आँखें खोल कर मैं अपनी दुकान के चौराहे पर वापस भी नहीं जा सकता, तुम मुझे पट्टी बाँध कर ही वापस ले चलो। यहाँ किसका कौन सा मकान है यह मैं नहीं जानता, मैं दूर के मुहल्ले में रहता हूँ।

डाकू ने उससे बहस न की। मोची ने बंद आँखों से जो मकान बताया था उसके दरवाजे पर उसने खड़िया से एक निशान बना दिया। फिर वह मुस्तफा की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसकी दुकान के चौराहे पर छोड़ गया। रात भर वह उसी नगर में अपने निवास स्थान पर रहा। दूसरे दिन सुबह उठ कर वह अपने दल में गया और सारा हाल बताया कि किस तरह फलाँ मुहल्ले के बूढ़े मोची की आँखों में पट्टी बाँध कर वह उस मकान में गया जहाँ मोची ने चार टुकड़ों को सी कर पूरी लाश बनाई थी और स्पष्टतः वह उसी आदमी की लाश थी जिसे हमने मारा था। सरदार ने कहा, ठीक है, आज रात को मेरे साथ चल कर तुम मुझे वह मकान दिखाना।

इधर सुबह मरजीना घर से बाहर निकली तो उसे अपने द्वार पर खड़िया का निशान मिला। उसे खटका हो गया क्योंकि उसे डाकुओं के बारे में मालूम था। उसने हाथ में खड़िया ली और आसपास के दस बारह मकानों पर ठीक वैसा ही निशान बना दिया जैसा उसके मकान पर बना हुआ था। रात को जासूस डाकू अपने सरदार और दो-एक और साथियों के साथ वहाँ आया तो देखा कि कई मकानों पर वैसे ही निशान बने हैं।

जासूस डाकू यह देख कर बहुत परेशान हुआ। वह उस मकान को बिल्कुल न पहचान सका जिस पर उसने निशान लगाया था। उसने कसमें खा कर कहा कि मैंने एक ही दरवाजे पर निशान लगाया था और बिल्कुल नहीं जानता कि अन्य दरवाजों पर निशान कैसे बन गए। सरदार अपने सभी साथियों को ले कर जंगल में आया और पहले घोषित की हुई शर्त के मुताबिक उसे मृत्युदंड दिया गया। याद रखना चाहिए कि डाकू जितने निर्मम और लोगों के लिए होते हैं उतने ही अपने साथियों के लिए भी होते हैं और ऐसे मौकों पर इस बात

का खयाल नहीं करते कि उनका कोई साथी उनके प्रति अब तक कितना वफादार रहा है।

खैर, उस जासूस डाकू को मारने और उसकी लाश ठिकाने लगाने के बाद डाकू फिर सोच-विचार करने लगे कि कैसे उस आदमी का पता लगाया जाए जो गुफा का भेद जान गया है। सरदार ने इनाम की रकम बढ़ा दी और उस का कुछ हिस्सा पेशगी देने का वादा किया। कुछ देर के बाद एक और डाकू ने बीड़ा उठाया कि उस आदमी का पता लगाऊँगा जो गुफा में जा कर अशर्फियाँ भी ले गया और मृत व्यक्ति का शव भी। सरदार ने उसे पेशगी इनाम दे कर विदा किया। वह डाकू कुछ दिनों तक इधर-उधर पूछता रहा फिर वह भी मुस्तफा मोची के पास पहुँचा। मुस्तफा को इस तरह भारी इनाम पाने की आदत पड़ गई थी और उसे यह विश्वास हो गया था कि इस सौदे में उसे किसी तरह का खतरा नहीं है इसलिए वह कुछ ही देर में इस बात के लिए तैयार हो गया कि रात को उसे आँखों पर पट्टी बाँध कर इच्छित भवन तक ले जाया जाए। दूसरे जासूस डाकू ने वहाँ पहुँच कर और मकान के बारे में आश्वस्त हो कर उस पर लगे हुए सफेद निशान के बगल में एक लाल निशान लगा दिया है और अच्छी तरह याद रखा कि सफेद निशान के किस ओर लाल निशान लगा है।

मरजीना की तेज निगाहों से दूसरी बार को वह लाल निशान भी नहीं बच सका। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि कोई बुरी नीयत से कासिम के घर को, जिसमें अब अलीबाबा रहता था, चिह्नित करना चाहता है। उसने सुबह ही सुबह पड़ोस के सारे मकानों में सफेद निशानों की बगल में वैसे ही छोटे लाल निशान बना दिए।

इधर दूसरा जासूस डाकू अपने सरदार के पास गया और उससे कहने लगा कि मैंने अबकी ऐसा निशान लगाया है जो आसानी से किसी को दिखाई भी नहीं देगा। सरदार दो साथियों और जासूस डाकू को ले कर रात में वहाँ पहुँचा तो सब ने देखा कि पहले जैसा ही धोखा हुआ है। मुहल्ले के सारे मकानों पर एक ही जैसे निशान बने हुए हैं। दूसरा जासूस डाकू भी बड़ा लज्जित हुआ और जब डाकू अपने अड्डे पर पहुँचे तो वह सरदार से अपने प्राणों की भीख माँगने लगा। किंतु सरदार किसी प्रकार की ढिलाई दिखा कर दल का अनुशासन कमजोर नहीं करना चाहता था इसलिए उसने उसे भी मरवा दिया।

दो-दो जासूस डाकुओं की असफलता और मौत देख कर अब कौन वांछित व्यक्ति का पता लगाने को तैयार होता। इसलिए सरदार ने स्वयं ही यह काम करना तय किया। वह भी मुस्तफा मोची के यहाँ पहुँचा और उसे अशर्फियाँ दे कर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर अलीबाबा के मकान के सामने पहुँचा। वह देख चुका था कि मकान पर निशान लगाने की विधि दो बार असफल रही थी, इसलिए उसने घूम-फिर कर सारे मकानों की अच्छी तरह पहचान की। अलीबाबा के मकान के विशेष चिह्नों को भी याद रखा। दूसरे दिन दोपहर के समय उस मुहल्ले में जा कर पूछताछ की और अलीबाबा के बारे पता लगाया कि वह शांत और सौम्य स्वभाव का अतिथिप्रेमी व्यक्ति है।

डाकुओं के सरदार ने अपने अड्डे पर वापस जा कर अलीबाबा को मारने की योजना बनाई। वह यह काम चुपचाप करना चाहता था। उसने अपने आदमियों को भेज कर अड़तीस बड़े-बड़े तेल के कुप्पे जिनमें एक आदमी सिकुड़ कर आसानी से बैठ सकता था तथा उन्नीस खच्चर मँगाए। उसे अपने बचे हुए सैंतीस साथियों को एक-एक कुप्पे में बिठाया और संतुलन पूरा करने के लिए एक कुप्पे में ऊपर तक तेल भरवाया। फिर एक-एक खच्चर पर दो-दो कुप्पे इधर-उधर लटका कर शहर को चल दिया। सरदार ने कुप्पों के अलावा सैंतीस आदमियों के लिए भोजन भी उनके पास रखवा दिया।

सब के पास एक-एक तेज छुरी भी थी। सरदार ने योजना सबको समझाई कि हम लोग अलीबाबा के घर में ठहरेंगे और आधी रात को जब कुप्पों पर मेरी फेंकी हुई कंकड़ियाँ लगे तो सभी डाकू छुरियों से अपने-अपने कुप्पों को चीर कर निकल आएँ और अलीबाबा तथा उसके परिवार के सदस्यों की हत्या करके रात ही रात चुपचाप शहर में इधर-उधर छुप जाएँ और सुबह शहर से बाहर निकल कर अपने अड्डे पर वापस आ जाएँ। सभी डाकुओं को यह योजना पसंद आई।

शाम को दिया जलने के बाद सरदार व्यापारी के वेश में अपने उन्नीस खच्चर लिए हुए अलीबाबा के घर पहुँचा। उसने खच्चर बाहर रहने दिए और खुद अंदर गया। अलीबाबा अपनी बैठक में बैठा था। सरदार ने उसे सलाम करके कहा, महाशय, मैं बाहर से आया हुआ तेल का व्यापारी हूँ और यहाँ के व्यापारियों के हाथ बेचने के लिए तेल लाया हूँ। मुझे रास्ते में देर लग गई और इस समय किसी सराय में जगह भी नहीं मिली। यदि आप अनुमति दें तो आपके अहाते में अपने खच्चर बाँध दूँ और तेल के कुप्पे रखवा दूँ। सुबह उन्हें फिर खच्चरों पर लाद कर तेल की मंडी में चला जाऊँगा।

अलीबाबा ने उसको अतिथि बनाना मंजूर कर लिया। उसने अपने आदमी से कुप्पे उतरवाए और खच्चरों के लिए घास की व्यवस्था करने को कहा किंतु डाकू सरदार ने कहा कि मेरे पास खच्चरों का दाना है। अलीबाबा उसके बदले हुए वेश में उसकी आवाज भी नहीं पहचान सका। उसने कहा, आप मेरे साथ भोजन करें और आप के लिए बाहर की ओर एक कमरा खाली कर दिया है, उसमें सोएँ। इसे अपना ही घर समझें। उसने मरजीना से कहा कि मेहमान के लिए अच्छा भोजन पकाओ। साथ ही उसने आज्ञा दी, कल सुबह मैं हम्माम में स्नान करना चाहता हूँ इसलिए मेरे नौकर अब्दुल्ला को मेरे नए कपड़ों का एक जोड़ा निकाल कर दे देना। साथ ही स्नान के पूर्व मैं पौष्टिक यखनी (मांस रस) पीना चाहता हूँ, वह भी रात ही में चढ़ा देना ताकि सुबह तक भली-भाँति तैयार हो जाए। मरजीना ने कहा, यह सारी बातें हो जाएँगी।

डाकू सरदार और अलीबाबा भोजन करके अपने-अपने कमरों में जा कर लेटे और सो गए। डाकू ने सोचा था कि एक नींद ले लूँ क्योंकि आधी रात के बाद तो रात भर जागना ही था। इधर मरजीना ने अलीबाबा के लिए कपड़े निकाल कर अब्दुल्ला को दिए। फिर वह यखनी चढ़ाने की तैयारी करने लगी। संयोग से उसी समय रसोई के दिए का तेल खत्म हो गया। घर में जलाने का तेल भी नहीं था। वह परेशान हुई तो अब्दुल्ला ने कहा, रोती क्यों है।

व्यापारी के इतने सारे कुप्पे रखे हैं। जरा-सा तेल उससे ले ले, व्यापारी को क्या पता चलेगा? मरजीना ने कहा, फिर तू ही तेल ले आ। अब्दुल्ला बोला, मुझे तो सुबह जल्दी उठ कर मालिक के साथ हम्माम को जाना होगा। मैं तो सोने के लिए जाता हूँ। तू ही तेल ला। यह कह कर अब्दुल्ला चला गया।

मरजीना एक कटोरा ले कर तेल लेने एक कुप्पे के पास पहुँची तो उसमें छुपे डाकू ने समझा कि सरदार आया है। उसने पूछा, समय हो गया है क्या सरदार? मरजीना चौंक कर खड़ी हो गई। किंतु उसने अपने होश-हवाश दुरुस्त रखे। एक क्षण बाद भारी आवाज करके बोली, अभी नहीं। फिर वह सभी कुप्पों के पास गई जहाँ उससे वही सवाल किया गया और उसने वहीं जवाब दिया। सिर्फ एक कुप्पे में उसे ऊपर तक भरा हुआ तेल मिला। उसने जल्दी से तेल ले कर यखनी चढ़ाई फिर बड़ी भट्टी में आग जला कर उस पर घर की सबसे बड़ी देग रखी। फिर कई बार जा कर उसने कुप्पे का सारा तेल देग में डाल दिया। जब तेल खूब खौल गया तो उसने अंदाजे से डोई में खौलता तेल ले कर एक-एक करके सभी कुप्पों में डाल दिया। वे डाकू साँस घुटने से पहले ही अधमरे थे, खौलता तेल ऊपर गिरा तो तड़प कर मर गए, उनकी चीखें भी तेज न निकलीं। यह सब करके मरजीना यखनी तैयार करने लगी।

आधी रात को डाकू सरदार ने कंकड़ियाँ फेंकनी शुरू की लेकिन किसी कुप्पे में कोई हरकत नहीं हुई। हालाँकि चाँदनी में सब कुछ दिखाई दे रहा था, सरदार ने समझा कि डाकू सो गए हैं। वह झुँझलाता हुआ उठा। खामोशी से दरवाजा खोल कर वह अहाते के अंदर गया और कुप्पे में ठोकर मार कर डाकू को जगाना चाहा। फिर भी कोई हरकत न हुई तो उसने कुप्पे में झाँक कर देखा। उसे तेल और जले हुए मांस की गंध आई। उसने कुप्पे का मुँह खोला तो अंदर जला और मरा हुआ साथी निकला। फिर वह दूसरे कुप्पों के पास गया। सभी में उसने यह हाल देखा कि डाकू जले और मरे पड़े हैं। उसने यह भी देखा कि तेल का कुप्पा खाली पड़ा हे। वह समझ गया कि किसी ने उसी के तेल से उसके साथियों को मार डाला है। वह अपने भाग्य को कोसने लगा। कहाँ तो वह यह सोच कर आया था कि अलीबाबा को मार कर अपना कोष सुरक्षित करे, यहाँ यह हो गया कि उसका पूरा दल ही खत्म हो गया। डाकू सरदार थोड़ी देर के लिए जड़वत हो कर सिर पर हाथ धरे बैठा रहा।

फिर उसने स्वयं को व्यवस्थित किया। उसके लिए अपनी जान बचाना जरूरी था। दल तो धीरे-धीरे फिर बन जाता, वह दरवाजे को खोल कर नहीं जा सकता था क्योंकि उसमें ताला लगा हुआ था। इसलिए वह दीवार पर चढ़ा और बाहर सड़क पर कूद गया और भागता हुआ दूर जा कर कहीं छुप रहा। मरजीना ने उसे अपने कमरे से निकलते, कुप्पों के पास जाते और फिर दीवार पर चढ़ कर बाहर छलाँग मारते देखा। उसने सोचा कि डाकुओं का दल तो समाप्त हुआ लेकिन उनका सरदार बच रहा है। वह अकेला क्या कर लेगा? अकेला डाका भी नहीं डाल सकता। कम से कम उस रात को तो वह कुछ कर ही नहीं सकता था। इसलिए मरजीना यखनी के नीचे की आँच निकाल कर अपनी कोठरी में जा कर सो गई।

अलीबाबा अँधेरे में उठ कर अब्दुल्ला को ले कर हम्माम चला गया। दो तीन घंटे के बाद

लौटा तो देखा कि अहाते में खच्चर वैसे ही बँधे हैं और तेल के कुप्पे वैसे ही रखे हैं। उसने मरजीना से कहा, क्या वह तेल का व्यापारी अभी सो कर नहीं उठा। उसे तो इस समय तक बाजार में होना चाहिए था। मरजीना ने कहा, मालिक, भगवान आपकी लंबी उम्र करें। वह व्यापारी भाग गया। आप नाश्ता कीजिए, फिर मैं आपको सारा हाल बताऊँगी।

इसीलिए मैंने एकांत कर लिया है। पहले आप उन कुप्पों में झाँक कर देख आइए। अलीबाबा हैरान हो गया। उसने एक कुप्पे में झाँक कर देखा तो मरा आदमी दिखाई दिया। वह भाग कर फिर मरजीना के पास आ कर बोला कि जल्दी बता कि क्या बात है। मरजीना ने कहा कि आप इत्मीनान से बैठिए। मैं आपको पूरा हाल बताऊँगी। आपकी जान को कल रात बड़ा भारी खतरा पैदा हो गया था किंतु ईश्वर की कृपा से वह खतरा टल गया है।

फिर मरजीना बोली, उन अड़तीस कुप्पों में से सिर्फ एक में तेल था और बाकी में डाकू छुपे थे। वह व्यापारी उन का सरदार था। मुझे पिछले चार-पाँच दिनों से शक था कि कोई व्यक्ति आप का अनिष्ट करना चाहता है। मैं सजग भी हो गई और अपनी समझ के अनुसार सावधानी भी बरती जो भगवान की दया से सफल हुई। एक दिन मैंने घर के दरवाजे पर सफेद खड़िया का निशान देखा। मैं समझ गई कि कोई व्यक्ति बुरी नीयत से आप का मकान पहचानना चाहता है। इसलिए मैंने वैसे ही खड़िया के निशान मुहल्ले के सारे दरवाजों पर बना दिए जिससे आपके घर की पहचान खत्म हो जाए। दो-तीन दिन बाद मैंने देखा कि सफेद निशान के पास एक छोटा-सा लाल निशान बना है। मुझे विश्वास हो गया कि आपके किसी दुश्मन की यह कार्रवाई है। आपका शहर में कोई दुश्मन हो ही नहीं सकता। इसलिए मैंने सोचा कि यह गुफावाले डाकू ही हैं जो आपके पीछे पड़े हैं। मैंने मुहल्ले के सारे घरों के दरवाजों पर सफेद निशानों के पास वैसे ही लाल निशान बना दिए इस प्रकार एक बार फिर उन लोगों की योजना असफल हो गई। मैंने आपसे उस समय इसलिए कुछ नहीं कहा कि आप मेरा विश्वास तो करते नहीं, बेकार और लोगों में बात फैलती और यह भी संभव था कि डाकुओं को आपका घर मालूम हो जाता।

किंतु मेरी चुप्पी के बावजूद डाकुओं ने किसी तरह आपके घर का पता लगा लिया और सरदार आपने सैंतीस साथियों को तेल के कुप्पों में बंद कर एक तेल के कुप्पे के साथ यहाँ लाया था। मालूम होता है कि जासूसी असफल होने पर उसने अपने दो साथियों को मार डाला। वरना वह बीस खच्चर लाता और उन पर अपने उनतालीस साथी लाता। मुझे उस व्यापारी की अस्लियत का जिस तरह पता चला वह भी ईश्वर की कृपा ही समझिए। जब आपने यखनी बनाने को कहा तो पहले मैंने आपके संदूक के कपड़ों का जोड़ा आपके लिए निकाल कर अब्दुल्ला को दिया। उसी समय रसोई का दिया तेल की कमी से बुझने लगा। अब्दुल्ला ने सुझाव दिया कि व्यापारी के कुप्पों से थोड़ा तेल ले ले। वह खुद सोने चला गया क्योंकि आज उसे आपके साथ हम्माम जाना था।

मैं कटोरा ले कर तेल लेने गई तो एक कुप्पे में से छुपे हुए डाकू ने पूछा कि क्या समय आ गया है? मैं समझ गई कि यह डाकू आपको मारने आए हैं। मैंने उत्तर दिया कि अभी नहीं

आया। इसी तरह मैंने सैतीसों कुप्पों के अंदर से वही प्रश्न सुना और वही उत्तर दिया। आखिरी कुप्पे का तेल मैं धीरे-धीरे रसाई में ले आई और बड़ी देग भट्टी पर चढ़ा कर उसमें वह तेल डाल कर गर्म किया। जब तेल उबलने लगा तो एक डोई में तेल भर-भर कर उन सभी कुप्पों में डाल आई। आधी रात को मैंने देखा कि जिस कमरे में व्यापारी ठहरा है उसमें से कंकड़ियाँ आ-आ कर कुप्पों में लग रही हैं। मैं समझ गई कि यह डाकुओं को बाहर निकल कर हम सभी को मार देने का इशारा है। मैं देखती रही। फिर मैंने देखा कि वह व्यापारी बना हुआ डाकू सरदार नीचे आया और अपने साथियों को मुर्दा पा कर थोड़ी देर तक सिर पकड़े बैठा रहा। उसके बाद बाहरी दीवार पर चढ़ा और सड़क की ओर कूद गया। मैंने सड़क पर उसके भागने की आवाज भी सुनी। इस प्रकार जब मैंने खतरा टला देखा तो जा कर सो गई।

अलीबाबा कुछ देर तो हक्का-बक्का देखता रहा। फिर बोला, मरजीना, तू कहने को दासी है लेकिन काम तूने कुटुंबियों से बढ़ कर किया है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे क्या इनाम दूँ। मेरी तो अभी यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि इन लाशों, और खच्चरों और कुप्पों का क्या करूँ।

मरजीना ने कहा, मालिक, सरदार या अधिक से अधिक उसके दो साथी बचे होंगे। उनसे अभी कोई तात्कालिक खतरे की संभावना नहीं है। इस समय आप घर के सभी नौकरों को बुला कर अहाते में एक बड़ा भारी गढ़ा खुदवाएँ, फिर नौकरों को बाहर काम पर भेज दें। इसके बाद हम दोनों कुप्पों में से लाशें निकाल निकाल कर उस गढ़े में भर दें और गढ़े के ऊपर से मिट्टी डाल कर दबा दें ताकि गढ़े का निशान भी न दिखाई दे। अलीबाबा को उसकी राय पसंद आई। उसने नौकरों से बड़ा-सा गढ़ा खुदवाया, फिर नौकरों को बाहर भेज कर लाशों को मरजीना की मदद से गढ़े में डाल कर गढ़ा बंद कर दिया। उसने एक-एक दो-दो करके सारे कुप्पे और खच्चर बाजार में बिकवा दिए।

डाकुओं के सरदार को अपने निवास स्थान पर जा कर भी चैन न आया। उसका सारा दल खत्म हो गया था। उसे नए सिरे से छिटपुट लूट-मार करके धीरे-धीरे नया दस्यु दल तैयार करना था। साथ ही अलीबाबा भी अभी जिंदा था जो उसके सारे खजाने पर कब्जा कर सकता था। उसका एक दिन इसी उलझन में बीता। फिर वह यह सोच कर नगर में आया कि अलीबाबा सैंतीस लाशों को छुपा नहीं सकेगा और संभवतः इतने लोगों की हत्या के अपराध में मृत्युदंड भी पा जाए। इसलिए वह एक सराय में ठहरा और भटियारे से शहर के समाचार पूछने लगा। भटियारों को इन बातों के सुनाने में मजा आता है। किंतु जैसा समाचार वह सुनना चाहता था वैसा भटियारा उसे न सुना सका। उसने दो-चार और सरायों में जा कर इसी तरह टोह ली लेकिन कहीं पर यह नहीं सुना कि बादशाह ने अलीबाबा को सैंतीस आदमियों के मारने के अभियोग में गिरफ्तार किया होगा। ऐसा होता तो डाकू सरदार का एकमात्र शत्रु उसके हाथ पाँव हिलाए बगैर ही मारा जाता किंतु ऐसा नहीं होना था।

डाकू सरदार ने यह तो समझ लिया कि अलीबाबा देखने में सीधा-सादा है लेकिन वास्तव

में बुद्धिमान है कि न सिर्फ अपने भाई की लाश को ला कर गुप्त रुप से उसके टुकड़े सिलवा कर उसे दफन कर दिया बल्कि उसके सैंतीस साथियों की लाशों को भी अत्यंत चतुरता से घोंट गया। ऐसे आदमी से बदला लेना आसान काम नहीं था। फिर भी डाकू सरदार ने अलीबाबा की हत्या करने का विचार न छोड़ा। उसने सोचा कि इस आदमी को मारने के बाद ही नए दल का संगठन किया जाए।

उसने पता लगा कर मालूम किया कि अलीबाबा कासिम के घर पर ही रहता है किंतु उसका पुत्र अपने पुराने घर में रहता है और अपने दिवंगत चचा की दुकान चलाता है। डाकू सरदार ने उसके पुत्र ही से अपनी बदले की भावना की शुरुआत की। उसने कासिम की दुकान के सामनेवाली दुकान मोल ली और उसमें व्यापार का सामान रख कर बैठने लगा और अपना नाम ख्वाजा हसन मशहूर किया। कुछ ही दिनों में उसने अलीबाबा के पुत्र से जो बड़ा सभ्य और सुशिक्षित था गहरी दोस्ती कर ली। उसने कई दिन तक इधर-उधर की बातें करके जान लिया कि इसे गुफा के खजाने के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। स्पष्ट था कि उसे यानी अलीबाबा के पुत्र को डाकुओं की भी कोई आशंका नहीं थी और पुत्र के द्वारा पिता से संपर्क स्थापित किया जा सकता था। अलीबाबा खुद भी कभी दुकान पर अपने पुत्र को देखने जाता था। डाकू ने दूर से उसे पहचान लिया। उसने अलीबाबा के पुत्र से इतनी मित्रता की कि रोज उसके साथ घूमने लगा और कई बार उसे अपने घर बुला कर उसकी शानदार दावत कर डाली।

अलीबाबा के पुत्र ने एक दिन अपने पिता से कहा, एक नया व्यापारी ख्वाजा हसन मेरा गहरा मित्र हो गया है। वह कई बार मुझे अपने घर ले जा कर भोजन करा चुका है। मैं भी उसे अपने यहाँ भोजन पर बुलाना चाहता हूँ। लेकिन मेरा घर इतना छोटा है कि उसमें दावत का ठीक प्रबंध नहीं हो सकेगा। इसलिए अगर आप अनुमति दें तो आपके अच्छे घर में उसकी दावत का इंतजाम हो जाए। अलीबाबा ने कहा, कल शुक्रवार है, बाजार बंद रहेगा। तुम घूमते-घूमते उसे शाम को यहाँ ले आना। मैं उसकी दावत का प्रबंध कर रखूँगा। मरजीना अच्छा भोजन तैयार कर देगी।

दूसरे दिन शाम को अलीबाबा का पुत्र और डाकू सरदार टहलते-टहलते अलीबाबा के मकान पर आए। डाकू को पहले ही इसका आभास हो गया था और वह अलीबाबा की हत्या की तैयारी करके आया था। जब अलीबाबा के पुत्र ने कहा कि यह मेरे पिता का मकान है तो दिखाने के लिए डाकू ने कहा, रहने दीजिए। क्यों बुजुर्ग आदमी के आराम में हम लोग दखल दें। मेरे जाने से उन्हें कष्ट होगा। आप ही चले जाएँ। मैं वापस जाता हूँ। अलीबाबा के पुत्र ने कहा, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा, प्रसन्नता ही होगी। मैंने उनसे आपका उल्लेख किया तो उन्होंने कहा था कि कोई अवसर हुआ तो ख्वाजा हसन से मिलूँगा। आप अंदर चलिए। घर में ला कर अलीबाबा के पुत्र ने अपने मित्र को अपने पिता से मिलाया तो अलीबाबा ने कहा, आप से मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस बच्चे ने मुझ से आप की बड़ी प्रशंसा की है। मालूम हुआ है कि इसे जितना प्यार मैं करता हूँ उससे अधिक आप करते हैं।

डाकू सरदार ने कहा, यह इतने सभ्य और सुशील हैं कि इन्हें कौन प्यार न करेगा। इनकी नौजवानी ही है लेकिन इनकी बुद्धिमानी, व्यवहारकुशलता और गंभीरता अधिकतर वयस्कों से भी अधिक है। क्यों न हो, यह पुत्र तो आप ही जैसे सज्जन के हैं। इसी प्रकार उन लोगों में बहुत देर तक सौहार्द और शिष्टाचारपूर्ण बातें होती रहीं।

फिर डाकू सरदार ने घर जाने की अनुमति माँगी। अलीबाबा ने कहा, यह आप क्या कह रहे हैं। बगैर भोजन किए आप यहाँ से नहीं जाएँगे, बल्कि आज रात आप मेरी कुटिया में मेहमान रहेंगे। मैं जानता हूँ कि यहाँ आपको अपने घर जैसा आराम न मिलेगा, न हमारे घर का रूखा-सूखा भोजन आपके योग्य होगा। फिर भी मेरी प्रसन्नता के लिए आप मेरा अनुरोध स्वीकार करें। डाकू ने कहा, ऐसी बातें करके आप मुझे लज्जित कर रहे हैं। आपके यहाँ किस चीज की कमी है। लेकिन मेरी कुछ मजबूरी है। मैं अपने घर के अलावा और कहीं नहीं खाता। कारण यह है कि मुझे ऐसा रोग है जिसमें नमक बिल्कुल नहीं खाया जा सकता। अलीबाबा ने कहा, यह क्या मुश्किल है। मैं अभी आपके लिए बगैर नमक के भोजन का प्रबंध कराए देता हूँ।

उसने अंदर आ कर मरजीना से कहा, हमारा मेहमान एक रोग के कारण नमक नहीं खाता। उसके लिए जो कुछ बनाओ बगैर नमक का हो। मरजीना अलीबाबा से तो कुछ न बोली किंतु बैठक के परदे के पीछे छुप कर देखने लगी कि यह कौन आदमी है जो नमक नहीं खाता और इतना बड़ा रोग ले कर भी यहाँ पैदल आया है। गौर से देखा तो पहचान गई कि यह वही दुष्ट डाकू सरदार है जो कुछ महीने पहले तेल का व्यापारी बन कर हमारे यहाँ ठहरा था। जब वह खाना परोसने के लिए आई तो उसने देखा कि डाकू अपने कपड़ों में पैनी छुरी छुपाए है। वह समझ गई कि यह नमक इसलिए नहीं खा रहा कि जिसका नमक खाया जाता है उसे अपने हाथ से मारना जघन्य नैतिक अपराध होता है। पिछली बार तो उसके साथी हत्या करते इसीलिए उस बार उसने नमक से परहेज नहीं किया था। मरजीना ने तय कर लिया कि यह अलीबाबा को मारे इससे पहले मैं ही उसे मार दूँ।

जब अलीबाबा, उसका पुत्र और डाकू सरदार भोजन कर चुके तो अब्दुल्ला और मरजीना ने वहाँ के बर्तन उठा कर एक तिपाई रखी जिस पर सुगंधित मदिरा की सुराही और तीन प्याले रखे थे।

उन दोनों ने ऐसा प्रकट किया कि अब वे खाना खाएँगे। डाकू सरदार इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि नौकर खाना खाने जाए तो अलीबाबा का काम तमाम कर दूँ और उसे छुरी के एक ही वार से खत्म करके बाग की दीवार फाँद कर निकल जाऊँ और यदि अलीबाबा का कोमल-सा पुत्र प्रतिरोध करे तो उसे भी मार दूँ। मरजीना की निगाहें बड़ी तेज थीं। वह डाकू के आँखों के भाव से समझ गई कि उसका इरादा क्या है। उसने अब्दुल्ला से कहा कि तुम दफ अच्छा बजाते हो, मालिक के मेहमान के आगे भी अपना कमाल दिखाओ। खाना तो हम लोग बाद में भी खा लेंगे। अब्दुल्ला इस बात पर राजी हो गया।

दो-चार मिनट ही में वे दोनों मुख्य कक्ष में आ गए। अब्दुल्ला वाद्य वादकों के कपड़े पहने था और उसके हाथ में दफ था। मरजीना ने नृत्यांगना की पोशाक पहनी, सिर पर रेशमी पगड़ी रखी और कमर में सुनहरा पटका बाँधा जिसमें छुरी खोंसी हुई थी। मुख्य कक्ष में आ कर उसने अलीबाबा से अनुमति माँगी कि मेहमान का नृत्य से मनोरंजन उसे करने दिया जाए। अलीबाबा ने खुशी से अनुमति दे दी। डाकू सरदार ने भी मजबूरी में सहमति प्रकट की क्योंकि इनकार करके वह अपने भेद के खुलने का खतरा मोल लेता।

मरजीना ने तरह-तरह के नाच दिखाए। अब्दुल्ला भी कलाकार था। उसने मस्त हो कर दफ बजाया। नृत्य वाद्य वादन से खुश हो कर अलीबाबा और उसके पुत्र ने दोनों को एक एक अशर्फी इनाम में दी। डाकू सरदार ने भी दोनों को एक-एक अशर्फी का इनाम दिया। मरजीना डाकू की नजरों से समझ गई कि अब वह नाच गाना बंद करने का आदेश देने ही वाला है उसने तय किया कि इसी समय यदि डाकू की हत्या न की गई तो वह मालिक और उसके पुत्र की हत्या कर देगा और अभी तक मरजीना ने जो कुछ किया था सब मिट्टी में मिल जाएगा।

मरजीना ने कहा - सरकार, अब मैं आप लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ और अंतिम नृत्य दिखाऊँगी। यह छुरी का नाच कहलाता है और इस देश में मेरे अलावा और कोई इसे नहीं जानता। आप लोग इसे देख कर अति प्रसन्न होंगे। यह कह कर मरजीना ने कमर से छुरी खींच ली। यह छुरी अत्यंत पैनी थी और मोमबत्तियों के प्रकाश में खूब चमचमा रही थी। फिर उसने तेज नाच शुरू कर दिया। छुरी को उसने बड़ी तेजी से घुमाते हुए ऐसा दिखाया कि वह अपने हृदय में छुरी घुसेड़ना चाहती है। फिर यही उसने अब्दुल्ला के साथ किया फिर पाँच-छह बार नाचते-नाचते यह किया कि कभी अपने हृदय तक छुरी की नोक ले जाती कभी अब्दुल्ला के हृदय तक। इस नाच से मेजबान और मेहमान सभी आनंदित हुए। फिर मरजीना नाचते-नाचते अलीबाबा के पास गई और उसके हृदय के ऊपर उसने छुरी की नोक छुआई। दो बार अलीबाबा के साथ यह खेल दिखाने के बाद उसने दो बार यही उसके पुत्र के साथ किया। फिर वह नाचते-नाचते डाकू के पास गई। वह निश्चल बैठा रहा जैसा अलीबाबा और उसके पुत्र ने किया था। लेकिन इस बार मरजीना ने पूरी ताकत से वार किया और पूरी छुरी उसके हृदय में उतार दी। डाकू सरदार एक क्षण तक तड़पने के बाद ठंडा हो गया।

अलीबाबा सदमे से बाहर हुआ तो चीखा, अभागिनी तूने मेरे अतिथि को मार डाला और मेरे सिर पर मित्रघात का कलंक लगा दिया। तुझे इसका दंड दिया जाएगा। मरजीना ने कहा, जो दंड का भागी था उसे दंड मिल गया। आपकी भगवान ने रक्षा की। यह आप का मित्र नहीं परम शत्रु है। आप दो-दो बार देख कर इस डाकू सरदार को नहीं पहचान सके और आज इसके हाथ से मारे जाते। मुझे इसके नमक न खाने से संदेह हुआ और मैंने देख लिया कि यह अपने कपड़ों में क्या छुपाए हैं। यह देखिए। यह कह कर उसने डाकू का वस्त्र हटा कर छुपी हुई छुरी को दिखाया। उसने कहा कि जो काम यह तेल का व्यापारी बन कर न कर सका था वह ख्वाजा हसन बन कर करना चाहता था, आज यह आपकी हत्या किए बगैर न जाता।

अलीबाबा ने उठ कर मरजीना को गले लगा लिया और बोला, तूने कई बार मेरी जान बचाई। मैं तुझे इस अहसान का पूरा बदला तो नहीं दे सकूँगा, फिर भी जो कर सकता हूँ वह करूँगा। मैं तुझे इसी क्षण दासत्व से मुक्त करता हूँ। मैं तुझे अपनी पुत्रवधू बनाना चाहता हूँ। यह कह कर उसने अपने पुत्र से पूछा कि तुम्हें यह प्रस्ताव स्वीकार है या नहीं। उसने तुरंत ही यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और दो-चार दिन में मरजीना से उसका विवाह हो गया।

फिर चारों ने मिल कर डाकू सरदार की लाश को होशियारी से मकान के अंदर इस तरह गाड़ा कि उसका पता किसी को न चले। अब्दुल्ला को भी भारी इनाम मिला। मरजीना के साथ अलीबाबा के पुत्र का विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ और कई दिनों तक नाच रंग होते रहे। कुछ दिनों बाद अलीबाबा ने अपने पुत्र को डाकुओं के छुपे हुए खजाने का हाल विस्तारपूर्वक बताया। वह उसे वहाँ ले भी गया और गुफा के द्वार खोल कर भी दिखाया। कई दिनों तक वे दोनों पता लगाते रहे कि कोई डाकू बचा है या नहीं। जब कई दिन तक किसी घोड़े की टापों के निशान न देखे और खजाने में भी कोई घटत-बढ़त न देखी तो दोनों कई दिनों में थोड़ा-थोड़ा खजाना छुपा कर अपने घर में लाते रहे और गुफा को खाली कर दिया। फिर उन दोनों ही ने नहीं उनकी कई पीढ़ियों ने सुख से जीवन व्यतीत किया।

शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने उसे और कहानी सुनाने के लिए कहा। उस दिन सवेरा हो गया था इसलिए अगले दिन शहरजाद ने नई कहानी शुरू की।

अलीबाबा और चालीस लुटेरों की कहानी

अगली रात को मलिका शहरजाद ने नई कहानी शुरू करते हुए कहा कि फारस देश में कासिम और अलीबाबा नाम के दो भाई रहते थे। उन्हें पैतृक संपत्ति थोड़ी ही मिली थी। किंतु कासिम का विवाह एक धनी-मानी व्यक्ति की पुत्री से हुआ था। उसे अपने ससुर के मरने पर उसकी बड़ी दुकान उत्तराधिकार में मिली और जमीन में गड़ा धन भी। इसलिए वह बड़ा समृद्ध व्यापारी बन गया। अलीबाबा की पत्नी निर्धन व्यक्ति की पुत्री थी इसलिए वह बेचारा गरीब ही रहा। वह अपने तीन गधे ले कर रोजाना जंगल में जाता और वहाँ लकड़ियाँ काट कर गधों पर लाद कर शहर लाता और उन्हें बेच कर पेट पालता।

एक दिन अलीबाबा ने जंगल में जा कर लकड़ियाँ काटीं और उन्हें गधों पर लादा। वह उन्हें हाँक कर नगर की आरे आने ही वाला था कि एक ओर उड़ती हुई धूल को देख कर ठिठक गया। कुछ देर में उसे उस धूल के अंदर से सवार आते हुए दिखाई दिए। वह उनको देख कर घबरा गया।

वह समझ गया था कि यह लुटेरे हैं, मेरे पास कुछ नहीं है तो वे मुझे मार कर मेरे गधों ही को ले जाएँगे। वह सोचने लगा कि जल्दी से जंगल से निकल जाए किंतु यह संभव न था क्योंकि सवार बड़ी तेजी से आ रहे थे। उसने अपने गधों को इधर-उधर हाँक दिया और खुद एक घने पेड़ पर चढ़ गया जहाँ से वह तो सब कुछ देख सकता था लेकिन उसे कोई नहीं देख सकता था।

उस वृक्ष के पास एक बहुत ऊँचा पहाड़ था। सवार आ कर उसी पहाड़ के पास उतर पड़े। अलीबाबा को निश्चय हो गया कि यह डाकू हैं। उनके पास बड़े-बड़े बोरे थे। जिनमें परदेशी यात्रियों से लूटी हुई संपत्ति थी। अलीबाबा ने गिन कर देखा तो वे संख्या में चालीस थे। घोड़ों से उतर कर उन्होंने उनकी लगामें उतार दीं और सोने-चाँदी से भरी बोरियाँ उतार लीं। फिर उनके सरदार ने पहाड़ की खड़ी चट्टान के पास जा कर कहा, खुल जा समसम। समसम अरबी में तिल को कहते हैं।

सरदार के यह कहते ही खड़ी चट्टान में एक द्वार खुल गया। सरदार और उसके उनतालीस साथी उस दरवाजे से हो कर अंदर चले गए। उनके अंदर जाने पर वह द्वार बंद हो गया और चट्टान जैसी की तैसी लगने लगी। अलीबाबा ने एक बार सोचा कि पेड़ से उतरे और सारी लगामें एक घोड़े पर लाद कर उस पर चढ़ कर भाग जाए ताकि वे उसका पीछा न कर सकें। किंतु डर था कि इस अवधि में वे निकल आए तो उसे मार ही डालेंगे। उसका सोचना ठीक था। क्योंकि थोड़ी ही देर में दरवाजा खुला और सारे लुटेरे बाहर आ गए। सबके बाद सरदार निकला और निकल कर बोला, बंद हो समसम। उसके यह कहते ही दरवाजा बंद हो गया और चट्टान पूर्ववत हो गई। इसके बाद इन लुटेरों ने अपने-अपने घोड़ों पर जीनें कसीं और लगामें लगाईं और खाली बोरियाँ ले कर जिधर की ओर से आए थे उधर ही की ओर चले गए। स्पष्ट था कि वे दूसरी बार डाका मारने जा रहे थे। कुछ ही देर में वे नजरों

से गायब हो गए और उनके घोड़ों के सुमों से उड़ी हुई धूल भी बैठ गई।

उन लोगों के प्रस्थान के कुछ देर बार अलीबाबा पेड़ से उतरा। उस समय तक उसे विश्वास हो गया था कि लुटेरे जल्द वापस न आएँगे। वह चट्टान के पास गया और उसने चाहा कि इस बात की परीक्षा करें कि वह भी दरवाजे को खोल सकता है या नहीं। चुनांचे उसने जोर से कहा, खुल जा समसम। उसके यह कहते ही चट्टान में दरवाजा खुल गया। वह अंदर गया तो उसने देखा कि गुफा बहुत लंबी-चौड़ी और साफ-सुथरी है। उसे यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि पहाड़ खोद कर कैसे इतनी लंबी-चौड़ी जगह निकाली गई। गुफा का विस्तार तो बहुत था किंतु उसकी छत आदमी की ऊँचाई से कुछ ही अधिक थी। किंतु इधर-उधर पहाड़ के ढलान पर बने हुए सुराखों से उसमें ऐसी रोशनी आ रही थी कि सब कुछ दिखाई दे रहा था।

अलीबाबा ने देखा कि वह पूरी गुफा मूल्यवान वस्तुओं से भरी पड़ी है। हर प्रकार के माल की गठरियाँ वहाँ रखी दिखाई दीं। कई जगह फर्श से ले कर छत तक बहुमूल्य वस्त्रों यथा कमख्वाब, चिकन, अतलस आदि के थान कायदे से रखे हुए थे। इसके अतिरिक्त बहुमूल्य मसालों और कपूर आदि की पेटियाँ थीं। गुफा के एक सिरे पर कई संदूक और कई घड़े अशर्फियों, रुपयों आदि से भरे हुए रखे हुए थे। अलीबाबा के सामने स्पष्ट हो गया कि यह सारी संपत्ति इन चालीस लुटेरों ही की जमा की हुई नहीं है बल्कि सैकड़ों वर्षों से इन लुटेरों के पूर्वज इसे उस गुफा में जमा करते आए हैं क्योंकि जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक गुफा में मूल्यवान वस्तु रखी दिखाई देती थी।

अलीबाबा के अंदर जाते ही गुफा का द्वार बंद हो गया। यह द्वार इसी प्रकार बना था कि लोगों के अंदर जाते ही अपने आप बंद हो जाता था। अलीबाबा जितनी अशर्फियों की थैलियाँ उठा सकता था उतनी उठा लाया और मंत्र द्वारा दरवाजा खुलवा कर उसने अपने गधों पर थैलियाँ लादीं और उन्हें छुपाने के लिए कुछ लकड़ियाँ रखीं और फिर कहा, बंद हो जा समसम। उसके यह कहते ही गुफा का द्वार बंद हो गया। अलीबाबा रोज की भाँति गधे हाँकता हुआ अपने घर आ गया। घर के अंदर गधे ला कर उसने दरवाजा बंद किया और एक ओर लकड़ियाँ रख दीं और दूसरी ओर अशर्फियों की थैलियाँ। आज उसे लकड़ियों की चिंता नहीं थी। जब वह अशर्फियों को अपनी स्त्री के पास ले गया तो वह बहुत घबराई। उसने समझा कि अलीबाबा इन्हें किसी से लूट कर या किसी के यहाँ से चुरा कर लगाया है। उसने अपने पति को बहुत भला-बुरा कहा और कहने लगी, मैं तो मेहनत की थोड़ी कमाई में खुश हूँ। जो माल तुम लूट कर लाए हो उसे मैं हाथ भी नहीं लगाऊँगी। अलीबाबा ने कहा, तू मूर्ख है। मैंने कोई अपराध करके इन्हें प्राप्त नहीं किया, तुम पूरा हाल सुनोगी तो इस ईश्वरीय देन पर प्रसन्न होगी। यह कह कर उसने सारी कहानी सुना कर अपनी पत्नी को संतुष्ट कर दिया।

अलीबाबा ने उन्हें उसके सामने ढेर कर दिया तो स्त्री की आँखें चौंधिया गईं। फिर वह अशर्फियों को गिनने लगी। अलीबाबा ने कहा, तुम्हें बिल्कुल समझ नहीं है - यह अशर्फियाँ इतनी हैं कि शाम तक गिनती रहोगी। लाओ, मैं गढ़ा खोद कर इन्हें गाड़ देता

हूँ कि किसी को इसका पता न चले। उसकी पत्नी ने कहा, अच्छा, मैं इन्हें गिनूँगी नहीं किंतु अंदाजा जरूर करना चाहती हूँ कि यह कितनी हैं। मैं इन्हें तोल लूँगी। यह कह कर वह कासिम के घर गई और उसकी स्त्री से तराजू माँगने लगी। कासिम की स्त्री को ताज्जुब हुआ कि इन रोज बाजार से लाने और खानेवाले लोगों के पास कौन-सा अनाज आ गया जिसे यह तोलना चाहती है। यह जानने के लिए उसने तराजू के पलड़ों में थोड़ी-थोड़ी चरबी लगा दी ताकि तोली जाने वाली वस्तु कुछ उन में चिपक जाए। अलीबाबा की स्त्री ने अशर्फियाँ तोलीं और अलीबाबा ने घर के आँगन में एक गढ़ा खोदा ओर दोनों ने मिल कर सारी अशर्फियाँ उसमें दबा दीं।

अलीबाबा की स्त्री जब कासिम के घर तराजू वापिस करने गई तो उसने जल्दी में यह न देखा कि तराजू के एक पलड़े में एक अशर्फी लगी रह गई है। वह तो तराजू दे कर लौट आई उधर कासिम की स्त्री ने तराजू में अशर्फी चिपकी देखी तो पहले तो उसकी समझ में न आया। फिर जब समझ में आया कि तराजू में अशर्फियाँ तोली गई हैं तो वह ईर्ष्या की आग में जलने लगी। साथ ही वह इस बात पर आश्चर्य भी करने लगी कि अलीबाबा जैसे गरीब लकड़हारे को इतनी अधिक अशर्फियाँ कहाँ से मिलीं कि उन्हें तोलने की जरूरत पड़ गई। शाम को जब कासिम दुकान बंद करके घर आया तो उसकी स्त्री ने ताने के स्वर में कहा, तुम अपने को बड़ा अमीर समझते हो। तुम अलीबाबा के मुकाबले कुछ नहीं हो। तुम अशर्फियाँ गिन कर रखते हो, वह तोल कर रखता है। कासिम ने कहा, यह तू क्या बक रही है? उसकी स्त्री ने दिन में घटी घटना उसे सुना दी। साथ ही तराजू में चिपकी अशर्फी भी दिखाई जिस पर पुराने जमाने के किसी बादशाह के नाम की मोहर लगी हुई थी।

कासिम को भी जलन के मारे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन तड़के ही उठ कर वह अलीबाबा के घर गया और बोला, भाई, तुम लोगों से अपनी निर्धनता का बहाना क्यों करते हो जब कि तुम्हारे पास अपार संपत्ति है। तुम्हारे पास इतनी अशर्फियाँ हैं कि उन्हें गिनने की तुम्हें फुरसत नहीं है। अलीबाबा को कुछ खटका तो हुआ लेकिन उसने कहा, भैया, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। सभी जानते हैं कि मैं निर्धन लकड़हारा हूँ। कासिम ने कहा, तुम मुझसे झूठ बोलने की कोशिश न करो। वह देखो, इसी प्रकार की अनगिनत अशर्फियाँ कल तुमने तोली थीं या नहीं? उन्हीं को तोलने के लिए तो तुम्हारी स्त्री कल मेरे यहाँ से तराजू माँग लाई थी। यह कह कर उसने अशर्फी अलीबाबा के सामने रख दी।

अब अलीबाबा को मालूम हो गया कि कासिम की स्त्री ने तराजू में कोई चिपकनेवाली चीज लगा कर अशर्फियों का भेद जान लिया है। उसने पिछले दिन की पूरी घटना विस्तारपूर्वक सुनाई। कासिम ने कहा, तुम्हारी बात से मालूम होता है कि डाकू दो चार दिन तक वापस नहीं आएँगे। इसलिए तुम अभी मुझे पूरी तरह बताओ कि वह जगह कहाँ है और उसकी क्या पहचान है। बल्कि तुम आज न जाओ, तुम काफी पैसे ले आए। मुझे यह भी बताओ कि द्वार खोलने का मंत्र क्या है। न बताओगे तो मैं तुम्हें चोरी के इल्जाम में धरवा दूँगा। अलीबाबा ने विवश हो कर उसे सब कुछ बता दिया। कासिम दस खच्चर ले कर उस जंगल की ओर चल पड़ा। उसे जल्दी ही वह जगह मिल गई और उसने खुल जा समसम कहा तो द्वार भी खुल गया।

कासिम खच्चरों को बाहर छोड़ कर गुफा के अंदर गया। उसके अंदर जाते ही दरवाजा बंद हो गया। कासिम ने इतनी दौलत देखी तो आनंद से नाचने लगा। वह हर चीज को अच्छी तरह परख कर देखता रहा। इस चक्कर में उसे न सिर्फ बहुत देर हो गई अपितु वह खुल जा समसम का मंत्र भी भूल गया। आखिर में वह सबसे कीमती सिक्कों और रत्नों के दस भारी बोझ बना कर दरवाजे के पास लाया किंतु चूँकि वह ठीक शब्द भूल गया था इसलिए कभी कहता खुल जा गेहूँ। कभी कहता खुल जा जौ और द्वार बंद का बंद रहता। अब उसकी जान सूखने लगी कि वह इस गुफा में भूखा प्यासा मर जाएगा। संयोग की बात थी कि लुटेरे भी कहीं से लूटपाट करके उसी दोपहर को आ गए। उन्होंने गुफा के बाहर दस खच्चर बँधे देखे तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इन खच्चरों को यहाँ कौन लाया है। आसपास देखा तो कोई दिखाई नहीं दिया।

अंत में उन्होंने खच्चरों की चिंता छोड़ कर अपनी लाई हुई संपत्ति को गुफा में रखने की सोची। सरदार ने कहा, खुल जा समसम, और यह कहते ही दरवाजा खुल गया। कासिम यह तो समझ ही गया था कि लुटेरे आ गए हैं। वह दरवाजा खुलते ही जान बचाने के लिए बाहर भागा लेकिन डाकुओं ने उसे वहीं दबोच लिया। वे उसे घसीट कर गुफा के अंदर ले गए और उसे मार कर उसके शरीर के चार टुकड़े कर दिए। वे लोग देर तक इस बात पर बहस करते रहे कि इस आदमी को इस गुफा का भेद कैसे मालूम हुआ। और किसने इसे गुप्त द्वार खोलने की तरकीब बताई।

देर तक बहस करने के बाद भी वे किसी नतीजे पर न पहुँचे। उन्होंने तय किया कि लाश को गुफा के अंदर ही सड़ने दिया जाए क्योंकि बाहर फेंकने से यह खतरा था कि औरों की निगाह पड़ेगी। उन्होंने दरवाजे के पास ही इधर-उधर लाश के टुकड़े फेंक दिए और लूट का माल रख कर जल्दी से बाहर आ गए। जल्दी और कासिम के द्वारा की हुई गड़बड़ से उन्हें यह न मालूम हुआ था कि अशर्फियाँ कम हो गई हैं। वे बाहर आ कर कासिम के खच्चर भी हाँक ले गए और आश्वस्त हो गए कि अब इनका भेद कोई नहीं जानता।

इधर रात होने पर भी जब कासिम घर वापस नहीं लौटा तो उसकी स्त्री अलीबाबा के घर आई। उसे यह तो मालूम नहीं था कि अलीबाबा और कासिम में क्या बात हुई थी और अलीबाबा ने उसे क्या बताया था। उसने अलीबाबा से कहा, देवर जी, तुम्हारे भाई साहब दिन में दस खच्चर ले कर न जाने कहाँ चले गए हैं। मुझ से कह गए कि दो तीन घंटों में वापस आ जाऊँगा। देर हुई तो मैंने दुकान में भी पुछवाया। वहाँ नौकरों ने बताया कि आज मालिक आए ही नहीं। अब रात हो गई है। अभी तक वह नहीं आए हैं। समझ में नहीं आता क्या करूँ और किससे पूछूँ, तुम्हीं कुछ पता लगाओ उनका।

अलीबाबा का माथा ठनका कि जंगल में कहीं कुछ गड़बड़ हो गई। प्रकट में उसने कहा, भाभी, घबराओ नहीं। भैया होशियार आदमी हैं, कोई बच्चे नहीं हैं। किसी जरूरी काम से कहीं रह गए होंगे। सुबह तक आ ही जाएँगे। वैसे भी रात को कहाँ तलाश किया जाए। शहर का फाटक भी बंद हो गया होगा इसलिए बाहर भी नहीं जाया जा सकता। कासिम की पत्नी विवश हो कर घर लौट गई। वह रात भर अपने पति के लिए व्याकुल रही और

चुपके-चुपके रोती रही। उसे आवाज इसलिए दबानी पड़ी कि उसे पति के गायब हो जाने में किसी रहस्य का आभास हो गया था और वह यह नहीं चाहती थी कि इस बात का पता पड़ोसियों को चले। वह बार-बार स्वयं को धिक्कारती थी कि उसे अलीबाबा के भाग्य से क्यों ईर्ष्या हुई और क्यों उसने अपने पति को उकसाया, अब न जाने वह किस मुसीबत में पड़ा हो।

सुबह वह फिर अलीबाबा के पास गई और उसने कहा, तुम्हारे भाई अब तक नहीं लौटे। कुछ पता लगागो। अलीबाबा ने अपनी भावज को सांत्वना दे कर उसके घर भेजा और खुद अपने तीनों गधे ले कर जंगल में गया और उसी गुफा के पास पहुँचा। उसे वहाँ अंदर की ओर से रिसा हुआ कुछ खून दिखाई दिया बाहर दस खच्चरों में से एक भी न था। उसे विश्वास हो गया कि कासिम के साथ बुरी बीती। उसने इधर-उधर देख कर कहा, खुल जा समसम। दरवाजा खुल गया और उसके अंदर जाते ही बंद हो गया।

अंदर जाते ही अलीबाबा चौंक पड़ा। दरवाजे के पास ही दोनों ओर कासिम की लाश के दो-दो टुकड़े पड़े थे। उसे समझने में देर न लगी कि कासिम के रहते ही डाकू वापस आ गए और उन्होंने उसे मार डाला और खच्चर भी ले गए। उसने वहीं से एक चादर उठा कर कासिम के शरीर के टुकड़ों की गठरी बनाई। ढेर सारी और अशर्फियाँ भी दो बोरियों में भरीं और मंत्र से द्वार खोल कर बाहर आ गया। उसने एक गधे पर कासिम की लाश और बाकी दो पर अशर्फियाँ लादीं और उन्हें लकड़ियों से छिपा कर होशियारी से शहर में होता हुआ अपने घर आया। उसने अशर्फियों की बोरियाँ अपनी पत्नी को दीं किंतु कासिम का कुछ हाल उसे नहीं बताया और तीसरा गधा ले कर वह कासिम के घर पहुँचा। आवाज देने पर कासिम की दासी ने, जिसका नाम मरजीना था और जो बहुत होशियार थी, दरवाजा खोला। अलीबाबा ने गधा अंदर करके दरवाजा बंद कर लिया और मरजीना को कासिम के बारे में बताया और कहा, समझ में नहीं आता इसकी मौत कैसे बताई जाए और इस टुकड़े-टुकड़े शरीर को कैसे दफन किया जाय। मरजीना ने कुछ सोच कर कहा, आप मालकिन को सँभालें। बाकी काम मैं ठीक कर लूँगी।

अलीबाबा अपनी भावज के पास गया तो उसने कहा, क्या खबर लाए? भगवान सब भला करें। तुम्हारे चेहरे पर दुख दिखाई देता है। अलीबाबा ने उसे कासिम की लाश के चार टुकड़ों में मिलने की बात बताई। वह चीख कर रोने लगी तो अलीबाबा ने उसे डाँट कर कहा, क्या करती हो भाभी? भैया तो गए ही, क्या अब रो-पीट कर तुम सारा भेद खोलना चाहती हो? लोगों को अस्लियत मालूम हुई तो हम सब की जानों पर बन आएगी। या तो शहर कोतवाल हमारे धन के लालच में हम पर कासिम की हत्या का आरोप लगा कर फाँसी दे देगा या डाकुओं को पता चला तो वे आ कर हमें मार डालेंगे। कासिम की स्त्री ने कहा, मैं कहाँ जाऊँगी, क्या करूँगी? मेरा तो कोई लड़का भी नहीं जो दुकान सँभाले। अलीबाबा बोला, बाद में सब ठीक हो जाएगा, मैं तुमसे विवाह कर लूँगा। मेरी स्त्री सुशील है, वह तुमसे झगड़ा न करेगी। पहले भैया के दफन का प्रबंध तो कर लें। कासिम की स्त्री चुपचाप आँसू बहाने लगी।

उधर मरजीना पहले एक अत्तार की दुकान पर गई और उसे मरणासन्न रोगी को दी जानेवाली दवा माँगी। अत्तार ने पूछा कि ऐसा बीमार कौन है तो उसने कहा कि मेरे मालिक की दशा बहुत खराब है। अत्तार ने एक दवा दी और कहा कि इससे ठीक न हो तो फिर आना, मैं और प्रभावकारी औषधि दूँगा। मरजीना दवा ले कर एक बूढ़े मोची के पास, जो दूर के एक मुहल्ले में रहता था, गई। मोची का नाम मुस्तफा था। उसकी दुकान में अँधेरा सा था लेकिन वह डट कर काम कर रहा था। मरजीना बोली, बाबा मुस्तफा, तुम तो बड़े होशियार आदमी मालूम होते हो, इतने अँधेरे में ऐसी नाजुक सिलाई कर रहे हो। मोची हँस कर बोला, लड़की, तू समझती क्या है। मैं तो इससे अधिक अँधेरे में तुझे काट कर दुबारा जोड़ दूँ। मरजीना ने पास आ कर फुसफुसा कर कहा, बाबा, मुझे तुम मत काटो जोड़ो। लेकिन एक ऐसा ही काम है। दाम अच्छे मिलेंगे, लेकिन किसी को पता न चले। एक अशर्फी मिलेगी। अशर्फी के लालच में बूढ़ा तैयार हो गया। मरजीना ने कहा, किंतु उस चौराहे के आगे मैं तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध दूँगी। बूढ़ा पहले इस पर तैयार नहीं हुआ। किंतु जब उसे मरजीना ने एक अशर्फी और देने का वादा किया तो वह तैयार हो गया।

उस समय तक अँधेरा हो गया था। चौराहे पर आ कर मरजीना ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और गलियों-गलियों उसे अपने घर तक लाई। बूढ़ा घाघ था। वह अपने कदम गिनता गया और मोड़ों का ध्यान रखता गया। घर ले जा कर उसने एक कोठरी में रखी कासिम की लाश उसे दिखा कर कहा, इन टुकड़ों को सी कर एक पूरा शरीर बनाना है। मुस्तफा को और भेद जान कर क्या करना था। उसने घंटे दो घंटे में टुकड़े सी कर पूरा शरीर बना दिया। मरजीना ने उसे दो के बजाय तीन अशर्फियाँ दीं और कहा, मैं तुम्हें जिस तरह लाई थी उसी तरह वापस तुम्हारी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर पहुँचा दूँगी। यह अतिरिक्त अशर्फी इसलिए है कि तुम इस बात को गुप्त रखो। मुस्तफा ने यह वादा कर लिया।

मरजीना रात ही में मुस्तफा को उसकी दुकान के सामनेवाले चौराहे पर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर छोड़ आई। घर में उसने और अलीबाबा ने मिल कर लाश को नहलाया और कफन में लपेट दिया। दूसरी सुबह मरजीना फिर रोती हुई अत्तार के पास गई और उससे कहा, जो दूसरी दवा तुम कहते थे वह दे दो। मालिक की हालत अब तब हो रही है। मालूम नहीं यह दवा भी वे ले सकेंगे या पहले ही दम तोड़ देंगे।

अत्तार ने दवा दे दी और मरजीना चली गई। अत्तार ने और लोगों को भी कासिम की हालत के बारे में बताया। कासिम मुहल्ले का प्रतिष्ठित व्यक्ति था इसलिए कई आदमी उसके द्वार पर उसका हाल पूछने आ गए। कुछ ही देर में घर के अंदर से रोने-पीटने की आवाजें आने लगीं और दस-पाँच मिनट में अलीबाबा आँसू पोंछते हुए आया। उसने लोगों को बताया कि कल सुबह ही कासिम को जानलेवा रोग हुआ और आज सुबह उसने दम तोड़ दिया।

सब लोगों ने इस पर खेद प्रकट किया। मुहल्ले के और बहुत से लोग आए। मसजिद के

इमाम भी आ गए। लाश को मुहल्ले के कब्रिस्तान में ले जा कर दफन कर दिया गया। मसजिद के इमाम ने जनाजे की नमाज पढ़ी और इस तरह कासिम की बीमारी से स्वाभाविक मृत्यु की बात मुहल्ले में मशहूर हो गई। अलीबाबा ने चालीस दिन तक घर में बैठ कर अपने भाई के लिए रस्म के अनुसार शोक किया। चेहल्लुम के बाद वह अपने बड़े भाई के घर में, जो स्वभावतः ही काफी लंबा और चौड़ा था, आ गया और उसकी पत्नी और एकमात्र पुत्र वहीं रहने लगे। मातम की मुद्दत खत्म होने के बाद अलीबाबा ने अपनी विधवा भावज के साथ निकाह कर लिया था। अलीबाबा का पुत्र जो किसी व्यापारी के साथ व्यापार का काम सीख चुका था, कासिम की दुकान को सँभालने लगा और अलीबाबा घर में आराम से रहने लगा।

उधर दो-चार दिन बाद लुटेरे फिर गुफा में आए तो उन्हें यह देख कर घोर आश्चर्य हुआ कि जिस आदमी को मारा गया था उसकी लाश के टुकड़े गायब हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि अशर्फियों के ढेर में से चार-पाँच बोरी अशर्फियाँ भी गायब हो गई हैं। डाकुओं ने सोचा कि यह तो बहुत बुरी बात हुई, मृत मनुष्य के अलावा भी कोई आदमी ऐसा है जो गुफा के भेद को और उसे खोलने की तरकीब को जानता है, वह मृतक के शरीर के टुकड़े भी उठा ले गया है और धन को भी। स्पष्ट है कि वह मृतक का कोई संबंधी होगा लेकिन जब मृतक ही का पता नहीं तो संबंधी का पता कैसे चले।

सरदार ने कहा, भाइयो, हाथ पर हाथ धर कर बैठने से काम नहीं चलेगा। जो आदमी हमारा भेद जानता है वह हमारे और हमारे पुरखों के जमा किए धन को लूट ले जाएगा। हम में से कोई यहाँ रह भी नहीं सकता क्योंकि हमने अपने निवास स्थान से दूर संग्रह स्थान बनाया है, यहाँ किसी के रहने से हमारा भेद खुल जाएगा। तुम लोगों में से जो सबसे होशियार हो वह शहर में जा कर मुहल्ले-मुहल्ले घूम-घूम कर पता लगाए और होशियारी से काम करे। अभी सिर्फ यह जानने की जरूरत है कि कौन आदमी टुकड़े-टुकड़े कर के मारा गया है और दफन हुआ है। बाकी काम बाद में देखा जाएगा। जो यह पता लगाएगा वह लूट के माल में अपने हिस्से के अलावा भारी इनाम पाएगा। किंतु यह भी शर्त है कि असफलता की स्थिति में उसे प्राणदंड दिया जाएगा।

एक डाकू ने इस काम का बीड़ा उठाया। वह शहर में आ कर कई मुहल्लों में टोह लेता फिरा किंतु उसे कुछ पता न चला। संयोग से वह मुस्तफा मोची के पास जा निकला। उसने कहा बाबा, तुम इस उम्र में भी अँधेरी जगह में ऐसी होशियारी से काम करते हो। बूढ़ा तारीफ सुन कर फूल गया। प्रतिज्ञा भूल कर बोला, अरे यह काम क्या है? कुछ दिन पहले मैंने इससे भी अँधेरे में एक लाश के चार टुकड़ों को सी कर एक पूरा शरीर बनाया था। डाकू ने बनावटी ताज्जुब से कहा, कटे आदमी को तुमने क्यों सिया? मुस्तफा ने कहा, भाई, मैंने तुम्हें गलती से वह बात बताई है। मैंने उस बात को गुप्त रखने का वादा किया था। अब मैं इस बारे में तुम से कोई बात नहीं करूँगा, बल्कि तुमसे कोई बात भी नहीं करूँगा।

डाकू ने उसके हाथ पर एक अशर्फी रखी और कहा, मैं इस बात को बिल्कुल नहीं पूछूँगा।

तुम सिर्फ यह करो कि मुझे वह मकान बता दो जहाँ पर तुमने लाश के टुकड़े सिए थे। मुस्तफा घबराया। उसने कहा, तुम अपनी अशर्फी वापस ले लो। मकान मैं इसलिए नहीं बता सकता कि एक दासी उस चौराहे से मुझे रात के समय आँखों पर पट्टी बाँध कर ले गई थी और उसी तरह वहाँ छोड़ गई थी। डाकू ने उसे एक अशर्फी और दी कहा, बाबा, तुम बहुत होशियार आदमी हो। मैं रात में आऊँगा और तुम्हारी आँखों में पट्टी बाँधूँगा। तुम मुझे वहाँ ले चलो।

बूढ़े को लालच आ गया। उसने कहा, अच्छा भाई, तुम रात को आना। काम बड़ा खतरनाक है लेकिन तुम इतना जोर देते हो तो करना ही पड़ेगा। रात में भी मुस्तफा ने दुकान बंद नहीं की पर दुकान में दिया भी नहीं जलाया। डाकू के आने पर वह उसे चौराहे पर ले गया जहाँ डाकू ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी। मुस्तफा अपने कदमों को गिनता और निश्चित संख्या के बाद दाएँ या बाएँ मुडने को कहता। अंत में वह एक जगह ठहर गया और बोला कि यहीं तक आया था और उस ओर के मकान में मुझे दासी ले गई थी। डाकू ने उसकी आँखें खोल कर कहा, बता सकते हो कि वह कौन सा मकान है और किसका है। आँखें खोल कर मैं अपनी दुकान के चौराहे पर वापस भी नहीं जा सकता, तुम मुझे पट्टी बाँध कर ही वापस ले चलो। यहाँ किसका कौन सा मकान है यह मैं नहीं जानता, मैं दूर के मुहल्ले में रहता हूँ।

डाकू ने उससे बहस न की। मोची ने बंद आँखों से जो मकान बताया था उसके दरवाजे पर उसने खड़िया से एक निशान बना दिया। फिर वह मुस्तफा की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसकी दुकान के चौराहे पर छोड़ गया। रात भर वह उसी नगर में अपने निवास स्थान पर रहा। दूसरे दिन सुबह उठ कर वह अपने दल में गया और सारा हाल बताया कि किस तरह फलाँ मुहल्ले के बूढ़े मोची की आँखों में पट्टी बाँध कर वह उस मकान में गया जहाँ मोची ने चार टुकड़ों को सी कर पूरी लाश बनाई थी और स्पष्टतः वह उसी आदमी की लाश थी जिसे हमने मारा था। सरदार ने कहा, ठीक है, आज रात को मेरे साथ चल कर तुम मुझे वह मकान दिखाना।

इधर सुबह मरजीना घर से बाहर निकली तो उसे अपने द्वार पर खड़िया का निशान मिला। उसे खटका हो गया क्योंकि उसे डाकुओं के बारे में मालूम था। उसने हाथ में खड़िया ली और आसपास के दस बारह मकानों पर ठीक वैसा ही निशान बना दिया जैसा उसके मकान पर बना हुआ था। रात को जासूस डाकू अपने सरदार और दो-एक और साथियों के साथ वहाँ आया तो देखा कि कई मकानों पर वैसे ही निशान बने हैं।

जासूस डाकू यह देख कर बहुत परेशान हुआ। वह उस मकान को बिल्कुल न पहचान सका जिस पर उसने निशान लगाया था। उसने कसमें खा कर कहा कि मैंने एक ही दरवाजे पर निशान लगाया था और बिल्कुल नहीं जानता कि अन्य दरवाजों पर निशान कैसे बन गए। सरदार अपने सभी साथियों को ले कर जंगल में आया और पहले घोषित की हुई शर्त के मुताबिक उसे मृत्युदंड दिया गया। याद रखना चाहिए कि डाकू जितने निर्मम और लोगों के लिए होते हैं उतने ही अपने साथियों के लिए भी होते हैं और ऐसे मौकों पर इस बात

का खयाल नहीं करते कि उनका कोई साथी उनके प्रति अब तक कितना वफादार रहा है।

खैर, उस जासूस डाकू को मारने और उसकी लाश ठिकाने लगाने के बाद डाकू फिर सोच-विचार करने लगे कि कैसे उस आदमी का पता लगाया जाए जो गुफा का भेद जान गया है। सरदार ने इनाम की रकम बढ़ा दी और उस का कुछ हिस्सा पेशगी देने का वादा किया। कुछ देर के बाद एक और डाकू ने बीड़ा उठाया कि उस आदमी का पता लगाऊँगा जो गुफा में जा कर अशर्फियाँ भी ले गया और मृत व्यक्ति का शव भी। सरदार ने उसे पेशगी इनाम दे कर विदा किया। वह डाकू कुछ दिनों तक इधर-उधर पूछता रहा फिर वह भी मुस्तफा मोची के पास पहुँचा। मुस्तफा को इस तरह भारी इनाम पाने की आदत पड़ गई थी और उसे यह विश्वास हो गया था कि इस सौदे में उसे किसी तरह का खतरा नहीं है इसलिए वह कुछ ही देर में इस बात के लिए तैयार हो गया कि रात को उसे आँखों पर पट्टी बाँध कर इच्छित भवन तक ले जाया जाए। दूसरे जासूस डाकू ने वहाँ पहुँच कर और मकान के बारे में आश्वस्त हो कर उस पर लगे हुए सफेद निशान के बगल में एक लाल निशान लगा दिया है और अच्छी तरह याद रखा कि सफेद निशान के किस ओर लाल निशान लगा है।

मरजीना की तेज निगाहों से दूसरी बार को वह लाल निशान भी नहीं बच सका। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि कोई बुरी नीयत से कासिम के घर को, जिसमें अब अलीबाबा रहता था, चिह्नित करना चाहता है। उसने सुबह ही सुबह पड़ोस के सारे मकानों में सफेद निशानों की बगल में वैसे ही छोटे लाल निशान बना दिए।

इधर दूसरा जासूस डाकू अपने सरदार के पास गया और उससे कहने लगा कि मैंने अबकी ऐसा निशान लगाया है जो आसानी से किसी को दिखाई भी नहीं देगा। सरदार दो साथियों और जासूस डाकू को ले कर रात में वहाँ पहुँचा तो सब ने देखा कि पहले जैसा ही धोखा हुआ है। मुहल्ले के सारे मकानों पर एक ही जैसे निशान बने हुए हैं। दूसरा जासूस डाकू भी बड़ा लज्जित हुआ और जब डाकू अपने अड्डे पर पहुँचे तो वह सरदार से अपने प्राणों की भीख माँगने लगा। किंतु सरदार किसी प्रकार की ढिलाई दिखा कर दल का अनुशासन कमजोर नहीं करना चाहता था इसलिए उसने उसे भी मरवा दिया।

दो-दो जासूस डाकुओं की असफलता और मौत देख कर अब कौन वांछित व्यक्ति का पता लगाने को तैयार होता। इसलिए सरदार ने स्वयं ही यह काम करना तय किया। वह भी मुस्तफा मोची के यहाँ पहुँचा और उसे अशर्फियाँ दे कर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर अलीबाबा के मकान के सामने पहुँचा। वह देख चुका था कि मकान पर निशान लगाने की विधि दो बार असफल रही थी, इसलिए उसने घूम-फिर कर सारे मकानों की अच्छी तरह पहचान की। अलीबाबा के मकान के विशेष चिह्नों को भी याद रखा। दूसरे दिन दोपहर के समय उस मुहल्ले में जा कर पूछताछ की और अलीबाबा के बारे पता लगाया कि वह शांत और सौम्य स्वभाव का अतिथिप्रेमी व्यक्ति है।

डाकुओं के सरदार ने अपने अड्डे पर वापस जा कर अलीबाबा को मारने की योजना बनाई। वह यह काम चुपचाप करना चाहता था। उसने अपने आदमियों को भेज कर अड़तीस बड़े-बड़े तेल के कुप्पे जिनमें एक आदमी सिकुड़ कर आसानी से बैठ सकता था तथा उन्नीस खच्चर मँगाए। उसे अपने बचे हुए सैंतीस साथियों को एक-एक कुप्पे में बिठाया और संतुलन पूरा करने के लिए एक कुप्पे में ऊपर तक तेल भरवाया। फिर एक-एक खच्चर पर दो-दो कुप्पे इधर-उधर लटका कर शहर को चल दिया। सरदार ने कुप्पों के अलावा सैंतीस आदमियों के लिए भोजन भी उनके पास रखवा दिया।

सब के पास एक-एक तेज छुरी भी थी। सरदार ने योजना सबको समझाई कि हम लोग अलीबाबा के घर में ठहरेंगे और आधी रात को जब कुप्पों पर मेरी फेंकी हुई कंकड़ियाँ लगे तो सभी डाकू छुरियों से अपने-अपने कुप्पों को चीर कर निकल आएँ और अलीबाबा तथा उसके परिवार के सदस्यों की हत्या करके रात ही रात चुपचाप शहर में इधर-उधर छुप जाएँ और सुबह शहर से बाहर निकल कर अपने अड्डे पर वापस आ जाएँ। सभी डाकुओं को यह योजना पसंद आई।

शाम को दिया जलने के बाद सरदार व्यापारी के वेश में अपने उन्नीस खच्चर लिए हुए अलीबाबा के घर पहुँचा। उसने खच्चर बाहर रहने दिए और खुद अंदर गया। अलीबाबा अपनी बैठक में बैठा था। सरदार ने उसे सलाम करके कहा, महाशय, मैं बाहर से आया हुआ तेल का व्यापारी हूँ और यहाँ के व्यापारियों के हाथ बेचने के लिए तेल लाया हूँ। मुझे रास्ते में देर लग गई और इस समय किसी सराय में जगह भी नहीं मिली। यदि आप अनुमति दें तो आपके अहाते में अपने खच्चर बाँध दूँ और तेल के कुप्पे रखवा दूँ। सुबह उन्हें फिर खच्चरों पर लाद कर तेल की मंडी में चला जाऊँगा।

अलीबाबा ने उसको अतिथि बनाना मंजूर कर लिया। उसने अपने आदमी से कुप्पे उतरवाए और खच्चरों के लिए घास की व्यवस्था करने को कहा किंतु डाकू सरदार ने कहा कि मेरे पास खच्चरों का दाना है। अलीबाबा उसके बदले हुए वेश में उसकी आवाज भी नहीं पहचान सका। उसने कहा, आप मेरे साथ भोजन करें और आप के लिए बाहर की ओर एक कमरा खाली कर दिया है, उसमें सोएँ। इसे अपना ही घर समझें। उसने मरजीना से कहा कि मेहमान के लिए अच्छा भोजन पकाओ। साथ ही उसने आज्ञा दी, कल सुबह मैं हम्माम में स्नान करना चाहता हूँ इसलिए मेरे नौकर अब्दुल्ला को मेरे नए कपड़ों का एक जोड़ा निकाल कर दे देना। साथ ही स्नान के पूर्व मैं पौष्टिक यखनी (मांस रस) पीना चाहता हूँ, वह भी रात ही में चढ़ा देना ताकि सुबह तक भली-भाँति तैयार हो जाए। मरजीना ने कहा, यह सारी बातें हो जाएँगी।

डाकू सरदार और अलीबाबा भोजन करके अपने-अपने कमरों में जा कर लेटे और सो गए। डाकू ने सोचा था कि एक नींद ले लूँ क्योंकि आधी रात के बाद तो रात भर जागना ही था। इधर मरजीना ने अलीबाबा के लिए कपड़े निकाल कर अब्दुल्ला को दिए। फिर वह यखनी चढ़ाने की तैयारी करने लगी। संयोग से उसी समय रसोई के दिए का तेल खत्म हो गया। घर में जलाने का तेल भी नहीं था। वह परेशान हुई तो अब्दुल्ला ने कहा, रोती क्यों है।

व्यापारी के इतने सारे कुप्पे रखे हैं। जरा-सा तेल उससे ले ले, व्यापारी को क्या पता चलेगा? मरजीना ने कहा, फिर तू ही तेल ले आ। अब्दुल्ला बोला, मुझे तो सुबह जल्दी उठ कर मालिक के साथ हम्माम को जाना होगा। मैं तो सोने के लिए जाता हूँ। तू ही तेल ला। यह कह कर अब्दुल्ला चला गया।

मरजीना एक कटोरा ले कर तेल लेने एक कुप्पे के पास पहुँची तो उसमें छुपे डाकू ने समझा कि सरदार आया है। उसने पूछा, समय हो गया है क्या सरदार? मरजीना चौंक कर खड़ी हो गई। किंतु उसने अपने होश-हवाश दुरुस्त रखे। एक क्षण बाद भारी आवाज करके बोली, अभी नहीं। फिर वह सभी कुप्पों के पास गई जहाँ उससे वही सवाल किया गया और उसने वहीं जवाब दिया। सिर्फ एक कुप्पे में उसे ऊपर तक भरा हुआ तेल मिला। उसने जल्दी से तेल ले कर यखनी चढ़ाई फिर बड़ी भट्टी में आग जला कर उस पर घर की सबसे बड़ी देग रखी। फिर कई बार जा कर उसने कुप्पे का सारा तेल देग में डाल दिया। जब तेल खूब खौल गया तो उसने अंदाजे से डोई में खौलता तेल ले कर एक-एक करके सभी कुप्पों में डाल दिया। वे डाकू साँस घुटने से पहले ही अधमरे थे, खौलता तेल ऊपर गिरा तो तड़प कर मर गए, उनकी चीखें भी तेज न निकलीं। यह सब करके मरजीना यखनी तैयार करने लगी।

आधी रात को डाकू सरदार ने कंकड़ियाँ फेंकनी शुरू की लेकिन किसी कुप्पे में कोई हरकत नहीं हुई। हालाँकि चाँदनी में सब कुछ दिखाई दे रहा था, सरदार ने समझा कि डाकू सो गए हैं। वह झुँझलाता हुआ उठा। खामोशी से दरवाजा खोल कर वह अहाते के अंदर गया और कुप्पे में ठोकर मार कर डाकू को जगाना चाहा। फिर भी कोई हरकत न हुई तो उसने कुप्पे में झाँक कर देखा। उसे तेल और जले हुए मांस की गंध आई। उसने कुप्पे का मुँह खोला तो अंदर जला और मरा हुआ साथी निकला। फिर वह दूसरे कुप्पों के पास गया। सभी में उसने यह हाल देखा कि डाकू जले और मरे पड़े हैं। उसने यह भी देखा कि तेल का कुप्पा खाली पड़ा हे। वह समझ गया कि किसी ने उसी के तेल से उसके साथियों को मार डाला है। वह अपने भाग्य को कोसने लगा। कहाँ तो वह यह सोच कर आया था कि अलीबाबा को मार कर अपना कोष सुरक्षित करे, यहाँ यह हो गया कि उसका पूरा दल ही खत्म हो गया। डाकू सरदार थोड़ी देर के लिए जड़वत हो कर सिर पर हाथ धरे बैठा रहा।

फिर उसने स्वयं को व्यवस्थित किया। उसके लिए अपनी जान बचाना जरूरी था। दल तो धीरे-धीरे फिर बन जाता, वह दरवाजे को खोल कर नहीं जा सकता था क्योंकि उसमें ताला लगा हुआ था। इसलिए वह दीवार पर चढ़ा और बाहर सड़क पर कूद गया और भागता हुआ दूर जा कर कहीं छुप रहा। मरजीना ने उसे अपने कमरे से निकलते, कुप्पों के पास जाते और फिर दीवार पर चढ़ कर बाहर छलाँग मारते देखा। उसने सोचा कि डाकुओं का दल तो समाप्त हुआ लेकिन उनका सरदार बच रहा है। वह अकेला क्या कर लेगा? अकेला डाका भी नहीं डाल सकता। कम से कम उस रात को तो वह कुछ कर ही नहीं सकता था। इसलिए मरजीना यखनी के नीचे की आँच निकाल कर अपनी कोठरी में जा कर सो गई।

अलीबाबा अँधेरे में उठ कर अब्दुल्ला को ले कर हम्माम चला गया। दो तीन घंटे के बाद

लौटा तो देखा कि अहाते में खच्चर वैसे ही बँधे हैं और तेल के कुप्पे वैसे ही रखे हैं। उसने मरजीना से कहा, क्या वह तेल का व्यापारी अभी सो कर नहीं उठा। उसे तो इस समय तक बाजार में होना चाहिए था। मरजीना ने कहा, मालिक, भगवान आपकी लंबी उम्र करें। वह व्यापारी भाग गया। आप नाश्ता कीजिए, फिर मैं आपको सारा हाल बताऊँगी।

इसीलिए मैंने एकांत कर लिया है। पहले आप उन कुप्पों में झाँक कर देख आइए। अलीबाबा हैरान हो गया। उसने एक कुप्पे में झाँक कर देखा तो मरा आदमी दिखाई दिया। वह भाग कर फिर मरजीना के पास आ कर बोला कि जल्दी बता कि क्या बात है। मरजीना ने कहा कि आप इत्मीनान से बैठिए। मैं आपको पूरा हाल बताऊँगी। आपकी जान को कल रात बड़ा भारी खतरा पैदा हो गया था किंतु ईश्वर की कृपा से वह खतरा टल गया है।

फिर मरजीना बोली, उन अड़तीस कुप्पों में से सिर्फ एक में तेल था और बाकी में डाकू छुपे थे। वह व्यापारी उन का सरदार था। मुझे पिछले चार-पाँच दिनों से शक था कि कोई व्यक्ति आप का अनिष्ट करना चाहता है। मैं सजग भी हो गई और अपनी समझ के अनुसार सावधानी भी बरती जो भगवान की दया से सफल हुई। एक दिन मैंने घर के दरवाजे पर सफेद खड़िया का निशान देखा। मैं समझ गई कि कोई व्यक्ति बुरी नीयत से आप का मकान पहचानना चाहता है। इसलिए मैंने वैसे ही खड़िया के निशान मुहल्ले के सारे दरवाजों पर बना दिए जिससे आपके घर की पहचान खत्म हो जाए। दो-तीन दिन बाद मैंने देखा कि सफेद निशान के पास एक छोटा-सा लाल निशान बना है। मुझे विश्वास हो गया कि आपके किसी दुश्मन की यह कार्रवाई है। आपका शहर में कोई दुश्मन हो ही नहीं सकता। इसलिए मैंने सोचा कि यह गुफावाले डाकू ही हैं जो आपके पीछे पड़े हैं। मैंने मुहल्ले के सारे घरों के दरवाजों पर सफेद निशानों के पास वैसे ही लाल निशान बना दिए इस प्रकार एक बार फिर उन लोगों की योजना असफल हो गई। मैंने आपसे उस समय इसलिए कुछ नहीं कहा कि आप मेरा विश्वास तो करते नहीं, बेकार और लोगों में बात फैलती और यह भी संभव था कि डाकुओं को आपका घर मालूम हो जाता।

किंतु मेरी चुप्पी के बावजूद डाकुओं ने किसी तरह आपके घर का पता लगा लिया और सरदार आपने सैंतीस साथियों को तेल के कुप्पों में बंद कर एक तेल के कुप्पे के साथ यहाँ लाया था। मालूम होता है कि जासूसी असफल होने पर उसने अपने दो साथियों को मार डाला। वरना वह बीस खच्चर लाता और उन पर अपने उनतालीस साथी लाता। मुझे उस व्यापारी की अस्लियत का जिस तरह पता चला वह भी ईश्वर की कृपा ही समझिए। जब आपने यखनी बनाने को कहा तो पहले मैंने आपके संदूक के कपड़ों का जोड़ा आपके लिए निकाल कर अब्दुल्ला को दिया। उसी समय रसोई का दिया तेल की कमी से बुझने लगा। अब्दुल्ला ने सुझाव दिया कि व्यापारी के कुप्पों से थोड़ा तेल ले ले। वह खुद सोने चला गया क्योंकि आज उसे आपके साथ हम्माम जाना था।

मैं कटोरा ले कर तेल लेने गई तो एक कुप्पे में से छुपे हुए डाकू ने पूछा कि क्या समय आ गया है? मैं समझ गई कि यह डाकू आपको मारने आए हैं। मैंने उत्तर दिया कि अभी नहीं

आया। इसी तरह मैंने सैंतीसों कुप्पों के अंदर से वही प्रश्न सुना और वही उत्तर दिया। आखिरी कुप्पे का तेल मैं धीरे-धीरे रसोई में ले आई और बड़ी देग भट्टी पर चढ़ा कर उसमें वह तेल डाल कर गर्म किया। जब तेल उबलने लगा तो एक डोई में तेल भर-भर कर उन सभी कुप्पों में डाल आई। आधी रात को मैंने देखा कि जिस कमरे में व्यापारी ठहरा है उसमें से कंकड़ियाँ आ-आ कर कुप्पों में लग रही हैं। मैं समझ गई कि यह डाकुओं को बाहर निकल कर हम सभी को मार देने का इशारा है। मैं देखती रही। फिर मैंने देखा कि वह व्यापारी बना हुआ डाकू सरदार नीचे आया और अपने साथियों को मुर्दा पा कर थोड़ी देर तक सिर पकड़े बैठा रहा। उसके बाद बाहरी दीवार पर चढ़ा और सड़क की ओर कूद गया। मैंने सड़क पर उसके भागने की आवाज भी सुनी। इस प्रकार जब मैंने खतरा टला देखा तो जा कर सो गई।

अलीबाबा कुछ देर तो हक्का-बक्का देखता रहा। फिर बोला, मरजीना, तू कहने को दासी है लेकिन काम तूने कुटुंबियों से बढ़ कर किया है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे क्या इनाम दूँ। मेरी तो अभी यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि इन लाशों, और खच्चरों और कुप्पों का क्या करूँ।

मरजीना ने कहा, मालिक, सरदार या अधिक से अधिक उसके दो साथी बचे होंगे। उनसे अभी कोई तात्कालिक खतरे की संभावना नहीं है। इस समय आप घर के सभी नौकरों को बुला कर अहाते में एक बड़ा भारी गढ़ा खुदवाएँ, फिर नौकरों को बाहर काम पर भेज दें। इसके बाद हम दोनों कुप्पों में से लाशें निकाल निकाल कर उस गढ़े में भर दें और गढ़े के ऊपर से मिट्टी डाल कर दबा दें ताकि गढ़े का निशान भी न दिखाई दे। अलीबाबा को उसकी राय पसंद आई। उसने नौकरों से बड़ा-सा गढ़ा खुदवाया, फिर नौकरों को बाहर भेज कर लाशों को मरजीना की मदद से गढ़े में डाल कर गढ़ा बंद कर दिया। उसने एक-एक दो-दो करके सारे कुप्पे और खच्चर बाजार में बिकवा दिए।

डाकुओं के सरदार को अपने निवास स्थान पर जा कर भी चैन न आया। उसका सारा दल खत्म हो गया था। उसे नए सिरे से छिटपुट लूट-मार करके धीरे-धीरे नया दस्यु दल तैयार करना था। साथ ही अलीबाबा भी अभी जिंदा था जो उसके सारे खजाने पर कब्जा कर सकता था। उसका एक दिन इसी उलझन में बीता। फिर वह यह सोच कर नगर में आया कि अलीबाबा सैंतीस लाशों को छुपा नहीं सकेगा और संभवतः इतने लोगों की हत्या के अपराध में मृत्युदंड भी पा जाए। इसलिए वह एक सराय में ठहरा और भटियारे से शहर के समाचार पूछने लगा। भटियारों को इन बातों के सुनाने में मजा आता है। किंतु जैसा समाचार वह सुनना चाहता था वैसा भटियारा उसे न सुना सका। उसने दो-चार और सरायों में जा कर इसी तरह टोह ली लेकिन कहीं पर यह नहीं सुना कि बादशाह ने अलीबाबा को सैंतीस आदमियों के मारने के अभियोग में गिरफ्तार किया होगा। ऐसा होता तो डाकू सरदार का एकमात्र शत्रु उसके हाथ पाँव हिलाए बगैर ही मारा जाता किंतु ऐसा नहीं होना था।

डाकू सरदार ने यह तो समझ लिया कि अलीबाबा देखने में सीधा-सादा है लेकिन वास्तव

में बुद्धिमान है कि न सिर्फ अपने भाई की लाश को ला कर गुप्त रुप से उसके टुकड़े सिलवा कर उसे दफन कर दिया बल्कि उसके सैंतीस साथियों की लाशों को भी अत्यंत चतुरता से घोंट गया। ऐसे आदमी से बदला लेना आसान काम नहीं था। फिर भी डाकू सरदार ने अलीबाबा की हत्या करने का विचार न छोड़ा। उसने सोचा कि इस आदमी को मारने के बाद ही नए दल का संगठन किया जाए।

उसने पता लगा कर मालूम किया कि अलीबाबा कासिम के घर पर ही रहता है किंतु उसका पुत्र अपने पुराने घर में रहता है और अपने दिवंगत चचा की दुकान चलाता है। डाकू सरदार ने उसके पुत्र ही से अपनी बदले की भावना की शुरुआत की। उसने कासिम की दुकान के सामनेवाली दुकान मोल ली और उसमें व्यापार का सामान रख कर बैठने लगा और अपना नाम ख्वाजा हसन मशहूर किया। कुछ ही दिनों में उसने अलीबाबा के पुत्र से जो बड़ा सभ्य और सुशिक्षित था गहरी दोस्ती कर ली। उसने कई दिन तक इधर-उधर की बातें करके जान लिया कि इसे गुफा के खजाने के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। स्पष्ट था कि उसे यानी अलीबाबा के पुत्र को डाकुओं की भी कोई आशंका नहीं थी और पुत्र के द्वारा पिता से संपर्क स्थापित किया जा सकता था। अलीबाबा खुद भी कभी दुकान पर अपने पुत्र को देखने जाता था। डाकू ने दूर से उसे पहचान लिया। उसने अलीबाबा के पुत्र से इतनी मित्रता की कि रोज उसके साथ घूमने लगा और कई बार उसे अपने घर बुला कर उसकी शानदार दावत कर डाली।

अलीबाबा के पुत्र ने एक दिन अपने पिता से कहा, एक नया व्यापारी ख्वाजा हसन मेरा गहरा मित्र हो गया है। वह कई बार मुझे अपने घर ले जा कर भोजन करा चुका है। मैं भी उसे अपने यहाँ भोजन पर बुलाना चाहता हूँ। लेकिन मेरा घर इतना छोटा है कि उसमें दावत का ठीक प्रबंध नहीं हो सकेगा। इसलिए अगर आप अनुमति दें तो आपके अच्छे घर में उसकी दावत का इंतजाम हो जाए। अलीबाबा ने कहा, कल शुक्रवार है, बाजार बंद रहेगा। तुम घूमते-घूमते उसे शाम को यहाँ ले आना। मैं उसकी दावत का प्रबंध कर रखूँगा। मरजीना अच्छा भोजन तैयार कर देगी।

दूसरे दिन शाम को अलीबाबा का पुत्र और डाकू सरदार टहलते-टहलते अलीबाबा के मकान पर आए। डाकू को पहले ही इसका आभास हो गया था और वह अलीबाबा की हत्या की तैयारी करके आया था। जब अलीबाबा के पुत्र ने कहा कि यह मेरे पिता का मकान है तो दिखाने के लिए डाकू ने कहा, रहने दीजिए। क्यों बुजुर्ग आदमी के आराम में हम लोग दखल दें। मेरे जाने से उन्हें कष्ट होगा। आप ही चले जाएँ। मैं वापस जाता हूँ। अलीबाबा के पुत्र ने कहा, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा, प्रसन्नता ही होगी। मैंने उनसे आपका उल्लेख किया तो उन्होंने कहा था कि कोई अवसर हुआ तो ख्वाजा हसन से मिलूँगा। आप अंदर चलिए। घर में ला कर अलीबाबा के पुत्र ने अपने मित्र को अपने पिता से मिलाया तो अलीबाबा ने कहा, आप से मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस बच्चे ने मुझ से आप की बड़ी प्रशंसा की है। मालूम हुआ है कि इसे जितना प्यार मैं करता हूँ उससे अधिक आप करते हैं।

डाकू सरदार ने कहा, यह इतने सभ्य और सुशील हैं कि इन्हें कौन प्यार न करेगा। इनकी नौजवानी ही है लेकिन इनकी बुद्धिमानी, व्यवहारकुशलता और गंभीरता अधिकतर वयस्कों से भी अधिक है। क्यों न हो, यह पुत्र तो आप ही जैसे सज्जन के हैं। इसी प्रकार उन लोगों में बहुत देर तक सौहार्द और शिष्टाचारपूर्ण बातें होती रहीं।

फिर डाकू सरदार ने घर जाने की अनुमति माँगी। अलीबाबा ने कहा, यह आप क्या कह रहे हैं। बगैर भोजन किए आप यहाँ से नहीं जाएँगे, बल्कि आज रात आप मेरी कुटिया में मेहमान रहेंगे। मैं जानता हूँ कि यहाँ आपको अपने घर जैसा आराम न मिलेगा, न हमारे घर का रूखा-सूखा भोजन आपके योग्य होगा। फिर भी मेरी प्रसन्नता के लिए आप मेरा अनुरोध स्वीकार करें। डाकू ने कहा, ऐसी बातें करके आप मुझे लज्जित कर रहे हैं। आपके यहाँ किस चीज की कमी है। लेकिन मेरी कुछ मजबूरी है। मैं अपने घर के अलावा और कहीं नहीं खाता। कारण यह है कि मुझे ऐसा रोग है जिसमें नमक बिल्कुल नहीं खाया जा सकता। अलीबाबा ने कहा, यह क्या मुश्किल है। मैं अभी आपके लिए बगैर नमक के भोजन का प्रबंध कराए देता हूँ।

उसने अंदर आ कर मरजीना से कहा, हमारा मेहमान एक रोग के कारण नमक नहीं खाता। उसके लिए जो कुछ बनाओ बगैर नमक का हो। मरजीना अलीबाबा से तो कुछ न बोली किंतु बैठक के परदे के पीछे छुप कर देखने लगी कि यह कौन आदमी है जो नमक नहीं खाता और इतना बड़ा रोग ले कर भी यहाँ पैदल आया है। गौर से देखा तो पहचान गई कि यह वही दुष्ट डाकू सरदार है जो कुछ महीने पहले तेल का व्यापारी बन कर हमारे यहाँ ठहरा था। जब वह खाना परोसने के लिए आई तो उसने देखा कि डाकू अपने कपड़ों में पैनी छुरी छुपाए है। वह समझ गई कि यह नमक इसलिए नहीं खा रहा कि जिसका नमक खाया जाता है उसे अपने हाथ से मारना जघन्य नैतिक अपराध होता है। पिछली बार तो उसके साथी हत्या करते इसीलिए उस बार उसने नमक से परहेज नहीं किया था। मरजीना ने तय कर लिया कि यह अलीबाबा को मारे इससे पहले मैं ही उसे मार दूँ।

जब अलीबाबा, उसका पुत्र और डाकू सरदार भोजन कर चुके तो अब्दुल्ला और मरजीना ने वहाँ के बर्तन उठा कर एक तिपाई रखी जिस पर सुगंधित मदिरा की सुराही और तीन प्याले रखे थे।

उन दोनों ने ऐसा प्रकट किया कि अब वे खाना खाएँगे। डाकू सरदार इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि नौकर खाना खाने जाए तो अलीबाबा का काम तमाम कर दूँ और उसे छुरी के एक ही वार से खत्म करके बाग की दीवार फाँद कर निकल जाऊँ और यदि अलीबाबा का कोमल-सा पुत्र प्रतिरोध करे तो उसे भी मार दूँ। मरजीना की निगाहें बड़ी तेज थीं। वह डाकू के आँखों के भाव से समझ गई कि उसका इरादा क्या है। उसने अब्दुल्ला से कहा कि तुम दफ अच्छा बजाते हो, मालिक के मेहमान के आगे भी अपना कमाल दिखाओ। खाना तो हम लोग बाद में भी खा लेंगे। अब्दुल्ला इस बात पर राजी हो गया।

दो-चार मिनट ही में वे दोनों मुख्य कक्ष में आ गए। अब्दुल्ला वाद्य वादकों के कपड़े पहने था और उसके हाथ में दफ था। मरजीना ने नृत्यांगना की पोशाक पहनी, सिर पर रेशमी पगड़ी रखी और कमर में सुनहरा पटका बाँधा जिसमें छुरी खोंसी हुई थी। मुख्य कक्ष में आ कर उसने अलीबाबा से अनुमति माँगी कि मेहमान का नृत्य से मनोरंजन उसे करने दिया जाए। अलीबाबा ने खुशी से अनुमति दे दी। डाकू सरदार ने भी मजबूरी में सहमति प्रकट की क्योंकि इनकार करके वह अपने भेद के खुलने का खतरा मोल लेता।

मरजीना ने तरह-तरह के नाच दिखाए। अब्दुल्ला भी कलाकार था। उसने मस्त हो कर दफ बजाया। नृत्य वाद्य वादन से खुश हो कर अलीबाबा और उसके पुत्र ने दोनों को एक एक अशर्फी इनाम में दी। डाकू सरदार ने भी दोनों को एक-एक अशर्फी का इनाम दिया। मरजीना डाकू की नजरों से समझ गई कि अब वह नाच गाना बंद करने का आदेश देने ही वाला है उसने तय किया कि इसी समय यदि डाकू की हत्या न की गई तो वह मालिक और उसके पुत्र की हत्या कर देगा और अभी तक मरजीना ने जो कुछ किया था सब मिट्टी में मिल जाएगा।

मरजीना ने कहा - सरकार, अब मैं आप लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ और अंतिम नृत्य दिखाऊँगी। यह छुरी का नाच कहलाता है और इस देश में मेरे अलावा और कोई इसे नहीं जानता। आप लोग इसे देख कर अति प्रसन्न होंगे। यह कह कर मरजीना ने कमर से छुरी खींच ली। यह छुरी अत्यंत पैनी थी और मोमबत्तियों के प्रकाश में खूब चमचमा रही थी। फिर उसने तेज नाच शुरू कर दिया। छुरी को उसने बड़ी तेजी से घुमाते हुए ऐसा दिखाया कि वह अपने हृदय में छुरी घुसेड़ना चाहती है। फिर यही उसने अब्दुल्ला के साथ किया फिर पाँच-छह बार नाचते-नाचते यह किया कि कभी अपने हृदय तक छुरी की नोक ले जाती कभी अब्दुल्ला के हृदय तक। इस नाच से मेजबान और मेहमान सभी आनंदित हुए। फिर मरजीना नाचते-नाचते अलीबाबा के पास गई और उसके हृदय के ऊपर उसने छुरी की नोक छुआई। दो बार अलीबाबा के साथ यह खेल दिखाने के बाद उसने दो बार यही उसके पुत्र के साथ किया। फिर वह नाचते-नाचते डाकू के पास गई। वह निश्चल बैठा रहा जैसा अलीबाबा और उसके पुत्र ने किया था। लेकिन इस बार मरजीना ने पूरी ताकत से वार किया और पूरी छुरी उसके हृदय में उतार दी। डाकू सरदार एक क्षण तक तड़पने के बाद ठंडा हो गया।

अलीबाबा सदमे से बाहर हुआ तो चीखा, अभागिनी तूने मेरे अतिथि को मार डाला और मेरे सिर पर मित्रघात का कलंक लगा दिया। तुझे इसका दंड दिया जाएगा। मरजीना ने कहा, जो दंड का भागी था उसे दंड मिल गया। आपकी भगवान ने रक्षा की। यह आप का मित्र नहीं परम शत्रु है। आप दो-दो बार देख कर इस डाकू सरदार को नहीं पहचान सके और आज इसके हाथ से मारे जाते। मुझे इसके नमक न खाने से संदेह हुआ और मैंने देख लिया कि यह अपने कपड़ों में क्या छुपाए हैं। यह देखिए। यह कह कर उसने डाकू का वस्त्र हटा कर छुपी हुई छुरी को दिखाया। उसने कहा कि जो काम यह तेल का व्यापारी बन कर न कर सका था वह ख्वाजा हसन बन कर करना चाहता था, आज यह आपकी हत्या किए बगैर न जाता।

अलीबाबा ने उठ कर मरजीना को गले लगा लिया और बोला, तूने कई बार मेरी जान बचाई। मैं तुझे इस अहसान का पूरा बदला तो नहीं दे सकूँगा, फिर भी जो कर सकता हूँ वह करूँगा। मैं तुझे इसी क्षण दासत्व से मुक्त करता हूँ। मैं तुझे अपनी पुत्रवधू बनाना चाहता हूँ। यह कह कर उसने अपने पुत्र से पूछा कि तुम्हें यह प्रस्ताव स्वीकार है या नहीं। उसने तुरंत ही यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और दो-चार दिन में मरजीना से उसका विवाह हो गया।

फिर चारों ने मिल कर डाकू सरदार की लाश को होशियारी से मकान के अंदर इस तरह गाड़ा कि उसका पता किसी को न चले। अब्दुल्ला को भी भारी इनाम मिला। मरजीना के साथ अलीबाबा के पुत्र का विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ और कई दिनों तक नाच रंग होते रहे। कुछ दिनों बाद अलीबाबा ने अपने पुत्र को डाकुओं के छुपे हुए खजाने का हाल विस्तारपूर्वक बताया। वह उसे वहाँ ले भी गया और गुफा के द्वार खोल कर भी दिखाया। कई दिनों तक वे दोनों पता लगाते रहे कि कोई डाकू बचा है या नहीं। जब कई दिन तक किसी घोड़े की टापों के निशान न देखे और खजाने में भी कोई घटत-बढ़त न देखी तो दोनों कई दिनों में थोड़ा-थोड़ा खजाना छुपा कर अपने घर में लाते रहे और गुफा को खाली कर दिया। फिर उन दोनों ही ने नहीं उनकी कई पीढ़ियों ने सुख से जीवन व्यतीत किया।

शहरजाद ने यह कहानी खत्म की तो दुनियाजाद ने उसे और कहानी सुनाने के लिए कहा। उस दिन सवेरा हो गया था इसलिए अगले दिन शहरजाद ने नई कहानी शुरू की।

बगदाद के व्यापारी अली ख्वाजा की कहानी

खलीफा हारूँ रशीद के राज्य काल में बगदाद में अलीख्वाजा नामक एक छोटा व्यापारी रहता था। वह अपने पुश्तैनी मकान में, जो छोटा-सा ही था, अकेला रहता था। उसने विवाह नहीं किया था और उसके माता पिता की भी मृत्यु हो गई थी। उसका बहुत छोटा व्यापार था और सिर्फ दो-चार आदमी ही उसे जानते थे। उनमें उसका एक सौदागर घनिष्ट मित्र था।

उक्त व्यापारी ने लगातार तीन रातों तक यह स्वप्न देखा कि एक दिव्य रूप का वृद्ध व्यक्ति उससे ही कह रहा है, तू अपना हज करने का इस्लामी कर्तव्य क्यों नहीं निभाता? तू अविलंब मक्का के लिए रवाना हो जा। अब उसने तय किया कि मक्का जाना ही चाहिए। उसने अपना व्यापार समेटा और मकान में एक किराएदार रख लिया। व्यापार समेट कर उसने जो कुछ पाया उसमें से कुछ तो यात्रा के खर्च के लिए अपने पास रख लिया बाकी एक हजार अशर्फियाँ बचीं जिनसे उसने हज से लौट कर दोबारा व्यापार करने की योजना बनाई। वह उन्हें साथ में न रखना चाहता था। क्योंकि राह में लुटने का भी भय था। उसने एक हँडिया में अशर्फियाँ रखीं और फिर उसके मुँह तक जैतून का तेल भर दिया। अपने व्यापारी मित्र के पास जा कर उसने कहा, भाई, मैं हज को जाना चाहता हूँ। मेरी यह तेल की हाँड़ी रख लो। मैं इसे वापस आ कर ले लूँगा। उसने उसे यह नहीं बताया कि इसमें अशर्फियाँ हैं। व्यापारी ने उसे अपने गोदाम की चाबी दी और कहा, जहाँ तुम चाहो अपने तेल की हाँड़ी रख दो। लौटना तो वहीं से उठा लेना। मित्र व्यापारी ने हाँड़ी की ओर देखा तक नहीं।

अलीख्वाजा ने हाँड़ी गोदाम में रख कर मक्के का सफर शुरू कर दिया किंतु वह ऊँट पर लाद कर कुछ छोटी-मोटी बिक्री की वस्तुएँ भी ले गया ताकि वहाँ भी कुछ व्यापार करे। हज के सारे कर्तव्य पूरे करने के बाद उसने वहीं अपनी छोटी-सी दुकान खोल दी। एक दिन उसकी दुकान पर दो व्यक्ति आए और कहने लगे कि तुम्हें यहाँ कम मुनाफा होगा, तुम्हारी यह चीजें काहिरा में ऊँचे दामों पर बिकेंगी।

अलीख्वाजा का कोई अपना संबंधी तो था ही नहीं जो बगदाद में उसकी वापसी की प्रतीक्षा करता। उसने मिस्र देश के सौंदर्य की प्रशंसा भी सुन रखी थी। वह फौरन अपनी वस्तुएँ ऊँट पर लाद कर व्यापारी दल के साथ काहिरा के लिए रवाना हो गया। वहाँ उसने अपनी वस्तुएँ काफी ऊँचे मूल्य पर बेचीं और खूब मुनाफा कमा कर अपना व्यापार और फैलाया। उसने काहिरा तथा मिस्र देश के अन्य स्थानों में खूब सैर-सपाटा भी किया। उसने नील नदी पर सदियों से बने अहराम (पिरामिड) भी देखे और काहिरा के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद मिस्र के अन्य नगरों की भी सैर की। इस तरह वहाँ कई महीने बिताने के बाद वह दमिश्क की ओर चला। रास्ते में वह रोड्स नामक द्वीप में भी गया और वहाँ पुराने जमाने में मुसलमानों द्वारा बनवाई हुई प्रसिद्ध मसजिदों को भी उसने देखा। फिर वह सैर के साथ व्यापार करता हुआ दमिश्क नगर पहुँचा। दमिश्क बड़ा सुंदर नगर

था। वहाँ के बाजार और महल बहुत सजे हुए थे और उसके आसपास अनगिनत बाग थे जहाँ तरह-तरह के फल-फूल और जल कुंड, नहरे, झरने आदि थे। यहाँ का सौंदर्य देख कर वह बगदाद को भूल ही गया। कई वर्षों के बाद उसका वहाँ से भी जी भर गया। इसके बाद उसने हलब, मोसिल और शीराज आदि नगरों में जा कर निवास किया। इसके बाद वह बगदाद वापस आया। उसकी वापसी इस नगर में सात वर्षों के बाद हुई।

विदेश रह कर अलीख्वाजा ने केवल इतना व्यापार किया था कि उसका काम चलता रहा, बाकी समय में वह सैर-सपाटा करता रहता था। बगदाद आ कर उसे व्यापार जमाने के लिए अपनी बचाई हुई हजार अशर्फियों की जरूरत पड़ी। किंतु उसकी वापसी के कुछ दिन ही पहले उसके व्यापारी मित्र ने उसके साथ धोखा कर डाला था। हुआ यह कि एक दिन व्यापारी के आने के कुछ दिन ही पहले उसके व्यापारी मित्र ने उसके साथ धोखा कर डाला था। हुआ यह कि एक दिन व्यापारी की पत्नी ने कहा कि बहुत दिनों से घर की किसी चीज में जैतून का तेल नहीं पड़ा है, कल बाजार से लाना। व्यापारी को अलीख्वाजा की हाँड़ी याद आई और उसने कहा, अलीख्वाजा हज को जाते समय मेरे मालगोदाम में जैतून के तेल की हाँड़ी रख गया था। उसी में से थोड़ा-सा तेल ले ले। वैसे वह तेल बहुत पुराना हो गया है और खराब हो गया होगा। किंतु देखते हैं, शायद अच्छा हो।

उसकी पत्नी बोली, यह क्या करते हो? किसी की धरोहर को छूने में भी पाप लगता है। मुझे जैतून के तेल का ऐसा शौक नहीं है कि तुम मेरे लिए धर्म और नैतिकता के विरुद्ध कोई काम करो। व्यापारी ने कहा, तुम पागल हो गई हो। अगर पूरी हाँड़ी में से एक कटोरी तेल ले लिया तो क्या कमी हो जाएगी। फिर अलीख्वाजा का क्या पता? वह सात वर्ष पूर्व हज करने गया था। हज करने में सात वर्ष तो नहीं लगते। न मालूम वह कहाँ है और क्या मालूम आए या न आए। मालूम नहीं वह मर गया है या जिंदा है। स्त्री बोली, कुछ भी हो, उसका तेल नहीं छूना है। यह तुम कैसे कह सकते हो कि वह अब नहीं आएगा। सात वर्ष की अवधि कौन ऐसी अधिक होती है। संभव है कल ही आ जाए।

व्यापारी उस समय तो अपनी स्त्री के कहने से मान गया। किंतु अब उसने सोचा कि अलीख्वाजा ने जैतून के तेल की हाँड़ी क्यों रखवाई। ऐसी क्या बात थी उस तेल में जिससे उसे सँभाल कर रखवाने की आवश्यकता पड़ी। रात वह अपनी पत्नी से छुप कर गोदाम में यह देखने को गया कि वह तेल कैसा है और उसकी क्या दशा है। उसने गोदाम में जा कर मोमबत्ती जलाई ओर एक नई हाँड़ी ले कर उसने अलीख्वाजा की हाँड़ी को हिलाया और उसमें से अपनी हाँड़ी में तेल डालने लगा। तेल स्वाद में भी खराब था और उसमें से दुर्गंध भी आ रही थी किंतु हाँड़ी हिलाने से एक अशर्फी व्यापारी की हाँड़ी में आ गिरी। अब उसे तेल का भेद मालूम हुआ। उसने धीरे से सारा तेल अपनी हाँड़ी में उलट दिया और अलीख्वाजा की हाँड़ी की सारी अशर्फियाँ निकाल लीं। हाँड़ी का थोड़ा तेल गिर कर फैल भी गया था और अशर्फियाँ निकल जाने पर हाँड़ी में उसकी सतह नीची भी हो गई थी इसलिए उस व्यापारी ने फर्श अच्छी तरह साफ किया और हँडिया का खराब और बदबूदार तेल बाहर नाली में फेंक दिया। सुबह उठ कर उसने बाजार से जैतून का तेल खरीदा और उसे अलीख्वाजा की हँड़िया में मुँह तक भर कर यथास्थान रख दिया।

इसके एक महीने बाद ही अलीख्वाजा विदेश यात्रा से लौटा और उसने अपने व्यापारी मित्र से अपनी तेल की हँड़िया माँगी। व्यापारी ने कहा, भाई मैंने तो तुम्हारी हँड़िया देखी भी नहीं थी। तुम्हीं ने उसे गोदाम में रखा था। चाबी लो और जहाँ तुमने अपनी हँड़िया रखी हो वहाँ से ले जाओ।

अलीख्वाजा गोदाम में गया और अपनी हँड़िया ले कर अपने घर चला गया। उसने घर जा कर हँड़िया का तेल दूसरे बर्तन में डाला और अपनी अशर्फियाँ तलाश कीं लेकिन उसे एक भी अशर्फी नहीं मिली। वह उलटे पाँव व्यापारी मित्र के पास गया और बोला, इसमें रखी एक हजार अशर्फियाँ कहाँ हैं? व्यापारी ने कहा, कैसी अशर्फियाँ? अलीख्वाजा ने रुआँसे हो कर कहा, भाई, मैं ईश्वर की सौगंध खा कर कहता हूँ कि मैंने तेल की हँड़िया की तह में एक हजार अशर्फियाँ रखी थीं। अगर तुम ने उन्हें किसी जरूरत से खर्च कर दिया है तो कोई बात नहीं, बाद में वापस कर देना।

व्यापारी मित्र ने कहा, अलीख्वाजा, तुम कैसी बातें कर रहे हो। मैंने तुम्हारे लाते और ले जाते समय तुम्हारी हँड़िया पर निगाह तक नहीं डाली और तुम्हीं ने उसे गोदाम में रखा और वापस हो कर उसी जगह से उठाया था। मैं क्या जानूँ कि उसमें अशर्फियाँ थीं या क्या था। तुम बेकार ही मुझ पर झूठा आरोप लगाते हो। यह बातें न मित्रता की हैं न भलमनसाहत की। जब तुमने तेल की हाँड़ी राखी थी तो तुमने तेल ही रखने को कहा था, अशर्फियों की तो कोई बात तुमने नहीं की थी। तुमने तेल कहा था, वह तुम्हें मिल गया। अगर उसमें अशर्फियाँ होतीं तो वह भी तुम्हें मिल जातीं।

अलीख्वाजा ने उसके बहुत हाथ-पाँव जोड़े। उसने कहा, अशर्फियाँ न मिलीं तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। मेरे पास इस समय कुछ भी नहीं है। उन्हीं अशर्फियों से मुझे व्यापार चलाना है। मुझ पर दया करो और मेरा माल मुझे दे दो। व्यापारी ने क्रुद्ध हो कर कहा, अलीख्वाजा, तुम बड़े नीच आदमी हो। मुझ पर झूठा चोरी का आरोप लगा रहे हो और बेईमानी से मुझसे हजार अशर्फियाँ ऐंठना चाहते हो। तुम भाग जाओ और कभी मेरे सामने न आना। झगड़ा बढ़ा तो मुहल्ले के बहुत से लोग जमा हो गए। कुछ लोग अलीख्वाजा को सच्चा समझते थे और कुछ व्यापारी को। शाम तक सारे बगदाद में अलीख्वाजा और उसके मित्र व्यापारी का झगड़ा मशहूर हो गया। और लोग तरह-तरह की बातें करने लगे।

अलीख्वाजा ने काजी के पास जा कर नालिश की। उसने व्यापारी को बुलाया और दोनों के बयान सुने। उसने अलीख्वाजा से कहा, क्या तुम्हारे पास तुम्हारी बात सिद्ध करने के लिए कोई गवाह है? अली ख्वाजा ने कहा, कोई नहीं, सरकार! मैंने भेद खुलने के डर से किसी को यह बात नहीं बताई थी। काजी ने व्यापारी से कहा कि क्या तुम ईश्वर की सौगंध खा कर कह सकते हो कि तुमने अशर्फियाँ नहीं लीं? उसने कहा, ईश्वर की सौगंध मैं अशर्फियों के बारे में कुछ नहीं जानता। यह सुन कर काजी ने उसे छोड़ दिया। अलीख्वाजा ने एक अर्जी खलीफा के नाम लिखी और खलीफा जब जुमे की नमाज को निकले तो उन्हें दे दी। उन्होंने अर्जी पढ़ कर कहा, कल तुम उस व्यापारी को ले कर दरबार

में आना, तभी मैं निर्णय दूँगा।

उसी शाम को खलीफा अपने मासिक नियम अनुसार मंत्री जाफर के साथ वेश बदल कर प्रजा का हाल जानने को निकले। रात होने पर चाँदनी फैल गई। खलीफा ने देखा कि एक मैदान में दस-बारह लड़के खेल रहे हैं। उनमें से एक बालक ने, जो सबसे सुंदर और बुद्धिमान लगता था, कहा, आओ हम लोग अलीख्वाजा के मुकदमे का खेल खेलें। तुम लोगों में से कोई अलीख्वाजा बन कर हजार अशर्फियों का दावा करे, दूसरा व्यापारी बन कर प्रतिवाद करे, मैं काजी बन कर फैसला करूँगा। यह सुन कर खलीफा और जाफर छुप कर देखने लगे कि इस मुकदमे का, जिसकी अर्जी खलीफा को उसी दिन मिली थी, यह बालक किस तरह फैसला करते हैं।

वह सुंदर और बुद्धिमान बालक एक ऊँची जगह पर काजी की तरह शान से बैठ गया और दो-एक लड़के उसके प्यादे आदि हो गए। एक लड़का अलीख्वाजा बन कर हजार अशर्फियों के लिए रोता-पीटता आया। दूसरा लड़का व्यापारी बन कर गंभीरता से खड़ा हो गया। ऊँची जगह पर शान से काजी बने हुए लड़के ने अलीख्वाजा से पूछा, तुम्हारा क्या मामला है? उसने विस्तार में वही सब कुछ बताया जो उसको अलीख्वाजा ने बताया था। काजी ने दूसरे लड़के से पूछा, क्या तुम स्वीकार करते हो कि तुमने अलीख्वाजा की अशर्फियाँ ली हैं? उसने कहा, मैं भगवान की सौगंध खा कर कहता हूँ कि मैंने वह अशर्फियाँ देखी भी नहीं हैं। काजी बना हुआ लड़का बोला, मैं वह तेल की हँड़िया देखना चाहता हूँ जिसमें अलीख्वाजा का रखा हुआ तेल है। अलीख्वाजा बना हुआ लड़का कहीं से एक कुल्हिया उठा लाया और बोला, सरकार यही है वह हँड़िया और वह तेल जो मुझे व्यापारी के यहाँ से मिला था।

काजी बने हुए लड़के ने कुल्हिया में उँगली डाल कर झूठमूठ ही तेल को चखा। फिर वह बोला, मेरा खयाल था कि सात वर्ष पुराना तेल बिल्कुल सड़ गया होगा। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस तेल का स्वाद बहुत अच्छा है। यह पता लगाना कठिन है कि तेल नया है या पुराना। फिर उसने कहा कि बाजार से तेल के व्यापारियों को ला कर यहाँ हाजिर करो।

दो और बालक तेल के व्यापारी बन कर आ गए। काजी बने लड़के ने उन से पूछा कि क्या तुम तेल बेचते हो? उन्होंने कहा, हाँ सरकार, हमारा यही धंधा है। उसने कहा, तुम बता सकते हो कि जैतून का तेल कब तक खराब नहीं होता। उन्होंने कहा, अधिक से अधिक तीन वर्ष तक ठीक रहता है। फिर चाहे कितने ही यत्न से रखा जाय उसका स्वाद और गंध दोनों बिगड़ जाते हैं और ऐसी हालत में उसे फेंक दिया जाता है। काजी बना हुआ लड़का बोला, इस हाँड़ी के तेल को देख कर बताओ कि इस का रंग और स्वाद कैसा है। उन दोनों ने कुल्हियों में झूठमूठ उँगली डाल कर कल्पित तेल को सूँघा और चखा। फिर बोले, यह तेल बहुत अच्छा है, यह अधिक से अधिक एक साल का हो सकता है। काजी बना हुआ बालक बोला, तुम लोग बिल्कुल गलत हो। अलीख्वाजा सात वर्ष पहले यह तेल व्यापारी के गोदाम में रख कर गया था। व्यापारी बने हुए बालक बोले, सरकार जो चाहे कहें लेकिन

सच्ची बात यह है कि यह तेल साल भर के अंदर ही कोल्हू से निकाला गया है। आप बगदाद भर से किसी भी व्यापारी को बुला कर दिखा लीजिए। कोई इस तेल को एक वर्ष से पुराना नहीं कहेगा।

अब काजी बने हुए लड़के ने प्रतिवादी बने हुए लड़के से कहा, अब तुम इस तेल को चख कर कहो कि तेल नया है या पुराना। उसने हाथ जोड़ कर कहा, सरकार मुझ पर दया कीजिए। मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ। मैंने एक महीने पहले ही इस हाँड़ी का तेल और अशर्फियाँ निकाल कर इसमें दूसरा तेल भरा था। काजी बने हुए लड़के ने कहा, तुमने धरोहर में बेईमानी की और भगवान की झूठी सौगंध भी खाई। तुमने फाँसी पाने का काम किया है और तुम्हें वही दंड मिलेगा। सिपाहियो, इसे पकड़ के ले जाओ। सिपाही बने हुए दो लड़के उसे घसीट कर ले गए। बाकी लड़के उछल-कूद कर के शोर मचाने लगे। अदालत का खेल खत्म हो गया।

खलीफा बालक की बुद्धि देख कर ताज्जुब में पड़ा। उसने जाफर से कहा, कल इन बालकों को दरबार में हाजिर करना। कल इसी बालक से फैसला करवाऊँगा। साथ ही बाजार से दो तेल के व्यापारियों को भी ले आना। अलीख्वाजा को कहलवा भेजना कि नालिश के लिए आए तो तेल की हँड़िया भी लेता आए। यह कह कर खलीफा महल में चला गया।

मंत्री ने सुबह उस मोहल्ले में जा कर वहाँ के मदरसे के अध्यापक से पूछा कि तुम्हारे यहाँ कौन-कौन लड़के पढ़ते हैं। उसके बताए हुए सभी लड़कों को मंत्री ने उन के घरों से ले कर दरबार में पहुँचा दिया। बच्चों के माता-पिता घबराए तो मंत्री ने उन्हें आश्वस्त किया कि बालकों को कोई हानि नहीं पहुँचाई जाएगी। इस पर संतुष्ट हो कर उन के अभिभावकों ने उन्हें अच्छे वस्त्र पहना कर दरबार में भेज दिया। खलीफा ने कहा, तुम लोगों ने कल शाम जो मुकदमे का खेल खेला था उसमें कौन लड़का काजी बना था? काजी बने लड़के ने सिर झुका कर कहा, मैं बना था। खलीफा ने उसे अपने पास बिठाया और कहा, तुम कल ही की तरह आज असली मुकदमे का फैसला करना। तुम्हीं को सारी सुनवाई भी करनी है।

संबंधित पक्षों के आने पर खलीफा ने घोषणा की, इस मुकदमे की सुनवाई और फैसला मैं नहीं करूँगा बल्कि यह बच्चा करेगा। अतएव बालक ने दोनों पक्षों के बयान लिए। व्यापारी ने कहा, भगवान की सौगंध मुझे अशर्फियों के बारे में कुछ नहीं मालूम। बच्चे ने कहा, सौगंध खाने के लिए तुझे किसने कहा? मैं उस हाँड़ी को देखना चाहता हूँ जिसमें तेल रखा है। हाँड़ी बालक के सामने रखी गई। बालक के कहने से खलीफा ने खुद भी तेल को चखा और तेल के व्यापारियों को भी चखाया। उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि तेल अच्छा है और एक वर्ष के अंदर ही तैयार किया गया है। अब बालक ने प्रतिवादी व्यापारी से कहा, तुम्हारी सौगंध झूठी है। अलीख्वाजा ने सात वर्ष पहले तेल रखा था इसमें नया तेल कहाँ से आ गया। व्यापारी ने स्वीकार लिया कि उसने तेल बदला है और अशर्फियाँ निकाली हैं। बालक ने हाथ जोड़ कर खलीफा से कहा, सरकार, आपके आदेश से निर्णय

मैंने कर लिया किंतु आज के मुकदमे में दंड देना या न देना आप के हाथ में है। खलीफा ने कहा, मैं वही दंड नियत करता हूँ जो तुमने किया था। व्यापारी की संपत्ति जब्त करके उसे फाँसी दी जाए और उसकी संपत्ति में से एक हजार अशर्फियाँ अलीख्वाजा को दी जाएँ। उसने काजी बननेवाले बालक को एक हजार अशर्फियाँ का इनाम दिया और अन्य बालकों को भी कुछ इनाम दिया।

यह कहानी कह कर मलिका शहरजाद ने अगले दिन नई कहानी शुरू कर दी।

यंत्र के घोड़े की कहानी

बादशाह सलामत, आपको यह मालूम ही है कि हजारों वर्ष से फारस में नौरोज यानी वर्ष का प्रथम दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। उसमें सभी लोग विशेषतः अग्निपूजक, भाँति-भाँति के नृत्यों और खेल-तमाशों का आयोजन करते हैं। बादशाहों और सामंतों को उनके प्रशंसक और सहायक अच्छी-अच्छी भेंटें देते हैं, देश-विदेश की सुंदर और दुर्लभ वस्तुएँ उन्हें भेंट में दी जाती हैं और बादशाह और अमीर लोग भी अपने वफादार साथियों और सेवकों को हजारों रुपए इनाम में देते हैं। पुराने जमाने में फारस का एक बादशाह नगर के बाहर मैदान में हो रहे नौरोज के उत्सव में भाग लेने के लिए गया। उसके सारे दरबारियों, सामंतों और प्रमुख राजकर्मचारियों ने आ कर उसकी सेवा में बहुमूल्य भेंटें दीं। प्रख्यात कलाकारों और कारीगरों ने अपनी बनाई सुंदर वस्तुएँ भेंट में दीं।

इन में हिंदुस्तान से आया हुआ एक बहुत होशियार हिंदू कारीगर भी शामिल था। उसने बादशाह को जमीन तक झुक कर सलाम किया और यंत्र रूप में बना हुआ एक घोड़ा भेंट किया। उसने कहा, पृथ्वीपाल, इस तुच्छ सेवक ने कई वर्षों तक अथक परिश्रम करके आप की सेवा में देने के लिए यह अद्भुत वस्तु बनाई है। आपको समस्त संसार में ऐसी वस्तु न मिलेगी।

देखने की तो बात ही क्या है। किसी ने ऐसी चीज के बारे में सुना भी नहीं होगा। बादशाह ने त्योरी पर बल डाल कर कहा, तुम इसे अद्भुत वस्तु क्यों कहते हो? यह तो केवल लकड़ी का बना घोड़ा है जिस पर तुमने सुनहरा रुपहला साज लगाया है। हमारे यहाँ के कारीगर इससे सुंदर लकड़ी का घोड़ा बना सकते हैं। मैं तो कोई खास बात इस घोड़े से नहीं देखता।

कारीगर बोला, सरकार, मैं अपने घोड़े की गढ़न और सजावट की बात नहीं कर रहा। निश्चय ही रूप-रंग में इससे अच्छे घोड़े बन सकते हैं। किंतु इस घोड़े में एक ऐसी अद्भुत कारीगरी का काम है जो कहीं देखने को नहीं मिल सकता। ऐसा घोड़ा, मैं फिर निवेदन करता हूँ, बनाने की कोई सोच भी नहीं सकता। इसमें ऐसे पेंच लगे हैं जिन्हें घुमाने पर मैं, या कोई अन्य व्यक्ति जिसे मैं इसके यंत्रों के बारे में समझा दूँ, इस घोड़े पर आकाश की सैर कर सकता है, यह घोड़ा चिड़ियों की तरह उड़ता है। यह इतना शीघ्रगामी है कि देखते-देखते कोसों की यात्रा कर के वापस आ सकता है। यदि आपकी अनुमति हो तो मैं इस पर बैठ कर इसके करतब आपको दिखाऊँ।

बादशाह यह सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने ऐसी किसी चीज के बारे में सोचा तक नहीं था। उसने हिंदोस्तानी से कहा, दिखाओ इस घोड़े का कमाल। हिंदोस्तानी कारीगर बाईं रिकाब में पाँव डाल कर उचका और घोड़े की पीठ पर बैठ गया। उसने दोनों रिकाबों में पाँच जमा लिए और लगाम पकड़ कर बादशाह से बोला, मुझे किधर जाने का हुक्म होता

है? फारस की राजधानी शीराज से, जहाँ यह उत्सव हो रहा था, लगभग तीन मील दूर एक ऊँचा पहाड़ था जो राजधानी से दिखाई देता था। बादशाह ने कहा, वह पहाड़ देख रहे हो? हालाँकि वह यहाँ से बहुत दूर नहीं है किंतु तुम्हारे घोड़े की परीक्षा के लिए इतनी दूरी ही काफी है। उस पहाड़ की तलहटी में एक खजूर का पेड़ लगा है। तुम उसकी एक पत्ती ले आओ।

अभी बादशाह के मुँह से पूरी बात भी नहीं निकली थी कि हिंदुस्तानी कारीगर ने घोड़े की गर्दन में लगा हुआ एक पेंच मरोड़ा। घोड़ा एकदम धरती से आकाश की ओर तेजी से उठा और वायु वेग से पहाड़ की ओर उड़ने लगा और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो गया। सारे दरबारी और सामंत तथा अन्य लोग इस बात को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़े और सभी के मुख से घोड़े की प्रशंसा के शब्द निकलने लगे। पाँच सात मिनट बाद वह घोड़ा अपने कारीगर सवार को लिए हुए वापस आ गया। कारीगर के हाथ में खजूर के पेड़ की एक टहनी थी। उसने घोड़े से उतर कर बादशाह को वह टहनी भेंट की।

बादशाह यह देख कर बहुत खुश हुआ। उसने हिंदोस्तानी कारीगर से उस घोड़े का दाम पूछा। कारीगर बोला, जगाधिपति, मैं इस घोड़े को बेचने के लिए नहीं लाया किंतु यह मैं इस शर्त पर आपको भेंट कर सकता हूँ कि जो इच्छा मैं व्यक्त करूँ वह पूरी की जाए। बादशाह ने कहा, तुम क्या चाहते हो? हमारे देश में बड़े सुंदर प्रदेश और नगर हैं। तुम जहाँ का चाहो वहाँ का शासक तुम्हें बना दूँ। कारीगर ने कहा, मुझे शासनाधिकार नहीं चाहिए। मेरी इच्छा इससे कुछ अधिक की है। किंतु उस इच्छा को बताने से पहले मैं आपसे यह वचन लेना चाहता हूँ कि आप नाराज नहीं होंगे और मुझे कोई दंड नहीं देंगे। बादशाह ने वचन दिया तो हिंदोस्तानी बोला, मैं राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूँ। यह सुन कर दरबारी और सामंत क्रोध में भर गए किंतु बादशाह को चुप देख कर वे भी चुप रहे। बादशाह का बड़ा पुत्र फीरोजशाह इस बात को सुन कर क्रोध से लाल हो गया। वह बादशाह से कहने लगा, आपने वचन न दिया होता तो मैं इस नीच कारीगर को सबक सिखाता। इसकी यह हिम्मत कि अपनी हैसियत को भूल कर मेरी बहन से विवाह करना चाहता है। हम लोग किसी बादशाह को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहेंगे। आप इसे फौरन भगा दीजिए। कह दीजिए कि अपना तमाशे का घोड़ा ले कर हिंदोस्तान वापस चला जाए नहीं तो जान से हाथ धोएगा। किंतु बादशाह ने धीमे स्वर में उससे कहा, लेकिन ऐसा घोड़ा तो संसार में कहीं नहीं मिलेगा।

युवराज ने देखा कि बादशाह घोड़े पर इतना रीझ गया है कि इसे लेने के लिए नीची हैसियत के हिंदोस्तानी कारीगर को दामाद बनाने के लिए भी तैयार है तो उसने मामले को टालने की कोशिश की। उसने कारीगर के पास जा कर कहा, बादशाह सलामत तुम्हारा घोड़ा ले सकते हैं। लेकिन इससे पहले यह जरूरी है कि मैं खुद उस पर बैठ कर उसकी परीक्षा करूँ। कारीगर ने कहा, बहुत अच्छी बात है। आप जरूर इस पर बैठ कर इसकी परीक्षा करें। फीरोजशाह एकदम घोड़े पर बैठ गया। वह अनुभवहीन नवयुवक भी था और हिंदोस्तानी कारीगर के प्रस्ताव से उसका दिमाग भी खौल रहा था। घोड़े पर बैठते ही उसने बगैर कुछ पूछे ताछे घोड़े की गर्दन का पेंच मरोड़ दिया और घोड़ा आसमान में

गायब हो गया।

कारीगर ने हाथ जोड़ कर बादशाह से कहा, मालिक, युवराज ने बहुत जल्दी की, मैं उसे बता न पाया कि कौन-कौन सी कलें घोड़े में लगी हैं। वह शायद यह समझता है कि घोड़े के एक पेंच ही से सब काम होंगे। वास्तविकता यह है कि घोड़े को ठहराने, उतारने, मोड़ने आदि के लिए अलग-अलग कलें हैं। मैं उसे सब समझा देता किंतु वह एकदम से उड़ गया। अब अगर शहजादे को कोई दुख पहुँचे तो इसमें मेरा दोष न समझा जाए।

बादशाह यह सुन कर बहुत परेशान हुआ। उसे खयाल हुआ कि युवराज का अवश्य अनिष्ट होगा। यह सोच कर वह सिर पीटने लगा। उसने हिंदोस्तानी कारीगर से कहा, यह सब तेरी शरारत है। तूने जान-बूझ कर शहजादे को घोड़े का हाल न बताया ताकि उसके प्राण संकट में पड़ जाएँ। लेकिन मैं तुझे भी जीता नहीं छोड़ूँगा। उसने कहा, सरकार, मेरा कोई कसूर नहीं है। सब कुछ आपके सामने ही हुआ है। युवराज ने घोड़े पर बैठते ही उसे चालू करनेवाला पेंच घुमा दिया। उसने मुझे यह मौका ही कहाँ दिया कि मैं उसे घोड़े के दूसरे पेंचों के बारे में बताता। फिर भी निराश न होना चाहिए। उसके पास ही उतारनेवाला पेंच भी लगा है। जब भी संयोग से शहजादे का हाथ उस पर पड़ेगा तो वह धरती पर आ जाएगा।

बादशाह को इससे तसल्ली नहीं हुई। उसने कहा, मान लिया कि घोड़े के दूसरे पेंच पर उसका हाथ पड़ गया और वह नीचे भी उतर आया लेकिन न जाने कब उसका हाथ पड़े और वह कहाँ उतरे। अगर वह किसी बहुत ऊँचे पहाड़ पर उतरा या किसी नदी में जा उतरा तो क्या होगा? कारीगर ने कहा, इसकी चिंता न कीजिए। नदी में उतरा तो चाहे नदी कितनी ही गहरी या चौड़ी क्यों न हो घोड़ा अपने सवार को सुरक्षापूर्वक किनारे पर पहुँचा देगा। फिर शहजादा घोड़े के चलानेवाले यंत्र को जानता है, वह बस्ती के अलावा कहीं न उतरेगा। बादशाह ने कहा, कुछ भी हो, मैं तुझे कैद में डाल देता हूँ और अगर तीन महीने में युवराज वापस न आया तो तुझे मरवा डालूँगा। यह कह कर उसने उत्सव बंद करा दिया और कारीगर को कैद में डाल दिया।

उधर फीरोजशाह आकाश में उड़ा तो इतना ऊँचा हो गया कि पहाड़ मिट्टी के ढेलों जैसे दिखाई देने लगे। अब उसने चाहा कि अपनी राजधानी में जा उतरूँ। उसने चालू करनेवाले पेंच को उलटी ओर मरोड़ा किंतु घोड़ा आगे ही बढ़ता गया। उसने तरह-तरह से पेंच को घुमाया किंतु घोड़ा नीचे नहीं उतरा। फीरोजशाह इस बात से बहुत घबराया किंतु घोड़ा और तेजी से आगे ही बढ़ता गया। फीरोजशाह बहुत देर तक घोड़े के सिर और गर्दन को टटोल कर देखता रहा। बहुत देर के बाद उसे घोड़े के दाएँ कान के नीचे छोटा पेंच मिला। उसे घुमाया तो घोड़ा नीचे उतरने लगा किंतु अब तक बहुत देर हो गई थी। अब तक डेढ़ पहर रात बीत गई थी और फीरोजशाह को पता न चला कि कहाँ उतर रहा है। आधी रात तक घोड़ा धरती पर आया। इस समय तक फीरोजशाह को बहुत भूख भी लग आई थी। घोड़ा एक बड़े महल की छत पर उतर कर खड़ा हो गया। फीरोजशाह उस छत पर, जिसकी मुँड़ेरें संगमरमर की बनी थीं, इधर-उधर घूम कर देखने लगा कि नीचे जाने का

रास्ता कहाँ है। अंत में एक जीना दिखाई दिया जिसका एक किवाड़ खुला था। वह सोचने लगा कि नीचे जाऊँ या न जाऊँ, यहाँ के निवासी शत्रु समझ कर मुझे कहीं हानि न पहुँचाएँ। किंतु उसने सोचा कि मेरे निरस्त्र होने के कारण कोई शत्रुता समझेगा नहीं। यह सोच कर वह उतर गया।

वह एक दालान में पहुँचा और कान लगाए आहट लेने लगा किंतु सोनेवालों के खर्राटों के अलावा कुछ न सुनाई दिया। एक कमरे में दिए जल रहे थे। फीरोजशाह ने झाँक कर देखा तो कई दासियाँ और जनाने सो रहे थे। वह समझ गया कि यह किसी रानी या राजकुमारी का महल है। वह बंगाल देश की राजकुमारी का महल था। शहजादा आगे बढ़ा तो एक ओर एक कमरे के द्वार पर रेशमी परदा पड़ा था और अंदर कपूरी मोमबत्तियों का प्रकाश और सुगंध आ रही थी। वह दबे पाँव अंदर गया तो बड़ा लंबा-चौड़ा कमरा देखा जिसमें जमीन पर बहुत-सी दासियाँ सो रही थीं और एक ओर एक झालरों और महीन मच्छरदानी से सुसज्जित छपरखट पर एक शहजादी सो रही थी।

फीरोजशाह उसका मनमोहक रूप देख कर ठगा-सा रह गया और सोचने लगा कि अगर यह मुझे स्वीकार कर ले तो मैं इसके पीछे सारी दुनिया दोड़ दूँ। उस पर प्रेम का ऐसा उन्माद चढ़ा कि वह उचित-अनुचित भी भूल गया और वितान को उठा कर उसके मुँह पर रखी हुई उसकी आस्तीन उठा कर उसे देखने लगा। इसमें शहजादी की आँख खुल गई। उसने देखा कि एक अति सुंदर युवक राजसी वस्त्र पहने उसकी ओर एकटक देख रहा है। वह भय से स्तंभित रह गई। उसके मुँह से आवाज भी नहीं निकली।

फीरोजशाह ने विनयपूर्वक कहा, महोदया, आप बिल्कुल भय न करें। मैं फारस देश का युवराज हूँ। दिन में अपनी राजधानी में नौरोज का उत्सव मना रहा था। अब भाग्य ने मुझे यहाँ ला पटका है। इस समय आपकी शरण में हूँ, आपने मेरी रक्षा की तभी बचूँगा वरना मारा जाऊँगा।

शहजादी सुचित हो कर उसकी बात सुनने लगी। वह अपने पिता की सबसे छोटी बेटी थी और बंगाल के बादशाह ने यह महल खास उसी के लिए बनवाया था। उसने विस्तार से फीरोजशाह का हाल सुना। फिर बोली, युवराज, तुम किसी प्रकार की चिंता न करो। तुम यहाँ वैसे ही सम्मान से रहोगे जैसे अपने देश में रहते थे। तुम न केवल स्वयं सुरक्षित रहोगे बल्कि दूसरों को सुरक्षा प्रदान करने में भी क्षम्य होगे। तुम्हारा इस पूरे महल पर अधिकार होगा बल्कि तुम्हारा समूचे बंगाल देश पर भी अधिकार होगा।

फीरोजशाह ने कृतज्ञतास्वरूप शहजादी के पाँवों पर सिर रखना चाहा किंतु उसने रखने न दिया। उसने पूछा, तुमने अभी तक यह नहीं बताया कि तुम अपने देश से यहाँ तक कुछ ही घंटे में कैसे पहुँचे और सारे पहरों को लाँघ कर मेरे शयनकक्ष में कैसे आए। किंतु इस समय रहने दो। तुम्हारे चेहरे से भूख के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। मैं तुम्हारे भोजन का प्रबंध करके तुम्हारे सोने के लिए कमरे का प्रबंध करूँगी फिर सुबह इत्मीनान से तुम्हारी

कहानी सुनूँगी।

इतने में दासियों की आँख खुल गई। उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह युवक जिससे शहजादी घुल-घुल कर बातें कर रही है महल के कड़े पहरे से किस तरह बच कर यहाँ आ गया। शहजादी की आज्ञा से उन्होंने फीरोजशाह को स्वादिष्ट भोजन कराया और एक कमरे को सुसज्जित करके उसमें उसे सुला दिया। शहजादी अब तक फीरोजशाह के प्रेम में फँस चुकी थी। यह बात दासियों ने फौरन ताड़ ली। शहजादे के भोजन और शयन का प्रबंध करने के बाद दासियाँ शहजादी के पास आईं और उसके बारे में बातें करने लगी। एक मुँहलगी दासी ने कहा, राजकुमारी, यह शहजादा आपके योग्य है। आपका विवाह इसी से होना चाहिए। शहजादी की हार्दिक इच्छा यही थी किंतु उसने स्त्रीसुलभ लज्जा के नाते उसे डाँट दिया और कहा, क्या बेकार की बकबक लगा रखी हो। जाओ, सो जाओ और मुझे सोने दो।

सुबह उठ कर राजकुमारी ने बहुत देर तक अपना शृंगार किया। अपनी नागिन जैसी केश राशि में उसने मोती पिरोए, अपनी सुडौल गर्दन में हीरों का हार पहना, बाँहों में जड़ाऊ बाजूबंद पहने, तन पर विशेष रूप से राज परिवार के लिए तैयार किए जानेवाले रेशम का परिधान पहना और एक रत्नों से जड़ा महीन रेशम का कमरबंद अपनी कमर में बाँधा। इस रूप में सुंदरता में रति को भी लज्जित करने लगी।

उसका शृंगार काफी देर में पूरा हुआ। फिर उसने एक दासी को फीरोजशाह के कक्ष में भेज कर कहलवाया कि तुम मुझसे मिलने के लिए इधर न आना बल्कि मैं तुम्हारी ओर आ रही हूँ। फीरोजशाह भी जब जागा तो उसने दासियों से कहा कि तुम जा कर पता लगाओ कि शहजादी जागी हैं या अभी नहीं। अगर हों तो कहना कि मैं उनकी सेवा में उपस्थित होना चाहता हूँ। दासियों ने उसे शहजादी का संदेश दिया कि वह शहजादी की ओर न आए, शहजादी खुद उससे मिलने उसकी ओर आ रही हैं।

कुछ देर में अपने अति मनमोहक रूप में दासियों के बीच मंद-मंद गति से चलती हुई शहजादी उसके पास पहुँची। दोनों एक दूसरे को देख कर अति प्रसन्न हुए। शहजादे ने कहा, रात को मैंने आपकी निद्रा में विघ्न डाल कर आपको बड़ा कष्ट दिया। मेरा अपराध क्षमा करें। शहजादी ने कहा, अपराध की कोई बात नहीं है। मुझे आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई है। अब आप यह बताएँ कि आप अपने देश से चल कर इतनी जल्दी हमारे देश में कैसे पहुँचे और रात को मेरे महल में किस प्रकार प्रविष्ट हुए। यहाँ तो चिड़िया भी पर नहीं मार सकती। मुझे आपका हाल जानने की अतिशय अभिलाषा है।

शहजादा फीरोजशाह ने अपना वृत्तांत वर्णन किया, कल हमारे यहाँ नौरोज का त्योहार था। सभी शिल्पियों ने मेरे पिता को भेंटें दीं। उनमें हिंदोस्तान से आया एक कारीगर भी थ

उसने एक यंत्र से उड़नेवाला घोड़ा बादशाह को दिखाया। बादशाह को वह बहुत पसंद

आया। और उसने हिंदोस्तानी कारीगर से घोड़े का दाम पूछा। कारीगर ने कहा कि मैं आपकी बेटी से विवाह करना चाहता हूँ। मैंने देखा कि मेरे पिता को घोड़ा इतना पसंद आ गया है कि उसके बदले में कारीगर को बेटी देने को राजी हो जाएँगे। सारे दरबारी कारीगर की बात पर क्रुद्ध थे किंतु बादशाह को चुप देख कर चुप थे। मैंने अपने पिता से कहा कि अभी तक तो कारीगर ने स्वयं ही इस घोड़े को चलाया है, जब तक यह न मालूम हो कि कोई दूसरा भी इसे चला सकता है तब तक यह घोड़ा किस काम का। बादशाह ने कहा, तुम्हीं इस पर बैठ कर इसकी परीक्षा लो। मैं जल्दी में उस पर बैठ गया। एक बार जैसे हिंदोस्तानी कारीगर को एक खूँटी उमेठ कर घोड़ा उड़ाते देखा था उसी प्रकार वह खूँटी उमेठ दी। घोड़ा एकदम से जमीन से उठ गया और मैं कारीगर से दूसरे कल-पुर्जों के बारे में पूछ ही नहीं सका।

घोड़ा इतना ऊँचा उड़ने लगा कि भूमि की कोई वस्तु मुझे ठीक से दिखाई नहीं देती थी। मैंने उतरने के लिए चलानेवाली खूँटी को उलटा, दाएँ-बाएँ और अन्य कई भाँति मोड़ा किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। घोड़ा तो तेजी से आगे की ओर उड़ता ही रहा। अंत में बहुत खोजने पर मुझे एक दूसरी छोटी-सी खूँटी मिली। उसे मरोड़ा तो घोड़ा नीचे उतरने लगा। अंत में आधी रात को वह आपके महल की छत पर उतर गया। वह अब भी वहीं खड़ा है।

घोड़े से उतर कर मैंने इधर-उधर देखा तो मुझे एक जीना नीचे उतरने के लिए दिखाई दिया। मैं धीरे-धीरे नीचे आया। दालान में मैंने कई पहरे की दासियों और जनानों को गहरी नींद में सोता पाया। फिर देखा कि आपके कमरे की ओर से झीने रेशमी परदे से छन-छन कर स्वच्छ प्रकाश आ रहा है। मैं दबे पाँव आपके कमरे में आ गया। मुझे भय था कि कोई पहरेवाली औरत जाग गई और मैं पकड़ा गया तो मुझे मार ही डाला जाएगा। लेकिन पीछे लौटता तो भी कहाँ जाता। आपको सोते देखा तो देखता ही रह गया। इतने में आपकी आँख खुल गई। आपने मुझ पर रोष करने के बजाय मुझ पर बड़ी कृपा की। मेरा रोम-रोम आपका आभारी है। मैं चाहता हूँ कि आप पर सब कुछ न्योछावर कर दूँ। किंतु मेरे पास इस समय है ही क्या? एक हृदय था, वो भी आपको पहली बार देखने पर हाथ से जाता रहा।

शहजादी फीरोजशाह की इस प्रेम पगी शिष्टवार्ता को सुन कर खिल उठी। उसने कहा, आप तो उड़नेवाले घोड़े पर अक्सर सैर करते होंगे। आज संयोग से मेरी ओर भी भूल पड़े। आप से अपनापन बढ़ाना बेकार है। आपको स्वभावतः ही अपनी जन्मभूमि फारस से लगाव होगा और वहीं चले जाएँगे। हमारे देश को और हमें काहे को याद करेंगे। फीरोजशाह ने कहा, अपनी जन्म भूमि से किसे लगाव नहीं होता लेकिन इस समय तो मैं आपकी कैद में हूँ। जब आप मुझे छुटकारा देंगी तभी जा सकूँगा। रही भूलने की बात, सो आपको एक बार देख कर कोई कभी नहीं भूल सकता। मैं तो अपने को भूल जाऊँ, आप को नहीं भूल सकता।

इतने में एक दासी ने आ कर कहा कि भोजन तैयार है। शहजादी के भोजन का समय अभी नहीं हुआ था। फिर भी उसने यह सोचा कि रात को शहजादे ने यूँ ही थोड़ा-बहुत खाया

होगा इसलिए उसका हाथ पकड़ कर भोजन कक्ष में ले गई और स्वयं भी उसके साथ खाने लगी क्योंकि फीरोजशाह अकेले फिर जी भर कर भोजन न करता। दासियों ने भाँति-भाँति के स्वादिष्ट भोजन परोसे थे। खाने के समय कई नवयौवन रूपसी दासियाँ वाद्य यंत्र ले कर मधुर स्वर में गायन-वादन करने लगीं। शहजादी अपने हाथ से उठा-उठा कर स्वादिष्ट व्यंजन फीरोजशाह के आगे रख रही थी। दोनों ने अपने हाव-भाव से पूरी तरह प्रकट कर दिया कि एक दूसरे की प्रेमाग्नि में जल रहे हैं।

भोजन समाप्त होने पर शहजादी फीरोजशाह को एक बैठनेवाले कक्ष में ले गई। इस कक्ष की सुंदरता और सजावट का वर्णन नहीं हो सकता। उसकी दीवारों पर मोहक रंगों से कुशल चितेरों द्वारा बनाए हुए मनमोहक चित्र अंकित थे। वहाँ का सारा सामान सुनहरा और रुपहला था और सुंदर पच्चीकारी से सुसज्जित था। शहजादी ने वहाँ से भी उठ कर एक दालान में आसन ग्रहण किया और शहजादे को भी ले आई। यहाँ सामने एक अति सुंदर पुष्प वाटिका थी जिसमें रंगारंग फूल खिले थे और सुगंध की लपटें आ रही थीं। फीरोजशाह बोला, मैं अपने फारस के राजमहल ही को बड़ा सुंदर समझता था, आपके महल के आगे वह कुछ नहीं है।

शहजादी ने कहा, आप मेरे पिता बंगाल के बादशाह का महल देखेंगे तो यह महल तुच्छ लगेगा। मैं चाहती हूँ कि आप मेरे पिता से भेंट करें। वे आप से बड़ी प्रसन्नता से मिलेंगे। फीरोजशाह को बादशाह का महल देखने में अभिलाषा हुई। शहजादी ने सोचा कि बादशाह जब ऐसे रूपवान और सजीले राजकुमार को देखेगा तो मेरा विवाह उसके साथ कर देगा। अपनी उत्कंठा के बावजूद फीरोजशाह कई दिनों तक बंगाल के बादशाह के पास न गया क्योंकि उसका मन एक क्षण के लिए भी शहजादी का साथ छोड़ने का न होता था। शहजादी ने एक रोज फिर उस पर जोर दिया कि बादशाह से मुलाकात करो। फीरोजशाह ने कहा, आपका कहना बिल्कुल ठीक है, मुझे उनसे मिलना चाहिए। दिक्कत सिर्फ यह है कि मेरे पास यहाँ ऐसा साज-सामान नहीं जो कि बादशाह से भेंट करनेवालों के पास होना चाहिए। मैं अगर इसी हालत में उनसे मिलूँगा तो वे मेरे वंश के बारे में जान कर खुश होंगे किंतु मेरी साधारण वेशभूषा और रहन-सहन से उनके मन में मेरे प्रति प्रतिष्ठा कम हो जाएगी। और यह मैं नहीं चाहता।

शहजादी ने कहा, इसमें कोई कठिनाई नहीं है। यहाँ आपके देश के बहुत से व्यापारी रहते हैं। आप एक अलग मकान लें और अपने देश के प्रचलित साज-सज्जा का सामान उन व्यापारियों से ले कर अपना मकान सजाएँ। फीरोजशाह ने कहा, यह सुझाव आपने बहुत अच्छा दिया। अब मैं आपसे अपने मन की एक और उलझन कहता हूँ। मुझे इतने दिन हो गए अपने पिता का कोई समाचार नहीं मिला है। मेरे अचानक गायब हो जाने से वे कितने दुखी होंगे इसका कोई ठिकाना नहीं है। मुझे उनकी बड़ी चिंता लगी रहती है कि कहीं मर ही न गए हों। अगर आप कुछ खयाल न करें तो मैं एक बार अपने पिता से मिल आऊँ और उनसे आपके साथ अपने विवाह की अनुमति लूँ।

शहजादी को फीरोजशाह की बातों में तथ्य तो मालूम हुआ लेकिन उसने यह भी डर हुआ

कि कहीं ऐसा न हो कि फीरोजशाह अपने देश जा कर मुझे भूल जाए या किसी अन्य स्त्री के प्रेम में पड़ जाए या उसे अपने माता-पिता ही का प्रेम इतना अधिक हो जाए कि मेरे पास न आना चाहे। इसलिए उसने सोचा कि किसी प्रकार उसे कुछ दिन और अपने पास रखा जाए, हो सकता है कि इसका मुझसे इतना प्रेम बढ़ जाए कि यहाँ से जाने को इसका मन ही न करे। यह सोच कर उसने यह कहा, आपकी बात बिल्कुल ठीक है लेकिन मैं चाहती हूँ कि आप कुछ दिनों के लिए यहाँ और ठहर जाएँ। फीरोजशाह ने इस बात को स्वीकार कर लिया।

शहजादी ने फीरोजशाह के लिए अपने यहाँ निवास का आकर्षण और बढ़ा दिया। उसने तरह-तरह के मनोरंजन, खेलों और तमाशों का प्रबंध किया। शहजादा रोज ही महल के समीप के जंगल में जा कर शिकार खेलता था, भाँति-भाँति के संगीत आदि से उसका मन बहलाया जाता और अपनी प्रेमिका शहजादी के सौंदर्य का आनंद तो उठाता ही था। इसलिए उसका मन वहाँ ऐसा रमा कि दो महीनों तक घर की याद ही नहीं आई। लेकिन इसके बाद उसे अपने पिता का ध्यान आया और शहजादी से फारस जाने की बात कही। शहजादी यह सुन कर उदास हो गई। फीरोजशाह ने उसकी मनोदशा को समझा और कहा, सुनो शहजादी, यह तो अत्यंत अनुचित है कि मैं अपने माता-पिता से हमेशा के लिए उनकी जानकारी के बगैर अलहदा हो जाऊँ। लेकिन अगर तुम्हें मेरे प्रेम पर विश्वास नहीं है और सोचती हूँ कि मैं वापस नहीं आऊँगा तो तुम मेरे साथ चलो। तुम्हें तुम्हारे पिता मेरे साथ चलने की अनुमति न देंगे। इसलिए रात को जब सभी नौकर और दास-दासियाँ सो जाएँ तो हम दोनों चुपचाप फारस की ओर रवाना हो जाएँ। छत पर मेरा घोड़ा मौजूद ही है और अभी तक उसे किसी ने देखा नहीं है।

राजकुमारी को फीरोजशाह का वियोग असह्य था और वह भागने को तैयार हो गई। उस रात को दोनों छत पर गए। फीरोजशाह ने घोड़े का मुँह फारस की ओर किया और शहजादी को ले उड़ा। फारस पहुँच कर उसने सीधे अपने महल में जाना ठीक नहीं समझा। वह राजधानी से कुछ दूर देहात में बने राजमहल में उतरा। वहाँ शहजादी को छोड़ा और खुद शीराज के अपने महल की ओर माँ-बाप को अपने आगमन की सूचना देने के लिए चला। उसने शहजादी को आश्वासन दिया कि दो-एक दिन ही में मैं वापस आ जाऊँगा। उसने देहाती महल में प्रबंधकों को आज्ञा दी कि मेरे लिए एक घोड़ा लाओ। साथ ही उसने कहा कि मेरे पीछे शहजादी का पूरा खयाल रखना। उसे किसी प्रकार का कष्ट न होने पाए।

शहजादा घोड़े पर सवार हो कर गाँव से शीराज की ओर चला तो मार्ग में लोग उसे देख कर बड़े प्रसन्न हुए। वे उसकी कुशलतापूर्वक वापसी के लिए भगवान से प्रार्थना करते रहते थे।

फीरोजशाह राजमहल में पहुँचा तो वहाँ हर्षोल्लास की लहर आ गई। बादशाह बहुत देर तक उसे गले लगाए रोता रहा। फिर उसने पूछा कि इतने दिन कहाँ और किस तरह रहे।

फीरोजशाह ने पूरी कहानी कही और शहजादी के सेवा-सत्कार का वर्णन करने के बाद कहा, शहजादी मेरे साथ आई है और मैं उसे देहाती राजप्रसाद में छोड़ आया हूँ। हम दोनों एक-दूसरे को बेहद चाहते हैं। मुझे आशा है कि आप मुझे उससे विवाह करने की अनुमति दे देंगे। यह कहने के बाद शहजादा फीरोजशाह अपने पिता के चरणों में गिर पड़ा।

बादशाह ने उसे उठा कर सीने से लगाया और कहा, बेटे, मैं बड़ी प्रसन्नता से तुम्हें बंगाल की राजकुमारी को ब्याहने की अनुमति देता हूँ। मैं खुद देहात के महल में जाऊँगा और स्वागत-सत्कार के साथ शहजादी को राजधानी में लाऊँगा। इसके बाद यहाँ के राजमहल में विवाह की सारी रीतियाँ संपन्न की जाएँगी। इसके बाद बादशाह ने आज्ञा दी कि शादयाने अर्थात हर्षसूचक बाजे बजाए जाएँ, मेरी सवारी देहात के महल में जाने के लिए तैयार रहे और शहजादी को शीरोज के राजमहल में लाने के लिए शाही जूलूस की तैयारियाँ की जाएँ।

इसके साथ ही उसने बंदीगृह में पड़े हुए हिंदोस्तानी कारीगर को बुलाया और कहा, तेरे कारण मुझे इतने दिनों तक पुत्र-वियोग का दुख सहना पड़ा है। मेरे बेटे को भी परेशानी उठानी पड़ी। जी तो चाहता है कि तुझे मरवा डालूँ लेकिन पुत्र की वापसी पर तुझे छोड़ने का वादा कर चुका हूँ इसलिए छोड़ रहा हूँ। तू मेरे देहात के महल से अपना मनहूस घोड़ा ले कर फौरन चला जा।

हिंदोस्तानी कारीगर अच्छा कारीगर तो था किंतु कुरूप और अधेड़ अवस्था का होने के साथ तबीयत का कमीना भी था। उसने बादशाह से नीचतापूर्ण बदला लिया। शहजादी के बारे में उसे समाचार मिल चुका था। वह यह भी जानता था कि जुलूस का प्रबंध हो जाने पर बादशाह खुद बंगाल की शहजादी को ले आएगा। वह बादशाह की सवारी के चलने के पहले ही गाँव पहुँच गया। देहाती राजमहल के प्रबंधक से उसने कहा, बादशाह ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुरंत ही राजकुमारी को अपने घोड़े पर बिठा कर शीराज के महल में पहुँचाऊँ। प्रबंधक ने उसकी बात का विश्वास कर लिया और राजकुमारी भी इस बात से खुश हुई कि जल्दी ही शहजादे फीरोजशाह के पास पहुँच जाऊँगी। वह तुरंत ही कपड़े ठीक ढंग से पहन कर राजमहल में जाने के लिए तैयार हो गई। हिंदोस्तानी कारीगर ने घोड़े पर राजकुमारी को बिठाया और उसके पीछे खुद बैठ गया और घोड़े को चलानेवाली खूँटी मोड़ दी।

घोड़े को आकाश में ले जा कर उसने पूर्व दिशा की ओर मोड़ दिया। बादशाह देहाती महल से बंगाल की शहजादी को लाने के लिए तैयार होने लगा। फीरोजशाह ने चाहा कि बादशाह के वहाँ पहुँचने के पहले वहाँ जा कर शहजादी को बादशाह के आगमन की सूचना दे दे। इसलिए वह घोड़े पर बैठ कर तेजी से देहात के राजमहल में पहुँचा। वहाँ प्रबंधक उसकी बात सुन कर हक्का-बक्का हो गया। उसने कहा, सरकार उस हिंदोस्तानी कारीगर ने आ कर कहा था कि बादशाह ने उसे शीराज के महल में पहुँचने की आज्ञा दी है। इस पर मैंने शहजादी को उसके साथ कर दिया और वह उसे यंत्रवाले घोड़े पर बिठा

कर ले गया है। यह सुन कर शहजादा फीरोजशाह को अवर्णनीय दुख हुआ और वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। प्रबंधक और भी घबराया। कुछ ही देर में बादशाह की सवारी भी आई। उसने प्रबंधक से सारा हाल सुना और बहुत खीझा क्योंकि सारी प्रजा में मशहूर हो गया था कि बादशाह खुद शहजादी को जुलूस के साथ शीराज ले जाएगा। वह फीरोजशाह की बेहोशी की परवाह किए बगैर शीराज वापस चल गया।

कुछ देर बार शहजादे को होश आया। प्रबंधक ने उसके पाँवों पर गिर कर कहा, सरकार, मुझ से अनजाने में अपराध हुआ है। आप इसके लिए जो भी दंड दें मैं खुशी से झेलूँगा। शहजादे ने कहा, तुमने धोखा खाया है इसलिए मैं तुम्हें दंड नहीं दूँगा। किंतु तुम मेरे लिए फकीरों जैसे वस्त्र ले आओ। वहीं पास में फकीरों का अखाड़ा था। प्रबंधक ने जा कर उनसे कहा, एक रईस को बादशाह मरवाने ही वाला है। रईस जान बचा कर भागना चाहता है। आप कृपया एक फकीरी बाना दे दें तो वह उसे पहन कर निकल जाए। अखाड़े के फकीरों को राजाज्ञा की चिंता न थी। उन्होंने दया करके उसे फकीरी बाना दे दिया। शहजादे ने उसे पहना, बहुमूल्य रत्नों और अशर्फियों से भरी हुई थैली उसमें छुपाई और शहजादी की तलाश में फकीर बन कर निकल पड़ा।

उधर हिंदोस्तानी कारीगर शहजादी को ले कर उड़ता रहा और कुछ घंटों के उड़ने के बाद कश्मीर के राज्य में पहुँच गया। वह खुद भी भूखा था और उसे मालूम था कि शहजादी को भी भूख लग आई होगी। किंतु उसने शहर में उतरने के बजाय एक घने जंगल में घोड़े को उतारा। वहाँ पर घने पेड़ों के कारण शीतलता थी। एक ओर एक तालाब था जिसमें निर्मल जल भरा था। कारीगर ने शहजादी को घोड़े के पास छोड़ा और पास के एक गाँव में जा कर कुछ खाने पीने की चीजें लेने के लिए चला गया। शहजादी स्वयं को उस कुरूप अधेड़ व्यक्ति के चंगुल में फँसा पा कर बहुत घबराई। उसकी इच्छा हुई कि भाग कर उससे जान बचाए किंतु न तो उसे रास्ता मालूम था और न पैदल चलने की आदत थी। वह भूख से निढाल भी हो रही थी। कुछ देर में कारीगर खाना ले कर आया। उसने खुद भी खाना खाया और शहजादी को भी खाने के लिए दिया।

खा-पी कर उसने शहजादी के साथ भोग की इच्छा प्रकट की। शहजादी ने घृणापूर्वक इनकार किया तो कारीगर ने उसे मारा-पीटा और बलपूर्वक अपनी इच्छा पूरी करनी चाही। शहजादी बड़े जोर से रोने लगी। कारीगर को इसकी परवा नहीं थी। इसीलिए वह जंगल में उतरा था। संयोग से कश्मीर का बादशाह शिकार खेलने के बाद उधर से हो कर गुजर रहा था। उसने और उसके दलवालों ने स्त्री कंठ का आर्तनाद सुना तो उस तरफ आए। उन लोगों ने कारीगर से पूछा, तुम कौन हो? तुम्हारे साथ की यह स्त्री कौन है और क्यों रोए चली जा रही है? कारीगर ने बादशाह को न पहचाना। उसने कड़क कर कहा, यह मेरी पत्नी है। मेरे साथ यह हँसे या रोए, तुम लोगों को इससे क्या मतलब? शहजादी ने पूछनेवाले के शाही रंग-ढंग देखे और रो कर कहा, सरकार, आपको भगवान ने मेरी सम्मान रक्षा के लिए भेजा है। मैं बंगाल की राजकुमारी हूँ, मेरा विवाह फारस के शहजादे से होनेवाला था। यह नीच कारीगर मुझे ले भागा है।

कश्मीर के बादशाह को भी शहजादी का रूप और तौर-तरीके देख कर उसकी बात का विश्वास हुआ। उसने एक-आध बात और पूछी फिर अपने साथियों को आज्ञा दी कि कारीगर का वध कर दो। दो आदमियों ने उसे पकड़ा और क्षण मात्र में उसकी गर्दन उड़ा दी। फिर उसने शहजादी से विस्तारपूर्वक उसका हाल पूछा और उसे एक घोड़े पर बिठा कर राजधानी में ले आया। यंत्रवाले घोड़े को भी बादशाह के सेवक घसीट कर महल में ले गए। राजधानी पहुँच कर बादशाह ने शहजादी को एक अलग महल में रखा और उसकी सेवा के लिए कई सेवक और दासियाँ नियुक्त कर दीं शहजादी कारीगर के पंजे से छूट कर बड़ी शांति महसूस कर रही थी और सोच रही थी कि कश्मीर का बादशाह कितना भला आदमी है कि निःस्वार्थ उसकी मदद कर रहा था।

लेकिन कश्मीर नरेश उतना निःस्वार्थ न था जितना शहजादी ने समझा था। वह अब उसके कब्जे में थी और इस कारण वह उससे विवाह करना चाहता था और उसके लिए उसने शहजादी को अनुमति भी माँगना जरूरी न समझा। वह जानता था कि शहजादी फारस के राजकुमार पर मुग्ध है और खुशी से किसी और से विवाह न करेगी। उसने आदेश दिया कि विवाह के बाजे बजाए जाएँ और सारे राज्य में नाच-रंग और खेल तमाशे हों। एक दिन शहजादी दोपहर में सो रही थी कि बाजों की आवाज से उसकी आँख खुल गई। उसने दासियों से पूछा कि यह शोर क्यों हो रहा है तो प्रमुख दासी ने कहा, सरकार, यह बादशाह से आपके होनेवाले विवाह के उपलक्ष्य में बाजे बज रहे हैं। बादशाह का आदेश है कि इस खुशी में सारे राज्य में नाच-रंग और खेल-तमाशे किए जाएँ।

शहजादी को लगा जैसे वह एक भेड़िए के चंगुल से निकल कर दूसरे के चंगुल में आ गई है। उसने अपनी रक्षा का अजीब उपाय किया। जब बादशाह ने उसे अपने पास बुलाया तो वह उन्मत्त बन गई। उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और बादशाह और दूसरे लोगों को गालियाँ देने लगी और घूँसे मारने लगी। बादशाह उसकी दशा से चिंतित हुआ और अंतःपुर से बाहर आ कर सोचने लगा कि अब क्या किया जाए।

अपने बाहर के कक्ष में आ कर बादशाह ने अपने विश्वसनीय सभासदों से सलाह की। सब की राय हुई कि उसे कोई प्रेतबाधा लगी है वरना एकदम से पागल होने का कोई और कारण नहीं हो सकता। बादशाह ने दासियों को आदेश दिया कि शहजादी पर बराबर निगाह रखें ओर उसे नियंत्रण में रखें। उसने अपने राज्य भर के ओझाओं और तांत्रिकों को बुलवाया और शहजादी को अच्छा करने को कहा। उन लोगों ने तरह तरह की धूनियाँ दीं, अनगिनत बार अभिमंत्रित जल पिलाया और अन्य अनेकानेक उपाय किए। शहजादी को कुछ होता तो उसका इलाज भी होता। उसने शाम तक अपनी दशा और खराब कर ली और सब लोगों की चिंता बढ़ती गई। बादशाह तो दुख और चिंता के कारण रात भर सो ही न सका।

दूसरे दिन उसने आदेश दे कर यह घोषणा करवाई कि जो वैद्य-हकीम शहजादी को अच्छा कर देगा उसे काफी बड़ा इनाम दिया जाएगा। अब बहुत से वैद्य-हकीम आए। उन्होंने कहा कि नब्ज देख कर ही जाना जा सकता है कि क्या रोग है। अब शहजादी ने सोचा कि

भेद खुलनेवाला है, अगर इनमें से किसी ने भी मेरी नाड़ी देखी तो समझ जाएगा कि यह पूर्ण रूप से स्वस्थ है। इसलिए वह और भी पागल बन गई और आक्रामक हो गई। जो भी वैद्य-हकीम उसके पास उसकी नाड़ी देखने जाता उसे वह दाँतों से काटती, थप्पड़-घूँसे मारती, थूकती, गालियाँ देती या उसके कपड़े फाड़ती।

संक्षेप में यह कि शहजादी ने किसी वैद्य-हकीम को अपने पास नहीं आने दिया। उन बेचारों ने दूर ही से अटकल लगा कर तरह-तरह के काढ़े तजवीज किए। शहजादी एक-आध को पी लेती, कुछ को फेंक देती और अपना पागलपन और बढ़ाने लगती। जब सामने कोई न होता तो साधारण स्थिति में आराम करती और किसी को भी देखते ही बकना, गालियाँ देना और नोच-खसोट करना शुरू कर देती थी। सारे वैद्य और हकीम असफल हो कर वापस चले गए और बादशाह को ऐसे वैद्य की तलाश रहने लगी जो उसे अच्छा कर सके।

इसी बीच शहजादा फीरोजशाह फकीर के वेश में घूमता-घामता वहाँ आ निकला। उसने वहाँ निवासियों से एक शहजादी की, जिससे बादशाह विवाह करना चाहता था, विक्षिप्तता का हाल सुना। वह समझ गया कि यह उसकी प्रेमिका बंगाल की शहजादी होगी, जिसकी तलाश में मैं मारा-मारा फिरता हूँ। वह राजधानी में एक साधारण व्यक्ति के वेश में एक सराय में उतरा। उसे और विस्तार से शहजादी की बीमारी का हाल मालूम हुआ। वह हकीमों का-सा वेश बना कर लंबी दाढ़ी लगा कर राजमहल के सामने गया और दरबानों से बोला, सुना है, यहाँ कोई शहजादी बीमार है। मैं उसका इलाज करना चाहता हूँ। बादशाह को खबर करो। दरबान हँसने लगे और घृणापूर्वक बोले, टुटपुंजिए हकीम को देखो। बड़े प्रसिद्ध हकीम तो झख मार गए, यह शहजादी को अच्छा करके इनाम पाएँगे। फीरोजशाह ने उन्हें डाँटा, तुम्हारा काम पहरा देना है या हकीमों को सनद देना। बादशाह को खबर करो। बादशाह नहीं चाहेंगे तो मैं लौट जाऊँगा। दरबानों ने खबर की तो बादशाह ने उसे फौरन बुला लिया। फीरोजशाह सामने आया तो बादशाह ने कहा, हकीम साहब, वह किसी को पास नहीं आने देती, हर आनेवाले पर आक्रमण कर देती है। उसे कमरे में बंद कर दिया गया है। आप पहले खिड़की से उसे देखें। फीरोजशाह वहाँ पहुँचा तो खिड़की से झाँक कर देखने लगा। उसने शहजादी को पहचान लिया जो बड़े दर्द भरे स्वर में उसके विरह में गीत गा रही थी। फीरोजशाह ने गौर से देखा तो यह भी समझ गया कि शहजादी को कोई रोग नहीं है वह खुद ही अपने को पागल दिखा रही है ताकि उसका बादशाह के साथ विवाह न हो सके।

बादशाह के पास आ कर उसने कहा, मेरी समझ में शहजादी का रोग आ रहा है। उसका कमरा खुलवाइए। मैं उसके पास जा कर उसे देखूँगा। लेकिन उस समय कमरे में कोई दूसरा आदमी नहीं होना चाहिए। बादशाह ने इस बात को मान लिया। फीरोजशाह अकेला शहजादी के पलंग की ओर बढ़ा। वह उसे पहचान न पाई और हकीम समझ कर चीखने और गालियाँ देने लगी। फीरोजशाह तेजी से पलंग के पास पहुँचा और धीमे से बोला, अच्छी तरह देखो। मैं हकीम-वकीम कुछ नहीं हूँ। फारस का शहजादा फीरोजशाह हूँ। तुम्हें तलाश करता हुआ आया हूँ। तुम मेरे साथ सहयोग करो तो तुम्हें निकाल ले चलूँ। शहजादी ने उसके स्वर से उसे पहचाना और ध्यान से देखा तो सूरत भी पहचान ली।

शहजादी ने चीखना बंद कर दिया और धीमे स्वर में बोली, मैंने अपना सतीत्व बचाने के लिए यह पागलपन का ढोंग किया था। मुझे नहीं मालूम था कि कब तक यह तमाशा करना पड़ेगा। सौभाग्य से तुम आ गए। लेकिन यहाँ से मुझे निकालोगे कैसे? बादशाह को मालूम होगा कि तुम मेरे प्रेमी और भावी पति हो तो तुम्हें जीता न छोड़ेगा। फीरोजशाह ने कहा, तुम सिर्फ यह करो कि पागलपन का प्रदर्शन बहुत कम कर दो, सिर्फ कभी-कभी कुछ अजीब हरकतें किया करो। बंगाल की शहजादी ने उसके कथनानुसार काम किया। उसने कपड़े फाड़ना, मार-पीट आदि करना बंद कर दिया। फीरोजशाह ने बाहर आ कर बादशाह से कहा, आप चल कर देख लें। शहजादी साहिबा लगभग पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई हैं।

बादशाह फीरोजशाह के साथ शहजादी के कमरे आया। शहजादी ठीक-ठाक वस्त्र पहने बैठी थी। उसका व्यवहार भी लगभग सामान्य था। बादशाह ने वापस आ कर फीरोजशाह की बड़ी प्रशंसा की और कहा, हकीम साहब, आपने कमाल कर दिया है। बड़े बड़े हकीम महीनों लगे रहे और कुछ न कर सके। आपने दो-चार मिनट ही में शहजादी को ठीक कर दिया। मैं आप को मालामाल कर दूँगा। फीरोजशाह ने कहा, आपकी बड़ी कृपा है लेकिन अभी मैं एक पैसा नहीं लूँगा। शहजादी जब बिल्कुल ठीक हो जाएँगी उस समय आप जो भी देंगे मैं सिर झुका कर स्वीकार करूँगा।

फीरोजशाह ने आगे कहा, रोग पूरा ठीक करने के लिए पूरा हाल जानना जरूरी है। आप कृपा करके यह बताए कि शहजादी कब और किस प्रकार आपके राज्य में आई। वास्तव में फीरोजशाह जानना चाहता था कि यंत्र का घोड़ा प्राप्य है या नहीं। वह यह भी जानना चाहता था कि कारीगर का क्या हुआ। बादशाह ने ब्यौरेवार बताया कि इतने दिन पहले एक आदमी यंत्र के घोड़े पर इन्हें कश्मीर के एक जंगल में लाया था और इनके साथ दुराचार चाहता था। संयोग से मैं उसी समय शिकार खेल कर वापस आ रहा था। मैंने जा कर जब इनसे पूरा हाल सुना तो कारीगर को मरवा दिया और इन्हें और काठ के घोड़े को ले कर आ गया। मैं इनसे विवाह करना चाहता हूँ, यह ठीक हो जाएँ तो करूँ।

फीरोजशाह ने कहा, निश्चय ही वह यंत्र का नहीं जादू का घोड़ा होगा। उससे उतरते समय इनसे तंत्र-विधान संबंधी कोई भूल हो गई होगी। अब मेरी सलाह को ध्यानपूर्वक सुनें। उस पर कार्य किया जाय तो शहजादी साहिबा एक ही दिन में पूरी तरह ठीक हो जाएँगी। आप एक बड़े मैदान में उस घोड़े को रखवाएँ। उसके चारों ओर बड़ी-बड़ी अँगीठियाँ धूनी देने को रखवाएँ, न मालूम किस-किस प्रेतात्मा को बुलाना पड़े। फिर शहजादी को उनकी हैसियत के मुताबिक जेवर कपड़े पहना कर वहाँ लाया जाए और घोड़े पर बिठाया जाए। उसके बाद मैं मंत्र सिद्ध करूँगा।

बादशाह ने कहा, इसमें क्या मुश्किल है, यह सब अभी हो जाएगा। फीरोजशाह ने कहा, इस समय ठीक मुहूर्त नहीं है। कल सवेरे यह पूरा इंतजाम करवा दीजिए।

दूसरे दिन सुबह यंत्रवाला घोड़ा ला कर मैदान में रख दिया गया। उसके चारों ओर दस बारह अँगीठियाँ रख दी गईं। फीरोजशाह भी नहा-धो कर अच्छे कपड़े पहन कर आया और शहजादी को भी सजा-सँवार कर लाया गया। फीरोजशाह ने शहजादी को घोड़े पर बिठाया, फिर उसने झूठमूठ के मंत्र पढ़ते हुए घूम-घूम कर सारी अँगीठियों में कोई सामग्री डाली। इसके कारण ऐसा घना धुआँ उठा कि जनसमूह में किसी को घोड़ा दिखाई नहीं पड़ा। फीरोजशाह धुएँ के अंदर जा कर शहजादी के पीछे घोड़े पर जा बैठा और उसे चलानेवाली खूँटी घुमा दी। जब घोड़ा आकाश में ऊँचा हो गया तो फीरोजशाह ने पुकार कर कहा, लंपट बादशाह, देख। मैं फारस का युवराज फीरोजशाह हूँ। अपनी मँगेतर को लिए जा रहा हूँ। कुछ घंटों में दोनों को घोड़े ने शीराज पहुँचा दिया। दो-चार दिन में उन दोनों का धूमधाम से विवाह हो गया। फारस के बादशाह ने बंगाल के बादशाह को संदेश भिजवाया कि आपकी पुत्री को मैंने अपने युवराज से ब्याह दिया है, आप यह संबंध स्वीकार करें। उसने खुशी से संबंध स्वीकार किया और बहुमूल्य भेंटें फारस को भेजीं।

शहरजाद की इस कहानी को भी दुनियाजाद और शहरयार ने बहुत पसंद किया। अगली रात शहरजाद ने दूसरी कहानी कहना आरंभ किया।

शहजादा अहमद और परीबानू की कहानी

शहरजाद ने कहा, बादशाह सलामत, पुराने जमाने में हिंदोस्तान का एक बादशाह बड़ा प्रतापी और ऐश्वर्यवान था। उसके तीन बेटे थे। बड़े का नाम हुसैन, मँझले का अली और छोटे का अहमद था। बादशाह का एक भाई जब मरा तो उसने उसकी पुत्री को अपने महल में रख कर उसका पालन-पोषण किया। उसने उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए कई गुणवान और विद्वान नियुक्त किए। वह बचपन में अपने चचेरे भाइयों के साथ खेल कूद कर बड़ी हुई थी। पहले बादशाह का विचार था कि अपनी भतीजी का विवाह किसी अन्य शहजादे से करे। लेकिन उसे मालूम हुआ कि तीनों शहजादे अपनी चचेरी बहन पर मुग्ध हैं, उनमें से हर एक की इच्छा है कि उसका विवाह शहजादी के साथ हो जाए।

बादशाह को बड़ी चिंता हुई कि इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए। यह तो स्पष्ट ही हो गया था कि अगर उसका विवाह किसी बाहरी राजकुमार से किया जाएगा तो उसके तीनों ही पुत्र दुखी होंगे। संभव है कि शहजादी के हमेशा निगाहों से दूर होने के कारण उनमें से कोई आत्महत्या कर ले। यह भी संभव है कि उनमें से कोई क्रोध के वशीभूत हो कर अपने पिता ही से विद्रोह कर बैठे। अगर उनमें से किसी एक के साथ शहजादी का विवाह किया जाता है तो बाकी दो दुखी होंगे और सोचेंगे कि हमारे साथ अन्याय किया गया है। इस निराशा की स्थिति में भी वे न जाने क्या करें। बादशाह अजीब उलझन में पड़ा था। उसकी समझ में इस जटिल समस्या का कोई समाधान नहीं आ रहा था।

बादशाह कई दिनों तक इस पर विचार करता रहा कि तीनों पुत्रों में से वह अपनी भतीजी नूरुन्निहार के लिए किसी का चुनाव किस आधार पर करे। फिर एक दिन उसने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा, बेटो, तुम तीनों ही नूरुन्निहार के साथ विवाह करना चाहते हो। नूरुन्निहार सभी से ब्याही नहीं जा सकती, किसी एक ही से ब्याही जाएगी। मेरी नजर में तुम तीनों बराबर हो। मैं किसी एक को नूरुन्निहार के लायक समझ कर बाकी दो के दिलों में यह विचार पैदा नहीं करना चाहता कि मैं उन्हें घटिया समझता हूँ।

इसलिए मैंने एक तरकीब सोची है। यह तो स्पष्ट ही है कि तुममें से दो को नूरुन्निहार से हाथ धोना है और इस कारण इन दो को दुख भी होगा। किंतु उन्हें यह महसूस नहीं होगा कि उनके साथ अन्याय किया गया है। इसलिए तुम तीनों के आपसी प्रेम-भाव में कोई कमी नहीं आएगी और कोई एक किसी दूसरे को हानि पहुँचाने की स्थिति में नहीं रहेगा। मैंने यह उपाय सोचा है कि तुम तीनों अलग-अलग देशों की यात्रा करो और मेरे लिए सुंदर और दुर्लभ वस्तुएँ लाओ। एक शहजादे का एक भेंट लाना ही यथेष्ट है। जिस शहजादे की भेंट मेरी निगाह में सबसे विचित्र होगी उसी के साथ शहजादी नूरुन्निहार का विवाह होगा। इस प्रकार इस विवाह का फैसला मेरे हाथ नहीं बल्कि तुम लोगों के भाग्य और पुरुषार्थ के हाथ होगा। तुम लोगों को अपनी यात्राओं के लिए पर्याप्त और बराबर मात्रा में धन मिलेगा। मुझे आशा है कि तुम तीनों ही इस परीक्षा के लिए तैयार हो जाओगे और इसका जो भी फल होगा उसकी तुम्हें कोई और किसी से शिकायत नहीं

रहेगी। तीनों राजकुमारों ने पिता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

उन तीनों को अपनी बुद्धि और पराक्रम पर पूरा विश्वास था और हर एक सोचता था कि मैं ही सबसे अच्छी चीज लाऊँगा और नूरुन्निहार का हाथ मेरे हाथ में दिया जाएगा। बादशाह ने हर एक को यथेष्ट धन दे कर विदा कर दिया। उन में से हर एक ने कुछ सेवक अपने साथ लिए और व्यापारियों के वेश में राजधानी से निकल पड़े। कई मंजिलों तक वे इकट्ठे गए। फिर एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से विभिन्न देशों को रास्ते जाते थे। दो-चार दिन वहाँ रह कर वे अपनी-अपनी राहों पर चल पड़े। इसकी पहली शाम को उन्होंने एक साथ मिल कर भोजन किया और कुछ समझौते किए। पहली बात तो यह थी, कोई एक वर्ष से अधिक की यात्रा न करे, जो कुछ लाना हो वह एक वर्ष के अंदर ही प्राप्त कर ले क्योंकि परीक्षा किसी अवधि के अंदर ही होनी चाहिए। दूसरी बात यह तय की गई कि बादशाह के पास तीनों शहजादे एक साथ ही पहुँचें ताकि किसी को शक न हो कि किसी ने अनुचित रूप से बादशाह की कृपा प्राप्त कर ली है। उन्होंने यह भी तय किया कि अगर किसी की यात्रा जल्द पूरी हो जाए तो वह इसी सराय में आ कर ठहरे रहे और बाकी दोनों भाइयों की प्रतीक्षा करे और इस तरह जब तीनों मिल जाएँ तो एक साथ बादशाह के सामने चलें। फिर वे एक दूसरे के गले मिले और अगली सुबह चल पड़े।

बड़े शहजादे हुसैन ने विष्णुगढ़ नामक इलाके की बहुत प्रशंसा सुन रखी थी और बहुत दिनों से उस राज्य को देखना भी चाहता था। विष्णुगढ़ को समुद्री मार्ग ही से जाया जा सकता था इसलिए वह कुछ दिनों की राह तय करके बंदरगाह पहुँचा और व्यापारियों के एक दल में शामिल हो कर उधर को चल पड़ा। तीन महीने तक समुद्र और स्थल की यात्रा करने के बाद शहजादा हुसैन विष्णुगढ़ पहुँचा। विष्णुगढ़ में वह एक बड़ी सराय में ठहरा जहाँ पर बड़े-बड़े व्यापारी ठहरा करते थे। सराय में उसे विष्णुगढ़ के निवासियों ने बताया कि यहाँ का बड़ा बाजार कुछ ही दूर पर है और उसमें दुनिया की समस्त व्यापार वस्तुएँ मिलती हैं।

शहजादा हुसैन दूसरे दिन विष्णुगढ़ के मुख्य बाजार में पहुँचा। वह उसकी लंबाई-चौड़ाई और शान-शौकत को देख कर हैरान रह गया। बाजार में हजारों दुकानें थीं जो खूब बड़ी-बड़ी और बहुत साफ-सुथरी थीं। उनमें धूप और गर्मी का असर न हो इसके लिए उनके सामने बड़े-बड़े सायबान लगे थे। लेकिन इन सायबानों को इस प्रकार कलापूर्वक लगाया गया था कि दुकानों में अँधेरा बिल्कुल नहीं होता था और हर चीज साफ-साफ दिखाई देती थी। हर चीज के लिए वहाँ अलग दुकान थी। कपड़ों की दुकानों पर मूल्य और गुण के हिसाब से भाँति-भाँति के वस्त्र क्रम से लगे थे। कुछ कपड़ों पर बेलबूटे बने थे और कुछ पर पेड़ों, फलों और फूलों के चित्र इतनी कुशलता से बनाए गए थे कि यह चीजें बिल्कुल वास्तविक लगती थीं।

बाजार में कहीं कीमती कपड़ों जैसे कमख्वाब, चिकन, साटन, अतलस आदि के थानों के ढेर थे, कहीं चीनी और शीशे के बहुत खूबसूरत और नाजुक काम के बरतन थे। कहीं अत्यंत सुंदर रंग-रूप के कालीन और गलीचे रखे थे। इन सारी दुकानों को देखने के बाद

हुसैन उन दुकानों पर आया जहाँ पर सोने-चाँदी के बरतन, गहने और जवाहिरात बिक रहे थे। हुसैन को यह सब देख कर आश्चर्य हुआ और उसने सोचा कि एक ही बाजार में इतना सामान है तो नगर के सारे बाजारों में मिला कर न जाने कितना होगा।

शहजादा हुसैन को वहाँ की समृद्धि देख कर भी आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मणों का राज्य था और ब्राह्मण लोग रत्न-जटित आभूषणों और रेशमी परिधानों में सुसज्जित हो कर घूम रहे थे और काम-काज में लगे थे। उनके दास तक सोने के कड़े और कुंडल पहने हुए थे। हुसैन और बाजारों में भी घूमा। उसने यह भी देखा कि विष्णुगढ़ में फूल बहुत अधिक बिकते हैं। जिसे देखो वह सुगंधित फूलों के हार पहने घूमता है और सारे दुकानदार अपनी दुकानों को गुलदस्तों से सजाए रखते हैं जिसके कारण सारा बाजार महकता रहता है।

हुसैन बहुत देर तक इन बाजारों में घूमता और उनकी शोभा देखता रहा। अंत में वह थक गया और इच्छा करने लगा कि कहीं बैठ कर सुस्ता ले। एक दुकानदार ने उसके थके हुए चेहरे को देखा और वह सौहार्दपूर्वक उसे दुकान के अंदर ला कर बिठाया। हुसैन दुकान की चीजें देखता रहा और एक-आध चीज उसने खरीदी भी। कुछ देर बाद एक दलाल उधर से आवाज लगाता हुआ निकला, एक गलीचा तीस हजार अशर्फियाँ का है। है कोई इसको लेनेवाला? हुसैन को आश्चर्य हुआ कि गलीचे का इतना मूल्य भी हो सकता है। उसने दलाल को बुलाया और पूछा, भाई, गलीचे का दाम मैंने कभी इतना नहीं सुना, यह कैसा गलीचा है? दलाल ने समझा कि हुसैन कोई मामूली व्यापारी है। उसने कहा, भाई, तुम न समझ सकोगे कि इसमें क्या खास बात है। वास्तव में मैं तीस हजार अशर्फी गलत बोल गया, इसका मालिक चालीस हजार अशर्फी से एक कौड़ी कम नहीं लेगा।

हुसैन के जोर देने पर दलाल ने उसे गलीचा दिखाया। वह खूबसूरत और नरम था और लंबाई-चौड़ाई में चार-चार गज था। फिर भी उसमें कोई खास बात न थी। हुसैन ने कहा, यह तो एक अशर्फी से अधिक का नहीं मालूम होता। दलाल ने कहा, देखने में यह ऐसा ही लगता है लेकिन इसकी विशेषता यह है कि इस पर बैठ कर जहाँ जाने की इच्छा करो, यह वहीं पहुँचा देता है। हुसैन ने कहा, अगर बात ठीक है तो मैं इसके लिए चालीस हजार अशर्फियाँ दे सकता हूँ। किंतु यह मालूम कैसे पड़े कि इसका यह गुण है। दलाल ने पूछा कि आप कहाँ ठहरे हैं। हुसैन ने उस सराय का नाम लिया जहाँ वह ठहरा था। दलाल ने कहा, इसकी परीक्षा इस तरह हो सकती है कि मैं इसे यहाँ बिछा दूँ, हम दोनों इस पर बैठें और उस सराय में जाने की इच्छा करें। अगर यह हम लोगों को वहाँ पहुँचा दे तो आपको विश्वास हो जाएगा और तभी मैं आपसे इसका दाम चालीस हजार अशर्फी लूँगा। यह कह कर उसने दुकान में गलीचा बिछा दिया। हुसैन उसके साथ गलीचे पर बैठा और दोनों ने सराय के कमरे में जाने की इच्छा की। गलीचा हवा में उड़ा और उसने पलक मारते ही दोनों को सराय में हुसैन के कमरे में पहुँचा दिया।

हुसैन इससे बड़ा खुश हुआ। उसे विश्वास था कि उसके भाइयों को इससे अधिक विचित्र वस्तु नहीं मिल सकती और अब नूरुन्निहार उसी की होगी। उसने दलाल को तुरंत ही चालीस हजार अशर्फियाँ गिन दीं। उसका काम पूरा हो चुका था और वह वापस जा सकता

था किंतु उसने सोचा कि अगर मैं अभी उस सराय में पहुँच गया तो मुझे महीनों तक सराय में रुक कर वर्ष के अंत तक अपने भाइयों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और मैं बहुत ऊबूँगा। इसलिए उसने तय किया कि तब तक इस सुंदर देश की सैर करे और यहाँ की चित्र-विचित्र वस्तुओं को देखे। इसलिए उसने कई महीने नगर और उसके आसपास के क्षेत्रों में बिताए।

विष्णुगढ़ के राजा का नियम था कि वह सप्ताह में एक बार विदेशी व्यापारियों को अपने दरबार मं े बुलाता था और उनके सुझाव और शिकायतें सुनता था और निर्णय लेता था। हुसैन भी वहाँ जाता और बातचीत में हिस्सा लेता था। हुसैन ने राजा को अपना असली परिचय नहीं दिया था फिर भी राजा उसकी चाल-ढाल और तौर-तरीकों से प्रभावित था और उसके साथ बड़ा कृपापूर्ण व्यवहार करता था। राजा उससे हिंदोस्तान के हाल-चाल और व्यवस्था के बारे में पूछा करता।

एक दिन शहजादा नगर के एक प्रसिद्ध मंदिर को देखने गया। यह मंदिर ऊपर से नीचे तक पीतल से मढ़ा हुआ था। उसका देवस्थान दस गज लंबा और इतना ही चौड़ा था। उसमें की मुख्य देवमूर्ति मानवाकार थी और ऐसे कलापूर्ण ढंग से स्थापित की गई थी कि भक्तगण चाहे जिस ओर जाएँ देवता उन्हें अपनी ही ओर देखता हुआ लगता था। देवता की आँखें रत्नों की बनी हुई थीं। इसके बाद वह एक प्रसिद्ध ग्रामीण देवालय को देखने गया जिसे नगर के मंदिर से भी अधिक सुंदर बताया गया था। यह देवालय एक विशाल उद्यान के अंदर बना था। यह उद्यान कई बीघे का था। इसमें तरह-तरह के सुंदर फल-फूलों आदि के वृक्ष थे और उसके चारों ओर तीन गज ऊँची दीवार खिंची थी जिससे वहाँ आवारा या जंगली जानवर न घुस सकें। उद्यान के मध्य में एक चबूतरा था जिसकी ऊँचाई मनुष्य की ऊँचाई जैसी थी। उसके पत्थरों को ऐसे कौशल से जोड़ा गया था कि सारा चबूतरा एक ही पत्थर का बना हुआ लगता था। चबूतरा तीस गज लंबा और बीस गज चौड़ा था। वह संगमरमर का बना हुआ था और वह पत्थर ऐसा साफ और चिकना था कि उसमें आदमी अपना चेहरा देख सकता था।

इस देवालय का मंडप दर्शनीय था। उसमें देवी देवताओं की सैकड़ों मूर्तियाँ रखी हुई थीं। वहाँ सुबह और शाम को सैकड़ों मूर्तिपूजक ब्राह्मण और उनकी स्त्रियाँ और बच्चे पूजा-अर्चना के लिए आते थे। वे अपने पूजन में ऐसे मग्न हो जाते थे कि देखते बनता था। उनमें से बहुत से लोग ध्यान लगाए बैठे रहते। कुछ लोग पूजा की मस्ती में सराबोर हो कर घंटों नाचते रहते थे। कुछ भक्तजन सुंदर सुरीले वाद्यवृंदों के साथ भक्ति के गीत गाते और कीर्तन करते रहते थे।

मंदिर के आसपास भी मेला लगा रहता और तरह-तरह के खेल-तमाशे हुआ करते थे। दूर-दूर से लाखों लोग विशेष अवसरों पर आते और देवताओं को भेंट करने के लिए सुंदर वस्तुएँ और असंख्य द्रव्य लाते। इन विशेष अवसरों पर देश के प्रधान लोग तथा अन्य धनी लोग आ कर पूजा-अर्चना और परिक्रमा करते। षटशास्त्री विद्वान आ कर भाँति-भाँति के प्रवचन और शास्त्रार्थ करते। इनकी संख्या देख कर शहजादा हुसैन को बड़ा

आश्चर्य हुआ। उद्यान के एक ओर एक विशाल नौमंजिली इमारत चालीस खंभों पर स्थापित थी। उसकी अंदरूनी सजावट दर्शनीय थी।

विशेष पर्वों पर जब राजा और प्रमुख सामंत देवदर्शन के लिए आते तो इसी इमारत में ठहरते और व्यापारियों तथा अन्य प्रजाजनों का फैसला भी राजा यहीं करता था। इस भवन की दीवारों पर भिन्न-भिन्न पशु-पक्षियों के चित्र बड़ी कुशलता से बनाए गए थे। वन हिस्र पशुओं की आकृतियाँ इतनी सजीव थीं कि बाहर के, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र के लोग उन्हें जीवित समझ कर भयभीत हो जाते थे।

इसके अतरिक्त इसी उद्यान में तीन और लकड़ी के मकान बने हुए थे। इनकी विशेषता यह थी कि उनमें काफी मनुष्यों के होने पर भी उन्हें अपनी कीलों पर चारों और घुमाया जाता था। लोग तमाशा देखने के लिए उनमें जाते और जब मकानों को घुमाया जाता तब उनमें के लोग एक जगह खड़े रह कर भी चारों ओर के दृश्यों को देख सकते थे। इसके अलावा जगह-जगह पर मेलों के दिनों में तरह-तरह के खेल-तमाशे हुआ करते थे। लगभग एक हजार विशालकाय हाथी जो सुनहरे झूलों और चाँदी के हौदों से सुसज्जित थे, राजा और सामंतों की सवारियों के रूप में आते। कुछ हाथियों पर भाँड़ तमाशा दिखाते और गवैए गाते-बजाते थे। कुछ हाथी के बच्चे खुद तमाशा करते थे।

शहजादा हुसैन को इन हाथियों के तमाशे देख कर घोर आश्चर्य हुआ। एक बड़ा हाथी चार अलग-अलग पहिएदार तिपाइयों पर पाँव रखे अपनी सूँड़ से बाँसुरी जैसा एक वाद्य बजा रहा था। लोग तिपाइयों में रस्से लगा कर उससे हाथी को इधर-उधर भी ले जाते। एक जगह एक चौड़ा तख्ता एक तिपाई पर रखा था। उसके एक ओर एक हाथी का बच्चा खड़ा था और दूसरी ओर हाथी के वजन से कुछ अधिक वजन का लोहा रखा था। कभी वह हाथी जोर लगा कर नीचे आ जाता और लोहा ऊपर उठ जाता, कभी लोहा नीचा हो जाता और हाथी ऊपर टँग जाता और ऐसी हालत में तख्ते पर नाच दिखाता और सूँड़ से सुर-ताल के साथ गाने की आवाज निकालता। जमीन पर खड़े कई हाथी भी उसके साथ इसी तरह गाते। यह सब तमाशे राजा के सम्मुख होते थे। हुसैन को इन सब चीजों को देख कर बड़ा आनंद आया और वह एक वर्ष की मुद्दत के कुछ पहले तक यह तमाशे देखता रहा और अवधि की समाप्ति के कुछ दिन पहले अपने सेवकों के साथ गलीचे पर बैठ कर उस सराय में जाने की इच्छा की जहाँ उसे अपने भाइयों से मिलना था। गलीचे ने क्षण मात्र में उन लोगों को वहाँ पहुँचा दिया।

मँझला शहजादा अली व्यापारियों के एक दल के साथ फारस देश को रवाना हुआ। चार महीने की यात्रा के बाद शीराज में, जो फारस की राजधानी थी, पहुँचा। वह जौहरियों के वेश में था। उसने साथ के व्यापारियों से अच्छी दोस्ती कर ली। वे सब शीराज की एक सराय में उतरे। व्यापारी लोग व्यापार करने बाजार गए तो शहजादा अली भी बाजार पहुँचा और वहाँ की सैर करने लगा। शीराज के बाजार की सारी दुकानें पक्की थीं और गोल खंभों पर मंडपों की तरह बनी हुई थीं। अली जैसे-जैसे बाजार को देखता शीराज की समृद्धि पर आश्चर्य करता। वह सोच रहा था कि एक ही बाजार में करोड़ों का माल रखा

हुआ है तो सारे बाजारों में कुल मिला कर कितना माल होगा और शीराज में कितना व्यापार होता होगा।

बाजार में कई दलाल भी घूम रहे थे जो ग्राहकों को भाँति-भाँति की वस्तुएँ दिखाते थे। उसने एक दलाल को देखा जिसके हाथ में पौन गज लंबी और एक बालिश्त चौड़ी एक दूरबीन थी और वह उसका मूल्य तीस हजार अशर्फियाँ बता रहा था। अली को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने एक दुकानदार से पूछा कि वह दलाल पागल तो नहीं है जो ऐसी मामूली दूरबीन के इतने दाम माँग रहा है। दुकानदार बोला, यह यहाँ का सबसे चतुर दलाल है और रोज हजारों का व्यापार करता है। कल तक तो यह भला-चंगा था, आज अगर पागल हो गया हो तो कह नहीं सकते। वैसे अगर वह इस दूरबीन को तीस हजार अशर्फियों में बेच रहा है तो कोई खास बात होगी। आप मेरी दुकान पर ठहरिए। वह इधर ही आ रहा है। जब आएगा तो हम लोग देखेंगे कि उसका माल कैसा है।

दलाल के पास आने पर उस दुकानदार ने उसे पास बुला कर पूछा कि तुम्हारी दूरबीन में क्या विशेषता है जो तुम इसका इतना दाम माँगते हो। उसने अली की ओर इशारा करके कहा कि यह तो तुम्हें पागल समझने लगे थे। दलाल ने अली से कहा, आप अभी चाहे मुझे पागल कहें, जब मैं दूरबीन की विशेषता बताऊँगा तो आप इसे जरूर खरीद लेंगे।

उसने दूरबीन को अली के हाथों में दिया और फिर उसे प्रयोग करने का तरीका पूरी तरह बताया। उसने कहा, इसके दोनों सिरों पर दो काँच के जैसे टुकड़े लगे हैं। आप दोनों से हो कर अपनी दृष्टि बाहर डालिए। आप जिस चीज को देखना चाहेंगे वह चाहे हजारों कोस की दूरी पर हो आपको इस तरह दिखाई देगी जैसे कि आपके सामने रखी है। शहजादे ने कहा, भाई, तुम्हारी बात का विश्वास किस प्रकार हो कि यह दूरबीन इतने दूर की चीज भी दिखा सकती है। दलाल ने दूरबीन उसके हाथ में दे दी और उसके प्रयोग की विधि दुबारा बता कर कहा, आप स्वयं परीक्षा कर लीजिए। दोनों शीशों के बीच निगाहें जमा कर आप जिस वस्तु या व्यक्ति का ध्यान करेंगे उसे ऐसा स्पष्ट देखेंगे जैसे वह आपसे दो-चार गज ही पर मौजूद है।

अली ने दूरबीन लगा कर अपने पिता को देखने का विचार किया तो साफ दिखाई दिया कि बादशाह दरबार में सिंहासन पर बैठा हुआ फरियादियों की अर्जियाँ सुन कर उन पर विचार कर रहा है। फिर उसने अपनी प्रेमिका नूरुन्निहार को देखना चाहा तो वह भी अपने कक्ष में दासियों से घिरी अपने पलंग पर आराम करती दिखाई दी। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और सोचने लगा कि मेरे भाई लोग दस वर्षों तक संसार का चक्कर लगाएँ तो भी ऐसी अद्भुत वस्तु नहीं प्राप्त कर सकते। उसने दलाल से कहा, मैं तुम्हें तीस हजार अशर्फियाँ देता हूँ। दूरबीन मुझे दे दो। दलाल को इतनी आसानी से पूरा दाम देनेवाला मिला तो उसने और मुँह फैलाया और कहा कि आप से तो मैं चालीस हजार अशर्फियों से कम नहीं लूँगा। अली ने इस बारे में दलाल से झगड़ा न किया और चालीस हजार अशर्फियाँ गिन दीं।

अब वह बहुत प्रसन्न था। उसे विश्वास था कि नूरुन्निहार अब उसी की होगी। उसने

सोचा कि अभी से हिंदोस्तान की सराय में जा कर भाइयों की प्रतीक्षा करने की क्या जरूरत है। अतएव उसने दो-चार महीने फारस देश की सैर में लगाए। फिर व्यापारियों के एक दल के साथ उसी पूर्व निश्चित सराय में पहुँचा। शहजादा हुसैन एक-आध दिन पहले ही वहाँ पहुँचा था। दोनों भाई प्रेमपूर्वक एक दूसरे से मिले।

छोटा शहजादा अहमद समरकंद की ओर गया और उस नगर में एक सराय में उतरा। वहाँ उसने देखा कि एक दलाल एक सेब को हाथ में लिए है और आवाज लगा रहा है कि यह सेब पैंतीस हजार अशर्फियों में बिकाऊ है। अहमद ने उसे बुला कर पूछा कि इस सेब में ऐसी क्या बात है कि तुम इसका इतना अधिक मूल्य माँग रहे हो। दलाल ने कहा, आप इसका गुण सुनेंगे तो इसके मूल्य पर आश्चर्य न करेंगे। किसी आदमी को कितना ही भारी रोग हो और वह चाहे आखिरी साँसें गिन रहा हो, इस सेब के सुँघाते ही उसका न केवल रोग दूर हो जाता है बल्कि वह तुरंत ही अपने साधारण स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेता है और चलने-फिरने लगता है।

अहमद ने कहा, यदि इसमें यह गुण है तो मैं इसी अभी खरीद लूँगा। लेकिन यह मालूम कैसे हो कि इसमें यह गुण है। यह भी नहीं मालूम यह किसने और कैसे बनाया है। दलाल ने कहा, यहाँ के सभी लोग जानते हैं कि इसे यहाँ के एक बड़े हकीम ने बरसों तक जड़ी-बूटियों का शोधन करके बनाया है। उसने इसे सुँघा कर सैकड़ों रोगियों को ठीक किया किंतु संयोग से उसे ऐसा आकस्मिक रोग हुआ कि वही इसका प्रयोग न कर सका और मर गया। उसका सारा धन इसके बनाने में खर्च हो गया था। उसके स्त्री-बच्चों ने निर्धनता के कारण इसे बेचने के लिए मुझे दिया है। इस सेब की किसी समय भी परीक्षा की जा सकती है।

जो लोग जमा हो गए थे उनमें से एक ने कहा, मेरा एक रोगी मित्र मरणासन्न है। आप लोग उसे ठीक कर दें तो आपका अहसान मानूँगा। अहमद ने दलाल से कहा, उस आदमी को अच्छा करो। दलाल बोला, आप ही अपने हाथ से रोगी को यह सेब सुँघा कर इसका कमाल देखें। मेरा तो बीसियों बार का आजमाया हुआ है। सब लोग रोगी के पास गए। वह बेहोश था किंतु जैसे ही अहमद ने उसे सेब सुँघाया वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया। दलाल ने कहा कि इतनी परीक्षा ली गई है, अब तो मैं इसकी चालीस हजार अशर्फियाँ लूँगा। अहमद ने चालीस हजार अशर्फियाँ दे दीं और सेब ले लिया। उसके बाद उसने उस नगर और प्रदेश की कई महीने तक सैर की। फिर हिंदोस्तान जानेवाले एक काफिले के साथ हो लिया।

कुछ समय के बाद वह उसी सराय में पहुँचा जहाँ उसके दोनों भाई उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। तीनों ही इकट्ठे होने पर बहुत प्रसन्न थे कि सभी की यात्रा सकुशल समाप्त हुई। फिर उन्होंने अपनी-अपनी यात्राओं और उपलब्धियों का वर्णन किया। हुसैन ने कहा, मैं विष्णुगढ़ गया था। वह बड़ा समृद्ध देश है और वहाँ के निवासी बड़े शिष्ट हैं। मुझे वहाँ एक ऐसी चीज मिली जो और किसी को नहीं मिल सकती। तुम उस गलीचे को देख रहे हो। यह देखने में साधारण-सा गलीचा लगता है किंतु सब से असाधारण चीज है। इस पर

बैठनेवाला जिस जगह भी जाने का विचार करे यह हवा में उड़ कर उसे क्षण मात्र में उस जगह पहुँचा देता है। मैंने इसे चालीस हजार अशर्फियाँ में खरीदा है। मैंने विष्णुगढ़ की कई महीने सैर की, फिर भी महीनों पहले इस सराय में आ गया हूँ क्योंकि इस गलीचे पर अपने सेवकों के साथ बैठ कर ज्यों ही मैंने यहाँ पहुँचने की इच्छा की उसी क्षण हम लोग यहाँ पहुँच गए। इसीलिए मैं यहाँ दो-तीन महीने से हूँ और तुम लोग अभी आए हो।

अली ने कहा, भाई हुसैन, इसमें संदेह नहीं कि तुम्हारी लाई हुई वस्तु अतिशय अद्भुत है। लेकिन मैं जो कुछ लाया हूँ वह किसी तरह कम नहीं है। इस हाथी दाँत की बनी दूरबीन को देखो। यह देखने में मामूली चीज मालूम होती है लेकिन मैंने इसे चालीस हजार अशर्फियों में खरीदा है। इसमें जिस चीज को देखना चाहो वह हजारों कोस दूर होने पर भी ऐसे दिखाई देगी जैसी बिल्कुल सामने हो। अगर तुम चाहो तो इसकी परीक्षा कर सकते हो। मैं तुम्हें इसके प्रयोग की विधि बताता हूँ। यह कह कर उसने हुसैन को वह विधि बताई। हुसैन ने कहा कि मैं इसमें नूरुन्निहार को देखूँगा। किंतु ज्यों ही उसने दूरबीन लगाई उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

अली और अहमद के पूछने पर हुसैन ने कहा, भाइयो, हम तीनों का परिश्रम व्यर्थ गया और हमारे जीवन का सारा आनंद खत्म होनेवाला है। नूरुन्निहार अंतिम साँसें गिन रही है। उसे कोई जानलेवा रोग हो गया है। बीसियों दासियाँ और जनाने उसके पलंग के पास रो रहे हैं। अली और अहमद ने भी दूरबीन देखी तो यही बात पाई। अहमद ने कहा, हम सभी नूरुन्निहार का स्वास्थ्य लाभ चाहते हैं। मैं अगर वहाँ अभी पहुँच जाऊँ तो उसे इसी समय नीरोग कर सकता हूँ।

यह कह कर अहमद ने सेब निकाला और कहा, तुम लोगों के गलीचे और दूरबीन की तरह इस सेब का दाम भी चालीस हजार अशर्फी है। यह समय इसकी परीक्षा का है। इसमें यह गुण है कि किसी भी रोग के रोगी को चाहे वह मरनेवाला ही हो, यह सुँघाया जाए तो न केवल रोग दूर हो जाता है बल्कि रोगी एकदम से अपने स्वास्थ्य की साधारण अवस्था में पहुँच जाता है। इससे नूरुन्निहार को इसी समय ठीक किया जा सकता है बशर्ते कि हम वहाँ फौरन पहुँच जाएँ। हुसैन ने कहा, पहुँचाने की जिम्मेदारी मेरी रही। तुम लोग मेरे साथ इस गलीचे पर बैठ जाओ फिर इसका खेल देखो।

यह कहने के बाद हुसैन ने गलीचा बिछा दिया और तीनों भाई उस पर बैठ गए। इसके पहले उन्होंने सेवकों से कहा कि तुम लोग सराय का हिसाब चुकता करके सामान ले कर साधारण मार्ग से राजधानी को आना। गलीचे पर बैठ कर तीनों ने नूरुन्निहार के कक्ष में पहुँचने की इच्छा की और दम मारते ही वहाँ पहुँच गए। वहाँ उपस्थित लोग उनके अचानक आगमन से भयभीत हुए किंतु उन्हें पहचान कर उनके सकुशल लौट आने पर संतोष अनुभव करने लगे। अहमद ने आगे बढ़ कर औषधियोंवाला सेब नूरुन्निहार को सुँघाया। साँस अंदर जाते ही नूरुन्निहार ने आँखें खोल दीं और इधर-उधर देखने लगी।

फिर वह पलंग पर बैठ गई और बोली, मुझे गहरी नींद आ गई थी। दासियों ने कहा, नहीं, आप तो रोग के कारण मरणासन्न थीं। तुम्हारे यह तीनों चचेरे भाई अभी- अभी आए हैं और शहजादा अहमद ने एक सेब सुँघा कर आपको अच्छा किया है। दासियों से यह सुन कर नूरुन्निहार ने उनके आने पर प्रसन्नता और अहमद के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। शहजादे भी उसे स्वस्थ देख कर प्रसन्न हुए। फिर वे तीनों नूरुन्निहार से विदा ले कर अपने पिता के पास पहुँचे। बादशाह को सेवकों ने पहले ही बता दिया था कि तीनों शहजादों ने एकदम से नूरुन्निहार के कक्ष में आ कर उसे एक क्षण में निरोग कर दिया है। बादशाह ने उनके पहुँचने पर उन्हें गले लगाया। तीनों ने अपनी अपनी लाई हुई चीजें दिखाई और नूरुन्निहार के पास पहुँच कर उसे नीरोग करने का पूरा हाल कहा। फिर उन्होंने कहा, अब आप जिससे चाहें नूरुन्निहार को ब्याह दें।

बादशाह सारा हाल सुन कर चिंता में पड़ गया। वह सोचने लगा कि अहमद ने नूरुन्निहार को अच्छा किया है किंतु यदि मैं उसके साथ नूरुन्निहार की शादी करूँ तो दोनों बड़े बेटों के प्रति अन्याय होगा क्योंकि यह स्पष्ट है कि अगर अली की दूरबीन न होती तो अहमद नूरुन्निहार की बीमारी को देख भी नहीं पाता। और अगर हुसैन का गलीचा न होता तो वह लोग इतनी जल्दी आ किस तरह पाते। नूरुन्निहार के स्वास्थ्य लाभ में तीनों की लाई हुई वस्तुओं का एक असाधारण योगदान है। किस तरह शादी का फैसला किया जाए।

उसने कहा, बेटो, तुम्हारी लाई हुई वस्तुएँ एक से एक बढ़ कर अद्‌भुत हैं और उनके आधार पर कोई निर्णय नहीं हो सकता। अब दूसरी प्रतियोगिता आवश्यक है। कल तुम लोग सुबह अपने घोड़ों पर तीर-कमान ले कर फलाँ मैदान में पहुँचो। मैं और अन्य राज्याधिकारी भी वहाँ होंगे। तुम तीनों के तीर फेंकने की प्रतियोगिता होगी। तीनों में जिसका तीर सबसे आगे जाएगा उसी से नूरुन्निहार का विवाह होगा। तीनों ने सिर झुका कर आदेश को स्वीकार किया।

बादशाह ने गलीचे, दूरबीन और सेब को भंडार गृह में भेजा और दूसरी सुबह सामंतों और सभासदों के साथ मैदान में पहुँचा। तीनों शहजादे भी आ गए और तीरंदाजी शुरू हुई। सब से पहले बड़े शहजादे हुसैन ने तीर फेंका। वह काफी दूर पर जा कर गिरा। इसके बाद अली ने तीर फेंका जो हुसैन के तीर के कुछ आगे गया। फिर अहमद ने तीर चलाया जो उड़ता ही गया और आँखों से ओझल हो गया। बादशाह के सेवक काफी दूर तक गए किंतु तीर न मिला। बादशाह ने अली को यह कह कर विजेता घोषित कर दिया कि अहमद के तीर का जब पता ही नहीं चला तो कैसे कहा जाए कि वह आगे गया है या पीछे, संभव है तीर कमान से छूटा ही न हो।

इस निर्णय से हुसैन को बहुत दुख हुआ। वह नूरुन्निहार को अपने भाइयों से अधिक प्यार करता था और उसका दिल टूट गया। उसे सारे समाज से वितृष्णा हो गई। वह अली के विवाह में सम्मिलित न हुआ बल्कि फकीरों जैसे कपड़े पहन कर घर से निकल गया। अहमद भी दुख और ईर्ष्या के कारण अली और नूरुन्निहार के विवाह में शामिल न हुआ। लेकिन उसने संसार का त्याग नहीं किया। वह रोज मैदान में जा कर उस दिशा में दूर-दूर

जा कर अपना तीर ढूँढ़ा करता।

एक दिन वह अकेला ही अपने तीर को ढूँढ़ने चला। उसने सोचा कि आज तो मैं उस तीर को पा कर ही लौटूँगा। वह सीधा चलता चला गया, दाँए-बाएँ कहीं न देखा। कई पर्वत ओर घाटियाँ पार करके उसने देखा कि उसका तीर एक टीले पर पड़ा है। वह बड़े आश्चर्य में पड़ा कि तीर इतनी दूर किस तरह आ गया। पास आया तो यह देख कर और हैरान हुआ कि तीर एक चट्टान से चिपका है। वह सोचने लगा कि इसमें कोई भेद अवश्य है। तीर को पत्थर से छुड़ा कर उसने हाथ में लिया और आगे बढ़ा ताकि तीर के यहाँ पहुँचने के रहस्य को जान सके।

आगे बढ़ने पर उसे एक गुफा मिली। वह उसके अंदर चला गया। अंदर कुछ दूर पर उसे लोहे का एक दरवाजा दिखाई दिया। उसके पास जाते ही द्वार खुल गया। अंदर उसे एक ढलवा मार्ग मिला। वह तीर लिए आगे बढ़ता गया। उसने सोचा था कि यहाँ अँधेरा होगा किंतु वहाँ खूब उजाला था। दरवाजे से पचास साठ गज की दूरी पर एक विशाल भवन दिखाई दिया। उसने देखा कि एक अत्यंत रूपवती स्त्री अनुचरियों सहित उसकी ओर आ रही है। उसने सोचा कि आगे बढ़ कर उस सुंदरी को सलाम करे किंतु उसने इससे पहले ही अति मृदुल स्वर में कहा, शहजादा अहमद, इस दासी के घर में तुम्हारा स्वागत है। तुम्हें मार्ग में कोई कष्ट तो नहीं हुआ।

अहमद ने आगे बढ़ कर उसके आगे शीश झुकाया और कहा, हे भुवनमोहिनी, तुम्हारे स्वागत से मैं स्वयं को धन्य मानता हूँ किंतु मुझे आश्चर्य है कि तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम है। रूपसी हँस कर बोली, अभी तुम्हें कई सुखद आश्चर्य होंगे। अभी आ कर मेरे साथ बारहदरी में बैठो तो हम लोग आनंदपूर्वक बातें करेंगे। वहीं तुम्हें बताऊँगी कि तुम्हें कैसे जानती हूँ। यह कह कर वह अहमद को हाथ पकड़ कर बारहदरी में ले गई। शहजादे ने देखा कि बारहदरी गुंबददार है और गुंबद का अंदर का भाग सुनहरा है। जिस पर बैंगनी रंग से विचित्र चित्रकारी की गई है। अन्य सामग्री भी अति मूल्यवान थी। शहजादे ने उसकी प्रशंसा की तो रूपसी ने कहा, मेरे दूसरे महल इससे कहीं अधिक सुंदर हैं।

फिर वह शहजादे को अपने पास बिठा कर बोली, तुम मुझे नहीं जानते लेकिन मैं तुम्हें जानती हूँ। तुमने किताबों में यह तो पढ़ा ही होगा कि पृथ्वी पर मनुष्यों के अलावा जिन्न और परियाँ भी रहती हैं। मैं एक प्रमुख जिन्न की पुत्री हूँ। मेरा नाम परीबानू है। अब तुम अपना हाल भी मुझसे सुन लो। तुम तीन भाई हो। तुम्हारी चचेरी बहन नूरुन्निहार है। तुम तीनों उसे अपनी-अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। उसके लिए तुम तीनों ने अपने पिता के आदेशानुसार दूर देशों की यात्रा की। तुम्हारे पिता ने अद्भुत वस्तुओं को लाने को कहा था। तुम समरकंद गए और वह रोग निवारक सेब लाए, जिसे मैंने ही वहाँ तुम्हारे लिए भेजा था। इसी प्रकार मेरा भेजा हुआ गलीचा विष्णुगढ़ से तुम्हारा बड़ा भाई हुसेन लाया और इस प्रकार की दूरबीन फारस से अली लाया। इसी से समझ लो कि मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूँ। अब तुम्हीं बताओ मैं अच्छी हूँ या नूरुन्निहार?

परीबानू ने आगे कहा, जब तुम ने तीर फेंका तो मैंने समझ लिया कि यह तीर हुसैन के तीर से भी पीछे रह जाएगा। मैंने उसे हवा ही में पकड़ा और ला कर बाहर के टीले की चट्टान से चिपका दिया। मेरा उद्देश्य यह था कि तुम तीर को ढूँढ़ते हुए यहाँ आओ जिससे मैं तुमसे भेंट कर सकूँ। यह कह कर परीबानू ने प्यार की निगाहों से अहमद को देखा और शरमा कर आँखें झुका लीं। अहमद भी उसके रूप रस को पी कर उन्मत्त हो गया था। नूरुन्निहार दूसरे की हो चुकी थी और उसके प्रेम में फँसे रहना पागलपन होता। इधर परीबानू नूरुन्निहार से कहीं अधिक सुंदर थी। उसने कहा, सुंदरी, मैंने तुम्हें आज ही देखा है किंतु तुम्हें देख कर मेरी यह दशा हो गई कि मैं यह चाहने लगा हूँ कि सब कुछ छोड़ कर जीवन भर तुम्हारे चरणों में पड़ा रहूँ। किंतु मेरे चाहने से क्या होता है। तुम जिन्न की पुत्री हो, परी हो। तुम्हारे आत्मीय यह कब चाहेंगे कि तुम किसी मनुष्य के साथ विवाह संबंध स्थापित करो।

परीबानू ने कहा, यह बात नहीं है। मेरे माता-पिता ने मुझे पूरी छूट दे रखी है कि जिसके साथ चाहूँ विवाह करूँ। और यह तुमने क्या कहा कि तुम मेरे चरणों में पड़े रहो। मैंने तुम्हें अपना पति माना है। पति का मतलब होता है स्वामी। मैं और यह सारे महल तथा संपत्ति अब तुम्हारे ही अधिकार में रहेंगे क्योंकि मैं अभी-अभी तुम्हारे साथ विवाह करूँगी। तुम समझदार आदमी हो। मुझे तुम्हारी बुद्धिमत्ता से पूर्ण आशा है कि तुम मुझे अपनी पत्नी बनाने से इनकार नहीं करोगे। अपने बारे में तो मैं यह कह ही चुकी कि मुझे मेरे माँ-बाप ने विवाह के लिए पूरी स्वतंत्रता दे रखी है। इसके अलावा भी हमारी जाति विशेष के जिन्नों-परियों में यह रीति है कि विवाह के मामले में हर परी को स्वतंत्रता दी जाती है कि वह जिन्न, मनुष्य या किसी और जाति में भी जिससे चाहे विवाह संबंध बनाए क्योंकि हम लोगों की मान्यता है कि अपनी पसंद की शादी से स्त्री-पुरुष में सदा के लिए प्रीति बनी रहती है। इसलिए मेरी-तुम्हारी शादी सभी को मान्य होगी।

परीबानू से यह सुन कर अहमद आनंद से अभिभूत हो गया और परीबानू के पैरों पर गिरने लगा। परी ने उसे इससे रोका और सम्मानपूर्वक अपना वस्त्र भी न चूमने दिया बल्कि अपना हाथ बढ़ा दिया जिसे अहमद ने चूमा और हृदय और आँखों से लगाया। उस समाज में सम्मान प्रदर्शन की यही रीति थी। परीबानू ने मुस्कुरा कर कहा, अहमद, तुमने मेरा हाथ थामा है। इस हाथ गहे की लाज हमेशा बनाए रखना। ऐसा नहीं कि धोखा दे जाओ। अहमद ने कहा, यह किसके लिए संभव है कि तुम्हारे जैसी परी मिलने पर भी उसे छोड़ दे? मैं तो अपना मन-प्राण सब कुछ तुम्हें अर्पित कर चुका। अब मेरी हर प्रकार से तुम्हीं स्वामिनी हो। हाँ, हमारा विवाह कहाँ और कैसे होगा? परीबानू ने कहा, विवाह के लिए एक-दूसरे को पति-पत्नी मान लेना काफी होता है, सो हम दोनों ने मान लिया। बाकी विवाह की रस्में बेकार हैं। हम दोनों इसी क्षण से पति-पत्नी हो गए। रात में हम लोग एक सुसज्जित कक्ष में एक-दूसरे के संग का आनंद लेंगे।

फिर दासियाँ दोनों के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लाईं। दोनों ने तृप्त हो कर भोजन किया। भोजन के पश्चात दोनों ने मद्यपान किया और देर तक परस्पर प्रीति की बातें करते रहे। फिर परीबानू ने अहमद को अपना महल दिखाया जिसमें हर जगह इतनी

बहुतायात से रत्नादिक एकत्र थे कि शहजादे की आँखें फट गईं। उसने भवन की प्रशंसा की तो परीबानू ने कहा कि कई जिन्नों के पास ऐसे शानदार महल हैं जिनके आगे मेरा महल कुछ नहीं है। फिर वह शहजादे को अपनी वाटिकाओं में ले गई जिनकी सुंदरता का वर्णन करने में शब्द असमर्थ हैं। शाम को वह उसे अपने रात्रिकालीन भोजन कक्ष में ले गई जहाँ की सजावट देख कर शहजादा हैरान हो गया। भोजन कक्ष में कई रूपवान सुंदर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित गायिकाएँ और वादिकाएँ भी थीं जो इन दोनों के वहाँ पहुँचते ही मीठे स्वरों में गायन-वादन करने लगीं। कुछ देर में भोजन आया, जिसमें भाँति-भाँति के व्यंजन थे। कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे थे जो अहमद ने इससे पहले चखे क्या देखे भी नहीं थे। परीबानू उन पदार्थों को अपने हाथ से उठा-उठा कर अहमद के आगे रखती थी और उनकी पाक विधियाँ उसे बताती थी।

भोजन के उपरांत कुछ देर बाद मिठाई, फल और शराब लाई गई। पति-पत्नी एक- दूसरे को प्याले भर-भर कर पिलाते रहे। इससे छुट्टी पाई तो एक और अधिक सजे हुए कमरे में पहुँचे जहाँ सुनहरी रेशमी मसनदें, गद्दे आदि बिछे थे। वे दोनों जा कर मसनदों पर बैठ गए। उनके बैठते ही कई परियाँ आईं और अत्यंत सुंदर नृत्य और गायन करने लगीं। शहजादे ने अपने जीवन भर ऐसा मोहक संगीत और नृत्य कभी नहीं देखा था।

नृत्य और गायन के उपरांत दोनों शयन कक्ष में गए। वहाँ रत्नों से जड़ा विशाल पलंग था। उन्हें वहाँ पहुँचा कर सारे दास-दासियाँ जो परी और जिन्न थे उस कमरे से दूर हट गए। इसी प्रकार उन दोनों के दिन एक दूसरे के सहवास में आनंदपूर्वक कटने लगे। शहजादा अहमद को लग रहा था जैसे वह स्वप्न संसार में है। मनुष्यों के समाज में वह ऐसे आनंद और ऐसे वैभव की कल्पना भी नहीं कर सकता था। ऐसे ही वातावरण में छह महीने किस प्रकार बीत गए इसका उसे पता भी नहीं चला। परीबानू के मनमोहक रूप और उससे भी अधिक मोहक व्यवहार ने उसे ऐसा बाँध रखा कि एक क्षण भी उसकी अनुपस्थिति अहमद को सह्य न थी।

फिर भी उसे कभी-कभी यह ध्यान आया करता कि उसके पिता उसके अचानक गायब हो जाने के कारण दुखी होंगे। यह दुख अहमद के मन में उत्तरोत्तर बढ़ता जाता। किंतु वह डरता था कि न जाने परीबानू उसे जाने की अनुमति दे या न दे। एक दिन उसने परीबानू से कहा, अगर तुम अनुमति दो तो दो-चार दिन के लिए अपने पिता के घर पर भी हो लूँ। यह सुन कर परीबानू उदास हो गई और बोली, क्या बात है? क्या तुम मुझसे ऊब गए हो और बहाना बना कर मुझसे दूर होना चाहते हो? या मेरी सेवा में कोई त्रुटि है?

शहजादे ने उसका हाथ चूम कर कहा, ऐसी बात मेरे मन में आ नहीं सकती। मुझे सिर्फ यह ख्याल है कि मेरे बूढ़े बाप मेरे अचानक गायब हो जाने से बहुत परेशान होंगे। मैंने तो पहले भी कहा था और अब भी कहता हूँ कि जीवन भर तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा। मुझे सिर्फ अपने पिता के दुख का ख्याल है इसलिए जाना चाहता था। अगर तुम नहीं चाहती तो जाने दो, वहाँ नहीं जाऊँगा। परीबानू ने देखा कि शहजादा सच्चे दिल से यह बातें कर रहा है और पत्नी का प्यार उसके दिल से कम नहीं हुआ है। उसने हँस कर कहा, मैं तो

मजाक कर रही थी। मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। सचमुच ही तुम्हारे पिता तुम्हारी अनुपस्थिति से बहुत दुखी होंगे। तुम उन्हें देखने जरूर जाओ किंतु जल्दी लौटना।

उधर अहमद के पिता यानी हिंदोस्तान के बादशाह का हृदय वास्तव में बहुत दुखी रहता था। उसका एक बेटा नूरुन्निहार से विवाह करके अति सुख से रहता था और इसका बादशाह को संतोष था किंतु हुसैन और अहमद के चले जाने से उसे हृदयविदारक कष्ट भी था। अली के विवाह के दो-चार दिन बाद उसने महल के कर्मचारियों से पूछा कि हुसैन और अहमद क्यों नहीं दिखाई देते। उन्होंने कहा, शहजादा हुसैन तो संसार त्याग करके ईश्वर की खोज में फकीर बन कर निकल गए हैं लेकिन शहजादा अहमद अचानक न मालूम कहाँ गायब हो गए हैं। बादशाह ने शहजादा अहमद की खोज में बहुत जासूस दौड़ाए किंतु शहजादे का पता किसी को न चल सका। बादशाह बड़ा चिंतित हुआ।

एक दिन उसे मालूम हुआ कि इसी शहर में एक होशियार जादूगरनी रहती है जो तंत्र-विद्या से अज्ञात बातें जान लेती है। बादशाह ने उसे बुला कर कहा, जब से मैंने नूरुन्निहार से शहजादा अली का विवाह किया है शहजादा अहमद का कुछ पता नहीं चलता। मैं इससे बहुत परेशान हूँ। तुम अपने जादू से मुझे बताओ कि अहमद जीवित है या नहीं, जीवित है तो किस दिशा में है और मुझसे उसकी भेंट होगी या नहीं। जादूगरनी ने कहा, इसी क्षण तो मैं कुछ भी न बता सकूँगी। कई क्रियाएँ करनी होती हैं। कल जरूर मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दूँगी। बादशाह ने कहा, तुमने ठीक सूचना दी तो तुम्हें मालामाल कर दूँगा। इस समय तुम घर जाओ और जो क्रियाएँ जरूरी हैं वह करो। जादूगरनी दूसरे दिन आ कर बोली, मैंने जादू से यह तो जान लिया है कि शहजादा अहमद सही-सलामत हैं। किंतु वे कहाँ हैं इसका पता नहीं लग सका। मालूम होता है कि कहीं बड़े रहस्यमय स्थान में हैं जिससे मुझे कुछ पता नहीं चलता। बादशाह को इतने से ही बहुत संतोष हुआ कि अहमद जिंदा है।

इधर शहजादा अहमद अपने पिता के घर आने को तैयार हुआ तो परीबानू ने कहा, तुम एक बात का ध्यान जरूर रखना। अपने पिता तथा अन्य संबंधियों, मित्र आदि को यह हरगिज न बताना कि तुम कहाँ रहते हो और कैसे यहाँ पर पहुँचे। तुम सिर्फ यह कहना कि मेरा विवाह हो गया है और मैं जहाँ भी रहता हूँ बड़े सुख और संतोष के साथ रहता हूँ। किसी विचित्र बात का उल्लेख न करना और इसके अलावा कुछ न कहना कि दो-चार दिन के लिए पिता के मन को धैर्य देने को आया हूँ। शहजादे ने इसे स्वीकार किया।

परीबानू ने एक बढ़िया घोड़ा, जिसका साज-सामान रत्न-जटित था, शहजादे की सवारी के लिए मँगाया। यात्रा के लिए अन्य उपयुक्त और आवश्यक सामग्री का प्रबंध किया और बीस सवार, जो सब के सब जिन्न थे, शहजादे के साथ चलने के लिए बुलाए। विदाई के समय शहजादे ने फिर परीबानू से हर रहस्य को गुप्त रखने का वादा किया और अपने साथी सवारों को ले कर अपने पिता के महल की ओर चल पड़ा। महल अधिक दूर नहीं था। यह लोग घंटे-आधे घंटे में राजधानी पहुँच गए।

सारे नगर निवासी और गणमान्य लोग शहजादे को देख कर बड़े प्रसन्न हुए। वे अपना कामकाज छोड़ कर शहजादे को देखने और उसे आशीर्वाद देने को आ गए। शाही महल तक सड़क के दोनों ओर भीड़ लग गई। दरबार में पहुँच कर शहजादा पिता के चरणों में गिरा और बादशाह ने उसे उठा कर हृदय से लगाया। बादशाह ने कहा, तुम नूरुन्निहार के न मिलने से इतने रुष्ट हुए कि घर छोड़ कर ही चले गए। अब कहाँ हो और अब तक कैसे रहे? अहमद ने कहा, मैं दुखी जरूर था कि नूरुन्निहार को नहीं पा सका किंतु रुष्ट नहीं था। मैं अपना फेंका हुआ तीर ढूँढ़ता हुआ उसी दिशा में बहुत दूर निकल गया। मैं आगे बढ़ता गया। यद्यपि मैं जानता था कि मेरा ही क्या संसार के किसी भी धनुर्धर का तीर इतनी दूर नहीं पहुँच सकता तथापि मैं तीर की तलाश में आगे बढ़ता गया क्योंकि यह भी स्पष्ट था कि तीर एक ही दिशा में गया होगा, दाएँ-बाएँ तो जा नहीं सकता। अंत में यहाँ से लगभग चार कोस दूरी पर मैंने अपने तीर को एक चट्टान से चिपका हुआ पाया। यह देख कर मैं समझ गया कि तीर इतनी दूर अपने आप नहीं आया है, उसे किसी रहस्यमय शक्ति ने यहाँ किसी उद्देश्य से पहुँचाया है। उसी शक्ति ने प्रेरणा दे कर मुझे एक ऐसे स्थान पर पहुँचाया जहाँ मैं इस समय भी बड़े आनंद से रहता हूँ। इससे अधिक विवरण मैं नहीं दे सकूँगा। मैं केवल आपके मन को अपने संबंध में धैर्य देने के लिए आया हूँ, दो-एक दिन रह कर वापस चला जाऊँगा। कभी-कभी आपके दर्शन के लिए आया करूँगा।

बादशाह ने कहा, तुम्हारी खुशी है। तुम जहाँ चाहो आराम से रहो। मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता है कि तुम जहाँ भी रह रहे हो प्रसन्नता से रह रहे हो। लेकिन अगर तुम्हें आने में देर लगी तो मैं तुम्हारा समाचार किस प्रकार प्राप्त कर सकूँगा? अहमद ने निवेदन किया, यदि आपका तात्पर्य यह है कि मैं अपने निवास आदि का रहस्य बताऊँ तो मैं पहले ही निवेदन कर चुका हूँ कि जितना मैंने बता दिया है उसके अतिरिक्त कुछ भी बताने की स्थिति में मैं नहीं हूँ। आप इत्मीनान रखें मैं जल्दी-जल्दी आया करूँगा।

बादशाह ने कहा, बेटा, मेरी इच्छा किसी रहस्य को जानने की नहीं है। मैं तो केवल तुम्हारी कुशलक्षेम से आश्वस्त होना चाहता था। तुम्हारा हाल मिलता रहे यही काफी है। तुम जब चाहो आओ जब चाहो जाओ। अतएव अहमद तीन दिन तक शाही महल में रहा। चौथे दिन सुबह अपने निवास स्थान को रवाना हुआ। परीबानू उसकी वापसी पर बहुत प्रसन्न हुई। दोनों प्रेमपूर्वक जीवन का आनंद उठाने लगे। एक महीना पूरा होने पर भी जब शहजादा अपने पिता से मिलने नहीं गया तो परीबानू ने पूछा कि तुम तो कहते थे कि महीने-महीने पिता से मिलने जाऊँगा, इस बार क्यों नहीं गए। अहमद ने कहा, मैंने सोचा शायद अबकी बार तुम जाने की अनुमति न दो।

परीबानू हँस कर बोली, मेरी अनुमति पर इतना निर्भर न रहो। महीने-महीने मुझे पूछे बगैर ही पिता के पास हो आया करो। अतएव शहजादा दूसरे दिन सुबह बड़ी धूमधाम से अपने पिता के पास गया और तीन दिन वहाँ रहा। इसके बाद उसका नियम हो गया कि हर महीने शाही महल में जाता, तीन दिन वहाँ रहता और इसके बाद परीबानू के महल में आ जाता। उसके शाही महल में आगमन की तड़क-भड़क हर बार बढ़ती ही जाती थी।

यह देख कर महल का एक प्रधान कर्मचारी, जो बादशाह के मुँह लगा हुआ था, शहजादे की सवारी की बढ़ती हुई शान-शौकत से आश्चर्य में पड़ा। वह सोचने लगा कि शहजादे का विचित्र रहस्य मालूम होता है। कुछ पता नहीं कि वह कहाँ रहता है और वह ऐश्वर्य उसे कहाँ से मिला है। वह मन का नीच भी था इसलिए बादशाह को बहकाने लगा। उसने कहा, सरकार अपनी ओर से असावधान रहते हैं। आपने कभी ध्यान दिया है कि आपके पुत्र का ऐश्वर्य बढ़ता ही जाता है। उसकी शक्ति ऐसे ही बढ़ती रही तो एक दिन यह भी संभव है कि आप पर आक्रमण करके आपका राज्य हथिया ले और आपको कैद कर ले। जब से आपने नूरुन्निहार को शहजादा अली से ब्याहा है तब से शहजादा हुसैन और शहजादा अहमद अत्यंत अप्रसन्न हैं। शहजादा हुसैन ने तो फकीरी बाना ओढ़ लिया, वह चाहे भी तो आप की कुछ हानि नहीं कर सकता लेकिन कहीं अहमद आपसे बदला न ले।

बादशाह उसके बहकावे में आ गया और अहमद का हाल जानने के लिए उत्सुक रहने लगा। इसी कर्मचारी के कहने से उसने मंत्री की जानकारी के बगैर ही महल में चोर दरवाजे से जादूगरनी को बुला कर कहा, तुमने अहमद के जीवित होने की बात कहीं थी, वह तो ठीक निकली। अब तुम उसका पूरा हाल मालूम करो। यूँ तो वह हर महीने मुझसे मिलने आता है किंतु मेरे पूछने पर भी अपना हाल नहीं बताता कि कहाँ रहता है, क्या करता है। तुम इस बात का पता लगाओ, जादू से नहीं तो वैसे ही सही। महल के कर्मचारियों को कुछ मालूम नहीं। अहमद यहाँ आया हुआ है, कल सुबह वापस जाएगा। तुम उसके रास्ते में छुप कर बैठो और देखो कहाँ जाता है। फिर सारा हाल आ कर मुझे बताओ।

बादशाह से विदा हो कर जादूगरनी उस जगह पहुँची जहाँ अहमद को तीर मिला था। वह एक गुफा में बैठ कर अहमद के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी। दूसरी सुबह अहमद अपने साथियों समेत महल से रवाना हुआ। जब उस गुफा के पास पहुँचा तो जादूगरनी ने देखा कि अहमद और उसके साथ के सवार एक दुर्गम पर्वत पर चढ़ कर दूसरी तरफ उतर रहे हैं। उस रास्ते कोई मनुष्य नहीं जा सकता। जादूगरनी ने सोचा कि निश्चय ही उस ओर कोई बड़ी गुफा हैं, जिसमें जिन्न आदि रहते हैं। वह यह सोच ही रही थी कि शहजादा और उसके सेवक अचानक निगाहों से गायब हो गए। जादूगरनी गुफा से निकल कर अपनी शक्ति भर इधर-उधर फिरी किंतु उसे कुछ पता न चला। उसे वह लोहे का दरवाजा भी नहीं मिला क्योंकि वह द्वार, जिसमें से हो कर परीबानू के महल को रास्ता जाता था, केवल उस व्यक्ति को मिलता था जिसे परीबानू बुलाना चाहती थी। जादूगरनी ने मन में सोचा कि इस बार का श्रम व्यर्थ ही गया।

उसने लौट कर बादशाह से भेंट की और कहा, सरकार मैंने बहुत कोशिश की लेकिन पूरी सफलता मुझे नहीं मिली। हाँ, मेरी तलाश की शुरुआत जरूर हो गई है। अगर आप अनुमति दें तो अगले महीने अहमद के यहाँ से वापस जाने के समय आपके आदेशों का पालन करूँ। आशा है इस बार मुझे पूरी सफलता मिलेगी। बादशाह ने कहा, अच्छा, अगले महीने ही सही। लेकिन ध्यान रहे कि अगले महीने तुम्हें पूरे तौर पर पता लगाना है

कि अहमद कहाँ रहता है, कैसे रहता है और उसे इतना साज-सामान कहाँ से मिलता है। यह कह कर बादशाह ने एक कीमती हीरा जादूगरनी को दिया और कहा, जिस दिन तुमने अहमद का पूरा हाल मुझे बताया मैं सारी जिंदगी के लिए तुम्हें मालामाल कर दूँगा।

जादूगरनी ने एक महीने तक अपने घर में बैठ कर प्रतीक्षा की क्योंकि अहमद को अगले महीने ही आना था। इस बीच उसने अपनी योजना पूरी तरह बना ली क्योंकि अब उसे मालूम हो गया था कि शहजादे के साथ कुछ जिन्नों-परियों का चक्कर है। अगले महीने वह अहमद के आने के एक दिन पहले वह उस पहाड़ की चोटी पर चढ़ाव के बगल में बैठ गई। जब शहजादा अपने सेवकों के साथ लोहे के दरवाजे से हो कर जादूगरनी के पास से निकला तो उसे कोई प्रस्तर शिला समझा क्योंकि वह गुदड़ी ओढ़े गुड़ी-मुड़ी हुई पड़ी थी। अहमद पास आया तो वह जोरों से हाय-हाय करने लगी जैसे कोई दुखी व्यक्ति सहारा चाहता है। जादूगरनी महाधूर्त थी, वह और अधिक रोने-चिल्लाने लगी। शहजादे को उस पर और दया आई और उसके पास चला गया। जब उसने शहजादे की दया भावना को काफी उभार दिया तो ठंडी साँस ले कर बोलने लगी।

उसने कहा, मैं अपने घर से निकली थी इस इरादे से कि सामनेवाले गाँव में जाऊँ क्योंकि मुझे आवश्यक गृह कार्य करना था। रास्ते में मुझे जोर से सर्दी लग कर बुखार चढ़ आया और मैं विवश हो कर यहीं गिर पड़ी। मुझे लगता है कि मैं इसी निर्जन स्थान में प्राण दे दूँगी। शहजादे ने कहा, यहाँ आसपास कोई बस्ती नहीं है। पास में केवल एक भवन है। मैं तुझे वहाँ पहुँचा दूँगा। तू उठ कर मेरे पास आ जा। बुढ़िया ठंडी साँस भर कर बोली, मुझमें इतना दम नहीं है बेटा जो मैं खुद उठ सकूँ। मुझे तो कोई उठा कर ले चले तो ले चले। वह जानती थी कि किसी जिन्न के साथ ही वह उस रहस्यमय भवन में जा सकती है।

शहजादी ने एक सवार को आदेश दिया कि बुढ़िया को उठा कर अपने घोड़े पर रख लो और मेरे पीछे आओ। सवार ने बुढ़िया को उठा लिया तो अहमद ने परीबानू को आवाज दी। वह आई और पूछने लगी कि तुम तो पिता के घर के लिए जा रहे थे, वापस कैसे आ गए। उसने बताया कि रास्ते में सर्दी और ज्वर में मरती हुई यह बुढ़िया मिली और मुझे इस पर दया आई। इसलिए मैं इसे ले आया हूँ कि तुम इसकी देखभाल और इसका उपचार करो। परीबानू ने अपनी दासियों से कहा कि इस बुढ़िया को किसी अच्छी जगह आराम से लिटा दो और हकीम को बुला कर इसकी दवा-दारू करो।

दासियाँ बुढ़िया को उठा ले गईं तो परीबानू ने अहमद से कहा, प्रियतम, तुम्हारी दया भावना को देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई और मैं तुम्हारे कहने से उसकी खबरगीरी भी करूँगी। किंतु मुझे डर है कि कहीं इस बुढ़िया के कारण तुम पर कोई मुसीबत न आए।

अहमद ने कारण पूछा तो परीबानू ने कहा, वह कहती तो है कि ऐसी बीमार है कि उठ कर नहीं चल सकती। किंतु उसके चेहरे पर किसी बीमारी के लक्षण नहीं दिखाई देते। मालूम होता है तुम्हारे किसी शत्रु ने तुम्हारे खिलाफ कोई षडचंत्र किया है। अहमद ने कहा,

मेरी प्यारी, भगवान करे तुम युग-युग जियो। किंतु तुम आश्वस्त रहो कि मेरे विरुद्ध कोई षडचंत्र नहीं होगा। मैंने कभी किसी का बुरा किया ही नहीं तो कोई मेरे साथ शत्रुता क्यों करेगा। तुम मन से भय निकाल दो, मैं पिता के पास जा रहा हूँ।

यह कह कर अहमद अपने पिता के यहाँ पहुँचा। यद्यपि बादशाह पूरी तरह दुष्ट कर्मचारी के बहकावे में आ चुका था तथापि उसने प्रकट में अहमद के आने पर सदा की भाँति प्रसन्नता व्यक्त की।

उधर परीबानू के महल में वे दासियाँ जो बुढ़िया की सेवा के लिए नियुक्त की गई थीं उसे एक सुंदर आवास में ले गईं। उस मकान में बड़ा कीमती सजावट का सामान था। दासियों ने बुढ़िया को एक आरामदेह पलंग पर लिटा दिया। एक दासी उसका बदन दबाने लगी। दूसरी ने एक बर्तन से एक प्याले में एक विशेष अर्क निकाला जिसे ज्वर के रोगियों को पिलाया जाता है। दोनों दासियों ने उस बुढ़िया को उठा कर अर्क पिला दिया। फिर उसके शरीर पर एक लिहाफ डाल कर कहा, अम्मा, अब तुम आराम से सो जाओ। कुछ ही देर में तुम बिल्कुल स्वस्थ हो जाओगी।

दासियाँ यह कह कर चली गईं। बुढ़िया बीमार तो थी ही नहीं, सिर्फ अहमद का निवास स्थान देखने आई थी। दासियाँ थोड़ी देर में आईं तो वह उठ कर बैठ गई और बोली, तुम स्वामिनी से कह दो कि बुढ़िया बिल्कुल ठीक हो गई है। दवा ने जादू का-सा असर किया है। अब वह आप को आशीर्वाद दे कर और आपसे विदा ले कर जाना चाहती है। दासियाँ उसे सारे सजे-सजाए कक्षों और दालानों से हो कर बाहरी मकान में तख्त पर बैठी परीबानू के पास ले गईं। जिस तख्त पर परीबानू बैठी थी वह रत्न-जटित था और उसके चारों ओर रूपवती दासियाँ परीबानू की सेवा में खड़ी थीं। जादूगरनी इस वैभव से इतनी अभिभूत हुई कि उसकी जबान बंद हो गई और वह परीबानू के पाँवों पर गिर पड़ी।

परीबानू ने जादूगरनी से मृदुल स्वर में कहा, तुम्हारे यहाँ आने से मैं प्रसन्न हुई हूँ। तुम अगर चाहो तो मेरे पूरे महल को देखो। मेरी दासियाँ तुम्हें हर चीज अच्छी तरह दिखाएँगी। जादूगरनी ने परीबानू के सामने की भूमि को चूमा और उससे विदा हुई। परीबानू की दासियों ने पहले उसे महल के सारे भवन विस्तारपूर्वक दिखाए। फिर उसे लोहे के दरवाजे से बाहर का रास्ता दिखाया। जादूगरनी कुछ कदम आगे बढ़ी। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने पलट कर देखा ताकि लोहे के दरवाजे की स्थिति को अच्छी तरह याद रख सके लेकिन वह दरवाजा गायब हो गया। जादूगरनी ने इधर-उधर घूम कर उसका पता लगाने की कोशिश की लेकिन उसे सफलता न मिलनी थी न मिली। इस बात से उसे बड़ी खीझ हुई।

जादूगरनी शाही महल पहुँची और महल के चोर दरवाजे से, जहाँ से वह साधारणतः महल में जाया करती थी, प्रविष्ट हुई। बादशाह ने उसे अपने कमरे में बुलाया और दासों से एकांत करने को कहा। बादशाह ने कहा, तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है। मालूम होता है कि

इस बार भी तुम्हें सफलता नहीं मिली है। जादूगरनी ने कहा, नहीं सरकार, जिस काम के लिए मैं गई थी वह तो पूरी तरह कर आई। चेहरा उतरने का कारण कुछ और ही है।

फिर उसने विस्तारपूर्वक बताया कि चालाकी से शहजादा अहमद के मन में दया भाव उत्पन्न करके किस तरह उसने उसके निवास स्थान में प्रवेश पाया और वहाँ क्या- क्या देखा। उसने कहा, उस महल की मालिक जो परी है वह आपके बेटे की पत्नी की तरह रहती है। आप शायद यह सुन कर प्रसन्न हुए हों कि आपकी बहू परी है और अहमद को सुख प्राप्त हुआ है। मैं कहती हूँ कि इसके कारण आपका अहित होगा। यह बिल्कुल मुमकिन है कि अहमद आप से दुश्मनी करे। आप शायद यह सोचते होंगे कि अहमद सपूत है और ऐसा नहीं हो सकता कि वह आपसे दुश्मनी ठाने। अहमद स्वभाव का अच्छा है किंतु इस समय वह पूरी तरह परी के बस में है और उसके कहने पर कुछ भी कर सकता है। आप अपनी ओर से होशियार रहें। अब मुझे जाने की अनुमति दी जाए।

बादशाह ने कहा, मैं तुम पर दो कारणों से बहुत प्रसन्न हूँ। एक तो यह कि तुमने मेरे कहने पर वह काम किया जो किसी और व्यक्ति के लिए संभव नहीं था। दूसरे इस कारण कि तुमने मेरे हित के लिए मुझे परामर्श दिया। तुम जाओ, बीच-बीच में मैं तुम्हें जरूरत पड़ने पर बुलाया करूँगा। जादूगरनी ने फर्शी सलाम किया और अपने घर चली गई।

अब बादशाह ने महल के उस प्रमुख कर्मचारी को बुलाया जिसने उसके मन में अहमद के प्रति शंका डाली थी। उसने जादूगरनी द्वारा दी गई सूचना विस्तारपूर्वक उसे बताई और पूछा, अहमद अभी तो कुछ बुरा नहीं सोच रहा है किंतु वह इस स्थिति में है कि जब चाहे मुझ पर हमला कर दे। तुम्हारी राय में मुझे क्या करना चाहिए? प्रधान कर्मचारी ने कहा, हुजूर, मेरी राय में अहमद को मरवाना ठीक न होगा, इससे आपकी बदनामी हो जाएगी। मेरी राय में उसे कैद में डाल देना चाहिए। बादशाह ने कहा, अच्छा, मैं सोचूँगा। प्रधान कर्मचारी विदा हुआ तो बादशाह ने फिर जादूगरनी को उसके घर बुलाया। उसके आने पर कहा कि प्रधान कर्मचारी ने अहमद को कैद में डालने की सलाह दी है। जादूगरनी ने कहा, सरकार, इसमें बड़ा खतरा है। अहमद के साथ आप उसके साथ के अन्य सवारों को भी कैद करेंगे। लेकिन वे जिन्न हैं और जिन्नों को कोई कैद रोक नहीं सकती। वे जा कर परीबानू से कहेंगे और वह अपने पिता से कह कर जिन्नों की पूरी फौज आप पर हमला करने के लिए भिजवा सकती है। आप ऐसा करें कि साँप मरे और लाठी न टूटे। आप अहमद से कहें कि वह एक ऐसा लंबा-चौड़ा डेरा लाए जिसके नीचे सारी फौज आ जाए और वह इतना हलका भी हो कि उसे एक आदमी उठा ले। वह यह माँग पूरी न कर सकेगा और शर्म से आपके पास नहीं आएगा और फिर आप उसके संभावित उत्पात से बचे रहेंगे। और मान लिया कि उसने किसी प्रकार यदि कार्य भी कर दिया तो मैं आपको और चीजें बताऊँगी जिन्हें लाने की आप उससे फरमायश करें। इस तरह आपको जिन्नों द्वारा निर्मित बहुत-सी अजीब चीजें भी मिल जाएँगी और अहमद भी आपकी रोज-रोज की माँग से तंग आ कर आपके पास आना छोड़ देगा और आप उसे मारने या कैद करने की बदनामी से भी बचे रहेंगे।

दूसरे दिन बादशाह ने मंत्री से इस योजना के बारे में सलाह ली। मंत्री चुप रहा। वह जानता था कि बादशाह बुरे सलाहकारों के चक्कर में है और सत्परामर्श नहीं मानेगा। बादशाह ने मूर्खतावश उसकी चुप्पी को सहमति समझा और उसे विदा किया। फिर उसने अहमद को बुलाया जो उस समय तक वहीं ठहरा हुआ था। बादशाह ने हँसते हुए उससे कहा, बेटे, तुमने मुझे अपना भेद नहीं बताया, लेकिन बादशाहों की निगाहों से कोई चीज छुप नहीं सकती। तुम्हारी शादी परी से हुई है, यह सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुई है। लेकिन भाई, तुम्हारी बीबी परी है इस बात का मुझे भी तो कुछ लाभ मिलना चाहिए। वह तुम्हें बहुत चाहती है और तुम उससे जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें खुशी से दे दगी। यह तो तुम जानते ही हो कि मैं अकसर शिकार को जाता हूँ। कभी-कभी शत्रुओं का सामना करने के लिए बहुत-से तंबुओं की जरूरत पड़ती है। इनके ले जाने के लिए सैकड़ों ऊँट और डेरा लगानेवाले भी ले जाने पड़ते हैं। अगर तुम कहोगे तो परी तुम्हें लंबा-चौड़ा डेरा दे देगी कि उसके नीचे सारी फौज आ जाए। साथ ही ऐसा हलका भी होना चाहिए कि उसे एक आदमी, यहाँ तक कि हम-तुम भी उठा सकें।

अहमद ने कहा, मैं अपनी पत्नी से ऐसा डेरा माँगूँगा जरूर लेकिन अभी से यह नहीं कह सकता कि ऐसा डेरा उसके पास है या नहीं। अगर नहीं होगा तो मैं नहीं ला सकूँगा। बादशाह इस पर नाराज हो कर बोला, यह तुम टालमटोल कर रहे हो। तुमसे अपनी पत्नी से कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं है। या फिर उसे तुम्हारी कोई परवा ही नहीं है। वरना इतनी मामूली-सी चीज परी के पास न हो यह कैसे संभव है? अगर तुम डेरा न ला सको तो तुम्हें मेरे पास आने की भी कोई जरूरत नहीं है। मुझे ऐसे बेटे से मिलने में क्या खुशी हो सकती है जो अपनी स्त्री से इतना भयग्रस्त हो कि उससे अपने बाप की जरूरत की एक मामूली चीज भी माँग न सके। अब तुम जाओ, खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो?

अहमद को अपने पिता का यह व्यवहार बहुत बुरा लगा। उसे अगले दिन वापस होना था किंतु वह उसी दिन परीबानू के महल को चल पड़ा। वहाँ जा कर भी उसका विषाद कायम रहा। परीबानू ने पूछा, तुम एक दिन जल्दी क्यों आ गए? तुम उदास भी मालूम होते हो। क्या बात है? शहजादा अहमद ने पूरी बात सुनाई। परीबानू की भौंहों पर बल पड़ गए। उसने कहा, उन्हें डेरा जरूर मिलेगा लेकिन जान पड़ता है उनका अंत काल निकट आ गया है। अहमद ने कहा, यह तुम क्या कह रही हो। अभी वे वर्षों तक राज करेंगे। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है और उन्हें कोई रोग-शोक नहीं है। वे बड़े चैतन्य भी हैं। तुम्हारे कहने के अनुसार मैंने यहाँ का हाल उन्हें या किसी को भी नहीं बताया था। फिर भी उन्हें मालूम है कि मेरा विवाह परी से हुआ है।

परीबानू बोली, प्यारे, तुम्हें याद है कि मैंने उस बुढ़िया को देख कर, जिसे तुम बीमार समझ कर उठा लाए थे, क्या कहा था, वह बीमार नहीं थी। वह बीमारी का बहाना बना करके यहाँ का हालचाल देखने के लिए आई थी। उसी ने यहाँ का सारा हाल बादशाह से कहा है। जब तुम उसे यहाँ छोड़ गए तो मैंने उसके लिए एक मामूली अर्क भेजा जो किसी रोग की दवा नहीं थी। वह उसे पीते ही उठ बैठी और कुछ देर बाद विदा लेने के लिए मेरे पास आई। मैंने उसकी और परीक्षा लेने के लिए उसे अपने सारे भवन विस्तारपूर्वक दिखाए।

उसने बड़े ध्यान से सब कुछ देखा, मामूली बुढ़िया होती तो अपने गंतव्य स्थान को जाने की जल्दी में होती। यहाँ का हाल उसके सिवा किसी को मालूम ही नहीं हो सकता। उसी ने कहा होगा।

अहमद ने कहा, तुम वास्तव में बड़ी होशियार हो। लेकिन डेरे के लिए बताओ क्या करूँ। परीबानू ने कहा, मामूली चीज है, अभी मँगाती हूँ। उसके कहने पर एक दासी मुट्ठी में बंद करके डेरा ले आई। अहमद के हाथ में उसने उसे दिया तो अहमद परीबानू से बोला, मजाक क्यों करती हो? इसी डेरे के नीचे फौज आएगी? परीबानू ने मुस्कुरा कर दासी से कहा, नूरजहाँ, यह समझते हैं कि मैं इनसे मजाक कर रही हूँ। तू इन्हें बाहर ले जा कर डेरे का विस्तार तो दिखा दे। नूरजहाँ ने डेरा मुट्ठी में दबाया और शहजादे को ले कर महल से बहुत दूर एक लंबे-चौड़े मैदान में गई। उसने शहजादे को डेरा खड़ा करने की तरकीब बताई और फिर डेरे को खड़ा कर दिया। अहमद ने देखा कि उसने नीचे एक क्या दो फौजें आ जाएँ।

नूरजहाँ ने डेरा तह किया और शहजादे के साथ अंदर आई। अहमद ने कहा, कहो तो इसे अभी ले जा कर पिता को दे दूँ। परीबानू ने कहा, ऐसी क्या जल्दी है। अगले महीने अपने निश्चित समय पर जाना। शहजादा मान गया। अगले महीने वह राजधानी में गया तो महल के अंत:पुर में जाने के बजाय सीधे दरबार में पहुँचा। बादशाह ने व्यंग्यपूर्वक पूछा, मेरी चीज तो ले ही आए होगे। अहमद ने कहा, आपके चरणों के प्रताप से ले आया हूँ। अभी बाहर चल कर इसे देख लें। अभी आपको मेरी मुट्ठी देख कर विश्वास नहीं हो पा रहा होगा। बादशाह और दरबारी बड़े मैदान में गए जहाँ अहमद ने डेरा खड़ा कर दिया। सभी की आँखें फट गईं। बादशाह ने अहमद की बड़ी प्रशंसा की और उसे आराम करने को कहा।

किंतु वास्तव में उसकी घबराहट बढ़ गई थी। वह सोच रहा था कि वाकई अहमद की शक्ति अत्यधिक है और वह कुछ शंकित भी हो गया है। उसने महल में जा कर फिर जादूगरनी को बुलाया और कहा, अब क्या करूँ? अहमद तो अपनी मुट्ठी में ऐसा डेरा ले आया जिस में एक क्या दो सेनाएँ आसानी से समा जाएँ। उसने कुछ सोच कर कहा, अब की बार अहमद से चश्म-ए-शेराँ का पानी लाने को कहें जिसकी कुछ बूँदें पीने से आदमी हमेशा जवान और तंदुरुस्त रहता है।

दूसरे दिन उसने दरबार में अहमद को बुलाया और कहा, बेटे, तुमने बड़ा डेरा ला कर मेरी एक बड़ी जरूरत पूरी कर दी किंतु अब दूसरी जरूरत भी पूरी करो। मेरा बुढ़ापा आ रहा है और रोग भी उत्पन्न हो रहे हैं। अगर तुम अपनी पत्नी की सहायता से मेरे लिए चश्म-ए-शेराँ का स्वास्थ्यवर्धक पानी ला सको तो बड़ी अच्छी बात हो। अहमद कुढ़ गया कि एक चीज पाते ही दूसरी अलभ्य वस्तु माँग बैठे। वह यह भी सोच रहा था कि परीबानू के लिए असंभव तो यह भी न होगा लकिन वह इन फरमाइशों से चिढ़ेगी जरूर। उसने थोड़ी देर तक सोच कर कहा, आज्ञाकारी पुत्र की हैसियत से मुझे आपकी आज्ञा के पालन में खुशी होगी। लेकिन मैं वादा नहीं कर सकता। पत्नी से सलाह लूँगा और यदि संभव होगा तो

वह जल आपकी सेवा में अर्पित करूँगा।

अहमद दूसरे दिन ही परीबानू के महल की ओर चल पड़ा। परीबानू के सामने जा कर बोला, डेरा पा कर मेरे पिता ने तुम्हारा बड़ा अहसान माना है। लेकिन एक नई फरमाइश भी कर दी है। उन्होंने चश्म-ए-शेराँ का स्वास्थ्यवर्धक जल माँगा है। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि यह चश्माए-शेराँ क्या बला है। परीबानू ने कहा, मालूम होता है कि तुम्हारे पिता ने तुम्हें तंग करने पर कमर कस ली है। इसीलिए अजीब चीजें मँगाते हैं। अब की बार उन्होंने वह चीज मँगाई है जो जिन्न भी आसानी से न ला सकें। खैर तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें बताऊँगी कि चश्म-ए-शेराँ तक कैसे पहुँचो और वह पानी कैसे लाओ।

तुम कल सुबह उस ओर की सड़क पर जाना। काफी दूर जाने के बाद एक लोहे का फाटक मिलेगा, जिसके अंदर वह सरोवर है जिसका पानी लाने को तुमसे कहा गया है। अब इस सरोवर का पानी लाने की तरकीब सुनो। अपने साथ दो घोड़े लो। एक पर बैठो और दूसरे पर एक भेड़ के चार टुकड़े लादो और उस घोड़े की लगाम पकड़े रहो। भेड़ मैं आज रात ही कटवा रखूँगी। मैं इसी समय दो गेंदें तुम्हें सी कर दूँगी। यहाँ से निकलते ही तुम एक गेंद अपने पास रखना और एक जमीन पर डाल देना। वह लुढ़कती चली जाएगी और तुम्हें सरोवर के लौह द्वार तक पहुँचा देगी। द्वार पर दो जागे हुए सिंह तुम्हें देखेंगे तो अपने सोए हुए साथियों को जगा देंगे। फिर चारों मिल कर भयंकर गर्जन करेंगे। लेकिन तुम उनसे बिल्कुल न डरना। चारों के आगे कटी हुई भेड़ का एक-एक टुकड़ा डाल देना। इस बात का ध्यान रखना कि कहीं फाटक के बाहर ही घोड़े से न उतर पड़ो। घोड़े पर बैठा रहना जरूरी है नहीं तो नुकसान हो सकता है। शेर मांस खाने लगें तो तुम घोड़े को एड़ लगा कर आगे बढ़ना। फाटक अपने आप खुल जाएगा। अंदर जा कर घोड़े से उतरना और उस चाँदी की सुराही में जो मैं तुम्हें दूँगी, तुरंत ही उस सरोवर का जल भर लेना और सिंहों के भोजन समाप्त करने के पहले ही फाटक से बाहर निकल आना। फिर तुम कुशलतापूर्वक वापस आ जाओगे। वहाँ से सीधे अपने पिता के पास चले जाना।

दूसरी सुबह शहजादा अहमद ने अपनी पत्नी के बताए हुए ढंग से काम किया। उसने दो घोड़े लिए जिनमें से एक पर भेड़ के चार टुकड़े रखे थे। गेंद को पृथ्वी पर डाला तो वह लुढ़कती हुई चली और उसने अहमद को लौह द्वार के सामने खड़ा कर दिया। अहमद ने भेड़ के टुकड़े शेरों के आगे डाले और जब वह खाने लगे तो अंदर जा कर चाँदी की सुराही में जल भर लिया और वापस चला। दो शेरों ने खाना खत्म कर लिया था और वे उसके पीछे लगे। शहजादे ने म्यान से तलवार निकाली तो एक शेर तो लौट गया किंतु दूसरे ने सिर और पूँछ के इशारे से उसे बताया कि तुम डरो नहीं, मैं तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे पीछे चल रहा हूँ। अहमद सीधा राजधानी में पहुँचा। सिंह वहाँ से वापस लौट गया। शहजादा सीधा दरबार में गया और बादशाह से बोला, आपके प्रताप से मुझे एक ही दिन में स्वास्थ्यवर्धक जल मिल गया है। इसे स्वीकार करें।

बादशाह ने अहमद की बड़ी प्रशंसा और सम्मान किया और उसे अपने साथ तख्त पर बिठाया किंतु उसकी जान अहमद की वीरता को देख कर सूखने लगी। महल में जा कर

उसने फिर जादूगरनी को बुलाया और उसे वह जल दिखाया। उसने इस बात की पुष्टि की कि यह जल वास्तव में चश्म-ए-शेराँ का है। बादशाह ने कहा, अब मैं उससे क्या चीजें माँगू जिसे लाना उसके लिए असंभव हो? जादूगरनी भी इस बात पर विचार करने लगी।

परीबानू ने दूर ही से बैठे-बैठे जादूगरनी की मति फेर दी। अहमद के वृत्तांत से जो बादशाह की जबानी उसे मालूम हो चुका था उसे मालूम हो जाना चाहिए था कि परी अपनी पूरी ताकत से शहजादे की मदद कर रही है। उसे यह भी मालूम हो जाना चाहिए था कि वह कितनी ही होशियार हो, क्रुद्ध परी का मुकाबला नहीं कर सकती। किंतु विनाश काले विपरीत बुद्धिः। उसने असंभव समझ कर अपनी निश्चित मृत्यु को निमंत्रण दे दिया। जादूगरनी ने ऐसी वस्तु माँगने के लिए बादशाह से कहा कि बादशाह उच्छल पड़ा। उसने बुढ़िया जादूगरनी की पीठ ठोंकी और उसे अथाह धन-संपदा दे कर विदा कर दिया।

दूसरे दिन दरबार के समय बादशाह ने शहजादा अहमद को बुलाया और कहा, बेटे, तुमने सिद्ध कर दिया कि तुमसे बढ़ कर सपूत कोई हुआ है न होगा। अब तुम मेरी एक अंतिम इच्छा पूरी कर दो। शहजादे के पूछने पर उसने कहा, मैं अपने दरबार में एक ऐसा आदमी रखना चाहता हूँ जिसके अस्तित्व की लोग कल्पना भी न कर सकें। तुम मेरे लिए एक ऐसा आदमी लाओ जिसकी ऊँचाई एक गज हो लेकिन जिसकी दाढ़ी बीस गज की हो। साथ ही उसके कंधे पर एक छह मन का सोंटा हो जिसे वह मामूली लकड़ी की तरह घुमा सके। स्पष्ट है कि जादूगरनी ने ही उसे ऐसे आदमी की माँग करने की सलाह दी थी। अहमद ने कहा, यह आप क्या कर रहे हैं? गज भर के आदमी की बीस गज की दाढ़ी कैसे हो जाएगी और वह साढ़े छह मन का सोंटा कैसे घुमाएगा? बादशाह ने मुस्कुरा कर कहा, तुम अपनी पत्नी से जिक्र करो। शायद वह यह माँग भी पूरी कर दे। न कर सके तो यहाँ आने की जरूरत नहीं है।

अहमद उसी दिन परीबानू के पास लौट आया। उसने कहा, पिताजी बिल्कुल सठिया गए हैं। अबकी बार उन्होंने साढ़े छह टन का सोंटा घुमानेवाला बीस गज की दाढ़ीवाला गज भर के कद का आदमी माँगा है। ऐसा आदमी कहाँ होगा और किस काम का है? परीबानू ने कुटिलता से मुस्कुरा कर कहा, तुम बादशाह के पास चले जाना। अभी मैं तुम से इसके बारे में कोई बात न करूँगी। तुम्हें आराम की बहुत जरूरत है। तुम बेफिक्र हो कर सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। तुम्हारे पिता की अंतिम इच्छा पूरी हो जाएगी और तुम्हारी समस्या हल हो जाएगी।

दूसरे दिन नहा-धो कर नाश्ता आदि करने के बाद अहमद ने परी बानू को फिर पिता के विचित्र माँग की याद दिलाई। परिबानू ने कहा, अच्छी बात है। जैसा आदमी तुम्हारे पिता ने चाहा है वैसा आदमी अभी आया जाता है। लेकिन तुम उसे देख कर घबराना नहीं। मेरा बड़ा भाई शब्बर इसी तरह का है। वह जिन्नों के एक बड़े राज्य का बादशाह है किंतु वह न किसी सवारी पर चलता है न साढ़े छह मन के सोंटे के सिवा कोई हथियार अपने पास रखता है। यह कह कर उसने दासियों से अपना जादू का संदूकचा और एक जली हुई अँगीठी लाने को कहा। उन्होंने तुरंत ही सोने का संदूक या और जलती हुई सोने

की अँगीठी हाजिर कर दी। परीबानू ने संदूकचे से धूप आदि सामग्री निकाली और मंत्र पढ़ कर अँगीठी में डाल दी।

अँगीठी से बहुत गहरा धुआँ उठा जिसमें सब कुछ छुप गया और अहमद की आँखें बंद हो गईं। एक क्षण बाद परीबानू की आवाज आई, आँखें खोलो। देखो, भैया शब्बर आ रहे हैं।

अहमद ने देखा कि एक गज भर का आदमी बड़ी शान के साथ चला आ रहा है। उसकी बीस गज की दाढ़ी उसके शरीर में लपेटी हुई थी और उसके कंधे पर साढ़े छह मन का लोहे का सोंटा था। उसकी मूँछें उसकी कानों तक पहुँचती थीं और आँखें गहरे गढ़ों में धँसी हुई थीं। उसके सिर पर रत्न-जटित मुकुट रखा था। उसकी पीठ और सीने दोनों पर बड़े-बड़े कूबड़ थे। न डरने के अपने वादे के बावजूद अहमद के बदन से उसे देख कर पसीना चूने लगा। उसने आते ही कड़क कर कहा, बानू, तूने मुझे क्यों बुलाया है? और यह छोकरा कौन है जो तेरे पास बैठा है? परीबानू बोली, भैया, यह मेरे पति शहजादा अहमद हैं। इनके पिता हिंदुस्तान के बादशाह हैं। लगभग एक वर्ष पहले हम लोग विवाह सूत्र में बँधे थे। मैंने उस समय तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया था कि तुम एक भारी युद्ध में व्यस्त थे। शब्बर ने अब प्रेमपूर्ण दृष्टि से अहमद को देखा और कहा, शहजादा अहमद, तुम्हें देख कर बड़ी खुशी हुई। अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सकूँ तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

परीबानू ने कहा, इसके पिता ने तुमसे भेंट करने की इच्छा प्रकट की है। शब्बर ने अहमद से कहा, अभी चलो, इसमें क्या बात है? इस बार भी उत्तर अहमद की बजाय परीबानू ही ने दिया। वह बोली, अभी जाने की जरूरत नहीं हैं। तुम बड़ी दूर से आए हो। काफी थक गए होगे। एक रात आराम करो। शहजादे को कुछ आराम की अभी और जरूरत है। शाम को मैं पूरा हाल तुम्हें बताऊँगी कि बादशाह ने तुम्हें किस कारण से बुलाया है। अहमद ने यह सुन कर सिर नीचा कर लिया।

शाम को अकेले में परीबानू ने शब्बर को अहमद के विरुद्ध होनेवाले षडचंत्र का पूरा हाल बताया। दूसरी सुबह को अहमद की सवारी फिर राजधानी की ओर चली। शब्बर आगे-आगे पैदल ही घोड़ों से तेज चल रहा था। नगर में पहुँचने पर नगर निवासी शब्बर के भयानक रूप को देख कर इधर-उधर भागने लगे। शब्बर किसी पर ध्यान दिए बगैर सीधे दरबार में घुसा और तख्त के पास जा कर कड़क कर बोला, हिंदोस्तान के बादशाह, तुमने मुझे बुलाया है। क्या काम है तुम्हें मुझसे? बादशाह ने उत्तर देने के बजाय भय से आँखों पर हाथ रख लिए और तख्त से उतर कर भागने की कोशिश करने लगा। शब्बर ने और जोर से गरज कर कहा, यह क्या बदतमीजी है? तुम्हारे बुलाने पर मैं इतनी दूर से चल कर आया हूँ और तुम बात किए बगैर ही भागे जा रहे हो।

यह कह कर उसने सोंटे के वार से बादशाह का सिर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

इतने में अहमद भी दरबार में पहुँच गया। शब्बर ने कहा, मंत्री कहाँ है? मैं उसका भी यही हाल करूँगा। किंतु अहमद ने उससे मंत्री की जान यह कह कर बचा दी कि मंत्री ने

भरसक मेरे प्रति मित्रता ही रखी। शब्बर ने दो-चार दरबारियों और सामंतों को छोड़ कर, जो मौका पा कर दरबार से भाग निकले थे, सभी दरबारियों और सरदारों को मार डाला क्योंकि सभी ने इस अवधि में अहमद के विरुद्ध कुछ न कुछ कहा था।

अब शब्बर ने राजमंत्री से कहा, महल के प्रधान कर्मचारी और जादूगरनी को घसीट कर लाओ, उन्होंने मेरे बहनोई के विरुद्ध षड़यंत्र किया था। अहमद के दूसरे शत्रुओं को भी यहाँ लाओ वरना तुम्हारी खैर नहीं। वे घसीट कर लाए गए और शब्बर ने सब को खत्म कर दिया। शब्बर इतना क्रुद्ध था कि सारे नगर को समाप्त करना चाहता था किंतु अहमद ने उसकी खुशामद करके इस हत्याकांड से रोका। शब्बर ने वहीं अहमद को सिंहासन पर बिठा कर उसका राजतिलक कर दिया। यह सब करने के बाद उसने अहमद के बादशाह होने की मुनादी कराई और परीबानू को राजमहल में ले आने के बाद विदा हो गया। जाते समय अहमद से कह गया कि जब भी जरूरत हो मुझे बुला लेना।

अहमद ने बादशाह बन कर भाइयों के साथ अच्छा सलूक किया। अली और नूरुन्निहार को बुला कर उन्हें भेंटें दीं और अली को एक सूबे का हाकिम बना कर भेज दिया। उसने हुसैन के पास भी एक सरदार भेज कर संदेशा दिया कि जिस प्रदेश का हाकिम बनना चाहो बना दूँ। किंतु हुसैन ने उसे आशीर्वाद दे कर कहलवाया कि अब संसार के मोह में न फँसूँगा।

शहरजाद की यह कहानी दुनियाजाद और शहरयार ने पसंद की और अगली रात शहरजाद ने नई कहानी शुरू कर दी।